ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक मुखपत्र

एक प्रति ३५ पैसे | वार्षिक १५ रुपए | वर्ष ६ अंक १३ | रविवार ४ माघ, वि० २०३८ | ३१ जनवरी १९८२ | दयानन्दाब्द १५७

सोमवार २२ फरवरी को कोटला फिरोजशाह में ऋषि मेले का आयोजन

आर्यसमाज और आर्यसंस्थाएं ऋषि मेले के सफल बनाएं आर्यकेन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य के पदाधिकारियों का आह्वान

दिल्ली। आर्यकेन्द्रीय सभा दिल्ली के प्रधान महाशय धर्मपाल और सभा के महामन्त्री प्रिंसिपल ओम्प्रकाश ने सोमवार २२ फरवरी, १९८२ के दिन कोटला फिरोजशाह के मैदान मे आयोजित होने वाले ऋषि मेले मे सभी आर्यसमाजो, आर्यसंस्थाओ, शिक्षणसंस्थाओं और समस्त आर्यजनों से सक्रिय सहयोग देने का अनुरोध किया है।

दोनों आर्य नेताओं ने ऋषि मेले को सफल बनाने के लिए निम्न बातो पर ध्यान देने का आग्रह किया है—

ऋषि मेला सोमवार २२ फरवरी, १९८२ को प्रात ८ बजे से साय ५ बजे तक कोटला फिरोजशाह मैदान में आयोजित किया जाएगा।

प्रात ८ बजे बृहद् यज्ञ से मेले का प्रारम्भ होगा।

प्रात: १० बजे से शाम ५ बजे तक ऋषि बोधोत्सव की विशेष सभा होगी। जिसमे देश के प्रमुख नेता, केन्द्रीय मन्त्री, प्रमुख आर्य विद्वान एव भजनोपदेशक अपने विचार प्रस्तुत करेंगे।

समस्त आर्यसमाजो एव संस्थाओ से यह अनुरोध भी किया गया है कि आर्यसमाजो के १४ और २१ फरवरी के साप्ताहिक सत्सगों मे महर्षि दयानन्द के जीवन एव सन्देश पर भाषण एव सगीत कार्यक्रम हो।

२—बोध दिवस से एक सप्ताह पूर्व जीवन की कथा का आयोजन किया जाए।

३—क्षेत्री समाजें सम्बद्ध समाजो के साथ मिल कर बोध दिवस के आस-पास सार्वजनिक सभाए या कवि सम्मेलन करें।

४—ऋषि मेले मे पहुचने के लिए आर्यसमाजें, आर्यसस्थाए और प्रमुख आर्यजन ट्रको, बसो, मोटरो, स्कूटरो आदि की व्यस्था करे।

५—ऋषि मेले की सूचना साप्ताहिक सत्सगो और क्षेत्रीय सभाओ मे दीजिए।

विभिन्न प्रतियोगिताओं में कन्या गुरुकुल देहरादून को उल्लेखनीय सफलता

देहरादून। आर्य स्त्री शिक्षा की अग्रणी सस्था कन्या गुरुकुल देहरादून की छात्राओं ने जिले तथा गढवाल क्षेत्र की प्रतियोगिताओ मे उल्लेखनीय सफलता प्राप्त की है।

खालिस्तान की माग मानवता और देश के लिए घातक है, विषय हुई आर्यसमाज देहरादून द्वारा आयोजित वाद विवाद प्रतियोगिता मे कन्या गुरकुल को चल वैजयन्ती प्राप्त हुई। सम्पूर्ण गढवाल क्षेत्र की खेलकूद विषयक प्रतियोगिता की चैम्पियनशिप भी कन्या गुरुकुल को मिली। कु० नायब कौर चैम्पियन घोषित की गई। जिला खेलकूद की सीनियर चैम्पियन शिप भी कन्या गुरुकुल को प्राप्त हुई। सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी छात्रा कु० नायब कौर सम्मानित की गई। जिला स्तर पर राष्ट्रीय समूह गान प्रतियोगिता में भी कन्या गुरुकुल को चल विजयोपहार प्राप्त हुआ। आर्यसमाज देहरादून की संगीत प्रतियोगिता मे भी कन्या गुरुकुल को चल वैजयन्ती मिली।

शिक्षा मन्त्रालय द्वारा जिला स्तर पर आयोजित तरुण सगीत एव विचार मच प्रतियोगिता में एक हजार छात्राओं के मध्य कुमारी सीमा और सुमन को चलविजयोपहार मिला।

मेवात में गोहत्या : १४ गायें कटी हुई मिलीं

नई दिल्ली। देश में एक ओर गोवश की रक्षा के लिए ३० जनवरी के दिन सत्याग्रह आयोजित किया जा रहा है तो दूसरी ओर मेवात की हथीन तहसील के अन्तर्गत ग्राम उटावड़ में एक ही दिन मे १४ गाएं कटी हुई हालत मे मिली है। [illegible] पर पुलिस को ३२ गाएं प्राप्त हुई। अपराधी कसाई भागने मे सफल हो गए है। गोहत्या विरोध में सोमवार ११ जनवरी को हथीन कस्बे मे पूरी हड़ताल रही। सब्जी, [illegible], चाय तथा पान वालों की दुकानें बन्द रहीं।

आर्यसमाज सौम्य गोरक्षा सत्याग्रह

ज्ञात हुआ है कि ३० जनवरी के दिन दिल्ली में स्वामी श्रद्धानन्दजी की प्रतिमा के पास सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले के नेतृत्व मे हजारो आर्यजन भी सौम्य सत्याग्रह करेंगे।

श्री त्यागीजी अभी अस्पताल में ही हैं

नई दिल्ली। अत्यन्त चिन्ता का विषय है कि सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री ओमप्रकाश त्यागी के स्वास्थ्य मे अभी पूर्ण सुधार नही हुआ है। वह अभी भी अस्पताल मे हैं। आर्य सन्देश परिवार प्रभु से प्रार्थना करता है कि श्री त्यागी को शीघ्र ही स्वस्थ करें।

पं० ज्ञानेन्द्र सूफी के निधन से आर्य जगत को गहरी क्षति

वह पाकिस्तान के विदेश मन्त्री अगाशही के पिता थे। श्री शाल वाले द्वारा शोक अभिव्यक्त

नई दिल्ली। पाकिस्तान के विदेश मन्त्री श्री आगाशाही के पिता पंडित ज्ञानेन्द्र देव सूफी का गत एक जनवरी १९८२ को ९५ वर्ष की अवस्था मे राजस्थान के हनुमानगढ नामक स्थान मे देहान्त हो गया है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान लाला राम गोपाल शाल वाले ने श्री पंडित जी के निधन पर गहरा शोक प्रकट करते हुए कहा कि पडित ज्ञानेन्द्र जी की सार्वदेशिक सभा से आजीवन सम्बन्ध रहा है सार्वदेशिक सभा की ओर से प्रतिमाह उन्हें सहायता अभी तक भेजी जाती रही है।

उन्होंने बताया कि० स्व पडित जी का पूर्व नाम अब्दुल रहमान था तथा वे उत्तर प्रदेश के रामपुर के नबाब के रिश्तेदार थे। उनका गोरखपुर सूफी परिवार से निकट का संबन्ध था। बताया जाता है कि वह अपनी सौतेली माता के व्यहार से परेशान होकर घर छोड़कर भाग गए थे। उन्होंने स्कूली शिक्षा तो केवल ९वी कक्षा तक प्राप्त की, लेकिन अरबी, और फारसी, मे विद्वता प्राप्त होने के कारण उन्हें मौलवी फाजिल की उपाधि प्रदान की गई।

स्व० पडित जी ने दो विवाह किए थे। उनकी पहली मुस्लिम पत्नी से आगाशाही का जन्म हुआ था जो इस समय पाकिस्तान के विदेश-मन्त्री दूसरी पत्नी एक हिन्दू अध्यापिका थी जिससे दो पुत्र और एक पुत्री है। पडित जी शाह ईरान के १० वर्षो तक दुभाषिए के पद पर काम करते रहे। उनका अतिन्म सस्कार भी २ जनवरी को आर्यसमाजी पद्धति से किया गया।

सम्पादक—नरेन्द्र विद्यावाचस्पति
व्यवस्थापक—प्रद्युम्नलाल तलवाड़

वेद-मनन

समर्पित पत्नी सब पीड़ाओं से बचाती है

५२२ ईश्वर भवन, खारी बावली-
दिल्ली--११०००६
—मनोहर विद्यालकार

**अनाधृष्टा पुरस्तादग्नेराधिपत्ये आयुर्मेदः पुत्रवती दक्षिणत इन्द्रस्याधिपत्ये प्रजा मेदा सुषदा पश्चाद्देवस्य सवितुराधिपत्ये चक्षुर्मेदा आश्रुतिरुत्तरतोधातुराधिपत्ये रायस्पोष मेदा । विधृतिरुपरिष्टाद्बृहस्पतेराधिपत्ये ओजोमेदा',
विश्वाभ्योमादा विश्वाभ्यो मा नाष्ट्राभ्यस्पाहि मनोरश्वासि ॥**

ऋषि —दध्यङ् आथवण । देवता —पृथिवी । छन्द —स्वराट्उत्कृति ।

यजु -९—१२

शब्दार्थ—पृथिवी के समान सहनशील हे मात, अग्निदेव के शासन मे रहते हुए पराभव और गर्व से बची रहकर (अग्नेराधिपत्य अनाधृष्टा) (पुरस्तात्) आगे बढने की कामना पूर्ति के लिए (मे) मुझे (आयु) अन्न और जीवन (दा) प्रदान कर। (इन्द्रस्याधिपत्ये) इन्द्रदेव के नियन्त्रण मे रहते हुए (दक्षिणत पुत्रवती) पुत्र कामना वाली बनकर दक्षना पूर्ति के लिए दक्षिण कुक्षिसे (मे प्रजा दा) मुझ सन्तान प्रदान कर। (देवस्य सवितुराधिपत्ये) सविता देव के नियत्रण मे रहते हुए। (सुषदा पश्चात्) पिछडे हुए या अविकसित लोगो के प्रति शुभ व्यवहार वाली बनकर (मे चक्षु दा) मुझे माग प्रदर्शन प्रदान कर। (धातुराधिपत्ये) धाता (ब्रह्मा) के शासन मे रहते हुए (उत्तरत म आश्रुति) आध्यात्मिक उत्कर्ष चाहने वाल मुझ श्रुति के समान प्रदात्री बनकर (रायस्पोष दा) रायस्पोष प्रदान कर। (बृहस्पतेराधिपत्य) देवगुरबृहस्पति के शासन म रहते हुए (विधृत्तिरुपरिष्टात्) धारिका बनकर सासारिक तथा आध्यात्मिक दोनो दृष्टि से ऊचा उठान की इच्छा वान (ओजो म दा) मुझ ओज (परमात्मा प्राप्ति का उपाय) प्रदान कर।

(नाष्ट्राभ्य पाहि) इस प्रकार नाशकारी पीडाओ और दुष्ट शक्तियो से मेरी रक्षा कर, क्योकि मनो अश्वा असि) मैंने तुझे अपन मन मे पूरी तरह बसाया हुआ है।

निष्कर्ष—हे मनुष्या ! यथाग्नि जीवन, विद्युत्प्रज्ञा, सविता दर्शन, धाता-श्रिय महाशयोच बल ददाति तथैव सुलक्षणा पत्नी सर्वाणि सुखानि प्रयच्छति, ता यथा— वद्रक्षत । स्वामी दयानन्द का भावार्थ ।

पत्नी यदि पूण सन्तुष्ट और पूरी तरह से समर्पित हो तो सब प्रकार के सुख प्रदान करती है और सर्वविध विपत्तियो से रक्षा करती है। एक तरह इस मन्त्र मे वर्णित पाचो देवताओ के वर प्रदान करती है।

विशेष—पत्नी यदि पृथ्वी के समान सवसहा, और सब भोगो की प्रदात्री बनना चाहती है, तो उसे ध्यान पूर्वक गति करने वाले दध्यङ ऋषि से शिक्षा ग्रहण करके छोटे बडे, उन्नत अवनत विकसित और विकलाग के साथ यथायोग्य व्यवहार करने वाला बनने के लिए अपने व्यवहार की दिशा निश्चित करने के बाद आथवण से प्रेरणा लेकर सशय रहित और अडिग रहना चाहिए। अर्थात् दूसरे सदस्यो द्वारा अन्याय और पक्षपात आदि का आरोप लगाने पर भी अपने माग से विचलित नही होना चाहिए।

उसे अपनी अन्त प्रेरणा के अनुसार शासन करने वाली स्वराष्ट्र, और सबको उन्नत बनाने के लिए, उच्च आदर्शो से प्रेरित होकर काय करने वाली उत्कृति बनने का प्रयत्न करना चाहिए।

अर्थपोषक प्रमाण

स्वराट्—स्वय राजते। उत्कृति —उतकुरुते । सुषदा—शोभने व्यवहारसीदति।

अनाधृष्टा—न+धृष्टा (धृष सहने) पराभव करना (धृषा प्रागल्भ्ये) गर्व करना।

नाष्ट्राभ्य – नाश करने वाली आर्तिओ से—

यज्ञ द्वारा दुसाध्य रोग में लाभ

—प० वीरसेन वेद शर्मा

अयक्ष्म च मे अनामयच्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् (यजु० १८।६)।

क्षय तथा समस्त रोगादि व्याधिया यज्ञ से नष्ट हो।

मुझे १५ नवम्बर से २९ नवम्बर, १९८१ को भेषज यज्ञ कराने बम्बई जाना पडा। उसका विवरण निम्न प्रकार है—

श्री सनतकुमार सुपुत्र श्री प्राग जी शिवजी खजियानी, ६ वेडेश्वर बिल्डिग, महात्मा गाधी रोड, घाटकोपर पूव बम्बई—७७ अवस्था २४ वर्ष। बाल्यावस्था से ही मन बुद्धि, वाक् शक्ति, सामान्य क्रिया शक्ति मे असमर्थता युक्त था। उसके लिए सभी प्रकार के व्यावहारिक प्राकृतिक एव धार्मिक उपचार एव चिकित्सा की जाती रही।

दिनाक १२ नवम्बर को सनतकुमार की स्थिति इस प्रकार थी—उसके मुख से थूक व लार बहती थी, नाक भी कभी-कभी बहती थी परन्तु वह उसे स्वय पोछने मे असमर्थ था अत पारिवारिकजन या सेवक ही उसकी नाक व मुख पोछते थे। आकृति कुछ भयावह, आखे लाल रहती थी। निष्क्रिय अवस्था मे पडा रहता था। दिन मे निद्रा नही आती थी। रात्रि को ८ बजे सान जाता था। प्रात उठ जाता था।

यज्ञ मे बैठाने पर वह कोई क्रिया कर नही कर सकता था। उसके पास एक व्यक्ति बैठकर आचमन क्रिया करवाता। उसके हाथ म सामग्री द्रव्य रखता और हाथ पकडकर उससे यज्ञाग्नि मे डलवाता। यज्ञ म सीधा वह बहुत कम समय बैठ पाता था। बीच-बीच म उठ भी जाता था। स्वाहा एव ओम् की ध्वनि बोलने के लिए बार-बार प्रेरणा करने पर वह बलपूर्वक उच्चारण कभी-कभी कर पाता था। अगुलियो से सामग्री पकड कर उठाने की क्रिया तथा दोनो हाथो को मिलाकर क्रिया करने मे भी असमर्थ था।

१५ दिवस यज्ञ प्रात ७ बजे से ९ बजे तक तथा सायकाल ५ से ६—३० तक किया गया। ५० किलो गोघृत, १ किलो ५०० ग्राम ब्राह्मी घृत १ किलो ५०० ग्राम अश्वगन्धाघृत इसमे प्रयुक्त किया गया। चरकादि ग्रन्थों मे वर्णित ग्रहशान्ति धूप, उन्माद नाशक द्रव्य, जीवनीयगण की ओषधिया तथा गूगल, असगन्ध, गिलोय जटामासी तगर, बच आदि ८० किलो हव्य द्रव्यो की आहुतिया दी गई। समिधामे वट वृक्ष की समिधाए त्वचा युक्त प्रयुक्त की गईं।

यज्ञ प्रारम्भ करने के ४ दिन उपरान्त उसमे क्रमश उत्तरोत्तर निम्न क्रियाशीलता वृद्धि को प्राप्त होने लगी—१ आचमन का जल स्वय आचमनी से दाहिने हाथ मे लेकर आचमन करना। २ अगस्पर्श क्रिया करना। ३ प्रार्थना-मन्त्रों मे हाथ जोडकर बैठना। ४ घृत का दीपक दीया सलाई से जलाना। ५ अग्न्याधान कपूर द्वारा खडे होकर सुवा द्वारा करना। ६ जलसिंचन की क्रिया करना। ७ आहुति द्रव्य स्वय हाथ से पकडना और आहुति देना। ८ यज्ञोपरान्त प्रार्थनाओ मे हाथो को नमस्कार मुद्रा मे हृदय स्थल पर रखना। ९ हृदयस्पर्श कराने के समय उसका स्पश करना। १० दोनो हथेलियो पर यज्ञशेषघृत का घर्षण जोर से करना। ११ पुन उन हथेलियो को यज्ञाग्नि से प्रलेपन कर मुख पर लगाना। १२ ताली बजाना। १३ आरती की थाली लेकर उससे आरतीवत क्रिया करना। १४ आशीर्वाद के फूलो को भूमि से उठाकर अपनी जेब मे गिनती पूवक रखना। १५ यज्ञ के पात्र, आसन, हवि स्थाली का रखना आदि क्रियाए यथासमय आदेश देने पर करना।

यज्ञ प्रारम्भ होने के २-३ दिन तक नाक से पानी एव मल बहा, लार व थूक भी बहा। उसका सम्भालने व पोंछने के लिए व्यक्ति रहता था। ३-४ दिन बाद यह सब काम हो गया।

उसके बोलने मे भी सुधार होने लगा। यज्ञमध्य मे वह कुछ शब्द अपनी प्रेरणा से भी बोलने लगा। यज्ञोपरान्त शेष दिवस समय मे भी स्वेच्छा से कतिपय शब्दो को बोलने लगा। यज्ञ मे ओ३म् और स्वाहा बोलने मे उसे बल लगाना पडता था परन्तु बाद को वह कभी कभी सुगमता से सामान्य ध्वनि मे भी बोल देता था। वाणी मे स्फूर्ति एव चापल्य बढने लगा।

यज्ञ म गायत्री मन्त्र, मृत्युजय मन्त्र तथा 'विश्वानि देव' मन्त्र का सपुट भी लगाया जाता था। यजुर्वेद तथा अथववेद के विशेष मन्त्रो का प्रयोग होता था। सपुट मन्त्र का बार-बार श्रवण उसे होता ही था। प्रारम्भ मे उससे 'ओ३म्' और 'स्वाहा' का उच्चारण कराने पर ध्यान दिया गया। ५-६ दिन बाद उससे गायत्री मन्त्र बुलवाने का नित्य प्रयत्न यज्ञ मे किया गया।

यज्ञान्त मे 'ओ३म् विष्णो हव्य रक्ष' 'ओ३म् प्रतिष्ठ, 'सत्या सन्तु यजमानस्य कामा, ओ३म् स्वस्ति' आदि सामूहिक रूप मे बुलवाये जाते थे तथा सनतकुमार से भी बुलवाने का प्रयत्न किया जाता था, जब उसका मन होता तो वह किसी-किसी शब्द को बोलता—'ओ३म्' की ध्वनि जोर से देर तक करता। ओ३म् के साथ ताली पीटने की भी क्रिया करता।

यज्ञ से पूर्व उसकी मुखमुद्रा बीभत्स दीखती थी। आखें लाल रहती थी। यज्ञ के प्रारम्भ होने के उपरान्त चौथे दिन से उसके नेत्रो की लाली तथा चेहरे की वीभत्सता कम होने लगी और मुखमुद्रा

(शेष पृष्ठ ७ पर)

आर्यसमाजों के सत्सग

३१ जनवरी, १९८२

अन्धा मुगल-प्रताप नगर—आचार्य हरिदेत सि० भू०, अमर कालोनी—डा० सुखदयाल भूटादी, अशोक विहार के-सी-५२-ए—प० प्रकाश चन्द—वेदालकार, आर के पुरम सैक्टर ६—प्रो० वीर पाल विद्यालकार, आर्य नगर-पहाडगज—प० महेश चन्द भजन मण्डली, किग्सवे कैम्प—पं० ईश्वर दत्त, कालका डी-डी-ए फ्लेट—सत्यपाल 'मधुर' भजनोपदेशक, कालका जी—प० सत्यदेव भजनोपदेशक, कृष्ण नगर—प० शिव कुमार शास्त्री, ग्रेटर कैलाश-१—कविराज बनवारी लाल शादा भजन मण्डली; गुड मण्डी—प० वेद व्यास भजनोपदेशक, १५१-पुरानी गुप्ता कालोनी—प० उदय पाल शास्त्री, गोविन्द भवन दयानन्द वाटिका—प० रघुराज शास्त्री, चूना मण्डी-पहाड गंज—प० श्याम सुन्दर स्नातक, जगेपुरा-भोगल—प आशानन्द भजनोपदेशक, जनकपुरी बी ३/२४—प विश्व प्रकाश शास्त्री, तिलकनगर—प० मनोहरलाल ऋषि भजनोदेशक, तिमार—प० खुशीराम शर्मा, दरियागज—श्री चमनलाल आर्य, नारायण विहार—डा० रघुनन्दन सिह, नया बास—प प्रकाश चन्द्र शास्त्री, न्यू मोती नगर—प० सीसराम भजनोपदेशक, पजाबी बाग—प० दिनेश चन्द्र पराशर शास्त्री, पजाबी बाग एक्टटेशन १४/३—वैद्य राम किशोर, बाग कडे खा—प० वरकतराम भजनोपदेशक, बसई दारापुर—स्वामी प्रज्ञानन्द, मॉडल बस्ती—प० मोद प्रकाश, मॉडल टाउन—प० गणेश प्रसाद विद्यालकर, महावीर नगर—प० कामेश्वर, महरौली—प० तुलसीराम भजनोपदेशक, मोतीनगर—पं० गणेशदत्त वान प्रस्थी, रघुवीरनगर—प० बेदपाल शास्त्री, रमेश नगर—पं० देवराज वैदिक मिश्नरी, राणा प्रताप वाग—प० हरिदत्त शास्त्री, लड्डूघारी पहाडगज—प० प्राणनाथ सिद्धान्तालकार, लाजपत नगर—प० हीरा प्रसाद शास्त्री, लेखराम नगर-त्रि नगर—प० रामरूप शर्मा, लारेस रोड, प० देवेश, विक्रम नगर—श्री मोहनलाल गाधी, विनय नगर—स्वामी प्रेमानन्द तथा प० प्रकाश वीर 'व्याकुल', सुदर्शन पाक—प्रो० भारत मित्र शास्त्री, नथा ज्ञानचन्द डोगरा गायक सराय रोहेला सभद्रा कालोनी—ब० राम प्रकाश, शालीमार बाग—प्रो० सत्यपाल बेदार, हौज खास डी-२८—प० सत्यभूषण वेदालकार, ज्ञानचन्द डोगरा, वेद प्रचार विभाग, गीता कालोनी—स्वरूपानन्द जी,

वीर हकीकत भाषण प्रतियोगिता

आर्यसमाज टैगोर गार्डन, नई दिल्ली-द्वारा रविवार दिनाक ३१-१-१९८२ को प्रात ९ बजे से ११ बजे तक हकीकत बलिदान दिवस के अवसर पर एक भाषण प्रतियोगिता की जा रही है। ९ से १२ वर्ष तक के बालक बालिकाए भाग ले सकते है, नाम, आयु, कक्षा व विद्यालय के के नाम सहित २५ जनवरी, १९८२ तक मन्त्री आर्यसमाज, टैगोर गार्डन, नई दिल्ली २७ को भेजे जा सकते है।

हिन्दू धर्म के सिद्धान्तों के प्रभाव से पुनः हिन्दू धर्म में वापसी

—डॉ०—सुमन

आर्यसमाज अशोक विहार मे मकर सक्रान्ति का पर्व १४ जनवरी को साय ६-३० बजे से ९ बजे तक बडे उत्साह से मनाया गया। प्रधान श्री चमनलाल ने पर्व की महत्ता पर प्रकाश डाला। मुख्य अतिथि डा० विजय सुमन और उनकी पत्नी का समाज की ओर से स्वागत किया गया। डा० सुमन ने स्वागत का उत्तर देते हुए कहा—आर्य हिन्दू धर्म के युक्ति-संगत सिद्धान्त और सत्यार्थ प्रकाश का अध्ययन कर ही वह पुन हिन्दू धर्म मे प्रविष्ट हुए हैं। आशा है, जल्दी ही दूसरे पढ़े-लिखे मुसलमान भी उनका अनुकरण कर हिन्दू धर्म मे लौट आएगे।

(पृष्ठ २ का शेष)

भी प्रसन्न और आकर्षक प्रतीत होने लगी।

पहले उसे ऐसे स्कूल मे भेजा जाता था। जहा इसी प्रकार के अविकसित बच्चो व लोगो को काम सिखाया जाता था। वहा वह मशीन चलाता था—कुछ बुनता भी था। परन्तु जब वहा निष्क्रिय हो गया तो उसका आना बन्द कर दिया था। उसकी अगुलिया तथा हस्तादि मे निष्क्रियता हो जाने से वह क्रिया करने मे असमर्थ हो गया था।

यज्ञ होने से उसमे क्रियाशीलता, शरीर मे स्फूर्ति, वाक शक्ति मे चातुर्य, स्मरण शक्ति मे वृद्धि हुई और उसने एक दिन १ से १०० तक गिनती, सातो वारो के नाम, १२ मासो के नाम, भोजन के पदार्थों के नाम भी पूछने पर सुनाए और जब उससे पूछा गया कि स्कूल जाओगे तो उसने स्वीकारी दी तथा अपने पिताजी को भी स्कूल जाने की इच्छा प्रकट की।

इस प्रकार उसके पारिवारिक जनो को यज्ञ से पूर्व की स्थिति मे ५० प्रतिशत अनुकूल सफलता दृष्टिगोचर हुई।

वेद सदन, महारानी पथ

इन्दौर—४५२००७

पण्डित राकेश रानी जमानत पर रिहा

दयानन्द सस्थान की मासिक पत्रिका मे प्रकाशित सामग्री के सम्बन्ध मे सस्थान की अध्यक्षा प० राकेश रानी पर दिल्ली प्रशासन ने अभियोग चलाया है। जनवरी के दूसरे सप्ताह मे पुलिस ने उन्हे गिरफ्तार किया था, बाद मे ४-४ हजार के मुचलके और जमानत पर उन्हे मुक्त कर दिया गया।

हैदराबाद। अप्रैल के प्रथम सप्ताह मे जगद्गुरु शकराचार्य की अध्यक्षता मे प्रादेशिक हिन्दू रक्षा सम्मेलन आयोजित किया जाएगा।

गोरक्षा के लिए उपवास करें

नई दिल्ली। अ० भा० गोसरक्षण परिषद् के कार्यकर्ता ३० जनवरी वसत पचमी को एक समय का सामूहिक उपवास करें। उक्त निर्देश देश भर मे फैली गोसरक्षण परिषद की सभी शाखाओ को परिषद् के अध्यक्ष स्वामी विदेही जी हरि ने दिया है।

हसराज जन्मदिवस समारोह १८ अप्रैल को

नई दिल्ली। प्रसिद्ध शिक्षाशास्त्री डी० ए० वी० आन्दोलन के सूत्रधार महात्मा हसराजजी का जन्मदिवस समारोह रविवार १८-४-८२ को डी० ए० वी० स्कूल, चित्रगुप्त रोड, पहाडगज-नई दिल्ली के विशाल प्रागण मे प्रात मनाया जाएगा।

पश्चिम उ०प्र० आर्यवीर दल सम्मेलन

पश्चिम उ०प्र० आर्य वीर दल का प्रान्तीय कार्यकर्ता सम्मेलन २८ फरवरी ८२ दिन रविवार को बिन्दकी फतेहपुर सार्वदेशिक आर्य वीर दल के प्रधान सञ्चालक परम पूज्य प० बाल दिवाकर जी हस की अध्यक्षता मे होने जा रहा है। आगुन्तक कार्य कर्त्ताओ से अनुरोध है। कि अपने नाम शीघ्र ही कार्यालय को भेजे ताकि आवास इत्यादि का उचित प्रबन्ध किया जा सके। अपना गणवेश साथ लाए।

× × ×

चार दिन तक प्रभात फेरी

अछूतोद्धारक, साम्प्रदायिक एकता के प्रबल समर्थक महान राष्ट्रीय नेता अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द के बलिदान दिवस के अवसर पर अस्पृश्यता-निवारण एव मानवता के सिद्धान्तो के प्रसार हेतु आर्यसमाज राजौरी गार्डन के अधिकारियो ने अपने उपनगरीय क्षेत्र म चार दिन तक ब्राह्म मुहूर्त मे प्रभात फेरी का आयोजन किया। प्रतिदिन ही स्थान-स्थान पर भयकर शीत की परवाह न करते हुए विभिन्न ब्लाक वासियो ने इस प्रभात-फेरी का स्वागत किया।

धर्म, संस्कृति और देशकी रक्षा के लिए युवक सन्नद्ध हों

शास्त्रीनगर में डा० सुमन दम्पती का शास्त्रीनगर में स्वागत

दिल्ली। रविवार १७ जनवरी को विश्व हिन्दू परिषद् की शास्त्रीनगर शाखा द्वारा आयोजित हिन्दू सम्मेलन के मुख्य अतिथि के रूप मे डा० आनन्द सुमन ने कहा—'यह हम जानते हैं कि आज की मुख्य समस्या रोटी-कपड़े और मकान की उनके लिए रोटी-रोटी का प्रबन्ध भी किया जाना चाहिए।

डा० सुमन ने कहा—हिन्दू देवी देवताओं के हाथो से धर्म और सस्कृति को रक्षा के लिए किसी-न-किसी शस्त्र का प्रतीक दिया होता है। इसलिए भी यह अच्छा न होगा कि वैदिक धर्म, हिन्दू सस्कृति और भारत माता की रक्षा के लिए नवयुवक सन्नद्ध हों और शस्त्रो का प्रयोग सीखें। सकट को घडी में नवयुवको द्वारा आत्मरक्षा के लिए शस्त्रो के प्रयोग से धर्म संस्कृति और देश की रक्षा हो सकती है।"

डा० सुमन के साथ उपस्थित जनता ने भारत की है यह ही शान-हिन्दी, हिन्दू और हिन्दुस्तान का नारा लगाया। सम्मेलन मे शास्त्रीनगर एव समीपस्थ क्षेत्रों की जनता, आर्यसमाज, छात्र परिषद्, विश्व हिन्दू परिषद् क्षत्रिय सभा आदि सस्थाओ की ओर से डा० आनन्द सुमन और उनकी धर्मपत्नी सरस्वती सुमन का हार्दिक स्वागत किया गया।

यमुना पर आर्य युवकों की गतिविधियां
शहीद करतारसिंह सराबा शाखा का उद्घाटन

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली प्रदेश की नई शाखा का उद्घाटन २६ जनवरी, १९८२ को दोपहर ३ से ५ बजे तक चांद मोहल्ला, पार्क निकट भील बस स्टैण्ड मे हुआ है। इस उपलक्ष्य में परिषद् की शाखाओ के कबड्डी के मैच हुए। विजेता टीम को कप दिया गया। मुख्य अतिथि थे श्री जयप्रकाश जी आर्य प्रधान आर्य समाज गांधी नगर तथा स्वामी स्वरूपानन्द जी। थे इसका शाखाध्यक्ष श्री नन्दकिशोर आर्य व उपशाखाध्यक्ष श्री जितेन्द्र आर्य को नियुक्त किया गया है।

—अनिल कुमार आर्य
महामन्त्री

कन्या गुरुकुल हाथरस का उत्सव

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय हाथरस जिला अलीगढ़ का वार्षिकोत्सव २९,३०, ३१ जनवरी और १ फरवरी, १९८२ को गुरुकुल भूमि में होगा। शनिवार ३० जनवरी को उत्तर प्रदेश के मुख्यमन्त्री माननीय श्री विश्वनाथ प्रतापसिंह दीक्षान्त भाषण देने के लिए आमन्त्रित किए गए हैं। उत्सव के अवसर पर शिक्षा राज्यमन्त्री श्रीमती शीला कौल, स्वामी काव्यानन्द, स्वामी मुनीश्वरानन्द, राजर्षि रणञ्जयसिंह, भू० पू० मन्त्री श्री कैलाश नाथ सिंह, अफ्रीका के सत्यदेव भारद्वाज, आचार्य जैमिनी शास्त्री, प्रो रतनसिंह, प० ओ३म्प्रकाश शास्त्री आदि सज्जनों के पधारने की उम्मीद है।

सभा-सूचनाएं

परोपकारिणी यज्ञ समिति दिल्ली वार्षिक अधिवेशन प० देवव्रत धर्मेन्दु जी की अध्यक्षता मे ३१ जनवरी १९८२ को मध्याह्न २ बजे आर्य बालगृह पटौदी हाउस दरियागज में सम्पन्न होगा।

आर्यसमाज नागदा (म०प्र०) के पदाधिकारी

प्रधान- श्री नन्दलाल आर्य
प्रधाना- श्रीमती उषा भाटिया
प्रधान- श्री रतन लाल
मन्त्री- श्री- नरेन्द्र कुमार
उपमन्त्री- श्री जोधासिंह राठौड़,
कोषाध्यक्ष- श्री गोवर्धनलाल आर्य

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रकाशन

सत्यार्थप्रकाश [illegible]
" (अंग्रेजी) [illegible]
आर्य सन्देश-महासम्मेलन विशेषांक [illegible]
पादरी भाग गया—
ओम्प्रकाश त्यागी ०.१५
स्वामी श्रद्धानन्द-बलिदान अर्द्ध शताब्दी स्मारिका ६.००
सत्यार्थप्रकाश शताब्दी समारोह स्मारिका ६.००

सम्पर्क करें—
अधिष्ठाता प्रकाशन विभाग
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा,
१५, हनुमान रोड,
नई दिल्ली-११०००१

卐 'आर्यसन्देश' के स्वय ग्राहक बनें— दूसरों को बनाएं
卐 आर्यसमाज के सदस्य स्वयं बनें— दूसरों को बनाइए
सस्कृत भाषा स्वयं पढें को भी पढ़ाइए—

श्री पुस्तकाध्यक्ष महोदय,
पुस्तकालय गुरुकुल कांगड़ी
विश्वविद्यालय हरिद्वार-
(उत्तर प्रदेश)

रजि० डी (सी) ७५६

दिल्ली आर्यप्रतिनिधि सभा के लिए श्री सरदारी लाल वर्मा द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा भाटिया प्रेस २२७७, [illegible] न० २ गांधीनगर दिल्ली-३१ में मुद्रित। कार्यालय १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली- फोन ३१०१५०

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक मुखपत्र

एक प्रति ३५ पैसे वार्षिक १५ रुपए वर्ष ६ अक १६ रविवार ४ फाल्गुन, वि० २०३८ १४ फरवरी १९८२ दयानन्दाब्द १५७

देश भर में गोवंश की रक्षा के लिए सौम्य सत्याग्रह शुरू

शालवाले ने आमरण अनशन के लिए विनोबा जी से अनुमति मांगी

नई दिल्ली विगत ३० जनवरी से समस्त देश मे गोवश की रक्षा के लिए आचार्य विनोबा भावे के नेतृत्व मे शृखला-सौम्य-सत्याग्रह प्रारम्भ हो गया है। उपलब्ध समाचारों के आधार पर कहा जा सकता है कि देश भर के विभिन्न नगरो और कस्बों मे हजारो व्यक्ति शृखला-सौम्य सत्याग्रह कर रहे हैं। यह सत्याग्रह २२ फरवरी तक चलेगा। दिल्ली मे यह सौम्य सत्याग्रह राजघाट तथा चादनी चौक मे स्वामी श्रद्धानन्द की प्रतिमा के पास किया गया।

इस सौम्य सत्याग्रह मे भाग लेने से पूर्व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले ने २२ फरवरी तक गोवश की हत्या पर रोक लगाने के लिए लोक सभा मे सविधान मे सशोधन का आश्वासन न मिलने की स्थिति मे २३ फरवरी से आमरण अनशन करने की अनुमति मागते हुए एक पत्र आचार्य विनोबा भावे को भेजा है।

अपने पत्र मे श्री शालवाले ने यह भी घोषित किया है कि गोवश की रक्षा मे आर्यसमाज का पूर्ण विश्वास और आस्था है, उसी के साथ उसकी सामाजिक और आर्थिक अपरिहार्यता भी है। यदि गोमाता की रक्षा के लिए किसी की ओर गरले पान की आवश्यकता है तो मैं आर्यसमाज का तुच्छ सेवक होने के लिए उसे देने के लिए तैयार हूं।

हैदराबाद में मिनी पाकिस्तान बनाने के लिए

दिलीप कुमार और मस्तान द्वारा १० करोड़ रुपए की मदद

दिल्ली। ज्ञात हुआ है कि कुख्यात स्मगलर हाजी मस्तान व दिलीप कुमार ने जिसका असली नाम युसुफ खान है, १० करोड रुपए हैदराबाद क्षेत्र को मिनी पाकिस्तान बनाने के लिए दिए है। यह भी पता चला है कि २ करोड रुपए हैदराबाद के मुख्यमन्त्री को भी भेंट मे दिए गए हैं, जिससे वे उनके नापाक इरादो मे कोई रुकावट न पैदा कर सके।

हैदराबाद। हिन्दू रक्षा समिति के प्रधान, श्री गोविन्द विजयवर्गी ने ३ फरवरी के दिन दिल्ली मे प्रेस को बताया कि हैदराबाद और आन्ध्र प्रदेश मे साम्प्रदायिक तनाव बढाने मे ये दोनो व्यक्ति विशेष रुचि ले रहे है। बजारा हिल की ४०० एकड भूमि भी एक बदनाम मुस्लिम सस्था द्वारा खरीदी गई है जो देश मे झगड़े कराने के लिए उत्तरदायी बताई जाती है। अखिल भारतीय हिन्दू रक्षा समिति के अध्यक्ष महात्मा वेदभिक्षु ने माग की है कि भारत सरकार तुरन्त कदम उठाकर विदेशी धन के प्रभाव से देश की आजादी को खतरे मे पडने से बचाए। उन्होने कहा कि यह भी पता चला है कि दिल्ली मे जो अन्तर्राष्ट्रीय मुस्लिम छात्र परिषद् का सम्मेलन हुआ था, उसमे भारत सरकार को उलटने के षड्यन्त्र किए गए है। भारत का सी आई डी. विभाग इन देशद्रोही तत्वो पर अकुश रखे अन्यथा देश की स्वतन्त्रता खतरे में पड जाएगी।

श्री ओम्प्रकाश त्यागी के स्वास्थ्य में सुधार

दिल्ली। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री ओम्प्रकाश त्यागी के स्वास्थ्य मे अब निरन्तर सुधार हो रहा है फलत निरन्तर परिचर्या-कक्ष से उन्हे चिकित्सालय के निजी कमरे मे स्थानातरित कर दिया गया है।

चिकित्सको ने सलाह दी है कि श्री ओम्प्रकाश त्यागी अगले छह महीनो तक पूर्ण विश्राम करें। श्री त्यागी के हृदय मे आए विकार को दूर करने के लिए अभी निरन्तर चिकित्सा अपेक्षित है।

साप्ताहिक आर्यसन्देश का अगला २१ फरवरी, १९८२ का अंक बोध-अंक होगा।

इस विशेषांक मे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री राम गोपाल शालवाले, श्री वीरसेन वेदश्रमी, भू० पू० संसद सदस्य, श्री शिवकुमार शास्त्री, अवनीन्द्रकुमार विद्यालकार डॉ० कृष्णलाल, प्रो० राजनाथ पाण्डेय, डॉ० रवीन्द्र अग्निहोत्री, आचार्य वीरेन्द्र मुनि, आचार्य दीनानाथ सिद्धान्तालकार आदि की रचनाएं प्रकाशित हो रही हैं।

अपनी प्रति सुरक्षित तुरन्त सुरक्षित कराए।

पृष्ठ संख्या ३२ . मूल्य १)

गीता का ज्ञान बड़ा उन्नत

हिन्दू धर्म में दीक्षित अरब विद्वान की स्वीकारोक्ति

बम्बई। अरबी और गीता का अनुवाद करने वाले फिलस्तीनी अरब विद्वान मुहम्मद याहा यूनुस (इस्कान) हरे कृष्ण के अनुयायी बनकर रावणादि दास बन गए हैं। उन्होने एक भेंट मे बतलाया है कि इस समय दुनिया आध्यात्मिक मार्ग दर्शन के लिए भारत की ओर देख रही है और भारत को इस चुनौती का स्वागत करना चाहिए।

फिलस्तीनी श्री रावणादि ने घोषित किया है कि दुनिया की समस्त बीमारियो का उत्तर कृष्ण मन्त्र है। उनकी दृष्टि मे कुरान का पाठ धर्मशास्त्रो का ज्ञान प्राप्त करने का प्रारम्भिक शिक्षण है तथापि भगवद् गीता का ज्ञान बडा उन्नत है। गीता ने उनके इस्लाम ज्ञान को परिपक्व किया है। उन्होने कहा कि भारतीयों के पास जब गीता है तब उन्हे अरबी या गीता पढने की जरूरत नही। आज अरब देशो के विश्वविद्यालयो के पाठ्यक्रम मे गीता स्वीकृत हो गई है। उनके अरबी गीता के अनुवाद की ७ हजार प्रतियां बिक गई है और ईशोपनिषद के अनुवाद की २२ हजार प्रतिया बिक गई हैं।

सम्पादक—नरेन्द्र विद्यावाचस्पति

व्यवस्थापक—प्रद्युम्नलाल तलवाड़

वेद-मनन

हमारा पिता के समान मार्गदर्शन कर

—मनोहर विद्यालंकार

पिता नोऽसि पिता नो बोधि नमस्ते अस्तु मा मा हिंसी.।
त्वष्ट मन्तस्त्वा सपेम पुत्रान्पशून् मयि धेहि।
प्रजामस्मासु धेहि, अरिष्टाऽहसहपत्या भूयासम् ।।यजु ३७-२०

ऋषि —दध्यङ् आथर्वण । देवता —ईश्वर । छन्द —निचृदति जगति ।

शब्दार्थ—हे ईश्वर (पिता न असि) तू हमारा पिता है (पिता नो बोधि) इसलिए पिता की तरह हमारा ध्यान रख और बोध प्रधान कर (नम ते अस्तु) हम तेरे प्रति नत होकर समर्पण करते हैं (मा मा हिंसी) हमें किसी तरह की पीड़ा न पहुंचा। (त्वष्टमन्त त्वा सपेम) त्वष्टा के कार्य करते हुए हम तेरे साथ अपना सम्बन्ध जोड़ते हैं। (मयि पुत्रान् पशून् धेहि) तू मुझे सुपुत्र और गौ अश्व आदि पशु प्रदान कर (अस्मासु प्रजा धेहि) घर के हम सब सदस्यों को सद्बुद्धि तथा जीवनोपयोगी पदार्थ प्रदान कर। (अहम्) मैं गृहपत्नी (पत्या सह) अपने पति के साथ (अरिष्टा भूयासम्) सब प्रकार से निर्विघ्न, सुरक्षित तथा सुखी रहूं।

निष्कर्ष—त्वष्टा का कार्य वीर्य को रूपान्तरित करके उसे निश्चित आकार प्रदान करना है। हमें भी असंस्कृत पदार्थों को रूपान्तरित करके उन्हें सुन्दर व उपयोगी स्वरूप प्रदान करने का प्रयत्न करना चाहिए, तभी हमारी त्वष्टा से संगति वास्तविक क्रियात्मक होगी।

यदि हम ईश्वर की व्यवस्था में पूर्ण विश्वास करके, उसके प्रति समर्पित होंगे, तो वह स्वयं हमारी देख-रेख करेगा और हर प्रकार की हिंसा से बचाएगा।

विशेष—पत्नी यदि अपने पति का ध्यान रखने वाली (दध्यङ्) और उस में संशय रहित पूर्ण विश्वास करने वाली होगी, तो उसे न कभी कष्ट होगा, न कभी कमी रहेगी, पति स्वयं उसकी सब आवश्यकताओं को पूर्ण करता रहेगा।

इस मन्त्र का छन्द संकेत करता है कि पति या पत्नी आत्मनिरीक्षण (निचृत्) के साथ प्रगतिशील (जगती) बने रहेंगे, वे घर में 'ईश्वर' के समान शासक बने रहकर पूजित और सत्कृत होते रहेंगे।

अर्थपोषक प्रमाण—सपेम—षप् समवाये (सम्बन्ध) बोधि-बोधय।

त्वष्टा—रेतसामधिकारी (मही-धर), त्वष्टा वैसिक्त रेतो विकरोति। मा० श० १६-२-१०।

प्रजाम्—प्रकर्षेण जायते इति बुद्धि। स्वामी भगवदाचार्य। पदार्थान्। स्वामी दयानन्द।

निचृद्—नि (अन्दर) + चृत् सदी-पने—आत्म निरीक्षण। जगती—गम् गतौ।

चृती हिंसा ग्रन्थनयो—बुराइयों या मतभेदों को समाप्त करके, परिवार को एक सूत्र में ग्रथित रखने वाली—प्रगतिशील।

५२२ ईश्वर भवन, खारी बावड़ी, दिल्ली-६

●

आर्यसमाज चौंक, प्रयाग का वार्षिकोत्सव

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि आर्यसमाज चौंक, प्रयाग का १०६वां वार्षिकोत्सव बड़े समारोहपूर्वक दिनांक ११ से १७ फरवरी ८२ तक आर्य कन्या कालेज, मुट्ठीगंज में मनाया जाएगा। इस अवसर पर सर्वश्री स्वामी मुनीश्वरानन्द सरस्वती दिल्ली, प्रो० भूदेव शास्त्री अजमेर, आचार्या रश्मिप्रभ शास्त्री हाथरस, पं० प्रशस्य मित्र शास्त्री रायबरेली ? प० ओमप्रकाश वर्मा अम्बाला, प० ज्ञान प्रकाश शर्मा मुरादाबाद से पधार रहे है।

समारोह के उपलक्ष्य में दिनांक १०-२-८२ को एक विराट शोभा-यात्रा आर्य कन्या कालेज मुट्ठीगंज से उठेगी जो नगर के प्रमुख मार्गों का परिभ्रमण करती हुई आर्यसमाज चौंक में विसर्जित होगी।

●

अग्रणी विद्वानों का सम्मान करें।

लेखक—आचार्य दिनेश चन्द्र येगशर शास्त्री

'वेद सर्वव्यापक, सर्वज्ञ, सर्वशक्ति-मान, शुद्ध स्वरूप, नित्य, अजर, अमर-परमपिता-परमात्मा का परम श्रेष्ठ ज्ञान है। जो कि सृष्टि के आदि में अग्नि, वायु, आदित्य, अंगिरा आदि महान् ऋषियों के आत्मा में प्रभु ने ज्ञान दिया।

सशित म इदं ब्रह्म सशित वीर्यं बलम्।
सशित क्षत्रमजमरमस्तु
विष्णुर्येषामस्मि पुरोहित ।।अ का ३।।

—अत्यन्त तीक्ष्ण मेरा यह ब्रह्म-ज्ञान है, वीरता, सामर्थ्य, शक्ति और स्वरक्षणार्थबल भी अत्यन्त तीक्ष्ण = तेज है। विजयी पुरोहित = प्रधान, अगुआ, नायक मैं हूं। क्षात्र सामर्थ्य अत्यन्त तीक्ष्ण तथा = न दबने वाला हो।

आगे मन्त्र में कहा—

तीक्ष्णीयास परशो रग्नेस्तीक्ष्णतरा उत।
इन्द्रस्य वज्रात् तीक्ष्णीयासो येषामस्मि पुरोहित ।।अ० को०।।३।।

अर्थात्—जिन यजमानों का मैं पुरोहित हूं। वे वीर फरसे = कुल्हाड़ी से अति तेज होते हैं। अग्नि से भी अधिक तीक्ष्ण है तथा मेघ के वज्र = बिजुली से भी अधिक तेज होते हैं।

ऋग्वेद म ९ सू० ६६ में कहा है—भूर्भुव स्व अग्निऋषि पवमान पाञ्च-जन्य पुरोहित। तमीमहे महागय स्वाहा।। यह मन्त्र ऋषिवर ने स विधि में भी लिखा है।

भावार्थ—ज्ञानस्वरूप (ऋषि) सर्वव्यापक प्रभु हमको पवित्र करने वाला कुविचारों से छुड़ाने वाला है। पांचों ज्ञानेन्द्रियों को शुभ पथ में चलाने वाला पुरोहित है। उस स्तुति के योग्य पर-मात्मा को हम पाया करते हैं।

स्वस्ति वाचन के मन्त्रों में भी सर्व-प्रथम मन्त्र में पुरोहितम् कहा है। परमात्मा को भी पुरोहित कहा गया है। जो मन्त्र इस प्रकार हैं—अग्निमीडे पुरोहित यज्ञस्य देवमृत्विजम्। होतार रत्नधातमम् ।।ऋ०।।

अर्थात्—पुरोहितम् = सबके प्रेरक नेता, अगुआ श्रेष्ठ कर्म के प्रकाशक ऋतुओं में पूजनीय दान करने हारे और रत्नों के धारण करने वाले ज्ञान मय परमेश्वर की मैं ईडे = प्रशंसा, स्तुति करता हूं।

महर्षि दयानन्द जी महाराज सत्यार्थ प्रकाश समुल्लास चतुर्थ में मनुस्मृति का यह श्लोक प्रस्तुत करते हैं—ऋत्विक् पुरोहिताचार्य्यैर्मातुलातिथि संश्रितैः। "बालवृद्धातुरैर्वैद्यैर्ज्ञाति सम्बन्धि-बान्धवैः।' इसमें से पुरोहित पद का अर्थ किया है 'सदा उत्तम चाल-चलन की शिक्षाकारक'/यजुर्वेद अ ३१ में भी कहा है—यो देवाना पुरोहित। यहां पर भी पुरोहित शब्द कहा है। निरुक्त में कहा है 'पुरएन दधति' जिसे नेता, अग्रगन्ता, मार्ग-प्रदर्शक, अगुआ, लीडर बनाया जाता है, वह पुरोहित है। पुरोहित के सम्बन्ध में अनेकों प्रमाण हैं। वैदिककाल में वैदिक पुरोहित को समस्त राष्ट्र अथवा श्रेष्ठ समाज में नायक पुरोहित कहा जाता था। पुरोहित का कार्य केवल संस्कार कराना ही नहीं होता, पुरोहित को सब विद्याओं का जानना अत्यन्त आवश्यक है। सब प्रकार के कल्याण और अभ्युत्थान के लिए क्रियामय प्रयत्न करना पुरोहित का कर्त्तव्य होता है। पुरोहित सम्बन्ध में ऋषिवर स विधि में लिखते हैं कि—'धर्मात्मा शास्त्रों का विधि को पूर्ण रीति से जानने हारा विद्वान् सद् धर्मी कुलीन निर्व्यसनी सुशील वेदप्रिय पूजनीय सर्वोपकारी गृहस्थ की पुरोहित संज्ञा है।' पुरोहित का वेद-वेदांगों का महान् विद्वान् एवं उत्तम चरित्रवान् होना चाहिए तथा वैदिक सिद्धान्तों का मर्मज्ञ होना चाहिए। वैदिक कर्मकाण्ड का महान् ज्ञाता-अभ्यासी अनुभवी होना चाहिए। 'स्व-मन्तव्यामन्तव्य प्रकाश' में महर्षि लिखते हैं—'पुरोहित—जो यजमान का हित-कारी सत्योपदेष्टा होवे।' पुरोहित को सत्यप्रियवादी एवं उत्तम व्यवहार कुशल होना चाहिए। जो इस प्रकार के वैदिक पुरोहित हैं 'वय राष्ट्रे जागृयाम पुरो-हिता।' उनका सर्वदा सत्कार करना चाहिए। पुरोहित का कभी अनादर न करना चाहिए। पुरोहित की शिक्षा का पालन करना चाहिए। पुरोहित नौकर नहीं होता। पुरोहित को उत्तम धनादि देकर आदर किया जाता है। पुरोहित सदा-पूजा = सत्कार योग्य होता है। यदि अपनी समाजोन्नति करनी है तो वैदिक पुरोहितों का सदा सत्कार करें, वैदिक उपदेशक विद्वानों का सम्मान करते रहें।

आर्यसमाज, डिफेंस कालोनी, नई दिल्ली-३

हम प्रतिक्षण सौभाग्यशाली हों !

ओ३म् उतेदानी भगवन्त स्यामोत प्रपित्व उत मध्ये अह्नाम् ।
उतोदिता मघवन्त्सूर्यस्य वय देवाना सुमतौ स्याम ॥

ऋग्वेद ७ ४१ ४

हे भगवन् हम प्रात काल—सूर्योदय के प्रकाशमय समय मे दिवस के प्रारम्भ मे पूर्वाह्न, मध्याह्न, अपराह्न और सूर्यास्त के समय-सब समयो मे प्रतिक्षण भाग्यवान् हो, सुख-सौभाग्य के स्वामी हो।

ओ३म्
आर्य सन्देश

सा विद्या या विमुक्तये

उस दिन पाचवें विश्व पुस्तक सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए भारत की प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाधी ने पते की बात कही थी कि उनके व्यक्तिगत निर्माण मे बाल्यावस्था मे उनके द्वारा पढी हुई पुस्तको का बडा योगदान है। वाटरलू के मैदान मे फ्रास के अद्वितीय योद्धा नेपोलियन को पराजित करने वाले अग्रेज सेनापति ड्यूकआफ विलिगटन ने स्वीकार किया था कि उनकी विजय के लिए बाल्यावस्था के दिनो मे खेल के मैदान मे उनका अनुशासन बद्ध जीवन कहा जा सकता है। इन दो उदाहरणो मे भली प्रकार समझा जा सकता कि बचपन के दिनो मे प्राप्त समुचित शिक्षा से ही महा-मानवों का निर्माण हो सकता है । आज विश्व भर मे-जिसमे हमारा देश भी सम्मिलित है—अविद्या, अज्ञान, कुरीतियों का साम्राज्य छाया हुआ है। इसे साम्राज्य का अन्त करने के लिए सर्वत्र विद्या—सच्ची विद्या का प्रसार होना चाहिए। ऐसी विद्या का प्रसार होना चाहिए जिससे मानव का अज्ञान, कुरीतिया और भ्रान्त सस्कार नष्ट हो सके । आज सर्वत्र पुस्तकीय ज्ञान का प्रसार आवश्यक हो रहा है, परन्तु यह सच्ची सार्थक विद्या नही है। सच्ची विद्या तो वह है जिससे मानव अपनी भ्रान्तियो, अज्ञान से मुक्त हो सके—'सा विद्या या विमुक्तये ।'

आज संसार भर मे अर्थकरी विद्या का बोलबाला है। हमारे अपने देश मे भी पुरानी उदात्त परम्पराओ और मानव को अभ्युदय और नि श्रेयस के मार्ग पर ले चलने वाली ज्ञान-परम्परा का धीरे-धीरे ह्रास होता जा रहा है। वैदिक सस्कृति की उदात्त परम्परा के अनुसार आर्य या श्रेष्ठ विश्वमानव वही हो सकता है जो इस पृथिवी को अपनी माता समझे। हम मन वचन-कर्म से सच्चे मानव बने। विश्व एव मानवता का सच्चा शुद्धिकरण करने के लिए हम व्यक्ति, समाज, राष्ट्र और सब के दिव्यीकरण की साधना प्रारम्भ करें। इतना ही नही शुद्धता या शुचिता का सम्बन्ध केवल शारीरिक या भौतिक शुद्धि से न होकर अन्त करण की पवित्रता से है। शुचिता का नाता वस्तुत व्यवहार की पवित्रता से है। जो व्यक्ति और समाज शुद्धता और शुचिता से सम्पन्न हो, वे ही दूसरो को पवित्र बना सकते है। आज सारा ससार भ्रम, भय और भोग के तीन पाशो या बन्धनो से जकडा हुआ है। महर्षि दयानन्द ने व्यक्ति और समाज को इन तीनो ही बन्धनो से छुडाने का प्रयास किया था।

आर्यसमाज के निर्माण एव प्रसार को एक शताब्दी व्यतीत हो चुकी है। इस अवधि मे आर्यसमाज और उसके मन्तव्य को मानने वाले आर्यजनो ने भारत और दूसरे देशो मे आर्यसमाज के प्रचार एव प्रसार के लिए बहुत कुछ किया है। इस व्यापक प्रचार से यद्यपि आर्यसमाज और उसकी सस्थाओ का जाल सर्वत्र फैला है, तथापि इस तथ्य से इन्कार नही किया जा सकता कि भारत और विश्व मे आज भ्रम, भय और भोग का जितना फैलाव है, उसे देखते हुए प्रतीत होता है कि हम सच्चे आर्यत्व का प्रसार करने मे सफल नही हो पाए हैं। एक शताब्दी पूर्व हमारे देश मे जितनी कुरीतिया छुआछूत, भय और भोग की दुरवस्था पूर्ण स्थिति थी, आज भी उसका कम प्रभाव नहीं है। उन दिनों आर्यजनो का तेजस्वी त्याग, बलिदान से भरा जीवन आज भी प्रेरणा का स्रोत है। आज सर्वत्र विलास और भोग से पूर्ण अर्थकरी विद्या की उपासना के लिए प्रयत्न किया जा रहा है, पुराने आर्यजनो के बच्चे भी नई अर्थकारी पैसा कमाने वाली तालीम के चक्कर मे आधुनिक शिक्षासस्थाओ पब्लिक स्कूलों और कन्वेण्टो मे दाखिल कराए जाते हैं। जीवन मे यन्त्रो एव वैज्ञानिक सुविधाओ का उपयोग अनुचित नहीं है, परन्तु उन सुविधाओ अथवा योग के लिए त्याग, बलिदान की उदात्त परम्परा का त्याग भी उचित नहीं कहा जा सकता। हम विश्व एव मानवता को उसी स्थिति मे पवित्र बना सकते हैं, जब हम स्वत पवित्र हो। स्वत पवित्र होने के लिए हमे त्याग, बलिदान की भावना मे ओत-प्रोत शुचिता और शुद्धता अपने व्यक्तिगत एव सामाजिक जीवन मे लानी होगी।

चिट्ठी-पत्री

राष्ट्रभाषा की प्रतिष्ठा कब ?

भारत को पूर्ण स्वतन्त्रता प्राप्त किए पूरे बत्तीस वर्ष हो रहे है। भारतीय सविधान आज से बत्तीस वर्ष पूर्व २६ जनवरी, १९५० को लागू किया गया था, लेकिन दु ख है कि इतने लम्बे अन्तराल के बाद भी आज हमारी राष्ट्रभाषा को राष्ट्र भाषा के रूप से वह प्रतिष्ठा नही मिल सकी, जो उसे मिलनी चाहिए। मानसिक गुलामी के प्रतीक स्वरूप अग्रेजी आज भी सारे देश मे सम्मानित हो रही है और राष्ट्रभाषा हिन्दी को अपमानित व उपेक्षित होना पड रहा है। आए दिन सरकार हिन्दी के सम्मान मे श्रीवृद्धि करने की घोषणाए करती है, किन्तु इस दिशा मे कोई ठोस कदम नहीं उठाया जाता। विभिन्न प्रान्तीय सरकारे भी द्वितीय राजभाषा के नाम पर उर्दू को उछाल रही है, लेकिन अपनी राष्ट्रभाषा अपने ही घर मे तिरस्कृत हो रही है। क्या इस दिशा मे हमारी सरकार कुछ सोच सकेगी ?

—राधेश्याम आर्य एडवोकेट,
मुसाफिर खाना, सुल्तानपुर (उ० प्र०)

गोबध प्रतिबन्ध की मांग

गाय हमारी भारतीय सस्कृति की प्रतीक है। इसका दुग्ध जहा एक ओर अमृत है वहा दूसरी ओर उसका मल-मूत्र भी हमारे लिए अत्यन्त उपयोगी है। आज गोबर-गैस सयन्त्र, उर्वरक आदि अनेक नई वैज्ञानिक विधिया कृषि मे उपयोगी सिद्ध हो रही है। कभी 'घी-दूध की नदिया बहने' कहा जाने वाला भारत आज गोदुग्ध के लिए तरस रहा है। वास्तव मे यदि भारत की आर्थिक, सामाजिक एव सास्कृतिक उन्नति हो सकती है तो वह गोबध पर सम्पूर्ण प्रतिबन्ध के द्वारा ही सहायक हो सकती है।

उपर्युक्त विचार आर्य युवक सभा, प्रयाग, उत्तर प्रदेश के महामन्त्री श्री सुरेश चन्द्र शास्त्री ने व्यक्त करते हुए भारत सरकार से सम्पूर्ण देश मे गोवध पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगाने की माग की है। उन्होने कहा है कि पिछली सरकार द्वारा आचार्य विनोबा भावे के आमरण अनशन को समाप्त कराते हुए गोवध प्रतिबन्ध माग की पूर्ति सविधान की अनुसूची मे शामिल कर, करने का आश्वासन दिया गया था और वर्त्तमान प्रधान-मन्त्री माननीय श्रीमती इन्दिरा गाधी जी द्वारा भी इसमे सहयोग का आश्वासन दिया गया था, परन्तु इतना पर्याप्त समय बीतने के पश्चात् भी आश्वासन पूरा नही हो सका है।

इस स्थिति मे वयोवृद्धि सर्वोदयी आचार्य विनोबा भावे द्वारा पुन 'सौम्य सत्याग्रह' का शुभारम्भ कर दिया गया है और आर्यसमाज सहित देश की समस्त गोप्रेमी सस्थाओ द्वारा गोवध पर पूर्ण प्रतिबन्ध न होने तक आन्दोलन का कार्यक्रम बनाया जा रहा है। आशा है शीघ्र ही भारत सरकार देश के जन-वासियो की भावनाओ का आदर करते हुए सम्पूर्ण गोवश की हत्या पर पूर्ण प्रतिबन्ध की वैधानिक कार्यवाही करेगी।'

गाजियाबाद आर्यसमाजों का भीष्म पितामह

श्री हरिश्चन्द रत्ता का देहावसान

आर्यसमाज भारत नगर के पथ प्रदर्शक एव वैदिक धर्म के दीवाने, वैज्ञानिक श्री हरिश्चन्द्र जी रत्ता का हृदयगति बन्द हो जाने से २ फरवरी ८२ को प्रात चार बजे देहावसान हो गया। आप रत्ता निवास, डी०-२१, दयानन्द नगर गाजियाबाद मे रहते थे।

आप उत्तर रेलवे मे लोको स्टाफ के रिटायर्ड प्रधान इस्पेक्टर थे। अपने कार्य-काल मे इतने बडे पद पर रहते हुए भी सामान्य नागरिको और रेलवे कर्मचारियो से धन सग्रह करके आर्यसमाज भवन निर्माण कार्य मे अपनी समस्त क्षमताओ का उपयोग करते थे। आपकी कृपा से आर्यसमाज भारत नगर तीन मजिल मे बना खडा आपकी कर्मठता का बखान कर रहा है।

क्या आर्यसमाज का पुनर्गठन वांछनीय है?

लेखक-आचार्य दत्तात्रेय, प्रधान आर्य समाज अजमेर

आर्यसमाज की वर्त्तमान स्थिति मे चिन्तित प्राय सब निष्ठावान आर्य पुरुष और महिलाए तक यह अनुभव करते है कि उसके भविष्य के सम्बन्ध मे गम्भीरता पूर्वक विचार करने का अब समय आ गया है। वस्तुत १८७५ मे आर्यसमाज स्थापना तथा १९८१ मे सत्यार्थ प्रकाश शताब्दियो के अवसर पर आर्यसमाज के भावी सुधार और कार्यक्रम जैसे महत्वपूर्ण विषय पर विचार होना चाहिए था। अस्तु, अब १९८३ मे दयानन्द निर्वाण शताब्दी का तीसरा और सम्भवत इस कार्य के लिए अन्तिम अवसर हमारे सामने है।

आर्यसमाज के वास्तविक स्वरूप, उसके उज्ज्वल भविष्य और प्रभाव जनक अस्तित्व को सुरक्षित रखने का कोई भी प्रयत्न तब तक सफल नही हो सकता, जब तक उसके वास्तविक स्वरूप तथा वर्तमान स्थिति के सम्बन्ध मे नीचे लिखे आधारभूत तथ्य ध्यान मे नही रखे जाते।

१—प्रथम यह कि हिन्दुओ के सगठन और उनकी एकता बनाए रखने के लिए हिन्दू शब्द के आधुनिक और धर्मरहित अर्थ मे आर्यो की गिनती हिन्दुओ मे हो। यह स्वीकार करने के उपरान्त भी यह स्पष्ट है और होना चाहिए कि आर्यसमाज तथा कथित हिन्दू धर्म का सम्प्रदाय नही है। अपितु धार्मिक दृष्टि से यह प्राचीन वैदिक धर्म का स्वतन्त्र और पृथक आधुनिक सस्करण है। आयसमाज का ऐसा पृथक अस्तित्व स्वय हिन्दुओ के भी व्यापक हित मे है।

२—द्वितीय यह कि आर्यसमाज केवल एक समाज सुधार आन्दोलन मात्र नही था और न है। इसलिए अभी तक प्रचलित इस व्यापक किन्तु भ्रमपूर्ण धारणा को बदल कर महर्षि दयानन्द की कल्पना के आर्यसमाज के वास्तविक सार्वभौम धार्मिक क्रातिकारी स्वरूप को उजागर करना भी आवश्यक है।

३—तीसरे यह कि हिन्दू समाज सुधारक आन्दोलन के रूप मे भी अब आर्यसमाज का नेतृत्व और प्रभाव ही नही, बल्कि स्वराज्य के बाद पहले जैसे आवश्यकता भी प्राय समाप्त हो गई है, इसलिए ऋषि दयानन्द ने जिस वैदिक धर्म के प्रसार और प्रचार के लिए उसकी स्थापना की थी, वही उसके भविष्य को सुरक्षित और पुन. प्रभावशाली बनाने का आधार हो सकता है। हिन्दू रक्षा और समाज सुधार की सफलता के लिए भी यह आवश्यक है।

४—चौथे यह कि उपर्युक्त सर्वसिद्ध और स्पष्ट तथ्यो की जानबूझ कर उपेक्षा करने अथवा अब भी उनसे अनभिज्ञ बने रहने के परिणामस्वरूप आज आर्यसमाज शनै-शनै अपनी प्रारम्भिक शक्ति, प्रगति और विशिष्टता खोता जा रहा है। मूर्ति-पूजा, श्राद्ध, तीर्थ जैसे धार्मिक अन्धविश्वासों और जातपात जैसे सामाजिक अभिशापो के उन्मूलन का आर्यसमाज ने बीडा उठाया था, आज उन सब का वह स्वय शिकार होकर पौराणिक हिन्दू समुदाय बनता जा रहा है, जिसकी सदस्यता केवल कुछ औपचारिक शर्तो पर निर्भर है।

आर्यसमाज के प्रारम्भिक इतिहास से परिचित व्यक्तियो को बताने की आवश्यकता नही है कि प्रारम्भ मे उसकी सदस्यता के लिए केवल १० नियमो को स्वीकार करना पर्याप्त समझा जाता था, किन्तु इस आधार पर पजाब के लाला मूलराज जैसे प्रमुख व्यक्तियो ने जब सैद्धान्तिक मामलो मे सन्देहपूर्ण रवैया अपनाया तब १० नियमो के अतिरिक्त ऋषि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित मन्तव्यो को स्वीकार करना और उनके अनुकूल व्यवहार करना भी आर्यसमाजियो के लिए अनिवार्य कर दिया गया। वस्तुत आर्यसमाज के प्रथम ३ नियमो मे व्यक्त उसके धार्मिक स्वरूप को असदिग्ध रूप से परिभाषित करने के लिए भी यह परिवर्तन आवश्यक था किन्तु कालान्तर मे जैसे-जैसे आर्यसमाज की लोकप्रियता बढने लगी, वैसे-वैसे सिद्धान्त सम्बन्धी यह सावधानी भी केवल औपचारिकता मात्र समझी जाने लगी और आज स्थिति यह है कि मूर्ति-पूजा, तथा श्राद्ध आदि जैसे निषिद्ध व्यवहार करने वाले व्यक्ति केवल सदस्य ही नही, आर्यसमाज के और उसकी सस्थाओ के पदाधिकारी तक हैं।

इसलिए उप नियम की सिद्धान्त सम्बन्धी इस शर्त को और अधिक स्पष्ट तथा अनिवार्य करने के लिए उसके साथ निम्नलिखित प्रतिज्ञा पर भी हस्ताक्षर करने का प्रावधान करना चाहिए अर्थात —

—मैं मूर्ति अथवा ईश्वर के प्रतीक के रूप मे किसी जड़ वस्तु को पूजा अथवा तीर्थ, श्राद्ध, जन्म-विवाह, मृत्यु आदि अवसरों पर अवैदिक रीति-रिवाजो तथा जन्मगत जातपात और छुआछूत का मन, वचन, कर्म से विरोध करने का प्रण करता हूं—

पौराणिक हिन्दुओं से आर्यो की भिन्नता और पहचान के लिए यह न्यूनतम व्यावहारिक आचरण है। ऋषि दयानन्द ने अपने जीवन, उपदेश तथा ग्रन्थो मे यदि किसी एक बात का सबसे अधिक निषेध किया है तो वह मूर्ति पूजा और उससे सम्बन्धित अन्ध विश्वास है। उन्होने यहा तक चेतावनी दी थी कि यदि मूर्तिपूजा पर आर्यसमाज ने समझौता कर लिया तो वह किसी दिन पौराणिक हिन्दुओ मे विलीन हो जाएगा।

कुछ अन्य सुझाव निम्न प्रकार है—

१—उपनियम सशोधन उप नियमो मे यह प्रावधान होना चाहिए कि कोई आर्यसमाजी अपने नाम के साथ कोई जन्मगत जातिसूचक उपनाम का प्रयोग नहीं करेगा और उपनाम के रूप मे केवल आर्य का ही प्रयोग करेगा। इसका एक स्वाभाविक परिणाम यह होगा कि आर्यसमाजियो के लडके-लडकियां स्कूलो मे अपने नाम के साथ आर्य उप नाम स्वत लिखेगे और इस प्रकार जन्मगत आर्यो की परम्परा प्रारम्भ हो सकेगी जैसा अन्य धर्मो मे उत्पन्न होने वाली पीढी के साथ होता है।

२—समाज की सदस्यता आर्य समाज मे प्रवेश के समय एक वर्ष की सहायक सदस्यता की अवधि मे उन्हे उपयुक्त साहित्य अथवा अल्पकालीन प्रशिक्षण आदि के माध्यम से वैदिक सिद्धान्तो और आर्यसमाज के सगठन आदि से अवगत कराया जाए तत्पश्चात एक औपचारिक दीक्षा के बाद पूर्ण सदस्य बनाया जाए।

३—न्याय सभा न्याय सभा का एक मुख्य कार्य यह होना चाहिए कि स्वय अथवा सूचना प्राप्त होने पर सिद्धान्त सम्बन्धी उपर्युक्त नियमो का उल्लघन करने वाले सदस्य के विरुद्ध जाच करके अनुशासन की उचित कार्यवाही करे।

४—सदस्य श्रेणी सदस्यो की दो श्रेणिया हो, एक साधारण जो व्यक्तिगत और पारिवारिक तथा सामाजिक जीवन मे आर्यसमाज के सिद्धातो का पालन करते हो और इन्ही मे से अन्य सक्रिय सदस्य हो जो निम्नलिखित या अन्य निर्धारित रचनात्मक कार्यों मे से किसी एक मे सलग्न हो—

(अ) वैदिक सिद्धान्तो का प्रचार और प्रसार जिसमे उपदेश, भजनोपदेश, कथा और सत्सग, साहित्य लेखन और प्रकाशन, जन सम्पर्क, नवीन सदस्यो का प्रवेश आदि सम्मिलित समझे जाए, (ब) शुद्धि (स) सामाजिक कार्य जैसे सहायता और सेवा कार्य, (क) जात पात तथा छुआछूत का निराकरण, (ख) शिक्षा-प्रसार, (ग) महिला-सुधार (घ) ग्राम-प्रचार आदि।

५—पुरोहित प्रणाली : प्रत्येक आर्यसमाज मे पूरे समय के लिए एक विद्वान पडित या पुरोहित को रखने की व्यवस्था करनी चाहिए। छोटी समाजे मिलकर भी अपना सम्मिलित पुरोहित रख सकती है। सस्कार, कथा व्याख्यान और प्रचार के अतिरिक्त पुरोहित का एक मुख्य कार्य यह होना चाहिए कि वह नियमबद्ध कार्यक्रम के अनुसार प्रत्येक सदस्य के परिवार मे जाकर महिला तथा बच्चों को वैदिक सिद्धान्तो से परिचित कराए।

६—सस्कार : आर्यो के मुख्य सस्कार जैसे यज्ञोपवीत विवाह आदि आर्यसमाज मन्दिर मे ही सम्पन्न हो, घर पर होने वाले सस्कार भी वैदिक रीति से करने आवश्यक है।

७—शिक्षण सस्थाए : आर्यसमाज से सम्बन्धित शिक्षण सस्थाओ के प्रधान तथा मन्त्री और कम-से-कम दो तिहाई अन्तरंग सदस्य किसी-न-किसी आर्यसमाज के सदस्य अथवा जाने-माने आर्यसमाजियो मे से ही चुने जाने का नियम होना चाहिए।

८—चुनाव प्रणाली . वर्त्तमान चुनाव-पद्धति मे धार्मिक के स्थान मे राजनीतिक मनोवृत्ति पनप रही है, उसमे सुधार की आवश्यकता है। पदाधिकारियो के लिए उम्र योग्यता, सिद्धात निष्ठा आदि की विशेष शर्ते होनी चाहिए और सन्यासी, वानप्रस्थी अथवा पूरा समय देने वाले व्यक्ति ही प्रधान, मन्त्री आदि चुने जाए। राजनीतिक दलो के पदाधिकारी आर्यसमाज और उसकी सभाओ के पदाधिकारी न हो सकें यह प्रावधान भी जरूरी है।

९—प्रचार शैली धर्मप्रचार तथा उत्सवो की वर्त्तमान शैली मे सुधार की आवश्यकता है। उन्हे विशुद्ध धार्मिक सत्सग का रूप दिया जाना चाहिए। व्यक्तिगत सम्पर्क द्वारा घर-घर जाकर सरल और सस्ते साहित्य के वितरण तथा सेवा और सहायता कार्य के माध्यम से किए गए धर्मप्रचार का अधिक व्यापक और चिर-स्थायी प्रभाव होता है।

१०—साहित्य प्रकाशन : सार्वदेशिक सभा को अपने अन्य साधारण कार्यो के अतिरिक्त एक केन्द्रीय विशाल पुस्तकालय, शोध-केन्द्र तथा प्रचुर मात्रा मे और अनेक भाषाओं मे सस्ते और सरल साहित्य प्रकाशन के कार्य को महत्व देना चाहिए।

११—उपदेशक व प्रचारक . इसी

शेष पृष्ठ ५ पर

भारत की राष्ट्रीय धारा और भारतीय मुसलमान

स्वामी वेद मुनि परिव्राजक

दिल्ली के तीन दिवसीय "मुस्लिम सम्मेलन" की समाप्ति पर "नवभारत टाइम्स" के सम्पादक महोदय ने ६ जनवरी १९८२ के अंक मे अपनी सम्पादकीय टिप्पणी मे लिखा है कि मुस्लिम युवक सम्मेलन की आवश्यकता और उद्देश्य क्या था यह तो स्पष्ट नही परन्तु उसके संयोजक ने सम्मेलन के बाद जो कुछ बताया, उससे इतना तो स्पष्ट है ही कि मुस्लिम युवको को राष्ट्रीय धारा मे एकाकार होने और भारतीय मुस्लिम समाज को घर मे और घर से बाहर शेष समाज के साथ कदम मिलाकर चलने को प्रेरित करने पर विचार नही किया गया। इस समाज की प्रत्येक समस्या पर इस प्रकार विचार किया, जैसे वह एक पृथक-इकाई है और इस पृथकता की रक्षा करने के लिए उसे प्रत्येक मोर्चे पर संघर्ष करना होगा।

एक पृथक समाज

वास्तविकता यह है कि भारत के मुसलमान कभी भी भारतीय समाज का अंग बनकर नही रहे। भारतीय इतिहास मे कोई पृष्ठ ऐसा नही है जो मुस्लिम वर्ग को भारतीय समाज का अंग प्रमाणित करता हो, फिर चाहे वह भारत मे मुस्लिम साम्राज्य काल का इतिहास हो अथवा ब्रिटिश काल का। इतिहास साक्षी है कि मुस्लिम साम्राज्य काल मे भी शासन मुसलमानो के विषय मे दूसरे ढंग से सोचता था और हिन्दुओ के विषय मे दूसरे ढंग से और ब्रिटिश काल मे भी यही स्थिति थी। इस्लाम की भारत मे उपस्थिति और मुस्लिम शासन के प्रारम्भ से लेकर ब्रिटिश काल के अन्त १५ अगस्त सन् १९४७ तक एक सहस्र वर्ष की अवधि मे इस वर्ग के लोग अपने को पृथक समाज मानने के अभ्यस्त हो गए।

मुसलमान शासको ने तो अपने को उच्च सिद्ध करने के लिए और साथ ही इस्लाम को अपने साम्राज्य की शक्ति बनाए रखने के लिए ऐसा किया और इस शक्ति को परिपुष्ट बनाए रखने के लिए समय-समय पर कुछ हिन्दुओ को भी अपनी सेनाओ और दरबार मे कुछ सम्मान देकर स्व साम्राज्य के लिए प्रयुक्त किया। ब्रिटिश शासकों ने भी "फोड़ो और राज्य करो" की नीति अपना कर मुसलमानो को हिन्दू समाज से दूर रखना और निरन्तर उस दूरी को और लम्बी करने के लिए अंग्रेज प्रयत्नशील रहे। अंग्रेजों के इस प्रयत्न के कारण ही मुस्लिम लीग का जन्म हुआ और द्विराष्ट्र सिद्धान्त की मान्यता के फलस्वरूप मुसलमानों के लिए पाकिस्तान राष्ट्र गृह बनाकर दे दिया गया।

दुर्भाग्य भारत का यह रहा कि यहा के नेताओ ने अपने को उच्चकोटि का मानवतावादी सिद्ध करने के व्यामोह मे प्रत्यक्ष प्रमाण और क्रियात्मक रूप मे भारत पृथक मुस्लिम राष्ट्र पाकिस्तान बन जाने पर भी यह सच्चाई स्वीकार नही की। विचित्रता तो यह है कि द्विराष्ट्र सिद्धान्त के दस्तावेज पर हस्ताक्षर करके भी भारत के नेताओ ने अपनी हवाई उड़ाने बन्द नही की इन लोगो ने ईमानदारी से तथ्य को स्वीकार करने का साहस दिखाया होता तो तभी आबादी का परिवर्तन हो जाता और जिस मान्यता को लेकर बटवारा हुआ था उसके अनुसार सब हिन्दू इधर होते और सब मुसलमान उधर। यद्यपि मोहम्मद अली जिन्ना ने यह स्पष्ट कहा था कि पहले आबादी का परिवर्तन कर लिया जाय बाद मे सेना का बटवारा किया जाए। यदि ऐसा नहीं किया तो बेतहाशा रक्त-पात होगा क्योंकि दोनो ओर की भावनाए भड़की हुई हैं। प्रश्न यह है कि पाकिस्तान बना ही मुसलमानो के लिए था तो फिर मुसलमान वही क्यो न बसाये जाए? हमारे नेताओ का कहना था कि मौलाना आजाद जैसे मुसलमान कांग्रेस मे रहे, अत वह राष्ट्रवादी है। इनके विचार मे आजाद आदि कतिपय मुसलमानो के कारण मुस्लिम लीग को छोड़कर शेष मुसलमान राष्ट्रवादी बने हुए थे बात न तो तब ऐसी थी और न अब ऐसी है। सर्वसाधारण मुसलमान तब भी पाकिस्तान के पक्ष मे था और आज भी यही स्थिति है।

मौ० आजाद की स्वीकारोक्ति

वास्तविकता तो यह है कि स्वय मौलाना आजाद भी भारत के हित मे पाकिस्तान विरोधी नही थे। वह पाकिस्तान को मुसलमानो के हित मे नही समझते थे एक बार जब ट्रेन मे यात्रा करते हुए मुस्लिम विश्वविद्यालय अलीगढ के छात्रो ने मौलाना आजाद की दाढी नोची थी, तब उसके बाद पत्रकारो से वार्ता करते हुए मौलाना ने यह कहा था कि मैं पाकिस्तान का इसलिए विरोधी हू क्योकि पाकिस्तान को मुसलमानो के हित मे नही समझता। यदि मुझे उससे मुसलमानो का हित होता दिखाई देता तो मैं सबसे पहला व्यक्ति होता जो पाकिस्तान का समर्थक होता।

इस समय यदि जिन्ना और आजाद के दृष्टिकोण और कार्यकलाप पर गम्भीरता से विचार किया जाए तो यह स्पष्ट है कि यदि जिन्ना ने पाकिस्तान के रूप मे मुसलमानो को भारत मे एक राष्ट्र गृह बनाकर दिया तो मौलाना आजाद ने पाकिस्तान का विरोध करके और कांग्रेस तथा उसकी ओट से भारत मे रहकर भारत के इस्लामीकरण का मार्ग प्रशस्त किया।

कटु स्थिति की ओर ध्यान दें

इतना सब होने पर भी भारत का एक और बड़ा दुर्भाग्य यह रहा कि स्वाधीनता के गत ३४ वर्षों मे इस देश के न समझ नेताओं ने कोई ऐसा अवसर और ऐसा कार्य करने से नही छोड़ा जिससे मुसलमानो मे पृथककरण की भावना पनपती और दृढ से दृढतर होती है। इसका परिणाम प्रत्येक पग पर सामने आ रहा है। परिवार नियोजन को मुसलमान कुफ्र अर्थात इस्लाम के विरुद्ध समझता है। वह अपनी संख्या वृद्धि कर एक और पाकिस्तान बनाने की योजना मे लगा है। इस विषय के विशेषज्ञो का मत है कि यदि मुसलमान परिवार नियोजन से दूर रहा और इस प्रकार केवल हिन्दुओ की नसबन्दी होती रही और मुसलमानो को चार-चार पत्नियां रखने की छूट रही तो सन् २००० मे भारत मे मुसलमानो की संख्या ५१ प्रतिशत हो जाएगी। इतने पर अरब देशो के धन के बल पर वह हरिजनो को इस्लाम मे दीक्षित कर लेना चाहता है और इस कार्य के लिए ये लोग निरन्तर प्रयत्नशील है। अब कोई भारत के राजनीतिक नेताओ से पूछे कि जब ऐसी स्थिति होगी तब आप लोगो की क्या स्थिति होगी? क्या भारत के सत्ताधिपति नेता इस ओर ध्यान देंगे?

अध्यक्ष वैदिक संस्थान, नजीबाबाद
उत्तर प्रदेश

पृष्ठ ४ का शेष

प्रकार उसके अन्तर्गत एक केन्द्रीय तथा प्रान्तीय सभाओ के अन्तर्गत प्रान्तीय उपदेशक या प्रशिक्षण केन्द्र की स्थापना की जाए जिसमे योग्य उपदेशक, भजनीक तथा विद्वान पुरोहित आदि तैयार किए जाए। उनकी केन्द्रीय तथा प्रान्तीय सेवा प्रणाली [केडर] हो जिसमे उनकी योग्यता, वेतन श्रृंखलाए आदि सेवा शर्तें निश्चित हो और आवश्यकतानुसार स्थानान्तरण की व्यवस्था हो।

१२—शिक्षण संस्थाओ का संगठन आर्यसमाज की शिक्षण संस्थाओ का एक संघात्मक केन्द्रीय संगठन हो जो धार्मिक शिक्षा प्राध्यापको की नियुक्ति आदि नीति सम्बन्धी निर्णय करे। आर्यसमाज के अनाथालयो का भी ऐसा ही एक केन्द्रीय संगठन होना चाहिए।

१३—समाचार पत्र और लेख भिन्न-भिन्न भाषाओं मे पुस्तके और प्रमुख पत्र-पत्रिकाओ मे लेख आदि उपयुक्त विद्वानो और लेखकों का उचित पारिश्रमिक देकर लिखवाने की व्यवस्था भी की जानी चाहिए। आर्यसमाज का कम-से-कम एक अंग्रेजी साप्ताहिक या मासिक तथा एक हिन्दी दैनिक पत्र होना चाहिए।

बाल हकीकत दिवस पर विविध आकर्षक कार्यक्रम

दिल्ली रविवार ३१ जनवरी के दिन आर्यसमाज मोतीनगर मे आर्यसमाज और जनकल्याण समिति की ओर क्या आर्यसमाज आयोजित बाल हकीकत शहीदी दिवस के अवसर पर बेबी शो, भाषण-कविता प्रतियोगिता आदि के कार्यक्रम किए गए। एक से डेढ तथा डेढ से तीन वर्ष के बच्चो के बेबी शो मे पंजाबी बाग के डा०डी बी आर्य तथा मोतीनगर के डा० जयप्रकाश ने श्रेष्ठ बच्चो का चुनाव किया। श्रेष्ठ बच्चे पुरस्कृत किए गए। भाषण एवं कविता की प्रतियोगिताओ मे भी प्रथम, द्वितीय, तृतीय पुरस्कार दिए गए। सनातन धर्म स्कूल के छात्रो को चल वैजयन्ती शील्ड के रूप मे दी गई। सनातन धर्म पूर्वी पंजाबीबाग एवं दशहरा कमेटी के प्रधान लाला अर्जुनदास जी ने पुरस्कार बांटे।

आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली एवं श्रीमती चनन देवी नेत्र चिकित्सालय सुभाष नगर के प्रधान एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान महाशय धर्मपाल जी ने प्रत्येक वक्ता बालक को पुरस्कृत किया। कार्यक्रम मे भू० पू० कार्यकारी पार्षद श्री मदन लाल खुराना, भू०पू०नगर निगम सदस्य श्री सत्यदेव उपाध्याय, आर्यसमाज कीर्ति नगर के प्रधान श्री गुरुमुखदास ग्रोवर, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री प्रो० भारत मित्र शास्त्री आदि आर्य नेता भी उपस्थित थे।

४४३० व्यक्ति हिन्दू धर्म मे दीक्षित

नईदिल्ली १९८१ मे भारतीय शुद्धि सभा एवं हिन्दू रक्षा दल, लाजवन्ती भगवानदास चेरिटेबल ट्रस्ट, नई दिल्ली और अन्य आर्यसमाजो के प्रचार के फलस्वरूप जनवरी, १९८१ से ३१ दिसम्बर १९८१ तक दिल्ली और उत्तर प्रदेश के विभिन्न गावो मे सभा प्रचारको के धर्मप्रचार के फलस्वरूप ४४३० व्यक्तियो ने, जिनमे २३९ मुसलमान और ४१९१ ईसाई थे, वैदिक हिन्दू धर्म अपनाया।

सिद्धान्तविवेक :

महापुरुष ईश्वर नही है।

(राष्ट्रीय स्वयंसेवक सघ के गुरु की पुण्य प्रेरणा को उनके भक्तगण ध्यान पूर्वक पढ़ें और अपनाए)।

अपनी जान बचाने की प्रवृत्ति के कारण लोग महापुरुषो को परमात्मा की कोटि मे ढकेल देते है। साधारण मनुष्य जब विपत्तियो से घिर जाता है, तब वह हतबुद्धि और भयभीत हो जाता है। तब वह क्या करे यह समझ सकने के कारण वह परमात्मा से पुन अवतार ग्रहण करने की प्रार्थना करता है। निराशा के उस अंधकार मे उसे परमात्मा को कोई आशा की ओर कोई किरण दिखाई नही देनी।

कभी-कभी वह महान सन्तो और विद्वानो को भी इस प्रकार विलाप करते देखते है। और यदि इन परिस्थितियो मे कोई महापुरुष उपस्थित हो जाता है। और अपने पौरुष, शौर्य और बुद्धिमत्ता से घटनाचक्र मे परिवर्तन ला देता है। तब उसे भी लोग देवता की श्रेणी मे डाल देते हैं। परन्तु यह तो कोरी दुर्बलता ही है, जिसके वशीभूत होकर व्यक्ति ऐसे महापुरुषो को मानवों की कोटि से बाहर ढकेल देता है।

हमे अपने समाज के व्यक्तियों की यह विकृत मनोवृत्ति बदलनी है। उसके स्थान पर पौरुष और उद्यम की दृष्टि प्रस्थापित करनी है। स्वामी रामदास ने कहा है—'यत्न तो देवजाणावां (प्रयत्न ही परमात्मा है) हमे मानव प्रयत्न के रूप मे व्यक्त परमात्मा की शरण लेनी चाहिए। यह कर्मभूमि है। मानव के उद्योग की भूमि है। यह असामान्य सामर्थ्यशाली व्यक्तियों के रक्त और पसीने से पवित्र हुई मिट्टी है। यहां पर हमारा अन्तर्निहित शक्तिया और गुण प्रस्फुटित हैं तथा हमारे ऋतु-प्रसुप्त देवत्व का जागरण होता है। इसी यथार्थ विश्वास से मानव उद्योग के पथ पर बढने की हमे प्रेरण मिलनी चाहिए। हम उन महान आत्माओ की पूजा अवश्य करे उनके प्रति श्रद्धा का भाव रखे परन्तु देवता जैसी निरी कल्पना के रूप मे नहीं, अपितु अपने सदृश मनुष्यो के रूप मे, जो कि व्यक्तिगत प्रयत्नो के परिणाम-स्वरूप इतनी ऊंचाई तक पहुचे है। जब रावण सीता को हर ले गया, तब श्री राम भी उसी प्रकार रोए थे। जैसे हम मे से कोई भी अपने पारिवारिक जीवन मे विपत्ति आने पर करेगा। ऐसा कर उन्होने संसार के सम्मुख घोषित कर दिया कि ... किसी के समान ही म... इसमे से ही कि... थे, परन्तु राति... मनुष्य की सामान्य भाव... करते थे परन्तु उनके जीवन ... महान व्यक्तिगत ... सम्पादित मानवता के उच्चतम आदर्श की ओर बढने का हमे सकेत करता है।

—पद्मावती तलवाड़

आई २०८, अशोक बिहार,

फेज-१, दिल्ली-५२

दो महाशक्तियों को भारत को चुनौती

मकराना राजस्थान में हिन्दू सम्मेलन की तैयारियां

अजमेर। अपने सगमरमर से भारत के मन्दिरो को सौन्दर्य प्रदान करने वाला मकराना आज मस्जिदों से घिरता हुआ—मार्च के अन्तिम सप्ताह मे विशाल हिन्दू रक्षा सम्मेलन की तैयारियो मे लग गया है। उस अवसर पर गायत्री महायज्ञ का आयोजन भी किया जा रहा है।

एक सार्वजनिक सभा मे प्रो. धर्म-वीर ने घोषणा की कि हम भारत की एकता, स्वतन्त्रता, और परम्परा की रक्षा के लिए जितने भी बलिदान होगे, देने पर भी धर्म की ध्वजा न झुकने देगे।

महात्मा वेदभिक्षु ने हैदराबाद, शाहबाद, मुरादाबाद, गोधरा की स्थिति का वर्णन करते हुए कहा कि संसार की दो महाशक्तियो की—विदेशी ईसाई व देशद्रोही मुसलमानो की चुनौती हम स्वीकार कर चुके हैं। हम सदा जीते हैं और जीतेंगे। हिन्दू धर्म प्यार और ... का अमृत बांटता है, वह इसमें विष न घुलने देगा।

हिन्दू सम्मेलन मे जगद्गुरु ...चार्य व अनेक सन्त महात्मा भाग लेंगे।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रकाशन

सत्यार्थप्रकाश सन्देश (हिन्दी)	१.००
,, ,, (अंग्रेजी)	समाप्त
आर्य सन्देश-महासम्मेलन विशेषाक	६.००
पादरी भाग गया—ओम्प्रकाश त्यागी	० ३०
स्वामी श्रद्धानन्द-बलिदान अर्द्ध शताब्दी स्मारिका	६.००
सत्यार्थप्रकाश शताब्दी समारोह स्मारिका	६.००

सम्पर्क करें—

अधिष्ठाता प्रकाशन विभाग

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा,

१५ हनुमान रोड,

नई दिल्ली-११०००१

卐 'आर्यसन्देश' के स्वय ग्राहक बनें—दूसरो को बनाए

卐 आर्यसमाज के सदस्य स्वयं बने—दूसरों को बनाइए

卐 हिन्दी-संस्कृत भाषा स्वय पढ़ दूसरो को भी पढाइए—

दिल्ली आर्यप्रतिनिधि सभा के लिए श्री सरदारी लाल वर्मा द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित तथा भाटिया प्रेस २५७४, रघुवरपुरा नं० २ गांधीनगर दिल्ली-३१ में मुद्रित। कार्यालय १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली फोन ३१०१५०

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक मुखपत्र

एक प्रति ३५ पैसे वार्षिक १५ रुपए वर्ष ६ अंक [illegible] रविवार १७ फाल्गुन, वि० २०३८ २८ फरवरी १९८२ दयानन्दाब्द १५७

गोरक्षा के लिए देश भर में सूक्ष्म और तीव्र सत्याग्रह

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल का आमरण अनशन स्थगित

नई दिल्ली। सोमवार, २२ फरवरी ८२ को दिल्ली के फीरोजशाह कोटला मैदान मे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले की अध्यक्षता मे आयोजित गोसेवा सम्मेलन मे देश भर मे गोरक्षा के लिए सूक्ष्म और तीव्र सत्याग्रह करने का निश्चय किया गया। श्री शालवाले ने यह घोषणा भी की कि सार्वदेशिक सभा की अन्तरंग सभा ने निश्चय किया कि अभी आमरण अनशन का समय नही आया है, फलत तीन महीने तक देश भर मे जन-जागरण द्वारा गोरक्षा के लिए उपयुक्त वातावरण तैयार किया जाएगा।

अ० भा० गोसेवा सघ के मन्त्री श्री राधाकृष्ण बजाज ने सूचना दी कि ३० जनवरी से प्रारम्भ किया अखिल भारतीय गोरक्षा सौम्य सत्याग्रह सोमवार २२ फरवरी को समाप्त किया जा रहा है। अब देश भर मे गोरक्षा के लिए सूक्ष्म और तीव्र सत्याग्रह किए जाए गे। सूक्ष्म सत्याग्रह के पहले सूत्र द्वारा भगवान से गोरक्षा के लिए प्रार्थना की जाएगी। हर महीनेके आखिरी दिन उपवास व सामूहिक प्रार्थना की जाएगी। तीसरे वर्ष की एक दिन की आमदनी गोरक्षा के लिए इकट्ठी की जाएगी, चौथे घरो मे गोदुग्ध के इस्तेमाल का प्रण किया जाए और पाचवे हत्या किए हुए चमडे का प्रयोग बन्द किया जाए।

श्री बजाज ने घोषित किया कि बम्बई मे देवनार के बूचडखाने पर जो प्रत्यक्ष सत्याग्रह चल रहा है, उसे अधिक तीव्र किया जाए और कत्ल के लिए जाने वाली गोओ और बैलों को बम्बई, कलकत्ता या केरल आदि जाने से रोक दिया जाए। श्री बजाज ने घोषित किया कि अग्रेजो ने अपने शासन के द्वारा समाज धर्म और अर्थ की तीनो सत्ताओ को नष्ट करने की कोशिश की है।, गोवश के विनाश से देश की धन-सत्ता समाप्त हो रही है।

श्री शालवाले ने सूचना दी कि उन्हे विनोवा जी ने पत्र लिखा है—"अभी आप ठहरो, अभी मैं आशीर्वाद नही दूगा।" श्री शालवाले ने घोषित किया—अब गोरक्षा के लिए मै बिनोवा जी से नही पूछूगा, अब तो इसके अन्तिम फैसले के लिए सार्वदेशिक की अन्तरग सभा ही निर्णय करे।

गोरक्षा सम्मेलन मे अ० भा० सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा के मन्त्री गोस्वामी गिरिधारी लाल वर्मा, गोरक्षा सम्मेलन के मन्त्री श्री प्रेमचन्द्र गुप्ता, हरिजन सेवक सघ के महामन्त्री श्री चिन्तामणि, अ०भा० गोसरक्षण महासभा के अध्यक्ष श्री हरि विदेही जी ने भी गोरक्षा के लिए अपनी-अपनी सस्थाओ से पूर्ण समर्थन करने का आह्वान दिया।

भोलानाथ नगर में बहुकुण्डी महायज्ञ

आगामी २६, २७, २८ मार्च १९८२ को भोलानाथ नगर, शाहदरा, दिल्ली-३२ (जमना पार) मे क्षेत्रीय उप आर्य प्रतिनिधि सभा तथा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के सयुक्त तत्व विधान मे बहुकुण्डी प्रराथण महायज्ञ और गोमेध यज्ञ का आयोजन किया गया है। इस अवसर पर आर्य हिन्दू जनता अधिक से अधिक सख्या मे उपस्थित होकर यज्ञ मे अपना सहयोग दे।

सरदारी लाल शर्मा
प्रधान, दिल्ली आर्य, प्रतिनिधि सभा

ऋषि का अनुकरण कर देशोद्धार करो

अंग्रेजी स्कूलों द्वारा सामूहिक धर्मान्तरण : ऋषि बोधोत्सव पर सामूहिक सभा

दिल्ली। आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के तत्वावधान मे सोमवार २२ फरवरी के दिन प्रो० रामसिंह जी की अध्यक्षता मे ऋषि बोधपर्व के अवसर पर सार्वजनिक सभा मे ऋषि द्वारा प्रदर्शित मार्ग पर चलकर धर्म और सस्कृति की रक्षा करने पर बल दिया गया। प्रो० रामसिंह जी ने कहा—"अपने विद्यालय, विश्वविद्यालय खोलकर, सस्कृत भाषा और वेदो के अध्ययन से ही हम राष्ट्र की रक्षा कर सकते है।"

सुप्रसिद्ध शिक्षाविद् स्वामी विद्यानन्द सरस्वती ने घोषित किया—आज चिन्तन का दिन है। आज के ही दिन शिवलिंग पर चूहे को चढ़ते देखकर चिन्तन शुरू किया था। दो सम्बन्धियो के मरने एव गृह-त्याग के बाद स्वामी दयानन्द पूरे २५ वर्ष तक चिन्तन करते रहे। अपने इस लम्बे चिन्तन के बाद महर्षि ने कहा था कि हम अपनी भाषा, व्यवहार, शिक्षा और सस्कृति को सस्कृत एव वैदिक मान्यताओ के आधार पर सुधार कर ही वेदो धर्म, सस्कृति का उद्धार कर सकते है। मैकाले ने १८३६ मे अंग्रेजी शिक्षा को माध्यम बनाकर देश की सस्कृति और धर्म बदलने का सपना लिया था, उसमे उसे पूरी सफलता मिली है।

स्वामी जी ने कहा—देश मे जिस तरह अंग्रेजी के स्कूलो का जाल फैलता जा रहा है, उससे स्पष्ट है कि बिना प्रयत्न किए मैकाले द्वारा देश के धर्म-परिवर्तन की योजना सफल होती जा रही है। देश की सस्कृति और धर्म उद्धार के लिए महर्षि दयानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द और ला० हसराज जी ने भारतीय भाषाओ के माध्यम से आर्य विद्यालयो या गुरुकुलो के द्वारा जो कार्य किया था, उसे आगे फैलाने की जरूरत है।

ऋषि बोधोत्सव के पर्व पर दिल्ली की समस्त आर्यसमाजो और आर्य सस्थाओं की ओर से कोटला फीरोजशाह मे २२ फरवरी को प्रात ८ बजे से सामूहिक ऋषि मेला मनाया गया। प्रात ८ बजे प० लखपति जी शास्त्री के ब्रह्मत्व मे बृहद् यज्ञ हुआ। स्वामी जीवनानन्द जी ने ध्वजारोहण किया।

सार्वजनिक सभा मे श्री गुलाबसिंह राघव और रोहतक के श्री रामभारती की उद्बोधक कविताए प्रस्तुत की गई। कार्यक्रम मे आर्य छात्र-छात्राओ के खेल व्यायाम एव योग प्रदर्शन बच्चो एव छात्र-छात्राओ की भाषण प्रतियोगिता एव सास्कृतिक कार्यक्रम भी हुए।

सम्पादक—नरेन्द्र विद्यावाचस्पति व्यवस्थापक—प्रद्युम्नलाल तलवाड़

वेद-मनन

यज्ञ के अनेक रूप

मनोहर विद्यालंकार

चतु स्रक्तिर्नाभिर्ऋतस्य सप्रथा स नो विश्वायु सप्रथा: स न. सर्वायु सप्रथा.। अप द्वेषो अप ह्वरोऽन्यव्रतस्य सश्चिम ।।यजु ३८-२०

ऋषि —दीर्घतमा देवता—यज्ञ। छन्द —निचृद् त्रिष्टुप्।

शब्दार्थ—(ऋतस्य) यज्ञका नाभि बन्धन चतु स्रक्ति चतुर्दिक्—चतुष्कोण, तथा 'सप्रथा' विस्तृत है। स वह यज्ञ न विश्वायु सप्रथा 'हमारी सम्पूर्ण आयु मे फैल जाए, 'सन सर्वायु सप्रथा' वह यज्ञ हम सब को आयु भर अन्न प्रदान करता रहा हम (अन्यव्रतस्य यज्ञविहीन) दुष्ट जन के (द्वेष) को 'अपसश्चिम' दूर हटा दे, 'ह्वर' क्रोध औरकुटिलता को अप दूर करने मे समर्थ हो।

निष्कर्ष—यज्ञ के अनेक रूप और पक्ष होते है, इसलिए यज्ञ का अर्थ केवल हवन न लेकर बहुत विस्तृत समझना चाहिए। प्रत्येक शुभ और सगठित काय यज्ञ है। गृहस्थ भी यज्ञ है, और राज-नीति भी यज्ञ है। जो मनुष्य अपना जीवन यज्ञमय बनाता है वह स्वय सम्पूर्ण आयु जीता है, और सब के जीवन को विस्तृत और अन्नप्रदान करने मे सहायक होता है।

यज्ञ का बन्धक चर्तुदिक् है। स्वय देव बनना, बडो का आदर सत्कार, वयस्को के साथ सहयोग और छोटो को शिक्षा-सहयोग देना भी इसी का रूप है।

दुष्टजनो के द्वेष और क्रोध की उपेक्षा करना, लेकिन कुटिलता मे न फसना यज्ञ का दिग्दर्शन मात्र है।

जो मनुष्य द्वेष और क्रोध को दूर रखेगा, वह पूर्णायु शान्ति से निर्भयता पूर्वक जीवित रहेगा, क्योकि द्वेष से भय और क्रोध से अशान्ति का प्रादुर्भाव होता है। जो मनुष्य क्रोध औरद्वेष करता है, वह मनुष्य नही रहता, अमानुष या अन्य व्रत हो जाता है, उसकी मननशक्ति समाप्त हो जाती है।

ऋत अर्थात् नियम और मर्यादा मे चलने वाला, स्वस्थ रहने के कारण सम्पूर्ण आयु प्राप्त करता है, और अपने यश का

प्राकृतिक तथा मानवीय नियमो का उल्लघन करने वाले का मानसिक तथा शारीरिक सन्तुलन बिगड जाता है। वह पूर्णायु प्राप्त नही कर पाता।

विशेष—पूर्ण आयु प्राप्त करने अथवा जीवन को यज्ञमय बनाने के लिए, मनुष्य को चतुर्दिक् से चौकन्ना (साव-धान) रहना चाहिए। इसके लिए सब दिशाओ मे होने वाले अज्ञानान्धकार को दूर करने के लिए, (दीर्घतमा) साधन रूप मे आत्मानिरीक्षण (निचृत्) तथा त्रिविध स्तुति अर्थात् बडो का सत्कार, वयस्को से सहयोग तथा छोटो की सहयता —को अपनाना चाहिए।

अर्थ प्रमाण—ऋतस्य यज्ञस्यानि० १-६ दिश स्रक्तय। शत १४-३-१-१७ सश्चति गतिकर्मा नि० २ १४ आयु जीवन हेतु अन्नम्, आयु अन्ननाम। नि० २-७। सप्रथा—सवत प्रथयिता अस्तु, सर्वत पृथु। उब्बटर, फैलाता स्प्रेड्स ग्रिफिथ अन्यव्रतस्य—अकर्मादस्युर भिनो अमन्तु अन्यव्रतो अमानुष। ऋक १०-२२-७

दीर्घतम—तम अन्धकारा+दीर्घ दूविदारण निचृत्—निर अन्दर+चृत् वृत्ती सदीपने त्रिष्टुप—त्रि × स्तुभ् स्तुतो

५२२, ईश्वर भवन, खारी बावडी दिल्ली-६

६४वॉं क्षत्रिय महासभा अधिवेशन

सिगरामऊ-जौनपुर उत्तर प्रदेश रेलवे स्टेशन हरपालगज (उत्तर प्रदेश) मे २७ २८ फरवरी, १९८२ को ६४वा आर्य सभा क्षत्रिय महासभा का ६४वा महाधिवेशन होगा। इसका उद्घाटन महाराणा भगवान सिह जूदेव करेगे। अध्यक्षता महारावल लक्ष्मण सिह जूदेव करेगे। सभा बेकारो को रोजगार देने जातीय पचायतो की स्थापना और बिछडे बन्धुओ के परावतन के तीन प्रमुख विषयो पर विचार किया जाएगा।

सामना मे सामूहिक गोरक्षा अभियान

आर्यसमाज सामना पटियाला के तत्वावधान मे गोरक्षा अभियान का सामूहिक कार्यक्रम आयोजित किया गया। आर्यसमाज, सनातन धर्म सभा, जैन धर्म सभा, कृष्णा क्लब, राधा स्वामी गोपाल भवन, गऊशाला सब सस्थाओं की ओर से सामूहिक यज्ञ किया गया। १२ फरवरी को अनशन मे १५ माताओ और बहनो ने भाग लिया और गऊमाता के गीत और नारे लगाते रहे। स्त्री समाज की ओर से गोपाल भवन में सत्सग की व्यवस्था की गई जिसमे कुमारी किरण बाला के गीतों ने समां बाध दिया।

लोक-चिन्तन

हम अपनी ओर देखें

—डा० विजय द्विवेदी

मेरे पास कई परिचितो के पत्र आए हैं। बडौदा से एक कृपालु ने मुद्रित सामग्री भेजी है। सबका सारांश यह है, कि तुम रात-दिन महर्षि दयानन्द और उनके 'समाज का जय गान करने मे जुते हो, परन्तु यह नहीं देख रहे हो कि उनके अनुयायी महर्षि के द्वारा स्थापित आदर्शों से कितनी दूर चले जा रहे हैं। आर्यसमाज ऊपरी तौर पर प्रगति-शील, रूढियो-अन्धविश्वासों का एक मात्र विदारक सत्य-प्रकाश का दाता बनने का आडम्बर कर रहा है, मगर भीतर से वह भी उन्ही अवगुणों का शिकार बनता जा रहा है, जिनसे दूसरी सस्थाए ग्रस्त हैं। महर्षि दयानन्द त्याग-तप मय जीवन को सभी के लिए आदरणीय-अनुकरणीय कह गए हैं, समाजियो के लिए सब तरह की लोलुपता का निषेध कर गए है।' किन्तु हम लोग …?

मेरे पास इस विषय मे कहने के लिए विशेष कुछ नही है। एक इतिहास का सहारा है। यह हमे बताता है—ससार को नई ज्योति देने का गुरुतर दायित्व जिन महापुरुषो के कधो पर पडा था, उनके आन्दोलन अन्त मे उन्ही आडम्बरो मे उलझ कर श्रीहीन हो गये, जिन से जन-जीवन को मुक्त रखने के लिए उनका जन्म हुआ था। बुद्ध, ईसामसीह, महावीर और आज के युग मे महात्मा गाधी इसके उदाहरण हैं। यह कहना अनुचित है कि किसी भी पन्थ के अनुयायी जान-बूझ कर ऐसा करते हो होता यह है कि महापुरुषो के प्रति अन्ध श्रद्धा का अतिरेक तथा काल की कुटिल गति से जन्मे जीवन जजाल के प्रबल आकर्षण जो लक्ष्य से मेल नही खाते और बहुधा उसके विपरीत गति करते है। उन्हे विपथन के लिए बाध्य कर देते है। इसका एक रूप और है। किसी भी पथ की स्थापना के बाद कालान्तर मे उसके साथ जुड़कर चलने वालो का स्वाधीन चिन्तन सकुचित हो जाता है। जब पन्थ ही प्रमुख हो जाता है तब युग-सत्य पर से उसकी दृष्टि हट जाती है, असत्य का पोषण होने लगता है, साधन की शुद्धि का प्रश्न पीछे छूट जाता है, इतिहास हमें यही सीख देता है कि सत्य का सामना साहस और ईमानदारी से करना चाहिए।

सासारिक जीवन मे सत्य को पाने के लिए लम्बे सघर्ष की जरूरत होती है। सब लोग इतनी देर तक धन, मान, यश, कीर्ति के दुर्निवार खिचाव से बचे रहने की शक्ति नही रखते इनका प्रलोभन सत्य-साधना से अधिक बलवान होता है। अत. प्रयास यही होना चाहिए, जिनमे महर्षि ने कठोर साधना, कठिन तप, अपराजेय ज्ञान के बल पर प्राप्त किया था, जो आज भी एक ऐसी सामाजिक व्यवस्था का एक मात्र आधार है जिसमे सासारिक जीवन और सत्य के माग कोई बाधा नही है। अस्तु आय जनो से मेरा निवेदन है तात्कालिक कमजोरियो स घबराए नही। उन पर साहस और धीरज के साथ विजय पाने का उद्यम करो। महर्षि प्रदत्त सत्य हमारे साथ रहेगा तो सफलता भी हमारी हो होगी। इसमे सन्देह नहीं है। कठिनाई मे रास्ता निकाल लने वाला ही 'आय' होता है। अपने आचार-विचार, आचरण-व्यवहार से हमे प्रमाणित करना ही होगा कि कालजयी, सत्यार्थ-प्रकाश दाता उस महर्षि के अनुयायी है जो विष पीकर भी मुस्कराते रहे।

—म० प्र० च० कालेज बारीपदा (उड़ीसा) ७५७००१

समाज सेविका स्वर्गीय श्रीमती सत्य सेठ को श्रद्धांजलि

नई दिल्ली। कीर्तिनगर मे समाज सेविका श्रीमती सत्य सेठ धर्मपत्नी श्री श्यामसुन्दर सेठ सचालक पश्चिम दिल्ली आर्यवीर दल के स्वगवास पर एक लोक सभा महात्मा वेदाभिक्षु सचालक दयानन्द सस्थान की अध्यक्षता मे हुई। इसमे सर्व श्री सरदारी लाल वर्मा प्रधान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्य नेता सोमनाथ मरवाह एडवोकेट, महाशय धर्मपाल प्रधान आर्य केन्द्रीय सभा, ओमप्रकाश आर्य मन्त्री महाशय चुन्नीलाल धर्मार्थ ट्रस्ट, डॉ० वेदप्रकाश (देहरादून) प्रो० बलराम मधोक, प्रो० रामसिंह, पी०के० हरिवश पत्रकार, दिल्ली प्रदेश स्वतन्त्रता सेनानी के सघ के प्रधान श्री राम लुभाया चानना, श्री हरदयाल देवगुन, भूतपूर्व सासद आदि विभिन्न आर्यसमाजो के प्रतिनिधियो ने श्रद्धाजलिया प्रकट की।

क्रांतिकारी सरदार भगतसिंह के भाई कुलबीर सिंह पूर्व विधायक व उनके भतीजे श्री जोरावर सिंह आदि अनेक नेताओ ने दिवगत आत्मा की उपमा "देवी" से करते हुए उनके "व्यक्तित्व व कृतित्व" पर प्रकाश डाला।

हम ज्ञान-ज्योति प्राप्त करें

ओ३म् इन्द्र क्रतु न भर, पिता पुत्रेभ्यो यथा।
शिक्षा णो अस्मिन् पुरुहूत यामनि जीवा ज्योतिरशीमहि ।।

ऋ ७.३२.२६, साम २५९, १४५६, अथर्व १८.३.६७, २०.७९.१

हे परमेश्वर, जैसे पिता पुत्रों को समुचित पथ-प्रदर्शन करता है वैसे ही हमें ज्ञान से परिपूर्ण करें। हमको इस समय उचित् शिक्षा दीजिए जिससे सब प्राणी सच्ची-ज्ञान ज्योति प्राप्त कर सकें।

ओ३म्

आर्य सन्देश

सारे देश की एकही वैदिक ओंकार संस्कृति

सिन्धु घाटी सभ्यता के केन्द्र मोहन जोदडो की खोज करने वाले पुरातत्त्ववेत्ता सर जान मार्शल ने यह स्थापना की थी कि प्रागैतिहासिक काल मे सिन्धु घाटी मे द्राविड सभ्यता थी। बाद मे विदेशो से आकर आर्यो ने उन्हे दक्षिण की ओर जाने के लिए विवश कर दिया, परन्तु पुरातत्व की नई खोज से यह धारणा निर्मूल सिद्ध हो गई है। 'साप्ताहिक हिन्दुस्तान' के २५ अक्तूबर १९८१ के अक मे श्री गुणाकर मुले का एक लेख प्रकाशित हुआ है। उस लेख मे सिन्धु घाटी की सभ्यता की कुछ मुहरो के चित्र भी छपे हैं। इन्ही मे एक मुहर मे पीपल के पेड मे शृगाकृति और धनुषाकृति मे ओकार चित्रित है। इस मुहर मे अकित ओंकार की व्याख्या के लिए मुण्डकोपनिषद् (२.२.४) का यह मन्त्र उल्लेखनीय है—प्रणवो धनु शरोह्यात्मा ब्रह्म तल्लमुच्यते। अप्रमत्तेन वेद्धव्यो शरवतन्मयो भवेत।।' धनुष आत्मा, जीवात्मा ही बाण और ओकार रूपी ब्रह्म ही लक्ष्य कहा गया है। इस लक्ष्य ओंकार को बीधने मे आत्मा रूपी बाण से लक्ष्यवेध सम्भव है।

सिन्धु घाटी की मुहर मे चित्रकार ने प्रणव या ओकार का रूप समझाने के लिए पेड मे शाखाओ के नीचे धनुषाकृति मे ओकार चित्रित किया है। पुरातत्ववेत्ता अब स्वीकार करने लगे हैं कि सिन्धु लिपि ब्राह्मी की मूलातिमूल लिपि है। इस लिपि मे ओकार प्रणव की महिमा का ज्ञान होने से स्पष्ट है कि सिन्धु घाटी सभ्यता न तो प्राक् द्राविड सभ्यता है और न प्राक् आर्यसभ्यता, यह तो ऋग्वैदिक सस्कृति की ओकार सभ्यता है, इससे यह भी पुष्ट होता है कि भारत के उत्तरी और दक्षिणी दोनो ही खण्ड एक ही वैदिक ओंकार सभ्यता से प्रभावित रहे हैं। सर जान मार्शल तथा पश्चिमी इतिहास लेखकों और पुरातत्वविदो ने उत्तर और दक्षिण के बीच आर्य और द्रविड कहकर जो कृत्रिम रेखा खीची थी, उसको समाप्त करने की दिशा मे प्राच्यविद्याविदो का प्रयास होना चाहिए सिन्धु लिपि के देवनागरी एव दूसरी भारतीय लिपियो के, जिनमे तथाकथित द्राविड लिपिया भी सम्मिलित है, मूललिपि स्वीकार करने से देश मे व्यापक भेद के बीजों को समाप्त करने मे मदद मिल सकेगी।

अत्यन्त प्राचीन काल से हिमालय से दक्षिण मे फैले विस्तीर्ण समुद्र तक, पश्चिम मे सिन्धु नदी से लेकर बगाल की खाडी तक सारे भूखण्ड को मातृभूमि पुण्य-भूमि भारतभूमि के रूप मे अगीकार किया गया है। हमारे प्राचीन धर्मग्रन्थो मे भारत भूमि में जन्म लेना गौरव का विषय समझा गया है न कि किसी प्रदेश विशेष मे। चारो धामों को सब प्रदेशों और तीर्थो की यात्रा करना हमारी धार्मिक श्रद्धालु जनता पुण्य समझती रही है। पाण्डवो से लेकर प्रतापी गुप्त साम्राज्य तक मुगलो और अंग्रेजो के समय हमारे भारत देश की एकता और अखण्डता रही है। देश को विभिन्न भागो और खण्डों में विभक्त करने के लिए विदेशी साम्प्रदायिक और राजनीतिक शक्तिया निरतर प्रयत्न शील हैं। उनके इस दूषित इरादे को असफल करना प्रत्येक भारतीय सस्कृति एवं धर्म प्रेमी राष्ट्र भक्त का प्रथम पुनीत कर्त्तव्य होना चाहिए।

चिट्ठी-पत्री

सिन्धु-घाटी की सभ्यता वैदिक ओंकार सभ्यता थी!

पुरातत्ववेत्ता जान मार्शल के ग्रन्थो मे सैन्धव उपादानो के चित्र छपे हैं, परन्तु वे सुलभ नही हैं, परन्तु २५ अक्तूबर, १९८१ के साप्ताहिक हिन्दुस्तान मे श्री गुणाकर मुले के लेख में कुछ सैन्धव चित्र छपे है, इन्ही मे से एक मुहर मे पीपल के पेड में शृगाकृति तथा धनुषाकृति के ओकार चित्र अकित है। इस मुहर मे अकित ओकार की व्याख्या के लिए ऋग्वेद (४-५८.३, ३.३.१०) तथा तैत्तरीयोपनिषद् (१.४.१) देखें।

वेदों में प्रणव को धनुष के समान बताया गया है उक्त मुहर मे शृगाकृति का ओकार धनुष के समान है। वैदिक मन्तव्यों से स्पष्ट हो रहा है कि ओकार-लेखन का प्राचीन रूप शृगाकृतिमूलक और धनुषाकृतिमूलक रहा है। इस प्रतीक के बीच मे पीपल का जो तना है उसके शीर्ष का एक पत्ता बाण के लोहे का रूप धारण कर रहा है, इतना होने पर भी इसे प्रणव के रूप में समझाने के लिए चित्रकार ने पेड मे जहा शाखाए फूटी है, ठीक उसके नीचे एक धनुष का चिह्न बनाया है। जो कह रहा है कि वह प्रणव धनुष के समान है। इसकी विशद व्याख्या मुण्डकोपनिषद् (२ २.३ ४) देखे।

यह ओकार समग्र भारतीय लिपियो मे केवल कन्नड को छोडकर 'उकार' या तीन के अक मे परिणत हो गया है। सिन्धु लिपि ब्राह्मी की मूलातिमूल लिपि है। सिन्धु घाटी मे प्राप्त मुहरों की भाषा ऋग्वेद से लेकर प्रमुख एकादश उपनिषदो के बीच की है। सिन्धु घाटी सभ्यता न तो प्राक् द्रविड सभ्यता है और न प्राक् वैदिक सभ्यता, यह तो ऋग्वैदिक सस्कृति की ओंकार सभ्यता है और साथ ही भारत के उत्तर और दक्षिण दोनो ही खण्ड एक ही वैदिक ओकार सभ्यता के अधीन है। अत सिन्धु घाटी सभ्यता की खोज के समय जान मार्शल साहब ने उत्तर और दक्षिण कह कर जो कृत्रिम रेखा खीची है, उसे समाप्त करने को दिशा मे प्राच्य विद्याविदो का प्रयास होना चाहिए।

—डॉ० नटवर झा आचार्य, केन्द्रीय विद्यालय, रामगढ कैण्ट, हजारी बाग

मदर तेरेसा और इसाइयत

यह एक सर्वविदित तथ्य है कि मदर तेरेसा एक ईसाई भिक्षुणी है, जो विदेश से भारत मे आकर कलकत्ता मे अनाथ आश्रम एव वनिताश्रम चलाकर सेवा के इस जनहित कारी प्रकल्प द्वारा मानव की करुणा को जगाने वाले हृदयस्पर्शी माध्यम द्वारा ईसाईयत के प्रचार-प्रसार के काम मे लगी हुई हैं।

१९७८ मे ससद सदस्य श्री ओम्प्रकाश त्यागी ने ससद मे धर्मस्वातन्त्र्य विधेयक प्रस्तुत किया था जिसके अनुसार छल, छद्म, भय अथवा प्रलोभन द्वारा किसी का धर्म छीनना अपराध घोषित करने का प्रावधान था, तब मदर तेरेसा ने तत्कालीन प्रधानमन्त्री श्री मोरार जी देसाई को लिखा "मैं निश्चित रूप से ईसा के नाम पर ही सेवा कर रही हू। लोगो को ईसा का प्रेम-सन्देश देने आई हू, लोगो को ईसाई होने पर यदि प्रतिबन्ध लगाया जाता है तो हम इसे कभी सहन नहीं कर सकेंगे। हम विद्रोह करेगे।" उन्होने श्री मोरार जी देसाई पर व्यक्तिगत आक्षेप करते हुए लिखा 'तुम बहुत बूढे हो गये हो कुछ वर्षो के बाद तुम्हे मरकर खुदा के पास इस चीज का जवाब देना पडेगा कि तुमने ईसाइयत के प्रचार पर प्रतिबन्ध क्यो लगाया।' श्री मोरार जी देसाई ने बडे सयम से उत्तर दिया "मैं आपकी सेवा भावना की प्रशसा कर सकता हू किन्तु सेवा के बहाने किसी का धर्म लूटने का अधिकार नहीं दे सकता।"

कलकत्ता मे मदर तेरेसा के आश्रम मे पूरा ईसाई पन्थ का वातावरण है, ईसा के चित्र टंगे हैं, बाईबिल पढाई जाती है। ईसाई प्रार्थनाएं होती है और अभागे हिन्दू बच्चे बच्चियों की जिनके माता-पिता तथा धन सम्पत्ति पहले ही लुटे हुए है उनसे भोजन अथवा सेवा के नाम पर उनका प्राण प्यारा धर्म भी लूट लिया जाता है।

दो सप्ताह पूर्व राची मे रोमन कैथोलिक मिशन के बूढे पादरी एण्ड्रू थौटकल को पुलिस ने उसकी ऐसी ठग विद्या के कारण जेल मे ठूस दिया है, वह भी सन् १९७४ से पादरी के चोगे को ही भगवे रग मे रग कर हिन्दू सन्यासी का छद्म नाम स्वामी नरेन्द्रानन्द रख कर शत प्रतिशत हिन्दू बस्ती हेमल मे रहकर पलामू, भोजपुर एव छोटा नागपुर के गरीब ब्राह्मण बच्चो को अपने मन्दिरनुमा दिव्य ज्योति आश्रम मे रख कर उनका प्राणप्यारा धर्म लूटने का धन्धा चला रहे थे। मदर तेरेसा का कार्य एव सभी ईसाई पादरियो का कार्य एक ही उद्देश्य से चल रहा है। वे २०वी शताब्दी के अन्तिम चरण तक सारे विश्व को प्रभु ईसा के चरणो मे लाने का स्वप्न देख रहे है, वे योजना-पूर्वक नागालैण्ड से लेकर केरल तक, कम से कम ३० प्रतिशत जनता को ईसाईबनाकर ईसाईस्तान बनाने का षडयन्त्र रच रहे है। उनका तर्क है कि जिस भारत मे २३प्रतिशत मुसलमान खंजर की नोक पर, भारत को काटकर, पाकिस्तान ले सकते है, वहा हम ३० प्रतिशत ईसाई, जिसके पीछे ससार के ७६ईसाई राष्ट्र खडे है पोप का आशीर्वाद, इग्लैड की कूटनीति, अमेरिका का धन एव बेल्जियम के पादरियो की सेना साथ है वे ईसाईस्तान क्यो नही ले सकते?

—प्रो० हरवशलाल ओबराय, निर्देशक सस्कृति विहार, रांची

गीता की समत्व-दृष्टि

लेखक—डा० कृष्णलाल
उपाचार्य, संस्कृत विभाग दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली-११०००७

संस्कृत-विद्वानो की गोष्ठी। विषय-शास्त्रो मे समत्व-भावना। एक विद्वान् बोले कि शास्त्रो मे वेद महाभारत, मनुस्मृति आदि मे सर्वत्र शूद्रो, चाण्डालो को गर्हित बताया गया है। स्त्री और शूद्र को वेदाध्ययन का अधिकार नही दिया गया। गीता मे स्त्री, शूद्र और वैश्य को पापयोनि कहा गया है, अतः इन शास्त्रो को छोडकर स्वतन्त्र रूप मे आधुनिक युग मे छूआ-छूत छोडने की बात करनी चाहिए। एक अन्य विद्वान् ने कहा कि गीता मे जो 'शुनि चैव श्वपाके च पण्डिता समदर्शिनः (विद्वान् लोग कुत्ते मे और चाण्डाल मे भी समान दृष्टि रखते हैं) कहा गया है, उसका समाधान आप क्या करेगे ? छूटते ही एक-दूसरे रूढिवादी विद्वान् बोले 'नही, गीता के इस श्लोक मे जो 'समदर्शिन' शब्द आया है उसमे समान-व्यवहार की तो बात ही नही, केवल समान-दर्शन की ही बात है। दूसरी और सम-शब्द यहा पर बहुत से विद्वानो के अनुसार समान के अर्थ मे माना ही नही गया। वे इसे ब्रह्म का वाचक मानते हैं, अतः यहा भाव सब जीवो मे सर्वव्यापी ब्रह्म को देखने का है, समान व्यवहार का नही। उन्होने प्रथम विद्वान् की इस बात की भी पुष्टि की कि गीता मे स्त्री, शूद्र, और चाण्डाल को पापयोनि अर्थात् निकृष्ट ही बताया है और स्वाध्याय के बिना ईश्वर द्वारा उनके भी उद्धार की बात कही है।

विद्वानो से यह सुनकर मेरा मन आलोकित हो उठा। मैं सोचने लगा कि जिन शास्त्रो मे वास्तव मे ऐसी विषमता-मूलक बाते है, उन्हे तो छोडना ही श्रेयस्कर है। कुछ ऐसे भी ग्रन्थ है जिनमे दोनो प्रकार के भावनाए विभिन्न प्रसगो मे व्यक्त की गई है। क्या लोककल्याण की दृष्टि से विद्वानो का यह कर्त्तव्य नही हो जाता कि जो बाते समता की पोषक हैं, उन्हे उभार कर प्रकाश मे लाया जाए। इसके साथ यह उससे भी आवश्यक है कि इस प्रकार विषमता आदि दुर्भावो की पोषक प्रतीत होने वाली बातो का गम्भीर अध्ययन करके वास्तविक तथ्य सबके सम्मुख प्रकट किए जाए। केवल स्वार्थी पुराण-पण्डितो के भाष्यो, टीकाओं कर्तव्यो का अन्धानुकरण न करके उनसे ऊपर उठकर गम्भीर विचार कर अपने मान्य ग्रन्थो को ठीक-ठीक समझ-समझ कर उन्हे मिथ्या लाञ्छन से मुक्त किया जाए। गीता जैसे विश्व मान्य महान् ग्रन्थसमन्वयात्मक ग्रन्थ मे ऐसी बात पर विश्वास नही हुआ।

उपर्युक्त गोष्ठी से आकर जिज्ञासावश मैंने गीता के दोनों प्रसंग देखे। एक तो पाचवें अध्याय का अठारहवा श्लोक इस प्रकार है—

विद्याविवेकसम्पन्ने ब्राह्मणे गवि हस्तिनि।
शुनि चैव श्वपाके च पण्डिता समदर्शिनः॥

अर्थात् ज्ञानी लोग विद्या और शिष्टाचार युक्त ब्रह्मण (विद्वान्) के प्रति गौ, हाथी, कुत्ते के प्रति और चाण्डाल के प्रति भी समदृष्टि वाले होते है।

समान दृष्टि शब्द स्पष्ट है और यह समान भावना का ही द्योतक है। गीता की समग्र भावना के भी यह सर्वथा अनुकूल है। यहा जिस प्रकार पशुओ मे पूज्य गौ, मध्यम कोटि के हाथी और निकृष्ट पशु कुत्ते की तुलना करके सब मे विद्या दान करने वाले सबसे सम्माननीय ब्राह्मण और दृष्टि से पूजनीय न माने जाने वाले चाण्डाल आदि के प्रति भी समभावना बताई गई है। यहा समभावना को स्पष्ट करना भी आवश्यक है। समभावना का का जिस प्रकार यह अर्थ नही हो सकता कि कुत्ते को गाय गाय को कुत्ता माना जाए उसी प्रकार ब्राह्मण-कर्म करने वाले और चाण्डाल कर्म करने वाले का गुणानुसारी और कर्मगत भेद तो रहेगा, परन्तु दोनो शरीर से एक समान हैं, दोनो की शारीरिक आवश्यकताए एक-सी है, दोनो को आत्मोन्नति के लिए ईश्वरोपासन आदि मे स्वतन्त्रता रहनी चाहिए—इस प्रकार दोनो के प्रति समभाव अभिप्रेत है। और यहा 'सम' का यह तात्पर्य गीता के उस स्थल के प्रसग से भी बहुत स्पष्ट है। ऊपर उद्धृत श्लोक से ही अगले श्लोक मे कहा गया है—"इहैव तैर्जितः सर्गो येषा साम्ये स्थित मन." उन ज्ञानियो ने यहा अर्थात् इस जन्म मे ही सम्पूर्ण ससार जीत लिया है, जिनका मन समभाव मे स्थित है)।

इसमे सदेह नही इसी श्लोक की द्वितीय पक्ति मे ब्रह्म को निर्दोष और सम बताया है (निर्दोष हि सम ब्रह्म), और तदनुसार कुछ विद्वान 'सम' का अर्थ ब्रह्म लेते है। परन्तु 'सम' का अर्थ ब्रह्म मानने पर भी अर्थ मे कोई अन्तर नही पडता। सबमे ब्रह्म का दर्शन करना भी सबसे समभावना रखने जैसा ही है। षष्ठ अध्याय मे भी इसी प्रकार दर्शन वाले योगी के विषय मे कहा है कि वह आत्मा के सम्पूर्ण प्राणियो मे स्थित और सम्पूर्ण प्राणियो को आत्मा मे स्थित देखता है —

सर्वभूतस्थमात्मानं सर्वभूतानि चात्मनि।
ईक्षते योगयुक्तात्मा सर्वत्र समदर्शनः॥ (६।२९)

यहा यह भी ध्यान रहना चाहिए कि दर्शन (देखना) का अर्थ स्थूल नेत्रों से देखना नही है यदि ऐसा माना जाए तो यह कथन निरर्थक हो जाता है क्योकि आत्मा तो अदृश्य है। वास्तव मे दर्शन का अर्थ विचार' है जैसा दर्शनशास्त्र मे दर्शन का अर्थ होता है। इसी भाव को आगे और स्पष्ट करके बताया है कि जो पुरुष एकीभाव मे स्थित होकर मुझ सब प्राणियो मे स्थित का भजन करता है, वह योगी सब प्रकार से रहता हुआ भी मुझमे ही रहता है —

सर्वभूतस्थित यो मां
भजत्येकत्वमास्थित ।
सर्वथा वर्तमानोऽपि
स योगी मयि वर्तते ॥ (६।३१)

गीता मे ऐसा अस्वाभाविक उपदेश कभी नही हो सकता कि सब प्राणियो मे एक एव समआत्मा एव ब्रह्म को अनुभव करो और उनमे से कुछ के प्रति घृणा तिरस्कार और निर्दयता का व्यवहार करो।

गीता का दूसरा विचारणीय श्लोक निम्नलिखित है —

मा हि पार्थ व्यपाश्रित्य येऽपि स्यु पापयोनय ।
स्त्रियो वैश्यास्तथा शूद्रास्तेऽपि यान्ति परा गतिम् ॥ (९।३२)

(हे अर्जुन, जिनमे भी पापयोनि वाले जन्तु है तथा स्त्रिया, वैश्य और शूद्र भी मेरा आश्रय लेकर परमगति अर्थात् मोक्ष को प्राप्त होते है।

यहा पहली बात तो स्मरण रखने योग्य यह है कि पापयोनय शब्द उत्तरार्ध के स्त्रिय शूद्रा, वैश्या का विशेषण नही हो सकता। कारण यह है कि योनि अथवा जन्म की दृष्टि से गीता ने सबको एक मनुष्य माना है। जन्म से जातिगत भेद माने होते तो गीता मे यह न कहा गया होता कि मैं चारो वर्णो की सृष्टि उनके गुणो और कर्मों के विभागानुसार की की है' (चातुर्वर्ण्यमया सृष्ट गुणकर्म-विभागश)। पूर्वजन्म के पापो के अनुसार अगले जन्म मे निकृष्ट जीव जन्तुओ, अथवा पेड-पौधो आदि की योनि से यहा पापयोनि का अभिप्राय है। चारो वर्णों के कर्मानुसार विभाग के ही आधार पर दूसरी बात यह स्पष्ट हो जाती है कि गीता तो उनके साथ यहा वैश्य की गणना न होती क्योकि धर्मशास्त्रो मे जहा, शूद्र को वेद पढने का अधिकार नही दिया गया वही वैश्य को द्विज बताया है और तदनुसार उसे स्पष्ट ही वेद पढ़ने का अधिकार प्राप्त है।

अब प्रश्न यह है कि सभी मनुष्यो मे स्त्रियों वैश्यो, तथा शूद्रो को अलग निकाल कर केवल उनके विषय रूप से क्यो कहा गया कि वे भी परमेश्वर का आश्रय लेकर, उसके उपासना द्वारा परमगति को प्राप्त होते है। और अगले श्लोक मे पुण्य ब्राह्मणो और भक्त राजर्षियों के विषय मे मे यह कहा कि उनके विषय मे तो कहना ही क्या अर्थात् उन्हे तो परमगति और भी अधिक सुलभ है।

किं पुनर्ब्राह्मणा पुण्या भक्ता राजर्षय-स्तथा। (९।३३)

इससे यह सदेह अवश्य होता है कि ब्राह्मण और क्षत्रियो को अलग करके केवल उन्हे ही पढने का तथा विशिष्ट स्थिति का अधिकार प्रदान किया गया है, परन्तु यहा एक तो ब्राह्मणों को पुण्या (पवित्र) और क्षत्रियो का राजर्षय (ऋषि स्वभाव के राजा) तथा 'भक्ता', विशेषण ध्यान देने योग्य है। अर्थात् ब्राह्मणो मे भी अत्यन्त सच्चरित्र पवित्र और क्षत्रियो से (केवल जन्म से ही नही) जो वास्तविक ब्राह्मण क्षत्रिय होते हैं उनमे क्रमश सत्व और रजोगुण की प्रधानता होती है दूसरी ओर द्विज होते हुए भी वैश्य का कर्म कुछ ऐसा है जिसमे एक स्थान से दूसरे पर जाना आना बहुत व्यस्त रहना पडता है। व्यापार शब्द का अर्थ ही व्यस्तता है। इस कारण उसका स्वाध्याय और पुण्य दोनो बाधित होते है। गुणकर्म की दृष्टि से यही बात बहुत कुछ शूद्रो के साथ रहती है। वे भी कर्म के कारण अधिकारी तमोगुण मे पडे रहते हैं स्त्रियो को प्रकृति ने मातृत्व और गृहिणी की विशेष परिस्थिति मे रखा है। आज भी हम देखते है कि गृहस्थ का सम्यक् सचालन करते हुए पढी-लिखी गृहिणी का भी स्वाध्याय नियमित रूप से चलना कितना कठिन होता है, अधिकाशतया असम्भव हो जाता है। सार यह है कि सर्वत्र सम भाव मानने वाली गीता मे यहा कही भी—जन्मगत—वर्ण व्यवस्था और तदनुसार विशेषाधिकार अथवा अधिकार वचना या अस्पृश्यता आदि अभिप्रेत नही है।

गीता के प्रबुद्ध व्याख्याकार रामगोपाल मोहता के शब्दो मे गीता की मूल भावना को इन शब्दो मे प्रस्तुत किया जा सकता है :—

'सबकी एकता को सच्ची और अनेकता को झूठी समझकर, भिन्न-भिन्न प्रतीत होने वाले शरीरो के साथ उनके गुणो की पृथक्-पृथक् योग्यतानुसार यथायोग्य व्यवहार करना, और ऐसा करते हुए भी सबकी आपस की वास्तविक एकता का सदा स्मरण रखते हुए, अन्तःकरण मे किसी के साथ राग, द्वेष, ईर्ष्या, घृणा, तिरस्कार आदि मलिन भाव न रखना और किसी को वस्तुत ऊचा, नीचा, पवित्र, मलिन, अच्छा बुरा, बडा छोटा आदि न समझना तथा किसी पर अत्याचार न करना, किसी को न दबाना, किसी के स्वाभाविक अधिकार को छीनना—यह गीता—प्रतिपादित समत्वयोग है।"
(गीता का व्यवहारदर्शन, पृष्ठ, २५३)

'मनुष्य किसे कहना' महर्षि दयानन्द सरस्वती की दृष्टि में

लेखक— सत्यपाल भसीन

"मनुष्य उसी को कहना जो मनन शील होकर अपनी जात की तरह दूसरों के दुख-सुख और नफा नुकसान को समझे। ना-इन्साफी करने वालों की ताकत को घटाया और इन्साफी करने वालों की ताकत बढ़ाया करे और यदि इस काम मे चाहे जान भी चली जाए तो भी मनुष्यता के इस धर्म को न छोड़े।...यह है वह रहस्य मय सदेश ..जो आर्यसमाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने मनुष्य को दिया और फिर कहा 'हे कल्याण की इच्छा रखने वाले मनुष्य मात्र जो तू मैं अकेला हू ऐसा अपनी आत्मा मे जान कर मिथ्या बोलता है सो ठीक नही है क्योकि दूसरी तेरे हृदय मे अन्तर्यामी रूप से परमेश्वर पाप-पुण्य को देखने वाला हर समय मौजूद है। उससे डर कर सदा सत्य बोला कर क्योकि—

आए गे अजल मे बस काम रोजे महसूर मे।
न होगा कोई भी साथी सिवाय तेरे कर्मों के।।

महर्षि दयानन्द सरस्वती १६ वी शताब्दी के एक विख्यात सुधारक थे। वह वेदो और शास्त्रो की शिक्षा को तत्व से जानते, वह प्रख्यात विद्वान थे, उनका दृढ विश्वास था जब तक हर एक मनुष्य अपने स्वार्थी विचारो को छोड कर सही अर्थों मे मनुष्यता के रग मे ना रगा जाएगा तब तक आर्थिक और राजनीतिक उन्नति असम्भव है। कितनी सच्चाई है महर्षि के इन शब्दो मे। इसी विचार से प्रेरित होकर महर्षि ने आर्यसमाज के ६ वे नियम मे साफ तौर पर कहा कि ससार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है और इसी नियम की पूर्ति के लिए ९ वे नियम म अनिवार्य ठहराया कि प्रत्येक मनुष्य को अपनी ही उन्नति से सतुष्ट न रहना चाहिए अपितु सबकी उन्नति मे अपनी उन्नति समझनी चाहिए।

उन्होने सोसायटी म प्रचलित भ्रमात्मक विश्वासो और कुरीतियो का जोरदार खण्डन किया और स्त्री जाति को सुशिक्षित करना विधवाओ की दुर्दशा को सुधारने अल्पायु की शादियो को रोकने, ऊच-नीच और छुआ-छूत के भेदभावो को मूल से नष्ट करने और एक ईश्वर की पूजा करने का पुरजोर समर्थन किया इसमे विरोधियो किया। इसमे विरोधियो की कटु आलोचना की भी रत्ति भर परवाह नही की।

एक बार कर्णवास मे किसी सज्जन ने स्वामी जी से कहा—आप अवधूत होकर इतने खण्डन-मण्डन के झगड़े मे क्यो फस गए हो.. स्वामी जी ने जवाब देते हुए कहा—मेरे लिए ये काम झगडा नही है। स्वार्थी लोग इस समय ऋषि सन्तान को पथभ्रष्ट कर उसे कुरीतियो के नुकीले काटो मे घसीट रहे है। मुझसे आर्य जाति की यह दुर्दशा देखी नही जाती। मैंने प्रण कर लिया है कि इसे सन्मार्ग पर लाने के लिए प्राण-पन प्रयत्न करूगा...। और उन्होने यह प्रण जीवन भर निभाया।

महर्षि के जमाने मे भी काफी मतान्तर चले हुए थे, परन्तु महर्षि ने अपने मतव्य को दर्शाते हुए कहा है कि मैं किसी एक मजहब का पक्षपाती नही हू जैसे आजकल के लोग अपने मत की तारीफ, मण्डन व प्रचार करते है। और दूसरो की निन्दा और हानि और उनको बन्द करने मे प्रयत्नशील रहते है। वैसे मैं भी होता, परन्तु ये बाते मनुष्यपन से बाहर है।

याद रहे कि महर्षि दयानन्द जिनका बचपन का नाम मूलशकर था, अभी १४ वर्ष के थे, कि शिवरात्रि के दिन वास्तविकता का बोध हो गया और तब से ही वह ससार के उपकार मे पूरी तरह जुट गए।

आइए, हम महाशिवरात्रि के पुण्य पर्व पर दृष्टिपात करे और महर्षि की मनुष्य की परिभाषा को अपने जीवनो मे घटाने का दिल से प्रयत्न करे। यकीन रखिए यदि हम ऐसा करना चाहे तो हमे दुनिया की कोई ताकत रोक नही सकती।

आर्यसमाज सदर बाजार में भाषण प्रतियोगिता

आर्यसमाज सदर बाजार दिल्ली ६ मे वसन्तोत्सव एव धर्मवीर बलिदानी हकीकतराय का बलिदान दिवस बहुत ही उत्साह एव श्रद्धा के साथ सम्पन्न किया गया।

विशेष आकर्षक कार्यक्रम बच्चो की भाषण प्रतियोगिता के रूप मे बच्चो ने वीर हकीकतराय के प्रति श्रद्धाजलि अर्पित करते हुए प्रेरणात्मक प्रसग प्रस्तुत किए।

इस भाषण प्रतियोगिता मे सम्मिलित होने वाले सभी बच्चे पुरस्कृत किए गए। प्रतियोगिता मे प्रथम स्थान कु० ज्योति आर्या द्वितीय स्थान कु० इन्दु यादव और तृतीय स्थान कु० इन्दु शर्मा ने प्राप्त किया। कार्यक्रम का समापन प० सत्यदेव जी के सुमधुर क्रातिकारी गीतो के साथ हुआ। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ० राकेश गुप्त ने की।

५० हजार मुस्लिम हिन्दू बनेंगे

नई दिल्ली। अ० भा० युवाक्राति परिषद् के सयोजक एव नवाब छतारी के पौत्र डा० आनन्द सुमन ने एक विशेष भेंट मे सूचना दी है कि जिला जौनपुर के सिहरामऊ स्थान पर क्षत्रिय महा सभा युवाक्राति परिषद् के सहयोग से २०-२८ फरवरी, १९८२ को होने वाले एक महाधिवेशन मे ५० हजार से अधिक मुस्लिम बन्धु पुन अपने स्वधर्म (हिन्दू धर्म) को ग्रहण करेंगे। विराट हिन्दू समाज के अध्यक्ष डॉ० कर्णसिह के इस सम्मेलन मे उपस्थित होने की सम्भावना है।

आर्यसमाज राणा प्रताप बाग मे ऋषि बोधोत्सव

आर्यसमाज राणा प्रताप बाग मे सब्जी मण्डी उप आर्य प्रतिनिधि की ओर से सामूहिक ऋषि बोधोत्सव रविवार २१ फरवरी, १९८२ प्रात ९ बजे से ११½ बजे तक दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सरदारी लाल वर्मा जी की अध्यक्षता मे मनाया गया। इस अवसर पर सभा प्रधान वर्मा जी के अतिरिक्त डॉ० जय नारायण वर्मा सन्तोषी', आचार्य हरिदेव जी सिद्धान्त-भूषण ऋषि का सन्देह प्रस्तुत किया। पडित ईश्वरदयालु भजनोपदेशक के सुन्दर भजन हुए।

नेपाल में वेद--प्रचार एवं आर्यसमाज का गठन

दिनाक २७ फरवरी से ३० फरवरी तक चम्पारण जिला आर्य सभा के तत्वावधान मैं जिला प्रचारक प० भगवान शर्मा "वेद पथिक" कुरान मर्मज्ञ" तथा सहयागी रामचन्द्र आर्य "याज्ञिक" रक्सौल द्वारा नेपाल राज के अन्तर्गत फरीदाबाद मयनपुर एव भेरिहारी ग्राम मे वैदिक धर्म का प्रचार धूम-धाम के साथ सम्पन्न हुआ। जिला प्रचारक ने नेपाल तराई के लोगो को आर्यसमाज क्या है, आर्यसमाज क्या चाहता है, आर्यसमाज क्या मानता है, आदि विषयो का प्रभावशाली ढग से समाधान भी किया। भेडिहारी ग्राम के कर्मठ एव उत्साही मुखिया श्री नथुनी प्रसाद जी एक सम्पन्न एव प्रभावशाली व्यक्ति है उन्होने अपने दरवाजे पर प्रचार कराया, जिसका लोगो पर काफी प्रभाव पड़ा। एक मुस्लिम डॉक्टर ने जिला प्रचारक से कुरान पर शका समाधान भी किया। विभिन्न स्थानो पर यज्ञ हुआ जिसमे १२० व्यक्तियो ने यज्ञोपवीत धारण किए तथा मद्य मास छोड़ने की प्रतिज्ञा की। जिला प्रचारक के प्रयास से "आर्यसमाज भेडिहारी" नेपाल तराई का गठन भी हुआ। जिसके निम्नलिखित पदाधिकारी चुने गए। श्री माया भगत—प्रधान, श्री बनारसी प्रसाद—उपप्रधान, श्री नथुनी प्रसाद—मत्री, श्री सत्यनारायण—उपमत्री, श्री हरीन्द्र प्रसाद—पुस्तकाध्यक्ष;

बिन्दकी फतेहपुर में आर्यवीर दल सम्मेलन

पश्चिमी उत्तर प्रदेश मे दलीय संगठन मजबूत किया जाएगा—

लखनऊ। पश्चिमी उत्तर प्रदेश के सचालक श्री डॉ० बालकृष्ण जी सूचित करते है कि विगत २३ फरवरी सन् ८२ को बिन्दकी फतेहपुर मे अपने क्षेत्र मे बृहद आर्य सम्मेलन सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्यवीर दल के प्रधान सचालक श्री प बालदिवाकरजी हस ने क्षेत्रीय कार्यकर्ताओ को सम्बोधित किया।

सार्वदेशिक सभा द्वारा उद्घोषित...धर्म रक्षा महाभियान के सदर्भ मे विधर्मी लोगो की चालो मे फसे, लोगो के त्राण करने हेतु योजना बनायी जा रही है।

डा० रघुवीर वेदालंकार पुरस्कृत

उत्तर प्रदेश सस्कृत अकादमी लखनऊ उत्तर प्रदेश सरकार की ओर से डॉ० रघुवीर वेदालकार को जनवरी ८२ मे उनकी पुस्तक काशिका-हिन्दी व्याख्या के लिए एक हजार रुपए के पुरस्कार स सम्मानित किया गया। इससे पहले भी आपको शोधग्रन्थ 'काशिका का आलोचनात्मक अध्ययन के लिए पुरस्कृत किया गया था। आप आजकल रामजस कालेज मे सस्कृत विभाग मे प्राध्यापक हैं और आर्यसमाज शालीमार बाग के मत्री हैं।

श्री शालवाले की शर्तें इस प्रकार है

गोरक्षा के आमरण अनशन बन्द करने के लिए सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री राम गोपाल शालवाले की पूर्ति निम्न है

१—सविधान की धारा ४८ मे सशोधन कर गाय का अर्थ सम्पूर्ण गोवंश माना जाए।

२—सम्पूर्ण गोवश की हत्याबन्दी का केन्द्रीय कानून बनाए जाए।

३—मौजूदा कानूनो पर कड़ाई से अमलकर जिन प्रदेशो मे गोहत्याबन्दी कानून नही बने है, वहा रेल या सडको से गोधन ले जाने पर पाबन्दी हो और ले जाने वालो को कड़ी सजा दी जाए।

४—गाय-भैंस के मास का निर्यात बन्द किया जाए, इनके ठेके रद्द किए जाए।

५—हत्या से बचाई गई गायो की रक्षा के लिए गो सदन बनाए जाए।

६—गोसदन-गोशालाओ के खर्च के लिए बाजारों पर लगने वाली लालबाग को कानूनी मान्यता दी जाए।

७—गोसदन, गोसवर्द्धन, गोपालन के निमित्त दान पर आयकर पर शत प्रतिशत छूट हो और यह दान विज्ञापनो की तरह खर्च मे परिगणित किया जाए।

आर्य जगत् समाचार

मयूर भंज में आर्यसमाज द्वारा प्रचार कार्य

बारीपदा (उडीसा) दिनांक १०-१२-८२, बारीपदा से लगभग ३० किलोमीटर दूर कुलियाना प्रखण्ड के भालियाडीह ग्राम स्थित मुकुन्दराम हाई स्कूल मे धर्म-रक्षा अभियान के अन्तर्गत एक सभा का आयोजन किया गया। सभा की अध्यतक्षा श्री सच्चिदानन्द मिश्र (मयूर भज जिला विश्व हिन्दू परिषद् के सभापति) ने की। डॉ० विजय द्विवेदी मुख्य वक्ता एव सुप्रसिद्ध आदिवासी नेता गोपीनाथ सिह मुख्य अतिथि थे। सभा मे आस-पास के गावो के अनेक धर्म प्राण व्यक्ति एव छात्र-अध्यापक उपस्थित थे। इस अवसर पर डॉ० द्विवेदी ने अन्य धर्मावम्बियो द्वारा चलाए जा रहे धर्मान्तरण कार्यक्रम से उपस्थित जनता को सावधान रहने तथा जरूरत पड़ने पर आर्यसमाज बारीपदा को सूचित करने को अनुरोध किया।

भुवनेश्वर आर्यसमाज में अन्तर्जातीय विवाह

भुवनेश्वर। दि० १०-१२-८२ को आर्यसमाज मन्दिर मे एक अन्तर्जातीय विवाह हुआ। कन्या ब्राह्मण परिवार की थी और वर खण्डायत (वैश्य) था। इस विवाह मे किसी प्रकार का लेन-देन नहीं हुआ उड़ीसा के सुप्रसिद्ध आर्य विद्वानतथा उत्कल आ० प्रा० सभा के मत्री श्रीदास ने पौरोहित्य किया, बड़ी संख्या मे राजधानी के पत्रकार, समाज-सेवी एव बुद्धिजीवी इस अवसर पर उपस्थित थे। श्री दास ने उपस्थित जनो को 'आर्यसमाज की विश्व को देन' विषय पर सबोधित किया। भाषण अत्यन्त ज्ञानगर्भित और प्रभाव शाली थी।

डा० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार सम्मानित

आर्यजगत को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि पहले तो स्वतन्त्रता दिवस पर राष्ट्रपति ने भूतपूर्व ससद सदस्य तथा अनेक वर्षो तक गुरुकुल कागड़ी विश्वविद्यालत के कुलपति पद पर प्रतिष्ठित तथा वर्तमान विजिटर डॉ० सत्यव्रत सिद्धान्तालकार को वेदों तथा सस्कृति के उच्चकोटि के विद्वान के रूप में घोषित कर उन्हे आजीवन पाँच हजार रुपए वार्षिक आदरीय अनुदान देने की घोषणा की और अब मध्य फरवरी मे उन्हे राजा जी शताब्दी समिति ने उन्हें उनकी पुस्तक वैदिक विचारधारा का वैज्ञानिक आधार पर दस हजार रुपए का साहित्यिक पुरस्कार देकर सम्मानित किया है।

दिल्ली में 'सीताष्टमी-ऋषि-बोधोत्सव सम्पन्न'

प्रान्तीय आर्य महिला सभा दिल्ली के तत्वावधान मे १६-२-८२ को सीताष्टमी व बोधोत्सव पर्व लगभग ७०० बहिनों की उपस्थिति में आर्य महिला आश्रम राजेन्द्र नगर मे माता पूर्ण देवी जी व आश्रम की अन्य समाज सेवी बहिनो के सौजन्य से अत्यन्त धूमधाम से सफलतापूर्वक मनाए गए। लखनऊ विश्वविद्यालय की प्राचार्या डा० श्रीमती शान्ति देवी बाला एव डा० सुषमा शर्मा ने माता सीता के प्रति श्रद्धाजलि अर्पित करते हुए महिलाओ को लक्ष्मी, सरस्वती व दुर्गा का रूप बताया और कहा कि आज नारी को विशेष रूप से यह निश्चय करना है कि उसे केवल पुरुष के विनोद का साधन बन कर नही रह जाना। अपितु अपने वास्तविक स्वरूप शक्ति एव गौरव को पहचानना होगा।

भाई अमरेश आर्यपूर्व अमीर मुहम्मद ने भाव-भीनी श्रद्धाजलि अर्पितकरते हुए कहा कि आर्यसमाज के नियमों, महर्षि दयानन्द के सत्यार्थ प्रकाश व लेखराम की जीवनी ने मेरी आखे खोल दी, फलस्वरूप ही मैंने वैदिक धर्म को अपनाया है। माता सीता के प्रति श्रद्धाजलि देते हुए आर्य जी ने कहा कि आने वाली सन्तानो को उत्तम बनाने की जिम्मेदारी आप माताओ पर ही है। अपने अध्यक्षीय भाषण मे श्रीमती सुशीला आनन्द ने कहा कि स्वामी दयानन्द जी के वेद ज्ञान के समक्ष सभी मतमतान्तर फीके पड गए अत हम सभी को भी निरन्तर उसी ज्ञान को प्राप्त करते हुए अपने जीवन को महान बनाना होगा।

सभा मन्त्रिणीप्रेमशील महिन्द्रू

१ मुसलमान और १४ ईसाई हिन्दू बने

नई दिल्ली। दिल्ली निवासी रशीद अहमद को २१ फरवरी के दिन वैदिक धर्म मे दीक्षा दी गई। यह शुद्धि कार्य आर्यसमाज मोती नगर मे सम्पन्न हुआ। रशीद अहमद का नाम ऋषिकुमार रखा गया। शुद्धि कार्य पण्डित सुदर्शन देव शास्त्री नेकराया। इसके लिए आर्यसमाज के प्रधान श्री ओमप्रकाश जी ने अनथक परिश्रम किया। शुद्धि सभा के प्रधान मन्त्री श्री द्वारकानाथ सहगल, दीपचन्द शर्मा कार्यालयायक्ष, डा० प्रशान्त कुमार वेदालकार, श्री ओमप्रकाश जो तलवाड़, महामन्त्री आर्य केन्द्रीय सभा, श्री कृष्ण पाल जी, श्री ऋषिपाल जी, श्री बाल कृष्ण जी, श्री नरेन्द्र जी, श्री सुखबीरसिंह जी ने शुभाशिर्वाद दिया। इससे पूर्व जनवरी मे १४ ईसाइयों को शुद्ध किया। उनके नाम इसलिए परिवर्तित नहीं किए क्योंकि वह पहले ही हिन्दू थे।

मंगोलपुरी में यज्ञशाला तोड़ डाली गई

यज्ञकुण्ड का अपमान—आर्यनारियों से दुर्व्यवहार

१४ फरवरी, १९८२ का रविवार था वह। मैं कई बसें बदलता हुआ बड़ी मुश्किल से मगोलपुरी पहुंचा, और ढूढता ढूढ़ता आई ब्लॉक मे ११५१ न० मकान मे भी पहुच गया। वहा आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली की विशेष बैठक होनी थी। मुझे लगा कि मैं इतनी देर से पहुचा हूं कि बैठक समाप्त हो गई। अन्दर झाक कर देखा तो ५-७ व्यक्ति थे, उन्होने मुझे भी बुला लिया।

मुझे बताया गया कि बैठक आरम्भ होने से पूर्व ही उसकी समाप्त की घोषणा करके अधिकारीगण वापस चले गए हैं। बैठक से पूर्व ऋषि-बोधोत्सव का कार्यक्रम चल रहा था। एक मुसलमान युवक सलीम ने भद्दी गालिया देकर सभा को समाप्त करने की विवशता उत्पन्न कर दी। उसने हिन्दू धर्म को गालियां दीं और आर्यसमाज को बुरा भला कहा। एक युवक उसे पकड़ने के लिए दौड़ा, किन्तु अधिकारियो ने उसे रोक दिया। एकदम शान्ति पाठ करके वे गाडी मे बैठकर वहा से चले गए।

मैं वहा के मन्त्री श्री अमरसिह जी से मिला। उन्होंने मुझे बताया कि आज के जलसे की अनुमति महायुक्त पुलिस से से ली गई थी, पर थानेदार श्री प्रेमनाथ अरोडा ने उस अनुमति पत्र को फाड डाला। उसका कहना था कि बिना एस० पी० की अनुमति के जलसा नही होने दूगा। उसे मालूम था कि एस० पी० आज इनको मिलेगा नहीं और इनका जल्सा नहीं हो सकेगा। पुलिस ने वहा से माइक भी हटा लिया। आर्यसमाज के प्रधान श्री मेघनाथ आर्य को वे पकड कर ले गए।

यह १४ फरवरी को घटना थी इससे एक सप्ताह पूर्व ही एक और काण्ड घटित हो चुका था। ७ फरवरी को रविदास जयन्ती के दिन जब डी० डी० ए० बन्द था, उसके अधिकारी और कर्मचारी पुलिस के साथ दिन आ गए। पता चला सलीम लाया था उन्हें। डी० डी० ए० के कर्मचारियों मे मगोलपुरी के ही कुछ युवक दैनिक भत्ते पर लगे हुए थे। उस दिन तो वे टल गए। पर १४ फरवरी को वे फिर सब आ गए। उनमें डी०डी० ए के एक अधिकारी श्री एस. एच. मल्ला भी थे। उसने यज्ञकुण्ड पर लात लगा दी। उसे धक्का मार कर परे किया एक आर्यललना श्रीमती सरिता राठौर ने। श्रीमती दुर्गा ने भी अपने नाम को सार्थक किया। फिर पुलिस आ गई और उसने इन भद्र महिलाओं के साथ हाथा-पाई की। इनके कपडे फाड डाले।

मगोलपुरी मे गत ३ वर्षों से आर्यसमाज चल रहा है। २९ नवम्बर १९८१ को वहां हरिजन स्नेह सम्मेलन किया गया था। ढाई हजार व्यक्तियों ने वहा एवं साथ भोजन किया था और प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री भारतमित्र व श्री डोगरा जी ने वहां ओ३म् का ध्वज फहराया था।

—प्रशान्त वेदालकार
७।२ रूपनगर दिल्ली—९

पं० जयमंगल शर्मा का लाभ उठाए

मुजफ्फरपुर निवासी प्रवचनकर्त्ता प० जयमगल शर्मा सैनिक सेवा से स्वैच्छिक अवकाश ग्रहण कर अब स्थायी रूप से राची मे रहने लगे हैं।

स्वर्गीय महात्मा आनन्द स्वामी, स्व० विद्यानन्द विदेह, महात्मा आर्यभिक्षु (ज्वालापुर) प० अभयदेव शर्मा (अजमेर) और महानन्द आर्य भजनोपदेशक (बगही, चुनार) ने उनके वेदोपदेश की प्रशंसा की है। अपने शहर में वेदोपदेश कराने के इच्छुक सज्जन या आर्यसमाज निम्नलिखित पते पर पत्र व्यवहार कर अपने यहां कार्यक्रम रखकर लाभान्वित हों - मंत्री, आर्यसमाज, रांची

ईसाई महिला हिन्दू बनी

दिनाक १६ फरवरी को एक ईसाई लडकी कुमारी एनी फ्लोरेंस को उसकी इच्छा के अनुसार वैदिक धर्म में दीक्षित किया गया और उसका नाम कुमारी रेखा रखा गया। यह कार्य श्री हरवश लाल पुरी प्रधान आर्यसमाज रामकृष्णपुरम् की अध्यक्षता मे तथा प० मनुदेव जी शास्त्री के पौरोहित्य मे सम्पन्न हुआ। तत्पश्चात् कुमारी रेखा का शुभ विवाह श्री दीपक कुमार मेहता के साथ हुआ। विनय नगर तथा रामकृष्ण पुरम के कुछ प्रतिष्ठित सज्जन इस अवसर पर उपस्थित थे और उन्होंने वर और वधू को आशीर्वाद दिया।

मेरा मुख्य प्रयोजन

सर्व सत्य का प्रसार कर, सबको ऐक्य मत में करा, द्वेष छुड़ा परस्पर में दृढ़ प्रीतियुक्त कराके सबसे सबको सुख ाभ पहुंचाने के लिए मेरा प्रयत्न और अभिप्राय है।

सर्व शक्तिमान परमात्मा की कृपा सहाय और आप्तजनों की सहानुभूति से यह सिद्धान्त सर्वत्र भूगोल मे शीघ्र ृवृत्त हो जाए।

जिससे सब लोग सहज से धर्मार्थ-काम-मोक्ष की सिद्धि करके सदा उन्नत और आनन्दित होते रहें, यह मेरा ुख्य प्रयोजन है।

सौभाग्य और दुर्भाग्य

जब जिस देशस्थ प्राणियों का अभाग्य उदय होता है, तब स्वार्थी, अधर्मी प्रजा का विनाश करने वाले राजा धनाढ्य और खुशामदियों की सभा और उनके समान अधर्मी, उपद्रवी, राजविद्रोही प्रजा भी होती है।

और जब जिस देशस्थ प्राणियो का सौभाग्य उदय होने वाला होता है, तब सुनीति के समान धार्मिक विद्वान पुत्रवत् प्रजा का पालन करने वाली राजसहित सभा और धार्मिक पुरषार्थी पिता के समान सम्बन्ध मे प्रीतियुक्त मंगलकारिणी प्रजा होती है जहा अभाग्योदय वहा विपरीत बुद्धि मनुष्य परस्पर द्रोहादिस्वरूप धर्म से विपरीत दु ख के ही काम करते जाते है। और जहा सौभाग्योदय वहां परस्पर उपकार, प्रीति, विद्या, सत्य, धर्म आदि उत्तम कार्य अधर्म से अलग होकर करते रहते हैं। वे सदा आनन्द को प्राप्त होते हैं।

—महर्षि दयानन्द

ऐतरेय ब्राह्मण ग्रंथ का हिन्दी अनुवाद

ज्योतिष्टोम, अग्निष्टोम आदि सोमयागो, उक्थ्य, षोडशी, अग्निरात्र, षडह आदि छह दिनो के यज्ञो, १२ दिनो के यज्ञ द्वादशाह, राजसूय यज्ञ, दक्षणीय, प्रायणीय, उदनीय, आतिथ्य, प्रवार्य आदि इष्टियो की विधियों, सौपर्ण, उजीगत, शुन. शेप आदि की कथाओ से परिपूर्ण प्रथम ब्राह्मण ग्रंथ ऐतरेय का हिन्दी अनुवाद २० के अग्रिम मूल्य मे उपलब्ध है पूरा छपने पर ३०) कीमत होगी—वीरेन्द्रमुनि, शास्त्री, विश्ववेद परिषद्, सी—८१७, महानगर, लखनऊ—६

मंगोलपुरी काण्ड से आर्यसमाजी क्षेत्रों में भारी रोष

नई दिल्ली, १५ फरवरी। केन्द्रीय आर्ययुवक परिषद् ने प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाधी से माग की ह कि देहात युवक काग्रेस (आई) के उपाध्यक्ष मुहम्मद सलीम को मगोल पुरी मे आयसमाज के कार्यक्रम मे ऊधम मचाने व आर्य नेताओ से गाली-गलौच करने पर दल से निष्कासित किया जाए।

परिषद् द्वारा जारी वक्तव्य के अनुसार सलीम मगोलपुरी (आई ब्लाक) मे आयोजित आर्य केन्द्रीय सभा को बैठक को भग कर दिया। पुलिस पर दबाव डालकर समाज के प्रधान श्री मेघराज को गिरफ्तार कर लिया।

गत् ६ फरवरी को भी सलीम ने आर्यसमाज के सत्सग से यज्ञवेदी उठवा ली व महिलाओ से दुर्व्यवहार किया।

नगर की आर्यसमाजो मे रोष है।

बोध-कथा बचाने वाला बड़ा

कपिलवस्तु की कहानी है। वहा के राजा का नाम था शुद्धोदन। एक समय की बात है। राजा के पुत्र सिद्धार्थ अपने चचेरे भाई देवदत्त के साथ बगीचे मे टहल रहे थे। देवदत्त मे अचानक तीर चला कर एक उड़ते हुए हस को घायल कर जमीन पर गिरा दिया। घायल और कष्ट से तड़पते हस का दु ख सिद्धाथ से नही देखा गया, उसने हस कर उठा लिया और तीर निकालकर उसे सम्भाला तो देवदत्त बोला—'भाई यह शिकार मेरा है, इसे मुझे दे दो।'

'भाई मैं इसे नही दूगा।' सिद्धार्थ ने जवाब किया। 'क्यो?' देवदत्त बोल उठा।

'भाई मैंने इसे बचाया है। अब तुम्ही निर्णय करो कि इस पर मारने वाल का अधिकार है या बचाने वाले का?

देवदत्त ने सिद्धार्थ के पिता राजा शुद्धोदन से शिकायत की और कहा—'इस हस पर मेरा हक है। तीर मार कर मैंने इसे गिराया है।'

राजा शुद्धोदन बोले—'पुत्र, तुम यह हस देवदत्त को क्यो नही दे देते? उसी ने तो तीर चला कर इसे गिराया हैं?'—'यह बात तो सत्य है पिता जी, पर आप ही फैसला कीजिए कि एक उड़ते हुए बेकसूर हस पर तीर चलाने का उसे क्या अधिकार था, फिर उसने उस पर तीर क्यो चलाया, उसे क्यो घायल कर दिया। मुझ से इस दु खी प्राणी का नष्ट नहीं देखा गया, इसलिए मैंने तीर निकाल कर पानी से उसका घाव धोया और उसकी सेवा कर उसके प्राण बचाए। इसकी प्राणरक्षा के कारण इस पर मेरा अधिकार होना चाहिए।'

राजा शुद्धोदन को सिद्धार्थ की बात मे कुछ सचाई नजर आई। उन्होने कहा—'ठीक है, तुम्हारा कहना। मारने वाले से बचाने वाला बडा होता है।'

देवदत्त को अपनी भूल का अहसास हो गया। सिद्धार्थ ने भी उस हस को छोड़ दिया। वह हंस मुक्ति पाकर आसमान मे उड गया।

—नरेन्द्र



डा० सूर्यदेव द्वारा २२ हजार रु० का दान

आयसमाज के यशस्वी तथा डी० ए० वी० उच्च माध्यमिक विद्यालय अजमेर के मू० पू० प्रधानाध्यापक एव प्रसिद्ध शिक्षा शास्त्री डॉ० सूर्यदेव शर्मा ने आर्य समाज, अजमेर को ऋषि दयानन्द के अमर क्रांतिकारी ग्रंथ 'सत्यार्थप्रकाश' पर आधारित सत्यार्थप्रकाश-ग्रन्थमाला के प्रकाशन कार्य में २२,००० हजार रुपए का अनुकरणीय सहयोग प्रदान किया है।

आर्ययुवक परिषद् दिल्ली के पदाधिकारी

प्रधान—श्री देवव्रत धर्मेन्दु, उप-प्रधान—श्री नवनीत लाल एडवोकेट और श्री विद्याप्रकाश सेठी; महामन्त्री—प्रो० ओमप्रकाश गुप्ता; उपमन्त्री—श्री मूलचन्द गुप्ता और श्री चन्द्र प्रकाश, परीक्षा मन्त्री—श्री चमनलाल, प्रचार मन्त्री—श्री कमल किशोर आर्य, कोषाध्यक्ष—श्री सत्यप्रकाश गुप्ता।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रकाशन

सत्यार्थप्रकाश सन्देश (हिन्दी)	१ ००
,, ,, (अंग्रेजी)	समाप्त
आर्य सन्देश-महासम्मेलन विशेषांक	६ ००
पादरी भाग गया—ओम्प्रकाश त्यागी	० ३०
स्वामी श्रद्धानन्द-बलिदान अर्द्ध शताब्दी स्मारिका	६ ००
सत्यार्थप्रकाश शताब्दी समारोह स्मारिका	६.००

सम्पर्क करें—
अधिष्ठाता प्रकाशन विभाग
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा,
१५, हनुमान रोड,
नई दिल्ली-११०००१

卐 'आर्यसन्देश' के स्वयं ग्राहक बनें— दूसरों को बनाए

卐 आर्यसमाज के सदस्य स्वयं बनें— दूसरों को बनाइए

卐 हिन्दी संस्कृत भाषा स्वयं पढ़ दूसरों को भी पढ़ाइए—

रजि० नं० डी (सी) ७६५

दिल्ली आर्यप्रतिनिधि सभा के लिए श्री सरदारी लाल वर्मा द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा भाटिया प्रेस २५७४, रघुबरपुरा नं० २ गांधीनगर दिल्ली-३१ में मुद्रित। कार्यालय १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली फोन ३१०१५०

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक मुखपत्र

एक प्रति ३५ पैसे   वार्षिक १५ रुपए   वर्ष ६ अंक १८   रविवार १७ फाल्गुन, वि० २०३८   ७ मार्च १९८२   दयानन्दाब्द १५७

मदर टेरेसा द्वारा सूरत आर्य समाज को खरीदने का प्रस्ताव

जिस आर्यसमाज की स्थापना के लिए स्वामी श्रद्धानन्द ने प्रेरणा की थी और जिस उद्-घाटन महात्मा गांधी ने किया था : सूरत आर्यसमाज प्रधान श्रीमंगलसेन द्वारा रहस्योद्घाटन

सूरत। सूरत आर्यसमाज के श्री मंगलसेन ने लोअर सर्कुलर रोड कलकत्ता १६ अवस्थित मिशनरीज आफ चेरिटीज की सचालिक मदर टेरेसा को एक पत्र लिखकर इस बात पर अचम्भा प्रकट किया है कि आपका अचानक यात्रा कर हमारे धार्मिक स्थान आर्यसमाज मन्दिर को खरीदने का क्या लक्ष्य था? आपका असली मकसद क्या है? क्या आप समझती है कि आर्यसमाज खरीदी जा सकने वाली सम्पत्ति है? या यह केवल हमें अपमानित करने का एक तरीका है?

श्री मंगलसेन ने सूचना दी है कि महर्षि दयानन्द सरस्वती के जन्मस्थान टकारा की यात्रा के बाद जब वह सूरत पहुंचे तो उन्हें सूचना दी गई कि मदर टेरेसा २२ फरवरी, १९८२ के दिन बड़ौदा के बिशप इगनेशियस डीसूजा तथा सूरत के पादरी जेम्स ट्रेवेसा के साथ आर्यसमाज मन्दिर सूरत मे पधारी थी। वह घण्टा भर आर्य-समाज मन्दिर में ठहरी। उन्होने आर्य-समाज के ऊपप्रधान श्री चम्पक लाल खाटी वाला को समाज मन्दिर मे बुलवाया और इनसे पूछा—आपके आर्यसमाज मन्दिर की क्या कीमत है?'

आर्यसमाज सूरत के प्रधान श्री मगलसेन ने इस बात पर आश्चर्य प्रकट किया कि आर्यसमाज सूरत को खरीदने की इच्छा से सूरत पधारने वाली मदर टेरेसा दीन-हीन जनता के उद्धार के कार्य मे उतनी सलग्न नही है, जितनी कि उन्हे ईसाईयत के प्रचार की इच्छा है। यह भी उल्लेखनीय है कि आर्यसमाज सूरत की स्थापना के लिए स्वामी श्रद्धानन्द जी २० जनवरी १९०८ को प्रेरणा दी थी और इसकी निर्माण के लिए आर्थिक सहायता दी थी। यह भी ख्याल करने योग्य बात है कि १ अक्तूबर, १९१३ को स्वय महात्मा गान्धी ने आर्यसमाज सूरत का उद्घाटन किया था।

स्मरण करने योग्य बात यह है कि आर्यसमाज मन्दिर से २० फुट की दूरी पर ईसाईयो का कब्रिस्तान है। सूरत आर्यसमाज के प्रधान श्री मगलसेन ने मदर टेरेसा को पत्र लिखकर बदबू फैलाने वाले इस जगह को हटाने की माग की है।

मीनाक्षीपुरम में आर्य समाज की स्थापना

गांव में हरिजनों के लिए आर्य पाठशाला : श्री शालवाले द्वारा अंग्रेजी पत्र में प्रकाशित समाचार का खण्डन

नई दिल्ली। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले ने वक्तव्य मे यू. एन आई. समाचार समिति द्वारा प्रसारित एवं २२ फरवरी १९८२ के इण्डियन एक्सप्रेस मे प्रकाशित इस सम्वाद को सर्वथा निराधार कहा है कि १९ फरवरी १९८२ को मीनाक्षीपुरम मे १२०० हरिजन मुस्लिम बने थे और शेष ३५० हरिजन भी विधर्मी बनना चाहते हैं। सच्चाई यह है कि मीनाक्षीपुरम एक छोटा-सा गाव है, उसमे ३७५ झोपडिया हैं, १२०० जन-सख्या कभी नहीं थी और न आज है। यहां ३५० हरिजनो के तथा २५ थेवर जाति के लोगों के घर हैं। श्री शालवाले ने घोषित किया है कि गत वर्ष बने हुए हरिजनों ने हिन्दू धर्म मे वापस आने की इच्छा जाहिर की है। पिछले वर्ष धर्मा-न्तरित आधे से अधिक हरिजन पुन हिन्दू धर्म मे पहले ही आ गए है।

सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री राम-गोपाल शालवाले और सभा के उपप्रधान एव आन्ध्रप्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष श्री रामचन्द्रराव पिछले दिनो आर्यनेता श्री वी किशनलाल और तमिलनाडु के आर्यनेता श्री दयाचन्द मलहोत्रा तथा श्री कन्नव जी के साथ १९ फरवरी, १९८२ को मीनाक्षीपुरम गए थे, इन आर्यनेताओ ने मीनाक्षीपुरम आर्य समाज की सक्रिय शाखा स्थापित की है। गाव मे दयानन्द चिरजीलाल आर्य प्राथमिक पाठशाला भी चल रही है।

पण्डिता राकेश रानी गिरफ्तार और जमानत पर रिहा

आर्यनेताओं द्वारा गिरफ्तारी पर रोष

नई दिल्ली। दयानन्द सस्थान की अध्यक्षा एव 'जनज्ञान' की सम्पादिका पण्डिता राकेश रानी २१ फरवरी को दिल्ली पुलिस द्वारा १५३ए और २९५ए के अन्तर्गत गिरफ्तार की गई थीं। २२ फरवरी को दोपहर के समय न्यायाधीश श्री मित्तल की अदालत ने पण्डिता राकेश रानी की जमानत स्वीकार कर उन्हें मुक्त करने का आदेश दिया। श्रीमती राकेश रानी ने जमानत पर छूटने के बाद एक प्रेस वक्तव्य में घोषित किया है कि उन्होने कोई भी पुस्तक किसी भी वर्ग के व्यक्ति का मन दुखाने या अपमानित करने के लिए नहीं लिखी। जिस पुस्तक के आधार पर उनकी गिरफ्तारी हुई है, उसमें कोई भी बात तथ्यों के विपरीत नहीं है और न उसका उद्देश्य किसी का अपमान करना है। महात्मा गांधी से लेकर हिन्दुस्तान का हर समझदार आदमी साम्प्रदायिकता का रहा है और वह भी हैं।

पण्डिता राकेश रानी की गिरफ्तारी की सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले सनातन धर्म सभा के महामन्त्री गोस्वामी गिरिधारी लाल, आर्यसमाज दीवान हाल के प्रधान श्री सूर्यदेव तथा दूसरे आर्य हिन्दू नेताओ ने निन्दा की है और अपना रोष प्रकट किया है।

खालिस्तान के कौंसुलेट अमेरिका में भी

नई दिल्ली। खालिस्तान के समर्थक ने इस बात से इन्कार किया है कि अमेरिकी सेन्ट्रल इन्टेलीजेन्स एजेन्सी उनकी गति विधियो पर रोग लगा रही है। उन्होने घोषित किया कि वह रीगन प्रशासन के आभारी हैं, जो उन्हे सब तरह की मदद कर रहा है।

डॉ० चौहान ने यह सुचना भी दी कि उन्होने कनाडा के टोरन्टो मान्ट्रियल और विन्नीपेग में खालिस्तान के अपने कौंसुलेट खोल लिए है और वह जल्दी ही सयुक्त राज्य अमेरिका के डेट्राइट, सान जोसे, ह्यूस्टन और न्यूयार्क मे कौंसुलेट खोलने वाले हैं।

सम्पादक—नरेन्द्र विद्यावाचस्पति   व्यवस्थापक—प्रद्युम्नलाल तलवाड़

वेद-मनन त्रिविध दीप्ति के बिना यज्ञमयजीवन सभव नही

—मनोहर विद्यालंकार

मयि त्यदिन्द्रिय बृहत्, मयि दक्षो मयि क्रतु ।
धर्मास्त्रिशुग्विराजति विराजा ज्योतिषा सह ब्रह्मणा तेजसा सह ।।यजु ३-२७

ऋषि—दीर्घतम । देवता यज्ञ । छन्द—पडित ।

शब्दार्थ—(घर्म) जीवन यज्ञ (विराजा) विशेष रूप से दीप्त (ज्योतिषा) ज्ञान की ज्योति से (ब्रह्मणा) धन द्वारा प्राप्त अन्न और जल के साथ तथा (तेजसा सह) अनुभव और आचरण के तेज के साथ (त्रिशुक्) तीन दीप्तियो से युक्त होकर (विराजति) विशेष रूप से दीप्त होकर दूसरो को दीप्त करता है। (मयि) मेरे इस बाल्य जीवन मे (त्यत्) वह (बृहत् इन्द्रियम्) बड़े-बड़े कार्यो का साधक वीर्य सचित हो (मयि) मेरे युवा काल मे (दक्ष) दक्षता तथा सामर्थ्य बना रहे। (मयि) मेरे वार्द्धक्य मे (क्रतु) सकल्प ज्ञान तथा कर्म सुव्यवस्थित रहे।

निष्कर्ष—जीवन को सर्वागीत बनाने के लिए ज्ञान आवश्यक है, इसे ब्रह्मचर्य काल मे अवश्य प्राप्त करना चाहिए, अन्यथा पछताना पड़ता है। जीवन को सुचारु रूप से चलाने के लिए धन आवश्यक है, इसे युवाकाल मे अवश्य कमाना चाहिए। जीवन को प्रतिष्ठित और सफल करने के लिए कोई-न-कोई विशिष्टता (तेज) आवश्यक है, इसे वार्द्धक्य मे पहुचने तक अवश्य प्राप्त कर लेना चाहिए।

शरीर को स्वस्थ तथा समर्थ रख कर पूर्णायु प्राप्त करने के लिए वीर्य आवश्यक है, इसलिए बचपन में ब्रह्मचर्य द्वारा इसकी रक्षा करनी चाहिए। समाज में आदर प्राप्त करने के लिए किसी क्षेत्र में दक्षता आवश्यक है। इसलिए मानसिक दृष्टि से किसी-न-किसी विषय मे दक्ष बनना चाहिए। मन को उदार रख कर दूसरो का सहयोग और सहायता करनी चाहिए। जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए बुद्धि को व्यवसायात्मिका अथवा सकल्पमय बनाना आवश्यक है। जो सकल्प नही कर सकता, सदा सशयात्मा बना रहता है, वह सदा असफल होता है। 'सशयात्मा विनश्यति'।

विशेष—परमेश्वर या यज्ञ के साधन पूजनीय बनाने के लिए, सब प्रकार के अन्धकार अर्थात् शारीरिक रोग मानसिक अज्ञान और बौद्धिक सशय को दूर करना चाहिए। दीर्घतमा तम+दीर्घ=दृविदारणे)। इसके उपाय रूप में मन को उदार, बुद्धि को परिपक्व और शरीर को सुडौल बनाना चाहिए।

अर्थ पोषक प्रमाण—इन्द्रियम्-वीर्यम् इन्द्रजुष्टम् इति । दक्ष-दक्षता तथा समृद्धि, दक्ष वृद्धौ, दक्ष उलनाम नि० २-६। क्रतु-कर्मनाम नि० २-१, प्रज्ञा नाम नि० ३-६। धर्म यज्ञनाम नि० ३-१७। ब्रह्मणा—ब्रह्म धननाम नि० २-१०, अन्ननाम नि० २-७, जलनाम नि० १-१२। त्रिशुक्—त्रि+शुक्, शुकगतौ, शुचिर पूतीभावे।

पक्ति—पचपाके, पचि विस्तार वचने पचि व्यक्तीकरणे।

५२२, ईश्वर भवन खारी बावड़ी, दिल्ली—११०००६

आर्यसमाज के साहित्यकार पं० इन्दु शर्मा भारद्वाज

—ले० डॉ० भवानीलाल भारतीय

प० इन्दु शर्मा भारद्वाज का जन्म मेरठ जिले के किरठल ग्राम में १८८३ ई० मे हुआ। यह अच्छे विद्वान तथा सुलेखक थे। रणवीर अभिमन्यु (१८८३) तथा अगराज कर्ण नामक उनकी दो गद्य रचनाए उल्लेखनीय हैं। कन्याओ के उपनयन को लेकर इन्होने कन्योपनयन सस्कार नामक पुस्तक लिखी जिसमे विभिन्न शास्त्रीय प्रमाणो के आधार पर कन्याओ के यज्ञोपवीत का विधान किया गया है। यह पुस्तक ब्रह्मचारी सत्यव्रत शर्मा द्वारा धर्म दिवाकर प्रेस मुरादाबाद मे छपवा कर १९६५ विक्रमी मे प्रकाशित की गई। इनके द्वारा सकलित एक अन्य पुस्तक ख्याल सरोवर (१९१२) का भी उल्लेख मिलता है। शर्मा जी का निधन १९१३ मे हुआ।

घरेलू इलाज

—कविराज बनवारी लाल शादा

अपने अनुभव सर्वजन हितार्थ प्रकाशित कर रहा हूं, इच्छुक बन्धु सस्ते सरल और सुलभ निम्न योगो से लाभ उठाए है।

मनुष्य जीवन का सम्पूर्ण आधार आरोग्य ही है। जो मनुष्य अपने स्वास्थ्य की रक्षा नहीं करता, वह ससार का कोई सुख प्राप्त नही कर सकता। इसलिए कहते हैं 'एक तन्दुरस्ती हजार नियामता' आजकल यह आम रिवाज चल पड़ा है, थोड़े से अस्वस्थ होते ही लोग पेटेंट दवाएं खाते है, वे नहीं जानते कि इनसे कितनी हानि होती है। प्रकृति के नियमो का पालन करने से मनुष्य अपने स्वास्थ्य की रक्षा कर सकता है। जो प्रकृति के विरुद्ध आचरण करता है, प्रकृति उसे कठोर दण्ड देती है।

ज्वरहरी-लाल फिटकरी एक तोले का फूला बनाकर उसका पाउडर करके कपड़ छन कर शीशी मे रख लें, बताशे मे डालकर ½ माशा मात्रा सुबह, दोपहर, शाम, रात्रि को गरम पानी से खिलाए, सर्व प्रकार के ज्वरो मे लाभ पहुचाता है।

ग्रीष्म ज्वर—'अशुघात, यानी लू व अतिसार मे' देशी आम की बाल केरी जिसमे जाली न पडी हो, उसे सुखा ले और पीस कर पाउडर बना कर रख लें। मात्रा ४ से ६ माशा ठडे जल से दे।

पीलिया—पाडु रोग—कड़वी तोरई की सुखाकर पीसकर इसका दो तीन नस्य दें। (२) केले मे १ माशा चक्कर मिला कर खिलाये। (३) अरन्ड स्वरस ५० ग्राम तत्काल निकाल कर पिलाए। दूध चावल का भोजन दें

खुजली—'खारिस' पिसी हल्दी का कपड़ छन चूर्ण १०० ग्राम, गाय का दूध एक किलो, खाड आधा किलो, गो दूध कड़ाही मे आच पर रखदें। चम्मच से लगातार चलाते रहें। दूध को जलने न दे। जब मावा तैयार हो जाए तो उसमे थोड़ा गो घृत डालकर पुन भूने जब भुन कर लाल हो जाए तब उतार लें, खाड की एक तार की चासनी मे हल्दी और मावे को डाल दें जब हलुआ-सा बन जाए तो इसे उतार कर रखलें।

मात्रा—१० ग्राम लेकर खाए ऊपर से दूध पीए।

बवासीर—हल्दी चर्ण को सेहुड़ (नूहर) के दूध मे खोलकर बवासीर के मस्सो पर प्रति दिन शौच के बाद मल दें।

उबटन—हल्दी आटा चेने का, और तेल मिलाकर उबटन करे मुहासे, झाई, तथा चेहरे का सुन्दर रग देती है।

शारीरिक शक्तिहीनता की पुरानी बीमारी मे—कच्ची हल्दी का रस दस ग्राम शहद मिलाकर चाटें (२) सूखी हल्दी का चूर्ण २ ग्राम लेकर ५ ग्राम शहद को मिलाकर उगली से चाटें। ऊपर से उबला हुआ दूध ठण्डा करके पीए।

मुह के छाले—कत्था, छोटी इलायची, शीतल चीनी, वशलोचन कूटकर छान कर शीशी मे रखले। दिन मे दो चार बुरकी मुह मे बुरकने से आराम आ जाएगा।

नेत्र रोग मे—लाल फिटकरी का पानी बनाकर आखो मे एक बूद डालने से लाभ होगा। नीम के कोमल पत्तो का रस जिस तरफ की आखे मे दर्द हो उसके दूसरी ओर के कान मे २-४ बूद डालें। पान के पत्ते पर घी लगाकर गरम करके सोहता-सोहता आख को सेकें या उसका रात्रि को बाधकर सोने से लाभ होगा,

मोतिया बिन्दु—प्याज का रस १० ग्राम, असली शहद १० ग्राम, भीमसैन कपूर २ ग्राम इन तीनो चीजो को अच्छी तरह घोट कर शीशी मे भर ले, रात को सोते समय सलाई द्वारा आखों मे लगाने से मोतिया बिन्दु का असर रुक जाता है।

फूला काटने को—प्याज का रस निकालकर एक-एक बूद दो-तीन बार दिन मे डालने से फूला कट जायेगा।

कर्ण रोग—तुलसी के पत्तों का रस, निकालकर कान मे दो-तीन दिन डालने से कर्ण स्राव दर्द बहना बन्द हो जाता है। २. बेलगिरी गो-मूत्र मे पीसकर तेल मे मे जलाकर छानकर शीशी मे भरकर रख लें। इसे कान मे डालने से बहरापन दूर होता है। ३. चुकन्दर के पत्तो का रस गरम करके दो-तीन बूद कान मे गरम करके डालिए।

चेहरे के काले दाग—चेहरे के काले दाग पर प्रात टमाटर रस मे रुई भिगोकर मुंह पर मसल ने से कुछ दिनों मे दाग दूर हो जाएगे।

स्वतन्त्र भारत फार्मेसी, मानिकपुरा, नई दिल्ली-११०००५

हमारी गौएं पिडित नहों

ओ३म् नेमा इन्द्र गावो रिषन् मो आसा गोपती रिषन् ।
मासाममित्रयुर्जन इन्द्र मा स्तेन ईशत ।। अथर्व २० १२६ १३

हे ऐश्वर्यवान भगवान्, हमारी ये गौएं पीड़ित न हो । इनका गोपति स्वामी भी पीड़ित न हो । हे राजन् इन पर शत्रु दर्प से व्यवहार करने वाला इनसे स्नेह का व्यवहार न करने वाला इनका स्वामी न हो । चोर-डाकू वृत्ति वाला व्यक्ति भी इनका स्वामी न हो ।

ओ३म्
आर्य सन्देश

क्या हम ऋषि-चित्रन पर ध्यान देंगे ?

उस दिन दिल्ली के फीरोजशाह कोटला मैदान मे आयोजित ऋषि बोधोत्सव की सभा मे अपनी वेदना प्रकट करते हुए आर्य संन्यासी स्वामी विद्यानन्द सरस्वती ने देश के सम्मुख फैले नए खतरे के विषय मे, भारतीय जनता को सावधान करते हुए कहा—आज देश मे जिस तरह अग्रेजी स्कूलो का जाल फैलता जा रहा है, उससे स्पष्ट है कि बिना प्रयत्न किए मैकाले द्वारा देश के धर्म-परिवर्तन की योजना सफल होती जा रही है ।' अग्रेजी के स्कूल और कालेज मैकाले ने भारतीयो को शिक्षित करने के लिए नही, प्रत्युत-अग्रेजो की भाषा समझ कर भारतीयों पर शासन करने मे सुविधा प्राप्त करने के लिए खोले थे । मैकाले ने लिखा था—

'हमे इस प्रकार की श्रेणी बनाने की भरसक कोशिश करनी चाहिए, जो हमारे तथा हमारे द्वारा शासित करोड़ों लोगो के मध्य दुभाषिए का कार्य कर सके, ऐसे भारतीयो की श्रेणी जो रक्त और वर्ण से भारतीय हो, परन्तु अपनी अभिरुचि, सम्मनियों, विचारों और दिमाग से अग्रेज हो ।' पराधीनता के दिनो मे प्रत्येक राष्ट्रवादी भारत की शिक्षा-पद्धति बदलना चाहता था और शिक्षा का माध्यम हिन्दी और भारतीय भाषा मे करने की बात करता था, परन्तु खेद है कि देश की राजनितिक स्वाधीनता प्राप्ति बावजूद के देश सास्कृतिक दृष्टि से स्वाधीन नही हो सका ।

इस शताब्दी के प्रारम्भ मे प्रचलित शिक्षा प्रणाली मे मौलिक परिवर्त्तन करते हुए सम्पूर्ण ज्ञान-विज्ञान की शिक्षा का माध्यम हिन्दी मे प्रारम्भ कर महात्मा मुन्शी राम जी ने गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का पुनरुद्धार किया था । उन्होने अ भा हिन्दी साहित्य सम्मेलन के भागलपुर अधिवेशन की अध्यक्षता करते हुए घोषित किया था —'इस अभागे देश के अतिरिक्त सम्य ससार मे और काई भी देश भी है, जहा शिक्षा का माध्यम मातृ-भाषा के अतिरिक्त कोई विदेशी भाषा हो ? जब हमारे बालक पढते अग्रेजी मे, सोचते अग्रेजी मे, गणित, पदार्थ विद्या सीखते विदेशी भाषा तो उनमे मौलिक विचार की शक्ति कैसे जीवित रह सकती है ? महात्मा मुशीराम जी ने, जो बाद मे स्वामी श्रद्धानन्द के रूप मे प्रसिद्ध हुए, अपनी 'हिन्दू सगठन क्यो और कैसे ?' शीर्षक ग्रन्थ में लिखा था—'सम्पूर्ण भारतवर्ष मे देवनागरी लिपि का प्रचलन और राष्ट्रभाषा के रूप हिन्दी का प्रयोग नितान्त आवश्यक है क्योकि एक ही भाषाभाषी राष्ट्र का प्रत्येक व्यक्ति विचार और क्रिया की दृष्टि से एक-दूसरे के निकट आने लगता है ।' राष्ट्रपिता महात्मा गाधी भी राष्ट्रभाषा हिन्दी की महत्ता अगीकार करते थे । उन्होने देश की आजादी के साथ देश की राष्ट्रभाषा को देश की प्रमुख सम्पर्क भाषा के रूप मे स्वीकार करने की मांग की थी ।

स्वामी विद्यानन्द जी द्वारा अभिव्यक्त वेदना उनकी अकेली नहीं है । उनके इस निष्कर्ष के साथ देश के दूसरे राष्ट्र प्रेमी सहमत हैं । स्वामी जी ने उस दिन अपने भाषण मे ठीक कहा था—'महर्षि ने २५ वर्ष के सुदीर्घ चिन्तन के बाद अपनी भाषा, व्यवहार, शिक्षा और सस्कृति को सस्कृत और वैदिक मान्यताओं के आधार पर सुधार कर वेदों और भारतीय सस्कृति के पुनरुद्धार का सपना लिया था ।' महर्षि दयानन्द को अपना गुरु कहने वाले आर्यजन और आर्यसस्थाए आज महर्षि के सत्परामर्श को भूल गए हैं । वे एक ओर महर्षि की जय का नारा लगाते हैं, उनके चित्र टांगते हैं, परन्तु महर्षि की सीख भूल कर मैकाले के सपनो को चरितार्थ करते हैं, शायद उसीका नतीजा है कि अग्रेजी स्कूलों के माध्यम से बिना प्रयत्न किए ही देश मे धर्म-परिवर्त्तन की योजना सफल होती जा रही है । आज मैकाले के सपने के ऐसे भारतीय पैदा हो रहे हैं जो रक्त और वर्ण से भारतीय हैं, परन्तु जो अपनी अभिरुचि, सम्मति, विचार और दिमाग से अग्रेज है और अग्रेजियत से रगे हुए हैं । क्या महर्षि का जय जयकार करने वाले हम आर्यजन ऋषि-चिन्तन पर ध्यान देगे ?

चिट्ठी-पत्री

उत्तरप्रदेश में हिन्दी और उर्दू

स्वतन्त्रता और भारत-पाकिस्ता विभाजन के बाद पहली जनगणना १९५१ मे हुई । कहा जाता है कि विभाजन के समय लाखो उर्दूभाषी मुसलमान पूर्वी या पश्चिमी पाकिस्तान मे चले गए और वहा से भी कुछ उर्दूभाषी यहा आ गए । जनगणना वर्ष १९५१ मे हिन्दू ८५.०५ थे और मुसलमान १४,२८ थे । १९६१ मे हिन्दू ८४ ६७ रह गए और मुसलमान १४ ६३ हा गए । १९६१ मे हिन्दू घट कर ८३ ७६ रह गए मुसलमान १५.४८ हो गए ।

लाखो मुसलमानो के पाकिस्तान चले जाने के बाद भी मुसलमानो की सख्या इस देश में बराबर बढती रही । यह एक अनोखा चमत्कार है । स्वतन्त्रता के बाद हिन्दुओं की प्रतिशत आबादी बराबर कम होती गई और मुसलमानों की बढती रही । स्वतन्त्रता मुसलमानो को फली । इस अवधि मे हिन्दुओ और हिन्दी की सामूहिक रूप से क्या दशा हुई वह ये आकेडे इगित करते हैं

उत्तर प्रदेश मे १९५१ मे हिन्दी भाषी ७९ ८२ थे और उर्दूभाषी ६ ८० थे । १९६१ मे हिन्दी भाषी ८५ ३९ हो गए और उर्दूभाषी १० ७० हो गए । हिन्दीभाषा १९७१ मे ८१ २३ हो गए । उर्दूभाषी १० ५० हो गए । विभाजन के बाद उत्तर प्रदेश मे उर्दूभाषी केवल ६ ८० प्रतिशत रह गए थे, किन्तु हिन्दी के राजभाषा बनने के बाद भी, और उसके पठन-पाठन के बढने पर भी उर्दू की तथाकथित उपेक्षा के बाद भी हिन्दी मे प्रथम दशक मे नाममात्र की वृद्धि हुई, किन्तु उर्दू प्राय पौने दो गुनी बढ गई । अगले दशक मे तो हिन्दी का चार प्रतिशत से अधिक ह्रास हुआ और उर्दू का नाममात्र का । फिर भी सरकार पर यह आरोप लगाया जाता रहा कि वह हिन्दी के लिए बहुत कुछ कर रही है ।

वास्तविकता यह है कि स्वतन्त्रता के ठीक बाद तो जो आकडे एकत्र किए वे, वास्तविक थे । दूसरे दशक मे उर्दू वालो ने सगठित प्रयास और प्रचार कर हिन्दी की बोलिया बोलने वाले देहात मे रहने वाले मुसलमानो को अपनी भाषा उर्दू लिखवाने को सगठित रूप से प्रेरित किया । इसलिए दूसरे और तीसरे दशक के उर्दूभाषियो के आंकडे अवास्तविक है । उर्दूभाषियो का वास्तविक अनुपात वही, अर्थात ६ ८० प्रतिशत है, जो १९५१ मे लिखवाया गया था और जब उर्दू कार्यकर्ताओ को देहात के मुसलमानों को अपनी भाषा गलत लिखवाने का अवसर नही मिला था । अतएव १९५१ की जनगणना के बाद की जनगणनाओ मे उर्दूभाषियो के जो आकडे दिये गये है वे अवास्तविक, बनाये गए और गलत है । उत्तर प्रदेश मे उर्दूभाषियो की वास्तविक सख्या और अनुपात वही है जो १९५१ की जनगणना मे पाया गया था । १९५१ के बाद उर्दूभाषियो की वृद्धि का कोई बुद्धिमगत, राजनीतिक, सामाजिक, सास्कृतिक या शैक्षणिक कारण नही है । अतएव यह कहना एकदम गलत होगा कि उत्तर प्रदेश मे उर्दूभाषियो का अनुपात १० प्रतिशत भी है । इतने कम प्रतिशत के लोगो के द्वारा बोली जानेवाली भाषा को द्वितीय राजभाषा बनाना न तो न्यायसगत है और न ही बुद्धिसगत । वह उत्तर प्रदेश की बहुभाषी जनता पर व्यर्थ का असहनीय मानसिक और आर्थिक भार ही नही, उस पर जबरदस्ती उस भाषा को लादना होगा, क्योंकि उसके द्वितीय राजभाषा बनने पर सब राजकाज उस भाषा मे भी करना होगा । सरकारी राजभाषा होने के कारण उसका ज्ञान सरकारी नौकरियो के लिए अनिवार्य कर दिया जाएगा, तथा स्कूलो मे भी वह अनिवार्य कर दी जाएगी ।

—श्रीनारायण चतुर्वेदी, लखनऊ

संस्कृत के विद्वान का सम्मान और संस्कृत कवि सम्मेलन

पिछले वर्षों (१९८० तक) दिल्ली प्रशासन की साहित्यकला परिषद द्वारा दिल्ली के एक सस्कृत-विद्वान् का सम्मान और अखिल भारतीय सस्कृत कविसम्मेलका आयोजन किया जाता रहा, परन्तु गत वर्ष अकस्मात् ही ये दोनो कार्य नही किए गए । प्रकट रूप मे ऐसा कोई कारण नही दिखाई देता । राजधानी के सस्कृतानुरागियो, सस्कृत छात्रो, सस्कृत विद्वानो मे न तो आई है और न ही कोई गुणात्मक परिवर्त्तन हुआ है । अनेक सस्कृत विद्वान् सेवानिवृत्त होकर दिल्ली मे बसे हुए हैं और उत्कृष्ट सस्कृत साहित्य की रचना कर रहे है । प्राय उत्तर प्रदेश, हरियाणा, मध्यप्रदेश आदि की राज्य सरकारे भी सस्कृत विद्वानो के सम्मान जैसे अनेक कार्यक्रम चलाती है । वस्तुत सभी भारतीय भाषाओ की प्राणदात्री और भारतीय-सस्कृति के मूल सस्कृत भाषा के साथ दिल्ली प्रशासन की साहित्यकला परिषद द्वारा किया जाने वाला यह उपेक्षा पूर्ण व्यवहार न केवल भारत की राजधानी के लिये अशोभन है, अपितु सस्कृत के लिए अपमानजनक भी है । आशा है कि दिल्ली प्रशासन का ध्यान उपर्युक्त तथ्यो की ओर आकृष्ट होगा और वह इस प्रकार की अनियमितता को रोकेगा तथा इस वर्ष से साहित्यकला परिषद् की ओर से ये दोनो कार्य आरम्भ करवाएगा ।

—डॉ० कृष्ण लाल
उपाचार्य, संस्कृत-विभाग, दिल्ली वि० वि०, दिल्ली

राष्ट्र पुरुष महर्षि दयानन्द

डॉ० प्रज्ञा देवी, वाराणसी-५

देश में नानाविध षघ्यन्त्र 'कुचक्र' धर्म परिवर्तन आदि के हमारे समक्ष खेले जा रहे हैं, उनसे सचेष्ट होना हमारा दायित्व है

अद्भुत तार्किक स्वदेशैकनिष्ठ यतिवर महर्षि दयानन्द उन अलौकिक पुरुषो मे थे कि जिनका उठना बैठना बोलना, चालना आदि समस्त क्रियाये लोकोपकार के लिये ही थी। राष्ट्र के अज्ञान जनित दुःख-दर्द का उन्होने अपने आप मे इस तरह समेट लिया था कि राष्ट्रकी यह मर्मान्तिक पीडा उनकी अपनी पीडा बन चुकी थी। इस पीडा को दूर करने का एक मात्र अमोघ साधन वेदो सज्ज्ञान प्राप्त करना एव उस पर आचरण करना है यह उन्होने बडी दृढ निश्चयात्मक आस्था के साथ बताया। उनमे स्वदेशाभिमान कूट कूट कर भरा था। अपने अद्वितीय ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश, के एकादश समुल्लास के प्रारम्भ मे जिन उच्च शब्दो मे महर्षि ने स्वदेशोत्कर्ष के सम्बन्ध मे लिखा है, वे साधारण पक्तिया न होकर स्वदेशोद्धरार्थ बहुमूल्य शब्द भाण्डागार के रूप मे है। अपने धर्म एव आस्थाओ को खोकर जातिया आत्म विस्मृति को प्राप्त होकर एक मृतप्राय पक्षी के समान केवल शरीर मे प्राण ही धारण करती है, जीवन नही यह उन्होने दिव्य दृष्टि से जान और समझ लिया था एवं उन्होने इसके निवारणार्थ बलपूर्वक प्रयास किया। उनके कथन मे अतीत के पूर्वजो के स्वाभिमान की आभा सहस्रश ग्रन्थो के अध्ययन से प्राप्त चमत्कृत तेज निष्काम सत्यनिष्ठा एव वर्त्तमानकालिक स्वदेश के पतन के पतन के प्रति वाणी मे मार्मिकता निहित थी, फलस्वरूप उनकी वाणी का वडे वडे रूढिवादी पण्डितो, पुजारियो, मठाधीशो, मुल्ला एवं पादरियो पर भी चमत्कारी प्रभाव पडे बिना न रह सका। राष्ट्र को विधर्मी होने से बचाने के लिए महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश, मे एक राष्ट्र पुरुष की अमोघ वाणी के रूप मे निम्न पक्तिया लिखी है—

"...दूसरे छोटे कुलो मे से कोई ऐसा समर्थ पुरुष खडा होता है कि उनका पराजय करने मे समर्थ होवे, जैसे मुसलमानों की बादशाही के सामने शिवाजी गोविन्द सिह जी ने खड़े होकर मुसलमानो के राज्य को छिन्न भिन्न कर दिया।"सत्याथ प्रकाश समुल्लास पृ० २२७) ऋषि की ये पंक्तिया विशेष स्पष्टीकरण की आवश्यकता नही रखती। सत्य सनातन वैदिक धर्म का सदेश जन-जन उद्भासित हो उठे इसके लिये पूर्वजों के गौरव गान रूपी यह उनका सत्प्रयास था। समस्त विश्व के लोग वैदिक ज्ञान को उपलब्ध कर वैचारिक दृष्टि कोण से एक हो, इसके लिए उन्होने प्रथम बात यह कही कि—

(१) धर्म एव ईश्वर के अनेक रूप नहीं है धर्म एक है एव परमात्मा भी एक है जैसा कि वाल्मीकि रामायण मे भी-समा भाष। समो धर्म कहकर प्रकट किया गया है। उस वैदिक धर्म को छोड़ने से ही नाना प्रकार की विविधताएें मत ममान्तरो के रूप मे जन्म लेती हैं जाति के लिये अत्यन्त भयावह है। इस विभिन्नता की खाई को—'समानी प्रपा सह वो युनज्मि' जैसे वैदिक मन्त्रो का पाठ पढा कर ही पाया जा सकेगा एव राष्ट्र को एकात्मक सघटन शक्ति से बद्धमूल किया जा सकेगा इस मर्म को जानकर महर्षि ने सत्यार्थ-प्रकाश का प्रथम समुल्लास इसी रूप मे लिखा।

(२) दुसरी बात राष्ट्रीय जागृति हेतु महर्षि ने प्रबल उद्घोष के साथ यह रखी कि सस्कृत भाषा का ज्ञान होना प्रत्येक आर्य के लिये वैयक्तिक एव सामाजिक हित के रूप मे परम आवश्यक है। इसके बिना मनुष्य वेद एव सच्छास्त्रो का स्वत अध्ययन नही कर सकता, फलत न वैचारिक एकता उत्पन्न होगी न ही स्वदेशाभिमान। देववाणी सस्कृत का बोध होना अपनी सस्कृति की रक्षार्थ अत्यन्त आवश्यक है यह उन्होने आर्य समाज के उपनियम, अपने पत्र-व्यवहार एव विज्ञापनो एव अपने ग्रन्थो मे बहुश प्रकट किया है। भारत मे बढ़ते हुये ईसाइयत एव अग्रेजी के प्रचार से वह चिन्तित थे। वह अपनी दूर दृष्टि से अनुभव कर चुके थे कि सस्कृति की उपेक्षा कर अग्रेजी उर्दू आदि विदेशी भाषाओ को प्रश्रय दिया जायेगा तो भारत का अतिचिन्तनीय हो जाएगा अत उन्होने ये विचार अपने पत्र व्यवहारो मे प्रकट किए है। इस परिप्रेक्ष्य मे आज हम आर्यों को गहराई से सोचना होगा कि हम आग्ल भाषा के इतने दीवाने बनकर कितनी मात्रा मे स्वदेश भक्त अपने आप को कह सकते हैं।

(३) तीसरी बात महर्षि ने राष्ट्रीय ऐक्य के रूप मे वेदो के माध्यम से यह रखी कि राजा एव प्रजा का क्या कर्त्तव्य है! चक्रवर्ती सम्राट् को अपने राज्य मे कला कौशल की समृद्धि विद्या की उन्नति हेतु किस प्रकार से सत्प्रयास करने चाहिए? नैतिक पतन के गर्त्त मे पडी हुई उस समय की रजवाड़ों की स्थिति को देखते हुये महर्षि ने वेदभाष्य के माध्यम से सहस्रश वेदमन्त्रो का राज धर्म परक अर्थ करके इस जाति का महान् उपकार किया है। उन्होने मनुस्मृति आदि ग्रन्थ शाहपुराधीश एवं अन्य राणाओ को इसी उद्बोधन हेतु पढाए।

आर्य समाज की प्रगति का मूल्यांकन

पूर्वोक्त स्वदेशोन्नति हेतु ऋषिवर के तीनो मुद्दों को लेकर आर्य समाज आज कितने आगे बढ सका है इसे अब हमे गम्भीरता से सोचना है। हमे अपने प्रचार के स्वरूप पर भी विचार भली भाति करना होगा कि कही ये बडी-बडी शताब्दियो के रूप मे किए जाने वाले बाह्य प्रदर्शन अथवा स्वार्थलाभ हेतु तो नही सम्पन्न हो रहे? "सत्यार्थ प्रकाश" के प्रथम सस्करण मे महर्षि दयानन्द ने सम्भवत इसी भावी चिन्ता से कुछ बहुमूल्य वाक्य लिखे है जो अत्यन्त ही ध्यातव्य हैं जिन्हे यहा उद्घृत किया जा रहा है—

वार्षिक उत्सवादिको से मेला करना इसमे भी हमको अत्यन्त श्रेय गुण मालूम नही देता, क्योकि इसमे मनुष्य की बुद्धि बहिमुख हो जाती है और धन भी अत्यन्त खर्च होता है ...।"

(सत्यार्थ प्रकाश प्रथम सस्करण पृ० ३९५)

इसके अतिरिक्त आज समाज मे जो सेक्युलरिज्म (धर्म निरपेक्ष इसका अनुवाद नही बल्कि धर्म को न स्वीकार करना यह नकारात्मक अर्थ है) की भावना राष्ट्रीय संघठनहेतु बताई जाती है यह वर्तमान पीढी को दिशाहीन बनाने का ही उपाय है इससे सावधान होकर आर्य समाज को अपना प्रचार चक्र चालू रखने की आवश्यकता है।

अंग्रेजी का व्यामोह छोड़ो

सन्देहवाद, नास्तिकवाद, या नानावादो से हटाकर वेद निष्ठा एवं एकेश्वर विश्वास के सूत्र मे आज के युवक को पिरोये रखना परमश्रेयस्कर कार्य होगा। इस आंधी से युवक वर्ग को बचाना वास्तव मे मोक्ष मार्ग का साधन होगा। इसी प्रकार अगेजी के व्यर्थ व्यामोह को छोड़कर प्रत्येक आर्य को सस्कृत भाषा का महत्व महत्व एवं बोल-चाल, पठन, पाठन अपने परिवारोमे बनाये रखना तथा इसका निर्भीकता से प्रचार करना अत्यावश्यक है। कही ऐसा न कि पब्लिक स्कूलो द्वारा हमारा पाश्चात्यीकरण हो जाये और हमे पता भी न चले। यह बहका हुआ देश कहीं का कही जा लगेगा और हम देखते रह जायेंगे। देश मे नानाविध षड्यन्त्र, कुचक्र धर्मपरिवर्त्तनादि के हमारे समक्ष खेले जा रहे है जो हमसे छिपा नही है। इन कर्तव्यो के प्रति पूर्ण सचेष्ट हो जाना ही बोधरात्रि (शिवरात्रि) का सन्देश है यह आर्यो को मानकर चलना होगा। एक दिन सबको मरना है किन्तु पूरी शक्ति भर कार्य करते हुवे अपनी आत्मा की सही आवाज को न दबाते हुये कार्य करे इसका नाम स्वदेशकल्याणैकनिष्ठा है

बोध-कथा

लोटे की चमक

श्री रामकृष्ण परमहस प्रतिदिन बड़ी लगन से अपना लोटा राख या मिट्टी से माज कर बड़े यत्न से चमकाते थे। परहस का लोटा खूब चमकता था। उनके एक शिष्य को श्री रामकृष्ण द्वारा प्रतिदिन बडी मेहनत से लोटा चमकाना बड़ा विचित्र लगता था। निरन्तर कई दिनो तक वह उनके लोटा चमकाने से चिन्तित हो उठा। आखिर उससे रहा नही गया' एक दिन वह रामकृष्ण जी से पूछ ही बैठा, महाराज आपका लोटा तो वैसे ही खूब चमकता है। इतना चमकता है कि उसमे हम अपनी तसवीर भी देख लें। रोज-रोज आप इसे मिट्टी-राख और जूने से मांजने मे इतनी मेहनत क्यो करते हैं?'

गुरु श्री रामकृष्ण परमहंस मुस्करा उठ। हसकर बोले—'इस लोटे की यह चमक एक दिन की एक मेहनत से नहीं आई है, इसमे आई मैल को दूर करने के लिए नित्य-प्रति मेहनत करनी ही पड़ती है, ठीक वैसे ही जैसे जीवन मे आई बुराइयां-बुरे सस्कारो को दूर करने के लिए हमे प्रतिदिन ही संकल्प करना पडता है। सकल्प को अच्छे चरित्र मे बदलने के लिए हमे प्रतिदिन के अभ्यास से ही दुर्गुणों का मैल दूर करना पडता है। लोटा हो या मनुष्य का जीवन उसे बुराइयो के मैल से बचाने के लिए हमे प्रतिदिन ही कड़ी मेहनत करनी पड़ेगा, तभी इस लोटे की चमक या इन्सान की चमक बची रह सकती है।'

—नरेन्द्र

अपूर्व प्रतिमा के धनी डा सत्यव्रत सिद्धा न्तालंकार



डॉ० सत्यव्रत जी सिद्धान्तालकार जिन्हे राष्ट्रपति ने १९८१ के स्वतत्रता दिवस पर एक प्रतिष्ठित सस्कृत तथा वेदज्ञ के रूप मे सम्मानितकरने की घोषणा की, अपूर्व प्रतिमा के व्यक्ति हैं वह जहां कुशल प्रवन्धक है वहा अगाघ पाण्डित्य के धनी है। व्यावहारिकता तथा विद्वता का मिश्रण विरला ही पाया जाता है, परन्तु डॉ० सत्यव्रत जी मे वे दोनों गुण अपने उच्च शिखर पर पहुंचे हुए है। वह १९३५ मे गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के कुलपति नियुक्त हुए थे। उनकी नियुक्ति तो उनका विद्वता के कारण हुई थी, परन्तु काम संभालते ही उन्होने गुरुकुल की आर्थिक स्थिति को दृढकरने की तरफ पहले ध्यान दिया। गुरुकुल के खाली मैदानो मे आम के सैकड़ो पेड वहा के कर्मचारियों से ही लगवा दिए, जिनसे प्रतिवर्ष १०-१२ हजार की आय होने लगी। फार्मेसी की आमदनी लगातार के विज्ञापनो के माध्यम से ८-१० गुना बढ़ा दी। प्रेस बन्द पड़ा था उसे जारी करके 'गुरुकुल' नाम का साप्ताहिक पत्र भी प्रकाशित करना शुरू कर दिया, आयुर्वेदिक कालेज के साथ चिकित्सालय मे श्रद्धानन्द सेवाश्रम के नाम से दानियो को प्रेरणा करके वार्ड बनवा दिए, श्री जुगलकिशोर बिड ला के दान से लाखों की वेद-भवन की बिल्डिग खड़ी कर दी। चारो दिशाओ मे गुरुकुल को प्रगति पथ पर डाल दिया। जब १५ नवम्बर १९४१ को वह दयानन्द सेवा सदन की सदस्यता का काल समाप्त कर गुरुकुल की सेवा से निवृत्त हुए तब आर्यप्रतिनिधि सभा की अन्तरग सभा ने एक विशेष अधिवेशन उन्हे जो अभिनन्दन दिया उसमे कहा गया था—

'बाढ के रूप मे गुरुकुल पर दैवीय विपत्ति आने से इस पार उसके पुनर्निर्माण का जो कठिन कार्य प्रारम्भ किया गया था उसे पूर्णता तक पहुचाने का श्रेय आपको ही है। आपके समय के बने हुए भव्य-भवन आपकी सुरुचि का सदा स्मरण कराते रहेगे गुरुकुल के व्यावसायिक विभागो को विशेष रूप से उन्नत कराके तथा कुछ नए विभाग जारी करके इनके द्वारा गुरुकुल को आर्थिक दृष्टि से स्वावलम्बी बनाने का जो प्रशसनीय कार्य आपने किया है। वह चिर-स्मरणीय रहेगा। गुरुकुल मे लगाए हुए फलो के बाग, श्रद्धानन्द सेवा-श्रम, गुरुकुल पत्र, गुरुकुल फार्मेसी तथा रसायन शाला आदि विभाग आपका प्रवन्ध कुशलता का परिचय स्वय दे रहे हैं।'

१९३५ के २४ वर्ष बाद, ४ जून १९६० को दोबारा छह साल तक गुरुकुल विश्व विद्यालय के कुलपति रहे। वैसे तो गुरुकुल केसम्पूर्ण सेवाकाल मे वह वेतन न लेकर निर्वाह मात्र पर कार्य करते रहे, परन्तु दोबारा आने के काल मे तो उन्होंने सर्वथा अवैतनिक सेवा की जब १९६४ मे राष्ट्रपति डॉ० राधाकृष्णन ने उन्हे राज्य सभा का सदस्य मनोनीत किया तब आपके सतत प्रयत्न से १९६५ मे गुरुकुल कागडी को सरकार द्वारा विश्वविद्यालय की मान्यता प्राप्त हुई और गुरुकुल की आर्थिक समस्या बहुत हद तक दूर हो गयी।

इस प्रकार की व्यवहार तथा प्रबन्ध कुशलता के साथ-साथ आपका ज्ञान भी अगाध है। आपने सभी प्रसिद्ध उपनिषदो पर दो बृहदकाय ग्रन्थ लिखे है—एक का नाम 'एकादशानिषद—भाष्य' है, दूसरे का नाम 'उपनिषद प्रकाश' है। आपका गीता भाष्य अपूर्व ग्रन्थ है। श्री जयप्रकाश नारायण अपने जेल जीवन मे इस भाष्य का प्रति दिन अध्ययन करते थे। उन्होने अपनी जेल-डायरी मे लिखा है कि यह ग्रन्थ गीता का सर्वोत्तम भाष्य है। वैदिक सिद्धान्तों पर आपका ग्रन्थ 'वैदिक विचार धारा का वैज्ञानिक आधार' इतनी उतकृष्ट कोटि का ग्रन्थ है, कि इसका अग्रेजी मे भी अनुवाद हो चुका है। वैसे तो आपके अनेक ग्रन्थ हैं, परन्तु उन ग्रन्थो के अतितिक्त 'सस्कार चन्द्रिका', 'वैदिक सस्कृति के मूल तत्व', 'वैदिक सस्कृति का सदेश' तथा ब्रह्मचर्य सदेश' उनके प्रसिद्ध ग्रन्थ है। समाज शास्त्र पर लिखे उनके ग्रन्थो को विश्व विद्यालयो की पाठ विधियो मे स्थान प्राप्त है।

उनके लिखे 'समाज शास्त्र के मूल तत्व' पर उन्हें हिन्दी साहित्य सम्मेलन का मगला प्रसाद पारितोषिक मिल चुका है उनकी बहुमुखी प्रतिभा का एक उदाहरण यह है कि उनके होम्योपैथिक पर लिखे ग्रन्थो को अत्यन्त उच्च कोटि का माना जाता है। अत्यन्त गूढ विषयो को सुलझाकर स्पष्ट कर दना उनकी लेखन-शैली की अपनी ही विशेषता है।

डा० सत्यव्रत जी सिद्धान्तालकार का जन्म ५ मार्च १८९८ को हुआ था ५ मार्च १९८२ को वह अपने दीर्घ जीवन के ८५-वे वर्ष मे प्रवेश कर रहे है गणित के हिसाब से वह ८४ वर्ष पूरे कर चुके हैं।

(शेष पृष्ठ ५ पर)

आर्य जगत् समाचार

सत्यार्थप्रकाश भाषण प्रतियोगिता

सफल प्रतियोगियों को पुरस्कार

जिला सगरूर आर्य सभा की ओर से ऋषि बोधोत्सव के शुभ अवसर पर २२ २ १९८२ को श्री लाल बहादुर शास्त्री आर्य महिला कालेज, बरनाला मे अन्त स्कूल एव कालेज सत्यार्थ प्रकाश भाषण प्रतियोगिता की गई। समारोह की अध्यक्षता आर्यसमाज, बरनाला के वयोवृद्ध नेता महाशय मित्रसेन ने की। भाषण प्रतियोगिता मे स्थानीय आर्य कालेज एव आर्य स्कूल के अतिरिक्त नाभा, भटिण्डा एव बरेटा आदि शहरों से प्रतियगियो ने भाग लिया। इनके अतिरिक्त धूरी, तपा, सगरूर, धनौला भटिण्डा, नाभा आदि की आर्य समाजो के सदस्य भी भारी सख्या मे इस मे समारोह मे शामिल हुए। निम्नलिखित छात्रो ने पुरस्कार प्राप्त लिये सुश्री अपर्णा दीपक, अतीत कौशक और सगीता को विद्यालयीन छात्रो पुरस्कार मिले। तथा कुमारी कर्मजीत, कु० रेणुका शोरी, कु० राम कुमार को महाविद्यालयीन छात्राओ के पुरस्कार मिले।

पृष्ठ ५ का शेष

परन्तु देखने को वह ज्यादा-से-ज्यादा ६५ ७० वर्ष के लगते है। कार्य शक्ति में वे किसी युवा से कम नही हैं। अभी हाल मे उन्होने होम्योपैथी पर एक पुस्तक समाप्त की है। उनकी कमर सीधी है, वार्द्धक्य का कोई कष्ट उन्हे नही है। प्राणायाम व्यायाम की सारी प्रक्रिया में उन्हे ३ घटे लग जाते हैं। उनका कथन है कि इन तीन घटो के व्यायाम से उनका सारा शरीर फुर्ती से भर जाता है। अपने अनुभवों के आधार पर उन्होने एक ग्रन्थ लिखा है जिसका नाम है 'बुढापे से जवानी की ओर' इस ग्रन्थ मे उन्होने वह सब कुछ लिखा है जिमके आधार पर उनका जीवन स्वास्थ बना हुआ है।

मैंने उनसे पूछा—आप भोजन क्या करते है? उन्होने कहा कि रात को सोने से पहले वे २५ बादाम एक कटोरी मे भिगोने के लिए रख देते है, एक दूसरी कटोरी मे १० मुनक्के भिगोदेते है, प्रात काल व्यायामतथा स्नानके बाद बादामो के छिलके उतार कर उन्हे कूडी मे इतना पीसते है कि उसमे चिपचिपाहट आ जाए मुनक्को का मीठा पानी उनमे डालकर उसे धीरे-धीरे चम्मच से पी जाते है और मुनक्के खा जाते हैं। इसके बाद डेढ पाव दूध पी लेते हैं। यही उनका प्रात काल का नाश्ता है। अगर केला, अमरूद या सेब उपलब्ध हो तो वह भी नाश्ते के साथ ले लेते है। चाय या काफी नही लेते यद्यपि इन्हे न लने की कसम नहीं खा रखी, दोपहर एक बजे तथा रात को ८-९बजे२ खुश्क रोटी दाल तथा सब्जी लेते है। दोनो समय दही यथेष्ट लेते है। दही के बगैर गुजारा नही। सोने से पहले डेढ पाव दूध लेकर सो जाते है। इतना भोजन उन्हे स्वस्थ तथा मजबूत बनाए रखने के लिए काफी है। नीद ४-५ घटे को आती है। जो कम मालूम पडती है, परन्तु सोने के बाद ताजगी बनी रहती है।

ऐसे तपस्वी, सयमी, मनीषी का दर्शन कर मैंने अपने को धन्य माना और विदा लेते हुए उनके चरणो मे प्रणाम कर प्रभु से यही प्रार्थना कर घर लौटा कि महापुरुषो को अमर जीवन का वरदान दें ताकि वे जगत तथा वैदिक सस्कृति को विश्व भर मे उजागर करते रहे।

अशोक विद्यालंकार
९६ अशोक भवन (कृष्णा गली)
गुप्त कालोनी, दिल्ली-७

छात्रो की भाषण प्रतियोगिता

दिल्ली। आर्यसमाज दीवान हाल, दिल्ली के ९७ वें वार्षिकोत्सव पर शुक्रवार १९८२ को दोपहर २ बजे से गाधी मैदान मे 'राष्ट्रीय एकता व हिन्दी भाषा' विषय पर उच्चतर माध्यमित विद्यालय के छात्र छात्राओ की एक भाषण-प्रतियोगिता होगी। भाषण प्रतियोगिता मे भाग लेने के इच्छुक बच्चों के नाम बृहस्पतिवार ११ मार्च, १९८२ तक प्रतियोगिता सयोजक प० देवव्रत धर्मेन्दु आर्योपदेशक १६५४, कूचा दक्खिनीराय, दरियागज, नई दिल्ली-२ के पत्ते पर भेज दें। प्रत्येक विद्यालय या सस्था के दो-दो बच्चे भाग ले सकेगे

आर्यसमाज मॉडल टाउन में आंखों का इलाज

आर्यसमाज मन्दिर मॉडल टाउन (तीसरा बस स्टाप) पर २८ फरवरी, १९८२ से जनसाधारण की आंखो के इलाज के लिए नेत्र चिकित्सालय का प्रारम्भ किया जा रहा है। मेडिकल इन्स्टीट्यूट दिल्ली के डॉ० जे० सी० दास प्रति मगलवार और शनिवार को प्राय ९½ से ११½ बजे तक आर्यसमाज मन्दिर मे रोगियों को देखेगे।

कन्या गुरुकुल में ऋषि बोधोत्सव

२२-२१८२ को मातृ मन्दिर कन्या गुरुकुल, समापुर, वाराणसी व्रतशीला ब्रह्मचारियों ने प्रभात फेरी की। कु० सुनीता तथा कु० सुषमा ने बालिकाओं को उद्‌बोधन करते हुए प्यारे ऋषि की जीवन झांकी प्रस्तुत की तथा उसी के मिशन की पूर्ति मे लग जाने की प्रेरणा दी। ब्रह्मचारियों ने देश मे बढती हुई अराजकता एवं सस्कृति पर कुठाराघत तथा ईसाइयों मुसलमानों की राष्ट्रद्रोही प्रवृत्तियो पर चिन्ता व्यक्त की एव सकल्प किया कि वे देश की अखण्डता को सुरक्षित रखने तथा वैदिक संस्कृति के प्रज्वलित रखने मे अपनी समस्त शक्ति लगा देंगी।

पुष्पावती २२-२१२ अध्यक्षता

प्रयाग में विशाल-शोभा यात्रा

'आर्य समाज चौक का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज चौक, प्रयाग का १०६ वार्षिकोत्सव आर्य कन्या डिग्री कालेज के के प्रांगण मे दिनाक ११ से १४ फरवरी तक सम्पन्न हुआ। उत्सव मे प्रो० भूदेव शास्त्री अजमेर, स्वामी मुनीश्वरानन्द गाजियाबाद, डॉ० प्रशस्यमित्र शास्त्री रायबरेली के व्याख्यान व प्रवचन तथा प० ओमप्रकाश वर्मा अम्बाला, आचार्या रश्मिप्रभा शास्त्री हाथरस, प० ज्ञानप्रकाश शर्मा मुरादाबाद, ठा० पन्ना सिंह व श्री पुन्नू लाल प्रयाग के भजनोपदेश हुए।

१० फरवरी को उत्सव मे उपलक्ष्य मे एक विशाल शोभा-यात्रा आर्य कन्या कालेज से निकाली गई, वह नगर के मुख्य मार्गो से होती हुई आर्यसमाज मन्दिर चौक मे समाप्त हुई। शोभा-यात्रा मे आर्य कन्या इण्टर कालेज, डिग्री कालेज, महर्षि दयानन्द संस्थान, नर्सरी विद्यालय, शिवनारायण कुशवाहा जू० हा० स्कूल की छात्र-छात्राये अध्यापिका कर्मचारी तथा स्त्री आर्य समाज, आर्यसमाज कृष्णनगर के कार्यकर्त्ता सम्मिलित रहे। शोभा-यात्रा के मार्ग मे स्वागतार्थ फल एव मिष्ठान्न का वितरण किया गया।

वार्षिकोत्सव के इस अवसर पर ही वैदिक साहित्य के विक्रयार्थ दिल्ली, मिर्जापुर, बरेली, प्रयाग के पुस्तक विक्रेताओ ने पुस्तको की बिक्री की। दानी महानुभावो के सहयोग से महर्षि दयानन्द के अमर ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' पर ५० प्रतिशत की देकर १०-सत्यार्थ प्रकाश को केवल ५1-मे जन-साधारण मे प्रचारार्थ विक्रय किया गया तथा अन्य वैदिक साहित्यो मे ५ प्रतिशत की विशेष छूट प गगाप्रसाद उपाध्याय ट्रैक्ट विभाग द्वारा दी गई।'

नवदीक्षित बन्धुओ से सम्बन्ध स्थापित करें

श्रीमती सरस्वती सुमन की अपील : नव-दीक्षितों का अभिनन्दन

पटना बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा, पटना के तत्त्वाधान मे आर्य समाज बरबिगहा (नालन्दा) के द्वारा वार्षिकोत्सव के शुभ अवसर पर दिनाक ७ फरवरी, '८२ को श्री राजेन्द्र प्रसाद सर्राफ की अध्यक्षता मे प जयप्रकाश आर्य आलिम-फाजिल और श्री डॉ० कुअर आनन्द सुमन एव उनकी धर्मपत्नी श्रीमती सुमन का अभिनन्दन किया गया।

सर्व प्रथम प्रतिनिधि सभा के सभा मन्त्री सर्व "आर्य सकल्प" मासिक पटना के सपादक श्री हरिदास जूबाल ने हिन्दू समाज मे दीक्षित दोनों नवयुवकों को सम्मान प्रदर्शित करते हुए अभिनन्दन किया और मालार्पण किया। साथ ही श्रीमती सरस्वती सुमन को आनन्द सुमन जी को अपना जीवन साथी बनाने के लिए अनेक धन्यवाद दिया। उन्होने दोनो नवयुवकों को उपहार स्वरूप भेंट देकर सम्मान देने की अपील की। इस अवसर पर ठा० महीपाल सिंह जी भजनोपदेशक ने अपने ओजपूर्ण भजन-उपदेश से जनता को हिन्दू सगठन का सदेश दिया। रेडियो घड़ी, व इत्र, गुलाल, चूडी, सिन्दूर आदि विविध प्रकार की वस्तुओ के उपहार नगद रुपए मिलाकर लगभग डेढ डेढ हजार रुपए हर्ष-ध्वनि के बीच प्रदान किए गए। अपने अभिनन्दन के उत्तर मे श्री जयप्रकाश ने हिन्दू धर्म की तथ्यपूर्ण खूबियो सच्चाईयो पर प्रकाश डाला। इसका प्रचार प्रसार दूर देशो तक कुअर आनन्द सुमन ने हिन्दी, हिन्दू और हिन्दुस्तान की एकता पर बल दिया।

उन्होने समस्त भारतीय नागरिकों को पुकारने का सन्देश दिया। भारतभूमि समस्त भारतीयो की माता है, समस्त सामप्रदाय के हिन्दुओ को एक जुट होकर सगठित होकर होना चाहिए। उन्होने जब तक भारत मे रहना होगा बन्दे-मातरम् कहना होगा का जयघोष कराकर आकाश गूजा दिया श्रीमती सरस्वती सुमन ने नवयुवकों से मार्मिक अपील की और हाथ उठाकर, वचन लिया कि वे नवदीक्षित बन्धुओ से विवाह-सम्बन्ध स्थापित कर अपने सौहार्द और संगठन का क्रियात्मक उदाहरण पेश करेंगे, हरेक युवक मुसलिम महिला से बिना भेद-भाव के ग्रहण करने को अग्रसर होगे तब ही हिन्दू संगठन को बल मिलेगा, यह एक रचनात्मक कार्य होगा।

आर्यसमाजों के सत्संग

७ मार्च, १९८२

अन्धा मुगल प्रताप नगर—प० ईश्वरदत्त, अमर कालोनी—प भगवान सहाय शास्त्री; अशोक बिहार के-सी-५२ए—प० प्राणनाथ सिद्धान्तालकार; अशोक-नगर—प० भानुप्रकाश शास्त्री; आर्यपुरा—प कामेश्वर शास्त्री; आर. के पुरम सेक्टर-५—स्वामी जगदीश्वरानन्द, आर के- पुरम सेक्टर ६—पं० आशानन्द भजनोपदेशक; आनन्द बिहार (हरिनगर एल ब्लाक)—प० देवराज वैदिक मिश्नरी; किंग्जवे कैम्प—प० राम रूप शर्मा, करोल बाग—डॉ रघुनन्दन सिंह, कृष्ण नगर—प० देवेश; गाधी नगर—प छविकृष्ण शास्त्री, गीता कालोनी—प० तुलसीराम भजनोपदेशक, १५१ गुप्ता कालोनी—प० छज्जू राम शास्त्री, गोविन्दपुरी—स्वामी प्रेमानन्द; गोविन्द भवन-जग पुरा भोगल दयानन्द वाटिका—प विश्वप्रकाश शास्त्री; —प० मुनिशकर वानप्रस्थी, जनकपुरी सी-३—प्रो० सत्यपाल बेदार, जनकपुरी बी-३/२४—प० उदयपाल शास्त्री, टगोर गार्डन—प० ओमवीर शास्त्री; तिलक नगर—प० ओमप्रकाश भजनोपदेशक, तिमार पुर—डॉ० जयनारायण बर्मा सतोषी, ...नगर—श्री चमनलाल आर्य, नारायण बिहार—प० वेदपाल शास्त्री, नया बास—प्रो० वीरपाल विद्यालकार, न्यू मोती नगर—लाल लखमीदास आर्य, नगर शाहदरा पं० प्रकाशचन्द शास्त्री; पजाबी बाग—डॉ० रघुवीर वेदालकार; पजाबी बाग एक्सटेन्शन १४/३—आचार्य हरिदेव सिह भू०, प्रीतमपुरा सी-पी-२१२—प० प्रकाशवीर व्याकुल, बाग कडे खा—प० बरकतराम भजनोपदेशक; मोडल बस्ती—प० सीस राम भजनोपदेशक, मॉडल टाऊन—प० राजपाल शास्त्री, महहोली—डॉ० दिवाकर शर्मा, मोतीबाग—प० हीराप्रसाद शास्त्री, रमेशनगर—ब्र० कृष्णदत्त, राणा प्रतापबाग—स्वामी स्वरूपानन्द भजनोपदेशक, राजौरी गार्डन—प० गणेशप्रसाद विद्यालकार; लड्डू घाटी पहाड़गज—श्री मोहनलाल गाधी, लाजपत नगर—श्रीमती लीलावती आर्या; लखरामनगर—प० खुशीराम शर्मा, सदर बाजार पहाडी धीरज—प० सुधाकर स्नातक, सुदर्शन पार्क—प्रो० भारत मित्र शास्त्री तथा ज्ञान चन्द डोगरा गायक, सोहनगज—प० राम निवास, सराय रोहला—प० मनोहरलाल ऋषि भजनोपदेशक, शालीमार बाग—प० शिवकुमार शास्त्री; हनुमान रोड—प० हरिशरण सिद्धान्तालकार, हौज खास डी-२०—प० प्रकाशचन्द वेदालकार, ज्ञान-चन्द डोगरा, वेद प्रचार विभाग)

ऋषिवर ? हम अबोध आप के बोध की कहानी क्या लिखें

ले स्व स्वामी आत्मानन्द सरस्वती

१—आपने सन्ध्या और योगानुष्ठान का आदेश दिया था। हम आज तक सन्ध्या मन्त्रो का शुद्धोच्चारण भी नही सीख सके। योगानुष्ठान का अब तक स्पर्श भी नही किया, योगानुष्ठान के लिए तो विशेष अधिकारी ने उपदेशको को यहा तक कह दिया कि रजाई मे बैठे-बैठे ही गायत्री का जाप कर लिया करो इतना पर्याप्त है।

२—आपने सगठन का पाठ पढ़ाया था हम पद लोलुपता के ग्रास बन कर विगठन की ओर ही पग बढ़ाते जा रहे हैं।

३—आपने वेदो की ओर अग्रसर करने वाली वेदवाणी के विस्तार का आदेश दिया था परन्तु हम पूज्या सरस्वती के स्थान पर आङ्गल भाषा की ही पूजा करते हैं।

४—आपने गुरुकुलो विद्यालयो मे वेदो के गम्भीर अध्ययन का आदेश दिया, परन्तु हमारी साधारण दृष्टि भी अब इस ओर नही जा रही।

५—आप ब्रह्मचर्य के धनी थे, आपने इन सस्थाओ मे ब्रह्मचर्य को जीवत रूप देने का आदेश दिया था, गुरुकुलो के वायु मण्डल को स्त्री सम्पर्क से रहित रखना और आकर्षणो से ब्रह्मचारियों को बचाए रखना ही कार्यक्रम का साधक था परन्तु अब हम इस दशा मे भी शिथिल होते जा रहे हैं।

६—आपने सह शिक्षा का प्रबल विरोध किया था परन्तु हम सह शिक्षा का विरोध तो क्या करेंगे स्वय अपने हाथो से उस का संचालन कर रहे हैं।

७—आपने वेद प्रचार के आचरण और विचार दो साधन चुने थे परन्तु हमने उनमें से पहले साधन को स्पर्श करना ही छोड दिया है।

८—आपने देशोद्धार की दृष्टि से वानप्रस्थ और सन्यासाश्रम का पुनरोद्धार करना आवश्यक समझा था। परन्तु हम उन्हे अनावश्यक समझ रहे हैं।

९—हम प्रबोध के लिए आप का बोध दिवस प्रति वर्ष मनाते है परन्तु प्रबोध की ओर एक पग भी आगे बढ़ा नही है।

इसलिए —"आप की बोध की कहानी हम क्या लिखे।"

(आर्यसमाज बड़ोदा, गुजरात)

डाक्टर भारतीय गंगाप्रसाद उपाध्याय पुरस्कार से सम्मानित

इलाहाबाद-आर्यसमाज के महान् लेखक दार्शनिक प० गगाप्रसाद उपाध्याय की स्मृति मे दिया जाने वाला आर्यसमाज का सर्वोच्च साहित्य पुरस्कार इस वर्ष पजाब विश्वविद्यालय की दयानन्द शोधपीठ के अध्यक्ष प्रसिद्ध अनुसंधान विद्वान् डॉ० भवानी लाल भारतीय को उनकी नूतन कृति श्री कृष्णचरित के लिए दिया गया है। पुरस्कृत ग्रन्थ मे विद्वान लेखक ने महाभारत को आधारभूत ग्रन्थ के रूप मे स्वीकार करते हुए कृष्ण के महनीय व्यक्तित्व का गम्भीर विश्लेषण किया है। इससे पूर्व भी डॉ० भारतीय को उनकी कृति महर्षि दयानन्द और स्वामी विवेकानन्द पर गगाप्रसाद उपाध्याय स्मारक पुरस्कार मिल चुका है। कृष्ण चरित का प्रकाशन आर्यसमाज के प्रसिद्ध प्रकाशक गोविन्दराम हासानन्द दिल्ली ने किया है।

डा० भाव नीलाल भारतील के पुत्र एवं पुत्री का विवाह सम्पन्न

जोधपुर। ११फरवरी को स्थानीय महर्षि दयानन्द स्मारक भवन मे आर्यसमाज के विख्यात अनुसधान कर्त्ता डॉ० भारतीय के पुत्र विनय तथा गार्गी का विवाह पूर्ण वैदिक विधि से सम्पन्न हुआ। सस्कार प्रो० धर्मवीर ने सम्पन्न कराया। इस अवसर पर राजस्थान के मुख्य मत्री श्री शिवचरण माथुर तथा राजस्थान के भूतपूर्व विधि मन्त्री श्री मथुरादास माथुर ने उपस्थित होकर नव विवाहित जोडो को आशीर्वाद दिया। परोपकारिणी सभा के मत्री श्री करण जी शारदा भी समारोह मे उपस्थित थे।

चरित्र निर्माण पर बल दें

लुधियाना मे महर्षि-बोधोत्सव

आर्य युवक सभा लुधियाना के तत्वावधान मे २१-२-८२ को महर्षि-बोधोत्सव धूम-धाम के साथ आर्यसमाज महर्षि दयानन्द बाजार लुधियाना मे मनाया गया। जिसकी अध्यक्षता मे ज्ञानी गुरुदयाल सिह आर्य ने की। इस समारोह मे प्रिन्सिपल ओ० पी० टण्डन श्री राजाराम, श्री वेदप्रकाश शास्त्री, वैद्य कुन्दन लाल, श्रीमती शान्ता गोड़ जी ने अपने विचारो मे महर्षि के जीवन पर प्रकाश डाला।

स्वामी सुरेन्द्रानन्द जी ने अपने प्रवचन मे नवयुवको से आग्रह किया कि वे किसी भी राजनैतिक दल के प्रभाव मे न आकर महर्षि दयानन्द और आर्यसमाज के कार्य को आगे बढाने के लिए एक जुट होकर कार्य करे। स्वामी जी ने चरित्र निर्माण पर विशेष बल दिया।

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय का वार्षिकोत्सव

समस्त आर्य बन्धुओं को हर्ष के साथ सूचित किया जाता है कि गतवर्षों की भांति इस वर्ष भी गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय का वार्षिकोत्सव १२, १३, १४ व १५ अप्रैल १९८२ को हर्षोल्लास के साथ मनाया जा रहा है। सभी आर्यबन्धुओ से निवेदन है कि वे अधिक से अधिक सख्या मे वार्षिकोत्सव मे सम्मिलित होने का कष्ट करें।

आर्य प्रतिनिधि सभाओं से जो बसे आएगी उनके यात्रियों के निवास और भोजन आदि की व्यवस्था उनकी पूर्व सूचना आने पर कर दी जाएगी।

जो आर्यसमाजी संस्थाएं इस वार्षिकोत्व के लिए दान भेजना चाहें वे कृपया क्रास-चेक अथवा क्रास ड्राफ्ट या मनिआर्डर श्री सहायक मुख्याधिष्ठाता, गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार के पते पर भेजने का कष्ट करें।

मोहन जोदड़ो में आर्यसभ्यता थी

कराची। पाकिस्तान के दो पुरातत्ववेत्ताओ-खुर्शीद हसन शेख और सैयद मुहम्मद अशफाक ने 'मोहन जोदड़ो ५००० वर्ष पुरानी एक परम्परा' नामकपुस्तक मे घोषित किया है—मोहन जोदडो का अर्थ मृतकों का टीला न होकर मोहना जाति के लोगो का टीला है। लेखकों ने यह स्पष्ट मत भी प्रकट किया कि हडप्पा की खुदाई से प्रमाणित होता है कि 'स्वस्तिक' चिन्ह सिन्धु घाटी की सभ्यता के लोगों का देवता था, शिवलिंग की प्राप्ति से प्रमाणित होता है। पीपल-बड आदि के पेड भी सिन्धु सभ्यता के लोगो के लिए सम्मान की वस्तुए थी। राशिचक्र के चिन्ह भी सिन्धु घाटी सभ्यता मे विद्यमान थे। लेखकों ने इन सब बातों का वर्णन करते हुए यद्यपि आर्य शब्द का प्रयोग नहीं किया। तथापि उस विवरण से स्पष्ट होता है कि वह आर्य सभ्यता ही है।

सच्चा शूरवीर कौन ?

जो मनुष्य वेदादि शास्त्रों के पढने मे शूरवीर, जो दुष्टों के दलन और श्रेष्ठो के पालन मे शूरवीर अर्थात् दृढोत्साही उद्योगी, जो निष्कपट परोपकारक अध्यापको की सेवा करके शूरवीर, जो अपने जनक पिता की सेवा करके शूरवीर, जो माता की परिचर्या से, जो सन्यासाश्रम से युक्त अति विरूप होकर सर्वत्र भ्रमण करके परोपकार करने मे शूर, जो वानप्रस्थाश्रम के कर्म और गृहाश्रम के व्यवहार मे शूर होते हैं, वे ही सब सुखो के लाभ करने-कराने मे अत्युत्तम होकर धन्यवाद के पात्र होते हैं कि जो अपना तन-मन-धन विद्या और धर्मादि शुभ गुण ग्रहण करने में सदा उपयुक्त रहते हैं।

—महर्षि दयानन्द

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रकाशन

सत्यार्थप्रकाश सन्देश (हिन्दी)	१.००
" " (अंग्रेजी)	समाप्त
आर्य सन्देश-महासम्मेलन विशेषांक	६.००
पादरी भाग गया— ओमप्रकाश त्यागी	०.३०
स्वामी श्रद्धानन्द-बलिदान अर्द्ध शताब्दी स्मारिका	६.००
सत्यार्थप्रकाश शताब्दी समारोह स्मारिका	६.००

सम्पर्क करें—
अधिष्ठाना प्रकाशन विभाग
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा,
१५, हनुमान रोड,
नई दिल्ली-११०००१

卐 'आर्यसन्देश' के स्वयं ग्राहक बनें— दूसरों को बनाए

卐 आर्यसमाज के सदस्य स्वयं बनें— दूसरों को बनाइए

卐 हिन्दी-सस्कृत भाषा स्वयं पढ़ दूसरों को भी पढाइए—

सर्वाधिक निर्भीक : स्वामी दयानन्द

यह बिल्कुल सही बात है कि शंकराचार्य के बाद से भारत मे कोई भी व्यक्ति ऐसा नहीं हुआ जो स्वामी दयानन्द से बड़ा सस्कृतज्ञ, उनसे बड़ा दार्शनिक उनसे अधिक तेजस्वी वक्ता तथा कुरीतियों पर टूट पडने मे उनसे अधिक निर्भीक रहा हो।

—मादम ब्लेवात्स्की

उत्तम अध्यापक और उत्तर विद्यार्थी कैसे बने ?

जो निरन्तर सत्य मे रमण, जितेन्द्रिय, शान्तात्मा, उत्कृष्ट शुभ गुण स्वभावयुक्त और रोगरहित, पराक्रम सहित शरीर, ब्रह्मचर्य अर्थात् वेदादि सत्यशास्त्र और परमात्मा की उपासना का अभ्यास आदि कर्म करते हैं, उनके वे सब उत्तम गुण, बुरे काम और दुखो को नष्ट कर सर्वोत्तम धर्मयुक्त कर्म और सुखो की प्राप्ति कराने हारे ... हैं और इन्ही के सेवन से मनुष्य उत्तम अध्यापक और उत्तम विद्यार्थी हो सकते हैं।

—महर्षि दयानन्द

रजि० डी (सी) ७३५

दिल्ली आर्यप्रतिनिधि सभा के लिए श्री सरदारी लाल वर्मा द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित ... भाटिया प्रेस २५३४, रघुबरपुरा नं० २ गांधीनगर दिल्ली-३१ में मुद्रित। कार्यालय १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली फोन ३१०१५०

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक मुखपत्र

एक प्रति ३५ पैसे वार्षिक १५ रुपए वर्ष ६ अंक २० रविवार १ चैत्र वि० २०३८ १४ मार्च १९८२ दयानन्दाब्द १५७

उत्तर प्रदेश के पिछड़े इलाकों में धर्मान्तरण का षड्यन्त्र

फैजाबाद पुलिस द्वारा सन्त बड़ा बाबा नामक ढोंगी साधु गिरफ्तार : असम के मौलाना की मार्फत विदेशी ताकतों की पेशकश

फैजाबाद। १० फरवरी के दिन स्थानीय पुलिस ने सन्त बडा बाबा नामक एक ढोगी साधु को जिसका असली नाम मौलाना फारुखी है, जो कभी स्वामी इन्दर अकरम डोनाल्ड सिह भी कहलाता रहा है, गिरफ्तार किया है। बम्बई के अग्रेजी पत्र 'ब्लिट्ज' के स्थानीय सम्वाददाता द्वारा भेजे सम्वाद के अनुसार (१६ मार्च, १९८२) कुछ विदेशी ताकते असम के एक मुसलमान मौलाना की मार्फत उत्तर प्रदेश के सामाजिक और आर्थिक दृष्टि से पिछडे लोगो के सामूहिक धर्मान्तरण के लिए उक्त ढोगी साधु भारी मात्रा में वित्तीय सहायता दे रही हैं।

कथित धोखादेही के अभियोग में गिरफ्तार किए मौलाना फारुखी के पास से नगी फिल्मे, यौन साहित्य, नई रंगीन शर्टे, जीन, स्विस घडिया, बडी सख्या मे अनेक नमूनो की नैक टाइयां और विभिन्न धर्मों की बहुत-सी किताबे हस्तगत की गई हैं।

इस स्वामी इन्दर अकरम डोनाल्ड सिह का कहना है कि इस क्षेत्र मे विशेषत उत्तर प्रदेश के पिछडे इलाको मे यदि इस्लाम का प्रचार करना है तो उसे हिन्दू सिख, ईसाई लडको और लडकियों मे काम करना होगा। कहते हैं कि उसने कुछ सुन्दर दिखाई देने वाली स्त्रियो और लडकियों को फुसला लिया है। ये लडकिया हिन्दू सन्यासिनियो के भेस में हिन्दू स्त्रियो मे कार्य करेगी। जाच से यह भी मालूम हुआ है कि इस ढोगी साधु को असम के प्रमुख मौलाना की स्वीकृति प्राप्त थी। इस ढोगी स्वामी की गिरफ्तारी से धर्म-परिवर्तन के एक बड़े षड्यन्त्र का खात्मा हो गया।

इस ढोगी स्वामी को स्थानीय जनता सन्त बडा बाबा कहती थी। कहते हैं कि वह रामायण, गीता, ग्रन्थ साहब और बाइबिल की कथा के बहाने भोली-भाली जनता को 'शान्ति कुटी' नामक अपने आश्रम मे बुला कर कुरान और इस्लाम मे दीक्षित करता था। जब कई समझदार चेलो ने उसके इरादे पर शक किया, तब इस साधु ने समझाते हुए कहा—गुरू-शुरू मे ग्रन्थ साहिब, बाइबिल और गीता को पढने मे कठिनाई होती है, इसलिए मै शुरू मे कुरान की सीख देता हू।

पूर्वी दिल्ली में बृहद् आर्य महासम्मेलन और यजुर्वेद पारायण व गोमेध महायज्ञ

२६, २७, २८ मार्च को रामलीला मैदान, भोलानाथ नगर, शाहदरा में अपूर्व आयोजन

नई दिल्ली। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सरदारी लाल वर्मा सभा मन्त्री प्रो० भारत मित्र शास्त्री एव क्षेत्रीय उप प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री नेतराम शर्मा तथा मन्त्री श्री मनोहर लाल ने एक विशेष पत्रक प्रकाशित कर समस्त दिल्ली की आर्यसमाजो, आर्यसस्थाओ और आर्यजनता से अनुरोध किया है कि वे २६ से २८ मार्च, १९८२ तक रामलीला मैदान, भोलानाथ नगर, शाहदरा, दिल्ली-३२ मे हो रहे बृहद् आर्य सम्मेलन मे अधिक से सख्या मे स्वय आए और दूसरो को आने की प्रेरणा दे। महासम्मेलन के इस अवसर पर यजुर्वेद पारायण महायज्ञ के साथ गोमेध यज्ञ का भी वास्तविक स्वरूप जनता के सामने रखा जाएगा।

पेट्रो डालर की मदद से विदेशी साम्प्रदायिक विघटनकारी शक्तियो द्वारा देश की पिछड़ी-दलित जनता के सामूहिक धर्म परिवर्तन के षड्यन्त्र को विफल करने के लिए सार्वदेशिक सभा के द्वारा देश मे प्रचलित धर्मरक्षा महाभियान तथा गोवश की रक्षार्थ सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री रामगोपाल वान प्रस्थ के आह्वान के सन्दर्भ मे पूर्वी दिल्ली के आर्य महासम्मेलन और दोनों महायज्ञो की विशेष महत्ता है। आशा है आर्य जनता इस अवसर पर अधिक से अधिक गिनती मे इन आयोजनो मे सम्मिलित होकर धर्मरक्षा में योगदान करेगी।



ऋषि मेले मे आयोजित सार्वजनिक सभा मे अध्यक्षीय भाषण देते हुए वयोवृद्ध आर्य नेता प्रो० रामसिह जी। सार्वदेशिक आ० प्रा० सभा के प्रधान श्री रामगोपाल जी शालवाले, प्रि० ओमप्रकाश जी, श्री बनवारी लाला शादा, म० आर्य भिक्षु जी आर्य स्टेज पर विराजमान है।

फरवरी मास में २९७ ईसाई और ५ मुसलमान वैदिक धर्म में

नई दिल्ली। अ० भा० हिन्दु शुद्धि सभा के कार्य-कर्त्ताओ के प्रयत्नो के फलस्वरूप २९७ ईसाई तथा ५ मुसलमानो के वैदिक धर्म अपनाया। २१ फरवरी को आर्य समाज मोती नगर मे दिल्ली निवासी रसीद अहमद को वैदिक धर्म की दीक्षा देकर ऋषि कुमार नाम रखा गया। शुद्धि कार्य प० सुदर्शनदेव शास्त्री ने सम्पन्न कराया। शुद्धिकार्य के लिये आर्य समाज मोती नगर के प्रधान श्री ओम प्रकाश जी ने विशेष मेहनत की। शुद्धि सभा के महामन्त्री द्वारिका नाथ सहगल, आर्य केन्द्रीय सभा के महामन्त्री श्री ओम प्रकाश तथा डा० प्रशान्त कुमार वेदालकार आदि ने आशीर्वाद दिया।

सम्पादक—नरेन्द्र विद्यावाचस्पति

व्यवस्थापक—प्रद्युम्नलाल तलवाड़

॥ ओ३म् ॥

मानवता के लिए धर्म का व्यवहार

धर्म के विश्व-प्रसिद्ध दस लक्षण जिन बिना जाने-माने मनुष्य मानवता को साधक नहीं कर सकता—

धृति क्षमा दमो ऽस्तेयं शौचं इन्द्रियनिग्रहः
धीर्विद्या सत्यम क्रोधो दशकं धर्मलक्षणम् (मनु०)

१. धृति —सदा धैर्य रखना।

२. क्षमा—जो कि निन्दा स्तुति मान अपमान हानि-लाभ आदि दु:खों में भी सहनशील रहना।

३ दम —मन को सदा धर्म में प्रवृत्त कर अधर्म से रोक देना 'अर्थात्' अधर्म करने की इच्छा भी न उठे।

४. अस्तेय—चोरी त्याग अर्थात् बिना आज्ञा वा छल-कपट विश्वास-घात वा किसी व्यवहार तथा वेद विरुद्ध उपदेश से पर पदार्थ का ग्रहण करना। चोरी और और उसको छोड़ देना साहूकारी कहाती है।

५. शौच—राग-द्वेष पक्षपात छोड़ कर भीतर और जल मृत्तिका मार्जन आदि से बाहर की पवित्रता रखनी।

६ इन्द्रियनिग्रह अधर्माचरणों से रोक कर इन्द्रियों का धर्म में ही सदा चलाना।

७. धी—मादक द्रव्य बुद्धि नाशक अन्य पदार्थ दुष्टों का संग, आलस्य प्रमाद आदि को छोड़ के श्रेष्ठ पदार्थों का सेवन सत्पुरुषों का संग, योगाभ्यास धर्माचरण ब्रह्मचर्य आदि शुभ कर्मों से बुद्धि बढ़ाना।

८. विद्या—पृथ्वी से लेकर परमेश्वर पर्यन्त यथार्थ ज्ञान और उनसे यथायोग्य उपकार लेना सत्य जैसा आत्मा में वैसा, मन (में) जैसा मन में वैसा वाणी में, जैसा वाणी में, वैसा कर्म में बर्तना, इससे विपरीत अविद्या है।

९ सत्य—जो पदार्थ जैसा हो, उसको वैसा ही समझना, वैसा ही बोलना और वैसा ही करना।

१०. अक्रोध—क्रोधादि दोषों को छोड़ के शान्ति आदि गुणों का ग्रहण करना धर्म का लक्षण है।

उपर्युक्त दश लक्षण जो सारे समाज विद्या के सब लोगों विचारकों को समान-रूप से ग्रहण करने योग्य है। यदि इस विश्व प्रसिद्ध धर्म का सब स्वीकार कर लें तो सब में जागृति (जानकारी) और मोक्ष मिल जाए। कुछ स्वार्थी ही ऐसे हो सकते हैं जिसे इनको मानने में बाधा होता है। परमात्मा सबका सद्बुद्धि प्रदान करे जिससे सब एक मत होकर सत्य धर्म को जानकर अन्य को भी जना देवे।

—पुष्करलाल आर्य
संयोजक, वैदिक प्रचार समिति,

वेद-मनन

वीर्यरक्षा से कान्ति और मधुरता

—मनोहर विद्यालंकार

पयसो रेत आभृतं तस्य दोहमशीमह्युत्तरामुत्तरां समाम्।
त्विषः संवृक् क्रत्वे दक्षस्य ते सुषुम्णस्य ते सुषुम्णाग्निहुत।
इन्द्रपीतस्य प्रजापतिभक्षितस्य मधुमत उपहूत उपहूतस्य भक्षयामि॥

यजु ३८-२८

ऋषि —दीर्घतमा। देवता-यज्ञ। छन्द —स्वराड्धृति।

शब्दार्थ—हे (त्विषः संवृक्) तेज का संवरण करने वाले तेजस्विन् आचार्य (दक्षस्य) दक्ष तथा समृद्ध (सुषुम्णस्य) सुषुम्णा में क्रिया करने वाले (इन्द्रपीतस्य) जितेन्द्रिय बनकर वीर्य की रक्षा करने वाले (प्रजापतिभक्षितस्य) प्रजा-पिता (पिता) बनने के लिए इसका भोग करने वाले (मधुमत) ज्ञान सम्पन्न (ते) आप द्वारा (उपहूतस्य) शिष्य रूप में मे स्वीकार किए हुए (ते उप) आपके पास रह कर (सुषुम्णाग्नि हुत) सुषु-म्णा) नाड़ी रूपी वेदि में प्रज्ज्वलित अग्नि में तपा हुवा मैं (क्रत्वे) अपनी प्रज्ञा को दीप्त और कर्म को समर्थ बनाने के लिए (आभृतम्) शरीर में रक्षित (पयस रेत) जल के सारभूत वीर्य का (भक्षयामि) उपयोग करता हूं। हे (दीर्घतमा) अज्ञानान्धकार को विदीर्ण करने वाले (यज्ञ) पूजनीय गुरो, आप ऐसी कृपा करें कि (उत्तरा उत्तरासमाम्) हम आगे आने वाले वर्षों में (तस्य दोहम्) उस वीर्य के दोहन को (अशीमहि) अच्छी प्रकार भागपूर्वक उपयोग में लाते रहें।

निष्कर्ष—खाये-पीये अन्न जल का सार तत्त्व वीर्य हमारे शरीर में भरा हुआ है। जीवन के अगले समय में उसका सदु-पयोग करना चाहिए।

सुषुम्णा नाड़ी में प्राण साधना करने से प्रज्ञा विशद होती है, और कर्म सशक्त तथा सफल होते है।

जितेन्द्रिय (इन्द्र) बनकर वीर्य की रक्षा करनी चाहिए; प्रजापति (पिता) बनने के लिए इसका उपयोग (भक्षण) करना चाहिए। वीर्य का अध पात न करने ऊर्ध्वगमन करने में शरीर की कांति और मन की मधुरता बढ़ती है।

स्वामी दयानन्द ने इस मन्त्र के भावार्थ में लिखा है कि —

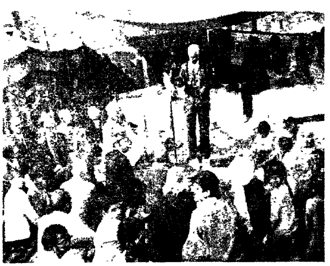
मनुष्यैः सदावीर्य वर्धनीयम्, विद्यादि शुभगुणा धतव्या, प्रतिदिन सुख वर्ध-नीयम्। यथा स्वसुखमिच्छेरन्, तथाऽन्ये-षामपि-आकाङ्क्षेरन्। मनुष्यों को वीर्य की रक्षा और शुभ गुण धारण कर के अपना सुख बढ़ाना चाहिए। अपने सुख के समान दूसरों के सुख का भी ध्यान रखना चाहिए।

विशेष—अज्ञान अन्धकार (तम) को विदीर्ण करने वाला (दीर्घ), ही देव-पूजा, सगंति करण और दान द्वारा सबका पूजनीय (यज्ञ) बन जाता है। इस स्थिति में पहुंचने के लिए धैर्य (धृति) रखना आवश्यक है।

अर्थ पोषक प्रमाण—

दोहम्—अभिषुत तत्वम् सारभार-भक्षयामि...भक्षिरत्र उपयोगे। स्वामी भगवदाचार्य, सुषुम्णस्य—सुम्न सुख नाम। नि० ३-६ सुषुम्णा नाड़ी में प्राण साधना करने वाला सुख प्राप्त करता है। सुषुम्णा—सबको सुख देने वाली। दुर्गाचार्य,

संवृक्—सम्पूर्वो वृजि स्वीकरणार्थ समा—संवत्सर। मधु विज्ञानम्। स्वा० दयानन्द यजु १९.६१ ५२२, ईश्वर भवन, खारी बावड़ी, दिल्ली-११०००६



आर्य समाज मंगोल पुरी द्वारा आयोजित यज्ञ के स्थान पर आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली की मासिक बैठक के समय मंगोलपुरी निवासी मुहम्मद सलीम कुरैशी अशिष्ट एवं अपशब्दों का प्रयोग करते हुए।

बोध-कथा

जीवनका असली तत्त्व

एक बार एक बहुत ही गरीब धुनिया महर्षि दयानन्द के निवास स्थान पर गया। वह उनके पास पहुंचा। उनके चरणों में प्रणाम कर बोला— महाराज, मैं दीन हीन गरीब धुनिया हूं। न तो मेरे पास इतने पैसे हैं कि अपने में भी दीन-हीन को दान दे सकूं। न मेरे पास अक्षरों का ज्ञान है कि सुबह-शाम फुरसत मिलने पर भगवान की प्रार्थना कर सकूं। मुझे ऐसा रास्ता बतलाइए, जिससे मेरा उद्धार हो सके।'

महर्षि दयानन्द ने उस गरीब जुलाहे-धुनिए को ढाढस देते हुए—'तुम्हें घबराने और चिन्ता करने की कोई जरूरत नहीं है। तुम जो भी काम करते हो, उसे इमानदारी से करो। तुम्हे गाहक जितनी रूई धुनने के लिए दे, उसे साफ कर उतनी ही रूई लौटा दो। ईमानदारी से अपना काम करो। किसी दूसरे को कोई चीज दान नहीं दे सकते तो कोई बात नहीं। अपने मन से दूसरों के कल्याण का सदा संकल्प करो, दूसरों की बुराई का कभी स्वप्न में भी ख्याल न करना, इसी से तुम्हारा कल्याण हो सकेगा।'

—नरेन्द्र

गुरुस्वरूप परमात्मा को नमस्कार !

ओ३म् यन्मे छिद्रं चक्षुषो हृदयस्य मनसो वातितृण्ण बृहस्पतिर्मे तद् दधातु। शं नो भवतु भुवनस्य यस्पति ।। यजुर्वेद ।। ३६,२

हे वाणीपालक गुरु स्वरूप परमात्मन्, जो मेरी आखों, हृदय और मन के छेद अथवा दोष हैं, उन्हें भर दे या दूर कर दे और मुझे श्रेष्ठ प्रेरणा प्रदान करें, जगत्पति परमात्मा मुझे सच्ची शान्ति दे।

ओ३म्
आर्य सन्देश

पश्चिम की अन्धी नकल न करें !

केलिफोर्निया, संयुक्त राज्य अमेरिका की एक ईसाई नागरिक ने वैदिक धर्म में दीक्षित होकर श्रीमती सीरी आनन्द नाम ग्रहण करने के बाद पिछले दिनो भारत की यात्रा की। उन्होने एक वक्तव्य मे घोषित किया है—'भारत को अपनी संस्कृति की रक्षा करनी चाहिए और पश्चिम की अन्धी नकल नहीं करनी चाहिए। भारत के वे बच्चे जो खर्चीले स्कूलों मे शिक्षा प्राप्त करते हैं, वे अपनी संस्कृति को भूल जाते है और विदेशी गीत गाने लगते हैं। हमे प्रत्येक मूल्य पर वैदिक संस्कृति की सुरक्षा करनी चाहिए, क्योंकि वैदिक धर्म ही असली मानव धर्म है।' अपने अनुभव के आधार पर विदुषी अमेरिकी महिला का यह निष्कर्ष उन भारतीय नागरिकों की आखें खोल देने के लिए पर्याप्त होना चाहिए, जो पश्चिम का अन्धा अनुकरण कर रहे है। खेद का विषय यह है कि आर्यसमाज एव भारतीय संस्कारों मे पले एव हिन्दी एव संस्कृत के आधार पर अपनी रोजी-रोटी चलाने वाले लोगो की सन्ताने भीमकाले के पद चिह्नो पर अग्रेजी और अग्रेजियत की सीख ले रही है। उसका दुष्परिणाम यही हो रहा है कि अमेरिकी महिला आनन्द को कहना पड़ा कि यह खर्चीले स्कूलो की शिक्षा का ही परिणाम है कि नई पीढ़ी के बच्चे विदेशी गीत गाने लगते हैं।

इस अग्रेजियत की शिक्षा के परिणाम पर आज ता० ५ मार्च के दैनिक पत्रों पर एक दृष्टि डालिए। देश की भारतीय प्रशासनिक सेवा इण्डियन एडमिनिस्ट्रेटिव सर्विस के एक दोषी प्रशिक्षणार्थी को जाच मे दोषी पाए जाने के बावजूद उसके विरुद्ध सस्था के प्राचार्य की सिफारिश के अनुसार पहले कार्यवाही नही की गई, फलत स्थिति से परेशान होकर उन प्राचार्य महोदय ने सेवा से अवकाश लेना उचित समझा। इसी प्रकार कए रोडवेज के अम्बाला स्थित टिकट निरीक्षण अधिकारियो के दुर्व्यवहार के कारण वहा की नवविवाहिता महिला कर्मचारियो की दयनीय स्थिति हो गई है। एक महिला ने आत्महत्या कर ली है, दूसरो की स्थिति सकट से पूर्ण है। समाचार पत्र डकैतियो, शील-अपहरण, भ्रष्टाचार छेड़छाड की घटनाओ से भरे पडे हैं। इन समाचारों को देखकर लगता है कि हमारे देश मे भी पश्चिम के अपराधो-यौन-व्यवहार का अन्धा अनुकरण होने लगा है। हम सयम, मर्यादा, अपरिग्रह, अहिंसा आदि के भारतीय संस्कृति के बुनियादी तत्वो को भुला बैठे है। स्थिति के सुधार के लिए हमे पश्चिम की अन्धी नकल छोडनी होगी।

वेद ने शिक्षा दी है 'मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे' हम प्राणिमात्र को मित्र दृष्टि से देखे। हम पृथ्वी माता के सच्चे मानव-पुत्र तभी बन सकते है जब हम प्राणिमात्रसे मित्रता-पूर्ण व्यवहार करें। ऋषि दयानन्द ने इसी मैत्री भाव को जाग्रत करने के लिए दो सूत्र दिए थे—एक-प्रत्येक को अपनी ही उन्नति मे सन्तुष्ट न रहना चाहिए किन्तु सबकी उन्नति में अपन उन्नति समझनी चाहिए। दूसरे सब मनुष्यो को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने मे परतन्त्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी पालने मे सब स्वतन्त्र रहें। इन दो नियमो का अवलम्बन कर ही एक प्राणी सच्चा इन्सान या मानव बन सकता है, दूसरे शब्दों मे वह एक सामान्य मानव से सच्चा आर्य बन सकता है। जिस प्रकार पशु-हत्या, प्राणी-हत्या घृणित है, उसी प्रकार दूसरे इन्सानो को लूटना या उन पर अत्याचार करना भी निन्दा के योग्य है। हम प्राणी मात्र से मैत्री करें, हम सबकी उन्नति मे अपनी उन्नति समझे—यही परोपकार की सच्ची भावना ही यज्ञ की सच्ची भावना है। यह भारतीय संस्कृति का आधार है—तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा त्याग पूर्वक उपभोग करो केवल स्वार्थ और इन्द्रियो की लोलुपता मे न पडो। पश्चिम की संस्कृति या विज्ञान को अच्छी चीजों को अपनाने मे कोई बुराई नहीं है, परन्तु हमे अपनी संस्कृति के त्यागयज्ञ परक अच्छे तत्वो को वृद्धि करते हुए पश्चिम की अन्धी नकल से बचना चाहिए।

चिट्ठी-पत्री

व्यक्ति दूसरों का भौंपू न बने

प्रत्येक व्यक्ति को सविधान के अनुसार अपने विचारो की अभिव्यक्ति का अधिकार है, परन्तु इस अधिकार का अनुचित प्रयोग कर दूसरे व्यक्तियो का भौंपू बनना उचित नही कहा जा सकता। महाशय सत्यप्रकाश बिलवाल पहले आर्यसमाज मगोलपुरी के मन्त्री थे, सस्था की गतिविधियो मे भाग देते थे, परन्तु अब वह सस्था के पदाधिकारी नहीं हैं तो वह निराधार अभियोग लगाने से नही चूकते। उन्होने अपने सम्पादन मे प्रकाशित हो रहे हिन्दी पाक्षिक 'सुलगती चिनगारी' के १ मार्च, १९८२ के अक के तीसरे पृष्ठ पर परस्पर विरोधी निष्कर्ष प्रकट किए है। एक ओर वह हरिजन-स्नेहसम्मेलन मे आर्यसमाज की स्थापना के निर्णय पर लिखते है—'यह बात तो समझ मे आती है कि आर्यसमाज कुरीतियो, अन्धविश्वासो, जाति पाति का एक हद तक विरोध कर समाज मे जागरण की भूमिका निभा सकता है, परन्तु सत्यप्रकाश जी के दिमाग को यह बात समझ मे नही आई—और वह लिखते है —लेकिन तब प्रश्न उभर उठते हैं जब आर्यसमाज के मच से हिन्दुओ के नारे गूजने लगते है धर्म की सकीर्णता को उभार कर ये लोग हिन्दुओ और मुसलमानो की बीच कटुता और तनाव को बढावा देते हैं।'

सत्यप्रकाश जी का अपना मन स्पष्ट नही है, आर्यसमाज की भूमिका स्पष्ट है, वह न तो छुआछूत और अस्पृश्यता को पसन्द करता है, न वह हिन्दुओ और मुसलमानो मे कटुता-तनाव पैदा करना चाहता है। साथ ही वह आर्य हिन्दू जाति की एकता को सुदृढ कर अत्याचार, प्रलोभन या छल द्वारा विधर्मी ईसाई या इस्लाम के दूषित गैर कानूनी धर्मान्तरण का भी दृढ विरोधी है। आशा है, श्री सत्यप्रकाश आर्यसमाज के उचित दृष्टिकोण को समझेंगे, उन्हें दूसरो के इशारे पर निराधार अभियोग नहीं लगाने चाहिए।

भारत मित्र शास्त्री

श्री घूड़मल आर्य पुरस्कार

स्वर्गीय श्री घूडमल आर्य की पुण्य-स्मृति मे उनके सुपुत्र श्री प्रह्लाद कुमार आर्य ने घोषणा की है कि प्रतिवर्ष ११००) ग्यारह सौ रुपये का विशिष्ट पुरस्कार आर्य समाज तथा ऋषि दयानन्द के सिद्धान्तो एवम् मान्यताओ के अनुकूल विशिष्ट मौलिक ग्रन्थ पर लेखक को ससम्मान आर्यसमाज हिण्डौन के द्वारा भेट किया जाएगा। विद्वान लेखक इस सम्बन्ध मे नियमो आदि की जानकारी प्राप्त करें।

डा० ओमप्रकाश वेदालंकार
सचिव श्री घूडमल आर्य पुरस्कार समिति आर्यसमाज,
हिण्डौन सिटी (राज) ३२२२३०

होली का त्योहार

कविराज बनवारीलाल 'शादा'

आया होली का त्योहार ।।
प्रेम रग है दिल पिचकारी, बरसाओ है छूट।
हंसी-खुशी का पानी भरलो, है भडार अटूट ।।
सभी दिशाए अब चमका दे, यह सूरज सहकार ।। आया ...

है होली यह बडी निराली, बरस बाद फिर आई।
बरसो की यह याद पुरानी, अब ताजा हो जाई।।
दुविधाओं से सब ऊपर उठकर, भेटो बाह पसार ।।आया ....

हार पहनाओ हवन कराओ, यही पुरानी रीत।
चन्दन लगाओ सबके मुखपर, मन लो इनका जीत।।
मन से मन को आज मिला दो, यही जगत मे रीत ।। आया ......

भूल न किससे होती भाई, आज भूल को भूल।
खिलो-खिलाओ खुशी मनाओ, कहते खिलकर फूल ।।
प्रेम मिलन को अमर बनाओ, अपना करके प्यार ।।आया.... .

एक बने हैं चेहरे जैसे, ऐसे दिल हो एक।
द्वेष भाव सब दूर भगाए, सीखे ज्ञान विवेक ।।
एक रहे है, एक रहेगे, होगा एक विचार ।।आया . ..

रहे प्रेम भण्डार हृदय मे, खिले सत्य के फूल।
यही माग होली की 'शादा' सब मिल करो कबूल ।।
सत्य स्नेह बसालो मन मे, होली का उपहार।।

प्रधान मॉडल बस्ती, आर्यसमाज मन्दिर, नई दिल्ली ५

आखिर ऐसा क्यों!

लेखक—ओमप्रकाश आर्य
सभा कार्यालयलयाध्यक्ष जालधर

स्वतन्त्र भारत मे न मुसलमानो को भय है और न ईसाईयो को। भयभीत हो रहे है, तो केवल हिन्दू। आखिर ऐसा क्यो? क्या इस भय को केवल वोटो की राजनीति ने उत्पन्न किया है? इस बात मे आशिक सच्चाई तो है परन्तु यह वोटो की राजनीति तो केवल कुछ वर्षों से अपनाई जा रही है। देश के विभाजन से पूर्व भी तो यही स्थिति थी। जब से जनगणना का कार्य अविभाजित भारत मे प्रारम्भ हुआ था, तब से लेकर १९८१की जनगणना के आकडे आप देख लीजिए। सारा चित्र आपके सामने आ जाएगा। मैं समझता हू। केवल दूसरो पर दोषारोपण करने से समस्या हल न हो सकेगी। हमे अपनी कमियो·· मान्यताओ·· व्यवहार आदि सभी बातो पर अन्तर्मुख होकर शान्तभाव से सोचना होगा।

आखिर ऐसा क्यो?

विभाजित देश मे सख्या की दृष्टि से बल अथवा योग्यता की दृष्टिसे धन-धान्य की दृष्टि से धार्मिक साहित्य तथा धर्म प्रचार के नाम पर किए जा रहे कथा-कीर्तन यज्ञ-याग की दृष्टि से आज भी हिन्दू आगे हैं परन्तु न इनके मन्दिरो, मठो मठाधीशो, शकराचार्य, तथा प्रचारको से किसी को भय है न इनकी मान्यताओ और सिद्धान्तो से। आप बड़ा यज्ञ कीजिए या सम्मेलन अन्य मतवादी कभी शकित या भयभीत न होगे, परन्तु जब ईसाई मुसलमान या दूसरे मतो वा सम्प्रदायो के लोग कोई बडा आयोजन करते है, तो हिन्दू समाज मे भूकम्प सा आ जाता है। भय का वातावरण उत्पन्न हो जाता है ··शकाए और उदासीनता के भाव इन्हे आ घेरते है। इन्हें अपना अस्तित्व ही खतरे मे पडता दीखने लगता है। सोचता हू आखिर ऐसा क्यो?

क्या बाइबिल और कुरानमजीद के सिद्धान्त अधिक सत्य का प्रकाश करते है? उनके सिद्धान्तों को आचरण मे लाने से मानव का अधिक कल्याण होता है? ससार का इतिहास तो इसकी साक्षी नहीं देता? फिर क्या कारण है कि इन्ही के आधार पर हिन्दुओ को धर्म भ्रष्ट करने मे मतवादियो को सफलता मिल रही है और हम वेद-वेद की दुहाई देने वाले आर्ष ग्रन्थो की आध्यात्मिक तथा दार्शनिक विचारधारा की सत्यता का जयघोष करने वाले अपने ही देश मे लुटते-पिटते जा रहे हैं?

प्राणिमात्र का कल्याण

नि सन्देह वेद की विचारधारा, सिद्धान्त, मान्यताए सर्वमगलकारिणी है। मानव मात्र ही नही प्राणिमात्र का हित करने वाली है न इनमे देश का भेद है, न सम्प्रदाय का, न वर्ण का भेद है न वर्ग का वेद और आर्ष विचारधारा के समक्ष बाइबिल और कुरानशरीफ दोनो बौने हैं इन दोनो मे भी जो सच्चाई है, वह वेद से ही गई हुई है। परन्तु प्रश्न तो फिर यह है कि वेद वाले मार क्यो खा रहे हैं? घबराहट मे क्यो है क्षेत्र और सख्या दोनो की दृष्टि से दिन प्रतिदिन कम क्यो होते जा रहे हैं? कुरान वालो के अनेक राष्ट्र है और यही स्थिति बाइबिल वालो की है। वेद वालों·· क्या आपका भी कोई राष्ट्र है? भारत राष्ट्र अवश्य कभी था, परन्तु इसे स्वतन्त्र कराने मे अपनी अगणित आहुतिया देकर भी आप अब तक इसे अपने स्व का रूप न दे सके। इसे अपनी सभ्यता, सस्कृति तथा वैदिक मान्यताओ का केन्द्र न बना सके।

आचरण मे न्यूनता

राजनीतिक दृष्टि से स्वतन्त्र होने से पूर्व हम मे जितना सत्याचरण·· न्याय तथा पारस्परिक सद्व्यवहार रूप धर्म का भाव था। तथा देशभक्ति का अनुराग प्रत्येक भारतीय जनजीवन मे भरा हुआ था, स्वतन्त्र होने के साथ ही वे दोनो भाव विलुप्त से हो गए धर्माचरण का स्थान ले लिया धर्म निरपेक्षता सम्प्रदायवाद जन्मगत जातिवाद ने तथा देशभक्ति का प्रान्तवाद और वर्गवाद ने। वह धर्म जिसका स्वरूप सत्य और न्याय का आचरण करना था अब उसका तिरस्कार और बहिष्कार ही धर्म बन गया है। देशवाद का व्यापक दृष्टिकोण सिकुड कर प्रान्तवाद प्रत्युत प्रान्त मे भी विशिष्ट सम्प्रदायवाद का रूप लेकर उभर आया वोटो की राजनीति ने इन्हे अधिक शक्ति प्रदान की अत विशुद्धधर्म का केवल नाम ही शेष रह गया है, मन्तव्य, की सिद्धान्तो की सत्यता तो आचरण और व्यवहार से प्रमाणित हुआ करती है। वेद के सिद्धान्त और शिक्षाए अत्युत्तम हैं, परन्तु आचरण की दृष्टि से आज वे हमारे जीवन और व्यवहार मे कहा दिखलाई देती है।

वेद ने कहा था—

—'इन्द्र वर्धतो अप्तुर कृण्वन्तो विश्वमार्यम्—' अर्थात् ज्ञान तथा कर्म की पवित्रता का आधार लेकर ईश्वरीय महिमा को ईश्वरवाद की सच्ची आस्तिकता को अपने समान सबको समझते मानते हुए अपने पवित्र आचरण से सभी को आर्य अर्थात् श्रेष्ठ बनाओ—परन्तु क्या हमने ऐसा किया है?

वेद ने कहा —

उत देवा अविहित देवा उन्नयथा पुन।
उतागश्चक्रुष देवा देवा जीवयथा पुन॥

अर्थात् हे देवो—स्वय उठो और गिरे हुओ को ऊपर उठाओ, जो किसी कारण वश पापपक मे पड चुके है। उनको पाप के कीचड से बाहर निकालो। जो अपयश रूपी मृत्यु का शिकार हो चुके हैं, उनको धर्माचरण के पथ पर लाकर पुन: जीवन दान दो ताकि वे अपनी भूलो पर पश्चाताप कर सकें और आत्म कल्याण के मार्ग पर आरूढ़ हो सकें।

वेद का यह सन्देश— अनसुना किसने किया? वेद-वेद का शोर मचाने वालो ने। न केवल अनसुना किया, अपितु इसके सर्वथा विपरीत आचरण किया हमारे देवो ने विद्वानों ने।

इन्होने पहले विद्या का द्वार बन्द किया और जब ज्ञान के अभाव अर्थात् अज्ञान के अधेरे मे लोग भटकने लगे तब उनसे घृणा प्रारम्भ कर दी। उनके दर्शन स्पर्शन तथा उससे आहार-व्यवहार सभी को दूषित मान पाप का जनक कहना प्रारम्भ कर दिया। अर्थात् गिरे हुओ को उठाने के स्थान पर उनको स्वय गिराना —गिरे ही रहने देना और यदि कोई दूसरा उन्हे उठाना चाहे तो उसे भी उठाने न देना।

वर्णव्यवस्था कर्मानुसार

आर्य्यावर्त के वर वीर चक्रवर्ती सम्राट् कभी न बन सकते, यदि विदेश की यात्रा या समुद्र की यात्रा को पाप तथा स्वदेश से भिन्न देश वासियो के साथ खान-पान और रोटी-बेटी का सम्बन्ध अपराध और दुष्कर्म मानने वाले होते। समस्त भूमण्डल पर चक्रवर्ती साम्राज्य की स्थापना आर्यवीरो ने ही की थी यह इतिहास से सिद्ध है। ऐसी अवस्था मे यह बात बिल्कुल स्पष्ट हो जाती है कि तब तक वर्ण-व्यवस्था अपने विशुद्ध उस वैदिक स्वरूप मे प्रचलित जिसे गुण-कर्म-स्वभावानुसार कहा जाता है और उसका जन्म के के साथ कोई सम्बन्ध न था। जन्म से सभी को समान मान कर जीवन के प्रत्येक क्षेत्र मे आगे बढने का अवसर प्राप्त था न किसी से घृणा की जाती थी और न किसी की उपेक्षा। इस प्रकार न्याय तथा पक्षपात शून्य व्यवहार रूप धर्म का आचरण सभी करते थे।

जन्ममात्र को महत्व का स्थान देकर हमारे तथाकथित ब्राह्मणो ने समूची जाति की उन्नति का मार्ग अवरुद्ध कर दिया। जाति उस तालाब के समान बन गई जिसमें पानी के निकलने के तो कई मार्ग हो परन्तु आने का कोई मार्ग न हो जो भी चाहे हमारे अन्याय से, उपेक्षा से, घृणा से या अपनी अज्ञानता या स्वार्थ परता के कारण एक बार हम से अलग हुआ कि बस सदा-सदा के लिए पराया हो गया। जिनका वह कभी न था सर्वथा जिनसे अपरिचित था जिनका रहन-सहन, खान-पान, रीति-रिवाज तथा वह न जानता था। हम से पृथक् होते ही उनके रग मे रग गया और उस पर रग भी ऐसा पक्का चढ़ा कि फिर कठिनता से ही उतारा जा सका। अन्य सम्प्रदायियों का रग इतना गढा और पक्का क्यों तथा हमारा रग इतनी जल्दी उतर जाने वाला क्यों?

कोई समय था कि भारत की पवित्र धरती पर एक भी यवन या ईसाई दृष्टिगोचर न होता था। इस्लाम सन् ६१५ ई० में अमीर महलब के समय मे भारत मे आया इसके अनुयायियों ने तलवार केबल पर भारतीयों को मुसलमान बनाना प्रारम्भ किया। परिणाम यह निकला कि जब जहांगीर ने जनगणना कराई तब इस्लाम हिन्दू आबादी का छटा भाग था औरगजेब के समय पाचवा और अब देश का विभाजन करा लेने के पश्चात् एक स्वतन्त्र राष्ट्र बना लेने के बाद भी इसकी सख्या कटे-फटे भारत मे बढती ही जा रही है? क्या खूबी है इस्लाम मे और क्या कमी है आपके धर्म-सिद्धान्त मान्यताओ और पूजा पद्धति या अन्य किसी बात मैं? आखिर इन सब बातो पर आप कब विचार करेंगे और अपने गलत मार्ग का परित्याग करेंगे? क्या तब तक यह बचा खुचा देश भी आपके हाथ से जाता रहेगा?

मठ-मन्दिरो के पुजारियो-जन्मना जातिवाद को मान्यता दे कर सामाजिक सघटन को छिन्न-भिन्न करने वाले झूठे अभिमान का शिकार ब्राह्मणो, धर्म की नित नई व्यवस्था देकर सर्वसाधारण को सशयो मे डालने वाले धर्माचार्यो—कब तक यह देश-जाति-सस्कृति का विनाशक खेल आप खेलते रहोगे?

हम घट क्यो रहे है?

तुम्हारा मुहूर्त्त है तो अपनी जाति को निर्बल बनाने वाला ज्योतिष है तो जाति के विश्वास मे कमी लाने वाला-जन्मपत्र है तो अनाथो और विधवाओ की सख्या मैं वृद्धि करने वाला—तुम्हारी पाषाणपूजा है तो चेतन का अचेतन का दास बनाने वाली—तुम्हारा बहुदेवतावाद है तो एकेश्वरवाद से दूर ले जा कर छोटे-छोटे टुकडो मे विभक्त करने वाला। यज्ञ और योग तक भी तुम्हारे पति-पत्नी मे भेद रेखाए खीचना सिखाते हैं। आज के युग मे भी तुम पूज्या मातृशक्ति को उच्च-स्थान देने को तैयार नही हो? कैसे बढेगी जातीय जीवन की यह गाडी अपने निर्दिष्ट स्थान की ओर। तुम्हारे मुहूर्तो-ज्योतिष की पोथियो-जन्म पत्रियो-कुण्डलियो और रेखा चित्रो-सब के होते हुए हिन्दू ही घट क्यो रहे है? घट क्यों रहे हैं। छिन्न-भिन्न क्यों हो रहे हैं। जिन के सहारे तुम्हारी जीविका है—जीवन यापन हो रहा है यदि वे ही न रहे तो तुम्हारे मठ मन्दिर-तुम्हारी पोथियां फलित ज्योतिष की भ्रम और सशय को बढावा देने वाली किताबें किस काम आयगी? तनिक स्वार्थों से ऊपर उठ कर सोचो—अपनी ही नही जाति की भी चिन्ता करो। कभी तुम्हारे पूर्वज कहा करते थे "वय राष्ट्र जागृयाम पुरोहिता" पुरोहित का कार्य स्वयं जगना और

शेष पृष्ठ ५ पर

होली का पवित्र संदेश

नास्तिकता को दूर भगाओ : अछूतों को गले लगाओ

—चमनलाल

जहा हमारा देश धर्म प्रधान और ऋतु प्रधान है वहा यह महान् देश कृषि प्रधान भी है। यहा की ८० प्रतिशत जनता गावों तथा देहातों म रहती है जो वर्ष भर मे मुख्यत: दो फसले उगाती है—एक सावनी की दूसरी हाडी की। इनका दूसरा नाम क्रमश खरीफ (सावनी) रबी (हाडी) है। इन दो फसलो के साथ-साथ हमारे दो मुख्य राष्ट्रीय त्योहार भी आते हैं—दीवाली और होली।

दीवाली (दीपावली) का त्योहार सर्दी के आरम्भ मे सावनी की फसल के अन्न मकई, जवार, बाजरा, धान (चावल) गुड-शक्कर, मूग, मोठ, उडद, तिल, कपास (रूई) आदि के आने पर आता है, जो बडे हर्ष और उल्लास के साथ समस्त भारत मे मनाया जाता है। इस अवसर पर धान की खीलो और नई खाण्ड के बताशो से लक्ष्मी देवी की पूजा की जाती है। ठीक इसी प्रकार होली (नवशस्येष्टि) का पवित्र पर्व गर्मी के आरम्भ मे और वसन्त पञ्चमी के ठीक चालीस दिन बाद आता है। इसी समय हाडी (रबी) के अनाज गेहू, चना, जौ, मसूर, सरसो, मटर आदि के आने का समय क्या दुकानदार, क्या व्यापारी, क्या किसान, क्या उपभोक्ता, और क्या सरकार सभी वर्गों के लोग बडे प्रसन्न दीख पडते है और नई फसल की आने की खुशी मे बडे मस्त हो उठते है। क्यो न आनन्द विभोर हो क्योंकि मुख्यत भारत की जनता के जीवन के आधारभूत इसी रबी की फसल के अनाज गेहू आदि तो ही है। उपनिषद् मे आया भी है 'अन्न वै प्राण।' अर्थात् अन्न ही प्राण है।

होली का नाम 'नवशस्येष्टि' भी है। भारत की यह परम्परा रही है कि किसी के शुभ काम का श्रीगणेश करने से पूर्व यज्ञ करने का विधान था। लोग इसके द्वारा प्रभु के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते थे और सफलता की कामना भी करते थे। धर्म शास्त्रो मे आया भी है 'यज्ञेन यज्ञम यजन्ति देवा' इसीलिए आषाढ (हाडी) की फसल आने के अवसर पर यहा बडे-बडे यज्ञो का आयोजन किया जाता था। यहा कुछ ऐसी प्रथा प्रचलित थी और आज भी कुछ अशो मे दीख पडती है कि नवीन अन्न के प्राप्त होने पर आर्य लोग उस अन्न को खाने से पूर्व उसे यज्ञ के माध्यम से अग्निस्वरूप परमात्मा की आहुति दिया करते थे और यज्ञ शेष को सब मे बाटकर अन्त मे परिवार वाले और गृहपति लिया करते थे। अर्थात् उन्होने यह नियम बनाया हुआ था, कि कोई भी आदमी बिना यज्ञ के नवीन अन्न को ग्रहण न करे। हमारे धर्म ग्रन्थो मे नए अन्न से यज्ञ करने का विधान है और इस प्रकार के यज्ञ को शास्त्रो मे 'नवशस्येष्टि' यज्ञ की सज्ञा दी है। कैसा सुन्दर विधान हमारे ऋषियो ने बनाया हुआ था। गीता अध्याय ३ मे यज्ञ के सम्बन्ध मे आया भी है—

यज्ञात् भवति पर्जन्य, पर्जन्यादन्न सम्भव।

अर्थात् यज्ञ से वृष्टि होती है और वृष्टि से अन्न उत्पन्न होता है। जिससे प्राणिमात्र का जीव चलता है। यही नही, शतपथ ब्राह्मण मे यज्ञ को ही परमात्मा कहा है—"यज्ञो वै विष्णु" वास्तव मे अन्न भी तो प्रभु कृपा से ही तो उत्पन्न होता है। यदि, उसकी कृपा न हो तो अन्न परिश्रम करने पर भी अन्न का उत्पन्न होना और फिर ठीक तौर पर खेतो से घर आना कदाचित् सम्भव नही। बहुधा देखा और सुना भी जाता है कि पकी पकाई तैयार खडी फसल, जिन्हे देखकर किसान फूला नहीं समा रहा था, प्रकृति के तनिक से प्रकोप से आन की आन मे सब चौपट हो जाती है और बेचारा बेबसी की हालत मे हाथ मलता ही रह जाता है। भौतिक तौर पर इन यज्ञो का बड़ा लाभ था। इनसे सारा वातावरण शुद्ध होता था और शुद्ध सुगन्धित वायुमण्डल मे फैलकर खेतों में खड़ी अर्ध पकी फसल के विषैले कीटाणुओं के आक्रमण से बचाने मे सहायक होती थी और यही शुद्ध रोग रहित अन्न प्रजा जनो के खाने योग्य होकर बड़ा बलवर्धक तथा पौष्टिक होता था। इससे सब के शरीर नीरोग और हृष्ट-पुष्ट होते थे इसी नीरोग शरीर के लिए लोग भगवान से प्रार्थना किया करते थे—"शरीर मे विचर्षणम्" क्योकि शरीर ही सब प्रकार के धर्म तथा लोकहित के कारणो की सिद्धि का साधन होता है—शरीरमाद्यम् खलु धर्मसाधनम् इस त्योहार (नवशस्येष्टियज्ञ) का प्रचलित प्रसिद्ध नाम 'होली' है। हमारे प्रधान धर्म ग्रन्थों मे लिखा है कि इस अर्ध परिपक्व अन्न को जब घासफूस की अग्नि मे भूना जाता है, तो सस्कृत भाषा मे इस अर्ध भूने चने को होली कहते है, और यही शब्द कालान्तर मे 'होलिका' हो गया, और जो बिगडकर अब 'होली' हो गया। और आज भी यह अर्ध पकी चने गेहूं की बाले व टहनियों की होली की अग्नि मे भूनने की पूजा ज्यो की त्यों प्रचलित है। इसका होली नाम पडने की एक प्राचीन मनोरजक पौराणिक आख्यायिका भी इस प्रकार है। श्रीमद् भागवत मे आता है कि हिरणकश्यप नाम का एक बड़ा नास्तिक, अत्याचारी, बडा अभिमानी और अन्यायी राजा था। उसने अपनी पूजा को ईश्वर के स्थान पर अपना नाम जपने पर बडे अन्याय पूर्ण ढग से त्रस्तकर रखा था। दूसरी तरफ उसका पुत्र प्रह्लाद ईश्वर भक्त, सदाचारी आस्तिक विचारो वाला था, जो अपने पिता की अन्यायपूर्ण नीतियो का बडा विरोध करता था। इस कारण राजा बड़ा दुखी था और उससे छुटकारा पाना चाहता था। अत यह सभी भली भाति जानते है कि किस प्रकार राजा ने अपनी बहन 'होलिका' की सहायता से प्रह्लाद को समाप्त करना चाहा था, परन्तु हुआ कुछ उलट ही यानी इस योजना मे होलिका स्वय भस्मीभूत हो गई और भक्त बालक प्रह्लाद सही-सलामत अग्नि मे से जीवित बच निकला। प्रभु की लीला बड़ी विचित्र है। इसीलिए किसी ने ठीक ही कहा है—

जा को राखे साइंया मार न सके कोय।
बाल न बाका कर सके जो जग वैरी होय॥

उस दिन इस त्योहार का नाम भी होली' पड गया, कहा जाता है। यह एक अलकारिक गाथा है। इसका अभिप्राय यह है कि माया म ग्रस्तव्यक्ति को 'हिरण्यकश्यप' कहते है। प्रह्लाद दुष्ट राजा से सताए जाने पर भी अपने आस्तिकता के मार्ग से जरा भी च्युत नही हुआ। अत यह त्योहार आस्तिकता की नास्तिकता पर विजय का प्रतीक है। पौराणिक धर्म ग्रन्थो मे ऐसा भी पाठ आया है कि इस होली के दिन सवर्णों और शूद्रो मे किसी प्रकार भी भेदभाव नही रहता। एक बडे कुल का ब्राह्मण भी नीच से नीच शूद्र जात के लोगो के साथ मिलकर खाने मे किसी तरह का पाप नही समझता अत यह त्योहार अछूतो को गले लगाने का भी सदेश देता है। सम्भवत होली दहन के दूसरे दिन जो मगल मिलन के रूप मे एक दूसरे से लोग सभी भेदभाव भुलाकर गले मिलते है, और गुलाल से एक-दूसरे का स्वागत करते है इसी भावना का प्रतीक हो।

हमारा देश एक सभ्य व स्वतन्त्र राष्ट्र है और इसके त्योहार इसकी प्राचीन सभ्यता तथा सस्कृति के द्योतक है। आज देश मे भोगवाद, नास्तिकता और भ्रष्टाचार का बोलबाला है। जीवन के किसी भी क्षेत्र मे नैतिकता और सदाचार दिखाई नही देते। राजनीतिक क्षेत्र मे तो यह अनैतिकता और भ्रष्टाचार बडे जोरो से पनप रहा है, नाना प्रकार की सामाजिक कुरीतियो ने दहेज, बालविवाह अनेक देवताओ की पूजा, रूढिवाद और जात-पात की दीवारो ने देश की जडो को खोखलाकर रखा है। छुआछूत के रोग ने तो आज देश और राष्ट्र को शक्तिहीन बना दिया है।

अत ऐसे दूषित वातावरण मे इस पवित्र त्योहार 'होली' का यही महान सदेश है कि हम सब देशवासी मिलकर छुआछूत के भूत को दूर भगाये और सब एक ईश्वर विश्वासी बनकर मतमतान्तरो की फूट की बना दीवारो क्या तोड डाला।

आखिर ऐसा क्यों ?

पृष्ट ४ का शेषाश

समूचे राष्ट्रवासियो को जगाये रखना है अर्थात् कर्तव्य पथ पर आरूढ रखना है। आन्तरिक और बाह्य शत्रुओ से बाधाओं से राष्ट्र को बचाना और सदा ज्ञान का प्रसाद बाटते रहना ही तो सच्चे पुरोहित का काम है।

'न वे देवा स्वपन्ति' देव सोते नही है। और ऐसे देव जो सदा जागरूक रहते हैं अर्थात् सत्यासत्य का विवेक करने वाले होते है वे "इच्छन्ति देवा सुन्वन्त न स्वप्नाय स्पृहयन्ति' 'सोने वालो को आलसी प्रमादी और अविवेकियों को पसद नही करते। जब तक कि उनके ये दुर्गुण दूर न हो जाए। देव गण सच्चे पुरोहित विद्वान् ब्राह्मण उन्हे जगाते ही रहते है। जब तक इस देश मे इस प्रकार के वेद वेत्ता निष्काम ज्ञानी परोपकारी स्वार्थ रहित महात्मा विद्यमान रहे और राष्ट्र का पथप्रदर्शन करते रहे, राष्ट्र ससार का शिरमौर तथा मुकुटमणि बना रहा। इन निःस्वार्थी विद्वानो के कारण ही राष्ट्र मे [illegible] उत्पन्न होता था। वेद भगवान् का स्पष्ट उपदेश हैं।

आज यदि राष्ट्र सुपथ को छोड कुपथ गामी बनता नजर आता है तो इसका मुख्य कारण सच्चे ब्राह्मणो का अभाव तथा जन्माभिमानी ब्राह्मणो की भरमार ही है। जब तक यह झूठा जन्माभिमान बना रहेगा, जातीय जीवन को ऊचा न उठाया जा सकेगा।

× × ×

आर्य जगत् समाचार

राष्ट्रोंत्थान के लिए आर्यवीर आगे बढें।

चरित्र निर्माण से ही देशोत्थान सम्भव,
पश्चिमी उत्तर प्रदेश आर्य वीर दल की सफल सगोष्ठी।

पश्चिमी उत्तर प्रदेश आर्य वीर दल के विभिन्न जिलों से आए युवक प्रतिनिधियो की एक सगोष्ठी सार्वदेशिक आर्य वीर दल के प्रधान सचालकश्री प० बाल दिवाकर हस की प्रधानता मे हुई। इस सगोष्ठी मे मुजफ्फरनगर, मुरादाबाद, बरेली, रामपुर, शाहजहापुर, महारनपुर, हमीरपुर, कानपुर, मैनपुरी, फतेहपुर आदि जिलो से आर्य वीर दल के प्रशिक्षित आर्यवीर प्रतिनिधि उपस्थित हुए।

ओ३म् ध्वज फहराते हुए श्री बाल दिवाकर जी हस ने कहा यह ओमांकित अरुण ध्वज, साहचर्य, त्याग, तप और बलिदान के मार्ग का अनुसरण कर आत्मवत सर्व भूतेपु के अनुसार प्राणिमात्र का हितचिन्तन करना परम धर्म समझता है।

हम भलाई के मार्ग पर अग्रसर होकर पीछे कदम नही हटा सकते। हमारा मार्ग राष्ट्रोत्थान से प्रारम्भ होकर विश्व कल्याण पर विराम लेता है।

आज हमारे देश पर पाश्चात्य सभ्यता का प्रभाव बढ रहा है जाने-अनजाने हम भौतिक उपलब्धियो के व्यामोह मे अपने नैतिक मूल्यो को तिलाजलि देते जा रहे हैं। स्व के चरित्र को निखारने के स्थान पर हम दूसरो पर कीचड़ उछालने मे ही अपनी कार्य कुशलता समझते हैं। ऐसे समय आर्य वीर आगे आए पहिले जीवन का निर्माण सुघड विनय द्वारा करे। तत्पाश्चात समाज के प्रत्येक अग का जो दूषित हो गये है परिशोधन करे।

उन्होने जन्म जाति, दहेज अस्पृष्यता असदाचरण की कडी भर्त्सना करते हुए कहा जो लोग स्वेच्छाचारिता के शिकार हो चुके है उन्हें स्वकर्तव्य शुद्धता का पाठ पढ़ाना होगा। आप लोग समाज से शराब, बीड़ी, सिगरेट, जुआ और इसी प्रकार को अनेक बुराइयो को निकालने के लिए आगे बढे और एक सुन्दर समाज व्यवस्था को अगीकृत कराऐ।

सगोष्ठी मे पश्चिमी उत्तर प्रदेश मे आर्य वीर दल साधना मन्दिर व्यायाम शालाओ का जिला स्तर पर निर्माण करने का महत्व पूर्ण निर्णय किया गया। विभिन्न जिलो के प्रतिनिधियो ने पश्चिमी उत्तर प्रदेश के कार्यालय के सचालनार्थ ११,०००/- (ग्यारह हजार) रुपये एक मास मे भेज देने की घोषणा की।

आगामी उत्तर प्रदेश आर्य वीर दल का सम्मेलन मुजफ्फरनगर मे आयोजित किया जाएगा। इसके लिए वहा आए प्रतिनिधियो ने विधिवत् आमन्त्रण दिया है जिसे सर्व सम्मति से स्वीकार कर लिया गया।

पण्डित राकेश रानी के विरुद्ध नया मामला दर्ज

हवालात में घड़ी और चश्मा ले लिए गए

नई दिल्ली। ज्ञात हुआ है कि दिल्ली प्रशासन की अपराध शाखा ने दयानन्द सस्थान की अध्यक्षा पण्डिता राकेश रानी के विरुद्ध धारा २९५ ए के अन्तर्गत एक नया मामला दायर किया है। इससे पूर्व उनके विरुद्ध दो और मामले पहले ही दर्ज किए गए थे। यह भी ज्ञात हुआ है कि २१ फरवरी की रात्रि को पुलिस पण्डिता राकेशरानी को गिरफ्तार कर हवालत मे बन्द करने ले गई थी, तब उसने उनकी घडी और चश्मा भी ले लिए।

आर्यसमाज दीवाना हाल मे हिन्दु रक्षा समिति के कार्यकर्त्ताओ की एक सभा स्वामी विद्यानन्द सरस्वती की अध्यक्षता मे हुई। सभा स्वामी विद्यानन्द सरस्वती, समिति के अध्यक्ष महात्मा वेदभिक्षु, श्री क्षेमचन्द सुमन, ठाकुर ओंकारसिंह, श्यामसुन्दर सेठ, डा० परसराम छिब्बर, एडवोकेट श्री देवकी नन्दन शर्मा आदि ने अपने विचार प्रकट किए।

वक्ताओ ने कहा कि 'इस्लाम मे क्या है ?' पुस्तिका मे कोई गलत बात नही लिखी गई। इस सन्दर्भ मे स्वामी विवेकानन्द और जाज बर्नाड शा जैसे बुद्धिजीवियों के उदाहरण पढकर सुनाए गए। जिसमे उन्होने घोषित किया है—'इस्लाम से अधिक असहिष्णु मजहब कोई नही, और इस्लाम की शिक्षा यह है कि जो हजरत मुहम्मद साहब पर ईमान न लाए, उसे जमीदोज कर दो।'

वक्ताओ ने यह बात भी नोट की कि यह साग जहर बम्बई के उर्दू साप्ताहिक 'ब्लिट्ज' ने फैलाया, जिसने अपने गोरखपुर सम्वाददाता ने 'अकलियत को लहू-लहू करने वाले फिर्कापरस्तो के ये बिताबचे' शीर्षक से एक फीचर प्रकाशित किया था।

आर्यसमाज अजमेर ने एक प्रस्ताव द्वारा श्रीमती राकेश रानी की गिरफ्तारी पर रोष प्रकट किया है।

स्थान-स्थान पर बोधोत्सव

अजमेर मे ऋषि बोध-दिवस

प्रति वर्ष की भाति इस बार भी आर्य समाज अजमेर के तत्वावधान मे सोमवार दिनाक २२ फरवरी १९८२ ई० को ऋषि बोध दिवस श्री दिनेश सिंह जी प्राचार्य दयानन्द कालेज, अजमेर की अध्यक्षता में बडे हर्षोल्लास पूर्वक मनाया गया।

इस पुनीत अवसर पर श्री० प्रो० धर्मवीर जी, श्री श्याम सुन्दर जी स्नातक दिल्ली तथा श्री दत्तात्रेय जी वाब्ले प्रधान आर्य समाज अजमेर आदि ने स्वराज्य के प्रथम स्वप्नद्रष्टा ऋषि दयानन्द के महान कार्यों एव मन्तव्यो पर विस्तार से प्रकाश डाला।

अश्लील फिल्मों का प्रदर्शन रुके

आर्य समाज खडवा जि० पूर्व निमाड (म० प्र०) ने सर्व सम्मति से भारत सरकार से यह अनुरोध किया कि वह देश मे अश्लील फिल्मो का प्रदर्शन तुरन्त बन्द कराऐ, क्योकि इन प्रदर्शनो से देश के पौरुष, उत्साह, साहस मे अभाव आ रहा है। और बलात्कार एव हत्याकांड बढ रहे हैं। साथ ही देश मे गोवध अविलम्ब बन्द कराए।

बोधोत्सव

आर्य समाज साबुन बाजार लुधियाना में भी ऋषि बोधोत्सव बड़ी धूमधाम से मानाया गया। इस अवसर पर भी श्री राजाराम जी की अध्यक्षता में श्री ओमपाल शास्त्री, प० वेद प्रकाश शास्त्री, डा० बालकृष्ण, डा० नांगिया आदि ने महर्षि के उपदेशो और जीवन का अनुकरण करने का अनुरोध किया।

आर्य गर्ल्स हायर सैकेन्डरी स्कूल की छात्राओं और आर्य हायर सेकेन्डरी स्कूल के छात्रो ने देश की एकता एवं शिवरात्रि के सम्बन्ध मे गीत गये।

"पौराणिक अंधश्रद्धा का भयंकर पाखंड"

जूनागढ मे कशोद तालुका के एक ग्राम मे एक नव युवक नेपितृतर्पणार्थ अपने नौ मास के बालक को इस तरह जमीन परपाटका, जैसे नारियल पटकते हैं। इसके फलस्वरूप बालक की खोपडी फट गई व उसकी मृत्यु हो गई। युवक ने यह कार्रवाई ग्राम के पण्डो की सलाह पर अपने पिता की आत्मा को शान्ति प्राप्त करने की इच्छा से की।"

विश्व शान्ति महायज्ञ

आर्यसमाज खंडवा जि० पूर्व निमाड (म० प्र०) की ओर से दि० ६-८२ से ८-२-८२ तक श्री बाबा बुखार दास मेला सिगाजी मे श्री बाबा बिहारी दास जी के सलकन पुर के प्रयत्नो एव रबिदास समाज के सहयोग से विश्व शान्ति महायज्ञ श्री प० अमृत लाल जी शर्मा व्यवस्थापक गुरुकुल- होशागाबाद प० सुखराम जी आर्य सिद्धान्त शास्त्री पुरोहित आ० स० खडवा द्वारा सम्पन्न हुआ। प्रति दिन नियमित ९ से १२ तक यज्ञ प्रार्थना वेद प्रवचन रात्रि ८ से ११ तक ईश्वर भक्ति, मानव धर्म, यज्ञ से ही मानव कल्याण एवं विश्व शान्ति प्राप्त हो सकती है आदि विषयो पर भाषण हुए।

आर्य वीरदल खडवा के हरीश कुमार खरे, बल्लभ दास गगराडे, मुकेश कुमार बोरनारे, मुलम्मिल कुरैशी, एव श्री मांगी लाल जी आर्य आदि का पूर्ण सहयोग सराहनीय रहा। यज्ञ सम्पूर्ण व्यवस्था, श्री बाबा बिहारी दास जी एव श्री हजारीलाल जी उप सरपच बोरखेड़ा ने की।



रविवार १४-२-८२ को मगोलपुरी मे आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली की मासिक बैठक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कोषाध्यक्ष श्री सोमनाथ एडवोकेट सम्बोधित करते हुए।

आर्यसमाजों के सत्संग

१४ मार्च १९८२

अन्धा मुगल-प्रतापनगर—प० प्राणनाथ सिद्धान्तालकार, अमर कालोनी—प० देवेश, अशोक विहार के-सी-५२-ए—आचार्य दीनानाथ सिद्धान्तालकार, आर्यपुरा—प० सीसराम भजनोपदेशक, आर के पुरम सेक्टर न० ५ स्वामी स्वरूपानन्द भजनोपेदशक; आर के पुरम सेक्टर न० ६—प० दिनेशचन्द्र पराशर शास्त्री, कालकाजी—प० ओमवीर शास्त्री, करौल बाग—प० प्रकाशचन्द्र शास्त्री; कृष्णनगर—डा० रघुनन्दन सिह, गाधी नगर—आचाय दिवाकर शर्मा, गीताकालोनी—प० आमप्रकाश गायक, ग्रेटर कैलाश-२—प० सत्यपाल मधुर भजनोपदेशक; गुड़मण्डी—प० कामेस्वर शास्त्री; १५१-गुप्ता कालोनी—प० भगवानसहाय, गोविन्दभवन—दयानन्दवाटिका—प० रामरूप शर्मा, जगपुरा-भोगल—प० प्रकाश वीर 'व्याकुल'. चूना मण्डी पहाड़ गज—प० खुशी राम शर्मा, जनकपुरी सी-३—स्वामी प्रेमानन्द; तिलकनगर—प० रघुराज शास्त्री, तिमारपुर—श्री चमन लाल, दरिया गज—श्रीमती लीलावती, नारायण विहार—प० छविकृष्ण शास्त्री, नया बास—प० हीराप्रसाद शास्त्री, न्यू मुलतान नगर—प० उदयपाल शास्त्री, निर्माण विहार—प०हरिदत्त शास्त्री, पजाबी बाग—प० अशोककुमार विद्यालकार, पजाबी बाग एक्सटेन्शन १४/३—डा० रघुवीर वेदालकार, बाग कडे खा—प० बरकतराम भजनोपदेशक मॉडल बस्ती—ला० लखमीदास; मॉडल टाऊन—स्वामी प्रज्ञानन्द, महावीरनगर—प० विश्वप्रकाश शास्त्री, महरौली—प० मुनि शकर वानप्रस्थ; रघुवीरनगर—प० भानुप्रकाश शास्त्री, रमेश नगर—आचार्य हरिदेव सि० भू०, १६८ राजा गार्डन—ड० सुखदयाल भूटानी, राणा प्रताप बाग—ब० कृष्णदत्त; लडडू घाटी पहाड़ गज—प० छज्जूरामशास्त्री, लाजपत नगर प० प्रकाशचन्द वेदालकार; लक्ष्मी बाई नगर ई १२०८—प०तुलसीराम भजनोपदेशक, लेखराम नगर त्रिनगर—प० देवराज वैदिक मिचूनरी; लारेंस रोड—प० सुधाकर स्नातक, लाधी रोड जोर बाग—प्रो० सत्यपाल वेदार, विक्रम नगर—श्री महावीर बत्रा, विनय नगर—प० मनोहर लाल ऋषि भजनोपदेशक; सदर बाजार पहाडी-धीरज—डा० जय नारायण वर्मा सन्तोषी, सुदर्शन पार्क—प्रो० [illegible]मित्र शास्त्री, सफदर जग इन्क्लेव—प० वेदपाल शास्त्री, सोहन गज—श्री मोहनलाल गाधी, सराय रोहेला—प०राम निवास, शादीपुर—श्रीमती प्रकाशवती शास्त्री, हनुमानरोड—प० जयभगवान भजन मण्डली, हौजखास—प्रा० वीरपाल विद्यालकार, शालीमार बाग—प० रविदत्त गौतम।

—ज्ञानचन्द्र डोगरा, वेद प्रचार विभाग

फार्म ४

१. प्रकाशन स्थान	नई दिल्ली
२. प्रकाशन विधि	साप्ताहिक
३ मुद्रक का नाम,	सरदारीलाल वर्मा
(क्या भारत का नागरिक है ?)	भारतीय
पता	दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५-हनुमान रोड, नई दिल्ली
प्रकाशक का नाम	सरदारी लाल वर्मा
(क्या भारत का नागरिक है ?)	भारतीय
पता	१५, हनुमान रोड, नई दिल्ली
५ सम्पादक का नाम	नरेन्द्र विद्यावाचस्पति
(क्या भारत का नागरिक है ?)	भारतीय
पता	दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली
६. उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार-पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हो।	

मैं सरदारीलाल वर्मा एतद द्वारा घोषित करता हू कि मेरी अधिकतम जानकारी एव विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

प्रकाशक के हस्ताक्षर
(सरदारीलाल वर्मा)

दिनांक १ मार्च, १९८२

आर्यसमाज बांदीकुई का वार्षिक निर्वाचन—

प्रधान—श्री प्रीतम सिह जी, उप प्रधान—श्री सत्यपाल आर्य, मन्त्री—श्री महाराज सिह, उपमन्त्री—श्री जयदेव अनल, कोषाध्यक्ष—श्री गुलाब चन्द गुप्त।

नीदरलैण्ड के ईसाई चिकित्सक वैदिक धर्म में

नीदरलैण्ड (हालैण्ड) के सुयोग्य ईसाई चिकित्सक श्री पी० नाइकीन्स ने वैदिक धर्म की श्रेष्ठता स्वीकार करते हुए आर्यसमाज हनुमान रोड मे समाज के लब्धप्रतिष्ठ पुरोहित प० रूप किशोर शास्त्री के पौरोहित्य म वैदिक धर्म मे प्रवेश कर श्री प्रकाश आर्य नाम अगीकार किया।

उल्लेखनीय है कि आर्यसमाज हनुमान रोड मे प० रूपकिशोर शास्त्री लगभग १०० ईसाइयो और मुसलमानो का शुद्धि करा चुके है।



श्री पी० नाइकिन्स

आर्यसमाज गांधी नगर में यज्ञ एवं वेदप्रवचन

सोमवार १५ मार्च से, सोमवार २२ मार्च तक आर्यसमाज गाधी नगर, दिल्ली ३१ के तत्वाधान मे यज्ञ एव वेद प्रवचन का कार्यक्रम रखा गया है। प्रतिदिन रात्रि को ८ बजे से ९ बजे तक प० सत्यपाल मधुर का मधुर सगीत होगा और रात्रि को ९ से १० तक नजीबाबाद के स्वामी वेद मुनि जी परिव्राजक का वेद प्रवचन होगा। कार्यक्रम के स्थान इस प्रकार है १६ मार्च श्री जयप्रकाश आर्य डी०ए०वी०मार्ग, १७मार्च श्री सत्यपाल भाटिया गुरुनानक गली, १८ मार्च श्री खुशीराम सेठी मल्होत्रा गली (महावीर चौक), १९ मार्च श्री सत्य बन्धु आर्य गुरुनानक गली २० मार्च श्री श्यामसुन्द बरमानी १७३७ राजगढ गली ७०, २१ मार्च सुन्दर दास मनचन्दा प्रेम गली पुरान डाक खाने २२ मार्च सुबह ८ से १२ मदान एण्ड सन्स, ५६½ पटपड गज रोड, झील कुरजा

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रकाशन

सत्यार्थप्रकाश सन्देश (हिन्दी)	१००
" " (अंग्रेजी)	समाप्त
आर्य सन्देश-महासम्मेलन विशेषांक	६.००
पादरी भाग गया—ओम्प्रकाश त्यागी	० ३०
स्वामी श्रद्धानन्द-बलिदान अर्द्ध शताब्दी स्मारिका	६.००
सत्यार्थप्रकाश शताब्दी समारोह स्मारिका	६.००

सम्पर्क करें—
अधिष्ठाता प्रकाशन विभाग
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा,
१५, हनुमान रोड,
नई दिल्ली-११०००१

卐 'आर्यसन्देश' के स्वय ग्राहक बनें—दूसरों को बनाए
卐 आर्यसमाज के सदस्य स्वयं बनें—दूसरों को बनाइए
卐 हिन्दी-सस्कृत भाषा स्वय पढ़ दूसरो को भी पढाइए—

रजि० डी (सी) ७६५

दिल्ली आर्यप्रतिनिधि सभा के लिए श्री सरदारी लाल वर्मा द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा भाटिया प्रेस २५७४, रघुबरपुरा नं० २ गांधीनगर दिल्ली-३१ में मुद्रित । कार्यालय १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली फोन ३१०१५०

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक मुखपत्र

एक प्रति ३५ पैसे वार्षिक १५ रुपए वर्ष ६ अंक २१ रविवार ८ चैत्र वि० २०३८ २१ मार्च १९८२ दयानन्दाब्द १५७

धर्मरक्षा अभियान वस्तुतः भारत की रक्षा का अभियान

वैदिक धर्म ही सच्चा मानव-धर्म : उसे किसी से असहिष्णुता नहीं-अन्य धर्मों के दार्शनिक सिद्धान्त तर्क की कसौटी पर खरे नही : दीवान हाल में इस्लाम धर्म छोड़कर वैदिक धर्म स्वीकार करने वाले तीन विद्वानों का सार्वजनिक स्वागत

दिल्ली । आर्यसमाज दीवान हाल के ९७वें वार्षिकोत्सव के अवसर पर रविवार १४ मार्च के तीन ऐसे विद्वानों के भाषण हुए, जिन्होंने हाल मे इस्लाम धर्म छोड़कर वैदिक धर्म ग्रहण किया है। इन तीनों ही विद्वानो ने अपने भाषणों मे स्वीकार किया कि वैदिक धर्म की आध्यात्मिकता तथा प्राणिमात्र को मित्र एवं सम्पूर्ण वसुधा-पृथ्वी को अपना परिवार समझने की उदात्त भावना ने ही उन्हें वैदिक आर्य धर्म स्वीकृत करने की प्रेरणा दी।' इस अवसर पर आर्य संस्थाओं एवं आर्य नेताओं ने इन तीनों विद्वानों का सार्वजनिक स्वागत किया।

बम्बई के आचार्य मित्र जीवन का जन्म एक ईसाई परिवार में हुआ था। बाद में वह मुसलमान बन गए थे। इस्लाम के भारत विरोध के कारण वह हिन्दू धर्म के प्रति आकृष्ट हुए, आचार्य मित्र जीवन (भूतपूर्व डा० नसरुद्दीन कमाल) ने कहा—ये विदेशी धर्मावलम्बी भारत के सच्चे मीत नहीं हैं। उन्हें भारत के वर्तमान उत्कर्ष से प्रीति नहीं। वैदिक हिन्दू धर्म की सबसे बडी विशेषता है कि उसमें किसके प्रति असहिष्णुता नहीं है, जबकि अन्य धर्म वाले तरह-तरह के प्रलोभनों से हिन्दू धर्म के पिछडे वर्गों को अपने मे शामिल करने की कोशिश करते हैं। अन्यथा उन धर्मों के दार्शनिक सिद्धान्त तर्क की कसौटी पर खरे नही ठहरते।

इस अवसर पर बेतिया के भूतपूर्व इमाम (अजीज आलम) वर्त्तमान प० जयप्रकाश आर्य ने भी देश की जनता को चेतावनी दी कि यदि आर्यसमाज के उद्बोधन से देश और जनता नहीं जागी तो ४० वर्षों मे देशका नक्शा बदल सकता है, हमे भूलना न होगा कि पिछले १३०० वर्षो मे इस्लाम भारतीय उप-महाद्वीप मे शून्य से प्रारम्भ होकर प्रारम्भिक वर्षों के २ प्र० श० से ४० प्र० श० हो गया है।

इस अवसर पर श्री अमरेश आर्य (भू० पू० डा० अमीर मोहम्मद) ने भी आर्य हिन्दू धर्म के उदात्त दार्शनिक सिद्धान्तों की सराहना की।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल वानप्रस्थ (शालवाले) ने विदेशी शक्तियों द्वारा प्रलोभन द्वारा किए जा रहे सामूहिक धर्मपरिवर्तन के विरुद्ध सार्वदेशिक सभा द्वारा प्रचलित धर्मरक्षा-महाभियान आन्दोलन की समीक्षा करते हुए घोषित किया कि भारतीय संविधान के अनुसार जनता को अपने धार्मिक मन्तव्यो को मानने एव उसके प्रचार-प्रसार की छूट है, परन्तु किसी को भी प्रलोभन या धोखे द्वारा किसी के धर्म-परिवर्तन को छूट नही दी जा सकती। वस्तुतः आर्यसमाज द्वारा किया धर्मरक्षा अभियान देश-रक्षा अभियान है। धर्मरक्षा अभियान सम्मेलन की अध्यक्षता सार्वदेशिक सभा के कोषाध्यक्ष श्री सोमनाथ एडवोकेट ने की। इस सम्मेलन मे हैदराबाद के आर्य नेता श्री वन्देमातरम् तथा हरिजन नेता श्री चिन्तामणि ने वैदिक धर्म की सच्चाई और पूर्णता पर प्रकाश डाला।

आर्य महासम्मेलन व गोमेध यज्ञ

शुक्रवार २६ मार्च को मध्याह्न में शोभायात्रा

श्री विद्याप्रकाश सेठी स्वागताध्यक्ष चुने गए तथा जलूस में स्कूलों आदि के लिए श्री विश्वम्भर नाथ भाटिया दयानन्द मोडल स्कूल विवेक विहार नियुक्त

२६, २७, २८ मार्च ८२ को रामलीला मैदान भोलानाथनगर शाहदरा में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एव शाहदरा क्षेत्रीय आर्य प्रतिनिधि उपसभा द्वारा आर्य महासम्मेलन का भव्य आयोजन किया गया है। इस अवसर पर शुक्रवार २६ मार्च को दोपहर २ बजे से एक विशाल शोभायात्रा का भी आयोजन है जो आर्यसमाज गीता कालोनी से प्रारम्भ होगी। दिल्ली के सभी आर्य बहिन-भाइयों से इस कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए पूर्ण सहयोग की अपेक्षा करती है। शोभा यात्रा मे सभी आर्यसमाजें अपनी विशेष बसों द्वारा सम्मिलित होकर आर्यसमाज की सगठित शक्ति का परिचय दें।

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय का दीक्षान्त समारोह एवं वार्षिकोत्सव

१०, ११, १२, १३ अप्रैल शनिवार से मंगलवार तक धार्मिक मेला

श्री बलराम झाखड़ अध्यक्ष लोकसभा दीक्षान्त भाषण देगे। दिल्ली से १० अप्रैल को विशेष बसों द्वारा भाग लेने का आयोजन। सभा कार्यालय से सम्पर्क करे।

ग्राम तुगलकाबाद में वेदधर्म प्रचार

आर्यसमाज हनुमान रोड नई दिल्ली की ओर से रविवार १४ मार्च के दिन तुगलकाबाद में वैदिक धर्म का प्रचार किया गया। सभा की ओर से स्वामी स्वरूपानन्द जी ने अपनी मण्डली सहित वेदधर्म का प्रचार किया। इस अवसर पर निकटस्थ गोविन्दपुरी और डी० डी० ए० कालोनियों के अधिकारी, दिल्ली प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सरदारीलाल वर्मा तथा आर्यसमाज हनुमान रोड के प्रधान श्री राममूर्ति कैला आर्यसमाज हनुमान रोड के सदस्यो और सदस्याओ के साथ विशेष बस मे पधारे थे। प्रचारक कार्य के बाद मान्य प्रधान श्री राममूर्ति कैला की ओर से प्रीतिभोज की व्यवस्था गई थी।

सम्पादक—नरेन्द्र विद्यावाचस्पति

व्यवस्थापक—प्रद्युम्नलाल तलवाड़

वेद-मनन

अहंकार शमन तथा निराशा दमन का उपाय : कृतज्ञताज्ञापन

—मनोहर विद्यालंकार

यस्मादृते न सिध्यति यज्ञोविपश्चितश्च न स धीना योगमिन्वति ।।

ऋक् १-१८-७

ऋषि—मेघातिथि काण्व । देवता—सदसस्पति । छन्द—गायत्री ।

शब्दार्थ—(यस्माद् ऋते) जिस घट-घट व्यापी सदसस्पति की इच्छा के बिना (विपश्चित चन) धीर और मनीषी का भी (यज्ञ:) दिव्य, श्रेष्ठ तथा परार्थ कर्म (न सिध्यति) सफल नही होता। (स) वह सर्वसमर्थ ईश्वर ही (धीना योगम्) बुद्धियो तथा कर्मों के सामञ्जस्य को (इन्वति) व्याप्त किए हुए है, और उन्हे सयुक्त करता है।

निष्कर्ष—परमेश्वर की इच्छा के बिना उत्तम कार्य (यज्ञ) भी सफल नही होता, क्योकि उसकी इच्छा सदा न्याय-पूर्ण, कर्मानुसार तथा सबके कार्य करने से पहले परमेश्वर की स्तुति करनी उचित है। और कार्य सम्पन्न होने के बाद सफलता को उसकी कृपा मानकर धन्यवाद करना कृतज्ञता की अभिव्यक्ति मात्र है।

इस प्रकार मनुष्य अहकार से जितना दूर रहेगा, सफलता उतनी ही समीप आएगी और निराशा कभी पास न फटकेगी।

मनुष्य के सस्कार, बुद्धि और चरित्र कर्मानुसार बनते है और वह अपने सस्कार और बुद्धि के अनुसार कर्म करता है। यह बुद्धि और कर्म की समस्वरता परमेश्वर की व्यवस्था के अनुसार स्वय होती रहती है। जब तक यह समस्वरता न हो जाए कोई कार्य सिद्ध नही होता।

कार्यसिद्धि उसकी व्यवस्था और कृपा से होती है और असफलता का कारण हमारे उद्देश्य, साधन, नीयत, या प्रयत्न की कमी होता है। इसलिए असफलता से हताश नही हो जाना चाहिए।

विशेष—बुद्धिपूर्वक गति करने वाले मेधातिथि, तथा एकदम छलागें मार कर पग-पग बढने वाले कण्वके वशानुगत गुण मे निपुणता प्राप्त करने वाले काण्व के गुणो को अपने आचरण द्वारा अनुकरण करने वाला स्वय मेधातिथि काण्व बनता है। इस साधना को बढाते-बढाते वह फिर सदसस्पति के समान या उसका सखा बनता है और अन्त मे इस देवपद को प्राप्त कर लेता है।

इस मन्त्र के छन्द गायत्री का शब्दार्थ 'गायत त्रायन्ते' भी कृतज्ञता प्रकाशन के महत्व को प्रदर्शित करता है। कृतज्ञता ज्ञापन मनुष्य मे अहकार और अभिमान को नही पनपने देता।

अर्थपोषक प्रमाण—इन्वति गति-कर्मसु। नि० २-१४ इन्वति व्याप्ति कर्मसु। नि० २-१८।

मेधातिथि—मेधया—अतति (अत सातत्यगमने) मेधा + अतिथि।

काण्व—कण + अपत्य प्रत्यय, कण गतौ, तथा अल्प का सूचक।

सदसस्पति—ईश्वर, राजा, न्यायकर्ता। स्वामी दयानन्द।

५२२, ईश्वर भवन, खारी बावडी, दिल्ली-११०००६

बोध-कथा

इन्सानियत का तकाजा

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र आधुनिक हिन्दी के निर्माताओ मे गिने जाते है। उनका सम्बन्ध बनारस के एक समृद्ध परिवार से था, परन्तु वह अपनी दानशीलता के कारण परिस्थितियोवश एक समय सर्वथा धनहीन हो गए। उनकी स्थिति ऐसी हो गई कि मित्रो तथा डाक मे आई चिट्ठियो का जवाब देने के लिए भेजे जाने वाले लिफाफों और पत्रो पर लगाने के लिए पैसे भी नही रह गए। वह डाक मे आई चिट्ठियो का उत्तर लिखकर सादे लिफाफों मे रखते जा रहे थे और उन पर पते लिख कर एक ढेर मे रखते जाते थे। एक दिन उनसे मिलने के लिए एक मित्र आए। उन्होने मेज पर भारतेन्दु के नाम आई चिट्ठिया तथा दूसरी ओर पते लिखे सादे लिफाफो मे उनके उत्तर देखे। वह सारी परिस्थिति भाप गए। उन्होने नौकर को पाच रुपए देकर उसके डाक टिकट मगवाकर उन लिफाफो पर टिकट लगवाकर उन्हे डाक मे डलवा दिया।

इस घटना के बाद जब भी उक्त मित्र भारतेन्दु से मिलने आते, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र उनकी जेब मे पाच रुपए का एक नोट जबर्दस्ती डाल देते थे। उस पर इस मित्र ने उन्हे उलाहना देते हुए कहा कि 'इसका अर्थ यह हुआ कि मैं तुमसे मिलने न आया करू।

'तुमने ऐसे सकट के समय मुझे वे ५ रुपए दिए थे कि मैं उसका बदला नही चुका सकता। मैं हर रोज भी पांच रुपए तुम्हे लौटाऊ, तब भी इन्सानियत का यही तकाजा होगा कि वह कहेगी कि तुम्हारे पर तुम्हारे मित्र का तकाजा बचा हुआ है।' भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने हसकर अपने मित्र को जबाब दिया।

—नरेन्द्र

आर्यसमाज के उज्जवल भविष्य में निर्माणरत मातृमन्दिर गुरुकुल

—ब्र० सुषमा आर्या (उत्तर मध्यमा प्रथम वर्ष)

मैं मातृ मंदिर कन्या गुरुकुल की अल्पवयस्का छात्रा हू, पर अपनी तपस्विनी आर्यसमाज के स्नेह मे रगी हुई पूज्या आचार्या डा०कु०पुष्पावती जी के सान्निध्य मे मुझे तथा मेरी अन्य अन्तेवासिनी बहनो को आर्यसमाज के सम्बन्ध मे बहुत कुछ ज्ञान प्राप्त हो गया है। एक दिव्य प्रेरणा यह भी मिली है कि हमने आर्य-समाज का भविष्य सवारना है अर्थात् जगतवन्द्य महर्षि दयानन्द के स्वप्नो को साकार करना है। इसी लक्ष्यपूर्ति मे मेरी पूजनीया आचार्या जी ने अपने को तिल-तिल करके होम दिया है। वेद प्रेम की जलती दीपशिखा यह हमारे सामने है और अणुक्षण हमे कर्त्तव्य बोधका प्रकाश दे रही हैं।

यह ठीक है, कि आधुनिक युग की जनता को लुभाने वाले सुख-साधन के उपकरण व ठाठबाट मेरे गुरुकुल मे नही हैं और शायद होगे भी नही, क्योकि उन की ओर मेरी आचार्या जी व हमारा आकर्षण नही है। मेरे गुरुकुल मे ध्यान केन्द्रित रहता है आत्मिक गुणो के विकास पर जो कि तप त्याग के आधार पर ही होगा। इस समय जो देश व समाज मे विशृखलता आ रही है। उसका मूल कारण भोगवाद की प्रवृति एव निरे सुख सुविधामय जीवन के प्रति आकर्षण ही है, पर सुख-सुविधा की भित्तिरूप तपस्या व सयम का होना परम आवश्यक है, अन्यथा सुखोप भोग की सामर्थ्य ही नही होगी। मातृमन्दिर कन्या गुरुकुल। तथ्य को हृदयगम करके चल रहा है, इस इस प्रकार यह एक ऐसी नई पीढी को जन्म दे रहा है जो राष्ट्र व देश का भविष्य समालेगी और ऋषि दयानन्द के स्वप्नो को साकार करेगी।

जीवित का ईश्वर

शरर एम० ए०

धिक् धिक् मानव रूप धार जड की उपासना ?
प्राणयुक्त हो प्राणहीन से सतत याचना ?
पेट पीठ हो एक प्राणी का भूखो मर मर,
लम्बोदर की पूजा फिर भी भारत भू पर ?

तडप-तडप जाए जीवित जाग्रत प्रतिमाए,
बडे रस व्यञ्जन का जड पत्थर भोग लगाएं ?
इतना अत्याचार, घोर पाखण्ड आडम्बर,
शव समान जीवित-जीवित शव के आसन पर ?

रे नर ! यू पाषाणहृदय तू हुआ कहा से ?
हुआ न विचलित मानवता की दीन दशा से ?
है विचित्र यह मोह, निराली यह आसक्ति ?
जीवित से वैराग्य और जड मे अनुरक्ति ?
क्या कहिए इस ज्ञान शून्य जग की ममता पर ?
जड बुद्धि के जड उपास्य, जीवित का ईश्वर !

श्री जी० एल० दत्ता भूतपूर्व उप कुलपति विक्रम विश्वविद्यालय अब नही रहे।

काशी हिन्दू वि वि. की स्थापना का उद्देश्य—वैदिक सस्कृति का उद्धार

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के कुलपति श्री गोविन्द मालवीय जी की अध्यक्षता मे छब्बीस नवम्बर, सन् १९५० के दिन दीक्षान्त भाषण देते हुए पूना विश्वविद्यालय के कुलपति माननीय श्री मुकुन्द राव जयकर जी ने बताया था कि 'महामना श्री मदन-मोहन मालवीयजी ने इस विश्वविद्यालय की स्थापना वैदिक सस्कृति को फैलाने के लिए ही की थी, न कि हिन्दू सस्कृति को।' सदर्भ ग्रथ—सस्कार विधिविमर्श ले—अग्निदेवगुप्त—विद्यालकार।

—धर्मेन्द्र धीगरा, रीडर, मैकेनिकल इजीनियरिंग, बडोदा विश्वविद्यालय, बडोदरा-३९०००१

सब को अभय करें

ओ३म् यतो यतः समीहसे ततो नो अभयं कुरु ।
शं नः कुरु प्रजाभ्योऽभयं नः पशुभ्यः ॥ यजु ३६.२२

हे, ईश्वर, आप जहा-जहा से सम्यक् चेष्टा करते हैं, वहा-वहा से आप हमे अभय करें। आप हमारी सन्तान का कल्याण करे। आप समस्त प्राणियो को निर्भय करें।

ओ३म्
आर्य सन्देश

धर्मान्तरण का घृणित षड़यन्त्र

अग्रेजी पत्र 'ब्लिट्ज़' के फैजाबाद स्थित सवाददाता के अनुसार पिछले दिनों उस क्षेत्र मे एक ढोगी साधु सन्यासी के भेस मे एक आश्रम मे हिन्दू बालिकाओं और नारियों को फुसला कर इस्लाम मे परिवर्तित करने के कथित अभियोग मे गिरफ्तार किया गया है। यह सवाद भी प्राप्त हुआ है कि उसे असम के एक बडे मौलवी ने इस उद्देश्य से भेजा था कि उत्तर प्रदेश के पिछडे इलाको मे हिन्दू धर्म ग्रन्थो की कथा के नाम पर भोली-भाली हिन्दू नारियो को आकर्षित कर उनका धर्म परिवर्तित करवा दिया जाए। यह भी ज्ञात हुआ है कि इस घृणित लक्ष्य को पूरा करने के लिए विदेशी ताकतो से बडी तादाद मे आर्थिक सहायता मिल रही है। अभी तक ईसाई धर्मप्रचारक ही हमारे देश के पिछडे अविकसित क्षेत्रो मे रोग निवारण, शिक्षा प्रसार के नाम पर वहां अपना धर्म प्रचार कर रहे थे, परन्तु अब उक्त सवाद से प्रमाणित होता है कि इस क्षेत्र मे मुस्लिम धर्म प्रचारक भी पीछे नही है। १९८१ के प्रारम्भ से यह प्रतीत होता था कि उनकी मुख्य कार्यक्षेत्र मीनाक्षी पुरम तथा द० भारत के दूसरे सवेदनाशील पिछडे इलाको मे मर्यादित है, परन्तु फैजाबाद के सवाद से यह स्पष्ट है कि वह उत्तरी भारत के उपेक्षित पिछडे इलाको की अबोध जनता को अपना लक्ष्य बनाना चाहते हैं।

अभी तक ईसाई प्रचारको की रीतिनीति थी कि स्थान-स्थान पर हिन्दू बच्चो एव युवको को अपने सम्प्रदाय के प्रति आकर्षित करने के लिए शैक्षणिक संस्थाओ का व्यापक प्रचार-प्रसार किया जाए, दूसरे सामाजिक सेवा के नाम पर प्रतिष्ठा और यश अर्जित करने के लिए अस्पतालो की स्थापना की जाए, तीसरे अनाथ एव अपाहिज बच्चों के लिए अनाथालयो तथा रक्षा-गृहो की व्यवस्था की जाए, चौथे हिन्दू जनता की मुख्य धारा से पृथक् सदूरवर्ती क्षेत्रो की हिन्दू वन्यजन-जातियो मे चुपचाप काम किया जाए, पांचवे होनहार तथा निर्धन युवको तथा बच्चो को विदेशी यात्रा के नाम पर आकृष्ट किया जाए छठे निर्धन भारतीय बच्चो को विदेशी सम्पन्न परिवारो मे दत्तक के रूप मे स्वीकार किया जाए, सातवे भारतीय राष्ट्र को निर्बल और खण्डित करने के लिए वहा छोटे-छोटे पृथक् राज्यो या पृथक् देश की मांग को प्रोत्साहन दिया जाए। इस तरह के विविध प्रयत्नो से ईसाई धर्म प्रचारक देश की निर्धन एव अशिक्षित जनता के धर्मान्तरण का व्यवस्थित प्रयत्न करते रहे है, फैजाबाद के समाचार से स्पष्ट है कि जिस काम को ईसाई प्रचारक सेवा-सहायता के नाम पर करना चाहते हैं, उसे मुस्लिम प्रचारक छल छद्म का सहारा लेकर हिन्दू सन्यासियो और हिन्दू संन्यासिनियो के भेस मे करना चाहते है।

दोनो ही प्रकार के साम्प्रदायिक प्रचारकों का लक्ष्य एक ही है कि किसी भी तरह देश की बहुसख्यक जनता का धर्म बदलकर इस देश की राजनीति का सूत्र अपने हाथ मे लिया जाए। सम्भवत ईसाई प्रचारक चाहते हैं कि भारत मे ईसाइयत के माध्यम से वह पश्चिमी राष्ट्रो का आर्थिक राजनीतिक और सामाजिक प्रभुत्व स्थापित कर सकेगे। दूसरी ओर मुस्लिम प्रचारक पश्चिमी अफ्रीका के मोरक्को से लेकरके हिन्द महासागर में अवस्थित इण्डोनेशिया तक इस्लाम का एक बडा सुरक्षित सुदृढ गढ स्थापित करना चाहते हैं। कई शताब्दियो तक भारत मे राजनीतिक प्रभुत्व के बावजूद मुस्लिम और ईसाई शक्तिया जो कार्य सत्ता और ताकत के बल पर नही कर सकीं, उसे अब वे हमारी असावधानता तथा उपेक्षा के कारण पैसे, सहायता, छल और दूसरे उपायो का सहारा लेकर पूरा करना चाहती है। खेद है कि हमारी बहुसंख्यक जनता और राष्ट्रनेता देश और जाति के इस आसन्न खतरे से सावधान नही हैं। अभी भी इस सकट का मुकाबला हो सकता है, यदि समय रहते जनता सावधान और सन्नद्ध हो जाए, अन्यथा यदि देश की पिछड़ी और उपेक्षित जनता विदेशी धर्म प्रचारकों के चगुल मे फस गई तो देश और जाति का भविष्य अन्धकारपूर्ण हो जाएगा।

आर्यसमाज महासम्मेलन शाहदरा और आपका कर्तव्य

२६, २७ एव २८ मार्च, १९८२ को रामलीला मैदान भोलानाथ नगर शाहदरा मे सभा द्वारा आर्य महासम्मेलन एव यजुर्वेद पारायण व गोमेध महायज्ञ का भव्य आयोजन दिल्ली प्रतिनिधि सभा द्वारा शाहदरा क्षेत्र की आर्य प्रतिनिधि उपसभा के सहयोग से किया गया है। शुक्रवार, २६ मार्च को दोपहर २ बजे से आर्यसमाज गीता कालोनी से एक विशाल शोभा यात्रा चलकर झील, लाल क्वार्टर, आर्यसमाज कृष्णनगर, मन्दिर मार्ग, विश्वास नगर, बाबूराम स्कूल, अनाज मण्डी, सर्कुलर रोड, रेलवे रोड, जी. टी. रोड, भोलानाथ नगर इत्यादि मार्गो से होती हुई यह शोभा यात्रा रामलीला मैदान मे सायकाल ६ बजे समाप्त होगी। २७ मार्च को दोपहर महिला सम्मेलन श्रीमती प्रभात शोभा पण्डिता की अध्यक्षता मे होगा। रात्रि को वेद सम्मेलन डा० सत्यव्रत जी सिद्धान्तालकार की अध्यक्षता मे सम्पन्न होगा। इस वेद सम्मेलन का उद्देश्य महर्षि स्वामी दयानन्द जी के वेद भाष्य की प्रामाणिकता को सिद्ध करते हुए भारत सरकार से बलपूर्वक मांग की जाएगी कि भारत के समस्त विश्वविद्यालयो मे सायण एव महिधरा अप्रामाणिक भाष्यो के स्थान पर पाठ्य पुस्तक के रूप मे लगाया जाए। रविवार, २८ मार्च को यजुर्वेद यज्ञ के अतिरिक्त गोमेध यज्ञ का वास्तविक स्वरूप जनता के सामने रखा जाएगा। पूर्णाहुति तथा सामूहिक यज्ञोपवीत, प्राणायाम प्रदर्शन के पश्चात आर्यसम्मेलन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मान्य प्रधान लाला रामगोपाल जी की अध्यक्षता मे होगा। दोपहर बाद आर्यसमाज स्थापना दिवस आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के तत्वावधान मे इस पण्डाल मे होगा। ऋषि जीवन की प्रदर्शनी का भी आयोजन किया गया।

पूर्व भी इस सम्बन्ध मे सूचित किया जा चुका है कि इस आयोजन का उद्देश्य सरकार की धर्मनिरपेक्षता की नीति का दुरुपयोग करते हुए विदेशी साम्प्रदायिक शक्तियो द्वारा देश की अखण्डता को नष्ट करने का षडयन्त्र रचा है और वे शक्तिया पैट्रो डालर के अपार भण्डार के कुप्रयोग से भारत की निर्धन एव पिछडी जन जातियों के सामूहिक धर्म-परिवर्तन से अपने स्वप्न को साकार करने मे प्रयत्नशील है। मीनाक्षीपुरम का काण्ड इसका एक ज्वलन्त उदाहरण है। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा इन साम्प्रदायिक शक्तियो के षडयन्त्र को विफल बनाने के लिए जो धर्मरक्षा महाभियान का सिंहावलोकन किया गया है, उसके उद्देश्य को घर-घर तक पहुचाने एव समस्त आर्य (हिन्दू) मात्र को सार्वदेशिक सभा के नेतृत्व मे सगठित होकर भारत की सास्कृतिक एव धर्म की रक्षा करने के लिए कटिबद्ध करने के लिए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने दिल्ली के सभी क्षेत्रो मे बारी-बारी से इस प्रकार के आयोजन करके धर्मरक्षा महाभियान को दिल्ली मे व्यापक रूप देने एव जन जागरण करने का निश्चय किया है। इस योजना के अन्तर्गत यह पहला महा सम्मेलन है।

दिल्ली की आर्य जनता सदैव ऐसे अवसरो पर दिल्ली मे आर्यसमाज की सगठित शक्ति का परिचय देती रही है। दिल्ली भारत की राजधानी होने के नाते यहा आयोजनों का सारे देश मे प्रभाव होता है। अत दिल्ली की आर्य जनता से अनुरोध है कि प्रत्येक क्षेत्र से भारी सख्या मे दलबल के साथ शुक्रवार, २६ मार्च की शोभा यात्रा मे एव २७ और २८ मार्च के कार्यक्रमो मे भारी सख्या मे विशेष बसो द्वारा पधारकर अपनी परम्परा अनुसार दिल्ली मे आर्यसमाजो के सगठन का परिचय दे। आर्य स्कूलो को भी भारी सख्या मे शोभा यात्रा मे सम्मिलित करे। स्कूलो के अधिकारियो का सहयोग अपेक्षित है।

—सरदारी लाल वर्मा
प्रधान, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा।

पण्डित गुलाम दस्तगीर जो संस्कृत को अपनी मातृभाषा मानते है

२ अप्रैल, १९३५ को महाराष्ट्र के पुणे जनपद के साधारण से मुस्लिम किसान परिवार मे जन्मे पण्डित गुलाम दस्तगीर अब्बास अली बिराजदार अपने पूर्वजो की भूमि भारत को अपनी मातृभूमि और सस्कृत को अपनी मातृभाषा मानते है। वह सस्कृत मे अपनी रुचि के लिए अपने पारिवारिक वातावरण को श्रेय देते है। उनके परिवार मे श्रीमद् भगवद्गीता, रामायण और महाभारत आदि धर्मग्रन्थो का पठन-पाठन उनके जन्म से पहले ही होता था। वह एस० एस० सी० की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद सस्कृत भाषा और हिन्दू सस्कृति के स्वाध्याय मे विधिवत् जुट गए।

इस समय वह पुणे स्थित मराठा मन्दिर हाईस्कूल मे सस्कृत का अध्यापन करते हैं। वह अनेक राजकीय और गैर सरकारी सस्कृत सस्थाओ तथा सस्कृत की पत्र पत्रिकाओ से भी सम्बद्ध है भारत सरकार ने उन्हे केन्द्रीय सस्कृत परिषद् का सदस्य मनोनीत किया है। महाराष्ट्र सरकार ने उन्हे महाराष्ट्र सस्कृत समिति का स्थायी सदस्य एव भाण्डारकर प्राच्य सस्कृत शोधसस्थान मे राजकीय प्रतिनिधि नियुक्त किया है। वह विश्व सस्कृत प्रतिष्ठानम् के उपाध्यक्ष भी हैं। वह विश्वभाषा पाण्डीचेरी के सम्पादक, गिरिवाण सुधा पुणे के सहसम्पादक और सोमैय्या सस्कृत केन्द्र के सहसयोजक भी हैं।

महर्षि दयानन्द, आर्य समाज एवं युवा शक्ति

विजय नारायण उपाध्याय, "नीरव" लछिरामपुरी

आर्य जगत मे युवा शक्ति के अभाव को स्थानीय आर्यसमाजे ही नही अपित सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा भी सहसूस करने लगी है। सार्वदेशिक व प्रातीय सभाये आर्य वीर दल को पुनर्जीवित करने के लिए भी प्रयत्नशील हैं। युवा शक्ति को आकर्षित करने के लिए आर्य कुमार सभाओ, आर्य युवक सघ, आर्य युवक परिषद्, आर्य वीर दल आदि सस्थाओ का निर्माण, पुनर्निर्माण का कई बार प्रयत्न किया जा चुका है। वर्तमान काल मे भी आर्य वीर दण्ड का पुनर्निमाण भूत काल मे किए गए प्रयत्नो की एक कडी मात्र ही होकर रह जायेगा। कारण स्पष्ट है—महर्षि दयानन्द की वेदोंपर आधारित समाज निर्माण के निमित्त सशक्त एव सर्वांगीण विचारधारा जो मानव जीवन के आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक व सामाजिक सभी पहलुओ पर पूर्ण रूप से प्रकाश डालती है तथा जीवन के समस्त दैनिक कार्यो पर अपनी एक विशिष्ट छाप रखती है ऐसी विचारधारा की आर्यसमाज की प्रादेशिक एव शिरोमणि सस्थाओ को आवश्यकता है। महर्षि दयानन्द के आर्थिक चिन्तन को सर्वत्र व्यापक करने की जरूरत है।

आज शत वर्ष बाद भी जनता तो जनता रही, आर्यसमाज के सदस्य तक महर्षि की पूर्ण विचारधारा से परिचित नही हैं तदनुसार चलना तो अलग रहा। आर्यसमाज के पत्र-पत्रिकाओं मे प्रकाशित लेखो के पढने तथा उपदेशको एव भजनोपदेशको के भाषणो के सुनने पर एक बुद्धजीवी के मस्तिष्क मे केवल एक ही बात उभरती है कि आर्यसमाज की मूर्तिपूजा एव अवतारवाद के खडन के अतिरिक्त कोई निश्चित विचारधारा नहीं है जिस पर एक जीवित गतिशील समाज का पूरा ढाचा खडा किया जा सके। एक उपदेशक उठता है तो वह कथित साम्प्रदायिक सस्थाओ का राग अलापने लगता है, दूसरा उठता है तो वह राजनीतिक दलो की सेकुलरी राष्ट्रीयता की पीठ ठोक ने लगता है तीसरा आता है तो वह कुछ और ही अलख जगाने लगता है, कहने का तात्पर्य यह कि आर्यसमाज का स्टेज एक चू चू का मुरब्बा बन कर रह जाता है। ऐसा लगने लगता है कि आर्य समाज के पास मानव जीवन का कोई निश्चित दर्शन ही नहीं है अतिरिक्त इसके कि यह मूर्तिपूजा और अवतारवाद मे विश्वास नहीं करता।

आर्यसमाज के सगठन की इकाई स्थानीय आर्यसमाजें हैं। किसी भी स्थानीय आर्यसमाज का एक वर्ष का लेखा-जोखा उठाकर देख लीजिए। प्रत्येक सप्ताह मे एक दिन एकत्र होकर यज्ञ-हवन कर लेना और वर्ष मे एक वार्षिकोत्सव मना लेना। अब आप स्वय ही सोचें ऐसी हालत मे युवा शक्ति आर्यसमाज मे आकर क्या करेगी ? क्या उसके पास यही कार्य शेष रह गया है कि साप्ताहिक अधिवेशनो मे आकर घृताहुति डाल दे और वार्षिक-उत्सवों मे आकर तम्बूकनात लगा दे या दरिया बिछा दे ?

युवाशक्ति क्यों नहीं आती ?

युवा शक्ति आर्यसमाज मे नहीं आती है यह एक कटु सत्य है। जो थोड़ी बहुत आती भी है उसके सामने महर्षि दयानन्द की विचारधारा (जो सर्वांगीण रूप से जनता के समक्ष कभी नही रखी गयी) नही होती बल्कि उसके अपने लक्ष्य होते हैं —(१) सस्ती नेताशाही—कौन साहब हैं ? यह मत्री जी जा रहे हैं। यह कौन हैं ? अरे भाई यह हमारे प्रधान जी है। (२) एकाधिकार शाही—आर्यसमाज की बनी बनाई सम्पत्ति जैसे भवन विद्यालय आदि पर एकाधिकार कर उसको अपने ढग से उपयोग करना। (३) इस सस्ती नेताशाही व एकाधिकार शाही का दुष्परिणाम यह निकलता है कि कुछ स्वार्थी तत्त्व भी आ मिलते हैं जो खीचा तानी मे ही लिप्त रहते है। और आर्यसमाज को बदनाम कर देते हैं।

आखिर यह सब क्यो है ? हमारी राष्ट्रीय एव प्रादेशिक सभाओं की स्थिति देखिए।

स्वामीदयानन्द सच्चे शिव की तलाश मे नदी-नाले जगलों, पहाडों की खाक छानते हिमालय की उपत्यकाओं मे पहुचे जहा एक अति वयोवृद्ध महात्मा ने बताया —"इसमे सदेह नही कि तुम सही व्यक्ति के पास आए हो पर अब मैं वृद्धावस्था के के कारण इतना अशक्त हो गया हूं कि जो कुछ तुम चाहते हो उसे देने में असमर्थ है अत तुम सीधे स्वामी विरजानन्द जो मथुरा मे एक सस्कृत पाठशाला चलाते हैं उनके पास जाओ और उन्हीं से तुम्हें अभीष वस्तु की उपलब्धि हो सकेगी।

वह दारुण घटना

स्वामी दयानन्द मथुरा के लिए चल पड़े। मथुरा यमुना के किनारे पर स्थित है पर स्वामी जी उस समय गंगा के किनारे के समीप थे अत उन्होने गगा के किनारे-किनारे ही चलकर मैदानी भाग मे उतर फिर यमुना का किनारा पकड़ने का विचार किया। अत वह मार्ग मे अभी गगा के किनारे पर ही थे कि एक ऐसी घटना घटी जिसने स्वामी दयानन्द के अंतरतम को झकझोर कर रख दिया। हुआ ऐसा कि कोई देवी बिलखती कलपती अपने शिशु के शव को प्रवाहित करने के लिए गंगा ले आई। स्वामी जी कुछ दूर से यह दृश्य देख रहे थे। उस देवी के रोते-रोते शव पर पड़े कपड़े को उतारा तथा नगे शव को गगा में प्रवाहित कर दिया। तत्पश्चात् उतारे कपड़े को गगा के जल मे धो निचोड़ कर अपने कधे पर रखा और रोती-कलपती पुन जिस मार्ग से आई थी उधर ही लौट चली। स्वामी जी से यह न देखा गया वे इस देवी के सन्निकट पहुचे और बड़े ही विनम्र शब्दों मे पूछा—मां, तुमने निज पुत्र का शव तो बहा दिया पर उस पर पड़े कफन को क्यों निचोड़कर ले जा रही हो ? उसे भी शव के साथ बहा देना था।

स्वामी जी की बात सुनते ही उस देवी की आखें और भर आई और उनसे बिलखते हुए कहा—महात्मन्, मेरे पास दवा-दारू के लिए फूटी कौड़ी भी नही थी और मेरा लाल उपचार के अभाव म चल बसा। मेरे पास कफन के लिए पैसे भी नही थे, अत: मैंने अपनी इस फटी पुरानी साड़ी के दो भाग किए। एक से बच्चे के शव को ढककर तथा दूसरे से अपनी शारीरिक लज्जा को किसी प्रकार ढककर यहा आई। अब घर जाकर दोनो टुकड़ो को सीकर एक कर लूगी मेरे पास इस फटी साड़ी के अतिरिक्त पहनने का कोई वस्त्र नही है।"—देवी तो ऐसा उत्तर देकर अपने घर की ओर चली गई पर स्वामी जी वही बैठकर घण्टो रात रहे। जो स्वामी दयानन्द बचपन मे अपन सगे सम्बन्धियो की मृत्यु पर एकदम जडवत खड़े रहे कि क्या हो गया और आसू की एक बूद भी नही टपकी, वही स्वामी दयानन्द इस घटना को देखकर घण्टो अश्रुपात करते रहे कि मेरा देश यह आर्यावर्त कितना दीन-हीन है ?

५७'का धधकता विद्रोह

उक्त घटना सन् १८५० की है और स्वामी जी पर उसका इतना प्रभाव पड़ा कि वह सच्चे शिव की तलाश को छोड़ दूसरे ही ध्येय की ओर चल पड़े। उन्होंने केवल गगा का ही किनारा छोड़ा बल्कि यमुना का भी किनारा छोड़ दिया। कभी वे राजस्थान मे देखे गए तो कभी नर्मदा के किनारे दक्षिण मे देखे गए। कहा वह मथुरा और कहा गई वह स्वामी विरजानन्द की पाठशाला जहा के लिए वे चले थे और कहा गई वह सच्चे शिव की तलाश की तड़प ? स्वामी जी ने चाहे जिस लक्ष्य को लेकर उस घटना के पश्चात् ही गगा का किनारा छोड़ा, राजस्थान व दक्षिण का भ्रमण किया पर इतना तो स्पष्ट है कि उसके ठीक सात वर्ष बाद मिला देश को १८५० का धधकता विद्रोह जिसमे राष्ट्र की जवानी अगड़ाई लेकर उठ खड़ी हुई थी। १८५७ के विद्रोह के असफल होने तथा वातावरण में पूर्ण शात होने पर ही स्वामीजी १८६० मे स्वामी विरजानन्द की पाठशाला में प्रकट हुए।

१८५० से लेकर १८६० तक यह दश वर्ष का स्वामी दयानन्द का जीवन आर्य जगत के लिए विशेषत समस्त आर्यसामाजिक सगठन के लिए आज तक एक चुनौती बना हुआ है कि आर्यसमाज इसका सही आकलन करे।

उक्त घटना को घटे आज १३० वर्ष से ऊपर हो गए है और आर्यसमाज को स्थापित हुए भी १०० वर्ष से अधिक बीत चुके हैं। पर क्या आर्यसमाज के अधिकारी १०० वर्ष से लम्बा समय पाने पर भी महर्षि के उस गिरे हुए आसुओं को पोंछ सके हैं ? पोंछ सकना तो अलग रहा यथार्थ तो यह है कि प्रयत्न ही नहीं किया गया। यह पलायन वाद नहीं तो और क्या है ? इससे स्पष्ट और क्या पलायन वाद हो सकता है।

"आर्यसमाज का नेतृत्व उस घटना को भले ही भूल जाए पर स्वामी जी ने आर्यसमाज की स्थापना करते समय उस घटना की तड़प को आर्यसमाज के बनाये गए नियमो मे पिरो दिया है जिसे वर्तमान कालिक आर्यसमाजे अपन साप्ताहिक अधिवेशनो मे 'तोता रटत' की तरह रट लिया करती है और खेद है कि आर्यों की यह रटत पौराणिको के 'हरे राम हरे कृष्ण' के कीर्तन कुछ भी अधिक महत्व नही रखती।

संसार का उपकार करना

स्वामी जी ने आर्यसमाज के छठे नियम बड़े ही जलते अक्षरो मे लिखा है —"संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।"

स्वामी जी ने बड़ी ही स्पष्ट एव सरल भाषा मे संसार का उपकार करने के लिए तीन सीढ़ियों की बात कही है। पहली—शारीरिक उन्नति, द्वितीय—आत्मिक उन्नति तथा तृतीय—सामाजिक उन्नति। इसमे शारीरिक उन्नति की बात सर्वप्रथमकी गई है। मेरा आर्यसमाज के शीर्ष नेतृत्व से विनम्र प्रश्न है कि क्या उनके पास कोई ऐसा जादुई चिराग है जिसके द्वारा ससार तो अलग रहा केवल भारत के ही निवासियो की शारीरिक उन्नति का लक्ष्य बिना रोटी कपड़ा और मकान की समस्या का हल किए ही हो जाएगा ?

जब-जब आर्यसमाज की शीर्ष सभाओं में यह प्रश्न उठा इसे राजनीतिक प्रश्न कहकर टाल दिया गया है कि सभा एक विशुद्ध धार्मिक सस्था है इसका राजनीति से कोई सरोकार नही। हा, यदि आर्यसमाज का कोई सदस्य राजनीति मे भाग लेना चाहता है तो वह किसी भी राजनीतिक सस्था का सदस्य होने के लिए स्वतन्त्र है। जबकि आर्यसमाज की सभाओ का यह निर्णय आर्यसमाज के दसवें नियम के सर्वथा प्रतिकूल है।

एक खुला प्रश्न

एक खुला प्रश्न और—स्वामी दयानन्द के शिक्षणकाल मे जब वह स्वामी विरजानन्द के शिष्यत्व में ही थे कई बार ऐसा हुआ है कि कुटिया का द्वार बन्द कर दिया गया है तथा द्वार पर एक रक्षक का

(शेष पृष्ठ ८ पर)

आपौरुषेय ज्ञान का कोश: वेद

—सिद्धान्त विदुषी सुशीला राजपाल

वेद शब्द विद्ज्ञाने विद सतायाम और विदल लाभे धातुओं से बना है। गणभेद के अनुसार विद् धातु के तीन अर्थ है होना, जानना और प्राप्त करना। ये तीनों अर्थ सच्चिदानन्द के तीन मूल तत्वो का संकेत करते हैं। होना सत् है जानना चित है और प्राप्त करना या परम प्राप्ति एव परम लाभ आनन्द है। 'आनन्दात् न परो: लाभ. य लब्ध्वाचापर लाभ मन्यते नाधिक तत.।' वेद शब्द की इस व्युत्पत्ति के अनुसार वेद वह सनातन ज्ञान है, जो हमे सच्चिदानन्द के निज स्वरूप का तथा उनकी इस प्रकट सृष्टि का पूर्ण ज्ञान कराता है।

वेद आध्यात्मिक अनुभूतियो का सार भूत ज्ञान है। वह केवल बाह्य कर्मों की पुस्तक नही है, आभ्यान्तिरिक यज्ञों का प्रतीक भी है।

ऋषि मात्र द्रष्टा थे एक सनातन सत्य के और अपौरुषेय ज्ञान के उन्होने वेद की दिव्य वाणी को जो नि सीम से निकले हुए प्रकपन थे अन्त श्रवण से सुना था।

श्री अरविन्द के कथनानुसार कि ऋषि दयानन्द ने ऋषियो की भाषा सम्बन्धी रहस्य का मूल सुत्र पकड़ा दिया है और वैदिक धर्म के केन्द्र भूत विचार पर फिर से बल दिया है।

सायणाचार्य ने वेद को कोरा कर्म-काण्ड परक ग्रन्थ सिद्ध किया है परन्तु ऋषि दयानन्द ने यह सिद्ध किया है कि वेद का सार भूत तत्व कर्म-काण्ड परक गाथा परक अभिप्राय नही है। या यज्ञीय पूजा का अनुष्ठानिक कोरा कर्म-काण्ड नहीं है। जो केवल इस लोक मे केवल धन दौलत प्रदान करेगा और बाद मे स्वर्ग मिलेगा। साधारण लोगों के लिए अर्थ मुक्त-युक्त हो परन्तु वैदिक युग के द्रष्टाओं के लिए ज्ञान ज्योति से प्रकाशित मनो के लिए यह अर्थ अभिप्रेत नही थे। उनके लिए यह भौतिक पदार्थ अभौतिक अर्थ के प्रतीक थे। 'गौए' दिव्य उषा की किरणो की प्रभाए थीं 'घोडे और रथ' शक्ति और गति के प्रतीक थे। 'सुवर्ण' था प्रकाश एक दिव्य शक्ति था दिव्य या दिव्य सूर्य की प्रकाश मयी सम्पत्ति 'ज्वलंत ज्योति' यज्ञ से प्राप्त होने वाली अमरता की प्राप्ति जिसके लिए मनुष्य का प्रयत्न है। वैदिक ऋषियो के आशय को ऋषि दयानन्द ने जाना इसी लिए इन्होने वेद के मन्त्रों के यौगिक अर्थ बताए।

वस्तुत वेद इन चार ग्रन्थो का नाम नही है। अनन्ता वै वेदा अर्थात् वेद अनन्त है उनका अन्त या पार नही पाया जा सकता। इस उपाख्यान के द्वारा ब्राह्मणकार अर्थात् ब्राह्मण ग्रन्थ के रचयिता ऋषि हमे यह समझाना चाहते हैं कि वेद इन चार ग्रन्थो मे सीमित नही है, ये चार वेद तो ऐसे हैं जैसे ब्रह्मा जी ने अनन्त ज्ञान राशि मे से ज्ञान के विशाल पर्वत मे से वर्त्तमान सृष्टि के लिए आवश्यक चार रत्न मुट्ठी भर ज्ञान उठाकर दे दिए हों। वेद का यर्थाथ अर्थ ज्ञान है। भले हम अन्य धर्म ग्रन्थों को कुरानशरीफ, बाइबिल, जिन्दावस्ता आदि पुस्तक या ग्रथ कह सकते हैं पर वेद के विषय मे हम यह कह सकते हैं कि वे पुस्तको मे आबद्ध नही हैं वे पुस्तक रूप मे न होकर ज्ञान रूप है।

वेद हृदय मे निहित सनातन वाणी है। पूर्ण योग का परम शास्त्र वह सनातन वेद है जो प्रत्येक बिचारशील मनुष्य के हृदय मे गुप्त रूप से निहित है। नित्यज्ञान और नित्य पूर्णता का कमल एक अविकसित और मूदी हुई कली के रूप मे हमारे अन्दर ही विद्यमान है।

वेदों की सृष्टि यज्ञ के लिए ही हुई है वेदा हि यज्ञार्थमभि प्रवृता. इस प्राचीन उक्ति से ऋषि दयानन्द का कोई विरोध नही है। वेद मे वर्णित यज्ञ नख से शिख तक अपने सभी अगोपाग सहित एक प्रतीकात्मक यज्ञ है। वह प्रधानतया आन्तरिक है न कि बाह्य वेदोक्त यज्ञ के सभी अग हमारे अन्दर ही है मनुष्य के अन्दर ही अग्नि और अन्दर ही है वेद हबि और होता। अन्दर ही है ऋषि मन्त्र और देवता हमारे अन्दर ही होता है। यज्ञ के प्रधान पुरोहित ब्रह्मा का वेदगान। इसके साथ ही हमारे अन्दर बैठे हे देव, द्वेषी, दैत्य और भीतर ही है अन्धकार रूपी वज्र और भीतर ही वज्र का वध करने वाली प्रकाशाधिपति इन्द्र। अधिक क्या लिखें इस यज्ञ का यज्ञमान पुरोहित हबि की समिधा घी सोम, पुरोराश और यज्ञ का फल ये सब भी आन्तरिक ही है।

हमारी आत्मा इस अन्तर्यज्ञ का यज्ञमान का हृदय ही वेद है। हृदय मे स्थित दिव्य सकल्पाग्नि अथवा अभीप्सा की अग्नि ही पुरोहित है देह, मन और प्राण तीन समिधाए हैं। मन और बुद्धि की निर्मलता और प्रकाश युक्त अवस्था घृत है हमारी वृत्तिया और प्रवृत्तिया ही। हबि है। प्राण अपान व्यानादि सब सामग्री है तो ऐसी सूक्ष्म अन्तर्हबि देने का फल क्या होता है द्युलोक मे ज्योति, शक्ति, सत्य, आनन्द, अमृतत्वादि दिव्य ऐश्वर्यों की वृष्टि ही इसका फल है।

मानव जीवन एक यज्ञ है। यज्ञीय कर्म काण्ड एक प्रतीकात्मक स्वरूप ही है। यह अन्तर्यज्ञ वेदो की भाषा मे एक यात्रा है उर्ध्वारोहण रूपी यात्रा है। देवत्व प्राप्ति के लिए की जाने वाली एक यात्रा है और फिर यह यात्रा युद्धमय है क्योंकि इसमे अन्धकार की शक्तियो के साथ प्रचण्ड सग्राम करना होता है। इस युद्धमयी यज्ञयात्रा को हम अग्नि देव का पुरोहितबनाकर उसकी सहायता से पूर्ण करते हैं।

> ओ इन्द्र मित्र वरुण मग्नि महारयो,
> दिव्य: स सुपर्णो गुरुत्मान।
> एक सद्विप्रा बहुधा वदन्ति
> अग्नि यम मातरिश्वानमाहु॥

उस एकमेव सत् को ज्ञानी लाग इन्द्र मित्र, वरुण और अग्नि कहते है वही दिव्य सर्वत्र, परिपूर्ण सब का प्रतिपालक परमात्मा है। और उसी को ज्ञानीजन नामा नामो से पुकारते हे। उसी को अग्नि यम, और मातरिश्वा भी कहते है। ऋत्व अक्षरे परम व्यामन ऋचाए अर्थात् वेद मन्त्र उसी अविनाशी परमदेव मे ओमस्वरूप परब्रह्म मे स्थित है, जिसमे सब देवता प्रतिष्ठिक हैं।

एए-१३ पश्चिमी पटेल नगर नई दिल्ली-

आर्य जगत् समाचार

आर्य केन्द्रीय सभा के तत्वावधान में 'आर्यसमाज स्थापना दिवस' रविवार, २८ मार्च को

इस वर्ष आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली राज्य, भारत की राजधानी की सभी आर्य-समाजो की ओर से आर्यसमाज का १०७वा स्थापना-दिवस रविवार २८ मार्च को २.३० बजे साय तक मनाएगी। इस बार उत्सव दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एव क्षेत्रीय उपसभा शाहदरा द्वारा आयोजित 'आर्य सम्मेलन' के पण्डाल मे, रामलीला मैदान भोलानाथ नगर, शाहदरा मे होगा।

सभा प्रधान श्री महाशय धर्मपाल तथा महामन्त्री प्रिंसिपल ओम्प्रकाश ने सभी आर्य बहन-भाइयो से एक विज्ञप्ति द्वारा अनुरोध किया है कि वे भारी सख्या मे उत्सव मे पधारकर अपनी सगठन शक्ति का परिचय दें। २८ मार्च के रविवार को 'आर्य-समाज स्थापना-दिवस' की कार्यवाई के पूर्व 'ऋषि लगर' का भी आयोजन होगा।

विज्ञप्ति मे दिल्ली के समाजों के अधिकारियों प्रार्थना की गई है कि

—रविवार, २१ मार्च को अपनी समाजो मे 'आर्यसमाज स्थापना-दिवस' धूमधाम से मनाए, जिसमे सम्मिलित जलपान का आयोजन करे।

—नवसवत्सर के दिन चैत्र शु० १ सम्वत् २०३६ विक्रमी तदनुसार २६ मार्च, १९८२ ईसवी को आर्यसमाज स्थापना दिवस है। अत उस दिन प्रात अपने समाज मन्दिर मे यज्ञ तथा ध्वजारोहण करें और रात को दीपमाला करे

—अपने सदस्यों के परिवारो को लाने के लिए बसो आदि की व्यवस्था करें।

—राष्ट्रीय सम्वत् के दिन, २६ मार्च को 'रिस्ट्रैक्टिड' छुट्टी सरकारी कार्यालयो मे है। सभी बन्धु वह छुट्टी अवश्य लें और २.३० बजे से आर्यसमाज गीता कालोनी से निकलने वाली शोभायात्रा मे अवश्यमेव सम्मिलित हो।

शहीदों के खून से निर्मित देश के टुकड़े नही होने देंगे

आर्ययुवक नेता श्री आर्य की स्पष्टोक्ति

दिल्ली। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद दिल्ली प्रदेश के तत्वावधान मे अमर शहीद चन्द्रशेखर आजाद का 'शहीद दिवस' चन्द्रशेखर आजाद पार्क, बाग कडे खा मे मनाया गया।

इस अवसर पर दिल्ली राज्य के आर्य युवक परिषद् के महामन्त्री श्री अनिल कुमार आर्यने जनता पार्टी के प्रमुख नेता श्री मोरार जी देसाई के गत दिनो दिए गए वक्तव्य को घोर दुर्भाग्य पूर्ण व राष्ट्र विरोधी बताया, जिसमे उन्होने भारत को पाकिस्तान द्वारा हमले मे हथियाये गये, जम्मू काश्मीर के क्षेत्र को, पाकिस्तान को सौंप देने की सलाह दी है।

श्री आर्य ने कहा—जम्मू काश्मीर भारत का अविभाज्य अग है। उन्होने माग की कि पद लोलुप व कुर्सी के अन्धे नेताओ का जनता बहिष्कार करे तथा सरकार राष्ट्र विरोधी इस प्रकार के तत्वो के विरुद्ध कार्यवाही करे।

उन्होने श्री देसाई को अपने शब्द वापिस लेने को कहा नही तो भारतीय जनता श्री देसाई का बहिष्कार करेगी।

—आर्यसमाज माडल बस्ती दिल्ली मे ९ मार्च ८२ को होली मगल-मिलन धूम-धाम से सम्पन्न हुआ जिसमे श्री इन्द्राज सिह जी की प्रधानता मे हास्य कविताओ एव श्री बनवारी लाल 'शादा' प्रधान जी, के सुन्दर भजनो ने निराला समा बाध दिया। अन्त मे सामूहिक फलाहार हुआ।

पवित्र होलिकोत्सव

केसरगज अजमेर के तत्वावधान मे होली के पर्व पर विभिन्न मोहल्लो मे प्रत्येक परिवार से यज्ञ हेतु चन्दा एकत्रित कर मोहल्ले के मध्य सार्वजनिक स्थान पर नवशस्येष्टि यज्ञ किया गया। इस अवसर पर आर्यसमाज अजमेर के मन्त्री डा० सूर्य-देव शर्मा, आर्योपदेशक पं० रामचन्द्र जी आर्य मुसाफिर, आयुर्वेदाचार्य, प० ब्रह्मानन्द जी त्रिपाठी तथा प्रो० धर्मवीर जी के होलिकोत्सव पर प्रेरणादायक प्रवचन हुए।

महर्षि को हार्दिक श्रद्धांजलि

सिंचाई मन्त्री तथा दूसरे महानुभावो द्वारा आर्य बालगृह को सहायता

आर्य कुमार सभा, पटौदी हाउस, दरियागंज, दिल्ली (आर्य बाल गृह) मे महर्षि दयानन्द जी का बोधोत्सव बड़े उत्साह और धूमधाम से सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर केन्द्रीय सिंचाई मन्त्री श्री केदार पाडे, कौमी एकता समिति के अध्यक्ष श्री इसरारुलहक सदस्य राज्य सभा, श्री ओम्प्रकाश जी,महामन्त्री आर्य केन्द्रीय सभा, श्री प० क्षितीश कुमार जी वेदालकार, सम्पादक आर्य जगत, श्री महेन्द्रकुमार शास्त्री, श्री सुरेन्द्र वर्मा हिन्दी सलाहकार समिति योजना मन्त्रालय, आदि महानुभावों ने अपनी श्रद्धा-जलियां अर्पित की। उत्सव में बालक बालिकाओं के सांस्कृतिक कार्यक्रम बहुत सराहनीय रहे।

श्री केदार पांडे जी ने अपनी ओर से ५०१/= श्री किशोरी लाल जी ने ७०१/= श्री ईश्वरदास जी कवात्रा ने २०००/= श्री ओम्प्रकाश जी ने २५१। =तथा अन्य अनेक महानुभावों ने भी बालकों का उत्साह सवर्द्धन किया।

आर्यसमाज नयाबांस का वार्षिकोत्सव आर्यसमाज उत्थान सम्मेलन

२, ३, ४, अप्रैल,१९८२ को मनाया जाएगा। इस उत्सव के सान्निध्य मे १८ से २४ मार्च तक आचार्य पुरुषोत्तम एम० ए० की कथा होगी तथा २५ मार्च से १ अप्रैल तक स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती अपनी ज्ञानवर्द्धक कथा प्रस्तुत करेगे। इन कथाओ का समय नित्य रात्रि को ८-४५ से ९-४५ तक है। कथा से पूर्व पं० सत्यदेव सगीताचार्य श्री वेद व्यास एव श्री पन्नालाल पीयूष के मनोहर शिक्षाप्रद भजन होंगे।

२५ मार्च से ४ अप्रैल तक प्रात ६½ से ९ बजे तक सामवेद पारायण यज्ञ होगा। ब्रह्मा का पद वैद्य रामकिशोर जी सुशोभित करेगे।

रविवार ४ अप्रैल को प्रो० रामसिंह की अध्यक्षता मे आर्यसमाज उत्थान सम्मेलन होगा। इस अवसर पर अमर स्वामी जी, बालदिवाकर हस, चिन्तामणि जी, उत्तम चन्द शरर, रामगोपाल जी शालवाले भाषण देगे।

अद्भुत होली मिलन

पलवल। आर्य वीर दल हरियाणा के तत्वावधान मे आर्यसमाज न्यू कालोनी पलवल मे तीनों आर्यसमाजों एव सनातन धर्मियो ने मिलकर होली खेलने की एक नई परम्परा का शुभारम्भ किया।

कार्यक्रम का उद्घाटन यज्ञ द्वारा किया गया। तत्पश्चात् होली के महत्व पर प्रकाश डाला गया। श्री सोहनलाल पथिक, श्री सत्यपाल आर्य एव बहिन राजबाला जी ने मधुर गीतो द्वारा समा बध दिया। श्री जगवीर जी ने भावपूर्ण कविता पाठ किया। श्री वीरभान आर्य, लक्ष्मीचन्द आर्य, लेखराम आर्य, आनन्द स्वरूप भाटिया आदि आर्य विद्वानो ने होली के महत्व के विभिन्न पहलुओ पर प्रकाश डाला।

गोबध पर लगा प्रतिबन्ध सख्ती से लागू किया जाए।

राज्यों के मुख्य मन्त्रियों को प्रधान मन्त्री का पत्र

नई दिल्ली, जानकार सूत्रो से मालूम हुआ कि भारत के प्रधान मन्त्री श्रीमती-इन्दिरागाधी ने, उन राज्यो के मुख्य मन्त्रियो को जहा गोवध पर प्रतिबन्ध लगा हुआ है, पत्र भेजकर यह आग्रह किया है कि वह प्रतिबन्ध पूरी सख्ती से लागू किया जाय। प्रधान मन्त्री ने आचार्य विनोवा भावे के इस सुझाव की भी सराहना की कि जिसमे कहा गया था कि गोवश की हत्या समाज सेवको को गोवशकी हत्या के प्रतिबन्ध को लागू करने के कार्य से सम्बद्ध किया जाए, जिससे भ्रष्टाचार पर भी अकुश रखा सके।

प्रधानमन्त्री को यह सूचना मिली थी कि कुछ राज्यो मे जहा विकलांग और सूखे पशुओ की हत्या की अनुमति है, वहा पर बूचडखानो के भ्रष्ट लोग इन्सपेक्टरों से साठगाठ करके स्वस्थ पशुओं की भी हत्या करते रहते हैं। स्वस्थ गौओं और बछडो को मारने के लिए उन्हें जानबूझ-कर लगडा या विकलाग बनाकर वध की अनुमति प्राप्त कर ली जाती है। इस देश मे गोवश की रक्षा की विचित्र स्थिति है। जम्मू-कश्मीर मुस्लिम बहुल राज्य मे गोवश के वध पर पूर्ण प्रतिबन्ध है, कुछ राज्यो मे उसकी हत्या पर पूर्ण प्रतिबन्ध है, बगाल और केरल मे कोई प्रतिबन्ध नही है।

आर्यसमाजों के सत्संग

२१ मार्च, १९८२

अशोक विहार के-सी-५२-ए—प० ओम्प्रकाश भजनोपदेशक, अशोकनगर—प० विश्वप्रकाश शास्त्री, आर के पुरम सेक्टर ५—श्री देवीचरण बन्सल, आर के पुरम सेक्टर ६—प० मुनिशकर वानप्रस्थ, आनन्द विहार—प० कामेश्वर शास्त्री, इन्द्रपुरी—प० प्राणनाथ सिद्धान्तालकार, किशनगज मिल एरिया—श्रीमती सुशीला राजपाल, किग्जवे कैम्प—श्रीमती लीलावती आर्या, कालकाजी डी-डी-ए फ्लैट्स—प० परमेश शर्मा, कृष्ण नगर—मास्टर ओम्प्रकाश, गाधी नगर—प० खुशीराम शर्मा, ग्रेटर कैलाश-१—प० छविकृष्ण शास्त्री, गुड मण्डी—प० मनोहरलाल ऋषि भजनोपदेशक, १५१ गुप्ता कालोनी—कविराज—बनवारीलाल शादा भजन मण्डली; गोविन्दपुरी—प० अशोककुमार विद्यालकार, चूनामण्डी-पहाडगज—डा० रघुनन्दन सिह, जगपुरा-भोगल– प० जयभगवान भजन मण्डली, जनकपुरी बी ३/२४—प० आशानन्द भजनोपदेशक, टैगोर गार्डन—स्वामी प्रेमानन्द; तिलक नगर—प० रामरूप शर्मा, तिमार पुर—प० उदयपाल शास्त्री, दरियागज—आचार्य दिवाकर शर्मा, नारायणविहार—प० रघुराज शास्त्री; नया बास—श्री चमनलाल, न्यू मोतीनगर—स्वामी प्रज्ञानन्द; पजाबी बाग—प० प्रकाशचन्द वेदालकार, पजाबी बाग एक्सटेन्शन—प० हरिदत्त शास्त्री, प्रीतम पुरा—स्वामी स्वरूपानन्द भजन मण्डली, बाग कडे खा—प० बरकतराम—भजनोपदेशक, बिरला लाइन्स—ला० लखमीदास, मोडल बस्ती—आचार्य हरिदेव सि० भू, मोडल टाऊन—प्रो० सत्यपाल बेदार, महावीर नगर—प० भानुप्रकाश शास्त्री, महरौली—श्री मोहनलाल गाधी, रमेशनगर—प० छज्जूराम शास्त्री, राणा प्रताप बाग—प० सीसराम भजनोपदेशक, राजौरी गार्डन—प्रो० वीरपाल विद्यालकार, बसई दारापुर—श्रीमती प्रकाशवती शास्त्री; लड्डू घाटी—प० देवराज वैदिक मिश्नरी, लाजपत नगर—प० भगवानसहाय; लक्ष्मीबाई नगर—प० वेदव्यास भजनोपदेशक, लेखरामनगर-त्रिगर—वैद्य रामकिशोर; लारेन्स रोड– आचार्य दीनानाथ सिद्धान्तालकार' विक्रमनगर—प० रामनिवास; विनय नगर—प० हीराप्रसाद शास्त्री, सुदर्शन पार्क—प्रो० भारतमित्र शास्त्री, सोहन गज—ब्र० कृष्णदत्त, सराय रोहला—डा० जयनारायण वर्मा, श्री निवासपुरी—प० वेदपाल शास्त्री, शादीपुर—प० तुलसीराम भजनोपदेशक, हौज खास डी-२०—प० चन्द्रभानु सि० भू०, शालीमार बाग—प० सुधाकर स्नातक।

—ज्ञानचन्द्र डोगरा, वेद प्रचार विभाग

टंकारा में अपूर्व ऋषि बोधोत्सव

अपूर्व शोभा यात्रा : विभिन्न स्पर्द्धाओं का आयोजन

महर्षि दयानन्द स्मारक टकारा द्वारा संचालित महालय मैं ऋषि बोधोत्सव (शिवरात्रि) मनाया गया।

२६ फरवरी से यजुर्वेद पारायण यज्ञ का प्रारम्भ श्री सत्यदेव जी विद्यालकार की अध्यक्षता मे हुआ तथा २२ फरवरी को शिवरात्रि के दिन पूर्णाहुति हुई। यज्ञ के पाचो कुण्डो पर यजमानो का जमघट था।

ध्वजारोहण गुजरात प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री मगलसेन चोपडा जी के करकमलो से हुआ। उपदेशक महाविद्यालय के छात्रो द्वारा ध्वजगीत तथा कन्या-विद्यालय बडोदा की छात्राओ के बैण्ड ने शोभा मे खूब अभिवृद्धि की।

शोभा-यात्रा का दृश्य दर्शनीय था। आगे आगे ट्रैक्टर की सजी हुई ट्राली मे चल यज्ञ कार्यक्रम सम्पन्न हो रहा था। पीछे-पीछे कन्या महाविद्यालय बडोदा उपदेशक विद्यालय टकारा तथा भिन्न-भिन्न आर्य समाजो के लोग नाचते गाते चल रहे थे। ध्रागध्रा के दल ने अपना प्रदर्शन किया। १९५९ के बाद सम्भवत यह शोभा यात्रा सर्वाधिक आकर्षण का विषय थी।

छात्र-छात्राओ के लिए श्री हरिओ३म जी सिद्धान्ताचार्य ने हिन्दी वाद-विवाद—सस्कृत-भाषण—श्लोक-पाठ—वेद स्मरण—स्पर्द्धाओ का सयोजन किया। जिसमे उपदेशक विद्यालय टकारा कन्या माध्यमिक हाईस्कूल-जामनगर कन्या विद्यालय बडोदा के छात्र-छात्राओ ने प्रशसनीय प्रदर्शन किया।

उपदेशक विद्यालयो के नए स्नातको को विभिन्न आर्यसमाजो ने काम पर नियुक्त कर लिया। भारत सरकार के आदेश पर आकाशवाणी के विशेष प्रतिनिधि भी उत्सव मे पधारे। उन्होने सारा कार्यक्रम टेप-करके आकाशवाणी द्वारा प्रसारित किया।



आर्यसमाज मंगोलपुरी में होली-मिलन

दिल्ली की प्रसिद्ध पुनर्वास कॉलोनी मगोलपुरी मे नवस्थापित आर्यसमाज के अधिकारी एव सदस्य बड़े उत्साह से कार्य कर रहे है। २२ नवम्बर २१८१ को उन्होने 'हरिजन स्नेह सम्मेलन एव प्रीति-भोज' किया था, १४ फरवरी १९८२ को वहा 'ऋषि बोधोत्सव' मनाया गया और अब १० मार्च को २ से ५ बजे साय तक उन्होने बडे उल्लास के साथ 'होली मगल-मिलन' का कार्यक्रम। रखा होली-मिलन की कार्यवाही हवन-यज्ञ से आरम्भ हुई जिसके ब्रह्मा गीता सेकण्डरी स्कूल के एक विद्वान अध्यापक श्री जबर सिह भी पधारे थे। अधिकारियो ने बडे सद्भाव से क्षेत्र के हिन्दू, मुस्लिम, सिख सभी को आमन्त्रित किया हुआ था। मगोलपुरी की बाई की मस्जिद के प्रधान तोसिफ खा ने कहा कि समाज जैसी एक ईश्वर की भक्ति सिखाने वाली धार्मिक सस्था के कार्यक्रम मे किसी ने विघ्न डालने की कोशिश की है, तो हम इसे बुरी हरकत मानते है। शिवाजी कॉलेज के विद्यार्थी नेता श्री महावीर सिह ने ओजस्वी शब्दो मे कहा कि पर्व हमे सभी के सौहार्द्र की बढाने की प्रेरणा देता है, पर देश धर्म पर प्रहार करने वालो के विरुद्ध हमे लोहा लेना होगा। क्षेत्र के सनातन धर्मी नेता श्री-शम्भु नाथ पाण्डे ने अपने भाषण मे कहा कि होली पर्व असत्य पर सत्य की जीत का द्योतक है, भक्त प्रह्लाद की राक्षस हिरण्यकश्यप पर विजय की याद दिलाता है।

सभा के अन्त मे सभी गले मिले, चन्दन से सभी का तिलक किया गया और जलपान के पश्चात् प्रेम पूर्ण वातावरण मे शान्ति पाठ के साथ सभा विसर्जित हुई।

समारोह की सफलता का सेहरा आर्य समाज मगोलपुरी के प्रधान श्री मेघनाथ आर्य, मन्त्री श्री अमर सिह, की अध्यक्ष, प० श्री चन्द्र तथा उनके सभी सहयोगियो को है।

महर्षि दयानन्द (पृष्ठ ४ का शेष)

प्रबन्ध किया गया कि कोई व्यक्ति अन्दर न आ पाए और गुरु-शिष्य (स्वामी विरजानन्द) के बीच घण्टो वादविवाद चलता रहा है। द्वार रक्षक की एक व्यवस्था केवल इसलिए थी कि कोई अन्य वाद-विवाद को सुन न सके। इस वादा-विवाद मे केवल धार्मिक विवेचनाएं ही होती तो प्रहरी रखने की क्या आवश्यकता थी ? बेहतर होगा कि आर्यसमाज अपना पुनर्निरीक्षण करें कि वे महर्षि दयानन्द की सर्वांगीण विचारधारा के कहा तक अनुयायी हैं ? वेद को केवल धार्मिक ग्रन्थ तथा महर्षि दयानन्द को केवल धार्मिक पुरुष मानकर ही अब तक आर्यसमाज अपनी नीति व प्रोग्राम बनाता रहा है। क्या यही वेद तथा महर्षि दोनों के प्रति सम्पूर्ण समर्पण है ? महर्षि ने आर्यसमाज क तीसरे नियम मे स्पष्ट लिखा है—

"वेद सब सत्यविद्याओं की पुस्तक है।" वेद को केवल धार्मिक ग्रन्थ नहीं माना है। जब वेद केवल धार्मिक ग्रन्थ नही है तो आर्यसमाज के सगठन केवल धार्मिक सस्था कहा से हो गए ? आर्यसमाज का जन्म वेद की समग्र आस्थाओ प्रचार व प्रसार के लिए हुआ था न कि धार्मिकता के ही प्रचार प्रसार के लिए।

मानव समाज सुचारु रूप से सचालित हो सके एतदर्थ वेद की अपनी एक पूर्ण सामाजिक व्यवस्था है। मानव समाज की आर्थिक समस्याओं के प्रति भी वेद की अपनी एक विशिष्ट अर्थप्रणाली है जिसमें शोषण को कोई स्थान नही है पर दुर्भाग्य है कि आर्यसमाज के कर्णधार सामूहिक रूप से इससे पूर्णतया बिदकते ही रहे हैं जबकि व्यक्तिगत रूप से उनमे से अधिकाश अवैदिक राजनीतिक सस्थाओ के स्तम्भ बने हुए अवैदिक अर्थव्यवस्था के पोषक रहे हैं और हैं।

महर्षि की मानसिक व्यथा

महर्षि के जीवन की एक और घटना स्वामी जी बरेली में थे। किसी सज्जन के यहां दिन के प्रोग्राम के पश्चात् रात्रि विश्राम का आयोजन था। भोजनोपरांत घर के सभी प्राणी अपने-अपने कक्ष में थे। स्वामी जी के शयन के लिए एक अलग स्वच्छ कमरे में प्रबन्ध किया गया था। अर्द्धरात्रि के लगभग गृहपति को लगा कि स्वामी जी के कक्ष मे कोई जोर-जोर से चल रहा है। उन्होने समझा कि कोई अवाछनीय तत्व वहां आ पहुंचा है। वह भागे-भागे स्वामी जी के कमरे मे पहुंचे। वहां देखा कि स्वामी जी स्वय उद्विग्नावस्था मे कमरे बड़े वेग से इधर-उधर घूम रहे हैं। गृहपति ने समझा कि स्वामी जी की तबियत ठीक नहीं है अत. पूछ बैठे—"स्वामी जी, यदि आज्ञा हो तो किसी डाक्टर या वैद्य को बुला लाऊ, आपकी तबियत ठीक नहीं लग रही है।" स्वामी जी ने गृहपति को मना करते हुए जो उत्तर दिया वह इस प्रकार है—"नहीं मुझे कोई शारीरिक कष्ट नही है। मेरी वेदना मानसिक है। देश का श्रमिक जो सबके लिए उत्पादन करता है शाम को स्वय भूखा सो जाता है। उसकी दशा कैसे सुधारी जाय ? यही प्रश्न मुझे उत्पीड़ित किए हुए है—।" अब आर्यसमाज कर्णधार स्वय ही आत्मनिरीक्षण कर बतलाये कि अब तक वे महर्षि के प्रति कहां तक समर्पित रहे हैं ? क्या देश में श्रमिकों (मजदूर व किसानों) की दशा सुधर गई है ? सत्यता तो यह है कि उन्हे दोनो जून की रोटी आज भी नही मिल रही है।

आर्यसमाज के सगठनो की इस पलायनवादी या भगोडी नीति का दुष्परिणाम जो निकला सक्षेप मे इस प्रकार हमारे सामने है—

केवल स्थानीय आर्यसमाजों के ही नहीं अपितु जिला आर्यसभाओं, प्रान्तीय सभाओं तथा आर्यसमाज के शीर्ष संगठन के सदस्यों एक अधिकारियों में से—बहुत से लोग विभिन्न राजनीतिक दलो के सदस्य हैं। बाकी रहा महर्षि दयानन्द का आर्थिक एव राजनीतिक चिन्तन वह एक कोने मे पड़ा सिसकियां ल रहा है। धन्य है हमारी सभाएं जिनकी स्वामी दयानन्द के प्रति अटूट निष्ठा है। महर्षि दयानन्द का आर्थिक चिन्तन कार्ल मार्क्स के कम्यूनिज्म से भी कहीं बढ़कर पूंजीवाद का विरोध करता है।

कार्ल मार्क्स के कम्युनिज्म की आंधी अभी रुकी नहीं है वह बड़े वेग से बह रही है। उसने कुछ ही समय पूर्व अफगानिस्तान को अपने शिकजे मे ले लिया है। पाकिस्तान के द्वार पर दस्तक दे रही है और भारत के द्वार ही नहीं बल्कि भारत के अन्दर एकाध प्रांतों को अपनी लपेट मे ले चुकी है। यदि आर्यसमाज समय रहते ईमानदारी से महर्षि दयानन्द की सर्वांगीण आर्थिक व्यवस्था को आर्य युवकों के सशक्त कधों पर यथा शीघ्र रखकर इस कम्यूनिज्म की आंधी के समक्ष पहाड़ बन कर खडा न हुआ तो निश्चित है कि विभिन्न राजनीतिक साम्प्रदायिक दलों के पूजीवादी घरौंदे को तोडती हुई यह आंधी समस्त भारत को अपने चंगुल मे लपेट लेगी और उस समय राजनीतिक पार्टियों के साथ ... ओं के चारों धामो के ... राचार्यों को ही नही अपितु ... स्कृति व सभ्यता को भी ... । जिसकी रक्षार्थ ... तक करना पडा था।



अत मेरा आर्य युवकों से निवेदन है कि स्वतन्त्र रूप से महर्षि दयानन्द के आर्थिक दर्शन को भारत की पवित्र भूमि पर लाने के लिए अविलम्ब जुट जाएं। इसी मे सबका कल्याण है आर्य जगत का तथा भारतवर्ष का भी।

रानी सराय, आजमगढ़ (उ०प्र०)

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रकाशन

सत्यार्थप्रकाश सन्देश (हिन्दी)	१००
" " (अंग्रेजी)	समाप्त
आर्य सन्देश-महासम्मेलन विशेषांक	६.००
पादरी भाग गया—ओम्प्रकाश त्यागी	०.३०
स्वामी श्रद्धानन्द-बलिदान अर्द्ध शताब्दी स्मारिका	६.००
सत्यार्थप्रकाश शताब्दी समारोह स्मारिका	६.००

सम्पर्क करें—
अधिष्ठाता प्रकाशन विभाग
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा,
१५, हनुमान रोड,
नई दिल्ली-११०००१

卐 'आर्यसन्देश' के स्वय ग्राहक बनें—दूसरों को बनाए

卐 आर्यसमाज के सदस्य स्वयं बनें—दूसरों को बनाइए

卐 हिन्दी-सस्कृत भाषा स्वय पढ़ दूसरो को भी पढ़ाइए—

दिल्ली आर्यप्रतिनिधि सभा के लिए श्री सरदारी लाल वर्मा द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित तथा भाटिया प्रेस २५७४, रघुबरपुरा न० २ गांधीनगर दिल्ली-३१ मे मुद्रित। कार्यालय १५ हनुमान रोड नई दिल्ली फोन ३१०१५०

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक मुखपत्र

एक प्रति ३५ पैसे वार्षिक १५ रुपए वर्ष ६ अंक २३ रविवार २२ चैत्र वि० २०३८ ४ अप्रैल १९८२ दयानन्दाब्द १५७

राष्ट्रीय राजनीति में आर्यसमाज अपनी संगठित भूमिका प्रस्तुत करें

आर्य महासम्मेलन में आर्य नेताओं का उद्बोधन : रामलीला मैदान, भोलानाथ नगर, शाहदरा दिल्ली में आर्य महासम्मेलन एवं आर्यसमाज स्थापना-दिवस

दिल्ली। देश को स्वाधीन कराने में आर्यसमाज तथा आर्यसमाजियों का सर्वाधिक योगदान है, मुझे यह कहने में कोई संकोच नहीं है कि यदि महर्षि दयानन्द न होते तो हमारा देश आजाद न होता। आज केवल आर्यसमाज ही है जो राष्ट्ररक्षा सम्मेलन का आयोजन करता है, समाज-सुधार के रूप में आर्यसमाज अपना प्रभाव डालने में सदा सफल रहा है, वह राष्ट्रीय प्रश्नों पर सही बात मनवाने मे तभी सफल हो सकता है जब राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में आर्यसमाज अपनी भूमिका सगठित रूप से प्रस्तुत करे—।' इन ओजस्वी शब्दों मे उ० प्र० के भू० पू० मन्त्री एव भू० पू० संसद सदस्य श्री रामचन्द्र विकल ने २८ मार्च के दिन रामलीला मैदान, भोलानाथ नगर, शाहदरा दिल्ली में आयोजित आर्य महासम्मेलन मे आर्यजनों का सामूहिक उद्बोधन किया।

समस्याओं का समाधान केवल आर्यसमाज द्वारा

आर्य प्रतिनिधि सभापंजाब के प्रधान श्री वीरेन्द्र ने सम्मेलन का उद्घाटन भाषण देते हुए कहा—देश की परिस्थितियां बहुत ही कठिन हैं, इस्लामीकरण, भ्रष्टाचार, दहेज आदि अनेक कठिन समस्याओं का समाधान केवल आर्यसमाज ही कर सकता है।

परोपकारिणी सभा के प्रधान एव हरियाणा मे गुरुकुलो के प्राण स्वामी ओमानन्द जी ने कहा कि आज आर्यसमाज में त्यागी, विद्वान और सन्यासीके सम्मान की भावना का पुन. प्रवेश होना चाहिए, हमें भ्रष्ट राजनीतिज्ञों का स्वागत करने की जगह अपने विद्वानों एव योग्य सन्यासियों का सम्मान करना चाहिए।

विश्व आर्य महासम्मेलन लन्दन के प्रधान एव आज के सम्मेलन के अध्यक्ष श्री सत्यदेव भारद्वाज ने घोषित किया कि हमे दूसरे धर्म वालो से मिलते हुए उन्हे उनकी भाषा मे बोलने की कोशिश करनी चाहिए। अरबो के मुसलमानो से मिले तो उन्हे भारत की कुरान के रूप मे गीता को पेश करना चाहिए। इसी प्रकार विदेशी ईसाइयो को भारत की बाइबिल के रूप मे गीता को प्रस्तुत करना चाहिए। हमे स्नेह-विवेक और भाई-चारे से—इस देश की समस्याओ का समाधान करने के लिए—सच्ची सास्कृतिक क्रान्ति करनी चाहिए।

इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के संयुक्त मन्त्री श्री सच्चिदानन्द शास्त्री, एव वेदोपदेशक अशोक कुमार जी विद्यालकार ने भाषण दिए। फीजी मे समाज-प्रचार करने वाले पं० ब्रह्मदत्त स्नातक ने कहा कि हमें यह संकल्प करना चाहिए कि जब किसी प्रदेश या देश मे वैदिक धर्म का प्रचार करने जाएगे तब वैदिक धर्म का सन्देश उस देश या प्रदेश की भाषा के माध्यम से पहुचाने की कोशिश करेंगे।

सम्मेलन के स्वागताध्यक्ष श्री विद्याप्रकाश सेठी ने का स्वागत करते हुए कहा कन्याकुमारी मे ईसाइयोने तथा मीनाक्षीपुरम एवं देश के अन्य स्थानो पर मुसलमानो ने देश के सामने एक समस्या खड़ी कर दी है, हम किसी पर अन्याय नही करना चाहते, हम शान्ति के पुजारी हैं, परन्तु अन्याय के आगे शीष झुकाना बुद्धिमत्ता नही। वर्त्तमान परिस्थितियो मे हमे के साथ क्रान्ति को अपनाना होगा।

एक भव्य आयोजन

२६ से २८ मार्च तक दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के सयुक्त तत्वावधान मे आर्य महासम्मेलन का आकर्षक एव भव्य कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर यजुर्वेद पारायण एवं गोमेध महायज्ञ आयोजित किए गए। २६ मार्च को प्रात ६ बजे सार्वदेशिक सभा के कोषाध्यक्ष श्री सोमनाथ एडवोकेट ने ध्वजारोहण किया, इसी दिन गीता कालोनी के विशाल मदान से विशाल शोभायात्रा प्रारम्भ हुई, जो जमना पार की विभिन्न बस्तियों मे होती हुई रामलीला मैदान, भोलानाथ नगर मे सम्पन्न हुई।

सभी निष्पक्ष प्रेक्षकों एव स्थानीय अधिकारियों का ख्याल है कि जमनापार ऐसा भव्य और व्यवस्थित जलूस इससे पूर्व नही निकला था।

महासम्मेलन के अवसर पर २७ मार्च को दो उल्लेखनीय सम्मेलन हुए, दो बजे से श्रीमती प्रभातशोभा की अध्यक्षता मे वेद सम्मेलन हुआ और रात को ८ बजे से स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती की अध्यक्षता मे वेद सम्मेलन हुआ। महिला सम्मेलन मे श्रीमती उषा शास्त्री डा० प्रभा दीक्षित, श्रीमती शकुन्तला दीक्षित, डा० सुषमा शर्मा, श्रीमती सरोज दीक्षा ने भाषण दिए। महिला सम्मेलन का उद्घाटन मातृमन्दिर वाराणसी की सचालिका डा० पुष्पावती ने किया और आर्य-नारी का उत्तरदायित्व बताया।

वेद सम्मेलन मे डा० कृष्णलाल, डा० वाचस्पति उपाध्याय, डा० सत्यकाम वर्मा, डा० रघुवीर वेदालकार ने अपने विचार प्रकट किए।

गोलियां चलें या बम आर्यसमाज अमर रहेगा

आर्यसमाज स्थापना दिवस पर पंजाब प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री वीरेन्द्रजी की वीर घोषणा

दिल्ली। आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली राज्य के तत्वावधान में रविवार २८ मार्च को भोलानाथ नगर, शाहदरा दिल्ली में आर्य महासम्मेलन के विशाल पण्डाल मे आर्य-प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री वीरेन्द्र जी की अध्यक्षता में आर्यसमाज स्थापना दिवस का विशेष कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

अध्यक्ष पद से भाषण देते हुए श्री वीरेन्द्र जी ने कहा—आज पंजाब में गोलियां चल रही हैं, पर आर्यसमाज का झण्डा नहीं झुका, मैं कहूंगा कि चाहे गोलियां चलें या बम चलें, आर्यसमाज का काम चलता रहेगा, आज सबको मिलकर आर्यसमाज के झण्डे के नीचे देश की समस्याओ का समाधान करना होगा।'

इस अवसर पर मातृमन्दिर कन्या गुरुकुल वाराणसी की आचार्या डॉ० पुष्पावती जी, बिहार के पूर्व इमाम वर्तमान पं० जयप्रकाश जी, अ० भा० दलित वर्ग संघ के प्रिंसिपल श्री चिन्तामणि जी, हंसराज कालेज के प्राध्यापक डॉ० प्रशान्तकुमार जी परोपकारिणी सभा के प्रधान स्वामी ओमानन्द जी ने देश के सम्मुख उपस्थित समस्याओं के समाधान मे आर्यसमाज की भूमिका पर अपने विचार प्रकट किए।

इस अवसर पर स्वामी स्वरूपानन्द जी, विजयभूषण मण्डली, कर्तारसिंह, गुलशन तथा मातृमन्दिर वाराणसी की कन्याओं ने संगीत का मधुर कार्यक्रम प्रस्तुत किया।

सम्पादक—नरेन्द्र विद्यावाचस्पति

व्यवस्थापक—प्रद्युम्नलाल तलवाड़

वेद-मनन

स नो बन्धुर्जनिता

—मनोहर विद्यालंकार

आ हि ष्मा सुनवे पितापिर्यजत्यापये । सखा सख्ये वरेण्य ।। ऋक् १-२६-३

ऋषिः .—आजीगर्ति. शुन शेष. । देवता-अग्नि । छन्द.— प्रतिष्ठागायत्री ।

शब्दार्थ—(पिता सूनवे) जैसे पिता पुत्र के लिए (सखा सख्ये) मित्र मित्र के लिए और (आपि आपये) आप्त गुरु या बन्धु, आप्त बनने की इच्छा वाले शिष्य या बन्धु को योग्य बनाने के लिए (आयजति) अपना ज्ञान, अनुभव और सहयोग देता है, वैसे ही (अग्नि) सब को आगे बढ़ाने की इच्छा वाला परमात्मा (वरेण्य) सब के लिए सबसे अधिक वरणीय होने से (आयजति) सबको कर्मानुसार भोगों से सयुक्त करता रहता है।

निष्कर्ष—पिता, भाई या सखा मे से एक की उपस्थिति या सहायता मनुष्य को निश्चिन्त तथा आश्वस्त रखती है। परमेश्वर सबका पिता, बन्धु, गुरु और सखा है और सबके साथ सदा इन रूपों मे विद्यमान है, इसलिए विषय से विषम परिस्थिति मे भी कभी हतोत्साह और निराश न होकर सदा आगे बढ़ने का प्रयत्न करते रहना चाहिए।

यह परमपिता सदा सब को सुखप्रद पदार्थ देता रहता है। उन से हमे सुख मिलता है या दु ख, यह हमारे कर्म और सामर्थ्य पर निर्भर है। जैसे स्वस्थ मनुष्य दुग्ध, घृत के सेवन से शक्ति प्राप्त करता है, किन्तु रोगी को ये उत्तम पदार्थ भी हानि पहुचाते हैं। इसी प्रकार मनुष्य, अपने कर्मो के अनुसार और सामर्थ्य के अनुरूप, परमात्मा द्वारा प्रदत्त, प्रकृति के पदार्थों से सुख अथवा दु ख प्राप्त करता है।

विशेष—ऋषि, देवता, छन्द नामो के अर्थों से प्रेरणा तथा सगति।

ऋषि अपने नाम की भावना को जीवन म चरितार्थ करके ही देवता के समान या उसका सखा बन सकता है।

स्वय प्रगतिशील होकर दूसरो का नेतृत्व करने वाला—अग्नि, इस मन्त्र का देवता है। यदि कोई व्यक्ति अग्नि बनना चाहता है, तो उसे इस मन्त्र के ऋषि शब्दो के अर्थों से प्रेरणा लेकर, उनके आचरण का अनुकरण करना चाहिए।

आजीगर्ति —गर्त या गर्दिश मे पड़े हुए व्यक्ति को आशा और उत्साह का सदेश देकर उसे आगे बढ़ाने वालों की सन्तान या शिष्य,

शुन शेष.—सुख का निर्माण तथा कामना करने वाला। अर्थात् गर्त मे गिरने पर निराश न होकर, गर्दिश मे फसे लोगो मे आशा का सचार करके, उनक लिए सुखकर अवस्था का निर्माण करन वाला व्यक्ति ही अग्नि (नेता) बनाने की योग्यता रखता है।

इस मन्त्र का छन्द शब्दार्थ सकेत करता है कि प्रत्येक परिस्थिति मे अपने कर्त्तव्य का पालन और प्रभु की स्तुति करने वाला अवश्य प्रतिष्ठा प्राप्त करता है।

आजीगर्त्ति शब्द अपने अर्थ से यह भी संकेत करता है कि आध्यात्मिक साधना के लिए घर को छोडकर वानप्रस्थी या सन्यासी बनना आवश्यक नही है। गृहस्थ धर्म का पालन करते हुए भी आध्यात्मिक साधना की जा सकती है।

अर्थपोषक प्रमाण—शुन [1]सुखनामा नि० ३-६ शेष: रूपनाम। नि० ३-३६

१ विपत्ति के गर्त मे पड़े मनुष्यो को उत्साह और सहायता दन वाला

२. घर मे रहकर ऊची से ऊची साधना करने वाला।

गत. गृहनाम। नि० ३-४

गायत्री—गायन्त त्रायते; स्तुति करने वाले प्रगतिशील की रक्षा करती है प्राचीमारोह गायत्री त्वावतु। यजु १०-१०

प्राणा वै गया.। यत् प्राणान् तत्र तस्माद् गायत्रीनाम शत १४-७-१५-६

५२२, ईश्वर भवन, खारी बावड़ी
दिल्ली-६

मैंने किससे क्या सीखा है !

मैंने माता से सीखा है, सबको गले लगाना।
चाद-सितारो से सीखा, निशि मे अमृत बरसाना।।
शुद्ध सलिल से सीखा मैंने, सबका मन हरषाना।
ओर धुए से सीखा मैंने, ऊपर को उठ जाना।।
मैंने नद-नालो से सीखा, हरदम आगे बढ़ना।
त्यागी तरुवर से सीखा है, सबकी सेवा करना।।
सूर्य-रश्मियो से सीखा है, अन्धकार सब हरना।
और कटोले काटो से सीखा, रखवाली करना।।
मैंने बापू से सीखा है, कष्टो मे मुस्काना।
वीर जवाहर से सीखा है, पतझर मे भी गाना।।
हे सुभाष से सीखा मैंने, जनता का मन हरना।
अपना तक अस्तित्व मिटाकर सबकी सेवा करना।

—ब्रजभूषणसिंह 'आदर्श'

शत्रु का नाश अवश्य करो

व्याघ्रं दत्वतां वयं प्रथमं जम्भयामसि !
आवुष्टेनमथो अहि यातुधानमथो वृकम् ।।अथर्व ४.३.४

मनुष्य प्रयत्नपूर्वक दुष्ट जन्तुओ और उनके समान दुष्ट स्वभाव वाले चोर-डाकुओ, रोगो तथा दोषो को अवश्य नष्ट करे।

तान भुजाएं आर्यवीर तू बलशाली मतवाला बन।

—भैरवदत्त शुक्ल

एकता 'सुता' की 'तृण' रोटी, छल-बिल्ली ने खाई रे,
झुक पौरुष-'प्रताप' ने फिर भी, हिचक नही दिखलाई रे,
परम्परा की 'हल्दीघाटी' मे घिर गया छलावों से,
आंख खोल कर देख, आपदा, जो सहसा बढ़ आई रे,
प्राण समर्पित करके अपने, बलिदानी युग-'झाला' बन।
तान भुजाएं आर्यवीर तू, बलशाली मतवाला बन।।
'लेखराम' को अलख जगा दे, गुरुदत्तों की फौज सजा,
कोटि 'चमूपति' पनपा पल मे, तर्क - नगाड़ा बड़ा बजा,
'रामचन्द्र देहलवी' आज, बन जाने की वेला आई,
राग-तान मनचले 'प्रकाशों, की ना जाए आज लजा,
श्रद्धानन्द सरीखा निर्भय त्यागी गुरुकुल वाला बन।
तान भुजाए आर्यवीर तू, बलशाली मतवाला बन।।
आपस की खींचातानी का, जुल्म न उठकर धाए रे,
दयानन्द की विमल धरोहर, व्यर्थ न होने पाए रे,
गूजे रम्य चऋचाए प्यारी, भारत ही क्या जग भर मे,
'ब्राह्मण'—'आरण्यक - पूजी, का अर्थ-व्याज बढ़ जाए रे,
स्वाध्याय-अर्चि से शिव समृद्ध, पावक की मधु -ज्वाला बन।
तान भुजाए आर्यवीर तू, बलशाली मतवाला बन।।

द्वारा—श्री हरीशचन्द्र, रेलवे बुकस्टाल
स्थान पो० तिकुनिया, जि० खीरी (उ० प्र०)

बोध-कथा

अपूर्व क्षमाशीलता

भारत के महाराष्ट्र प्रदेश मे सन्त एकनाथ नामक एक तपस्वी महात्मा हुए है। एक दिन वह नदी से स्नान कर अपने निवासस्थान की ओर वापस लौट रहे थे कि रास्ते के एक बड़े पेड से किसी ने उन पर कुल्ला कर दिया। एकनाथ ने ऊपर देखा तो पाया कि एक आदमी ने उन पर कुल्ला कर दिया था। वह एक शब्द नही बोले—वह नदी पर दुबारा गए, फिर स्नान किया, उस पेड के नीचे से वह लौटे तो उस आदमी ने फिर उन पर कुल्ला कर दिया। एकनाथ बार-बार स्नान कर उस पेड़ के नीचे से गुजरते और वह बार बार ऊपर कुल्ला कर देता। इस तरह से एक बार नही, दो बार नही, सन्त एकनाथ ने १०८ बार स्नान किया और उस पेड के नीचे से गुजरे—और वह दुष्ट अपनी दुष्टता का नमूना पेश करता रहा। एकनाथ अपने धैर्य और क्षमा पर अटल रहे, उन्होने एक बार भी उस व्यक्ति से कुछ नही किया, अन्त मे वह दुष्ट पसीज गया और महात्मा के चरणो मे झुककर बोला—महाराज, मेरी दुष्टता को माफ कर दो। मेरे जैसे पापी के लिए नरक मे भी स्थान नही है। मैंने आपको परेशान करने के लिए खूब तग किया, पर आपका धीरज नही डिगा। मुझे माफ कर देंगे।'

महात्मा एकनाथ ने उसे ढाढस देते हुए कहा—'कोई चिन्ता की बात नही। तुमने मुझ पर मेहरबानी की, आज मुझे १०८ बार स्नान करने का तो सौभाग्य मिला। कितना उपकार है तुम्हारा मेरे ऊपर।'

सन्त के कथन से वह दुष्ट युवक पानी-पानी हो गया।

—नरेन्द्र

वह सब के लिए कल्याणकारी हो !

ओ३म् शं नो मित्र. शं वरुण· श विष्णु. शं प्रजापतिः।
शं न इन्द्रो बृहस्पतिः श नो भवत्वर्यमा॥

यजु ३६. ९ ऋ १.९०

सब का स्नेही, सबको मरण से त्राण करने वाला परमपुरुष शान्तिदायक हो, सर्वश्रेष्ठ, सबके वरण करने योग्य एव सब शत्रुओंवारक पुरुष कल्याणकारी हो। व्यापक, सर्वत्र प्रभुता से सम्पन्न व्यवस्थापक परमेश्वर ऐश्वर्यवान् बृहती वाणी के स्वामी, दुखों के नियामक परमेश्वर हम सबके लिए कल्याणकारी हों।

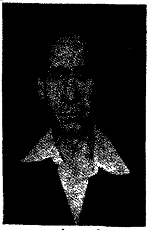
ओ३म्
आर्य सन्देश

इतिहास के तथ्य बदले नहीं जा सकते !

किसी भी देश का इतिहास उस देश के वासियों के सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक एव अन्य सभी क्षेत्रों की अनवरत यात्रा का एक लेखा-जोखा होता है। इस दीर्घ यात्रा का वास्तविक विवरण किसी भी देश के पुरातत्व, इतिहास-विवरण, प्राचीन साहित्य, जनकथाओं, जन दस्तावेजों, धात्वीय मुद्राओ, मूर्तियों, कलाओं एव अनेक आधारभूत तत्वों में निहित होता है। एक देश की अनुश्रुतियो में घटना का एक विवरण मिल सकता है, परन्तु उसी घटना के समय के लेखकीय उद्धरणों मे कुछ दूसरा ब्यौरा मिल सकता है। अनेक साक्षियो, विवरणों के आधार पर एक ऐतिहासिक सच्चाई निर्धारित कर उसे सत्य स्वीकार किया जाता है। यह ऐतिहासिक तथ्य कई बार मन की भावना के अनुकूल हो सकता है तो कई बार उससे मन मे वितृष्णा या असन्तोष पैदा हो सकता है, पर मन की अनुकूलता या प्रतिकूलता के कारण ऐतिहासिक तथ्य या सचाई बदली नही जा सकती। ज्ञात हुआ है कि केन्द्रीय सरकार तथा कुछ वामपन्थी सरकारें इस प्रकार का प्रयत्न कर रही है जिससे इतिहास नए सिरे से लिखा जाए। इस इतिहास मे मध्यकाल के मुसलमान आक्रान्ताओ के पाशविक एव बर्बर आक्रमणो और कत्ले आम पर जोर न दिया जाए उसमे केवल साम्प्रदायिक सद्भाव का विवरण ही दिया जाए।

यह ठीक है कि जनजीवन मे पाशविकता और बर्बरता का स्थान नही होना चाहिए, यह भी ठीक है कि हमे अपने प्रत्यक आचार-व्यवहार मे धार्मिक एव साम्प्रदायिक सद्भाव स्थिर रखना चाहिए, इस बात से भी इन्कार नही किया जा सकता कि भूतकाल से सदा के लिए चिपटे रहना भी अनुचित है, परन्तु इसी के साथ यह भी अनुचित है कि हम भूतकाल के कटु अनुभवो से सीख न ले। इसी के साथ कुछ ऐतिहासिक तथ्यो और सचाई को केवल इसलिए नकारना भी अनुचित है कि उसमे पाशविकता और बर्बरता है। विश्वविख्यात इतिहासकार विल डुरेण्ट ने अपनी पुस्तक सस्कृति की कहानी (स्टोरी ऑफ सिविलाइजेशन) मे लिखा है—'भारत पर मुसलमानो की विजय इतिहास का सर्वाधिक रक्तपातपूण परिच्छेद है।' स्वय मुस्लिम इतिहासकारो के अनुसार अलाउद्दीन खिलजी, महमूद गोरी, तुगलक, तैमूर, नादिरशाह, औरगजेब आदि ने असख्य भारतीय जनता का कत्लेआम किया, असख्य मूर्तिया विकृत की, भारतीय पूजास्थानो को विकृत कर वहा मस्जिदे बनाई गईं, और बहुसख्यक भारतीय प्रजा का तलवार या शक्ति के बल पर धर्म-परिवर्तन किया गया। पुस्तकालयो और साहित्य को इन आक्रान्ताओ ने जलाया, महिलाओ के साथ बलात्कार किया या बादी बनाया गया या दासो के रूप मे बेच दिया गया। नरमेध के इतिहास मे तैमूर का दूसरा कोई उदाहरण नही। तुजक ए तैमूरी म तैमूर ने अपने धम ग्रन्थ की आयत का उद्धरण देते हुए घोषित किया है—'नापाक और काफिरो के विरुद्ध जेहाद छेड़ दें, उनके साथ कठोर बर्ताव करे।' सम्भवत. कुरान की इसी तालीम का असर है कि इस्लाम जहा भी गया, उसने विनाशलीला ही की।

इतिहास के ग्रन्थो के पन्नो से इन कटु तथ्यो को कैसे मिटाया जा सकता है। फिर इन तथ्यो को रोशनी देने वाले आक्रान्ताओ के अपने ही लेखक और इतिहासकार हैं। इतना ही नहीं, पुराने जमाने की सचाई को तो इतिहास के पन्ने पलट कर ही जाना जा सकता है। इस शताब्दी के शुरू मे दक्षिणी भारत मे मलाबार अवस्थित मोपला लोगों ने अग्रेजो से विरोध के नाम पर वहा की बहुसख्यक जनता पर अत्याचार किए, उनका धर्म-परिवर्तन किया। जिहाद के नाम पर कत्लेआम किया। इतिहास मे यदि एक मजहब तलवार और असहिष्णुता के आधार पर कत्लेआम के बल पर बढा है तो उसे आज करुणा और भाईचारे का प्रतीक कहना तथ्यो को झुठलाना है। भारत के आर्य बौद्ध, जैन, सिख धर्म, सदा स्नेह, अहिंसा, सद्भाव के बल पर बढ़े हैं, उन्होने न तो विचार-परिवर्तन के लिए तलवार का सहारा लिया, न हिंसा या प्रलोभन का दामन पकडा, जैसा कि सामूहिक परिवर्तन के लिए द० भारत मे मुस्लिम या ईसाई साम्प्रदायिक तत्व कर रहे हैं। भारतीय सविधान धर्म एव अभिव्यक्ति की स्वाधीनता देता है, पर इसका अर्थ यह भी नही है कि प्रलोभन या हिंसा द्वारा किसी दूसरे की सदिच्छाओ से खिलवाड किया जाए। इसी के साथ दूसरो का सद्भाव पाने के लिए इतिहास के तथ्यो को छिपाकर उन्हे नए रूप मे प्रस्तुत करना भी अनुचित है। भारत के मुसलमान और ईसाई यदि अपने इस देश का वफादार नागरिक समझते हैं तो उन्हें मातृभूमि के प्रति वफादार होते हुए इस देश की बहुसख्यक जनता से स्नेह और भाईचारे का व्यवहार करना होगा, उन्हे ताकत और प्रलोभन के रास्ते को सदा के लिए छोड़ देना होगा।



सफल आर्य महासम्मेलन

मुझे यह लिखते हुए हर्ष हो रहा है कि सभा द्वारा आयोजित जनतापार का आर्य महा-सम्मेलन हर प्रकार से सफल रहा। शोभा-यात्रा का कार्यक्रम अति प्रशसनीय रहा। कार्यालयो, स्कूलों में छुट्टी न होते हुए भी जलूस मे बहुत अच्छी उपस्थिति थी, भजन मडलिया और टेम्पू जलूस की शोभा बढा रहे थे। स्कूलो के बच्चे अधिक मात्रा मे थे। जलूस के रास्ते मे कदम कदम पर जलपान तथा स्वागत का प्रबन्ध था। जलूस आशा से अधिक सफल रहा।

आखिरी दिन 28-3-82 को सारे सम्मेलन अति उत्तम रहे। ऋषि लगर का प्रबन्ध प्रयाप्त मात्रा मे था जो सांय ५.०० बजे तक चलता रहा। मेरी ओर मेरे मंडल की ओर से सभा को बधाई हो। राम सरन दास

आर्यसमाज—नया साज, नई आवाज जरूरी

डा० विजय द्विवेदी

'आर्यसमाज' की स्थापना के एक सौ सात वर्ष पूरे हो रहे हैं। पिछले एक सौ वर्षों के आर्यसमाज के इतिहास पर दृष्टि डालने मे यह स्पष्ट हो जाता है कि इस काल खण्ड मे 'समाज' की प्रगति न केवल सराहनीय रही है, अपितु 'आर्यसमाज' ने देशवासियो को सोचने समझने एव आचरण करने हेतु एक ऐसी जीवनदृष्टि प्रदान की है, जो अपने आप मे अन्यतम है। सरदार के० एम० पनिकर के अनुसार यदि अग्रेजी शासन की भारत को अन्यतम देन 'कानून का शासन' है, तो 'आर्य समाज' की भारत को अद्वितीय भेंट वैदिक जीवन पद्धति है। आर्यसमाज ने पराधीन भारत मे स्वाधीनता की अग्नि प्रज्ज्वलित की थी वैचारिक क्रान्ति उत्पन्न की थी तो स्वाधीनता भारत मे धर्म की रक्षा, शुद्धिकरण, सामाजिक ढकोसलो और सब प्रकार की विषमताओं को दूर कर मानव जीवन को दिव्य बनाने मे अपना सब कुछ दाव पर लगा दिया है। यह काम बडा काम नही है। महर्षि दयानन्द ने एक सौ सात वर्ष पूर्व जो सपना देखा था, जिन आदर्शों को भारतीय जनता के समक्ष रखा था, जो उत्तरदायित्व 'समाज' के क्रियान्वयन हेतु प्रस्तुत किया था, 'समाज' ने उन्हें पूरा करने का सराहनीय प्रयास किया है। जाति-पाति, छुआछूत, शिक्षा सस्कृति, हिन्दी का प्रचार-प्रसार, आदि क्षेत्रों मे आर्यसमाज ने जो कुछ किया है, उसकी उपेक्षा करना किसी भी विवेकशील व्यक्ति के लिए सम्भव नही है। मगर इसका मतलब यह नही निकालना चाहिए कि 'आर्यसमाज' का लक्ष्य पूरा हो गया है।

आज, युग बदल गया है। युग के साथ-साथ सब कुछ बदल गया है। जब देश पराधीन था, तव देश की सम्मिलित लोकशक्ति के सामने एक ही लक्ष्य था—देश की आजादी। आज जब देश आजाद हो गया है, वे लोकशक्तियां जो देश को जगाने मे जुटी हुई थी, अब सत्तालोलुपता आदर्शहीनता, देशद्रोह, भ्रष्टाचार आदि बुराइया बढा रही हैं। इन्ही बुराइयो के कारण आज स्वाधीन भारत मे चारो ओर हिंसा, अराजकता, विश्रृंखला, क्षुद्र स्वार्थों के लिए कुत्सित सघर्ष की भयावह स्थिति दिखाई पड़ रही है, जिसके चलते जनसाधारण मे बेचैनी एव निराशा व्याप्त हो गयी है। इस स्थिति को देश की लोकतंत्री शासन प्रणाली हवा दे रही है। सत्ता के शीर्ष स्थान पर बैठे देश सेवक (?) अपना घर भरकर दूसरों को त्याग-तप, बलिदान का उपदेश दे रहे है। स्वय देश जाति के साथ विश्वासघात कर देश के ठेकेदार अन्य को देशभक्ति का पाठ पढ़ा रहे है—वह भी एक ऐसी भाषा मे जो अपनी नही है।

ऐसी विषम स्थिति मे आज आर्यसमाज के सामने सौ वर्ष पहले की उपेक्षा अधिक गुरुतर दायित्व आ गया है। वह दायित्व है—देश मे नैतिक-आध्यात्मिक आर्थिक-सामाजिक—सब प्रकार के न्यायोचित परिवेश की सृष्टि करना एव वैचारिक क्रान्ति के नए पथ पर जन-साधारण को आगे बढाना। यह तभी सम्भव हो सकेगा, जब 'आर्यसमाज' स्वय अपने को युग की जरूरतो और परिस्थितियों के अनुरूप बदले। जनता की समस्याओ को समझने और उन्हे दूर करने की दिशा मे जुडे। तीर-तलवारो से जैसे आज की लडाइया नही जीती जा सकती है, उसी तरह सौ वर्ष पुरानी पद्धति से देश का जनमानष भी नही जीता जा सकता है। महर्षि दयानन्द ने 'आर्यसमाज' के ४-५ नियमो मे स्पष्ट व्यवस्था दी है कि 'सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य, असत्य को विचार करके करना चाहिए। इस सत्यासत्य मे युग जीवन के सत्यासत्य समाहित हैं। इसका एक अर्थ यह भी है कि ससार की कोई भी रीति-नीति चिरन्तन होकर नही रह सकती। उसमे परिवर्तन अवश्यम्भावी है। जो एक ही जगह पर टिके रह जाते है, कालगति या तो उन्हे तोड़ देती है, या फिर पीछे छोड़ देती है। इस देश मे ऐसे बहुत से शिक्षित सम्भ्रान्त लोग हैं, जो यह सोचते हैं कि 'आर्यसमाज' त, चौथेपन का समाज है, धरम-करम, वेदो पुराण, पूजा-पाठ का 'समाज' है। इसमे अभी से जाकर क्या होगा ? कुछ का विचार है, कि यह जनेऊ पहनाकर, वेद पढाकर अहिन्दुओं का उद्धार करने वाला 'समाज' है। इसके लोग किसी का छुआ अन्न ग्रहण करके, अथवा देश भक्ति पर भाषण देकर, अपने को बड़ा सुधारक समझते हैं। अपना घर बसाकर दूसरों से घर फूंकने के लिए कहते हैं। ये भी सामाजिक मर्यादा की दृष्टि से उतने ही हीन है, जितना दूसरे समाज हैं। केवल अकड़ है। ये आक्षेप 'समाज' की की रूढिवादिता के कारण पैदा हुए हैं।

रीति-नीति मे बदलाव आवश्यक

अत इन आक्षेपो से बचने और 'समाज' को गतिशील बनाए रखने की दृष्टि से, इसकी रीति-नीति मे बदलाव जरूरी हो गया है। 'आर्यसमाज' यदि युग की जरूरतो के अनुसार नही चलेगा तो विरोधी स्वार्थों और विरोधी-संस्कारों की चपेट मे आ जाएगा। स्मरण रहे, आर्यसमाज, का लक्ष्य, गांवों और शहरों में फैली हुई, बहुधा विभक्त, विजडित: स्तब्ध जनता का कल्याण चिन्तन है। यही साध्य है, बाकी सब कुछ साधन। इसको पाने के लिए वेद-विद्या जितनी जरूरी है उतनी ही आवश्यक है, उन रहस्यों की जानकारी जिनके कारण दूसरी आध्यात्मिक-धामिक, संस्थायें विद्युत गति से आगे बढती जा रही हैं। अपने विरोधियों पर धावा बोलने के लिए तैयार रहती है और जरूरत के वक्त राजनीति से भी हाथ मिला लेती है।

चार बातों पर ध्यान देना होगा

आज के आर्यसमाज को यदि सारे ससार को 'आर्य' बनाना है, तो उसे चार बातो पर गहराई से विचार करना होगा—एक, धर्म, दो राजनीति, तीन—अर्थनीति, चार—युगप्रवृत्ति। 'धर्म' की दृष्टि से 'समाज' के आदर्शों एव सिद्धान्तों मे कोई परिवर्तन नही हो सकता है। इन आदर्शों की शक्ति के बल-बूते पर ही हम मानव-समाज को भीतर और बाहर से 'आर्य' बनाने निकले हैं। अज्ञानता, कुसस्कार, गदगी और वर्तमान की कुत्सा से लड़ रहे है। मनुष्य को अनन्त सुख और शाश्वत आध्यात्मिक समृद्धि तक पहुंचाने के लिए प्रतिश्रुत है। राजनीति, आज की जनता की दुर्गति का कारण भी है और उसके निवारण का साधन भी। अत राजनीति से असम्पृक्त रहकर 'समाज' जनजीवन मे आपेक्षित सुधार नही ला सकता है, यह निश्चित है। इस लिए 'समाज' के भीतर इस बात पर विचार किया जाना चाहिए कि राजनीति के साथ हम किस स्तर और किन मुद्दों पर सहयोग करके उसे न्यायोचित एवं जन जीवनउपयोगी रूप दे सकते है। आर्य-सस्कृति में जो कुछ श्रेष्ठ और रक्षणीय है, उसकी रक्षा करते हुए एक ऐसे समाज का निर्माण जो भौतिकता और आध्यात्मिकता की दृष्टि से संतुलित हो, जिसके सदस्य मानवीय गुण एव गरिमा मे विश्वास रखते हो, भारत-भारतीय से परिपुष्ट हों—राजनीति के सहयोग के बिना सम्भव नही है। है। आज के समाज की रीढ़ अर्थनीति है। समाज के सारे व्यापार आज अर्थाश्रित हैं। धन के बिना किसी का काम नही चल रहा है, चाहे वह 'समाज' हो या संगठन इसलिए 'आर्यसमाज' को केवल चन्दा चिट्ठा और दानदाताओं पर निर्भर न कर अपनी स्वतन्त्र आर्थिक योजनायें तैयार करनी चाहिए। इन योजनाओ को लागू करके 'समाज' धन हेतु व्यक्तियो को आश्रिता से मुक्त हो सकता है, वक्त जरूरत पर निर्धनो की सहायता कर सकता है, संगठन को मजबूत बना सकता है। इससे प्रचार तन्त्र को मजबूत बनाने एवं व्यापक रूप देने मे भी सुविधा होगी। आज संसार के सामने महाविस्फोटक एव विनाशक स्थिति पैदा हो गई है। इस स्थिति का सामना आर्य समाज' अग्रतश्चरो वेदान् पृष्ठत: सशरं धनु:' से ही कर सकता है। वेद हमारे पास हैं, जरूरत केवल 'सशर धनु:' की है। 'धनु' और 'शर' का निर्माण विज्ञान करता है। अत: विज्ञान की नई भूमिका की जानकारी भी 'समाज' के लिए वेद जितनी ही जरूरी

प्रचारतन्त्र में परिवर्तन अपेक्षित

अन्त में एक विनम्र निवेदन। युग बदल गया है, युग के साथ, स्थान-काल, पात्र की भूमिकाये बदल गयी हैं। लोगों की मति-गति बदल गयी हैं। मगर 'आर्य समाज' का प्रचारतन्त्र नही बदला है, इसमें परिवर्तन नितान्त जरूरी हो गया है। आज इसी के चलते 'समाज' केवल मुट्ठी भर बुद्धिजीवियों तक ही सीमित रह गया है। इसे जन साधारण तक ले जाना जरूरी है। यह काम-प्रचार साधनों द्वारा ही हो सकता है। प्रचार माध्यमो मे पत्र-पत्रिकाओ का स्थान अन्यतम है। इसलिए 'समाज' समर्थक पत्रो को ऐसी नीति अपनानी चाहिए, जिससे जन-साधारण आकर्षित हो। जनता को आकर्षित न कर पाने के कारण ही आज 'आर्य समाज' से युवावर्ग, कवि, कलाकार, शिक्षा समाजशास्त्री वगैरह कट गए हैं। अब हमारे साथ न तो उच्च कोटि के विद्वान दिखाई पड़ रहे हैं, न मिशनरी उत्साह से काम करने वाले प्रचारक, उपदेशक, भजनीक एवं शास्त्रार्थ महारथी। कारण स्पष्ट है हमार संगठन में कहीं न कहीं जड़ता अवश्य है, हमारे प्रचार तन्त्र में कही कोई त्रुटि है। 'समाज' की पत्र-पत्रिकायें, इन्हें दूरकर सकती थी। मगर ऐसा नहीं हुआ। अब यह काम होना चाहिए। समाज के पत्रों को देश की जनता के सामने, नई योजनायें, नए कार्यक्रम, नए विचार रखने चाहिये। केवल उबाऊ और नीरस सामग्री को घुमा-फिराकर सभी पत्र-पत्रिकाओ मे देने से कोई लाभ नहीं है। हमें देखना चाहिए कि अन्य धामिक, सामाजिक, सांस्कृतिक सगठन किस प्रकार नए लोगो को अपनी ओर खीच रहे हैं। अभी कल का सगठन 'विश्व हिन्दू परिषद्' तेजी से आगे बढ़कर पूरे देश पर छाता जा रहा है तो उसमे क्या विशेषता हैं। यही न, कि उनका प्रचार-तन्त्र और संगठनिक ढाचा अधिक गतिशील, अधिक आकर्षक है। क्या हम उनकी कार्य पद्धति से प्रेरणा नहीं ले सकते ? पिछले महीने रा० स्व० स० के प्रो० राजेन्द्रसिंह 'उर्फ रज्जू भैया' से भेट हुई थी। बताने लगे वि० हि० परि० एक करोड़ रुपये से एक 'कोश' स्थापित कर रहा है, जो कला-सस्कृति साहित्य आदि क्षेत्रो मे काम करने वालो की सहायता करेगा। स्वय 'संघ' ने 'सूर्या इण्डिया खरीद लिया है। 'अर्थ' इनके रास्ते मे बाधक नहीं बन रहा है, जबकि 'समाज' को अपनी बहुत-सी योजनायें अर्थाभाव कारण स्थगित करनी पड़ रही हैं।

'यदि 'आर्यसमाज' जनजीवन से दीन हीन मनोवृत्ति मिटाने हेतु, संसार क 'आर्य' बनाने हेतु कृत सकल्प है, तो उसे लोकवृत्ति पर दृष्टि रखनी ही होगी। केवल तात्कालिक ज्वलत समस्याओ की चर्चा भर करके कर्त्तव्य की इतिश्री समझ लेने से समाज का दीर्घकालीन हित नहीं होगा, सार्वजनीन, सार्वभौम रूप नहीं उभरेगा।

हिन्दी विभागाध्यक्ष, महाराजा पूर्णचन्द्र कालेज बारीपदा (उड़ीसा) ७५७००१

आर्यसमाज : वर्तमान संदर्भों मे

सन् १८७५ में आर्यसमाज का प्रादुर्भाव एक अनुपमेय क्रान्तिकारी आन्दोलन के रूप मे हुआ था। उस समय भारत राष्ट्र पतन एव पराजय की पराकाष्ठा पर पहुंच चुका था। सारे भूमिमण्डल पर एकछत्र चक्रवर्ती शासन करने वाला आर्य राष्ट्र विदेशियों से पदाक्रान्त हो चुका था। बल तथा वैभव मे बेजोड़ आर्य जन गहरी निद्रा में सो रहे थे। देश परतन्त्रता की बेड़ियों मे जकड़ा हुआ था। चतुर्दिक श्मशान की शान्ति छाई हुई थी। भारतीय संस्कृति एव सभ्यता नष्ट प्राय. थी। स्वराज्य व स्वतन्त्रता शब्द ही लुप्त हो चुके थे। सम्पूर्ण जगतीतल को वेदज्ञान की पावन शिक्षा देने वाला भारत अज्ञानान्धकार-पाखण्ड-अन्धविश्वास-आतंक-अशिक्षा की चक्की मे पिस रहा था। गउवें कट रही थीं। धर्म सत्य मानवता का लोप हो चुका था। सामाजिक व्यवस्था जीर्ण-शीर्ण थी। जाति वर्ग छूआछूत समाज को कलंकित कर रहे थे। ज्ञान प्राप्त करने के द्वार सब मनुष्यों के लिए बन्द कर दिए गए थे। विधवाओं, अनाथों की करुण चीत्कार दिग्मण्डल प्रकम्पित कर रही थी। इन भयावह परिस्थितयों में भारत के कोने-कोने का परिभ्रमण करता हुआ एक महान सन्यासी सारे सुप्त राष्ट्र को जाग्रत कर रहा था। सिंहनाद करके आर्य जाति को नए जागरण का मन्त्र फूक कर रहा था। वेदों की शिक्षा का प्रचार व प्रसार कर राष्ट्र को उसकी शक्ति से पुन: परिचित करा रहा था। इस अपूर्व सन्यासी ने अपनी अनुपमेय तर्क शक्ति, अखण्ड ब्रह्मचर्य से देदीप्यमान व्यक्तित्व, प्रखर प्रतिभा विद्वत्ता, धर्म व सत्य के प्रति समर्पित अपराजेय निष्ठा से राष्ट्र को हिलाकर रख दिया। परिणामत: भारत राष्ट्र अगडाई लेकर उठ खड़ा हुआ। उस महान ऋषि के कार्यों को पूरा करने का दायित्व आर्यसमाज पर आया। सन् १८८३ ई० मे दीपमाला के पर्व पर मानवता को ज्ञान का आलोक दिखाता हुआ वह प्यारा ऋषि धर्म एव सत्य की वेदी पर शहीद हो गया।

नई चेतना का संचार

महर्षि दयानन्द ने जो चेतना सारे राष्ट्र मे फूकी उसका अप्रतिम प्रभाव पड़ा। भारत का इतिहास इस बात का साक्षी है कि इसी ऋषि के सिहनाद पर ही नव भारत मे नव चेतना, नव शक्ति नवोत्साह का सचार हुआ और भारत वासी स्वतन्त्रता के महान सन्घर्ष मे अपना सर्वस्व समर्पित करने को कटिबद्ध हो उठे। अन्तत: ऋषि द्वारा दिखाया गया और सत्य, धर्म, बलिदान का पथ रंग लाया और सदियो की गुलामी के पश्चात भारत स्वतन्त्र हुआ।

आर्यसमाज ने अपने महान संस्थापक के महानतम कार्यों को आगे बढ़ाया। समाज मे फैली हुई विभिन्न प्रकार की कुरीतियो तथा बाल विवाह, जातिपांति छुआछूत, भेदभाव को दूर करने का अभियान चलाया। धर्म के क्षेत्र मे फैले हुए विभिन्न प्रकार के पाखण्डों अन्धविश्वासों, मूर्तिपूजा, अवतारवाद, भूत, प्रेत की आतकंकारी मान्यताओं अन्यान्य देवी, देवताओं की जड़ पूजा, मृतक श्राद्ध आदि अवैदिक कार्यों पर आर्यसमाज ने कुठाराघात किया। देश की आजादी की लड़ाई में आर्यसमाज ने बढ-चढ कर भाग लिया जिन अमर सपूतो ने स्वतन्त्रता के सग्राम मे बलिपथ का अनुसरण किया उनमे से नब्बे प्रतिशत शहीद आर्यसमाज और स्वामी दयानन्द से ही अनुप्राणित थे।

आर्यसमाज की अपूर्व भूमिका

स्वतन्त्रता के महान सग्राम मे काग्रेस और आर्यसमाज एक-दूसरे के पूरक बन गए। काग्रेस द्वारा राष्ट्रोत्थान के लिए जो कार्यक्रम अपनाए गए, वे आर्यसमाज के ही कार्यक्रम थे उस प्रकार महर्षि दयानन्द व आर्य समाज ने धार्मिक, राजनीतिक, शैक्षिक, सामाजिक, नैतिक आदि समस्त क्षेत्रों मे पुनर्जागरण व पुनरुद्धार का महत्तम कार्य किया। मानवता के मन्त्र द्रष्य, स्वतन्त्रता के सदेश वाहक, धर्म-सत्य-ज्ञान के पथप्रदर्शक, वेदों के अद्वितीय विद्वान ऋषि दयानन्द यदि भारतभूमि पर न आए होते तो आज भारत की क्या दशा होती कहने की आवश्यकता नहीं।

स्वतन्त्रता मिलने के उपरान्त राष्ट्र उस पथ का अनुगमन न कर सका जो महर्षि ने दिखाया था। आर्यसमाज मे भी शिथिलता आ गई। आजादी के बाद से आर्यसमाज मे भी वे कमिया घर कर गईं, जो समाज मे व्याप्त थीं। आर्यसमाज के सदस्यो, पदाधिकारियो मे सिद्धान्त-सत्य-धर्म-वेद के प्रति वह निष्ठा व समर्पण भाव न रहा जो आजादी के पूर्व था और होना चाहिए था। अवैदिक मान्यताओं को प्रश्रय देने वाले व्यक्ति भी आर्यसमाज के सदस्य व पदाधिकारी बनने लगे। राजनीतिक दुराग्रहो से ग्रस्त लोग भी आर्यसमाज मे आए जिससे आर्यसमाज का क्रान्तिकारी स्वरूप खण्डित हो गया। इस समय आर्यसमाज की स्थिति अत्यधिक शोचनीय हो गई है। आर्यसमाज के नेताओं ने भाषण देने, समाचार छपवाने और घोषणाएं करने को ही अपने कर्त्तव्य की इतिश्री समझ लिया है। जब तक आर्यसमाज के सैनिक महर्षि दयानन्द के पथ का अनुसरण नही करेगे, तब तक आर्यसमाज एक सम्प्रदाय जैसा ही दीखेगा।

राधेश्याम आर्य विद्या वाचस्पति

अत्यधिक भयावह परिस्थिति

आज हमारे राष्ट्र व समाज के समक्ष अत्यधिक भयावह परिस्थितियां आर्य सस्कृति को निगल जाने के लिए मुंह बाए तत्पर है। ईसाइयत व इस्लाम का अज्ञानान्धकार हमे दबोच लेने को आगे बढ़ रहा है। पश्चिम की भोगवादी प्रवृत्तियां हमारी सभ्यता पर कुठाराघात कर रही हैं। समाज मे स्वार्थवाद, जाति-पाति बढ़ रहे हैं। पाखण्ड व अन्धविश्वास के विषधर फन फैला रहे हैं।

मूर्तिपूजा व अवतारवाद बढ़ रहे हैं। भोली-भाली धर्मभीरु भारतीय जनता को नित नए अवतार मूर्ख बनाकर लूट रहे हैं। सारे भारत में दानवता का नया तांडव नर्तन हो रहा है। हमारे स्वार्थ व सत्तालोलुप शासक मात्र अपनी कुर्सी बचाने के चक्कर मे राष्ट्र की आत्मा के साथ खिलवाड़ कर रहे हैं। अल्पसंख्यकों नाम पर साम्प्रदायिकता को हवा दी जा

शेष पृष्ठ ७ पर

आर्य जगत् समाचार

धार्मिक आडम्बरों को छोड़ेंगी

दिल्ली की महिलाओं का संकल्प

दिल्ली करौल बाग आर्य महिला मण्डल की ओर से ११ मार्च को ऋषि बोधोत्सव तथा सीता-अष्टमी के कार्यक्रम श्रीमती शान्ति देवी मलिक की अध्यक्षता में सम्पन्न हुए। श्रीमती कृष्णादेवी जी ने ध्वजारोहण किया। उत्सव मे अपने विचार रखने वाली बहनो को श्रीमती शान्ता मरवाह ने वैदिक साहित्य तथा ऋषिचरित्र भेंट किया। इस अवसर पर बहनों ने सामूहिक सकल्प किया कि सामाजिक तथा धार्मिक आडम्बरों का समूलोन्मूलन करके ऋषिऋण को चुकता करेंगी।

—केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली द्वारा सचलित वैदिक सत्सग के होली-मगल मिलन मे स्वामी शान्तानन्द, ब्र० राजसिह आर्य, श्री कमल नेन, प प्रकाश चन्द परवानी जी आदि ने होली के महत्व पर प्रकाश डाला।

—एक प्रमुख शिक्षा विद् की क्षति

शिक्षाशास्त्री डॉ० दत्त के निधन पर शोक

आर्यसमाज अजमेर के प्रधान तथा अजमेर की विभिन्न शिक्षा सस्थाओ के के मन्त्री श्री दत्तात्रेय बाब्ले ने आर्य-जगत् के प्रसिद्ध विद्वान् शिक्षाशास्त्री डा. श्री. एल दत्ता के निधन पर हार्दिक शोक व्यक्त किया है

वैदिक मोहन आश्रम, भूपतवाला, हरिद्वार ने अपनी सस्था के भू. पू. प्रधान डा गोवर्धन लाल दत्त के देहावसान पर शान्तियज्ञ एव शोक सभा का आयोजन कर उनके प्रति श्रद्धाजलि प्रस्तुत की।

केन्द्रीय आर्ययुवक परिषद् दिल्ली प्रदेश के मन्त्री श्री अनिल कुमार आर्य ने डा दत्त के निधन पर श्रद्धाजलि प्रस्तुत करते हुए कहा—आर्यसमाज ने एक प्रमुख शिक्षाविद और पुरानी पीढ़ी का एक आर्य नेता खो दिया है।

कैनाल कलोनी में १०१वां गायत्री यज्ञ

गायत्री यज्ञ मण्डल, कैनाल कालोनी, ओखला के तत्वाविधान मे शुक्रवार, २ अप्रैल को सायंकाल ३ बजे कैनाल कालोनी स्थित तारघर के पास १०१ वां गायत्री यज्ञ आयोजित किया गया है। मुख्य अतिथि होंगे स्वामी शक्ति वे शजी, अन्य अतिथि होगे—दीवान द्वारका खोसला, स्वामी स्वरूपानन्द, प्रो. ओमप्रकाश, गुलाबसिंह राघव आदि।

आर्यसमाज कालपी का वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज कालपी (जालौन) का ६४ वां वार्षिकोत्सव १२-१३-१४ मार्च को मनाया गया। कुलपति महात्मा आर्य-भिक्षु जी के प्रवचन हुए।

आर्यसमाज छपरा का वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज छपरा, महिला आर्य-समाज छपरा एव गुरु कुल महाविद्यालय मोहियां (छपरा) का वार्षिकोत्सव ३ अप्रैल से ४ अप्रैल तक मनाया जा रहा है।

आर्यसमाज राजौरी गार्डन ने एक प्रस्ताव स्वीकार का प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाधी से अनुरोध किया है कि गोहत्या पर तुरन्त प्रतिबन्ध लगाया जाए।

धर्मार्थ औषधालय मोहन आश्रम में

रविवार ११ अप्रैल को प्रात ११ बजे-वैदिक मोहन आश्रम हरिद्वार में केवलकृष्ण स्मारक धर्मार्थ एलोपैथिक औषधालय का उद्घाटन वरिष्ठ एडवोकेट प्रो० वेदव्यास करेंगे। इस औषधालय पर्ची शुल्क आदि नहीं होगा। गम्भीर रोगियो को देखने के लिए चिकित्सक उनके घरों पर नि:शुल्क जाएगे।

मोहन आश्रम का वार्षिकोत्सव ७ अप्रैल से ११ अप्रैल तक तथा साधना शिविर २५ मार्च से ६ अप्रैल १९८२ तक होगा।

स्वामी दयानन्द स्वतन्त्रता के प्रथम उद्घोषक

क्रान्तिकारी नेता की स्वीकारोक्ति : दिल्ली में शहीद दिवस सम्पन्न

नई दिल्ली। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद दिल्ली प्रदेश के तत्वावधान में अमर शहीद भगतसिंह राजगुरु, सुखदेव की पुण्य स्मृति मे "शहीद दिवस" अखिल भारतीय स्वतन्त्रता सेनानी संगठन अध्यक्ष पं० परमानन्द (झांसी) की अध्यक्षता मे मनाया गया।

शहीद भगतसिंह के भाई श्री कुलतार सिंह (भू०पू०) मन्त्री पजाब, ने शहीदो को श्रद्धांजलि देते हुए कहा—हमारे देश को आजाद कराने मे जो योगदान आर्यसमाज ने दिया, किसी और संस्था मे नही दिया। हमारे ही परिवार को आर्यसमाज ने देश के लिए मर मिटने की प्रेरणा दी। सनातन धर्म महासभा के अध्यक्ष श्री प्रेमचन्द्र गुप्ताने कहा—देशोद्धार में महर्षि दयानन्द व उनके द्वारा स्थापित आर्यसमाज का सर्वाधिक योगदान रहा।

पं० परमानन्द (झांसी) ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा—सत्यार्थप्रकाश पढ़कर ही मैं देश की आजादी के लिए कूदा व संघर्ष करता रहा।

श्री रामनाथ सहगल, श्री बनारसी सिंह (पत्रकार), श्री क्षितीश वेदालकार-सम्पादक आर्यजगत् ने भी अपने विचार रखे।

गोवंश के मांस का लदान रोका जाए

दिल्ली अ. भा. गोसरक्षण परिषद् के अध्यक्ष श्री योगेश्वर विदेही ने भारत के रेलमन्त्री श्री प्रकाशचन्द्र सेठी से अनुरोध किया है कि पजाब, हरियाणा, दिल्ली और उत्तर प्रदेश के अनेक रेल स्टेशनों से गोवश तथा गोमांस का लदान अवैध रूप से हो रहा है, कई स्टेशनों पर जाली परमिटों से गोवश लदान हो रहा है, इसे तुरन्त रोका जाए।

आर्यसमाज खिचड़ीपुर में आर्यसमाज स्थापना दिवस

आर्यसमाज खिचडीपुर दिल्ली मे आर्य प्रतिनिधि उप सभा पटपड़गंज दिल्ली के तत्वावधान मे ४ अप्रैल, १९८२ के प्रात. ८ बजे से १२ बजे तक आर्यसमाज स्थापना दिवस का विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया है। इस अवसर पर संसद सदस्य श्री राजेश पायलट, ससद सदस्य श्री हरिकृष्ण लाल भगत, सार्वदेशिक सभा के प्रधान लाला रामगोपाल जी, आर्य केन्द्रीय सभा के प्रधान महाशय धर्मपाल जी, विशेष अतिथि के रूप में पधारेंगे। उसी दिन वेद व्यास जी के भजन तथा श्री सुखपाल जी भुटानी के उपदेश होगे।

डा रामनाथ जी की पत्नी प्रकाशवती जी का स्वर्गवास

तिलहर (शाहजहांपुर) वेदों के सुप्रसिद्ध विद्वान डा० रामनाथ वेदालकार की धर्मपत्नी एव पन्त विश्वविद्यालय के प्रवक्ता डा० विनोदचन्द्र विद्यालकार की माता श्रीमती प्रकाशवती जी का २४ मार्च को यहा शरीरान्त हो गया। वह लगभग ५ मास से अस्वस्थ चल रही थीं। उनके विद्वान पति एव सुपुत्र जो कुछ आर्यसमाज एव वैदिक साहित्य की सेवा कर सके हैं, उसमे उनका बडा योगदान रहा। परम दयालु परमात्मा से प्रार्थना है कि वह दिवगत आत्मा को सद्गति देंगे और शोक सन्तप्त परिजनों को हार्दिक सान्त्वना।

पिपलानी आर्यसमाज के पदाधिकारी

आर्यसमाज हैवी इलेक्ट्रिकल्स पिप-लानी, भोपाल के नए वर्ष के पदाधिकारी प्रधान—श्री केशवदेव सेठी, उपाध्यक्ष—श्री नरेन्द्र देव कौशल, मन्त्री श्री रेवाशंकर चौधरी, कोषाध्यक्ष—श्री विनोद-कुमार आर्य, पुस्तकाध्यक्ष—श्री नरेन्द्र-कुमार आर्य।

आर्यसमाज कोटला मुबारक का उत्सव

आर्यसमाज कोटला मुबारकपुर का वार्षिकोत्सव ९ अप्रैल से १३ अप्रैल तक मनाया जाएगा। १ अप्रैल से ७ अप्रैल तक रात्रि को ८॥ से ९॥ बजे तक स्वामी सुव्रतीनन्द जी वेद कथा करेंगे। इन्हीं दिनों प्रति रात की घण्टा भर पूर्व श्री विश्वप्रेमी जी भजन प्रस्तुत करेंगे। कथा स्थान होगा शेरसिंह बाजार। ९ अप्रैल से १३ अप्रैल तक आर्यसमाज मन्दिर में प्रात ६ से ८॥ बजे तक आचार्य हरिदेव जी के ब्रह्मत्व मे सामवेद पारायण महायज्ञ होगा। १३ अप्रैल को यज्ञ की पूर्णाहुति के बाद आर्यसमाज मन्दिर की छत बदलने के लिए आधारशिला रखी जाएगी।

महात्मा हंसराज जयन्ती समारोह

दिल्ली। शिक्षा शास्त्री महात्मा हंसराज का जयन्ती समारोह १८ अप्रैल को प्रात: ९ से १२ बजे तक ससद सदस्य श्री हरिकृष्णलाल भगत की अध्यक्षता में डी. ए. वी. उच्च माध्यमिक विद्यालय चित्र-गुप्त मार्ग पहाड गज नई दिल्ली मे मनाया जाएगा। उत्सव के मुख्य अतिथि होंगे—भारत सरकार के गृह मन्त्री श्री जैलसिंह, ऊर्जा राज्य मन्त्री श्री विक्रम महाजन, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के प्रो० रामप्रकाश, प्रो० भवानीलाल भारतीय, सार्वदेशिक सभा के प्रधान ला० रामगोपाल शालवाले और उ० प्र० आ० प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री इन्द्रराज जी आदि।

शम्भुदयाल दयानन्द वैदिक सन्यास आश्रम, दयानन्द नगर, गाजियाबाद (उ० प्र०) का २५वां वार्षिकोत्सव १२ से १८ अप्रैल तक मनाया जायेगा। इस अवसर पर आर्यजगत् के प्रसिद्ध संन्यासी महात्मा, विद्वान् और भजनोपदेशक पधारेंगे।

तमिलनाडु में धर्मान्तरण पर रोक लगेगी

बलात् धर्मान्तरण अनुचित : राज्य के हरिजन कल्याण–मन्त्री की सूचना

मद्रास। तमिलनाडु के हरिजन-कल्याण विभाग के मन्त्री श्री एम० विजय-सारथी ने राज्य विधान सभा में एक प्रश्न का उत्तर देते हुए सूचना दी—तमिलनाडु प्रशासन बलात् धर्म-परिवर्तन के विरुद्ध समुचित पग उठाने के प्रस्ताव पर विचार कर रहा है।' एक प्रश्न के उत्तर मे उन्होंने कहा—यद्यपि धर्मान्तरण पर प्रतिबन्ध लगाने विषय पर संवैधानिक प्रावधान नहीं है, और यह नागरिको के व्यक्तिगत विश्वास का मामला है, तथापि बलात् धर्मान्तरण नहीं होना चाहिए।

—४ अप्रैल, १९८२ (चैत्र सुदी एकादशी, सम्वत् २०३९) को आर्यसमाज स्थापना दिवस समारोह प्रात ८·०० बजे से १२·०० बजे दोपहर तक आर्यसमाज मन्दिर, खिचड़ीपुर मे मनाया जाएगा।

❀

आर्यसमाज पृष्ठ ५ का शेष

रही है। भोगवाद, अनैतिकता-भ्रष्टाचार को बढावा मिल रहा है। सारा देश, जिसकी उपमा पहले स्वर्ग भूमि से दी जाती थी, नरक मे परिवर्तित हो गया है। जिन-जिन कुप्रथाओं से संघर्ष करने के लिए आर्यसमाज की स्थापना महर्षि ने की थी, वे सारी कुप्रथाएं पुन. सिर ऊंचा कर रहीं हैं और आर्यसमाज के कार्य-कर्ता, पदाधिकारी मात्र उपदेश व भाषण दे रहे हैं।

बलिपथ का अनुसरण

"आर्यसमाज की वर्त्तमान कार्य-प्रणाली के आमूल चूक परिवर्त्तन करना होगा। आर्यसमाज का सगठन पुनर्गठित करके ऐसे ही लोगों को सदस्य व पदाधिकारी बनना चाहिए जो समर्पित भाव से वेद पथ के अनुगामी बन सकें। आर्य-समाज की मान्यताओं पर दृढ निष्ठा रखते हो तथा उनका अनुपालन कथनी से नहीं, मन-वचन व कर्म से करते हों। अकेले, महि मण्डल को झकझोरने वाले महर्षि दयानन्द क्यो सफल हुए थे? उसका एकमात्र कारण यह था कि उनकी कथनी व करनी में लेशमात्र भी अन्तर नही था। आज के, आर्यसमाज के सदस्य स्वय वैदिक मान्यताओं का पालन अपने दैनिक जीवन में नहीं करते, इसलिए समाज पर आर्यसमाज की विचारधारा का प्रभाव नगण्य हो गया है और अवैदिक परम्पराए विजय-वरण कर रही हैं

दयानन्द के सच्चे सैनिक

आज आवश्यकता इस बात की है कि आर्यसमाज के कार्यकर्त्ता दयानन्द के सच्चे सैनिक बन कर लेखराम-श्रद्धानन्द की परम्परा के अनुगामी बनें। सिद्धान्तों के प्रचार व प्रसार के लिए बलि पथ का अनुसरण करें, प्राणों को हथेली पर लेकर वेद के प्रचार व प्रसार में अपना सर्वस्व समर्पित करने की भावना जाग्रत करें।

यदि आर्यसमाज आज की भांति सोता ही रहेगा, तो नि.सन्देह मानवता पर दानवता की विजय होगी और आर्य सस्कृति-वेद-ज्ञान के लुप्त होने मे देर नहीं लगेगी। आर्यसमाज की शिक्षा सस्थाओं को भी मानव-निर्माण का केन्द्र बनाना होगा। वर्तमान समय में आर्य शिक्षण संस्थाएं अन्य सरकारी कालेजों की भांति ही कार्य कर रही हैं, जिनसे मानवता के विकास का कोई लाभ दिखाई नहीं देता।

वेद प्रचार का सशक्त माध्यम बनें

आर्य शिक्षा सस्थाओं को वेदों के प्रचार व प्रसार का सशक्त माध्यम बनाया जा सकता है और कम से कम इन सस्थाओ के आचार्य व विद्यार्थी ही यदि अपना जीवन वेदानुकूल बनालें तो समाज की कायापलट हो सकती है। समय आ गया है कि अब आर्यसमाज एक सबल क्रान्तिकारी आन्दोलन का रूप धारण कर उठ खड़ा हो। आर्यसमाज के कार्यकर्त्ता सैनिक बन कर धर्म-ज्ञान व सत्य की तलवार से सघर्ष का बिगुल बजा कर रंग-भूमि मे शखनाद करें और अज्ञान के शत्रु की चुनौती स्वीकार करें। आर्यसमाज का कार्य फूलों की सेज नही है। आर्यसमाज का कार्य तभी हो सकता है जब कि हम सिर मे कफन बाधकर निकल पड़ें। तलवारो की धार पर अग्रसर होने का व्रत लें। यदि हम ऐसा नही करते तो आर्य-समाज मे कायरो की आवश्यकता नही है। वे छोड़ दें आर्यसमाज को। आर्य-समाज को आज वीर चाहिए, राणा-शिवा चाहिएं, रामकृष्ण, अर्जुन व भीम चाहिएं, लेखराज-श्रद्धानन्द चाहिएं जो यह घोषणा कर सकें—धर्म-सत्य न जाने पाए, चाहे प्राण भले ही जाए। तभी आर्य समाज अपने विशाल उत्तरदायित्व को वहन कर सकेगा, अन्यथा नहीं।

मुसाफिर खाना, सुल्तानपुर (उ० प्र०)

शाहगंज (जौनपुर) में विराट हिन्दू संगम

१८०० मुसलमान १३ अप्रैल को हिन्दू धर्म ग्रहण करेंगे

शाहगज (जौनपुर) १० मार्च के दिन २५ हजार से अधिक जनसमूह ने एक स्वर से भारत मे हिन्दू जनतन्त्र की स्थापना का सकल्प लेते हुए प्रतिज्ञा की कि हम हिन्दू समाज से कुरीतियो और असमानता को समूल नष्ट करेंगे।

क्षेत्र की सभी हिन्दू सस्थाओं की ओर से हिन्दू रक्षा समिति के तत्वावधान मे आयोजित यह संगम रामलीला मैदान के प्रांगण मे वयोवृद्ध क्रान्तिकारी श्री काशीनाथ शास्त्री की अध्यक्षता में असाधारण उत्साह से सम्पन्न हुआ।

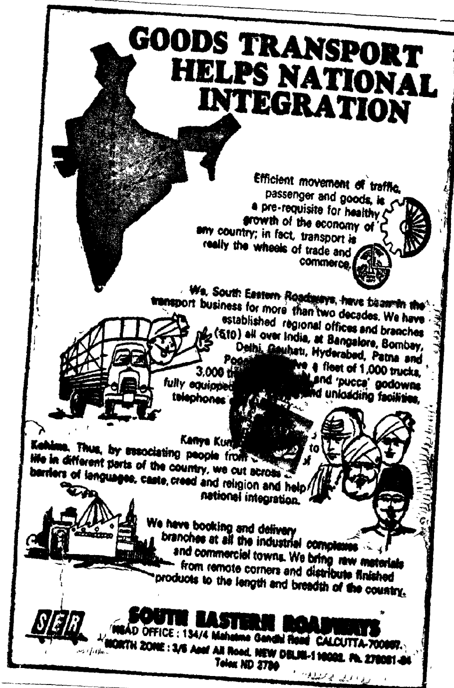
समारोह के मुख्य अतिथि महात्मा वेदभिक्षु ने अपने उद्बोधन में कहा—१३अप्रैल को लगभग१८००मुसलमान वैदिक हिन्दू धर्म ग्रहण करेगे। उनका स्वागत हमे हृदय से करना चाहिए।

शहीद–दिवस

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्, दिल्ली प्रदेश के तत्वावधान मे शहीद भगतसिंह, राजगुरु, सुखदेव की पुण्य स्मृति में २३ मार्च १९८२ मगलवार को साय ५.३० बजे प० परमानन्द (झांसी) 23 वर्ष तक कालेपानी मे रहने वाले सुप्रसिद्ध क्रांतिकारी की अध्यक्षता मे आर्यसमाज मन्दिर (अनारकली) मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली में शहीद दिवस का आयोजन किया गया है। मुख्य अतिथि श्री प्रेमचन्द गुप्त (प्रधान सनातनधर्म महा सभा) व महाशय धर्मपाल, श्री क्षितिश वेदालकार तथा "गाथा बलिदान की" क्रांतिकारी नाटक भी प्रस्तुत किया जायेगा।

'बिना दहेज विवाह'

आर्य समाज किशन गज (मिल-एरिया) दिल्ली—११०००६ मे रवि-वार दिनाक १-२-१९८२ सांय के ४½ बजे श्री गोपाल कृष्ण चौबे सुपुत्र श्री नागेश्वर चौबे का शुभ विवाह कु० कृष्ण शर्मा सुपुत्री श्री रतन सिंह शर्मा, माडल टाऊन निवासी के साथ बिना दहेज के वैदिक पद्धतिनुसार श्री जे० पी पाठक के पोरोहित्य मे सम्पन्न हुआ।



दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रकाशन

सत्यार्थप्रकाश सन्देश (हिन्दी)	१.००
" " (अंग्रेजी)	समाप्त
आर्य सन्देश-महासम्मेलन विशेषांक	६.००
पादरी भाग गया— ओम्प्रकाश त्यागी	०.३०
स्वामी श्रद्धानन्द-बलिदान अर्द्ध शताब्दी स्मारिका	६.००
सत्यार्थप्रकाश शताब्दी समारोह रिका	६.००

सम्पर्क करें—
अधिष्ठाता प्रकाशन विभाग
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा,
१५, हनुमान रोड,
नई दिल्ली-११०००१

卐 'आर्यसन्देश' के
स्वयं ग्राहक बनें—
दूसरों को बनाएं

卐 आर्यसमाज के सदस्य
स्वयं बनें—
दूसरों को बनाइए
हिन्दी-संस्कृत भाषा स्वयं पढ़ें
औरों को भी पढ़ाइए—

रजि० डी (सी) ७६५

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए श्री सरदारी लाल वर्मा द्वारा सम्पादित [illegible] प्रेस २२७, [illegible] गांधी नगर दिल्ली-३१ में मुद्रित । [illegible]

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक मुखपत्र

एक प्रति ३५ पैसे | वार्षिक १५ रुपए | वर्ष ६ अंक २४ | रविवार २९ चैत्र वि० २०३८ | ११ अप्रैल १९८२ | दयानन्दाब्द १५७

३७ वर्षों में गुप्त रूप से हजारों हिन्दुओं का धर्मान्तरण

मुस्लिम संस्था इशातुल इस्लाम सवाई की करतूत : विदेशों से आर्थिक सहायता की मांग

श्रीरामचन्द्र वन्देमातरम् का रहस्योद्घाटन : गृहमन्त्री से कार्यवाही करने की मांग

हैदराबाद। सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उपप्रधान श्री रामचन्द्र राव वन्देमातरम् ने भारत के गृहमन्त्री ज्ञानी जैलसिंह को एक पत्र लिख उनका ध्यान तिरुवेलवेली की संस्था दक्षिण भारत इशातुल इस्लाम सवाई द्वारा लोभ-लालच से धर्मान्तरण की कार्रवाई की ओर खींचा है। गृहमन्त्री को पैम्फलेट की वह प्रति भेजी गई है जो इशातुल इस्लाम सवाई के अध्यक्ष श्री ए० के० रिफाई द्वारा प्रसारित किया गया है।

इस इश्तहार मे संस्था का मुख्य उद्देश्य देश में जो मुसलमान नहीं हैं, उन्हे मुसलमान बनाना है। पैम्फलेट मे दावा किया गया है—इशातुल इस्लाम सवाई ने १७ हजार हिन्दू मुसलमान बनाए हैं, तथा शीघ्र ही ६ हजार और लोग मुसलमान बनने वाले हैं, इस कार्य मे आर्थिक कठिनाइयो के कारण विलम्ब हो रहा है, फलत धर्मान्तरण के लिए विश्व भर के मुसलमानों से आर्थिक सहायता देने को कहा गया है। श्री वन्देमातरम् ने गृहमन्त्री से अनुरोध किया है कि शोषण लोभ और दबाव आदि के बल पर धर्मान्तरण की अनुमति नही है, इस पर प्रतिबन्ध लगना चाहिए।

पैम्फलेट-इश्तहार मे सूचना दी गई है—सन् १९४४ मे श्री एम० एन० अब्दुल रहमान साहब ने दक्षिण भारत इशाअतुल इस्लामी सवाई सोसायटी की स्थापना की थी। इस समय सोसायटी अनाथालय कालेज, स्कूल, लड़कियों का होस्टल चला रही है। सोसायटी का मकसद स्वेच्छा से मुसलमान होने वालो का स्वागत करना करना है। धर्मान्तरण के बाद सोसायटी खतना कर चिकित्सा के लिए आर्थिक सहायता देती है। इस्लाम का बुनियादी प्रशिक्षण देने के लिए उन्हें केरल राज्य के पोन्नानी मे भेजा जाता है सोसायटी ने इनके लिए मस्जिदे तथा वजू करने के लिए पानी का प्रबन्ध किया है। सोसायटी को अपने काम के लिए धन की जरूरत है। सोसायटी ने गत ३७ वर्षो मे अकेले तमिलनाडु मे १७००० लोगो को इस्लाम मे [illegible] किया। सोसायटी ने तिरुनेलवेली जिले के तेरुकपट्टी, सीताकुरिच, सामबनकुलम, पोडबायमगलम बेलायुधपुर, और नाननगरम् मे हजारो गैर मुसलमानो को मुसलमान बनाया। इसी प्रकार मदुरै, रामनाथ जिलो के अनेक परिवार मुसलमान बने। इस समय हजारों गैर मुसलमान मुसलमान बनने को तैयार है, परन्तु धनाभाव के कारण उन्हें मुसलमान नहीं बनाया जा रहा है। तिरुनेलवेली के कई स्थानो के ५००० गैर मुस्लिम मुसलमान बनना चाहते हैं। धर्मान्तरण की प्रक्रिया मे कपड़ो, भोजन खतने का व्यय, आने-जाने यातायात के धन के अभाव के कारण बाधा आ रही है। इस महत्वाकांक्षी योजना को पूरा करने के लिए विश्व भर के मुसलमानो से माग की गई है कि बडी सख्या मे लोगो को मुसलमान बनाने के लिए सहायता करे। मुसलमानो से यह अपील भी की गई है कि वे अरब देशो मे नव मुस्लिमो को रोजगार देने की बात ध्यान रखे।

धर्म बदलने से राष्ट्रीयता नहीं बदलती

श्री रामचन्द्र वन्देमातरम ने देश के नेताओ और जनता का ध्यान खींचा है कि धर्म बदलने से राष्ट्रीयता का परिवर्तन नही होता और नहीं होना चाहिए, परन्तु भारत मे आज यही हो रहा है। मीनाक्षीपुरम मे मुसलमानो ने हरिजनों का धर्म-परिवर्तन किया, पर वे यही तक सीमित नही रहे। उन्होने जहा इस गाव का नाम बदला, वहा उनकी सस्कृति उनकी पोशाक बदली और उनका इतिहास अरबो का इतिहास हो गया। राम कृष्ण की जो सन्तान थे, उनके पुरखे तुरक और अरब बन गए।

अब कन्याकुमारी मे इस ढग के पोस्टर लगाए गए है कि कन्याकुमारी ईसाईस्तान है, और इस जिले का नाम कुमारी मेरी रखा जाए। इस क्षेत्र के ईसाई विवेकानन्द शिला स्मारक को उध्वस्त कर उसके स्थान पर सैण्ट जेवियर के भारत आगमन का स्मारक बनाना चाहते है। इस जिले के हिन्दू ही ईसाई बने है, वे अपूर्व हिन्दू भाइयो से ह घृणा और द्वेष करने लगे है।

जमना पार का सफल आर्य सम्मेलन एवं शोभा यात्रा

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के पदाधिकारियों द्वारा आभार प्रदर्शन

दिल्ली। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सरदारी लाल वर्मा तथा सभा मन्त्री प्रो० भारतमित्र शास्त्री ने २६ २७-२८ मार्च को जमना पार सम्पन्न हुए सफल आर्य महा सम्मेलन और प्रशंसनीय शोभा-यात्रा के लिए दिल्ली की आर्य संस्थाओ, आर्यजनो का विशेषत: जमना पार की छोटी बडी समस्त आर्यसमाजो, आर्यसंस्थाओ, व्यापारियो और जनता का आभार प्रकट किया है, जिन्होने असुविधाओ एव कठिनाइयो के बावजूद इस कार्यक्रम को सफल बनाया। दोनों आर्यनेताओ ने घोषित किया है कि आर्य जनता एव आर्य समाजो ने इस शोभा-यात्रा और आर्य-सम्मेलन को सफल कर यह प्रमाणित कर दिया है कि विभिन्न क्षेत्रो मे भी विशाल शोभा यात्राए और सफल आर्य महासम्मेलन हो सकते है। इन दोनो कार्यक्रमो की सफलता से आशान्वित होकर दिल्ली के दूसरे क्षेत्रो मे भी निकट भविष्य मे आर्य महा सम्मेलन आयोजित किए जाएगे।

श्रीराम और श्रीकृष्ण महापुरुष थे

उनके प्रेरणास्पद चित्र लगाने पर आपत्ति नहीं

—श्री वीरेन्द्र, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, जालन्धर

आर्यसमाज मन्दिरो की पवित्रता कायम रखने के लिए सार्वदेशिक आर्य-प्रतिनिधि सभा ने सभी आर्यसमाजो को यह आदेश दिया है कि समाज मन्दिरो मे कोई आपत्तिजनक चित्र न लगाया जाए। श्री राम और श्री कृष्ण का उल्लेख करते हुए यह लिखा है कि बाजार मे इनके कई प्रकार के चित्र मिलते है। कुछ चित्र ऐसे भी होते है जिन्हे देखकर शर्म आती है इसलिए उनके चित्र लगाते समय इस बात

(शेष पृष्ठ ८ पर)

सम्पादक—नरेन्द्र विद्यावाचस्पति | व्यवस्थापक—प्रद्युम्नलाल तलवाड़

वेद-मनन

परमेश्वर को धोखा देना असंभव है

—मनोहर विद्यालकार

ये त्वा देवोस्त्रिक मन्यमाना पापा भद्रमुप जीवन्ति पज्रा:।
न दूढये अनुददासि वाम वृहस्पते चयस इत्पियारम्॥ ऋक् १-१९० ५.

ऋषि—अगस्त्यो मैत्रावरुणि। देवता—बृहस्पति। छन्द—त्रिष्टुप्।

शब्दार्थ—हे (बृहस्पते देव) हे ब्रह्माण्ड के स्वामिन् और वेद ज्ञान देने वाले! बृहस्पति देव (ये प्रजा) जो प्राप्त ऐश्वर्य—समृद्ध होकर भी (भद्रम्) सबका कल्याण करने वाले आपको (उस्रिक मन्यमाना) बैल के समान सीधा मानने वाले पापा अधर्माचरण करने वाले (उपजीवन्ति) भोग प्राप्ति के लिए आजीविका निमित्त नौकरी करते हैं। ऐसे (दूढये) दुष्ट बुद्धि वाले मनुष्यों को आप (वामम्) जीवन की शस्यता (न अनुददासि) प्रदान नही करते, अपितु (पियारम्) इन खाने-पीने मे व्यस्त रहने वालो अथवा दूसरो का अनिष्ट चाहने वालो को को (इत्) निश्चय ही (चयसे) नष्ट कर देते हो, यह सत्य है और हम इसे जानते है। जो नही जानते उन्हे जानना चाहिए।

निष्कर्ष—इस ब्रह्माण्ड का स्वामी बृहस्पति, सर्ववित् तथा सर्वसमर्थ है।

वह यक्षभृत्—पूजनीय व्यक्तियो का भरण-पोषण करने वाला है, तथा आडम्बर युक्त जनो पर उसके हथियारो की मार प्रतिदिन पडती रहती है। 'यक्षभृद्विचेता। हेतयो यन्ति-आहिमायान् अभिघून्।' ऋक् १-१९०-४। इसलिए उसे सीधा या बुद्धू समझना भूल है, लेकिन पापी लोग यही समझते हैं कि वे धोखा दे लेंगे। और इसलिए वे सम्पन्न होने के बाद भी भोगो को प्राप्त करने मे लगे रहते है।

वह केवल यक्ष (पूज्य, सत्सगयोग्य और दानियो) का भरण-पोषण करता है। उन्हे यश आदि नाम तत्त्व प्रदान करता है। दुष्ट बुद्धि अर्थात् दूसरो का बुरा चाहने और करने वालो को कभी नाम-तत्व (दिव्यताएं) नही देता है।

वह केवल खान-पान मे लगे पियारु-जनों को, 'केवलाघो भवति केवलादी' ऋक् १०-११७ ६ की प्रतिज्ञा के अनुसार नष्ट करता रहता है, इसलिए यदि परिग्रह करना हो, अपनी आवश्यकता से अधिक कमाना हो तो उसे परार्थ मे समाज और राष्ट्र के लिए दान कर देना चाहिए। अन्यथा पाप से और उसके कोप से बचना असम्भव है।

विशेष—इस मन्त्र के ऋषि शब्दार्थ यही सकेत करते हैं कि यदि बृहस्पति से कुछ सीखना है तो सबके प्रति मित्रभाव रखो, वरुण के नियमो का पालन करो, पाप-विचार और पाप कर्मों को दूर रखो तथा कर्मठ बने रहो। दूसरो की सेवा करते रहो। इसका उपाय है त्रिष्टुप तीन प्रकार से स्तुति करो अर्थात् बडो का आदर करो, बराबर वालो का सहयोग करो और अपने से छोटो की सहायता करो, सहानुभूति दो, उन्हे कुछ सिखाओ।

अर्थपोषक प्रमाण—उस्रिकम्—उस्रा गौनाम नि० २-११, कुत्सितमनड्वहम् बैल के समान सीधा या मूर्ख। पियारुम्—पीड्पाने, खाने-पीने मे व्यस्त रहने वाले को, पीयते—हिसा कर्मण—दूसरो का अनिष्ट चाहने वाले को। पज्रा—प्रपन्ना, प्रोजतेश्वयो। स्वा० द० वामम्—प्रशस्यनाम नि० ३-८। चयसे—चातयते नाशनार्थ स्यार्थे वर्तते। निघण्टु टीका ४-१, उपजीवति—पराधीन होकर नौकरी करना। सस्कृत धातुकोश। दूढय.—दुष्ट ध्यायति स—स्वा० द०। यक्ष—यज-देव पूजा सगति करण दानेषु।

५२२ ईश्वर भवन, खारी बावडी, दिल्ली-६

शतकुण्डी यज्ञ—अवैदिक

आजकल शतकुण्डी, १०१ कुण्डी, चतुर्दश कुण्डी आदि नामो से अनेक कुण्ड बनाकर यज्ञ करने का एक नाटक-सा चला हुआ है और लोग वैदिक यज्ञो के वास्तविक स्वरूप को तोडकर अपने निहित उद्देश्यो की पूर्ति के लिए जनता मे इस प्रकार के यज्ञो का प्रचार कर रहे हैं। ऐसे यज्ञो के लिए कोई भी शास्त्रीय विधान नही पाया जाता है। यज्ञ के नाम पर एक प्रकार का यह ढोग पनप रहा है, जिसका उद्देश्य पैसा बटोरने के लिए है। यह प्रथा अवैदिक शास्त्र विरुद्ध और महर्षि दयानन्द के मन्तव्यो के सर्वथा विपरीत है। अत समस्त आर्य समाजिक जन, आर्य समाजे, आर्य प्रतिनिधि सभाए एव सगठन इस प्रकार के यज्ञ के फेर में न पड़ें न आयोजन करें और न इसे प्रोत्साहन दे।

[illegible]नाथ शास्त्री

[illegible], दिल्ली।

लोक चिन्तन

सब ठाठ धरा रह जाएगा.........

—डा. विजय द्विवेदी

प्रलय का एक दिन गुजर गया। धरती के पूर्ण विनाश की भविष्यवाणी करने वाले ज्योतिषयों का मुख काला हो गया। विनाश तो दूर कही एक पत्ता तक नहीं खटका। ग्रह आए और चले गए। दुनिया अपनी राह चलती रही। मगर ससार का भविष्य बताने वाले कम जीवट के लोग नही है। बार-बार मुह की खाकर भी मुह खोलते ही रहते हैं। इस बार मुह खोला है—बहु चर्चित पुस्तक 'बारमूडा ट्रगिल' (बारमूडा त्रिकोण) के लेखक श्री चार्ल्स वेलित्स ने। उन्होने अभी हाल ही मे प्रकाशित पुस्तक 'डूम्स डे—१९९९ ए० डी०' मे लिखा है कि पृथ्वी की आयु केवल १८ साल और शेष है। जुलाई, १९९९ मे पृथ्वी की जीवन लीला सदा के लिए समाप्त हो जाएगी। श्री चार्ल्स की यह भविष्यवाणी कोरी कल्पना या चण्डूखाने की गप नही है। उन्होने सारे ससार की जातियों और धर्मों की प्राचीन कथाओं, धर्म शास्त्रो एव ज्योतिष ग्रन्थो का व्यापक अध्ययन करने के बाद ही उक्त ग्रन्थ की रचना की है। वैसे उक्त साल की जुलाई मे प्रलय के घटित होने की भविष्यवाणी यहूदी रक्त के फ्रासीसी ज्योतिषी नोस्त्रादम ने सोलहवीं शताब्दी मे की थी। कहा जाता है नोस्त्रोदम ने फ्रांस की क्राति, नेपोलियन का उत्थान-पतन, दूसरे विश्वयुद्ध और अणुबम के निर्माण का सकेत भी दिया था, जो कालान्तर में सही सिद्ध हुए है। श्री वेलित्स ने यहूदी धर्म-विश्वास का उल्लेख करते हुए लिखा है—यहूदी देव वार्ता के अनुसार 'बहुत सग्राम के बाद यहूदी जाति अपनी भूमि पर अपना राष्ट्र स्थापित करने मे सफल होगी, किन्तु इसी के बाद 'आरमागेडूडन (पृथ्वी) शेष हो जाएगी। तिब्बती बौद्ध ग्रन्थो मे भी कहा है कि दलाई लामा के बाद 'लामात्व' समाप्त हो जाएगा। मिश्र, अरब आदि अनेक देशो और धर्मों के प्राचीन ग्रन्थो, ज्योतिर्विज्ञानियो एव ज्योतिषियो के मतो का गहन मन्थन करने के बाद श्री चार्ल्स हिन्दू 'पुराणो' का उल्लेख करते है और कहते हैं—हिन्दू मतानुसार इस समय 'कलयुग' चल रहा है। यह विनाश-युग है। इसी प्रसग मे लेखक ने 'मा काली' को सहार देवी के रूप मे चित्रित किया है और कहा है 'धरती का दम निकल चुका है।'

प्रस्तुत पुस्तक का सबसे सबसे रोचक अध्याय है—आदि काल से आज तक धरती के अन्त के बारे मे दिया गया इतिहास। इस इतिहास से ही पता चलता है कि भोगवादी जीवन का अन्त ही विनाश है। जयशकर प्रसाद की 'कामायनी' मे 'देव-सस्कृति' के विनाश का कारण भी अति भोग बताया गया है। भोग का आधिक्य स्वत: मृत्यु को खीच लाता है। आधुनिक जीवन भी हमे यही सीख देता है। आज हम मृत्यु से सीधे साक्षात्कार भले न कर रहे हो, उसके आतक के नीचे तो पल ही रहे हैं। आतक की यही छाया घनीभूत हो कर समष्टि-विनाश का हेतु बन जाती है। श्री चार्ल्सवेलित्स ने 'नोवा आर्क' के प्रसग मे एक बहुचर्चित कथा का भी, उल्लेख किया है। वह कथा है अन्तिम जलप्रलय की। इस कथा का विवरण सभी प्राचीन जातियो मे मिलता है। किस तरह नौका द्वारा 'बचाकर बीज रूप मे सृष्टि' मानव आगे बढ़ा है—यह कथा सब धर्मों मे है। हा नाव और नाविक के नाम भिन्न है। परन्तु घटना सत्य है। चार्ल्स वेलित्स की यह पुस्तक चाहे तथ्यपूर्ण न हो, परन्तु बहुत रोचक है। ओरवेल की '१९८४' और हक्सले की 'ब्रेव न्यू वर्ल्ड' की तरह ही।

वेद सम्मेलन के महत्त्वपूर्ण प्रस्ताव

२७-३-८२ को रात्रि ८ बजे आर्य महासम्मेलन के अवसर पर स्वामी विद्यानन्द सरस्वती जी की अध्यक्षता मे वेद सम्मेलन हुआ। इसका उद्घाटन—स्वामी ओमानन्द सरस्वती ने किया। प्रमुख वक्ता थे—डा० शिवाकान्त उपाध्याय, डा० महावीर मीमासक, प० ब्रह्मदत्त स्नातक, प० रविदत्त गौतम। सम्मेलन के सयोजक थे डा० महेश विद्यालकार। इस सम्मेलन मे निम्न मुख्य प्रस्ताव स्वीकृत किए गए—

१ भारत के विश्वविद्यालयो मे सायणाचार्य आदि कृत भाष्यो के साथ-साथ ऋषि दयानन्द कृत वेदभाष्यादि के—तुलनात्मक अध्ययन की व्यवस्था की जाए।

२. पजाब विश्वविद्यालय की भाति भारत के अन्य विश्वविद्यालयो मे ऋषि दयानन्द पीठ की स्थापना की जाए। वैदिक अनुसधान के कार्य की ओर कोई विशेष ध्यान नही दिया जाना चाहिए।

३. स्कूलों की कालेजो मे सस्कृत के अध्ययन को वरीयता दी जाए।

स्वामी विद्यानन्द जी ने अध्यक्षीय भाषण मे कहा कि केवल हर वर्ष सम्मेलन से कुछ नही होगा। पिछले सम्मेलन मे भी कुछ बाते तय हुई, जिन पर सभा ने कोई कार्य नही किया। वह श्री जाखड से भी मिले थे। उन्होने आश्वासन दिया था कि वह वैदिक सिद्धान्तों के प्रतिपादन, इतिहास के पुनरालेखन के लिए प्रयत्न करेंगे। आशा है कि इस सम्बन्ध मे हम सभी आर्यजन अधिक दायित्व का वहन करेंगे, हम जो कुछ कहें, उसे कार्यान्वित करने का प्रयत्न करें।

शाखा कार्यालय ६:३ पसी राजा ९
फोन नं० २६९८३८ चावडी बाजार, दिल्ली-६
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए श्री सरदारी लाल वर्मा द्वारा [illegible] शुक्रपुरा नं० १ [illegible] नगर दिल्ली-३१ में मुद्रित। [illegible]

हम मन-वचन-कर्म से एक हों

ओ३म् स वः पृच्यन्तां तन्वः स मनांसि समु व्रतां।
स वोऽयं ब्रह्मणस्पतिर्भगः स वो अजीगमत् ॥ अथर्व ६.७४.१

आपके शरीर मिलकर रहें, मन मिलकर रहे, कर्म मिलकर होते रहें। ज्ञान के पालक ऐश्वर्यमय प्रभु, आप सबको मिलाकर रखें।

ओ३म्
आर्य सन्देश

प्रश्न है भारतभक्ति का!

चीन, सोवियत रूस, इण्डोनेशिया, मलयेशिया आदि देशों के मुसलमान तथा पश्चिमी देशों के ईसाई अपने-अपने देशों के प्रति वफादार है, परन्तु कितने खेद का विषय है कि भारत के मुसलमान और ईसाई अपने देश के प्रति उतने निष्ठावान नहीं, जितने होने चाहिए। पिछले दिनों बम्बई में आर्य हिन्दू बने आचार्य मित्र जीवन भू० पू० डा० नसरुद्दीन कमाल ने बम्बई और दिल्ली में घोषित किया था—अपने अनुभवों के आधार पर कह सकता हूं कि मुसलमान भारत का मीत नहीं है, उसे भारत के उत्कर्ष से प्रीति नहीं है। शक्तिशाली भारत का अभ्युदय उसे सहन नहीं। बेनिया के भू० पू० इमाम वर्तमान प० जयप्रकाश जी ने यही कहा है कि उन्होंने इस्लाम में रहते हुए कोशिश की थी कि उसके धर्म प्रचारक देश के प्रति वफादार हों, परन्तु वे मजहब के नाम पर भारत की अपेक्षा विदेशों के प्रति अपनी भक्ति रखना चाहते हैं। इसी सदर्भ में सार्वदेशिक सभा के वरिष्ठ उपप्रधान तथा हैदराबाद के प्रमुख आर्य नेता श्री रामचन्द्रराव वन्दे मातरम् ने एक गम्भीर प्रश्न की ओर ध्यान खींचा है।

श्री वन्देमातरम् ने यह प्रश्न ठीक ही उठाया है कि धर्म बदलने से राष्ट्रीयता का परिवर्तन नहीं होना चाहिए। पिछले वर्ष मीनाक्षीपुरम् में हरिजनों को विदेशी पैसे का प्रलोभन देकर उनका सामूहिक धर्म-परिवर्तन करने की कोशिश की गई। यह कोशिश आर्यसमाज के आह्वान पर जनता के समय पर जाग्रत होने से सफल नहीं हो सकी, तथापि इस धर्म-परिवर्तन के बाद गाव का मीनाक्षी पुरम से रहमतनगर बदलने के प्रयत्न का क्या अभिप्राय है? इतना ही नहीं, इन लोगों ने गाव का नाम बदलने के साथ अपनी सस्कृति, पोशाक बदलने की भी कोशिश की। धर्म-परिवर्तन करते ही रामकृष्ण की सन्तान के पुरखे उनके देशवासियों पर अत्याचार करने वाले अरब और तुर्क हो गए। कन्याकुमारी से अब नकट फिर उभरा है। ईसाइयों का जिला, ईसाई राज्य बनना चाहिए। उसका नाम कन्याकुमारी से कुमारी मेरी होना चाहिए।

भारत के सुदूर दक्षिणी किनारे पर ईसाइयों ने इश्तहार लगाए हैं—कन्या-कुमारी ईसाईस्तान है, इसका नाम कुमारी मेरी होना चाहिए। क्षेत्र के ईसाई लोगों की माग है कि विवेकानन्द शिला को ध्वस्त कर भारत में सैन्ट जेवियर के आगमन के स्मारक के रूप में जेवियर स्मारक बनना चाहिए। यदि ये समाचार सत्य हैं तो इनसे देश के क्षितिज पर मण्डराने वाले भीषण खतरे की सम्भावना का पता चलता है। यदि मीनाक्षीपुरम के मुसलमान तथा कन्याकुमारी के ईसाई भारत के प्रति वफादार नहीं हैं और वे धर्म बदलने मात्र से अपनी वफादारी बदलना चाहते हैं तो देश के सूत्र सचालकों को इस विषय में समय रहते सावधान हो जाना चाहिए। श्री वन्देमातरम् ने भारत के गृहमन्त्री का ध्यान तिरुनेलवेली की सस्था इशातुल इस्लाम सवाई की करतूतों की ओर आकृष्ट किया है। भारत का सविधान शोषण, लोभ, लालच आदि के बल पर धर्मान्तरण की अनुमति नहीं देता, परन्तु उक्त सस्था के पैम्फलेट में इसे स्वीकार किया गया है। इशातुल इस्लाम सवाई ने १७ हजार हिन्दुओं को मुसलमान बना लिया है, वह शीघ्र ही ६ हजार को मुसलमान बनाएगा। इस कार्य में उसे आर्थिक कठिनाइयों के कारण बाधा आ रही है। भारत तथा प्रदेशों की सरकार को पैसे के बल पर देश की वफादारी बदलने वाले इस सामूहिक धर्मान्तरण को तुरन्त रोकना चाहिए, जो इस कुचक्र के द्वारा देश की वफादारी बदलना चाहते हैं, इस तरह के देशद्रोह की अनुमति नहीं होनी चाहिए।

चिट्ठी-पत्री

वेदों के विषय में ऋषि की दृष्टि आर्ष मान्यता के अनुरूप

'आर्य सन्देश' का आर्यसमाज-स्थापना-दिवस विशेषांक ध्यानपूर्वक आद्योपान्त पढ़ा। विशेषांक में अत्यन्त ही उपादेय लेख प्रकाशित किए गए हैं। पूज्य स्वामी वेद-मुनि जी परिव्राजक का 'आर्यसमाज अब और आगे' लेख विशेष प्रेरणास्पद है। यह लेख जहा आर्यसमाज की वस्तुस्थिति का प्रकाशक है, वहा आर्यसमाज के नेतृत्व को सम्भलने की चेतावनी देता है। वेदों के मनीषी विद्वान डा० कृष्णलाल जी लिखित 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्', दयानन्द और आर्यसमाज के नाम से 'पब्लिक स्कूल' खोलने वाले तथाकथित आर्यसमाजियों के लिए विचारणीय है। 'महर्षि दयानन्द द्वारा निर्दिष्ट अर्थव्यवस्था' नामक लेख में प्रसिद्ध लेखक डा० प्रशान्त कुमार जी वेदालकार ने महर्षि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित अर्थव्यवस्था को युगानुकूल सिद्ध करते हुए उसे बढ़ती हुई बेकारी एव बेरोजगारी के उन्मूलन में सहायक बताया है।

'स्वामी दयानन्द के अनुसार वेदों का प्रतिपाद्य' लेख में श्रीमती कृष्णा रागुली ने महर्षि के मत की श्रमपूर्वक प्रस्थापना की है, यद्यपि लेखिका ने सम्पूर्ण लेख कुशलता-पूर्वक लिखा है तथापि लेख के उपसहार में महर्षि की वेदसम्बन्धी विचारधारा के प्रसग में एक विवादास्पद पक्ति लिखकर दी है। लेखिका लिखती हैं—

'अन्ततोगत्वा कहा जा सकता है कि महर्षि दयानन्द हमारे सम्मुख वेद के विषय में एक नवीन विचार रखते हैं।" महर्षि की वेदसम्बन्धी मान्यता एव वेद व्याख्या प्रसिद्ध है। वेद सम्बन्धी मन्तव्यों में महर्षि की सर्व प्रमुख विशेषता ही यह है कि—वेद के सम्बन्ध में उन्होंने जो कुछ लिखा, वह प्राचीन आर्ष परम्परा के आधार पर है। महर्षि ने स्वय ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका के आरम्भ में इस तथ्य को स्पष्ट करते हुए लिखा है—

आर्याणां मुन्यृषीणां या व्याख्यारीतिः सनातनी।
तां समाश्रित्य मन्त्रार्था विधास्यन्ते तु नान्यथा ॥

इस श्लोक का हिन्दी अभिप्राय स्पष्ट करते हुए ऋषि ने लिखा है—'इस वेदभाष्य में अप्रमाण लेख कुछ भी नहीं किया जाता है, किन्तु जो ब्रह्मा से लेके व्यास पर्यन्त मुनि और ऋषि हुए हैं उनकी जो व्याख्यारीति है उससे युक्त ही वेद भाष्य बनाया जाएगा।"

इसमें सन्देह नहीं कि महर्षि दयानन्द ने निरुक्तादि आर्ष ग्रन्थों की वेद व्याख्या पद्धति को सहस्राब्दियों बाद पुन प्रतिष्ठापित किया है। महर्षि दयानन्द आर्ष ग्रन्थों के एव उन्हीं की मान्यताओं के कितने पोषक हैं, यह 'स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश' की निम्नलिखित पक्तियों से स्पष्ट होता है—

"जो वेदादि शास्त्र और ब्रह्मा से लेकर जैमिनिमुनि पर्यन्तों के माने हुए ईश्वरादि पदार्थ हैं जिनको मैं भी मानता हूं सब सज्जन महाशयों के सामने प्रकाशित करता हूं।·· ·· मेरा कोई नवीन कल्पना वा मतमतान्तर चलाने का लेशमात्र भी अभिप्राय नहीं है···।"

आशा है इतने ही उद्धरण पर्याप्त होंगे, जिनसे सिद्ध होता है कि महर्षि ने वेद के सम्बन्ध में जो भी लिखा है वह प्राचीन आर्ष मान्यता के अनुकूल है। अत लेखिका द्वारा उसे 'नवीन विचार' कहना उपयुक्त नहीं जान पड़ता।

—अशोक विद्यालकार,
९६ अशोक भवन, कृष्णा गली, पुरानी गुप्ता कॉलोनी,
दिल्ली—६

ऋषि दयानन्द का सही दृष्टिकोण

२१ मार्च, १९८२ 'आर्य सन्देश' में विजय नारायण उपाध्याय जी का 'महर्षि दयानन्द, आर्यसमाज एव युवाशक्ति' शीर्षक लेख अत्यन्त सामयिक तथा तथा ऋषि दयानन्द को समझने का सही दृष्टिकोण वाला लगा। धन्यवाद! आर्यसमाज के पद,लोलुप नेताओं को धिक्कार है कि राजनीतिक स्वार्थ के कारण आर्यसमाज की वृहद हानि कर रहे हैं।

—स्वामी दयानन्द विदेह, वेद सस्थान,
सी २२, राजौरी गार्डन, नई दिल्ली-२७

मैंने अनार्य समाज क्यों छोड़ा ?

(लेखक स्वर्गीय राजकुमार रणवीरसिंह)

दिनाक २१ फरवरी १९८२ को प्रकाशित "आर्य सन्देश" के 'बोधरात्रि विशेषाक' मे हमने 'महर्षि दयानन्द एक स्मरण' शीर्षक लेख मे अमेठी राज के द्वितीय राजकुमार स्वर्गीय श्री रणवीर सिह जी का उल्लेख किया था। उस लेख मे स्वर्गीय राजकुमार का फोटो भी प्रकाशित हुआ था। राजकुमार रणवीर सिह तथा उनके अनुज राजकुमार रणञ्जय सिह जी महर्षि दयानन्द के व्यक्तित्व को स्पर्शपाषाणी चुम्बक शक्ति से बहुत स्वल्प वय मे ही—मात्र १३ और १४ वर्ष की वय मे ही—आकृष्ट हो कैसे पूर्ण निष्ठावान आर्यसमाजी बन गए थे, इसका उल्लेख हमने उस लेख मे किया था। प्रस्तुत निबन्ध मे 'आर्य-सन्देश' के सुधी पाठक स्वर्गीय राजकुमार रणवीर सिह जी के शब्दो मे ही यह पढ-सुनकर आह्लादित होगे कि आर्यसमाज मे आने के लिए परपरागत पौराणिक मत का उन्होने क्यो परित्याग किया था ? यह लेख आज से ६०-६५ साल पूर्व लिखा गया था।

तरुण तपस्वी महामानव राजकुमार रणवीर सिह जी उत्तर प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा के भू० पू० अध्यक्ष राजर्षि रणञ्जय सिह जी के अग्रज थे। सन् १८९९ मे उनका जन्म २१ जुलाई को, तथा महाशोककारी शरीरान्त मात्र २१ वर्ष की वय मे २ फरवरी १९२१ को हो गया था। पिछली विजय दशमी के अवसर पर राजकुमार द्वय द्वारा प्रवर्तित मासिक पत्र 'मनस्वी मे समय-समय पर उनके लिखे जो लेख प्रकाशित होते रहे थे, उनमे से चुने हुए ३१ निबन्धो का एक सकलन राजर्षि रणञ्जय सिह जी ने 'रणवीर रत्नाकर' के नाम प्रकाशित कराया है। प्रस्तुत निबन्ध उसी सकलन मे से है।

—राजनाथ पाण्डेय

डा० भारतीय का अभिनन्दन

दयानन्द शोध सस्थान, पजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ के अध्यक्ष आर्य विद्वान डा० भवानीलाल भारतीय का अभिनन्दन २८ मार्च को मुरादाबाद की समस्त आर्यसमाजो की ओर से आर्यसमाज बास मण्डी मे किया गया और एक हजार रुपए भेट मे दिए गए।

जिस पुरुष ने १३-१४ वर्ष अनार्य समाज मे रह कर अपने पिता के राज्य भर मे पूर्ण रूप से प्रतिष्ठा पाई हो, जो सनातन धर्म के धुरन्धर अनुयायी अपने पितामह का अवतार कहलाता रहा हो वह उसको सर्वदा के लिए तिलाञ्जलि दे देवे, इसका भी कुछ-न-कुछ कारण अवश्य ही होना चाहिए।

'मैं कौन हू और क्या हू', इस बात के बतलाने की विशेष आवश्यकता नही है, क्योकि 'मनस्वी' के प्राय सभी पाठक मुझसे अथवा मेरे नाम से परिचित है आवश्यकता केवल इस बात की है कि (मैंने अनार्य समाज क्यो छोडा ?) यह बतलाऊ…… ·· जिन कारणो से मैंने अनार्य समाज को छोडा है वे निम्नलिखित हैं—

१. अनार्य समाज वैदिक धर्म का घोर विरोधी है; वह वेद का बहाना लेकर वाम मार्ग का प्रचार करता है और इस प्रकार एक भाति से वेदो का महा-अपमान तथा निन्दा कराने से स्वय वेद-निन्दक है। नास्तिको एव वेद-निन्दको के अनुसार वह भीतर-भीतर नास्तिकता का प्रचार कर रहा है। इधर 'आर्यसमाज' वेदशास्त्रो का सर्वतोभावेन कट्टर अनुयायी और—स्वा० श्री नित्यानन्द सरस्वती महोदय, सर्वश्री प० तुलसीराम स्वामी महोदय, प० अखिलानन्द शास्त्री 'कविरत्न' महोदय, प० भोजदत्त शर्मा 'आर्य पथिक' महोदय, प० गणपति शर्मा महोदय एव प० नाथूराम शकर शर्मा 'कविताकामिनीकान्त' महोदय इत्यादि यतिवरो पण्डित पुङ्गवो तथा सुकवि महाशयो को वैदिक धर्म प्रचार मे मनसा-वाचा-कर्मणा तत्पर देख कर सन् १९१३ ई० मे 'अनार्य समाज' छोड सत्य सनातन धर्मानुयायी 'आर्यसमाज' मे मै आ गया।

२. दूसरा कारण वर्ण-व्यवस्था को जन्म से मानने की झूठी डीग मारता है और वास्तव मे यह 'गुण-कर्मानुसार' वर्ण-व्यवस्था का अनुयायी तथा प्रचारक। क्योकि चमार आदि को अस्पृश्य समझ पहले तो यह उनसे घोर घृणा करता है। राम-राम जपते हुए 'जाति के एक अग 'शिखाधारी' चमारो को अपने निकट से भी नही निकलने देता, परन्तु वे जहा ईसाइयो या मुसलमानो का धर्म-धारणा कर, पढ-लिखकर उर्दू या अग्रेजी मे कुछ पारगत हुए कि गुण-कर्मानुसार उन्हे 'मुसलमान' या 'ईसाई' समझ लिया और 'गुडमोर्निग सर' तथा हस्तमिलाप आदि करने लगे। अनार्यों के हृदय आन मुख आन' वाले भाव ने मुझे उस समाज को त्यागने पर विवश किया और गुण-कर्म-स्वभावानुसार वास्तविक वैदिक वर्ण व्यवस्था का पोषक, प्रचारक तथा अनुयायी विशुद्ध वैदिक धर्मानुयायी 'आर्यसमाज' मे मैं आया।

शुद्रोब्राह्मणतामेति,
ब्राह्मणश्चेति शूद्रताम् ।
क्षत्रियाज्जातमेवन्तु
विद्याद्वैश्यात्तथैव च ॥

—मनु०, अ० १०, श्लोक ६५

यही विशेष रूप से मुझे गुण-कर्म व्यवस्था मानने पर कटिबद्ध किए हुए है।

३. तीसरा कारण मूर्ति-पूजन है। अनार्यसमाज मूर्ति पूजन को मानता है। हमारे पूज्य वेद भगवान् न तस्य प्रतिमा तथा 'अन्धन्तम ०' और सपर्य्य०' आदि मन्त्रो द्वारा ईश्वर की मूर्ति बनाने का निषेध करते हैं। मैं स्वय वेदोक्त रीति से निराकारेश्वरवादी हू, अत. मूर्ति-पूजन का घोर विरोधी हू। श्री प० अखिलानन्द जी के मुद्रित शास्त्रार्थो से भी मूर्ति-पूजन को मैंने अवैदिक जान लिया है, जो कि प० जगत्प्रसाद जी तथा प० ज्वालाप्रसाद मिश्र जी से प० अखिलानन्द शास्त्री 'कविरत्न' महोदय ने शास्त्रार्थ करके 'विजय' प्राप्त किया था और अनार्य सामाजिक रहता हुआ भी, मैं मूर्ति-पूजक न था। इसका कभी मैंने मण्डन नहीं किया।

४ चौथा कारण श्राद्ध है। मृतक श्राद्ध अवैदिक होने से सनातन नही सिद्ध होता महाभारत के पश्चात् इसका प्रचार हुआ है। यही जान पड़ता है और मुझसे सन् १९१४ ई० मे प० अखिलानन्द जी ने कहा था कि किसी वेद मे कहीं श्राद्ध शब्द नही है इसके अतिरिक्त पत्रो मे पढ़ तथा 'कविरत्न' जी से सुन कर मुझे यह भी ज्ञान हुआ कि 'किसी स्थान पर शास्त्रार्थ मे कविरत्न जी ने प० ज्वाला-प्रसाद जी मिश्र को यह बात बता दी है कि 'विष्णु पुराण मे मास से पिण्ड-दान का विधान है।' इससे विशेषरूपेण पौराणिक मत तथा तदनुयायी अनार्य समाज से मुझे मुझ अत्यन्त वैमनस्य हो गया। उक्त समाज के त्याग मे यही प्रधान कारण हुआ।

५ पाचवा कारण 'सलाम-सलाम की भरमार है। ब्राह्मणेतर जातियो मे 'सलाम' का भैरवी चक्र है। सलाम को अनार्य समाज मे ठसाठस भरा देख मे ऊब गया। इस अपवित्र शब्द ने मुझे सस्कृत के किसी सुन्दर शब्द के व्यवहारक समाज की ओर जिज्ञासापूर्ण नेत्रो मे देखने को कटिबद्ध किया। मुझे एक ओर से 'नमस्ते' का मिष्ट स्वर श्रवणगोचर हुआ। मैंने ध्यान से देखा तो वह स्वर रूपी सुवास आर्यसमाज रूपी शुद्धयज्ञ से उठ कर आया हुआ दृष्टिगत हुआ। समाज मे सस्कृत शब्द के व्यवहार का सन्तोषप्रद दृश्य मुझे घसीट लाया। मैंने अपने को धन्य समझा और मै कृतार्थ हुआ।

६ छठा कारण विधवा-विवाह है। यद्यपि ऋषि दयानन्द सरस्वती ने विधवा-विवाह का द्विजो मे न होना ही लिखा है तथापि श्री प० अखिलानन्द जी कविरत्न ने निर्मित वैधव्य-विध्वसतर चम्पू नामक ग्रथ मे विधवा-विवाह की पुष्टि मे सैकडो सामान्य प्रमाण तथा एक दिन इसी विषय पर उनका सारगर्भित, प्रभावोत्पादक, करुणा-रस परिपूर्ण मनोहर व्याख्यान आदि को पढ़-सुनकर मैं विधवा-विवाह को वेदोक्त मानने लगा और अनार्य समाज मे विधवाओ पर घोर अत्याचार की भीषण अश्लील घटनाएं पढ कर उक्त समाज को छोड़ कर सदा-सर्वदा के लिए मैं आर्य समाज मे आ गया।

७ सातवा कारण शुद्धि है। अनार्य समाज मे शुद्धि का अभाव तथा अशुद्धि की भरमार है। यहा रुपयो के सामने भयकर से भयकर अत्याचार कराने और करने मे लोग नही हिचकते तथा न वे विधर्मी कहे जाएं और न पतित। इसके अतिरिक्त सामाजिक नैर्बल्य के कारण अनार्य समाज के हजारो अनुयायी ईसाई या मुसलमान होते जाते हैं गोहिंसको की वृद्धि तथा अशुद्धाचार का आधिक्य, घातको के हाथ गो-विक्रय का प्रचार तथा मिथ्यावादित्व का बाहुल्य देख अनार्य समाज को छोड़ मैं आर्य समाज मे आकर ही सन्तुष्ट हुआ। आर्य समाज मे गोरक्षको के दल मे सम्मिलित होने से पाप-ह्रास देख पड़ा। अनाथालय, चिकित्सालय, पाठशाला, गुरुकुल, गोशाला, आदि का आधिक्य देख, विधवाश्रम प्रभुति सन्तोषजनक दृश्यो का अवलोकन कर, गोवध करने वालो का ह्रास तथा वैदिक धर्मानुयायी आर्यों की बढ़ती देख इसी को मैं सर्वोत्तम उन्नति समझ अङ्गोपनिषद् प्रभृति पुस्तको का अनुयायी अनार्य समाज आजीवन के लिए त्याग सत्यार्थ-प्रकाश रूपी उस मार्ग-प्रदर्शक शिलास्तम्भ को वेदो के चौराहे पर देख मुस्कराता हुआ आर्यसमाज मे प्रविष्ट हो गया।

८. आठवा कारण ब्राह्मण जाति का सम्मान है। आर्यसमाज के सस्थापक ऋषि दयानन्द तथा समाज के सस्कृतज्ञ विद्वानो मे से अत्यधिक को जन्म से तथा गुण-कर्म के अनुसार भी सच्चा ब्राह्मण देख मैं स्वर्गोपम स्वच्छ आर्य समाज मे आया। आर्य समाज ही के प्रसिद्ध महारथी का बनाया ग्रन्थ ब्राह्मण-महत्वादर्श' है। जिसके मुद्रण-व्यय मे मैंने भी सहायता देने का सौभाग्य प्राप्त किया था।

९. नवा कारण अनार्य समाज मे अछूत जातियो के अत्यन्त अपमान रूपी स्वपद पर कुठाराघातवत् अनर्थकारी कार्य है। मैं पतित, नीच तथा अछूत जातियो से हार्दिक सहानुभूति रखता हू। कल्याण समझता हू अत इसे एक परोपकारी समाज देख मैं सानन्द इसमे आया हू।

मरण तो इक वासर होइहै
अमरता नहिं प्राप्त सदेह को।
कछुक पुण्य कमाय चलो अरे।
यह शरीर अवश्य विनश्य है॥

आर्य नारी अधिकार बोध के साथ दायित्व-बोध भी समझें

(आर्य महिला सम्मेलन शाहदरा (भोलानाथ नगर) के उद्घाटन भाषण का सारांश)

उद्घाटन कर्त्री—डा० पुष्पावती सचालिका मातृ मन्दिर कन्या गुरुकुल वाराणसी

मानवहृदय की जागृति की पहचान है कि अधिकार बोध के साथ-साथ वह उत्तरदायित्व का अनुभव भी करे। जो व्यक्ति केवल कर्त्तव्य करता है और अधिकार नही लेता, या अधिकार को नही समझता, वह दासवत् होता है और जो केवल अधिकार को देखता है कर्त्तव्य या उत्तरदायित्व को नही देखता वह स्वार्थी, उच्छृखल एव भोगी होता है।

वास्तव मे अधिकार और कर्त्तव्य दोनों के समन्वय से ही व्यक्ति व समाज का सम्बन्धी नर्वहन सन्तुलित हुआ करता है।

मध्ययुगीन नारी दासत्व की कोटि मे आ गई थी यद्यपि उस समय भी कही-कही तेजोमय भावना के दर्शन होते थे। राजपूतानियो की जीवन-ज्योति सदा प्रखर रूप मे ज्वलित रही, सम्प्रति चाहे वह कुछ प्रसुप्त दिखाई दे रही है। हा मध्य-द्वारा युग मे नारी अच्छी तरह बन्धनग्रस्त कर दी गई थी और उसकी प्रगति के सभी बन्द कर दिए गए थे। वह पुरुष की इच्छापूर्ति का खिलौना, उसके इगित पर चलने वाली कठपुतली मात्र बन कर रह गई थी। अर्थात् उसमे अधिकार-बोध की भावना बिल्कुल समाप्त हो गई थी।

आधुनिक युग को प्रभात वेला मे देव दूत दयानन्द का दयार्द्रहृदय मातृशक्ति की यह विपन्नावस्था देख करुण चीत्कार कर उठा। उसने यह भी देखा कि मातृशक्ति के पतन के साथ-साथ पुरुष वर्ग भी मरणासन्न हुआ जा रहा है। उसने सिंह गर्जना के साथ भारतीय समाज को जगाया और उसे नारी के बन्धन खालने पर विवश किया। और उसके प्रतिनिधि आर्यसमाज ने नारी-जागरण की दिशा मे जो अथक प्रयास किया, वह युग-युग तक स्मरण रहेगा। परिणाम सुखद रहा और आज प्रत्येक वर्ग व समुदाय की महिला शिक्षण सस्थाए चल रही है और उनकी पुत्रिया समाज के प्रत्येक क्षेत्र मे पदार्पण कर रही हैं। आज भारतीय गणतत्र की अधिष्ठात्री प्रधान मन्त्री एक महिला हैं, इससे बढ़कर ऋषि दयानन्द व आर्यसमाज के प्रयासो की सफलता का उदाहरण और क्या हो सकता है।

नारी-जागरण के लिए सर्वप्रथम अपेक्षा थी अधिकार-बोध की अर्थात् इस बात के अनुभव करने की कि नारी के भी हृदय व मस्तिष्क है जो स्वतन्त्र चेतना से युक्त है और जिसमें जन्म-जन्मान्तर के सस्कार व भावनाए सचित हैं अत नारी का अपना स्वतन्त्र अस्तित्व है जो अपने विकास के लिए उसी प्रकार पुरुष के सहयोग की अपेक्षा रखता है, जिस प्रकार पुरुष नारी के सहयोग की अपेक्षा करता है। इस भावना से समानता की भावना स्वयमेव आ जाती है। मध्ययुगीन नारी के प्रति स्वतन्त्र इकाई की भावना नष्ट हो चुकी थी, जिससे वह मनुष्य रूप मे पशुवत् हो गई थी। आधुनिक युग मे उनको अधिकार बोध हुआ यह ठीक ही था पर अधिकार का भी एक लक्ष्य होता है। उस लक्ष्य को ओझल कर देने पर अधिकार मनुष्य को अपविवेकी, स्वार्थी, दम्भी एव भोगलिप्सु बनाकर छोड़ता है। विकसित नारी की उपेक्षाए।

"ऋषि दयानन्द ने यह लक्ष्य सामने रखा था, जब उन्होने कहा था कि इस देश मे धर्म की रक्षा यहा की नारियों के द्वारा ही मुख्य रूप से हुई है तो नारी-जागरण के मूल मे उनका यही अभिमत था, कि नारी बन्धन-मुक्त होकर देश व जाति को सुदृढ करने मे अधिकाधिक समर्थ हो सके। ऋषि दयानन्द नारीत्व की शक्तियो से अभिज्ञ थे, इसीलिए उनके वेदभाष्य मे सर्वत्र यह टिप्पणी मिलेगी कि "इसी प्रकार उपदेशक पत्नी भी महिलाओ मे उपदेश कार्य करे न्यायाधीश की पत्नी न्याय करे, अध्यापक की पत्नी अध्यापन करे, राजा की राज्ञी शासन कार्यो मे सहयोग करे इत्यादि, जहा ऐसी विकसित नारी होगी, उस देश मे विपन्नता कभी आ सकेगी क्या? आर्यसमाज के अभिमत नारी का यही उदात्त स्वरूप है। वेद की उषा (नारी शक्ति का प्रतीक आती है) मुस्कराती हुई, किरणो से अन्धकार का नाश करती हुई। वह अश्वावती है। वह धन-ऐश्वर्य की आगार है और अश्वारोहिणी अर्थात् अत्यन्त गतिशीला है। वह चारो ओर सौभाग्य व मगल की सृष्टि करती है और प्रेरणादात्री है। वेद कहता है श्वसुरे साम्राज्ञी भव, वह अपने पतिगृह की साम्राज्ञी 'महारानी' है। इतना तेजस्वी रूप है नारी का। उसमे पत्नीत्व व मातृत्व का अद्भुत समन्वय है। पुरुष को प्रेरणा देने वाला उसका स्वरूप जगत् के लिए वरदान रूप है। पुरुष बालक रूप मे मा की गोद मे ही पल कर जीवन तत्त्व ग्रहण करता है। उसकी भावनाओ, आकाक्षाओ व सस्कारो मे मा का अशप्रधानरूप से रहता है। यही से मा का प्रेरणादायी-स्वरूप आरम्भ होता है। मा, बहन, पत्नी की प्रेरणा पुरुष के जीवन को लम्बी सीमा तक गहराई से प्रभावित करती है। इतिहास के सैकडो उदाहरण इस का प्रमाण है। अभी भी अनेक बहनो का जीवन पुरुष के लिए प्रकाशदीप बना हुआ है। अनेक देवियो के प्रभाव से पुरुषो ने मास भक्षण छोड़ दिया। रिश्वत लेना त्याग दिया, अनेक नास्तिक पुरुष ईश्वर भक्त बन गए। यह हो भी क्यो न वास्तव मे नर-नारी परस्पर आधे आधे आर्य अग है। एक-दूसरे के पूरक है। इस आधे अग का प्रभाव दूसरे आधे अग पर पडना स्वाभाविक ही है। नारी का प्रभाव पडता है प्रेरणा के रूप मे यही पर उसका दिव्य स्वरूप प्रकट होता है। वह देवी बनती है, पुरुष को समाज को शुभ प्रेरणा देकर। प्रेरणा भी ऐसी कि जिससे कायर हृदय भी कर्त्तव्य भिमुख हो जाए। विलासी भी राष्ट्र माता का पुजारी बन जाए और शोषक भी पालक बन जा।

नारी मे अद्भुत क्षमता है। पत्नी के के मर जाने पर पुरुष तो दूसरे विवाह की बात सोचने लगता है, वह बाहर का काम व गृहस्थी एक साथ चलाने मे द्विविधा अनुभव करता है, परन्तु पति के मर जाने पर पत्नी बच्चो को भी सम्भालती है और आवश्यकता पडने पर आजीविका अर्जन भी करती है। नारी के भीतर सर्वविध शक्तिया है। एक ओर जहा शाति दायिनी है, दूसरी ओर वह कराल कालिका भी है। उसके युद्ध कौशल ने आततायियों को स्वर्ग की राह दिखाई है, उसके शासन काल मे प्रजा ने सुख-चैन की निद्रा ली है, उसकी समाज-सेवा से अनेक दुखियो का उद्धार हुआ है। दानशीलता, कोमलता, करुणा स्नेह सहनशीलता आदि तो उसके स्वाभाविक गुण है ही पर समय पडने पर वह मुण्डमाला धारिणी भी बनी है। वह पद्मासना है और सिंहवाहिनी भी।

वास्तव मे ऋषि का नारी जागरण का सदेश इतना समयोचित था कि सभी वर्गो ने इसे अनायास अपना लिया पर उन्होंने गहराई से इसे नही समझा। परिणाम हुआ कि नारी जागरण के कार्य का लक्ष्य बिन्दु हाथ से छूट गया। और आज नारी जाग्रत होकर भी अन्धकार मे विचर रही है। प्रथमचरण मे तो नारी के मन मे प्रतिशोधि भरी अधिकार भावना रही। और उसका स्वरूप यही रहा कि घर से बाहर नौकरी आदि करने की सुविधा उसे मिले पुरुष ने पहले पहल विरोध किया जबकि उसके नारी पर एकाधिकार को आघात लगा, पर जब शनै शनै उसे धनागम का सुख मिलने लगा और घर की जिम्मेदारियो से छुट्टी मिलने लगी, तो वह महिलाओ के अर्जन कार्य से सन्तुष्ट रहने लगा। उसे दोहरा लाभ मिला। अर्जन कार्य मे सलग्न गृहिणिया घर का भी सब काम यथावत् सभालती रही अत पुरुष को गृह प्रबन्ध मे कोई असुविधा नही हुई, उधर पसा भी मिलता रहा। अब उल्टी बात हो रही है। प्रत्येक शिक्षित युवक अर्जनशीला पत्नी ही चाहता है और कई स्थानो पर अनिच्छा होते हुए भी पति की इच्छापूर्ति के लिए ही गृहिणी को अर्जनकार्य मे प्रवृत होना पड़ रहा है। उधर नारी के ऊपर समस्त गृह प्रबन्ध व बच्चो के भविष्य निर्माण का भार आ गया है। अब वह बाहर के जीवन मे शाति अनुभव करती है। अर्जनशीला देवियो से पूछिए जिस दिन उन्हे घर मे बैठना मिलता है, दिन भर बच्चो के बीच रहना मिल जाता है, उस दिन के अनिर्वचनीय आनन्द का अनुभव करती है।

नारी ने अपने अधिकार का उपयोग एक अन्य दिशा मे भी किया, वह था स्वच्छन्द विचरण, जिसका स्वरूप क्लबो मे, नाच घरो मे या पुरुषो के साथ अविवाहित स्वच्छन्द विहार के रूप प्रस्फुटित हुआ। इसमे नारी विलासिता का खिलौना बन कर रह गई। पर पुरुषो को अधिकाधिक आकृष्ट करने की प्रवृति उसके मूल मे है। यह लक्ष्यहीन अधिकार का उद्दण्डतामय स्वरूप है। उसमे कोई मर्यादा व कर्त्तव्य का विचार नही। केवल भोगलिप्सा की राक्षसी वृत्ति ही प्रधान है। एक समुदाय उन देवियो का भी है, जो अर्द्धशिक्षिता हैं और धार्मिक वृत्ति की है। सामान्यत इसके परिवार का जीवन शान्तिमय है, पर सामाजिक गतिविधियो के उन्नयन व मोड़ पर उनकी कोई छाप नही है। ये बच्चो को कुछ प्रेरणा अवश्य देती है, पर उन को देश सेवा की भावना से ओतप्रोत नही कर पा रही हैं।

यह सुनिश्चित है कि यदि इस देश का जाग्रत महिला वर्ग अपने अधिकार बोध के साथ-साथ कर्त्तव्य बोध से भी अनुप्राणित होता तो आज देश का चित्र कुछ और ही होता।

यह कहना कि हम क्या कर सकती है बाहर का प्रभाव ऐसा ही पड रहा है इत्यादि, यह कुछ अश तक ठीक है, परतु नारी निर्मात्री भी है। वह अपने भीतर बालक का निर्माण करती है। उसके अग प्रत्यग से बालक के शरीरावयवो का निर्माण होता है। उसकी भावनाओं सस्कारो से बालक का मनोमस्तिष्क का उद्दीपन होता है,।

प्रत्येक माता जन्म घुटी के साथ ही बच्चे को देश प्रेम का भाव भरे, तब भावी पीढी का उद्धार होगा। सस्काराधान का सबसे उत्तम समय होता है शिशु का छोटे से छोटे स्वप्न जिसमे वह नितान्त अबोध होता है, उसमे वह भावनाओ के रूप मे माता के सस्कार ग्रहण करता है। उस अवस्था मे माता को अत्यधिक जागरूक होना पडता है, और वही वह उपेक्षा कर जाती है। बालक के जन्म से पहले माता को बच्चे को सस्कार देने होते है। इस समय उन सस्कारो मे त्रुटि हो रही है, इसी से वर्तमान पीढी उच्छृखलता व लक्ष्यहीनता की ओर अभिमुख हो रही है। नारी जागरण का एक और पक्ष है जो अभी तक अछूता है, वह है कि नारी ही नारी का सहयोग करे। नारी की दुर्दशा का

मुख्य कारण है कि एक नारी दूसरी नारी का सहयोग नहीं कर पाती है, और किसी अंश में तो एक-दूसरे पर अत्याचार भी करती है। नारियों का परस्पर ईर्ष्याभाव प्रसिद्ध ही है।

आश्चर्य का विषय है कि जाग्रत नारियों के समुदाय भी जिस किसी महिला को पुरुष का आश्रय प्राप्त नहीं होता, वह असहाय रहती है उसे कोई सुरक्षा व सरक्षा का आश्वासन नहीं मिलता। ऐसे भी उदाहरण है कि जब किसी एकाकिनी महिला पर कुछ आपत्ति आई, तो तथाकथित जाग्रत महिलाएं मूक रूप से तमाशा ही देखती रहीं। पुरुष की सहायता के आह्वान के बिना संकट नहीं टला। देखा जाए तो वास्तव में नारी ही नारी पर अत्याचार करती हुई प्रतीत होती है। दहेज की राक्षसी प्रथा पर कितनी निर्दोष भारतीय बालाओं का बलिदान हो रहा है, कितने अमानुषिक व दारुण कष्ट वधू को दिए जाते है जीवित ही उन्हें जला दिया जाता है वध कर दिया जाता है। यह सब क्यों? क्या केवल पुरुष ही इसके लिए दोषी है? नहीं, मुख्यत वर की माता बहनों व भाभियों व अन्य बड़ी-बूढ़ियों की ही प्रेरणा रहा करती है यदि गृह देवियां सम्बन्ध तय होते समय ठहरावे या दहेज मांगने का कस कर विरोध करे, तो गृह पुरुषों की हिम्मत दहेज ठहराने व वधू को मारने की नहीं हो सकती। इसी प्रकार नारी ही नारी की शत्रु बन रही है।

आर्य महिलाएं एक ओर जहां लक्ष्मी, सरस्वती, शारदा की परम्परा में आती है दूसरी ओर कालिका चण्डिका में पड़ती है वहीं तीसरी ओर वे मन्त्रद्रष्टा ऋषिकाओं गार्गी सुलभा की पंक्ति में खड़ी है। विश्वशान्ति के लिए नारी के इन्हीं विविध शक्तियों से युक्त सुविकसित स्वरूप की आवश्यकता है।

हमारे पास पावन वेद की ज्योति है, ऋषि दयानन्द का आशीर्वाद है और आर्यसमाज का सशक्त सहयोग। अतः अब अपनी दुर्बलताओं से ऊपर उठकर विलास भाव आराम को त्यागकर लोभ लालच को तिलांजलि देकर कर्त्तव्य पथ पर खड़ी हो जाओ। वेददीप लेकर संसार को मार्ग दिखाने आगे बढ़ो। आपके जीवन की सफलता का मापदण्ड होगा आपकी तेजस्वी सन्तान जिसका चरित्र गंगाजल की तरह पवित्र हो, जिसमें अदम्य साहस व कर्त्तव्यशीलता हो जिसमें राणा शिवा का देशप्रेम, राजपूतों का शौर्य एवं ऋषियों की साधना हो। आज अपने देश को व विश्व को उत्तम सन्तान के रूप में अमर देन देनी है और अपने को देश रक्षा समाज रक्षा में उत्सर्ग कर देना है।

आर्य महिलाओं की विद्यमानता में कोई भी कुरीति नहीं होनी चाहिए दहेज की प्रथा तत्काल मिटनी चाहिए। तस्कर व्यापार व ब्लैकमार्केट का समूल विनाश होना चाहिए, फैशन परस्ती के नाम पर अड्डों का प्रदर्शन रुकना चाहिए अश्लील चलचित्रों पर रोक लगानी चाहिए। नित नए भगवानों का अवतरण बन्द होना चाहिए। घर-घर में पञ्चयज्ञों का पालन हो, देश की अखण्डता सुरक्षित रहे। यह सब आपके द्वारा सम्भव है और अति सहजरूप में सम्भव है कि आप भावी पीढ़ी का सुन्दर निर्माण करें। सन्तान ऐसी उत्पन्न करे जो देश के संकटों को काट दे जैसे जीजाबाई ने शिवा को, सुभद्रा ने अभिमन्यु को तैयार किया था इसी प्रकार आपने अपने बच्चों को तैयार करना है। इस कर्त्तव्य बोध के साथ ही हमारे अधिकार हमें सुखदायी होंगे।

आर्य जगत् समाचार

विदेशी धन पर रोक लगाई जाए

शुद्धि कार्य में सहयोग दें : श्री देवीदास आर्य का आह्वान

ग्वालियर। २८ मार्च को आर्यसमाज चित्रगुप्तगंज के वार्षिक उत्सव का समापन करते हुए, देश के प्रसिद्ध समाज सुधारक श्री देवीदास आर्य कानपुर ने कहा कि हम आज से १०७ वर्ष पूर्व यह सोच भी नहीं सकते थे कि (जबकि आर्यसमाज की स्थापना नहीं हुई थी) इस प्रकार विधर्मी हुए व्यक्ति की शुद्धि हो सकेगी। आजादी के बाद ईसाई और मुसलमान बढ़ते जा रहे है, हिन्दू घटते जा रहे हैं। भारत में ही नागालैण्ड-मिजोरम में हम सन्ध्या व हवन तक नहीं कर सकते।

श्री आर्य ने कहा हमें कोशिश करनी होगी जो हमारे धर्म में आना चाहते हैं, उनका हृदय से स्वागत कीजिए और जाना चाहते हैं, उन्हें रोक दीजिए। पचास करोड़ रुपए अरब देशों से धर्मान्तरण हेतु आए हैं ऐसे ही अरबों रुपए ईसाई मशीनरियों को विदेशों से मिल रहे हैं। इस पर रोक लगनी चाहिए। छुआछूत का जिक्र करते हुए कहा कि इस प्रकार की भेदभाव की दीवारों को गिरा दें। अन्त में श्री आर्य ने हिन्दू समाज का आह्वान किया कि आर्यसमाज की आवाज के साथ हिन्दू समाज एक हो जाए। शुद्धि कार्य में समाज का सहयोग करें।

सेवक की आवश्यकता—

आर्यसमाज मॉडल बस्ती शीदीपुरा दिल्ली ५, को तुरन्त एक सेवक की आवश्यकता है जो भवन की सफाई, देखभाल एवं हवन यज्ञादि के लिए यथासमय पूर्व प्रबन्ध कर सके। अविवाहित विद्यार्थी को वरीयता दी जाएगी, वेतन, १५०) मासिक तथा निवास, पानी, बिजली मुफ्त— डा० बनवारी लाल, शादा, प्रधान, आर्यसमाज।

आर्यसमाज स्थापना दिवस समारोहपूर्वक सम्पन्न

आर्यसमाज केसर गंज अजमेर में आर्यसमाज का १०७वां स्थापना दिवस श्री भाई योगेन्द्र जीत की अध्यक्षता में समारोहपूर्वक मनाया गया। जिसमें दयानन्द सदन के छात्रों तथा श्री अनन्त राव के मधुर भजन हुए। तदनन्तर श्री दत्तात्रय बाव्ले श्री डा० सूर्यदेव शर्मा, श्री प्रो० देव शर्मा तथा श्री जयसिंह महता ने आर्य समाज की स्थापना के महत्व, सेवा कार्यों तथा आर्यसमाज की वर्तमान एवं भावी उपयोगिता के सम्बन्ध में अपने ओजस्वी विचार व्यक्त किए।

विद्वान आर्य पुरोहित चाहिए

"आर्यसमाज हेवी इलेक्ट्रिकल्स, पिपलानी भोपाल में पौरोहित्य का कार्य करने में सक्षम एवं धार्मिक तथा शैक्षणिक विषयों में विद्वान आर्य पुरोहित की आवश्यकता है। अपनी शैक्षणिक योग्यता एवं अनुभव सहित, विवरण के साथ आवेदन करें। नि:शुल्क आवास की सुविधा मिलेगी।

आर्यवीर दल संस्कारी युवक तैयार करें

—प्रो० शेरसिंह

प्रो० शेरसिंह का आह्वान : यमुनानगर में आर्यवीर प्रशिक्षण शिविर

पलवल। आर्य वीर दल हरियाणा के तत्वावधान में वैदिक साधनाश्रम यमुना नगर में १० दिन का ब्रह्मचर्य प्रशिक्षण शिविर युवकों के दण्ड एवं व्यायाम प्रदर्शन के साथ सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। शिविर में ४० आर्यवीरों ने भाग लिया।

दीक्षान्त समारोह आर्य प्रतिनिधि हरियाणा के नवनिर्वाचित प्रधान प्रो० शेरसिंह जी (भूतपूर्व राज्य रक्षा मन्त्री, भारत सरकार की अध्यक्षता में हुआ। प्रो० शेरसिंह जी ने अपने अध्यक्षीय भाषणों में कहा कि आज देश को संस्कारी युवकों एवं संस्कारी नागरिकों की अत्यन्त आवश्यकता है ताकि वे राष्ट्र के उपयोगी अंग बन सकें।

—पुष्पावती पुरी कन्या विद्यालय एवं दयानन्द शिशु मन्दिर मॉडल बस्ती, नई दिल्ली-५ का वार्षिकोत्सव रविवार, ४ अप्रैल को सायंकाल श्री इन्द्रजीतसिंह अग्रवाल की अध्यक्षता में मनाया गया।

"आर्य साहित्य के प्रमुख प्रकाशक और विक्रेता गोविन्दराम हासानन्द, नई सड़क, दिल्ली को क्लर्कों की आवश्यकता।' सुन्दर हस्तलेख, पत्र-व्यवहार में सक्षम, आर्य साहित्य में रुचि रखने वालों को प्राथमिकता। रिटायर्ड व्यक्ति भी नियुक्त किए जा सकते हैं। आवेदन करें। साक्षात्कार के लिए बुलाने पर आएं।"

बोध-कथा

असली दाता कौन ?

रहीम खानखाना एक अच्छे योद्धा, हिन्दी प्रेमी और सबसे अधिक वह एक दानी व्यक्ति थे। उनका नियम था कि वह प्रतिदिन गरीबों या याचकों को दान देते थे। उनका दूसरा नियम था कि दान देते हुए वह कभी अपनी निगाह लेने वाले पर नहीं डालते थे, वह नीचे नजर कर रुपए-पैसों के ढेर से मुट्ठी भरकर रुपए-पैसे गरीबों को खैरात करते थे। एक दिन जब वह गरीब-फकीरों को दान दे रहे थे तब गंग कवि ने देखा—एक भिखारी कई बार खैरात ले चुका है, फिर भी रहीम उसके आने पर उसे मुट्ठी भर-भर कर खैरात दिए जा रहे हैं। कवि गंग से नहीं रहा गया, वह बोल उठे—

सीखे कहां नवाबजू देनी ऐसी देन, ज्यों-ज्यों कर ऊंचे चढ़े त्यों-त्यों नीचे नैन।

नवाब साहब, ऐसी सीख आपने कहां से ली, जैसे-जैसे आपका हाथ दान देने के लिए उठ रहा है, आपके नैन नीचे झुकते जा रहे हैं?

कवि रहीम ने कविता में ही इसका उत्तर दिया—

देने हारा और है जो देता दिन रैन। लोग भ्रम हम पै करें या विधि नीचे नैन॥

असल में दाता तो कोई दूसरा है, हम पर व्यर्थ ही भ्रम होता है कि हम दाता है, इसीलिए आंखें झुक जाती हैं।

—नरेन्द्र

मुसलमान देश के प्रति निष्ठावान् हो

अन्यथा वे भारत छोड़े—म० वेदभिक्षु की घोषणा

शाहगंज (जौनपुर)। यहा २६ मार्च को आर्यसमाज के ५५वे वार्षिकोत्सव के अवसर पर आयोजित धर्म रक्षा सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए अखिल भारतीय हिन्दू रक्षा समिति के अध्यक्ष महात्मा वेदभिक्षु ने यह विश्वास प्रकट किया कि भारत शीघ्र हिन्दू राष्ट्र घोषित होगा।

उन्होंने मुसलमानो को चेतावनी दी कि यदि उन्होने इस देश मे शातिपूर्वक रहना है, तो उन्हें अपनी प्रथम निष्ठा देश के प्रति रखनी होगी। मुसलमानो को वन्देमातरम गाना होगा या भारत से जाना होगा। सम्मेलन की अध्यक्षता दयानन्द संस्थान की अध्यक्ष पडिता राकेशरानी ने की।

महात्मा वेदभिक्षु ने अपने आधे घंटे के उद्बोधक भाषण में इस बात पर गहरा दुख और आश्चर्य प्रकट किया कि सन १९२१ मे जिन मोपलाओं ने मल्ला पुरम् आदि में हजारो हिन्दुओं की नृशस हत्या मे बढ़-चढ़कर भाग लिया था, सरकार ने उन्हे स्वाधीनता सेनानी मानकर राजनैतिक पेशन देने का फैसला किया है उन्होने कहा कि सरकार का यह फैसला हिन्दू समाज का अपमान है और उसके लिए चुनौती है।

३३३ हिन्दू विधर्मी बने

शुद्धि सभा के उपदेशकों द्वारा प्रचार कार्य

भारतीय हिन्दू सभा के उपदेशको द्वारा धर्म प्रचार के प्रभाव से प्रभावित होकर निम्नाकित ग्रामो के नव मुस्लिम व ईसाई भाइयों ने वैदिक (हिन्दू) धर्म अपनाया।

१९-३-८२ को ग्राम—निघोली जि०—एटा मे ठा० अमरसिंह द्वारा आयोजित शुद्धि यज्ञ पर १२ व्यक्तियों के रमजान खा के परिवार पं० दीपचन्द शर्मा कार्यालयाध्यक्ष शुद्धि सभा ने वैदिक धर्म की दीक्षा देकर उनका नाम ठा० रामाधार घोषित किया।

२२-३-८२ को आर्यसमाज आवला जिला—बरेली मे श्री पं० रामचन्द्र आर्योपदेशक गीतकार आर्य प्रतिनिधि सभा लखनऊ उत्तर प्रदेश ने श्री अमृत लाल नागर उपदेशक शुद्धि सभा द्वारा आयोजित शुद्धि यज्ञ पर ७८ ईसाई पुरुष, स्त्री, बच्चों को वैदिक धर्म की दीक्षा दी और उनके हिन्दू नाम घोषित किए। इस समारोह मे आंवला के आर्यसमाज, सनातन धर्म सभा, विश्व हिन्दू परिषद भारतीय जनसघ, बाल्मीकि सभा, और भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा के अधिकारी भी उपस्थित थे।

२०-३-८२ को ग्राम—मुनीमपुरा जिला—रामपुर मे श्री इतवारी लाल उपदेशक शुद्धि सभा ने ६८ ईसाई पुरुष, स्त्री, बच्चों को वैदिक धर्म की दीक्षा दी।

२१-३-८२ को ग्राम हौसपुर, जिला—रामपुर में ७५ ईसाई व्यक्तियो ने श्री इतवारी लाल आर्य के द्वारा वैदिक हिन्दू धर्म अपनाया और क्रेस देवी का नाम कृष्णा देवी, रोकमेस का नाम—रुकमणी, मसीहा का नाम—मामचन्द, रम्मन मसीहा का नाम लाल आदि घोपित किए। स्वामी सोमानन्द जी भी दिल्ली से सम्मिलित हुए।

वैदिक सूक्ति

तस्मै ज्येष्ठाय ब्रह्मणे नम ।

उस सबसे बडे परमात्मा के लिए हमार नमस्कार है!

सत्यार्थप्रकाश अवश्य पढ़े

हम जन्म से पहले कहा थे, मृत्यु के बाद कहा जाएगे? क्या परमात्मा का कोई अस्तित्व है परमात्मा कहा रहता हैं, उसे प्राप्त करने के क्या साधन हे, कर्म फल का महत्व क्या है ससार का निर्माण करने वाला कौन है? सृष्टि की आयु कितनी है। संसार के निर्माण का उद्देश्य क्या है? परमात्मा का असली नाम क्या है, सत्य क्या और असत्य क्या हैं, वर्णाश्रम व्यवस्था क्या है, शासन को सुचारू रूप से चलाने का ढंग क्या है, बच्चों को किस प्रकार से शिक्षित किया जा सकता है, ससार भर के सम्प्रदाय और मतो की वास्तविकता क्या है? इन समस्त प्रश्नो का उत्तर जानने के लिए महर्षि दयानन्द लिखित अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश आज ही मगाकर पढ़ें।

—आत्मदेव, जंगपुरा विस्तार, नई दिल्ली-१९

आर्यसमाज श्रद्धानन्दपुरम गुडगांव में धार्मिक मेला

गुडगाव नगर की समस्त आर्यसमाजो की ओर से दूसरा चतुर्वर्षीय उत्सव १९ अप्रैल से २५ अप्रैल तक मनाया जाएगा। इस अवसर पर युवक, महिला, कवि, वेद, और राष्ट्र रक्षा आदि के सम्मेलन होगे। उनमे आर्य वीर दल हरियाणा के सचालक प्रो० उत्तमचन्द्र शरर, गुरुकुल कागड़ी के उपकुलपति श्री बलभद्र हूजा, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के उपकुलपति डा० राज प्रकाश, डॉ० प्रशान्तकुमार वेदालकार, ऊषा शर्मा शास्त्री, अ० भा० हिन्दू रक्षा समिति के अध्यक्ष महात्मा वेदभिक्षु, आचार्य कृष्णदत्त, आचार्य नरेश ब्रह्मचारी अमृतसर के सगीताचार्य सत्यपाल पथिक आदि के पधारने की आशा है।

आर्यसमाज यमुनाविहार का वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज यमुनाविहार दिल्ली का वार्षिकोत्सव एव वैशाखी पर्व आर्योपदेशक प० देवव्रत धर्मेन्दु की अध्यक्षता मे १३ अप्रैल को प्रात ७ बजे से—सी १० एव ११ के बीच बगीचे मे मनाया जाएगा। इस अवसर पर हवन उपदेश के कार्यक्रम के बाद धर्मेन्दुजी के जन्मदिवस पर स्वागत कार्यक्रम और पदाधिकारियो का चुनाव होगा।

महाविद्यालय ज्वालापुर की हीरक जयन्ती

गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर हरिद्वार का ७५वा वार्षिकोत्सव हीरक जयन्ती के रूप मे १० से १४ अप्रैल, १९८२ तक मनाया जाएगा। १० अप्रैल को दोपहर २ बजे से विशाल शोभायात्रा हरिद्वार पचपुरी मे निकलेगी। ११ अप्रैल को दोपहर १ बजे चौ० चरणसिह दीक्षात भाषण देंगे।

अकाउण्टेण्ट चाहिए

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यालय मे हिसाब तथा दूसरे पत्र-व्यवहार आदि के काम के लिए हिसाब-किताब तथा पत्र-व्यवहार मे निपुण आर्य सज्जन की आवश्यकता है। अनुभवी आर्य रिटायर्ड सज्जन को वरीयता। स्वय मिले या पत्र लिखे।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली-१

श्रीराम और श्रीकृष्ण महापुरुष थे

पहले पृष्ठ का शेष

का विशेष ध्यान रख जाए कि वे ही चित्र लगाए जाए जिन्हे देखकर उनके वास्तविक व्यक्तित्व का कुछ अनुमान लग सके। नकली और जाली किस्म के चित्र किसी भी आर्यसमाज मन्दिर मे न लगाए जाए।'

कोई बताए कि इसमे आपत्तिजनक बात क्या है। किन्तु कुछ लोगो ने आर्य-समाज को बदनाम करने के लिए और आर्यसमाजियो तथा सनातन धर्मियो मे मतभेद पैदा करने के लिए यह प्रचार शुरू कर दिया है कि आर्यसमाज मन्दिरो मे श्री राम और श्री कृष्ण के चित्रो पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया है। यह प्रचार सर्वथा निराधार है और शरारतपूर्ण है। ऐसा प्रतीत होता है कि पजाब के हिन्दुओ मे फूट डालने के लिए यह षड्यन्त्र रचा गया है। श्री राम और श्री कृष्ण के आर्य-समाजियो के दिलो मे जो श्रद्धा है वह किसी दूसरे से कम नही है। महर्षि दया-नन्द सरस्वती ने श्री कृष्ण के बारे मे सत्यार्थ प्रकाश में जो कुछ लिखा है, उसी से अनुमान लगाया जा सकता है कि आर्य समाजी श्री कृष्ण और श्री राम के बारे मे क्या विचार रखते हैं। श्री कृष्ण के बारे मे अपने विचारों को व्यक्त करते हुए महर्षि दयानन्द सत्यार्थप्रकाश मे लिखते हैं—

"श्री कृष्ण जी का इतिहास महा-भारत मे अत्युत्तम है। उन का गुण, कर्म, स्वभाव और चरित्र आप्त पुरुषो के सदृश है। जिसमे कोई अधर्म का आचरण श्री कृष्ण जी ने जन्म से मरण पर्य्यन्त बुरा काम कुछ भी किया है। ऐसा नही लिखा और इस भागवत वाले ने अनुचित मनमाने दोष लगाए हैं। दूध, दही, मक्खन आदि की चोरी और कुब्जा दासी से समागम परस्त्रियो से रासमण्डल, क्रीडा आदिक मिथ्या दोष श्री कृष्ण जी पर लगाए हैं। इसको पढ पढ, सुन-सुना के अन्य मत वाले श्रीकृष्ण जी की बहुत-सी निंदा करते हैं। जो यह भागवत न होता तो श्री कृष्ण जी के सदृश महात्माओ की झूठी निंदा क्यो कर होती ?"

कोई बताए कि जो कुछ महर्षि दया-नन्द ने भगवान कृष्ण के बारे मे लिखा है, उसके बाद कोई आर्यसमाजी, श्री राम अथवा श्री कृष्ण के चित्रो पर आपत्ति कैसे कर सकता है। आपत्ति होती है तो उस समय जब इन महापुरुषो को गलत रूप मे पेश किया जाता है। क्या यह वास्तविकता नही है कि श्री कृष्ण के कई चित्रो मे उन्हे गोपियो के कपडे उठाए दिखाया गया है। कई जगह उन्हे गोपियों के साथ नाचते दिखाया गया है। और कुछ चित्र इससे भी अधिक अश्लील दिखाये गए है। लेकिन इस पर किसी ने आपत्ति नही की। हम तो कई बार हैरान होते हैं कि हिन्दू धर्म के वे ठेकेदार जो सार्वदेशिक सभा के इस आदेश के विरुद्ध शोर मचा रहे हैं। क्यो नही वह यह कहते कि कुछ चित्रों के द्वारा भगवान राम अथवा भगवान कृष्ण को गलत रूप मे पेश करके उन्हे बदनाम करने का जो प्रयत्न होता है वह बन्द होना चाहिए। क्यों नहीं वह यह मांग करते कि हमारे महापुरुषों को व्यापार के लिए प्रयोग न किया जाए। न तो किसी ने श्री राम को देखा है किसी ने श्री कृष्ण चन्द्र को देखा है। प्रत्येक चित्रकार अपनी कल्पना के अनुसार उनके चित्र बना देता है और हम उन्हे ही राम और कृष्ण समझने लगते है आर्यसमाज इस प्रकार की प्रवृत्ति को बदलने का प्रयत्न कर रहा है। इस दिशा मे यह पहला पग उठाया गया है कि इन दोनो महापुरुषो का कोई ऐसा चित्र किसी भी आर्य समाज मन्दिर मे न लगाया जाए। श्री राम के हाथ में अथवा उनके कन्धे पर धनुष रख के उनके बारे मे कोई चित्र बनाया जाता है तो उस पर किसी को आपत्ति नही हो सकती क्योकि उस चित्र को देखकर "धनुर्धारी" राम की कल्पना दिल मे पैदा होती है। गोपाल कृष्ण अथवा सुदर्शन चक्रधारी कृष्ण अथवा अर्जुन को गीता का उपदेश देने वाले कृष्ण के चित्र पर कोई आपत्ति नहीं हो सकती। लेकिन गोपियो के साथ खेलने वाले कृष्ण के चित्र पर निश्चय ही आपत्ति हो सकती है और होनी चाहिए। और किसी आर्य-समाज मन्दिर में ऐसा चित्र लगाने की अनुमति नहीं हो सकती। इस लिए सार्व-देशिक सभा ने आर्यसमाजो को जो आदेश दिया है उसमे कोई आपत्तिजनक बात नहीं है।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रकाशन

सत्यार्थप्रकाश सन्देश (हिन्दी)	१००
,, ,, (अंग्रेजी)	समाप्त
आर्य सन्देश-महासम्मेलन विशेषांक	६.००
पादरी भाग गया— ओम्प्रकाश त्यागी	०.३०
स्वामी श्रद्धानन्द-बलिदान अर्द्ध शताब्दी स्मारिका	६.००
सत्यार्थप्रकाश शताब्दी समारोह रिका	६.००

सम्पर्क करें—
अधिष्ठाता प्रकाशन विभाग
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा,
१५, हनुमान रोड,
नई दिल्ली-११०००१

卐 'आर्यसन्देश' के स्वय ग्राहक बनें— दूसरो को बनाए

卐 आर्यसमाज के सदस्य स्वयं बनें— दूसरों को बनाइए

卐 हिन्दी-सस्कृत भाषा स्वय पढ़ दूसरो को भी पढाइए—

रजि० डी (सी) ७६९

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए श्री सरदारी लाल वर्मा द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा भटिया प्रेस २५७४, रघुबरपुरा नं० २ गांधी नगर दिल्ली-३१ में मुद्रित। कार्यालय १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली फोन ३१०१५०

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक मुखपत्र

एक प्रति ३५ पैसे | वार्षिक १५ रुपए | वर्ष ६ अक २५ | रविवार ६ | वैशाख वि० २०३९ | १८ अप्रैल १९८२ | दयानन्दाब्द

महर्षि दयानन्द ने देश को स्वतन्त्रता पथ पर आरूढ़ किया

आर्यसमाज के संस्थापक ने देश को सच्ची शिक्षा प्रणाली दी लोकसभा अध्यक्ष श्रीबलराम जाखड़ द्वारा गुरुकुल कांगगड़ी में दीक्षान्त भाषण : सफल वार्षिकोत्सव

* हरिद्वार। गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय, हरिद्वार के ८२वे वार्षिकोत्सव पर दीक्षान्त भाषण देते हुए लोकसभा अध्यक्ष श्री बलराम जाखड ने घोषित किया—'वैदिक शिक्षा प्रणाली के जनक महर्षि दयानन्द सरस्वती भारत को अविद्या, अकर्मण्यता, अज्ञान और परतन्त्रता जन्य अन्धकार से निकाल कर सत्य पवित्रता और स्वतन्त्रता के ज्योतिमय पथ पर आरूढ करने का आजीवन प्रयत्न करते रहे। महर्षि शिक्षा को केवल व्यक्तिगत विकास का साधन नही मानते थे, प्रत्युत समाज मे ऐसे नर-नारियो के निर्माण मे साधन मानते थे जो अपने कर्तव्य और उत्तरदायित्व को भला प्रकार निभा सके। महर्षि दयानन्द ने आर्यसमाज के नियमो द्वारा प्रत्येक व्यक्ति को प्रेरणा दी थी कि सबकी उन्नति मे ही अपनी उन्नति समझें।'

गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय का वार्षिकोत्सव १० से १३ अप्रैल तक मनाया गया। रविवार ११ अप्रैल को प्रात सामवेद पारायण यज्ञ के बाद लोक-सभा अध्यक्ष श्री जाखड ने दीक्षान्त भाषण देते हुए कहा—भारतीय सस्कृति एव जीवनदर्शन मे १६ सस्कारों और ब्रह्मचर्य, ग्रहस्थ, वानप्रस्थ और सन्यास के चारो आश्रमो का अत्यन्त महत्त्व रहा है। उनसे व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन सयत और मर्यादित रहता है। यह दुर्भाग्य की बात कि कुछ लोग अपनी सस्कृति और भाषा को ही हीन और द्वितीय श्रेणी का समझते हैं। यह महर्षि दयानन्द की ही देन थी कि उन्होंने हमे वेदो, भारतीय सस्कृति एव आर्यभाषा हिन्दी का सम्मान करने की प्रेरणा दी।

गुरुकुल विद्यालय कांगडी के कुलपति श्री बलभद्रकुमार हूजा ने मुख्य अतिथि लोक सभा अध्यक्ष श्री बलराम जाखड का स्वागत किया और गुरुकुल विश्वविद्यालय की विगत वर्ष की प्रगति की रिपोर्ट और भावी योजनाओ पर प्रकाश डाला।

इस अवसर पर प० राजगुरु शर्मा के ब्रह्मत्व मे सामवेद परायण महायज्ञ की व्यवस्था की गई। १० अप्रैल को दोपहर ढ ई बजे राष्ट्रपति द्वारा सम्मानित आर्य विद्वान प्रो० सत्यव्रत जी सिद्धान्तालकार की अध्यक्षता मे वेद सम्मेलन हुआ। १२ अप्रैल को प्रात उ० प्र० के शिक्षा मन्त्री श्री नौनिहाल सिह जी की अध्यक्षता मे शिक्षा सम्मेलन हुआ। आज के ही दिन गगा पार कागडी गाव मे श्रद्धाजलि समारोह आयोजित किया गया।

इस अवसर पर धर्म रक्षा अभियान सम्मेलन सम्पन्न हुआ।

इसमे कई प्रमुख आर्य नेताओ ने भाग लिया।

वैदिक सन्यास आश्रम गाजियाबाद का सत्सग महोत्सव

शम्भूदयाल दयानन्द वैदिक सन्यास आश्रम, दयानन्द नगर, गाजियाबाद का २५ वा वार्षिक सत्सग महोत्सव १२ अप्रैल से १८ अप्रैल तक बडे समारोहपूर्वक सम्पन्न होगा। इस शुभ सत्सग समारोह मे आर्यजगत के मूर्द्धन्य सन्यासी, महात्मा, विद्वान् एव भजनोपदेश पधारेंगे।

गोहत्या का संकल्प पूरा करो

मुनि ज्ञानचन्द्र की प्राणरक्षा करो श्री शालवाले की प्रधान मन्त्री मे अपील

नई दिल्ली। गोहत्या बन्दी के लिए अहिसा भवन, अन्सारी राड दिल्ली मे आमरण अनशन पर बैठे हुए मुनि ज्ञानचन्द्र जी के स्वास्थ्य को देखने के उपरान्त सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले ने प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाधी जी को एक विशेष पत्र भेजकर निवेदन किया है कि वयोवृद्ध ७६ वर्षीय मुनि ज्ञानचन्द्र जी की माग है कि गोहत्या बन्दी के सम्बन्ध मे आपने सन्त विनोबा जी को जो आश्वासन दिया था और भू० पू० प्रधान मन्त्री श्री मोरार जी देसाई ने लोक सभा मे जो सकल्प किया था, उसकी पूर्ति की जाए अन्यथा व आमरण अनशन त्यागने को तैयार नही। श्री शालवाले ने प्रधानमन्त्री जी से इस सम्बन्ध मे तत्काल आवश्यक कदम उठाने की प्रार्थना की ताकि मुनि जी का कीमती जीवन बच सके।

स्वतन्त्रता सेनानी पं० परमानन्द का निधन

नई दिल्ली १३ अप्रैल वैशाखी के दिन प्रातः वयोवृद्ध स्वतन्त्रता सेनानी और देश के क्रातिकारी आन्दोलन के प्रमुख नेता प० परमानन्द का राममनोहर लोहिया अस्पताल मे निधन हो गया। वह ९६ वर्ष के थे। अपने जीवन मे वह लगभग वह तीस वर्ष तक जेलों मे बन्द रहे। वह परमानन्द झासी वाले के नाम से प्रसिद्ध थे। सन १९११ मे वैसाखी के ही दिन उन्हे अग्रेज सरकार ने मृत्युदण्ड की सजा सुनाई थी बाद मे वह सजा आजीवन कारावास मे बदल दी गई थी।

प० परमानन्द महर्षि दयानन्द के अनन्य भक्त और सत्यार्थप्रकाश मे आस्था रखते थे। उनका जीवन आर्यसिद्धान्तो से ओत प्रोत था। बुधवार १४ अप्रैल को दोपहर १२ बजे निगमबोध घाट पर पूर्ण वैदिक रीति से प० परमानन्द जी का अन्तिम सस्कार किया गया। अन्तिम सस्कार कराने वालो मे श्री महेन्द्रकुमार शास्त्री, श्री प्रकाश चन्द शास्त्री, आचार्य दिवाकर शर्मा एव गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ के छात्र एव आचार्यगण उपस्थित थे।

आर्य सन्देश परिवार की ओर से स्वतन्त्रता सेनानी प० परमानन्द की स्मृति मे भावपूर्ण श्रद्धाजलि प्रस्तुत है।

सम्पादक—नरेन्द्र विद्यावाचस्पति

व्यवस्थापक—प्रद्युम्नलाल तलवाड

वेद-मनन

परमेश्वर को पाना चाहते हो तो चोर को ढूंढ़ने के समान घोर परिश्रम करो

पश्वा न तायु गुहा च तन्त नमो युजान नमो वहन्तम्। मनोहर—विद्यालंकार
सजोषा धीरा पदैरनुग्मन्, उपत्वासीदन् विश्वे यजत्रा ।।ऋक् १-६५-१

ऋषि-पराशर शाक्तकय। देवता—अग्नि। छन्द—विराट् पक्ति।

शब्दार्थ—(न) जिस प्रकार (सजोषा धीरा) सहयोग के साथ चलने वाले धीर जन (नमो युजानम्) वज्रादि आयुधो से युक्त (नमो वहन्तम्) अन्नादि पदार्थों को उठा कर ले जाते हुए (गुहा-चतन्तम्) गुफादि गुप्त स्थान मे छिपे हुए (तायुम्) चोर को (पश्वा पदै) पशु के पद चिन्हो द्वारा (अनुग्मन्) पीछा करते है, पकडने का प्रयत्न करते है, उसी प्रकार (यजत्रा) सगति करने वाले (सजोषा) परस्पर प्रीतिपूर्वक व्यवहार करने वाले (विश्वे धीरा) सभी प्रयत्नशील धीर साधक (गुहा चतन्तम्) सब पदार्थों तथा अपने हृदय के अन्दर छिपे हुए (नमो वहन्तम्) सबके लिए अन्नादि भोग्य पदार्थो को धारण करने वाले (नमो युजानम्) नमस्करणीय ब्रह्म से मिलाने वाले (तायुम्) सबका पालन करने वाले तुझे अग्निदेव का (पश्वा पदै) वेद छन्दो के पदो द्वारा, अथवा प्राण साधना के नियमो का पालन करके (अनुग्मन्) खोजने के लिए—तेरा पीछा करते हैं, तेरे गुणो का अनुकरण करते है और अन्त मे (त्वा उपसीदन्) तेरे समीप (गुणो द्वारा स्थान की दृष्टि से नहीं) स्थित हो जाते है।

निष्कर्ष—मन्त्र मे अग्नि देव परमेश्वर को चोर से उपमा देकर चमत्कार कर दिया है।

१ चोर का किसी को ज्ञान नही होता। अपना सामान चोरी होने के कारण चोर की कल्पना करते हैं। और पडोसियो तथा सहयोगियो द्वारा प्रदर्शित उपायो तथा चिन्हो से उसे ढूढने का अथक परिश्रम करते हैं। कभी सफलता प्राप्त हो जाती है, कभी चोर का कुछ पता नही लगता है।

इसी प्रकार परमात्मा भी गुहा मे छिपा हुआ है। उसका किसी को ज्ञान नही। किन्तु गुरुओ, सन्तो और ऋषियो द्वारा प्रदर्शित साधनो द्वारा अथक परिश्रम करके उसे खोजा जा सकता है। कई बार बहुत परिश्रम के बाद भी सफलता नहीं मिलती।

२ चोर हथियारो से सज्जित होकर अन्नादि भोग्य पदार्थों को लेने के लिए इस प्रकार छुपकर आता है, और सामान लेकर छुप जाता है कि उसे कोई पहचान न सके। इसी प्रकार परमात्मा दण्ड व्यवस्था रूप हथियारो से सज्जित होकर सबके भरण-पोषण के लिए भोजन की व्यवस्था करता हुआ, सबसे अदृष्ट बना रहता है।

३. अपने अन्दर यज्ञ भावना को जागृत करने वाले, धैर्यशाली व्यक्ति ही गुरुओ की सेवा सुश्रूषा करके उसे ढूढने का अनवरत प्रयत्न करते हैं। उसके गुणों का अनुकरण करते हैं, और तत्सदृश बनकर उसके समीप स्थित हो जाते हैं।

विशेष—इस मन्त्र का ऋषि शब्द सकेत करता है कि—यदि मनुष्य शक्तिशाली बनकर दूसरो को दुःख देगा, हिंसा करेगा तो वह चोर बनेगा, और परमात्मा की दण्डव्यवस्था से बच नही सकेगा, क्योकि वह 'चयसे इतियिारम्। ऋक् १-१९०-५' दूसरो को कष्ट पहुचाने वालो को अवश्य दण्ड देता है। इसके विपरीत यदि मनुष्य शक्ति प्राप्त करने के बाद दूसरो की सेवा करेगा तो वह इस मन्त्र के देवता के सदृश दूसरो का मार्गदर्शक बनकर उन्हे आगे-आगे बढाने वाला सिद्ध होगा।

इस मन्त्र के छन्द विराट् पक्ति का शब्दार्थ सकेत करता है कि पाच-पाच के समाहारो अर्थात् ५ ज्ञानेन्द्रिय, ५ कर्मेन्द्रिय ५ प्राण, ६ कोशो को ठीक रखने के लिए, ५ महाभूतो का ठीक प्रयोग करोगे तो विशेष रूप से दीप्त (विराट्) बन जाओगे। सब तुम्हे जान जाएगे।

अर्थपोषक प्रमाण—नम—अन्ननाम। नि० २-२०, वज्रनाम। नि०२-७, चतति गति कर्मसु। नि० २-१४

तायु—स्तेननाम। नि० ३-२४ ताम् सन्तानपालनयो। पदै—प्राप्तै. गुण नियमै, पदचिन्हादिभिश्च। स्वा० द०।

पशु न नष्ट पदैरनुग्मन्। ऋक् १०-६२-२।

पराशर.—परान् शृणाति शृहिंसायाम्। परान् श्रीणाति श्रीञ् सेवायाम्। पराशनायिता यातूनाम्। नि० ६-३० शाक्तय—शक्ति सम्पन्न।

पश्वा—पशवो वै छन्दासि। शत० ७-५-२-४२, पशवो वैमरुत: ऐ० ३-१९

गुहायाम्—सर्वपदार्थाना मध्ये, हृद अन्त:करणे, कन्दारायां वा। स्वा० द०

यजत्रा—सगतार पूजनीया. विद्वान्स। ३३-५३ स्वा० द०

सजोषा—समानप्रीतय—जुषी प्रीतिसेवनयो।

अग्नि—आत्मैवाग्नि। शत ६-७-१-२, मन एवाग्नि शत १०-१२-३, अग्निर्वैयम। शत ३-४-३-६, प्राणोवाग्नि। ६-५-१-६८ इनमे से किसी को भी इस मन्त्र का देवता मान कर सगति लगाई जा सकती है।

५२२ ईश्वर भवन, खारी बावड़ी, दिल्ली-६

लोक चिन्तन

हिन्दी और महर्षि दयानन्द

—डॉ० विजय द्विवेदी

आधुनिक युग के प्रथम चरण मे हिन्दी भाषा और साहित्य के प्रचार-प्रचार मे जिन व्यक्तियो और सस्थाओं का योगदान सर्वाधिक है, उनमे स्वामी दयानन्द और आर्यसमाज अन्यतम हैं। स्वामी जी ने केशव चन्द सेन की बात मान कर एक बार हिन्दी भाषा को जन-जागरण के माध्यम के रूप म अपनाया तो सारा वैदिक ज्ञान अपने आप ही हिन्दी मे आ गया। महर्षि ने हिन्दी शब्द-भण्डार, व्याकरण, वाक्य विधान, अर्थ-क्षमता आदि का द्योतन ही नही किया, लिपि की एकता पर भी बल दिया और हिन्दी भाषा तथा साहित्य को उन रूढियो एव गलत परपराओ के घेरे से बाहर निकाला जो उर्दू और अग्रेजी के प्रभाव मे पड़कर पैदा हो गई थी। बाद में महात्मा मुन्शीराम और आर्यसमाज ने हिन्दी को अपना कर किस तरह उसका-प्रचार प्रचार एव सम्वर्द्धन किया, हिन्दी के माध्यम से गुरुकुल चला कर बी०ए० एम० ए० तक की परीक्षाए ली—यह बात सबको मालूम है। नही मालूम है तो केवल इतना कि स्वामी दयानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द और आर्यसमाज के कारण ही देश-विदेश के करोड़ो लोगो ने हिन्दी सीखी। महात्मा गाधी, पुरुषोत्तम दास टडन आदि हिन्दी के पक्षधर बने हिन्दी भाषा मे सस्कृत की शब्दावली आई। जिससे उसका अखिल भारतीय महत्व स्थापित हुआ। आर्यसमाज ने ही सबसे पहले विदेशो म हिन्दी को परिचित कराया। मगर जब से विश्वविद्यालयी शिक्षा-प्रणाली प्रचलित हुई स्थिति बदल गयी। स्वामी जी और आर्यसमाज द्वारा की गयी हिन्दी सेवा को भुला दिया गया। इसके विपरीत हिन्दी के विकास मे ईसाई मिशनरियो के योगदान की सराहना की जाने लगी। आज स्थिति यह है कि हिन्दी के अधिकाश स्वय सिद्ध-स्वय-भू विद्वान महर्षि दयानन्द, टडन जी आदि के नाम से अपरिचित हैं।

भाग्य की विडम्बना। जिन महापुरुषो ने हिन्दी भाषा और साहित्य को प्रतिकूल एव विषम परिस्थितियो से निकाल कर 'नव जीवन-सचारिणी सजीवनी' एव 'अमृत स्वरो की जाह्नवी' बनाया आज वे विस्मृत हो गए और जिन लोगो ने पाश्चात्य बुद्धिवादिता के मरे साप को कण्ठहार बताकर रोजी-रोटी कमायी, वे आदरणीय बन गए। यूरोपीय समाज-सस्कृति, ज्ञान-विज्ञान से आद्यान्त प्रभावित हिन्दी के हिमायतियो (?) का एक ऐसा वर्ग भी कालान्तर में विकसित हो गया, जिसकी निष्ठा केवल स्वार्थ हेतु नकल में थी। नौकरी मे तरक्की और समाज मे अपना रोबदाब बनाए रखने की कामना वाले इस 'भद्र' वर्ग ने पराधीन भारत मे अग्रेजी-सुख लूटा और स्वाधीनता के बाद जी हुजूरी कर सत्ता-सुख। महर्षि दयानन्द और महात्मा मुंशीराम यह सुख नही दे सकते थे। अत. हिन्दी के विद्वान उनकी ओर ध्यान क्यो देते ? इसीलिए आज तक इन महात्माओ की हिन्दी सेवाओ का सही मूल्याकन तो दूर नामोल्लेख भी नही मिलता। अगले साल महर्षि की निर्वाण शताब्दी है। क्या [illegible] सभव नही कि आर्यसमाज के हिन्दी विद्वान मिलकर, महर्षि के योगदान का प्रचार करे। जरूरी हो तो 'आर्य हिन्दी समाज' के नाम से एक अलग 'समाज स्थापित करे। हिन्दी के बारे मे विश्व-विद्यालयी धारणाओ का खण्डन करे। 'समाज' के हिन्दी लेखको की महर्षि को यह सबसे बड़ी श्रद्धाजलि होगी।

महाराजा पूर्णचन्द महाविद्यालय, बारीपदा (उड़ीसा)

विशाल आर्य युवक प्रशिक्षण शिविर

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद दिल्ली प्रदेश के तत्वावधान मे २७ मई से ६ जून १९८२ तक दस दिवसीय आर्य युवक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन डा० देवव्रत आचार्य की अध्यक्षता मे गुरुकुल गदपुरी मथुरा रोड, त० पलवल (बल्लभगढ) जिला फरीदाबाद मे आयोजित किया जा रहा है।

कुछ कर गुजरने की तमन्ना वाले नौजवान साथियो के लिए जो शारीरिक व आत्मिक दृष्टि से सक्षम होकर महर्षि दयानन्द की सेना मे दीक्षित होना चाहते है उनके लिए स्वर्ण अवसर है। शीघ्र सम्पर्क करें—

अनिलकुमार आर्य,
शिविर सयोजक
आर्यसमाज मार्ग, कबीर बस्ती
दिल्ली-७

निम्नतम योग्यता—नवम् कक्षा, उत्तीर्ण तथा ४०)-रु० शिविर शुल्क

अग्नि का सिञ्चन

ओ३म् आ सुते सिञ्चत श्रिय रोदसोरभिश्रियम् ।
रसा दधीत वृषमम् ॥ ऋ ८ १२-१२

हे लोगो, तुम द्यावापृथिवी के बीच मे सर्वत्र कान्तिमान् तथा यज्ञ के आश्रय से रहने वाली अग्नि को सिञ्चित करो। जिससे पृथ्वी वर्षा करने वाले मेघ को धारण कर सके।

ओ३म्
आर्य सन्देश

स्वदेशहित ही सर्वोपरि !

अन्तर्राष्ट्रीय या राष्ट्रीय नीति में किसी भी देश का न स्थायी मित्र होता है और न स्थायी शत्रु, इस बुनियादी तत्व को हृदयगम कर उसके आधार पर ही प्रत्येक मोर्चे पर शक्ति एकत्र कर ही कोई राष्ट्र समुन्नति कर सकता है। ३५ वर्षों मे हमारा पडोसी देश हम पर कई बार आक्रमण कर चुका है। पिछले कुछ महीनो मे उसे सयुक्त राज्य अमेरिका से भारी गिनती मे शास्त्र और आधुनिकतम विमान मिले हैं। इससे पूर्व भी अमेरिका पाकिस्तान को कम्युनिज्म के विरोध के नाम पर हथियार देता रहा है और भारत को यह आश्वासन देता रहा है कि इन शस्त्रास्त्रों का प्रयोग भारत के विरुद्ध नही किया जाएगा। पिछले दिनो भारत स्थित अमेरिकी राजदूत बार्न्स ने भारत को आश्वासन दिया था कि पाकिस्तान को मिले नए शस्त्रास्त्रो और आधुनिक विमानो का प्रयोग भारत के विरुद्ध करेगा तो उसका पाकिस्तान के साथ अमेरिकी सम्बन्धो पर असर पडेगा।

इन झूठे वायदो में कोई तत्व नही है, यह पाकिस्तान स्थित अमेरिकी राजदूत डोनाल्ड स्पियर्स के वक्तव्य से स्पष्ट हो गया है। उन्होंने घोषित किया है कि अमेरिका ने हथियारो के इस्तेमाल पर कोई शर्त नही लगाई है। अमेरिका ने पाकिस्तान के रक्षा प्रयत्नों को सुदृढ करने के लिए ही ये हथियार उसे दिये है। पाकिस्तान इन हथियारो का इस्तेमाल किसी भी देश के खिलाफ करने मे आजाद है। स्पष्ट है कि पहले की तरह पाकिस्तान इन आधुनिकतम विमानो और शस्त्रास्त्रो का प्रयोग भारत के खिलाफ करता है तो इसमे अमेरिका को कोई आपति नही है। सम्भवत: अफगानिस्तान के विषय मे अमेरिकी नीति का भारत द्वारा आख मूद कर समर्थन न करने के कारण वह भारत को सबक सिखाना चाहता है। अमेरिका ने १९७१ की लडाई मे भारत को सबक सिखाने के लिए बगाल की खाडी मे अपना सातवा बेडा भेजा था।

अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति आजकल दिनोदिन बिगडती चली जा रही है। अफगानिस्तान, ईरान, ईराक, इजराइल के क्षेत्रो मे विस्फोटक वातावरण व्याप्त है। दक्षिणी अमेरिका के अर्जेण्टाइना तथा ब्रिटेन के मध्य सीधे सघर्ष की आशका पैदा होती जा रही है। विश्व की महाशक्तिया जल्दी या देर मे अगले तीसरे महायुद्ध की तैयारी कर रही हैं। आशका है कि इस बार के युद्ध के दावानल से एशिया की भूमि को सर्वाधिक भीषण क्षति पहुचेगी। सम्भवत भारत भूमि भी उस आसन्न विभीषिका से पूरी तरह मुक्त नहीं हो सकेगी। इस युद्ध मे भारत नष्ट न हो जाए, उसके बड़े भूभाग नष्ट-भ्रष्ट न हो जाए, इसके लिए समय रहते राष्ट्रीय शासन और जनता को सन्नद्ध और सगठित होना पडेगा। हमारा पडोसी पाकिस्तान और बागला देश विदेशी शक्तियो के इशारे पर हमे क्षति न पहुंचा सके, इसके लिए देश के प्रत्येक मोर्चे पर हमे सजग सगठित, स्वावलम्बी और शक्ति सम्पन्न बनना होगा। हमे संकट की घडी मे राष्ट्र-विशेष के सहारे पर अवलम्बित न होकर स्वदेश हित के लिए तन-मन-धन से अपनी आहुति देने के लिए तत्पर हो जाना चाहिए।

चिट्ठी-पत्री

अमृतसर को धार्मिक नगर घोषित करो

अकाली नेताओं का प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाधी से चौथा दौर बातचीत इन दिनो चल रहा है। अकाली नेताओं की चार मागो मे से एक यह भी है कि अमृतसर को धार्मिक शहर घोषित किया जाए। यह माग बहुत महत्वपूर्ण और आवश्यक है।

अमृतसर को धार्मिक शहर घोषित करने से अमृतसर को पवित्रता हर प्रकार से कायम रखना भी अति आवश्यक है। इसके लिए अमृतसर मे शराब, मास, अण्डे, मछली, सिगरेट-बीडी तम्बाकू की कोई भी दुकान नही रहनी चाहिए।

इससे कठिनाई अकाली तथा सिख भाइयों को अधिक होगी क्योकि ९५ प्रतिशत हमारे सिख भाई शराब, मास, अण्डे, मछली के बिना नहीं रह सकते।

जगतराम आर्य
अध्यक्ष, यमुनापार सुधार सभा, गांधी नगर।

धर्मान्तरण नीति-राष्ट्रघाती

गतवर्ष मीनाक्षीपुरम की सामूहिक धर्मान्तरण की घटना ने भारत की धर्म निरपेक्ष नीति के समक्ष एक प्रश्न चिन्ह बना दिया है। जिस ढग से, मीनाक्षीपुरम तथा कई स्थानो पर हिन्दुओ के एक निबल वर्ग को सामूहिक रूप से इस्लाम मे दीक्षित किया गया, वह निर्विवाद रूप से भारतीय सविधान की भावनाओ पर कुठाराघात ही कहा जाएगा। लदन स्थित इस्लामिक कल्चर सेन्टर की उद्घोषणाए निश्चय यही दुर्भाग्यपूर्ण है। भारतीय सविधान ने किसी भी व्यक्ति को स्वेच्छानुसार कोई भी धर्म अपनाने का मौलिक अधिकार प्रदान किया है लेकिन जब किसी विशिष्ट उद्देश्य, और वह भी राष्ट्र-विरोधी, को दृष्टिगत रखते हुए भय-प्रलोभन-लालच-धन के माध्यम से धर्म-परिवर्तन कराया जाता है तो यह दुर्भाग्यपूर्ण है। भविष्य मे इस कार्यवाही के दूरगामी परिणाम होगे और तब भारत के समक्ष अकथनीय कठिनाई, मुह बाए खडी होगी जिसका समाधान हमारे स्वार्थान्ध राजनेताओं के वश मे बाहर होगा।

अभी समय है। भारत सरकार को इस अनधिकृत, अवैधानिक, अमानुषिक, असवैधानिक, सामूहिक धर्मान्तरण की कार्यवाहियो पर अविलम्ब प्रतिबन्ध लगाने हेतु इस सबंध मे एक केन्द्रीय कानून का निर्माण करना चाहिए।

—राधेश्याम 'आर्य, एडवोकेट
मुसाफिरखाना, सुलतानपुर (उ०प्र०)

बोध-कथा

बड़प्पन !

महाराष्ट्र प्रदेश मे पण्डित परचुरे शास्त्री शास्त्रो के बड़े पण्डित थे, परन्तु वह महारोग कोढ से पीड़ित हो गये थे, फलत अपनी विद्वत्ता के बावजूद परिवार, समाज जन समाज से लगभग उपेक्षित हो गए थे, अपने जीवन से पूरी तरह निराश होकर वह कुष्ठ से इतने पीडित हो गये थे कि चिकित्सकों ने भी उनके ठीक होने की उम्मीद छोड दी थी। सब ओर से निराश होकर वह वर्धा जिले मे सेगाव, वर्तमान सेवाग्राम आ गए। उन्होने सोचा था कि वह जीवन की अपनी अन्तिम घडिया बापू के आश्रम मे बिताएगे, वही वह अपने प्राण छोड़ देंगे। वह गाव के पास की एक निर्जन सडक पर लेट गए।

यह खबर सब गाव वालो को मिली, आश्रम वालो को मिली। सबने दूर-दूर से आकर परचुरे शास्त्री को तड़पते देखा, पर कोई पास नहीं आया। अन्त मे बापू को भी खबर मिली। खबर मिलते ही सब काम छोड बापू उस सडक पर पहुचे। शास्त्री जी को सहारा दिया और आश्रम ले आए। सब आश्रमवासी दूर-दूर ही रहे, कोई उनकी सेवा के लिए नहीं आया। बापू ने स्वय ही शास्त्रीजी को घाव धोए, उनकी मालिश की। वह महीनो उनकी सेवा मे जुटे रहे। अन्त मे आश्रम के कार्यकर्त्ताओं में भी हिम्मत आई। वे भी मालिश और सेवा के काम मे बापू की मदद करने लगे, परन्तु बापू ने स्वय किसी से उनकी सेवा के लिए एक बार नही कहा। यह था बापू का बड़प्पन!

—नरेन्द्र

स्वामी दयानन्द जी का अतिथि-सत्कार

स्वामी दयानन्द जी को अपने अतिथियों के सत्कार का बड़ा ध्यान रहता था। एक दिन कोई वर्गीय पुरुष उनके दर्शनो के लिए आए। वह महाराज के चरण छूकर बैठ गए और वार्तालाप करते समय उनसे पानी की इच्छा प्रकट की। महाराज ने अपने एक गुजराती शिष्य को आज्ञा दी कि इनको जल पिलाइए। गुजरात देश के आर्य दाढी नही रखते। उस सज्जन की लम्बी दाढी देखकर शिष्य ने उन्हे मुसलमान समझा, इसलिए उन्हें दोने मे पानी पिलाया। जब अतिथि उठकर चला गया तब उन्होने इस शिष्य को झिडका और कहा "आप लोग अभी तक सभ्यता के साधारण नियम भी नहीं सीख पाये हैं। बताओ आपने उसे ग्लास मे जल क्यो नही दिया?"

शिष्य ने प्रार्थना की—"एक मुसलमान को अपने बर्तन मे पानी पिलाकर मैं बर्तन को भ्रष्ट कैसे कर लेता? महाराज ने उसे कहा वैसे तो वह मुसलमान नही था। प्रत्युत एक उपाधिकारी, बडा भारी आर्य भूमिहार था, किन्तु मेरे पास ईसाई, मुसलमान सभी लोग आते हैं। उनके आदर मे कभी त्रुटि नहीं होनी चाहिए। आगे को, चाहे किसी मत का मनुष्य हो, जब जल मागे उसे गिलास मे दिया करो।

प्रद्युम्नलाल तलवाड
आई २०८ अशोक विहार फेज १ दिल्ली—५२

एक संस्मरण

जलियांवाला बाग अमृतसर में रक्त-रंजित होली

आचार्य दीनानाथ सिद्धान्तालंकार

प्रथम युद्ध समाप्त हो चुका था। गांधीजी उस समय कर्मवीर उपाधियुक्त भारत के राजनीतिक क्षितिज पर आभा-युक्त हो रहे थे। यद्यपि १९१४-१५ में ब्रिटेन इस युद्ध में जीत चुका था, पर उसे यह विजय काफी महंगी पड़ी थी।

गांधीजी ने उस समय ब्रिटेन के खोखले, आश्वासनों पर विश्वास कर धन-जन से उसे सहायता देने की प्रेरणा भारतीयों को दी। इस धन-जन के संग्रह के लिए गोरी सरकार ने जिन नृशंस और क्रूर साधनों का अवलम्बन किया, उसके फलस्वरूप सारे देश में असन्तोष और विद्रोह की अग्नि सुलगने लगी। भारत के अन्य प्रान्तों की चर्चा छोड़ हम यहां मुख्यतः पंजाब-जिसके अन्तर्गत उस समय हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, बिलोचस्तान, उत्तर पश्चिम प्रान्त भी थे—चर्चा कर रहे हैं। लड़ाई के लिए रंगरूटों की भर्ती के लिए किए गए रोमांचकारी अत्याचारों के फलस्वरूप इस क्षेत्र के गांवों में १८ वर्ष से ऊपर की आयु का युवक मिलना दुर्लभ हो गया था। युद्ध के लिए ऋण व दान के रूप में जोर जबर्दस्ती और विविध प्रकार के नादिरशाही अत्याचारों का इतना भयावह रूप हो गया कि हजारों घरों में दो समय भोजन बनना और रात को दीपक का प्रकाश दोनों दुर्लभ हो गए। पंजाब में इसका सूत्रधार कठोर भारत विद्वेषी गोरा शासक लेफ्टि० गवर्नर सरमाइकेल ओडवायर था और पेशावर से दिल्ली तक बनी लौहप्राचीर से घिर दर्जनों फौजी छावनियों के गोरे जनरल थे।

विद्रोह की सुलगती चिन्गारियां

बजबज में मुठभेड़

१९१९-२० में प्रथम विश्वयुद्ध की समाप्ति पर जब झूठे प्रलोभनों से भर्ती किए गए हजारों-लाखों सिपाही विदेशों में एक ओर गोरे सिपाहियों और फौजी अफसरों की भीरुता, दम्भपन दूसरी ओर उनके घृणित सामाजिक जीवन और साथ ही अपने देश में विदेशी शासन की तुलना में वहां के स्वतन्त्र स्वच्छन्द वातावरण इत्यादि परिस्थितियों की झांकियों से प्रभावित हो वापस गांव में आए, तब उनमें से अधिकांश के हृदय में, देहात में चुटटे सरकारी नौकरों, जमींदारों और सूदखोर महाजनों के द्वारा पूर्ववत किए जा रहे सामाजिक अत्याचार, भेदभाव, शोषण, बेगार इत्यादि तथा विदेशी शासन के विरुद्ध बगावत के अंकुर होने लगे। इनमें से कई फौजी प्रकट विदेशों से छिपाकर हथियार भी ले आए थे इस विद्रोह की पहली घटना कलकत्ता के पास बजबज रेल स्टेशन पर जहाज से उतरे पंजाबी सिपाहियों और पुलिस के मध्य हुए दंगे में हुई जिसमें कई सिपाही मारे गए थे और कुछ पास के जंगल में छिपे, वे पुलिस की पकड़ में न आ सके।

'रोलट' एक्ट विरोधी दिवस

गोरी नौकरशाही विद्रोह की इन चिनगारियों से घबरा गयी। उसने केन्द्रीय एसेम्बली में अपने सरकारी नामजद सदस्यों में से कुछ के और सरकारी सदस्यों के वोटों के बलबूते पर रोलट एक्ट जिसे गांधीजी ने काला बिल घोषित किया—पास करा लिया। इसके अन्तर्गत पुलिस और नौकरशाही को ऐसे अधिकार दिए गए जिसके द्वारा पुलिस का सब-इन्सपेक्टर किसी भी घर की तलाशी ले सकता और उसे थाने में बुलाकर रोक सकता था। गांधीजी और उनके दायें हाथ स्वामी श्रद्धानन्द के नेतृत्व में समूचे देश में विरोध की ज्वालायें भड़क उठीं। गांधीजी ने ३० मार्च १९१९ समूचे देश को मेअहिंसात्मक शान्त सत्याग्रह के रूप में सार्वजनिक सभा और जलूस द्वारा विरोध प्रकट करने की घोषणा की। इसी बीच बम्बई में दंगा हो गया अखबारों पर पाबन्दी लग गई, ओडवायर—लेफ्टि—गवर्नर ने पंजाब में लाहौर अमृतसर तथा अन्य कई नगरों में मार्शलला लगा दिया। इसके फलस्वरूप, ३० मार्च की सूचना पंजाब व अन्य प्रदेशों में ठीक प्रकार नहीं पहुंच सकी। दिल्ली व पंजाब की स्थिति शान्त करने के लिए गांधीजी स्वयं बम्बई से दिल्ली के लिए फ्रण्टियर मेल से रवाना हुए। मथुरा और दिल्ली के बीच कोसीकला एक छोटे स्टेशन पर फ्रण्टियर मेल को सरकारी आदेश से रोक और गांधीजी को गिरफ्तार कर साथ ही पहले से खड़ी की गई बम्बई जाने वाली गाड़ी से उन्हें वापस बम्बई भेज दिया गया।

दिल्ली में फायरिंग

यह समाचार कुछ ही देर में दिल्ली पहुंचा, जनता भड़क गई। दिल्ली स्टेशन पर पुलिस की गोली से तीन व्यक्ति मारे गए। नौकरशाही की मूर्खता से शहर में दंगा भड़क उठता अगर दिल्ली के बेताज बादशाह स्वामी श्रद्धानन्द ने हकीम अजमलखां और डा० असारी के सहयोग से स्थिति को संभाला न होता। उन दिनों स्वामीजी के प्रभाव से सारे शहर में हिन्दू मुसलमानों में पूर्ण एकता अदालतों का बहिष्कार और समस्त आपसी मुकद्दमे झगड़े स्वामीजी के नया बाजार स्थित सार्वदेशिक सभा भवन में ही शान्तिपूर्वक सुलझाये जाते।

इसी दिन शाम को चार बजे जामा-मस्जिद के सामने परेड के मैदान में हजारों-लाखों हिन्दू मुसलमानों की आम सभा स्वामी श्रद्धानन्द की अध्यक्षता में हुई जहां मुस्लिम इतिहास में पहली बार एक गैर मुसलमान ने मस्जिद के सबसे ऊंचे मंच से वेद मन्त्र पाठ के साथ भाषण दिया। सभा के बाद स्वामीजी के नेतृत्व में भारी जलूस जिस समय चांदनी चौक में से होता हुआ घंटाघर के पास पहुंचा तब गोरे सर्जेण्ट के आदेश से गोरखा सिपाहियों ने जलूस और स्वामीजी की ओर बंदूकें तानीं, उसी क्षण स्वामीजी ने सार्जेण्ट को सम्बोधित करते हुए और अपनी छाती खोलते हुए ललकार—"इस शान्त जलूस पर गोली क्यों चलाते हो? इसका नेता जिम्मेदार तो मैं हूं। मुझ पर गोली चलाओ छाती खुली हुई है।

स्वामीजी की इस गर्जना पर सार्जेण्ट एकदम सहम गया। उसने बन्दूके नीचे की ओर करने का आदेश देते हुए जलूस को आगे जाने का आदेश दे दिया। स्वामीजी की इस निर्भयता से सारे देश में जहां उनके साहस की लहर फैल गयी वहां गोरी सरकार की अदूरदर्शिता की निन्दा की गई। गांधीजी ने घोषणा की मैंने अपने जीवन में स्वामी श्रद्धानन्द सदृश निर्भयता पहली बार देखी मुझे इस पर गर्व है।

पंजाब में मार्शलला आर्यनेता गिरफ्तार

अब घटनाचक्र दिल्ली से पंजाब की ओर बढ़ा। ३० मार्च, १९१९ को काले बिल के विरोध दिवस के रूप में मनाए जाने की गांधी जी की घोषणा के ठीक समय पर न पहुंचने के हेतु पंजाब के कांग्रेस नेताओं ने ७ अप्रैल विरोध दिवस निश्चित किया। ओडवायर सरकार घबरा गई। उसने लाहौर, अमृतसर, गुजरां वाला इत्यादि शहरों में "मार्शलला" घोषित कर दिया। आज के प्रमुख कांग्रेसी और राजनीतिक नेता गिरफ्तार व नजरबन्द कर लिये गए। इनमें अधिकांश आर्यसमाजी ही थे क्योंकि प्रांत का राजनीतिक सामाजिक नेतृत्व आर्यसमाज के ही हाथ में था। इनमें कुछ प्रमुख थे—लाहौर के म० कृष्ण, चौधरी रामभज दत्त, ला० दुनीचन्द प्रा० रुचिराम साहनी, ला० हरकिशन लाल इत्यादि रावलपिंडी के श्री वजीर चन्द चोपड़ा तथा अन्य कई वकील लाहौर के डी० ए० वी० कालेज के ही होस्टल के छात्रों को यह आदेश दिया गया कि वे अपने बिस्तर सिर पर उठाकर रात को थाने में हाजरी देने जायें। कइयों को लाहौर किले की कोठरी में बन्द किया गया।

अमृतसर के कांग्रेसी और प्रमुख आर्यनेता डा० सत्यपाल, म० बुग्गा और म० रत्तो—दोनों भाई तथा डा० किचलू—इन चारों को रात में गिरफ्तार कर किसी अज्ञात स्थान पर नजरबन्द कर दिया गया। इससे जनता में बड़ा क्षोभ फैला। ५ अप्रैल रामनवमी का त्योहार था। इन नेताओं के इस प्रकार लापता किए जाने के विरोध में प्रमुख नागरिकों का एक शान्त जलूस हाल बाजार से होता हुआ बाहर रेलवे पुल के पास पुलिस द्वारा रोक दिया गया। जलूस के नेताओं के बार-बार यह कहने पर भी कि हम डिप्टी कमिश्नर की कोठी पर अपने नेताओं की रिहाई की प्रार्थना करने मौन और शान्त जलूस के रूप में जा रहे हैं। हमें जाने दिया जाए। इस प्रकार के प्रबल अनुरोध की अभी बात चीत चल ही रही थी कि किसी पुलिस अधिकारी ने गोली चलाने का आदेश दे दिया। भीड़ उत्तेजित हो गयी और भगदड़ मच गयी। तीन व्यक्ति वहीं मर गए उत्तेजित भीड़ तीनों मरे हुओं की लाशें कन्धे पर उठाये और सरकार के विरुद्ध नारे लगाते हुए जब हाल बाजार [illegible] गुजर रही थी, तब कुछ गुण्डों ने [illegible] की कुछ दुकानों को आग लगा दी [illegible] बैंक को लूटा, एक गोरे को मार दिया, और एक एंग्लोइण्डियन नर्स का अपमान किया जब उसने भारतीयों के विरुद्ध कुछ निन्दापूर्ण वाक्य कहे। फलत: जनरल डायर ने अमृतसर में मार्शलला लगा दिया।

अमृतसर में डायरशाही

डायर ने मार्शलला के अन्तर्गत जो आदेश निकाले, वे केवल अमृतसर के नागरिकों के लिए ही नहीं किन्तु समस्त भारतीयों के प्रति इस क्रूर गोरे शासक के दिल में कितनी हीन और अपमानजनक भावनायें थीं—उसके सूचक हैं। कुछ मुख्य आदेश ये थे—(१) कोई व्यक्ति अगर छाता खोलकर बाजार में से जा रहा हो और सामने से कोई पुलिस सिपाही व गोरा आ रहा हो तो छाता बन्द कर रास्ता छोड़ उसे सलाम करनी होगी (२) अगर वह किसी सवारी पर जा रहा हो तो उससे नीचे उतर रास्ता छोड़कर अदब से सलाम करनी होगी। (३) अगर उस पुलिस अधिकारी व गोरे को सवारी की जरूरत हो तो उसे तत्काल दे देनी होगी। (४) गुरु के बाजार में एक गली थी—जिसमें से निकल दूसरे बाजार में जाना होता था। रिहायशी मकान इसमें थे। इसके दोनों किनारों पर कांटेदार तार [illegible] थे। इसमें से गुजरने वालों को पेट के बल जमीन पर लेटकर रेंगते हुए जाने के लिए बाध्य होना पड़ता था। यह गली हमने नगर में स्वयं देखी। (५) नगर के अनेक प्रतिष्ठित—जिनमें कई वृद्ध थे व्यक्तियों को यह आदेश दिया गया कि वे एक निश्चित समय की अवधि में प्रतिदिन थाने में हाजिरी देने में जायें। (६) कई प्रतिष्ठित नागरिकों को आदेश दिया गया कि वे दिन और रात में कुछ निश्चित घंटों के लिए पहरा दिया करें। अगर इस अवधि में कोई जुर्म हो, तो उसकी जिम्मेदारी उस प्रतिष्ठित व्यक्ति पर ही होगी। (८) हाल बाजार में—जहां दंगा फिसाद और एक गोरी नर्स का अपमान हुआ था, वहां के निवासियों पर भारी जुर्माना लगाया गया तथा उन्हें कई दिन तक घर में ही कैद रखा गया। (९) पांच व्यक्तियों से अधिक के एक जगह पर इकट्ठा होने पर पाबन्दी और अगर इकट्ठा होना

जरूरी हो तो पुलिस से पहले इजाजत लेनी होगी इत्यादि।

अमृतसर बैशाखी पर्व पजाब मेप्रथम वैशाख अर्थात् १३ अप्रैल नये वर्ष के प्रारम्भ के रूप मे जहां एक पवित्र पर्व माना जाता है, वहां व्यापारी उस दिन नया खाता खोलते हैं। अमृतसर जहां प्रान्त का प्रमुख व्यापार केन्द्र था, वहा साथ ही खालसा धर्म का स्थापना दिवस होने से वहा की यात्रा और सरोवर मे स्नान करने का विशेष महत्त्व है। इसके साथ ही इस दिन हाड़ी की फसल पककर मण्डो में आनी शुरू होती थी जिससे किसानो के लिए अमृतसर तीर्थयात्रा हंसी-खुशी और अमृतसर मे भारी पशु मेले मे खरीद फरोख्त के लिए आने का आकर्षण होता था। शहर मे जब मार्शल ला लगा, तब देहात और प्रान्त के अन्य नगरो गांवों तक इसका समाचार नही पहुचा। डाक तार की गड़बड़ी और सरकारी आदेश से अखबारो पर पाबन्दी लगी होने से।

इस प्रकार १६१६ के १३ अप्रैल को हजारो-लाखो स्त्री पुरुष, बच्चे बूढे अमृतसर आये हुए थे। एक सरकारी जासूस (जिसका नाम कांग्रेस जाच समिति मे शायद शादीलाल बताया गया। ने नगर के कुछ घने बाजारो मे डुगडुगी से यह घोषणा की कि आज शाम को ४ बजे जलियां वाला बाग मे काग्रेस की ओर से एक आम सभा होगी जिसके अध्यक्ष नगर कांग्रेस के प्रधान होगे। (काग्रेस जांच समिति मे गवाही देते हुए काग्रेस अध्यक्ष ने कहा कि इस घोषणा की उन्हें कोई जानकारी नही थी।

यहां जलियां वाला बाग के बारे मे यह स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि यह कोई बाग न होकर शहर मे ऊबड़-खाबड़ मैदान था जिसके पश्चिम भाग मे बड़े-बड़े मकानों की पिछवाड़े की दीवारे और शेष तीनो ओर ४-५ फुट ऊची ईंटो की दीवारे और भीतर जाने का केवल एक तग छोटा दरवाजा सभामे शामिलहोनेके लिए हजारो शरीफ और बेकसूर अबला वृद्ध—काग्रेस जाच समिति के अनुसार करीब ६ ७ हजार जिनमे अधिकाश देहात के—वहा जमा हो गए। इसी बीच करीब ४—१५ शाम ऊपर से एक हवाई जहाज उडता दिखाई दिया। जनता में कई लोग घबराकर जब उठने लगे, तब इसी सरकारी जासूस शादी लाल ने मच पर से कहा—"आप घबड़ाये नहीं। अभी सभा की कार्यवाही शुरू हो रही है।" इसी समय यहीसरकारी जासूस जब बोलना शुरू करने लगा—करीब शाम ४-२५ पर—उसी समय बिना किसी पूर्व खतरे व मार्शलला लागू होने के हेतु सभा के गैर कानूनी घोषणा करने के जलिया वाला बाग के उसी तग दरवाजे से धडाधड़ मशीन गनो ने बम के गोले बरसाने शुरू कर दिए। डायर ने सरकार द्वारा नियुक्त हटर कमेटी के सामने बयान मे कहा कि—मैंने किसी प्रकार चेतावनी देने जरूरत नही समझी; एक प्रश्न के उत्तर मे वह बोला—'करीब १५ मिनट गोले बरसाये गये ओर बारूद खत्म होजाने से मुझे बन्द करना पडा अन्यथा वह बन्द न करता। एक दूसरे प्रश्न कि घायलो और मृतको की व्यवस्था के लिए क्या किया गया?—"इस पत्थर दिल फोजो अफसर ने कहा यह काम मेरा नही था। यह जिम्मेदारी तो नगर अधिकारियो (सिविल अफसरो) की थी।

हजारो मरे व जख्मी

बाग के तीनो ओर दीवारी हदबन्दी, एक ही तग दरवाजा, आतकित भारी भीड़ की भगदड—फलत बहुत कम बचकर भाग सके। बम बारी और इस अन्धाधुध भागदौड़ कुचले गए मरे—व जख्मी हुए लोगो की सख्या सरकारी हण्टर कमेटी ने पहले १०० और बाद मे जब कहा गया कि देहात से आए अधिकाश व्यक्तियो के नाम पता जानने का कोई साधन नही था, तब सरकार की ओर से मृतको की सख्या ५०० बताई गई। काग्रेस द्वारा नियुक्त मोतीलाल नेहरू जाच समिति के अनुसार मृतको की सख्या दो हजार से अधिक थी। घायलो की चिकित्सा और उनकी पानी की माग को पूरा करने की कोई व्यवस्था तत्काल तो न हो सकी पर आधी रात के बाद नगर की कुछ सामाजिक सस्थाओ और औषधालयो की ओर से औषधि जल आदि की कुछ व्यवस्था हो सकी। विदेशी सरकार की ओर, प्राय मन्द और अधूरी व्यवस्था ही थी।

सहायता सेवा के लिए स्वामी श्रद्धानन्द

गैर-सरकारी स्वयसेवी सामाजिक धार्मिक सस्थाओ मे सबसे पहले स्वामी श्रद्धानन्द जी दिल्ली से लाहौर एक दो दिन बाद ही पहुच गये—उस समय बाहर से पजाब प्रवेश पर सरकारी रोक थी और महामना श्री मदन मोहन मालवीय के सहयोग मे लाहौर के मुख्य बाजार अनारकली के पास ही अस्पताल मार्ग पर—प्रमुख आर्य नेता मा कृष्ण के दैनिक उर्दू जिसके उन्ही दिनो प्रारम्भ होते ही पाबन्दी लगा दी गयी थी और जिसका पुन प्रकाशन प्रारम्भ हुआ—के कार्यालय के ऊपर के कमरो मे पजाब सेवा समिति के नाम से सेवा-सहायता और जलिया वाला बाग मे मृत व घायल परिवारो की खोज-खबर अमृतसर नगर और देहात मे जाकर नाम-पतो की जाच तथा ढेरो आए प्रार्थना पत्रो का जाच-पडताल इत्यादि का कार्य प्रारम्भ कर दिया गया।

गुरुकुल के छात्र

स्वामीजो ने तार देकर गुरुकुल विद्यालय कागड़ी के १३ वी १४ वी कक्षाओं के छात्रो को बुलवाकर स्वय सेवक के रूप मे इस मिशन मे नियुक्त किया। पक्तियो का लेखक तब १३वी कक्षा मे था। वह भी इस सेवाकार्य मे अपने अन्य कुल बन्धुओ के साथ लग गया। पजाब व बाहर कई आर्य पुरुष स्वामीजी के नेतृत्व मे इसमे जो जान से लग गए।

इस प्रकार, उस महान् राष्ट्रीय सकट काल मे आर्यसमाजने जो प्रशस्त भूमिका निभाई उसकी भूरि-भूरिसराहना राष्ट्रीय नेताओ विशेपत गाधीजी, नेहरूजी, मालवीयजी द्वारा की गयी।

के. सो ३७ डी अशोक विहार
दिल्ली—५२

आर्य जगत् समाचार

१३ वर्षों में हिन्दू अल्पसंख्यक हो जाएंगे

यदि समय रहते वे सचेत न हुए : महात्मा वेदभिक्षु

अजमेर। एक नागरिक सभा मे भाषण देते हुए अ० भा० हिन्दू रक्षा समिति के अध्यक्ष महात्मा वेदभिक्षु ने घोषित किया यदि समय रहते भारत का हिन्दू सजग नही हुआ तो अगले तेरह वर्षों मे भारत मे हिन्दू अल्पसख्यक हो जाएगे, उस स्थिति मे न तो धर्म निरपेक्षता ही रह जाएगी और न लोकतन्त्र।

महात्मा वेदभिक्षु जी ने यह सुचना भी दी कि देश की राजधानी दिल्ली मे दो लाख विदेशी मुसलमान बिना किसी पासपोर्ट के रह रहे हैं।

क्षेत्र की अनेक सस्थाओ की ओर से मई, १९८२ के राजस्थान की वीरभूमि जयपुर मे विशाल हिन्दू सम्मेलन की तैयारिया आरम्भ हो गई है।

डा० भारतीय को १०००) का गोवर्द्धन पुरस्कार

गुरुकुल कागड़ी के कुलपति श्री बलकुमार हूजा ने सघड़ विद्यासभा ट्रस्ट जयपुर की ओर से अपने पिता श्री गोवर्द्धक प्रसाद शास्त्री की स्मृति मे १०००) का गोवर्द्धन पुरस्कार पजाब विश्वविद्याल चण्डीगढ मे प्राध्यापक डा० भवानीलालय भारतीय को देने की घोषणा की है। गुरुकुल कागडी के वार्षिकोत्सव पर १० अप्रैल को वेद सम्मेलन मे यह धनराशि और दुशाला डा० भारतीय को भेट किए गए।

आर्यसमाज जंगपुरा विस्तार के नए पदाधिकारी

सरक्षक—श्री रतनचन्द्र सूद, चौधरी गोपालदास भाटिया, श्री कुन्दनलाल धवन, प्रधान—श्री गणपतराय ठाकुर, उपप्रधान—श्री प्यारेलाल बतरा, श्री आत्मदेव, मन्त्री—श्री कृष्णचन्द्र चोपड़ा, उपमन्त्री—श्री आर्यमित्र बजाज, श्री दीनानाथ आहूजा, कोषाध्यक्ष—श्री नरेन्द्रलाल हसीजा।

नारियां दुर्गा बनकर देश की रक्षा करें आजमगढ़ जनपद में सुमन दम्पती का तूफानी दौरा

आजमगढ। आजमगढ जनपद के तूफानी दौरे मे श्रीमती सरस्वती सुमन ने कहा कि जब ज देश, धर्म, सस्कृति पर सकट आये हैं, तब माताओ ने रणक्षेत्र मे पदार्पण किया है, आज देश पर पुन. सकट की घड़ी आ गई है, हिन्दू नारिया पुन: मा दुर्गा, रानी दुर्गावती रानी लक्ष्मीबाई का रूप धारण देश की सभ्यता की सुरक्षा करें।

२६ से २९ मार्च तक डा० आनन्द सुमन ने आजमगढ जनपद के फूलपुर, मीर सराय, फरिहा, निजामाबाद, रानी की सराय, आर्यमगढ़नगर (डी. ए. वी कालेज), बिलरिया, जिमनपुर, मेहनगर, देवगाव, लालगज, मऊनाथभजन, घोसी, माहम्मदाबाद, कोपागज, मुबारकपुर आदि की विशाल हिन्दू सभाओ को सम्बोधित किया। डा० सुमन ने हम बन्दे मातरम् गायेंगे, हिन्दू राज्य बनायेंगे, हम सब हिन्दु है, हिन्दू कभी मरता नही

१६ मई से ३० जून १९८२ तक डा. सुमन और दिल्ली के इमाम बोखारी की नतिनी वर्तमान श्रीमती आशादेवी अन्य प्रत्यावर्तित पुरुष-महिलाओ के साथ उ० प्र० के पूर पूर्वांचल का दौरा करेंगे।

उपेक्षित क्षेत्रों मे प० रामकिशोर वैद्य द्वारा वेदचार

जमना पार का क्षेत्र राजधानी दिल्ली मे एक उपेक्षित क्षेत्र समझा जाता है। २८ फरवरी को आर्यसमाज अनाजमण्डी शाहदरा मे यमुनापार आर्यसमाजों के सामूहिक ऋषि बोधोत्सव कार्यक्रम मे प० रामकिशोर वैद्य ने वर्तमान स्थिति में महर्षि का सन्देश प्रस्तुत किया।

वैद्यजी ने ८ से १३ फरवरी तक आर्यसमाज टैगोर गार्डन मे बृहद्-यज्ञ तथा वेद कथा की। इसी प्रकार पूर्वी राजस्थान की अलवर आर्यसमाज मे १५ से २१ फरवरी तक अथर्ववेदीय यज्ञ करवाया। इन दोनो ही अवसरो पर प० वेदव्यास ज्योतिप्रसाद जी की भजनमन्डली ने सुन्दर भजन प्रस्तुत किए।

मथुरा क्षेत्र मे तरौली गांव के आर्यसज्जनों के अनुरोध पर प० रामकिशोरजी वैद्य वहा भी वेदप्रचार के लिए गए।

२५ मार्च से लेकर ४ अप्रैल तक आर्यसमाज नया बॉस मे वैद्य रामकिशोरजी सामवेद पारायण यज्ञ का सयोजन किया। इस अवसर पर प० सत्यदेव स्नातक पं० ज्योतिप्रसाद तथा पं० वेदव्यास—ज्योतिप्रसाद, भजनमण्डली ने भजन प्रस्तुत किए।

प्रेरणा के स्रोत श्री राम

—चमनलाल

योगीराज श्री कृष्ण जी ने गीता मे प्रतिपादन किया है—

यदा-यदा हि धर्मस्य ग्लानि
र्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मान
सृजाम्यहम्॥
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च
दुष्कृताम्।
धर्मसंस्थापनार्थम् सभवामि युगे-
युगे॥

महापुरुष खिले हुए फूल के समान सुखद तथा मनोहर होते हैं। जो स्वयं तो महकते हैं, ससार को भी अपनी मधुर सुगन्ध से आनन्द विभोर कर देते हैं। यही नहीं, ये महापुरुष सूर्य की न्याईं तेज और प्रकाश के पुञ्ज होते हैं जो स्वय तो जगमगाते ही हैं, साथ ही अपने निर्मल प्रकाश से ससार को भी प्रकाशमय बना देते हैं। ऐसे महापुरुषों का पवित्र निर्मल यश लाखों वर्ष बीतने पर भी धरातल पर शीर्षस्थान पर चमकता है जैसे मर्यादा पुरुषोत्तम रामचन्द्र जी का उज्ज्वल यश।

राम के नाम का स्मरण आते ही भारत मही का सीधा ही स्मरण आता है। आदि कवि महर्षि वाल्मीकि ने भारत की भौगोलिक तथा राजनीतिक एकता को श्रीराम जी के ही रूप मे देखा था। उन का महाकाव्य बाल्मीकि रामायण श्री राम का ही चित्रण करता है। उन्होंने इस अपने महाकाव्य के नायक (राम) के बारे मे इस प्रकार कहा है "समुद्र इव गाम्भीर्ये स्थैर्येण हिमवानिव।" हिमालय से कन्याकुमारी तक व्याप्त समूचा देश राम मे समाहित है। राम अनेक गुणो के धनी थे जिनकी चर्चा वाल्मीकि जी ने बड़े सुन्दर ढग से अपने महाकाव्य मे की है। उनकी दृष्टि में एक आदर्श पुरुष में कौन-कौन गुण होने चाहिए। उन सब गुणो के मूर्त रूप उस समय भूतल पर विद्यमान श्री राम का ही वर्णन नारद जी द्वारा किया गया है। इन्हीं दिव्य गुणों के कारण राम अपने जीवन काल मे ही नही, अपितु आज लाखो वर्ष बीतने पर भी सर्वश्रेष्ठ और लोक विश्रुत हैं। श्री राम जी का एक विशेष गुण यह था कि वह सदैव हानि-लाभ, सुख-दुख, मान अपमान तथा अनुकूल विपरीत स्थिति में एकसम रहते थे। गीता के शब्दों मे वह स्थितप्रज्ञ तथा योगी थे (समत्व योग उच्यते) और यह गुण उनके जीवन मे विशेष रूप से तब देखने मे आया, जब उनको अयोध्या के महाराजा दशरथ के आदेशानुसार उनको राज्याभिषेक के स्थान मे बन जाने को कहा गया। जब राजतिलक की तैयारिया बड़ी धूमधाम और उत्साह से हो रही थी और अगले दिन प्रात यह भव्य समारोह सम्पन्न होना था, परन्तु रातों रात मन्थरा दासी की दुष्प्रेरणा से केकैयी ने महाराजा दशरथ से एक पूर्व प्रतिज्ञा के अनुसार दो वर मागे। इस वर से राम को १४ वर्ष का वनवास और दूसरे से अपने पुत्र भरत को युवराज पद दिए जाने की माग करके रग मे भग कर दिया और सारी अयोध्या को शोक सागर में डुबो दिया। बाल्मीकि के शब्दो मे राम जी को जब राज्याभिषेक के लिए आमन्त्रित किया गया और जब उसी समय उनके वन जाने को कहा गया तो उनके व्यवहार मे लेशमात्र भी चचलता व घबराहट न थी और नही उनकी मुख मुद्रा पर किसी तरह का विकार दीख पडता था।

श्री राम जहा बडे पराक्रमी है वहा वह विनय शीलता एव निराभिमानता की साक्षात् मूर्ति भी हैं। कहीं भी वह अपने शौर्य का पराक्रम पर गर्व नही करते, र विचार और व्यवहार मे, सब जगह अति मृदु है। महर्षि के अनुसार राम जी आत्मवत्ता के कारण ही विनति से, अन्यथा भौतिक स्तर पर सामर्थ्य होने की विनय शीलता तो एक प्रकार से कायरता ही होती है। साधारण प्रभुता पाकर अथवा पराक्रम दिखाकर मनुष्यो मे मदमत्तता और अहकार आ जाता है और वह अपने गौरव का वर्णन स्वय करने लगते हैं।

'श्रीमद बक्त न कीन्ह कोई प्रभुता
वधिर न काहि"

परन्तु राम जी का व्यवहार इससे सरासर विपरीत है; उग्र परशुराम के गर्वीले कठोर शब्दों को सुनकर राम बड़ी विनम्रता से आत्म परिचय देते हुए कहते है—

"राम मात्र लघु नाम हमारा।
परसु सहित बड़ नाम तोहारा॥"

दूसरो को बड़प्पन देने तथा स्वय को लघु मानने की यह कैसी अद्भुत् विनम्रता है इस महात्मा राम की। ऐसे अनेक है उदाहरण उनकी विनयशीलता के उनके जीवन मे मिलते है।

दृढ़प्रतिज्ञ राम

सस्कारी जीवों का जीवन बड़ा ही अद्भुत होता है। और जब बार-बार उनके जीवन मे परीक्षा की घड़िया आती हैं। तब साधारण आदमी तो सासारिक प्रलोभनों के वशीभूत हो सत्य और न्याय के पथ से च्युत हो जाते है, परन्तु ये असाधारण लोग ऐसी विकट परिस्थितियों मे मे से ही निखर कर आते हैं और यही साधारण और सस्कारी मनुष्यो मे मुख्य भेद होता है। हमारे नायक राम के जीवन मे एक और परीक्षा की घड़ी आ खड़ी हुई। जिस समय वह चित्रकूट पर्वत पर निवास कर रहे थे, तो ननसाल से लौटने पर भरत जी अपनी माता कैकेयी, अन्य दोनों माताओं मन्त्रिमण्डल तथा अनेक प्रमुख जन-वर्ग सहित श्री राम जी को वापिस अयोध्या लाने के वास्ते वहां आए,

आर्यसमाजों के सत्संग

१८ अप्रैल, १९८२]

अन्धामुगल प्रताप नगर—प० रघुराज शास्त्री, अमरकालोनी—प० गणेश-प्रसाद विद्यालकार; अशोकविहार के सी-५२ ए—आचार्य हरिदेव सि० भू०; अशोकनगर—प० देवराज वैदिक मिश्नरी, आर के पुरम सैक्टर ५—प० देवीचरण बन्सल, आर के. पुरम सैक्टर ६—प० प्रकाशवीर व्याकुल, आनन्द बिहार—प० विश्वप्रकाश शास्त्री, इन्द्रपुरी—प० वेदपाल शास्त्री; किग्जवे कैम्प—पं० सोमदेव शास्त्री; किशनगज मिल एरिया—प० सत्यप्रकाश शास्त्री, कालकाजी डी० डी०-ए फ्लैटस—वैद्य रामकिशोर, कृष्णनगर—प्रो० वीरपाल विद्यालकार, गाधीनगर—पं० अशोक कुमार विद्यालकार, गुडमण्डी—प० प्राणनाथ सिद्धान्तालकार, गुप्ता कालोनी—स्वामी स्वरूपानन्द भजनोपदेशक; गोविन्दपुरी—प० जयभगवान भजन मण्डली, चूना मण्डी—प० हरिदत्त शास्त्री, जंगपुरा-भोगल—प० हरिचन्द्र, जनकपुरी बी ३।२४—प० कामेश्वर शास्त्री, टैगोर गार्डन—प्रो० सत्यपाल वेदार, तिलक नगर—पं० उदयपाल शास्त्री, तिमार पुर—प० गणेशदत्त वानप्रस्थी, दरिया गज—प० रामरूप शर्मा, नारायण विहार—प० सुधाकर स्नातक, नया बास—प० खुशीराम शर्मा, पजाबी बाग—डा० रघुनन्दन सिह, पजाबी बाग एक्सटेन्शन—श्री चमनलाल, प्रीतमपुरा—प० सत्यदेव स्नातक भजनोपदेशक, बाग कड़े खा—प० बरकतराम भजनोपदेशक, विरला लाइन्स—श्रीमती प्रकाशवती शास्त्री, माडल बस्ती—श्रीमती सुशीला राजपाल, मोडल टाउन—प० छविकृष्ण शास्त्री; महावीर नगर—प० रामनिवास; महरोली—प० हीराप्रसाद शास्त्री, रमेशनगर—श्रीमती लीलावती आर्या, राणा प्रताप बाग—प० सीसराम भजनोपदेशक, राजौरी गार्डन न मास्टर ओमप्रकाश आर्य, लड्डू घाटी—प० ओमप्रकाश भजनोपदेशक नगर—प० मनोहर लाल ऋषि भजनोपदेशक, लेखरामन विधान के निर्देशक बनवारीलाल शादा भजनमण्डली, लारेन्स रोड—आचार्य दीना के सरक्षण एव प्रव- विक्रम नगर—ला० लखमीदास आर्य, विनय नगर—प० यहै । इसके , सफदर जग एन्क्लेव—स्वामी प्रेमानन्द, सुदर्शन पार्क—प्रो० भारत मित्र शास्त्री तथा ज्ञान-चन्द डोगरा, सराय रोहल्ला—आचार्य दिवाकर शर्मा, सोहन गज—प० ईश्वरदत्त एम-ए, श्रीनिवासपुरी—प० तुलमी राम भजनोपदेशक, शालीमार बाग—डा० रघुवीर वेदालकार, हौज खास डी-२० प० चन्द्र भानु सि० भू० ।

—ज्ञानचन्द डोगरा, वेद प्रचार प्रबन्धक ।

आर्यसमाज बिरला लाइन का वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज बिरला लाइन्स, दिल्ली का वार्षिकोत्सव १९ अप्रैल से २५ अप्रैल तक उत्साहपूर्वक मनाया जाएगा ।

आर्यसमाज बहराइच के नए पदाधिकारी

प्रधान—श्रीकृष्ण माधव शरण, उपप्रधान—श्री गिरजादत्त वानप्रस्थ, श्री प्रेमचन्द गुप्त, मन्त्री डा० टेकचन्द्र मायर, उपमन्त्री—श्री चरनसिंह, ओमप्रकाश आर्य, कोषाध्यक्ष—श्री रामलाल अग्रवाल, पुस्तकाध्यक्ष—श्री कन्हैयासिंह ।

१८ अप्रैल, रविवार को सायकाल ४ बजे आर्यसमाज शक्तिनगर मे रूमानिया के निवासी डॉ० जॉर्ज अका का अग्रेजी मे भाषण और फिर विचार-विमर्श होगा। विषय है—"शिक्षा और शान्ति—महर्षि दयानन्द के विचारो के विशेष सन्दर्भ मे ।" अंग्रेजी जानने महानुभाव सादर आमन्त्रित करते है ।

जयदेव आर्य, सयोजक, युवा, सस्कृति मच ।

श्री मथुरालाल जी के निधन पर शोक

आर्यसमाज अजमेर के प्रधान एव डी० ए० वी० कालेज आदि शिक्षण सस्थाओं के मत्री श्री दत्तात्रेय वाले ने आर्य जगत् के प्रसिद्ध विद्वान् श्री मथुरालाल जी के निधन पर हार्दिक शोक व्यक्त किया है । परमात्मा दिवगत आत्मा को शान्ति एव सद्गति प्रदान करे तथा उनके शोक सतप्त परिजनो को इस अपार कष्ट को सहन करने की शक्ति दें ।

(श्रीराम पृष्ठ ६ का शेष)

तो राम के सामने यह राज्य का प्रलोभन और परीक्षा की घडी थी। राम ने भरत की माग सर्वथा ठुकरा दी और भरत की पितृ आज्ञा पालन की अनिवार्यता का का महत्व भी समझाया समय भौतिकता वादी और इन्द्रजन्य सुख भोग को ही धर्म समझने वाले जावालि ऋषि भी उपस्थित थे । उन्होंने हा कि माता-पिता तो केवल पालक मात्र है और मृत पिता के लिए शोक क्यों ? और उनके वचनो के पालन की क्या आवश्यकता। जो प्रत्यक्ष है वही सत्य है। भविष्य की क्या चिन्ता। ऐसे घोर अवैदिक शब्द सुनकर बडा आश्चर्य हुआ और उस दृढमति एव धर्म-निष्ठ राम ने तुरन्त ऋषि वचनो का विरोध करते हुए कहा कि ससार रूपी इस कर्म क्षेत्र मे मनुष्य को शुभ कर्म से करने चाहिये, और मैं पिता की आज्ञा को किसी कीमत पर भी नही टालूगा—

लक्ष्मी चन्द्रा दयेमाद्वा हिमवान वाहिमृत्यजेन
अतीयार सागरो बेला न प्रतिज्ञामह पितु ।

इस प्रकार की अनेक अद्भुत घटनाओ से उनका जीवन भरा पडा है। जैसे राम का सम्पूर्ण जीवन एक आदर्श था और जीवन के सभी क्षेत्रो मे एक मर्यादा स्थापित कर दी, उसी तरह उनका राज्य भी विश्व के इतिहास मे सदा के लिये आदर्श रूप रहेगा और लाखो वर्ष बीतने पर अब भी है, इसी लिये तो राष्ट्र पिता महात्मा गान्धी ने भी की थी जो स्वतन्त्रता प्राप्ति के पैंतीस वर्ष बीतने पर आज स्वप्न मात्र बनकर ही रह गया है। उस राज्य के वर्णन वाले बाल्मीकि रामायण के श्लोको का हिन्दी अनुवाद इस प्रकार है—

कही नही विधवाओ का तब रुदन सुनाई देता था, दुष्ट नही थे, नही रोग का ही भय कभी सताता था ।
नही चोर व्यभिचारी कोई छूता भी पर
वित्त न था।
नही अनर्थ कभी कोई भी,
कातर कोई चिन्त न था ।।
जरा जीर्ण सब त्यागी होकर इस काया
को तजते थे।
नही सुनी शिशुओ को मृत्यु सदा ही प्रभु
वे भजते थे।
सदा मुदित आनन्दित
जन-जन धर्म प्राणो से प्यारा था।
आदर्श राम को मान,
परस्पर द्वेष । सभी ने छोडा था।
निरोगी थे वे दुःख शोक नही
जीवन मे उनके व्याप सका।
सतुष्ट सभी अपने अपने कर्मो अवरित
रहते थे।
न्याय निष्ठा भा प्रजा सभी
वे धर्म अधर्म समझते थे।
ऐसा था राज्य जिन दिनो
रामचन्द्र का शासन था ।

इस प्रकार राम का जीवन अनगिनित शिक्षाओ से भरा पडा है। जिस भी दृष्टि से देख यह हमारे जीवन मे पथ प्रदर्शक का काय करता है। आज जिस विकट और शोचनाय स्थिति से हमारा देश गुजर रहा है सचमुच राम का जीवन उसमे सुधार लाने के लिये प्रकाश स्तम्भ Light House का काम कर सकता है ।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रकाशन

सत्यार्थप्रकाश सन्देश (हिन्दी)	१.००
,, ,, (अंग्रेजी)	समाप्त
आर्य सन्देश-महासम्मेलन विशेषांक	६.००
पादरी भाग गया— ओम्प्रकाश त्यागी	० ३०
स्वामी श्रद्धानन्द-बलिदान अर्द्ध शताब्दी स्मारिका	६.००
सत्यार्थप्रकाश शताब्दी समारोह रिका	६.००

सम्पर्क करें—
अधिष्ठाता प्रकाशन विभाग
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा,
१५, हनुमान रोड,
नई दिल्ली-११०००१

卐 'आर्यसन्देश' के स्वयं ग्राहक बनें— दूसरों को बनाए

卐 आर्यसमाज के सदस्य स्वयं बनें— दूसरों को बनाइए

卐 हिन्दी-संस्कृत भाषा स्वयं पढ़ दूसरों को भी पढ़ाइए—

डी (सी) ७६५

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए श्री सरदारी लाल वर्मा द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा भटिया प्रेस २५७४, रघुवरपुरा नं० २

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक मुखपत्र

एक प्रति ३५ पैसे   वार्षिक १५ रुपये   वर्ष ६   अंक २६   रविवार २५ अप्रैल   १३ वैसाख वि० २०३९   दयानन्दाब्द—१५७

गोवंश की हत्या पर प्रतिबन्ध की मांग संविधान की दृष्टि से उचित

भारतीय कृषि व्यवस्था की दृष्टि से गोवंश की रक्षा आवश्यक :

सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री शालवाले तथा श्री त्यागी द्वारा गोवधबन्दी के लिए केन्द्रीय कानून की मांग

नई दिल्ली। सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले और महामन्त्री श्री ओम्प्रकाश त्यागी ने एक संयुक्त वक्तव्य मे घोषित किया है—प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी का यह कथन कि देश मे गोवश की हत्या पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगाना सम्भव नहीं है, वह जहां भारतीय सविधान, सरकार की धर्म निरपेक्ष नीति, सरकार की घोषित सामाजिक और आर्थिक नीतियो के विरुद्ध है, वहां वह अत्यधिक खेदजनक भी है।

दोनों आर्यनेताओं ने वक्तव्य में कहा है—गोवंश की हत्या पर हिन्दू समाज द्वारा पूर्ण प्रतिबन्ध की मांग संवैधानिक, धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक सभी दृष्टियों से वध और न्यायसंगत है। दोनों नेताओं ने मांग की है—

१. भारतीय सविधान के निर्देशक सिद्धान्तो मे गोवश के सरक्षण एव प्रवर्द्धन की व्यवस्था है। इसके अनुसार गाय-बैल की हत्या पर स्वभावत रोक लगाई जानी चाहिए।

२. सरकार की धर्मनिरपेक्ष नीति के अधीन भी बहुसंख्यक विशाल भारतीय समाज की धार्मिक भावनाओ का आदर करते हुए भी गोवश की हत्या पर रोक लगनी चाहिए।

३. स्वतन्त्रता आन्दोलन के समय भी गोरक्षा का प्रश्न महत्त्वपूर्ण था। महात्मा गांधी ने स्पष्ट घोषणा की थी कि स्वतन्त्र भारत मे गोवंश की हत्या पर रोक लगाना पहला कार्य होगा।

४ देश मे कृषियोग्य भूमि एव कृषि जोतो की घटती सीमा देख कर गोवश कृषि का मूलाधार है। भारतीय कृषि-व्यवस्था के संरक्षण के लिए गोवश का सरक्षण आवश्यक है।

दोनो आर्य नेताओ ने आर्यजनता से संयम रखते हुए गोरक्षा के लिए सार्वदेशिक सभा को अन्य सभी हिन्दू सगठनों, सस्थाओं तथा गोवश की रक्षा के आन्दोलन मे सहयोग देने वाले लोगों से परामर्श कर किसी निर्णय पर शीघ्र पहुचने का विश्वास दिलाया है।

गोरक्षा के लिए मुनि ज्ञानचन्द्र का आमरण अनशन

गोहत्याबन्दी के लिए केन्द्रीय कानून बनाया जाए :
मेरा संकल्प तोड़ने का प्रयत्न न किया जाए :
मुनिजी का सरकार व जनता से अनुरोध

नई दिल्ली। १ दरियागंज, दिल्ली मे अवस्थित शुद्धि साधना प्रयोग-केन्द्र मे रामनवमी २ अप्रैल से आमरण अनशन कर रहे मुनि ज्ञानचन्द्र जी ने एक वक्तव्य में घोषित किया है—'जब तक भारत भर मे गोहत्याबन्दी का केन्द्रीय कानून नही बनेगा, तब तक मेरा अनशन चालू रहेगा। यह सकल्प अन्तरात्माकी प्रेरणा से हुआ है। किसी भी राजकीय या साम्प्रदायिक आन्दोलन के साथ इसका कोई सम्बन्ध नहीं है।

निश्चय पर दृढ़ रहने की शक्ति दें

मुनि ज्ञानचन्द्र जी ने सरकार और मित्रों से अनुरोध किया है—'किसी भी परिस्थिति मे मेरे शरीर को बचाने हेतु खुराक, औषधि या इन्जेक्शन आदि किसी रूप मे न दें। मेरे पवित्र सकल्प को बलपूर्वक या प्रेमपूर्वक तोडने का कोई भी प्रयत्न होगा तो वह मेरे लिए अन्यायकारी एव दुःखद होगा।'

मुनिजी ने आशा प्रकट की है कि उनका अनशन देशवासियों को गोरक्षा एव गोसेवा के प्रति रचनात्मक कर्त्तव्य निबाहने के लिए प्रेरित करेगा, उन्होने भगवान से प्रार्थना की है कि वह शरीर रहे या जाए गोहत्याबन्दी का ध्येय प्राप्त होने तक अपने निश्चय पर दृढ रहने की शक्ति दे।

जमनापार सफल आर्य सम्मेलन

सम्मेलन और शोभायात्रा की सचित्र झांकी

२६ से २८ मार्च १९८२ तक दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा और उप प्रतिनिधि सभा, जमनापार, शाहदरा दिल्ली के सयुक्त तत्वावधान में रामलीला मैदान, भोलानाथ नगर, शाहदरा दिल्ली मे सफल आर्य महासम्मेलन आयोजित किया गया था। उस सम्मेलन की सफलता से आशान्वित होकर उत्तरी दिल्ली क्षेत्र मे आर्यसमाज के संगठन और प्रचार को व्यापक करने के लिए माडल टाउन क्षेत्र मे एक बृहद् आर्य महासम्मेलन आयोजित किया जाएगा। सम्मेलन की तैयारी के लिए २९ अप्रैल को सायं ६ बजे आर्यसमाज माडल टाउन मे उत्तरी क्षेत्र और दिल्ली के प्रमुख आर्य नेताओ की एक विशेष बैठक बुलाई गई है।

यहा प्रस्तुत है २६-२७-२८ मार्च को सम्पन्न आर्य महासम्मेलन के कुछ दृश्य।

—शेष चित्र पृष्ठ तीन पर देखिए



सम्पादक—नरेन्द्र विद्यावाचस्पति

व्यवस्थापक—प्रद्युम्नलाल तलवाड़

वेद-मनन

हमारा शरीर, मन व मस्तिष्क स्वस्थ रहें

—मनोहर विद्यालंकार

स्वाहा प्राणेभ्य साधिपतिकेभ्य । पृथिव्यै स्वाहाऽग्नये स्वाहा,
अन्तरिक्षाय स्वाहा वायवे स्वाहा । दिवे स्वाहा सूर्याय स्वाहा ॥ यजु ३९-१

ऋषि दीर्घतमा देवता—प्राणादयो लिंगोक्ता छन्द—पंक्ति ।

शब्दार्थ—(साधिपतिकेभ्य) अधिपति मन सहित (प्राणेभ्य) प्राणो तथा प्राणाधिष्ठित इन्द्रियो के लिए (स्वाहा) उत्तम-उत्तम विषय तथा क्रियाएं उपस्थित करो (पृथिव्यै) आधार-भूमि तथा शरीर के लिए (स्वाहा) लोग वाह-वाह कहे (अग्नये) आधार भूमि के अधिपति नेता तथा शरीर के अधिपति जाठराग्नि के लिए (स्वाहा) लोग प्रशसा वाक्य बोले । (अन्तरिक्षाय) तुम्हारे द्वारा अपनाए गए मध्यमार्ग तथा हृदय के लिए (स्वाहा) लोग वाह-वाह कहे (वायवे) मध्यमार्ग और हृदय के अधिपति वायु अर्थात् गतिशीलता और व्यस्तता के लिए (स्वाहा) लोग प्रशसा वाक्य बोले (दिवे, द्युलोक और मस्तिष्क के लिए (स्वाहा) लोग वाह-वाह कहे, (सूर्याय) द्युलोकाधिपति सूर्य और मस्तिष्क के स्वामी ज्ञान सूर्य के लिए (स्वाहा) लोग प्रशसा वाक्य बोले ।

निष्कर्ष—अपने शरीर, हृदय और मस्तिष्क को प्रशसनीय बनाने के लिए इनके अधिपति अग्नि, वायु, और सूर्य का उचित प्रयोग करना चाहिए । जैसे ये तीनो देव अपने-अपने लोक को नियमन्त्रित रखते हैं, वैसे हमारे शरीर के तीनो भाग भी इन देवो की कृपा से स्वस्थ तथा पवित्र रहने चाहिए ।

सूर्यो नो दिवस्पातु वातो अन्तरिक्षात् । अग्निर्न पार्थिवेभ्य । ऋक् १० १५८ ५

अग्नि हमारे शरीर की पार्थिव रोगो से रक्षा करे, प्राण हमारे मन की मानसिक रोगो से रक्षा करे, और ज्ञान रूपी सूर्य हमारे मस्तिष्क को बौद्धिक विसगतियो से बचाए रखे ।

विशेष—यदि हम अपने शरीर के तीनो भागो इन्द्रिय, हृदय और मस्तिष्क के लिए लोगो से वाह-वाह सुनना चाहते है तो हमे इस मन्त्र के ऋषि शब्दार्थ से सकेत लेकर शरीर के तम-रोगो, हृदय के तम-ईर्ष्या द्वेष काम क्रोधादि और मस्तिष्क के तम अज्ञान व अविवेक को विदीर्ण समाप्त करना चाहिए और साधन के रूप मे छन्द शब्द से सकेत लेकर अपने शरीर, हृदय और मस्तिष्क को परिपक्व बनाना चाहिए और समाज के हित मे इनका विस्तारपूर्वक उपयोग करना चाहिए ।

अर्थपोषक प्रमाण—

दीर्घतमा—तम (अन्धकार या उसके कारण)+दीर्घ (दृ विदारणे) पंक्ति—पच् पाके, पचि विस्तार वचने । परिपक्व करना तथा विस्तृत प्रयोग ।

अग्नि पृथिव्या वशी । अथर्व ६ ८६ २

वायुरन्तरिक्षस्याधिपति स मावतु । अथर्व ५ २४ ८

सूर्य इव दिवमारुह्य विकृत्या बाधते वशी अथर्व ८ ५ ७

मनो वै प्राणानामधिपतिर्मनसि सर्वे प्राणा प्रतिष्ठिता । शत १४ ३.२ ३

प्राणा इन्द्रियाणि । ता. २.१४ २

अन्तरिक्षमात्मा पृथिवी शरीरम् । अथर्व ५ ९ ७ आत्मा मनीसि गीतायाम् ।

आत्मा ह्यय प्रजापति । शत ४ ६-१ १ य: प्रजापतिस्तन्मन । जै ३०.३ १-३३ २ दिव यश्चक्रे मूर्धानम् अथर्व १० १ ३२ शीर्ष्णो द्यौ समवर्तत ऋक् १० ९० १४ ।

५२२ ईश्वर भवन, खारी बावडी, दिल्ली-११०००६

गोवध छूट सम्बन्धी प्रधानमन्त्री का वक्तव्य अनुचित

कानपुर की केन्द्रीय आर्यसभा का वक्तव्य

कानपुर । केन्द्रीय आर्य सभा कानपुर महानगर की कार्य समिति की बैठक प्रधान श्री देवीदास आर्य की अध्यक्षता मे आर्यसमाज सीसामऊ मे हुई, जिसमे गोवध की छूट देने सम्बन्धी प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी के पवनार मे दिए गए वक्तव्य की घोर निन्दा करते इसे हिन्दू समाज के प्रति घोर उपेक्षाजनक बताया गया । स्वीकृत प्रस्ताव मे आचार्य विनोबा भावे के गोवध पर प्रतिबन्ध सम्बन्धी चुप्पी को भी आश्चर्यजनक व दुर्भाग्यपूर्ण बताया गया ।

स्वास्थ्य के लिए उपयोगी :

सन्तरा

लेखक—कविराज बनवारीलाल शादां

रोगी मनुष्य का मन चिडचिडा हो जाता है, यदि तन स्वस्थ हो तो मन भी प्रसन्न रहता है। मन प्रसन्न होगा तो मस्तिष्क भी अच्छे विचारो से युक्त होगा। आइए आज हम आपको आजकल सर्वत्र उपलब्ध सन्तरे के बारे मे कुछ बाते बतलाते हैं—

सन्तरा मानव के लिए एक अत्यन्त उपयोगी और उत्तम फल है । जाडे के दिनो इसकी खूब बहार रहती है । सन्तरे मे बहुत-सी विटामिन मौजूद है । यह शीतल, बलवर्द्धक, अम्ल मधुर, मूत्रल, विषघ्न, रुचिकारक, सुस्वादु, क्षुधावर्धक होता है । तृष्णा, ज्वर, वमन, रक्तपित्त, अतिसार, कृमि, पाण्डु आदि रोगो मे काम आता है। पेट के रोगो को दूर करता है ।

● एक गिलास (छोटा) ताजा रस पीने से हृदय रोग नही होता ।

● दो सन्तरो का रस निकाल कर उसमे ताजा ठण्डा पानी मिलाकर पीते रहने से थोडे से ही दिनो मे कोष्ठबद्धता रोग दूर होता है।

● इन्फ्लुएजा—सन्तरे का रस पानी मिलाकर तीन-चार बार पिलाने से लाभ होता है ।

● हिस्टीरिया—दो बडे सन्तरे रोज खाने से हिस्टीरिया दूर होता है ।

● छोटे बच्चो के दस्त—सन्तरे के रस मे पानी मिला कर माँ के दूध मे मिला कर दो-चार चम्मच दो-दो घंटे मे पिलाने से लाभ होगा ।

● बच्चे के दात निकलने पर सन्तरे के रस को गरम करके दो चम्मच रोज पिलाने से बच्चे को उल्टी, अपच, पेट व छाती की जलन दूर होगी ।

● कमजोर नजर मे—जिनकी दृष्टि-शक्ति (बीनाई) कम हो गई हो उन्हे सतरे के रस मे काली मिर्च तथा जरा सा नमक डालकर पीने से लाभ होता है ।

● मुहासे व झाई का इलाज—सन्तरो के छिलको को छाया मे सुखाकर बारीक सिल पर पीस लें । इसको कपडे मे छान ले थोडा गुलाब जल मिला कर मुंह पर मलने से मुहासे दूर होगे ।

● झाई काले दाग मुह पर—छिलका सन्तरे से छीलते ही मुह पर रगड़ने से लाभ होता है, चेचक के दाग भी कम हो जाते हैं ।

● गर्मी मे घबराहट—सन्तरे का शरबत तुरन्त लाभ पहुचाता है, प्यास मिट जाती है । दिन में तीन-चार दफा पीया जा सकता है ।

● अजीर्ण—सन्तरे के एक छोटे गिलास मे थोड़ा-सा काला नमक, सोठ, कुछ दिन सेवन करने से अजीर्ण दूर हो जाता है ।

● सूखा रोग—सतरे का रस और अगूर का रस सम मात्रा मे मिला कर सेवन करना चाहिए ।

● खट्टी डकारो मे, छाती की जलन मे, कै हो जाती हो, इन रोगो मे भुना जीरा, सेधा नमक, काला नमक पीस कर सन्तरे के रस मे मिला कर पिलाने से लाभ होता है ।

● सर्दी, जुकाम, खासी मे—जाड़ो मे गरम जल और गर्मियो मे ठण्डे जल के साथ पीने से सर्दी, खांसी, जुकाम मे लाभ होगा ।

● मलेरिया मे—ढाई तोला सन्तरे का रस, चिरायता एक तोला अर्क मिला कर पिलाने से रोग दूर होता है ।

● खुजली—सतरे का सेवन करने के साथ-साथ सन्तरे के छिलकों को बारीक सिलपर पीस ले । इसमे गोले का तेल और थोडा कपूर मिलाकर शरीर पर मलने से खुजली दूर हो जाती है ।

● हैजा—सतरे के कच्चे फल लेकर साफ जगह रखकर सुखा लें, [illegible] जाने पर उसे जल डाल कर [illegible] और बेर के बराबर गोली बनाकर सुखा कर रख ले । जब किसी को हैजा हो तो आठ-दस गोली खिलाने से आराम होगा । जहा हैजा फैल रहा हो वहा पर रोज सन्तरे का शरबत पिलाने से हैजा नही होगा ।

गर्भिणी के वमन मे—पच्चीस ग्राम सतरे का रस शुद्ध शहद मिला कर पिलाने से उल्टिया रुक जाती हैं । अपच दूर होती है ।

(सन्तरा, मौसमी, माल्टा, नारगी सब एक जाति के फल हैं, गुण धर्म प्राय सन्तरे से मिलते-जुलते हैं । केवल स्वाद मे फर्क होता है। पेड़ो मे भी थोडा ही फर्क होता है । इसी लिए इनका अलग-अलग वर्णन नहीं किया है ।)

—श्री स्वतन्त्र भारत फार्मेसी
मानिकपुरा नई दिल्ली-११०००५

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए श्री सरदारी लाल वर्मा द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा भटिया प्रेस २५७४, रघुबरपुरा नं० २

ब्रह्मचर्य से मृत्यु पर विजय

ओ३म् ब्रह्मचर्येण तपसा देवा मृत्युमपाघ्नत।
इन्द्रो ह ब्रह्मचर्येण देवेभ्य स्वराभरत् । अथर्व ११.५.६

ब्रह्मचर्य और तप के प्रभाव से विद्वज्जन मृत्यु को परे भगा देते हैं। सयमी मानव इस ब्रह्मचर्य द्वारा देवो अर्थात् इन्द्रियो मे तेज और सुख भर देते हैं।

ओ३म्
आर्य सन्देश

ज्ञान और विज्ञान दोनों में समुन्नति

गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के ८२ वें वार्षिकोत्सव पर दीक्षान्त भाषण देते हुए लोक सभा अध्यक्ष श्री बलराम जाखड ने नवस्नातको के माध्यम से भारतीय जनता का आह्वान किया है कि उन्हे विश्व की प्रगति की दौड मे भारत की स्थिति सुरक्षित रखने के लिए प्राचीन भारतीय तत्त्वज्ञान और आधुनिक पाश्चात्य विज्ञान का भली प्रकार सामजस्य स्थापित करना होगा। भारतीय जीवन-दर्शन मे ऋग्वेद यजुर्वेद, सामवेद एव अथर्ववेद के माध्यम से विज्ञान, कर्म, उपासना और कर्म की सच्ची साधना का सन्देश दिया गया है। यजुर्वेद के ४० वे अध्याय को उपनिषदो और गीता का सार कहा जाता है। यह ४० वा अध्याय ईशोपनिषद भी कहा जाता है। इस उपनिषद् मे जो शिक्षा दी गई है, उसे वेदो या उपनिषदो की शिक्षा का सार भी कह सकते हैं।

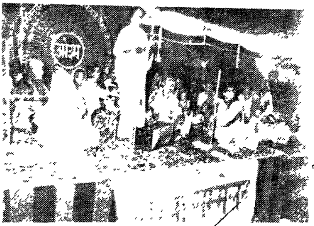
'इन्साइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका'-ब्रिटेनिका के ज्ञानकोश मे पदार्थों का जानना ही ज्ञान है कर्म का नाम ही कला है। इन ज्ञान और कर्म का कोई उद्देश्य नही है, ये मृत्यु के बन्धन को छुडाने की जगह उस बन्धन को भी दृढ करने के काम मे लगे हुए हैं। यजुर्वेद के ४० वें 'इशोपनिषद्' अध्याय मे सीख दी गई है—जो केवल अविद्या रूपी कर्म का—ज्ञान की उपेक्षा कर सेवन करते हैं, वे गहरे अन्धकार मे चले जाते हैं और जो केवल कर्म की उपेक्षा कर विद्या रूपी ज्ञान की आराधना मे सलग्न रहते हैं, वे उससे भी अधिक अन्धकार मे फस जाते हैं, इसलिए जो विद्या और अविद्या को ज्ञान और कर्म दोनो को साथ-साथ जानता है वह कर्म से मृत्यु को तैर कर ज्ञान से अमरता को प्राप्त कर लेता है। विद्या ज्ञान को कहते हैं और अविद्या का यौगिक अर्थ है कर्म।

इस प्रकार सिद्धान्त यह हुआ कि ज्ञान और कर्म दोनो का प्रयोग साथ-साथ करना चाहिए। आज पश्चिमी जगत आधुनिक भौतिक ज्ञान की खोज मे सलग्न है। वह आधुनिक सुख-सुविधाओ की खोज मे विज्ञान का अधिकतम प्रयोग कर रहा है, परन्तु उससे उसे शान्ति नही है। दूसरी ओर केवल अध्यात्म ज्ञान की खोज मे कर्म से शून्य मानव भी आज के प्रतिस्पर्द्धात्मक ससार मे ठिकने मे समर्थ नही है। डा० बलराम जाखड़ ने अपने दीक्षान्त भाषण मे एक पते की बात कही है कि संसार के बड़े वैज्ञानिक आविष्कार सीमित साधनो परन्तु मेधा या बुद्धि के समुचित प्रयोग से ही सम्भव हुए हैं। यदि पश्चिमी विज्ञान की नई खोज भारतीय भाषाओ के माध्यम से भारतीय वैज्ञानिक एव मनीषी हृदयगम कर उसे मानवता की समुन्नति के लिए प्रयुक्त करें तो ज्ञान और कर्म के सामजस्य से मानव एव मानवता की सच्ची समुन्नति सम्भव है। हमारे आधुनिक शिक्षणालय न तो पश्चिमी विज्ञान के आविष्कारो के केन्द्र हैं और न उनमे प्राचीन भारतीय चिन्तन एव ज्ञान का अनुशीलन होता है। तक्षशिला, नालन्दा एव विक्रमशिला के प्राचीन भारतीय शिक्षा केन्द्रो का उसी स्थिति मे पुनरुद्धार सम्भव है, जब वहाँ प्राचीन चिन्तन 'ज्ञान की अनन्त भागीरथी के साथ आधुनिक विज्ञान की खोज की सरस्वती का अपूर्व सगम प्रतिष्ठित किया जा सके।

आर्यसमाज सराय रोहल्ला में निश्शुल्क चिकित्सालय

आर्यसमाज सराय रोहेल्ला मे रविवार १८ अप्रैल को श्री बलदेव सहाय कोहली मेमोरियल ट्रस्ट निशुल्क होमियोपैथिक चिकित्सालय का शुभारम्भ किया गया। ट्रस्ट की प्रबन्ध निदेशिका श्रीमती लीलावन्ती कोहली ने चिकित्सालय का उद्घाटन किया। यह चिकित्सालय रविवार को छोडकर शेष दिन रात को ८ से १० बजे तक जनता के लिए खुला रहेगा।

आर्य महासम्मेलन के दृश्य



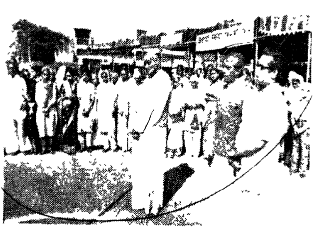
महिला सम्मेलन का दृश्य



नगर आर्यसमाज शाहदरा की एक झाँकी



चन्द्र आर्य विद्या मन्दिर के बच्चे शोभा यात्रा मे तथा इनके पीछे आर्य पुत्री पाठशाला गाधीनगर के विद्यार्थी तथा गाधीनगर आर्यसमाज के टैम्पू



झडा फहराते हुए श्री विद्या प्रकाश जी सेठी

हरिजन और धर्म-परिवर्त्तन

पिछले दिनो जब मीनाक्षीपुरम मे हरिजनो द्वारा सामूहिक रूप से इस्लाम ग्रहण कर लेने, और मीनाक्षीपुरम को रहमत नगर मे बदलने के समाचार प्रसारित हुए, तब देश का ध्यान एकाएक एक ऐसी समस्या की ओर गया जो हमारे समाज की जडो को मुद्दत से खोखला कर रही है। इस घटना के राजनीतिक पहलू पर विशेष जोर दिया गया। बताया गया कि मोरक्को से लेकर मलयेशिया के बीच बस भारत ही एक ऐसा देश है, जहां मुसलमान अल्प सख्या मे हैं। अत उनकी योजना है इसे मुस्लिम बहुसख्यक बनाने की, और आकाक्षा है इस्लामी साम्राज्य स्थापित करने की। इसके लिए लदन मे' इस्लामी कल्चरल सेंटर' गठित किया गया है। अरब देश तेल के बल पर नए अमीर बने हैं, सो उन्होने इस धर्मकार्य के लिए अपने पेट्रोडालर की सहायता दी है और योजना यह बनाई है कि भारत क आठ करोड़ हरिजनो का धर्मपरिवर्त्तन करके मुसलमान बना लिया जाए और इस प्रकार मुसलमानो की सख्या बढाई जाए मीनाक्षीपुरम मे जो कुछ हुआ है वह इसी योजना का भाग है।

यह योजना पता चलते ही हिन्दुओ के लगभग सभी वर्गों मे खलबली मच गई और वे मुसलमानो के इस षड्यन्त्र का भडा फोडने, तथा उसे विफल करने के लिए सन्नद्ध होने लगे। पर समस्या यह थी कि इस समस्या का सामना कैसे किया जाए ?

हिन्दुओ की जाति व्यवस्था मे वनवे ट्रैफिक' है। आप बाहर जा सकते हैं, अदर आ नही सकते। प्राय. लोग एक चुटकुला सुनाते हैं। हिन्दूधर्म से प्रभावित होकर शहशाह अकबर न हिन्दू बनने की इच्छा व्यक्त की। बीरबल से कहा तो वह हजरत अगले दिन एक गधे को पकड कर चौराहे पर बैठ गए। साबुन ले आए। बाल्टियो मे पानी ले आए और लगे साबुन रगड-रगड कर गधे को नहलाने। जब बादशाह तक खबर पहुँची, तब कौतुकवश वह भी वहां आ गए। पूछा बीरबल! यह क्यो कर रहे हो! बीरबल बोले,हुजूर ! इसे घोडा बना रहा हूँ। अकबर ने कहा, भला ऐसा भी कही हो सकता है ? बीरबल न तुरन्त टिप्पणी की, अगर गधा घोडा नही बन सकता तो मुसलमान हिन्दू कैसे बन सकता है ?

विधर्मियो को हिन्दू धर्म मे दीक्षित करन के प्रति हिन्दुओ की क्या तानसिकता रही है उसकी एक झलक इस चुटकुले से मिलती है। उसमे कोई गुणात्मक अन्तर आज तक नही आया है। यही कारण था कि जब अपने जीवन के प्रारम्भिक दौर मे आर्यसमाज ने विधर्मियो को शुद्ध करके उन्हे वैदिक धर्म मे दीक्षित करने का कार्य एक आदोलन के रूप मे शुरू किया तब हिन्दुओ ने उसका विरोध किया। महात्मा गाधी जैसे नेता ने तो उसे राष्ट्रीय एकता कीअपनी संकल्पना के लिए घातक माना। स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज उस समय देश के एक प्रमुख नेता थे और शुद्धि आन्दोलन के प्रमुख कार्यकर्त्ता। महात्मा गांधी ने'स्वामिन् ठहरो' शीर्षक मे एक लेख लिखकर उस आन्दो- को रोक देने का आग्रह किया। स्वामी जी ने उनकी बात मान ली। भविष्य ने बताया कि यह एक राजनीतिक गलती थी। शुद्धि आन्दोलन सफल हो गया होता तो पाकिस्तान की योजना विफल हो जाती। पर शुद्धि-आन्दोलन की सफलता इतनी आसान थी नही।

किसी हिन्दू के लिए बस इतना ही काफी नही है कि वह हिन्दू है। इससे आगे यह भी आवश्यक है कि उसकी 'जाति' क्या है। ब्राह्मण ? कौन से ब्राह्मण ? कायस्थ ? कौन से कायस्थ ? वैश्य ? कौन से वैश्य ? यह 'क्या-कौन' की एक ऐसी लम्बी शृंखला है जिनके उत्तर जन्म से ही तय हो जाते हैं। इसी को जन्मना जाति व्यवस्था कहा गया है। यह क्या-कौन की बीमारी केवल सवर्णों की नही, असवर्णो को भी है, और बडे उग्र रूप में है। तो ईसाई या इस्लाम धर्म छोड़ कर आर्यसमाज मे उसका स्थान क्या होगा?उसकी जाति का निश्चय कैसे होगा ? मुझे शुद्धि आदोलन के समय के 'गाजी महमूद धर्मपाल' का स्मरण हो आता है। इस्लाम छोडकर सपरिवार शुद्ध हो जाने पर 'धर्मपाल आर्य' तो बन गया, पर जब उसके बच्चो के विवाह हिन्दुओं मे नही हुए तब वह विवश होकर पुन मुसलमान बन गया। शकराचार्य स्वामी निरजमदेव जी से एक बार बात करने का अवसर मिला। हिन्दुओ की इस जाति व्यवस्था का समर्थन करते हुए उन्होंने कहा कि यह कठोरता न बरती जाती तो आयाराम-गयाराम की बीमारी फैल गई होती। हिन्दू धर्म की सारी पवित्रता नष्ट हो जाती। तर्क के लिए इसे स्वीकार करते हुए जब मैंने यह कहा कि हिन्दुओ को भी तो अपने धर्म का प्रचार करना चाहिए तो उन्हे इसकी कोई आवश्यकता प्रतीत नही हुई। कृण्वन्तो विश्वमार्यम् से वे इस रूप मे सहमत नही थे। उनका कहना था कि 'बड़े भाग मानुस तन पावा', जब और भी अधिक पुण्यकर्म हो तब हिन्दू धर्म में जन्म मिलता है। धर्म-परिवर्त्तन की व्याख्या उन्होने यो की, 'बिनु सत्सग विवेक न होई। बिनु हरिकृपा सुलभ नहिं सोई।'

आज जब अपने ही देश मे अल्पसंख्यक रह जाने का खतरा सिर पर मडराने लगा तब हरिकृपा और पुण्यकर्म भूलकर दयानन्द की याद आई, उनके बताए उपायो की याद आई। अब 'वापसी' को तो स्वीकार कर लिया, पर यथास्थिति को फिर भी बनाए रखना चाहते हैं। कुल मिलाकर हमारी व्यूह-रचना यह है कि मुसलमान या ईसाई बने हरिजन फिर से हिन्दू बन तो जाए वरना हमारी सख्या कम होने का खतरा है; पर रहे वे हरिजन ही। उनकी दुःस्थिति बदलने का, उनके प्रति अपने दुर्व्यवहार को बदलने का कोई सकल्प इस व्यूह-रचना का भाग नही है। हम यह तो उन्हे समझाते हैं कि धर्म-परिवर्त्तन करने से तुम्हे वह सब नही मिलेगा, जिसकी तुम्हे चाह है, और जो हिन्दू समाज तुम्हे नही दे सका, पर यह आश्वासन नही देते कि अब वह सब हम तुम्हे देंगे। बचपन मे आर्यसमाज मे सहभोज होते देखे थे, जिनमे यह नही देखा जाता था भोजन बनाने वाला, परोसने वाला, साथ खाने वाला जन्म से ब्राह्मण है या चमार, गर्व इस बात पर करते थे कि ये सब 'आर्य' हैं। वह परम्परा सारे समाज मे फैलनी चाहिए थी, पर अब लग ऐसा रहा है कि वह तो आर्यसमाज मे भी शिथिल पड गई है।

लेखक ·

—डा० रवीन्द्र अग्निहोत्री

शिक्षा महाविद्यालय, बगड,

झुझनू-३३३०२३

आज हरिजनो आदि को मुसलमान ईसाई बनाने के लिए जिस प्रकार के प्रलोभन दिए जाते हैं, हम वापस हिन्दू बनाने के लिए कुछ वैसे ही काम कर रहे हैं। उनसे यह कहना प्रलोभन नही तो क्या है कि धर्म-परिवर्त्तन करते ही तुम उस आरक्षण की सुविधा से वचित हो जाओगे, जो सरकारी नौकरियो, शिक्षा सस्थाओ और ससद मे तुम्हें इस समय प्राप्त है। एक ओर इसी आरक्षण का विरोध हो रहा है, दूसरी ओर हम इसी का प्रलोभन दे रहे हैं। आरक्षण उनकी समस्या का हल है ? या हल खोजने तक की अवधि के बीच दी जाने वाली राहत ? और यह कब तक काम देगा ? कल को यह भी सभव हो सकता है कि कोई शक्तिशाली प्रधान मन्त्री अपने प्रचण्ड बहुमत के बल पर यह कानून बना दे कि धर्म-निरपेक्ष राज्य में धर्म के आधार पर सुविधाए नहीं दी जाएंगी। हरिजन और गिरिजन चाहे हिन्दू रहे, चाहे मुसलमान-ईसाई, उनकी सुविधाए बरकरार रखी जाएंगी। तब क्या होगा ?

व्यवस्था का परिवर्त्तन अनिवार्य

वस्तुत. आवश्यकता है समस्या को मूल से पकडने की। एकै साधे सब सधै। महर्षि दयानन्द की ऋषि दृष्टि ने समस्या के मूल को देख लिया था, इसीलिए उन्होंने जन्मना जाति व्यवस्था का विरोध किया, कर्मणा वर्ण व्यवस्था का विधान किया। जन्म से जाति व्यवस्था के रहते एक' ब्राह्मण' चमड़े के जूतो का व्यवसाय करने पर भी पडित जी कहलाएगा, और एक हरिजन यूनीवर्सिटी मे प्रोफेसर हो जाने पर भी हरिजन' ही कहलाएगा,। सविधान शास्त्र का महान् ज्ञाता, नवीन सामाजिक व्यवस्था देने मे सक्षम, मनु, याज्ञवल्क्य आपस्तम्ब आदि आचार्यो की परम्परा का व्यक्ति डा० अम्बेदकर लोगो की निगाह में हरिजन ही रहा, दूसरी ओर वेद पढना-पढ़ना, यज्ञ करना-करना तो दूर, वेद के ज्ञान तक से शून्य, ब्राह्मणत्व के सस्कारो से सर्वथा हीन, आचार की दृष्टि से भ्रष्ट नेहरूजी लोगो की निगाह मे पडितजी बन रहे। इसलिए आवश्यक है कि कर्मणा वर्ण व्यवस्था को स्वीकार किया जाए। इस समय हिन्दुओ के विभिन्न सम्प्रदायो के धर्माचार्य हरिजनो की ही समस्या से विचलित होकर विश्व हिन्दू परिषद् के मच पर एकत्र हुए हैं। इसी मच से जन्मना जाति व्यवस्था को तिलाजलि देने, और कर्मणा वर्ण व्यवस्था लागू करने का सकल्प लिया जाना चाहिए। जब तक हिन्दू समाज मे यह मौलिक सरचनात्मक परिवर्तन नही होता तब तक हरिजनो की समस्या का स्थायी हल भी नही मिल सकता। मीनाक्षीपुरम मे ८८ लोगो को पुनः हिन्दूधर्म दीक्षित कर लिया, इसी तिरुनेलवेली जिले मे इडिन्थकराई, चेराकुलम जैसे पूरे के पूरे गाँव हिन्दू बना लिए, या कर्नाटक के बेलतगडी गाँव मे ६०३ ईसाई पुनः हिन्दू बने इस प्रकार के आंकड़े हमे बस क्षणिक सन्तोष प्रदान कर सकते हैं। इन बन्धुओ की हिन्दू धर्म मे वापसी हो गई, सो तो ठीक, पर खतरे की वापसी फिर नहीं होगी, इसकी कोई गारंटी नहीं। यह गारटी चाहिए तो व्यवस्था मे परिवर्तन अपरिहार्य है।

□ □

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए श्री सरदारी लाल वर्मा द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा [illegible] प्रेस २२७४, रघुबरपुरा नं० २

आध्यात्मिक ज्ञान और भौतिक ज्ञान का समन्वय करें

—श्री बलराम जाखड़ अध्यक्ष, भारतीय लोकसभा

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के ८२ वें वार्षिकोत्सव के अवसर पर ११ अप्रैल, १९८२ के दिन दिए गए दीक्षान्त भाषण का साराश

मैं भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं, स्वामी श्रद्धानन्द जी को, जिन्होंने युगद्रष्टा महर्षि दयानन्द के वैदिक पद्धति सम्मत सिद्धान्तों को मूर्त-रूप देने के लिए, पहले गुजरांवाला में, बाद मे गगा पार की रेती के कांगड़ी ग्राम के निकटस्थ अरण्य मे इस संस्था का बीजारोपण किया था।

महर्षि दयानन्द भारत को अविद्या, अकर्मण्यता, अज्ञान और परतन्त्रताजन्य तिमिर से निकाल कर सत्य पवित्रता और स्वतन्त्रता के पथ पर आरूढ करने का आजीवन प्रयत्न करते रहे। महर्षि शिक्षा को केवल व्यक्तिगत विकास नहीं मानते थे अपितु उनकी दृष्टि मे शिक्षा का कार्य था समाज मे ऐसे नर-नारियों का निर्माण करना जो अपने कर्तव्यों को, उत्तरदायित्व को भली-भांति निभा सकें। सबकी उन्नति मे अपनी उन्नति समझें। ससार का उपकार करें।

स्वामी श्रद्धानन्द के तप-त्याग और आदर्श जीवन ने गुरुकुल कांगड़ी को मूर्धन्य राष्ट्रीय शिक्षण संस्था बना दिया उन्होंने समर्पित जीवन जीया। शास्त्राभ्यास के साथ बालकों के चरित्र निर्माण तप, अनुशासन पर बल दिया। ईश्वरीय ज्ञान वेद के चारो अगो विज्ञान, कर्म, उपासना को प्राथमिकता दी। उनके हृदय मे अपार प्रेम, धैर्य और उत्साह था। आत्मीयता थी। वह बालकों के पिता थे और प्रेरणा के अजस्र स्रोत। गुरुकुल प्रेम, सत्य और सौन्दर्य का काव्य था।

ज्ञान के साथ विज्ञान का समन्वय

ब्रह्मचारियो पर उन्हे अगाध निष्ठा थी। उन्होने मधुरता और प्राकृतिक ऐश्वर्य के परिवेश मे अध्ययन, अध्यापन, चिन्तन और सर्जना का वातावरण बना दिया। आत्मिक ज्ञान के साथ आधुनिक विज्ञान के समन्वय का श्रीगणेश किया। उनके आदर्श से अनुप्राणित वर्चस्वी स्नातको और आचार्यों के धर्म, संस्कृति समाज, वेदज्ञान एव संस्कृति वाग्मय प्रचार प्रसार, हिन्दी मे उच्चस्तरीय शिक्षण के लिए पाठ्य-पुस्तक निर्माण, प्राचीन इतिहास सम्बन्धी शोध कार्य, आयुर्वेद, पत्रकारिता आदि मे विशिष्ट योगदान दिया। देश-भक्ति से आप्लावित और राष्ट्रीय भावना से उद्दीप्त गुरुकुल ने देशव्यापी सेवाकार्य और स्वाधीनता संग्राम में स्तुत्य भाग लिया।

विज्ञान इतनी शीघ्र प्रगति कर रहा है कि पाच-सात साल में ही इसका बडा अश पुराना पड जाता है। संख्या की दृष्टि से भारतीय वैज्ञानिको का ससार मे तीसरा स्थान है। उनकी योग्यता भी किसी से कम नहीं। भारतीय वैज्ञानिकों की उपलब्धिया हमारा गौरव हैं। आर्यभट्ट, रोहिणी, भास्कर, एप्पल के बाद अभी गत आठ अप्रैल को सचारी उपग्रह इन्सैट कक्षा मे स्थापित किया गया। प्रत्यक्ष है कि यह सब पाश्चात्य विज्ञान है। मानव-कल्याण के लिए हमने इसे अपनाया है। इसका भारतीयकरण अभी शेष है।

अन्तरिक्ष अनुसधान, कृषि द्वारा हरित क्रांति, कपडा, इस्पात बिजली, पेट्रोलियम खनन आदि उद्योग, विविध व्यवसाय हमारी आर्थिक समृद्धि के नए आयाम पश्चिम की देन हैं। हमारे यहां मन्त्र, तन्त्र तो जोर-शोर से चलते रहे, पर हमारी वैज्ञानिक प्राचीन सभ्यता सस्कृति के वाहक यन्त्र सम्भवतः ठप हो गए। इन स्वार्थी लोगों ने देश को ह्रास, पतन और परतन्त्रता के गर्त मे धकेल दिया।

स्वतन्त्रता के बाद हम देश के औद्योगिक नवनिर्माण मे जुट गए। ऐतिहासिक कारणो से विज्ञान, टेकनोलोजी की थाती हमे केवल अंग्रेजी से मिली। हिन्दी भले ही हमारे हृदय की भाषा हो, पर अंग्रेजी हमारे मस्तिष्क की जीविका की भाषा है। जब तक हृदय, मस्तिष्क, जीविकोपार्जन की भाषा एक न हो सास्कृतिक विकास अवरुद्ध रहता है। बालक को संस्कृति केवल अपनी मातृभाषा से मिलती है। हमे हिन्दी को सस्कृति और आधुनिक विज्ञान की वाहिका बनाना है। विज्ञान का भारतीयकरण हिन्दी मे विज्ञान की सर्जना से अनायास होगा—अनुवाद से नहीं। यह आपका दायित्व है।

यह स्पष्ट है कि विज्ञान, टेकनोलोजी के लिए प्रयोगशाला, उपकरण, सामग्री पुस्तकालय, निर्देशन का प्रचुर प्रावधान किया जाय। यह भी सत्य है कि विश्व के महान् आविष्कारकोंके पास न तो प्रयोगशालाए थी, न ही पर्याप्त सुविधाए। महर्षि दयानन्द ने एक विश्वविद्यालय के कुल निकायो से अधिक ही कार्य सम्पन्न किया होगा। उनके रचे ग्रन्थो की संख्या चालीस के लगभग है। पत्र-व्यवहार, पत्र, पत्रिका प्रकाशन अलग। भौतिकी नोबेल पुरस्कार के एक मात्र भारतीय विजेता डाक्टर चन्द्रशेखर वेंकटरमण कहते थे कि 'रमण-प्रभाव' आविष्कार के लिए मैंने मात्र दो सौ रुपए खर्च किए जबकि अन्य विजेता लाखों डॉलर खर्च करते थे। प्रतिभा से चमत्कार सभव है। असम्भव तो एक दिन में भी सम्पन्न किया जा सकता है। चमत्कार को थोड़ा समय लगता है। सफलता के तीन ही तो रहस्य हैं—पहला परिश्रम, दूसरा परिश्रम, तीसरा भी परिश्रम।

भारत ही विश्व का एकमात्र देश है, जहां जीवन की शतवर्षीय वैज्ञानिक योजना बनी—जीवेम शरद: शतम्। और अब तक चली आ रही है। भारतीय उदात्त जीवन की व्यापक दृष्टि और दिव्यता का रहस्य हैं—ब्रह्मचर्य आश्रम, गृहस्थ आश्रम, वानप्रस्थ आश्रम और सन्यास आश्रम।

हम विज्ञान और टैकनोलोजी मे पश्चिम के ऋणी हैं। हमारे कुछ लोग दुर्भाग्यवश अपनी सस्कृति और भाषा को भी हीन, हेय और द्वितीय श्रेणी की समझने लगे हैं। उद्देश्य प्राप्ति के लिए योजनाबद्ध कार्य और उसका मूल्यांकन स्वय एक अनुशासन है। दूसरो के साथ मधुर सम्बन्ध स्थापित करना और मिल कर काम करना भी अनुशासन है। सब के हित के लिए, समाज के लिए काम करना सबसे बडा अनुशासन है। अतीत के अनुभवो से हम सीखते हैं, उज्ज्वल भविष्य के लिए योजना तैयार करते हैं, पर जीना तो वर्तमान में ही है। कोई चीज इसलिए अच्छी नहीं कि पुरानी है और नया होना कोई बुराई नहीं है। मूल्यांकन करके आप जो चाहें चुन सकते हैं।

अर्जित ज्ञान और संस्कारो के आधार पर आपको अपना दायित्व निभाना है। ध्येय निश्चित करना है। शरीर, मन और आत्मा का सर्वांगीण विकास करना है। आध्यात्मिक ज्ञान और भौतिक ज्ञान का समन्वय करें। यही उपहार हमें पश्चिम को देना है। विश्व शान्ति के लिए, भौतिकवादी परिश्रम की प्रलयंकारी हिंसा को नियन्त्रित करने के लिए भारत की संजीवनी आध्यात्मिक शक्ति के साथ सामंजस्य ही एक मात्र उपाय है।

आप शंका मत कीजिए आसुरी सपत् पर विजय पाने के लिए आपके हृदय मे दैवी सपत् की शाश्वत धरोहर है। अपने आप और देश पर, अपने धर्म और संस्कृति पर श्रद्धा रखें। आप अपने देश के कर्तव्यनिष्ठ नागरिक बनें। केवल अपनी उन्नति मे ही सन्तुष्ट न रहें, वरन् सबकी उन्नति मे अपनी उन्नति समझें।

बोध-कथा जीवन का कम्बल

दो साधु थे। किसी भक्त ने दोनो को बहुमूल्य गर्म कम्बल उपहार में दिए। दिन भर यात्रा करने के बाद दोनो साधु रात के विश्राम के लिए एक धर्मशाला मे ठहरे। सर्दी की रात थी। जब सोने का समय हुआ तब एक साधु ने सोचा कि कम्बल कीमती है, कहीं ऐसा न हो कि रात के समय कोई चुरा ले जाए, उसने लपेटकर उसे अच्छी तरह तह कर सिरहाने मे लगाया और सो गया। दूसरा साधु जब सोने लगा तब उसने देखा कि सर्दी से कुछ बच्चे कांप रहे थे और उनके दांत कटकटा रहे थे। साधु को दया आई, उसने अपना कम्बल उन अनाथ ठिठुरते बच्चो को उढा दिया।

वह धर्मशाला थी। सुबह जब दोनो साधु उठे, तब दोनों मे से किसी के पास कम्बल नहीं था। एक ने स्वेच्छा से ठिठुरते बच्चो को अपना कम्बल ओढ़ा दिया और दूसरे के सिर के नीचे से खिसका लिया गया था। अपनी इच्छा से अपना कम्बल त्यागने वाला व्यक्ति प्रसन्न था, परन्तु चोरी गए कम्बल का मालिक साधु बहुत दुःखी था। यह जीवन का कम्बल चदरिया एक न एक दिन सबसे छिन जाती है, जो स्वेच्छा से इसे त्याग देता है उसे कोई दुःख नहीं व्यापता, पर जो उससे चिपटा रहता है, वह सदा दुःखी रहता है।

—नरेन्द्र

आर्य जगत् समाचार

मन्त्रों का अभूतपूर्व संगीतमय प्रस्तुतीकरण

विश्व भर में अपूर्व : अमेरिका से नए टेपों की मांग

श्री वेदश्रमी जी की सफलता

परम वेदभक्त श्री नटवरसिह जी एम पी प्रधान चरोतार प्रदेश आर्यसमाज न सस्वर वेदपाठ के प्रशिक्षण का एक लघु सत्र ५ दिवस का आर्यसमाज आनन्द मे आयोजित किया था। चरोतार प्रदेश मे लगभग ४० आर्यजन उसमे उपस्थित हुए थे। सस्वर वेदपाठ के प्रशिक्षण के लिए श्री प० वीरसेन जी वेदश्रमी वेद विज्ञानाचार्य वेद सदन, महारानी रोड इन्दौर को सादर आमन्त्रित किया गया था।

इस सत्र मे वेदश्रमी जी से साम गान तथा मन्त्र गान मुनने को प्राप्त हुए थे। वहाँ पर उन्होने एक ध्वनि अंकित केसैट सुनाया। वह स्वर, ताल, वाद्य युक्त वेदमन्त्र सगीत से पूर्ण था। अत्यन्त श्रुति मधुर रुचिकर तथा चित्ताकर्षक था। मत्र सगीत ने चित्त की वृत्तियो को आनन्द मे निमग्न कर दिया था। वेद मत्रो का सगीत के रूप मे ऐसा प्रस्तुतीकरण आश्चर्यमय है।

मेरे यह पूछने पर कि ये मन्त्र सगीत किस राग मे है तो श्री वेदश्रमी जी ने बताया कि वेद के उदात्तानुदात्त स्वरित स्वरो के आधार पर ही हैं। मनमाने स्वरो मे नही हैं।

सन् १९७१ वेनहावर्ड (अमेरिकन) भारत मे सगीत सीखने हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी आये थे। उसने वेदश्रमी के सस्वर मन्त्रपाठ एव जटाघनादि पाठो का कुछ टेप किया था। हावर्ड यूनिवर्सिटी में सगीत शिक्षक थे। परन्तु अब वेदश्रमी जी ने जो मन्त्रो का सगीत मय प्रस्तुतीकरण किया है वह विश्व मे अपूर्व है और उसका प्रसार विश्वमे शीघ्र ही होगा। इसी मास मे ही अभी श्री वेदश्रमी जी को अमेरिका से एक पत्र प्राप्त हुआ है। जिसमे नासदीय सूक्त, पुरुष सूक्त एव अघमर्षण सूक्तो का ऋग्वेद की रीति से सस्वर मन्त्र पाठ भी मगाया है।

—विद्याव्रत जे शास्त्री, आर्यसमाज आनन्द (गुजरात)।

गोण्डा में १८००० मुस्लिम हिन्दूधर्म ग्रहण करेंगे

—डा० आनन्द सुमन का भाषण

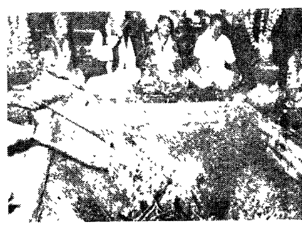
कानपुर। विश्व हिन्दू परिषद के तत्वावधान मे गोविन्द नगर स्थित आर्य कन्या मार्किट चौराहे पर आयोजित विशाल जन सभा को सम्बोधित करते नबाब छतारी से पौत्र डा० आनन्द सुमन ने घोषणा की कि आगामी मास मे गोण्डा जिले मे १८ हजार मुस्लिम हिन्दू धर्म मे शामिल होगे।

डा० सुमन ने कहा कि भारत मे यदि रहना होगा तो वन्देमातरम् कहना होगा। यहा रहने वाला प्रत्येक व्यक्ति चाहे वह किसी मत-मजहब को मानता है पहले हिन्दू है। हिन्दू हमारी राष्ट्रीयता, सस्कृति व देश का नाम है।

आर्यसमाजी नेता श्री देवीदास आर्य ने कहा कि यदि हिन्दू एक नहीं हुआ तो मिट जाएगा। उसे छुआछूत, जातपात ऊच-नीच का भेद मिटाना होगा।

डा०आनन्द सुमन की पत्नी श्रीमती सरस्वती सुमन ने कहा कि डा० सुमन ने लाखो रुपए की सम्पत्ति छोडकर हिंदू धर्म ग्रहण किया है। मैं तथा मेरे पिता ने उनके इस त्याग से प्रभावित होकर हाल मे विवाह किया है।

आर्य महासम्मेलन का दृश्य



यज्ञ करते हुए आर्य नर नारी

आर्यसमाजों के सत्संग

२५ अप्रैल'८२

अन्धामुगल-प्रतापनगर - प० रामनिवास; अमर कालोनी—मास्टर ओम्-प्रकाश आर्य; अशोक विहार के. सी ५२ ए —प० वेदव्यास भजनोपदेशक; आर० के० पुरम सेक्टर ५—प० ओम्वीर शास्त्री, आर के पुरम सेक्टर ६—प० हीरा-प्रसाद शास्त्री; आर के पुरम सेक्टर ९—प्रो० सत्यपाल बेदार; आनन्द विहार हरिनगर एन ब्लाक—प० मुनिशकर वानप्रस्थ, किशन गज—मिल एरिया—पं० रामरूप शर्मा; किग्जवे कैम्प—प० प्रकाशवीर 'व्याकुल', कालका जी डी० डी० ए० फ्लैट्स—प० सत्यपाल—मधुर भजनोपदेशक, कालका जी—प० जय भगवान भजन मडली; कृष्णनगर—श्रीमती उषा शास्त्री, ग्रेटर कैलाश-1—प० अशोककुमार विद्यालकार; ग्रेटर कैलाश-II—प० परमेश शर्मा; गुड मण्डी—श्री मोहनलाल आर्य, गुप्ता कालोनी—प० प्राणनाथ सिद्धानालकार, गोविंदभवन—दयानन्द वाटिका—प्र० ईश्वरदत्त; चूना मण्डी-पहाडगज—छविकृष्ण शास्त्री, जगपुरा-भोगल—प० वेदपाल शास्त्री; जनकपुरी बी ३/२४—प० हरिदत्त शास्त्री, तिलक-नगर—प० कामेश्वर शास्त्री, तिमारपुर—पं० देवराज वैदिक मिशनरी, दरियागज—आचार्य हरिदेव सि० भू० तथा प० सत्यदेव भजन मडली, नारायण विहार—प० विश्वप्रकाश शास्त्री; नया बास—प० प्रकाशचन्द वेदालकार, न्यू मुलतान नगर—श्री महावीर बत्रा, न्यू मोतीनगर—श्रीमती सुशीला राजपाल, नगर शाहदरा—डा० रघुनन्दनसिंह, पजाबी बाग—प० खुशीराम शर्मा, पजाबी बाग एक्सटेन्शन—प० गणेशप्रसाद विद्यालकार, प्रीतमपुरा—डा० सुखदयाल भटानी, बाग कडेखाँ—प० बरकतराम भजनोपदेशक, बिरला लाइन्स—प० सोमदेव शास्त्री, मोडल बस्ती—प० मोद प्रकाश; महावीर नगर—प० रघुराज शास्त्री, महरौली—प० हरिश्चन्द्र; मोती बाग—प० मनोहरलाल ऋषि भजनोपदेशक; रघुबीर नगर—प० ओमप्रकाश भजनोपदेशक; रमेश नगर—प० सीसराम भजनोपदेशक, राणा प्रताप बाग—श्रीमती लीलावती, राजौरी गार्डन—श्री चमनलाल, रोहतास नगर—प० देवेश, लड्डू घाटी-पहाडगज—श्रीमती प्रकाशवती शास्त्री, लाजपतनगर—प्रो० वीरपाल विद्यालकार, लेखराम-नगर -त्रिनगर—ला० लखमीदास, लारेन्स रोड—प० उदयपाल शास्त्री, विक्रम नगर—स्वामी शिवाचार्य, विनय नगर—प० सुधाकर स्नातक, सफदरजग एन्क्लेव—आचार्य दिवाकर, सदर बाजार-पहाडी धीरज—स्वामी प्रेमानन्द, साकेत—डा० रघुवीर वेदालकार, सुदर्शन पार्क—प्रो० भारतमित्र शास्त्री तथा श्रीमती कमला आर्या गायक, सराय रोहेला—प० गजेन्द्र-पाल शास्त्री, सोहनगज—प० तुलसीराम भजनोपदेशक, शालीमार बाग—आचार्य नरेन्द्र शास्त्री, हौज खास—प० दिनेशचन्द्र शास्त्री, ।

—ज्ञानचन्द डोगरा, वेद प्रचार प्रबन्धक

आचार्य विभुदेव शास्त्री का स्वर्गवास

बम्बई नगर मे सस्कृत के विद्वान, आर्योपदेशक, आचार्य विभुदेव शास्त्री का लम्बी बीमारी के कारण स्वर्गवास हो गया। वह ६२ वर्ष के थे। उनके परिवार में २ पुत्र व ५ सौभाग्यवती कन्यायें हैं।

गुरुकुल सिकन्दराबाद गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ, देहली, गुरुकुल सूपा गुजरात मे आचार्य पद पर कार्य कर चुके थे। उन्हे श्रद्धाजलि देने के लिए १६-४-८२ को साय ६ बजे एक शोक सभा आर्य समाज मन्दिर शक्ति नगर मे हुई।

चाहिएं—विद्वान् प्रौढ़ पुरुष/देवियाँ सहायक अधिष्ठाता/सरक्षक/धर्म शिक्षक। भोजन, निवास, व्यवस्था उपलब्ध। आर्य अनाथालय, पटौदी हाउस, दरियागज दिल्ली। ११०००६।

आर्यसमाजों के नये पदाधिकारी

आर्यसमाज श्रीनिवासपुरी, नई दिल्ली—प्रधान—श्री मोहनलाल आर्य; उपप्रधान—श्री नरेन्द्र अवस्थी, श्री ऋषिदेव शर्मा, मन्त्री—श्री दयालदास वर्मा, उपमन्त्री—श्री जोगेन्द्रकुमार अवस्थी, प्रचार मन्त्री—श्री लाजपत राय बधवा, कोषाध्यक्ष—श्री धर्मवीर बिरमानी।

आर्यसमाज कृष्णानगर, भिवानी (हरियाणा)—सरक्षक महाशय गणेशदत्त वानप्रस्थी, प्रधान—श्री विश्वम्भर नाथ खन्ना, उपप्रधान—श्री जनकराज आर्य, श्री सत्यपाल नरूला, मन्त्री—श्री जगदीशचन्द्र आर्य, प्रचारमन्त्री—श्री नाथू सिह यादव, कोषाध्यक्ष—श्री चन्द्रभान, पुस्तकाध्यक्ष—श्री जवाहरलाल।

आर्यसमाज अशोक विहार नं० २ का शिलान्यास

शुक्रवार ७ मई को प्रात ९॥ से ११ बजे तक लाल मार्केट के समीप प्लाट बी २/३ पर आर्यसमाज अशोकविहार फेज-२ दिल्ली-५२ का शिलान्यास समारोह तथा आर्यसमाज अशोक विहार का नौवा वार्षिकोत्सव आयोजित किया गया है। इस अवसर पर दसवीं कक्षा तक के छात्र-छात्राओ की राष्ट्रीय,सामाजिक तथा धार्मिक कविता तथा गायन प्रतियोगिता होगी इसके साथ 'आर्यसमाज के उपकार विषय पर भाषण-प्रतियोगिता होगी। इस समारोह के अध्यक्ष श्री प० देवव्रत जी धर्मेन्दु आर्योपदेशक होगे।

वैदिक विवाह सम्पन्न

दिनाक ६-६-८२ को आर्य समाज भवन केसरगज अजमेर मे श्री आचार्य गोविन्दसिंह के पौरोहित्य मे उदयपुर निवासी श्री राकेश त्यागी एम० एस० सी० तथा डूगरपुर निवासी श्रीमती मीरा त्यागी का सामाजिक रूढ़ियों को तोड कर वैदिक रीत्यानुसार विवाह सम्पन्न हुआ।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए श्री सरदारी लाल वर्माद्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा भटिया प्रेस २५७४, रघुवरपुरा नं० २ गान्धी नगर दिल्ली-३१ मे मुद्रित। कार्यालय १५ हनुमानरोड, नई दिल्ली फोन ३१०१५०

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक मुखपत्र

एक प्रति ३५ पैसे वार्षिक १५ रुपये वर्ष : ६ अंक २७ रविवार २ मई २० वैसाख वि० २०३९ दयानन्दाब्द—१५८

शेख अब्दुल्ला का विधेयक साम्प्रदायिक और राष्ट्रविरोधी

संविधान की धारा ३७० समाप्त की जाए :

सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री शालवाले की मांग

नई दिल्ली। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने जम्मू-कश्मीर विधान सभा में प्रस्तुत उस विधेयक का तीव्र विरोध किया है, जिसमे कश्मीर से ३५ वर्ष पूर्व पाकिस्तान चले गये लोगों को पुनः राज्य मे आने की सुविधा दी गई है।

सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले ने इस सम्बन्ध मे प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी को एक पत्र लिखकर उनसे आग्रह किया है कि ऐसी व्यवस्था होनी चाहिए कि इस राष्ट्रविरोधी विधेयक को राष्ट्रपति की स्वीकृति नही मिलनी चाहिए।

श्री शालवाले ने अपने पत्र मे यह भी लिखा है कि उस प्रस्तावित विधेयक से पहले कश्मीर मे फिर भारत मे पाक एजेंटों के प्रवेशो का रास्ता साफ हो जाएगा और उससे राष्ट्रसुरक्षा को भारी खतरा पैदा हो जाएगा।

श्री शालवाले ने लिखा है कि भारतीय नागरिकता देने का अधिकार केन्द्र का है तथा वह उसके पास ही सुरक्षित रहना चाहिए। शेख अब्दुल्ला द्वारा प्रस्तुत विधेयक जहां साम्प्रदायिक है वहां राष्ट्र विरोधी भी है।

श्री शालवाले ने बड़े खेद के साथ कहा है कि पाकिस्तान से आए ६० हजार हिन्दू-सिख शरणार्थी जम्मू-कश्मीर की सीमा मे रह रहे हैं, उन्हे अब तक ३५ वर्ष बाद भी राज्य सरकार ने नागरिकता की सुविधाए प्रदान नही की हैं। यह कार्रवाई भी साम्प्रदायिकता से प्रेरित है।

श्री शालवाले ने जम्मू-कश्मीर के लिए विशेष रूप से निर्मित सविधान के अनुच्छेद ३७० को अविलम्ब समाप्त करने की मांग की है। ▭

दक्षिणी दिल्ली वेद प्रचार के नए पदाधिकारी

प्रधान—श्री आशानन्द वर्मा, उपप्रधान—श्री कृष्णलाल सूरी और श्री रामधन मुंजाल, महामन्त्री—श्री रामसरनदास आर्य, सहायक मन्त्री—श्री गंगाशरण, श्री ओम्प्रकाश भावल, कोषाध्यक्ष—श्री शालिग्राम गौतम, लेखा-निरीक्षक—श्री चरणजीतलाल मोहन।

आर्यसमाज ब्रह्मपुरी—गौतमपुरी-दिल्ली-५३ के पदाधिकारी—प्रधान—श्री ओम्प्रकाश गुप्त, उपप्रधान—प० देवकीनन्दन, मन्त्री, श्री किशन आर्य, उपमन्त्री—श्री होमपालसिंह, कोषाध्यक्ष—श्री बिन्देश्वरप्रसाद, पुस्तकाध्यक्ष—योगीराज कुन्दनसिंह।

आर्यकुमार सभा किग्जवे का ३३वां वार्षिकोत्सव

आर्यकुमार सभा किग्जवे का ३३ वां वार्षिकोत्सव १ अप्रैल से १६ मई १९८२ तक मनाया जा रहा है। इस अवसर पर स्थानीय मोहल्लों में स्थान-स्थान पर वेदोपदेश, भजन एवं प्रतियोगिताओ की व्यवस्था की गई है। स्वामी सत्यपति जी, श्री राजसिंह आर्य, श्री विजयभूषण एवं प० सत्यकाम वेदालकार आदि के उपदेश होंगे।

जन० जिया भारत के मित्र नहीं हो सकते !

पाकिस्तानी अखबारों की विश्वसनीयता शून्य के बराबर

पाकिस्तानी पत्रकार सलामत अली की स्पष्टोक्ति

नई दिल्ली। पाकिस्तान से निष्कासित, फार ईस्टर्न इकोनोमिक रिव्यू के द. प. एशियाई सम्वाददाता एव नई दिल्ली स्थित पाकिस्तानी पत्रकार सलामत अली ने सण्डे आब्जर्वर में लिखा है—'जिया कभी भारत के मित्र नही हो सकते। जब तक पाकिस्तान की राजनीति मे क्रांतिकारी परिवर्तन नहीं होता, तब तक यह आशा करना व्यर्थ है कि जिया या पाकिस्तान का अन्य कोई शासक पूरी ईमानदारी के साथ भारत के साथ मैत्री सम्बन्ध करने की पहल करेंगे। आज पाकिस्तान पर जन० जिया का नही, सेना का शासन है और सेना अपने हितो को पाकिस्तान के हितो से ऊपर समझती है। सेना अधिक शक्तिशाली बने, और पाकिस्तान को एक लम्बे अर्से तक अपने चगुल मे रख सके, इसी मकसद से जिया अमेरिका से आधुनिक हथियार हासिल कर रहे हैं। सेना जिया को इसीलिए सहन कर रही है कि वह उसकी सब इच्छाओ का पालन करने के लिए तैयार रहते हैं।

'मैं अपने अनुभवो के आधार पर कह सकता हू कि पाकिस्तान की अधिकाश जनता और बिलोचिस्तान के सौ फीसदी लोग जिया और पाकिस्तानी फौज की मौजूदा नीति से असन्तुष्ट हैं, परन्तु वे पाकिस्तानी तानाशाही के सामने अपने विचार प्रकट करने की हिम्मत नही रखते। जहां तक पाकिस्तानी अखबारो का सवाल है उनकी विश्वसनीयता शून्य के बराबर है।'

आर्यसमाज अजमेर की स्थापना शताब्दी

२५ से ३१ अक्तूबर तक मनाई जाएगी

अजमेर। श्री दत्तात्रेय बाब्ले, प्रधान आर्य समाज अजमेर की अध्यक्षता मे आर्यसमाज अजमेर तथा उसके अन्तर्गत समस्त शिक्षण सस्थाओ के कर्मचारियो एव आर्य सभा ने निश्चय किया है २५ अक्तूबर १९८२ से ३१ अक्तूबर १९८२ तक अजमेर आर्यसमाज की स्थापना शताब्दी मनाई जाए। स्मरण रहे कि इस आर्यसमाज की स्थापना १३ फरवरी १८८१ को हुई थी।

स्थापना शताब्दी के अवसर पर एक शताब्दी स्मारिका के अतिरिक्त आर्यसमाज अजमेर का शतवर्षीय इतिहास, पंजाब केसरी लाला लाजपतराय की अंग्रेजी पुस्तक 'द आर्यसमाज' का हिन्दी अनुवाद, श्री दत्तात्रेय बाब्ले के ग्रन्थ 'द आर्यसमाज हिन्दू विद आउट हिन्दु-इज्म' नामक पुस्तकें भी प्रकाशित की जाएगी। ▭

बम्बई में दयानन्द चौक का उद्घाटन

आर्य जगत को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि आर्यसमाज फोर्ट के सौजन्य से शनिवार २४ अप्रैल के दिन बम्बई के महापौर डा० प्रभाकर पै ने बम्बई फोर्ट मे फोर्ट मार्केट के पीछे मिण्ट रोड पर स्वामी दयानन्द सरस्वती चौक का भव्य उद्घाटन किया। इस अवसर पर संसद सदस्य श्री रतनसिंह राजदा मुख्य अतिथि थे तथा कार्यक्रम की अध्यक्षता म्युनिसिपल पार्षद श्री मनमोहनसिंह वेदी ने की। ▭

सम्पादक—नरेन्द्र विद्यावाचस्पति

व्यवस्थापक—प्रद्युम्नलाल तलवाड़

वेद-मनन

समृद्धि और कीर्ति मुझमें बनी रहें

—मनोहर विद्यालकार

मनस काममाकूतिं वाच सत्यमशीय।
पशूनां रूपमन्नस्य रसो यश श्री श्रयतां मयि स्वाहा ॥ यजु ३९-४

ऋषि —दीर्घतमा । देवता— श्री । छन्दः—निचृद् बृहती ।

शब्दार्थ—(मनस) मन की (कामम्) कामना और (आकूतिम्) संकल्प तथा (वाच) वाणी के (सत्यम्) सत्य को (अशीय) प्राप्त करू । (पशूना रूपम्) पशुओ का नैसर्गिक ज्ञान (अन्नस्य-रस) अन्न का रस (यश) कीर्ति (श्री) समृद्धि, प्रतिष्ठा और श्रेष्ठता (मयि श्रयताम्) मुझ मे निवास करे । (स्वाहा) यह मेरी शुभ कामना है । इस कामना को पूर्ण करने के लिए, अपने अहकार और सुविधाओ का त्याग करने को उद्यत हू । आप ऐसी कृपा करे कि मेरी कामनाए पूर्ण हो जाए ।

निष्कर्ष—मेरे मन मे जो भाव हो उसी को व्यक्त करू, यही वाणी का सत्य है । मन मे कुछ भाव हो, और वाणी के द्वारा उससे विपरीत प्रकट करना असत्य है । आजकल इस असत्य को बुद्धिमत्ता और व्यावहारिकता मान कर, इसका प्रचार बढ़ता जा रहा है । यह असत्य दु खो का कारण है ।

यदि मनुष्य वाणी के सत्य को अपनाएगा तो उसके मन के सकल्प सत्य होने लग जाते हैं ।

पशुओ मे नैसर्गिक ज्ञान (इन्स्टिक्ट) होती है, जिनके कारण वे अपना जीवन आसानी से गुजार लेते हैं । मनुष्य भी यदि इनका ध्यान रखे तो वह सामान्यतया स्वस्थ रहकर अपना जीवन शान्तिपूर्णढगसे गुजार सकता है ।

मनुष्य का मुख्य भोजन अन्नो का रस और पशुओ का दूध है । यहा तो केवल अन्नों के रस की चर्चा है, किन्तु 'पय' पशूना रसमोषधीनाम्' अथर्व १९-३१-५ स्पष्ट रूप से दोनो की माग की गई है ।

यदि मनुष्य अपने मन को शिव-सकल्प से, वाणी को सत्य से और शरीर को अन्नो के रस से पुष्ट करता रहेगा तो वह यशस्वी बनेगा । उसे समृद्धि और प्रतिष्ठा प्राप्त होगी और वह अपने बराबर वालो से श्रेष्ठ बन जाएगा ।

विशेष—इस मन्त्र के ऋषि शब्द का अर्थ सकेत करता है कि यदि मनुष्य अपने मन, वचन और तन के अन्धकार (कमियो) को दूर करने का प्रयत्न करता रहेगा तो उसे इस मन्त्र की देवता-समृद्धि प्रतिष्ठा और श्रेष्ठता प्रदान करती रहेगी । साधन के रूप मे इस मन्त्र के छन्द के अर्थ से सकेत लेकर उसे अपना दृष्टिकोण विशाल रखते हुए आत्मनिरीक्षण करते रहना चाहिए ।

अर्थपोषक प्रमाण—पशूना रूपम्--ज्ञानिना पद्धतिम् । स्वामी भगवदाचार्य. रूपाणि-ज्ञानानि । नि० १२-१३ नैसर्गिक ज्ञान । अशीय-अशूङ् व्याप्तौ, प्राप्त करू । श्रयताम्—श्रिञ् सेवायाम्, निवास करें । स्वाहा—१. सु+आह+आ, शुभ कामना-इच्छा है । २. स्व+आ+ओहाक् त्यागे, इसके लिए अहंकार का त्याग करने को उद्यत हू; और ३. सु+आ+ओहाङ् गतौ, मुझे मेरी कामनाए प्राप्त हो—पूर्ण हो ।

दीर्घत्तमा:—तम (अंधकार-कमिया) +दीर्घ(दृ विदारणे) विदीर्ण हो जाए ।

श्री:—समृद्धि, प्रतिष्ठा, श्रेष्ठता । बृहती-बृहि वृद्धौ, विशालता ।

निचृत्—नि (अन्दर)+चृत्(सदीपने) प्रकाशित करना निरीक्षण करना ।

२२ ईश्वर भवन, खारी बावडी,
दिल्ली-११०००६

सस्कार शास्त्री परीक्षा

१६ सस्कारो (कर्मकाण्डो) और यज्ञो को करने-कराने की व्यावहारिक शिक्षा देने वाले सस्कार प्रशिक्षण विद्यालय—यारपुर, पटना—१ की सस्कार शास्त्री परीक्षा २५ मई १९८२ को विभिन्न परीक्षा केन्द्रो मे ली जाएगी ।

सामयिक पुस्तकें

आर्य समाज नया बास दिल्ली की ओर से श्री अमरेश आर्य (भू० डा० अमीर मोहम्मद विविध भाषाओ के विद्वान्) द्वारा रचित—कुरआन—सर्वव्यापक सन्मार्ग दर्शन के दर्पण मे (२) दुनिया की खुशी और गम का कारण क्या है ? मैंने दीन इस्लाम क्यो छोड़ा ? पुस्तक छपवाई जा रही है । जिसका मूल्य २) रु० है । इच्छुक व्यक्ति, सस्थाएं, समाजें अपने आर्डर धनादेश, नकद सहित बुक करायें । आर्डर व धन इत्यादि मन्त्री आर्य समाज, नया बास दिल्ली के नाम से भेजें ।

सच्चा 'आर्य' कौन है ?

--योगिराज अरविन्द

● 'आर्य' शब्द के अन्दर उदारता, नम्रता, श्रेष्ठता, सरलता, साहस, पवित्रता, दया, निर्बल-सरक्षण, ज्ञान के लिए उत्सुकता, सामाजिक कर्त्तव्य पालनादि सब उत्तम गुणो का समावेश हो जाता है ।

● मानवीय भाषा में इससे अधिक उत्तम और कोई शब्द नही है ।

● 'आर्य' आत्म-सयमी और आन्तरिक तथा बाह्य स्वराज्य-प्रेमी होता है ।

● वह अज्ञान, बन्धन तथा किसी प्रकार की दासता मे रहना पसन्द नही करता ।

● उसकी इच्छा-शक्ति दृढ होती है ।

● प्रत्येक वस्तु मे यह सत्य, उच्चता तथा स्वतन्त्रता की खोज करता है ।

● आर्य एक कार्यकर्त्ता और योद्धा होता है, जो अपने अन्दर और जगत मे ईश्वर के राज्य को लाने के लिए अज्ञान, अन्याय तथा अत्याचारादि के विरुद्ध युद्ध करता है ।

'आर्य' (त्रैमासिक) वर्ष १, पृ ६३, सन् १९१४

ऋग्वेद ओ३म् यजुर्वेद

राष्ट्रचिन्तन

'यह आर्यावर्त्त (भारत) देश ऐसा है कि जिसके सदृश भूगोल मे दूसरे देश नही हैं । आर्यावर्त्त देश ही सच्चा पारस मणि है कि जिसको लोहे रूपी विदेशी छूते ही सुवर्ण अर्थात् धनाढ्य हो जाते हैं ।'

जिस देश के पदार्थों से अपना शरीर बना, अब भी पालन होता है और आगे होगा, उसकी उन्नति तन-मन-धन से सब मिलकर प्रीति से करे ।'

'सृष्टि से लेके पाच सहस्र वर्षों से पूर्व समय पर्यन्त आर्यो का सार्वभौम चक्रवर्त्ती अर्थात् भूगोल मे सर्वोपरि एकमात्र राज्य था ।'

—स्वामी दयानन्द सरस्वती

सामवेद अथर्ववेद

(आर्यसमाज खारीवाव, वडोदरा—१ के सौजन्य से)

स्वामी दयानन्द को यूरोप-यात्रा का निमन्त्रण और महर्षि का इंकार

बम्बई मे यूरोप के सुप्रसिद्ध पडित, मोनियर विलियम्स महाशय आये हुए थे । एक दिन उन्होंने श्री स्वामी जी के दर्शन किये । पहले सस्कृत भाषा मे बातचीत आरम्भ हुई, परन्तु अतिथि को अनभ्यास के कारण सस्कृत मे वार्तालाप करना कठिन प्रतीत होता था, इसलिए महाराज ने एक दुभाषिया बीच मे बैठा लिया । स्वामी जी तो सस्कृत मे ही बोलते थे और मोनियर विलियम्स महाशय की अंग्रेजी भाषा का अनुवाद करके, दुभाषिया स्वामी जी को समझाता था ।

बड़े लम्बे कथनोपकथन के अनन्तर मोनियर विलियम्स महाशय ने महाराज से मगल मिलाप के लिए अति प्रसन्नता प्रकट करते हुए कहा—आपके विचार परिमार्जित और अत्युच्च हैं । यूरोप वासियो मे भी इन विचारो का प्रचार होना चाहिये । यदि आप उस महाद्वीप की यात्रा करना स्वीकार करे, तो मैं आपके व्यय आदि का भार अपने ऊपर लेता हू ।

स्वामी जी ने अतिथि को उसकी इस उदारता के लिए धन्यवाद देकर कहा—"जिस भारत भूखण्ड मे मैं रहता हू, वहाँ अविद्यान्धकार घोरतम रूप धारण किए बैठा है । इस देश के वासी दिन पर दिन दु खी और दरिद्र होते चले जाते हैं । यहाँ के समाज में कुरीतियो का कोई भी पारावार नही है । ऐसे ही कारणो से इस देश का सुधार करना मैं अपना मुख्य कर्त्तव्य मानता हू ।"

—प्रद्युम्नलाल तलवाड़

आई. २०८ अशोक विहार फेज-१, दिल्ली-५२

आत्मा कभी नहीं हारती !

ओ३म् अहमिन्द्रो व पराजिग्य इद्धन, न मृत्यवे ऽवतस्थे कदाचन ।
सोममिन्मा सुन्वन्तो याचता वसु, न मे पूरव : सख्ये रिषाथन । ऋ. १०४८५

मैं आत्मा हू, ऐश्वर्य से मैं कभी हारी नही हूं। मृत्यु, मृत्यु मुझे कभी नही आ सकती, यथार्थ कर्मों का ऐश्वर्य प्राप्त कर मेरी मैत्री मे कोई कभी नष्ट नहीं होता।

ओ३म्
आर्य सन्देश

विश्व-सम्मेलनों की महत्ता

ढाई हजार वर्षो से अधिक समय हुआ, जब महात्मा बुद्ध का अवसान हुआ था; म० बुद्ध अपने निर्वाण के समय न तो अपने उपदेशो को लेखबद्ध कर सके थ और नही उनके द्वारा निर्दिष्ट धार्मिक मन्तव्य एवं सिद्धान्त ग्रन्थाकार-स्वरूप धारण कर सके थे, इसके बावजूद उनके निधन के बाद की कुछ ही शताब्दियो मे महात्मा बुद्ध के अनुयायी सारे संसार मे फैल गए और उनके धर्म, सघ के सिद्धान्त ग्रथाकार रूप मे आ गए। इस क्रातिकारी परिवर्तन का मुख्य कारण यही था कि महात्मा बुद्ध के अवसान के बाद उनके शिष्यों ने अपने गुरु के वचनो, शिक्षाओ और प्रेरणाओ को लेखबद्ध कर उसे द्वीप-द्वीप, देश-देश में फैलाने का भगीरथ प्रयत्न किया। महात्मा बुद्ध के शिष्य साधनहीन अकेले ही गए, उन्होंने अपने गुरु की सीख को अपने देश मे मर्यादित न रखते हुए सर्वत्र विश्व भर मे फैलाने का प्रयत्न किया। उनकी इस दृढ निष्ठा और प्रयत्नों का ही फल हुआ कि बुद्ध का चिन्तन और मनन विश्व के मानवीय इतिहास मे अपनी एक अमर छाप छोड गया। यदि हम वैदिक आर्य धर्म का मानव संस्कृति का सच्चा सन्देश विश्व भर मे व्याप्त करना चाहते हैं तो हमें इतिहास के लम्बे युग मे महात्मा बुद्ध के शिष्यो द्वारा किए प्रयत्नो का लाभ उठाना होगा।

पिछले दिनो श्री लका मे विश्व हिन्दू सम्मेलन आयोजित किया गया था। वहाँ के सबसे बडे क्रीडागार-स्टेडियम मे श्री लंका के राष्ट्रपति ने सम्मेलन का उद्घाटन किया था। सम्मेलन की विभिन्न सगोष्ठियो मे कला, सगीत, मूर्ति एवं भवन निर्माण, स्थापत्य, रीति-नीति आदि अनेक क्षेत्रो मे भारतीय हिन्दू परम्पराओ की देन पर शास्त्रीय चर्चा कर विश्व प्रगति मे भारत की देन का समुचित मूल्याकन करने का प्रयत्न किया गया। विश्व-मानव की प्रगति मे भारत एव उसकी सस्कृति जीवन-दर्शन का समुचित मूल्याकन होना चाहिए, पश्चिमी विद्वानो एव इतिहासकारो ने इस क्षेत्र मे सुन्दर प्रारम्भिक प्रयत्न किये हैं, परन्तु उनकी दृष्टि एकागी होने मे वे भारत की देन का न्यायसगत मूल्याकन नही कर सके हैं, इस क्षेत्र में भारतीय विद्वानो को बहुत कुछ करना है, परन्तु उससे भी महत्त्वपूर्ण एक तात्कालिक कार्य है—विक्षुब्ध एव अशान्त मानवता एव विश्व को विश्व की श्रेष्ठ आर्य मानव संस्कृति का सन्देश देकर उसकी सामयिक एव स्थायी समस्याओ के समुचित समाधान के लिए एक व्यवस्थित समयबद्ध कार्यक्रम बनाकर उसे कार्यान्वित किया जाए। यह एक बहुत बडा बहुद्देश्यीय कार्य है, जिसे पूरी व्यवस्था, योजना द्वारा एक निश्चित लक्ष्य की पूर्ति के लिए कार्यान्वित करना चाहिए।

अगले वर्ष ऋषि दयानन्द सरस्वती के निर्वाण को १०० वर्ष हो जाएगे। इस अवसर पर अजमेर तथा देश के दूसरे महत्त्वपूर्ण स्थानो पर ऋषि निर्वाण शताब्दी का भव्य आयोजन होगा। अपने सफल शताब्दी सम्मेलनो एव विशेष समारोहो से आर्यसमाज ने अपनी जीवन शक्ति की प्रबलता का परिचय दिया है। अब अवसर आया है कि आर्यसमाज महर्षि के प्रमुख ग्रन्थों को विश्व की प्रमुख भाषाओं मे आकर्षक बोधगम्य सस्करणो द्वारा प्रस्तुत करे। सत्यार्थ प्रकाश के पहले दस समुल्लास विश्व मानव व्यवस्था एव चिन्तन मे अपनी प्रमुख भूमिका प्रस्तुत कर सकते हैं। अगले ५ वर्षों मे यदि विश्व की सभी प्रमुख भाषाओ मे महर्षि दयानन्द और उनका जीवन दर्शन,' 'मानव धर्म के रूप मे सत्यार्थ प्रकाश का सन्देश' आदि पहुचाकर संघर्षशील सकुचित मानवता का समुचित मार्गदर्शन किया जा सके तो तो विश्व के इतिहास मे आर्यसमाज अपनी सक्रिय भूमिका प्रस्तुत कर सकता है। जिस प्रकार कुछ वर्ष पूर्व यूरोप के परिवारो की एक-एक सन्तान धर्म प्रचार के लिए अपना जीवन अर्पित करती थी, कुछ वर्ष पूर्व पजाब मे हिन्दू परिवारो की बडी सन्तान सिख धर्म को न्योछावर कर दी जाती थी, उसी प्रकार संकटग्रस्त हिन्दू समाज को अपनी एक सन्तान धर्म की रक्षा के लिए अर्पित कर उस सन्तान को विश्व एव भारत भूमि मे सच्चे आर्य मानव धर्म की प्रतिष्ठा के लिए अर्पित कर देना चाहिए। अगले वर्ष विश्व आर्य सम्मेलन के अवसर पर इस तरह का निश्चय कर उसे योजनाबद्ध रीति से निर्धारित अवधि मे कार्यान्वित कर आर्यसमाज अपना अस्तित्व सार्थक कर सकता है।

चिट्ठी-पत्री

आर्यसमाज का इतिहास : प्रथम भाग प्रकाशित

जनता मे राष्ट्रीय चेतना उत्पन्न करने, सामाजिक कुरीतियो एवं अन्धविश्वासो को दूर करने, छूत-अछूत व ऊच-नीच के भेदभाव को मिटाकर न्याय पर आधारित समाज की स्थापना करने, अपने देश, धर्म एव सस्कृति के प्रति प्रेम व गौरव की भावना को उद्बुद्ध कर जनता को स्वराज्य के मार्ग पर अग्रसर करने और मानव मात्र का हित-कल्याण सम्पादित करने के लिये आर्यसमाज ने जो महत्त्वपूर्ण कार्य किया, उसे समुचित रूप से प्रकाश मे लाने के लिये सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली के तत्वावधान मे 'आर्यसमाज का इतिहास' सात भागो मे तैयार किया जा रहा है। इस इतिहास का प्रथम भाग अब प्रकाशित हो गया है। इसमे प्रारम्भ से सन् १८८३ तक का आर्यसमाज का इतिहास विशद रूप से दिया गया है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती का 'आर्य' से क्या अभिप्राय था, वह किस प्रकार व किन अर्थो मे सम्पूर्ण विश्व को पुन आर्य बनाना चाहते थे, आर्यसमाज की स्थापना उन्होने किन उद्देश्यो से और किन परिस्थितियो मे की थी, उसका प्रचार-व प्रसार किस प्रकार हुआ, उसके कार्यक्षेत्र मे कैसे निरन्तर वृद्धि होती गई, किस प्रकार वह एक व्यापक जन-आन्दोलन बन गया और उसने एक सार्वभौम सगठन का रूप प्राप्त कर लिया— समाजसुधार तथा शिक्षा के क्षेत्रो मे आर्यसमाज ने जो महत्त्वपूर्ण कार्य किया, देश की स्वतन्त्रता तथा उसे उन्नति के मार्ग पर अग्रसर करने के लिये आर्यसमाज और उसके सदस्यो ने जो योगदान दिया, इन सब विषयो पर इस इतिहास मे विशद तथा प्रामाणिक रूप से प्रकाश डाला गया है।

आर्यसमाज का इतिहास (प्रथम भाग) के लेखक डा० सत्यकेतु विद्यालकार और प्रोफेसर हरिदत्त वेदालकार हैं। इस प्रथम भाग मे बडे आकार के ७२८ पृष्ठ हैं और आर्ट पेपर पर छपे १०० के लगभग चित्र हैं। और उसका मूल्य १००) है। जिन व्यक्तियो के आर्डर १५ मई, १९८२ से पूर्व प्राप्त हो जाए, उन्हे यह ग्रन्थ ७५) रु० मे दिया जाएगा।

—आर्य स्वाध्याय केन्द्र, ए १/३२ सफदरजग इन्क्लेव, नई दिल्ली-२९

गोबध-निषेध राष्ट्रोन्नति हेतु आवश्यक

स्वतन्त्रता के पूर्व भी उन्नीसवी शती मे गो हत्या बन्द करने की मांग उठी थी। भारत मे पुर्नजागरण का सिंहनाद करने वाले महर्षि दयानन्द ने लाखो हस्ताक्षरो से युक्त एक माँग-पत्र मलिका विक्टोरिया के पास भेजा था। उन्होंने 'गोकरुणानिधि' नामक पुस्तक भी लिखी थी। कालान्तर मे बीसवी शताब्दी में भी महात्मा गाधी विनोबा गोखले, तिलक, स्वामी श्रद्धानन्द, मालवीय जी आदि महान नेताओ ने गोहत्याबन्दी की माग की थी। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात भी गांधीवादी नेताओ, राष्ट्रवादी नेताओ, आर्यसमाज जैसी सुधारवादी सस्थाओ ने समय-समय पर इस माग को दुहराया। भारत मे पश्चिम बगाल व केरल प्रान्त को छोडकर अन्य प्रातो मे गोहत्या बन्दी लागू है, लेकिन जब तक सम्पूर्ण राष्ट्र मे केन्द्रीय कानून बनाकर एक साथ गोबध निषेध नही किया जाता, तब तक कोई लाभ नहीं। जनता शासन मे वर्तमान प्रधानमन्त्री ने आचार्य विनोबा भावे के साथ गोहत्या-बन्दी का समर्थन किया था। भारत एक कृषि प्रधान देश है। कृषि की आधारशिला गाय ही है जो हमे बैल, खाद, दूध तथा चमडा प्रदान करती है। उसका दूध माँ के दूध के समान गुणकारी है। गाय की राष्ट्र के उत्थान मे महत्ता निर्विवाद है। भारत जैसे देश मे, जो सत्य अहिंसा का पुजारी रहा है, गोवध घोर कलक है।

— राधेश्याम 'आर्य' ऐडवोकेट, मुसाफिरखाना सुलतानपुर (उ० प्र०)

२६ अप्रैल : गुरुदत्त जयन्ती के अवसर पर

महर्षि के सच्चे अनुयायी : पं. गुरुदत्त विद्यार्थी

महर्षि दयानन्द के वेद-प्रतिपादित विचारो को जिस खूबी के साथ पण्डित प्रवर गुरुदत्त ने समझा और प्रचारित किया, उसे देखकर मनुष्य स्तब्ध एव चकित रह जाता है। जीवन मे केवल एक बार और वह भी इहलीला सवरण करते हुए उन्होने ईश के सच्चे उपासक योगी-यती, तपस्वी दयानन्द के दर्शन किए। वार्ता करने या शंका समाधान करने अथवा महर्षि के समर्ग सम्पर्क मे रह कर उनके सदुपदेशो से लाभ उठाने का तो गुरुदत्त जी को समय ही नही मिला, परन्तु कमाल यह है कि १६ वर्ष का यह नवयुवक महर्षि के प्राणोत्सर्ग का अद्‌भुत दृश्य देखकर जो कुछ प्राप्त कर पाया वह किसी दूसरे को प्राप्त न हो सका। सस्कृत, अरबी, पदार्थ विज्ञान, भूगर्भ विद्या, रसायन शास्त्र, वनस्पति शास्त्र, शरीर विज्ञान, नक्षत्र विद्या, गणित तत्त्वज्ञान, भाषा-तत्त्वशास्त्र आदि अनेक विद्याओ मे पारगत इस नवयुवक को किस शक्ति ने आर्यसमाज की ओर आकृष्ट किया? महान् सस्कारी आत्मा गुरुदत्त को एक दूसरी विलक्षण प्रभु-शक्ति के रग मे रगी ईश्वर बलधारी दिव्य आत्मा ने वाणी से बिना कुछ कहे ही अपने समान आस्तिकता के रगमे रंग डाला। महर्षि के प्राणोत्सर्ग के दृश्य ने गुरुदत्त का जीवन बदल दिया।

ऋषी के जीवन का अनुकरण

एक बार किसी ने उनसे कहा—'पडित जी, आपको स्वामी जी के योगी होने के बारे मे काफी बातों का ज्ञान है। आप उनका जीवन-चरित्र क्यो नही लिखते?' गुरुदत्त जी ने अत्यन्त गम्भीर होकर उत्तर दिया—'मैं प्रयास कर रहा हू।' प्रश्नकर्ता ने पूछा—'जीवन-चरित्र कब तक छपेगा?' बोले 'आप कागज पर लिखा जीवन-चरित्र समझ रहे हैं। मेरे विचार मे महर्षि का जीवन चरित्र अपनी सम्पूर्ण आयु मे लिखना चाहिए और इसी के लिए मैं प्रयत्न कर रहा हू।'

इस सच्चे, आस्तिक, अद्‌भुत प्रतिभाशाली वेद और महर्षि दयानन्द के अनन्य भक्त सत्य की साकार और सजीव प्रतिमा गुरुदत्त का जन्म २६ अप्रैल, १८६४ ई० को मुलतान नगर (इस समय पाकिस्तान) मे हुआ था। आर्यसमाज का जो साहित्य अग्रेजी भाषा मे मिलता है, उसमे मुनिवर पण्डित गुरुदत्त के ग्रन्थो का नि:सन्देह बहुत ऊचा स्थान है। उन ग्रन्थो, लेखों और उपदेशो का सग्रह कर प्रकाशित कराने वाले लाहौर के आर्यसमाज के तत्कालीन प्रधान लाला जीवन दास पेन्शनर थे। उनका मत था कि विचार की ऊच्चता, भावो की श्रेष्ठता शैली की सुन्दरता और चारुता, दृष्टि की विशालता और व्यापकता और अर्थ की शक्ति और हृदय ग्राहकता की दृष्टि से पण्डितप्रवर का साहित्य अद्वितीय है।

महर्षि की स्मृति को स्थिर रखने के लिए स्मारक रूप मे बनाए गए डी० ए-वी स्कूल तथा कालेज की उन्नति के लिए जो अथक परिश्रम और प्रचार का कार्य गुरुदत्त जी ने किया वह कोई और न कर सका। उस समय उनके चारु-चरित्र विलक्षण पाडित्य एव उच्च-कोटि की वक्तृताओ की चहु ओर धूम मची हुई थी, उनके एक-एक व्याख्यान पर कही सहस्र और कही इससे भी अधिक धन के मिलने का उल्लेख मिलता है।

एक तपस्वी विद्वान् की आवश्यकता

यद्यपि महर्षि के प्रचार से शिक्षित समाज आन्दोलन और प्रभावित हो चुका था, तथापि आवश्यकता एक तपस्वी विद्वान् की थी, जो शिक्षित समुदाय को उनकी ही भाषा मे वैदिक सिद्धान्तो की सत्यता का बोध कराने के साथ-साथ विदेशी और विधर्मी मत वालो की आपत्तियो का खण्डन करते हुए उनकी मान्यताओ की निस्सारता प्रमाणित कर सके। पण्डितप्रवर गुरुदत्त सस्कृतज्ञ होने के साथ-साथ पाश्चात्य विज्ञान के भी महान् ज्ञाता थे, अत: यह कार्य वह उत्तम रीति से सम्पन्न कर सकते थे और उन्होने जीवन भर पूरी निष्ठा और निर्भीकता से इस दायित्व को निभाया। वेद की सत्यता पर वह मुग्ध थे, जब कभी किसी वैज्ञानिक के कथित नए आविष्कार की कोई चर्चा उनसे करता, तो वह झट से उत्तर देते कि हां भई, वह वैज्ञानिक सच्चाई के निकट आ गया। सत्य पूर्ण है और परमात्मा प्रदत्त वेद ज्ञान तथा सृष्टि नियम द्वारा पूर्व ही प्रकाशित है। जिस वैज्ञानिक को जब जितना बोध होता है उतना वह असत्य से दूर होकर सत्य के निकट आ जाता है, बस यही आविष्कार है, इसके आगे कुछ नही।

जीवन का समाधान वेदों द्वारा

अपने ऐसे ही पवित्र भावो को उन्होने दिसम्बर १८८८ ई० को लाहौर आर्यसमाज के वार्षिक उत्सव पर दिए अपने भाषण मे इस प्रकार व्यक्त किया था—'आधुनिक विज्ञान चाहे उसमें कितने ही गुण क्यों न हो, जीवन की समस्या पर कुछ भी प्रकाश नहीं डालता। वह मनुष्य की आत्मा मे आन्दोलन पैदा करने वाले सबसे महान् और कठिन प्रश्न मनुष्य जाति के आदि मूल और इसके अन्तिम भाग्य के हल करने मे कुछ भी सहायता नहीं करता, आधुनिक विज्ञान चाहे प्रत्येक नाड़ी और हड्डी को चीर डाले और लहू की बूद की अतीव प्रबल सूक्ष्म दर्शक यन्त्र द्वारा जो सम्भवत. उसे मिल सकता है, बडी सूक्ष्म परीक्षा कर ले, पर इस प्रश्न पर उससे कुछ भी बन नही पडता, वह जीवन के रहस्य को खोल नही सकता। चाहे शताब्दियो तक चीर-फाड और परीक्षण करता रहे, पर जीवन की समस्या वेदो की सहायता के बिना हल नही की जा सकती। वही केवल इस अद्‌भुत रहस्य का उद्घाटन कर सकते हैं और उन्ही की ओर वैज्ञानिक लोगो को अन्त मे आना पड़ेगा।

लेखक :
पं० ओमप्रकाश आर्य
कार्यालयाध्यक्ष आर्य प्र. सभा (पजाब)

हमारी क्षति

इस प्रतिभाशाली वेदमनीषी तपस्वी विद्वान को केवल २६ वर्ष तक जन-सेवा का स्वल्प समय मिला, परन्तु इस स्वल्प जीवन मे ही उन्होने अमित यश और कीर्तिका अर्जन किया। १९ मार्च, १८९० को जब उनका शरीरपात हुआ, तब 'आर्य पत्रिका' ने हमारी क्षति शीर्षक से एक लम्बा और हृदय विदारक लेख लिखा था जिसका निम्नांश अत्यन्त विचारणीय है—'एक मनुष्य एक असाधारण मनुष्य एक अलौकिक मनुष्य विद्या का एक सच्चा और अद्वितीय पडित प्राचीन ऋषियो का वशज इस संसार से उठ गया। आर्यसमाज का भूषण और गौरव सत्य और ज्ञान का आदर करने वाले सभी लोगों के अभिमान पं० गुरुदत्त विद्यार्थी अब हमारे पास नहीं हैं। हां, वह पुण्य आत्मा अब नश्वर शरीर में बन्द नही। युवा और वृद्ध हम सब उन्हें ढूढ रहे हैं, सत्य तो यह है कि हमे अभी इस बात का विश्वास नहीं होता कि वह हमे छोड़ गए हैं। हां, हम फिर उन जैसा मनुष्य कब देखेंगे? हम फिर ऐसा मनुष्य कब देखेंगे? जिसके रोम-रोम मे सचाई के प्रकाश, वैदिक धर्म के सनातन सिद्धान्तो को फैलाने की कामना, और परमेश्वर की वाणी और उन लोगो की वाणी द्वारा जिन्होने उस वाणी को जाना और समस्त ससार को पुन परम देव के सामने लाने की कामना कर रही है, हां, गुरुदत्त विद्यार्थी इस समय तेरी क्षति असमाधेय है। अपने विशेष क्षेत्र मे तू कोई भी ऐसा मनुष्य पीछे नही छोड़ गया, जो वह काम कर सके, जिसे तू करता था।

१९ वीं सदी के सच्चे शहीद

इस महान आत्मा का जीवनचरित्र सबसे पहले श्री निहालचन्द भण्डारी ने १९ वीं सदी का सच्चा शहीद नाम से से लिखा था। तत्पश्चात् पजाबकेसरी लाला लाजपत राय जी ने। लाला जी का कहना था कि स्वर्गीय लाला साईदास जी को जितना ध्यान गुरुदत्त जी ओर देना चाहिए था, उतना उन्होने न देकर भारी भूल की। पजाब केसरी के ये शब्द एक रहस्यमय सत्य का उद्घाटन करते हैं, जिसे आर्यसमाज के इतिहास को जानने वाले बन्धु खूब समझते हैं।

दयानन्द के गीत गाते रहेंगे

वे हैं और! जो थरथराते रहेंगे। वे हैं और! जो खौफ खाते रहेंगे।
वे हैं और! जो गिड़गिड़ाते रहेंगे। वे हैं और! जो हिचकिचाते रहेंगे॥
वे हैं और! जो हड़बड़ाते रहेंगे। वे हैं और! जो सिर छिपाते रहेंगे॥
हमी आर्य हैं' दनदनाते रहेंगे। दयानन्द के गीत गाते रहेंगे॥
सरे 'दार' हम मुस्कराते रहेंगे, वतन के लिए सिर कटाते रहेंगे॥
सबको एकता का पढाते रहेंगे। मुहब्बत की बीणा बजाते रहेंगे॥
ध्वज ओ३म् का और ऊचा उठाकर। कदम अपना आगे बढ़ाते रहेंगे॥
यदि जान जाती है, जाए, तो क्या है। मगर आन अपनी बचाते रहेंगे॥
वतन दुश्मनो की वतन दुश्मनी को। जो सरगर्मियां हैं दबाते रहेंगे॥
किले तोड़ डालेंगे पाखण्डियो के, हकीकत का झण्डा लहराते रहेंगे॥
हमे 'नाज' जीना सिखाया ऋषि ने। जियेंगे, जहां को जिलाते रहेंगे॥

—'नाज' सोनीपत

दूसरे क्षेत्रों में भी समाज का कार्य करें

—जगत राम आर्य

आर्यसमाज का काम करना हो तो आर्यसमाज मन्दिर तक सीमित रहकर और आर्यसमाज का पदाधिकारी बन कर ही नहीं होता। दूसरी राजनीतिक, शिक्षण, तथा सार्वजनिक संस्थाओं से सम्पर्क बढ़ाकर, अपनी कार्यकुशलता के कारण दूसरी सस्थाओ मे भी किसी न किसी रूप मे आर्यसमाज की छाप लगानी चाहिए। उसके लिए हमारे आर्यसमाज के सिद्धान्तो के प्रति पूरी-पूरी जानकारी और निष्ठा होनी चाहिए। हम किसी भी क्षेत्र मे काम करें, दूसरी सस्था मे पदासीन होने पर भी हम सदा यह धारणा बनाए रखे कि मैं पहले आर्यसमाजी हू बाद मे कुछ और।

आर्यसमाज का प्रचार और प्रसार आर्यसमाज क मच पर से ही नही होता हम कही भी किसी स्थिति मे भी हो, आर्यसमाज की चर्चा हर समय हर जगह करते रहना चाहिए।

यमुनापार क्षेत्र की १३ लाख की आबादी है। यमुनापार क्षेत्र पिछड़ा हुआ क्षेत्र माना जाता है, यहाँ की १३ लाख जनता को नागरिको) को कोई असुविधाए और कठिनाइया हैं, उन्हें दूर करने के लिए दिल्ली प्रशासन और केन्द्र के अधिकारियो से मिल कर कठिनाइयो का समाधान करने के लिए लिए 'यमुना पार सुधार सभा' बनी हुई है, जिसके सम्बन्ध मे और हमारी मागो के सम्बन्ध मे समाचार-पत्रो मे बिकबता रहता है, उक्त सभा का मैं अध्यक्ष हू।

मैं कोई अधिक पढ़ा-लिखा नही हू, न ही धनी हू परन्तु यह केवल आर्यसमाज की देन है। जनता को आयसमाज पर आर्यसमाज के व्यक्तित्व पर विश्वास, श्रद्धा और आस्था है।

भारत मे हजारो की हिन्दी पुस्तको के बड़े-बड़े प्रकाशक है, धनी है,हजारो प्रकाशको की 'अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक सघ' नाम की सस्था बनी हुई है, मुझे इस सस्था का उपप्रधान बनाया गया था, यह सब आर्यसमाज की देन है और इसका श्रेय आर्यसमाज को ही है। पिछले वर्षों मे गाधीनगर भारतीय जनसघ का मैं कई वर्ष अध्यक्ष रहा हू यह सब आर्यसमाज की देन है। डी. ए. वी. हायर सैकन्ड्री स्कूल गाधीनगर की स्थापना मैंने की थी आज उसके तीन हायर सैकेन्ड्री स्कूल हैं।

गाधीनगर से शाहदरा मे बाबूराम स्कूल का फासला एक मील से अधिक ही है, इस मेन रोड का नाम शाहदरा रोड के नाम से रहा है। मैंने बड़े परिश्रम और संघर्ष करके इस रोड का नाम 'शहीद प. लेखराम मार्ग' करवाया। दोनो ओर दिल्ली कारपोरेशन ओर से 'शहीद प० लेखराम मार्ग' के नाम पत्थर लिखे खड़े हैं।

गाँधीनगर बाजार से आर्यसमाज गाधीनगर तक आने के लिए चक्कर काट कर आना पडता था सीधी गली नही थी, दो वर्प सघर्प करना पड़ा और गली खुलवाई, गली का नाम अब 'आयसमाज गली' के नाम से मशहूर है।

आर्यसमाज गाधी नगर जिसकी स्थापना मेरे द्वारा हुई थी, इसकी लम्बी कहानी है। उसे न लिख कर सक्षेप मे यह कि कई वप प्रधान रहा। कारण यह था कि आर्यसमाज का काम करने के लिए मन मे तड़प होनी चाहिए, समय अधिक देना चाहिए मैं इसमे समर्थ होने के कारण आर्य जन सर्वसम्मति से मुझे प्रधान बनाते रहे। पिछले दिनो मैंने सकल्प किया है आर्यसमाज का कोई पद ग्रहण नहीं करूगा। साधारण सदस्य रह कर आर्यसमाज की सेवा करता रहूगा। दूसरा सकल्प यह था कि इगलिश का छपा निमन्त्रण-पत्र चाहे मेरे रिश्तेदार का भी आएगा, तो शामिल नहीं हूगा, हिन्दी के निमन्त्रण पर ही जाऊगा, इसके लिए मुझे बहुत कठिनाई का सामना करना पड रहा है, परन्तु डिगा नहीं।

आर्य बन्धु मेरे लेख का गलत अर्थ न ले। मेरे लिखने का अभिप्राय यही है कि आर्य बन्धु आर्यसमाज की चारदीवारी से निकल बाहर के दूसरे क्षेत्र मे भी काम करे, जिसरे आर्यसमाज का प्रचार और प्रसार बढे।

जैसा कि गत वर्ष गाधी नगर मे सनातन धर्म का वार्षिकोत्सव हुआ,अपने सम्बन्धो के कारण उनके मच पर महर्षि दयानन्द का वड़ा फोटो और चारो वेद भाष्य रखे थे, मैंने उनसे ही घोपणा करवाई कि 'यह भारत के महान सुधारक और वेदो के उद्धारक स्वामी दयानन्द की फोटो है, सभी भाई-बहने चारो वेदो के दर्शन करते जाए।

जगत निवास प्रेम गली गाँधीनगर,
दिल्ली-११००३१

आर्य जगत् समाचार

सरकार इतिहास में परिवर्तन नहीं करे

लोगों की संकीर्ण मनोवृत्ति में परिवर्तन करना चाहिए :
सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री ओम्प्रकाश त्यागी का सत्परामर्श

देश के साम्प्रदायिक मनमुटाव अथवा झगडों की समाप्ति कर यहाँ भावात्मक एकता लाने की दृष्टि से सरकार ने भारत के इतिहास मे परिवर्तन करने का निर्णय किया है। उसका यह प्रयत्न ऐसा ही है जैसे कि व्यक्ति सूखते हुए पेड़ की जड पर पानी न डाल कर पत्तो पर पानी छिडके।

सरकार महमूद गजनी तैमूरलग, औरगजेब आदि बर्बर लुटेरो तथा बादशाहो के काले कारनामो के स्थान पर उन्हे देवता तथा जनता विशेष कर हिन्दुओ का शुभ चिन्तक सिद्ध करने का प्रयत्न करेगी, परन्तु मस्जिदो का क्या करेगी जो मन्दिरो को तोडकर बनाई गई है। मन्दिर भी छोटे-मोटे नही अपितु काशी का विश्वनाथ मन्दिर,अयोध्या मे भगवान राम का जन्म स्थान, मथुरा मे भगवान कृष्ण का जन्म-स्थान को मस्जिदो के रूप में देख कर क्या भावना उत्पन्न होगी, उन बर्बर बादशाहो के प्रति, जिनके कारनामो के वे प्रतीक है। देश का कोई क्षेत्र ऐसा नही जहाँ इतिहास इन प्रतीकों के रूप मे देखने को न मिलता हो। सरकार इतिहास मे तो परिवर्तन कर देगी, परन्तु इन मस्जिदो के बारे मे क्या करेगी ? क्या उसमे साहस है कि मस्जिदो को पुन प्राचीन मदिरो के रूप मे परिवर्तित करा दे। आजादी के पश्चात स्वर्गीय प० जवाहरलाल नेहरू के समय उस समय के गृहमत्री श्री काटजू ने देश की भावात्मक एकता का यही सुझाव रखा था कि मुसलमान ऐसी मस्जिदो को स्वत: वापस देकर आपसी प्रेम को बढावा दे।

सरकार भारत के इतिहास को तो बदल देगी, परन्तु जिस जाति का इतिहास अपने जन्मकाल से ही विधर्मियो के कत्ल और लूट से प्रारम्भ हुआ, और सर्वत्र वही इतिहास आज तक दुहराया जा रहा है, उसका क्या करेगी। मुस्लिम आक्रमणकारियो ने अरब, मिश्र, टर्की, ईरान, अफगानिस्तान आदि देशो मे जहाँ भी वे अपनी फौजें लेकर गए उसी इतिहास की रचना की जिसकी रचना भारत मे की गई। क्या सरकार उन इतिहासो को पढ़ने पर प्रतिबन्ध लगावेगी या उनमें भी परिवर्त्तन करेगी।

संकीर्ण मनोवृत्ति बदलो

सरकार को भली प्रकार समझ लेना चाहिए कि देश मे साम्प्रदायिक झगडो का कारण इतिहास नही अपितु वह सकीर्ण साम्प्रदायिक मनोवृत्ति है जो धर्म के नाम पर पूजा स्थानो पर तथाकथित धर्मगुरु लोगो के दिल दिमागो मे उत्पन्न करते हैं। देश मे और भी धार्मिक अल्पसख्यक वर्ग हैं उनके साथ हिन्दुओ का झगड़ा क्यो नही होता। इन्ही के साथ क्यो होता है। द्विराष्ट्र के सिद्धान्तो का नारा मुस्लिम बन्धुओ ने क्यो लगाया,अन्यो ने क्यो नही लगाया। सरकार के पास इस बात का क्या उत्तर है कि अरब स्थित काबे की मस्जिद पर आक्रमण और कब्जा करे वहा के मुसलमान और प्रतिक्रियास्वरूप हैदराबाद मे हिन्दुओ के मन्दिरो, दुकानो को आग लगाई जाए और लूटा जाए।

पाकिस्तान और बगला देश मे वहाँ के अल्पसंख्यको के साथ क्या हुआ, और अब क्या हो रहा है क्या सरकार इस सचाई को जनता की दृष्टि से छिपा सकेगी ? आज बगला देश से भागे लाखो बगाली हिन्दु अनाथो की तरह आसाम, त्रिपुरा, बिहार आदि प्रान्तो मे भटक रहे हैं, और अपनी करुण कहानी बतला रहे हैं। क्या सरकार उन्हे अपने साथ बीती बातो पर वर्णन करने पर प्रतिबन्ध लगावेगी।

अत: इतिहास के परिवर्तन से नही अपितु लोगो की साम्प्रदायिक मनोवृत्ति मे परिवर्तन करने से ही देश मे भावात्मक एकता उत्पन्न की जा सकेगी। इसके लिए एक ही उपाय है कि शिक्षा का राष्ट्रीयकरण कर सरकार सर्वत्र आश्रम प्रणाली स्कूल बनाए जहाँ बच्चो को नैतिक शिक्षा और देशभक्ति का पाठ पढ़ाया जाए और देश को संकीर्ण साम्प्रदायिक वातावरण से यथासम्भव दूर रखा जाए। रूस ने इसी मार्ग द्वारा कुछ ही वर्षो मे अपनी कल्पना का राष्ट्र-निर्मित कर दिया। क्या सरकार ऐसा नही कर सकती है।

मनोवृत्ति बदलने से देश का उत्थान

ज्वालापुर की हीरक जयन्ती पर चौधरी चरणसिंह

हरिद्वार। गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर का ७५वा वार्षिकोत्सव हीरक जयन्ती के रूप मे १० से १४ अप्रैल तक बडे हर्षोल्लास एव धूम-धाम से सम्पन्न हुआ। दीक्षान्त भाषण मे लोकदल के अध्यक्ष चौधरी चरणसिह ने कहा कि जब तक हमारी मनोवृत्ति नहीं बदलेगी, तब तक इस देश का उत्थान असम्भव है। महाविद्यालय के कुलपति डा. कपिल देव द्विवेदी ने श्री चरणसिंह को विद्या-वाचस्पति, डी. लिट् की मानद उपाधि से विभूषित किया। इस हीरक जयन्ती मे वेद सम्मेलन,आयुर्वेद सम्मेलन, शिक्षा सम्मेलन, आर्य सम्मेलन एवं धर्म सम्मेलन का आयोजन किया गया।

दयानन्द शोधपीठ की स्थापना

आर्यसमाज शिक्षा सभा के मत्री श्री दत्तात्रेय वाब्ले के प्रयासो से राजस्थान सरकार ने दयानन्द कालेज अजमेर मे इसी सत्र से दयानन्द चेयर (दयानन्द शोध पीठ) स्थापित करने की स्वीकृत प्रदान कर दी है। सरकार ने इस हेतु अनुदान देना भी स्वीकार कर लिया है।

इस शोधपीठ के अन्तर्गत महर्षि दयानन्द के ग्रन्थो एव मन्तव्यो पर शोध के साथ-साथ प्रति वर्ष स्थायी महत्त्व का आर्य साहित्य भी प्रकाशित किया जाएगा। इसके लिए दयानन्द कालेज अजमेर में दयानन्द शोध पीठ हेतु पाच लाख रुपये की स्थायी निधि भी एकत्र की जाएगी।

आर्यसमाज विनय नगर का वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज विनयनगर (सरोजिनी नगर) नई दिल्ली का वार्षिकोत्सव ७, ८ और ९ मई को पंजाब नेशनल बैंक के सामने सरोजिनी नगर मार्किट पार्क में मनाया जाएगा। ३ मई से ९ मई तक प्रात: ६ बजे से ७॥ बजे तक स्वामी दीक्षानंद जी के ब्रह्मत्व मे सामवेद पारायण यज्ञ होगा और रात्रि को ८ बजे से १० बजे तक श्री गुलाबसिंह के भजन और स्वामी दीक्षानन्द जी सरस्वती की वेदकथा होगी। ९ मई को प्रात: १० से १२ बजे तक राष्ट्र रक्षा सम्मेलन होगा।

बोध-कथा

सब ठाठ-बाट यहीं रह जाएगा !

राजकुमार भोज अभी अबोध बालक ही थे कि उनके पिता स्वर्गवासी हो गए। शरीर छोडते हुए भोज के पिता ने अपने छोटे भाई मुंज को पास बुलाकर कहा—'यह राज्य अभी तुम सम्भालो। भोज जब बडा और समझदार हो जाए तो उसे राजपाठ सौप देना।'

अपने चाचा की देखरेख मे भोज बडे होने लगे, परन्तु जल्दी ही राजा मुंज की नीयत डावाडोल हो गई, उसने सोचा कि भोज के बडे होने पर शासन उसे सौपना पडेगा, अच्छा हो उसका अभी सफाया कर दिया जाए। राजा मुंज ने जल्लादों को बुलाकर उन्हे भोज को सौंप कर उसकी हत्या करने की आज्ञा दे दी। वधिको को जगल मे जाकर दया आ गई। उन्होने लडके को छोड दिया और उसे सारी बात सुना दी। भोज ने अपने खून से अपने चाचा के नाम यह पत्र लिखा—

मान्धाता च महीपति कृतयुगेऽलकार भूतो गत:।
सेतुर्येन महोदधौ विरचित क्वासौ दशास्यान्तक.॥
अन्ये चापि युधिष्ठिरप्रभृतय. याता दिव भूपते।
नैकेनापि सम गता वसुमती मुंजस्त्वया यास्यति॥

हे चाचा मुंज, सतयुग मे प्रतापी सम्राट् मान्धाता हुए थे, वह भी चले गए, त्रेता युग मे समुद्र पर पुल बनाने वाले दशानन रावण को मारने वाले राम भी नही रहे, द्वापर मे युधिष्ठिर जैसे प्रतापी राजा भी नही रहे, ये सब चले गये, पर ये प्रतापी राजा पृथ्वी और उसकी सम्पदा को अपने साथ नहीं ले जा सके, परन्तु चाचा मुंज, तुम अपने साथ सारा ठाठ-बाट अवश्य ले जाओगे।

पत्र पढकर राजा मुंज की आँखें खुल गई, उन्हें अपनी भूल महसूस हो गई। सारी बात जानकर उन्होंने राजकुमार भोज को गद्दी दे दी !

—नरेन्द्र

आर्यसमाजों के सत्संग

२ मई '८२

अन्धा मुगल-प्रताप नगर—प० गणेशप्रसाद विद्यालंकार; अमर कालोनी—प० ज्ञानचन्द्र; अशोक विहार के सी. ५२ ए.—प० मनोहरलाल ऋषि भजनोपदेशक; अशोक नगर—पं० भगवान सहाय विद्यावाचस्पति, आर्य पुरा—वैद्य रामकिशोर; आर. के. पुरम सेक्टर-५—स्वामी जगदीश्वरानन्द; आर के. पुरम सेक्टर-६—प० जयभगवान भजन मण्डली; आनन्द विहार-हरि नगर एल ब्लाक—प० सोमदेव शास्त्री; किंग्जवे कैम्प—प० तुलसीराम भजनोपदेशक; कालका जी डी. डी. ए. फ्लैट्स—प्रो० वीरपाल विद्यालकार, कालका जी—प० मनोहर 'विरक्त'; कृष्णनगर—ला० लखमीदास; गांधी नगर—प० देवेश, गीता कालोनी—प० सीसराम भजनोपदेशक; गुप्ता कालोनी—प० कामेश्वर शास्त्री, गोविन्दपुरी—प० हरिदत्त शास्त्री; गोविन्द भवन-दयानन्द वाटिका—प० रामनिवास, चूना मण्डी-पहाड़गज—प० मुनिशकर वानप्रस्थ, जगपुरा-भोगल—प० देवराज वैदिक मिशनरी जनकपुरी सी-३—डा० रघुनन्दनसिंह, जनकपुरी बी. ३/२४—प० ओम्प्रकाश भज[illegible]देशक; टैगोर गार्डन—डा० सुखदयाल भूटानी, तिलक नगर—प० प्राणनाथ सिद्धान्तालकार, तिमारपुर—प० प्रकाशचन्द्र वेदालकार, देवनगर—प० छविकृष्ण शास्त्री; नारायण विहार—स्वामी मुनीश्वरानन्द; नया बास—प० विश्वप्रकाश शास्त्री; न्यू मोतीनगर—प० खुशीराम शर्मा, नगर शाहदरा—प० प्रकाशचन्द शास्त्री, पजाबी बाग—प० जैमुनि शास्त्री, पजाबी बाग एक्सटेन्शन—आचार्य हरिदेव सि० भू०, प्रीतमपुरा—प० प्रकाशवीर व्याकुल; बाग कड़े खां—प० बरकतराम भजनोपदेशक, मोडल बस्ती—डा० रघुवीर वेदालकार, महावीर नगर प० रामरूप शर्मा, महरौली—प० उदयपाल शास्त्री, मोतीबाग—श्रीमती लीलावती आर्या; रमेश नगर—प० छज्जूराम शास्त्री, राणा प्रताप बाग—प० ओमवीर शास्त्री, लड्डू घाटी—प० रघुराज शास्त्री, लाजपत नगर—श्रीमती सुशीला राजपाल; लेखराम नगर-त्रिनगर—प० वेदपाल शास्त्री, लारेन्स रोड—आचार्य धरेन्द्र; विक्रम नगर—प० गणेशदत्त वानप्रस्थी, विनय नगर—प० हरिश्चन्द्र, दर्शन पार्क—प्रो० भारतसिंह शास्त्री; सराय रोहेला—प्रो० सत्यपाल बेदार, सोहन गज—श्रीमती प्रकाशवती शास्त्री, श्री निवास पुरी—प० आशानन्द भजनोपदेशक, शालीमार बाग—प० शिवकुमार शास्त्री, हनुमान रोड—प० हरिशरण सिद्धान्तालकार; हौज खास—प० सुधाकर स्नातक; ग्रीन पार्क—डा० महेश विद्यालकार, सरस्वती विहार प० अशोक कुमार विद्यालकार।

—ज्ञानचन्द डोगरा, वेद प्रचार प्रबन्धक

आर्यसमाज सरस्वती विहार का वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज सरस्वती विहार, दिल्ली-२४ का वार्षिकोत्सव २ मई से ६ मई तक सरस्वती विहार के बी. ब्लाक स्थित आर्यसमाज मन्दिर के प्रागण मे सम्पन्न होगा।

आयुर्वेदिक औषध का लाभ उठाएं

महर्षि दयानन्द स्मारक कर्णवास, जि० बुलन्दशहर स्थित आयुर्वेद धर्मार्थ औषधालय से लाभ उठाये। प्रतिदिन २५ पैसे दान दीजिए—लाभ उठाइयेगा।

प्रात—साय : १-१ वटी गौ के दूध के साथ। १ वर्ष पर्यन्त सेवन करे। प्रति मास विवरण देवे, वैद्य से साक्षात्कार करे।

पता—प्रधान चिकित्सक :
आयुर्वेद धर्मार्थ औषधालय महर्षि
दयानन्द स्मारक, कर्णवास, बुलदशहर।

आवश्यकता

गुरुकुल मे आजकल भवन निर्माण का कार्य बडी तेजी से चल रहा है। जिसमे छात्रावास श्रेणी के कमरे गोबर गैस सयत्र आदि सम्मिलित हैं। दान दाता इस कार्य मे दिल खोलकर दान दें व पुण्य के भागी बनें। ७०० रुपये या इससे अधिक दान देने वालो के नाम भी शिला पटट पर लिखवाये जायेंगे। आप अपना दान ड्राफ्ट अथवा मनीआर्डर आदि मे नीचे लिखे पते पर भेज सकते हैं।

आचार्य—गुरु विरजानन्द वैदिक सस्कृत महाविद्यालय,
करतारपुर, जिला जालन्धर पंजाब।

आर्यसमाज अशोक विहार-२ का शिलान्यास और वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज अशोक विहार फेज-२, दिल्ली-५२ के भवन का शिलान्यास एव नौवा वार्षिकोत्सव ५ से ९ मई तक गुलाबी मार्केट के समीप बी २/३ अशोक विहार फेज न० २ मे होगा। इस अवसर पर ५ से ८ मई तक प्रात: ६ से ८ बजे तक स्वामी जगदीश्वरानन्द जी के ब्रह्मात्व मे 'आत्मपावन यज्ञ' होगा और प्रतिदिन रात्रि को ८ से ९ बजे तक श्री सत्यदेव स्नातक के भजनोपदेश तथा रात्रि को ९ बजे तक दिल्ली विश्वविद्यालय के डा० वाचस्पति उपाध्याय का वेदोपदेश होगा।

शुक्रवार ७ मई को प्रात: ९॥ से ११ बजे तक बच्चो की कविता तथा गायन प्रतियोगिता होगी, ११ से १२ बजे तक आर्यसमाज के उपकार विषय पर भाषण-प्रतियोगिता होगी।

शनिवार को दोपहर ३॥ से ६ बजे तक श्रीमती पद्मावती तलवाड की अध्यक्षता मे महिला सम्मेलन होगा, उसमे श्रीमती ईश्वर देवी जी आर्या, श्रीमती शान्ति मोहन आर्या महिला सभा की अध्यक्षा श्रीमती शान्ति देवी मलिक, डा. इन्दु छावडा, श्रीमती सरला मेहता और डा. सुषमा आर्या के भाषण तथा श्रीमती प्रेमशील महेन्द्र के भजन होगे।

रविवार ९ मई को प्रात ८॥ बजे यज्ञ की पूर्णाहुति होगी। माता शान्ति देवी के भजन होगे। शिलान्यास महात्मा गणेशदास जी अग्निहोत्री करेंगे। इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान रामगोपाल शालवाले, कोषाध्यक्ष—श्री सोमनाथ मरवाह, दिल्ली आर्य केन्द्रीय सभा प्रधान महाशय धर्मपालजी, दिल्ली आर्यप्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सरदारीलाल वर्मा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान—श्री विद्याप्रकाश सेठी, श्री दरबारीलाल जी आदि शुभ कामनाए प्रकट करेंगे। बेतिया के भू. पू. इमाम प. जयप्रकाश आर्य उपदेश देंगे। कार्यक्रम के सयोजक श्री प्रद्युम्नलाल तलवाड है।

आर्यसमाजों के नये पदाधिकारी

आर्यसमाज पश्चिम पुरी—प्रधान—श्री जगन्नाथ नन्दा, उपप्रधान—श्रीमती सुशीला और श्री अनन्तराम मिश्र; मन्त्री—रामप्रताप शर्मा, उपमन्त्री श्री एस.के. उप्पल तथा श्री जयदेव अरोडा, प्रचार मन्त्री—श्री विश्वनाथ, कोषाध्यक्ष—श्री ज्ञानचन्द, पुस्तकालयाध्यक्ष—श्री रतनचन्द्र।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रकाशन

सत्यार्थप्रकाश सन्देश (हिन्दी)	१.००
" " अंग्रेजी	समाप्त
आर्य सन्देश-महासम्मेलन विशेषांक	६.००
पादरी भाग गया—ओम्प्रकाश त्यागी	०.३०
स्वामी श्रद्धानन्द-बलिदान अर्द्ध शताब्दी स्मारिका	६.००
सत्यार्थप्रकाश शताब्दी समारोह स्मारिका	६.००

सम्पर्क करें—
अधिष्ठाता प्रकाशन विभाग
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
१५ हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१

卐 आर्यसन्देश' के स्वयं ग्राहक बनें—दूसरो को बनाएं

卐 आर्यसमाज के सदस्य स्वयं बनें—दूसरों को बनाइए

हिन्दी-संस्कृत भाषा स्वयं दूसरों को भी पढाइए—

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए श्री सरदारी लाल वर्मा द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित तथा भाटिया प्रेस २५७४, रघुवरपुरा नं० २ गांधी नगर दिल्ली-३१ में मुद्रित । कार्यालय १५ हनुमानरोड, नई दिल्ली फोन ३१०१५०

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक मुखपत्र

एक प्रति ३५ पैसे वार्षिक १५ रुपये वर्ष ६ अंक २८ रविवार ६ मई २७ बैसाख वि० २०३६ दयानन्दाब्द—१५८

दल खालसा और खालिस्तान राष्ट्रीय परिषद् अवैध घोषित

भारत सरकार द्वारा पंजाब सरकार की सिफारिश पर कार्यवाही

नई दिल्ली। १ मई के दिन भारत सरकार ने पजाब मे राष्ट्रविरोधी और पृथकतावादी गतिविधियो को रोकने के लिए दल खालसा और खालिस्तान राष्ट्रीय परिषद् पर प्रतिबन्ध लगा दिया। ये सगठन खुले आम पृथकतावादी व देश विरोधी गतिविधियों मे सलग्न हैं। यह प्रतिबन्ध पजाब सरकार की सिफारिश पर गैरकानूनी कार्यवाही निरोधक अधिनियम १९६७ के तहत लगाया गया है। इसका उद्देश्य राष्ट्रीय सुरक्षा को निरापद करना और साम्प्रदायिक सद्भाव पैदा करना है।

अराजक तत्वों के विरुद्ध कारवाई की जाए :

हिन्दुओं के धार्मिक स्थानों पर दल खालसा के घृणित कार्य की सार्वदेशिक सभा द्वारा भर्त्सना

नई दिल्ली। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने अमृतसर मे दल खालसा द्वारा गऊओ को काट कर हिन्दुओ के ५ धार्मिक स्थानो पर उनके सिर लटकाये जाने की कार्रवाई की कठोरतम शब्दो मे निन्दा की है तथा सरकार से इस प्रकार के अराजक तत्वो के विरुद्ध कडी कार्रवाई करने और दल खालसा को अवैध घोषित करने की माँग की है।

सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शाल वाले और मंत्री श्री ओमप्रकाश त्यागी ने प्रेस में दिये एक सयुक्त वक्तव्य मे सरकार को चेतावनी देते हुए कहा कि यदि उसने इन अराष्ट्रीय तत्वो के विरुद्ध कठोर कार्रवाई न की, तो इसकी देश भर में बड़ी प्रतिक्रिया होगी और इसकी सारी जिम्मेदारी सरकार पर होगी।

वक्तव्य में कहा गया है कि आर्य समाज की शीर्ष संस्था सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा इस सारे काण्ड को जहाँ घृणा और निन्दा की भावना से देखती है वहाँ उसका निश्चित मत है कि दल खालसा के उन्मादी सिखो की यह कारवाई गुरुग्रन्थ के उपदेशो के विरुद्ध है। यह गुरुओं का ही अपमान है।

यह सब कार्रवाई राजनीतिक दृष्टिकोण से की गई है। दल खालसा सिख धर्म के लिए कार्य नहीं कर रहा। वह इस देश को कमजोर करने के लिये पाकिस्तान और विदेशी तत्वो से साठ-गाँठ करके ही ऐसी नीच हरकतें कर रहा है।

दल खालसा ने इस जघन्य कार्रवाई के लिए अपनी जिम्मेदारी स्वीकार कर सरकार को खुली चुनौती दी है। अब भी यदि सरकार ने उन तत्वो पर रोक न लगाई और उन्हे कठोर दण्ड न दिया तो आर्य नेताओ को भय है कि कही इसकी प्रतिक्रिया देशव्यापी न हो जाए।

दिल्ली प्रतिनिधि सभा द्वारा निन्दा

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सरदारीलाल वर्मा और सभा मन्त्री प्रो० भारत मित्र शास्त्री ने भी एक सयुक्त वक्तव्य मे दल खालसा द्वारा गऊओ को काट कर हिन्दुओ के धार्मिक स्थानो पर लटकाये जाने की कार्यवाही की निन्दा करते हुए सरकार से इस प्रकार के अराजक तत्वो के विरुद्ध तुरन्त कडी कार्यवाही करने की माँग की है।

राष्ट्र की सुरक्षा के लिए भारतीयता की भावना दृढ़ करें

आर्यसमाज श्रद्धानन्द पुरम (अर्बन एस्टेट) का वार्षिकोत्सव

गुडगाँव। आर्य समाज श्रद्धानन्द पुरम (अर्बन एस्टेट) के चतुर्थ वार्षिकोत्सव पर राष्ट्र रक्षा सम्मेलन की अध्यक्षता करते हुए गुरुकुल काँगडी के कुलपति श्री बलभद्र कुमार हूजा ने कहा यदि हम सचमुच एक दृढ़ राष्ट्र के स्वरूप मे उभरना चाहते हैं तो हमे सभी नवयुवक-युवतियो के लिये दो साल की फौजी सेवा अनिवार्य कर देनी चाहिए। राष्ट्र की सुरक्षा के लिये हमे भारतीयता और एकता की भावना का उदय करना होगा, न्याय और समानता के मूल्यो पर आधारित राज्य-प्रबन्ध करना होगा, व्रतप्रधान आचार-सहिता प्रचलित करनी होगी।

धर्मरक्षा महाभियान एव विशाल हिन्दू सगठन सम्मेलन की अध्यक्षता महात्मा वेदभिक्षु जी ने की। पडिता राकेश रानी, श्रीमती सरस्वती सुमन, प्रो० बलराम मधोक, डा० आनन्द सुमन ने ओजस्वी भाषण दिये। जनता ने डा० आनन्द सुमन दम्पती का फूल मालाओ से स्वागत किया। वेद सम्मेलन का अध्यक्षीय भाषण देते हुए डा० प्रशात वेदालकार ने कहा कि वेद का स्वाध्याय कर उसकी पवित्र शिक्षाओ के अनुरूप अपने जीवन, समाज, राष्ट्र तथा विश्व मे मानव उद्धार की क्रांति लाए। प्रो० सत्यपाल जी बेदार की अध्यक्षता में प्रो० मनीषी, कन्नौरी जी, नाज सोनीपती, प्रकाशवीर व्याकुल आदि ने कवि सम्मेलन में अपनी कविताए प्रस्तुत कीं।

आर्यसमाज का वार्षिकोत्सव १८ अप्रैल स २५ अप्रैल तक हुआ। प्रारम्भ मे युवको की खेल प्रतियोगिता हुई। 'राष्ट्रीय एकता एव राष्ट्र भाषा' पर छात्रो की प्रतियोगिता हुई। सत्यपाल जी मधुर के भजनोपदेश एव आचार्य विक्रम की वेद कथा हुई।

प्रो. सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार का सार्वजनिक अभिनन्दन

नई दिल्ली। शनिवार १ मई को दिल्ली हिन्दी साहित्य सम्मेलन के तत्वावधान मे कान्स्टीट्यूशन क्लब, नई दिल्ली मे गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय के विजिटर एव भू पू कुलपति एव भू पू ससद सदस्य डा० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार का 'वैदिक विचारधारा का वैज्ञानिक आधार' शीर्षक ग्रन्थ के लिए विद्याभवन सस्थान की ओर से १ अप्रैल, १९८२ के दिन मद्रास मे दस हजार रुपए का राजाजी का पुरस्कार दिया गया। इस ग्रन्थ का प्रकाशन वैदिक एव भारतीय साहित्य के प्रकाशन गोविन्दराम हासानन्द, नई सडक, दिल्ली ने किया है।

इस अवसर पर लेखक का परिचय देते हुए वैदिक विद्वान् श्री मनोहर विद्यालकार ने कहा अपने दार्शनिक विचारो से प० सत्यव्रत सच्चे ऋषि राज्यसभा की सदस्यता और कार्यो मे राजर्षि और अपने वैदिक दार्शनिक विचारो के कारण सच्चे ब्रह्मर्षि है। केन्द्रीय लोक सेवा आयोग के अध्यक्ष श्री पाण्डुरग राव ने पण्डित जी का स्वागत करते हुए उन्हे दुशाला भेंट किया।

सम्पादक—नरेन्द्र विद्यावाचस्पति व्यवस्थापक—प्रद्युम्नलाल तलवाड़

वेद-मनन

मृत्यु के १२ दिन पश्चात् पुनर्जन्म होता है

—मनोहर विद्यालंकार

सविता प्रथमेऽहन्नग्निर्द्वितीये वायुस्तृतीये आदित्यश्चतुर्थे,
चन्द्रमा पञ्चम ऋतु षष्ठे मरुत सप्तमे बृहस्पतिरष्टमे ।
मित्रो नवमे वरुणो दशम इन्द्र एकादशे विश्वेदेवा द्वादशे ।। यजु ३९-६

ऋषि—दीर्घतमा । देवता—सवितादय । छन्द—विराडधृनि: ।

शब्दार्थ—जीवात्मा मृत्यु अर्थात् शरीर को छोडने के बाद (प्रथमे अहन्) प्रथम दिन (सवितास)विता देव से सम्पर्क करके अपनी प्रजनन सम्बन्धी कमियो को (द्वितीये) दूसरे दिन (अग्नि) अग्नि देव से सम्पर्क करके पार्थिव लोक मे निवास के लिए प्राप्त अयोग्यताओ को (चतुर्थे) चौथे दिन (आदित्य) सूर्यदेव मे सम्पर्क करके द्युलोक मे निवास के लिए प्राप्त अनर्हताओ को दूर करता है। इसी प्रकार (पचमे) पाँचवे दिन (चन्द्रमा) चन्द्रदेव से सम्पर्क करके मन मे आई हुई कमियो को (षष्ठे) छठे दिन (ऋतु) ऋतु-ऋतु के पास जाकर उनमें जीवन-यापन करने के लिए प्राप्त अयोग्यताओ को, (सप्तमे) सातवे दिन (मरुत) प्राणो स सम्पर्क करके तत्सम्बन्धी अनर्हताओ को, तथा (अष्टमे)आठवे दिन (बृहस्पति) बृहस्पति देव से सम्पर्क करके अपनी बुद्धि सम्बन्धी कमियो को दूर कर लेता है। तदनन्तर(नवमे, दशमे, एकादशे) क्रमश नवें, दसवे तथा ग्यारहवे दिन (मित्र: वरुण, इन्द्र) मित्र, वरुण और इन्द्रसे सम्पर्क करके स्निग्धता (भक्ति) विवेक (ज्ञान) और कर्मठता (कर्म) के सामर्थ्य को प्राप्त करता है। इसके पश्चात् (द्वादशे) बारहवें दिन (विश्वेदेवा)अन्य सब देवताओ से सम्पर्क करके,भावी जीवन मे बाधक बनने वाली सब कमियो को दूर करके, जन्म ग्रहण के योग्य बनाता है।

निष्कर्ष—१ कोई भी जीव मृत्यु के पश्चात् १२ दिन तक जन्म ग्रहण नही करता। यह काल अगला जन्म ग्रहण करने से पूर्व का अवकाश काल है, इसलिए भारतीय परम्परा मे १२ दिन तक मृत पुरुष के लिए शुभ कामनाओ के निमित्त अनुष्ठान करने की प्रथा है। तेरहवे दिन यह मानकर कि मृत व्यक्ति ने नया जन्म ग्रहण कर लिया है, अनुष्ठान का विसर्जन करके मृत के उत्तराधिकारी को पगडी बाधी जाती है।

२ मृत्यु के बाद १२ दिन का अवकाश काल तो आवश्यक है, किन्तु जीव अपनी कमियो को पूरा करने के लिए आवश्यकतानुसार मासो, वर्षों या उससे अधिक समय तक भी अपनी कमियाँ पूरी करने के लिए प्रतीक्षा कर सकता है।

विशेष—इस मन्त्र के ऋषि का शब्दार्थ सकेत करता है कि जो व्यक्ति अपने अज्ञान व कमियो (तम) को दूर करने (दीर्घ) का सकल्प कर लेता है, उसका इन कमियो को दूर करने मे समर्थ दिव्य जनो से स्वय सम्पर्क हो जाता है।

इस मन्त्र के छन्द का शब्दार्थ सकेत करता है कि मनुष्य को अपना सकल्प पूरा करने के लिए, धैर्यपूर्वक (धृति) विशेष रूप से प्रयत्न करते रहना चाहिए यदि वह बीच मे निराश होकर अपना प्रयत्न छोड नही देगा तो उसका सकल्प अवश्य पूरा हो जाएगा।

अर्थपोषक प्रमाण—

सविता—सविता प्रसवानामधिपति स मावतु। अथर्व ५.२४.१

दधातु न सविता सुप्रजामिषम्। प्रजावन्त रयिमस्मे समिन्वतु। ऋक् ४ ५३.७

अग्नि. वायु आदित्य—सूर्यो नो दिवस्पातु वातो अन्तरिक्षात्। अग्निर्न पार्थिवेभ्य। ऋक् १० १५८.१

चन्द्रमा.—मनश्चन्द्रो दधातु मे। अ०१९.४३.४ प्रचन्द्रमास्तिरते दीर्घमायु. ऋक् १० ८५ १९

ऋतु—इन्द्र सोम पिब ऋतुना। ऋक् १ १५ १ सोम द्रविणोद पिब ऋतुभि। अथर्व २ ३

मरुत—सुमागान्नो देवा. कृणुता सुरत्नान् मरुतो वावृधाना। ऋ १० ७८.८ मरुतो मिताविणो वामितोचिनो वा महद् द्रवन्ति वा। नि०११ १४ प्राणा बृहस्पति: बृहस्पतिर्नयतु दुर्गहा तिर., क्षिपदस्तिमय दुर्मतिहन्। ऋक् १०.१८२.१ यन्मे छिद्र चक्षुषा हृदयस्य वातितृण्णम्। बृहस्पतिर्मे तद्दधातु। यजु ३६.२

मित्र—मित्रो जनान् यातयति ब्रुवाणो मित्रो दाधार पृथिवीमुत द्याम्। ऋक् ३.५९.१

वरुण—त्व च मा वरुण कामयासे। ऋतेन राजन्ननृत विविञ्चन्। ऋक् १० १२४.५

इन्द्र—इन्द्र क्रत्वा या वशत्। इत् करत्। ऋक् ८ ६६.४ इन्द्रो वकू वकुतराधितिष्ठति। ऋक् १.५१.११

विश्वेदेवा.—उतदेवा अवहित देवा उन्नयतथा पुन।

उतागश्चकुष देवा देवा जीवयथा पुन। ऋक् १०.१३७.१ देवता-विश्वेदेवा विश्वेदेवानिरितस्तत् सुवन्तु, मा मा पद्येन रपसा विदत्त्सरु। ऋक् ७.५०.३

५२२ ईश्वर भवन,खारी बावड़ी,दिल्ली-६

दल खालसा क्या है ?

अमृतसर के दो मन्दिरो के सामने २६ अप्रैल के दिन गायो के सिर लटके पाये गये। इस कृत्य के लिए दल खालसा ने अपने को जिम्मेदार कहा। इससे पूर्व इंडियन एयर लाइन्स के एक भारतीय वायुयान के अपहरण की योजना दल खालसा नाम की सस्था ने बनाई थी। इस सस्था की स्थापना १७३४ मे हुई थी। कहते हैं कि दल खालसा की मूल धारणा उस समय की है, जब १७३४ मे सिखो की १२ मिसले आपस में लड रही थी। उनकी एकता खतरे मे थी। अकाल तख्त के जत्थेदार कपूरसिह ने सिख सरदारो को इकट्ठा किया और उनसे मुगलो के दमन और अत्याचारो का मुकाबला करने के लिये एकता स्थापित करने की अपील की। उस समय जो मोर्चा बना, उसका नाम 'दल खालसा' रखा गया, बाद मे यही 'दल खालसा' महाराजा रणजीतसिह की सेना का रूप धारण कर गया। जब पजाब अग्रेजो के कब्जे मे चला गया तब उन्होने धीरे-धीरे सिख पल्टनो को भग कर दिया, परन्तु दल खालसा का अस्तित्व कायम रखा गया, एक दल के नेता बाबा सन्तासिह थे और इसका नाम था बाबा बड़ा दल। बाबा बड़ा सिखो के बहुत बड़े सन्त थे, जो छह गुरुओ के जीवन काल तक तक जीवित रहे दूसरे दल का नाम तरुणदल है, जिसके नेता बाबा बिशनसिह हैं।

दल खालसा का वर्तमान रूप उसे १९७८ मे प्राप्त हुआ—अमृतसर में अकालियो और निरकारियो के टकराव मे लगभग २२ व्यक्ति मारे गये। उस समय कुछ उग्रवादियो ने यह धारणा फैला दी कि सिख धर्म की निरकारियो द्वारा जो आलोचना हो रही है, उसका मुकाबला करने के लिए एक लड़ाकू सस्था की अपेक्षा है। ६ अगस्त १९७९ को चण्डीगढ़ के सेक्टर ३५ के गुरुद्वारा अकालगढ़ मे कुछ उग्रवादी तत्वो ने बैठक की और सस्था का पुनर्गठन कर उसके सचालन के लिये पाँच व्यक्तियो की एक उच्चतम पचायत स्थापित कर दी। ये पाँच व्यक्ति थे—जसवन्तसिह ठेकेदार, हरसिमरणसिह, गजेन्द्रसिह, सतनामसिह और हरभगतसिह नारोवाल। उन्होने यह फैसला किया कि दल को अनौपचारिक रूप मे ही रखा जाएगा, जब भी धन की जरूरत होगी ये पाँचो इसे वहन करेगे अथवा अपने समर्थको और मित्रो से प्राप्त कर लेगे। गुप्तचर सूचनाओ के अनुसार दल खालसा को विदेशो से काफी धन प्राप्त हो जाने की उम्मीद थी।

इस खालिस्तान आन्दोलन के प्रवर्त्तक डा० जगजीतसिह भारत से कनाडा गए तब खालिस्तान आन्दोलन ने कुछ जोर पकडा। उन्होने अपने पासपोर्ट और डाक टिकट भी प्रचारित किये। 'दल खालसा' ने भी अपने कार्यक्रम को आगे बढाना आरम्भ कर दिया। २० मार्च, १९८१ को आनदपुर साहब में एक सिख कन्वेशन हुआ। दल खालसा के लोगो ने वहाँ खालिस्तान का ध्वज फहराया। उन्होने एक नक्शा भी प्रचारित किया, जिसमे खालिस्तान का क्षेत्र और सीमाए दिखाई गई थी। उसके बाद 'दल खालसा' के कर्णधार सिख सम्मेलनो मे खालिस्तान और दल खालसा के बारे मे प्रचार-साहित्य वितरण करते रहे। उनकी सदस्य [illegible] का कोई रिकार्ड न होने से यह नही कहा जा सकता कि उनकी गिनती कितनी है।

इस प्रकार 'खालिस्तान' के समर्थक दल खालसा को पुन: उभारने की कोशिश कर रहे हैं।

महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी समारोह

दीपावली १९८३ में अजमेर में आयोजित होगा

अजमेर। परोपकारिणी सभा अजमेर के प्रधान स्वामी ओमानन्द सरस्वती तथा सभा मन्त्री श्री करण शारदा ने विश्व भर की आर्य समाजो आर्यसस्थाओ एव आर्य जनता को एक सयुक्त वक्तव्य द्वारा सूचना दी है कि स्वराज्य और सुराज्य के सूत्रधार महर्षि दयानन्द सरस्वती के १०० वें निर्वाण दिवस पर सभा के तत्वावधान मे१९८३के दीपावली पर्व पर अजमेर मे महर्षि निर्वाण शताब्दी समारोह मनाया जाएगा। इस अवसर पर महर्षि की स्मृति स्थायी बनाने के लिए सभा की एक यज्ञशाला, पुस्तकालय, अतिथिगृह एव दयानन्द वेद शोध सस्थान के निर्माण की योजना है। शताब्दी समारोह एव स्मारक-निर्माण को पूर्ण करने के लिए उक्त सज्जनो ने २५ लाख रुपए की अपील की है।

हिंसा से हमारी रक्षा करें

ओ३म् पाहि नो अग्ने रक्षस: पाहि धूर्तेरराव्ण ।
पाहि रीषत उत वा जिघासतो बृहद्भानो यविष्ठय ।।ऋ.१-३६.१५

हे अग्निस्वरूप, परमेश्वर आप राक्षस से हमारी रक्षा करें, धूर्त-मायावी-छली-कपटी-अदानी-कृपण-कजूस से आप हमे बचाइए । हे महातेजस्वी एव अतिशय बलवाले प्रभो, हिंसा करने वाले, हिंसक इच्छा वाले से आप हमारी रक्षा करें ।

ओ३म्
आर्य सन्देश

गाय और गरीब की रक्षा : हर शिष्य का फर्ज !

भारत के गृहमन्त्री ज्ञानी जैलसिंह ने २९ अप्रैल के दिन राज्य सभा मे अमृतसर और पजाब के दूसरे नगरो मे व्याप्त अशाति की चर्चा करते हुए कहा था कि सिख मत के अनुसार गाय और गरीब की रक्षा करना हर शिष्य या सिख का फर्ज है, कोई सच्चा सिख मरी हुई गाय को भी नही छूता, उसे मारना तो सोचा भी नही जा सकता। सारे सिख-इतिहास मे यह ऐसी पहली घटना है ।' उसी दिन गृह मन्त्री ने यह ऐलान भी किया—'अमृतसर के दो मन्दिरो मे गायो के कटे हुए सिर लटकाये जाने के पीछे एक गहरी साजिश है, जिसमे विदेशी हाथ है। दल खालसा के लोग विदेशो के एजेंट हैं और उन्हे वहाँ से पैसा मिल रहा है। विदेशी ताकतें पृथकवादी तत्त्वो को उकसाकर भारत मे अस्थिरता पैदा करना और इसका पुन विभाजन करना चाहती हैं, जैसे मुरादाबाद और इलाहाबाद मे मस्जिदो मे सूअर का मांस फेका गया था, वैसे ही अब अमृतसर मे गायों के कटे सिर लटकाये जाने की घटना हुई है ।'

गृहमन्त्री के वक्तव्य से दो प्रश्न उठते हैं यदि मुरादाबाद-इलाहाबाद के दुष्कृत्यो के पीछे, गहरी साजिश और विदेशी हाथ है और उसे ही अमृतसर मे दुहराया गया है तो सरकार उन तत्त्वो को खुलकर देशद्रोही और अवाछनीय घोषित कर उनके विरुद्ध राष्ट्रद्रोही के तुल्य व्यवहार क्यो नही करती ? इसी के साथ दूसरा प्रश्न यह भी उठता है जब दल खालसा सगठन के लोग विदेशो के एजेट हैं तो उन्हे अभी तक खुला क्यो छोडा गया है ? यह भी उल्लेखनीय है कि इन्ही लोगो ने पिछले दिनो इण्डियन एयर लाइन्स के एक विमान का कृपाणो के बल पर अपहरण किया था, अब इस दल खालसा के लोगो ने अमृतसर के मन्दिरो के सामने यह नया दुष्कृत्य कर उसकी जिम्मेदारी ली है और भविष्य मे भी इस प्रकार के दुष्कृत्य करने की धमकी दी है ।' यह केन्द्र और प्रांतीय सरकार का पुनीत दायित्व है कि दोनो विदेशियों के इस दुष्कृत्य की तुरन्त रोकथाम करे। यह सूचना भी मिली है कि पंजाब मे दुष्कृत्य करने वाले शरारती तत्त्व इस तरह के कारनामे कर गुरुद्वारो या दूसरे धार्मिक स्थानो मे आश्रय ग्रहण कर लेते हैं। अमृतसर के दुष्कृत्य करने के बाद इन तत्त्वो ने नगर के धार्मिक स्थानो मे आश्रय लिया था और वही से प्रेस और प्रेस प्रतिनिधियो से सम्पर्क स्थापित किया था ।

यह प्रसन्नता की बात है कि देश के सभी राजनीतिक दलो एव धार्मिक सस्थाओं के प्रतिनिधियो ने अमृतसर की घटनाओ की निन्दा की है। अब यह केन्द्र और राज्य सरकार के ऊपर गम्भीर दायित्व आता है कि वे दोनो इन दुष्कृत्य करने वाले शरारती तत्त्वो के विरुद्ध सख्ती से कार्यवाही कर उनका उन्मूलन कर दे। यदि ये तत्त्व धार्मिक स्थानो मे आश्रय लेते हैं तो शासन का कर्त्तव्य है कि वे सार्वजनिक सुरक्षा कानून के अन्तर्गत ऐसे राष्ट्रद्रोही तत्त्वो के उन्मूलन के लिए कार्यवाही करे। पजाब और देश की दूसरी धार्मिक सस्थाओ के पदाधिकारियो का भी यह दायित्व है कि वे इन राष्ट्रद्रोही तत्त्वो को गैरकानूनी आश्रय देकर राष्ट्रद्रोह मे मदद न करें। यह कितने दुख और सन्ताप की बात है कि जिन सिख गुरुओ ने गाय और गरीब की रक्षा का व्रत लिया था और उसके लिए मुगल शासन के विरुद्ध बडी से बडी कुर्बानी दी थी, आज उनके ही तथा कथित शिष्य तम्बाकू पर प्रतिबन्ध के नाम पर गाय पर अत्याचार कर रहे हैं। यह सच्चा सिख या हिन्दू धर्म नही है, ऐसे गाय-घातक राष्ट्रद्रोही तत्वो की धर्म और राष्ट्र के कर्णधारो को निन्दा करनी चाहिये, प्रत्युत उनका बहिष्कार कर उनके विरुद्ध कडे से कडे दण्ड की व्यवस्था करनी चाहिए। आज शासन को केवल मौखिक सहानुभूति ही न दिखानी होगी, उसे राष्ट्र-विरोधी तत्त्वो के विरुद्ध खुलकर कडी कार्यवाही करनी होगी।

चिट्ठी-पत्री

आर्यसभा के संगठन का नया रूप

आर्यसमाज के वर्त्तमान संगठन का आधार बहुमत है। बहुमत को जुटाने के प्रयास मे आर्यसमाज के सिद्धान्तो, नैतिक मान्यताओ, योग्यता आदि की पूरी तरह अवहेलना हो रही है। आर्यसमाज के उपनियमो का अपवाद रूप मे भी पालन नही हो पाता। यह सब बहुमत का अभिशाप है कि आज आर्यसमाज मे अधिसख्य लोग ऐसे हैं जिनमे आर्यत्व का सर्वथा अभाव है। येन-केन प्रकारेण बहुमत जुटाने मे समर्थ व्यक्ति ऊंचे-से-ऊचे पद पर आसीन हो जाते हैं और योग्य तथा चरित्रवान व्यक्ति आर्यसमाज से दूर जा पडते हैं। इसलिए आर्यसमाज के सगठन मे आमूलचूल परिवर्तन आवश्यक है। इस दृष्टि मे कुछ सुझाव बुद्धिजीवी लोगो के विचारार्थ प्रस्तुत हैं—

१ मनु को प्रमाण मान कर महर्षि दयानन्द ने लिखा है—"यदि एक अकेला वेदो को जानने वाला, द्विजो मे उत्तम सन्यासी जिस धर्म की व्यवस्था करे, वही श्रेष्ठ धर्म है, क्योकि अज्ञानियो के सहस्रो, लाखो, करोडो मिलके जो कुछ व्यवस्था करे, उसको कभी न मानना चाहिये।"

२ एतदनुसार आर्यसमाज की सर्वोच्च सत्ता ५ विद्वान् सन्यासियो मे निहित होनी चाहिये। प्रथम बार इन सन्यासियो का चुनाव समस्त प्रातीय सभाओ की अंतरग सभाओ के सदस्यो से निर्मित निर्वाचक मण्डलो द्वारा किया जाए। तत्पश्चात रिक्त स्थानो की पूर्ति अवशिष्ट सन्यासी करते रहे।

२. उपर्युक्त सन्यासी मण्डल सर्वात्मना आर्यसमाज को समर्पित, पूरा समय आर्यसमाज के कार्य मे ही सलग्न किसी विद्वान तथा निर्दोष व्यक्ति (यथासम्भव सन्यासी) को सार्वदेशिक सभा का प्रधान नियुक्त करें। इस प्रकार नियुक्त सार्वदेशिक सभा के प्रधान के परामर्श से सार्वदेशिक सभा के प्रधान के गुणो से युक्त व्यक्तियो की प्रातीय सभाओ के अध्यक्षो की नियुक्ति भी उक्त सन्यासीमण्डल किया करे। अपने-अपने मन्त्रिपरिषद की नियुक्ति का अधिकार तत्तद् प्रधान अथवा अध्यक्ष को हो। मन्त्रिपरिषद की नियुक्ति इस प्रकार की जाए कि जो व्यक्ति जिस कार्य के लिए उपयुक्त हो उसे वही कार्य सौंपा जाये। तथा योग्यता के साथ-साथ यथासम्भव प्रतिनिधित्व का स्वरूप भी बना रहे। सार्वदेशिक तथा प्रातीय सभाओ के मन्त्री भी पूरा समय देने वाले विद्वान् ही होने चाहिए।

३. सार्वदेशिक सभा तथा प्रान्तीय सभाओ की अन्तरंग सभाओ का निर्माण मन्त्रिपरिषद की पद्धति पर किया जाये। आर्यसमाज के कार्य को विभिन्न विभागो मे बाट कर प्रत्येक विभाग के लिये मन्त्री, सचिव या अधिष्ठाता नियुक्त किया जाये। इस प्रकार नियुक्त होने वाले व्यक्ति के लिए आवश्यक होगा कि मन्त्रिपरिषद मे नियुक्त की अवधि मे अपना अधिक से अधिक समय उसे सौंपे गये काम मे लगाए।

४ प्रान्तीय सभाओ के साधन और सामर्थ्य सीमित होते हैं। इसलिए वे समूचे प्रान्त मे प्रचार की व्यवस्था नही कर पाते। यदि जिले और तहसील को इकाइयाँ मान कर अपने-अपने जिले और तहसील मे प्रचार व्यवस्था का दायित्व जिले तथा तहसील स्तर पर बनाए गए सगठनो को सौंपा जाए तो निश्चय ही प्रचार कार्य मे तीव्रता आ सकती है। इस दृष्टि से आर्यसमाज के विधान मे जिला तथा तहसील स्तर पर गठित उपसभाओ का प्रावधान होना चाहिए।

५. जिला उप-सभाओ के प्रधानो की नियुक्ति प्रान्तीय सभा के प्रधान द्वारा तथा तहसील सभाओ के प्रधानो की नियुक्ति जिला सभाओ द्वारा होगी। अपनी-अपनी कार्यकारिणी बनाने का अधिकार सम्बद्ध सभाओ के प्रधानो को होगा।

६. प्रत्येक स्तर पर सभाओ की साधारण सभाओ का सगठन अपने से निचले स्तर की सभाओ द्वारा होगा।

७. सर्वोच्च सत्ता सम्पन्न सन्यासीमण्डल के अतिरिक्त सभी नियुक्तियाँ तीन वर्ष के लिए होगी। साधारणतया एक बार तीन वर्ष के लिए नियुक्त अधिकारी को अगली ही बार दुबारा नियुक्त नही किया जाएगा। (शेष पृष्ठ ८)

वेद में न किसी व्यक्ति का वर्णन है न स्थान का

पिछले दिनो बिजनौर से प्रकाशित होने वाले 'प्रसाद के फूल' साप्ताहिक और 'राष्ट्रवेदना' दैनिक मे 'विश्वविख्यात जनपद बिजनौर' शीर्षक से एक लेख प्रकाशित हुआ था, वह लेख अत्यन्त भ्रामक धारणाओ और मान्यताओ पर आधारित था। उन धारणाओ और मान्यताओ से क्योकि आजकल के अधिकाश लोग प्रभावित हैं, अत बिजनौर से प्रकाशित होने वाले पत्रो के क्षेत्र से बाहर भी उन भ्रान्तियो का निवारण हो सके एतदर्थ यह लेख 'आर्य सन्देश' के लिए लिखना पडा।

लेखक महोदय ने अपने लेख के प्रारम्भ मे ही लिखा है 'वेद पुराणो, भूगोलो एव इतिहासो मे चर्चित माता सरस्वती का क्षेत्र, भगवान ब्रह्मा की लीलाभूमि, सप्त सिन्धु का क्षेत्र जो आज का भारतवर्ष कहलाता है, यूनानियो के अशुद्धोच्चारण के फलस्वरूप सप्तसिन्धु के स्थान पर हप्तहिन्दु तत्पश्चात हिन्दुस्तान कहलाया जाने लगा।'

वास्तविकता यह है कि वेद मे कही भी सरस्वती नाम के किसी व्यक्तित्व का वर्णन नही है। वेद व्यक्तियोके वर्णन का ग्रन्थ नही है और न ही ऐतिहासिक व भौगोलिक घटनाओ, परिस्थितियो और क्षेत्रो से उसका सम्बन्ध है। वह तो सार्वभौम, विश्वजनीन मौलिक सिद्धान्तो का प्रतिपादक ग्रन्थ है। वेद मे क्षेत्रो, व्यक्तियो, परिस्थितियो और घटनाओ का वर्णन तथा विवेचन वे लोग बताने का प्रयत्न करते हैं, जिनका वेद से दूर का भी परिचय वही और जो सर्वथा अभारतीय पाश्चात्य दृष्टिकोण से येन-केन-प्रकारेण प्रभावित और प्रेरित हैं।

वेद का प्रत्येक शब्द यौगिक है, रूढ नहीं। पश्चिम के लोगो विशेषकर अग्रेजो ने भारतीय सभ्यता और सस्कृति तथा भारतीय इतिहास को मिटाने के लिए जो भगीरथ प्रयत्न किया, उसके परिणामस्वरूप भारत का वर्तमान तथाकथित प्रबुद्ध जन बुरी तरह प्रेरित और प्रभावित है। खेद की बात यह है कि वेद मे किसी एक शब्द को देखकर उसके साथ मे प्रयुक्त होने वाले उसी वाक्य और उसी मन्त्र के दूसरे शब्दो के साथ उस शब्द की संगति बैठाने का प्रयत्न नही किया जाता, सूक्त अध्याय और मण्डलो के साथ तो सगति बैठाएगा ही कौन? और कौन मन्त्र के देवता को समझने का प्रयत्न करेगा?

महर्षि मनु के शब्दो मे 'वेद शब्देभ्य एवादो पृथक् सस्थाश्चनिर्ममे' अर्थात् आदिकाल में वेद के शब्दो से ही पृथक्-पृथक् व्यक्ति तथा सस्थाओ आदि के नाम रखे गए। अब किसी शब्द को ससार के किसी व्यक्ति, सस्था, नगर या नदी के नाम के रूप मे प्रयुक्त होता देख कर और फिर वेद मे उसे पाकर उसी व्यक्ति, सस्था, नगर या नदी का परिचायक यदि कोई बताने लगे तो उसमे दोष वेद का नही अपितु समझने वाले का है।

ऐसी ही बात उक्त लेख के लेखक महोदय ने 'सरस्वती' शब्द को लेकर वेद के विषय मे लिखी है। भूगोल और इतिहास की बात छोडिए—उन क्षेत्रो, नदी-पर्वतो, व्यक्तियो सस्थाओ आदि के नाम होते ही हैं।

दूसरी बात जो लेखक महोदय ने लिखी है, वह यह कि यूनानियो के अशुद्ध शब्दोच्चारण के फलस्वरूप 'सप्तसिन्धु' का 'हप्तहिन्दु' कहलाया जाने लगा। कुछ लोगो का यह कहना है कि सिन्धु नदी के किनारे रहने के कारण लोग आर्यों को हिन्दू कहने लगे, क्योकि फारसी मे 'स' को 'ह' हो जाता है।

प्रश्न यह है कि जब 'सकार' को 'हकार' हो जाता है, तब सिन्धु नदी का नाम परिवर्तित होकर हिन्दू नदी और सिन्धु प्रदेश का हिन्दू प्रदेश क्यो नही हुआ? जिन दोनो—नदी और प्रदेश के नाम मे 'सकार है, वे दोनो आज भी सिन्धु नाम से ही जाने जाते हैं, इसका क्या कारण है? उनके नाम से 'सकार' का लोप होकर उसका 'हकार ने क्यो नही लिया?

यहाँ तो मामला इसके नितान्त विरुद्ध है। 'आर्य' का 'हिन्दू' और आर्यावर्त्त' का हिन्दुस्तान' हो गया। 'आर्य' और 'आर्यावर्त्त' मे तो 'स' का प्रयोग है ही नही। उक्त मान्यता के अनुसार 'अ' का 'ह' होता नही—फिर यह क्या विचित्रता है? कारण स्पष्ट है कि 'सकार' के 'हकार' होने का प्रमाण मान कर युक्ति दी उस शब्द के विषय मे जहाँ 'सकार' नही हैं और 'अ' अथवा 'आ'—'स' है और न किसी काल मे 'सकारात्मक' ध्वनि देते हैं। कहते हैं कि सिन्धु नदी के किनारे रहने से आर्य हिन्दू हो गए। कमाल तो यह है कि दीपशलाका से अग्नि जलाई गई। पास मे रखी अगीठी मे आग जा लगी और दीपशलाका की नोक भी न जल सकी। यदि 'अ' अथवा 'आ' का 'ह' अथवा 'हा' होता तो 'आर्य' का 'हार्य' तथा 'आर्यावर्त्त' का हार्यावर्त्त' हो जाता—हिन्दू और हिन्दुस्तान फिर भी नही हो सकता था।

उक्त लेख के लेखक महोदय ने भी 'सप्तसिन्धु' का 'हप्तहिन्दु' बनना बताया है दृष्टिकोण वही 'सकार' को 'हकार' होने वाला है, परन्तु सप्तसिन्धु का इतिहास से कोई सम्बन्ध नहीं। भौगोलिक परिस्थिति मे केवल एक ही सिन्धु नदी है, अन्य नदियाँ सिन्धु कैसे बन गई! हाँ, पञ्चनद प्रदेश तो पांच नदियो के कारण से कहलाता रहा है, जिसमे सतलज, ब्यास, रावी, चुनाव और जहलम पांच नदियां बहती हैं और जो बाद मे मुस्लिम राज्य-काल मे फारसी मे परिवर्तित होकर 'पञ्च-आब' हो गया। हाँ, वेद में एक सिन्धु सूक्त है। भारतीय सस्कृति को मिटाने की ललक मे अग्रेजो ने वेद के सिन्धु सूक्त मे जो सेनाओ का वर्णन है उसे 'सप्तसिधु' नाम देकर यह सात नदियो का क्षेत्र बताने और वेद को असगतियो का पिटारा सिद्ध करने का असफल प्रयास किया है। सिंधु सूक्त पर कभी फिर अलग से लेखनी उठाए गे।

लेखक :
स्वामी वेदमुनि परिव्राजक
अध्यक्ष—वैदिक सस्थान नजीबाबाद (उ.प्र.)

हिन्दू शब्द की उत्पत्ति का रहस्य यह नही है और न इस कारण से आर्य हिन्दू बने और न आर्यावर्त्त हिन्दुस्थान अपितु हिन्दू शब्द मूलत. फारसी भाषा का है इसका अर्थ गुलाम, काला, काफिर चोर, बटमार, बदमाश, मस्सा और छछूंदर आदि होते हैं। इसे आज से लगभग तेरह सौ वर्ष पुरानी फारसी की 'गयासुल्लुगात' (शब्दकोश) मे देखा जा सकता है तथा उर्दू की 'करीमुल्लुगात' मे भी यह पढ़ा जा सकता है, वहाँ इसे स्पष्ट फारसी का शब्द लिखा है।

जब भारत पर मुस्लिम साम्राज्य की छाया पडी तब इन आक्रमणकारियों ने हमे सदा-सदा के लिए पददलित और परतन्त्र बनाए रखने के लिए यह नाम दिया और उन बेबसी की परिस्थितियों मे हमारे पूर्वजो ने इसे अंगीकार कर लिया। शताब्दियो तक पराधीन और पददलित रहते हुए अनेक पीढिया बीत गई। इस दीर्घकाल की अवधि मे हमारे गौरवपूर्ण वैदिक-विज्ञान, दर्शन-शास्त्र, और इतिहास के असख्य ग्रन्थ उन आक्रमणकारी मतान्ध लोगो ने अग्नि की भेट कर दिए।

जो कुछ कमी शेष रह गई थी, उसे पूरा कर दिया कूटनीतिज्ञ अग्रेजो ने अपनी शीतयुद्ध की नीतियो से बहुत कुछ तो वे सहस्रो-लक्षो ग्रन्थो के रूप मे यूरोप ले गए और शेषपर अपनी साम्राज्यवादी मनोवृत्ति की छाप लगाने के लिए प्रोफेसर मेक्समूलर को जर्मनी से बुलाकर ईसाइयत का मार्ग प्रशस्त करने और ब्रिटिश साम्राज्य को भारत मे सुदृढ करने के लिए वेदो के अशुद्ध, [illegible] तथा मनमाने अर्थ कराने प्रारम्भ कर दिए।

बोध-कथा

डरो मत, हिम्मत रखो !

काशी (वाराणसी) की घटना है। एक बार स्वामी विवेकानन्द काशी की एक तंग गली से गुजर रहे थे कि बन्दरों के एक समूह से उनका सामना हो गया। बन्दर गुर्राये तो स्वामी जी घबरा गए, वह कुछ चिल्लाकर पीछे हटने लगे कि बदर उन पर टूट पड़े, उनके कपड़े फाड़ दिये। स्वामी जी भागने लगे तो बन्दर किलकारियाँ मारते उनका पीछा करने लगे।

इतने मे दूर खड़े एक आदमी ने स्वामी जी को ढाढस दिया और कहा—डरो मत, हिम्मत से काम लो, बन्दरो का मुकाबला करो, इन्हें आँख दिखाओ, ये स्वयं ही डर जायेंगे।

उस व्यक्ति की सलाह पर विवेकानन्द जो ठहर गए। उन्होने हुंकार लगाई और बन्दरो को ललकारा। स्वामी जी के हिम्मत करते ही उनकी मुखमुद्रा देखकर बन्दर भाग गए।

उत्साह और साहस से ही सामान्य मानव धर्म और देश के सच्चे रक्षक बन गये।

—नरेन्द्र

आर्यो, आवश्यकता है अब सावधान रहने की!

—रूपकिशोर शास्त्री

आर्यसमाज, १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली

फूल मानवता के फिर से आज कुम्हलाने लगे,
भाई अपने भाइयो पर, कहर बरसाने लगे ॥
कुछ समझ बैठे थे हम, कुछ नजर आने लगे,
देश के टुकडे किए, हक और बतलाने लगे ॥
हमारे मित्र बनकर आए, हमसे दोस्ती करने लगे,
हमी से छल-कपट करते, उल्टे दम भरने लगे ॥
हमारे देश मे रहकर, हमे आँखें दिखाते हैं,
मिटाना चाहते हैं वे हमको, ध्यान यह धरने लगे

किसी योग्य कवि के ये दो कवित्त भारतवर्ष की आधुनिक परिस्थिति के लिए पूर्णत. सार्थक हैं। इस भव्य भूमि को पतन की ओर ले जाने मे मुख्यतया तीन कारण हैं—

१ सामाजिकता और धार्मिकता की ओट मे व्याप्त आडम्बर और पाखड २. राजनीतिज्ञो की भयकर भूल अदूर-दर्शिता और मानसिक तथा वैचारिक दासता, ३. वैदेशिक कुख्यात मिशनरियो का अमानवीय षडयन्त्र। प्रथम दो कारणो के बारे मे थोडी-बहुत जानकारी सबको है। तीसरे कारण के बारेमे स्पष्ट करना इस देश के प्रति पुनीत कर्त्तव्य है।

कुछ अशो तक यह स्वीकार किया जा सकता है कि सामूहिक या व्यक्तिगत धर्मपरिवर्तनों के पीछे तथाकथित सवर्ण और असवर्ण लोगो के मध्य छुआछूत, जातिपांत, आर्थिक शोचनीय स्थिति, सास्कृतिक अवहेलनाए आदि कारण रहे हैं। (ध्यान रहे धर्मपरिवर्तन शब्द उचित नही है। यह सम्प्रदाय प्रवेश अधिक उचित, परन्तु यह शब्द रूढ़ि हो चुका है।) लेकिन इनको शिक्षा तथा सुधा-रात्मक आन्दोलनो के माध्यम से दूर किया जा सकता है।

परन्तु सदियो से इस स्वर्णिम भूमि पर उन क्रूर आक्रान्ताओ व शासको की तलवार अपने सम्प्रदाय व मजहब मे आगमन या प्रवेश न करा सकी, कुछ व्यक्तिगत स्वार्थपरता के विकल्पो को छोड़कर। आज पूर्व की भाति तलवार दुष्ट बल तथा सामाजिक व साम्प्रदायिक या मजहबी कट्टरता नही, फिरभी इस देश की अखण्डता को अनवरत चुनौती देने मे कुछ शरारतपूर्ण सामूहिक मत व मजहब परिवर्तन कही-कही अवश्य हुए तथा सम्प्रत्यपि हो रहे हैं। अवश्य ही इसके पीछे मुख्य साजिश है।

सौभाग्य कहे या दुर्भाग्य, भारतवर्ष एक धर्म निरपेक्ष देश है। सभी को अपने अपने मत-मजहब धर्म आदि का प्रचार करने मे स्वतन्त्रता है। सामाजिक उत्पी-डन और दुर्व्यवहार की कथा-व्यथा के बाद जो एक और अह प्रश्न जुडा है, वह विदेशी धन का और मिशनरियो का। इस देश की शस्यश्यामला स्वर्णिम भूमि पर ईसाइयो द्वारा अपने सम्प्रदाय मे प्रवेश कराने की शुरुआत सर्वप्रथम सन् १८४२ ई० मे पूर्वाचल प्रदेशो मे फ्रासिस जेविअर नामक पादरी ने की। उसने सात लाख भारतीयो का अपने सम्प्रदाय या मजहब मे प्रवेश कराया। वैसे अग्रेजो के भारत मे पदार्पण के बाद १६७९ मे पादरी हिटवेन्स ने यहां आकर देश के ईसाईकरण का राष्ट्रघातक कार्य शुरू कर दिया। विदेशी ईसाई मिशनरियो ने यहा देश की गरीबी अशिक्षा, सामाजिक बुराइयो का अनुचित लाभ का अवसर जानकर दलित शोपित,पिछड़े तथाकथित हरिजन वर्ग को अच्छी नोकरियो सेवा-सुविधाओ, सामाजिक समानताओका नकली आश्वासन देकर आशातीत सफ-लता प्राप्त की। परिणामस्वरूप नागालैंड, मेघालय, मिजोरम तथा केरल आदि भारत के अचलो मे ईसाइयत के खून का फैलाव व बहाव हो गया है। इन ईसाई मिशनो को ईसाईकरणार्थ ईसाई देशो से प्रतिवर्ष लगभग चार अरब रुपए प्राप्त होते हैं।

धर्म निरपेक्षता के खुले आकाश मे ईसाइयो की आशातीत सफलता को देख कर सन् १९७३ ई० मे मध्य एशिया के अरब देशो ने मिलकर इस्लामीकरण की दुष्टभावना से 'पान इस्लामिक' नामक सघ की स्थापना की। मोरक्को से लेकर इण्डोनेशिया तक समूचे देशो का इस्लामीकरण करना इसका लक्ष्य था। इस लक्ष्य की पूर्त्यर्थ पहली बैठक मे ४०० करोड रुपए जमा किए गए। इस सगठन की शाखाए लन्दन, पेरिस आदि नगरो मे 'इस्लामिक कल्चरल सेंटर' के नाम से खोली गई। कुछ समय पूर्व लन्दन स्थित इस्लामिक सेण्टर ने एक मुस्लिम कानफ्रेन्स का आयोजन किया, उसमे २७ मुस्लिम देशो के प्रति-निधियो ने भाग लिया। १९ जनवरी ८० के अरब टाइम्स के द्वारा प्रकाशित समा-चार से रहस्योद्घाटन हुआ कि अकेली कुवैत सरकार ने ही इस्लामिक सेण्टर द्वारा भारत के इस्लामीकरण के कार्य के

(शेष पृष्ठ ६ पर)

आर्य जगत् समाचार

१२००० मुसलमान हिन्दू बने

हिन्दू शब्द राष्ट्रीयता का प्रतीक

जौनपुर। श्री सरस्वती सुमन के आह्वान पर लगभग बारह हजार मुस्लिम राजपूतों ने आर्य हिन्दू धर्म ग्रहण किया। यह भी ज्ञात हुआ है कि आगामी १५ मई ८२ को जौनपुर के मिशइपुर गांव के १८००० राजपूत मुसलमान हिन्दू धर्म ग्रहण करेंगे।



क्षत्रिय सम्मेलन के लगभग १ लाख जन-समह को सम्बोधित करतेहुए श्रीमती सरस्वती सुमन—

२८ फरवरी के दिन अ० भा० क्षत्रिय महासभा के विशाल जनसमूह को सम्बोधित करते हुए डा० आनन्द सुमन की धर्मपत्नी श्रीमती सरस्वती सुमन ने कहा—'हिन्दू कोई धर्म, सम्प्रदाय अथवा जाति नही, प्रत्युत हमारी सस्कृति और देश का नाम है। हिन्दू एक जीवन पद्धति है। आज प्रत्येक भारतीय की राष्ट्रीयता हिन्दू है, यदि वह स्वय को हिन्दू स्वीकार नही करता, तो वह देशद्रोही है, उसे भारत छोडना पडेगा।

पुनर्मिलन अभियान से देश की रक्षा

रविवार २५ अप्रैल को सदर बाजार (दिल्ली) आर्यसमाज के हिन्दू सम्मेलन में डा० आनन्द सुमन ने कहा—हिन्दू समाज को जाग कर अपने बिछडे हुए बन्धुओं को आत्मसात कर लेना चाहिये, क्योकि पुनर्मिलन से ही देश, धर्म और सस्कृति की रक्षा सम्भव है।

इस अवसर पर श्रीमती सरस्वती सुमन ने कहा—जैसे राणा प्रताप ने घास की रोटी खाकर भी हिन्दू धर्म की रक्षा की, उसी प्रकार महिलाओ को भी वर्तमान [illegible] करना चाहिये।

दो चिन्ताजनक समाचार :

सिन्ध में हिन्दू अरक्षित : दल खालसा का उत्तेजक कार्य

नई दिल्ली। पिछले दिनों दो समाचारों ने देश के सजग नागरिकों के सम्मुख चिन्ता पैदा कर दी है। पहला समाचार पाकिस्तान से आया है। पाकिस्तान में हिन्दू-सिख अल्पसंख्यक पहले ही निष्कासित कर दिए गये थे या उनका व्यापक सहार हो गया था, केवल सिन्ध मे सफाई का नाम करने वाले हिन्दू हरिजन ही वहाँ बच गये थे। २३ अप्रैल के दिन कराची से ४८० कि० मीटर दूर कशमोर मे शुक्रवार की नमाज के बाद मस्जिद से लौटते हुए मुसलमानो के एक समूह ने हिन्दुओ पर गोली चलाई, उनके मकान जला दिये और हजारो की सम्पत्ति लूट ली। हिंदू अल्पसख्यको ने दगाइयो का मुकाबला किया। दगाइयो को नियन्त्रण करने के लिये पुलिस को आँसू गैस का प्रयोग करना पडा।

दूसरा समाचार अमृतसर का है। २६ अप्रैल के दिन अमृतसर के दो मदिरो के सामने गायों के सिर लटके मिले। इसके बाद दो गुटों के बीच संघर्ष रोकने के लिये पुलिस ने आँसू गैस के गोले छोडे। गायों के सिर काटे जाने के विरोध में अमृतसर मे सभी दुकानें और व्यावसायिक प्रतिष्ठानो मे हडताल रही।

दल खालसा के मुख्य पच श्री मन-मोहनसिह ने इन घटनाओ के लिये अपने दल के ऊपर जिम्मेदारी ली है। उन्होने भविष्य मे भी ऐसी घटनाएं होने की सम्भावना से इन्कार नही किया, उन्होने माँग की कि अमृतसर मे सिगरेट पर प्रतिबन्ध लगना चाहिये।

भारत के सांस्कृतिक प्रतीक नष्ट करने की निन्दा

आन्ध्र प्रतिनिधि सभा के नए पदाधिकारी

प्रधान—प० रामचन्द्रराव कल्याणी, उपप्रधान—श्री देवेन्द्रनाथ भनोट, श्री के. पी गगाधर, डा० गोविन्दराव गोजे, मन्त्री—डा० विजयवीर विद्यालकार, उपमन्त्री—श्री के माणिकराव शास्त्री, श्री वी नागमलप्पा, श्री के वेंकट रेड्डी, कोषाध्यक्ष—श्री बी किशनलाल।

२५ अप्रैल को हुई बैठक मे आन्ध्र प्रतिनिधि सभा ने हैदराबाद और जिलो मे मुस्लिम तत्वो द्वारा भारत के सास्कृतिक प्रतीको को मिटाने की कुचेष्टाओ की निन्दा की और सरकार से माग की कि वह इन तत्वो के विरुद्ध कडी कार्यवाही करे।

आवश्यकता है सावधान… (पृष्ठ ५ का शेष)

सहायतार्थ ५० हजार पौण्ड अर्थात् नौ लाख रुपए दिए।

इस्लामिक सेंटर के डायरेक्टर मोहम्मद अब्दुल खैर बदावी ने भारत का अध्ययन कर अपनी रिपोर्ट देते हुए कहा कि वर्त्तमान समय मे हरिजनो को मुसलमान बना कर २० करोड मुस्लिम आबादी बडी सरलता से की जा सकती है। उमने कहा कि इस्लामीकरण का ऐसा अवसर कभी नही आएगा।

'इण्डिया ए बोड' न्यूयार्क से प्रकाशित पत्रिका मे २० फरवरी ८० के अक मे प्रकाशित समाचारानुसार देवबन्द सहारनपुर स्थित दारुल-उलूम की शताब्दी समारोह मे अरब देशो के प्रतिनिधियो ने भाग लिया, और सऊदी अरब के प्रतिनिधि शेख अब्दुल्ला अब्दुल अल-तुन्की ने सस्था को इस षडयन्त्रपूर्ण कार्य करने हेतु २२ हजार ६ सौ पौण्ड दान के रूप में दिए। इराक के प्रतिनिधियो ने भी पर्याप्त धन दिया।

पिछले वर्ष आरम्भ मे हैदराबाद मे जमाते इस्लामी कुल हिन्द के वार्षिक अधिवेशन पर काफी जोर दिया। दक्षिण भारत के एक प्रमुख दैनिक ने अपने २३ सितम्बर के अक मे यह सनसनीपूर्ण खबर छापी कि 'जमाते इस्लामी हिन्द और इण्डियन यूनियन मुस्लिम लीग के लोग अपने मजहब या सम्प्रदाय में प्रवेश कराने के लिए बहुत सक्रिय हैं। इसी का परिणाम मीनाक्षीपुरम हुआ है।

अरब की इशातुल इस्लाम और कवीता-ए-आलम-ए-इस्लाम [illegible] कुयोजना अगले वर्ष के अन्त तक किसी भी तरह दो लाख हरिजनो को मुसलमान बनाने की है। नव मुस्लिमो के लिए ६० हजार रुपए खर्च हुए। यह धनराशि इस्लामिक देशो से प्राप्त हुई।

स्पष्ट है कि सामूहिक व वैयक्तिक रूप से इस्लामिक व ईसाइयत [illegible] या या मजहब मे गिराने का मु[illegible] विदेशी मिशनो व मिशनरि[illegible] की इस देश केऊपर गिद्धदृष्टि पड़ी हुई है।

परन्तु अब जागृति हो चुकी है। पहले भी विदेशी विधर्मी आक्रान्ताओ ने आर्य हिन्दू सस्कृति के अस्तित्व को मिटाने की कोशिश की, लेकिन अब तलवार का नही धार्मिक तथा सामाजिक परिवेश का सघर्ष है। किसी कवि ने सटीक कहा है—

उठ खडे हो हिन्दुओ,
काफी जलालत हो चुकी।
बुजदिलो मर्दानगी सीखो,
नजाकत हो चुकी।
लाल लाखो कौम के,
गैरो अब तक दे चुके।
क्या गजब करते हो,
रहने दो सखावत हो चुकी।

आर्यसमाजों के सत्सग

९ मई '८२

अन्धा मुगल-प्रतापनगर—प० सोमदेव शास्त्री, अमर कालोनी—आचार्य हरिदेव सि. भू., अशोक विहार के. सी. ५२ ए—आचार्य दीनानाथ सिद्धातालकार, आर्य पुरा—प० रामनिवास; आर. के. पुरम सेक्टर-६—प० मनोहरलाल ऋषि भजनोपदेशक; आनन्द विहार—प० गणेशप्रसाद विद्यालकार; कालकाजी डी. डी. ए. फ्लेट—प० सत्यपाल 'मधुर' भजनोपदेशक; कालका जी—श्रीमती लीलावती आर्या, करोल बाग—डा० रघुनन्दनसिंह, गाधीनगर—प० प्रकाशचन्द वेदालकार; गीता कालोनी—प० जयभगवान भजन मण्डली, ग्रेटर कैलाश २.—पं० देवराज वैदिक मिश्नरी, गुड मण्डी—प० ओमप्रकाश भजनोपदेशक, गुप्ता कालोनी—प० हरिदत्त शास्त्री; गोविन्द भवन-दयानन्द वाटिका—प० उदयपाल शास्त्री; चूना मण्डी-पहाडगज—प० रामलाल शास्त्री, जगपुरा-भोगल—प० तुलसीराम भजनोपदेशक, जनकपुरी सी. ३—प० देवेश, तिलक नगर—प० विश्वप्रकाश शास्त्री तिमारपुर—प० कामेश्वर शास्त्री, दरियागंज--ला० लखमीदास, नारायण विहार—पं० भगवान सहाय विद्यावाचस्पति, नया बांस—प० खुशीराम शर्मा, न्यू मुलतान नगर—प० रामरूप शर्मा, न्यू मोतीनगर—प० रघुराज शास्त्री, निर्माण विहार—डा० सुखदयाल भूटानी, पजाबी बाग—प० जैमुनि शास्त्री, पजाबी बाग एक्सटेन्शन—स्वामी विश्वेदेवानन्द, बाग कड़े खां—प० बरकतराम भजनोपदेशक, मोडल बस्ती—श्रीमती सुशीला राजपाल, महावीर नगर—श्री मोहनलाल गांधी, महरौली—प० आशानन्द भजनोपदेशक, रमेश नगर—श्रीमती प्रकाशवती शास्त्री, राणा प्रताप बाग—प० ईश्वरदत्त, रोहतास नगर—प्रो० वीरपाल विद्यालकार, लड्डू घाटी पहाडगज—प० मुनिशकर वानप्रस्थ, लाजपतनगर—प० ओमवीर शास्त्री; लेखराम-नगर-त्रिनगर—प० भुवनेश्वरनाथ त्रिपाठी; लारेंस रोड—प० सुधाकर-स्नातक; लोधी रोड, जोर बाग—प्रो० सत्यपाल बेदार; विक्रम नगर—प० हरिश्चन्द्र, विनय नगर—डा० रघुवीर वेदालकार, सदर बाजार पहाडी धीरज आचार्य नरेन्द्र, सुदर्शन पार्क—प्रो० भारतमित्र शास्त्री, सराय रोहेला—प० प्रकाशचन्द शास्त्री, सोहनगंज—श्री महावीर बत्रा; शालीमार बाग—प० रविदत्त गोतम, शादीपुर—प० सीताराम भजनोपदेशक; हौज खास डी-२० प्रात. ८॥ से १॥ बजे—प० छविकृष्णशास्त्री, सरस्वती विहार—प० प्रकाशवीर 'व्याकुल'।

—ज्ञानचन्द डोगरा, वेद प्रचार-प्रबन्धक

डा० भारतीय को गोवर्द्धन पुरस्कार

हरिद्वार। गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के कुलपति श्री बलभद्र कुमार हूजा द्वारा दी ४२ हजार वेतन की धनराशि से गुरुकुल के सस्थापक स्वामी श्रद्धानद जी के समय के मुख्याध्यापक प्रो० गोवर्धन जी की स्मृति मे स्थापित १ हजार रुपये का नकद,श्रीगोवर्द्धन पुरस्कार इस वर्ष सघड विद्या सभा अजमेर द्वारा गुरुकुल कागडी के वार्षिकोत्सव पर १० अप्रैल के दिन चण्डीगढ विश्वविद्यालय के दयानन्द पीठ के अध्यक्ष डा० भवानीलाल भारतीय को आर्यसमाज एव महर्षि दयानन्द के निर्दिष्ट मार्ग पर प्रशसनीय कार्य के लिए दिया गया है।

आर्यसमाज गन्नौर शहर की रजत जयन्ती

आर्यसमाज गन्नौर शहर (सोनीपत) हरियाणा का रजत जयन्ती उत्सव १८, १९, २० जून को मनाया जाएगा। इस अवसर पर सुप्रसिद्ध सन्यासी, महात्मा, विद्वान् एवं भजनोपदेश पधार रहे हैं।

विशाल आर्य युवक प्रशिक्षण शिविर

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली द्वारा २७ मई से ६ जून, १९८२ तक गुरुकुल गदपुरी (बल्लभगढ) मे आर्य युवक प्रशिक्षण शिविर आयोजित किया जाएगा। शिविर म अपने बच्चे व नौजवान भेजे।

गुरुकुल कांगड़ी का सग्रहालय दर्शनीय

जर्मन सघीय गणराज्य के नई दिल्ली स्थित दूतावास के मन्त्री श्री एच० वैगनर ने गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय के कुलपति श्री हूजा के नाम एक पत्र लिखकर अपनी गुरुकुल-यात्रा का स्मरण करते हुए घोषित किया है कि प्रत्येक विदेशी के लिए ही नही प्रत्युत प्रत्येक भारतीय के लिये भी आपका म्यूजियम सग्रहालय एक सच्चा कोषागार है। विश्वविद्यालय द्वारा प्रदर्शित सेवा की भावना से मैं विशेष प्रभावित हुआ हू।

पाणिनि कन्या महाविद्यालय वाराणसी का ११वाँ वार्षिकोत्सव

पाणिनि कन्या महाविद्यालय वाराणसी का ११ वा वार्षिकोत्सव दि. २८, २९, ३० मई को मनाया जाना निश्चित हुआ है।

इस अवसर पर सर्वश्री पू. स्वामी नारायणमुनिश्चतुर्वेद. ज्वालापुर, डा० वेदप्रताप वैदिक दिल्ली एवं पू. प० शातिप्रकाश शास्त्रार्थ महारथी गुड़गांवा पधार रहे हैं।

आर्यसमाज किशनगज के नए पदाधिकारी

प्रधान—श्री सोहनलाल तुली, उपप्रधान—डा० एम० एस० कामरा, उपप्रधाना—श्रीमती प्रकाशवती भसीन, मन्त्री—श्री जे. पी पाठक, उपमन्त्री—ठाकुर फूलनसिंह वर्मा, कोषाध्यक्ष—श्री पूरनचन्द साहनी, पुस्तकाध्यक्ष—श्री श्रीनिवास शर्मा।

आर्यसमाज नरेला का वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज नरेला का वार्षिकोत्सव २९-३० मई को मनाया जाएगा, इस अवसर पर कई आर्य विद्वान् एव भजनोपदेश पधारेंगे।

चम्पारन जिला आर्यसभा के पदाधिकारी

प्रधान—श्री सत्यनारायण राम आर्य, सरक्षक—श्री शिवशंकर प्रसाद, उपप्रधान—श्री योगेन्द्रप्रसाद, श्री रामवृक्षलाल, श्री रामाज्ञा वैरागी, प्रधानमन्त्री—श्री बी० के० शास्त्री, उपमन्त्री—प० राधाकात द्विवेदी।

दरभंगा आर्यसभा के पदाधिकारी

दरभगा प्रमण्डल की आर्य सभा ने ४ अप्रैल की अपनी बैठक मे निश्चय किया कि आर्यों के मध्य गुण, कर्म एव स्वभाव के आधार पर विवाह सम्बन्ध स्थापित करने के लिए आर्य परिवार परिषद की स्थापना की गई। दरभगा आर्यसभा के पदाधिकारी प्रधान—श्री सोनेलाल आर्य, उपप्रधान—श्री केशोसिंह आर्य, मन्त्री—श्री सीताराम आर्य, सगठनमन्त्री—श्री नवलकिशोर शास्त्री।

महात्मा वेद भिक्षु: पर हैदराबाद में अभियोग स्थापित

हैदराबाद। डाक से। अखिल भारतीय हिन्दू रक्षा समिति के अध्यक्ष महात्मा वेदभिक्षु व दक्षिण प्रदेशीय हिन्दू रक्षा समिति के मंत्री श्री जगतसिंह पर १० जनवरी १९८२ को हैदराबाद मे दिए भाषण के आधार पर आन्ध्र सरकार ने धारा १५३ एव २९५ ए के अन्तर्गत सुल्तान बाजार थाने मे अभियोग स्थापित किया है।

महात्मा वेदभिक्षु ने इस अभियोग का स्वागत करते हुए—शासन को चेतावनी दी है कि वह मुस्लिम तुष्टिकरण की नीति छोड़े अन्यथा देश की आजादी सकट मे पड़ जाएगी।

विनय नगर में राष्ट्ररक्षा महासम्मेलन

आर्यसमाज विनयनगर का वार्षिकोत्सव ३ से ९ मई तक सरोजिनी मार्केट पार्क (पजाब नेशनल बैंक के सामने) सरोजनी नगर मे मनाया जाएगा। इन दिनो प्रातः स्वामी दीक्षानन्दजी सरस्वती के ब्रह्मत्व मे सामवेद पारायण यज्ञ होगा और प्रति रात्रि को स्वामी जी वेदकथा प्रस्तुत करेंगे।

शुक्रवार ७ मई को रात्रि के ७ से १० बजे तक सार्वदेशिक सभा के प्रधान ला. रामगोपाल शालवाले की अध्यक्षता मे राष्ट्ररक्षा महाभियान सम्मेलन होगा, उसका उद्घाटन डा. कर्णसिह करेंगे। इस सम्मेलन मे श्री जयप्रकाश आर्य, डा. आनन्द सुमन, ब्र. आर्यनरेश और भारत सरकार के श्रमउपमन्त्री श्री धर्मवीर अपने विचार व्यक्त करेंगे।

गुरुकुल करतारपुर में नया प्रवेश

श्री गुरु विरजानन्द वैदिक सस्कृत महाविद्यालय करतारपुर जिला जालन्धर मे नया प्रवेश जून १९८२ के प्रथम सप्ताह मे हो रहा है। प्रवेश के लिए कक्षा ६ उत्तीर्ण होना आवश्यक है। पाठ्य विषयो मे हिन्दी, गणित, अग्रेजी, विज्ञान आदि के साथ-साथ सस्कृत तथा वेदार्थसिद्धान्त का विशेष स्थान है। शिक्षा का माध्यम हिन्दी है। परीक्षाओ का सम्बन्ध गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय हरिद्वार से है। नियमावली के लिए पत्र-व्यवहार करें।

आर्यसमाज के संगठन……

(पृष्ठ ३ का शेष)

८. तहसील स्तर से सार्वदेशिक स्तर तक के 'नियमों' मे एकरूपता की दृष्टि से सार्वदेशिक सभा एक व्यापक सविधान का निर्माण करेगी।

९. राजनीतिक क्षेत्र मे सक्रिय व्यक्तियो को आर्यसमाज के संगठन मे किसी पद पर नियुक्ति न की जाए।

१०. इन नियमो के अनुरूप आर्यसमाज के उपनियमो मे अपेक्षित सशोधन किए जाए।

—विद्यानन्द सरस्वती डी १४/१६ माडल टाउन, दिल्ली

आर्यसमाज के वर्त्तमान सगठन मे व्याप्त अपूर्णताओ को दूर करने के लिए स्वामी विद्यानन्द जी महाराज ने जो सुझाव प्रस्तुत किये हैं, आशा है कि आर्यसमाज की प्रतिनिधि सभाएं एव आर्यजन उन पर सहानुभूति से विचारकर अपने विचार प्रकट करेंगे।

—सम्पादक

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रकाशन

सत्यार्थप्रकाश सन्देश (हिन्दी)	१.००
,, ,, अंग्रेजी	समाप्त
आर्य सन्देश-महासम्मेलन विशेषांक	६.००
पादरी भाग गया— ओम्प्रकाश त्यागी	०.३०
स्वामी श्रद्धानन्द-बलिदान अर्द्ध शताब्दी स्मारिका	६.००
सत्यार्थप्रकाश शताब्दी समारोह स्मारिका	६.००

सम्पर्क करें—
अधिष्ठाता प्रकाशन विभाग
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
१५ हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए श्री सरदारी लाल वर्मा द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित तथा भाटिया प्रेस २५७४, रघुबरपुरा नं० २ गांधी नगर दिल्ली-३१ मे मुद्रित। कार्यालय १५ हनुमानरोड, नई दिल्ली फोन ३१०१५०

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक मुखपत्र

एक प्रति ३५ पैसे वार्षिक १५ रुपये वर्ष ६ अंक २६ रविवार १६ मई ३ ज्येष्ठ वि० २०३९ दयानन्दाब्द—१५८

९ मई को देश भर में गोरक्षा एवं पंजाब सुरक्षा दिवस

देश के साम्प्रदायिक तत्वों की तीव्र भर्त्सना : सार्वदेशिक सभा और दिल्ली प्रतिनिधि सभा के प्रधानों का आह्वान

दिल्ली। रविवार ९ मई, १९८२ के दिन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले के आह्वान पर भारत भर की आर्य समाजो, शिक्षण सस्थाओ एव राष्ट्रवादी सगठनो ने अपने साप्ताहिक अधिवेशनो के अवसर पर गोरक्षा एव पजाब सरक्षण-दिवस मनाया।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सरदारीलाल वर्मा ने भी एक पत्रक इस सम्बन्ध मे भेजा था, जिसके अनुसार दिल्ली भर की आर्य समाजो ने साप्ताहिक सत्सगो के अवसर पर सार्वजनिक सभाए कर भारत के सीमाप्रान्त मे देश विरोधी साम्प्रदायिक तत्वो द्वारा झगडे करवाकर भारत को क्षति पहुचाने की मनोवृत्ति की भर्त्सना की गई।

श्री शालवाले ने एक वक्तव्य मे कहा है कि कुछ देशद्रोही तत्वो द्वारा अमृतसर मे गऊओ के सिर काट कर मदिरो के सामने लटकाए जाने का जो जघन्य काड हुआ है, उससे देश की धार्मिक जनता मे भारी हलचल पैदा हो गई है। दल खालसा और खालिस्तानी कौंसिल पर प्रतिबन्ध लगाए जाने के आदेश का स्वागत करते हुए उन्होने कहा कि प्रधानमत्री और भारत सरकार का धन्यवाद किया जाय।

उन्होंने कहा—समय आ गया है कि भारत सरकार गोरक्षा के प्रश्न पर गम्भीरता से विचार करे। उन्होने इस बात पर खेद प्रकट किया कि प्रधानमत्री की घोषणा के अनन्तर भी रेलवे और रोडवेज द्वारा गोधन पहले की भाति केरल और बगाल को भेजा जा रहा है और रेलवे ने कोई अध्यादेश इस सबध में आज तक जारी नही किया।

कलकत्ते जाने वाली सैकड़ों गाएं रोकी गईं

अजमेरी गेट माल गोदाम पर आर्यसमाज के नेताओं का सफल धरना

नई दिल्ली। सोमवार १० मई को दोपहर के समय सार्वदेशिक सभा मे यह सूचना पहुचने पर कि हरियाणा से दिल्ली होकर सैकडों की गिनती मे गाए, भैसे, बछडे, बैल आदि कलकत्ता भेजे जा रहे हैं और इस समय दिल्ली के अजमेरी गेट स्थित मालगोदाम मे रेल के डिब्बो मे भरे हुए खडे हैं, सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले अपने सहयोगियो समेत मालगोदाम मे खडे रेल डिब्बो के सम्मुख जा खडे हुए। थोडी देर मे माइक द्वारा सारे शहर मे यह सूचना प्रसारित कर दी गई।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सरदारीलाल वर्मा अपने कार्यकर्ताओ के साथ अ० भा० गोसेवा सघ के कार्यकर्ता तथा ओ३म् की पताका लिए आर्य वीर बडी गिनती मे धरने के स्थान पर पहुच गए।

उल्लेखनीय है कि दिल्ली से गोए, बैल, तथा गोवश का बाहर निर्यात करना अवैध है। धरने को देखकर प्रमुख रेल और पुलिस अधिकारी मौके पर पहुच गए और उन्होने आर्य नेताओ को विश्वास दिलाया कि दिल्ली के कानून का उल्लघन कर इन गायो, बैलो, भैसो आदि का लदान कलकत्ते को नही किया जाएगा।

अधिकारियो का आश्वासन मिलने पर रात को ७॥ बजे के लगभग आर्य नेता और आर्य कार्यकर्ता गोमाता की जय के नारे के जयघोष के साथ वहां से विदा हुए। मालगोदाम पर रेल के डिब्बों की निगरानी के लिए वहाँ आर्य कार्यकर्ता डटे हुए हैं।

धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुँचाने वालों की तीव्र भर्त्सना : दिल्ली के धार्मिक संगठनों द्वारा

नई दिल्ली। रविवार ९ मई के दिन दक्षिणी दिल्ली के एक सनातन धर्म मन्दिर मे दिल्ली भर के प्रमुख धार्मिक सगठनो के नेताओ ने और प्रतिनिधियो ने एकत्र होकर यहां राजधानी मे धार्मिक भावनाओ को ठेस पहुचाने वाली हाल की कुछ घटनाओं की तीव्र भर्त्सना की है। नेताओ ने यह आरोप भी लगाया है कि सरकार इन अपराधियो को पकडने मे नरमी बरत रही है। सभा मे दिल्ली के उपराज्यपाल श्री एस० एल० खुराना से स्थिति पर नियन्त्रण करने के लिए फौरन कार्यवाही करन की माग की है।

इस विशेष सभा मे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले तथा सनातन धर्म सभा के मन्त्री श्री प्रेमचन्द्र गुप्ता भी उपस्थित थे।

विराट हिन्दू समाज के अध्यक्ष डा० कर्णसिंह ने धार्मिक भावनाओ को ठेस पहुचाने वाली घटनाओ पर गम्भीर चिन्ता व्यक्त करते हुए इसे कुछ उग्रवादी तत्वो द्वारा धार्मिक शाति भग करने का एक सुनियोजित प्रयास बतलाया।

पंजाब सास्कृतिक सघ के महासचिव श्री अवतारसिंह ने घोषित किया कि गाय हिन्दू तथा सिख दोनो सम्प्रदायो के लिए समान रूप से पूजनीय है। सरकार को दिल्ली मे साम्प्रदायिक सौहार्द कायम करने के लिए सौहार्द समिति का गठन करना चाहिए, जिसमे हिन्दुओ और सिखो, दोनो के प्रतिनिधि होने चाहिएं।

हिन्दू रक्षा दल ने लाजपतनगर के सनातन धर्म मन्दिर मे मांस फेंके जाने को एक षडयन्त्र बताते हुए सरकार को इस काण्ड के दोषी तत्वो को तुरन्त बन्द करने की मांग की है।

दिल्ली की विभिन्न समाजों के वार्षिकोत्सव

दिल्ली। रविवार ९ मई के दिन कई आर्यसमाजो के वार्षिकोत्सव धूमधाम से मनाए गए।

आर्यसमाज विनय नगर (सरोजिनी नगर) स्वामी दीक्षानन्द जी सरस्वती के ब्रह्मात्व मे सामवेद पारायण यज्ञ की पूर्णाहुति हुई। प्रात १० बजे से १२ बजे तक राष्ट्र रक्षा सम्मेलन आयोजित किया गया।

आर्यसमाज अशोक विहार २ का शिलान्यास

आर्यसमाज अशोक विहार फेज-२ दिल्ली-५२ के भवन का शिलान्यास एव नौवा वार्षिकोत्सव सम्पन्न हुआ। रविवार को प्रात ९ बजे स्वामी जगदीश्वरानन्द जी के ब्रह्मात्व मे चल रहे आत्मपावन यज्ञ की पूर्णाहुति हुई। इस अवसर पर माता शातिदेवी जी के भजन हुए। आर्यसमाज का शिलान्यास महात्मा गणेशदास जी अग्निहोत्री ने किया। इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले, कोषाध्यक्ष श्री सोमनाथ एडवोकेट, केन्द्रीय आर्य सभा के प्रधान महाशय धर्मपाल जी, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सरदारीलाल वर्मा आदि ने अपनी शुभ कामनाए प्रकट की। कई आर्य सस्थाओ एव आर्य सज्जनो ने आर्थिक सहयोग देने की भी घोषणा की।

आर्यसमाज सरस्वती विहार-दिल्ली-२४ का वार्षिकोत्सव रविवार ९ मई के सरस्वती विहार के बी ब्लाक स्थित आर्यसमाज मन्दिर के प्रागण मे सम्पन्न हुआ।

सम्पादक—नरेन्द्र विद्यावाचस्पति

व्यवस्थापक—प्रद्युम्नलाल तलवाड़

वेद-मनन

इन्द्र हमें सर्वत्र अभय करे

इन्द्र आशाभ्यस्परि सर्वाभ्यो अभय करत् । जेता शत्रून्विचर्षणि. ॥

ऋक् २-४१-१२

—मनोहर विद्यालकार

ऋषि —गृत्समद । देवता—इन्द्र । छन्द —निचृद् गायत्री ।

शब्दार्थ (विचर्षणि:) विविध प्रकार और विशिष्ट रूप मे देखने वाला (शत्रून् जेता) शत्रुओ को जीतने मे समर्थ (इन्द्र) ऐश्वर्यशाली परमात्मा (सर्वाभ्य) सब आशाभ्य) दिशाओ मे और दशाओ मे, (हमे (परि) पूर्णत (अभय करत्) निर्भय करे ।

निष्कर्ष—परमेश्वर सर्वद्रष्टा होने से शत्रुओ को जीतने मे समर्थ है । मनुष्य भी अपनी दृष्टि को जितना विविध और विशाल बनाएगा, शत्रुओ को जीतने मे उतना ही समर्थ बनेगा ।

परमेश्वर इस ब्रह्माण्ड का पिता, पालक और रक्षक है । वह सबकी उन्नति चाहता है, जिसे उसकी दयालुता पर पूर्ण विश्वास है, और जिस पर उसकी कृपादृष्टि है, उसे किसी भी दशा मे और किसी भी स्थान पर भय नही लगता । वह सर्वत्र अपने पिता और सखा का राज्य मानकर निर्भय विचरता है । 'सख्ये त इन्द्र वाजिनो मा भेम शवसस्पते' ऋक् १.११.२

परमेश्वर सर्वसमर्थ विजेता होने के साथ ही न्यायकारी दयालु भी है । वह किसी को परिश्रम और योग्यता से कम नही देता । माता-पिता के समान सबको सुखी रखना चाहता है, और उन्नत होने के लिए मार्ग-दर्शन करता है । इसलिए भय या विपत्ति के समय आत्म निरीक्षण करना चाहिए, अपनी कमी को देखकर दूर करने का प्रयत्न लाभकर होता है, न कि दूसरो को दोष देना ।

मनुष्य के अन्दर ईर्ष्या और द्वेष छिपे हुए है, ये ही भय उत्पन्न करते हैं । इनके बढ़ने के साथ-साथ, मनुष्य काल्पनिक सभावनाओ के आधार पर भयाक्रान्त रहने लगता है । वह अपने मे द्वेष की मात्रा जितनी कम करता जाता है, उसी अनुपात मे निर्भयता बढ़ती जाती है ।

'बाधता द्वेषो अभय कृणोतु' यजु २०-५१

विशेष—इस मन्त्र के ऋषि गृत्समद का शब्दार्थ सकेत करता है कि हमे जो मिला है उसे अपना कर्मफल समझ कर सतोष रखना चाहिए, दूसरो से ईर्ष्या न करके, प्राप्त के लिए परमेश्वर का धन्यवाद करना चाहिए ।

यदि कर्मफल मे अटल विश्वास के साथ प्राप्त के लिए कृतज्ञता की भी भावना बनी रहेगी तो वह एक न एक दिन इन्द्र सखा (समानख्यान) बन ही जाएगा ।

इस मन्त्र के छन्द निचृद् गायत्री का शब्दार्थ भी इन्द्र बनने के साधन के रूप मे आत्मनिरीक्षण और प्रभु गुणगान का ही निर्देश करता है ।

अर्थपोषक प्रमाण—

विचर्षणि:—पश्यति कर्मा । नि ३-११ विविध विशेषेण पश्यतीति ।

१ साक्षाद्द्रष्टा परमेश्वर , सर्वद्रष्ट-व्यद्रष्टामनुष्यो वा । स्वामी दया०

आशा—दिशा, दशा, इच्छा । निचृत् —नि (अन्दर) + चृत् चृती ग्रन्थने ।

५५२ ईश्वर भवन, खारी बावली, दिल्ली-६

बोध-कथा

समय की कीमत !

नेपोलियन बोनापार्ट इतिहास के महान् विजेताओ मे परिगणित किए जाते है । वह समय की कीमत को भली प्रकार जानते थे, यही कारण है कि वह अपने दृढ निश्चय, उत्तम गुणो के कारण एक सामान्य व्यक्ति से फ्रास के महापुरुषो मे परिगणित हो गए हैं । कहते है कि नेपोलियन अपनी घडी का अध्ययन इस प्रकार किया करते थे कि जिस प्रकार लडाई के नक्शे का । एक बार उनका एक मन्त्री निर्धारित समय से दस मिनट विलम्ब से आया । नेपोलियन द्वारा देर से आने का कारण पूछने पर मन्त्री बोला—'श्रीमन्, मेरी घडी दस मिनट लेट है, इसलिए आने मे विलम्ब हो गया ।'

नेपोलियन ने जवाब मे कहा—'अच्छा हो आप अपनी घडी बदल लें, अन्यथा मैं आपको बदल दूगा । जिन्दगी मे बढना हो तो समय की कीमत पहचाननी होगी ।'

—नरेन्द्र

वेदों में मिलावट या प्रक्षेप क्यों न हुआ ?

—आचार्य प० दिनेशचन्द्र शास्त्री

वेदो की रक्षा का जो प्रथम प्रबन्ध किया गया था, वह वेदो का पाठ था । हमारे ऋषियो ने वेदो की रक्षा के लिए या शुद्धता के लिए आठ उपाय किये । आठ क्रमपाठो मे जटा और दण्ड प्रधान हैं, क्योकि जटा के पीछे शिखा का पाठ होता है तथा दण्ड के अनुसार माला, रेखा, ध्वज, और रथ है । घन पाठ जटा और दण्ड के पीछे चलता है । जो कि इस प्रकार व्याडि विरचित विकृति वल्ली मे कहा है—

जटा माला शिखा रेखा ध्वजो दण्डो रथो घन. ।
अष्टौ विकृतय प्रोक्ता क्रमपूर्वा महर्षिभि. ॥

इन विकृतियो के द्वारा अर्थात् जटा, माला, शिखा, रेखा, ध्वज, दण्ड, रथ, घन । इनके द्वारा वेद सुरक्षित रहे हैं । क्रमपाठ की महत्ता-महिदास कृत चरण व्यूह की टीका मे देखिये—एक प्रमाण यहा रखता हू—

आसा मध्ये जटा दण्डयो प्राधान्यम । तत्कथम् ? जटानुसारिणी शिखा । दण्डानुसारिणी माला लेखा ध्वजोरथश्च । घनस्तूभयानुसारित्वात् ।

सहिता पाठ मन्त्रो का प्रकृत पाठ है ।

पुरुष एवेद सर्वं यद् भूते यच्च भाव्यम् ॥

पद पाठ-सधि रहित पदो का पाठ ।

पुरुष । एव । इदम् । सर्वम् । तत् । भूतम् । यत् च । भाव्यम् ।

क्रम पाठ —इसमे दो पदों का क्रम से पाठ होता है । जैसे—

पुरुष एव । एव इदम् । इदम् सर्वम् । सर्वम् यत् । यत् भूतम् ।

भूतम् यत् । यत् च । च भाव्यम् । भाव्यम् इति भाव्यम् ।

जटा पाठ—क्रम पाठ यहा अनुलोम तथा विलोम रीति से तीन बार पढ़ा जाता है । जैसे—

पुरुष एव । एवपुरुष: । पुरुष: एव ।

एव इदम् । इदम् एव । एव इदम् ।

इदम् सर्वम् । सर्वम् इदम् । इदम् सर्वम् । इत्यादि जाने ।

शिखा पाठ—जटा पाठ मे अगला एक पद सयुक्त कर लिया जाता है—(पदोत्तर जटामेव शिखामार्या प्रचक्षते)

पुरुष. एव । एव पुरुष: । पुरुष एव इदम् ।

एव इदम् । इदम् एव । एव इदम्-सर्वम् ।

इदम् सर्वम् । सर्वम् इद । इदम् सर्वम्—यत् । इत्यादि ।

घन पाठ—इसमे अनुलोम तथा विलोम क्रम से पदो को अनकश दुहराया जाता है । घन के चार प्रकार होते हैं । इसके एक भेद मे शिखा के पश्चात् पदों को पुन: उलट कर पढा जाता है ।—"शिखामुक्त्वा विपर्यस्य तत् पदानि पुन.पठेत् । अय घन इति प्रोक्त: ।"

पुरुष: एव । एव पुरुष । पुरुष एव इदम् ।

इदम् एव पुरुष पुरुष· एव इदम् ॥ इत्यादि जानें ।

इसी प्रकार माला, रेखा, ध्वज, दण्ड, रथ आदि पाठो को भी समझ लेना चाहिए । इन्हीं के बिना किसी विकार के पाठो के कारण वेद आज तक सुरक्षित रहे हैं । देखिये—रेखा तथा लेखा ये दोनो ग्रन्थो मे देखने को मिलते हैं । वेद निराकार परमात्मा का ज्ञान है अर्थात् वेद अपौरुषेय हैं । वेदो की रक्षा एव शुद्धता के लिए हमारे महान् ऋषियो ने उत्तम पथ निकाला जो कि सब आर्यों को ग्रहण कर लेना चाहिए ।

— आर्यसमाज डिफेंस कालोनी, नई दिल्ली-११०००३

मुसलमान हिन्दू बना तथा हिन्दू युवती से विवाह

कानपुर । आर्यसमाज मन्दिर गोविन्द नगर मे केन्द्रीय आर्यसभा कानपुर के प्रधान श्री देवीदास आर्य ने एक मुस्लिम युवक धिननपीर मोहम्मद को उनकी इच्छानुसार हिन्दू धर्म (वैदिक धर्म) मे प्रवेश कराया । उनका नाम गिरजाशकर गुप्त रखा गया । समारोह मे उपस्थित एक हिन्दू परिवार ने अपनी युवा पुत्री अनुराधा का विवाह इस युवक के साथ करने की इच्छा प्रकट की । तत्पश्चात तुरन्त यह विवाह वैदिक रीति से सम्पन्न कराया गया ।

अभय की भावना रखें !

ओ३म् यथाहश्च रात्री च न बिभीतो न रिष्यतः।
एवा मे प्राण मा बिभेः ॥ अथर्व २ १६.२

हे मेरे प्राण, जिस प्रकार दिन और रात न किसी से भय करते और न नष्ट होते हैं, उसी प्रकार तू भी किसी से कभी भयभीत न होना।

ओ३म्
आर्य सन्देश

प्रश्न अनेक : उत्तर एक

इन दिनों भारत राष्ट्र और सामान्य भारतीय जनता के सम्मुख अनेक समस्याएं हैं। देश मे व्याप्त आर्थिक एव सामाजिक विषमता को दूर करने का प्रश्न है। दूसरे यद्यपि देश मे राजनीतिक दृष्टि से स्वाधीनता मिली हुई है, तथापि हम आर्थिक, सामाजिक, शैक्षणिक और सांस्कृतिक दृष्टि से अभी तक पूर्ण स्वाधीन नही हो सके हैं। तीसरे हम इस कटु तथ्य को भी नही भूल सकते कि राजनीतिक स्वाधीनता प्राप्ति के साथ देश के दो बाजू हमसे पृथक् कर दिए गए थे। इन्ही के साथ हमे यह कड़वी सचाई भी स्मरण रखनी होगी कि आज आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक आदि सभी क्षेत्रों मे भ्रष्टाचार, लोभ, स्वार्थ एव भाई-भतीजावाद का अभिशाप व्याप्त है। ये सब समस्याएं तो हैं ही, इन्ही के साथ विदेशी साम्प्रदायिक तत्वों द्वारा भारत की पीड़ित, निर्धन, निर्बल जनता को प्रलोभन एव दूसरे घृणित साधन अपनाकर धर्म परिवर्तित कर देश का नक्शा बदलने की कोशिश हो ही रही थी कि देश के ही कुछ गुमराह तत्त्वो ने गोवंश का अपमान कर देश की अखण्डता और सुरक्षा को खतरा पैदा कर दिया है।

आज देश के सम्मुख समस्याएं अनेक है। कैसे देश को एक, सयुक्त, स्वावलम्बी बनाया जाए? कैसे देश से भ्रष्टाचार, अनाचार का अन्त कर यहां सच्चा स्वराज्य और सुराज्य स्थापित किया जाए? इसी के साथ देश को केवल राजनीतिक और आर्थिक दृष्टि से ही स्वावलम्बी और शक्तिशाली नही बनाना है, प्रत्युत उसे सांस्कृतिक, धार्मिक और वैचारिक दृष्टि से भी महान् और आदर्श बनाना है, ये सभी महत्त्वपूर्ण कार्य केवल केन्द्रीय एव प्रादेशिक प्रशासनो के बल पर सम्पन्न नही हो सकेंगे। इन कार्यों को करने के लिये आर्यसमाज और आर्यजन अपना उत्तरदायित्व समझ सकते है। कहा जा सकता है कि ये सब या अधिकांश कार्य शासन के सीधे दायित्व के अन्तर्गत आते हैं। ठीक है, आते हैं परन्तु जब शासन को चुनावो और कुछ ज्वलन्त आर्थिक समस्याओ से जूझने से ही फुर्सत नही है, तब वह राष्ट्र के नागरिको की नैतिकता और सचाई की समस्या से कहां तक जूझ सकेगा?

आर्यसमाज के निर्माण को १०७ वर्ष पूर्ण हो चुके हैं। १९७५ मे आर्यसमाज अपने निर्माण की शताब्दी व्यापक रूप से मना चुका है, सन १९८१ मे सत्यार्थप्रकाश की शताब्दी के व्यापक कार्यक्रम भी सम्पन्न हो चुके हैं। अगले वर्ष आर्यसमाज के जनक महर्षि की निर्वाण शताब्दी सारे देश मे मनाई जाएगी। इस अवसर पर व्यापक कार्यक्रम एव सम्मेलन आयोजित किए जाएगे, उन कार्यक्रमो और सम्मेलनो को भी महत्ता है, परन्तु इनसे भी अधिक महत्त्व का प्रश्न यह है कि देश मे सच्चे आर्यत्व की प्रतिष्ठा कैसे हो? तन-मन-धन से सर्वात्मना अपना व्यवहार आर्य श्रेष्ठ करने वाले कुछ सख्या मे न्यून भी व्यक्ति हो, केवल ऐसे ही आर्यजनो से देश मे व्याप्त अनैतिकता, भ्रष्टाचार और अन्याय का उन्मूलन हो सकता है। ऋषि निर्वाण शताब्दी के गौरवपूर्ण अवसर पर यदि आर्यजन तन-मन-कर्म से सच्चे ऋषि शिष्य बन कर अपनी कथनी और करनी एक करने का सकल्प चरितार्थ कर सकें तो इस वर्ष मे बहुत कुछ किया जा सकता है। ऐसे न्यून आर्यजन भी अपने गौरवपूर्ण जीवन से राष्ट्रीय जीवन में एक नया मोड़ ला सकते हैं। अनेक प्रश्नों के उत्तर मे सच्चे चरित्र निर्माण का व्रत ग्रहण कर क्या हमे वास्तविक उत्तर प्रस्तुत कर सकेंगे?

चिट्ठी-पत्री

१. एक आर्य विदुषी का उत्तर

'दैनिक जागरण' समाचारपत्र मे गत ३ अप्रैल को डा० सोहनलाल सुमनाक्षर दिल्ली का 'आर्यसमाजी नेता जवाब दें' वक्तव्य प्रकाशित हुआ, जिसे पढकर गहरा दुख हुआ।

वह लिखते हैं···"धर्म-परिवर्तन पर पाबन्दी की मांग करने वाले तथा गरीब हरिजनो के मुसलमान बन जाने पर मगरमच्छी आंसू बहाने वाले आर्यसमाजी नेताओ से हम पूछना चाहते हैं कि उन्होंने हरिजनो को कब हिन्दू माना है? और उन्हे बराबर की समानता और सम्मान दिया है······?"

डा० सुमनाक्षर जी ने आर्य नेताओ के महनीय कार्यों को अनदेखा करके जिन शब्दो का प्रयोग किया है वे सर्वथा विद्वेष के परिचायक हैं।

अस्पृश्य समझे जाने वाले इस निरीह समुदाय को जिसे 'हरिजन' नाम देना ही अविवेकपूर्ण था, जन्मना जात-पात के आधार पर एक अलग वर्ग बना देना और असमानता के भाव को और अधिक दृढ बना देना था। पुन इस दलित वर्ग का उद्धार किसी को जन्मना शूद्र न मानकर अपितु गुण, कर्म, स्वभावानुसार ब्राह्मण क्षत्रिय आदि वर्णव्यवस्था को देकर जो कार्य आज से १०० वर्ष पहले लाला लाजपतराय, स्वामी श्रद्धानन्द आर्य पथिक प० लेखराम प. गयाराम आदि आदि आर्यसमाजी शीर्षस्थ नेताओ ने बड़े जोर-शोर मे शुद्धि आन्दोलन चला कर किया, इनके साथ रोटी-बेटी का सम्बन्ध किया, इन्हे यज्ञोपवीत दिए और मनुष्यमात्र को समानता का अधिकार दिलाया, वह कोई अन्य न होकर आर्यसमाज ही था।

इस समय भी जब कि धर्म-परिवर्तन की बाढ आई हुई है, भारत की हर समाजो मे उतने ही पैमाने पर हरिजन-स्नेह-सम्मेलन, सहभोज एव शुद्धि करके अपने भाइयो को वापस मिलाने का कार्य बडी तेजी मे आर्यसमाज ही चला रहा है।

किन्तु रूढिवादिता से ग्रस्त जिन्होंने 'स्त्रीशूद्रौ नाधीयाताम्' का नारा देकर शूद्रो को वेद पढना तो दूर वेद मन्त्र सुन लेने मात्र से कान मे शीशा घोल कर डलवाने की आज्ञा दी हो, इनके साथ फर्श पर बैठने, कुओ से पानी भरने, खुला खानपान करने, मन्दिरो मे प्रवेश की आज्ञा देने तथा इनके उत्सव मे सम्मिलित होने आदि मे हमेशा असमर्थता प्रकट हो, ऐसी विचारधारा वाले डॉ० सुमनाक्षर सदृश जन आर्य भाइयो द्वारा धर्मरक्षाभियान के लिए उठाए गए सक्रिय प्रयत्नो का मूल्यांकन 'मगरमच्छी आंसू' से करके अपनी ही अल्पज्ञता का परिचय दे रहे है, फिर वे सराहना कर ही कैसे सकते हैं?

—मेधा देवी व्याकरणाचार्या, पाणिनि कन्या महाविद्यालय तुलसीपुर, वाराणसी-५

२. विद्वान् ब्राह्मणों का सम्मान कीजिये

'आर्य सन्देश' का ४ अप्रैल का अक मिला। उसमे श्री वीरेन्द्र जी की वीर-घोषणा पढी कि 'गोलियां चलें या बम आर्यसमाज अमर रहेगा।' श्री वीरेन्द्र जी विशेष निर्भीक पिता के विशिष्ट साहसी सुपुत्र है। जिन भयकर परिस्थितियों मे वे पजाब मे अपना दायित्व निभा रहे हैं वह प्रत्येक पजाबी जानता है।

ब्राह्मण राष्ट्र का प्राण होता है। आर्यसमाज मे ब्राह्मण का जो अपमान है वह क्या आर्यसमाज को अमर होने मे सहायता देगा। केवल दो नए उदाहरण दूंगा। बम्बई मे एक उग्रस्वभाव मन्त्री जी ने पुरोहित को जो शास्त्री तथा एम ए. भी था— २-३ दिन मे समाज मन्दिर छोडने का हुक्म दे दिया और इधर दिल्ली मे एक उग्रस्वभाव प्रधान जी ने तमाचो से पुरोहित का मुह लाल कर दिया।

क्या समाज के मन्त्री या चपरासी के साथ ऐसा व्यवहार किया जा सकता है। समाज के पुरोहित को प्राय समाजों मे जो वेतन मिलता है वह सफाई-कर्मचारी से भी कम है। एक तो इस अर्थप्रधान युग मे ब्राह्मण का स्थान सामान्यत प्रलोभनीय नही और फिर आर्यसमाज मे तो यह कार्य कोई अच्छे घर का लडका करना नही चाहता। ब्राह्मण के योग्य सम्मानित ब्राह्मण के अभाव मे क्या आर्यसमाज अमर रहेगा?

मैं तो अपने पुरोहित कार्य के इच्छुक बच्चो की सेवा मे यही कह सकता हू—

जीवने विचिकित्सा स्यात् कुम्भी पाकस्य दर्शने।
कस्याऽप्यार्यसमाजस्य पौरोहित्यम् समाचर ॥

— सत्यदेव विद्यालकार निभान्ति, ई २२९, ग्रेटर कैलाश-२ नई दिल्ली

राष्ट्र की सुरक्षा : राष्ट्रीय दृष्टिकोण से

(आर्यसमाज श्रद्धानन्द पुरम् (प्रबंन एस्टेट) गुड़गांव के वार्षिकोत्सव पर आयोजित राष्ट्र रक्षा सम्मेलन के अध्यक्षीय भाषण के आवश्यक अंश)

आज राष्ट्ररक्षा के प्रश्न के साथ विश्वरक्षा का प्रश्न जुड़ा हुआ है। विश्व की वर्तमान स्थिति इस समय ऐसे कगार पर खड़ी है कि कभी भी महाशक्तियो के परस्पर तनाव से भयावह उलटफेर पैदा हो सकती है। इस समय सारे ससार मे हथियारो की जखीरेबाजी तथा गुटबन्दी का आलम समा बाध रहा है। महाशक्तियो की आपसी होड तथा हिन्द महासागर पर उमडती ललचाई नजरो मे भारतीय महाद्वीप असुरक्षा के बडे आयाम मे घिध-सा गया है, उधर अमेरिका, इजरायल और दक्षिण अफ्रीका का समर्थन कर रहा है, इधर पाकिस्तान को भारी सैन्य सहायता से सज्जित कर पुन इस देश को भारत के विरुद्ध चुनौती देने की स्थिति मे अग्रसर कर रहा है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य मे हमारी सुरक्षा व्यवस्था को जहाँ बाह्य रूप से पाकिस्तान के सदिग्ध इरादो से खतरा है वहा चीन का बढता साम्राज्यवादी रुख हमारी सीमाओ के साथ खतरे का बिगुल बजा रहा है। बागला देश मे हमारे देश के मतभेद जहा राष्ट्रीय सुरक्षा के सवाल को सवेदनशील बनाते है वहा अन्तर्राष्ट्रीय मोड पर रीगन की भारत विरोधी नीतियाँ हमारी चिन्ता को बढाए जा रही हैं।

भारत के गत २५ सदियो के इतिहास मे जब कभी भी भारत पर विदेशी आक्रमण सफल हुए उसके दो कारण रहे। प्रथम परस्पर की फूट एव असगठित तालमेल, दूसरे अस्त्रशस्त्रो का पुरानापन और निरर्थकता।

राष्ट्ररक्षा के उपाय

देश की सुरक्षा कैसे हो ? इस प्रश्नो के प्रश्न, ज्वलन्त प्रश्न पर ऋषि दयानन्द का घोष था 'यत्र ब्रह्म च क्षत्र च सम्यञ्चौ चरत सह' ब्रह्म और क्षत्र मिल कर आर्य राष्ट्र के कोटि-कोटि देवो मे, करोडो नागरिको मे महत्वाकाक्षा पूर्ण ज्वलन्त ज्वाला का प्रज्वलन कर दें और राष्ट्र के कोने-कोने मे आत्मचेतना का सचार कर देवे तो कार्य निमेश मात्र मे सिद्ध हो जाएगा। इस विशाल देश के क्षत-विक्षत अग प्रत्यंग की चिकित्सा का निदान वैदिक सस्कृति ने प्रदान किया और यह व्यवस्था दी कि विद्या और शौर्य से ही राष्ट्रीय हितोका सच्चा सवद्धन हो सकता है राष्ट्र के नागरिक को वेद का यह उद्बोधन है, हे नर ! तू उठ ! आगे बढ़, हिम्मत मत हार ! आशावादी बन और तेरे मार्ग मे जो बाधक बनकर खडे हो उन्हे तोडता, फोडता कुचलता हुआ आगे बढ़ता जा। हे वीर देशद्रोही को जड समेत उखाड फेक।'

आवश्यकता आज इस बात की है कि हम अथर्ववेद के इस जयघोष को अपने जीवन मे उतारे, जिसमे राष्ट्र के नागरिक से यह अपेक्षा की गई है 'कृत मे दक्षिणे हस्ते, जयो मे सव्य आहित मेरे दायें हाथ मे कर्म है, बायें हाथ मे विजय पताका फहरा रही है' (अथर्व७ ५२ ८) राष्ट्र का निर्माण इस प्रकार के विचारो से ओतप्रोत नागरिको की भावनाओ से होता है। देखिए यजुर्वेद का एक मत्र किस प्रकार उद्बोधन दे रहा है, 'कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छत समा' मनुष्य को चाहिए कि वह कर्म करते हुए १०० वर्ष जीने की इच्छा करे। अथर्ववेद का एक अन्य मन्त्र इस देश के प्रबुद्ध नागरिको को राष्ट्ररक्षा के प्रति कर्त्तव्य बोध का स्मरण कराता हुआ सन्देश देता है, 'उत्तिष्ठत सनह्यध्व मुदारा. के तुभि सह' उठो वीरो, तैयार हो जाओ, झण्डे हाथो मे पकड लो। जो देशद्रोही, दुश्मन है उन पर धावा बोल दो।' सचमुच आज इस देश को युवापीढ़ी का इसी प्रकार के वैदिक वीर गर्जनाओ मे पूरित उत्तग-जोश की आवश्यकता है, जिससे राष्ट्ररक्षा की प्रचण्ड भावनाए हमारे देश के युवको मे धूम मचा दें। राष्ट्र के युवको को ऋग्वेद का एक मत्र सन्देश देता है, 'उद्बुध्यध्व समनसः सखायं', युवको ! उठो, जागो, मनोबल से अनुप्राणित हो राष्ट्र की रक्षा मे लगे रहो। यजुर्वेद का एक अन्य मत्र इसी प्रकार की भावनाओं का प्रचार करते हुए सबोधित करता है। बाहू मे बलमिन्द्रय, हस्तौ मे कर्म वीर्यम्' मेरी भुजाओ मे इन्द्र का बल है, मेरे हाथो मे कर्म और सामर्थ्य है।

यदि आज हमे 'माता भूमि. पुत्रो अह पृथिव्या' का बोध हो जाए तो यह राष्ट्रशक्ति का कीर्तिमान पुञ्ज हो सकता है। वेद के उपर्युक्त मन्त्र मे राष्ट्र का एक नागरिक प्रतिज्ञा करता है कि मैं इस देश की मिट्टी से पला, बढ़ा तथा समृद्धि को प्राप्त हुआ। अत मैं इस मातृभूमि के यश को अपने जीवन पर्यन्त बढाता रहूगा। राष्ट्र की सेवा मे आजीवन लगे रहने का यह व्रत आज हम सब को लेना चाहिए, जिससे हमारा जीवन कर्ममय हो। आज अकर्मण्य होना अथवा हडताले करना-कराना देशद्रोह है। हमारा देश शक्तिशाली है पर तब जब हम सगठित हो। जब-जब परस्पर के द्वेष एव मतभेदों ने हमारी शक्ति को क्षीण कर दिया तब हम असहाय एव छिन्न-भिन्न होकर विदेशी शक्तियो के सामने पादाक्रान्त हो गए। हमारे इतिहास के मर्मकथा के पृष्ठ राष्ट्र के जागरूक नागरिको को वेद के सगच्छध्व स वो मनांसिजानताम्' यह उद्बोधन दे रहे हैं कि हे नागरिको' तुम सब मिल कर, प्रेम से परस्पर सहयोग करत हुए राष्ट्र की प्रगति मे अपनी हवि प्रदान करो।

—श्री बलभद्र कुमार हूजा
कुलपति गुरुकुल कांगड़ी
विश्वविद्यालय, हरिद्वार

समृद्ध राष्ट्र का चित्र

यजुर्वेद के एक प्रसिद्ध मन्त्रमे राष्ट्र की समृद्धि का चित्र प्रस्तुत करते हुए लिखा है 'आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायताम्।' आ राष्ट्रे राजन्या शूर इषव्योतिव्याधी महारथो जायताम्।' उपयुक्त मन्त्र मे राष्ट्र की सुरक्षा के उपाय बतलाए गए हैं जो सक्षेप मे निम्न प्रकार हैं—१ ब्रह्मवर्चसी ब्राह्मण-राष्ट्र के विचक्षण नेताओं को ब्राह्मण कहा गया है। २. शूरवीर-ब्रह्म आदेश देता है, क्षत्र आदेश का पालन करता है। ३. दुधारु गौओ—भारवाही बैलो और शीघ्रगामी अश्वो से समृद्धि उत्पन्न होती है अर्थात् राष्ट्र का सैन्यबल बढता है।

राष्ट्र की युवतियो और युवको को क्षमता के विषय मे वेद जो आदेश देता है, आर्यावर्त के मनचले नवयुवक, नवयुवतियों को उसे हृदयंगम कर लेना चाहिए। वेद के शब्दो मे युवतिया पुरधारिका और युवक विजयशील हो। राष्ट्र ही कल्पवृक्ष है। इस कल्पवृक्ष को ही सीचकर हरा-भरा करो। इसी की छाया मे सब मनोकामनाए पूरी होगी तभी'योग क्षेमो नः कल्पताम्, यही राष्ट्र रक्षा का शुभ सकल्प है।

ऋषि दयानन्द ने इस देश की दीनहीन दशा का मूल कारण सर्व प्रथम आपस की फूट को बतलाया। परस्पर की इस फूट से स्वामी जी ने अत्यन्त कातर होकर सत्यार्थ प्रकाश मे लिखा, 'जब आपस मे भाई-भाई लडते हैं तभी तीसरा विदेशी आकर पच बन बैठता है' इस महान सत्य को महर्षि दयानन्द ने कितने सरल शब्दों मे लिख दिया है। ऋषि लिखते हैं, 'विदेशियो के आर्यावर्त्त मे राज्य होने के कारण आपस की फूट, मतभेद आदि है।' बिना इस विरोध के छूट परस्पर का पूरा उपकार और अभिप्राय सिद्ध होना कठिन है। प्रश्न उठता है फूट पैदा कैसे होती है ? ईर्ष्या द्वेष से और ईर्ष्या द्वेष पैदा होते हैं अन्याय और असमानता से। जिस व्यवस्था मे न्याय होता है, समता होती है, ईर्ष्या और द्वेष लुप्त हो जाते हैं, स्नेह और प्रेम परिवर्धित होते हैं।

वस्तुत यदि हम सचमुच एक दृढ़ राष्ट्र के स्वरूप मे उभारना चाहते हैं तो हमे सभी नवयुवक, युवतियो के लिए दो साल की फौजी सेवा अनिवार्य कर देनी चाहिए। जैसा कि ऋषि दयानन्द ने कहा है कि प्रत्येक स्नातक को धनुर्वेद कवायद आदि की शिक्षा भी ग्रहण करनी चाहिए। इससे कई लाभ होगे। प्रथम, उस सूरत मे हमे इतनी बडी स्थायी सेना की आवश्यकता नही रहेगी—गाहे बगाहे नवयुवको को रिफ्रेशर कोर्स पर बुला लेने से हमारे पास सदैव एक अनन्त अखुट स्रोत देशरक्षा के लिए तैयार मिलेगा। आज अन्य स्वतन्त्र देशो मे भी यही प्रणाली है।

दूसरे इससे राष्ट्र के सभी अंगो मे भ्रातृभाव बढेगा। आज वैश्य परिवारो मे उत्पन्न युवक फौज मे कम जाते हैं। सभी के बच्चे फौज में जाएंगे सभी को फौजियो से प्रेम होगा। सभी फौज को सुसज्जित करने के लिए चिन्तनशील होगे; सभी फौज की शक्ति, राष्ट्र की समृद्धि के लिए प्रयत्नशील होगे। यदि फौज के किसी दस्ते को वक्त पर ठीक आयुध एव अन्य आवश्यक सामग्री उपलब्ध न हुई तो हमारे बच्चे की निरर्थक बलि हो सकती है। अनिवार्य फौजी शिक्षा से साहस और पराक्रम का उद्भव तो होता ही है अनुशासन और कर्तव्यपराणता भी उत्पन्न होती है।

जब १९४७ मे देश आजाद हुआ था तो उस वक्त की साम्राज्यवादी फौज असभ्य उजड्ड थी। उस वक्त जरूरत थी कि फौज सभ्य बने और सभ्य पुरुष फौजी बनें। उस वक्त रायफल क्लबें खोली गई जन साधारण को फौजी प्रशिक्षण का प्रबन्ध किया गया, परन्तु शनै:-शनै: वह गति समाप्त हो गई। हमारी सेना तो अब सभ्य बन गई है, किन्तु नागरिक फौजी नही बना।

१९६७ मे मैं जोधपुर में बार्डर कमिनर था। बार्डर के दौरे से लौटा तो नगर अध्यक्ष ने पूछा कि सेना का मनोबल कैसा है ? मैंने उत्तर दिया, कि बार्डर पर तैनात जवानों का मनोबल तो ऊचा है, परन्तु वे पूछते हैं कि आप का

(शेष पृष्ठ ६ पर)

संध्या-हवन से राष्ट्रोथान

—प्रकाशवती बुग्गा शास्त्री

राष्ट्र किसे कहते है ? मनुष्यो के समूह को देश की जनता को। देश की सभी प्रकार की उन्नति जनता के परस्पर सहयोग से होती है। अग्रेजी के एक कवि ने कहा है—

Not gold but men can make a nation Bold and strong—

'सोना नही प्रत्युत मानव ही जाति को साहसी और समर्थ बनाते हैं।' कैसे मानव ? जो चरित्रवान हैं, जो कर्तव्य-निष्ठ हैं।

सध्या किस लिए की जाती है। तन-मन को शुद्ध कर चरित्र को श्रेष्ठ बनाने के लिए। सध्याकाल मे व्यक्ति अपने प्रत्येक अ ग को शुभ कर्म करने का सकल्प लेता है। सध्या का प्रत्येक मन्त्र मनुष्य के कर्मों तथा विचारो पर आई मलिनता को धोकर शुद्ध बनाता है। हवन किस लिए किया जाता है ? केवल अपने घर की नही, विश्व भर की वायु को शुद्ध बनाने के लिए, राष्ट्र के जन-जन को रोग रहित करने की भावना से। संध्या व्यक्ति को चरित्र वान तथा हवन उसे विश्व प्रेमी बनाता है। राष्ट्र की यही तो आवश्यकताए हैं ? उसे श्रेष्ठ पवित्र विद्वान वीर और धनवान मिलें। देश को भ्रष्टाचारी, धनसग्रही, धनलोलुप व्यक्ति नही, बस श्री राम, श्री कृष्ण, गांधी जी महर्षि दयानन्द जैसे त्यागी और तपस्वी चाहिए। श्री भामा शाह जैसे दानी चाहिये। क्या छत्रपति शिवा जी ने केवल युद्ध विद्या के ज्ञान से ही महाराष्ट्र का निर्माण किया था, उनका उच्च चरित्र उसकी नीव मे था। सध्या और हवन ऐसे ही दृढ सकल्प और पवित्र चरित्र देने का दावा करते हैं।

दुर्भाग्य से देश मे सस्कृत का अधिक प्रचार नही। अन्यथा सध्या के सारे मत्र मानव चरित्र को केवल शुद्ध ही नही, सशक्त बनाने की भी सामर्थ्य रखते हैं। 'बाहो में यशो बलम्' मार्जन मत्रो को देखिए, मनसा परिक्रमा के मत्रो को पढ़िए, एक-एक अक्षर मानवता को जाग्रत करने की सजीवनी बूटी है।

हवन का प्रत्येक मत्र समाज और राष्ट्र का कल्याण चाहता हुआ 'इद न मम' कहकर निस्वार्थी होने की घोषणा करता है। याजक कहता है—मेरी प्रत्येक आहुति अग्नि, इन्द्र, सोम, प्रजापति आदि राष्ट्र की पोषक शक्तियो के लिए है। मेरा प्रत्येक कार्य प्रत्येक शक्ति राष्ट्र हित मे अर्पित है। मेरी विद्या देश का अन्धकार दूर करेगी, मेरा अर्थज्ञान देश के धन को बढ़ाएगा, मेरा शारीरिक बल भारत माता के गौरव की रक्षा करेगा।

उच्च सकल्प, उच्च लक्ष्य, उच्च मानवो का सृजन करते हैं। निस्सदेह प्रतिदिन सध्या-हवन करने के साथ-साथ अपने दैनिक जीवन तथा व्यवहार को शुद्ध बनाना भी अनिवार्य है परन्तु सध्या हवन का नियम से करना पहली सीढ़ी है। अत यह राष्ट्र निर्माण में परम सहायक है।

आर्यसमाज मन्दिर महरौली के नए पदाधिकारी

प्रधान—मुखी श्री तोलाराम, उपप्रधान—श्री हजारीलाल, श्री सुभाषचन्द्र कुमार; मन्त्री—श्री सोहनलाल, उपमन्त्री—श्री सुशीलकुमार आर्य, प्रचारमन्त्री—प० कलीराम भार्गव, कोषाध्यक्ष—श्री पुरुषोत्तमदास जी मुखी, पुस्तकालयाध्यक्ष—श्री मोहनलाल जी मुखी।

ईसाई युवक का वैदिक धर्म में प्रवेश

आर्यसमाज अजमेर मे दि० २ मई ८३ ई० को रेलवे मे सेवारत सुशिक्षित तमिलनाडु निवासी श्री त० तमिल आर्षन ने स्वेच्छा से ईसाई धर्म त्याग कर वैदिक धर्म मे प्रवेश किया।

शुद्धि सकार आर्य समाज के पुरोहित श्री आचार्य गोविन्दसिह द्वारा सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर आर्यसमाज अजमेर के पदाधिकारियो न शुभकामनाए देते हुए श्री आर्षन को आर्य साहित्य भेट किया।

प्रवेश प्रारम्भ

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा से सम्बन्धित मातृ मन्दिर कन्या गुरुकुल वाराणसी नई वस्ती, रामापुरा, वाराणसी मे प्रवेश आरम्भ है। आर्य पद्धति के साथ गणित, विज्ञान, अ ग्रेजी, हिन्दी आदि की शिक्षण व्यवस्था। नया भवन। पौष्टिक आहार, पी० एच० डी० तक की सुविधाए। स्थान सीमित।

यहाँ वानप्रस्थ आश्रम मे कुटिया बनाने की सुविधाए। कर्मठ वानप्रस्थो व कार्यकर्ताओ को आमन्त्रण है।—पुष्पावती पी० एच० डी० विद्यावारिधि अध्यक्षा

आर्य जगत् समाचार

बच्चा-बच्चा ऋषि का सैनिक बनें !

आर्य महासम्मेलन में कैप्टन आर्य का उद्बोधन

बम्बई। शिवाजी नगर, नांदेड मे प्रथम महाराष्ट्र प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन १९८२ के स्वागताध्यक्ष कैप्टन देवरत्न आर्य ने कहा—'नान्देड वीर शिवाजी और गुरु गोविन्दसिंह की पुण्य भूमि है। वीर बन्दा बैरागी भी इसी पुण्यभूमि के थे। जगद्गुरु महर्षि दयानन्द को सन्यास की दीक्षा देने वाले स्वामी पूर्णानन्द सरस्वतीभी महाराष्ट्रीय ही थे। पिछले डेढ सौ वर्षों मे आर्य-समाज अविद्या, अन्याय और अभाव से संघर्ष करता रहा है, अब छुआछूत के विषधर को समाप्त कर हिन्दू जाति की रक्षा करने का दायित्व आर्यों पर आ गया है। गुरु गोविन्द और गुरु तेग ने हिन्दू धर्म की रक्षा के लिए अपना खून बहाया था। सिख भाइयो को भी अपने गुरुओ का प्रण पूरा करना होगा।

कैप्टन आर्य ने कहा—आज समय की माग है कि घर-घर मे वेदो का उद्घोष हो। प्रत्येक आर्य समाज मे आर्य कुमार सभा और आर्यवीर दल बने। आर्य जाति का एक-एक बच्चा देव दयानन्द का वीर सैनिक बन कर देश, जाति और धर्म की रक्षा के लिए तैयार हो जाए।

युवक राष्ट्र-निर्माण के लिए कार्य करें

—डा० भवानीलाल भारतीय

नई दिल्ली। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद दिल्ली प्रदेश के तत्वावधान मे आर्य समाज मन्दिर मार्ग मे 'आर्य युवक उदघोष' पुस्तक का विमोचन करते हुए, महर्षि दयानन्द पीठ, पजाब विश्वविद्यालय, चडीगढ़ के अध्यक्ष डा० भवानी लाल भारतीय ने युवको का आह्वान किया कि वे राष्ट्र-निर्माण के माध्यम से धर्म का वास्तविक स्वरूप जनता के सम्मुख रखे।

श्री भारतीय ने कहा—धर्म किसी मत या मजहब का नाम नहीं है। अपितु मनुष्य के अपने परिवार, समाज, राष्ट्र व विश्व के प्रति कर्तव्यो का बोध व तदानुकूल आचरण ही 'धर्म कहलाना है।

डा० सत्यव्रत वैदिक धर्म के प्रचारार्थ हालेण्ड और अमेरिकी यात्रा पर

गुरुकुल कांगडी। गुरुकुल विश्वविद्यालय के विजिटर डा० सत्यव्रत सिद्धान्तालकार को हालैंड स्थित प्रवासी भारतीयो ने हवाई जहाज का वापसी टिकट भेजकर यूरोप के देशो मे वैदिक धर्म पर व्याख्यान देने के आमन्त्रित किया है। वह शीघ्र ही बम्बई होते हुए हालैंड के लिए रवाना हो रहे हैं। वहा सुविधानुसार वह वैदिक धर्म का प्रचार करते हुए यूरोप तथा अमेरिका के देशो मे जाएगे। उनकी यह यात्रा तीन मास की होगी।

उल्लेखनीय है कि राष्ट्रपति ने एक सस्कृत विद्वान के रूप मे उन्हें सम्मानित किया था और १ अप्रैल को मद्रास मे उन्हे 'वैदिक सस्कृति का वैज्ञानिक आधार' पुस्तक पर दस हजार रुपए का राजाजी पुरस्कार भेंट किया गया है।

रामगली आर्यसमाज के पदाधिकारी

प्रधान—श्री चरणदास शर्मा, उपप्रधान—श्री सोहनलाल, श्री हरचन्दीलाल गुप्त, मन्त्री—श्री आनन्द प्रकाश वर्मा, उपमन्त्री एव पुस्तकाध्यक्ष—श्री ओमप्रकाश शर्मा शैलानी, कोषाध्यक्ष—श्री हरिश्चन्द्र वर्मा।

महिला आर्यसमाज

प्रधाना—श्रीमती प्रकाशवती वर्मा, उपप्रधाना—श्रीमती शकुन्तला देवी शर्मा, मन्त्रिणी—श्रीमती राजरानी सूदन,कोषाध्यक्षा—श्रीमती सत्या चौधरी।

ह्यूस्टन अमेरिका में आर्यसमाज मन्दिर

श्री अमृतलाल हाण्डा और उनके सहयोगियो का प्रयत्न फल लाया

ह्यूस्टन, सयुक्त राज्य अमेरिका। आर्यजगत् के सुप्रसिद्ध संन्यासी महात्मा आनन्द स्वामी सरस्वती के एक प्रमुख भक्त श्री अमृतलाल हाण्डा इन दिनो अपने अमेरिका मे बसे सुपुत्रों के पास पहुच गए हैं। अमेरिका जाने से पूर्व उन्होंने अपनी पर्याप्त सम्पत्ति बेचकर ५० हजार रुपए आर्यसमाज बसन्तविहार के निर्माणार्थ दे दिए थे।

इन दिनों वह अमेरिका के पाँचवें बड़े नगर ह्यूस्टन मे हैं। यहाँ १५ हजार भारतीय प्रवासी हैं, ये अधिकतर विभिन्न व्यवसायो मे सलग्न, चिकित्सक, इजीनियर, एकाउण्टेण्ट और विद्यार्थी आदि हैं। यहाँ के २०० सिख परिवारो का एक गुरुद्वारा है, परन्तु शेष हिन्दू मीनाक्षी मन्दिर, वेदान्त सोसायटी, हिंदू मन्दिर सोसायटी और हिन्दू वर्शिप सोसायटी मे बटे हुए थे। यहाँ हिन्दू प्रार्थना एव सत्सगो के अवसर पर श्री हाडा ने गायत्री मन्त्र, वैदिक प्रार्थना और सन्ध्या हवन का सिलसिला शुरू किया। रोमन अक्षरो मे वैदिक प्रार्थना एव हवन के मन्त्रों के प्रचार से जनता में हवन और सत्सग लोकप्रिय हो गए। इस सबके फलस्वरूप ह्यूस्टन मे आर्यसमाज मन्दिर का निर्माण कार्य प्रारम्भ हो गया है। श्री हांडा और उनके सहयोगियो ने ५० हजार डालर एकत्र कर लिए हैं। मई १९८२ तक वहाँ सत्सग-सभाभवन का निर्माण पूरा हो जाएगा।

राष्ट्र की सुरक्षा (पृष्ठ ४ का शेष)

मनोबल कैसा ? क्या सकट के समय आप असैनिक नागरिक उनको लगातार फौजी सामग्री, रसद इत्यादि पहुंचाने मे सफल होंगे ?

इस परिप्रेक्ष्य मे उन दिनों मैंने एक प्रस्ताव राजस्थान सरकार के समक्ष रखा था उसे आज फिर दोहराना चाहूगा। उन दिनों मैं पाक रेडियो सुनता था। मैंने सुना कि पाकिस्तान सरकार ५ सितम्बर को फौजी दिवस मनाती थी। ५ सितम्बर, १९६५ को उनके हिसाब से भारत ने पारन ने पाक पर आक्रमण किया था। ५ सितम्बर १९६७ को पाक रेडियो पर पानीपत की तीसरी लडाई का नाटक प्रस्तुत हुआ जिसमे मराठा सरदार सदाशिव राव के वीरगति पाने पर उनकी पत्नी द्वारा उनके पार्थिव शरीर को प्राप्त करने के लिए अहमद शाह अब्दाली से भीख मांगने का दृश्य उपस्थित किया गया था। उद्देश्य पाक जवानो मे फौजी स्पिरिट का सचार। हम इस दशा मे सुप्तप्राय है। राजस्थान सरकार से निवेदन किया कि हम वर्ष मे छुटपुट तरीके से फौजी दिन, वायुसेवा दिवस, नौसेना दिवस, रेडक्रास दिवस इत्यादि मनाते हैं। क्यो न यह सब दिवस विजय दशमी के अवसर पर मनाए जायें ? विजय दशमी का त्योहार जन साधारण का त्योहार है। पाप पर पुण्य की विजय का त्योहार है। यदि उन दिनो बारी-बारी थलसेना, वायुसेना, नौसेना रेडक्रास इत्यादि की टुकड़ियां नगरो मे शोभायात्रा करें तो एक ओर इससे असैनिक नागरिकों का उत्साहवर्द्धन होगा, दूसरी ओर उनको अपने सैनिक बन्धुओ के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करने का अवसर प्राप्त होगा।

इसी सन्दर्भ मे भारत माता के मन्दिरो की स्थापना का प्रस्ताव उपस्थित करना चाहूगा।

आइए माँ भारती की पूजा का व्रत लें

सक्षेप मे, राष्ट्र की सुरक्षा के लिए हमे निम्न कार्यक्रम की ओर सकल्पबद्ध होकर बढना होगा—

(क) भारतीयता और एकता की भावना का उदय करें।

(ख) न्याय और समानता के मूल्यो पर आधारित राज्य-प्रबन्ध करें।

(ग) तप, साहस और पराक्रम की प्रतिष्ठा करें।

(घ) व्रत प्रधान आचार संहिता प्रचलित करें।

(ङ) स्वावलम्बन और स्वदेशी।

फिर गुरुदेव टैगोर के शब्दों मे 'के बोले, मां तुमि अबले ?

श्रीमती रामदुलारी विग का देहावसान

रामगली आर्यसमाज हरीनगर नई दिल्ली-६४ के माननीय सभासद श्री मनोहरलाल विग की धर्मपत्नी श्रीमति राज दुलारी विग का लम्बी बीमारी के बाद ३-५-८२ को निधन हो गया। जिसकी रस्म पगडी १५-५-८२ शनिवार सायकाल ५ बजे उनके निवास स्थान एम—६५ हरी नगर में हुई।

रामगली आर्यसमाज ने दिवगत आत्मा के लिए परमात्मा से प्रार्थना करते है कि वह दिवगत आत्मा को सदगति दें एव दुखी परिवार को धैर्य एव शांति ग्रहण करने की शक्ति दें।

आर्यसमाजों के सत्संग

१६ मई '८२

अन्धा मुगल-प्रताप नगर—पं० प्रकाशचन्द वेदालकार, अमर कालोनी—प० देवेश; अशोक बिहार के-सी ५२ ए—प० प्राणनाथ सिद्धान्तालकार, अशोक नगर—प० रामनिवास; आर, के. पुरम सेक्टर ५—श्री देवीचरण बसल, आर. के पुरम सेक्टर ६—प० गणेशप्रसाद विद्यालकार, आनन्द बिहार—प० भगवान सहाय विद्यावाचस्पति, इन्द्रपुरी—प० हरिदत्त शास्त्री; किशनगज मिल एरिया—पं० सोमदेव शास्त्री; किग्जवे कैम्प—प० भुवनेश्वर नाथ; कालका जी डी. डी ए. स्लेट्स—प० परमेश शर्मा कृष्णनगर—प० सुधाकर स्नातक, गांधी नगर—प० छवि कृष्ण शास्त्री, ग्रेटर कैलाश-I—डा० रघुवीर वेदालकार; गुड मन्डी—प० रामरूप शर्मा, १५१-गुप्ता कालोनी—प० रघुराज शास्त्री, गोविन्दपुरी—प० तुलसीराम भजनोपदेशक; चूना मण्डी पहाडगज—मास्टर ओमप्रकाश आर्य; जगपुरा भोगल—प० मनोहर विरक्त; जनकपुरी बी ३/२४—श्रीमती लीलावती आर्या, टैगोर गार्डन—ला० लखमीचन्द आर्य; तिलक नगर—प० जयभगवान भजन मडली, तिमारपुर—श्री चमनलाल; दरियागज—प० कामेश्वर शास्त्री, नारायण विहार—ब० खुशीराम शर्मा, नया बांस—प्रो० सत्यपाल बेदार; पजाबी बाग—प्रो० वीरपाल विद्यालकार, पजाबी बाग एक्सटेंशन—वैद्य रामकिशोर, प्रीतमपुरा—प० मनोहर लाल ऋषि भजनोपदेशक, बाग कड़े खां—पं० बरकतराम भजनोपदेशक, बिरला लाईन्स—प० मुनिशकर वानप्रस्थी, माडल बस्ती—प० गणेशदत्त वानप्रस्थी; महावीर नगर—प० विश्वप्रकाश शास्त्री; महरौली—प० वेदपाल शास्त्री; रमेश नगर—प० देवराज वैदिक मिश्नरी, राणा प्रताप बाग—श्रीमती सुशीला राजपाल; लक्ष्मी बाई नगर—श्रीमती प्रकाशवती शास्त्री, लाजपतनगर—आचार्य नरेन्द्र, लेखराम नगर-त्रिनगर—प० ओमप्रकाश गायक; लारेन्स रोड—प० दीनानाथ सिद्धान्तालकार; विक्रम नगर—प० सीसराम भजनोपदेशक, सुदर्शन पार्क—प्रो० भारत मित्र शास्त्री, सराय रोहेला—प० गजेन्द्रपाल शास्त्री, सोहनगज—स्वामी विश्व देवानन्द; श्री निवासपुरी—प० प्रकाशवीर व्याकुल, शालीमार बाग—आचार्य हरिदेव सि भू०, शादीपुर—श्री मोहनलाल गांधी; हौज खास डी-२०—प० चन्द्र भानु सि० भू०, पालम कालोनी राज नगर—प० अशोक कुमार विद्यालकार, । आर्यसमाज हनुमान रोड—प० शिवकुमार शास्त्री ।

—ज्ञानचन्द डोगरा, वेद प्रचार-प्रबन्धक

चार समाजों के संयुक्त वार्षिकोत्सव एवं यजुर्वेद परायण के कार्यक्रम

जिला पीलीभीत मे चार समाजो, मझोला बाजार, नौसर ग्राम, अशोक नगर पीलीभीत और गुरुकुल मनोकामना जहानाबाद मे वार्षिक उत्सव क्रमश: ८, ९, १०—११, १२—१३, १४, १५ और १६, १७, १८ अप्रैल को समारोह-पूर्वक मनाए गए। यजुर्वेद पारायण यज्ञ मझोला बाजार से ८ अप्रैल से आरम्भ हुआ और सभी समाजों मे निरन्तर होता हुआ, १८ अप्रैल प्रात: ९ बजे गुरुकुल मनोकामना में पूर्णाहुति हुई । चारो स्थानो के धर्मप्रेमियो ने यज्ञ मे सोत्साह भाग लिया। यज्ञ का प्रभाव अभूतपूर्व रहा।

इस अवसर पर आर्यसमाज के विद्वान व्याख्याता श्री रामदेव, श्री स्वय-प्रकाश, श्री इन्द्रदेव, श्री धर्मवीर विद्यालकार, और भजनोपदेशक श्री नरदेवजी श्री मुरलीधर के व्याख्यानो, वेदकथाओ और भजनो का अच्छा प्रभाव हुआ । इस अवसर पर वेद, शिक्षा, राष्ट्र, अहिंसा और धर्मरक्षा सम्मेलन हुए और कई प्रस्ताव पारित हुए।

श्री नरदेव शास्त्री ने रात्रि मे मैजिक लालटेन द्वारा भारत के ऋषियो समाज सुधारको और क्रान्तिकारियो की जीवनी के चित्र दिखाकर शिक्षाप्रद घटनाएं बताईं ।

आर्यसमाज फरीदाबाद शहर के पदाधिकारी

सरक्षक—श्री दीपचन्द्र तनेजा, प्रधान—श्री नारायण प्रसाद, उपप्रधान—श्री मदनलाल तनेजा; मन्त्री—श्री नकुलदेव चौधरी, उपमन्त्री—श्री दिनश-कुमार विद्यार्थी, कोषाध्यक्ष—श्री महेश-चन्द्र, प्रचारमत्री—श्री पन्नालाल ।

आर्यसमाज नरेला का ५२वां वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज नरेला का ५२ वां वार्षिकोत्सव २९-३० मई को मनाया जाएगा। शनिवार २९ मई को २ बजे तक नगर-कीर्तन होगा। ५ बजे से ६ बजेतक व्यायाम प्रदर्शन होगा। रविवार ३० मई को प्रात ८ से १० तक यज्ञ-उपदेश होगा। दोपहर १२ बजे से साय ४ बजे तक सम्मेलन होगा। शाम को व्यायाम सम्मेलन और रात्रि ८ से १० बजे तक सम्मेलन होगा।

आर्यसमाज पश्चिम विहार का वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज पश्चिम विहार नई दिल्ली का सातवां वार्षिकोत्सव ए-३ ब्लाक मे अवस्थित आर्यसमाज मन्दिर मे १६ मई को प्रात ८॥ से १२॥ बजे तक मनाया जाएगा। इस उपलक्ष्य मे १० से १६ मई तक रात को ९ से १० बजे तक वेदकथा होगी। वेदकथा से पूर्व भजन होगे ।

आर्यसमाज पजाबी बाग विस्तार मे वेदकथा

आर्यसमाज पजाबी बाग एक्सटेंशन, नई दिल्ली-२६ के तत्वावधान मे १९ तथा २० नम्बर के बीच वाले पार्क मे १० मई से १६ मई तक प्रतिदिन रात्रि को ८.४५ से ९ तक प० रामकिशोर वैद्य की वेदकथा होगी। वेदकथा से पूर्व भजन होगे। पूर्णाहुति १६ मई को प्रात होगी।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रकाशन

सत्यार्थप्रकाश सन्देश (हिन्दी)	१.००
,, ,, अंग्रेजी	समाप्त
आर्य सन्देश-महासम्मेलन विशेषांक	०.६०
पादरी भाग गया— ओम्प्रकाश त्यागी	०.३०
स्वामी श्रद्धानन्द-बलिदान अर्द्ध शताब्दी स्मारिका	६.००
सत्यार्थप्रकाश शताब्दी समारोह स्मारिका	६.००

सम्पर्क करें—
अधिष्ठाता प्रकाशन विभाग
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
१५ हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१

卐 आर्यसन्देश' के स्वय ग्राहक बनें—
दूसरो को बनाए'

卐 आर्यसमाज के सदस्य स्वयं बनें—
दूसरों को बनाइए

हिन्दी-संस्कृत भाषा स्वय पढ़ें
दूसरो को भी पढ़ाइए—

रजि० डी (सी) ७९५

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए श्री सरदारी लाल वर्मा द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित तथा भाटिया प्रेस २५७४, रघुबरपुरा नं० २ गाधी नगर दिल्ली-३१ में मुद्रित । कार्यालय १५ हनुमानरोड, नई दिल्ली फोन ३१०१५०

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक मुखपत्र

एक प्रति ३५ पैसे वार्षिक १५ रुपये वर्ष . ६ अंक ३० रविवार २३ मई १० ज्येष्ठ वि० २०३९ दयानन्दाब्द—१५८

भारत महान् ! भारत का सभी कुछ महान्

—योगिराज अरविन्द

हम साधारण नही हैं। हिमालय एव गगा के समान अति प्राचीन हैं। हमारा इतिहास गरिमामय है। ससार की कोई भी जाति हमारी तुलना नहीं कर सकती। हम तपस्वियों की सन्तानें हैं। हमारे पूर्वजो ने बडा तप किया था, जिसके कारण उन्होंने आध्यात्मिक क्षेत्र मे सर्वोत्कृष्टता प्राप्त कर ली थी। यह एक अनोखी बात है कि उन्होने असीम बल के साथ परमोत्कृष्ट सहन शक्ति भी प्राप्त की थी।

हम उन माताओं की सन्तानें हैं, जो अपने परलोकगत पतियो का साथ देने के लिए सहर्ष चिता में चढ़ जाती थी। हम कष्ट सहकर भी सहर्ष क्षमा करते रहते हैं।

प्रत्येक राष्ट्र सर्वव्यापक महाशक्ति को धर्मपूर्वक आचरण करके ही जीवित रह सकता है। आध्यात्मिक शक्ति ही हमारा आराध्य एव भारत की प्राण है। इसी कारण यह राष्ट्र सनातन है। हमारी अखण्ड जीवनधारा का यही रहस्य है। यह अनन्त शक्ति ही हमारे पुनर्जीवन एव नवोत्थान का कारण है। भारत माता भूखण्ड नहीं है, वह शक्ति एवं देवी है। प्रत्येक राष्ट्र के लिए ऐसी देवी बलदायिनी, स्वायत्तसत्ता दायिनी एवं जीवनदायिनी है।

भारतीय धर्म महान् है। सब प्रकार का भारतीय चिन्तन भी महान् है। भारत का साहित्य, कला, समाजरचना, शिल्प सभी कुछ महान् है।

हमारे राष्ट्र ने न तो कभी पाश्चात्य देशो की भांति आक्रमण किए हैं और न उपनिवेश स्थापित किए हैं। हमने तो ससार के विभिन्न देशो मे अपने दर्शन के माध्यम से ही प्रवेश किया है। आज भी भारत प्रगति-पथ पर अग्रसर हो रहा प्रतीत होता है।

अरब देशों में प्रलोभन से धर्म-परिवर्तन

सार्वदेशिक के महामन्त्री श्री त्यागी द्वारा चिन्ता अभिव्यक्त

नई दिल्ली। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री ओमप्रकाश त्यागी ने मध्य पूर्व के अरब देशो मे धर्म-परिवर्तन की घटनाओ पर गम्भीर चिन्ता व्यक्त करते हुए केन्द्रीय सरकार से वहां निवास कर रहे भारतीयो की धर्म एव संस्कृति की सुरक्षा की मांग की है।

श्री त्यागी ने अभी हाल ही में यूनाइटेड अरब अमीरात मे चालीस विदेशियो के जिनमे भारतीय भी हैं, धर्म-परिवर्तन कर इस्लाम मे दीक्षित करने के समाचार का हवाला देते हुए कहा कि धर्म-परिवर्तन मकान एव अन्य सुविधाए देने के प्रलोभन के बल पर ही किया जा रहा है।

आर्यसमाज पजाबी बाग विस्तार में रामायण कथा

आर्य समाज पंजाबी बाग विस्तार नई दिल्ली-२१००२६ द्वारा १०-१६ मई तक रामायण कथा कार्यक्रम प्रतिदिन साय ७-३५ ८-४५ तक बडी धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर रामायण कथा बड़े रोचक ढग से महोपदेशक वैद्य रामकिशोर जी ने रखी व कथा से पूर्व मनोहर भजन श्री वेद व्यास द्वारा किये गये।

कथा के प्रथम दिन सोमवार २-५-८२ प्रभात फरी निकाली गई व समापन रविवार १५-५-८२ को हुआ। वहां के उत्साही प्रधान श्री चितरजन दास जी नैयर व मन्त्री श्री सुभाष मित्तल के अनथक प्रयत्नों के कारण, उपस्थिति प्रतिदिन काफी अच्छी रही व नये-नये लोग भी आये व आर्य सन्देश के भी सदस्य बनाये गये।

६०० बैलों और बछड़ों का लदान रुका

आर्यजनों के धरने का सुखद परिणाम

दिल्ली। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले और अ० भा० गोसेवा संघ के मन्त्री श्री राधाकृष्ण बजाज के नेतृत्व मे १० मई के दिन दिल्ली के आर्य जनो द्वारा धरना देने से दिल्ली से कलकत्ता, बम्बई एव दूसरे स्थानो को जाने वाले ६०० के लगभग गौओ बैलो, बछडो और भैंसो का लदान रुक गया है। अजमेरी गेट के रेलवे साईडिंग पर दस डिब्बो मे सौ गाय, बैल और बछडे थे। धरने के परिणामस्वरूप नई दिल्ली रेलवे और किशनगज साईडिंग से भी ५१ डिब्बो मे जाने वाले लगभग ५०० बैल-बछडों का लदान रोक दिया गया। हरियाणा से दिल्ली होकर आगे जाने वाले तीन दूसरे डिब्बो मे लदे गौ-बैल भी दिल्ली मे ही रोक दिए गए हैं।

श्री शालवाले, श्री बजाज एव दूसरे आर्य कार्यकर्ताओ के धरने के बाद रेल अधिकारियो ने सूचना दी कि उन्हे उच्चाधिकारियो से यह आदेश प्राप्त हो गया है कि दिल्ली से गोवंश का लदान बाहर के लिए नहीं किया जाए।

ग्रीष्मकालीन आर्यवीर दल प्रशिक्षण शिविरों की व्यवस्था

देश के कई प्रमुख केन्द्रों एवं हरियाणा में आयोजन

दिल्ली। ग्रीष्मावकाश मे आर्य-हिन्दू युवको मे वैदिक सस्कार प्रविष्ट करने एव शारीरिक, सामाजिक ओर आत्मिक दृष्टि से समुन्नत करने के लिए सार्वदेशिक सभा के तत्वावधान मे निम्न ग्रीष्मकालीन आर्यवीर दल शिविरो की व्यवस्था की गई है।

१. ९ से २३ मई तक गुरुकुल सोनगढ (गुजरात) २. १५ से ३० मई, गुरुकुल होशगाबाद (म० प्र०) ३. २२ से २९ मई डिबाई बुलन्दशहर (उ० प्र०), ४. १८ से २५ मई नागदा (म० प्र०), ५ २५ से ३० मई आर्यसमाज माडल टाउन पानीपत (हरियाणा) ६. १ से ६ जून रोहतक हरियाणा; ७. १ से १० जून आर्य हायर सेकेण्डरी विद्यालय नरवाणा (हरियाणा); ८. १ से १५ जून सासनी, अलीगढ़ (उ०प्र०) ९. २७ मई से ६ जून गुरुकुल गदपुरी।

आर्यवीर दल हरियाणा के तत्त्वावधान में भी ग्रीष्मकालीन प्रशिक्षण शिविरो की व्यवस्था की गई है। सार्वदेशिक के दो कार्यक्रम प्रादेशिक स्तर संयुक्त रूप से रखे गए हैं। शेष निम्न चार कायक्रम अतिरिक्त हैं—

१. ६ से १३ जून तक आर्यसमाज सोहना गुडगाव, २. १३ से २० जून तक ग्रामीण क्षेत्र शिविर डीग, बल्लभगढ, ३ २१ से २७ जून तक आर्यसमाज फरीदाबाद शहर; ४. २७ जून से ४ जुलाई तक दयानन्द मठ रोहतक।

शिविरार्थियो को अनुभवी शिक्षक व्यायाम, प्राणायाम, योगासन एव बौद्धिक प्रशिक्षण देंगे।

सम्पादक—नरेन्द्र विद्यावाचस्पति

व्यवस्थापक—प्रद्युम्नलाल तलवाड़

वेद-मनन

पाप और अहंकार से कौन बचता है ?

—मनोहर विद्यालंकार

ईजे यज्ञेभि. शशमे शमीभिर्ऋधद्वारायाग्नये ददाश।
एवा च न यशसामजुष्टिर्नांहो मर्तं नशते न प्रदृप्तिः ॥ ऋक् ६-३-२

ऋषि-भरद्वाज । देवता-अग्नि । छन्दः-निचृद गायत्री ।

शब्दार्थ— भरद्वाज=समृद्धिशाली होकर भी जो व्यक्ति (यज्ञेभि ईजे) यज्ञीय करते हुए अपना समय व्यतीत करता है, (शमीभि शशमे) शामक कर्मों द्वारा दूसरो कर्म को सान्त्वना देता है (ऋधद्वाराय) वर्द्धक एव वरणीय धनो के स्वामी (अग्नये) समाज या राष्ट्र के मार्गदर्शक के लिए (ददाश) सामर्थ्य के अनुसार अपनी सम्पत्ति का दान-उपयोग करता है।

(एवा) निश्चय ही ऐसा जीवन जीने वाले(मर्तम्) मनुष्य को (यशसाम-जुष्टि.) यशस्वी पुत्रो का अभाव अथवा यशस्वी जनो की अप्रीति (न) नही (अह) सामाजिक अपराध या मानसिक पाप (न) नही (च) और इनसे भी बढकर (प्रदृप्ति) दर्प या अह कार (न) नही (नशते) प्राप्त होता है।

निष्कर्ष—समृद्धि से मनुष्य मे अयज्ञीय कर्म (दुष्कर्म या ऐब) आने लगते हैं, और वह अपने साथियो की उपेक्षा तथा तिरस्कार करने लगता है। इस मन्त्र के ऋषि शब्दार्थ से सकेत मिलता है कि यदि वह समृद्धि प्राप्त होने के बाद भी—

१ अपना जीवन यज्ञीय कर्मो मे व्यतीत करता है, २. अपने संगीसाथियो का तिरस्कार न करके, सहानुभूति रखता है; कष्ट पडने पर सहायता और दुःखो मे सान्त्वना देता है और ३. सामाजिक क्षेत्र मे काम करने वाले नेताओ की दान द्वारा सहायता करता है। उसे यशस्वी पुत्र मिलते हैं,धन और अन्न की कमी नहीं होती। समाज मे अपराधी या पापी नही कहलाता। और सबसे बढ़कर उसे दर्प या घमण्ड नही होता, क्योकि वह समृद्धि को अपने परिश्रम और बुद्धिकौशल का परिणाम न मानकर, परमेश्वर की कृपा मानता है। 'क्रोध श्रिय शीलमनार्यसेवा, ह्रिय काम. सर्वमेवाभिमान ।' हरति, इनमे से प्रत्येक बुराई एक-एक गुण का नाश करती है, लेकिन अभिमान सभी गुणो को दबा देता है।

विशेष—सामान्यतया ऋषि शब्द से मिलने वाले सकेत को अपनाकर मनुष्य मन्त्र के रहस्य का ज्ञाता बनकर देवसखा बन जाता है, लेकिन इस मन्त्र की रचना सकेत करती है कि ऋषि सम बनने के बाद भी दर्प से बचने के लिए और अधिक साधना अपेक्षित है, क्योकि ऋषि बनने के बाद भी दर्प उन्हे पतित कर देता है।

अर्थ पोषक प्रमाण—ऋधद्वाराय—ऋधत् समृद्ध वार वरणीय धन यस्य तस्मै। सायण प्रदृप्ति.—अनर्थहेतुः प्रदर्पश्च। यशसामजुष्टि—यशस्विना पुत्राणा—मप्राप्ति.। सायण, धनानामन्नाना चासेवनम्।—स्वामी दयानन्द, शशमे --शमु उपशमे। शमी कर्मनामसु। नि०

ईजे—ईजे गतिकुत्सनयो., सगच्छते। नशते प्राप्नोति। स्वामी दयानन्द, यश. —अन्नम्। नि० २-६ यश धनम्। नि० २-१० यश जलम्। नि० १-१२ प्रदृप्ति. —दृप उत्क्लेशे। दृपी सदीपने। दृपे हर्षमोहनयोः।

१२२, ईश्वर भवन, खारी बावड़ी, दिल्ली-६

वैद्य रामकिशोर वैद्य द्वारा अप्रैल के कार्यक्रम

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ आर्योपदेशक प० रामकिशोर जी वैद्य ने अप्रैल मास के प्रारम्भ मे १ से ४ अप्रैल तक आर्यसमाज नया बास मे सामवेद यज्ञ का पारायण कराया और मास के अन्त मे २६ से ३० अप्रैल तक आर्यसमाज आर्यपुरा मे वेद एव रामायण की कथा प्रस्तुत की। नया बाँस समाज के कार्यक्रम मे प० वेदव्यास भजनोपदेशक और प० सत्यदेव स्नातक मण्डली ने मधुर भजनोपदेश से जनता को मोहित किया।

अप्रैल महीने मे ५-६ तारीख को वैद्य जी उ० प्र० जिला सहारनपुर की आर्यसमाज अम्बहटा के उत्सव पर गए और २२ से २५ अप्रैल के दिनो मे आर्यसमाज कृष्णनगर के उत्सव तथा १३ अप्रैल को स्वतन्त्र भारत मिल के कार्यक्रम मे उपदेश दिया।

लोक-चिन्तन

अंग्रेजी हटे तो कैसे हटे ?

—डा० विजय द्विवेदी

भारत की शिक्षा और भारत नीति को लेकर वाद-विवाद की एक अनन्त शृंखला चल रही है। इस देश के सामान्य नागरिक से लेकर सर्वोच्च सत्ता संपन्न नीति-नियामक एव मनीषीगण अनेक बार, अनेक तरह से कह चुके हैं कि देश की शिक्षा एव भाषानीतियां देश के सर्वांगीण तथा स्वस्थ विकास के लिए उपयोगी नहीं हैं। इनसे न केवल राष्ट्र एवं राष्ट्रीयता की अपूरणीय क्षति हो रही है, अपितु एक ऐसी सस्कृति जन्म ले रही है जिसे सभ्यता के सभी मानदण्डों की दृष्टि से 'बर्बर' कहा जा सकता है। भारतीय जन-जीवन मे दैनन्दिन घटित होने वाली असख्य घटनाए इसका प्रमाण हैं। दुर्भाग्य का विषय है, कि हमारे देश की सभ्यता-सस्कृति, शिक्षा-दीक्षा। रीति-नीति के धारक उस चरम सत्य से परिचित होकर भी प्रत्यक्ष एव परोक्ष रूप से इसका समर्थन कर रहे हैं और हम उन्हें पूजनीय मानकर नतमस्तक हो रहे हैं। उन्ही से आशा कर रहे हैं कि वे हमे इससे मुक्ति दिलायेंगे। ऐसा वे क्यों कर रहे हैं—यह किसी से छिपा नही है। पश्चिम बंगाल की वामपंथी सरकार ने प्राथमिक पर अंग्रेजी की अनिवार्यता समाप्त करने का निर्णय लेकर न केवल एक साहसिक कदम उठाया है, अपितु इस देश के बुद्धिजीवी वर्ग के देशद्रोही जनविरोधी चेहरे को भी बेनकाब कर दिया है। आज से डेढ़ सौ साल पहले राजा राममोहन राय और उनके मुट्ठी भर पिट्ठू अंग्रेज और अंग्रेजी के समर्थन मे जो तर्क देते थे, आज के हमारे मनीषी, भाषा शिक्षा-समाज और साहित्य शास्त्री उन्ही तर्कों को बीजमत्र की तरह दुहरा रहे हैं। इस सम्बन्ध मे कुछ प्रख्यात विद्वानों की राय उल्लेखनीय है। एक विद्वान बगाल के हैं, मगर इनका स्वरूप अखिल भारतीय है इनके बिरादर सारे देश मे हैं, वह चाहे बगाल-बिहार हो अथवा केरल-कर्नाटक।

भाषा शास्त्र के प्रख्यात पण्डित और एक समय के मेरे भाषागुरु डा० सुकुमार सेन का विचार है—'ऐतिहासिक, प्रयोजन, अनन्य साधारण शक्तिमत्ता, जातीय और अन्तर्जातीय एकता की खातिर अंग्रेजी भाषा को हमारी मेरुदण्डी भाषा के रूप मे रहना समुचित है।···बगला साहित्य के अन्यतम विद्वान श्री प्राणनाथ विशी कहते हैं —'अंग्रेजी को अन्यतम भारतीय भाषा स्वीकार करना होगा।'—[illegible] नीहाररजन राय, असित बंद्योपाध्याय, सोमेन्द्र वसु, प्रेमेन्द्र मित्र, प्रभृति सभी स्तर के मनीषी एक मत हैं कि अंग्रेजी अगर इस देश से चली गई तो देश का सर्वनाश हो जायेगा। दूसरे शब्दो में अंग्रेजी ही देश है, अंग्रेजी ही विदेश है। स्मरण रखन की बात है कि विचारधारा की दृष्टि से उक्त सभी विज्ञ जन गांधीवादी हैं। गांधी जी का गुणगान कर बहुत कुछ पा चुके हैं, परन्तु भाषा के नाम पर गांधी जी से सहमत नहीं हैं। यही हालत देश के अन्य विद्वानों की भी है। तब सवाल पैदा होता है —अंग्रेजी को कौन हटाये और हटाये भी तो कैसे हटाये ? जब सरकार, विज्ञ, विधायक शिक्षा-शास्त्री कोई अंग्रेजी को हटाना नही चाहते तो जन-[illegible] के रोदन से क्या होगा ?

महाराजा पूर्णचन्द्र महाविद्यालय, बारीपदा (उड़ीसा)

महिला जगत

हे नारी, तू कुछ तो बन

—शशि टण्डन

वीर भगत की जननी बन, राघव की कौसल्या बन,
दशरथ की बन अगरक्षिका, शिव की उमा अर्पणा बन।
रे दिव्या, तू कुछ तो बन
वीर शिवा की उग्रा बन, झांसी की जयलक्ष्मी बन,
गार्गी बन, मदालसा बन, सीता बन अनसूया बन,
मानव जननी कुछ तो बन
अन्त.करण की ज्योति बन, मेधा बन तू संज्ञा बन,
स्नेह धैर्य की प्रतिमा बन, वेदमार्ग की प्रतिमा बन,
हे गरीयसी, कुछ तो बन
लें असि, वीर अ गना बन, सुखदा शुभदा ललना बन,
तू तुलसी की रत्ना बन, सत्या बन, सुलोचना बन,
हे पूज्या, तू कुछ तो बन।

कल्याण-मार्ग

ओ३म् येन देवा न वियन्ति नो च विद्विषते मिथ· ।
तन्कृण्मो ब्रह्म वो गृहे संज्ञान पुरुषेभ्य· ॥

हम तुम्हें ऐसा ज्ञान देते हैं, जिस व्यवहार से साधकों में विरोध नहीं होता वह उत्तम ज्ञान आपके घर में मनुष्यों के लिए करते हैं।

ओ३म्
आर्य सन्देश

कश्मीर से कन्याकुमारो तक

कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक समस्याए निरन्तर सिर उठा रही हैं, खेद का विषय है कि केन्द्र और प्रांतों की सरकारें तथा सामान्य जनता उनकी भयावहता तथा दुष्परिणामो की अनदेखी कर रही है। कश्मीर से नए सकट की शुरुआत होती दीखती है। राष्ट्रीय हितो की पूर्ण उपेक्षा कर शेख अब्दुल्ला की नेशनल कांफ्रेंस ने जम्मू कश्मीर विधान सभा मे एक अत्यन्त विवादास्पद विधेयक स्वीकृत कराया है। इस विधेयक के परिणामस्वरूप उन मुसलमानो को भारत की नागरिकता पुन मिल जाएगी, जो ३५ वर्ष पूर्व कश्मीर या भारत छोडकर चले गए थे और जिन्होंने पाकिस्तान की नागरिकता स्वीकार कर ली थी। जिन लोगो की एक दूसरे राष्ट्र के प्रति वफादारी कानूनी रूप से मजूर की जा चुकी हो, उन्हें जम्मू-कश्मीर आकर भारत आने की छूट देना देश मे राष्ट्रद्रोहियो को आश्रय देकर नए सकट को पैदा करना होगा। यह भी उल्लेखनीय है कि देश के विभाजन के समय पाकिस्तान से जो हिन्दू-सिख शरणार्थी जम्मू-कश्मीर आए थे, उन्हें इस समय तक भी उस राज्य मे जायदाद खरीदने या राज्य के विधान सभा के चुनाव मे मताधिकार प्राप्त नही है। सब तथ्य राज्य की नेशनल कान्फ्रेंस के राष्ट्र विरोधी रुख की सूचना देते हैं। दूसरे सकट की सूचना सुदूर दक्षिण मे कन्याकुमारी से प्राप्त हुई हैं। कन्याकुमारी जिले के मण्डई कदु गांव मे भगवती अम्मा का पर्व प्रति वर्ष २८ फरवरी के दिन मनाया जाता है, इस वर्ष पर्व पर समुद्र स्नान के बाद लौटती हुई भक्त महिलाओ को कुछ साम्प्रदायिक तत्वो ने परेशान करने का प्रयत्न किया।

इस घटना के बाद वहां का वातावरण पर्याप्त अशान्त हो गया और कई अप्रिय हिंसक घटनाए हुईं। १९७१ की जनसंख्या गणना मे कन्याकुमारी जिले मे ईसाइयों की जनसंख्या केवल ३९ प्र० श० थी, परन्तु १९८१ की जनसख्या मे जिले में ईसाई ४१.५ प्रतिशत हो गए हैं। द० भारत के ईसाई मिशनो ने स्वीकार किया है कि पिछले दस वर्षों मे ईसाइयो की जनसंख्या बहुत तेजी से बढी है, इतना ही नहीं, कई गांवो को सामूहिक रूप से ईसाई बना लिया गया है। वहां अब प्रयत्न किया जा रहा है कि जिन स्थानो की बहुसंख्यक आबादी ईसाई हो गई है, उनके नए नाम रखे जाए। नगर कोयल के जिला मुख्यालय से १२ मील दूर स्थित गांव पेयनकुशी का नाम पेरिनवापुरम कर दिया गया है। कन्याकुमारी का नाम बदल कर कन्नी मेरी रखने की कोशिश की जा रही है। ईसाई परिपत्रो और पोस्टरो मे अब इसी नए नाम का प्रयोग किया जा रहा है। मण्डईकदु की घटना से स्पष्ट है कि सविधान मे स्वीकृत धर्मनिरपेक्षता का देश मे उसी समय तक सम्मान है, जब तक हिन्दू बहुसंख्या मे हैं, जिस समय वे अल्पसंख्या में आ जायेगे उनके अपने धर्म एवं उदात्त विचारों का कोई सम्मान नहीं रह जायेगा। कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तकइसी प्रकार की सामयिक चेतावनियां मिल रही हैं, प्रश्न है कि शासन और जनता उनसे कोई सीख ले सकेंगे?

कश्मीर और कन्याकुमारी की समस्यायें स्थानीय नहीं हैं। इनका राष्ट्रीय महत्त्व है। इन्हीं के साथ पंजाब की घटनाएं सावधान कर रही हैं कि वहां अलगाववादी साम्प्रदायिक तत्त्व सिर उठा रहे हैं। पूर्वोत्तर प्रदेशों मे मिजोरम, नगाप्रदेश और असम राज्यों में शांति नहीं है। इसी के साथ यह भी उल्लेखनीय है कि दक्षिणी भारत मे ही नही उत्तर भारत के व्यापक अचलो मे मुस्लिम साम्प्रदायिक तत्त्व पेट्रो डालर की मदद से पिछड़ी जातियो हरिजनो को प्रलोभन आदि देकर उनके सामूहिक धर्म परिवर्तन के लिए प्रयत्नशील हैं। इसी के साथ अमेरिका हिन्द महासागर में अपने सैनिक अड्डे मजबूत करने के साथ पाकिस्तान मे अपनी नई सैनिक छावनी बनाने के लिए प्रयत्नशील है, वह पाकिस्तान को अरबो रुपयो के नए आधुनिकतम हथियार देकर नई मोर्चाबन्दी तैयार कर रहा है। हमारी केन्द्रीय और राज्यो की सरकारो को जहां देश मे व्याप्त आर्थिक सकट से जूझना है, वहां उन्हे कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक फैले इस देश मे नित नई पैदा होने वाली समस्याओं का समय रहते उनका मूल्यांकन कर उनसे कारगर रूप से निपटना होगा। इन छोटी-बडी समस्याओ की अनदेखी राष्ट्र की सुरक्षा और अस्तित्व को खतरे मे डालकर ही की जा सकती है, आशा है इस सम्बन्ध मे प्रशासन और जनता अपना दायित्व निबाहेगे।

हरेक नशीली वस्तु का विरोध किया जाए

केवल बीड़ी और सिगरेट का बहिष्कार पर्याप्त नहीं

— श्री वीरेन्द्र, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब

पजाब मे आज कल एक विचित्र स्थिति उत्पन्न हो रही है। अकाली यह मांग कर रहे हैं कि अमृतसर मे दरबार साहिब के चारो तरफ जो क्षेत्र है, उसमे बीडी और सिग्रेट के बेचने और पीने पर प्रतिबन्ध लगा दिया जाय। यदि सरकार इसके लिए तैयार नही होती, तो फिर वह कोई ऐसा उग्र पग उठायेगे, जो पजाब के सारे वातावरण को दूषित कर सकता है। पिछले दिनो तो उन्होने गऊओ की हत्या करके उनके सिर दो मन्दिरो के ऊपर लटकाये हैं। वह भी उनकी इसी योजना का एक अग है।

आर्यसमाज न केवल बीडी और सिग्रेट के विरुद्ध है, इसलिए यदि किसी प्रकार बीडी और सिग्रेट को बेचना और पीना बन्द किया जा सके, तो आर्यसमाज उसका स्वागत करेगा। आर्यसमाज अकालियो से सहमत नही कि किसी शहर को पवित्र घोषित करने से उस शहर मे रहने वाले सब व्यक्ति पवित्र हो जाते हैं। आर्यसमाज का तो यह दृष्टिकोण है कि यदि एक नगर मे रहने वाले व्यक्ति अपने आचरण द्वारा पवित्र हो जाए, तो वह नगर भी पवित्र बन जाता है। इस विषय मे आर्यसमाज और अकाली दल के दृष्टिकोण मे अन्तर है। फिर भी पजाब के साम्प्रदायिक वातावरण को शांतिमय बनाने के लिए और जो तनाव इस समय पैदा हो गया है, उसे दूर करने के लिए आर्यसमाज कुछ कर सके, तो वह उसके लिए तैयार है, इसलिए बीडी और सिग्रेट पर जो प्रतिबन्ध लगाने की माग की जा रही है, आर्यसमाज उसका पूरा समर्थन करता है, परन्तु वह इसे पर्याप्त नही समझता है। उसका यह निश्चित मत है कि यदि अमृतसर के शहर को पवित्र बनाना है, तो बीडी-सिग्रेट के साथ-साथ मास और शराब पर भी प्रतिबन्ध लगना चाहिए। हमारे लिये अकालियो के इस दृष्टिकोण को समझना कठिन हो रहा है कि केवल बीडी सिग्रेट पर ही प्रतिबन्ध लगना चाहिए। इस समस्या का एक और पक्ष भी है जिस की अवहेलना नही की जा सकती। वह यह कि अमृतसर को बने चार सौ वर्ष हो गये हैं। क्या कारण है कि इससे पहले किसी ने यह प्रश्न नही उठाया? महाराजा रणजीतसिंह अकालियो से कम गुरु के सिंह न थे। पजाब मे तीन बार अकालियो की सरकार बनी है और तीन अकाली पजाब के मुख्य मन्त्री रहे हैं। सरदार गुरनामसिंह, सरदार लक्ष्मणसिंह गिल, सरदार प्रकाशसिंह बादल। क्या कारण है कि इन तीनो ने बीड़ी और सिग्रेट पर प्रतिबन्ध नही लगाया था? यह केवल इसलिए कि उन्होने कभी भी इस प्रश्न को कोई महत्त्व नही दिया। यह धार्मिक प्रश्न नही है, पूर्णतया राजनीतिक प्रश्न है।

कुछ उग्रवादी अकाली पजाब मे ऐसी स्थिति पैदा करना चाहते हैं, जिसमे कि पजाब के हिन्दू या तो स्वयं पजाब छोड दे या छोडने पर मजबूर कर दिए जाएं। यही कारण है कि बीड़ी और सिग्रेट के प्रश्न को इतना अधिक महत्व दिया जा रहा है, इसलिए जब बीडी सिग्रेट का प्रश्न उठाया जाता है, तो इसके सब पक्ष समझने की आवश्यकता है। आर्यसमाज इन समस्याओं को राजनीतिक दृष्टिकोण से नही देखता, वह इन्हे धार्मिक या नैतिक दृष्टिकोण से देखता है। फिर भी बीडी-सिग्रेट, मास और शराब आदि सभी ऐसी वस्तुओ पर प्रतिबन्ध लगवाने के लिए अकालियों के साथ अपना सहयोग देने को तैयार हैं। आर्यसमाज यह भी समझता है कि ये समस्याए बल के प्रयोग से हल नही हो सकती, इसके लिए उन लोगो की मनोवृत्ति बदलने की आवश्यकता है, जो इन चीजो का प्रयोग करते हैं। आर्यसमाज अपने जन्मकाल से इनके विरुद्ध प्रचार करता रहा है, और भविष्य मे भी करता रहेगा।

वैदिक अर्थव्यवस्था की संक्षिप्त रूपरेखा

इसके पूर्व 'महर्षि दयानन्द, आर्य-समाज एवं युवाशक्ति' शीर्षक के अपने लेख में जो 'आर्य सन्देश' के २१ मार्च के अक मे प्रकाशित हो चुका है, मैंने आर्यजगत् का ध्यान महर्षि दयानन्द के आर्थिक चिन्तन की ओर आकृष्ट किया था जिसकी ओर से समस्त आर्य सगठन और विशेषत हमारा शीर्ष नेतृत्व सर्वथा उदासीन रहा है तथा सदैव ही उसे उपेक्षा के भाव से देखा गया है। ऐसा क्यो ? इसका उत्तर तो शीर्ष नेतृत्व ही दे सकता है। इस लेख का तात्पर्य तो उस आर्थिक चिन्तन पर एक विहगम दृष्टि डालना मात्र है।

स्वामी दयानन्द के सभी चिन्तन वेदो पर आधारित हैं। वेदो स इतर कोई चिन्तन नही है। अत वैदिक अर्थ-व्यवस्था ही महर्षि का आर्थिक चिन्तन है।

वेद मानव जीवन को चार आश्रमो मे विभक्त करता है—

१ ब्रह्मचर्य, २ गृहस्थ, ३ वानप्रस्थ तथा ४. सन्यास। मानव समाज का प्रत्येक व्यक्ति इन्ही चार आश्रमो मे से किसी न किसी एक से गुजर रहा होता है। किसी भी स्थानीय आर्यसमाज का कदाचित ही कोई ऐसा वार्षिकोत्सव हो जिसमे आर्यसमाज के किसी भजनोपदेशक या उपदेशक ने इन आश्रमो की चर्चा न की हो और बड़े ही मनोवेग के साथ न कहा हो कि इन चारो आश्रमो मे गृहस्थाश्रम सर्वश्रेष्ठ है तथा उस कीली के समान है जिसके सहारे शेष तीनो आश्रम(ब्रह्मचर्य, वानप्रस्थ और सन्यास) चक्र के समान घूर्णित होते रहते है।

इस गृहस्थाश्रम का लक्ष्य है अर्थ। इस तरह अर्थ समस्त मानव समाज की धुरी है जिसके सहारे पूरा मानव समाज सचालित हो रहा है। वेद प्रतिपादित इस कटु सत्य को मानते हुए भी आर्य-समाज का सगठन तथा उसका शीर्ष नेतृत्व पता नही क्यो मानव समाज की आर्थिक व्यवस्था का प्रश्न उठते ही उसकी उपेक्षा करता है।

हमारी उदासीनता

आर्यों तथा आर्यजगत् के अधिकारियो से (चाहे वे शीर्ष नेतृत्व मे हो या मध्य नेतृत्व मे अथवा स्थानीय समाजो मे हो) मेरा नम्र निवेदन है कि क्या वेद प्रतिपादित आर्थिक व्यवस्था के प्रति हमारी उदासीनता मीनाक्षीपुरम की घटना के लिए उत्तरदायी नही है ? 'सत्य को ग्रहण करने और असत्य को छोडने मे सर्वदा उद्यत रहना चाहिए' की नीव पर खडा होते ही अनायास ही मुंह से निकल जाता है कि मीनाक्षीपुरम के सामूहिक धर्मांतरण की घटना में पेट्रोडालरकी अपेक्षा आर्यजगत् की महर्षि दयानन्द तथा वेद के आर्थिक चिन्तन के प्रति शतवर्षों से भी अधिक काल से वर्ती चली आ रही उपेक्षा एव उदासीनता कही अधिक जिम्मेदार है।

मीनाक्षीपुरम की घटना का मुख्य कारण है वहाँ के हरिजनो की शोचनीय आर्थिक स्थिति और यह स्थिति देश की और भागोंमे भी है। उनकी इस आर्थिक दशा के लिए क्या केवल वर्तमान सरकार ही जिम्मेदार है ? क्या वैदिक अर्थ व्यवस्था के प्रति आर्यसमाज की पलायनवादी नीति इसके लिए कम जिम्मेदार है ? क्या वास्तविकता से आंख मूदकर केवल 'धर्म धर्म' या हिन्दू हिन्दू' चिल्ला कर इस समस्याको हल किया जा सकता है ?

ऐसी घटनाओ का एक मात्र एव स्थायी हल है महर्षि दयानन्द अथवा वेद के आर्थिक चिन्तन को भारत की धरती पर लाना। आर्य बन्धुओ ! इससे बिदकने से या भागने से काम नही चलेगा, क्योकि अन्य सस्थाओ द्वारा लगाए गए 'गरीबी हटाओ' 'समाजवाद लाओ' अर्थव्यवस्था के धरातल पर ही खडा होकर हल किया जा सकता है और वह व्यवस्था हो सकती है एक मात्र वैदिक अर्थव्यवस्था।

आर्यसमाजो के वार्षिक उत्सवो पर 'तेन त्यक्तेन भुजीथा, मागृध कस्य स्विद्धनम्' की चर्चा बहुधा हुआ करती है। इसे त्याग से भोगो,लालच मत करो, यह धन किसका है ? अर्थात् किसी का नही'—इस घुट्टी को आर्यसमाज के उपदेशक सौ बर्षों से लगातार जनता के मस्तिक मे डाल रहे है। पर इनसे यदि कोई पूछे – महाशय जी, यदि 'कस्य स्विद्धनम्' से अभिप्राय 'यह धन किसका है ?' है तो यह प्रश्न है और इस प्रश्न का उत्तर क्या है ? क्या वेद ने अन्यत्र कही भी या इसी मन्त्र के साथ इसका उत्तर दिया ? तो फौरन कह देगे—'वेद ने तो उत्तर नही दिया है पर इस प्रश्न —यह धन किसका है) का अर्थ ही है किसी का नहीं।' ऐसे लोगो से मेरा नम्र निवेदन है कि जब धन के अस्तित्व को आप स्वीकार करते हैं, वेद स्वीकार करता है तो धनका कोई न कोई मालिक भी अवश्य होगा। आखिर कौन है वह ?

प्रजापति का धन

वास्तविकता तो यह है कि वेद ने यहाँ प्रश्न ही नही किया है। रामस्य गृहम्—राम का घर मोहनस्य पुस्तकम् —मोहन की पुस्तक इसी प्रकार 'कस्य स्विद्धनम्'—'क' का धन। वैदिक वाङ्मय मे 'क' प्रजापति का कहते हैं — यह प्रजापति का धन है।' प्रजापति—प्रजा का पालन करने वाला — १. परमात्मा, २. राजा। इस प्रकार यह धन परमात्मा का है या राजा का। आकारीय धन या सम्पत्ति सूक्ष्मातिसूक्ष्म निराकारीय परमात्मा का है। यह व्यवहारिक नही है अत. धन राजा का है। प्रजातन्त्रीय परिप्रेक्ष्य मे जनता ही राजा होती है अत धन जनता का है या दूसरे शब्दोमे जनता या सोसायटी का है किसी विशेष व्यक्ति का नही।

तेन त्यक्तेन भुजीथा, मागृधः कस्य स्विद्धनम्' यह वेद का आर्थिक उद्घोष स्पष्ट शब्दो मे कहता — इसे त्याग से भोगो, लालच मत करो, यह धन पूरे समाज का है किसी व्यक्ति का नही। इस प्रकार हम देखते हैं कि वेद का प्रथम आर्थिक उद्घोष है—धन पूरे समाज का अर्थात् सबका है किसी एक का नहीं।

आर्यसमाजें वेद के छोटे-छोटे उद्घोषो (नारो) का यदा-कदा प्रयोग करती रहती हैं जैसे 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्', 'मनुर्भव' सत्यवद धर्मं चर आदि। इन्ही उद्घोषो मे से बहुधा प्रयुक्त होने वाला एक उद्घोष है'वसुधैव कुटुम्बकम्' समस्त वसुधा के लोगो को अपने कुटुम्ब जैसा समझो या जैसा व्यवहार या व्यवस्था आप अपने कुटुम्ब मे बर्तते हैं वही व्यवहार या समस्त वसुधा के लोगो के लोगो के साथ वर्ते। आइए हम आप किसी एक कुटुम्ब मे चलकर वहाँ की व्यवस्था पर दृष्टिपात करे।

हम आप एक कुटुम्ब के द्वार पर पहुचे। बाहर एक काष्ठ की चौकी पडी थी, उस पर बैठ गए। कुछ देर पश्चात् एक वृद्ध सज्जन घर मे से बाहर निकले शिष्टाचारीय अभिवादन के पश्चात् मैंने उनसे पूछा—'महाशय जी, जिस चौकी पर हम बैठे है यह किसकी है ?' उन सज्जन ने तपाक से उत्तर दिया—'मेरी है।' —और वह पुन. घर मे लौट गए क्योकि हम अतिथियो के प्रति उन्हे गृहपति होने के नाते और भी कुछ कर्त्तव्य निभाने थे। इतने मे बाहर से एक युवक आया और घर मे जाने जाने लगा। वह पहले वृद्ध सज्जन का पुत्र था। उससे भी मैंने वही प्रश्न दोहराया—'यह चौकी जिस पर हम बैठे हैं किसकी है ?' उस युवक ने भी उत्तर दिया—'मेरी है।' कहने का तात्पर्य यह कि कुटुम्ब के जितने भी सदस्य घरसे बाहर निकले या बाहर से घर मे गए प्रत्येक से यह प्रश्न किया गया और प्रत्येक ने एक ही उत्तर दिया—चौकी 'मेरी है।' घर का प्रत्येक प्राणी कह रह रहा है—'चौकी मेरी है।' तो पाठकगण आप ही निर्णय करें कि चौकी किसकी है ? वास्तव मे चौकी कुटुम्ब के किसी एक सदस्य की न होकर सभी की है। अर्थात् कुटुम्ब में सम्पत्ति किसी एक सदस्य की न होकर पूरे कुटुम्ब की होती है और वेद कहता है—'वसुधैव कुटुम्बकम्' अर्थात यही व्यवस्था समस्त वसुधा के साथ बर्तो। यहाँ भी वेद ने अपने पहले ही उद्घोषका समर्थन किया कि सम्पत्ति किसी एक की न होकर सबकी है।

लेखक
विजय नारायण उपाध्याय 'नीरव'

अभी हम आप उस कुटुम्ब के द्वार पर बैठे ही हुए हैं घर मे से एक युवक निकला। सूटेड बूटेड, हैट टाई सब दुरुस्त। कपड़े साफ-सुथरे, क्रीज बिल्कुल ठीकठाक। निकलते ही बगल के मकान की ओर मुडा। लोहे के बड़े फाटक को खोला, उसमे घुसका एक कार निकाली और कार मे बैठ कर एक ओर चलता बना। मैंने गृहपति से पूछा—'यह कौन हैं ?' उन्होने उत्तर दिया—'यह मेरा लडका है। पडोस वाले कस्बे मे जो कपड़े की मिल है उसमे मैनेजर है और वहीं गया है।' इतने मे घर में से दूसरा दूसरा युवक निकला। वह भी सूटेड-बूटेड था, कपडे साफ-सुथरे क्रीजदार पर टाई और हैट नही था। यहभी उसी घर की ओर बढा और लोहे का फाटक खोल कर एक स्कूटर निकाला और उसी ओर चला गया जिधर पहला युवक गया था। मैंने गृहपति से फिर पूछा तो उत्तर मिला—'यह मेरा दूसरा लडका है और उसी कस्बे मे एक राष्ट्रीयकृत बैंक मे खजांची है'—गृहपति की बात पूरी भी न हो पाई थी कि घरमे से तीसरा युवक निकला जो साधारण कुर्ता सदरी पजामा पहने था पैरो में साधारण पम्पशू। यह भी उसी घर की ओर मुड़ा और साइकिल निकाल कर उसी ओर चलता बना। मैंने गृहपति से इसके विषय मे जानकारी चाही तो उत्तर था—'यह मेरा तीसरा लडका है और उसी कस्बे मे एक इण्टर कालेज मे अध्यापन का कार्य करता है।'

मैं गृहपति से कुछ और पूछने वाला था कि एक और युवक बनियान तथा घुटने से ऊपर की धोती पहने सिर पर गमछा बाँधे, नगे पैर घर मे से निकला और उसी लोहे की फाटक वाले घर में घुसा और कधे पर एक फावड़ा लिए हुए बाहर निकल कर एक ओर को चला

गया। गृहपति से पूछने पर ज्ञात हुआ कि यह उनका चौथा बेटा है और खेत पर गया है जहां हलवाहा पहले से गया हुआ है।

गृहपतिके इस प्रकार चार बेटे और चारो अलग-अलग कार्यों पर लगे हुए। मैंने गृहपति से अन्तिम प्रश्न किया—'क्या ये चारो एक ही चौके मे खाते हैं ? उनके भोजन के प्रकार में कोई भिन्नता तो नही होती ? उनके पहिनावे आदि में अन्तर होने से उनमे विवाद तो नही है ?' गृहपति का स्पष्ट उत्तर था—'सब एक ही चौके में खाते हैं। कुटुम्ब की ओर से उनके भोजन में कोई अन्तर नहीं रहता पर उनकी निजी आवश्यकतानुसार उनमे कुछ परिवर्तन होता रहता है। उदाहरणस्वरूप मैनेजर साहब को अधिक घी चुपडी रोटी ठीक से हजम नही होती। वह बहुत कम घी का प्रयोग करते हैं। उनकी रोटी कागज की तरह पतली होनी चाहिए पर खेती का कार्य करने वाले लडके के लिए थई की सिकी मोटी रोटी घी से अच्छी तरह चुपडी होनी चाहिए। बस ऐसे ही प्रत्येक की रुचि के अनुसार भोजनमे भिन्नता रहती है। उनमे आपस मे कोई विवाद नही है। सब एक दूसरेका सहयोग करते हैं। कार केवल मैनेजर साहब की ही नही पूरे कुटुम्ब की है। जहाँ भी उसकी आवश्यकता समझी जाती है उपयुक्त होती है। यही व्यवस्था स्कूटर की है। रहा पहनावे का अन्तर यह तो प्रत्येक के कार्य के अनुरूप ही है। मैनेजर साहब अंगोछा बांध कर मिल के कार्यालय मे जा नही सकते और न खेती करने वाला लडका सूट-बूट व टाई पहन कर खेत में काम कर सकता है।'

हमारा ध्येय पूरा हो चुका था। हम गृहपति को धन्यवाद देते हुए उठ खड़े हुए तथा उनसे चलने के लिए विदा ली।

दो बुनियादी सिद्धान्त

उपर्युक्त तथ्य से से दो व्यवस्थाए और निकली—१. कुटुम्ब मे प्रत्येक से उतना कार्य लिया जाता है जितनी उसकी क्षमता है। २. उसे उतना दिया जाता है जितनी उसकी आवश्यकता है। वेद का कहना है 'वसुधैव कुटुम्बकम्' अर्थात यही व्यवस्था पूरी वसुधा मे वर्ती जाए। इस प्रकार वेद प्रतिपादित दो आर्थिक सिद्धान्त और मिले—१. समाज मे प्रत्येक से उतना कार्य लिया जाए जितनी उसकी क्षमता है २. प्रत्येक को इतना दिया जाए जितनी उसको आवश्यकता है।

आर्यसमाज के जन्म काल से ही यह अनवरत प्रचार होता है कि वेद गुणकर्म स्वभाव पर आधारितवर्ण व्यवस्था का पोषक है। जन्मना वर्णव्यवस्था का नहीं। तात्पर्य यह कि यह कोईआवश्यक नही कि ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य या शूद्र में से कोई भी हो सकताहै। आइए इसे व्यवहारिक कसौटी पर कसें।

कल्पना कीजिए कि एक वैश्य महोदय है वस्त्रविक्रेता। उन्होने अपने अध्यवसाय से कुछ हथकरघ भी रख लिए। धीरे-धीरे हथकरघे का पावरलूम मे बदल लिया। अब इस प्रकार उनके पास एक छोटी-सी कपड़े की मिल है। उनके दो बेटे हैं। पहला बेटा विज्ञान की ओर झुका और आज कल वह औषधि विज्ञान जगत् मे एक प्रख्यात सर्जन है। वह एक बड़े सरकारी अस्पाल मे सर्जरी विभाग मे प्रमुख सर्जन नियुक्त है। दूसरा बेटा हिन्दी सस्कृत तथा अंग्रेजी भाषाओ का प्रकाण्ड विद्वान है। देश के एक विख्यात विश्वविद्यालय मे सस्कृत विभाग का प्रमुख है। इस प्रकार उनके दोनो बेटे गुण कर्म स्वभाव से ब्राह्मण हैं। वैश्य महोदय धीरे-धीरे वृद्धावस्था को प्राप्त होते हैं और एक दिन काल कवलित हो जाते हैं। अब उनके मरणोपरान्त उनके कपड़े की मिल किस बेटे को दी जाएगी ? सर्जन को या भाषा विद को ? सत्य तो यह है कि उन दोनो मे से मिल किसी के भी काम की नही है। वे पावरलूम को लेकर क्या करेंगे ? निश्चित है कि गुण कर्म स्वभावानुसार प्रतिपादित वर्ण व्यवस्था के फलस्वरूप यह मिल उन वैश्य महोदय के दोनो बेटों में किसी को न मिलकर समाज के तीसरे युवक को अर्पित होगी जिसमे पावरलूमको चलानेकी क्षमता हो। इस प्रकार गुणकर्म स्वभाव पर आधारित वर्णव्यवस्था पैतृक सम्पत्ति अधिकार पर भी सीधा प्रहार करती है। यदि बेटा पिता के व्यवसाय (वर्ण) का नही हुआ तो उसे पिता की सम्पत्ति पर कोई अधिकार नही मिलेगा वर्तमान समाजमे प्रचलित पैतृक सम्पत्ति अधिकार ही सारे भ्रष्टाचार की एक मात्र जड हैं, क्योकि भ्रष्टाचारी पिता को विदित है कि उसके द्वारा येन केन प्रकारेण अर्जित सम्पत्ति चाहे दो नम्बरी कार्यों से अर्जित हो या ब्लेकमार्केटिंग द्वारा प्राप्त की गई हो उसके मरणोपरान्त उनके बेटो को ही मिलेगी। जिस दिन इस प्रचलित प्रणाली पैतृक सम्पत्ति को समाप्त कर दिया जाएगा भ्रष्टाचार स्वत मर जाएगा।

अत वेदानुमोदित गुण कर्म स्वभावानुसार वर्ण व्यवस्था प्रदत्त आर्थिक सिद्धान्त—पिता की सम्पत्ति पर बेटे को तभी अधिकार मिले जब वह भी उसी व्यवसाय (वर्ण) का हो अन्यथा नही।

(शेष पृष्ठ ८ पर पढ़ें)

आर्य जगत् समाचार

सम्पूर्ण गोवंश हत्या निरोधक कानून बनाओ

श्री प्रधानमन्त्री इन्दिरा गांधी से महामण्डलेश्वर हरि का अनुरोध

नई दिल्ली। अ० भा० गोसरक्षण परिषद के अध्यक्ष महामण्डलेश्वर विदेही हरि महाराज ने प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी को 'काऊ द मदर एण्ड द नेशन' शीर्षक अंग्रेजी पुस्तक भेंट कर इंगित किया कि सम्पूर्ण गोवश हत्या निरोधक केन्द्रीय कानून के बिना भारत मे शांति स्थापित नहीं हो सकती।

सौ पृष्ठो की इस पुस्तक मे शासकीय तथा अशासकीय विवरणो से सिद्ध किया है कि सम्पूर्ण गोवश हत्या निरोधक कानून के बिना देश की किसी समस्या का उचित समाधान नही हो सकता।

तीव्र सत्याग्रह के लिए तैयार हो

लोकसभा सत्र की समाप्ति पर सांकेतिक सत्याग्रह का कार्यक्रम पूर्ण करते हुए महामण्डलेश्वर बिदेही हरिजी ने गोभक्तो से अनुरोध किया कि अब वे तीव्र सत्याग्रह के लिए तैयार हो जाए और वे दृढ निश्चय करें कि भारत भूमि मे गोवश के रक्त की एक बूंद भी नही गिरने देंगे। उन्होने पजाब सरकार से भी अनुरोध किया कि वह गोरक्षा के लिए प्रदर्शन करने वाले नागरिको को कारागारो से अविलम्ब मुक्त करे।

गोवंश की रक्षार्थ रेल रोको, सड़क-रोको आन्दोलन तेज किया जाए :

—रामगोपाल शालवाले

प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने लोकसभा मे स्पष्ट घोषणा कर दी थी कि जिन प्रान्तो मे गोहत्या बन्दी कानून बन चुके हैं उन्हे सख्ती से लागू करने के आदेश केन्द्र सरकार राज्य सरकारो को भेज चुकी है। इसके अनन्तर भी राज्य सरकारो तथा रेल मन्त्रालय ने इस आदेश की अवहेलना करके रेलों द्वारा गोधन का प्रदान जारी रखा।

१० मई के दिन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शाल वाले और अखिल भारतीय कृषि गो सेवा के मन्त्री श्री राधाकृष्ण बजाज ने दिल्ली रेलवे गोदाम से गोवशो से भरी वैगनो का निरीक्षण किया, तो उन्हें बताया गया कि इनकी बिल्टिया बन चुकी हैं।

श्री शालवाले ने सैंकडो आर्य समाजी कार्यकर्त्ताओ के साथ रेल पटरी पर धरना लगा कर इस कार्यवाही को रोक दिया। उनका आरोप है कि जब प्रधान मन्त्री ससद मे गोधन को दूसरे प्रान्तो मे ले जाने की पाबंदी लगाने की घोषणा कर चुकी हैं फिर रेल मन्त्रालय उस पर आचरण क्यो नही करता ?

श्री रामगोपाल शालवाले, प्रधान सार्वदेशिक सभा ने एक प्रेस विज्ञप्ति द्वारा देश भर की आर्य समाजो को आदेश दिया है कि रेल-रोको, सड़क-रोको आन्दोलन को तेज कर गोवश की निकासी बन्द कराई जाए। जब तक सरकार रेल और सड़क से गोवश की निकासी बन्द नही करती है आन्दोलन तीव्रतम रूप धारण करता रहेगा।

उत्तरी दिल्ली में विशाल आर्य महासम्मेलन

विचारार्थ बैठक आर्यसमाज आदर्श नगर में आयोजित

दिल्ली। २९ अप्रैल, १९८२ के दिन आर्यसमाज मोडल टाउन मे उत्तरी दिल्ली की प्रमुख आर्यसमाजों के प्रतिनिधियो की एक सभा हुई। उसमे सर्व सम्मति से निश्चय किया गया कि उत्तरी दिल्ली की समस्त आर्यसमाजो एव आर्य-सस्थाओ के सक्रिय सहयोग से उत्तरी दिल्ली के क्षेत्र मोडल टाउन में दिल्ली का एक विशाल आर्य महासम्मेलन आयोजित किया जाए। सम्मेलन का कार्यक्रम एव योजना बनाने के लिए २६ मई, १९८२ के दिन आर्यसमाज आदर्श नगर मे साय ६ बजे दिल्ली के प्रमुख आर्यजनो की एक विशेष बैठक आयोजित की गई है। आर्यसमाज शालीमार के प्रधान श्री धर्मपाल ने इस अवसर पर बैठक मे भाग लेने के लिए दिल्ली के सभी आर्य कार्यकर्त्ताओं को आमन्त्रित किया है।

□

आर्यसमाज अशोक विहार-२ को ३० हजार रुपए के दान

समाज में होमियोपैथिक चिकित्सालय खुलेगा : सफल शिलान्यास कार्यक्रम

दिल्ली। आर्यसमाज अशोक विहार फेज २ के वार्षिकोत्सव पर भाषण देते हुए सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले तथा सभा मन्त्री श्री सच्चिदानन्द शास्त्री ने अरब देशों से प्राप्त पेट्रो डालरों के बल पर भोले हरिजनों के धर्म परिवर्तन, अमृतसर की घटनाओं, दल खालसा के षडयन्त्र आदि समस्याओं पर गहरी चिन्ता व्यक्त की।

९ मई के दिन आर्यसमाज अशोक बिहार फेज २ का शिलान्यास कार्यक्रम बहुत सफल रहा। इस अवसर पर ३० हजार रुपए की सहायता के वचन दिए गए। श्रीमती कौशल्या देवी बर्मा वाली ने होमियोपैथिक चिकित्सालय बनवाने का समस्त भार वहन करने का वचन दिया। श्री शालवाले एव उपस्थित आर्य-नेताओ ने समाज के भवन-निर्माण मे सहायता देने का वचन दिया। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सरदारी लाल वर्मा, आर्य प्रादेशिक सभा के प्रधान प्रो० वेद व्यास, केन्द्रीय दिल्ली सभा के प्रधान महाशय धर्मपाल, सभा मन्त्री प्रिंसिपल ओमप्रकाश, श्री दरबारी लाल, वाराणसी आर्य कन्या गुरुकुल की श्रीमती पुष्पावती ने समाज के लिए शुभकामनाएं व्यक्त की। दिल्ली विश्वविद्यालय के प्राध्यापक डा० वाचस्पति उपाध्याय, एव स्वामी जगदीश्वरानन्द जी के प्रवचन और श्री सत्यदेव जी और पं० ज्योतिप्रसाद जी के भजन जनता ने बहुत सराहे। महिला कार्यक्रम की अध्यक्षता श्रीमती पद्मावती तलवाड ने की। चरित्र निर्माण पर श्रीमती ईश्वरी देवी श्रीमती शान्तिदेवी मलिक, डा० सुषमा आर्य, श्रीमती प्रेमशील के ओजस्वी भाषण हुए। बाल कार्यक्रम की अध्यक्षता आर्यनेता प. देवव्रत धर्मेन्द्र ने की। प्रधान श्री धर्मदेव मेहता ने ऋषिलंगर का पूरा खर्चा दिया तथा भवन निर्माण होने तक १००) मासिक की सहायता देने का वचन दिया। श्रीमती पद्मा तलवाड ने २५) मासिक की सहायता देने का वचन दिया।

वेद-कथा

राज्य कर्मचारियों की योग्यता और उनके वेतन

को अद्य युङ्क्ते धुरि गा ऋतस्य, शिमीवतो भामिनो दुर्हृणायून्।
आसन्निषून् हृत्स्वसः मयोभूतः य एषां भृत्यामृणधत्स जीवात् ॥

ऋ १।८४।१६

अर्थ—प्रश्न

कः=कौन, अद्य=इस समय, धुरि=सग्राम मे, (क) ऋतस्य=प्राकृतिक नियमों के अनुसार, शिमी वात=उत्तम क्रिया करने वाले, (ख) भामिनः=[illegible] पर क्रोध करने वाले, (ग) दुर्हृणायून्=शत्रुओ में अपने अदम्य साहस [illegible] प्रसिद्ध, (घ) आसन्निषून्=ठीक निशाना लगाने वाले, (ङ) हृत्स्वसः=शत्रु [illegible] प्रहार करने वाले, (च) मयोभून्=स्वराज्य का कल्याण करने वाले श्रेष्ठ वीरों [illegible] युङ्क्ते=नियुक्त करता है।

उत्तर—सः=(वह नियुक्त करता है), यः=जो राजा, एषाम्=इन श्रेष्ठ वीरो की जीविका के निमित्त, गा.=भूमियों को, जीवात्=जीवन पर्यन्त, ऋणधात्=समृद्धि युक्त करता है। —महर्षि दयानन्द

भावार्थः—राज्य कर्मचारियों की निम्न योग्यताएं होनी चाहिए। १. जिन का आहार-विहार प्राकृतिक नियमो के अनुसार हो, २. दुर्जनो को दण्ड दें और सज्जनो की रक्षा करें, ३. अपने अदम्य साहस के कारण शत्रुओं मे प्रसिद्ध हों, अर्थात् शत्रु भी जिसका लोहा मानें, ४. अचूक निशाना लगाने वाले (बाण, वाणी या लेखनी से) ५. शत्रु के हृदय मे=मर्मस्थल मे प्रहार करने वाले हों, ६. राष्ट्र हित चाहने वाले हो।

राज्य का कर्मचारियों प्रति कर्त्तव्य

राजा ऐसे श्रेष्ठ कर्मचारियो की जीविका की ऐसी व्यवस्था करे कि वे जीवन पर्यन्त उत्तरोत्तर समृद्ध होते रहें।

—धर्मवीर विद्यालंकार, ५ अशोक नगर, पीलीभीत (उ० प्र०)

आर्यसमाजों के सत्संग

२१ मई '८२

अन्धा मुगल-प्रताप नगर—प० रामरूप शर्मा; अमर कालोनी—प्रो० भारत मित्र शास्त्री तथा ज्ञानचन्द्र डोगरा गायक; अशोक विहार के.-सी ५२ ए.—पं० रामनिवास; आर्यपुरा—श्री महावीर बत्रा; आर. के. पुरम सेक्टर-५—प० ओमवीर शास्त्री; आर. के. पुरम सेक्टर-६—प० हीरा प्रसाद शास्त्री; आर. के. पुरम सेक्टर-९—वैद्य रामकिशोर; आनन्द विहार—प० प्रकाशवीर व्याकुल; किशनगञ्ज मिल एरिया—पं० प्रकाशचन्द्र वेदालकार, किग्जवे कैम्प—प० हरिदत्त शास्त्री; कालका जी डी. डी. ए. फ्लेट—प० छविकृष्ण शास्त्री; कालका जी—पं० भुवनेश्वरनाथ त्रिपाठी; कृष्ण नगर—श्रीमती उषा शास्त्री; गांधी नगर—प० हरिश्चन्द्र शास्त्री; ग्रेटर कैलाश-I—मास्टर ओम्प्रकाश आर्य; ग्रेटर कैलाश-II—श्रीमती लीलावती आर्या; गुड मण्डी—पं० सोमदेव शास्त्री; १५१-गुप्ता कालोनी—आचार्य हरिदेव सि० भू०; चूना मण्डी पहाडगज—प० भगवान सहाय विद्या-वाचस्पति; जनकपुरी बी ३/२४—प० जयभगवान भजन मडली, डिफेंस कालोनी—पं० परमेश शर्मा; तिलक नगर—पं० तुलसीराम भजनोपदेशक, तिमारपुर—श्रीमती प्रकाशवती शास्त्री; दरियागज—श्री चमनलाल आर्य; नारायण विहार—डा० सुख-दयाल भूटानी; नया बांस—श्रीमती सुशीला राजपाल; न्यू मुल्तान नगर—प० रघुराज शास्त्री; न्यू मोती नगर—प० कामेश्वर शास्त्री; नगर शाहदरा—प० खुशीराम शर्मा, पजाबी बाग—आचार्य नरेन्द्र; पजाबी बाग एक्सटेंशन १४/३—पं० मनोहरलाल ऋषि भजनोपदेशक; बाग कड़े खां—प० बरकतराम भजनोपदेशक बिरला लाइन्स—प० प्राणनाथ सिद्धान्तालंकार, मोडल बस्ती—ला० लखमीदास; महावीर नगर—पं० ओमप्रकाश गायक; महरौली—प० मनोहर विरक्त; मोती बाग—प० वेदपाल शास्त्री; रमेश नगर—प० सीताराम भजनोपदेशक, राणा प्रताप बाग—पं० गणेश प्रसाद विद्यालकार; राजौरी गार्डन—प० देवेश, रोहताश नगर—डा० रघुनन्दनसिंह, लक्ष्मीबाई नगर—श्री मोहनलाल शास्त्री; लाजपत नगर—प० विश्व प्रकाश शास्त्री; लेखराम नगर-त्रिनगर—पं० सत्यपाल शास्त्री, लारेन्स रोड—पं० देवराज वैदिक मिशनरी; विक्रम नगर—स्वामी विश्वदेवानन्द; विनय नगर—पं० सुधाकर स्नातक, सदर बाजार पहाड़ी धीरज—प्रो० सत्यपाल बेदार; साकेत—पं० हरिचन्द्र, सुदर्शन पार्क—श्री हेमराज चौधरी, सराय रोहेला—पं० दिनेशचन्द्र शास्त्री; शालीमार बाग—प्रो० वीरपाल विद्यालकार; हनुमान रोड—प० महेन्द्र-कुमार शास्त्री; हौज खास डी-२०—प० प्रकाशचन्द्र शास्त्री; राजा गार्डन १२६—स्वामी स्वरूपानन्द भजनोपदेशक।

—ज्ञानचन्द डोगरा वेद प्रचार प्रबन्धक

अन्तर्जातीय विवाह

दिनांक ९-५-८२ को आर्यसमाज कालपी में श्री श्रीप्रकाश जैतली के पोरो-हित्य में पूर्ण वैदिक रीति से कु० नीलम गुप्ता का विवाह श्री दिलीप कुमार मिश्रा के साथ सम्पन्न हुआ। वर पक्ष की ओर से १०१) यज्ञशाला हेतु तथा २१) वेद प्रचार हेतु दान दिया गया। □

आर्यसमाज विनय नगर का उत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज विनय नगर नई दिल्ली का वार्षिकोत्सव ७, ८ व ९ मई को कुल्याकुर्मी मार्केट पार्क मे मनाया गया। ३ मई से ९ मई तक सामवेद पारायण अतिरिक्त यज्ञ गया। उसमें ब्रह्मा स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती थे। रात्रि को स्वामी पर जो हालात हुए। यज्ञ की पूर्णाहुति रविवार ९ मई को हुई। उसमे जनता स्वरूप कई निर्मम हत्यारी।

का शा... रात्रि को धर्म रक्षा महाअभियान सम्मेलन ला० रामगोपाल रक्षित ... सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अध्यक्षता मे हुआ, जिसमें डा. क... विराट हिन्दू समाज ने पधार कर अपने विचार रखे। ८ मई को परिवार ... सम्मेलन और रविवार ९ मई को राष्ट्र रक्षा सम्मेलन का आयोजन किया गया, जिसमें अनेक विद्वानों ने अपने विचार रखे।

पुष्कर में आर्य-समाज मन्दिर

आर्य जगत् को यह जानकर प्रस-न्नता होगी कि हिन्दुओं के प्रसिद्ध पौरा-णिक तीर्थ पुष्कर मे आर्य समाज अजमेर ने एक भवन प्राप्त कर आर्य समाज स्थापित करने का निश्चय किया है। स्व० प० कर्मवीर जियालाल जी ने अत्यन्त पुरुषार्थ करके इस भवन को प्राप्त किया था। यह पहले चर्च था। आर्य समाज अजमेर की इच्छा है कि पुष्कर जैसे स्थान पर कोई योग्य प्रचारक, जो वानप्रस्थी या सयासी हो, सेवा कार्य करने को तैयार हो तो उसके भोजन, आवास तथा प्रचार हेतु समस्त व्यवस्था नि शुल्क की जा सकती है। इच्छुक सज्जन मत्री आर्य समाज अजमेर से पत्र व्यवहार करे।

शुभ-विवाह

श्री चतर बिहारी सैनी के सुपुत्र चि० तिलकराज एवम् श्री जगन सिंह की सुपुत्री दयारानी का शुभ विवाह ता० ६ मई को साय वैदिक विधि से सादगी पूर्ण ढग से सम्पन्न हुआ। कन्या वर पक्ष की ओर से कोई लेन-देन या आडम्बर की रस्म नही की गई। आर्य समाज आर्यपुरा के प्रधान चौ० राजेन्द्र प्रसाद जी (६२१-२२ सदर बाजार) की ओर से सारी व्यवस्था की गई। समा-रोह मे अनेक आर्य नेता उपस्थित थे। पौरोहित्य श्री क्षितीश वेदालकार ने किया। वर पक्ष की ओर से आर्य सस्थाओ को उदारतापूर्वक दान दिया गया।

आर्यसमाज (मुल्तान) देवनगर के पदाधिकारी

आर्यसमाज (मुल्तान) देवनगर के पदाधिकारी प्रधान—श्री जयगोपाल बेदी, उपप्रधान— डा० बी देव, प० रामप्रसाद शर्मा, मन्त्री—प० महावीर स्नातक, उपमन्त्री—श्री यशपाल उभराम, श्री राकेश कुमार बेदी, कोषाध्यक्ष—श्री हरिपाल, पुस्तकाध्यक्ष—श्री लालचन्द।

श्री सहगल का स्थानान्तरण

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री रामनाथ सहगल का स्थानान्त-रण पजाब नेशनल बैंक मिन्टो रोड पजाब नेशनल बैंक, पार्लियामेंट स्ट्रीट, मेन ब्राच, ग्राउण्ड फ्लोर—नई दिल्ली को हो गया है।

बोध-कथा

सच्चे चिकित्सक !

डा० दुर्गाचरण नाग बड़े ही सहृदय चिकित्सक थे। वह न केवल मोहल्ले के रोगियों की चिकित्सा करते थे, वह यह भी देखते रहते थे कि उनका कोई पड़ोसी मोहल्ले का कोई व्यक्ति भूखा, नंगा या रोगी तो नहीं है, वह अपनी क्षमता और ताकत के अनुसार भूखों को अनाज, नंगों को वस्त्र और रोगियों को दवाई देते रहते थे। गरीब रोगियों से फीस का तो सवाल ही नहीं था, वह उनकी खुराक का खर्चा भी स्वयं दे देते थे। एक दिन एक छोटे से बच्चे को हैजा हो गया, डा० नाग दिन भर बच्चे की चिकित्सा में व्यस्त रहे, पर बच्चे को बचाया न जा सका।

शाम को बहुत देर से जब वह घर लौटे तब घर वालों ने सोचा कि आज तो डाक्टर साहब बड़ी फीस लेकर आए होंगे, परन्तु घर वालों ने देखा—डा० नाग बहुत ही दुखी थे। वह आकर बोले—'गृहस्थ में एक ही बच्चा था, सब जतन कर भी उसे बचाया न जा सका। वह घर ही सूना हो गया।'

डा० नाग ने उस रात भोजन तक नहीं किया, उस परिवार के दुःख में वह द्रवित हो गए। वह वास्तव में सच्चे चिकित्सक थे, हमेशा दूसरों के दुःख-कष्ट के प्रति संवेदनशील थे।

—नरेन्द्र

आर्यसमाज रघुबीर नगर के पदाधिकारी

प्रधान—श्री अर्जुनदेव, मन्त्री—श्री रामलाल, कोषाध्यक्ष—श्री सुखदेव तनेजा, आय व्यय निरीक्षक—श्री हरीश खन्ना।

(पृष्ठ २ का शेष)

इस प्रकार वेद प्रतिपादित निम्न चार आर्थिक सिद्धान्त हैं—

१. सम्पत्ति किसी एक की न होकर सबकी अर्थात पूरे समाज की हो।

२. प्रत्येक से उसकी क्षमतानुसार कार्य लिया जाए।

३. प्रत्येक को उसकी आवश्यकतानुसार दिया जाए।

४. पैतृक सम्पत्ति में केवल उसी बेटे का अधिकार हो जो पिता के व्यवसाय का हो, अन्यथा सम्पत्ति किसी दूसरे सह व्यवसायी युवकको प्रदत्त हो।

यह रही वैदिक अर्थ व्यवस्था की संक्षिप्त रूप रेखा और इस वैदिक अर्थ-व्यवस्था के अनुरूप मानव समाज में आमूल चूल क्रांतिकारी परिवर्तन लाकर ही आर्यसमाज की सही संरचना की जा सकती है।

卐 'आर्यसन्देश' के
स्वयं ग्राहक बनें—
दूसरों को बनाएं

卐 आर्यसमाज के सदस्य
स्वयं बनें—
दूसरों को बनाइए

卐 हिन्दी-संस्कृत भाषा स्वयं पढ़ें
दूसरों को भी पढ़ाइए—

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए श्री सरदारी लाल वर्मा द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा भाटिया प्रेस २५७४, रेगरपुरा नं० २ गांधी नगर दिल्ली-३१ में मुद्रित। कार्यालय १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली फोन ३१०१५०

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक मुखपत्र

एक प्रति ३५ पैसे   वार्षिक १५ रुपये   वर्ष ६   अंक ३१   रविवार ३० मई   १७ ज्येष्ठ वि० २०३९   दयानन्दाब्द—१५८

महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर दिल्ली में मनाई जायेगी

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का साधारण अधिवेशन मीनाक्षीपुरम में अक्तूबर १९८२ में होगा

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का शिष्ट मण्डल पंजाब का दौरा करेगा   सार्वदेशिक सभा की अन्तरंग सभा के महत्वपूर्ण निश्चय

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरग सभा की बैठक रविवार २३-५-८२ को दिल्ली मे हुई। उसमे महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी १९८३ मे दिल्ली में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर मनाए जाने का निश्चय किया गया। दूसरा महत्त्वपूर्ण निश्चय मीनाक्षीपुरम में एक बृहद आर्य सम्मेलन अक्तूबर मास मे करने के सम्बन्ध में किया गया, जिसमें सारे भारतवर्ष से आर्य बहिन-भाई विशेष बसों द्वारा भारी सख्या में भाग लेंगे। इन्हीं तिथियो में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का साधारण अधिवेशन भी उसी स्थान पर आयोजित किया जाएगा। इस आयोजन से दक्षिण भारत मे प्रचार को व्यापक रूप दिया जाएगा। एक दूसरे प्रस्ताव मे पजाब में साम्प्रदायिक तत्वो द्वारा विदेशी सहायता एव षडयन्त्र के अनुसार भारत की एकता एवं अखण्डता को नष्ट करके भारत को कमजोर करने की मनोवृत्ति की [illegible] की गई एव भारत सरकार द्वारा इस स्थिति को कडाई से दबाने की मांग की गई। यह भी निश्चय किया गया कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का एक शिष्टमण्डल शीघ्र ही पजाब का भ्रमण करके वास्तविक स्थिति की जानकारी लेकर अपनी रिपोर्ट देगा। सार्वदेशिक सभा द्वारा पजाब के हिन्दुओ पर किए गए अत्याचारो की भी घोर निन्दा की गई और पजाब के हिन्दुओ को विश्वास दिलाया गया कि पजाब से बाहर रहने वाला हिन्दू पजाब के हिन्दुओ पर इस प्रकार के अत्याचारो और उनके धार्मिक स्थानो की पवित्रता को नष्ट करने के दुष्कार्यों को सहन नहीं करेगा। भारत सरकार से माग की गई कि यदि इस स्थिति पर भारत सरकार द्वारा काबू न पाया गया तो सारे देश मे यह हवा फैल जाएगी, जिसके परिणाम भारत के लिए बहुत हानिकारक होगे।

अनेक अन्य प्रस्ताव भी इस बैठक मे पारित किए गए। बाहर से आने वाले वरिष्ठ आर्य बहिन-भाइयो का आतिथ्य आर्यसमाज दीवान हाल द्वारा किया गया।

राष्ट्र के साम्प्रदायिक एवं देशद्रोही तत्वों का नियन्त्रण हो!

देश की अखण्डता और सुरक्षा के लिए पैदा हो रहे संकट के निवारण के लिए

भारत की प्रधानमन्त्री को आर्यसमाज लुधियाना का महत्त्वपूर्ण पत्र

दिल्ली। आर्यसमाज लुधियाना पश्चिम के सब पदाधिकारियो एव सदस्यो ने भारत की प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी को एक पत्र भेज कर पजाब मे [illegible] अराजकता फैलाने के लिए देशद्रोहियो के एक गुट द्वारा देश की सुरक्षा और अखण्डता के लिए पैदा किए जा रहे संकट की ओर ध्यान खीचते हुए देशद्रोहियों की विघटन की कार्रवाइयो का सामयिक समाधान करने का अनुरोध किया है।

पत्र मे कहा गया है—'देश मे आज जो सकट सुलग रहा है, उसकी कुछ चिनगारियां असम, मीनाक्षीपुरम और कन्याकुमारी में देखने को मिलीं। इसके अतिरिक्त पजाब मे खालिस्तान के नाम पर जो हालात बने हैं, उनके परिणामस्वरूप कई निर्मम हत्याए हुई हैं। पजाब का शान्तिप्रिय नागरिक आज अपने को सुरक्षित नही समझता। आज सकीर्ण और साम्प्रदायिक देशद्रोही जो, कुछ कर रहे हैं, वे ब्रिटिश शासनकाल मे पनपी मुस्लिम लीगी साम्प्रदायिकता को ही दोहरा रहे हैं। प्रतीत होता है कि साम्प्रदायनिरपेक्ष नीति की ओट मे देशद्रोही साम्प्रदायिक तत्वो को भडकाने मे लगे हैं। उन्हे विदेशी सरक्षण प्राप्त है। दल खालसा के नाम से चेतावनी दी गई है कि अमृतसर मे सिगरेट तथा शराब की दुकानें न बन्द की गई तो वहां गोहत्या की जाएगी'—पजाब के रहने वाले यह भरोसा नहीं कर सकते कि ऐसी कोई बात सिख कह सकेगा। आशका तो यह है कि पाकिस्तान जैसे किसी विदेश से ही साम्प्रदायिक तत्वो को सिख बनाकर दल खालसा के नाम से भारत मे घुसपैठ करवाई जा रही है।

इस सम्बन्ध में उल्लेखनीय है कि ४ अप्रैल १९८२ के समाचार पत्रो मे दो पत्र छपे है। पाकिस्तान के राष्ट्रपति द्वारा पहला पत्र श्री सुर्जनसिंह, कौंसलर, खालिस्तान, १२४५, किंग्जवे, वैनकुवर (कनाडा) के नाम नववर्ष का अभिनन्दन भेजकर खालिस्तान आन्दोलन का समर्थन करना था। श्री सुवेगसिंह सम्पादक कौमी समाचार, कनाडा द्वारा मोडल टाउन जालन्धर के अनन्तवीर सिंह के नाम दूसरे पत्र मे लिखा गया है—लाखो रुपए कनाडा और अमेरिका से भारत भेजे जा चुके हैं और लाखो और भेजे जा रहे हैं तथा आधुनिक हथियारो से सुसज्जित जत्थे पाकिस्तान मे सरदार अनन्तवीर सिंह के सकेत मात्र की प्रतीक्षा कर रहे हैं।' इस पत्र मे पूछा गया है कि पजाब के हर शहर मे हर सरकारी इमारत अब तक क्यो नहीं फूकी गई।

'इतना ही नही, पजाब मे शिक्षा के क्षेत्र मे जानबूझ कर दसवी कक्षा की हिन्दी की पुस्तक मे से भाई गुरुदास जी द्वारा रचित 'वाहे गुरु' मन्त्र की उत्पत्ति का अंश निकाल दिया गया है, जिससे युवा पीढी को यह पता नही चल सके कि 'वाहे गुरु' मे 'वा' का अर्थ 'वासुदेव' 'ह' का 'हरि', 'ग' का 'गोविन्द' और 'र' का अर्थ 'राम' है। इस छोटे से उदाहरण से स्पष्ट है कि सारी गुरुवाणी मे कही हिन्दू और सिख को अलग-अलग कौम नही कहा गया, बल्कि दशम गुरु श्री गोविन्दसिंह ने इस सम्प्रदाय को हिन्दू धर्म की रक्षा हेतु ही रणकुशल नीति के रूप मे सजाया और सवारा था और श्री गुरु ग्रन्थ साहब की वाणी और श्री गुरु गोविन्द सिंह द्वारा रचित दशम ग्रन्थ हिन्दी मे है।

□

सम्पादक—नरेन्द्र विद्यावाचस्पति   व्यवस्थापक—प्रद्युम्नलाल तलवाड़

वेद-मनन

पशु और आप्तजन समान रूप से व्रत का पालन करते हैं

—मनोहर विद्यालंकार

यस्य व्रतं पशवो यन्ति सर्वे यस्य व्रतमुपतिष्ठन्त आप. ।
यस्य व्रते पुष्टपतिर्निविष्टस्तं सरस्वन्तमवसे हवामहे ॥ अथर्व ७ ४०-१

ऋषि —प्रस्कण्व । देवता —सरस्वान । छन्द —त्रिष्टुप् ।

शब्दार्थ—(यस्य, जिस सरस्वान्—रसीले कामदेव के (व्रतम्) नियम आदेश व कर्म को (सर्वे पशव) सब प्राणधारी जीव (उपयन्ति) स्वभावत पालते हैं। (यस्य व्रते) जिसके व्रत मे(आप·)विद्वान् धार्मिक आप्त जन भी (उपतिष्ठन्ते) सामान्य जन की तरह व्यवहार करते हुए उपस्थित रहते हैं। (पुष्टपति)ज्ञान, बल या धन आदि पुष्टियो का स्वामी भी (यस्य व्रते निविष्ट) जिसके व्रत नियमो के आधीन बना रहता है (त सरस्वन्तम्) ऐसे रसीले कामदेव को हम (अवसे)अपनी तृप्ति और कुल की रक्षा, वृद्धि तथा यश के लिए (हवामहे) बुलाते हैं व याद करते हैं।

निष्कर्ष—१ मनुष्य चाहे कितना ही पुष्ट हो, उसे क्षीण होकर एक दिन मरना अवश्य है, इसलिए बुद्धिमत्ता इसी मे है कि अपने कुल की रक्षा के लिए काम धर्म का पालन करें। अपनी सन्तान परम्परा द्वारा अपने को अमर बना ले। 'प्रजाभिरमृतत्वमश्याम्' ऋक् ५ ४ १०

२ काम के व्रत का दमन अत्यन्त कठिन है, इसलिए हठधर्मिता से काम को दबाना उचित नही। इसके अनेक दुष्परिणाम निकलते हैं।

(३)काम को प्रजनन तक सीमित करना चाहिए, जिससे शरीर स्वस्थ रहे, समाज मे यश बना रहे और गृहस्थ के निर्वाह मे विशेष कष्ट न हो, क्योकि 'बहुप्रजा निर्ऋतिमाविवेश' अथर्व ६ १५ १०

४. काम मे आसक्त होने से शरीर रोगी हो जाता है। मन कृश होने से आत्मविश्वास समाप्त हो जाता है। समाज मे अपयश फैल जाता है। प्रतिष्ठा कम हो जाती है।

५. काम का तूर्ण त्याग करने से मनुष्य मे खीझ और क्रोध बढ़ जाते हैं। कला के प्रति अरुचि हो जाती है, सरसता मे कमी आ जाती है। मनुष्य सामाजिक न रहकर वनगु एकान्तप्रिय बन जाता है।

६. रसीले कामदेव (सरस्वान्) के आक्रमण से कोई बच नही पाता। सर्व विजयी इन्द्र भी इसके काबू मे आ जाता है, इसलिए इसे नमुचि कहते है। नमुचि का सहार सध्या, प्राणायाम और कर्मों के नैरन्तर्य से ही किया जा सकता है। 'अपा फेनेन नमुचे शिर इन्द्रोदवर्तय: ।' ऋक् ८ १४ १३

विशेष - अत्यन्त बुद्धिमान या इस पर विजय प्राप्त करने का सकल्प करके जो बार-बार स्खलित होने पर निराश न होकर निरन्तर प्रयत्नशील रहता है, वही इस पर विजय पा सकता है, और तभी बुद्धिमान कहलाने का अधिकारी बनता है।

इस मन्त्र के छन्द का शब्दार्थ सकेत करता है कि मनुष्य त्रिविध स्तुति और त्रिविध गति द्वारा ही सरस्वान् तथा प्रस्कण्व बनता है।

अर्थपोषक प्रमाण -

प्रस्कण्व —प्र + कण्व, कण्व: मेधाविनाम। नि० कण गतौ।

त्रिष्टुप् – त्रि + स्टप् स्तुञ् स्तुतौ, ष्टुविगतौ।

पशव —प्राणिन —पश्यन्तीति । आप आप्तजना स्वामी दया. आपो वै प्राणा. । शत फेनेन—आस्फायी वृद्धौ।

५७२, ईश्वर भवन, खारी बावडी
दिल्ली-११०००६

वेद प्रामाण्य में हम आर्यसमाज के साथ हैं

धर्मशास्त्रों के मर्मज्ञ करपात्री के विषय में एक संस्मरण

—रामगोपाल शालवाले—प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली

वह सस्कृत भाषा वेद-वेदाग और और विशेष रूप से मीमासा के बहुत बड़े पण्डित थे। स्वामी करपात्रीजी महाराज अद्वितीय वक्ता अपने विषयो का प्रतिपादन करने मे बडे ही प्रवीण और धर्म शास्त्र के अद्वितीय मर्मज्ञ थे।

गोरक्षा-आन्दोलन के सिलसिले मे जब मैं दिल्ली की तिहाड जेल पहुचा, तब मेरा कमरा स्वामी जी के कमरे के साथ ही था। मैं उनके चरणो मैं उपस्थित हुआ और अभिवादन के अनन्तर निवेदन किया कि महाराज आपने कथा बन्द क्यो कर दी ? स्वामी करपात्री जी बोले, 'मैं महाभारत की कथा करता था और महाभारत मे सभी प्रकार की बातें हैं। तुम आर्यसमाजी होने के नाते उन पर शकाए करते, मैंने इस झझटसे बचने के लिए कथा ही बन्द कर दी।' मैंने कहा 'महाराज, यह तो अच्छा नही हुआ, यह तो मेरे लिए ही घाटा रहेगा। मैं उस ज्ञान से वचित हो गया।' उन्होंने उत्तर दिया कि तुम्हारे लिए हमने ४ से ५ बजे तक का समय सुरक्षित रखा हुआ है। तुमसे हमारी राजनीतिक और धार्मिक विषयों पर बातें हुआ करेंगी। इससे तुम्हें मेरे विचार जानने और मुझे आर्यसमाज को समझने का मौका मिलेगा 'मैं जब दूसरे दिन उनके पास गया तो वे एक पुस्तक पढ रहे थे। मैंने पूछा, 'महाराज यह क्या है ?' स्वामी जी बोले, 'कायाकल्प'। मैंने कहा 'इसका लेखक कौन है ?' कहने लगे प० बुद्धदेव विद्यालकार।' मैंने कहा यह तो पण्डित हैं तो स्वामी जी बोले जैनी हो या सनातनी, हैं तो विद्वान पण्डित। अत मैं इसको दूसरी बार पढ़ रहा हू। इसके अनन्तर-निरन्तर २२ दिनो तक मेरा स्वामी जी के साथ धार्मिक एव राजनीतिक विषयो पर बडे प्रेम के वातावरण मे वार्तालाप चलता रहा।

एक दिन स्वामी करपात्री जी ने गोरक्षा के सम्बन्ध मे बातचीत छेड दी। मैंने बडी नम्रता से निवेदन किया कि महाराज जब तक सस्कृत साहित्य मे पूर्ण रूप से सशोधन नही किया जाता, तब तक विद्वद मडली मे तो भ्रान्ति रहेगी ही, किन्तु ये भ्रान्ति मूलक विचार यदि सरकार तक पहुच गए, जैसे सुप्रीम कोर्ट मे चर्चा हो चुकी है, इससे हमारे पक्ष को बडी हानि होने की सम्भावना है। स्वामी जी ने पूछा कोई एक स्थल उपस्थित करो हम उसका समाधान करेंगे। मैंने कहा भगवन —'माता रुद्राणाम दुहिता वसूना स्वसा आदित्यानाम् अमृतस्य नाभि । इस मन्त्र के प्रतीक को लेकर गोभिलगृही सूत्रकार ने बडा ही वीभत्स विनियोग किया है। जिसमे गोहत्या का बडा लोमहर्षक वर्णन है। स्वामी जी ने कहा कि ऐसा नहीं हो सकता। मैंने उनसे बडी नम्रता से निवेदन किया कि कल ही मैं गोभिलगृही सूत्रकार की पुस्तक मगवा कर दूगा। मैंने उसी समय आर्यसमाज के पुरोहित पडित रामचन्द्र जिज्ञासु का टेलीफोन से कहा कि कल गोभिलगृही सूत्र मुझे जेल मे पहुचा दो। वह ग्रन्थ नियत समय पर मेरे पास पहुच गया और मैंने स्वामी करपात्री जी के पास आकर वह स्थल उन्हे दिखाया उसे देखकर स्वामी करपात्री जी को पसीना आ गया और हम स्तब्ध रह गए। उन्होने बडी कृपापूर्वक मुझे कहा भैया,यह प्रश्न यदि आर्यसमाज के सामने आ जाए तो आप लोग क्या उत्तर देते हो ? मैंने कहा महाराज महर्षि दयानन्द सरस्वती प्रत्येक आर्यसमाजी विद्वान और अविद्वान को एक वचन दे गए हैं कि सस्कृत साहित्य मे वामकाल मे, अग्रेजी काल मे, मुस्लिम काल मे वैदिक साहित्य को कलुषित करने के बडे ही प्रयत्न किए गए है और विद्वानो को बडी धनराशि देकर इस तरह की मिलावटें कराई गई हैं। इस तरह भी जहाँ कही वीभत्स वर्णन हो वो बौद्धो के हैं, वाममार्गियों के हैं और अग्रेजो के है। क्योकि वे हमारी सस्कृत को गोमाता के नाम मे धूमिल करना चाहते थे। इसलिए स्वामी हमारा जवाब भी सीधा है।

एक दिन स्वामी जी ने श्री इन्द्रप्रकाश की मौजूदगी में मुझसे पूछा कि स्वामी दयानन्द जी अवतारवाद को नहीं मानते किन्तु वेद को स्वत: प्रमाण मानते हैं। अवतारवाद के खण्डन में यदि तुम्हारे पास कोई वेद, गीता, दर्शन का प्रमाण हो तो उपस्थित करो। हम उनसे ही अवतारवाद सिद्ध कर देंगे। मैंने उत्तर दिया कि भगवन मुझे भय है कि आप अपनी प्रतिज्ञा का पालन नहीं कर सकेंगे। स्वामी जी बोले, तुम कल तैयारी करके आओ। मैंने कहा महाराज इसपर मुझे तैयारी की कोई आवश्यकता नहीं है,अभी बातचीत हो जाए तो अच्छा है। स्वामी जी बोले वेद का मन्त्र उपस्थित करो—

मैंने यजुर्वेद के ४० वें अध्याय का मन्त्र प्रस्तुत किया—

सपर्य्यगाच्छुक्रमकायमव्रणमस्नाविर शुद्धमपापविद्धम् ।
कविर्मनीषी परिभू स्वयम्भूर्याथातथ्यतो अर्थान व्यदधाच्छाश्वतीभ्य. समाभ्य:

स्वामी जी बोले दर्शन का भी सूक्त उपस्थित करो। तो मैंने उत्तर दिया —यजु०४०/८

क्लेश कर्म विपाकाशयैरपरामृष्ट: पुरुष विशेष ईश्वर: ॥ योग १ २४

स्वामी जी बोले कोई गीता का श्लोक उपस्थित करो। तो मैंने कहा कि भगवन मैं अद्भुत गीता का श्लोक उपस्थित करता हूं :

साकारम् उनृतमविद्ध निराकार निरेतम्, एतत्द् तत्वो पदेशेनं न पुर्नभू सम्भव ॥

इस पर स्वामी करपात्री जी सर्वथा मौन हो गए और कहने लगे कि यह भी लग जाएगा। किन्तु किसी भी सूक्त और मन्त्र को अपने पक्ष मे न लगा सके। इस घटना मे इन्द्रप्रकाश जी ने दूसरे दिन हमारे यज्ञ मे शामिल होकर ... हाथ से यज्ञोपवीत धारण किया।

करपात्री जी का दिल्ली से वाराणसी जेल मे तबादला होने पर जब वह प्रस्थान कर रहे थे मैं श्री चरणो मे उपस्थित हुआ तो कहने लगे, हमारे-तुम्हारे वार्तालाप का आनन्द हमे स्मृति मे ही लेते रहेगे। बोले हा,इन सघवालो के सम्बन्ध में मेरे कटु अनुभव है। आर्यसमाज के साथ यद्यपि मेरे मतभेद हैं, किन्तु आर्यसमाज के प्रवर्तक स्वामी दयानन्द वेद पौरुषेय और ... ज्ञान तो सर्वात्मा मानते हैं। हमारे और उनके विचार के बीच वेद की कील लगी हुई है। अत. सत्यासत्य मे अन्तिम निर्णय करने के लिए वेद प्रामाण्य ही सर्वोत्तम कसौटी है, लेकिन ये पार्क में गुल्ली-डडा खोलने वाले राष्ट्रीय स्वयं सेवक सघ के लडके भला वैदिक सस्कृत और वेद तथा धर्माधर्म को क्या जानें। स्वामीजी ने बताया कि हमने गुरुमलि वर्कर जी द्वारा लिखित विचार नवनीत को पढा है। उसमे स्पष्ट रूप से उन्होंने लिखा है कि सघ किसी धर्म शास्त्र अथवा किसी धर्म पुस्तक से बंधा हुआ नहीं है। इसलिए ये लोग धर्मशास्त्र को क्या जाने।

सबको सत्प्रेरणा दे !

ओ३म् त्व हि विश्वतोमुख विश्व विश्वत. परिभूरसि ।
अप न शोशुचदघम् ॥ ऋ १ ६७ ६

हे मब ओर मुख वाले प्रकाश स्वरूप प्रभो आप सब ओर देखते हैं, सब ओर सुनते हैं, मब ओर से उपदेश देते हैं, सब ओर से शिक्षा देते हैं आपकी सत्प्रेरणा से सब समुन्नत हों ।

ओ३म्
आर्य सन्देश

नास्तिकता के गढ़ में धर्मचर्चा

सोवियत संवाद समिति तास के अनुसार विगत १० मई को मास्को मे एक विश्व धर्म सम्मेलन हुआ । उसमे विश्व के ईसाई, हिन्दू, मुसलमान, बौद्ध आदि प्रमुख धर्मों को मानने वाले ६०० के लगभग प्रतिनिधि एकत्र हुए । बोल्शेविक क्रांति के बाद सोवियत रूस मे धर्म को अफीम बतलाकर उसकी उपेक्षा की जाती थी । १९१७ की रूसी क्रान्ति के बाद यह पहला अवसर था कि जब धर्म के नाम पर सोवियत रूस की राजधानी मे विश्व के प्रमुख धर्मों के प्रतिनिधि एकत्र हुए । यह भी उल्लेखनीय है कि इस विश्व धर्म कार्यकर्ता सम्मेलन की सफलता के लिए जहाँ संयुक्त राष्ट्र संघ के महामन्त्री श्री पेरेज दे स्यूलर ने विशेष सन्देश भेजा था, वहाँ उसकी सफलता के लिए सोवियत प्रधान मन्त्री श्री निकोलाय तिखोनोव ने भी शुभकामना प्रकट की थी । रूसी प्रधानमन्त्री के शुभकामना सन्देश मे कहा गया है कि आज के युग में आणविक युद्ध को टालना सबसे बडी आवश्यकता है । ऐसा सकट इस पृथ्वी पर इससे पहले कभी भी पैदा नहीं हुआ, इसलिए चाहे कोई आस्तिक हो या किसी भी धर्म का मानने वाला क्यो न हो, पृथ्वी नाम के इस ग्रह पर शान्ति बनाए रखना उसकी जिम्मेदारी है ।

नास्तिकता के गढ मास्को मे विश्व के प्रमुख धर्म प्रतिनिधियो द्वारा धर्म-चर्चा जहाँ उल्लेखनीय है, वहाँ कम्युनिस्टों के मक्का के सबसे बडे गाजी द्वारा इस पृथ्वी ग्रह पर शान्ति की सुरक्षा के लिए धर्म की चर्चा करने का मौका देना भी महत्त्वपूर्ण है । कहा जा सकता है कि जादू वह जो सिर पर चढ़कर बोले । कम्युनिस्ट विचारधारा अथवा आधुनिक वैज्ञानिक चिन्तन मे ईश्वर एव भगवान के अस्तित्व को मान्यता नही दी जाती । उनके पक्षपोषको की दृष्टि मे जीवन के मूल तत्वों तथ विश्व-यात्रा मे कुछ शाश्वत नियम कार्य कर रहे हैं, वहाँ भगवान या धर्म के अस्तित्व की सार्थकता नही है । सम्भाव्य आणविक युद्ध की आशका से आज विश्व के सभी प्रमुख राष्ट्र चिंतित हैं । वे इस प्रकार के युद्ध का अन्त करने के लिए आणविक हथियारो के अन्त को सिद्धान्ततः उचित मानते हुए भी इन सहारक अस्त्रास्त्रों का अन्त करने लिए अभी प्रस्तुत नही हैं । आज ससार आणविक तथा दूसरे संहारक शस्त्रास्त्रो के सम्भावित विस्फोट के फलस्वरूप विनाश के कगार पर खड़ा हुआ है ।

विश्व को इस सम्भावित विनाश मे बचाने के लिए ससार के प्रमुख राष्ट्रो के मध्य कुछ नैतिकता के नियमो का उपयोग वाछनीय है । विश्व की मानवता एव प्राणिजगत की सुरक्षा एक मर्यादा एवं सयम से ही सम्भव है । पृथ्वी नाम के इस ग्रह पर शान्ति एव व्यवस्था रखने के लिए विश्व राष्ट्र सघ नामक शिरोमणि संस्था की स्थापना की गई है । विश्व के सघर्षों और विवादो को निपटाने मे यद्यपि इस संस्था ने उल्लेखनीय भूमिका प्रस्तुत की है, तथापि जब तक ससार के प्रमुख राष्ट्र विनाशक सहारक शस्त्रो का सर्वथा त्याग कर आपसी विवादो को सुलझाने के लिए मध्यस्थता एव पचनिर्णय जैसे किसी सिद्धान्त को अगीकार नही करते, तब तक सम्भावित विनाश का खतरा बना ही रहेगा । इस खतरे का उन्मूलन करने के लिए ही विश्व के प्रमुख धार्मिक मन्तव्यो की भूमिका महत्त्वपूर्ण हो सकती है । आज जब राजनीतिज्ञ आपसी विवाद निपटाने मे असफल हो गए हैं, जब किसी भी क्षण आपसी विवाद सामूहिक विनाश का स्वरूप धारण कर सकते हो तो इस पृथ्वी ग्रह की सुरक्षा के लिए प्रमुख साम्यवादी राष्ट्र रूस द्वारा शान्ति की गुहार और विश्व के धर्म प्रतिनिधियों का सम्मान धर्म एव नैतिक नियमो की महत्ता को स्वीकार करना है ।

चिट्ठी-पत्री

मृतक पुरुष के लिए श्रद्धांजलि : वैदिक परम्परा क्या है ?

साप्ताहिक 'आर्य सन्देश' दिल्ली के ९ मई, ८२ के अक मे पृष्ठ २ पर 'वेद-मनन' शीर्षक मे 'सविता प्रथमेऽहन्नाग्नि र्द्वितीयेवायु' यजु: ३९ ६। मन्त्र की व्याख्या आदरणीय प० मनोहर जी विद्यालकार ने प्रस्तुत की है । पडित जी ने उल्लिखित मन्त्र का जो शब्दार्थ लिखा है, उसको तो पण्डित जी के लेख मे ही देख ले । शब्दार्थ के पश्चात पण्डित जी ने जो निष्कर्ष लिखे हैं वे इस प्रकार हैं 'कोई भी जीव मृत्यु के पश्चात् १२ दिन तक जन्म ग्रहण नही करता । यह काल.... है इसलिए भारतीय परम्परा मे १२ दिन तक मृत पुरुष के लिए शुभ कामनाओ के निमित्त अनुष्ठान करने की प्रथा है । तेरहवे दिन यह मानकर कि मृत व्यक्ति न नया जीवन ग्रहण कर लिया है, अनुष्ठान का विसर्जन करके मृतक के उत्तराधिकारी को पगडी बाँधी जाती है ।'

'इस मन्त्र के छन्द का शब्दार्थ संकेत करता है कि मनुष्य को अपना सकल्प पूरा करने के लिए धैर्यपूर्वक (धृति) विशेष रूप से प्रयत्न करते रहना चाहिए यदि वह बीच मे निराश होकर अपना प्रयत्न छोड नही देता तो उसका सकल्प अवश्य पूरा हो जायगा ।' उल्लिखित मन्त्र का ऋषि दीर्घतमा तथा 'छन्दविराड धृति' है ।

मन्त्रका महर्षि दयानन्द कृत शब्दार्थ निम्नाकित है—हे मनुष्यो ! इस जीव को प्रथमे शरीर छोडने के पहले (अहन) दिन (सविता) सूर्य (द्वितीय) दूसरे दिन अग्नि (तृतीये) तीसरे (वायु) वायु (चतुर्थे) चौथे (आदित्य) महीना (पचमे) पाँचवें (चन्द्रमा) चन्द्रमा (षष्ठे) छठे (ऋतु) वसन्तादि ऋतु (सप्तमे) सातवें (मरुत:) मनुष्यादि प्राणि (अष्टमे) आठवे (बृहस्पति) बडो का रक्षक सूत्रात्मा वायु (नवमे) नवमसे (मित्र) प्राण (दशमे) दशवे मे (वरुण) उदान (एकादशे) ग्यारहवें मे (इन्द्र) बिजली और (द्वादशे) बारहवें दिन (विश्वे) सब (देवा:) दिव्य उत्तम गुण प्राप्त होते हैं ।

भावार्थ —हे मनुष्यो जब वे जीव शरीर को छोडते हैं तब सूर्य प्रकाश आदि पदार्थों को प्राप्त होकर कुछ काल भ्रमण कर अपने कर्मों के अनुकूल गर्भाशय को प्राप्त हो शरीर धारण कर उत्पन्न होते हैं, तभी पुण्य पाप कर्म से सुख-दुःख रूप फलों को भोगते हैं ।

महर्षि दयानन्द कृत उल्लिखित पदार्थ मे तथा पूज्य पण्डित जी द्वारा प्रदर्शित पदार्थ मे भी अन्तर है । सबसे अधिक समझ मे न आने वाली बात यह है कि श्री पण्डित जी १२ दिन मृत पुरुष के लिए शुभ कामनाओ के लिए किये जाने वाले अनुष्ठान को भारतीय परम्परानुकूल वेदानुमोदित मानते हैं, इस प्रकार तो पौराणिकों द्वारा किये जाने वाले मृतक के पश्चात् सभी विधि विधान भी समुचित हैं, किन्तु महर्षि दयानन्द सस्कार विधि के अन्त्येष्टि प्रकरण मे लिखते है—

'जब शरीर भस्म हो जावे तो सब जने वस्त्र प्रक्षालन, स्नान करके जिसके घर मे मृत्यु हुआ हो उसके घर की मार्जन, लेपन प्रक्षालनादि से शुद्धि करके पृष्ठ ८-१२ मे लिखे प्रमाणे स्वस्तिवाचन, शान्ति प्रकरण का पाठ और पृष्ठ ४-८ मे लिखे ईश्वरोपासना करके'''श्मशान भूमि मे कही पृथक् रख देवे । बस इसके आगे मृतक के लिए कुछ भी कर्म कर्त्तव्य नही है ।' महर्षि के लेखानुसार तीन दिन के पश्चात् मृतक के लिए कर्तव्य शेष नही रहना किन्तु पण्डित जी उल्लिखित मन्त्र के धरातल पर १२ दिन के पौराणिक कृत्यो का भी समर्थन करना चाहते है ।

यहाँ अर्थ-भेद के साथ-साथ यह स्पष्ट नही है कि दिवगत जीव इन देवताओ से किस-किस प्रकार सम्पर्क स्थापित करके किस तरह अपनी न्यूनताओ को १२ दिन मे पूर्ण कर लेता है । मेरे विचार से तो पण्डित जी के मस्तिष्क मे मृत्यु के पश्चात् भारत मे प्रचलित रुढिवादितापरक पगडी आदि की परम्पराए घर किए हुए हैं, अत उन्होने इनको वैदिक सिद्ध करने का प्रयास किया है । हाँ किसी की मृत्यु के उपरात सामाजिक सम्भ्रान्त मान्य पुरुषो द्वारा मृतक के पुत्रादि को उत्तराधिकार सौपने की परम्परा तो कुछ समझ मे आ सकती है किन्तु के १३ वें दिन की परम्परा सर्वथा अवैदिक है ।

—ओंकार मिश्र, प्रणव शास्त्री, फीरोजाबाद (उ. प्र.)

बुढ़ापे के प्रति वैदिक दृष्टिकोण—

यह अभिशाप नहीं, प्रभु का वरदान है

सयुक्त राष्ट्र सघ के अन्तर्गत विश्व स्वास्थ्य मघ न १९८२ का वर्ष वृद्ध समस्या-समाधान का निश्चित किया है। स रा सघ के अनुसार जीवन सुविधाओ —विशेषत चिकित्सा और स्वास्थ्य सेवाओ मे सुधार और वृद्धि के हेतु ६५ वर्ष की उम्र के लोगो की सख्या १९८० मे २२ करोड अर्थात विश्व की कुल आबादी का ५.८ प्रतिशत अनुमान है कि सन् २००० तक इस वय-वर्ग के लोगो की औसत सख्या बढकर ५५ प्रतिशत हो जाएगी।

वृद्ध आदर के पात्र वेद और स्मृति वचन

इससे पूर्व कि वृद्धो की समस्याए, आज की परिस्थिति मे बडी जटिल हैं। भारतीय सभ्यता और धर्मशास्त्रो के अनुसार समाज मे वृद्धो का विशिष्ट स्थान है। मनुस्मृति २। १३६ मे कहा गया है—१ धन, बन्धु, आयु, कर्म और वेदज्ञान—ये पांचोसम्मान के योग्य हैं,इन मे पहले की अपेक्षा प्रत्येक अगला अधिक पूजनीय है। अ० २।१२० मे मनु कहते हैं—बडो को नमस्कार और अभिवादन करने का जिसका स्वभाव है और जो वृद्धो की सेवा करता है उसे चार प्रकार की वृद्धि प्राप्त होती है १ आयु २ विद्या ३. यश और ४ बल। (३) विदुर नीति के तीसरे अध्याय मे राजा धृतराष्ट्र द्वारा धर्म और अर्थ सम्बन्धी प्रश्न करने पर विदुर महाराज इस अध्याय के श्लोक ४८ मे वृद्ध के महत्त्व और उसके कर्त्तव्य के बारे मे कहते हैं—१ वह सभा नही, जिसमे वृद्ध नही जो धर्म का कथन नही करते, और वह धर्म नही, जिसमे सत्य नही और वह सत्य नही जो छल से विरहित नही। २ छठे अध्याय मे धृतराष्ट्र के प्रश्न के उत्तर मे श्लोक ३४ मे छह प्रकार के वृद्धो का वर्णन करते हुए कहा गया है मूढ पुरुष इनका सदा अपमान करता है। यह छह हैं—१. विद्यावृद्ध २.वयवृद्ध ३ शील वृद्ध ४ बुद्धिवृद्ध ५ धन वृद्ध ६ अभिजात वृद्ध। विदुर नीति के अन्तिम अध्याय ८ मे धृतराष्ट्र से नीतिज्ञ विदुर २३ वें श्लोक मे कहते है—१. बुद्धिवृद्ध २ धर्मवृद्ध ३ विद्यावृद्ध ४ आयु मे वृद्ध अपने बन्धु का आदर-सम्मान कर कर्त्तव्य के बारे मे जो पूछते रहते हैं वे कभी असफल नही होते।

कौटिल्य नीति (चाणक्य सूत्र) का पहला सूत्र कहता है कि सुख का मूल धर्म है, 'दूसरे तीसरे और चौथे सूत्रो के अनुसार धर्म का मूल अथ है' 'अर्थ का मूल राज्य है' 'राज्य का मूल इन्द्रियजय है।' पांचवें सूत्र के अनुसार इन्द्रियजय का मूल विनय है और छठे सूत्र मे कौटिल्य नीति शास्त्र मे कहा गया है 'विनयस्य मूल वृद्धोपसेवा' अर्थात नैतिकता नम्रता इत्यादि का मूल ज्ञानवृद्ध, विद्य वृद्ध आयुवृद्ध की सेवा, द्वारा लाभ उठाना है। इसका फल, सातवें सूत्र मे नीतिकार कहते है 'वृद्धसेवया विज्ञानम्' वृद्धो की सेवा मे व्यवहार और कर्त्तव्य का ज्ञान होता है।

वृद्ध कौन है इस प्रश्न का उत्तर ऋग्वेद ५ २० २ मन्त्र मे दिया गया है। हे प्रकाशमय नेता! वृद्ध हैं जो धर्म और कर्त्तव्य के मार्ग मे कांपते नही हैं, अविचल रहते हैं, तीव्र बलधारी, परमात्मा द्वारा बताए वेद मार्ग को छोड जो द्वेष के मार्ग पर चलने वालो की भावनाओ को दूर करते और कुटिलता को दूर करते और कुटिलता का भी विनाश करते है।

वृद्ध आयु कब से मतभेद

वृद्ध अवस्था कबसे प्रारम्भ होती है—इस पर भी मतभेद है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार ६५ वर्ष की आयु मे इसका प्रारम्भ होता है। पर सुश्रुत के सूत्र स्थान अध्याय ३५ और छान्दोग्य उपनिषद ३ १६ के अनुसार इस देहकी पांच अवस्थाए होती हैं—(१) १६ वर्ष तक वृद्धि (२) १६ से २५ यौवन (३) २५ से ४८ तक स्थिरता (४) ४८ से ७० तक शरीर मे किंचित न्यूनता और (५) ७० से १०० वर्ष तक वृद्धावस्था।

विषम परिस्थिति बदलता परिवारिक समाज

वेद और भारत के प्राचीन नीतिशास्त्रो वृद्धो के सम्बन्धो पर आधारित उपर्युक्त निर्देश, निश्चय ही मान्य हैं पर आज, एकदम अकल्पनीय परिवर्तित पारिवारिक, सामाजिक, राजनीतिक, राष्ट्रीय स्थिति के फलस्वरूप प्राचीन और नवीन मे समीकरण करना, सामान्यत दुरुह हो गया है। बढती जनसख्या के साथ शहरी क्षेत्र मे छोटे मकान फ्लेट पद्धति लगातार बढ रही महगाई, आधुनिकता की आड मे डिस्को, कैबरे नग्ननाच कास्केट तीव्र जीवन सघर्ष इत्यादि के अतिरिक्त सिनमा, टी. वी. पर निरन्तर उत्तेजक अश्लील, प्राय. निराशा प्रेरक संगीत, कविता मद्यपान, हिंसापूर्ण, लूटपाट के दृश्य, जीवन और सफलता के केन्द्रबिन्दु केवल अर्थ और काम (सैक्स) नैतिक और धार्मिक शिक्षा विहीन पाठ्यक्रम विद्यालयो और विश्वविद्यालयो का युद्धभूमि, भ्रष्टाचार, चालू राजनीतिक दलबन्दी का रूप प्रशासन मे सर्वोच्च से लेकर निम्नतम पद तक भ्रष्टाचार जाति और भाई-भतीजावाद का नग्न नृत्य, चोर बाजारी, कालाधन, स्मगलिंग इत्यादि के हेतु देश मे व्याप्त दोहरी वित्त व्यवस्था—इत्यादि दर्जनो कारणो से परिवारो की दीवारो का टूटना, सामाजिक अवस्थाओ का अवमूल्यन, वैवाहिक पवित्रता की विनाश, उसके विपरीत तलाक, 'कान्ट्रैक्ट मैरिज', दहेज इत्यादि विकृत रूपो का अवलम्बन और देश मे पश्चिम के नकलची नवधनाढ्यों का उभरता वर्ग का इस प्रकार की बहुविध परिस्थितियो के फलस्वरूप आज का वृद्ध वर्ग एक ओर परिवार मे उपेक्षित, अवांछित, निरस्कृत बोझ रूप और दूसरी ओर वृद्ध समुदाय मे आत्महीनता, निराशा, अवसाद हर क्षण जीवन की निष्फलता की भावना के उद्रेक के साथ शीघ्र मृत्यु व कभी-कभी आत्महत्या की आकाक्षा—इस प्रकार द्वन्द्वात्मक जीवन-यात्रा शिकार होना पड रहा है। इस प्रचलित दृष्टि ने कि 'बुढ़ापा एक बीमारी है' और दूसरी ओर मैं अब बूढा होकर बेकार और परिवार समाज के लिए बेमतलब हो गया हू'—इन दोनो प्रकार के अतिवादी चिन्तन पद्धति न वृद्ध वर्ग को सर्वाधिक क्षति पहुचाई है। सम्पन्न पेंशनर तथा दूसरी ओर, पूजी, पेंशन बैंक डिपोजिट विहीन सामान्य स्तर के—दोनो प्रकार के वृद्धो की अपनी-अपनी समस्याए और परेशानिया हैं और अतर्द्वन्द्व क सतत शिकार रहते हैं कुछ निज जीवन, कुछ अपन दीर्घकालीन सामाजिक जीवन कुछ प्रति दिन के सम्पर्क से प्राप्त अनुभवो का स्वाध्याय, अध्ययन के आधार पर हम यहा वृद्ध वर्ग के लिए कुछ सुझाव देना चाहते हैं, इस आशय के साथ इन उपायो से अवश्य जीवनदिशा मे नया मोड आ सकता है।

वृद्ध क्या करें ? अनुभव आधारित कुछ सुझाव

(१) इतिहास साक्षी है कि विश्व इतिहास मे राष्ट्रो को नई दिशा देने वाले महापुरुष ६० से ऊपर के ही थे। द्वितीय विश्वयुद्ध मे जर्मनी से निरन्तर मार खाने, और हालैंड के पास 'डनकर्क' की युद्धभूमि में शत्रु से घातक पछाड के साथ हजारो सैकडो की मृत्यु और लाखों रुपए के अस्त्र शस्त्र विनाश के साथ पराजित हो रहे ब्रिटेन को विजयश्री से विभूषित करने वाले नए निर्वाचित प्रधानमत्री चर्चिल उसके सात दशक पार कर चुके थे। भारत की स्वतन्त्रतासग्राम के अग्रगण्य नेता महात्मा गांधी लगभग ८० वर्ष और उनके सहयोगी सरदार पटेल, राजाजी, राजेन्द्र बाबू, कृपलानी इत्यादि सब ६० से ऊपर और नेहरू जी भी ५० से कुछ अधिक आयु के थे। इसी प्रकार लोकमान्य तिलक, पजाब केसरी ला. लाजपत राय, स्वामी श्रद्धानन्द, नेताजी सुभाष बोस, चितरजन दास, धार्मिक क्षेत्र मे महर्षि दयानन्द, श्री अरविन्द महात्मा हसराज इत्यादि सब ६० और ७० के बीच के थे। जीवन के अन्य क्षेत्रो के भी ऐसे दीर्घायु महानुभावो के दर्जनो उदाहरण हैं। इसलिए वृद्ध को कभी निराशा और अवसाद का शिकार नही होना चाहिए।

लेखक
आचार्य दीनानाथ सिद्धान्तालंकार

बुढ़ापा वसन्त है पतझड़ नहीं

(२)वृद्ध यह कभी न समझे कि बुढ़ापा एक बीमारी है। इसके विपरीत यह निश्चय करें कि ऋतुचक्र मे जैसे पतझड़ के बाद वसन्त आता है,इसी प्रकार जीव... सघर्ष की पतझड के बाद बुढापा रूपी अभिनव वसन्त कल आया है, जब आत्म चिन्तन, एकान्त वास और प्रभु भक्ति द्वारा उसे अपन जीवन रूपी कारखाने की मरम्मत का अनुपम अवसर मिला है। महाकवि कालिदास ने अपन महाकाव्य 'रघुवश' के प्रारम्भ में ही रघुकुल का वर्णन करत हुए कहा है—वार्धक्ये मुनिवृत्तीना योगेनान्ते तनुत्यजाम् अर्थात रघुकुल क राजा बुढ़ापे मे मुनि वृत्ति धारण करते हुए योगमार्ग के अवलम्बन से शरीर त्याग करते ... व्यवस्थित और नियमित दिनचर्या, सामान्य हलका औरनियमित व न्यून भोजन, दैनिक योगासन व हल्के व्यायाम, प्रात भ्रमण ध्यान, उपासना, दैनिक प्राणायाम, एकान्त आत्म चिन्तन आदि साधनो से वृद्धावस्था अभिशाप नही प्रभु का वरदान बन जाती है।

परिवार में 'कमल पत्रवत्' रहे

(३) अगर वृद्ध परिवार मे रहता है तो उसे घर के आन्तरिक मामलो मे दखल नही देना चाहिए। मौन रहने का अभ्यास करना चाहिए। युवाजनो की

(शेष पृष्ठ ६ पर)

फलों का राजा-आम

—कविराज बनवारी लाल शादां

आम भारत का ही नही, ससार-प्रसिद्ध फल है, यह भारत में जेठ मास मे पककर आने लगता है। भारत मे लाखों बीघा जमीन में आम के बगीचे हैं। इसकी पैदावार देश मे बहुत होती है, इसका विदेशों को भी निर्यात होता है। वैसे अब तो यह फल बारहो महीने मिलने लगा है।

आम सारी इन्द्रियो को बल देने वाला है, यह वीर्यवर्द्धक, हृदय को ताकत पहुंचाता है, मन को प्रसन्न करता है। विश्व के किसी भी फल मे इतने अधिक विटामिन प्राप्त नहीं होते। इसमे जल, प्रोटीन, वसा, लवण, कार्बोहाइड, कैल्शियम, फास्फोरस, लोहा, विटामिन ए बी. सी. डी पाए जाते हैं। आम मे मक्खन की अपेक्षा सौ गुना पोषक तत्त्व मौजूद हैं। इसके खाने मे रक्त शुद्ध होता है, नया खून भी शीघ्र पैदा करता है इसलिए तपेदिक के रोगी को भी यह उत्तम दवा है। आम आयु बढाता है।

आम दो प्रकार के होते हैं—देशी आम जिसका रस चूसा जाता है। दूसरा कलमी आम जिसे चाकू से काट कर खाया जाता है।

आम की किस्म अलग-अलग होती है जैसे—सफेदा, लंगडा, मालदह, बम्बइया, फजली, सरौली, दशहरी। इसके अचार, शरबत, पापड वगैरा बनते है। देशी आमो मे गूदा कम गुठली ज्यादा होती है। गुठली का अचार भी बहुत लाभदायक होता है। कलमी आमो मे गूदा अधिक होता है गुठली पतली होती है। पका आम मधुर सुगन्धित होता है। यह चिकना बलदायक, शरीर को पुष्ट करने वाला, थकावट दूर करने वाला, आम खाने के बाद कम गर्म दूध या ठडा दूध पीने से अति उत्तम लाभ देता है।

आम पतले रस का—चूसकर खाया जाता है। यह रुचि बढाता है। बलवर्द्धक, हलका, शीघ्र पचने वाला, वात और पित्त को दूर करता है, इसे अमृत फल कहते हैं।

कलमी आम—भारी होता है और देर से पचता है। आपको ज्यादा पेट भर कर नही खाना चाहिए। बहुत अधिक खाने से हाजमा बिगडता है, दस्त भी लग सकते हैं उल्टी भी आ सकती है। पेशाब रुकने पर आम की गुठली का चूर्ण करके, पानी मे मिलाकर पेडू पर लेप करने से पेशाब उतर आएगा। लू लगने की हालत मे आम कच्चे लेकर पानी मे डालकर उबालें। जब उबल जाए तो उसका गूदा और रस निकाल ले, इसमे बूरा या चीनी डालकर थोडा पानी मिलाकर आग पर चढा दें। जब पक जाए तो इसमे काली मिर्च का चूर्ण और थोडा कपूर डाल कर चम्मच से मिला दें, दवा तैयार है। इसको खाने से लू नही लगेगी, यदि लू लग गई हो उसको भी खिलाने से फायदा होगा।

तिल्ली—आम देशी रसदार लेकर उसका रस निकाल लो। इसमे शहद मिलाकर कुछ दिन पीने से तिल्ली ठीक हो जाती है।

पेट के कीडो को—आम के छिलको को उबाल लो फिर उसमे थोडा काला नमक मिलाकर पिलाने से कीडे मर जाते हैं।

प्रदर की दवा—आम के पेड के तने की छाल पाँच सौ ग्राम और एक किलो पानी को मिला कर काढा बनाइए। चौथाई रहने पर मिश्री डाल कर ठण्डा होने पर छान कर शीशी मे भर लें। इस दवा को दिन मे चार बार पिलाने से प्रदर रोग मे आराम होता है।

सुजाक—आम के छिलके का रस बीस ग्राम और चूने का पानी दस ग्राम यह एक खुराक है। दिन में चार खुराक पिलाने से लाभ होगा।

आग से जलने पर—आम के पत्तों को भस्म करके उसे कपडे में छान कर पाउडर को शीशी मे भर कर रख लें, जले स्थान पर गोले का तेल लगा कर ऊपर से इसे बुरक कर लगाने से लाभ होगा। यह योग दिन मे दो-तीन दफा करना चाहिए।

सग्रहणी पर—आम दो पके हुए लेकर उनका छिलका उतार लें, छोटे-छोटे टुकडे काट कर कलईदार कटोरी में या स्टील के बर्तन मे टुकडे रख लीजिए गाय या भैंस का दूध उबला हुआ ढाई ग्राम गरम-गरम इन टुकडों पर डालते जाइए। जब तक ये टुकड डूब न जायें इनको चम्मच से खाते जाए और दूध पीते जाए। यह प्रयोग चार घण्टे में करना चाहिए।

स्वतन्त्र भारत फार्मेसी मानिकपुरा
नई दिल्ली-५

डॉ० जगन्नाथ प्रधान निर्वाचित

आर्यसमाज कृष्णनगर, दिल्ली ५१ के वार्षिक चुनाव मे डा. जगन्नाथ को भारी बहुमत से प्रधान निर्वाचित किया गया। अन्तरग के गठन तथा प्रतिनिधियों के चयन का अधिकार उनको ही दिया गया।

आर्य जगत् समाचार

दयानन्द सेवाश्रमों से ईसाई प्रचार को चुनौती सम्भव

पंचपुरी में गढ़वाल आर्य महासम्मेलन : दयानन्द सेवाश्रमों की स्थापना

कोटद्वार (गढ़वाल) 'केवल दयानन्द सेवाश्रमों की स्थापना से ही ईसाई मिशनरियों को चुनौती दी जा सकती है। कुमायूं और गढ़वाल क्षेत्र में ईसाई मिशनरियों द्वारा धर्मान्तरण की घटनाओं से जनता को सावधान हो जाना चाहिए।' इन शब्दों में पंचपुरी में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल वानप्रस्थ ने गढ़वाल आर्य महासभा सम्मेलन का उद्घाटन किया। इस अवसर पर अनेक सेवाश्रमों की विधिवत् स्थापना की गई।

आर्यसमाज के इतिहास में गढ़वाल में पहली बार गढ़वाल आर्य महासम्मेलन जैसे विशाल समारोह का आयोजन किया गया। कोटद्वार पहुंचने पर सभा प्रधान जी का भव्य स्वागत किया गया। उन्हें कई मानपत्र दिए गए, स्थान-स्थान पर आर्यवीरों ने उनका स्वागत किया। प्रधानजी कोटद्वार से सतपुली होते हुए पंचपुरी पहुंचे थे। पंचपुरी में देशरत्न श्री जयानन्द भारतीय का जन्म शताब्दी समारोह आयोजित किया गया था।

संक्षिप्त विवरण अवश्य भेजिए

सभा-प्रधान का आर्यसमाजों से अनुरोध

नई दिल्ली। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सरदारीलाल वर्मा ने सभा के अन्तर्गत कार्य करने वाली समस्त आर्यसमाजों से अनुरोध किया है कि वे साप्ताहिक सत्संगों, वार्षिक अधिवेशनों में भाग लेने वाले वक्ताओं, उपदेशकों एवं भजनीकों के कार्य का संक्षिप्त विवरण अवश्य भेजने की व्यवस्था करें कि किन व्यक्तियों का कार्यक्रम सर्वोत्तम। अच्छा या सामान्य रहा। यह भी लिखने की कृपा करेंगे कि सभा के कार्यक्रम के बावजूद कौन सज्जन निर्धारित समय पर नहीं पधारे। समाजोंके सक्रिय सहयोग से ही हम समाजों के सत्संग एवं दूसरे कार्यक्रमों को अधिक व्यवस्थित एवं समुन्नत कर सकेंगे।

तीन महीनों में वेद प्रचार

उल्लेखनीय है कि सभा के उपदेशक आर्य विद्वान एवं भजनोपदेशक जनवरी १९८२ में नारायणा, आर के पुरम, सुभाष नगर, स्त्री आर्यसमाज पंजाबी बाग विकासपुरी, इन्द्रपुरी की आर्यसमाजों में गए।

उन्होंने फरवरी मास में टैगोर गार्डन, अलवर, अनाजमण्डी, (शाहदरा) मंगोलपुरी, चन्दौसी(मुरादाबाद) देवनगर, शालीमार बाग, ऋषिनगर, (सोनीपत), बरनिया खुर्द, चोलथरा (हिमाचल)लेख-रामनगर-तिनगर को आर्यसमाजों के विशेष कार्यक्रमों में योग दिया। अप्रैल मास में उन्होंने नयाबास, करोलबाग, रा प्र. बाग गांधीनगर, तरौली (मथुरा) रामनगर(गुड़गांव) रवैया(उ प्र.)जखराना (अलवर) अरबिया खुर्द की आर्यसमाजो तथा अयोध्या के कार्यक्रमों को सफल किया। उक्त कार्यक्रमों के अतिरिक्त भोलानाथ नगर शाहदरा के आर्य महा सम्मेलन की सफलता में पं. रामकिशोर वैद्य प. हरिदेव सिद्धान्तभूषण, प. अशोककुमार विद्यालंकार, स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती, पं. सत्यदेव स्नातक (भजनोपदेशक) श्री सत्यपाल मधुर, प्रकाशवीर व्याकुल, वेदव्यास जी श्री ज्ञानचन्द डोगरा, ज्योतिप्रसाद जी ने सक्रिय सहयोग दिया।

रेनन का आयात बन्द हो

गाय के बच्चे के वध से बना पनीर नियन्त्रित हो आर्यसमाज उत्तमनगर की मांग

दिल्ली। आर्यसमाज उत्तम नगर तथा तिलक नगर ने अपनीविशेष बैठक में एक प्रस्ताव स्वीकृत कर भारत सरकार से मांग की है कि प्रोससेस्ड पनीर बनाने के लिए रेनन नामक जिस पदार्थ का आयात किया जाता है, उस पर तुरन्त रोक लगाई जाए, क्योंकि यह रेनन पदार्थ गाय के बच्चे का बध करके निकाला जाता, फलतः इसे हिन्दू जाति की भावना को गहरी ठेस पहुंचती है।

यदि किन्हीं अपरिहार्य कारणों से रेनन का आयात बन्द करना सम्भव नहीं हो तो इसमें बने पनीर के डिब्बो पर अनिवार्यतः यह लिखा जाए कि इसमें रेनन नामक पदार्थ मिला है, जो गाय के बच्चे का वध करके निकाला जाता है।

कांगड़ी गांव में ३ हजार पेड़ लगेंगे

आर्थिक स्थिति सुधारने के लिए विभिन्न कार्यक्रम

हरिद्वार। गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कुलपति श्री बलभद्र कुमार हूजा की अध्यक्षता में ग्रामपार कांगड़ी गांव में एक विचारगोष्ठी हुई। उसमें गाव वासियों ने ३००० वृक्ष लगाने का आश्वासन दिया। गाव वालोंकी आर्थिक स्थिति सुधारने के लिए शहतूत की खेती तथा रेशम के उत्पादन एवं राजकीय सहायता आदि के बारे में भी निश्चय किया गया। हरिजनो को मकान बनाने के लिए २ हजार रुपए की आर्थिक सहायता देने का निश्चय किया गया।

गोष्ठी में गांव वालों के अतिरिक्त कांगड़ी गांव के प्रधान, ग्राम पंचायत एवं ग्राम समाज के सदस्य, बी. डी. ओ. नजीबाबाद, जिला अधिकारी श्री बापर, वानप्रस्थी जुनेजा जी, बत्रा जी, कांगड़ी ग्राम निदेशक डा. विजयशंकर आदि उपस्थित थे।

बोध-कथा

रहस्य लम्बी जिन्दगी का !

एक साधु बहुत बूढ़े हो गए थे। उनके जीवन के आखिरी क्षण आ पहुंचे। आखिरी क्षणों में उन्होंने अपने शिष्यों और चेलों को पास बुलाया। जब सब उनके पास आ गए, तब उन्होंने अपना पोपला मुंह पूरा खोल दिया और शिष्यों से बोले—'देखो, मेरे मुंह में कितने दांत बच गए हैं।'

शिष्यों ने उनके मुंह की ओर देखा, कुछ टटोलते हुए वे लगभग एक स्वर में बोल उठे 'महाराज, आपका तो एक भी दांत शेष नहीं बचा। शायद कई वर्षों से आपका एक भी दांत नहीं है।'

सच बोले—'देखो, मेरी जीभ तो बची हुई है।'

सबने उत्तर दिया—'हां आपकी जीभ अवश्य बची हुई है।'

इस पर सबने कहा—'पर यह सब हुआ कैसे? मेरे जन्म के समय जीभ थी और आज मैं यह चोला छोड़ रहा हूं तो भी यह जीभ बची हुई है। ये दांत पीछे पैदा हुए, ये जीभ से पहले कैसे विदा हो गए, इसका क्या कारण है, कभी सोचा?'

शिष्यों ने उत्तर दिया—'हमें मालूम नहीं। महाराज, आप ही बतलाइए।'

उस समय मृदु आवाज में सन्त ने समझाया—'यही रहस्य बतलाने के लिए मैंने तुम सबको इस वेला में बुलवाया है इस जीभ में माधुर्य था, मृदुता थी और भी कोमल थी इसलिए यह आज भी मेरे पास है, परन्तु मेरे दांतों में कुछ कठोरता थी, इसलिए वे पीछे आकर भी पहले खत्म हो गए, अपनी कठोरता के कारण ही ये दीर्घजीवी नहीं हो सके। दीर्घजीवी होना चाहते हो तो कठोरता छोड़ो और विनम्रता सीखो।'

—नरेन्द्र

यह अभिशाप नहीं (पृष्ठ ४ का शेष)

आधुनिक जीवन पद्धति, उनकी रुचि, अरुचि इत्यादि की टीका टिप्पणी नहीं करनी चाहिए। पुत्र, बहू, बच्चे सबके साथ सदा स्नेह, सहानुभूति और आत्मीयता का व्यवहार करना तथा परोक्ष में व अन्य व्यक्तियों से उनकी निन्दा, उनके दोषों का विज्ञापन इत्यादि से बचना चाहिए। इसके फलस्वरूप उनके अपने जीवन और परिवार में सुख शान्ति रहेगी। कटुवचन और क्रोध से विशेषत बचना चाहिए।

(४) यदि आप सम्पन्न और पेंशनर हैं, तो पुत्रों और बहुओं से उसे छिपाने व अपने जीवन को आराम तलब बनाने, बढ़िया और स्वस्थ्य नाश्ता खान-पान, आहार-व्यवहार मद्य-मांस आदि में धन नाश मत कीजिए। भोग और विलास के जीवन से कड़ा परहेज करते हुए जन सेवा सत्संग, धर्म चर्चा इत्यादि शुभ कार्यों में खर्च करिए। बच्चों पर अविश्वास मत करो कि धन बता देने से वे छीन मुझे घर से निकाल देंगे। यदि आप अपने धन-सम्पदा पर सांप की तरह दिन रात बैठे रहेंगे तब आपके हृदय में कभी शान्ति नहीं आयगी। त्याग और सेवा से ही आपको शान्ति प्राप्त होगा और बच्चे भी आप का सम्मान करेंगे।

(५) अपने सम्बन्धियों, परिजनों, पड़ोसियों और मोहल्ले वालों के साथ सत् व्यवहार करिए। उनके घरेलू मामलों में दखल मत दें। सुख-दुख में अवश्य शामिल हों और कष्टग्रस्तों की उदारता से, सेवा सहायता करें।

(६) प्रभुभक्ति, ईश्वर-विश्वास, आत्म-उद्धार, पवित्र जीवन, स्वाध्याय, सरल-सादा जीवन इत्यादि का नियमित पालन करिए। बुढ़ापा सुख से कट जाएगा।

३७/बी, अशोक विहार, दिल्ली-५२

आर्यसमाजों के सत्संग

३० मई'८२

अन्धा मुगल-प्रताप नगर—पं० अशोककुमार विद्यालकार; अमर कालोनी – पं० खुशीराम शर्मा; अशोक विहार के. सी ५२ ए—प० रामरूप शर्मा, आनन्द विहार—आचार्य हरिदेव सि० भू०, कालका जी—प० हरिश्चन्द्र आर्य, कृष्ण नगर—पं० दिनेशचन्द्र पराशर शास्त्री, गांधी नगर—प० प्रकाशचन्द्र शास्त्री; गीता कालोनी—स्वामी विश्वदेवानन्द; ग्रेटर कैलाश-I—प्रो० सत्यपाल बेदार; गुड़ मन्डी—प० सीसराम भजनोपदेशक; गुप्ता कालोनी – प० गणेश प्रसाद विद्यालकार; गोविन्द भवन-दयानन्द वाटिका—प० सोमदत्त शास्त्री; चूना मन्डी-पहाड़गंज—आचार्य नरेन्द्र शास्त्री, जगपुरा-भोगल—श्रीमती लीलावती आर्या, जनकपुरी बी ३/२४—पं० भगवान सहाय विद्यावाचस्पति, टैगोर गार्डन—प० ओम्वीर शास्त्री, तिलक नगर—प० हरिदत्त शास्त्री, तिमारपुर—प० तुलसीराम भजनोपदेशक, दरियागज—प० प्राणनाथ सिद्धातालकार, नारायण विहार जी-२५—आचार्य विजयपाल शास्त्री, नया बास—प्रो० वीरपाल शास्त्री; न्यू मोती नगर—प० देवराज वैदिक मिशनरी; पजाबी बाग—प० मुनिशकर वानप्रस्थी, पजाबी बाग एक्सटेंशन १४/३—श्रीमती सुशीला राजपाल, बाग कड़े खां—प० बरकतराम भजनोपदेशक, मोडल बस्ती—प० कामेश्वर शास्त्री, महरौली—प० जयभगवान भजन मण्डली; रघुवीर नगर—प० वेदपाल शास्त्री, राणा प्रताप बाग—प० मनोहरलाल ऋषि भजनोपदेशक; राजौरी गार्डन—डा. सुखदयाल भूटानी, लड्डू घाटी पहाड़गज—श्री मोहनलाल गांधी; लक्ष्मीबाई नगर ए-१६२—स्वामी स्वरूपानन्द भजनोपदेशक, लाजपत नगर—प० मनोहर विरक्त, लेखराम नगर-त्रिनगर—प० रामनिवास; लारेंस रोड—डा. रघुनन्दनसिंह; विक्रम नगर - ला. लखमीदास आर्य; सुदर्शन पार्क—प्रो. भारत मित्र शास्त्री तथा ज्ञानचन्द डोगरा गायक, सराय रोहेला सुभद्रा कालोनी—डा रघुवीर वेदालकार, शालीमार बाग—प० विश्वप्रकाश शास्त्री; हौज खास डी-२०—स्वामी सच्चिदानन्द, १२६ राजा गार्डन—प० छविकृष्ण शास्त्री।

- ज्ञानचन्द डोगरा, वेद प्रचार—प्रबन्धक

नवाबपुरा (बरेली) में १६७ ईसाइयों की शुद्धि

भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा के उपदेशक श्री अमृतलाल नागर के प्रचार से प्रभावित होकर ग्राम नवाबपुरा खुर्द जिला बरेली के ईसाई परिवारों के १६७ सदस्यों ने स्वेच्छा से १६ मई के दिन हिन्दू धर्म ग्रहण किया। हिन्दू शुद्धि सभा के कार्यालयाध्यक्ष श्री प. दीपचन्द शर्मा ने यज्ञ मे शपथ दिलवा कर वैदिक धर्म की दीक्षा दी।

आर्यसमाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग में दि. ६ मई को कुमारी नीलम [illegible] (ईसाई) की शुद्धि की गई, जिसका नाम कु. निधि रखा गया। इनका विवाह श्री हरीशचन्द्र सलवान के साथ किया गया।

कु० ताहिरी नासिरी (ईरान) का शुद्धि सस्कार बी-१५०/१, पुष्प विहार (साकेत) मे सम्पन्न हुआ। इनका नाम आजादे सिह रखा गया। डा तेजसिंह तेवतिया के साथ इनकी शादी स्वेच्छा से सम्पन्न हुई। इन दोनो कार्यक्रमो का आचार्यत्व श्री घनश्याम आर्य ने किया।

शरारती तत्वों के विरुद्ध कड़ी कार्यवाही हो !

आर्य समाज अजमेर, आर्यसमाज अमर कालोनी, लाजपत नगर नई दिल्ली आदि अनेक आर्यसमाजों ने दल खालसा एव खालिस्तान परिषद् पर प्रतिबन्ध लगाने में कार्य की प्रशंसा करते हुए भारत सरकार एव पजाब सरकार से माग की है कि गोहत्या जैसे जघन्य अपराध कर साम्प्रदायिक विद्वेष फैलाने वाले शरारती तत्वो एव सगठनो के विरुद्ध कड़ी कार्रवाई की जाए।

आर्यसमाज हौज खास के नये पदाधिकारी

प्रधान—श्री नरेन्द्र विद्यावाचस्पति, उपप्रधान—श्री परमानन्द, उपप्रधाना—श्रीमती देवेच्छा जी, मन्त्रिणी—श्रीमती सीतादेवी जी, उपमन्त्री—श्री मोहनलाल सूद, उपमन्त्रिणी—श्रीमती राज तनेजा, प्रचारमन्त्री—श्री रामधन, कोषाध्यक्ष—श्री बनवारीलाल गुप्त, पुस्तकालयाध्यक्ष—श्रीमती कृष्णा जी।

आर्यसमाज सम्बवा के नए पदाधिकारी

प्रधान—श्री रामचन्द्र आर्य, उपप्रधान—श्री ओमप्रकाश हाण्डा, मन्त्री—कैलाशचन्द्र पालीवाल, उपमन्त्री—श्री मदनलाल दाड, कोषाध्यक्ष—श्री नारायण सहाय खण्डेलवाल, प्रचारमन्त्री—श्री जगदम्बा प्रसाद, मिश्र, पुस्तकालयाध्यक्ष—श्री मांगीलाल सोनी।

आर्यसमाज चूनामण्डी—पहाड़गंज के पदाधिकारी

प्रधान—श्री प्रियतमदास रसवन्त; उपप्रधान - श्री सुरेन्द्र पहूजा; श्री गणेशदास; मन्त्री—श्री श्यामदास सचदेव, सतीश जी, उपमन्त्री—श्री देवराज राजपाल; प्रचार-मन्त्री—श्री चन्द्रप्रकाश कपूर, कोषाध्यक्ष - श्री चिरंजीलाल दुआ, पुस्तकाध्यक्ष—श्री लक्ष्मणदास कालड़ा, अधिष्ठाता आर्यवीर दल—विजयकुमार पाहूजा, लेखा निरीक्षक—श्री अजयकुमार कपूर।

आर्यसमाज महरौली का पुनर्गठन

नवनिर्वाचित मन्त्री श्री सोहनलाल द्वारा त्याग-पत्र देने पर पुनर्गठित पदाधिकारी ये हैं—प्रधान-मुखी श्री तोलाराम, मन्त्री—श्री सुशीलकुमार आर्य, कोषाध्यक्ष श्री पुरुषोत्तमदास मुखी।

आर्यसमाज किंग्जवे कैम्प के नए पदाधिकरी

प्रधान - श्री देवराज तनेजा, उपप्रधान—श्री राजकुमार जी भाटिया, मन्त्री—श्री प्रतापशकर जी, उपमन्त्री—श्री गिरधारीलाल जी, कोषाध्यक्ष—श्री ओमप्रकाश जी, प्रचार मन्त्री—श्री ठाकरदास जी, पुस्तकाध्यक्ष—श्री देवेन्द्र पावा।

आर्यसमाज डिफेंस कालोनी में अथर्ववेद यज्ञ और रामायण कथा

आर्यसमाज डिफेंस कालोनी मे ३ मई से ९ मई तक वार्षिकोत्सव के अवसर पर प्रातः ६॥ से ८ बजे तक प० दिनेश शास्त्री के ब्रह्मात्व मे अथर्व वेद का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। पूर्णाहुति ९ मई को प्रातःकाल हुई।

३ मई से ८ मई तक रात्रि को ८ बजे १० बजे तक कथावाचक पं० पुरुषोत्तम एम० ए० ने बाल्मीकि रामायण कथा प्रस्तुत की।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रकाशन

सत्यार्थप्रकाश सन्देश (हिन्दी)	१ ००
अंग्रेजी समाप्त	
आर्य सन्देश महासम्मेलन विशेषांक	० ६०
पादरी भाग गया— ओम्प्रकाश त्यागी	० ३०
स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान अर्द्ध शताब्दी स्मारिका	६.००
सत्यार्थप्रकाश शताब्दी समारोह स्मारिका	६ ००

सम्पर्क करें—
अधिष्ठाता प्रकाशन विभाग
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
१५ हनुमान रोड, नई दिल्ली ११०००१

卐 आर्यसन्देश के
स्वयं ग्राहक बनें—
दूसरों को बनाएं
卐 आर्यसमाज के सदस्य
स्वयं बनें—
दूसरों को बनाइए
ॐ हिन्दी संस्कृत भाषा स्वयं पढ़ें
दूसरों को भी पढ़ाइए—

मुद्रित व प्रकाशित नवा भारतीय प्रेस २५७४, रघुबरपुरा नं० २
१५ हनुमानरोड, नई दिल्ली फोन ३१०१५०

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक मुखपत्र

एक प्रति ३५ पैसे | वार्षिक १५ रुपये | वर्ष ६ | अंक ३२ | रविवार ६ जून | २४ ज्येष्ठ वि० २०३९ | दयानन्दाब्द—१५८

पंजाब की स्थिति गम्भीर कड़ी कार्रवाई अपेक्षित

प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी द्वारा सार्वदेशिक सभा के प्रतिनिधि मण्डल को आश्वासन : सभा की ओर से ज्ञापन : राष्ट्रद्रोही तत्त्वों से खतरा

नई दिल्ली। प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने शुक्रवार २८ मई के दिन आर्यसमाज के एक शिष्टमण्डल से कहा कि वह पजाब की मौजूदा परिस्थिति से बहुत अधिक चिन्तित हैं और उसे सुधारने के लिए कुछ निर्णयात्मक कार्यवाही की जा रही है। शिष्टमण्डल के सदस्यों के साथ वह इस बारे मे सहमत थीं कि पजाब की परिस्थिति बहुत अधिक गभीर है और उसे सुलझाने के लिए कड़ी कार्यवाही [illegible]क्षित है। उन्होंने कहा कि वह उस सम्बन्ध मे जागरूक हैं।

[illegible]सभा के शिष्ट मण्डल की भेंट

[illegible]समाज के शिष्टमण्डल ने मांग [illegible]जाब में आपातकालीन [illegible]की जानी चाहिए। [illegible]यो ने प्रधान मन्त्री से अनुरोध [illegible]जाब के हिन्दू अपने को असुरक्षित [illegible]व करते हैं और [illegible] छोड दें। उनमे [illegible] विश्वास पैदा [illegible] के लिए केन्द्र को [illegible]करनी चाहिए। शुक्रवार [illegible] प्रातः सार्वदेशिक आर्य [illegible] का एक प्रतिनिधि मण्डल [illegible]लाला रामगोपाल वानप्रस्थ [illegible]) के नेतृत्व मे प्रधान मन्त्री से मिला। प्रतिनिधि मण्डल न प्रधान मन्त्री को एक ज्ञापन-पत्र भी भेट किया। प्रतिनिधि मण्डल में श्री शालवाल के अतिरिक्त हैदराबाद के आर्यनता श्री रामचन्द्रराव वन्दे मातरम्, पजाब के श्री पृथ्वीसिंह आजाद, सभा मन्त्री श्री ओमप्रकाश त्यागी एव दिल्ली आर्य केन्द्रीय सभा के प्रधान महाशय धर्मपाल तथा अन्य आर्य नेता भी थे।

राष्ट्रद्रोही तत्त्वों से खतरा

सार्वदेशिक सभा के प्रतिनिधि मण्डल ने अपने ज्ञापन में प्रधानमन्त्री का का ध्यान खींचा कि राष्ट्र के उत्तर पश्चिमी पजाबमें तथा पूर्वके असम, मिजोरम, मणिपुर, नगादेश और दक्षिण के तमिलनाडु-केरल आदि में अराजकता फैलाकर देश की सुरक्षा, प्रगति और शान्ति को खतरे मे डालने वाले राष्ट्रद्रोही तत्व देश की आजादी और अखण्डता को खतरे मे डाल रहे हैं। इन तत्त्वो का लक्ष्य देश की राजनीतिक सत्ता हथियाना है, ये तत्व मजहब की आड मे दिराष्ट्रवाद का भूत जगा कर देश का स्वरूप बदलना चाहते हैं।

पंजाब धधक रहा है

ज्ञापन मे कहा गया है कि पाकिस्तानी एजेन्ट और टो खालिस्तानी देशद्रोहियो की मिली भगत से विगत ६ महीनो से पजाब देशविरोधी आग मे जल रहा है। राजनीतिक हत्याए आम हो गई हैं, खालिस्तान के नाम पर उग्रवादी अकाली और दल खालसा पजाब का स्वरूप बदलने के लिए भारी षडयत्र एव हत्याए कर रहे हैं, जिससे पजाब के हिन्दू भयभीत होकर पजाब छोड गए। पंजाब सरकार षडयन्त्रकारियो का दमन करने मे सर्वथा असफल रही है। पजाब पुलिस मे एकवर्ग विशेष का बहुमत होनेके कारण इस भयानक स्थिति का नियन्त्रण करने मे कठिनाई हो रही है।

ज्ञापन मे इस बात की ओर भी ध्यान खींचा गया है कि खालिस्तानी मनोवृत्ति को मूर्तरूप देने मे पाकिस्तानी एव भारतीय मुस्लिम नेताओ का स्पष्ट हाथ दिखाई देता है। इसका प्रमाण है कि गत वैशाखी के मौके पर आनन्दपुर मे अकाली दल के सम्मेलन की अध्यक्षता दिल्ली के जामा मस्जिद के इमाम अब्दुल्ला बुखारी ने की थी। इससे पूर्व वह पाकिस्तान के राष्ट्रपति जिया उल हक से भी मिले थे। सम्मेलन मे उन्होने इस भेंट का उल्लेख किया और खालिस्तानी समर्थक सगठन को पूरे सहयोग का वचन दिया था।

श्री कैला आर्यसमाज हनुमान रोड के प्रधान निर्वाचित

रविवार ३० मई को साधारण सभा अधिवेशन मे श्री राममूर्ति कैला पुन आर्यसमाज हनुमान रोड के प्रधान सर्वसम्मति से निर्वाचित। अपना मन्त्रिमण्डल एव सभा के प्रतिनिधि मनोनीत करने के पूर्ण अधिकार भी सर्वसम्मति से दिया गया। मन्त्रिमण्डल का गठन निम्न प्रकार किया गया।

उपप्रधान—सर्वश्री सरदारीलाल वर्मा, रतनलाल सहदेव एव हसराज चोपडा, मन्त्री—खैरातीलाल भाटिया, उपमन्त्री—त्रिलोकी नारायण मिश्रा, विजय बहल, बुधराम गुप्त एव प्रकाशवती बुग्गा, कोषाध्यक्ष—श्री देशबन्धु भाटिया, पुस्तकाध्यक्ष—श्री रघुबरदयाल आन्तरिक लेखा निरीक्षक—बलवन्त राय खन्ना।

आर्यसमाज नया बांस का निर्वाचन

रविवार ३० मई '८२ आर्यसमाज नया बांस के साधारण सभा अधिवेशन मे निम्न अधिकारी अगले वर्ष के लिए सर्वसम्मति से चुने गये।

प्रधान—श्री प्रेमचन्द गोयल, उपप्रधान—पूर्णचन्द अरोडा, श्री जयनारायण तेल वाले, मन्त्री—श्री ओ३म्प्रकाश कपडे वाले, उपमन्त्री—श्री शिवकुमार एव राजेन्द्रकुमार दाल चावल वाले, कोषाध्यक्ष—श्री राजेन्द्रनाथ गोटे वाले पुस्तकाध्यक्ष श्री बांके बिहारी।

४० मुस्लिम हिन्दू धर्म में दीक्षित

कोल्हापुर। रविवार ३० मई के दिन यहां १६ महिलाओ समेत ४० मुसलमानो ने हिन्दू धर्म स्वीकार कर लिया। उक्त सूचना स्थानीय हिन्दू एकता आन्दोलन ने की।

इस अवसर पर स्थानीय दैनिक पुढारी के प्रबन्ध सम्पादक श्री ज धव और नगर निगम पार्षद श्री दिनकर पाटिल भी उपस्थित थे।

सम्पादक—यशेन्द्र विद्यावाचस्पति

व्यवस्थापक—प्रद्यु[illegible] तलवाड़

वेद-मनन

आदित्य दण्ड देने की अद्भुत क्षमता रखते हैं

—मनोहर विद्यालंकार

अस्ति देवा अंहो उरु, अस्ति रत्नमनागस. । आदित्य अद्भुतैनस. ॥

ऋक् ८-६७ ७

ऋषि -मत्स्य साम्मद, मैत्रावरुणिर्मान्यि:, बहवो वा मत्स्या जालमन्नद्धा । दवता-आदित्या । छन्द --गायत्री ।

शब्दार्थ--यह सर्वविदित है कि (आदित्या) आप्तजन प्रजाए तथा प्राण (अद्भुतैनस) स्वय निष्पाप रह कर अद्भुत प्रकार से दण्ड दन वाले (दवा) अत्यन्त व्यवहार कुशल देव है । अत: निश्चय ही (अनागस) निष्पाप तथा निरपराध को (उरू) बहुत (रत्नम्) रमणीय पदार्थ (अस्ति) मिलता है और (अहो) दुष्ट पापी को (उरु) बहुत (अस्ति) अन्धकार, अज्ञान और दु ख मिलता है ।

निष्कर्ष—आदित्य देव बहुत व्यवहारकुशल होत है । वह निरपराध को सुकृत क फल रूप म रमणीय पदार्थ प्राप्त कराते है, और दुष्ट पापी का मर्दन करके उसे पीडा पहुचात ह । (क) प्रजाए (आदित्या) दण्ड दन म अद्भुत रूप से कुशल होती है । कोइ शासक उनक दण्ड देने क काल या प्रकार का जान नही पाता ।

(ख) आप्तजन (आदित्या) स्वय निष्पाप रहत है, किन्तु अपराधी को दण्ड देन तथा सुधारन की अद्भुत कुशलता रखते हैं ।

(ग) प्राणो (आदित्या) मे कर्मफल देने की अद्भुत क्षमता है । अथर्व मन्त्र इसकी पुष्टि करता है

प्राणो ह मृत्यु प्राणस्तक्मा
प्राण दवा उपासत ।
प्राणो ह सत्यव दिनमुत्तमे
लोक आदधत् ॥अथर्व ११-४-११

विशेष—इस मन्त्र के ऋषि साम्मद मत्स्य का शब्दार्थ सकेत करता है कि—हर हाल मे मस्त रहकर, प्राप्त परिस्थिति को अपने कर्मो का फल मानन वाला व्यक्ति ही सब के साथ मित्र भाव रख सकता है, अपने शत्रु तक से श्रेष्ठ (वरुण) व्यवहार करने क कारण सबका मान्य बनकर मैत्रावरुणि मान्य कहलान लगता है ।

यह ससार ही आकर्षक जाल है । जिसमे—

अहं लोको जालमासी-
च्छक्रस्य महतो महान् ।
तेनाहमिन्द्रजालेनामू स्त-
मसाभिदधामि सर्वान ॥अथर्व ८-८-८

आसक्त होकर, मनुष्य नश्वर भागो मे वैसे ही मस्त रहता है, जैसे शेर से डर कर भागता हुआ मनुष्य अन्धे कुए मे लटकती शाखा की शरण ले ले, और वहाँ देखे कि नीचे सांप बिच्छु हैं, और शाखा को कुतर रहे हैं, फिर भी ऊपर लगे शहद के छत्तेसे टपकती दो-चार बूदों को चाट कर प्रसन्न रहता है । इस प्रकार के लोगो के ही प्रतिनिधि हैं, इस मन्त्र के ऋषि बहवो वा मत्स्या जालनद्धा । इस जाल से छूटने का उपाय है प्रभु गुण गान (गायत्री) अर्थ पोषक प्रमाण--देवा -दिवु मर्दन, दिवि प्रीणनार्थं, दिवु व्यवहारमोदगतिषु । आदित्या.--आप्तजना । स्वा दया. आदित्या वै प्रजा । तै. १.८ ८.१ प्राणा वा आदित्या । शत ११.६.३ ८ अदभुतैनस.--अद्भुत अमूर्त पाप येषा ते निष्पापा । निरू १ ६.

अह--अर्मान्ति प्राप्नुवन्ति दुख येन तत अह. पापम् । उणादि ४-२१४ तद्वान् अहु । भाग --एन. इयते प्राप्यत दु खमनन दण्डाऽपराधोवा । उणादि-मत्स्य. साम्मद:--माद्यति इति मत्स्य मदीहर्षे । सम+मद+अपत्य प्रत्यय । ४-१९६ ।

५५२, ईश्वर भवन, खारो बावलो
दिल्ली-६

आवश्यकता है

हमारे ट्रस्ट मे कार्य करन हेतु लगनशील आयसमाजी व्यक्तियो की आवश्यकता है।·· · ···

१, 'सत्यार्थ प्रकाश वाहन' पर साहित्य प्रचारार्थ उपदेशक ।
२. 'सत्यार्थ प्रकाश वाहन' चलान क लिए योग्य चालक (ड्राइवर) ।
३. 'सत्याथ प्रकाश वाहन' पर पुस्तक बेचन क लिए कार्यकर्त्ता (सेल्समैन)
४ कार्यालय मे कार्य करन क लिए दो लिपिक (क्लर्क) ।

सम्पर्क करे— धर्मपाल आर्य,
मन्त्री आर्य साहित्य प्रचार ट्रस्ट, ४२५ खारी बावली, दिल्ली-६
दरभाष--२३ ७१२, २३८३६

लोक-चिन्तन

शिक्षा-संस्कार या संहार साधन

—डा० विजय द्विवेदी

शिक्षा, वेद के एक विशेष अग का नाम है । वेदो मे 'विद्या' और शिक्षा का पृथक महत्व एव प्रयोजन था । वेदो का अध्ययन-अध्यापन विद्या के अन्तर्गत एव जीवनोपयोगी बातो की जानकारी, जिसे आज कला (आर्ट्स अथवा मानविकी) कहते हैं, शिक्षा मे अन्तर्मुक्त थी । ब्रह्म या वेद विद्या पर ब्राह्मणो का वर्चस्व था, शिक्षा सर्व-साधारण के लिए थी । महाभारत काल मे दोनो का समन्वय हो गया । परशुराम, द्रोणाचार्य, कृपाचार्य 'शास्त्र और शर'--उभय के आचार्य थे । ये सब पुरानी बातें हैं । तब का भारत आज 'इण्डिया' बन गया । वेदो की भाषा विदेशी और विदशी भाषा भारत की भाषा बन गई है । क्यो न बनती ? इसी भाषा के कारण पिछले दो सौ सालो मे आज की 'इण्डिया देट इज भारत' ने सभी क्षेत्रो मे तथा कथित विद्वानो के एक प्रचड वर्ग को जन्म दिया है । पलासी के युद्ध-कुण्ड से पैदा हुए इस वर्ग की वाग्देवी के जनक महात्मा मैकाले थे । महात्मा मर कर माटी मे मिल गए, मगर अपनी देवी छोड गए हैं । इस देवी की उर्वरा कोख से निकली सतानें आज देश को चला रही हैं । मूर्ति-पूजको के देश मे आग्ल वाग्देवी की पूजा भी धूमधाम से हो रही है, भक्तो की पेट-पूजा भी । सब सुखी-सतुष्ट हैं, देश-काल-पात्र की चिन्ता से मुक्त । इस सम्बन्ध मे मुझे शूद्रक के मृच्छकटिक नाटक का एक वार्तालाप बहुत याद आता है । गणिका (वसन्त सेना) एक सवाहक से कहती है··· आर्य ? आपने बडी अच्छी कला सीखी है ।' सवाहक लजा कर कहता है--'आर्ये ! सीखी तो थी, इसे कला जान कर, अब तो यह जीविका बन गई है ।' ठीक यही स्थिति आज हमारी शिक्षा की है । नाम है शिक्षा पर काम है जीविका का ।

जीवन के लिए जीविका जरूरी है । जीविका उपार्जन के लिए बहुत से साधन हैं । इनमे से शिक्षा भी एक है । शिक्षा स्वस्थ और जीवनोपयोगी हो तो साधन अपने आप ढूढ लेती है । आज कल हमारे देश मे राजनीति के शिखण्डियो ने सत्ता और सभ्यता के साथ लाग-लपेट करके जिस नई शिक्षा-प्रणाली को जन्म दे दिया है, उससे एक नई सस्कृति भी पैदा हो गई है । परस्वग्रासिनी, निठल्लू, उपसत्वभोगी सस्कृति कहा जा सकता है । इसकी मुख्य विशेषता-अनुदारता, भौतिकता, स्वार्थपरता, चरित्रहीनता, ढोंग और दिखावा आदि हैं । अस्तु जब तक शिक्षा-प्रणाली नहीं बदलेगी यह सस्कृति दिनोदिन पुष्ट होती जाएगी । इस प[illegible] का एक मात्र विकल्प भारतीय-राष्ट्रीय 'गुरुकुल-प्रणाली' है । शिक्षा का मुख्य [illegible] 'गुरु' है । गुरुकुल प्रणाली मे यह केन्द्रबिन्दु है, जबकि आधुनिक शि[illegible] गुरु गोरू (गो रूप) का पर्यायवाची बन गया है । गोक से गोरू ही [illegible] होता है—आदमी नही । इसके विपरीत गुरुकुल मे मानवादर्श जन्म लेते [illegible] सारांश [illegible] कि आज की शिक्षा दीक्षा मानवीय गुणो का सस्कार न कर, म[illegible] का संहार कर रही है । अत इसे बदलने की जरूरत है । शिक्षा निज भा[illegible] संस्कृति के अनुरूप होनी चाहिए । पिट्ठुओ और पेटुओ की सुविधा के अनु[illegible]ही ।

म० पू० च० महाविद्यालय: बारीपदा (उडीसा[illegible]०१

दयानन्द ऋषि को हम सब का बारम्बार प्रणाम ।

—सरस्वती कुमार 'दीपक'

दयानन्द ऋषि को हम सब का बारम्बार प्रणाम ।
आर्य भूमि को आर्य श्रेष्ठ ने यज्ञों से महकाया,
रोम-रोम मे रमे ओ३म् का, हम को रूप दिखाया,
क्या सच्चा है, क्या है झूठा, इसका अर्थ बताया,
देश रसातल म जाता था, सोया देश जगाया,
कौन करेगा, भारत मे ऋषि दयानन्द-सा काम,
दयानन्द ऋषि को हम सब का बारम्बार प्रणाम ॥
आर्यभूमि क आर्य, आर्य-महिमा का यदि अपनाते,
जाति-पाति के और धर्म के जाल नही फैलाते,
आर्य सगठित हो जाते, तो कार्य सभी बन जाते,
पग पग पर हम ज्ञान और सत के दीपक दमकाते,
लेकिन हमने भुला दिया ऋषि का सपना अभिराम,
दयानन्द ऋषि को हम सब का बारम्बार प्रणाम ॥
ऋषि का नाम चौक को देकर श्रद्धा-सुमन सजाते,
दयानन्द स्वामी के सत के व्रत का हम अपनाते,
आर्यभूमि पर आर्य पताका, गौरव से फहराते,
स्वामी जी के पथ पर चलकर उनका प्रण दुहराते,
ग्राम-ग्राम तक पहुचाना है ऋषि का पावन धाम,
दयानन्द ऋषि को हम सब का बारम्बार प्रणाम ॥

३४/५८० महाराजा अग्रसेन मार्ग, कुर्ला, बम्बई-४०००६०

(फोर्ट, बम्बई क्षेत्र मे मिन्ट रोड के चौराहे को स्वामी दयानन्द सरस्वती चौक के रूप मे उद्घाटन के अवसर पर पढी गई कविता)

सन्मार्ग पर प्रेरित करें

ओ३म् अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान् ।
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठान्ते नम उक्ति विधेम ।। यजु, १६

सबको सन्मार्ग पर ले जाने ज्ञानस्वरूप अग्रणी परमेश्वर, आप हमें आन्तरिक और बाह्य सर्वविध ऐश्वर्यों की प्राप्ति के लिए धर्म और वेदो के अनुकूल सत्य सन्मार्ग की ओर प्रेरित करें।

ओ३म्
आर्य सन्देश

आज आवश्यकता है अगस्त्यों और श्रद्धानन्दों की

रविवार २३ मई, १९८२ के दिन 'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग सभा ने तीन महत्त्वपूर्ण निर्णय किए हैं। पहला महत्त्वपूर्ण निर्णय दिसम्बर १९८३ में दिल्ली में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी मनाने का है। दूसरा महत्त्वपूर्ण निश्चय आगामी अक्तूबर महीने मे मीनाक्षीपुरम मे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का बृहदधिवेशन और आर्य महा सम्मेलन आयोजित करने का है। तीसरा महत्त्वपूर्ण निश्चय देश के सीमावर्ती प्रदेश पजाब की विक्षुब्ध स्थिति का अवलोकन करने के लिए सार्वदेशिक सभा का एक शिष्टमडल शीघ्र ही पजाब भेजने के बारे मे किया गया है। इस समय आर्यसमाज और आर्य जनता के सम्मुख कुछ तात्कालिक महत्व की समस्याए हैं तो कुछ स्थायी परन्तु उसके उज्ज्वल भविष्य से सम्बन्धित कार्यक्रम हैं। सार्वदेशिक सभा के दूसरे और तीसरे निर्णय [illegible]ज और देश की तात्कालिक समस्याओ से सम्बन्धित हैं। पिछले दिनो देश का [illegible] स्वतन्त्र खालिस्तान की माग करने वाले तत्त्वों ने पश्चिमोत्तर प्रदेश मे [illegible]कार्य और अत्याचार किए हैं, उनके निवारण के लिए केवल शासन से [illegible] व्यर्थ है। देश की अखण्डता और सुरक्षा के लिए पैदा हो रहे सकट के निवार[illegible] लिए आर्यसमाज को भी अपनी भूमिका प्रस्तुत करनी होगी। सार्वदेशिक सभा [illegible] शिष्टमडल इस दिशा मे उल्लेखनीय दिशा निर्देश कर सकता है।

[illegible]क सभा द्वारा अपना बृहदधिवेशन और एक आर्य महासम्मेलन मीना[illegible] करने का निर्णय भी स्वागत योग्य है। 'मीनाक्षीपुरम' शब्द प्रतीक है [illegible]प्रदायिक शक्तियो द्वारा प्रलोभन द्वारा देश के पिछडे हुए उपेक्षित द[illegible]ज को सामूहिक धर्मान्तरण द्वारा देश के बहुजन समाज के बहुजन समाज को [illegible] के विदेशी षड्यन्त्र तथा उसे नष्ट कर उस दलित वर्ग को पूरे सम्मान के [illegible]हुसख्यक समाज के साथ प्रगति पथ पर अग्रसर करने के सामूहिक सामा[illegible] निश्चय का। अक्तूबर के आर्य सम्मेलन एव बृहदधिवेशनो से उस दिशा मे एक रचनात्मक भूमिका प्रस्तुत की जा सकती है। अगले वर्ष के अन्त मे देश की राजधानी दिल्ली मे अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी के मनाने का निर्णय भी एक महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम है, आर्यसमाज की स्थापना को १०७ वर्ष हो चुके हैं एव ऋषि के निर्वाण को एक शताब्दी बीतने वाली है, अगले वर्ष आर्यसमाज की उपलब्धियों के मूल्यांकन का वर्ष होगा और उस अवसर पर आगामी पाच या दस वर्षों की योजनाओ का निर्धारण भी किया जा सकता है। पिछले सौ वर्षों मे आर्यसमाज ने राष्ट्रनिर्माण एवं समाज परिवर्तन सम्बन्धी भूमिका प्रस्तुत की है, उसमे सन्तुष्ट होकर कोई लाभ नही मिलेगा। आर्यसमाज के प्रादेशिक एव अखिल भारतीय नेतृत्व को अगले कुछ समय मे जहा तात्कालिक महत्त्वपूर्ण समस्याओ को समाधान करना होगा, वहाँ उसे आर्यसमाज के गौरवपूर्ण भविष्य के निर्माण के लिए भी कुछ करना होगा।

जहाँ तक आर्यसमाज के ही नहीं, आर्यावर्त और भारतभूमि के उज्ज्वल भविष्य के निर्धारण का प्रश्न है उसके समाधान के लिए केवल विशाल अन्तर्राष्ट्रीय या सार्वभौम सम्मेलनों मे एकत्र होकर स्मारिकाओं के प्रकाशनो एव कुछ प्रस्तावो के स्वीकृत करने मात्र से कुछ विशेष लाभ नही होगा। आज के युग मे ये अधिवेशन, विशाल शोभा-यात्राए, बृहद् यज्ञ एव जननिश्चय भी महत्त्वपूर्ण हो सकते हैं परन्तु मीनाक्षीपुरम से उठी समस्या केवल सामयिक एव अस्थायी नही है, देश के पिछडे उपेक्षित तत्त्वों का शिक्षा, रोजगार सस्कारो आदि प्रत्यक दृष्टि से देश का सम्मानपूर्ण नागरिक बनाने का उत्तरदायित्व केवल अधिवेशनो और प्रस्तावों से पूरा होने वाला नहीं है। सुदूर अतीत मे कथित अनार्य एव दस्यु जातिया यज्ञमूलक वेद सस्कृति के माध्यम से जिस प्रकार महर्षि अगस्त्य दक्षिण मे पहुचे थे, जिस प्रकार मोपला विद्रोह मे पीडित हिन्दू जाति के उद्धार के लिए स्वामी श्रद्धानन्द जी दक्षिण में पहुचे थे, उसी प्रकार आज हमे ऐसे अगस्त्यो और श्रद्धानदो की आवश्यकता है जो अपने स्थायी आश्रमो से पीडित एव उपेक्षित दलित समाज मे आशा और आस्था की नई ज्योति जगा सकें।

चिट्ठी-पत्रो

आनन्द सुमन की उक्तियां . सचाई पर प्रकाश

साप्ताहिक आर्यसन्देश के दिनाक २५ अप्रैल १९८२ के अक मे पृष्ठ ६ पर प्रकाशित समाचार कि गोडा जिले मे १८ हजार मुस्लिम हिन्दू धर्म ग्रहण करेग, वास्तविक तथ्यो के बिलकुल विपरीत है। उसी समाचार मे अन्तिम पेरा कि कथित डा० आनन्द सुमन की पत्नी सरस्वती सुमन का कथन कि —डा० सुमन ने लाखो की सम्पत्ति छोडकर हिन्दू धर्म ग्रहण किया है, उनके इस त्याग से प्रभावित होकर मैं (सरस्वती सुमन) तथा मेरे पिता (पत्र लेखक) ने हाल ही मे विवाह किया है, तथ्यो के विपरीत है और विषय वस्तु को वर्तमान परिस्थितियो मे मोडन के षड्यत्र का एक हिस्सा है।

मैंने सुलतानपुर आर्यसमाज के अवसर पर २१ नवम्बर, ८१ के दिन इन कथित डा० आनन्द सुमन से जो वार्तालाप नगर के गणमान्य व्यक्तियो के समक्ष किया था और उसी बीच विवाह करने के पहलुओ पर वार्ता प्रारम्भ की थी वह सार्वदेशिक सभा द्वारा इनकी गौरवमडित ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर त्यागमयी जीवन के मोड पर प्रकाशन एव प्रचार से प्रभावित था। वह मात्र एक राजनीतिक स्टट था। सार्वदेशिक का प्रचार वास्तविक तथ्यो के एव सत्य के अश से सर्वथा अछूता है, ऐसा मेरा स्पष्ट दावा है। किन कारणो से यह किया जा रहा है यह कभी भी खोज का विषय है। यह डा० वगैरह तो दूर हाई स्कूल भी पास नहीं है। अलीगढ विश्वविद्यालय मे प्रवेश और एम० टी० बी० एस० एव डी० एम० आर० आदि कथित डिग्री आदि की तो बात ही दूर की स्तुहै। इसी तरह ९ मई, १९८२ के आर्य सन्देश मे 'सरस्वती सुमन' के आह्वान पर जोनपुर के लगभग १२ हजार मुस्लिम राजपूतो ने आर्य हिन्दू धर्म ग्रहण किया असत्य है। कब और कहाँ दिया ? आगामी १५ मई को ८२ जोनपुर के मिशईपुर गांव मे १८ हजार मुस्लिम राजपूत हिन्दू धर्म ग्रहण करेंगे, असत्य एव अतिरंजित है। यह एक शरारती मुस्लिम है और अभी भी अपने पूर्ण सुनियोजित ढग से कार्य करता हुआ सबको बेवकूफ बना रहा है।

ओकारनाथ आर्य वन्देमातरम्, २१८ मेजरगज, कुशभवनपुर,
—(सुल्तानपुर) उ० प्र०, कैम्प, आर्यसमाज करोलबाग, नई दिल्ली

इतिहास के साथ खिलवाड़ न करो

भारत सरकार भारतीय इतिहास के साथ खिलवाड करने की योजना बना चुकी है और यह योजना राष्ट्र हित मे नहीं, अपितु मात्र तुष्टीकरण का राष्ट्रघाती नीति के अन्तर्गत बनायी गयी है। इस योजना के कार्यान्वयन होने से इतिहास के तथ्यों के विपरीत हम असत्य व निराधार घटनाओ का समावेश इतिहास के पन्नो पर पायेंगे। इस योजना के अन्तर्गत औरगजेब तैमूरलग, महमूद गजनवी आदि क्रूर शासको व आक्रामको की नृशस व अमानवीय गति विधियो को इतिहास के पन्नो से समाप्त किया जाएगा जिससे समाज मे सद्भावना का वातावरण बन सके। यह योजना समाज मे सद्भावना का सचार तो न कर सकेगी, मात्र इतिहास का तथ्यो के विपरीत प्रमाणित करने का दुस्साहस ही करेगी। सद्भावना के निर्माण मे इतिहास के तथ्य बाधक नही, सहायक होते हैं। इतिहास को तोड मरोड कर तथ्यो को विपरीत प्रतिपादित करना, इतिहास को कलकित करना है।

—राधेश्याम 'आर्य' एडवोकेट मुसाफिरखाना सुलतानपुर (उ प्र)

३. अन्तर्जातीय विवाह की व्यवस्था

सार्वदेशिक सभा ने धर्म रक्षा महाभियान के अन्तर्गत अन्तर्जातीय विवाह, विभाग की स्थापना की है। यह विभाग गत ५ माह से बिना दहेज गुण, कर्म, स्वभाव के अनुसार विवाहो को प्रोत्साहित कर रहा है। जन्मजात जाति पांति के जहर को मिटाना आर्य (हिन्दू) समाज की प्रमुख वर्तमान आवश्यकता है इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु हम अपने सीमित साधनो द्वारा प्रयत्नशील हैं।

विद्या प्रसाद मिश्र अध्यक्ष, अन्तर्जातीय विवाह विभाग, सार्वदेशिक सभा, दिल्ली

मन का नियन्त्रण करो

लेखक :
चमनलाल
प्रधान,आर्यसमाज अशोक विहार दिल्ली-५२

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समस्त चेतन जगत् में यह सर्वश्रेष्ठ भी है, परन्तु कोई भी दूसरा प्राणी अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए दूसरों पर इतना अधिक आश्रित नहीं है, जितना यह है। अपनी शारीरिक तथा मानसिक आवश्यकताओं को जुटाने के लिए यह जन्म से लेकर मरण पर्यन्त प्रातः से रात्रि तक अनेक व्यवहार करता है और यदि विचारपूर्वक देखा जाए तो ज्ञान होगा कि ये सभी व्यवहार दो चीजों के वशीभूत होकर करता है।

उनमें से पहला शब्द है 'मन' और दूसरा शब्द है 'धन'। ये ही दो वस्तुएं हैं, जिनके चगुल में फसा प्रत्येक प्राणी सारा जीवन मारा-मारा फिरता है।

मन बड़ा शक्तिशाली और अत्यन्त चचल है। जैसे मदारी बन्दर को नचाता है ठीक इसी प्रकार यह मन रूपी बन्दर हमे भी नचाता रहता है। हमे न चाहते हुए भी इसके इशारों पर विवश होना पड़ता है। यह अपने प्रभाव से हमे अपने पीछे-पीछे भागने पर मजबूर करता है और ऐसा करते-करते हम प्रायः विषय-वासना के गर्त्त में ऐसे गिर जाते हैं, जहां से निकलना असम्भव हो जाता है और इस प्रकार हम अपना सर्वनाश कर बैठते हैं। मेरा एक मित्र द्वितीय विश्व-युद्ध में सिंगापुर गया था, उसने वहाँ से लौटने पर बतलाया था कि जब शत्रु के किसी बन्दी सैनिक को सख्त सजा देनी होती थी, तब उस बेचारे को किसी ट्रक के पीछे जजीरों से बांध दिया जाता था और ट्रक को बड़ी तीव्र गति से चलाया जाता था यह लाचार बन्दी ट्रक के तेजी के चलने के कारण उसके पीछे लटका हुआ कभी इधर कभी उधर झकोले खाता हुआ लहूलुहान हो जाता था और इस प्रकार यह जख्मी होकर अन्त में दम छोड़ देता था। ठीक इसी प्रकार यह मन भी जब हम इसके वश में हो जाते हैं तब हमारी ऐसी ही दुर्गति कर देता है। ऋग्वेद १.१६४.३७ में आया है—

न विजानामि यदिवेदमस्मि,
निण्य सन्नद्धो मनसा चरामि।'

अर्थात् जीव भगवान से कहता है कि हे प्रभो ! मैं तो कुछ भी जानता कि वास्तव में मैं क्या हू, मेरा स्वरूप क्या है, क्योंकि मैं तो एक नन्हे अबोध बालक की न्याईं सदियों से मन के चक्कर में फसा इधर-उधर विचरता हुआ धक्के खा रहा हू और शान्त स कासो दूर पड़ा तड़प रहा हू। मन की शक्ति है भी तो अद्भुत। इसके सम्बन्ध मे यजुर्वेद में आया है—

'यस्मान्न ऋते किचन कर्म क्रियते।' अर्थात् जिसके बिना हम कोई भी काम नहीं कर पाते। कोई इन्द्रिय बिना मन के सहयोग के कोई भी छोटा-बड़ा कार्य नहीं कर सकती। इसकी गति बड़ी विचित्र है। जब यह कुमार्ग पर चलता है तो इसके पतन का कुछ भी ठिकाना नहीं। यह ऐसे-ऐसे भयकर उत्पात करता है कि जिनका चिन्तन मात्र ही आदमी को रोमांचित कर देता है, परन्तु यही मन सुमार्गगामी होता है तब मानव को बहुत ऊंची स्थिति प्राप्त करा देता है। यह मन ही तो है जो आदमी को शैतान से देवता अथवा देवता से शैतान बना देता है। मन के वश में न होने के कारण ही तो रावण जैसे वेदों के विद्वान महान् पण्डित रसातल को पहुच गए और इसी मन को वश में करके सन्त कबीर, दादू, नानक आदि जैसे साधारण व्यक्ति भी उस महान प्रभु जगन्नियन्ता सामीप्य प्राप्त करने में समर्थ हुए। इसी भाव को अथर्ववेद के १९.९.४ में इस प्रकार कहा गया है—

'इद इत् परमेष्ठिन मनो वा ब्रह्मस-शितम्येनैव ससृजे घोरं तनैव शान्ति रस्तु न.।।

अर्थात् हे महानभावो ! तुम्हारा यह ब्रह्मज्ञान से मजा मन शान्तिदायक तथा कल्याणकारी होता है और यही मन ब्रह्मज्ञान से शुद्धपवित्र न होने के कारण घोर उत्पात करने वाला भी हो जाता है।

अतः स्पष्ट है कि जीवन में मन की स्थिति बहुत ऊंची है। यदि हमारे में मनन करने सोचने और विचारने की शक्ति न हो, तो ससार में हमारा कोई भी व्यवहार सुसम्पन्न नहीं हो सकता। किसी भी क्षेत्र में मानव का उत्थान व पतन इसी मन के ही तो कारण होता है। मन के बिना मनुष्य जड पदार्थ के समान है, उसमें और पत्थर में कुछ भी तो अन्तर नहीं रहता। ससार की किसी भी प्रकार की प्रगति स्वस्थ मन से ही सम्भव है। नीतिकारों का कहना भी है —मन के हारे हार है और मन के जीत जीत।'

जैसा कि ऊपर लिखे हैं कि यह मन बड़ा चचल है। यह प्रायः किसी समय भी स्थिर नहीं रहता, और न कभी अकर्मी हो रहता है। हर घड़ी कुछ न कुछ तोड़फोड़ करता ही रहता है। ऋग्वेद में एक स्थान पर इस मन की विषय में लिखा है कि यह मन वैवस्वत यम, अन्तरिक्ष चतुश्रृष्टि पृथ्वी चारों दिशाओं जल और औषधियो, सूर्य, ऊषा बड़े-बड़े पर्वतों तथा तथा सम्पूर्ण जगत् में और उससे भी परे बहुत दूर-दूर तक जाता रहता है। स्पष्ट है मन का स्वभाव भागने का है। यजुर्वेद में भी मन की चचलता का बड़ा सुन्दर वर्णन है— 'यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैव तदु सुप्तस्य तथैवैति।' अर्थात् जैसे जागते हुए व्यक्ति का मन दूर-दूर चला जाता है वैसे ही सोए हुए का भी। इसको न सोते चैन है और न जागते कल। कुछ न कुछ उधेड़-बुन में लगा ही रहता है। ऐसी है यह मन की चचलता। गीता ६-३४ में अर्जुन ने श्रीकृष्ण को कहा है—

चचल हि मनः कृष्ण
प्रमाथि बलवद्दृढम्।
तस्याह निग्रह मन्ये,
वायोरिव सुदुष्करम् ।।

अर्थात् हे कृष्ण ! मन बहुत चचल है, सदैव उधेड़-बुन करने वाला बलवान तथा हठी है। वायु के वश में करने के समान उसका निग्रह अत्यन्त दुष्कर कठिन है। अतः ऐसे मन को काम मे लगाए रखना ही हितकर है, वरना यह अपने स्वभाव के कारण हानि ही हानि करता रहेगा।

श्रीकृष्ण ने इस बन्दर स्वभाव मन के निग्रह के लिए अर्जुन को गीता ६.३५ में अभ्यास और वैराग्य दो उपाय बताए हैं—

'अभ्यासेन तु कौन्तेय,
वैराग्येण च गृह्यते।

हमारे अन्दर प्रतिक्षण देवासुर सग्राम चल रहा होता है। काम, क्रोध, मद, लोभ, मत्सर, ईर्ष्या, द्वेष आदि अनेक असुरों की सेना आत्मा पर प्रहार करती रहती है। आत्मा बेचारा अकेला है और शत्रु सेना बड़ी प्रबल। कैसे पार पाएगा यह आत्मा। ऋग्वेद ५.३०.४ में उपाय भी बताया है—'स्थिर मनश्चकृषे जात इन्द्र वेषीदेको युधये भूयसश्चित्।'

हे इन्द्र ! यदि तू मन को स्थिर कर सके तो तो तू अकेला ही बहुतों से लड़ने को पर्याप्त है। इसलिए मन का सयम करने पर बल दिया है। बृहदारण्यकोपनिषद् में प्रजापति ने देवो को 'द' अक्षर के उपदेश द्वारा मन को दमन करने का ही उपदेश दिया था। मन की शक्ति को देखते हुए ही महर्षि पतञ्जलि ने योग की परिभाषा में बड़ा सुन्दर कहा है—'योगश्चित वृत्ति निरोध.' किसी भी कार्य की सफलता के मन स्थिर करना अत्यन्तावश्यक है। ऋग्वेद में एक स्थान पर आया है 'यत्र क्व ते मनो दक्ष दधस उत्तरम्। तत्रा-सद कृणवसे' मन जहां भी जाता है,वही भागदौड़ कर अपना ठिकाना बना लेता है। ऋषियों का यह भी कहना है कि यह मन सांसारिक पदार्थों का अन्त शीघ्र ही पा लेता है। और वहाँ से शीघ्र दूसरे स्थान पर भाग भी जाता है। अतः अन्त अपार करतार में इसे लगाओ, पार न पाने से वहीं लगा रहेगा। स्मृतिकारों का यह भी कहना है कि मन ही जीव के बन्धन और मोक्ष का कारण भी है। शास्त्रकारों का यह भी कहना है— 'विचित्र रूपा खलु चित्तवृत्तय.' मन की वृत्तियां बड़ी अद्भुत होती है। इस कारण कई दुष्ट प्रकृति के लोग मन की कुटिलता के कारण समाज और राष्ट्र में गड़बड़ उत्पन्न कर देते है, जिसके परिणामस्वरूप अस्तव्यस्त हो जाता है और चहु ओर अशान्ति और अराजकता का वातावरण बन जाता है। जब मन सद् विचार वाला सन्तुष्ट वृत्ति वाला होता है, तब सुख भाग के अल्प साधनों के होते हुए भी अपने को आदमी बड़ा धनवान और भाग्यशाली समझता है परन्तु असतोषी मन वाले की दशा इसके विपरीत होती है।

मन की शुद्धता परमावश्यक है। यजुर्वेद में मन को शुद्ध सकल्प वाला बनाने के लिए बार-बार प्रार्थना की गई है—

तन्मे मन शिवसकल्पमस्तु।'

वास्तव में शिवसकल्प वाला मन ही सयमी मन कहलाता है और यदि मन सयत हो जाए तो [illegible] भी चकनाचूर हो जाता है। धारणा-ध्यान समाधि के त्रिक से भी मन स्थिर किया जा सकता है और स्थिर मन [illegible] ही पत्थर को भी चमका देता है, [illegible] पत्थर चमक उठा तो वह तो पत्थर न रहकर कुछ और ही बहुमूल्य हो गई। '[illegible] विच्छवसा विद्युत।'

योगदर्शन में स्थिर सयमी मन का फल यह बताया है—

'तज्जयात्प्रज्ञालोकः।'

अर्थात् इससे बुद्धि मे प्रकाश होता है और बुद्धि के प्रकाशित होने पर सभी रुकावटों का मान होने लगता है और अन्त में इस बुद्धि प्रकाश के द्वारा मानव अपने जीवन के परम लक्ष्य प्रभु का साक्षात्कार करने में समर्थ भी हो जाता है।

अतः मानव तू कल्याण चाहता है और ससार में फैली अशान्ति के वातावरण को शान्तिमय बनाने में अपना कुछ योग देना चाहता है तो मन को सयत कर जीवन-यापन की शुद्ध विधि को अपना सचमुच हे मानव ! तेरा कल्याण हो जाएगा। □

तीन संग्रहणीय एवं पठनीय ग्रन्थ

पिछले दिनो तीन ऐसे सग्रहणीय एव पठनीय ग्रन्थो का प्रकाशन हुआ है, जिन्हें प्रत्येक स्वाध्यायशील पाठक को न केवल पढना चाहिए, प्रत्युत सम्भव हो तो अपने व्यक्तिगत या सामाजिक पुस्तकालय मे उन्हे सजोकर रखना चाहिए।

आर्यसमाज का इतिहास

प्रथम भाग (प्रारम्भ मे लेकर सन् १८८३ तक) लेखक : डा० सत्यकेतु विद्यालकार तथा प्रो. हरिदत्त वेदालकार, प्रकाशक—आर्य स्वाध्याय केन्द्र, ए-३३ सफदरजग इन्क्लेव, नई दिल्ली-२९, पृष्ठ सख्या ७२८; मूल्य सजिल्द १२५ रु।

भारत मे नव जागरण लाने और पाश्चात्य सस्कृति की चकाचौंध से अभिभूत राष्ट्र मे विविध मत मतान्तरो का निराकरण कर सत्य सनातन वैदिक धर्म की स्थापना और देश मे प्रचलित सामाजिक बुराइयों, अन्धविश्वासो तथा पाखण्ड को दूर कर आर्य हिन्दुओ मे नवजीवन और शक्ति का सचार करने मे महर्षि दयानन्द और उनके द्वारा प्रतिष्ठित आर्यसमाज की उल्लेखनीय भूमिका रही है। शिक्षा, समाज सुधार एव राष्ट्र के स्वातन्त्र्य आंदोलन, स्वभाषा, स्वदेशी शासन, स्वसस्कृति के पुनरुद्धार आदि कार्यों मे महर्षि और आर्यसमाज की अग्रणी भूमिका को कोई भी इतिहास का विनम्र पाठक भली प्रकार स्वीकार करता है, परन्तु उसका एक निष्पक्ष एव सामाजिक इतिहास के माध्यम से निष्पक्ष मूल्यांकन एव प्रस्तुतीकरण अपेक्षित था। प्रसन्नता का विषय है कि डा० सत्यकेतु जी एव प्राध्यापक हरिदत्त जी जैसे नीरक्षीर विवेकी मान्य इतिहास लेखको द्वारा लिखित आर्यसमाज का इतिहास, इस सम्बन्ध मे एक बडी आवश्यकता को पूर्ण कर सकेगा।

यह इतिहास सात भागों मे प्रकाशित किया जा रहा है। पहले भाग मे १८८३ मे महर्षि दयानन्द के निर्वाण के समय तक के आर्यसमाज का इतिहास प्रस्तुत किया गया है। इस पहले भाग मे भी तीन महत्वपूर्ण विषयो का विवेचन किया गया है। ग्रन्थ के प्रथम सात अध्यायो मे आर्य शब्द का अभिप्राय, आर्यों के प्राचीन गौरव, आर्य सभ्यता की सत्ता आर्यों की शक्ति के ह्रास एव उनके पुनरुद्धार के प्रयत्नो, आर्यधर्म और सभ्यता के नव उत्कर्ष काल, मध्य युग मे आर्यधर्म और सस्कृति का सघर्ष, भारत मे ब्रिटिश शासन, उन्नीसवी सदी के मध्य भारत, भारत मे नव जागरण के सूत्रपात आदि की चर्चा की गई है।

ग्रन्थ के आठवें से चौदहवें अध्यायो मे महर्षि दयानन्द के जीवनवृत, आर्यसमाज की स्थापना, उतरी भारत मे उसके प्रसार, थियोसोफिकल सोसायटी से उसके सम्बन्ध महर्षि दयानन्द को धर्म एवं दर्शन सम्बन्धी मान्यताओ, राज्य और शासन के सम्बन्ध मे महर्षि के विचारो का दिग्दर्शन किया गया है। ग्रन्थ के शेष अध्यायो मे राज्य, शासन, समाज-सगठन और आर्थिक व्यवस्था के बारे मे महर्षि के विचार, शिक्षा कैसी हो?—सामाजिक बुराइयाँ किस प्रकार दूर की जा सकती हैं, महर्षि के सहयोगी, आर्यसमाज के कार्य, शुद्धि महर्षि के ग्रन्थो तथा १८५७ के स्वातन्त्र्य युद्ध मे महर्षि दयानन्द की भूमिका आदि विषयो की विस्तृत पर सन्तुलित चर्चा की गई है।

देश के नवजागरण एव प्रगति मे महर्षि दयानन्द और आर्यसमाज की भूमिकाका निष्पक्ष परन्तु उचित मूल्याकन करने मे लेखकद्वय सफल रहे हैं। यह न केवल आर्य साहित्य का एक श्रेष्ठ ग्रन्थ है, प्रत्युत इसे भारतीय इतिहास का एक मानक ग्रथ अगीकार करना होगा। ग्रन्थ के अध्ययन मे १८५७ के स्वातन्त्र्य युद्ध एव भारत के नवजागरण मे महर्षि और आर्यसमाज के योगदान को समझने मे पूरी मदद मिलेगी, ग्रन्थ के प्रकाशन के लिए लेखक एव प्रकाशक दोनो ही बधाई के पात्र हैं। इस पठनीय सग्रहणीय ग्रन्थ की न केवल भारत के प्रत्येक आर्य परिवार मे चर्चा और अध्ययन की आवश्यकता है, प्रत्युत प्रबुद्ध भारतीय नागरिक एव भारतीय विषयों अध्येताओ के अनिवार्य चिन्तन एवं मनन की भी इसमे पर्याप्त सामग्री है।

भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम में आर्यसमाज की देन

(उन्नीस निबन्धो का सग्रह) सम्पादक - उमाकान्त उपाध्याय, प्रकाशक—आर्यसमाज कलकत्ता, १९, विधान सरणी कलकत्ता-६। १८६ पृष्ठों की सजिल्द पुस्तक का मूल्य १५ ०० रु.

स्वाधीनता सग्राम मे आर्यसमाज के योगदान को सभी आलोचक एव सुधी विद्वान् स्वीकार करते हैं। पिछले दिनों

(शेष पृष्ठ ६ पर)

आर्य जगत् समाचार

गोवंश की हत्या पर प्रतिबन्ध के लिए

बम्बई में सैकड़ों सर्वोदयी गिरफ्तार

बम्बई। रविवार २३ मई के दिन उत्तर-पूर्वी बम्बई में देवनगर के बूचड़ खाने के समीप गौओं और गोवंश की हत्या पर पूर्ण प्रतिबन्ध की माग करते हुए निषेधाज्ञा का भग करने के अभियोग मे गुजरात के २०० सर्वोदयी सत्याग्रही गिरफ्तार कर लिए गए।

अ भा कृषि गोसेवा सघकी एक प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार सोमवार २४ मई के दिन गुजरात के भू पू मुख्यमन्त्री बाबूभाई पटेल के नेतृत्व मे सर्वोदयी सत्याग्रहियो ने बूचड़खाने के सम्मुख गोहत्या पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगाने के लिए सत्याग्रह किया।

—०—

आदित्यवेश-शक्तिवेश के व्यक्तियों द्वारा हरियाणा प्रतिनिधि सभा के कार्यालयाध्यक्ष को अगवा करने की कोशिश

रोहतक। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के कार्यालयाध्यक्ष एव मुख्तारे आम श्री केदारसिंह आर्य २५ मई को गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ की सुरक्षा के लिए कानूनी कार्यवाही करने हेतु तहसील वल्लभगढ गये थे। जब वह वापिस आने के लिए बस मे बैठे तो उसी बस मे स्वामी आदित्यवेश, शक्तिवेश, जिन्होने गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ पर नाजायज कब्जा कर रखा है, के ४-५ व्यक्ति भी सवार हो गये और फरीदाबाद के बस स्टाप पर दोपहर २ बजे श्री केदारसिंह आर्य को जबर्दस्ती बस से उतार कर एक स्कूटर मे डाल कर गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ ले जाने लगे। इस पर श्री आर्य जी ने बचाओ-बचाओ का शोर कर दिया, पुलिस के दो सिपाही मौके पर आ गये और उन व्यक्तियो को सेन्ट्रल थाना ले गये।

वहां श्री केदारसिंह आर्य ने जबर्दस्ती बस से उतार करे अगवा करने तथा सभा का मूल्यवान रिकार्ड छीनने की रिपोर्ट लिखवाई। परन्तु स्वामी शक्तिवेश उन आतकवादियो को छुडाने के लिए थाना मे आकर पुलिस को रिश्वत देने की पेशकश की और आर्यसमाज के नेताओ को गोली से समाप्त करने की धमकी देने लगे। श्री आर्य ने फोन करके सभा के प्रधान प्रो. शेरसिंह को सारी घटना की सूचना दे दी। प्रो. साहब ने थानदार को कानूनी कार्यवाही करने को कहा।

इस पर स्वामी शक्तिवेश के दो व्यक्तियो श्री धर्मवीर तथा श्री जगदीश को गिरफ्तार कर लिया। वेशपन्थ की इस प्रकार की गुण्डागर्दी की कार्यवाही की घटना को सुनकर आर्यसमाज के क्षेत्रो मे रोष की लहर फैल गई। स्मरण रहे स्वामी शक्तिवेश ने गतवर्ष भी सभा के एक कार्यकर्ता श्री शिवकुमार को वल्लभगढ मे इसी प्रकार बलात उठाकर जीप मे डाल कर गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ ले गये थे और उन्हे मार-पीट कर रिकार्ड छीन लिया था। इनका आर्य प्रतिनिधि सभा से किसी भी प्रकार का सम्बन्ध नही है। और आर्यसमाज की शिरोमणी सार्वदेशिक सभा ने इन द्वारा आर्यसमाज के धन का दुरुपयोग तथा अनुशासन भग करने के आरोप मे आर्यसमाज की प्राथमिक सदस्यता से पृथक किया हुआ है। स्वामी आदित्य वेश पर भी हरयाणा विधान सभा मे भ्रष्टाचार आदि के दोष सिद्ध हो गये थे।

उल्लेखनीय है कि दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सरदारी लाल वर्मा जब एक बार अपने एक आर्य मित्र के साथ गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ गए थे उस समय भी आदित्यवेश और अग्निवेश ने उनके साथ दुर्व्यवहार किया था, उस समय भगवान की कृपा से ही उनके सम्मान की सुरक्षा हो सकी थी।

बोध-कथा

जब उन्हें नींद नहीं आई !

भारत के सन्त स्वामी विवेकानन्द विश्व धर्म सम्मेलन मे भाग लेने अमेरिका पहुचे। वह सादे वस्त्रो मे एकाकी एक बगीचे मे बैठे थे कि एक भद्र अमेरिकी महिला उनके पास पहुची। थोडी ही बातचीत से वह प्रभावित हो उठी और उसे यह अनुभूति हो गई कि यह वास्तव मे भारत के एक विद्वान सन्यासी हैं। वह अपने पति से सलाह कर उन्हें अपने भव्य आवास स्थल मे ले गई और उनके खान-पीने एव निवास की समुचित व्यवस्था कर दी। कुछ ही दिनों मे अपने विद्वत्तापूर्ण भाषणो के कारण स्वामी जी सारे देश भर में प्रसिद्ध हो गए।

एक दिन रात के दो बजे उस अमेरिकी महिला की नींद खुल गई उसे स्वामी जी के कमरे से रोने की आवाज सुनाई दी। कमरे की खुली खिडकी से जब झाका तब उसने देखा कि स्वामी जी नगे फर्श पर लेटे हुए रो रहे थे। महिला ने पूछा— 'स्वामी जी, आपके रोने का क्या कारण है ? आपको क्या कष्ट है ? मखमली बिस्तर छोडकर आप नगे फर्श पर ठण्ड से क्यो ठिठुर रहे हैं ?'

स्वामी जी ने उत्तर दिया—'मुझे यहां पूरा आराम है, पर ये रेशमी गद्दे और ऊनी कपडे मेरा उपहास कर रहे हैं। मुझे अपने गरीब देश के करोडो निर्धन-नगे देशवासी नही भूलते। वे देश के लिए अनाज पैदा करते हैं, पर उन्हें खुद खाने को एक दाना अनाज मयस्सर नहीं, वे ठण्डी रातों मे ईट का सिरहाना लगा कर कठोर जमीन पर सो जाते हैं। उन्ही देशवासियो की याद मे मुझे इन रेशमी गद्दों पर नींद नही आई। मुझे यही अफसोस है कि मेरे कारण आपकी नींद खराब हो गई।'

—नरेन्द्र

तीन संग्रहणीय ग्रंथ······(पृष्ठ ५ का शेष)

कुछ इस प्रकार की अलभ्य सामग्री प्रकाश मे आई है, जिससे १८५७ के स्वातन्त्र्य युद्ध मे गुरु विरजानन्द एव महर्षि दयानन्द के योगदान की सक्रिय भूमिका प्रकाश में आई है। सन् ५७ की क्रान्ति और भारत मे नवजागरण मे महर्षि और आर्यसमाज के योगदान को समझने के लिए ग्रन्थ मे संग्रहीत उन्नीस निबन्ध बहुत सहायक होंगे। आर्यसमाज और राजनीतिक विज्ञान के अधिकारी विद्वानो के ये निबन्ध स्वाधीनता के संघर्ष मे आर्यसमाज की देन को हृदयगम करने मे सहायक होंगे। यह ग्रन्थ न केवल सभी आर्यसमाजो के पुस्तकालयो में सग्रहीत होना चाहिए, प्रत्युत देश के स्वाधीनता सग्राम का अध्ययन करने के इच्छुक पाठको को भी इसका अवलोकन करना चाहिए। ग्रन्थ के प्रकाशन के लिये कलकत्ता आर्यसमाज और विद्वान सम्पादक धन्यवाद के पात्र हैं।

सत्यार्थप्रकाश शताब्दी स्मृति ग्रन्थ

प्रकाशक—प. देवव्रत धर्मेन्दु आर्योपदेशक, प्रधान आर्य युवक परिषद १६५४, कूचा दखिनी राय, दरियागज नई दिल्ली-११०००२। पृष्ठ सख्या : ४४८, मूल्य १०.०० रु.

विश्व के प्रधान धर्मों का तुल[illegible] अध्ययन प्रस्तुत करने वाले [illegible] धर्म का वास्तविक रूप प्रस्तुत करने वाले महर्षि दयानन्द की अमर कृति है जहां सच्चे मानवधर्म की झांकी मिलती है, वहां उसमे विश्व के प्रमुख सम्प्रदायों मत-मतान्तरो एव भारतीय कुरीतियो पर भी प्रकाश डाला [illegible] है। मानव की व्यक्तिगत एवं सामूहिक उन्नति के के लिए यह ग्रन्थ एक प्रकाशस्तम्भ का कार्य कर रहा है। प्रसन्नता [illegible] विषय है कि इस ग्रन्थरत्न वि[illegible] ज्ञातव्य सामग्री आर्य युवक परिषद [illegible] देवव्रत धर्मेन्दु ने प्रस्तुत स्मृति ग्रन्थ मे [illegible] करने का प्रयत्न किया है। इस सचित्र स्मृतिग्रन्थ में पहले ५८ पृष्ठो मे सत्यार्थप्रकाश सम्बन्धी सन्हित्य दिया गया है। ९ पृष्ठो मे सत्यार्थप्रकाश वचनामृत एकत्र किया गया है। ८६ के लगभग पृष्ठों में सत्यार्थ प्रकाश की महिमा गद्य-पद्य मे प्रस्तुत की गई है। २७३ पृष्ठो मे आर्य युवक परिषद एव कर्मठ हिन्दी आर्यजनो का सचित्र परिचय दिया गया है।

सत्यार्थप्रकाश मे आस्था रखने वाले एव आर्य युवा आन्दोलन मे दिलचस्पी रखने वालों के लिए यह ग्रन्थ पठनीय है।

—नरेन्द्र विद्यावाचस्पति

—+—

आवश्यकता है

आर्यसमाजों के सत्संग

६ जून '८२

अन्धा मुगल-प्रताप नगर—पं० गणेश प्रसाद विद्यालकार। अमर कालोनी—पं० ज्ञानचन्द; अशोक विहार के. सी-५२ ए—श्री मोहनलाल गांधी, अशोक नगर—प० रामदेव शास्त्री; आर्यपुरा—प० ईश्वरदत्त, आर के पुरम सेक्टर-५—स्वामी जगदीश्वरानन्द; आर के पुरम सेक्टर-६—प० मनोहरलाल ऋषि भजनोपदेशक; आनन्द विहार—प० मुनिशकर वानप्रस्थ; किग्जवे कैम्प—प० अशोककुमार विद्यालकार, कालका जी डी. डी. ए. फ्लेट—प० विश्वप्रकाश शास्त्री, कालकाजी—प० हरिदत्त शास्त्री; कृष्ण नगर—प० हरिश्चन्द्र शास्त्री; गान्धीनगर—आचार्य नरेन्द्र; गीता कालोनी—प० ओम्प्रकाश भजनोपदेशक, ग्रेटर कैलाश-II—प० बुधीराम शर्मा; गुप्ता कालोनी—प० सोमदेव शास्त्री; गोविन्दपुरी—प० रामनिवास; गोविन्द भवन-दयानन्द वाटिका—ला० लखमीदास; जगपुरा भोगल—प० तुलसीराम भजनोपदेशक, जनकपुरी सी-३—प० ओमवीर शास्त्री; जनकपुरी सी ३/२४—प० सीसराम भजनोपदेशक; टैगोर गार्डन—प्रो० वीरपाल विद्यालकार तिलक नगर—प० भगवान सहाय विद्यावाचस्पति, तिमारपुर—आचार्य हरिदेव सि. भू; देवनगर—प्रो० सत्यपाल बेदार, नारायण विहार—डा० रघुनन्दनसिंह; नया बांस—प० ओम्प्रकाश पाठक, न्यू मुलतान नगर—स्वामी विश्वदेवानन्द; न्यू मोती नगर—प० रघुराज शास्त्री; नगर शाहदरा—प० देवेश; पंजाबी बाग—श्रीमती सुशीला राजपाल, पंजाबी बाग एक्सटेंशन—प० प्रकाशचन्द वेदालकार; प्रीतमपुरा—प० आशानन्द भजनोपदेशक; बाग कड़ेखां—प० बरकतराम भजनोपदेशक; मोडल बस्ती—डा० सुखदयाल भूटानी, महावीर नगर—प० कामेश्वर शास्त्री; महरौली—प० वेदपाल शास्त्री मोती बाग—प० विजयपाल शास्त्री; ... नगर—प० छज्जूराम शास्त्री; राणा प्रताप बाग—प० देवराज वैदिक मिशनरी; राजौरी गार्डन—वैद्य रामकिशोर, लड्डू घाटी-पहाड़गंज—श्रीमती प्रकाशवती शास्त्री, लाजपत नगर—प० छविकृष्ण शास्त्री, लेखराम नगर त्रिनगर—आचार्य दीनानाथ सिद्धातालकार, लारेन्स रोड—प० रामरूप शर्मा, विक्रम नगर—पं० प्राणनाथ सिद्धान्तालकार; विजयनगर—डा० रघुवीर वेदालंकार; सुदर्शन पार्क—प्रो० भारत मित्र शास्त्री, सराय रोहेला—प० प्रकाशचन्द शास्त्री, सोहनगंज—प० वेदव्यास भजनोपदेशक, श्रीनिवास पुरी—श्रीमती ... , शालीमार बाग—प० शिवकुमार शास्त्री; हनुमान रोड—प० ... सिद्धातालकार, हौज खास डी-२०—प० सुधाकर स्नातक, पालम कालोनी ...—स्वामी स्वरूपानन्द भजनोपदेशक।

—ज्ञानचन्द डोगरा, वेद प्रचार प्रबन्धक

रेनन का आयात रोको

आर्यसमाज मालवीयनगर, ब्रह्मपुरी घोण्डा आदि दिल्ली की अनेक आर्यसभाओं ने भारत सरकार से अनुरोध किया है कि डिब्बा बन्द पीले पनीर के निर्माण के लिए विदेशों से आयात हो रहे गाय के बच्चे का वध करके बनाए रेनन के आयात पर तुरन्त प्रतिबन्ध लगाए अथवा पनीर के डिब्बों पर अनिवायत: लिखा जाए कि इसमें गाय के बछड़े का वध करके बनाए गए रेनन पदार्थ का प्रयोग किया है।

☐

आर्यसमाज मेन बाजार, पठानकोट पंजाब के अधिकारी संरक्षक—श्री प्यारेलाल, प्रधान लालचन्द जी, महामंत्री प्रो० स्वतन्त्रकुमार, उपप्रधान—गिरिधारीलाल गुप्त, यशपाल गांधी, प्रचार मत्री—डा. जन्मेजय दास गुप्ता, कोषाध्यक्ष—डा० टेकचन्द, उपमन्त्रिणी—श्रीमती विमला डोगरा, पुस्तकालयाध्यक्ष—श्री सुरेन्द्र मोहन, लेखा निरीक्षक—श्री पृथ्वीराज महाजन।

X

आर्यसमाजों के नए पदाधिकारी

आर्यसमाज अमर कालोनी, प्रधान—डाक्टर तीर्थराम गुप्ता, उपप्रधान—श्री मलकराज डाबर, मुलखराज बढेहरा, मन्त्री—श्री रामजीदास मलिक, उपमन्त्री—जतीन्द्र कुमार, प० कवरभान, प्रचारमन्त्री—श्री योगेन्द्रनाथ, कोषाध्यक्ष—श्री सुरेन्द्र नाथ सहगल, पुस्तकाध्यक्ष—श्री खेमचन्द्र बब्बर।

आर्य वीर नेत्र चिकित्सालय, गुडगांव। प्रधान—श्री फतहचन्द्र अग्रवाल, उपप्रधान—श्री यशपाल महेन्द्र, श्री मुन्शाराम सचदेव, मन्त्री—श्री भारत भूषण आर्य, उपमन्त्री—श्री लाजपतराम आर्य, श्री ओम्प्रकाश भुटानी, कोषाध्यक्ष—श्री ओम्प्रकाश मदान।

आर्यसमाज आर्यपुरा। प्रधान—चौधरी सुखलाल, उपप्रधान—श्री राजेन्द्रप्रसाद श्री हरिसिंह, मन्त्री—ब्र. राजसिंह आर्य, उपमन्त्री—ब्र. जगदीशचन्द्र आर्य, वेदप्रकाश, कोषाध्यक्ष—श्री पुष्पराज कोहली।

आर्यसमाज मोडल टाउन के नए पदाधिकारी

प्रधान—श्री देशराज झाम, उपप्रधान—श्री महावीर प्रसाद अग्रोल, श्री बद्रीनाथ महाजन, मन्त्री—श्री श्रीनिवास गुप्त, उपमन्त्री—श्री कणदव शास्त्री, सहायक मन्त्री—श्री ओम्प्रकाश धीर, कोषाध्यक्ष—श्री जगदीशचन्द्र पुरी।

आर्यनेता श्री रविदत्त वैद्य का स्वर्गवास

श्री वैद्य को श्रद्धांजलि

आर्य नेता एव आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के प्रधान ब्यावर निवासी श्री रविदत्त वैद्य के आकस्मिक निधन का समाचार जानकर आर्यसमाज अजमेर के अन्तगत संचालित दयानन्द कालेज, जियालाल ट्रेनिंग संस्थान डी० ए० वी० हा० सं० स्कूल, बिरजानन्द हा० सं० स्कूल आदि सभी शिक्षण संस्थाओ में शोक सभा कर वैद्य जी को श्रद्धांजलि अर्पित की गई। इन सभी सस्थाओ मे अवकाश घोषित कर दिया गया।

आर्य शिक्षण सस्थाओ के प्रधान श्री दत्तात्रय वाब्ले ने श्री वैद्य जी के निधन को आर्य जगत की अपूरणीय क्षति बताया है। वह अपने पीछे सच्चरित्रता एव निस्वार्थ सेवा का आदर्श स्मृति रूप मे छोड गए। मन्त्री—आर्यसमाज, अजमेर

दिवंगत आत्माओं की स्मृति में

रामगली आर्यसमाज मन्दिर में यज्ञशाला का निर्माण

नई दिल्ली। राम गली आर्यसमाज हरिनगर, नई दिल्ली-६४ की कार्यकारिणी ने एक प्रस्ताव द्वारा समाज के सदस्य श्री मनोहरलाल विग की पारिवारिक क्षति के प्रति अपनी संवेदना प्रकट की। विगत डेढ़ वर्ष में वह अपनी पुत्री श्रीमती हेमप्रभा, दामाद डा० राजेन्द्र प्रसाद एवं धर्मपत्नी श्रीमती राजदुलारी विग की क्षति उठा चुके है। श्री विग समाज मन्दिर के फर्श व स्टेज बनवाने के लिए ढाई हजार रुपए तथा पुत्री एव दामाद की प्रथम पुण्य तिथि पर पाच हजार रु० नकद २१ स्टेनलेस के बर्तन, दो बिस्तरे तथा सभा भवन के लिए आठ ट्यूबे दे चुके है। अपनी पत्नी श्रीमती रामदुलारी विग की पगडी की रस्म पर पाँच हजार रुपये का दान दिया है। अब श्री विग के दस हजार रुपये के दान से यज्ञशाला का निर्माण कराया जायेगा। समाज के सभी सदस्यो ने परमात्मा से प्रार्थना की कि वह विग परिवार को धैर्य एव शाति प्रदान करें।

बोट क्लब पर रामायण कथा

वैदिक सत्सग मडल बोट क्लब (उद्योग भवन) की ओर से रामायण पर चार दिन की कथा का आयोजन किया गया, १९ ५ ८२ से २२ ५ ८२ तक। आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के प्रसिद्ध सगीताचार्य श्री सत्यदेव व ज्योतिप्रसाद की भजन मडली ने बड़े अच्छे ढग से मर्यादा पुरषोतम श्री रामचन्द्र जी, सीता जी व लक्ष्मण जी आदि के गुणो का वर्णन सगीत के रूप मे किया। प्रतिदिन कथा सुनने के लिए २००-३०० व्यक्ति आते थे। यह कार्यक्रम दोपहर को १ बजे से दो बजे तक चलता था।

भूल-सुधार

आर्यसन्देश के ९ मई, ८२ के अक मे पृष्ठ ७ पर 'आर्यसमाज किशनगज के नए पदाधिकारी' शीर्षकसे छपा समाचार अनधिकृत है। उक्त चुनाव को दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने मान्यता नही है। हमे खेद है कि असावधानता वश उक्त सवाद पत्र मे प्रकाशित हो गया।

卐 आर्यसन्देश' के
स्वय ग्राहक बनें—
दूसरो को बनाएं

卐 आर्यसमाज के सदस्य
स्वयं बनें—
दूसरो को बनाइए

हिन्दी-संस्कृत भाषा स्वय पढ़ें
दूसरों को भी पढाइए—

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रकाशन

सत्यार्थप्रकश सन्देश (हिन्दी)	१.००
" " अंग्रेजी	समाप्त
आर्य सन्देश-महासम्मेलन विशेषांक	०.६०
पादरी भाग गया — ओम्प्रकाश त्यागी	०.३०
स्वामी श्रद्धानन्द-बलिदान अर्द्ध शताब्दी स्मारिका	६.००
सत्यार्थप्रकाश शताब्दी-समारोह स्मारिका	६.००

सम्पर्क करें—
अधिष्ठाता प्रकाशन विभाग
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
१५ हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१



दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए श्री सरदारी लाल वर्मा द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा भाटिया प्रेस २५७४, रघुबरपुरा नं० २ गांधी नगर दिल्ली-३१ मे मुद्रित। कार्यालय १५ हनुमानरोड, नई दिल्ली फोन ३१०१५०

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक मुखपत्र

एक प्रति ३५ पैसे | वार्षिक १५ रुपये | वर्ष ६ | अंक ३४ | रविवार १३ जून | ३१ ज्येष्ठ वि० २०३९ | दयानन्दाब्द—१५८

देश में भीषण परिस्थिति : केवल दृढ़ता से सामना सम्भव

विदेशी शक्तियों के दुष्चक्र का सामना केवल त्याग एवं एकता से सम्भव : सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले की सामयिक चेतावनी

नई दिल्ली। 'आज देश के सम्मुख ऐसी भीषण परिस्थिति है, जैसी कि इससे पूर्व कभी भी नही थी, कश्मीर मे भारत छोड कर गए पाकिस्तानियो को पुनः वहाँ बसने के लिए आमन्त्रित किया जा रहा है, राज्य से शरणार्थी पजाबी भाई विदा हो चुके हैं कश्मीरी पण्डितो का भविष्य भी अन्धकारमय है, पजाब के हिन्दू व्यापारी और उद्योगपति इतने अधिक सकटापन्न हैं कि राज्य मे उन्हे अपना भविष्य अन्धकारपूर्ण मालूम पडता है, मेघालय, नगालैंड, अरुणाचल आदि पूर्वोत्तर अचल में ईसाई अपना गढ़ बनाने के लिए तुले दीखते हैं, पेट्रो-डालर के बल पर मध्यपूर्व के मुस्लिम राष्ट्र देश के पिछडे एव उपेक्षित समाज का सामूहिक धर्मान्तिरण कर देश का नक्शा बदलना चाहते हैं, इस भीषण स्थिति का नियन्त्रण करने के लिए एक-एक राष्ट्रवादी भारतीय को त्याग, बलिदान और एकता की दृढ भावना से कार्य करना होगा'—इन शब्दों मे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले ने बृहस्पतिवार ३ जून के दिन दक्षिणी दिल्ली मे आनन्दलोक अवस्थित श्री मुल्कराज भल्ला के निवासस्थान पर आयोजित एक विचारगोष्ठी मे 'भारतीय सस्कृति पर छाया वर्तमान सकट' विषय पर अपने विचार प्रकट किए।

पंचमार्गियों का खतरा

आर्य नेता ने देश के विचारकों का उद्बोधन करते हुए कहा—इस समय पजाब मे लुधियाना और अमृतसर औद्योगिक दृष्टि से लघु-जापान के रूप मे उभरे हैं। इन नगरो मे देश के औद्योगिक पुनर्निर्माण की भूमिका प्रस्तुत की जा रही है, परन्तु दल खालसा के देश-द्रोही कृत्यो के कारण पजाब का व्यापारी और उद्योगपति वहा से बोरिया-बिस्तर बांधने के लिए मजबूर किया जा रहा है, कश्मीर में वहाँ की मजहबी सरकार केन्द्र द्वारा स्वीकृत एक-एक कानून को नष्ट करने के लिए तुली दीखती है। उत्तर प्रदेश में मुरादाबाद के पास लीबिया की ओर से करोडो रुपयो की मदद से दो इस्लामी विश्वविद्यालय खड़े किए जा रहे हैं। देश के छोटे-बड़े सब नगरो मे विदशी पचमांगी अपने गढ़ मजबूत कर रहे हैं।

आर्यसमाज की भूमिका

श्री शालवाले ने चेतावनी दी कि यदि मीनाक्षीपुरम मे समय पर आर्य समाज इस्लामीकरण की लहर का मुकाबला न करता तो मीनाक्षीपुरम से मदुराई तक नया इस्लामी गढ स्थापित हो जाता। आर्यसमाज इस खतरे का पूरी दृढता से मुकाबला कर रहा है। दर्जनो तमिल एव अंग्रेजी भाषा के जानकार प्रचारक उस क्षेत्र में कार्य कर रहे हैं। आगामी अक्तूबर महीने मे सार्वदेशिक सभा मीनाक्षीपुरम मे अपना वार्षिक अधिवेशन करने जा रही है। प्रलोभन द्वारा किए जा रहे सामूहिक धर्मान्तिरण का मुकाबला करने के लिए हम पूरी ताकत लगा रहे हैं। इसी प्रकार पूर्वोत्तर अचल मे दयानन्द सेवा मिशन वहाँ के ईसाई गढ़ मे भारतीय सस्कृति के प्रचार-प्रसार के लिए सन्नद्ध है। आज हमारे पास योजनाएं है, अच्छे कार्यकर्त्ता हैं, केवल धन का अभाव है।

आर्य नेता ने अनुरोध किया कि हिन्दू मन्दिरो और मठो आदि मे लगी अरबो की सम्पत्ति यदि इस्लामी और ईसाई आक्रमण का सामना करने के लिए सगठित एव प्रयुक्त की जा सके तो बिगडी स्थिति के सुधार के लिए बहुत कुछ किया जा सकता है। हमे यह भी स्मरण रखना होगा कि इस समय भारत मे पाकिस्तान, चीन, रूस और अमेरिका समर्थक लॉबी हैं, यदि कोई नही है तो भारत समर्थक कोई लॉबी नही है, हम केवल देश सस्कृति के लिए समर्पण एव एकता की भावना से ही इस आसन्न खतरे का सामना कर सकते हैं।

□ □ □

आर्यवीर महर्षि के जीवन से प्रेरणा लें

पानीपत में आर्यवीर शिक्षण शिविर सम्पन्न

पानीपत। आर्य वीर दल हरियाणा के तत्वावधान मे आर्यसमाज मोडल टाउन पानीपत द्वारा आयोजित एक सप्ताह का आर्यवीर शिक्षण शिविर सम्पन्न हुआ। दीक्षान्त समारोह के नगर पिता शानूलाल नारग ने कहा कि कई बर्षों के अन्तराल बाद ऐसा कार्यक्रम देखने को मिला।

किसान महाविद्यालय जीन्द के प्रो० ओमकुमार जी आर्य ने दीक्षान्त भाषण मे आर्य वीरो को प्रेरणा देते हुए कहा कि महर्षि स्वामी दयानन्द जी सरस्वती के गुणो को अपने अन्दर धारण करें। प्रो० वेद सुमन वेदालकार मण्डल पति ने भी इस अवसर पर आर्य वीरो को आशीर्वाद दिया।

शिविर समापन कार्यक्रम के साथ ही तीस हजार रुपए की लागत से नव-निर्मित सत सदन का उद्घाटन दानकर्ता श्री लाला तुलसीदास जी खेडा के कर-कमलो द्वारा सम्पन्न हुआ। आर्य वीरो एव आर्य बन्धुओ ने श्री ऐडा जी का हार्दिक अभिनन्दन भी किया। □

गोवंश हत्या निरोध के लिए अविलम्ब केन्द्रीय कानून बने

कानून बनने तक आर्डिनेंस जारी हो भारत सरकार की गोसंवर्द्धन परिषद् का निर्णय

नई दिल्ली। केन्द्रीय कृषि-मन्त्री राव वीरेन्द्रसिह की अध्यक्षता मे भारत सरकार की गोसम्वर्धन परिषद् ने सर्वसम्मति से निश्चय किया है—'ऊर्जा सकट को देखते हुए बैल शक्ति की सुरक्षा अनिवार्य हो गई है। सभा की सम्मति है कि बैलो की सुरक्षा के लिए सम्पूर्ण गोवश हत्या निरोध के लिए अविलम्ब एक केन्द्रीय कानून बनाया जाए। जब तक उक्त कानून नही बनता, तब तक अध्यादेश द्वारा बैलो की हत्या पूर्णतया सम्पूर्ण देश मे रोकी जाए।

बैठक ने सर्वसम्मति से यह निश्चय भी किया कि डिब्बा बन्द पनीर तैयार करने के लिए आयातित बछडो की अतडियो का रक्त प्रयोग करने के स्थान पर शाकाहारी ढग प्रयोग मे लाए जाए।

सम्पादक—नरेन्द्र विद्यावाचस्पति

व्यवस्थापक—प्रद्युम्नलाल तलवाड़

वेद-मनन

मधुर वाणी और प्राणायाम से सुख-शान्ति

—मनोहर विद्यालकार

इम नो देव सवितर्यज्ञ प्रणय देवाव्य सखिविद सत्रजित धनजितं स्वर्जितम् ।

ऋचा स्तोम समर्धय गायत्रेण रथन्तरं बृहद्गायत्रवर्तनि स्वाहा ॥ यजु. ११ ८

ऋषि—प्रजापति । देवता-सविता। छन्द-भुरिक शक्वरी।

शब्दार्थ—हे (देव सवित.) सर्वोत्पादक तथा सर्वप्रेरकदेव (न) हमारे (देवाव्यम्) देवताओ के प्रिय (सखिविदम् (मित्रो को प्राप्त करने वाले (सत्र जितम्) सदा विजयी (धनजितम्; धन प्राप्त करने वाले (स्वर्जितम्) सुख मे रहने वाले (इम यज्ञ म्) सत्कर्म युक्त इस जीवन यज्ञ का (प्रणय) आगे और आगे बढाइए।

(ऋचा स्तोमम्) स्तुतियोग्य पुरुष तथा राष्ट्र को ऋग्वेद के ज्ञान मे (समर्धय) समृद्ध कीजिए। (गायत्रेण रथन्तरम्) ब्रह्म बल से क्षत्रबल को अथवा प्राण मे वाणी को सबल बनाइए। (बृहद् गायत्रवर्तनि) प्राणमार्ग पर चलने वाले मन को (समर्धय) सब प्रकार से समृद्ध कीजिए। (स्वाहा) इस मत्र मे उत्तम प्रार्थनाए की गई है, उन्हे पूर्ण करने के लिए प्रयत्न करूगा, और आवश्यकता हुई तो स्वार्थ त्याग के लिए भी उद्यत रहूगा।

निष्कर्ष—यज्ञमय जीवन उसका माना जाएगा, जिसे विद्वान् पसन्द करते हो, जिसके प्रत्येक क्षेत्र मे मित्र हो, जिस मे आत्मविश्वास हो, और सदा सफलता प्राप्त करता हो। जिसे धन-धान्य की कमी न हो, अपना जीवन सदाचारी हो और इसलिए सन्तुष्ट व सुखी रहता हो।

ऋग्वेद के भौतिक ज्ञान से राष्ट्र उन्नत होता है। सत्य और मधुर वाणी से सगठन मजबूत होता है। मधुरवाणी से यज्ञ पूर्ण होता है।

ब्रह्म बल के सहयोग के बिना क्षात्र बल सफल नही होता। जिसका प्राण निर्बल है, उसकी वाणी मे ओज नही आता। प्राणायाम से मन शान्त और सशक्त होता है, इसलिए जीवन को समृद्ध तथा सुखी बनाने के लिए प्राणायाम आवश्यक है।

विशेष—इस मन्त्र के ऋषि और देवता शब्द सकेत करते हैं कि जो व्यक्ति जनता की पालना और रक्षा करेगा, वही उनके लिए प्रेरणा का स्रोत बनेगा। प्रजापति बने बिना सविता बनना सभव नही।

इस मत्र के छन्द का शब्दार्थ भी उपरिलिखित भावना की पुष्टि करता है कि—

दूसरो का भरण पोषण करने से ही मनुष्य मे जनता की शक्ति बढती जाती है।

अर्थ पोषक प्रमाण —

यज्ञम् —विद्याधर्म सगमयितारम्। स्वा० द० सत्कर्म। भगवदाचार्य।

गायत्रेण—गायत्रो वै ब्राह्मण। ऐत ६-२८, रथन्तर वै सम्राट्। तै० १-४-१-६ क्षत्रिय गायत्रो वै प्राण। तै० ३-३-५-३, वाक् वै रथन्तरम्। ता० ७-६-२६।

बृहत—मनो वै बृहत्। ता० ७-६-१६, स्तोमम्—स्तोम श्लाघायाम्, स्तोमयति।

गायत्र वर्तनि—गायत्रस्य प्राणस्य वर्तनिर्मार्गो वर्तन यस्मिन् तत्। स्वा० द०।

शक्वरी शक्नोतीति—समर्थ बनता है। भुरिक्-भरति-भरण पोषण करता है। देवाम् God loved सखिविदम् Friend finding सत्रजितम् Ever conquering धनजितम् Winning wealth

स्वाहा —१ सु+आ+आह+आ=वाह वाह, क्या खूब कहा है! २ सु+आ+हा (गतौ)—किये निश्चय को पूरा करने के लिए खूब प्रयत्न करना, ३ सु+आ+हा (त्यागे) और आवश्यकता पडने पर त्याग के लिए उद्यत रहना।

५२२, ईश्वर भवन, खारी बावली दिल्ली-६

प्रवेश सूचना

श्रीमद् दयानन्द गुरुकुल विद्यापीठ गदपुरी (फरीदाबाद) हरियाणा मे १ जून से प्रवेश प्रारम्भ है।

यहा पहली मे आठवी हरियाणा शिक्षा विभाग तथा महर्षि दयानन्द विश्व विद्यालय रोहतक की प्राज्ञ विशारद शास्त्री प्रभाकर परीक्षाएं दिलाई जाती हैं।

अध्यापन एव भवन न शुल्क नि:शुल्क भोजन, सुन्दर व्यवस्था पूर्ण जानकारी के लिए १.२५ की डाक टिकट भजे। —मुख्याधिष्ठाता

सत्यार्थप्रकाश से

मूर्तिपूजा से ब्रह्मप्राप्ति सम्भव नहीं

न तस्य प्रतिमा अस्ति ॥ २ ॥ यजु.० अ० ३२। म० ३ ॥

यद्वाचानभ्युदित येनं वागभ्युद्यते।
तदेव ब्रह्म त्व विद्धि नेद यदिदमुपासते ॥ १ ॥
यन्मनसा न मनुते येनाहुर्मनो मतम्।
तदेव ब्रह्म त्व विद्धि नेद यदिदमुपासते ॥ २ ॥
यच्चक्षुषा न पश्यति येन चक्षषि पश्यन्ति।
तदेव ब्रह्म त्व विद्धि नेद यदिदमुपासते ॥ ३ ॥
यच्छोत्रेण न शृणोति येन श्रतमिद श्रुतम।
तदेव ब्रह्म त्व विद्धि नेद यदिदमुपासते ॥ ४ ॥
यत्प्राणेन न प्राणिति येन प्राय प्रणीयते।
तदेव ब्रह्म त्व विद्धि नेद यदिदमुपासत ॥ ५ ॥

केनोपनि० । ख० १ । म० ४-८ ॥

जो असभूति अर्थात् अनुत्पन्न अनादि प्रकृति कारण ही ब्रह्म के स्थान मे उपासना करते हैं वे अन्धकार अर्थात् अज्ञान और दुखसागर मे डूबते हैं। और सभूति जो कारण से उत्पन्न हुए कार्यरूप पृथिवी आदि भूत पाषाण और वृक्षादि अवयव और मनुष्यादि के शरीर की उपासना ब्रह्म के स्थान मे करते हैं, वे उस अन्धकार से भी अधिक अन्धकार अर्थात् महामूर्ख चिरकाल घोर दुखरूप नरक मे गिर के महाक्लेश भोगते हैं ॥ १ ॥ जो सब जगत् मे व्यापक है उस निराकार परमात्मा की प्रतिमा परिमाण सादृश्य वा मूर्त्ति नही है ॥ २२ ॥ जो वाणी का "इदता" अर्थात् यह जल है लीजिए, वैसा विषय नही। और जिसके धारण और सत्ता से वाणी की प्रवृत्ति होती है। उसी को ब्रह्म जान और उपासना कर। और जो उससे भिन्न है वह उपासनीय नही ॥ १ ॥ जो मन से "इयत्ता" करके मनन मे आता, जो मन को जानता है, उसी ब्रह्म को तू जान और उसी की उपासना कर। जो उसके भिन्न जीव और अन्तकरण है उसकी उपासना ब्रह्म के स्थान मे मत कर ॥ २ ॥ जो आख से नही दीख पडता और जिससे सब आँखे देखती हैं, उसी को तू ब्रह्म जान और उसी की उपासना कर। और जो उससे भिन्न सूर्य, विद्युत और अग्नि आदि जड पदार्थ हैं उनकी उपासना मत कर ॥ ३ ॥ जो श्रोत्र से नही सुना जाता और जिससे श्रोत्र सुनता है उसी को तू ब्रह्म जान और उसी की उपासना कर। और जो उससे भिन्न शब्दादि की उपासना उसके स्थान मे मत कर ॥ ४ ॥ जो प्राणो मे चलायमान नही होता, जिससे प्राण गमन को प्राप्त होता है, उसी ब्रह्म को तू जान और उसी की उपासना कर। जो यह उससे भिन्न वायु है उसकी उपासना मत कर। ॥ ५ ॥ इत्यादि बहुतसे निषेध है। निषेध प्राप्त और अप्राप्त का भी होता है। 'प्राप्त' का जैसे कोई बैठा हो उसको वहा से उठा देना। 'अप्राप्त' का जैसे हे पुत्र। तू चोरी कभी मत करना, कुएं मे मत गिरना। दुष्टो का सग मत करना। विद्याहीन मत रहना। इत्यादि अप्राप्त का भी निषेध होता है। सो मनुष्यो के ज्ञान मे अप्राप्त, परमेश्वर के ज्ञान मे प्राप्त का निषेध किया है, इसलिए पाषाणादि मूर्तिपूजा अत्यन्त निषिद्ध है।

पुष्करलाल आर्य, सयोजक वैदिक प्रचार समिति, १२१, काटन स्ट्रीट कलकत्ता—७००००७

गाय बचेगी, राष्ट्र बचेगा !

क्या आप जानते हैं—

- भारत मे प्रतिदिन ४० हजार गोवश की हत्या होती है।
- केरल और पश्चिमी बगाल मे सबसे अधिक गोहत्या।
- उत्तरी भारत के हजारो गावो मे प्रतिदिन चोरी-छिपे गोहत्या

केवल जागरूक किसान भाई ही गोहत्या का यह पाप रुकवा सकते हैं।

हरयाणा, पजाब, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, दिल्ली राज्यो मे गोवश की निकासी पर रोक है।

गोभक्त सज्जन देवियां सगठित होकर इन राज्यों मे गोवश की निकासी रोकें गोहत्या रोकने मे जिलाधिकारियो और पुलिस की सहायता लें।

उस परमेश्वर को नमस्कार !

ओ३म् यो भूतञ्च भव्यञ्च सर्वं यश्चाधितिष्ठति।

स्वर्यस्य च केवल तस्मै ज्येष्ठाय ब्रह्मणे नम ॥ अथर्व १०.८ १

वह परमात्मा भूत, भविष्यत् और वर्त्तमान सबका अधिष्ठाता है, उस आनदस्वरूप ज्येष्ठ ब्रह्म परमेश्वर को हमारा नमस्कार है।

ओ३म्

आर्य सन्देश

कुछ आवश्यक बुनियादी सुझाव

लगभग सभी विचारशील चिन्तकों की मान्यता है कि इस समय देश की सर्वाधिक गम्भीर समस्या यह है कि हमारे जीवन मे नैतिक मूल्यो का अत्यताभाव हो गया है। स्वभावत: जिज्ञासा होती है कि क्या कारण है कि जीवन मे नैतिक मूल्यो का ह्रास हो गया है ? इन जीवन मूल्यो के ह्रास के अनेक कारण हो सकते हैं परन्तु उनका एक मुख्य कारण यह भी है कि हमारे विद्यालयो एव शिक्षण सस्थाओ मे नैतिक धार्मिक शिक्षण का पढाना बन्द कर दिया गया है। इसी के साथ जीवन मे दूसरी कुछ अपूर्णताए भी बढ गई हैं। इन अपूर्णताओ एव अभावो को दूर करने के लिए तरह-तरह के उपयोगी सुझाव दिए जा सकते हैं। पहला उपयोगी सुझाव तो यह है कि विद्यालयों एव विश्वविद्यालयो आदि मे नैतिक शिक्षा एव आचार शास्त्र का अध्ययन-अध्यापन अनिवार्य कर देना चाहिए। इसी के साथ आकाशवाणी, दूर-दर्शन आदि से सच्चे मानव धर्म-वैदिक धर्म के मुख्य ग्रन्थ वेद की शाश्वत शिक्षाओ —सगठन सूक्त, पृथ्वी सूक्त, ब्रह्मचर्य, गृहस्थ,वानप्रस्थ, सन्यास आदि की मर्यादाओ को व्यक्त करने वाले मन्त्रो एव सूक्तो आदिको सरल भारतीय भाषाओ मे प्रचारित एव प्रसारित करना चाहिए।

यह भी आवश्यक है कि भारतीय भाषाओ के शब्दकोश एव आधार ज्ञान को पुष्ट करने के लिए भारत के माध्यमिक विद्यालयो मे सस्कृत को एक वैकल्पिक विषय के रूप मे लेने की सुविधा दी जानी चाहिए। अ. भ. प्रशासनिक परीक्षाओ मे भारतीय भाषाओ के माध्यम की अनुमति दी गई है,वह अनुमति वैज्ञानिक,तकनीकी, औद्योगिक परीक्षाओ मे भी दी जानी चाहिए। हमे यह हृदयगम कर लेना चाहिए कि जब तक भारतीय मानस से विदेशी भाषा एव सस्कृति की दासता का अन्त नही होगा, तब तक हम नाम तो भारतीय सस्कृति और सभ्यता का लेगे, परन्तु वस्तुत हम मैकाले के मानसपुत्र बने रहेगे। देश मनसा वाचा-कर्मणा अपनी सस्कृति के उदात्त मूल्यो को ग्रहण कर सके, इसके लिए आवश्यक है कि हमारे देश मे अपनी भाषाओ, उन भाषाओ की जननी सस्कृत और भारतीय मानव सस्कृति के मूलाधार वेद आदि को अपनाने पर अधिकाधिक बल देना ही होगा।

इसी के साथ एक बुनियादी प्रश्न यह है कि भारतीय सस्कृति और धर्म त्याग और बलिदान पर आधारित रहे हैं। ससार का इतिहास यह गवाही देता है कि ईसाई और मुस्लिम आक्रान्ता तलवार, प्रलोभन और शक्ति के बल पर ससार मे फैले हैं तो भारत के धर्म कवल मात्र त्याग, बलिदान और सच्चाई पर फैले हैं। आज आवश्यकता है कि हमारे इतिहास मे भारत की इस विशिष्टता का प्रसार किया जाए, परन्तु खेद की बात यह हैं कि आज इतिहास का पुनर्मूल्याकन कर यहा भारतीय जनता पर हुए अत्याचारों और कष्टो के सच्चे पाठ खत्म कर देने का प्रयास किया जा रहा है। देश की एकता और भाईचारे की प्रतिष्ठा के लिए आज आशका है कि हमारी निष्क्रियता के कारण प्रचलित पुस्तको से ऐसे अश निकाल दिए जाए जो ऐतिहासिक तथ्यो की दृष्टि से सुरक्षित रखने चाहिए। इसी के साथ कुछ दूसरे आपत्तिजनक अश जोडे जा सकते हैं। देश की सांस्कृतिक एकता और भाईचारा सुरक्षित रखने के लिए हमे जहा भारतीय उदात्त भावनाओ का प्रचार करना चाहिए, वहां उसमे बाहरी भोगवाद की प्रवृत्तियो को भी रोकना चाहिए। देश की समुन्नति के लिए नैतिक शिक्षा की अनिवार्यता के साथ बुनियादी भारतीय तत्त्वो का संरक्षण भी होना चाहिए।

चिट्ठी-पत्री

नारियों का नग्न चित्रण बन्द हो।

आज हमारे समाज मे नारी एक खिलवाड बन कर रह गई है। चलचित्रो के माध्यम मे नारियो के नग्न व मांसल शरीर का प्रदर्शन नारियो के अस्तित्व पर ही कहर ढा रहा है। 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता।' की उक्ति अतीत के गर्त मे विलीन हो चुकी है। आज हर वस्तु के विज्ञापन मे नारियो के नग्न शरीर का प्रश्रय लिया जाता है चाहे उस वस्तु का सम्बन्ध नारी से हो या नही। विज्ञापनो के माध्यम मे नारी जाति का अपमान किया जा रहा है। बुक स्टालो पर तो सभ्य आदमी खडा भी नही हो सकता है। उपन्यासो सच्ची कथाओ की पत्रिकाओ के मुखपृष्ठो पर नारी के कामोत्तेजक चित्र प्रकाशित कर कुछ लोग अथाह धन कमा रहे हैं और दूसरी ओर युवा पीढी बर्बाद हो रही है। अश्लील साहित्य, अश्लील विज्ञापनो, अश्लील चलचित्र कामोत्तेजक नग्न प्रदर्शनो के प्रभाव स्वरूप नारी को मात्र वासना की वस्तु बनाने की कोशिश की गई है। यही कारण है कि आज नारियो का घर से बाहर निकलना उनके लिए सकट बन गया है। अपहरण व बलात्कार आज सामान्य बात हो गई है। शहरो मे चौराहो पर नारियो के नगे शरीर के बिना कोई पोस्टर दिखाई ही नही पडेगा। सभ्यता के नाम पर नारियो का अपमान कब तक होता रहेगा ? क्या नारिया स्वय इस क्रूरता के विरोध मे उठ खडी होगी ? क्या हमारी सरकार भी इस दिशा मे कोई दायित्व है, आदि प्रश्न विचारणीय है।

— राधेश्याम 'आर्य' एडवोकेट मुसाफिरखाना, सुलतानपुर (उ० प्र०)

इतिहास का नया मूल्यांकन : जनता का दायित्व

भारत सरकार के शिक्षा एव सांस्कृतिक मत्रालय (शिक्षा विभाग) के सकल्प सख्या एफ २-१८/७१/ एस. सी. एच ४ दिनांक १४ जनवरी, १९८२ के अनुसार एक राष्ट्रीय आधार पर उच्च स्तरीय मूल्याकन समिति गठित की गई है। इसका कार्य-क्षेत्र स्कूलीय किताबो का राष्ट्रीय एकता के दृष्टिकोण से मूल्यांकन कराना होगा। प्रारम्भ में इतिहास और भाषा से सम्बन्धित पुस्तकें जो १ १२ कक्षाओ में लगी हुई है की समीक्षा की जायेगी।

इस सदर्भ मे हमारा कर्त्तव्य है कि हम उपयुक्त व्यक्तियो की एक समिति नियुक्त करे जो यह पता लगाए कि उक्त पुस्तको मे हमारे दृष्टिकोण से क्या-क्या कमियाँ हैं या आपत्तिजनक बातें हैं जो किताबो मे से निकाल जाए। ऐसा न हो कि हमारी निष्क्रियता के कारण किताबो मे से वह अश निकाली दिया जाए जो रहने चाहिए या नए अश डाल दिए जाए जो सत्य पर आधारित न हो। हमे कुछ विषयो पर अपना दृष्टिकोण भी देना है जो आजकल गलत ढग से पढाए जाते हैं जैसा कि आर्यो का बाहर के देशो से भारत मे आना, उनका मास भक्षण, आर्य-अनार्य द्रविड आदि का झगडा आदि-आदि।

इस विषय मे सम्बन्धित विद्वानो मे विचार विमर्श कर आवश्यक कार्यवाही होनी चाहिए और एक ज्ञापन उक्त समिति को दिया जाये ताकि हमारी विचार-धारा के लोगो का दृष्टिकोण भी सरकार तक पहुचाया जाए। अन्यथा भारत का इतिहास गलत ढग से लिखवाया जाएगा और हमें शिकायत करने का अधिकार न होगा। —अजयकुमार २१६, लक्ष्मीबाई नगर, नई दिल्ली-२३

संसद सदस्यों के सम्मुख तीन सुझाव

आर्यसमाज और महर्षि दयानन्द के अनुयायी कहने वाले ससत्सदस्यो तथा केन्द्रीय मन्त्रियो के सम्मुख निम्नलिखित तीन सुझाव प्रस्तुत है—

१/ नई १० + २ शिक्षा पद्धति मे नवम, दशम, एकादश तथा द्वादश कक्षाओ मे सस्कृत को एक विषय के रूप मे रखवाए जिससे कि छात्र इसे विकल्प के रूप मे अधिक सख्या मे पढने मे समर्थ हो।

२/ जिस प्रकार भारतीय भाषाओ का माध्यम के रूप मे प्रयोग करने की अनुमति अखिल भारतीय प्रशासनिक परीक्षाओ मे दी गई है इसी प्रकार यह अनुमति सभी तकनीकी, वैज्ञानिक, विधि, चार्टर्ड एकाउटेसी आदि परीक्षाओ मे उपलब्ध कराई जाए।

३/ आकाशवाणी से प्रतिदिन वन्दना कार्यक्रम के अन्तर्गत विभिन्न धर्मों के धर्म ग्रन्थो के पाठ प्रस्तुत किए जाते हैं, परन्तु अत्यन्त आश्चर्य की बात है कि विश्व के प्राचीनतम मौलिक वैदिक धर्म के प्रतिपादक ग्रन्थ के अश कदापि उस प्रात काल के कार्यक्रम मे सुनने को नही मिलते। 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' को ध्यान मे रखते हुए उपर्युक्त ससत्सदस्य वेदो के अश भी आकाशवाणी के वन्दना कार्यक्रम मे प्रसारित करवाने की व्यवस्था करवाए।

—डा. कृष्णलाल, उपाचार्य, सस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली।

९ जून जिनका बलिदान दिवस है।

शहीद वीरवर हरिकिशन

देशप्रेम के मतवाले कब झुके फांसियों के भय से।
कौन शक्तियां हटा सकी हैं, इन वीरों को निश्चय से।।

महान् क्रान्तिकारी श्रीयुत शचीन्द्रनाथ सान्याल कहा करते थे कि—"जिन्होंने देश मातृका की बलिवेदी पर अपने जीवन की आहुति चढ़ा कर देशवासियों के हृदय से मृत्यु जय को दूर करने की चेष्टा की, उन वीर आत्माओं से परिचित होना देशवासियों के लिए लाभदायक होगा। किसी देश में क्रान्ति के लिए दो वस्तुओं की आवश्यकता होती है, प्रथम यह कि मनुष्यों के विचारों में क्रान्ति हो, द्वितीय यह कि ऐसे मनुष्यों का होना, जो अपने जीवनादर्श को कार्य रूप में परिणत करने के लिए प्राणों की बाजी लगाने को सदा तत्पर रहें।" आज हम अपने पाठकों के समक्ष जिस देश-भक्त निर्भीक, साहस के पुतले, मृत्यु जयी वीर बलिदानी की गौरव गाथा प्रस्तुत करने लगे हैं, फांसी के फंदे को चूमते समय उसकी आयु मात्र २३ वर्ष की थी। इस महा बलिदानी वीर का नाम था हरिकिशन।

जन्म तथा वंश परिचय

वीर हरिकिशन का जन्म सन् १९०८ ई० को सीमाप्रान्त (अब पाकिस्तान) की प्रसिद्ध छावनी रिसालपुर के निकट ग्राम रशकाकाई से थोड़ी दूरी पर स्थित उपग्राम कालाधीर निवासी लाला गुरदासमल तलवाड के घर हुआ था। माता का नाम था श्रीमती मथुरा देवी। लाला गुरदासमल के पूर्वज कई शताब्दी पूर्व पंजाब से आकर पख्तूनों के इस प्रदेश में निवास करने लगे थे। पख्तूनों का एक प्रसिद्ध प्रतिज्ञा वाक्य यह है कि हम आजाद हुए हैं और आजाद ही मरेंगे। वस्तुत यह वचन -अदीना स्याम शरद शतम की वैदिक भावना का ही द्योतक है,

कालाधीर उपग्राम के निवासी तोड़ के नवाब के किरायेदार थे। केवल लाला गुरदासमल जी के पिता का ही वहां अपना पक्का मकान था। हरिकिशन के दादा श्री दीवानचन्द जी बडे मिलनसार और निर्धनों की सहायता करने वाले सत्पुरुष थे। तोड़ू का नवाब ग्राम के निवासियों को काफी परेशान किया करता था। लाला दीवानचन्द ने नवाब के अत्याचारों के विरुद्ध आवाज उठाई और निर्धन ग्रामीणों का पक्ष लेना शुरू कर दिया। इससे नवाब और जागीरदार भड़क उठे तथा एक दिन सायंकाल के समय नवाब का छोटा भाई करीम खाँ डाकुओं को साथ लेकर श्री दीवानचन्द के घर में घुस गया तथा उनको बुरी तरह जख्मी कर दिया। हवेली के अन्दर जाकर वह लाला गुरदासमल को भी जिसकी आयु उस समय केवल दो वर्ष की थी हत्या करना चाहता था, परन्तु गुरदासमल की माता लक्ष्मीदेवी ने न केवल शिशु को छुड़ा दिया अपितु पूरे बल के साथ आक्रमणकारियों का सामना किया और उन्हें खदेड दिया।

लाला गुरदासमल के नौ लडके थे। वे सभी को देश की आजादी की लडाई में झोंक देना चाहते थे। उनकी यह प्रबल इच्छा थी कि वीर भगतसिंह के परिवार की तरह उनका सारा कुल भी देश के काम आये। इसलिए वे अपने लडकों में देशभक्ति की भावना भरते रहते थे। उन दिनों सीमाप्रान्त पेशावर-बन्नू-कोहाट, नौशहरा, होती मरदान का सारा क्षेत्र पख्तूनों के सर्व मान्य नेता सरहद्दी गांधी खान अब्दुल गफ्फार खान के खुदाई खिदमतगारों की गतिविधियों का केन्द्र बना हुआ था। खुदाई खिदमतगार सच्चे और पक्के देशभक्त थे तथा देश की स्वतन्त्रता के लिए जान पर खेल जाना एक खेल समझते थे। लाला गुरदास मल के दो लड़के हरिकिशन और भगतराम भी इस देशभक्त आन्दोलन में सम्मिलित हो गये। भगतराम जी तो जब फीरोजपुर में हाईस्कूल में पढ़ा करते थे तब भी नौजवान भारत सभा के सदस्य थे। कुछ समय के पश्चात् दोनों भाइयों ने स्कूल छोड़ दिया और पूरा समय खुदाई खिदमतगार आन्दोलन को देने लगे।

वीर भगतसिंह, राजगुरु, सुखदेव आदि को २० मार्च, ३१ के दिन फांसी पर चढ़ा दिया गया। प० रामप्रसाद बिस्मिल, वीर अशफाकउल्ला खाँ, डा० रोशनसिंह तथा काकोरी केस में कई क्रान्तिकारियों को फांसी पर चढ़ाया जा चुका था। ये सारे समाचार हरिकिशन पढ़ा करते और मन ही मन यह कहा करते कि क्या कभी उन्हें भी इसी प्रकार भारतमाता के चरणों में अपना शीश अर्पण करने का सौभाग्य प्राप्त होगा।

आखिर वह शुभ घड़ी भी आ गई

श्री चमनलाल होती मरदान के एक समृद्ध परिवार का नवयुवक था। उसका पंजाब के क्रान्तिकारी युवकों के साथ विद्यार्थी अवस्था से सम्पर्क हो चुका था और वह नौजवान भारत सभा का एक सक्रिय कार्यकर्ता बना हुआ था। उसने हरिकिशन के ग्राम कालाधीर में आना और हरिकिशन से मिलना-जुलना प्रारम्भ कर दिया। लाला गुरदासमल को कुछ सन्देह हुआ और उन्होंने चमनलाल से कालाधीर आने तथा हरिकिशन से मिलने-जुलने का कारण पूछा। पहले तो वह सकुचाया परन्तु लाला गुरदासमल जी ने उसे एकान्त में ले जाकर अपने मनोभावों से अवगत कराया तब उसने अपने आने-जाने का सारा भेद प्रकट कर दिया। उसने कहा कि मैं पंजाब के क्रान्तिकारी दल की ओर से नियुक्त हूं और हमें पिस्तौलों की आवश्यकता है। हम नवजवान कुछ ऐसा कार्य करना चाहते हैं, जिससे यथाशीघ्र देश को आजाद कराया जा सके। लाला गुरदासमल स्वयं भी इसी विचार के थे उन्होंने इस कार्य में पूरा सहयोग देने का वचन दे दिया।

लेखक

ओम्प्रकाश आर्य

श्रीयुत गांधी जी ने सन् १९३० ई० में नमक का सत्याग्रह प्रारम्भ किया था जो विशेष प्रभावी न होने के कारण शीघ्र ही ढीला पड़ना शुरू हो गया। पंडित मोतीलाल नेहरू ने इस विषम परिस्थिति में क्रांतिकारी नवयुवकों को आमन्त्रित करना उचित समझा उन्होंने श्री चन्द्रशेखर आजाद को संदेश भेज कर कहा कि इस समय गांधी जी का नहीं, देश का सम्मान दाव पर है। क्या देश के नवयुवक मूकदर्शक बने यह सब कुछ देखते रहेंगे?

श्री मोतीलाल नेहरू का संदेश सुन कर देशभक्त नवयुवकों की आखों में खून उतर आया। उन्होंने वायसराय तथा अहंकारी गवर्नमेण्ट को सीधे मार्ग पर लाने का दृढ निश्चय कर लिया। पारस्परिक विचार-विमर्श के पश्चात् पंजाब, बंगाल और बम्बई के गवर्नरों को ठिकाने लगाने का प्लान बना लिया गया। लाहौर में जो भारत नौजवान सभा की बैठक १९३० की हुई, उसमें श्री चमनलाल ने कालाधीर के लाला गुरदासमल तथा उनके पुत्र हरिकिशन जी के सम्बन्ध में चर्चा की और बताया कि हरिकिशन अचूक निशानेबाज है और उसमें देश पर बलिदान होने की उत्कट इच्छा है। इस पर श्री चमनलाल जी को हरिकिशन को लाहौर अपने साथ लाने का कार्य सौंप दिया गया।

पंजाब के गवर्नर सर जाफरे डी मान्टमोरेन्सी ने २३ दिसम्बर १९३० को पंजाब यूनिवर्सिटी के दीक्षान्त समारोह की अध्यक्षता करनी थी और दीक्षान्त समारोह का भाषण डा० सर-राधाकृष्णन जी ने देना था। इसलिए चमनलाल इस दिन से पूर्व ही हरिकिशन को लाहौर ले जाना चाहते थे। वे सीधे कालाधीर गए और वहां हरिकिशन के पिता लाला गुरदासमल से सारी बात कह दी। लाला गुरदासमल ने हरिकिशन को बुलाकर पूछा कि क्या वह इस काम के लिए तैयार है? जब हरिकिशन ने हां में उत्तर दिया तब भी एक बार लाला गुरदासमल उसे बाहर ले जाकर पूछने लगे कि बेटा सोच-समझ कर कदम बढ़ाओ"वीरों का बढ़ा हुआ कदम वापस नहीं हुआ करता—यह काम ऐसा है, कि इसमें जान से भी हाथ धोने पड़ सकते हैं। पिता जी की सारी बातें सुन कर भी जब हरिकिशन का उत्तर हां में ही मिला, तब गद्‌गद् प्रसन्न होकर अपने पुत्र हरिकिशन को श्री चमनलाल के साथ लाहौर जाने की अनुमति दे दी।

१७ या १८ दिसम्बर १९३० को हरिकिशन लाहौर पहुंच गया मिलाप के श्री रणवीर भी क्रान्तिकारी दल में एक विशेष स्थान रखते थे। उन्होंने श्री हरिकिशन के निवास आदि की सुरक्षित व्यवस्था करा दी। श्री दुर्गादास खन्ना तथा श्री वीरेन्द्र जी भी इस सारे प्लान में सक्रिय भाग ले रहे थे। श्री वीरेन्द्र जी के एक मित्र को यूनिवर्सिटी हाल में जाने के लिए कुछ प्रवेश-पत्र मिल हुए थे। एक प्रवेश पत्र उनसे श्री वीरेन्द्र जी ने श्री दुर्गादास खन्ना को ला दिया। उस प्रवेश-पत्र पर से पहला नाम बड़ी सफाई से हटाया गया और मोहम्मद यूसुफ का नाम लिखकर हरिकिशन को वह कार्ड दे दिया गया। हरिकिशन बिना रोक-टोक हाल में जा पहुंचा। हरिकिशन को समझा दिया गया था कि निशाना केवल गवर्नर का ही लगाना है डा० राधाकृष्णन जी को जरा भी आंच न आने पाए।

दीक्षान्त-समारोह की कार्यवाही समाप्त हुई गवर्नर महोदय के साथ डा० जी बाहर आ रहे थे कि एकाएक गोलियों की बौछार शुरू हो गई। गवर्नर काफी जख्मी हो गए। गवर्नर को बचाने वाला सब इन्स्पेक्टर चननसिंह तो जान से हाथ धो बैठा। सी० आई० डी० इन्स्पेक्टर बुधसिंह और लेडी डाक्टर को भी गोलियां लगीं। पिस्तौल में केवल छः गोलियाँ थीं जब तक वीर हरिकिशन के

हाथ में पिस्तौल रहा तथा उसमे एक भी गोली मौजूद थी, किसी को उसके निकट जाने का साहस न होता था। जब रिवाल्वर खाली हो गया तब पुलिस ने उसे अपने घेरे में लेकर बन्दी बना लिया। उसे निर्दयतापूर्वक पीटा गया। १४ दिन तक निरन्तर उसे असह्य यातनायें दी गई। उसके नाखून अलग कर दिए गए। उसके सिर को दीवार के साथ बार-बार पटका गया। सिर मुह तथा नाखूनो से रुधिर बहने लगा। शरीर का बन्द-बन्द दुखने लगा। पर वाह रे वीर मर्दाना तेरे मुख से हाय या उफ का शब्द तक न निकला।

लाहौर के किले में जब लाला गुरदासमल मिलने आए, तब अपने वीर पुत्र हरिकिशन के न सिर की ओर ध्यान दिया न मुख की ओर न ही नाखूनो से बहने वाली रक्त की धारा की ओर—अन्दर जाते ही पहला प्रश्न यह पूछा कि बेटा, तेरा वार बेकार कैसे चला गया। जबकि गोली चलाने और निशाना बांधने का इतना अभ्यास तुमको कराया जाता रहा। वीर पिता के वीर पुत्र का उत्तर था—डाक्टर राधाकृष्णन जी को कैसे मार देता। उनको बचाना जरूरी था, इसलिए वार बचा कर करता रहा।

हरिकिशन का अदालत मे हर प्रश्न का एक ही उत्तर था कि यह काम केवल उसी का है। इस कार्य मे वह सर्वथा अकेला है। उसने अपने घर वालो का पता दे दिया था। वहा भी धर-पकड की गई। पूरे परिवार को यातनाए दी गई।

२६ जनवरी ३१ को सेशन जज लाहौर ने मृत्युदण्ड घोषित कर दिया। लाहौर के किले मे परिवार के सदस्यो के मिलने पर वीर हरिकिशन ने कहा था मैं प्रभु से प्रार्थना करता हू कि मेरा जन्म दोबारा इसी देवभूमि भारत मे हो, ताकि मैं अपने इस अधूरे काम को पूरा कर सकूं और इस अत्याचारी हकूमत से अपने देश का आजाद कर सकू।

दादी जी के यह पूछने पर कि फांसी के तख्ते पर घबरा तो न जाओगे ? इस शेर मर्द ने उत्तर दिया कि शेरनी का पौत्र कभी मृत्यु से भयभीत नही होगा।

कुछ दिनो के पश्चात् लाहौर के किले से हरिकिशन को मियांवाली जेल मे लाया गया। ९ जून प्रात: ६ बजे इनक्लाब जिन्दाबाद का जयघोष करते हुए यह देशभक्त वीर हसते-हसते फासी के तख्ने को चूम कर अमरपद प्राप्त कर गया।

हरिजनों के रक्षक पं० शिरोमणि दत्त का देहावसान

पं० शिरोमणि दत्त शर्मा का जन्म सन् १९०६ मे हिमालय की तलहटी कोटद्वार (उ० प्र०) में हुआ था।

सन् १९३२ मे उन्हे श्री नथमल जी चोरडिया सुधारवादी विचारधारा होने से हरिजन बच्चो को पढाने हेतु मे नीमच ले आये थे। हरिजन मन्दिर के बच्चो को पढाया करते थे। उन्होने व उनकी पत्नी श्रीमती राजरानी देवी ने अनेक अनाथ बालक बालिकाओ को पाल-पोस कर बडा किया जो आज अच्छे-अच्छे पदो पर कार्यरत हैं। अन्त समय तक आप आर्यसमाज नीमच के उपप्रधान बने रहे।

लगभग पांच वर्षो से वह बीमार थे। दिनाक ९ मई ८२ को आप सपरिवार अपने पितृगृह कोटद्वार (गढवाल) चले गए। वही दिनाक २७ मई को प्रात २॥ बजे आपने नश्वर देह का त्याग कर दिया।

आर्यसमाज नीमच ने एक शोक प्रस्ताव पारित कर, इस त्याग, तपस्या व सादगी की मूर्ति को श्रद्धाजलि समर्पित करते हुए दिवगत आत्मा को सद्गति हेतु परमात्मा से प्रार्थना की।

प्रवेश

प्रवेश १ जुलाई से प्रारम्भ, निशुल्क बी० ए० स्तर तक की शिक्षा, सादा भोजन, नियमित जीवन, उत्तम देख-भाल के लिये प्रारम्भिक भोजन शुल्क ६५ रु० मात्र मे आने ७ से १० वर्ष तक के बालको को गुरुकुल वृन्दावन मे प्रवेश दिलायें।

—सह० मुख्याधिष्ठाता

महाराणा प्रताप युगपुरुष थे !

नई दिल्ली। रविवार २३ मई के दिन महाराणा प्रताप की ४४२वीं जयन्ती के अवसर पर एक समारोह मे भाषण करते हुए ससद सदस्य श्री रामनिवास मिर्धा ने कहा—'महाराणा प्रताप स्वाभिमानी युगपुरुष थे। उन्होने स्वतन्त्रता की सुरक्षा के लिए जो सग्राम किया, वह आज भी प्रेरणादायक है।' उन्होने कहा कि महाराणा प्रताप के साहस, त्याग और बलिदान की भावना से ही हम आज भी राष्ट्र की स्वतन्त्रता की सुरक्षा कर सकते हैं।

आर्य जगत् समाचार

विदेशी धन के बल पर धर्मान्तरण जघन्य अपराध

उ० प्र० बिहार में उर्दू विरोधी संयुक्त अभियान

पटना। आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के प्रधान प्रो० कैलाशनाथ सिंह ने ६ मई के दिन पटना मे बिहार आर्य प्रतिनिधि सभा के अधिकारियो एव आर्य-समाज के वरिष्ठ नेताओ से देश की वर्तमान प्रमुख समस्याओ यथा धर्मान्तरण, उर्दू को द्वितीय राजसभा बनान, मद्यनिषेध, दहेज-उन्मूलन और जाति-पाति तोड़ने आदि पर गम्भीरतापूर्वक विचार-विमर्श किया।

८ मई को बिहार राज्य प्रतिनिधि सभा एव सम्बद्ध समाजो, जिला सभाओ की ओर से प्रो० सिंह का सार्वजनिक स्वागत किया गया। आर्यजगत् के महोपदेशक आचार्य रामानन्द शास्त्री ने समाज मे निरन्तर हो रही नैतिक मूल्यो की गिरावट पर चिन्ता व्यक्त की। स्वागत का उत्तर देते हुए प्रो० कैलाशनाथ सिंह ने कहा— सच्चे अर्थों में मनुष्य बनने की शिक्षा आर्यसमाज देता है। धर्मान्तरण के सम्बन्ध मे उन्होने कहा—विदेशी पेट्रोल-डालर-के धन के बल पर हिन्दुओ का इस्लामीकरण जघन्य अपराध है। केन्द्रीय सरकार को इस पर तुरन्त रोक लगानी चाहिए। उर्दू को द्वितीय राजभाषा घोषित कर बिहार और उत्तर प्रदेश की सरकार ने अपने मानसिक दिवालिएपन तथा भारतीय संस्कृति के प्रति विमुखता का परिचय दिया है। उन्होने दोनो प्रदेशो मे उर्दू थोपने के विरुद्ध सगठित अभियोग करने को आह्वान किया।

जुलाई महीने में हिमालय की गोद में

सार्वदेशिक आर्यवीर दल शिक्षक प्रशिक्षण शिविर

दिल्ली। सार्वदेशिक आर्यवीर दल के प्रधान सचालक श्री बाल दिवाकर हस सूचित करते हैं, सार्वदेशिक आर्यवीर दल समिति के तत्वावधान मे जुलाई मास मे एक आर्यवीर दल शिक्षक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन गिरिराज हिमालय की गोद मे किया जाएगा।

समस्त आर्यसमाजो के प्रधानो मन्त्रियो और आर्यवीर दल अधिष्ठाताओ, सचालको से अनुरोध है कि वे इस शिक्षक प्रशिक्षण-शिविर मे योग्य से योग्य युवक प्रशिक्षणार्थ भेजें। इन युवाओ के प्रशिक्षण एवं मार्ग व्ययादि का आर्थिक भार क्षेत्रीय आर्यसमाजो को वहन करना चाहिए।

देश भक्ति से पूर्ण इस योजना मे उन्ही युवको को आगे आने का साहस करना चाहिए जो अपना जीवन देशोत्थान हेतु अर्पित करने को समुद्यत हो। उनकी वर्तमान सामान्य जीवन पद्धति भी विचारानुकूल परिलक्षित होनी चाहिए। आवेदन पत्र सादे कागज पर, नाम, पिता का नाम, आयु, शैक्षिणक योग्यता, स्वास्थ्य एव पूरे पते के उल्लेख और २५/=रुपये शिविर शुल्क सहित कार्यालय सचिव आर्यवीर दल समिति दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली—२ के पते पर शीघ्रातिशीघ्र भेजे जाने चाहिए।

हरिजन बस्ती रघुबीर नगर में यज्ञ-भजन का कार्यक्रम

नई दिल्ली। शुक्रवार ४ जून के दिन हरिजन बस्ती, रघुबीर नगर मे आर्यसमाज टैगोर गार्डन की ओर से यज्ञ-भजन का विशेष कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। इसमे दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री प्रो० भारत मित्र शास्त्री ने प्रवचन दिया और श्री ज्ञानचन्द डोगरा ने भजन प्रस्तुत किए। श्री मुल्तानीराम जी के निवास स्थान पर कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

आर्यसमाजें प्रतिनिधि फार्म शीघ्र भेजें

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सरदारी लाल वर्मा ने दिल्ली की सभा से सम्बन्धित आर्यसमाजो से अनुरोध किया है कि वे अपनी आर्यसमाज की साधारण सभा द्वारा प्रतिनिधि सभा के लिए आगामी तीन वर्ष के लिए निर्वाचित प्रतिनिधियो के फार्म भर कर सभासदो की पूर्ण सूची एव दशांश वेद प्रचार व आर्य सन्देश के शुल्क की राशियो सहित शीघ्र सभा कार्यालय मे भेजने का कष्ट करें ताकि आगामी साधारण अधिवेशन की तिथि निश्चित की जा सके। स्मरण रहे कि पुराने प्रतिनिधियों का प्रतिनिधि काल ३१ मार्च १९८२ को समाप्त हो चुका है।

बहुसंख्यकों की निर्बलता से देश निर्बल होगा

—ओम्प्रकाश त्यागी (भू० पू० ससद सदस्य)

द्विराष्ट्र अथवा धर्म के आधार पर भारत का विभाजन होने के पश्चात भारतीय जनता को यह वैधानिक एव नैतिक अधिकार प्राप्त था कि पाकिस्तान की भांति वह भारत को हिन्दू राष्ट्र घोषित करती, परन्तु इसके नेताओ ने अपनी उदारता, विशालता तथा प्रगतिशीलता का परिचय देते हुए भारत को धर्मनिरपेक्ष प्रजातान्त्रिक देश घोषित कर सविधान मे यहां के सभी नागरिको तथा धर्मों को समान अधिकार दिए। जनता ने इसका विरोध न कर स्वागत ही किया।

दुर्भाग्यवश भारत सरकार ने 'वयं सविधान की भावना की अवहेलना की' सविधान मे घोषित प्रजातन्त्र और धर्म समभाव दोनो के विरुद्ध आचरण किया। प्रजातन्त्र तथा धर्म समभाव दोनो की यह माग है कि सरकार देश के समस्त धार्मिक वर्गों के साथ समान व्यवहार करे। परन्तु सरकार ने ऐसा न कर भिन्न-भिन्न वर्गों के साथ भिन्न-भिन्न व्यवहार करना प्रारम्भ कर दिया। यही कारण है कि आज देश को एकता व सुरक्षा दोनो सकट मे पड गये हैं।

प्रजातन्त्र मे बहुमत को प्रधानता दी जाती है। देश मे बहुमत हिन्दू जाति का है। सरकार को बहुसख्यक जाति की भावना का आदर करना चाहिए था। यदि ऐसा भी न करती तो कम से कम इसको साथ अन्य वर्गों के समान तो व्यवहार करना चाहिए था, परन्तु सरकार ने जहा अल्पसख्यक धार्मिक वर्गों की भावना की सुरक्षा की, वहाँ बहुसख्यक हिन्दुओ की भावना तथा अधिकार दोनो का हनन किया। इसके कुछ प्रमाण इस प्रकार हैं—

१. हिंदुओ के सभी वर्ग गाय को धार्मिक दृष्टि से पूज्य मानते हैं और गो-हत्या को पाप मानते हैं। यही कारण है राष्ट्रपिता स्व० महात्मा गाधी जी ने स्वतन्त्रता सग्राम के साथ घोषित किया था कि स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात देश मे गोवध पर प्रतिबन्ध लगाया जाएगा, परन्तु आजादी के पैंतीस वर्षों के पश्चात भी भारत के प्रधानमन्त्री ने आचार्य विनोबा भावे को स्पष्ट शब्दो मे कह दिया कि सरकार गो-वध पर प्रतिबन्ध लगाने मे असमर्थ है। २ सरकार का कर्तव्य है कि देश के समस्त नागरिको के लिए समान कानून बनाए, परन्तु उसने ऐसा न कर केवल हिन्दुओ के लिए हिन्दू कोड बिल बना दिया। जिस के अनुसार हिन्दू केवल एक स्त्री रख सकता है, परन्तु मुसलमानों को चार बीबियां तक रखने का अधिकार है। आश्चर्य इस बात का है कि इस्लामिक राज्य पाकिस्तान ने अप्रत्यक्ष रूप से चार बीबियां रखने पर प्रतिबन्ध लगाने की दृष्टि मे यह कानून बना दिया है कि पहली बीबी की अनुमति से ही कोई व्यक्ति दूसरी बीबी रख सकता है। परन्तु भारत सरकार मे ऐसा करने का साहस नही।

३ भारत मे अल्पसख्यक वर्ग अपनी शिक्षा संस्थाओ का अपनी इच्छानुसार संचालन करेगे। और उन्हे उनमे अपने धर्म के शिक्षण देने की बहुसख्यक हिन्दू जाति को यह अधिकार प्राप्त नही है। इसका अर्थ है कि धर्मप्रचार की आवश्यकता केवल अल्पसख्यक वर्गों को है, बहुसख्यक वर्ग को नही, क्या इसी का नाम धर्म समभाव है।

४ सरकार चिल्डरन्स एडाप्सन विधेयक पारित करन जा रही है जिसके अनुसार विदेशी लोग भारतीय बच्चों को गोद लेकर अपने देश मे ले जा सकेंगे परन्तु मुसलमानो के विरोध करने पर जनता सरकार ने उस विधेयक को वापिस ले लिया, परन्तु अब पुनः वर्तमान सरकार उसे ससद मे ला रही है और इसने पहले ही घोषणा कर दी है कि यह विधेयक मुसलमानो पर लागू नही होगा।

५ सरकार इस तथ्य से भली-भांति परिचित है कि, जब तक भारत की जनसख्या पर नियन्त्रण नही होगा तब तक यहाँ गरीबी और बेकारी की समस्या का समाधान नहीं हो सकता परन्तु सरकार इसके लिए कोई केन्द्रीय कानून बनाने से घबराती है क्योकि परिवार नियोजन लगभग हिन्दुओ पर लागू हो रहा है। आश्चर्य इस बात का है कि इस्लामिक देश पाकिस्तान इण्डोनेशिया, टर्की आदि देशो मे परिवार-नियोजन कानून बनाया जा सकता है, परन्तु भारत मे नही।

६ सरकार अब भारत के इतिहास का सुधार कर रही है अर्थात् उसमे से उन भागो को हटाया जाएगा, जिनमे विदेशी मुस्लिम लुटेरो तथा बादशाहों के द्वारा हिन्दुओ पर अत्याचार हुए हैं। इसका सीधा अर्थ है कि हिन्दुओ को ऐतिहासिक दृष्टि से भी अंधेरे मे रखने का प्रयास किया जा रहा है ताकि वे भूतकालिक अपनी भूलो का भी सुधार न कर सकें। साम्प्रदायिक लोगो की मनोवृत्ति को बदलने और उनका कड़ाई से दमन करने के बजाए सरकार उनके असली स्वरूप को छिपाने का प्रयत्न कर रही है जो देश की एकता एव सुरक्षा दोनों के लिए घातक है।

□

आर्यसमाजों के सत्संग

१३ जून '८२

अन्धा मुगल-प्रताप नगर—पं० मुनिशकर वानप्रस्थ; अमर कालोनी—पं० दिनेशचन्द्र पराशर शास्त्री; अशोक विहार के. सी-५२-ए—आचार्य दीनानाथ सिद्धान्तालंकार, आर्यपुरा—श्री मोहनलाल गांधी, आर. के. पुरम सेक्टर ५—स्वामी स्वरूपानन्द भजनोपदेशक, आनन्द विहार—प० ओमवीर शास्त्री, कालका जी—प० रामनिवास, करौल बाग—श्री चमनलाल, कृष्ण नगर—प० गणेश प्रसाद विद्यालंकार, गांधी नगर—डा० सुख दयाल भूटानी; गीता कालोनी—प० देवपाल शास्त्री; ग्रेटर कैलाश II—डा० रघुनन्दनसिंह, गुड़ मण्डी—श्री महावीर बत्रा; गुप्ता कालोनी—प० ओम प्रकाश भजनोपदेशक; गोविन्द-भवन-दयानन्द वाटिका—स्वामी विश्वेश्वरानन्द; जनकपुरी सी-३—पं० मनोहरलाल ऋषि भजनोपदेशक; टैगोर गार्डन—आचार्य हरिदेव सि० भू०; तिलक नगर; प० प्रकाशचन्द्र वेदालंकार, तिमारपुर—प० भगवान सहाय विद्यावाचस्पति, नारायण विहार जी-२५—आचार्य नरेन्द्र शास्त्री, नया बांस—प्रो० सत्यपाल बेदार, न्यू मुल्तान नगर—प० सीसराम भजनोपदेशक, न्यू मोती नगर—डा० लक्ष्मीदास, निर्माण विहार—प्रो० वीरपाल विद्यालंकार, पंजाबी बाग—पं० कृष्ण शास्त्री, पंजाबी बाग एक्सटेंशन—डा० रघुवीर वेदालंकार, बाग कड़े खां—प० बरकतराम भजनोपदेशक, मोडल बस्ती—प० वेदव्रत भजनोपदेशक, महावीर नगर—प० हरिदत्त शास्त्री; रमेश नगर—प० कामेश्वर शास्त्री; राणा प्रताप बाग—प० रामलाल शास्त्री; रोहतास नगर—प० हरिश्चन्द्र शास्त्री, लड्डू घाटी-पहाड गंज—प० देवराज वैदिक मिशनरी; लक्ष्मीबाई नगर—प० रघुराज शास्त्री; लाजपत नगर—मास्टर ओम्प्रकाश आर्य। लेखराम नगर-त्रिनगर—श्रीमती प्रकाशवती शास्त्री; लारेन्स रोड—प० अशोक कुमार विद्यालंकार; लोधी रोड—प० देवेश, विक्रम नगर—श्रीमती सुशीला राजपाल, शिव नगर—हरिश्चन्द्र आर्य, सदर बाजार-पहाड़ी धीरज—प० विश्व प्रकाश शास्त्री, सुदर्शन पार्क—प्रो० भारत मित्र शास्त्री, सराय रोहेला—प० सुखदेव शास्त्री, सोहन गंज—प० रामरूप शर्मा, शालीमार बाग—प० रविदत्त गौतम, शादीपुर—श्रीमती लीलावती आर्या, हनुमान रोड—प० जैमुनि शास्त्री, हौज खास डी २०—आचार्य विनयपाल शास्त्री; राजा गार्डन—प० प्रकाशचन्द्र शास्त्री।

—ज्ञानचन्द डोगरा, वेद प्रचार प्रबन्धक

आर्यसमाज सावली आदि पचपुरी, गढवाल, यमुनाविहार के पदाधिकारी

प्रधान—श्री वेदप्रकाश, उपप्रधान—श्री मुकुन्दीलाल, मन्त्री—श्री मोहनलाल जिज्ञासु, उपमन्त्री—श्री रामेश्वरप्रसाद, श्री विश्वबन्धु मास्टर, कोषाध्यक्ष—श्री अमरदास आर्य, निरीक्षक—श्री जयप्रकाश आर्य।

आर्यसमाज सेक्टर ६, रामकृष्णपुरम के पदाधिकारी

प्रधान—श्री हरबंसलाल कोहली, उपप्रधान—श्री अर्जुनदेव, श्री प्रेमनाथ, मन्त्री—श्री जगदीश सिंह वर्मा उपमन्त्री—श्री पवनकुमार उत्पल व श्री सुदेश मित्र, प्रचार मन्त्री—श्री रामनाथ कपूर, कोषाध्यक्ष—श्री हरबंसलाल कपूर।

एक विधुर के लिए चालीस वर्ष से ऊपर की आयु वाली एक शिक्षित आर्य विधवा की आवश्यकता है। लिखे—

अमरनाथ खन्ना, मकान न० ७५५ सेक्टर १५ ए, फरीदाबाद (हरियाणा)

आर्य जगत की शान—निर्माणाधीन

श्रीमती चन्नन देवी नेत्र धर्मार्थ चिकित्सालय

जनकपुरी, नई दिल्ली के लिए

दिल खोल कर दान दीजिए

चिकित्सालय पर एक करोड़ रुपए की लागत आने का अनुमान है। दान की राशि नकद/चेक/मनीआर्डर के माध्यम से महाशय चुन्नीलाल चैरिटेबल ट्रस्ट, ९/४४ इण्डस्ट्रियल एरिया, कीर्ति नगर नई दिल्ली-११००१५ के पते पर भेजी जाए। दान नियमानुसार कर मुक्त होगा।

निवेदक

ला० गुरदासराम गोयल उपप्रधान — ओम्प्रकाश आर्य, चिकित्सालय मन्त्री

बोध-कथा

सच्ची जन सेवा !

मौर्य सम्राट् चन्द्रगुप्त के प्रधानमंत्री आचार्य चाणक्य या विष्णुगुप्त की कुटिया पर एक दिन एक महात्मा पधारे। भोजन की बेला थी। आचार्य ने अतिथि से अनुरोध किया कि वह उनके साथ भोजन करे। महात्मा ने अनुरोध सहर्ष स्वीकृत कर लिया। कुटिया के एक कक्ष मे रसोई थी। वहां दो महिलाए खाना बनाने में संलग्न थी। उन्होने शीघ्रता से भोजन परोसा। भोजन बहुत ही सादा था, थोड़े से चावल, कढ़ी और एक सब्जी। साधु को बड़ा अचम्भा हुआ। आखिर वह बोल ही उठे—आप इस बड़े साम्राज्य के निर्माता और शक्तिशाली प्रधानमंत्री हैं, फिर यह सादा जीवन क्यो बिताते हैं?

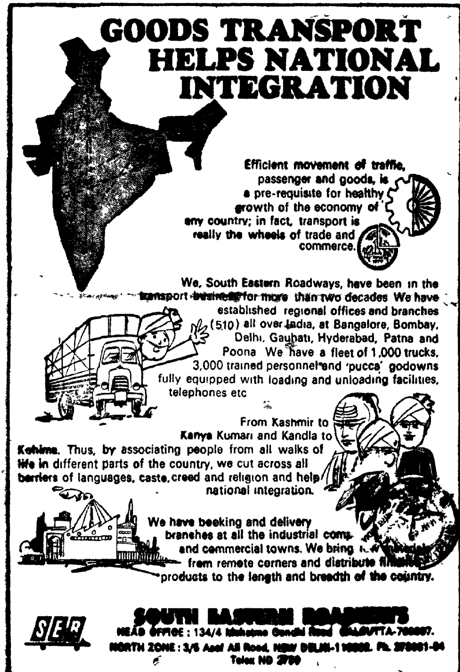
आचार्य चाणक्य ने कहा—'जनता की सेवा के लिए मैं प्रधानमंत्री बना हूं, इसका अर्थ यह नही कि राज्य की सम्पत्ति का मैं उपयोग करू। यह कुटिया भी मैंने अपने हाथो से बनाई है।'

महात्मा पूछ उठे—'आप अपनी आजीविका के लिए भी कुछ करते हैं? चाणक्य ने उत्तर दिया—हां, मैं भाष्य और पुस्तकें लिखता हू। मैं प्रतिदिन राज्य के लिए आठ घण्टे और अपने और परिवार के लिए चार घण्टे काम करता हू। मेरी कोशिश है कि राज्य में कोई दुखी नही हो।'

महात्मा ने कहा—'यहां तो कोई दुखी नहीं, पर पास के गांव में गांववाले बड़े दुःखी हैं, क्योंकि कोई चोर उनके कम्बल चुरा ले जाता है।'

आचार्य चाणक्य ने उन दुःखी गांव वालों के लिए राजभण्डार से कम्बल मंगवाए। रात को वे कम्बल उनकी कुटिया मे ही रखे हुए थे। चोर उन कम्बलों का भण्डार चुराने के लिए रात को चाणक्य की कुटिया मे घुसा। उसने देखा कि प्रधानमंत्री चाणक्य पुराना कम्बल ओढ़े सो रहे थे, चाणक्य की पत्नी और माता भी पुराने कपड़े ओढ़े सोए हुए थे। नए कम्बलो का ढेर अलग रखा था। चोर प्रधानमंत्री चाणक्य की स्वार्थ हीनता देखकर पछतावे से भर गया और अपने कार्य पर पछतावा करने लगा।

अगले दिन जब गांव वाले जागे तब उनके कम्बल दरवाजो के बाहर पड़े थे। मौर्य साम्राज्य मे उस घटना के बाद कोई चोर नही रह गया। —नरेन्द्र



दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रकाशन

सत्यार्थप्रकाश सन्देश (हिन्दी)	१.००
" " अंग्रेजी	समाप्त
आर्य सन्देश-महासम्मेलन विशेषांक	०.६०
पादरी भाग गया— ओम्प्रकाश त्यागी	०.३०
स्वामी श्रद्धानन्द-बलिदान अर्द्ध शताब्दी स्मारिका	६.००
सत्यार्थप्रकाश शताब्दी समारोह स्मारिका	६.००

सम्पर्क करें—
अधिष्ठाता प्रकाशन विभाग
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
१५ हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१

आर्य सन्देश के
स्वयं ग्राहक बनें—
दूसरों को बनाएं

卐 आर्यसमाज के सदस्य
स्वयं बनें—
दूसरों को बनाइए

हिन्दी-संस्कृत भाषा स्वयं पढ़ें
दूसरों को भी पढ़ाइए—



दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए श्री सरदारी लाल वर्मा द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा भाटिया प्रेस २५७४, रघुबरपुरा नं० २ गांधी नगर दिल्ली-३१ में मुद्रित। कार्यालय १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली फोन ३१०१५०

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक मुखपत्र

एक प्रति ३५ पैसे वार्षिक १५ रुपये वर्ष : ६ अंक ३५ रविवार २७ जून १३ आषाढ़ वि० २०३९ दयानन्दाब्द—१५८

कश्मीर से भारत की केन्द्रीय सत्ता को एक नया खतरा

शेख की सरकार द्वारा भारत विरोधी कानून को स्वीकृत करने का दबाव

राज्यपाल कानून को स्वीकृति दें या इस्तीफा : शेख के दामाद की चेतावनी : भारत सरकार तुरन्त कड़ी कार्रवाई करे

नई दिल्ली। जम्मू-कश्मीर के मुख्य मन्त्री शेख अब्दुल्ला और उनका दल नेशनल कान्फ्रेंस राज्य मे लगभग वैसी ही परिस्थिति पैदा कर रहे है जैसी कि उन्होंने अगस्त, १९५३ मे पैदा की थी। उन दिनो उन्होंने पृथक आजाद कश्मीर राज्य की स्थापना की कोशिश की थी, तो इस बार वह विवादग्रस्त कश्मीर पुनर्वास कानून के द्वारा राज्य मे अपनी स्वतन्त्र पृथक स्थिति की प्रतिष्ठा करने के लिए प्रयत्नशील है। यदि केन्द्रीय सरकार ने जम्मू-कश्मीर राज्य मे तुरन्त हस्तक्षेप नही किया तो सम्भवत वहाँ स्थिति विस्फोटक एव भारत विरोधी हो सकती है। इस मामले मे शेख और उनका दल कैसी शरारत करना चाहते हैं इसकी आशका राज्य के निर्माण और ऊर्जा मन्त्री तथा शेख अब्दुल्ला के दामाद श्री जी एम शाह की उस ताजी चेतावनी से मिलती है जिसमे उन्होंने राज्यपाल से माग की है या तो वह उस प्रस्तावित विधेयक पर हस्ताक्षर कर दे अन्यथा, उन्हे तुरन्त त्यागपत्र दे देना चाहिए।

उल्लेखनीय है कि भारत के विभाजन के बाद पश्चिमी पाकिस्तान से ६०,००० के लगभग शरणार्थियो ने जम्मू-कश्मीर मे आश्रय लिया था और यहा के हजारो निवासी पश्चिमी पाकिस्तान चले गए थे। सामान्य व्यवहार और राजनीति का तकाजा था कि पश्चिमी पाकिस्तान से आए शरणार्थियो को जम्मू-कश्मीर का वैध प्रजाजन मान लिया जाता और वहा उन्हे भूमि खरीदने एव बेचने आदि का हक दे दिया जाता। इन शरणार्थियो को इस तरह का कोई अधिकार नही दिया गया, प्रत्युत वहा की नाम से राष्ट्रीय परन्तु व्यवहारत मुस्लिम पक्षपाती सरकार ने इन शरणार्थी व्यापारियो और किसानो से ऐसा कडा व्यवहार किया कि उनमे से बहुत से भारत मे आ गए और बचे हुए वहाँ से जाने की कोशिश कर रहे हैं। अब शेख अब्दुल्ला और उनके दल की सरकार विधान सभा मे एक विधेयक स्वीकार कर राज्य मे ऐसे कश्मीरियो के पुनर्वास की व्यवस्था कर रही है जो ३० साल पहले राज्य छोड़कर चले गए थे और पाकिस्तान के प्रजाजन बन गए थे। शेख और उनके दल इन पाकिस्तानियो को राज्य मे बसा कर वहा के विशेषत जम्मू और लद्दाख मे हिन्दुओ-बौद्धो के प्रतिशतक को न्यून करने के लिए तुले दीखते हैं।

शेख के दामाद श्री जी. एम० शाह ने बारामूला मे भाषण देते हुए घोषित किया है—राज्यपाल बी के नेहरू या तो राज्य के सविधान के अन्तर्गत इस विधेयक को स्वीकृति दे दे, अन्यथा उन्हे त्यागपत्र दे देना चाहिए। श्री शाह ने यह सूचना भी दी कि यदि राज्यपाल का विधेयक मे कोई सशोधन अपेक्षित है तो उन्हे विधेयक विधान सभा मे वापस भेजना होगा। शाह ने कहा है कि हम देख रहे है कि राज्यपाल अपने सवैधानिक दायित्व को किस तरह निबाहते है। यदि राज्यपाल विधेयक पर हस्ताक्षर नही करते तो उन्हे राज्यपाल के रूप मे कार्य करने का कोई अधिकार नही है। शाह ने यह चेतावनी दी है कि यदि अगस्त, १९५३ को दोहराने की कोशिश की गई तो उसे सहन नही किया जाएगा।

श्री जी एम शाह के भाषण से स्पष्ट है कि शेख और उनका दल विवादग्रस्त कानून को स्वीकार कर वहा भारत विरोधी पाकिस्तानियो को बसा कर अपनी स्थिति मजबूत करने के लिए प्रयत्नशील है। राजधानी के जानकार सूत्रो का ख्याल है कि प्रधानमन्त्री इन्दिरा गाधी के नेतृत्व मे केन्द्र सरकार शेख और उनके दल के राष्ट्रविरोधी हथकण्डो का समय रहते पर्दाफाश कर उनका कडाई से मुकाबला करेगी।

पंजाब सरकार की नपुंसकता का प्रतीक

गुरुद्वारो में अपराधियो को शरण श्री त्यागी का वक्तव्य

नई दिल्ली। सार्वदेशिक सभा के महामन्त्री भू० पू० ससदसदस्य श्री ओमप्रकाश त्यागी ने १४ जून के 'टाइम्स आफ इण्डिया' मे प्रकाशित पजाब के मुख्य मन्त्री श्री दरबारासिह के उक्त वक्तव्य को कि अपराधो के अपराधी श्री गुरु रामदास निवास मे छिपे है, यदि वहाँ के अधिकारी उन्हे अनुमति दे तो उन्हे गिरफ्तार किया जा सकता था सरकार की नपुसकता का प्रतीक कहा जाएगा। यह बात भी पजाब सरकार की कमजोरी का ही प्रतीक है कि वहाँ के मुख्य मन्त्री ने स्वीकार किया है कि वहाँ के गुरुद्वारो पर उनका कोई नियन्त्रण नही है। गुरुद्वारे के अधिकारियो का उत्तर भी अपमानजनक है जिसमे उन्होने पहले पजाब सरकार से अपराधियो की सूची मांगी है, फिर उस प्रार्थना पर विचार करने की बात कही है। श्री त्यागी ने कहा है कि पजाब मे जो राष्ट्र विरोधी साम्प्रदायिक गतिविधिया बढ रही हैं, उसके मूल मे पजाब सरकार मे ताकत ही नही है कि वहाँ वह कानून-व्यवस्था की रक्षा कर सके।

सिख महान् हिन्दू समाज के ही अंग

सिख और हिन्दू दो अलग-अलग जातिया नही है। सिखो का उत्थान तभी सम्भव है, जब तक हिन्दू धर्म जीवित है। सिख तो महान हिन्दू समाज के अभिन्न अग है। गुरु गोविन्दसिंह ने गुरुमुखी भाषा मे हिन्दू शास्त्रो एव पुराणो मे ही अपने ज्ञान एव दर्शन का निरूपण किया है। क्या इस वशगत परम्परा को हमे त्यागना है।

—मास्टर तारासिंह, प्रमुख अकाली नेता

भारतीय मुसलमान भारत की जीवनधारा मे सम्मिलित हों

अपने भारतीय राष्ट्र-जीवन की धारा मे मुसलमानो का भी सम्मिलित होना उनके अपने ही हित मे होगा। राजनीतिक नेता लोग मुसलमानो को राष्ट्रीय धारा से अलग रखकर अपना स्वार्थ साधते चले आ रहे है। इसी कारण मुसलमानो मे राष्ट्रहित विरोधी प्रवृत्ति को बढावा मिलता है।

—सैयद भाई मुस्लिम सत्यशोधक मण्डल पुणे।

सम्पादक—नरेन्द्र विद्यावाचस्पति व्यवस्थापक—प्रद्युम्नलाल तलवाड़

वेद-मनन

अग्नि का अनुगमन करते हुए बाधाएं दूर करो

—मनोहर विद्यालकार

आगत्य वाज्यध्वानं सर्वा मृधो विधूनुते ।
अग्नि सधस्थे महति चक्षुषा निचिकीषते ।। यजु ११.१८

ऋषि—मयोभू । देवता—अग्नि । छंद—निचृद् अनुष्टुप् ।

शब्दार्थ—(वाजी) गतिशील व्यक्ति (अध्वान आगत्य) अपने स्वीकृत मार्ग पर चलने के लिए उद्यत होकर (सर्वा-मृध) आने वाली सब बाधाओं तथा पीडाओं को (विधूनुते) नष्ट कर देता है। और (महति सधस्थे) अपने महान् कार्यक्षेत्र मे (चक्षुषा) अन्तर्दृष्टि से (अग्निम्) नेता तथा परमात्मा को (निचिकीषते) अपने अन्दर देखता रहता है—उसके आदेशों का ध्यान रखता और पालन करता है।

निष्कर्ष—अपने संकल्प पर दृष्टि रखने वाला गतिशील व्यक्ति मार्ग मे आने वाली पीडाओ का सुगमता से सहता है तथा बाधाओं को नष्ट करने मे समर्थ होता है।

सफलता चाहने वाले व्यक्ति को अपने संकल्प, तथा उसे पूरा करने वाले परमात्मा को अपनी अन्त दृष्टि से कभी ओझल नही होने देना चाहिए।

किसी भी उच्च पद पर पहुच कर परमात्मा को नही भूलना चाहिए, अन्यथा अहकार से ग्रस्त होकर शीघ्र ही पतन हो जाता है।

जैसे सूर्य उदय होते ही अधकार को नष्ट कर देता है, वैसे ही नेता को अपने अनुयायियो के दुख शीघ्र ही नष्ट करने का प्रयत्न करना चाहिए। और इससे पहले अपनी कमियो और दोष दूर कर देने चाहिए।

विशेष—दूसरो के लिए कल्याण भावना रखने वाला मनुष्य (मयोभूः) ही अच्छा नेता या मार्गदर्शक (अग्नि) बन सकता है।

मयोभू तथा अग्नि बनने की इच्छा रखने वाले को सदा (निचृत्) आत्म-निरीक्षण करके अपने दोषो और कमियो का मार्जन करते रहना चाहिए तथा समाज के व्यक्तियो को उनके अनुरूप स्तुति करनी चाहिए अर्थात बड़ों का आदर बराबर वालो का सहयोग तथा, छोटो की सहायता करते रहना चाहिए।

अर्थपोषक प्रमाण—अग्नि—परमात्मा, सूर्य, राजा, नेता वाजी—गतिशील वजगत्तौ, आदित्यो वाजी। तै० १-३-६-४. मृध—बाधाए मृधु मर्दन, काशकृत्स्न, निचिकीषते—नि (अन्दर) +चिकीषते पश्यति छाद सो धातु। सधस्थे—सहतिष्ठन्तियत्र—गृहे, लोक, शरीरे, सधस्थः प्रतिष्ठा। २१०-९-५-१-४६ विधूनुते—धूञ् कम्पने।

५२२, ईश्वर भवन, खारी बावली दिल्ली-६

उठो जवानो !

कविराज बनवारीलाल शादां

उठो जवानो ओ बलशाली। देश पै छाई घटाए काली।।
गद्दार घुसे है देश के अन्दर। तुमको करनी है रखवाली।।
जो प्यार की राहे पाट रहे। जो देश के टुकड़े काट रहे।।
पकड़ निकालो गद्दारो को। देशभक्ति से जो जन खाली।।
कटे गाय ललनाए लुटती। चोरी जारी जेबें कटती।।
बहादुरी मे करो सामना। भागे डर कर कूट कुचाली।।
बने विधर्मी अपने भाई। मुसलमान और ईसाई।।
शीघ्र मिलाओ, गले लगाओ। सगठन बने देश मे आली।।
अबला नही है भारत नारी। रणचडी ज्वाला चिनगारी।।
लक्ष्मीबाई ये हैं पद्मा। चण्डी दुर्गा बन जाये काली।।
यदि ठानो तुम मनमे अपने। पूरे न हो दुश्मन के सपने।।
बन्दर बाँट करेंगे कैसे। वीर बहादुर जब हो माली।।
जयचदों को पथपर लाओ। देशद्रोह की बान छुड़ाओ।।
शिक्षा दो ऋषि दयानन्द की। 'शादां' आए फिर खुशहाली।।

आर्यसमाज मोडल बस्ती, शीदीपुरा, नई दिल्ली-११०००५

क्या आर्य नवयुवक चुनौती स्वीकार करेंगे ?

ओम्प्रकाश त्यागी महामन्त्री, सार्वदेशिक सभा, भू० पू० संसद सदस्य)

आज आर्य (हिन्दू) जाति मे दहेज की कुप्रथा इतना विकराल रूप धारण करती जा रही है कि भेड बकरियो की भांति विवाह के बाजार मे नवयुवक बिक रहे हैं। शिक्षा के प्रसार से आशा तो यह थी कि यह कुप्रथा कम हो जायगी, परन्तु ने यही सिद्ध किया है कि शिक्षा के प्रसार के साथ-साथ दहेज की कुप्रथा भी बढती ही जा रही है। जितना ही अधिक शिक्षित नवयुवक होता है, उतना ही विवाह के बाजार मे उसका मूल्य होता है। लज्जाप्रद तथा आश्चर्य का विषय यह है कि पढ़े-लिखे नवयुवक स्वय अपनी नीलामी मे अपने माता-पिता का साथ देते है।

दहेज की बीमारी अब विवाह तक ही सीमित न रहकर विवाह के पश्चात भी लडकी के माता-पिता का पीछा नहीं छोड़ती। नित्य समाचार पत्रों मे विवाहित लडकियो के आत्मदाह की घटना आती रहती हैं। अधिकाश आत्म दाह करने वाली लडकियो या उनके माता-पिताओ के यही बयान होते हैं कि उसके सास-ससुर तथा पति ने अधिक दहेज लाने की मांग की, और न लाने पर लड़कियों को इतना तग किया कि उन बेचारियो को आत्मदाह करने पर विवश होना पड़ा या उसके सास-ससुर ने ही उन पर मिट्टी का तेल छिड़क कर आग लगा दी।

आश्चर्य की बात यह है कि आत्मदाह करने वाली लड़कियो मे शतप्रतिशत आर्य (हिन्दू) ललनाए ही होती हैं, जो आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न होते हैं। सामाजिक तथा आर्थिक दृष्टि से पिछडे वर्ग मे ऐसी घटनाए कभी सुनने को नही मिलती है। इसका स्पष्ट अर्थ यह है कि इस दहेज के जघन्य पाप आदमियों के रूप मे वही राक्षस अथवा भेडिये कर रहे हैं जो धनी हैं। एक ओर वे व्यापार मे काला धन उत्पन्न कर देश के आर्थिक ढांचे को लड़खड़ा रहे हैं, और दूसरी ओर सामाजिक क्षेत्र मे दहेज के नाम पर लडकियो की हत्या कर रहे हैं, या उन्हें आत्महत्या करने पर विवश कर रहे हैं।

दहेज की कुप्रथा का दुष्परिणाम यदि कुछ लड़कियो के आत्मदाह तक ही सीमित हो यह बात नहीं है अपितु इसके कारण देश मे लाखों ऐसी सुयोग्य एव पठित लडकियां हैं, जिनके माता-पिता निर्धन होने के नाते दहेज देने में असमर्थ हैं घरो मे बैठी हैं। ऐसी लडकियो मे कुछ भली लडकियां तो घरो मे वैधव्य जैसा जीवन व्यतीत करती रहती हैं और बहुत-सी लडकियां काल गर्ल्स के रूप मे होटलो तथा गेस्ट हाउसो मे अपना चरित्र को बेचती हैं, तथा इनमे से कुछ विधर्मियों के साथ विवाह कर हिन्दू धर्म तथा जाति को सदैव के लिए लात मार कर चली जाती हैं।

दहेज कुप्रथा को रोकने के लिए सरकार ने एक कानून बनाया है, परन्तु वह कानून इतना निकम्मा तथा प्रभावहीन है कि उसे इस कुप्रथा को रोकने मे कोई सफलता नहीं मिली, और ना ही इसके अन्तर्गत कोई व्यक्ति दण्डित किया जा सकता है। क्या सरकार तथा ससद सदस्यो की दृष्टि मे दहेज के कारण आत्मदाह करने वाली अबलाओ के समाचार नही आते? यदि आते हैं तो वे मौन क्यो हैं? क्यो नही वर्तमान कानून मे सशोधन कर इसे प्रभावी बनाने का प्रयत्न करते हैं? उनकी मौनावस्था यही सिद्ध करती है कि या तो उनकी दृष्टि में दहेज कुप्रथा का कोई मूल्य ही नही है या वे स्वय इस कुप्रथा के समर्थक अथवा पक्षपाती है।

दया तो उन सामाजिक सस्थाओ पर आती है हिन्दू धर्म तथा हिन्दू जाति की रक्षा करने का दम भरती है, और अपनी बच्चियो के द्वारा आत्म-दाह की घटनाओं को मूक दर्शक के रूप मे देखती रहती हैं, ऐसा प्रतीत होता है कि या तो उनमे इस कुप्रथा के लड़ने का साहस ही नही है या समाज सेवा की आड़ ने जनता तथा अपने को धोखा देने का प्रयत्न कर रही हैं। जो जाति राष्ट्र तथा समाज सेवी सस्था अपनी मातृ-शक्ति का अपमान सहन करता है उसका विनाश सुनिश्चित है। यह बात उन्हे विदित होनी चाहिए।

क्या आर्य नवयुवक दहेज की कुप्रथा के पक्षपाती लोगो की इस चुनौती को स्वीकार कर उन लाखो अभागिन बहनो का उद्धार कर सकेंगे, जो अपने जीवन से निराश हो गई हैं, और जिनके कारण उनके निर्धन माता-पिताओं की नींद हराम हो गई है। मेरा दृढ़ विश्वास है कि और कोई इस चुनौती को स्वीकार करे या न करे, परन्तु आर्य वीर इस चुनौती को अवश्य स्वीकार करेंगे, क्योंकि महर्षि दयानन्द ने एक क्रांतिकारी सस्था के रूप मे ही आर्यसमाज की स्थापना की थी, और दहेज की कुप्रथा क्रांतिकारी नवयुवक ही दूर कर सकते हैं।

आर्य जगत् समाचार

शेख अब्दुल्ला का विधेयक भारत विरोधी

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान की घोषणा :

छोटूसिंह एडवोकेट नए प्रधान निर्वाचित हुए

जयपुर। दि ११, १२, १३ जून १९८२ को राजस्थान आर्य प्रति सभा का द्विदिवसीय वार्षिक अधिवेशन आर्यसमाज परमानन्द बस्ती बीकानेर मे सम्पन्न हुआ। राजस्थान के कोने-कोने से आए हुए २५० प्रतिनिधियो ने भाग लिया। सर्वसम्मति से निर्विरोध श्री छोटूसिह एडवोकेट भूतपूर्व विधायक प्रधान चुने गए। सभी प्रतिनिधियों ने एक स्वर से उन्हे अन्तरग व पदाधिकारी चुनने का अधिकार दिया। उन्होने ४१ सदस्यों की अन्तरग घोषित की जिममे सर्व श्री भगवानदेव शर्मा सामद उपप्रधान, भगवती प्रसाद मि भास्कर मन्त्री, प० हेतराम आर्य कोषाध्यक्ष नियुक्त किए गए।

अधिवेशन मे जम्मू-कश्मीर सरकार द्वारा उस विधेयक की तीव्र निन्दा की गयी कि जिसके द्वारा सन १९४७ मे पाकिस्तान गये हुए लोगो को वापस बुलाकर भारतीय नागरिक बनने का षडयत्र है। श्री छोटूसिह ने दलील दी कि यह घटना ३५ वर्ष पूर्व की है आज तो उन लोगो की पहचान और इस योजना पर अमल करना भी नामुमकिन है। उस समय जिसकी आयु १२ वर्ष की थी वो ४७ वर्ष का हो चुका है श्री शेख अब्दुल्ला उसकी आड मे उसके साथ शरीयत के मुताबिक ४ बीवी वा २० बच्चे और लाना चाहते है। उस समय जिसकी आयु ३०, ३५ वर्ष की थी वो लगभग मर चुके होगे। यह एक भारत वर्ष के खिलाफ एक बहुत बडा षडयत्र है जिसकी आड मे सारे पाकिस्तानियो को भारत वर्ष मे लाकर भारत के खिलाफ विद्रोह करना चाहते है। श्री एडवोकेट साहब ने राज्यपाल महोदय के इस कदम को सही बताया कि राज्यपाल महोदय ने विधेयक पर स्वीकृति के हस्ताक्षर नही किए है।

अधिवेशन मे यह भी निश्चय किया गया है कि अगर इस विधेयक को स्वीकृति प्रदान कर दी गयी तो आर्य-समाज इसके विरोध मे जन आन्दोलन खडा करेगा।

इस अधिवेशन मे पजाब मे होने वाली घटनाओ की तीव्र निन्दा की गयी और भारत सरकार से माग की गई कि दल खालसा सगठन पर प्रतिबन्ध लगाना ही काफी नही है। साम्प्रदायिक तथा अवाछनीय तत्वो को जडा-मूल से कुचला जावे।

देश-जाति के उत्थान के लिए बलिदान करो

आर्यवीरों को प्रो. शेरसिंह का उद्बोधन :

यह वर्ष युवावर्ष के रूप में मनाया जाए

पलवल। आर्यवीर दल हरियाणा के तत्वावधान मे आर्यसमाज नरवाना की ओर से दस दिन का आर्यवीर शिक्षण शिविर सम्पन्न हुआ।

आर्यवीर दल हरियाणा के सचालक प्रो० उत्तमचन्द जी शरर ने आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के प्रधान प्रो० शेरसिह से आग्रह किया कि जिस प्रकार देश एव प्रान्तो मे बाल वर्ष एव महिला वर्ष मनाये जाते रहे हैं उसी प्रकार आर्यसमाजें इस वर्ष को "युवा-वर्ष" के रूप में मनाने का आदेश जारी करे ताकि युवा शक्ति अपने आपको समाज मे प्रतिस्थापित कर सके।

प्रो० शेरसिह जी ने दीक्षान्त भाषण देते हुए आर्य वीरो को सचेत किया कि आर्य वीर बनना है तो अपने सुखो को अपने पडोसियो, नगरवासियो एव देशवासियो को अर्पित कर दो तथा दुखियो के दुखो को अपना कर उनका दुःख-दर्द बाँट लो। अपने देश, जाति एव धर्म सस्कृति के उत्थान के लिए अपना सर्वस्व समाज को अर्पित कर दो। समाज मे व्याप्त बुराइयो का डट कर सामना करें तथा अज्ञान, अभाव एव अन्याय को दूर करे।

मान्य बहन शोभा जी (धर्म पत्नी प्रो० शेरसिह जी) ने आर्य वीरो को सम्बोधित करते हुए बताया कि व्यक्ति के व्यक्तित्व का विकास करना ही इन शिविरो का प्रधान लक्ष्य है। यह विकास सेवा कार्यो से ही सम्भव है। आर्यवीर दल आज की सर्वोच्च आवश्यकता है।

अरब में सात साल के रचयिता

पंडित रुचिराम का गाजियाबाद में स्वागत

गजियाबाद। १३-६-८२ को टाउन हाल मे दैनिक सत्सग मडल, नगर आर्यसमाज गाजियाबाद की ओर से पडित रुचिराम का स्वागत किया गया। समारोह की अध्यक्षता श्री मनमोहन जी गोयल ने की। महाशय श्री बनवारी लाल आर्य, वैद्य, भगवत स्वरूप जी श्री वासुदेव जी, श्री रतन लाल राय ने पडित रुचिराम के स्वागत मे अपनी कविताए प्रस्तुत की। श्री पी० चन्द्रा जी ने भी अपने विचार पडित जी के सम्मान मे रखे। नगर की सभी आर्य-समाजो, सनातन धर्म सभा, जैन समाज, राष्ट्रीय स्वय सेवक सघ विश्व हिन्दू परिवार की ओर से भी पडित जी का स्वागत किया गया। श्री अमर स्वामी जी महाराज ने अपना आशीर्वाद कार्यक्रम के आयोजको को दिया। इस सम्पूर्ण कार्यक्रम के प्रेरणा स्रोत श्री ओ३म्प्रकाश जी आर्यसेवक थे।

पडित जी द्वारा लिखित पुस्तक 'अरब मे सात साल' का वितरण अध्यक्ष महोदय द्वारा हुआ। अध्यक्ष महोदय के सात्विक दान से ही लगभग ५०० पुस्तके छापी गई थी।

नैतिकता-राष्ट्रीयता के लिए ऐसे विद्यालय आवश्यक

पाणिनि कन्या महाविद्यालय वाराणसी का

भव्य एकादश वार्षिकोत्सव सम्पन्न

पाणिनि कन्या महाविद्यालय वाराणसी का एकादश-वार्षिकोत्सव २८,२९-३० को सम्पन्न हुआ। इस महोत्सव मे भाग लेने हेतु २७ मई को ही बीमनगर (गुजरात) भरतपुर (राजस्थान) जम्मू-कश्मीर, अमृतसर, जालन्धर, पानीपत, पानीपत, शमली, कलकत्ता, सिलीगुडी, दिल्ली, वदायू, पठानकोट, काशीपुर (नैनीताल) लखनऊ, मोतीहारी, मुजफ्फरपुर, रजौली, शाहजहापुर, मुरादाबाद फैजाबाद आदि सुदूर प्रान्तो के आर्यजन इस कुलभूमि मे पधारे थे।

पहले दिन ओ३म् ध्वजोत्तोलन, मुख्य द्वार पर अकित आर्यसमाज के नियमो का शिलालेख का अनावरण पूज्यपाद स्वामी नारायण मुनिश्चतुर्वेद ज्वालापुर द्वारा सम्पन्न हुआ नन्दनन प्रदर्शनी का उद्घाटन भारत सरकार के आश्रममन्त्री श्री धर्मवीर ने किया।

इस वार्षिकोत्सव का सर्वाधिक महत्वपूर्ण कार्यक्रम 'सत्यार्थ प्रकाश व्याख्यान माला प्रतियोगिता" का था जिसका आयोजन २९ मई सायंकालीन सभा मे हुआ। इस कार्यक्रम मे तीनो विश्वविद्यालयो के डाक्टर्स, प्रोफेसर्स, स्नातकोत्तर छात्रो सहित भारी जन समुदाय मन्त्रमुग्ध-सा बैठा रहा। इस व्याख्यान-माला के निर्णायक गण श्री प० मेधावी जी शास्त्री, पू० स्वामी नारायण मुनिश्चतुर्वेद:, श्री प० ज्वलन्त कुमार जी शास्त्री प्रो० अमेठी कालिज थे। जिन्होने कहा कि—सभी कन्याये बहुत ही उत्तम बोली अत: निर्णय अति कठिन रहा। और एकाध नम्बरो के न्यूनाधिकता से ही प्रथम, द्वितीय एव तृतीय स्थान कन्याओ ने प्राप्त किए हैं। इस व्याख्यान माला को शीघ्र प्रकाशित करा देने का विशेष आग्रह पानीपत निवासी श्री आदित्यप्रकाश जी ने किया।

अन्तिम दिवस प्रात काल यज्ञशाला मे पूर्ण हुति का दृश्य अपूर्व था। मुख्य अतिथि श्री त्रिनाथ मिश्र एस एस. पी. महाभाग थे। उन्होंने कन्याओ के राइफल परेड का निरीक्षण किया। उन्होने अपने वक्तव्य मे कहा—'देश मे नैतिकता एव राष्ट्रीयता का गठन हो इसके लिए इस प्रकार के विद्यालयो की आज महती आवश्यकता है।" आज कन्याओ के शौर्यपूर्ण चमत्कारो जैसे पर आसन, आग के गोले से निकलना, विभिन्न प्रकार के स्तूप आदि के कार्यक्रम हुए। पुरस्कार वितरण का कार्य कलकत्ता निवासी प्रसिद्ध उद्योगपति श्री गजानन्द जी आर्य द्वारा सम्पन्न हुआ।

उद्बोधन भाषण एव वार्षिक रिपोर्ट विद्यालयीय आचार्या पूज्या डा० प्रज्ञा देवी जी ने प्रस्तुत किया। अन्त मे विद्यालय की प्राणस्वरूपा पण्डिता बहिन मेधा देवी जी व्याकरणाचार्या ने उत्सव की निर्विघ्न समाप्ति हेतु परमात्मा की असीम दया का उल्लेख किया।

आर्यसमाज गांधीनगर का चुनाव सम्पन्न

आर्यसमाज गाधीनगर का चुनाव यदुनन्दन अवस्थी की अध्यक्षता मे हुआ। जो निम्न प्रकार का था। प्रधान श्री जयप्रकाश आर्य, उपप्रधान श्री जसवन्तराय पुरी तथा सुन्दरलाल जी, मन्त्री सत्यपाल भाटिया, उपमन्त्री शांतिस्वरूप जी, प्रचार मन्त्री सन्तराम मदान, कोषाध्यक्ष श्यामसुन्दर जी तथा सभा के लिए प्रतिनिधि जयप्रकाश आर्य, जसवन्तराय पुरी, सत्यपाल भाटिया मदान, चुने गये।

मियां-बीवी नहीं, पति-पत्नी कहिए

ले० स्वामी स्वरूपानन्द (वैदिक धर्म प्रचारक दिल्ली)

आज मर्यादा पुरुषोत्तम राम व योगीराज श्रीकृष्णचन्द्र की सन्तति उलटे मार्ग पर चल रही है। जिन महापुरुषो की जीवन गाथा सुनने से नवचेतना एवं नवजीवन प्राप्त होता है। राणा प्रताप, शिवाजी एव लक्ष्मी, दुर्गा, सीता, सावित्री की वीरताओ का वर्णन इस देश का गौरव है। देश-धर्म पर मर मिटने वाले, सुभाष, भगतसिह, चन्द्रशेखर, विस्मिल, इत्यादि का जीवन मर मिटना सिखलाता है। देश मे गगा-यमुना, सरस्वती तथा वेद, गीता, रामायण, गौ, गायत्री के प्रति श्रद्धा रखने वाले हिन्दू (आर्य) आज भटकते फिर रहे है। जो राम, कृष्ण, हनुमान के उपासन गृहो को छोडकर मुसलमानो की कब्रो पर जा-जा कर फूल चढा रहे हैं।

हिन्दुओ के घरो मे इस्लाम रीति-रिवाज चल पडी है। मुसलमानी मेलो पर अधिकतर हिन्दुओ की सख्या होती है। अजमेर की दरगाह पर अधिकतर हिन्दू स्त्रिया ही नजर आती हैं। मैं जब बहराइच गया तो वे सय्यद सालार मसूद गाजी, की दरगाह पर गया वहाँ भारी मेला लगा हुआ था। जहाँ अनेको कब्र बनी हुई हैं। १-गज शहीद २-हजरत सैफउद्दीन सालार ३—सागे सागल बुत्तो ४—हजरत सय्यद ५—सय्यद अमीर तरफा ६—हजरत रकब साकार ७—हजरत जोहरी बीवी ८-नैदादाई ९—हजरत सय्यद सालार बरहना १०-निशात बरदार साहब इत्यादि की कब्रें हैं। इन सभी कब्रो पर हिन्दुओ की स्त्रिया फूल चढ़ाती मिली हैं। एव चद्दर चढा रही थी। वहाँ के मियाँ-मुल्ला इनके बच्चो म मुह मे जादू की भरी फूक मार रहे थे। कही मोर-पखो से झाड़-फूक हो रही थी। मुल्ला पुजारी और हिन्दुओ की नारी।

मगर ऐसा कही नही देखा कि पण्डित पुजारी और बुर्के वाली नारी।

क्या आज राम-कृष्ण, हनुमान पर विश्वास नही रहा जो कि हिन्दुओ के घरो मे सारी रीति-रिवाज मुसलमानी है।

मैंने एक आर्य परिवार मे एक महानुभाव से पूछा कि आपके बच्चे कितने हैं वह बोले स्वामी जी मेरी एक ही सन्तान है शादी कर दी गई है वह मियाँ-बीवी पार्क मे घूमने गये हैं। मैंने कहा कि मुसलमान बन गये हैं। वह बोले नही मुसलमान तो नहीं बने हैं। मैं बोला तो मियाँ-बीवी कब से बन गये हैं वह बड़े शरमिन्दा हुए अवसर ऐसे अनेको परिवार मिलेगे जो कि मियाँ-बीवी का ही प्रयोग करते है और कहते हैं खुदा की रजा है वह परवरदिगार जाने जन्नत देगा या दोजख दिखायेगा।

अब आप ध्यान दें कि वह मियाँ-बीवी हैं या पति और पत्नी हैं। क्या कहे इन हिन्दुओ को, कहते हैं खुदा खैर करे। धर्म-परिवर्तन हो रहा है हरिजन मुसलमान बन रहे है हमने कहा पहले आप स्वय सुधार करो—बाद में खुदा खैर करेगा।

एक दाढ़ी वाले व्यक्ति गांधीनगर मे रहते है। कभी-कभी अचानक मिल जाते है। एक दिन मैं बोला कि श्रीमान जी आप तो सस्कृत का बहुत उच्चारण मे करते हैं अपना परिचय तो दे। वह बोले मैं कई आर्यसमाजो पुरोहित रह चुका हू हवन, सन्ध्या, सस्कार इत्यादि का पण्डित जी से यह सुनकर अति प्रसन्नता हुई। एक दिवस यमुना पुल से पैदल चल कर आ रहे थे —और पता नही शायद बस से उतरे होगे। मैंने पूछा कि पण्डित जी कहाँ से आ रहे हैं। तो बोले स्वामी जी आज जुम्मा है जामा मस्जिद में नमाज पढ़ कर आ रहा हूं। मैं बोला कि पण्डित जी आप और नमाज का क्या तालमेल—आप तो सन्ध्या करते हैं बोले प्रतिदिन सन्ध्या और जुम्मे को नमाज पढ़ने जाता हूं। मैंने कहा कि क्या मतलब?

बोले मेरी बीवी जब मरी थी वह मरते समय मुझे कह गई थी कि जुमा की नमाज जीवन भर तक नहीं छोड़ना। तो मैं बीवी के बचन का पालन कर रहा हूं। मैंने कहा कि क्या वह मुसलमानी थी—बोले वह मुल्ला जी की चेली थी—अब बताओ मैं इनको क्या कहू हिन्दू या मुसलमान।

कहावत है कि—

बाहर श्वान से दाँत निपोरत,
घर के भीतर बब्बर शेर है।
लालिमा भी मुखड़े पै लगावत,
कालिमा के उर मे अति ढेर है॥

हाँ! मिल जाए कही पर लीडरी,
दिल्ली के बीसो लगावत फेर है।

रग मे एक रगे न महाशय,
आधे है तीतर आधे बटेर हैं॥

इसलिए,

आर्यों (हिन्दुओ) अपने घरों में मुसलमानी भाषा का प्रयोग करना छोडिये। मियाँ-बीवी के स्थान पर पति-पत्नी कहना चाहिये। खुदा खैर करे के स्थान पर प्रभु कृपा करे कहे। आशा है पढेंगे और ध्यान देगे।

हमारी धर्मनिरपेक्षता और विदेशी आक्रान्ताओं की स्तुति

धर्म निरपेक्षता का सिद्धान्त आज किसी राज्य की आधुनिकता तथा प्रगतिशीलता की एक पहचान है। इस्लामी देशो मे उभरती हुई धार्मिक राज्य-व्यवस्था इसीलिए राजनीतिक विचारको की दृष्टि मे एक दकियानूसी और हानिकारक प्रवृत्ति समझी जाती है। भारत जैसे देश मे जहा अनेक धर्मों के लोग रहते हैं, व्यावहारिक दृष्टि से भी राज्य की धर्मनिरपेक्षता आवश्यक है किन्तु दुर्भाग्य से हमारे राजनेताओ ने अपने सीमित स्वार्थ के कारण इस सिद्धान्त को ऐसा विकृत कर दिया है कि आज हमारे देश की शासन-व्यवस्था न धार्मिक ही रही है और न ही वास्तविक अर्थों मे धर्म निरपेक्ष ही बन सकी है। एक तरफ जहां उसमे धर्म के वास्तविक अर्थ मे धर्म-राज्य या रामराज्य के नैतिक आदर्शो की खुली अवहेलना हो रही है, वहां उसे धर्म के वर्तमान या प्रचलित अर्थो अर्थात मजहब, पन्थ, सम्प्रदाय आदि के नाम पर होने वाले वैर-विरोध, अन्धविश्वास तथा दकियानूसी रीति-रिवाजो से भी छुटकारा नही मिल सका जैसी धर्म-निरपेक्ष राज्य मे अपेक्षा की जाती है।

सर्वधर्म सापेक्ष राज्य

वास्तविक अर्थ मे ऐसा राज्य न तो किसी धर्म का विरोधी होता है और न ही किसी धर्म या धर्मों का समर्थक। वास्तविक अर्थ मे धर्म निरपेक्ष राज्य सब धर्मो के प्रति तटस्थ होना चाहिए। इस सिद्धान्त का आधार ही यह है कि धार्मिक मान्यताए व्यक्तिगत विश्वास से सम्बन्धित होती है, इसलिये न तो राज्य का उनमे हस्तक्षेप होना चाहिए और न ही उन्हे राज्य के कार्य मे हस्तक्षेप करने देना चाहिए। पश्चिम की राजनीति पर आधारित इस सिद्धान्त का अर्थ यही है कि राज्य और धर्म दोनो का अपना-अपना पृथक क्षेत्र है, यद्यपि डेमोक्रेसी अर्थात प्रजातन्त्र और सैक्युलरिज्म अर्थात धर्म निरपेक्ष के दोनो सिद्धान्त हमने पश्चिम मे प्रचलित सविधान से लिए हैं तथापि वे या तो हमारी परिस्थितियो के अनुकूल सिद्ध नहीं हुए या हमने उनकी भावना के स्थान मे केवल बाहरी ढाचे की नकल करने के प्रयत्न मे उन्हे विकृत कर दिया। स्पष्ट है कि यदि किसी एक धर्म को आधार मानने वाला—राज्य हानिकारक है तो यह कहने की आवश्यकता नही है कि अनेक परस्पर विरोधी धर्मों से प्रभावित राज्य द्वारा कितनी अधिक हानि हो सकती है। हमारा राज्य वास्तव मे धर्म निरपेक्ष न होकर 'सर्व-धर्म-सापेक्ष राज्य' है और यह एक असगत और असम्भव प्रयास है।

सब धर्मों के प्रति आदर या सम्मान के नाम पर हमारी अनेक पुरानी सामाजिक कुरीतियाँ और अन्धविश्वास पुन उभरने लगे हैं। स्वाधीनता से पहले तन्त्र-मन्त्र, ज्योतिष आदि को हम न केवल तर्क और विज्ञान विरोधी ही मानते थे, बल्कि उन्हे तथा ऐसे ही अन्य धार्मिक अन्ध-विश्वासो और जात-पात, छुआछूत, बाल-विवाह आदि सामाजिक बुराइयो को राष्ट्र की प्रगति मे बाधक समझते थे, किन्तु आज स्वय हमारे राजनेता और प्रशासक उन्हे खुला प्रोत्साहन दे रहे है। उदाहरण के लिए अजमेर के ख्वाजा साहब की दरगाह अब हमारे धर्म निरपेक्ष राज्य का राजकीय अर्थात सरकारी तीर्थ बनता जा रहा है। राष्ट्रपति, प्रधानमन्त्री, राज्यपाल, राज्यो के मन्त्री तथा राजनेता यहाँ आकर ख्वाजा साहब की कब्र पर कीमती चादर चढाकर दुआ माँगना अपना एक आवश्यक कार्य समझते है और इसका सचित्र प्रचार भी सरकारी माध्यम से किया जाता है। अभी तक ये दुआए केवल व्यक्तिगत होती थी, जैसे पुत्र की प्राप्ति आदि के लिए किन्तु अब वे चुनावो, राज्य-कार्य और यहाँ तक कि हडतालो आदि मे सफलता के लिए की जाने लगी हैं। विपक्षी दलो द्वारा की जाने वाली परस्पर विरोधी ये प्रार्थनाए जहाँ स्वय ख्वाजा साहब के लिए बडी दुविधा का कारण होती होगी, जहाँ उनके जैसे रुहानी अर्थात आध्यात्मिक सन्त को वर्तमान विवादास्पद और अनैतिक और भ्रष्ट राजनीति मे घसीटना उनके प्रति सम्मान का नही अपमान और बेहुरमति का ही सबूत हो सकता है। ख्वाजा साहब के भक्तो के लिए उनकी यह दरगाह लगभग ७५० वर्षो से पवित्र स्थान रहा है और हमारे धर्म निरपेक्ष सविधान को बने हुए भी आज ३२ वर्ष से अधिक समय हो गया है किन्तु इस धर्म स्थान के प्रति राजनीतिक भक्ति का यह उबाल गत १०-१२ वर्षों से ही प्रारम्भ हुआ है।

विकृत धर्मनिरपेक्षता का नमूना

हमारे हिन्दू राजनेता केवल मन्त्री, सांसद और विधायक बनते समय या बाम मे ही यहाँ "जियारत" क्यो करते हैं, यह भी एक विचारणीय प्रश्न है? मुसलमान या अन्य धर्मावलबी राजनेताओ के लिए यदि हिन्दू मन्दिरो या तीर्थ स्थानो मे जाकर अपनी धर्म निरपेक्षता सिद्ध करने की आवश्यकता नही है तो यह मापदड केवल हिन्दू राजनेताओ के लिए क्यो आवश्यक है? एक और प्रश्न यह भी उठता है कि व्यक्तिगत जीवन मे स्वय अपने धर्म के प्रति उदासीनता और अनास्था रखने वाले सब धर्मों के तीर्थ स्थान और गुरुओ की यात्रा करने वाले क्या वास्तव मे किसी धर्म के प्रति निष्ठा रखते हैं? और क्या उनकी इस धर्मप्रियता का उनके सार्वजनिक जीवन मे कोई परिचय मिलता है? इस विचित्र या विकृत धर्म निरपेक्षता का एक दूसरा दुर्भाग्यपूर्ण परिणाम यह हो रहा है कि हमारे कुछ समाचार पत्र और लेखक देश के पुराने इतिहास को अपने राजनीतिक विचारो के अनुसार तोड-मरोड कर प्रस्तुत करने लगे है। इसके कुछ मनोरजक उदाहरण यहा प्रस्तुत है—

लेखक

दत्तात्रेय वाब्ले अजमेर

इधर कुछ दिनो से अजमेर तथा जयपुर के एक-दो हिन्दी दैनिक समाचार पत्रो मे अजमेर के ख्वाजा मोईनुद्दीन चिश्ती और उनके समकालीन मुसलमान आक्रामक तथा शासको के सम्बन्ध मे अनेक मनगढन्त तथा प्रशसात्मक लेख छप रहे है। उदाहरण के लिए तारागढ स्थित मीरा साहिब की दरगाह को सैयद हुसैन नामक एक प्रसिद्ध सन्त का तीर्थ स्थान बताकर हिन्दू, मुसलमानो द्वारा उसकी जियारत का महत्व बताया गया है जबकि अनेक इतिहास और विशेषकर अजमेर का इतिहास लिखने वाले श्री हरविलास जी शारदा के अनुसार मीरा सैयद हुसैन पृथ्वीराज को समाप्त करने वाले शाहबुद्दीन गौरी का एक सेनानायक था जो बाद मे अजमेर का गवर्नर बना। और वह युद्ध मे राजपूतो द्वारा मारा गया और इसलिए मुसलमान उसे शहीद मानते है लेकिन उसको सन्त बनाने की कल्पना लगभग ४०० वर्षो बाद एक अन्य मुस्लिम प्रशासक जब्बार खा के मस्तिष्क मे आई और इस प्रकार वह शहीद तथा सन्त दोनो समझा जाने लगा। किन्तु आश्चर्य की बात यह है कि पृथ्वीराज को अपना अन्तिम हिन्दू सम्राट मानने वाले भी उसे शहीद और सन्त कहते है। स्वय ख्वाजा साहब के सम्बन्ध मे इन लेखो मे यह बताया गया है कि जहा पृथ्वीराज के ऊट ठहरते थे वहाँ रहने के लिए उन्हें जब मना किया गया, उन्होने नाराज होकर श्राप दे दिया। बाद मे कुछ अन्य कारणो से भी वे पृथ्वीराज से अप्रसन्न रहने लगे। इसकी शिकायत उनके भक्त और जन्म स्थान के बादशाह शाहबुद्दीन गोरी तक पहुची। परिणामस्वरूप स्वय पृथ्वीराज को अपनी जान और राज्य दोनो से वचित होना पडा।

जयपुर की प्रसिद्ध हिन्दी दैनिक राजस्थान पत्रिका के २८ मई के अक मे श्री हमीद का एक लेख प्रकाशित हुआ है जिसमे सिंध के राजा दाहिर को हराने वाले प्रथम अरब आक्रामक मोहम्मद बिन कासिम की बड़ी प्रशसा की गई है, जिसमे यह कहा गया है कि दाहिर की लड़कियो को खलीफा के पास पेश करने तथा अन्य घटनाए मनगढन्त कहानियाँ है। किन्तु इस लेख मे यह स्वीकार किया गया है कि वहाँ दक्षिण मे इस्लाम का प्रवेश व्यापारियो द्वारा हुआ, वहाँ उत्तर मे सिंध मे मोहम्मद बिन कासिम की तलवार के जरिये मुसलमानो का भारत मे प्रवेश हुआ। लेख का अधिकांश भाग मोहम्मद बिन कासिम की अतिशयोक्तिपूर्ण प्रशसा से भरा हुआ है। साथ ही यह लिखा है कि कासिम ने दाहिर के हिन्दू वजीर और सिपहसालारो को अपने यहाँ पदो पर बनाये रखा, क्योकि—'वे सब मोहम्मद बिन कासिम के लिए जान देने को तैयार रहते थे।' प्रश्न यह है कि अपने राजा तथा राज्य को नष्ट करने वाले आक्रमणकारी के प्रति इन लोगो की यह वफादारी लेखक की दृष्टि मे प्रशसनीय क्यो है? लेखक का तो यहाँ तक कहना है कि स्वय मोहम्मद बिन कासिम इतना लोकप्रिय हो गया था कि कई लोगो ने उसका मूर्ति बनाकर उसे पूजना प्रारम्भ कर दिया—लेख का बाकी का भाग मोहम्मद बिन कासिम तथा अरब के अन्य सेनापतियो और खलीफाओ के आपसी रक्तरंजित और षडयन्त्रकारी घटनाओ से भरा हुआ है।

इस प्रकार के लेख के पीछे लेखक का उद्देश्य तो समझ मे आ सकता है किन्तु देश पर आक्रमण करने वाले विदेशियो की प्रशसा तथा साथ ही हिन्दुओ के स्वाभिमान तक को आघात पहुचाने वाले ऐसे लेख इन पत्रो और पत्रिकाओ मे किस प्रकार प्रकाशित होते है यह समझना कठिन है। हमारी धर्म निरपेक्षता का क्या यही अर्थ है कि मुसलमानो की धर्मान्धता को प्रोत्साहित किया जाए और हिन्दुओ की धार्मिक भावना को आघात पहुचाया जाए।

हमारा कल्याण करें

ओ३म् अपां मध्ये तस्थिवांसं तृष्णाविदज्जरितारम् ।
मृळा सुक्षत्र मृळय ।। ऋग्वेद ७.८९.४.

हम अपार जल के मध्य भी प्यासे हैं, परम दयालु प्रभु, हमारा कल्याण करें। सर्व सुखकारी दयालु भगवन्, हमें भी सुख प्रदान कीजिए।

ओ३म्
आर्य सन्देश

दुरवस्था के मूल में : आचारहीनता

उस दिन एक बस्ती में एक गोष्ठी का आयोजन था—चर्चा का विषय था 'आज का दूषित वातावरण और उसके कारण।' एक वक्ता की राय थी कि जब शासन भ्रष्ट होगा तो प्रजा और वातावरण तो भ्रष्ट होंगे ही। दूसरे व्यक्ति की राय थी जब तक जीवन में अध्यात्म और धर्म पर निष्ठा नहीं होगी, तब तक दूषित वातावरण और भ्रष्ट मानव का सुधार सम्भव नहीं है। तीसरे सज्जन की राय थी कि जब तक जीवन में - विशेषतया हमारे विद्यालयों एवं शिक्षा प्रणाली में नैतिकता के विषय को अनिवार्य नहीं किया जाएगा, तब तक स्थिति में सुधार सम्भव नहीं है। चौथे सज्जन की सम्मति थी कि जब तक हमारी कथनी और करनी एक नहीं हो जाती, तब तक वर्तमान दूषित वातावरण का सुधार सम्भव नहीं है। हम दूसरों से अपेक्षा करें कि वे सामूहिक तालाब में दूध का लोटा डालें, परन्तु जब हमारी अपनी बारी आए तो हम सामूहिक भण्डार में दूध की जगह जल डालें तो हम भ्रष्ट वातावरण को सुधारने में कैसे योग दे सकते हैं?

भारतीय समाज में विद्वानों और धर्माचार्यों ने दो प्रकार के कर्मों का विवेचन किया है, एक सामान्य परिस्थिति में किए जाने योग्य आचरण और संस्कार और दूसरे विशेष या आपत्कालीन परिस्थितियों में किए जाने वाले आचरण और संस्कार। पुराने नीतिशास्त्री कह गए थे—'आपद्काले मर्यादा नास्ति' संकट काल में मर्यादा का पालन सम्भव नहीं होता। खेद का विषय है कि आज तो सामान्य स्थिति में भी कोई मर्यादा नहीं रह गई है। सम्भवतः इस दूषित वातावरण और स्थिति का मूल कारण यही है कि आज लोगों की फल के प्रति तो उत्सुकता है, परन्तु व्यक्ति और समाज कर्मों के प्रति उदासीन हैं। जब तक हम अच्छे कर्म नहीं करेंगे, तब तक अच्छे फलों की आशा करना व्यर्थ है। अच्छे कर्म उसी स्थिति में करना सम्भव हैं, जब कि हमारा अपना आचरण ऊंचा और अच्छा हो। दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि हमारी अपनी कथनी और करनी शुद्ध होनी चाहिए, यह स्थिति तभी सम्भव है जब हमारा अपना आचरण शुद्ध और पवित्र हो।

प्रसिद्ध लोकोक्ति है— आचार प्रथमो धर्मः व्यक्ति का आचार ही उसका सच्चा धर्म है। यह उक्ति भी प्रसिद्ध है— आचारहीनं न पुनन्ति वेदाः' जिस व्यक्ति का अपना आचार शुद्ध और पवित्र नहीं है, उसे अपौरुषेय भगवान की सर्वोत्तम देन पवित्र वेद भी शुद्ध और पवित्र नहीं कर सकते। इस प्रकार निष्कर्ष या परिणाम के रूप में यह कहा जा सकता है कि वर्तमान दूषित वातावरण के मूल में व्यक्ति, समाज और राष्ट्र की आचारहीनता और चरित्रहीनता है। जब तक व्यक्ति, समाज और राष्ट्र अपने आचार की पवित्रता पर बल नहीं देंगे, तब तक स्थिति में सुधार सम्भव नहीं है। एक छोटा-सा दीया भी भीषणतम अन्धकार का सामना कर सकता है। कोटि-कोटि अन्धकार की फौज उस छोटे-से दीए के प्रकाश को नष्ट नहीं कर सकते। इसी प्रकार यदि व्यक्ति, समाज और राष्ट्र दूसरों से अपेक्षा किए बिना आत्मचिन्तन कर अपने ही सुधार का सकल्प कर अपने को शुद्ध करें तो स्वतः दूषित वातावरण का सुधार सम्भव है।

आर्यसमाज टैगोर गार्डन में सफल कार्यक्रम

आर्यसमाज टैगोर गार्डन में ७ जून से १२ जून तक श्री पं० पुरुषोत्तम एम. ए के विद्वत्तापूर्ण भाषण और श्री ज्ञानचन्द्र डोगरा के भजन होते रहे। ७ जून को प्रातःकाल इलाके में श्री ज्ञानचन्द्र डोगरा पथात फेरी का नेतृत्व किया। सब कार्यक्रमों में जनता की उपस्थिति बहुत रही।

चिट्ठी-पत्री | आर्यसमाज के इतिहास के प्रथम खण्ड पर प्रतिक्रिया

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के तत्वावधान में आर्य स्वाध्याय केन्द्र द्वारा प्रकाशित 'आर्यसमाज का इतिहास' के प्रथम भाग के विषय में निम्न कुछ शंकाएं हैं, आशा है कि सम्पादक मण्डल उनका समाधान करेगा—

१. आवरण पृष्ठ पर प्रकाशित 'ओम्' ध्वज सार्वदेशिक सभा के निर्णय के विपरीत है, इसे 'ओ३म्' रूप में शुद्ध छापा जाना चाहिए था।

२. महर्षि के स्वलिखित जीवन-चरित्र में हरिद्वार में 'पाखण्ड-मर्दन पताका लगाने का उल्लेख है, उसे 'पाखण्ड खण्डिनी पताका' किस आधार पर किया गया?

३ इतिहास में पृष्ठ २६ और २७में जोधपुर सम्बन्धी कई विवरण क. सर प्रतापसिंह द्वारा महर्षि को निमन्त्रण, ख. महर्षि का उत्तर, ग. जोधपुर नरेश द्वारा शाहपुरा में महर्षि को निमन्त्रण, घ. अस्वस्थ होने के कारण जोधपुर दरबार का महर्षि के पास देर से आना, ङ जोधपुर नरेश से मिलने के पश्चात् महर्षि का प्रचार प्रारम्भ करना, च. महर्षि का राजभवन में जाकर महाराजा और सामन्तों को उपदेश, छ जोधपुर आने पर महर्षि को महाराजा के वेश्यागामी होने की जानकारी, ज. व्याख्यान में महाराजा की उपस्थिति में इस कृत्य पर भटकार, झ. इस षड्यन्त्र के कारण महर्षि की मृत्यु हुई आदि विवरण का क्या आधार है, इनका सुपुष्ट आधार प्रस्तुत करना चाहिए।

४. बम्बई, अजमेर, जोधपुर आदि के कई दुर्लभ चित्र क्रमबद्ध प्रकाशित नहीं किए गये। ये अलभ्य चित्र किन स्रोतों से प्राप्त हुए उनका विवरण भी दिया जाता तो अधिक उपयुक्त होता।

—जी. एम. वर्मा, द्वारा नरेन्द्रसिंह आर्य, रामद्वारा भवन के पीछे, महामंदिर चौराहा, जोधपुर (राजस्थान)

मातृमन्दिर कन्या गुरुकुल

बोध-कथा

सत्य का आचरण!

एक छोटा-सा बालक अपनी अकेली विधवा माँ को छोड़कर कोई रोजगार-धन्धा करने के लिए विदेश जा रहा था कि माँ ने उसकी कमर में एक वस्त्र में कुछ अशर्फियां सिल कर लपेट दीं और विदा होते हुए पुत्र से कहा—हे लाल, मेरी एक बात गांठ बांध लेना। चाहे कितना भी संकट आ जाए, तुम झूठ न बोलना।' वह लड़का एक बड़े व्यापारी सार्थवाह के साथ लम्बी यात्रा पर निकल पड़ा। रास्ते में डाकू मिले। उन्होंने व्यापारियों से पूछा—'तुम्हारे पास कोई जमा या नकदी है। सब ने इन्कार किया। मारने-पीटने पर तलाशी लेने पर सबके पास रुपये और अशर्फियां मिलीं। सब का सब रुपया-पैसा छीन लिया गया। अन्त में उस बालक की बारी भी आई। उससे डाकू सरदार ने पूछा—'तुम्हारे पास क्या है?' उसने जवाब दिया—'कुछ अशर्फियां हैं।' डाकू ने पूछा—'कहाँ हैं?' उसने जवाब दिया— कमर में बंधी करधनी में हैं।' खोलने पर उसमें से चमकती हुई कुछ अशर्फियां निकल आईं।

डाकू ने कहा— तुम्हें मालूम था कि हम डाकू हैं और सब कुछ छीन लेते हैं फिर भी तुमने हमें अपना रहस्य क्यों बतला दिया।'

उस लड़के ने जवाब दिया— मेरी माँ ने मुझे विदा करते समय कहा था, चाहे कैसा भी संकट आए सच बोलना, फिर मैं कैसे झूठ बोल सकता था?'

उस छोटे से बालक की निर्भीकता और सचाई से डाकू सरदार का दिल भी पिघल गया, उसने न केवल उस लड़के की अशर्फियां लौटा दीं, उसके साथी व्यापारियों की जमा-पूंजी भी लौटा दी और भविष्य में डाकू-वृत्ति छोड़ने का संकल्प किया।

—नरेन्द्र

आर्यसमाजों के सत्संग

२७ जू.'८२

अन्धा मुगल प्रतापनगर—ला० लखमीदास; अमर कालोनी—मास्टर ओम्प्रकाश आर्य; अशोक बिहार के डी ५४ वी—श्री महावीर बत्रा; आर के पुरम—प० ओमवीर शास्त्री; आर के पुरम सेक्टर ६—प० हीराप्रसाद शास्त्री; आर. के. पुरम सेक्टर ६—श्रीमती लीलावती आर्या; आनन्द विहार—स्वामी स्वरूपानन्द; किशनगज मिल एरिया—प० रघुराज शास्त्री, किग्जवे कैम्प—प० रामनिवास, कालका जी डी डी. ए फ्लेट एल १/१४३-ए—प० प्रकाशचन्द शास्त्री; कालका जी—प० जयभगवान भजनमण्डली, करोल बाग प० सत्यपाल; कृष्णनगर—श्रीमती ऊषा शास्त्री; गाधी नगर—प० प्रकाशचन्द्र वेदालकार, ग्रेटर कैलाश-I प० दिनेश चन्द्र शास्त्री पराशर; ग्रेटर कैलाश-II—प० गणेश प्रसाद विद्यालकार; गुड मण्डी—प० वेदव्यास भजनोपदेशक, गुप्ता कालोनी वैद्य रामकिशोर; गोविन्द भवन-दयानन्द वाटिका—प० भगवान सहाय विद्यावाचस्पति, चूना मण्डी-पहाड गज—डा० सुख दयाल भूटानी, जगपुरा-भोगल—प० हरिश्चन्द्र आर्य, जनकपुरी बी ३/२४—प० प्राणनाथ सिद्धातालकार, डिफेंस कालोनी—आचार्य हरिदेव सि० भू०, तिलक नगर—प० मनोहरलाल ऋषि भजनोपदेशक, तिमारपुर—प० सोमदेव शास्त्री; दरिया गज—श्रीमती सुशीला राजपाल; नारायण विहार—श्री चमनलाल आर्य, नया बॉस—पं० देवेन्द्र द्विवेदी, न्यू मुल्तान नगर—श्री मोहनलाल गाधी; न्यू मोतीनगर—प० रामरूप शर्मा, नगर शाहदरा—प्रो० सत्यपाल बेदार; पजाबी बाग—प० हरिश्चन्द्र शास्त्री, पजाबी बाग एक्सटेंशदे १४/३—डा० रघुनन्दनसिह; बाग कड़ेखां—प० बरकतराम भजनोपदेशक, बिरला लाइन्स—पं० चूनीलाल भजनोपदेशक; महावीर नगर—स्वामी विश्वदेवानन्द, महरौली—श्रीमती प्रकाशवती शास्त्री; मोती बाग—परमेश शर्मा, रमेशनगर—प० ओम्प्रकाश भजनोपदेशक; राणा प्रताप बाग—प० हरिदत्त शास्त्री, राजौरी गार्डन—स्वामी सच्चिदानन्द; लड्डू घाटी पहाडगज—प० वेदपाल शास्त्री; लाजपत नगर—प० देवेश; लेखराम नगर-त्रिनगर—प० सीसराम भजनोपदेशक; लारेन्स रोड—प० छविकृष्ण शास्त्री, विक्रम नगर—प० कामेश्वर शास्त्री, सदर बाजार पहाड़ी धीरज—प्रो० वीरपाल विद्यालकार; साकेत—प० आशानन्द भजनोपदेशक; सुदर्शन पार्क—प्रो० भारत मित्र शास्त्री; सराय रोहेला—श्री रोशनलाल खन्ना; सोहनगज—प० देवराज वैदिक मिशनरी, हनुमान रोड—प० शिवकुमार शास्त्री, हौज खास डी-२०—डा० रघुवीर वेदालकार; राजा गार्डन—प० खुशीराम शर्मा।

—ज्ञानचन्द डोगरा वेद प्रचार प्रबन्धक

पत्नी की स्मृति में कोष की स्थापना

प० योगराज जी शर्मा एडवोकेट बरनाला ने श्री लाल बहादुर शास्त्री आर्य महिला कालेज, बरनाला मे १२ ०००/रु० की बैंक फिक्सड डिपाजिड निधि मे अपनी धर्मपत्नी स्वर्गीय श्रीमती सत्यवती जी की पुण्य स्मृति मे एक कोष कायम किया है। उक्त राशि से जो ब्याज मिलेगा उससे कालेज में तीन २१/रु० मासिक की श्रीमती सत्यवती छात्र वृत्तिया व अन्य श्रीमती सत्यावती स्मृति पुरस्कार दिए जाएगे। प० जी ने पहले भी कालेज को १६०००/रु० दान मे देकर अपनी पत्नी श्रीमती सत्यवती जी की याद मे एक कमरा बनवाया था।

कर्मठ आर्य कार्यकर्ता श्री मेलाराम वेदी का स्वर्गवास

आर्यसमाज मुल्तान देवनगर के सस्थापक एव भू. पू. प्रधान विवाह सुधारक सभा के संचालक श्री मेलाराम वेदी के असामयिक स्वर्गवास से क्षेत्र का एक नि.स्वार्थ आर्य सेवक सदा के लिए उठ गया। उन्होंने वेद विषयक अनेक पुस्तके लिखीं और वितरित की। ४० वर्ष तक निरन्तर प्रभु भक्ति करने के बाद ९० वर्ष की आयु मे उनका स्वर्गवास हो जाने पर १२ जून के दिन आर्यसमाज देवनगर मे उन्हे श्रद्धाजलि अर्पित की गई। प्रभु उनकी आत्मा को सद्गति दें और उनके शोक सन्तप्त परिवार को हार्दिक सान्त्वना देंगे।

आर्यसमाजें—सावधान

एक महिला उम्र ५७ साल की ६ महीनो से दिल्ली मे घूम रही है अपना नाम डा० प्रेम शर्मा बतलाती हैं, अपने को भोपाल की रहने वाली बताती है दिल्ली की आर्यसमाजो मे चक्कर लगाती फिर रही हैं। विदित हुआ है कि इसके पति ने घर से निकाल दिया है। जहां जाती है, वहीं शरारत करती है।

कृपया इस सन्दिग्ध औरत से सावधान रहे। मन्त्री

हेमराज मन्त्री आर्यसमाज दिल्ली-३२

कन्या गुरुकुल देहरादून मे प्रवेश

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय देहरादून गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय से सम्बन्धित अनिवार्य आश्रम पद्धति पर चलने वाली अखिल भारतीय शिक्षण सस्था है। प्रथम कक्षा से १४ कक्षा तक शिक्षा दी जाती है। उच्च प्रशिक्षित शिक्षिका वर्ग, पुस्तकालय, नैतिक शिक्षा, चित्रकला, सगीत, गृहविज्ञान, सांस्कृतिक गतिविधि एव खेल कूद का सुन्दर प्रबन्ध इस सस्था की आधारभूत विशेषताये है।

निर्धन तथा सुयोग्य छात्राओ के लिए छात्रवृत्ति देने की भी सुविधा है। मैट्रिक एव इण्टर उत्तीर्ण कन्यायें भी प्रथम वर्ष तथा तृतीय वर्ष मे प्रविष्ट हो सकती है। शिक्षा नि शुल्क दी जाती है।

१ जुलाई से नवीन कन्याओ का दाखिला है। प्रवेश के इच्छुक महानुभाव २) भेजकर नियमावली मगा सकते हैं।

—दमयन्ती कपूर, प्रिंसिपल, कन्या गुरुकुल महाविद्यालय देहरादून।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रकाशन

सत्यार्थप्रकाश सन्देश (हिन्दी)	१.००
,, ,, अंग्रेजी	समाप्त
आर्य सन्देश-महासम्मेलन विशेषांक	०.६०
पादरी भाग गया— ओम्प्रकाश त्यागी	०.३०
स्वामी श्रद्धानन्द-बलिदान अर्द्ध शताब्दी स्मारिका	६.००
सत्यार्थप्रकाश शताब्दी समारोह स्मारिका	६.००

सम्पर्क करें—
अधिष्ठाता प्रकाशन विभाग
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१

卐 'आर्यसन्देश' के
स्वयं ग्राहक बनें—
दूसरो को बनाएं

卐 आर्यसमाज के सदस्य
स्वयं बनें—
दूसरो को बनाइए

卐 हिन्दी-संस्कृत भाषा स्वय पढ़
दूसरो को भी पढ़ाइए—

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए श्री सरदारी लाल वर्मा द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा वाटिका प्रेस २५७४, रघुबरपुरी नं०-२ गांधी नगर दिल्ली ३१ में मुद्रित कार्यालय १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली फोन ३१०१५० ।

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक मुखपत्र

एक प्रति ३५ पैसे   वार्षिक १५ रुपये   वर्ष ६   अंक ३६   रविवार ४ जुलाई   २० आषाढ़ वि० २०३९   दयानन्दाब्द—१५८

सारे देश में संविधान सम्मत एक कानून लागू किया जाए

भारत की अखण्डता और स्वतन्त्रता की रक्षा के लिए आर्यसमाज कृतसंकल्प

हैदराबाद में क्रान्तिदिवस और धर्मरक्षा महाभियान सम्पन्न :

हैदराबाद। आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश के तत्वावधान मे आयोजित क्रान्ति दिवस और धर्म रक्षा महाभियान सम्मेलन सफलतापूर्वक सम्पन्न हुए। राजार्य सभा के निर्देशन मे 'समान नागरिक सहिता' विषयक विचार गोष्ठी का उद्घाटन करते हुए सार्वदेशिक सभा के वरिष्ठ उपप्रधान प० वन्देमातरम् रामचन्द्रराव ने इस बात पर जोर दिया कि सरकार को सविधान सम्मत कानून को पूरे देश में सब प्रदेशों में पर समान रूप से लागू करना चाहिए।'

धर्मरक्षा महाभियान सम्मेलन में प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले ने भाषण देते हुए सार्वदेशिक सभा के कहा—'आर्यसमाज भारत की अखडता एव स्वतन्त्रता की सुरक्षा के लिए सदा सन्नद्ध रहा है। वह सदा बलिदान देने के लिए भी तैयार है और आगे भी रहेगा। किसी से शत्रुता, वैर या द्वेषभाव बरतना हमारी परम्परा नहीं है। हमारा तो सिद्धात है कि सबको मैत्री भाव से देखे, परन्तु मातृभूमि के सम्मान और गौरव की रक्षा करने के लिए हम किसी को भी कोई रियायत देने को तैयार नहीं हैं। धर्म रक्षा भारतीय सस्कृति और सभ्यता की रक्षा है, आर्यसमाज भारतीय सिद्धातो और सस्कृति को तिलाजलि देकर समझौता नही कर सकता। सम्मेलन की अध्यक्षता दिल्ली के आर्यनेता श्री चितामणि ने की।

इस अवसर पर श्री रामचन्द्र राव कल्याणी, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश की अध्यक्षता मे आयोजित क्रांति दिवस की सभा मे श्री वानप्रस्थ डा० मित्रजीवन, डा० अमरेश आर्य आदि ने अपने विचार प्रकट किए।

आर्यसमाज शिमला की शताब्दी

९ से १२ सितम्बर तक मनाई जाएगी

शिमला। आर्यसमाज लोअर बाजार, शिमला-१ को स्थापित हुए सौ वर्ष होने जा रहे हैं। आर्यसमाज शिमला ने शताब्दी समारोह को भव्य रूप मे ९ से १२ सितम्बर १९८२ तक मनाने का निर्णय किया है। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सरदारीलाल वर्मा और सभा मन्त्री प्रो० भारतमित्र शास्त्री ने दिल्ली की आर्य जनता से अनुरोध किया है कि आर्यसमाज शिमला शताब्दी समारोह में अधिक से अधिक सज्जन सम्मिलित हो, और अपने सम्मिलित होने की सूचना सभा कार्यालय मे १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली-१ के पते पर भेज दें। जिससे शिमला आने के लिए बस द्वारा सामूहिक व्यवस्था की जा सके।

'देश में समान कानून हो' मांग के लिए किया गया आर्यसमाजियों का अनशन समाप्त

१० जून से प० रुद्रदेव जी की अध्यक्षता मे २५ आर्यवीरो ने हैदराबाद मे निम्न बुराइयो को दूर करने के लिए अनशन किया था। १ मुसलमानो के लिए पृथक कानून है। २. हैदराबाद मे अनधिकृत निर्माण, पेडो और पहाडो पर सुभानी के झण्डे फहराए जाते हैं। ३. हिन्दुओ की बारातो और जुलूसो पर हमले होते हैं और ४ सविधान की ऐसी सभी धाराए समाप्त कर दी जाए जिनसे भारतीय जनता विभक्त होती है।

१३ जून के दिन सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री रामगोपाल वानप्रस्थ द्वारा आश्वासन दिए जाने पर कि इस सम्बन्ध मे उचित कार्यवाही के लिए सार्वदेशिक सभा भारत सरकार से माग करेगी, यह अनशन समाप्त कर दिया गया।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का वार्षिक अधिवेशन २२ अगस्त को होगा

सम्बद्ध आर्यसमाजें प्रतिनिधियों का ब्योरा, दशांश वेदप्रचार के लिए राशि और आर्यसन्देश का चन्दा भेजें

नई दिल्ली। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरग सभा ने रविवार २७ जून के दिन अपनी बैठक में निर्णय किया है कि सभा का आगामी वार्षिक साधारण अधिवेशन २२ अगस्त १९८२ के दिन १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली मे होगा। सभा के संविधान के अनुसार इस आगामी अधिवेशन में सम्बन्धित उन्हीं आर्यसमाजों के ही प्रतिनिधि भाग ले सकेंगे जिन्हें इस वर्ष सम्बद्ध आर्यसमाजें अपने प्रतिनिधि के रूप में तीन वर्ष के लिए चुनकर भेजेंगी।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सरदारी लाल वर्मा ने दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों से अनुरोध किया है कि वे नियमानुसार निर्वाचित प्रतिनिधियों के फार्म भरवा कर तुरन्त सभा कार्यालय को भिजवा दें। सम्बद्ध समाजों को विधान के अनुसार वर्ष भर के सदस्यों से प्राप्त सदस्यता शुल्क का दशांश, वेदप्रचार के लिए अधिक से अधिक धनराशि एवं सभा के मुखपत्र आर्य सदेश का वार्षिक शुल्क अनिवार्य रूप से देय होता है। सभा प्रधानजी ने सम्बद्ध आर्यसमाजों से तुरन्त प्रतिनिधि फार्म, दशांश, वेदप्रचार और आर्यसंदेश की राशि भिजवाने का अनुरोध किया है।

बम्बई के प्रमुख आर्यनेता श्री अमीन का स्वर्गवास

बम्बई की समस्त आर्यसस्थाओं की ओर से श्रद्धाजलि

बम्बई। २१ जून के दिन फोर्ट आर्यसमाज मे बम्बई की समस्त आर्यसमाजो की एक सम्मिलित शोक सभा मे बम्बई की समस्त आर्य सभाओ, आर्य सस्थाओ, आर्य नेताओ एव कार्यकर्त्ताओ ने आर्यसमाज फोर्ट के कर्मठ प्रधान बम्बई नगर के प्रसिद्ध सामाजिक कार्यकर्त्ता श्री एम के अमीन की १८ जून के दिन हुई आकस्मिक मृत्यु पर हार्दिक शोक अभिव्यक्त किया। अमीन जी ने ४५ वर्ष का जीवन काल आर्यसमाज को समर्पित किया। वह फोर्ट आर्यसमाज के सस्थापक प्रधान और मन्त्री रहे। उन्होने आर्य वैभव व्यायाम शाला, आर्य वीरागना दल, झण्डावाहिका की स्थापना और योग्य सचालन किया। १९७७ मे फोर्ट आर्यसमाज की स्वर्ण जयन्ती मना कर पश्चिमी भारत मे आर्यसमाज का गौरव बढ़ाया ? उनके ही प्रयत्नो से फोर्ट मार्केट क्षेत्र का नाम स्वामी दयानन्द सरस्वती चौक रखा गया था। अमीन जी का सम्पूर्ण जीवन समाजसेवा को ही समर्पित रहा और वह अपने पीछे पत्नी सुमित्रा अमीन और दो पुत्रियां कु० अमिता और प्रीति छोड गए हैं।

सम्पादक—नरेन्द्र विद्यावाचस्पति   व्यवस्थापक—प्रद्युम्नलाल तलवाड़

वेद-मनन

सदा आगे बढ़ने वाला ही सौभाग्य प्राप्त करेगा

—मनोहर विद्यालकार

उत्क्राम महते सौभगायास्मादास्थानाद् द्रविणोदा वाजिन्।
वय स्याम सुमतौ पृथिव्या अग्नि खनन्त उपस्थेऽस्या ॥ यजु ११.२१

ऋषि —मयोभूः। देवता—द्रविणोदा। छन्द—आर्षी पङ्क्ति।

शब्दार्थ—(हे द्रविणोदा वाजिन) गतिशील धन का दान करने वाले समृद्धिशालिन् तथा वेगवन (अस्मात् आस्थानात्) वर्तमान स्थिति से (उत्क्राम महते सौभगाय) ऊपर उठ और महान् सौभाग्य अर्थात् सब प्रकार की समृद्धि को प्राप्त कर, और हमारे लिए प्रेरक बन, जिससे (वयम्) हम तेरे अनुयायी भी (पृथिव्या) अपनी आधारभूमि से (अग्नि खनन्त) हितकर तथा रमणीय वीर्य तेज और ओज को प्राप्त करते हुए और परमात्मा को खोजते हुए (अस्याः उपस्थे) इस आधार रूप जनता के मध्य मे, तथा (सुमतौ स्याम) इसकी सुगति मे रहे।

निष्कर्ष—महान् सौभग अर्थात् सब प्रकार से समृद्ध होने के लिए, वर्तमान स्थिति से सन्तुष्ट न होकर सदा आगे बढने का प्रयत्न करना चाहिए।

समृद्धि स्थिर तभी रह सकती है जब अपनी आधारभूमि की अन्तरगता और सुमति या सहयोग सदा प्राप्त हो। जो लोग उच्चपद पर पहुच कर, निम्न सहयोगियो से सम्बन्ध-विच्छेद कर लेते हैं, और पुराने साथियो का सहयोग मिलना, रुक जाता है, और परिणामतः पतन हो जाता है।

अग्नि के भिन्न-भिन्न रूपो—रत्न, वीर्य, तेज-ओज, सकल्प तथा अग्नि विद्या की प्राप्ति के इच्छुक व्यक्ति को (अग्नि) परमात्मा का सदा ध्यान रखना चाहिए। परमात्मा की कृपा के बिना कोई उत्तम पदार्थ या गुण नहीं मिलता है।

विशेष—जो मनुष्य दूसरो के लिए कल्याण की भावना रखता है (मयोभूः) वही उनके लिए अपने द्रविण (धन, बल, या ज्ञान) का दान कर सकता है। स्वार्थी के लिए दान करना कठिन होता है। मयोभू और द्रविणोदा बनने के लिए मनुष्य को अपनी दृष्टि आर्षी अर्थात् दूर दृष्टि तथा गतिशीलता से युक्त बनानी चाहिए, और उसे परिपक्व तथा अभिव्यक्त (पक्ति) करते रहना चाहिए।

अर्थपोषक प्रमाण—इय (पृथिवी) ह्यग्नि, माश ३-१-१-१४; अग्नि—वीर्यं वाऽग्नि। गो० २-६-७ ओजो वाऽग्नि। काठ २०-११।, अग्निर्ब्रह्म। काठ ८-४ ब्रह्मवर्चस वाऽग्नि। मा.श १-३-३-१६; अग्निर्वा भर्ग। माश १२-३-८ अग्नि खनन्त परमेश्वर ध्यायन्त। भग० तस्याग्नेः रेतः परापतत् तद्धिरण्यमभवत्। तै० स १-१-३-८; खनन्त,—खनु अवधारणे। द्रविण धननामसु। नि० २-१० बलनामसु। नि० २-९ मय सुखनाम। नि० ३-६; आर्षी—ऋषयनो, ऋषिर्दर्शनात-तत्सबन्धिनी आर्षी पक्ति—पच् विस्तारवचने, व्यक्ति करणे च।

५२२, ईश्वरभवन, खारी बावडी, दिल्ली-६

आर्यसमाज मोडल बस्ती शीदीपुरा का वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज मोडल बस्ती शीदीपुरा, दिल्ली-५ का ३८ वा वार्षिकोत्सव ३-४ जुलाई, १९८२ को मनाया जाएगा। इस अवसर पर वेद, धर्मरक्षा और महिला सम्मेलन आयोजित किए जा रहे है। इस अवसर पर प० जयप्रकाश, डा अमरीश, डा० आनन्द सुमन, सार्वदेशिक सभा के प्रधान ला० रामगोपाल शालवाले आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के प्रधान महाशय धर्मपाल, नजीबाबाद के स्वामी वेदमुनि जी, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सरदारीलाल वर्मा, डा. रघुवीर वेदालकार, प्रो० प्रशान्त कुमार वेदालकार आदि आर्य नेता एव विद्वान पधारेंगे। वार्षिक उत्सव मे पूर्व सोमवार २८ जून से शुक्रवार २ जुलाई तक रात्रि ८ वजे से १० वजे तक गऊशाला बारादरी चौक मे महीपाल आर्य के सयोजन मे स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती और प० सत्यदेव स्नातक के मनोहर भजनोपदेश हुआ करेंगे।

शुद्धि-समाचार

आर्यसमाज जमशेदपुर द्वारा मरोसीयन सिह के प्रार्थना पत्र के आधार पर, जिसमे उन्होने ईसाई धर्म त्याग कर सहर्ष वैदिक धर्म (हिन्दू धर्म) ग्रहण करने की इच्छा व्यक्त की थी, को शुद्ध कर वैदिक धर्म मे प्रस्तुत किया गया। इनका नाम मरोसीयन सिह से बदल कर मालती देवी रखा गया।

लोक-चिन्तन

इण्डिया बनाम भारत

—डा० विजय द्विवेदी

इण्डिया देट इज नाट भारत। भारत एक बहुत बड़ा, बहुत प्राचीन देश है। ऋषि मुनियो, साधु सन्तों-वेद-पुराणो, भक्त भगवानो का देश है। भारतीय जनता विविध साधनाओं की सर्वोत्तम परिणति की देन है। भारत की आत्मा गांवो मे निवास करती है, भारत माता ग्रामवासिनी है। गूढ-ज्ञान गीता प्रकाशिनी है। भारत-पुत्र धरती-पुत्र हैं, धूल-माटी मे पैदा होते हैं, धूल-माटी मे पलते हैं और माटी को सोना बनाकर माटी मे ही मिल जाते हैं। भारतवासी सीधे-सरल-निरीह किसान हैं। जो तोडकर खटते हैं, रूखी-सूखी खाते हैं और रात को लम्बी तान कर सोते हैं। भारतवासी पराधीन हैं।

इण्डिया एक स्वाधीन देश है। बहुत बडा पर बहुत नया देश है। कुल दो-ढाई सौ वर्षों का इतिहास है इसका। लार्ड, लीडर, लोकतन्त्र का बनाया-बसाया है। विज्ञान की सर्वोत्तम उपलब्धियो में बना-ठना है। इण्डिया की आत्मा शहरो मे निवास करती है, मदर इण्डिया दिल्लीवासिनी है (इन्दिरा इज इण्डिया)। इण्डिया की भाषा अग्रेजी है, सस्कृति समाजवादी और धर्म 'निरपेक्ष' है। इडियन सन्ज, सीजर सन्स है। अस्पतालो मे आपरेशन से पैदा होते हैं, स्नो-पाउडर मे पलते हैं और सोने को माटी बनाकर इतिहास मे मिल जाते हैं। इण्डियन्स के लिए काम हराम है, खाना पुण्य काम है। सत्ता इनकी सहचरी, सुख सतति और शोषण सहायक है। इण्डियन्स स्वाधीन हैं।

भारत इण्डिया का एक औपनिवेशिक राज्य है जैसे कभी इण्डिया ब्रिटेन की कालोनी था। भारतवासी खटते हैं, इण्डियावासी खाते हैं। भारतवासी रोते हैं, इण्डियावासी हसते हैं। भारतवासी गरीब हैं, इण्डियावासी गरीबी पोषक। भारतीय गवार हैं, इण्डियन नागर। इण्डिया की सरकार है, सरकार के मन्त्री हैं, मन्त्री के तन्त्री हैं, तन्त्री के यन्त्री और यन्त्री के यन्त्र हैं, जिससे वे गरीब भारतीयों का तेल निकाल कर छछुन्दरो के सिर की चम्पी करते हैं। इसलिए महाराष्ट्र के किसान नेता श्री शरद जोशी भारतवासियो को सलाह दे रहे हैं कि वे इण्डिया के विरुद्ध युद्ध छेड दे। उनका राशन-पानी बन्द कर दे, उनसे जंत्र-पाती खरीदना स्थगित कर दे। तब इण्डियावासियो को अपने आप अक्ल आ जाएगी। भाई शरद जोशी की बाते माननीय हैं, परन्तु इन्हे माननीय बनाने के मार्ग मे एक बहुत बडी बाधा है। इन्डिया की जनसंख्या मे प्रवासी भारतीयो की भागेदारी आधी है। यह बाधा परिस्थितियोवश पिछले दो सौ साल पहले पैदा हुई। तब भारत और इण्डिया दोनो ही पराधीन थे। भारतीयो मे जो ज्यादा सयाने थे, इण्डियन बन गये अपने लाभालाभ को सामने रखकर देश के लिए योजनाए बनाई और शेष भारतीयो को भी अपने सांचे मे ढाल लिया। लडाई छिड जाने पर उनका क्या होगा? क्या भाई शरद जोशी उनके साथ नादिरशाही व्यवहार करेगे? भाई जी, यह तो धर्म-प्राण भारतीय जन सस्कृति के अनुकूल नही होगा। अत कोई ऐसा रास्ता बताए जिससे सांप मरे और लाठी भी न टूटे। प्रवासी भारतीय होने के नाते यह अनुरोध है। बाकी सब ठीक है।

पूर्णचन्द्र महाविद्यालय, बारिपदा (उडीसा)

प्रवेश सूचना

गुरुकुल कांगड़ी विद्यालय हरिद्वार

गुरुकुल कांगडी विद्यालय, हरिद्वार गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय से सम्बन्धित अनिवार्य आश्रम पद्धति पर चलने वाली अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त शिक्षण सस्था है। स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा स्थापित वैदिक शिक्षा मूल्यों तथा आधुनिक विज्ञान बोध से सवलित यहाँ का पाठ्यक्रम छात्र के सर्वांगीण विकास मे रचनात्मक भूमिका निभा रहा है। प्रथम कक्षा से दशम् कक्षा तक की शिक्षा का सर्वोत्तम प्रबन्ध है।

हरा-भरा खुला परिसर, योगासनो/जिमनास्टिक और तैराकी का प्रशिक्षण, खेल कूद की सुविधाए, पत्रिका सम्पादन, कलात्मक रुचि का संवर्द्धन, सांस्कृतिक यात्राओं की व्यवस्था तथा सुयोग्य, अनुशासित और चरित्रनिष्ठ आश्रमाध्यक्षो का सरक्षण अन्य शिक्षा सस्थानो की अपेक्षा यहाँ की उल्लेखनीय विशेषता है। अनुभवी और प्रशिक्षित अध्यापक अध्ययन-अध्यापन के अतिरिक्त छात्र के बहुमुखी व्यक्तित्व के निर्माण मे तत्पर रहते हैं।

प्रथम जुलाई, ८२ से प्रवेश आरम्भ है। स्थान सीमित हैं, इच्छुक महानुभाव ५/ भेजकर प्रवेश पत्र तथा नियमावली मगा सकते हैं।

सम्पर्क करें—जितेन्द्र सहायक मुख्याधिष्ठाता, गुरुकुल कांगडी, हरिद्वार।

ब्रह्मचर्य की महत्ता

ओ३म् ब्रह्मचर्येण तपसा देवा मृत्युमपाघ्नत ।
इन्द्रो ह ब्रह्मचर्येण देवेभ्यः स्वराभरत् ॥ अथर्व ११.५.१९

ब्रह्मचर्य और तप के प्रभाव से विद्वज्जन मृत्यु को दूर भगा देते हैं। इन्द्र संयमी मानव इस ब्रह्मचर्य द्वारा देवों अथवा इन्द्रियों में तेज और सुख परिपूर्ण कर देते हैं।

ओ३म्
आर्य सन्देश

जैसी नीयत वैसी बरकत

बौद्ध जातक और भारत के मुगल बादशाह के दो वृत्तान्त भारतीय साहित्य में उपलब्ध हैं। एक बार काशी के महाराजा हिमालय के समीप घने जंगल में पहुंचे, वहाँ एक मुनि तपस्या कर रहे थे। आश्रम में राजा के पहुंचने पर मुनि ने राजा का स्वागत किया। आश्रम की वाटिका से सुस्वादु रसदार फल दिए। एक फल के रस से ही राजा तृप्त हो गया। वह आश्रम से लौटा तो उसके मन में आया कि इन वनवासी मुनियों के आश्रमों पर तो कोई कर नहीं है। यदि इन पर कर लगाया जाए तो राज्य को अधिक आय हो सकती है। कुछ महीनों बाद राजा पुनः उसी मुनि के आश्रम में पहुंचे। मुनि ने पुनः राजा का फलों से सत्कार किया, परन्तु इस बार आश्रम के फलों से पहले जैसा रस प्राप्त नहीं हुआ। काशी के महाराजा ने इस परिवर्तन के लिए कारण पूछा। मुनि एक क्षण ठिठके, फिर बोले—लगता है पहली बार प्रजा के लिए राजा की नीयत अच्छी थी, परन्तु बाद में उनकी नीयत बदल गई, जिससे फलों का रस या बरकत भी पहले जैसी नहीं रही। लगभग इसी तरह की घटना दिल्ली के मुगल बादशाह की आत्मकथा में भी दोहराई गई है। मुगल बादशाह कड़ी धूप में मध्य भारत के एक किसान के घर पहुंचे। किसान ने उनका स्वागत किया। उसने एक अनार का रस एक पात्र में निकाल कर बादशाह को दिया। एक अनार से ही बादशाह का प्याला भर गया।

किसान के घर से निकलते ही बादशाह की नीयत बदल गई। वह सोचने लगा कि यहाँ किसान तो बहुत खुशहाल हैं, उन पर कोई कर नहीं है। इन पर कर लगना ही चाहिए। लम्बे समय के बाद बादशाह एक बार फिर उसी किसान के दरवाजे पर पहुंचा, किसान ने उनका फिर स्वागत किया, परन्तु इस बार कई अनारों का रस निकालने के बावजूद पहले जितना रस निकला। बादशाह को अचम्भा हुआ। उसने इस फर्क के लिए बादशाह की नीयत को कारण कहा। यह बात सच्ची है। महाभारत में उल्लेख है कि एक बार महाराजा युधिष्ठिर ने भीष्म-पितामह से पूछा था कि काल समाज को बनाता है अथवा राजा ही समाज का निर्माण करता है? इस जिज्ञासा के उत्तर में भीष्म पितामह ने उत्तर दिया था—'कालो वा कारणं राज्ञो राजा वा कालकारणम्। इति ते संशयो माभूत् राजा कालस्य कारणम्।' हे युधिष्ठिर, तुम्हें इस बारे में कोई सन्देह नहीं होना चाहिए कि शासन का भला-बुरा होना काल या समय पर अवलम्बित नहीं होता, प्रत्युत राजा ही काल, युग और समाज का निर्माण करता है।

आज देश में व्याप्त दुरवस्था भ्रष्टाचार, एवं अनैतिकता का भी आज वस्तुतः यही कारण है कि शासकों को जनकल्याण की अपेक्षा अपनी स्थिति को सुदृढ़ करने की एक चिन्ता है। कश्मीर के विधायक और मुख्यमन्त्री अपनी स्थिति मजबूत करना चाहते हैं। तमिलनाडु के विधायक और शासन अपने प्रदेश को ऊंचा करना चाहते हैं। पश्चिम बंगाल की वामपंथी सरकार देश को भूल गई है, वह अपनी पार्टी की छवि ही मजबूत करना चाहती है। देश में अनेक राजनीतिक दल हैं, सब गुट राजनीतिक स्वार्थों के सम्मुख बड़े राष्ट्रीय लक्ष्य को भूल गए हैं। जब देश के छोटे-बड़े सभी नेता और नागरिक समाज, राष्ट्र को भूलकर स्वार्थान्ध हो रहे हों तो देश में बरकत या उन्नति कैसे सम्भव है? यदि हम वस्तुतः समाज, राष्ट्र और सामान्य मानव की समुन्नति करना चाहते हैं तो हमें मानव की कथनी-करनी को एक ओर उच्चतर करना होगा। जब तक हमारी भावना या नीयत नहीं सुधरती, तब तक राष्ट्रहित और कल्याण सम्भव नहीं है।

चिट्ठी-पत्री

आर्य शिक्षण-संस्थाओं शोध-संस्थाओं के संचालकों से निवेदन

सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में आर्यसमाज का जो विस्तृत इतिहास सात भागों में तैयार किया जा रहा है, उसका पहला भाग प्रकाशित हो चुका है। अब उसके दूसरे और तीसरे भागों का लिखना प्रारम्भ हो गया है, और उनके लिए सामग्री एकत्र की जा रही है। आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार तथा विस्तार पर 'इतिहास' के दूसरे भाग में प्रकाश डाला जाएगा शिक्षा, साहित्य एवं ज्ञान के क्षेत्रों में आर्यसमाज के कार्यकलाप पर तीसरे भाग में।

आर्यसमाज द्वारा बहुत-सी शिक्षण-संस्थाओं (डी० ए० वी० स्कूल, डी० ए० वी० कालिज, गुरुकुल, कन्या गुरुकुल, आर्य स्कूल व कालिज, पाठशालाएं आदि) स्थापित हैं, जिनकी संख्या एक हजार के लगभग है और जिसमें लाखों विद्यार्थी शिक्षा पा रहे हैं। केन्या, फिजी, मारीशस, सुरीनाम आदि विदेशों में भी आर्य-समाज में बहुत-से शिक्षणालय स्थापित किए हैं। इन आर्य शिक्षण-संस्थाओं की कुछ विशेषताएं हैं। इनका संचालन कतिपय उद्देश्यों तथा आदर्शों को सम्मुख रख कर किया जा रहा है। इनमें पढ़ने वाले विद्यार्थियों को अपने धर्म तथा संस्कृति से परिचय प्राप्त करने का अवसर प्राप्त होता है, और आधुनिक युग की भौतिकवादी प्रवृत्तियों के प्रभाव से अनेक अंशों में बचे रहते हैं।

'आर्यसमाज का इतिहास' के तीसरे भाग में आर्य विद्यालयों के कार्य-कलापों का विवेचनात्मक दृष्टि से मूल्यांकन किया जाएगा और साथ ही यह प्रदर्शित किया जाएगा कि भारत तथा अन्य देशों के जनजीवन को उन्होंने किस प्रकार और किस रूप में प्रभावित किया है। यह तभी समुचित रूप में किया जा सकेगा जबकि देश-विदेश में विद्यमान सब आर्य शिक्षण-संस्थाओं का पूरा-पूरा विवरण हमें प्राप्त हो जाए। ये शिक्षण-संस्थाएं कब स्थापित हुईं, इनके संचालक कौन-कौन महानुभाव रहे, इनके कार्य-कलाप का किस प्रकार विस्तार होता गया, किन दानियों ने इसके लिए दान दिया, वर्तमान समय में इसकी क्या दशा है, कितने विद्यार्थी इनमें शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं, अध्यापक कितने हैं, कितनी वार्षिक आय-व्यय है, और इनके द्वारा आर्यसमाज के प्रचार प्रसार तथा प्रगति में क्या योगदान किया जा रहा है और यह पहले किया गया है—इन बातों के सम्बन्ध में जो जानकारी आप दे सकें, शीघ्र भेजने की कृपा करें। आपकी संस्था के सम्बन्ध में जो भी साहित्य उपलब्ध हो, जो वार्षिक रिपोर्ट अब तक प्रकाशित हुई हो, और प्रतिष्ठित सज्जनों, विद्वानों तथा देश के नेताओं ने उनके विषय में समय-समय पर जो सम्मतियाँ दी हों, वन सबके प्राप्त हो जाने पर ही हमारे लिए आपकी संस्था का रूप से विवरण दे सकना और उनके कार्य-कलापों का समुचित रूप में मूल्यांकन कर सकना सम्भव हो सकेगा।

— डा० सत्यकेत विद्यालंकार, निदेशक, आर्यसमाज,
स्वाध्याय मण्डल ए-१।३२ सफदरजंग एन्क्लेव, नई दिल्ली-२९

योग शिक्षा मानव मात्र के लिए हितकर

हरिद्वार। गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर में योग-प्रशिक्षण-शिविर का समापन करते हुए महात्मा आर्यभिक्षु ने योग को विश्व कल्याण का मन्त्र बताया। योग से ही मनुष्य मात्र की शारीरिक, मानसिक और आत्मिक उन्नति हो सकती है। प्राचीन भारतीय आचार्यों द्वारा प्रदत्त यह विद्या मानव-मात्र के लिए कल्याणकारी है। यह केवल शारीरिक उन्नति का ही साधन नहीं है, अपितु मनुष्य के सर्वांगीण विकास के लिए अनिवार्य है। योग-शिक्षा बालक वृद्ध नर और नारी सभी के लिए समान रूप से हितकर है।

गुरुकुल महाविद्यालय में १ जून से १५ जून तक आयोजित योग-शिविर में आसन प्राणायाम, मुद्राएं तथा ध्यान की अनेक विधियों का प्रशिक्षण दिया गया। इसी अवसर पर संस्कृत-सम्भाषण-प्रशिक्षण-शिविर का भी आयोजन किया गया था। डा० कपिलदेव द्विवेदी, कुलपति के संरक्षण में इन दोनों शिविरों का आयोजन किया गया था। श्री डा० देवव्रत आचार्य, डा० बलवीर आचार्य और श्री सत्यवीर आचार्य ने यौगिक क्रियाओं की शिक्षा दी।

प्रवेश-सूचना

श्रीमद् दयानन्द गुरुकुल संस्कृत महाविद्यालय खेड़ाखुर्द, दिल्ली-८२ में छात्रों का प्रवेश प्रारम्भ है। यह महाविद्यालय सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय से प्रथमा से आचार्य परीक्षा पर्यन्त मान्यता प्राप्त है।

संस्कृत, व्याकरण, दर्शन, साहित्य यथा विज्ञान, गणित, अंग्रेजी आदि का सुन्दर पठन-पाठन तथा आवास एवं भोजन की उत्तम व्यवस्था है। निर्धन तथा मेधावी छात्रों को छात्रवृत्ति एवं सहायता दी जाती है। प्रवेशार्थी शीघ्र सम्पर्क करें।

—प्रधानाचार्य

सत्यार्थप्रकाश का चमत्कारी प्रभाव

महर्षि दयानन्द सरस्वती का अनुपम ज्ञानालोक 'सत्यार्थ प्रकाश' कई दृष्टियो मे अनुपम है। अपने नाम, उद्देश्य तथा उपादेयता की दृष्टि से तो यह अनुपम है ही, प्रभाव की दृष्टि से भी यह पूर्णतया अनुपम है। इस ग्रन्थ का चमत्कारी प्रभाव मानव जीवन के प्रत्येक पहलू पर पड़ा है और उसे सर्वत्र सरलता से ढूढा जा सकता है, पर महर्षि के इस अमर ग्रन्थ के प्रभाव का यथार्थ मूल्यांकन कर पाना सरल नही। उगते सूर्य की किरणे किस पर क्या एव कैसा प्रभाव डालती है इसका यथार्थ अनुमान कौन कर सकता है ? सूर्य के उदय के साथ जहां से अन्धकार तिरोहित हो जाता है, और प्रकाश सर्वत्र व्याप्त हो जाता है। पर सूर्य के उदय के साथ जहां संसार आँखें खोलता है वहां कुछ ऐसे भी तो जीव-जन्तु है कि जो उसके प्रकाश को सहन नहीं कर सकने एव उन्हे बलात् अपनी आँखे मूद लेनी पड़ती हैं। सूर्य की किरणें जहाँ असख्य पेड़-पौधो के लिए जीवन-दायिनी शक्ति लेकर आती हैं, वहां दूसरी ओर कतिपय रुण्ड-मुण्ड पेडो के लिए वह काल बनकर आती हैं।

जैसे भौतिक सूर्य के प्रभाव का वर्णन करना अति दुष्कर है, वैसे ही इस ज्ञान सूर्य के प्रभाव का वर्णन करना भी अत्यन्त दुष्कर है। सत्यार्थप्रकाश रूपी भानु के उदय होने से प्रकाश-प्रिय लोगो के ज्ञान चक्षु खुल गए, किंतु अधकारप्रिय लोगो को अपनी आँखें मूदनी पड़ी। उन लोगो ने इस ज्ञान-सूर्य को भर पेट कोसना प्रारम्भ कर दिया। कोई कोई तो इस पर कीचड ही उछालने लग गया किन्तु जैसे सूर्य से आँख मिलाने की सामर्थ्य किसी मे नही, वैसे ही इस ज्ञान सूर्य के सम्मुख भी किसी की आंख नहीं उठ सकी। सत्यार्थप्रकाश पर प्रतिबन्ध लगाने के घृणित कार्यों के अतिरिक्त इसके विरोध मे कई एक ग्रथ लिख डाले गए। पर बादल चाहे कितने ही घने क्यो न हो, एव कितने ही व्यापक क्षेत्र मे सुविस्तृत क्यो न हो, वे सूर्य को सदा सदा के लिए ढाक नही सकते। ऐसे ही विरोधियो के यह कार्य, सत्यार्थप्रकाश के प्रभाव को क्षीण नही कर सके।

निष्पक्ष एव व्यापक दृष्टि

'सत्यार्थप्रकाश' के प्रभाव को आकने के लिए निष्पक्ष किन्तु व्यापक दृष्टि की आवश्यकता है। सत्यार्थप्रकाश के प्रभाव की समीक्षा की थी आर्यसमाज के मूर्धन्य सन्यासी पूज्यपाद श्री स्वामी वेदानन्द जी ने। उन्होने सत्यार्थप्रकाश का प्रभाव' नामक एक स्वतन्त्र ग्रन्थ की रचना की थी जिसकी भूमिका एक अन्य विद्वान सन्यासी ने लिखी थी। वह थे पूज्य स्वामी विज्ञानानन्द जी महाराज। उस ग्रथ की भूमिका मे श्री स्वामी विज्ञानानन्द जी महाराज लिखते हैं कि—'सत्यार्थप्रकाश के लिखे जाने के ठीक अस्सी वर्ष पश्चात् महर्षि के अनन्य भक्त महा-विद्वान पूज्यपाद श्री स्वामी वेदानन्द तीर्थ ने अपने देहावसान से कुछ दिन ही पूर्व यह 'सत्यार्थप्रकाश का प्रभाव' नामक प्रबध लिखा था। 'सत्यार्थप्रकाश का प्रभाव' एक प्रतिवेदन है इस बात का कि गत अस्सी वर्ष मे स्वामी दयानन्द अनुमोदित ब्रह्मा से लेकर जैमुनि मुनि पर्यन्त (जिन्हे प्रबध लेखक ने विरजानन्द मुनि पर्यन्त लिखा है) महाशय महर्षियो के मन्तव्य कहाँ तक सर्वत्र भूगोल मे प्रवृत्त हो पाये हैं। आर्यसमाज उन सब विधर्मी लेखको का आभारी है जिन्होने सत्यार्थ-प्रकाश' मे की गई समीक्षा की सुखद छाया मे उत्साहपूर्वक अनृत को त्याग कर सत्य को ढूढने का प्रयत्न किया है और इस प्रकार भिन्न-भिन्न मतमतान्तरो मे बटी हुई मानव जाति के विभिन्न समुदायो को एक दूसरे के समीप लाने का प्रयास किया है। (प्रस्तावना, सत्यार्थप्रकाश का प्रभाव)।

सत्यार्थप्रकाश मे सत्यासत्य के निर्णय हेतु निष्पक्ष भाव से अन्य मतमतान्तरो की जो आलोचना की गई है, वह जहा सुधी पाठको को सत्यासत्य के निर्णय करने मे सहायक होती है, वहाँ उन मतमतान्तरो के लिए बडी ही लाभदायक सिद्ध हुई है। वे सत्यार्थप्रकाश मे की गई आलोचनाओं के कारण अपने सिद्धातों मन्तव्यो एव मान्यताओं की नवीन व्याख्यायें करने लगे हैं एव यथासम्भव उन्हे बुद्धिसम्मत एव तर्कसम्मत बनाने का प्रयत्न करने लगे हैं किन्तु जैसे स्वर्ण पर मैल चढ जाने से उसे भट्टी मे तपाकर कुन्दन बनाया जा सकता है किन्तु कोयले को कुन्दन बनते आज तक किसी ने नही देखा। भले ही अग्नि मे पडकर थोडी देर को उसकी कालिमा जाती रहे, किन्तु स्वर्ण की-सी दीप्ति उसमे कभी भी नही आ सकती। ठीक इसी प्रकार असत्य सिद्धान्तों की व्याख्याए चाहे जितनी बदल-बदल कर क्यो न की जाए, असत्य तो असत्य ही रहता है। उसे तो त्यागने मे ही भला है। तनिक सोचे तो सही कि लीद पर चाँदी का वर्क चढा देने से वह मिठाई थोड़े ही बन जाती है। जो भी हो 'सत्यार्थप्रकाश' का अपना प्रभाव तो कार्य करेगा ही। वस्तुत इसी की सुखद छाया मे नवीन तर्कमूलक व्याख्याए आज सोची जाने लगी हैं। और सत्य तो यह है कि जैसे आकाशवाणी से उदघोषित स्टैंडर्ड टाईम से सभी लोग अपनी-अपनी घडियो की सुइया मिलाते हैं, और समय सम्बन्धी उनके दोषो को दूर करते हैं, ठीक वैसे ही मतवादी लोग भी सत्यार्थप्रकाश मे उदघोषित सत्य सनातन सिद्धान्तो से अपने-अपने सिद्धान्तो एव मन्तव्य का मिलान कर उनके दोषो को दूर करने मे लगे हैं। सत्यार्थप्रकाश का चमत्कारी प्रसाद इससे बढकर और क्या हो सकता है। श्रीयुत चन्द्रप्रकाश जी एम० ए० ठीक ही लिखते हैं कि जिन्हे इतिहास का ज्ञान है, वे जानते हैं कि इस शताब्दी मे अन्ध विश्वास पाखण्ड एवं कुरीतियो का कूडा करकट जितना इस एक ग्रथ के अध्ययन से दूर हुआ है, उतना विश्व के किसी दूसरे ग्रथ से नही। (हम सत्यार्थप्रकाश क्यो पढें ? पृष्ठ ७) यदि निष्पक्ष भाव से देखा जाए तो रूढियो, अन्धविश्वासो, कुरीतियो, कुप्रथाओ आदि से बचाने के लिए यह विश्वसाहित्य की अद्वितीय तथा अनुपम रचना है।

लेखक

यशपाल आर्यबन्धु

भूले-भटकों का मार्गदर्शक

मानवता का पथप्रदर्शक महर्षि का यह ग्रथ 'सत्यार्थप्रकाश' असख्य भूले-भटके मानवो को सुपथ दर्शा चुका है। और न जाने भविष्य के कितने भूले-भटके भाई इसके आलोक मे सुपथ पा सकेंगे। नास्तिकशिरोमणि गुरुदत्त विद्यार्थी इसी ग्रन्थ के स्वाध्याय से प्रबल आस्तिक ही नहीं, आस्तिकता के प्रबल प्रचारक बन गए थे। बाबू मुन्शीराम इसी के स्वाध्याय से प्रथम महात्मा मुन्शी राम और फिर स्वामी श्रद्धानन्द बन सके। ऋषि के इस ग्रन्थ को पाने के लिए वह कितने आतुर थे, यह उनकी आत्मकथासे ज्ञात सकता है। वह इससे प्रभावित हुए इसका भी सुविस्तृत वृतांत है। पर यह सत्य है कि उक्त दोनो महानुभाव 'सत्यार्थप्रकाश' के चमत्कारी प्रभाव से ही प्रभावित हुए थे। 'सत्यार्थ-प्रकाश' मे वर्णित पुनर्जन्म के सिद्धान्त को पढकर ही मुन्शीराम जी ने घोषणा की थी कि "आज मैं सच्चे दिल से आर्य समाज का सभासद बन सकता हू।"

जो मुन्शीराम महर्षि दयानन्द से प्रत्यक्ष साक्षात्कार से भी सभासद नहीं बन पाये थे, वे उनके विचार-पुंज सत्यार्थ-प्रकाश के अध्ययन से आर्य सभासद बनने की स्वतः ही घोषणा करते हैं। यह सत्यार्थप्रकाश का चमत्कारी प्रभाव नहीं तो और क्या है ?

स्वामी धर्मानन्द नाम के एक वेदांती साधु थे। उनकी शिष्यमडली ने उन्हे सत्यार्थप्रकाश की एक प्रति इस आशय से दी कि वह वेदान्त के खण्डन का उत्तर लिख दें। श्री स्वामी जी ने पुस्तक ला और उसे पढ़ने लगे। ज्यों-ज्यों पढ़ते जाते वेदान्त का मिथ्यावाद तिरोहित होता जाता था। कई दिन व्यतीत हो जाने पर जब शिष्यो ने उसका उत्तर मागा, तब श्री स्वामी जी ने निम्न पंक्ति लिखकर दे दी। 'सारी उम्र बीत गई साडी, सानू सज्जनां दी याद न आई।' अर्थात् हमारी सारी आयु व्यतीत हो हो गई, दुःख है कि हमे स्वामी दयानन्द जैसे सज्जन की याद न आई। शिष्य मण्डली हैरान थी और इसका तात्पर्य पूछने लगी। इस पर श्री स्वामी जी ने कहा कि ऋषि दयानन्द ने शाश्वत सत्य का प्रतिपादन किया है। संसार मे ऐसा कौन है कि जो उसका खण्डन कर सके ? यह है सत्यार्थप्रकाश का चमत्कारी प्रभाव।

श्री स्वामी सर्वदानन्द जी महाराज भी वेदान्त साधु ही थे। एक आर्यसमाजी भक्त द्वारा उनके रुग्ण होने पर सेवा-सुश्रूषा करने पर वह उस पर बड़े प्रसन्न हुए। चलते समय उस व्यक्ति ने एक पुस्तक सुन्दर से वस्त्र मे लपेट कर श्री स्वामी जी को भेंट की और निवेदन किया कि यदि वह उस पर उसकी सेवा प्रसन्न है तो इस पुस्तक का स्वाध्याय अवश्य करे। श्री स्वामी जी ने पुस्तक पढने का वचन दे दिया और पुस्तक रख ली। मार्ग मे उस पुस्तक को देखने का विचार आया कि देखें तो सही कि यह पुस्तक कौन-सी है। यह सोचकर उन्होंने उस पुस्तक को निकाला और जब उस पर सत्यार्थप्रकाश छपा हुआ पढा तो कुछ सकपका से गए। वेदान्ती होने के कारण वह सदैव इस पुस्तक को घृणा की दृष्टि से देखते रहे थे, किन्तु अब प्रतिज्ञा-वश उन्होने उसे पढना प्रारम्भ कर दिया और समाप्त होने पर काया ही पलट गई। वेदान्त का वह झूठा गर्व गल कर बह गया। और वह एक निष्ठावान् आर्य सन्यासी बन गए। (देखें-महापुरुषो के जीवन तथा कार्य, पृष्ठ ११६) यही नही ऐसे अनगिनत व्यक्ति हैं कि जिनके जीवन की कायापलट 'सत्यार्थ-प्रकाश' के स्वाध्याय से हुई है।

सत्यार्थप्रकाश का एक प्रभाव यह हुआ कि इससे स्वतन्त्र चिन्तन का श्रीगणेश हुआ। इस ग्रथ ने लोगो को

(शेष पृष्ठ ८ पर)

दो अक्षरों वाले धन की 'माया' से बचो

चमनलाल—प्रधान, आर्यसमाज अशोक विहार

६ जून के अक मे लेखक ने मन का नियन्त्रण करने की महत्ता पर बल दिया था, यहां उन्होंने धन के प्रलोभन से बचने का परामर्श दिया है

दूसरी दो अक्षरो वाली वस्तु धन है। मन तो मनुष्य को अपने पीछे भागने पर विवश करता है जबकि धन के पीछे हम स्वय ही भागते हैं। इसी धन की लिप्सा के कारण ससार का मनुष्य समुदाय भूखे भेडियो की भाँति एक दूसरे को खाने को दौड रहा है। रेगिस्तान मे जिस प्रकार प्यासा मृग धूप मे चमकते रेत के कणो का पानी समझ कर उसकी ओर दौडता है। प्यास तडपता थका-मादा मृग बार-बार पानी न पाकर निराश हो जाता है और अन्त मे दौडता हुआ आखिर प्राण छोड देता है। ठीक इसी प्रकार आदमी भी धन की चाह मे पागल-सा सारे जीवन मारा-मारा फिरता है।

परन्तु इसका यह अर्थ भी नही है कि आदमी धन कमाने का प्रयत्न ही न करे। धन कोई निन्दनीय वस्तु नही है जिसे अवांछनीय समझ कर परित्याग कर दिया जाए। धन का जीवन में स्थान है। इसके बिना ससार का कोई भी कार्य नही चल सकता। समाज का व्यवहार चलाने के लिए धन चाहिए। धन कमाने का वेद मे आदेश है—'शत-हस्त समाहर।' धन और ऐश्वय प्राप्ति के लिए वेद मे स्थान-स्थान पर भगवान से प्रार्थना है—

वच स्याम धतयो रयीणाम्।
भूरिदासि भूरि मे देहि।
तेन जेष्म धन धनम्।
अग्ने स्थूर रयि पृथु गोमन्तमरिश्वनम्।
रायस्पोषेण समिषा मदन्त.।
इन्द्र श्रेष्ठानि द्रविणानि धेहि। इत्यादि

परन्तु इसका यह अर्थ भी नही कि हम जैसे-तैसे कुसाधनो से धन कमाए। वेद में सुमार्ग से ही धन कमाने का आदेश दिया गया है –

अग्ने नय सुपथा राये।
शुद्धो रयि निधारय।
नूनो अग्ने अवृकेभि. स्वस्ति:।
वेषि राय पथिभि षर्ष्येह।

अर्थात् हम कुटिलता रहित भागो और न्याय-नीति को दृष्टि मे रखकर कमाए। इसकी प्राप्ति मे कभी धर्म के मूल्यो को न खो बैठे। मनु महाराज ने भी मनुस्मृति मे अर्थशुचिता को ही श्रेष्ठ माना है। जितना भी धन कमाएं, अना-सक्त होकर ही कमाए।

घी डालने से जैसे अग्नि प्रचण्ड होती जाती है, ठीक उसी प्रकार जितना-जितना अधिक धन आदमी के पास आता है उतनी ही उसकी तृष्णा बढ़ती जाती है। इसके चक्कर मे फसा प्राणी उचित-अनुचित का कुछ भी ध्यान नही करता और तो और, वह आचारहीन आदमी चांदी के कुछ टुकडो के लिए देश के गुप्त रहस्यो को विदेशियो के हाथो मे भी बेचते नही लजाता। ऐसे धनान्ध प्राणी को धर्मज्ञान भी नही रहता। मनु धर्मशास्त्र मे कहा है—

'अर्थ कामेष्वसक्तानां धर्मज्ञान विधीयते।'

अर्थात् धन और काम वासनाओ के चक्कर मे न फसने वाले मनुष्य को ही धर्म का ज्ञान रहता है, दूसरो को नहीं।

परन्तु एक बात और ज्ञातव्य है कि धन का उचित मात्रा मे न होना अथवा आवश्यकता से अधिक मात्रा मे होना भी कम हानिकारक नही है। इन दोनो अवस्थाओ मे मानव नैतिकता खो बैठता है और मानसिक सन्तुलन से भी हाथ धो बैठता है।

माया की माया

धन को 'माया' भी कहते हैं और धोबी से कपडो मे लगाये जाने वाले कलफ को भी 'माया' नाम से पुकारते हैं। माया यदि कपडे पर कम लगे तो कपडा बेआब दिखाई देता है। यदि यही माया कपडे मे अधिक लग जाए तो पहनते समय काटती है। अत: कपडा वही ठीक से धुला होता है, जिसमे माया न न्यून व अधिक लगी हो। यही बात धन के विषय मे भी ठीक है। धन की न्यूनाधिक मात्रा के सम्बन्ध मे सन्त कबीर ने बडे सुन्दर शब्दो मे कहा है—

'कबीरा इतना दीजिए,
जामे कुटुम्ब समाए।
न आपो भूखा मरे,
साधु न भूखा जाए।

उपनिषद मे आया है कि मानव ने जब धन की कामना की, तो भोग-विलास और आशु तृप्ति की भोग्य सामग्री जुटाने के लिए नही, अपितु दान देने के लिए। वेद मे भी प्रार्थना की है—

त्व नो देव दातवे रयि दानाय चोदय।

—अर्थात् हे देव ! तू हमे धन-दान देने की प्रेरणा कर। तैतिरीयोपनिषद मे दान के सम्बन्ध मे कहा है—

(शेष पृष्ठ ८ पर)

आर्य जगत् समाचार

गोवंश की रक्षा के लिए सड़क रोको आन्दोलन

सरकारी प्रतिबन्ध कड़ाई से लागू करो : अन्यथा आन्दोलन होगा : श्री शालवाले की चेतावनी

नई दिल्ली। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले ने घोषित किया है कि प्रधान मत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी के स्पष्ट आदेश के बावजूद रेलवे को छोडकर—ट्रको व सडको द्वारा गोवश का लदान व निकासी भारी मात्रा मे चोरी-छिपे जारी है। सभी राज्यो मे सीमा शुल्क चौकियो से यह निकासी की जा रही है। उन्होने कहा कि दिल्ली के शाहदरा-गाजियाबाद बार्डर से भी हजारो गाय, बैल व बछडे कत्लगृहो को रात्रि ३ बजे ट्रको द्वारा भेजे जाते हैं।

भारत के गृहमत्री ज्ञानी जैलसिह जी को स्थिति से अवगत कराते हुए उन्होने माग की है कि गोवश की इस तरह निकासी व लदान पर तुरन्त रोक लगाई जाय। यह माग उन्होने गृहमत्री जी को भेजे गए अपने विशेष पत्र मे की है।

श्री शालवाले ने समस्त आर्यसमाजो और गोभक्तो को आदेश दिया है कि वे सडक रोको—गाय रोको आन्दोलन के लिए तैयार हो जाए। यदि भारत सरकार ने इस दिशा में कोई ठोस कदम नही उठाया तो आर्यसमाज सडको और ट्रको द्वारा हो रहे गोवश की निकासी की रोक के लिए सड़क रोको—गाय रोको आंदोलन शीघ्र जारी करेगा।

पजाब में आत्मरक्षा के लिए हथियार

शस्त्रधारी निहंगों को निहत्था करो : अल्पसंख्यकों का विश्वास जीता जाए : केन्द्रीय आर्यसभा अमृतसर के शिष्टमण्डल की मांग

अमृतसर। केन्द्रीय आर्यसभा अमृतसर के प्रतिनिधि मण्डल ने अमृतसर जिले मे पट्टी मे २२ मई के दिन गोलीकाण्ड के घायलो, मृतको एव अन्य गणमान्य व्यक्तियो से मिलकर काण्ड से सम्बन्धित तथ्यो का ब्योरा दिया है तो उसने पंजाब मे शान्ति-व्यवस्था करने के लिए ये कुछ जरूरी सुझाव दिए हैं।

कुछ आवश्यक सुझाव

१. पजाब मे स्थिति के सुधार के लिए वहा की जनता को आत्मरक्षा के लिए हथियार दिए जाएं। २. राज्य की पुलिस मे एक ही सम्प्रदाय के लोग न होकर अल्पसख्यको के व्यक्ति भी हो। ३ अल्पसख्यको का खोया हुआ विश्वास प्राप्त करने के लिए सेन्ट्रल रिजर्व पुलिस के फ्लेग मार्च कराए जाए। ४. शस्त्रधारी निहगो के हथियार या अग्नेयास्त्र ले लिए जाए अथवा दूसरो को भी रखने की अनुमति दीजाए।

प्रतिनिधि मण्डल गोली-काण्ड सम्बन्धी जाँच कर इस परिणाम पर पहुंचा है कि पट्टी पुलिस की निष्क्रियता के फलस्वरूप ही उस दिन हमलावर आधे घण्टे से अधिक समय तक पैदल चल कर बाजार में गोलिया चलाते रहें। उन्होने पिस्तौलो और कारबाइनों से तीन व्यक्तियो को मार डाला और ७ को घायल कर पैदल ही निकल गए। वारदात के समय न तो पुलिस मौके पर आई और न उसने हमलावरो का पीछा किया।

आर्यसमाज अशोक विहार-फेज ३ के पदाधिकारी

प्रधान—श्री भगवतसिह मल्ला, उपप्रधान—श्रीमती प्रेम सबरवाल, मत्री—श्री हसराज मदान; उपमन्त्री—श्री पुरी, श्री राजेन्द्र शर्मा, कोषाध्यक्ष—श्री बरकतराम अरोडा।

दक्षिण में अलगाववादी तत्वों द्वारा दगे

विदेशी एजेण्ट साहुल हमीद की गिरफ्तारी पर सन्तोष : श्री रामगोपाल शालवाले का वक्तव्य

नई दिल्ली। तमिलनाडु के विभिन्न नगरो तथा ग्रामो में हरिजन-मुस्लिम तथा सवर्ण हिन्दुओ एव हरिजनो के तथाकथित दगो के सम्बन्ध मे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले ने बताया कि गत वर्ष मीनाक्षीपुरम मे हरिजनो के सामूहिक धर्म परिवर्तन से देश भर मे बडी हलचल मचगई थी। आर्यसमाज के प्रयत्नो से अनेक हरिजन परिवार हिन्दू समाज मे वापस आए थे। आर्यसमाज की ओर से मीनाक्षीपुरम एव अन्य दक्षिण भारतीय क्षेत्रो में गरीब हरिजनो के उत्थान हेतु अनेक योजनाए प्रचलित की हैं। विद्यालय के कार्यक्रम को भी मूर्त रूप दिया गया है। सार्वदेशिक सभा का आगामी अधिवेशन अक्तूबर १६.१७, १९८२ मे मीनाक्षीपुरम में करने की योजना है।

श्री शालवाले ने कहा कि आर्यसमाज के सुधारवादी कार्यक्रमों को असफल करने के लिए अलगाववादी तत्व विदेशी पेट्रो डालर के बल पर सक्रिय होकर हरिजनो तथा थेवर आदि में फूट डालकर दगे करा रहे हैं ताकि इस्लामीकरण का मार्ग प्रशस्त हो सके। उन्होने यह भी बताया कि सुप्रसिद्ध विदेशी एजेन्ट श्री साहुल हमीद ने सवर्ण हिन्दुओं एव हरिजनों को लडाने का षडयत्र प्रारम्भ कर दिया है। यह भी बताया गया है कि इस्लामीकरण हेतु बहुत बडी राशि इसे विदेशो से प्राप्त होती है। उसका ५० प्रतिशत वह स्वयं हडप कर जाता था, शेष धन से धर्म-परिवर्तन व दगे कराता था। तमिलनाडु सरकार द्वारा श्री साहुल हमीद को गिरफ्तार किए जाने पर श्री शालवाले ने सन्तोष व्यक्त किया।

श्री शालवाले ने कहा कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से श्री रामचन्द्रराव वन्देमातरम् की अध्यक्षता मे एक उच्चस्तरीय जाँच कमीशन तमिलनाडु के कुछ नगरो तथा मीनाक्षीपुरम मे इन घटनाओ की जाँच करने हेतु जा रहा है।

बोध-कथा

मानव के लिए सब कुछ सम्भव!

ससार के प्रमुख विजेताओ मे फ्रांस के योद्धा एव प्रसिद्ध सेनापति नेपोलियन बोनापाट का नाम स्मरण किया जाता है। वह एक सामान्य से सिपाही से देश के प्रधान सेनापति ही नही देश के शक्तिशाली सम्राट भी बने। जब रोम का पोप उन्हे राजमुकुट पहनाने पहुचा, तब नेपोलियन ने राजमुकुट स्वत उठाकर अपने सिर पर धारण कर लिया, सम्भवत वह यह दिखलाना चाहते थे कि ईसाइयों के प्रधान गुरु या किसी दूसरी भौतिक शक्ति के सहारे वह फ्रास के सम्राट नही बने हैं, प्रत्युत केवल अपनी ही मेहनत और तदबीर से वह उस उच्च स्थान पर पहुचे हैं।

क्या आप जानते हैं कि ससार का यह महान विजेता नेपोलियन बचपन मे मे अपनी कक्षा मे सबसे पिछड़ा विद्यार्थी था। उसका कद केवल पांच फुट दो इच लम्बा था। अपने शरीर और शिक्षा की दृष्टि से नेपोलियन एक पिछडा लडका था, परन्तु उसका अपना मन सर्वाधिक साहसी था। एक बार उसे यूरोप के सबसे बडे और ऊचे पहाड आल्स को लांघ कर शत्रु प्रदेश पर विजय करने के लिए जाना था, उसके सेनापति और सैनिक ठिठक गये, परन्तु नेपोलियन क्षण भर के लिए भी नही ठिठका—'उसने कहा कि इन्सान के शब्दकोश मे असम्भव नाम का कोई शब्द नहीं है। ऐसी कोई भी चीज नही है, जिसका इन्सान इरादा कर ले और उसे पाने में असमर्थ रहे।

नेपोलियन ने अपनी फौज को ललकारा। खुद उसकी कमान सम्भाली। उसने न केवल अजेय आल्प्स पहाड जीत लिया, उस अजेय पहाड़ की आड मे निश्चिन्त बैठे शत्रु को भी एक ही झपट्टे में जीत लिया।

—नरेन्द्र

आर्यसमाजों के सत्संग

४ जुलाई ८२

अन्धा मुगल-प्रताप नगर - डा० रघुबीर वेदालकार, अमर कालोनी—प० ज्ञानचन्द, अशोक विहार के-सी-५२ ए—पं० सोमदेव शास्त्री; अशोक नगर—प० मुनिशकर वानप्रस्थ; आर्यपुरा प० रघुराज शास्त्री, आर के पुरम सेक्टर ५—स्वामी जगदीश्वरानन्द; आर के पुरम सेक्टर—६—प० चूनीलाल भजनोपदेशक; — आनन्दविहार-हरिनगर एल ब्लाक—प० रामदेव शास्त्री, किंग्जवे कैम्प—श्री मोहनलाल गांधी; कालकाजी डी डी. ए. फ्लेट—प० खुशीराम शर्मा, कालकाजी—प० मनोहरलाल ऋषि भजनोपदेशक, करौल बाग—प० वेदप्रकाश, कृष्णनगर—प्रो० वीरपाल विद्यालंकार, गांधीनगर—प० सत्यदेव भजनोपदेशक, गीता कालौनी प० राम निवास, ग्रेटर कैलाश—II—प० जय भगवान भजन मण्डली; गुप्ता कालोनी—डा० रघुनन्दन सिंह; गोविन्दपुरी—प० हरिदत्त शास्त्री, गोविन्दभवन-दयानन्दवाटिका—प० ईश्वरदत्त, जगपुरा-भोगल—प० वेदपाल शास्त्री; जनकपुरी बी ३/६४—श्रीमती सुशीला राजपाल; जनकपुरी सी-३—ला० लखमीदास, टैगोर गार्डन—प० देवेश, तिलकनगर—प० ओमवीर शास्त्री, तिमारपुर—पं० देवराज वैदिक मिश्नरी, देवनगर—आचार्य नरेद्र शास्त्री, नारायणविहार—पं० प्रकाशचन्द वेदालकार; नया बांस—प० सोमदेव विद्यालंकार; न्यू मोतीनगर—श्रीमती प्रकाशवती शास्त्री, नगर शाहदरा—प० हरिश्चन्द्र शास्त्री, पजाबी बाग—प्रो० सत्यपाल बेदार, पजाबी बाग एक्सटेन्शन—डा० सुखदयाल भूटानी, प्रीतमपुरा—प० सीसराम भजनोपदेशक; बाग कडे खा—प० बरकतराम भजनोपदेशक, मोडल बस्ती—वैद्य रामकिशोर, मोडल टाउन—प० रमेशचन्द्र शास्त्री, महावीर नगर स्वामी-स्वरूपानन्द; महरौली—श्रीमती लीलावती आर्या, मोतीबाग—पं० भगवान सहाय विद्यावाचस्पति, राणा प्रतापबाग—प० कामेश्वर शास्त्री, राजौरी गार्डन—प० प्रकाशचन्द्र शास्त्री, लड्डू घाटी पहाडगज—प० रामरूप शर्मा, लाजपत नगर—प० अशोककुमार विद्यालकार, लेखराम नगर—प० ओमप्रकाश भजनोपदेशक, वारेन्स रोड—प० प्राणनाथ सिद्धान्तालकार; विक्रम नगर—प० वेदव्यास भजनोपदेशक; विनय नगर—पं० सत्यपाल मधुर भजनोपदेशक, सुदर्शन पार्क—प० भारतमित्र शास्त्री, सराय रोहला—प० गणेशप्रसाद विद्यालकार, सोहनगज—स्वामी विश्वदेवानन्द, श्री निवासपुरी—प० तुलसीराम भजनोपदेशक, शालीमार बाग—प० शिवकुमार शास्त्री, हनुमान रोड—पं० हरिशरण सिद्धान्तालकार, हौज खास डी-२०—प० आशानन्द भजनोपदेशक,

—ज्ञानचन्द डोगरा, वेदप्रचार-प्रबन्धक

गाय ही राष्ट्र की सच्ची निधि

गोरक्षा से ही राष्ट्र की उन्नति . कर्णवास में गोरक्षा सम्मेलन

आर्यसमाज महर्षि दयानन्द स्मारक कर्णवास, बुलन्दशहर के वार्षिकोत्सव पर आयोजित गोरक्षा सम्मेलन की अध्यक्षता फीजी मे भारत के भू० पू० राजदूत श्री भगवान सिंह ने की। श्री दिवाकर शास्त्री ने उद्घाटन भाषण मे घोषित किया कि गौ ही राष्ट्र की सच्ची निधि है। सम्मेलन के मुख्य वक्ता श्री रूपकिशोर शास्त्री रिसर्चस्कालर ने गोरक्षा को सच्ची राष्ट्ररक्षा घोषित किया। गोरक्षा के बिना देश का कल्याण सम्भव नही। अध्यक्ष—श्री भगवान सिंह ने प्रत्येक भारतीय से गाय पालने का अनुरोध किया। गाय ही मानव का जीवन है।

स्मारक के प्रधान श्री हरप्रसाद अग्रवाल और आर्यसमाज के प्रधान श्री रामचरण आर्य ने आर्यसमाज और महर्षि स्मारक के लिए श्री भगवान सिंह जी की सेवाओ की सराहना की।

आर्य पुरोहित चाहिए

आर्यसमाज, जमशेदपुर के लिए एक चरित्रवान, कर्तव्यनिष्ठ एव वेदो के विद्वान पुरोहित की आवश्यकता है, जो वैदिक सिद्धान्तो पर प्रभावशाली भाषण दे सके तथा परिवारो मे सत्सग एव सस्कार करा सके। समाज मन्दिर मे निवास की सुविधा के साथ योग्यतानुसार दक्षिणा दी जाएगी। इच्छुक व्यक्ति अपनी योग्यता एव कार्य का अनुभव आदि का पूर्ण विवरण देते हुए अपना आवेदन पत्र-प्रकाशन से १५ दिन के भीतर मंत्री को भेजें।

—डा० ओमप्रकाश
मंत्री, आर्यसमाज, जमशेदपुर बिहार

आर्यसमाजों के नए पदाधिकारी

आर्यसमाज मालवीय नगर, प्रधान—श्री विमलकुमार आनन्द, उपप्रधान—श्री धर्मवीर भसीन, श्री के. सी गुप्ता, मन्त्री—श्री डी. आर जूनेजा, उपमन्त्री—श्री सूरज सक्सेना, श्री वेदरत्न आर्य; प्रचारमन्त्री—श्री सी एल अरोडा, कोषाध्यक्ष—श्री नन्दलाल ग्रोवर; पुस्तकाध्यक्ष—श्री रामचन्द्र।

आर्यसमाज आनन्द विहार(एल ब्लाक)हरिनगर—प्रधान—श्री शान्तिप्रकाश नारग, उपप्रधान—श्री चमनलाल वाही, श्रीमती राजेश्वरी देवी, मन्त्री—श्री नरेन्द्र गिरि गोस्वामी, उपमन्त्री—श्री ईशकुमार नारग, श्रीमती कान्ता दत्त, कोषाध्यक्ष—त्रिलोकीनाथ तनेजा।

शिक्षण संस्थाओं में सरकारी हस्तक्षेप रोको

सार्वभौम परिषद के महामन्त्री श्री वाब्ले द्वारा बिहार सरकार से माग

सार्वभौमसमाज शिक्षक सस्था परिषद् के महामत्री श्री दत्तात्रेय वाब्ले ने शिक्षा मत्री बिहार को एक आवश्यक तार भेजकर प्रबल शब्दो मे मॉग की है कि आर्यसमाज की शिक्षण सस्थाओ मे जिला स्तर के शैक्षणिक अधिकारियो के अनुचित हस्तक्षेप को तुरन्त रोका जाये।

यह ज्ञातव्य है कि डी० ए० बी० मिडिल स्कूल सोनारी जमशेदपुर जो वहाँ के आर्यसमाज के अतर्गत सचालित है, के दैनिक कार्यों मे जिला शिक्षा अधीक्षक जमशेदपुर द्वारा अनुचित एव अनधिकृत हस्तक्षेप किए जाने मे सस्था का कार्य-सचालन कठिन हो गया है। इस सम्बन्ध मे आर्यसमाज सोनारी जमशेदपुर ने अपनी विज्ञप्तियाँ प्रसारित कर सरकारी अधिकारियो, बिहार सरकार, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा एव सार्वभौम आर्य शिक्षण परिषद् से भी आवश्यक कार्यवाही हेतु निवेदन किया है।

सार्वभौम शिक्षा परिषद् के महामत्री श्री वाब्ले ने बिहार सरकार के शिक्षा मत्री से यह भी अनुरोध किया है कि आर्यसमाज की शिक्षण सस्थाओ मे इस प्रकार का हस्तक्षेप धारा ३० के अतर्गत सविधान प्रदान मूलाधिकार एव आर्यसमाज के हितो का खुला उल्लघन है।

दो अक्षरों वाले धन ……(पृष्ठ ५ का शेष)

श्रद्धया देयम् । अश्रद्धया देयम् ।
श्रिया देयम् । ह्रिया देयम् ।
भिया देयम् । संविदा देयम् ।

—जैसे भी हो, सुपात्र याचक को दान देना ही चाहिए। धन तो वही है जो दूसरो की तृप्ति का साधन बने। दूसरो को दिए हुए धन से ही आदमी भाग्यवान बनता है।

सामवेद मे भी ऐसे ही भाव दर्शाए हैं—'यो मंहिष्ठो मघोनाम् अंशुर्न शोचि.'

—अर्थात् जो ऐश्वर्यशालियो मे सर्वाधिक दान देने वाला है, वही सूर्य को किरणो के समान चमकने वाला होता है। धन जुटाने में रात दिन एक कर देने वाला स्वय अपनी चमक खो बैठता है परन्तु जब वह उदारचित्त हो दान देता है, तो फिर वह शोभा का पात्र बन जाता है। कहा भी है—

"जुहोत प्र च तिष्ठत।"

—दान दो और शोभा पाओ।

हे जीव ! तेरा धन चन्द्रमा की चांदनी की न्याई हो। जिस प्रकार चन्द्रमा चाण्डाल और ब्राह्मण के घर बिना किसी भेदभाव के अपनी ज्योत्स्ना बिखेरता है, ठीक इसी प्रकार तेरा धन सब को समान रूप से धारण करने वाला हो।

यज्ञ की चरम सीमा है। दान जो व्यक्ति दुखियो का दुःख हरने के लिए धन का सदुपयोग करता है वह मानो प्रभु के आदेशो का पालन करता हुआ उसका प्रिय सखा बनकर उसका सामीप्य प्राप्त कर लेता है।

अत मन और धन के चक्कर मे फसे हे सासारिक लोगो ! यदि तुम अपना सचमुच कल्याण चाहते हो और जीवन को सुखमय बनाकर ससार मे शान्ति स्थापित करना चाहते हो, तो विषय-वासना से ऊपर उठकर मन की वृत्तियों का दमन कर संयम का जीवन बिताने और लोभ एवं स्वार्थ को छोड धन को अकुटिल मार्ग से जुटा कर उसको लोकहित के कार्यों में व्यय करना सीखना होगा।

सत्यार्थप्रकाश…

(पृष्ठ ६ का शेष)

स्वतंत्र चिन्तन की राह दिखाई और स्वतंत्र चिन्तन ने धर्म मे बुद्धिवाद को प्रवेश दिया। स्वतत्र चिन्तन के कारण ही हिन्दू जाति रूढ़िवादिता की लीक को तोडने में सफल हो सकी। सत्यार्थ प्रकाश में महर्षि दयानन्द ने बुद्धिवाद की अद्भुत मशाल जलाई थी, जिसके सम्बन्ध मे कविवर दिनकर को भी यह तथ्य स्वीकारना पडा कि दयानन्द ने जो बुद्धिवाद की मशाल जलाई थी उसका कोई जवाब नहीं था। सत्य तो यह है कि आज जो अविश्वसनीय तथ्यो एव घटनाओं, चरित्रो एव भावनाओं को विश्वसनीय या बुद्धिसगत धरातल पर उतारने के प्रयत्न हो रहे हैं, वे सत्यार्थ-प्रकाश-प्रदत्त स्वतत्र चिन्तन की भावनाओं का ही सुफल है। इसी ग्रथ की रचना के बाद ही राम कृष्ण आदि अवतारो का मानवीकरण तथा उनसे सम्बद्ध प्राय सभी अलौकिक लीलाओ को बुद्धिवादी धरातल पर उतार लाने के प्रयास सम्भव हो सके हैं। यह सब सत्यार्थप्रकाश का चमत्कारी प्रभाव है। यह उस महान ऋषि की साधना है और उसकी साधना का ही यह सुफल है कि आज विश्व उसकी ओर खिचा चला आ रहा है। सत्य…

…ता,
…रहा है।
…बताए … पर,
संसार … रहा है॥

आर्य निवास, चन्द्र नगर, मुरादाबाद-३२

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए श्री सरदारी लाल वर्मा द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा भारतीय प्रेस २६५४, रघुबरपुरा नं० २ गांधी नगर दिल्ली ३१ में मुद्रित कार्यालय १५ हनुमान रोड नई दिल्ली फोन ३१०१५०।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक मुखपत्र

एक प्रति ३५ पैसे   वार्षिक १५ रुपये   वर्ष ६   अंक ३७   रविवार ११ जुलाई   २७ आषाढ वि० २०३९   दयानन्दाब्द—१५८

हरिजन समस्या सुलझाइए

—स्वामी वेदमुनि परिव्राजक

कुछ दिनों से हरिजनों के मुसलमान बनाने की चर्चा बहुत सुनने मे आ रही है, परन्तु हरिजन मुसलमान बन नहीं रहे, उन्हे मुसलमान बनाने का प्रयत्न किया जा रहा है, और इसके लिए चार अरब रुपए (बीस करोड डालर) अरब देशो से आ रहा है। इस रुपए के बल पर भारत मे एक और पाकिस्तान बनाने की योजना लन्दन में सगठित किए गए 'इस्लामिक कल्चरल सैण्टर' ने बनाई है। इसी रुपए के बल पर दक्षिण भारत में मीनाक्षीपुरम् ग्राम के १४० हरिजन परिवारो को मुसलमान बनाया गया था। इनमें से प्रत्येक परिवार को ५००) रुपए दिए गए थे और पूरे ग्राम को चारों ओर से मुसलमानो ने घेर लिया था। इस कार्य के लिए दूर-दूर से मुसलमान वहा पहुचे, हरिजनो को डराया-धमकाया गया, तब कही हरिजनो के ३५० मे से १४० परिवार मुसलमान बने उनमे से भी ६० परिवार फिर से हिन्दू धर्म मे लौट आए। इस प्रकार लालच और डण्डे के बल पर यह कार्य करने मे भारत के मुसलमान लगे हैं।

इसका सीधा सा अर्थ है कि भारत का मुसलमान हरिजनो को प्रेम से नही अपना रहा अपितु अपने डण्डे और अरब देशो के धन के बल पर भारत मे विद्रोह की तैयारी कर रहा है, इसलिए भारत सरकार को इस विषय में सावधान होकर प्रकार के षडयन्त्रो को विफल करना चाहिए।

छुआछूत—जहां तक छुआछूत का प्रश्न है, भारत के पश्चिमी-उत्तरी भाग में तो अब यह है नहीं और नगरो में तो बिलकुल भी नहीं। हा, ग्रामो मे कही-कहीं कुछ मूर्ख लोग ऐसे विचार रखते हैं, किन्तु वे स्वयं ऐसे होते हैं, जिन्हे कही कोई पूछता नहीं। ऐसे मूर्खों की बात पर हरिजन भाइयों को भी ध्यान नहीं देना चाहिए और समझदार सवर्णों को ऐसे लोगों को समझाना चाहिए।

हरिजन बन्धुओं से—हरिजन बन्धुओं से हम यह कहना चाहते हैं कि आप अपने उन नेताओ से सावधान रहें, जो प्रत्येक अवसर का अनुचित लाभ उठाने को तैयार रहते हैं। इस समय भी कुछ लोग हरिजनो के मुसलमान बनने की बात को समाचार पत्रों तक में उछालने में लगे हैं और इस प्रकार एक ओर तो हरिजनों को साथ लेकर मुसलमान बनने के नाम पर मुसलमानो से विदेशी धन लूटने के प्रयत्न में लगे हैं और दूसरी ओर हिन्दुओं को हरिजनों के मुसलमान होने का भय दिखा-कर इसमे धन ऐंठने के प्रयत्न मे हैं और तीसरी योजना इनकी आने वाले चुनाव में राजनीतिक दलों से विधान-सभा और ससद के लिए टिकट प्राप्त करने या फिर हरिजन मतों के नाम पर अधिक से अधिक धन लेने की है।

इसके अतिरिक्त भी इस प्रकार प्रकाशमे आकर ये लोग सरकारी अधि-कारियों से सम्पर्क बनाते और हरिजन समस्याओ तथा हरिजनों की सहायता के नाम पर सरकार से मिलने वाले धन को अपने या अपने सगे सम्बन्धियो के नाम पर प्राप्त कर अपने घर भरने और गुलछर्रे उड़ाने मे लगे हैं।

हरिजन बन्धुओ! अब आप भी सचेत हो जाइए और बिरादरी तथा हरि-जन-हित के नाम पर इनके बहकावे में मत आइए। एक बात उन मुसलमानो से भी पूछिए, जो आपको बराबरी का अधिकार देने की बात कहते हैं। ये लोग अपनी स्त्रियो को बराबरी का अधिकार क्यो नही देते? और तो और वह बेचारी तो मस्जिद और ईदगाह मे नमाज पढ़ने तक नही जा सकती। पर्दे मे भयकर रोगो की शिकार होती रहती हैं, उन्हे हिन्दू देवियो की भांति स्वतन्त्र रहने और घूमने की सुविधा तक नही। एक मुसलमान एक साथ चार-चार पत्नियां रख सकता है, क्या महिलाओं को भी इस्लाम यह अधिकार देता है? यदि नहीं देता तो क्यो नहीं देता?

अन्त मे, इस भयंकर राष्ट्र-द्रोह के षडयन्त्र से—जो विदेशी धन के बल पर किया गया है—हम भारत सरकार, सवर्ण हिन्दुओं और समस्त हरिजनो को साव-धान होकर संगठित होने और इसे विफल करने का आह्वान् करते हैं। □

पाकिस्तान को गायों की तस्करी

पांच हजार रुपयों या दो तोले सोने पर गाय बिकने लगी

२० जून, १९८२ के साप्ताहिक धर्मयुग मे श्री राजेन्द्र छाबड़ा ने यह रहस्योद्घाटन किया है—राजस्थान के पश्चिमी सीमान्त से इन दिनो बड़े पैमाने पर गायो की पाकिस्तान को तस्करी की जा रही है। अन्य अनेक वस्तुओं के साथ-साथ अब पाकिस्तान मे भारतीय गायो की भी बेहद माग है। एक जानकारी के अनुसार पाकिस्तान मे गोमांस १०० रुपए प्रति किलोग्राम तक बिकता है। कद व स्वास्थ्य मे अच्छी हो तो पांच हजार रुपए प्रति गाय के हिसाब से खरीदने वाले वहां मौजूद बताए जाते है। एक गाय के बदले दो तोला सोना दिए जाने की खबर भी है।

पाकिस्तान को भारतीय गायो की यह तस्करी कुछ सशक्त गिरोहो द्वारा मुख्यतया राजस्थान के सीमावर्ती जिले जैसलमेर से ही हो रही है, कुछ तस्करो को पिछले दिनो पकड़ा भी गया है। पश्चिमी पाकिस्तान के बहुत बड़े हिस्से मे पिछले चार वर्षों से लगातार अकाल व सूखे के कारण पशु तो क्या इन्सान तक दाने दाने को मोहताज हैं। ऐसे मे अकाल का मारा पशुपालक कांकरेज और थारपारकर जैसी उत्तम नस्ल की अपनी गायो को भी बेच देने के लिए विवश है।

एक तथ्य और भी है—जैसलमेर जिले मे ही पाक सीमा के निकट घोटारू, आरडतार, पाली, डिग्गा आदि क्षेत्रो मे कुछ हरियाली और पानी उप-लब्ध है, बहुत से पशुपालक दूर-दराज से अपने पशुओ को चराई के लिए यहां लाते हैं, तस्करों के दलाल यहा घात लगाए बैठे रहते हैं, वे गोपालको को आकर्षक कीमत का प्रलोभन देते हैं, सोने की चकाचौंध दिखाते हैं, एक गाय के बदले जब दो तोला सोना पेश करते हैं।

भारतीय सीमा मे खरीदी गई गायो को तस्कर लोग चोरी-छिपे सरहद के उस पार पहुचा देते हैं। एक बार मे १५० से २०० गायो के झुण्ड इधर से उधर हांक दिए जाते हैं। जैसलमेर के भूतपूर्व विधायक किशनसिंह भाटी का आरोप है कि गायो की तस्करी के इस कारोबार को कतिपय राजनेताओ और राजस्थान की पुलिस का सरक्षण प्राप्त है। उन्होने बताया कि विगत ३ अप्रैल को जैसलमेर के उत्तर मे ६० किलोमीटर दूर नेडाई क्षेत्र से तस्करों द्वारा पाकि-स्तान ले जाई जाती २०२ गायो को चार तस्करो सहित पकड लिया गया था, लेकिन नेडाई पुलिस चौकी से मोह-नगढ तक १४ किलोमीटर की दूरी पार करते समय ६ अप्रैल के दिन एक तस्कर और बहुत-सी गाएं छोड दी गई। पिछले दो महीनों मे पुलिस ने गायों के बहुत से तस्करो की पकड-धकड की है। ५ मार्च को मोहनगढ़ पुलिस ने दो तस्कर गिरफ्तार कर उनके कब्जे से पाकिस्तान भेजी जा रही २८ गाएं बरामद की। २३ मार्च के दिन पुलिस की पकड मे तस्करी का एक और बड़ा मामला आया। रात के अंधेरे मे पांच तस्कर अपने साथियो के साथ पकड़े गए।

पुलिस के अलावा सीमा सुरक्षा दल के जवानो ने भी मार्च मे घनाना सीमा चौकी से १६५ गायो को चुपचाप पाकि-स्तानी सीमा मे हांक कर ले जाते हुए पकड़ा था, उन्ही दिनो लाठी पुलिस चौकी के पास ४१ बैलो सहित दो तस्कर गिरफ्तार किए गए।

गोसेवा संघ तथा पश्चिमी राज-स्थान में पशुओ के कल्याणकारी कार्य मे लगी अनेक सस्थाओ ने भारतीय गायो की इस तस्करी के खिलाफ जोरों से आवाज उठाई है।

सम्पादक—नरेन्द्र विद्यावाचस्पति   व्यवस्थापक—प्रद्युम्नलाल तलवाड़

वैदिक यज्ञ में आहुति का अधिकार मानव मात्र को

यज्ञों के माध्यम से सामान्य जनता में आर्य विद्वान् पं० राजगुरु शर्मा द्वारा वैदिक धर्म का व्यापक प्रचार : उत्तर से दक्षिण तक व्यापक जनसम्पर्क

नई दिल्ली। 'यह यज्ञ तो हम कर देंगे, परन्तु यह यज्ञ पूर्ण वैदिक विधि से होगा और इसमे केवल ब्राह्मण मात्र ही आहुति न देंगे प्रत्युत इसमे आहुति देने का अधिकार मनुष्य मात्र को होगा।' इस बात को सुनकर सभी की आखो मे प्रेम के आसू आ गए। यह विस्मय भरी घटना थी हिंगोली व नान्देड के मध्य अवस्थित अखाण्डा बालापुर (महाराष्ट्र) ग्राम मे।

यज्ञ आर्यसमाज कराएगा।

इस गाव की आबादी दस हजार है। इस गांव की तहसील कलम नूरी के युग परिवर्त्तन मेवा सघ के अध्यक्ष श्री नागोराव सावन्त एडवोकेट एक विशाल यज्ञ कलमनूरी मे कराना चाहते थे। यज्ञ में एक लाख लोगो मे एकत्र होने की सम्भावना से शासकीय और नगरपालिका अधिकारियों ने कहा कि इतने लोगो के लिए पानी की व्यवस्था यहा सम्भव नही है, फलत यज्ञ की व्यवस्था अखान्डा बालापुर ग्राम मे करवाने की सोची गई। इस पर पहली समस्या पैदा हुई कि यह यज्ञ कौन करवाए ? महाराष्ट्र के ब्राह्मणो से यज्ञ करवाने का अनुरोध करने पर उन्होंने कहा-यज्ञ वे अवश्य करवा देंगे, किन्तु यज्ञ मे आहुति केवल ब्राह्मण दे सकेंगे और किसी को भी यज्ञ मे ऐसी आहुति देने का अधिकार नही है। इन ब्राह्मणो ने हजारो रुपए दक्षिणा एव वस्त्र आदि के लिए भी एकत्र करने के लिए कहा। इसी समय गायत्री परिवार वालो ने भी प्रस्ताव किया कि वे यज्ञ करवा देंगे किन्तु यज्ञ मे जो भी धन आएगा उसका आधा उनके आचार्य को भेंट करना होगा—ये सब बातें सुनकर श्री सावन्त और उनके साथी बहुत दुखी हो गए। सौभाग्य से उसी समय बालान आर्यसमाज के मन्त्री श्री यादव आए और जरोड़ा ग्राम के पटेल सा० भोश आए। दोनो सज्जनो ने कहा-यह यज्ञ आर्यसमाज कराएगा। उन्ही दिनो इन्दौर के श्री राजगुरु शर्मा निजामाबाद मे यज्ञ करा रहे थे। सारी मण्डली उनके पास पहुची—उनके कहने पर शर्मा जी ने यज्ञ कराने का दायित्व लिया, साथ ही उस यज्ञ में मानवमात्र को आहुति देने का सकल्प प्रगट किया।

प्रसनता का विषय है कि बालापुर ग्राम की सात एकड भूमि मे ८०×८० की वेदी पर ६४ खम्बो की विशाल वेदी बनाई गई और ५ मई से ११ मई तक महान् यज्ञ की व्यवस्था की गई। पहले दिन २४ यजमान दम्पति और सैकड़ो लोग स्नान के बाद मगल पीले वस्त्र पहनकर शोभायात्रा के रूप मे नगर—परिक्रमा कर यज्ञ स्थान पर पधारे। ब्रह्मचारी आर्य नरेश ने यज्ञध्वज फहराया। ब्रह्मा राजगुरु जी शर्मा ने यजुर्वेद परायण यज्ञ कराया। श्री राजगुरु शर्मा ने मराठी प्रदेश होने के कारण वेद मन्त्रो की सरल व्याख्या मराठी मे भी प्रस्तुत की, इसका इतना प्रभाव पड़ा कि पहले ही दिन ५ हजार व्यक्ति यज्ञ के दर्शनार्थ आए। ब्रह्मा जी के आदेश से सभी लोगो को अन्नदान दिया गया अर्थात ऋषिलगर की व्यवस्था की गई। दूसरे दिन १५ हजार, तीसरे दिन २५ हजार, चौथे दिन ४० हजार लोग पाचवे दिन ६० हजार और सातवे पूर्णाहुति के दिन अनगिनत लोगो ने यज्ञ का प्रसाद ऋषि लगर मे ग्रहण किया। यज्ञमण्डप के आसपास लगभग पौने दो लाख-स्त्रियो-पुरुषो और बच्चो की विशाल भीड देखकर सभी प्रसन्न हो उठे। स्वामी ओमनन्द जी महाराज के मनोहर उपदेश इस यज्ञ मे वरदान सिद्ध हुए। महाराष्ट्र प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री आनन्द मुनि जी रिटायर्ड डी एस पी श्री वाघमारे और आन्ध्र महाराष्ट्र के अनेक पुरोहितो ने इस यज्ञ मे तन-मन-धन से सेवा की। हजारो रुपयो और अनाज का ढेर लग गया महाराष्ट्र के ग्राम्य क्षेत्र में यज्ञ का ऐसा विशाल आयोजन अभूतपूर्व था। आर्यसमाज के निर्माण हेतु १६ एकड़ का एक प्लाट दान में प्राप्त हुआ। पूर्णाहुति के दिन ब्रह्मा जी की अपील पर एक देवी ने आर्यसमाज के लिए १६ एकड भूमि दी और एक सज्जन ने एक प्लाट दिया। ब्रह्मा जी ने विधिवत् इस प्लाट का सकल्प महाराष्ट्र प्रतिनिधि सभा के प्रधान के नाम कराया समाज मंदिर की नीव का खनन भी ब्रह्मा जी ने कराया। मदिर के लिए हजारो रुपए की प्राप्ति हुई। इस यज्ञ का दृश्य प्रयाग और हरिद्वार के विशाल कुम्भ के तुल्य था जिसकी चर्चा सारे महाराष्ट्र मे हुई। अब महाराष्ट्र के ग्रामो से आर्यसमाज की स्थापना करवाने के लिए निमंन्त्रण आ रहे हैं।

पं० राजगुरु शर्मा ने केवल बालापुर महाराष्ट्र मे ही नही प्रत्युत जनवरी १९८२से मई १९८२ तक बेलपुर (आन्ध्रप्रदेश) नीमच, बिलासपुर (म० प्र०) कागडी, अमृतसर, निजामाबाद, धर्माबाद, देवगढ़ तथा गुरुकुल कागड़ी में १३ विशाल यज्ञोत्सव सम्पन कराए। इनमे गुरुकुल कांगड़ी, अमृतसर, निजामाबाद, धर्माबाद और बालापुर आदि पाच स्थानो के यज्ञोत्सव अत्यन्त ही महत्वपूर्ण थे।

निजामाबाद आंध्रप्रदेश दिनांक २२-३ से २७-३-८२ तक राजस्थ व भवन मे यज्ञोत्सव रखा गया। निजामाबाद में अधिकाश पौराणिक मारवाड़ी व्यापारी निवास करते हैं जो आर्यसमाज के प्रति श्रध्दा तो रखते हैं किन्तु कार्यक्रमो में आने से कतराते हैं। इस बार प० राजगुरु जी द्वारा कराए गए यज्ञ मे सपरिवार उपस्थित हुए। रात्रि की सभाओ में भी आते रहे तथा पूर्णाहुति के दिन विशाल ऋषिलंगर का आयोजन विशेष सराहनीय रहा। कई युवको ने यज्ञोपवीत धारण किए। कइयो ने नित्यप्रति सध्या व यज्ञ करने का व्रत लिया। विशेषता यह थी कि लगातार ७ दिन यज्ञ के ब्रह्मा श्री प० राजगुरु जी शर्मा मूर्त्ति पूजा व श्रीमद भागवत व अनार्ष ग्रन्थों तथा अवतार वाद व गुरुजन का इतने तीव्र शब्दो मे युक्ति व तर्क सहित खंडन करते थे कि श्रोतागण मत्र मुग्ध होकर सुनते थे तथा यज्ञोत्सव मे स्त्रियों तथा युवको की सख्या पुरुषो से अधिक रहती थी।

धर्माबाद मे मन्दिर की नीव कर्ज से

दिनांक ३०-३ से १-४-८२ तक धर्माबाद (महाराष्ट्र) मे यज्ञोत्सव तथा दिनांक १-४-८२ को श्री प० राजगुरु जी शर्मा के द्वारा आर्यसमाज भवन का शिलान्यास किया जाया। दिनाक २९-३ की रात्रि को ही श्री शर्मा जी निजामाबाद से रेल द्वारा धर्माबाद पधारे। स्टेशन पर तमाम नवयुवको व नागरिको ने आपका हर्दिक स्वागत किया। सभी जन पैदल ही प्रमुख बाजार से होते हुऐ आर्यसमाज के प्रधान श्री सेठ सत्यनारायण जी इनाणी के निवास स्थान को जा रहे थे।

श्री शर्मा जी ने समाज के मत्री श्री सुरेश गजेवार से प्रस्न किया कि क्या समाज भवन की नीव भरदी व प्रात यज्ञ आरम्भ करने की तैयारी हो गई है। श्री मत्री जी ने उत्तर दिया—गुरुजी, आपके आदेशानुसार हमने समाज भवन की नीव तो भरदी है किन्तु १५ हजार रुपए कर्ज लेकर भरी है। हमारे पास धन कहा? इस पर श्री शर्मा जीने कहा मत्री जी, जिस समाज की नीव १५ हजार का कर्ज लेकर भरी जाऐ उसका भवन कैसे बनेगा ? इसे तो भगवान ही बनवा सकता है रात्रि ११-३० बजे कुछ युवक श्री शर्मा जी के पास आऐ तथा कहा गुरुजी उठिये श्री शर्मा जी ने उठकर पूछा क्या बात है। युवक ने कहा यज्ञ शाला में चलिये वहा आपकी कोई प्रतीक्षा कर रहा है। बडा ही विचित्रसा वातावरण था किन्तु विशेष आग्रह पर श्री शर्मा जी यज्ञ शाला मे पधारे। समय रात्रि ११-४५ का होगा। यज्ञ शाला मे धर्माबाद के सेठ श्री नारायण भूमन्ना व कई लोग उपस्थित थे। उन्होने श्री शर्मा जी का वैदिक जयघोष द्वारा स्वागत किया-अर्घ्यप्रदान किया-पुष्प माल्यार्पण किया तब शर्मा जी ने पूछा भाई रात्रि के १२ बजे यह समारोह कैसा यह तो सोने का समय है? ' इस पर सेठ नारायण भूमन्ना ने कहा गुरुजी ! आपने कहा था जिस समाज की नीव कर्ज से भरी जाए उसका भवन कैसे बनेगा इसे तो भगवान बना सकता है —बस ये शब्द मेरे कानो में बार-बार गूजते थे व मैं सो नही सका मैं बेचेनी अनुभव कर रहा था। मुझे कोई बार-बार कहता था नारायण उठ—समाज मदिर बना उठ—उठ, उठ। गुरुजी मैं लाचार होकर यहा आया हू पर यहाँ आते ही मेरा हृदय शीतल हो गया है मेरा मन अत्यन्त ही प्रसन्न है मैं आपके चरण स्पर्श कर घोषणा करता हू कि यह १५ हजार रुपए प्रात ही जिनसे लिए हैं वापस करा दूगा तथा मैं अकेला ही रु० १ लाख २० हजार लगाकर दीपावली सन १९८२ के पूर्व इस मदिर को बना दूगा। तथा दीपावली के दिन इसका उदघाटन भी आप ही करेंगे।

इस समय का दृश्य अजीब था सभी की आखो मे प्रेम के आंसू थे। श्री शर्मा जी ने सेठ को तिलक लगाकर शुभाशीर्वाद दिया व मिठाई बाटी गई। शर्मा जी ने मात्र इतना ही कहा प्रभुजी तुम बड़े दयालु हो ! दूसरे दिन प्रात: यज्ञारम्भ हुआ व दिनाक १-४-८२ को समारोह पूर्वक आर्यसमाज मदिर का शिलान्यास श्री पं० राजगुरु जी शर्मा के द्वारा सम्पन्न हुआ व ऋषिलगर भी हुआ। धर्माबाद नगर आंध्रप्रदेश व महाराष्ट्र बार्डर पर है।

गुरुकुल कागडी हरिद्वार—गत वर्षानुसार इस वर्ष भी दिनांक ९ अप्रैल से १४-४-'८२ तक गुरुकुल मे विशाल वेद पारायण यज्ञ का आयोजन हुआ। गुरुकुल के अधिकांश प्रोफेसर सपरिवार यज्ञ मे सम्मिलित हुए। दिल्ली से बस द्वारा आर्य परिवार गुरुकुल पधारे। पुरानी गुरुकुल भूमि पर भी यज्ञोत्सव हुआ तथा इस वर्ष यज्ञ की पूर्णाहुति पर निर्णय किया गया कि गुरुकुल के वेद-भवन मे नित्यप्रति यज्ञ एवं वेद-पाठ किया जाऐगा। इस हेतु धन-दान की अपील स्वयम् श्री राजगुरु शर्मा ने स्वयन् १०१ रुपऐ प्रदान कर के तथा कई भाइयों ने इस महान कार्य हेतु स्वेच्छा

(शेष पृष्ठ ३ पर देखिए)

तेरी महिमा अपरम्पार

ओ३म् — गायन्ति त्वा गायत्रिणो अर्चन्त्यर्कमर्किणः ।
ब्रह्माणस्त्वा शतक्रतो उद्वंशमिव येमिरे ॥ ऋ १.१०-१

सामगान के गायक तेरे मधुर गीत गाते हैं, वेदो की ऋचाए मधुर कण्ठों से तेरा स्तवन करती हैं, ज्ञानी हों या कर्मयोगी सब तेरी अपार महिमा का गुणगान करते हैं, सचमुच तेरी महिमा अपरम्पार है, उसका कोई पार नहीं पाता ।

ओ३म्
आर्य सन्देश

सन्तों की सीख की अपेक्षा

कहते हैं कि यूनान के विजेता सिकन्दर जब एक देश के बाद दूसरे देश पर विजय करता हुआ भारत पहुचा तब उसकी बडी साध थी कि यहा के किसी बडे साधु-महात्मा को यूनान ले जाया जाए । बडी कोशिशो के बाद एक सच्चे सत का पता चला, पर वह साधु या सत इतना खरा था कि बडे से बडा प्रलोभन देने के बावजूद वह स्वदेश छोडने के लिए तैयार नही हुआ । ससार के सबमे बडे विजेता की अजेय सेना, उसकी फौज की भीषण ताकत और ससार विजयी सम्राट द्वारा प्रस्तुत ससार की सारी सम्पदा भी उस साधु को नही डिगा पाई । वह साधु स्वदेश छोड कर नही गया तो नही गया । कहते हैं कि यूनानी सम्राट के गुरु अरस्तू ने अपने शिष्य को कहा था कि वह भारत से यहाँ के किसी सच्चे सन्त को यूनान ले आए । यह कहानी कितनी सच्ची है और कितनी लोकोक्तियो पर आश्रित, यह शोध का विषय है, परन्तु इस कहानी से एक तथ्य अवश्य उभरता है कि हमारे देश में एक समय ऐसा अवश्य था जब यहाँ सत्ता, दबदबे और सुख-सम्पदा के भारी से भारी दबाव के बावजूद यहाँ के सन्त त्याग, तपस्या एव अकिचनता मे ही सन्तुष्ट थे ।

उस दिन एक स्मारिका का विमोचन करते हुए प्रधानमत्री श्रीमती इन्दिरा गाधी ने एक तथ्य की स्वीकृति दी है जो सामान्यतया राजनीतिज्ञ स्वीकार नही करते । उन्होने स्वीकार किया—'मानव द्वारा सन्तो की अमूल्य शिक्षाओ पर ध्यान न दिए जाने के कारण विश्व के समक्ष गम्भीर खतरे पैदा हो गए हैं । आधुनिकता के नाम पर प्राचीन ज्ञान की उपेक्षा ठीक नही है । हम जो कुछ बाहर देखते हैं, वह अन्दर भी अनुभव करें । पश्चिम ने यदि किसी चीज के गहन निरीक्षण एव परीक्षा के बाद तथ्य या सत्य को स्वीकार करने की रीति-नीति स्वीकार की है तो भारतीय दर्शन का भी यही सिद्धान्त है ।' भारतीय तत्व चिन्तन में यद्यपि भौतिक समुन्नति, ज्ञान-विज्ञान की व्यवस्थित उन्नति को स्वीकार किया गया है तो आध्यात्मिक एव मानसिक समुन्नति की महत्ता को भी स्वीकार किया गया है । हमारे चिन्तन मे भौतिक सासारिक ज्ञान-विज्ञान रूपी अविद्या है तो मानसिक, आत्मिक शक्ति रूपी सच्ची विद्या भी है । दोनो के सच्चे समन्वय से ही मानव की सच्ची समुन्नति सम्भव है । इस विद्या-अविद्या के समन्वय में ही सन्तों की वाणी और चरित्र सर्वत्र व्याप्त हुए हैं ।

वेदो की सीख है—'मित्रस्य चक्षुषा समीक्षा महे' हमे सबके साथ मित्र के तुल्य व्यवहार करना चाहिए । इसी प्रकार व्यास जी ने अनेक शास्त्रो का सार बतलाया है—'परोपकार पुण्याय पापाय परपीडनम् ।' दूसरो से सद्व्यवहार उपकार ही पुण्य के तुल्य है और दूसरो को पीडा देना ही पाप के समान है । इसी प्रकार यदि हम रामायण का अध्ययन करें तो वहाँ राम की सत्य परायणता या बुराई पर अच्छाई की जीत, भरत-लक्ष्मण की भ्रातृभक्ति, सीता जी की अनुपम पतिभक्ति, हनुमान की शक्ति और बहादुरी, सुग्रीव की मित्रता के अनुपम उदाहरण दिखाई देते हैं । गाँधी जी के श्रद्धास्पद भगत सन्त नरसी मेहता के शब्दो मे 'वैष्णवजन तो तेणे कहीए जे पीर पराई जाणे रे—'सच्चे भगवान् का भक्त तो वही है जो दूसरो के दुख को जानता है और उसे दूर करने का संकल्प करता है यही बात इन शब्दो मे भी कही जा सकती है—'दैवी सम्पद्विमोक्षाय, निबन्धायासुरी मता ।' जब हम दूसरो के दुखो-कष्टों से कातर होकर उनके उपकार के लिए कल्याण करते हैं तो वही पुण्य है, वही दैवी सम्पत् है और दूसरों को कष्ट देना ही पाप और आसुरी वृत्ति के तुल्य है । युग-युग से सन्तों की यही सीख रही है, खेद का विषय है कि सन्तों का जय-जयकार करते हुए भी हम सन्तों द्वारा प्रदर्शित मार्ग का अनुसरण नही करते ।

चिट्ठी-पत्री — देश रक्षा का व्रत लीजिये

मुसलमानों और ईसाइयो, विचार करो, तुम्हारे पूर्वज कौन थे ? तुम्हे विदेशियो के प्रलोभन या बहकावे मे नही आना चाहिए । अगर भारत पर हमला हुआ या बम गिरा; तो क्या सिर्फ हिन्दू ही मरेगे ? देखो मुस्लिम देशो की ओर सत्ता के लोभ मे भाई का भाई खून कर रहा । विदेशो से भारतीयो को हटाया गया और हटाया जाएगा । लेकिन भारत मे ऐसा नही हुआ । उदारता का नाजायज फायदा मत उठाओ, भारत की शांति को भग मत करो । जिस तरह अपने घर को अपना समझ कर रक्षा करते हो, उसी तरह देश की रक्षा करो । हरिजन कमजोर वर्गों पर अत्याचार करने वालो चेतो, तुम्हारी आने वाली पीढी कमजोर होगी और फिर तुम विधर्मियो के गुलाम हो जाओगे । इसलिए उन्हे प्रेम और स्नेह दें । सरकार राष्ट्र रक्षा चाहती हैं तो इन मागो को अविलम्ब लागू करे ।

(१) देश के टुकडे करने की माँग करने वाली पार्टियो पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगाया जाए और उन्हे मतदान करने से वचित किया जाय । (२) हिन्दू राष्ट्र की घोषणा की जाय । (३) गोहत्या पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगाया जाय । (४) एक से अधिक शादी मुसलमानो के लिए भी वर्जित करे । (५) परिवार नियोजन को समान रूप से लागू किया जाए ।

—सूर विश्वम्भर आर्य, समस्तीपुर (बिहार)

(वैदिक यज्ञ मे आहुति ····पृष्ठ २ का शेषाश)

से दान दिया । विश्वास है और भी कई भाई व बहिने इस नित्य यज्ञ एव वेद-पाठ हेतु अधिष्ठाता गुरुकुल कागडी हरिद्वार को धन भेजने की कृपा करेगे ।

अमृतसर का विशाल यज्ञ अमृतसर गोल बाग में ४५×४५ की वेदी पर ६×६ फुट का यज्ञ कुण्ड व २५ फुट मध्यभाग मे ऊचा यज्ञ मण्डप बनकर तैयार हो गया दिनाक १८-४ की प्रात आरम्भ होना था, अकस्मात् दिनाक १७-४ की शाम को भयकर आन्धी-तूफान आया ओले गिरे व यज्ञ मण्डप तहस नहस हो गया तथा कुड मे ३ फुट पानी भर गया ।

दिनाक १८-४ की प्रात ७-३० बजे यज्ञ आरम्भ होना था । लोग ६-३० बजे से ही आने प्रारम्भ होऐ-यज्ञ व्यवस्थापक सेठ शोरी लाल जी । प्रधान श्री जगदीश जी व मत्री श्री मास्टर रक्खामल जी कहने लगे-गुरुजी मण्डप अस्त व्यस्त हो गया । यज्ञ कुण्ड मे पानी भरा है, मैदान मे एक-एक फुट पानी भरा है कहा बैठेगे कैसे यज्ञ होगा । आप आज्ञा दें तो यज्ञ समाज मन्दिर मे ही प्रारम्भ करे ।

राजगुरु जी ने कहा-परमेश्वर ने अपना कार्य कर दिया । सारी व्यवस्था प्रतिकूल हो गई, किन्तु इसी स्थान पर निर्धारित समय पर यज्ञ आरम्भ करना है ।

मुझे विश्वास है हमारा यज्ञ प्रभु कृपा से सानद सम्पन्न होगा । यह वर्षा तो आप याज्ञिको के स्वागतार्थ हुई है डरते क्यो हो, चलो । व्यवस्था करो-इतना कहकर स्वय यज्ञ कुण्ड में से पानी निकालने लगे । देखते-देखते सभी स्त्री पुरुष काम में जुट गऐ तखेत बिछाए गए । आसन लग गए यज्ञ वेदी भी सजा दी गई व गीले यज्ञ कुण्ड मे गीली समिधाऐ जमाकर यज्ञ के ब्रह्मा श्री शर्माजी ने विधिवत यजमानो के द्वारा अग्न्याधान करा दिया-लोग जहा तहाँ बैठे व खडे भी रहे—वेद पाठ एव स्वाहाकार होता रहा । गीली समिधाऐ जलती रही नियमित उपस्थिति बढती रही व सारा दिन सानद यज्ञ हुआ व सानद ही बिना किसी बाधा के यज्ञ की पूर्णाहुति हो गई । विगत दो वर्षो से आर्यसमाज शक्ति नगर ने अमृतसर के गोल बाग में विशाल यज्ञ वेदी पर ६+६+६ फुट के यज्ञ कुण्ड मे यज्ञ करवाने को शुरुवात कर एक अत्यन्त ही महत्वपूर्ण कार्य प्रचार की दृष्टि से किया है । इस बार यज्ञ के ब्रह्मा श्री प० राजगुरु जी शर्मा को अमृतसर दुर्ग्याणा लक्ष्मीनारायण मदिर के अतिथि भवन में ठहराया गया । सैकडो सनातनी भाई (पौराणिक) इस यज्ञ मे नियमित आते रहे । पूर्णाहुति के दिन लक्ष्मी नारायण मदिर के ट्रस्टी प्रधान जी का ब्रह्मा जी का स्वागत करने पधारे । ब्रह्मा श्री शर्मा जी ने हजारो की उपस्थिति मे प्रधान जी को कहा कि आप लक्ष्मी नारायण मदिर के ट्रस्टी है । लक्ष्मी नारायण का अर्थ विष्णु एव लक्ष्मी होता है । आपने लक्ष्मी नारायण का मदिर बनाया है किन्तु वेद-कहता है कि यज्ञो वै विष्णु अर्थात यज्ञ ही विष्णु है अत बतलाओ प्रधान जी क्या आपने मंदिर में नित्य यज्ञ होता है ? वे कहने लगे नही । तो सब मौन बैठे थे पुन शर्मा जी ने कहा । प्रधान जी यदि वास्तव मे लक्ष्मीनारायण या विष्णु की पूजा करना चाहते हो तो दुर्ग्याणा मदिर के चौक मे एक विशाल व संगमरमर की यज्ञशाला बनाकर उसमे अखण्ड यज्ञ प्रारम्भ करो इससे लोगो मे श्रद्धा बढेगी हमारे लिए तो इसमे कई सैद्धान्तिक बाधाऐं भी हैं, किन्तु आप को कुछ नही । पूर्णाहुति के बाद ऋषिलगर की सुन्दर व्यवस्था की गई थी—इस वर्ष भी कई नौजवानो ने यज्ञोपवीत धारण किये ।

अध्यात्म चिन्तन

यह संसार गम्भीर नदी सदृश : तैरने और पार करने के साधन

बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के पांच प्राध्यापक एक नाव पर बैठकर गगा यात्रा का आनन्द ले रहे थे। नौका के खेवट ने जब प्राध्यापको से उनका परिचय पूछा, तब प्रत्येक ने क्रमश. अपने को दर्शन, विज्ञान, इतिहास, गणित और भूगोल का शिक्षक बताया। इतने मे आकाश मे काली घटाए उमडती नजर आई। खेवट ने पूछा—विद्वानो, आप मे से प्रत्येक अपने विषय का विशेषज्ञ है पर अब गगा मे जोरदार बाढ आने और नाव के डूबने का संकट सिर पर मडरा रहा है। आपको इस समय तैर कर ही अपने बचाव का साहस करना होगा, अन्य कोई उपाय तो नही है।" पाचो ने आर्त स्वर मे कहा—'हमे तैरना तो आता नही है। हम अब कैसे बच सकते है?" खेवट के इस प्रश्न का कि—'आप मे से प्रत्येक ने इतना गहन ज्ञान तो प्राप्त किया, पर तैरने का सामान्य ज्ञान भी प्राप्त न किया"—इन बुद्धिजीवियो के पास कोई उत्तर न था। आज के मानव की ठीक यही स्थिति है। इसके मस्तिष्क मे पुस्तकीय ज्ञान तो भरा पडा है, पर इस ससार मे कैसे रहना है, इस ससार सागर को तैर कर कैसे पार करना है—इससे वह सर्वथा अनभिज्ञ है।

गु० कु० कांगड़ी हरिद्वार मे तैरना अनिवार्य

इस सदी के पहले दो दशको की बात है। हरिद्वार से लगभग सात मील दूर गगा पार, एक ओर शिवालक पर्वत की उपत्यकाए, नीचे पशु और सघन वन, मध्य स्थित गुरुकुल कांगड़ी का भागीरथी तट स्थित आश्रम, साथ ही वही पर तनिक दूर आचार्यवर महात्मा मुंशीराम, (बाद मे स्वामी श्रद्धानन्द) का बगला और वही पेड के तने के चारो ओर प्रस्तर आवेष्ठित मच सहित खटुए का रम्य छायादार वृक्ष—जहाँ स्नेह मूर्ति आचार्यवर के चारो ओर दिन भर छात्रो और अध्यापको का आना-जाना। वर्षा ऋतु मे गगामैया का विस्तार, उद्दाम तरगो सहित, समुद्र सदृश जल राशि सस्या के लिए बाढ का प्रतिक्षण सकट, इसे रोकने के लिए छात्र और अध्यापकवृन्द सहित, आचार्य जी के नेतृत्व मे, सिर पर पत्थर ढो-ढो कर बांध निर्माण पर क्रुद्ध फनफनाती गगधाराएं इस बाँध को हडपने के लिए सदा उत्सुक, आधी-आधी रात तक हाथ में लैम्प पकडे आचार्य जी के नेतृत्व मे समस्त कुलवासियो द्वारा नदी तट पर मिट्टी डाल उत्तुग लहरो को रोकने का सतत प्रयास इत्यादि क्रिया-कलाप प्रति वर्ष करना पडता था, पर साथ ही एकदम अनिवार्य था—प्रत्येक छात्र और कुलवासी के लिए तैरने की विद्या सीखना जिसका समुचित प्रबन्ध था। कार्यक्रम कुछ इस प्रकार था—पठन-पाठन के बाद, मध्यान्ह उफनती गगा मे तैरना सीखना और उमडती—गगन-चुम्बी लहरो की भिडन्त के साथ विस्तृत पाट को पार करना, सीधा-उल्टा खडा इत्यादि विविध तैराकियों का अभ्यास—इस श्रम कार्य के पश्चात् आचार्य जी कृत पूर्व व्यवस्था के अनुसार गगा तट पर एक ओर दूध की ठडी कच्ची लस्सी से भरे ऊचे विशालकाय पात्र और दूसरी ओर चूसने वाले आमो से भरे—उस समय चार आना सैकडा की दर से खरीदे—सैकडा १२५ की—जल मे पहले से ही रखे आमो के बडे-बडे टोकरे—बस, छात्रो को अनवरत उत्साहित प्रेषित करते आचार्य जी की छत्र-छाया मे, यथेच्छ, निर्बाध आम, लस्सी और नदी में छलाग लगाते प्रवाह के साथ और प्रतिकूल भी—लम्बी-दूरी तक तैरना—घटो तक यह कार्यक्रम चलता। इसके फलस्वरूप, छात्रो मे इतना साहस और आत्मविश्वास आ गया था कि गुरुकुल भूमि से लगभग ५ मील ऊपर हरिद्वार की हर-की-पौडी के सामने चडी पहाड की चोटी पर ठेकेदारो द्वारा काटकर जमा किये गये शहतीरो का बेडा बांध और वही पर्वत पर लगे प्याज के पेडो से प्याल तोड और झोली भर—खाते-पीते, हसते-खेलते कूदते-नाचते हम लोग कुल भूमि मे अपन बगले के सामने खटुए पर उन्मुक्त शुभ्र-श्मश्रु, ग्रीवा सहित छाती पर पीत दुकूल शोभित, हर्षपूर्ण सजल नेत्र और तेजस्वी विशाल डील-डौल, मुखमडल सुशोभित पूज्य आचार्य महात्मा मुशीराम (स्वामी श्रद्धानन्द) जी की चरण वन्दना कर उनका आशीर्वाद प्राप्त करते। गुरुकुलीय जीवन के इन १४ वर्षों मे प्रति वत्सर आने वाली गगा की यह बाढ डरावनी और प्राणघातक होने के बदले हम छात्रो और कुलवासियो के लिए नवोत्साह और नव शक्तिप्रद हो अभिनन्दनीय होती थी। प्रसगवश, यह भी उल्लेखनीय है कि आचार्यवर अपने शिष्यो को साहस, उद्यम, विपरीत परिस्थिति, संकट का मुकाबला, और बल-शौर्यवर्द्धक कार्यों और प्रवृत्तियो को सदा प्रोत्साहित करते और उन पर छात्रों को विजय पाते अत्यन्त आल्हादित हो अजस्र आशीर्वाद देते। ऐसे अलौकिक शिष्य-प्रेम, वात्सल्य और लगभग ३०० से अधिक अरण्य-वास छात्रो के प्रति निष्पक्ष, सम पुत्र-वत् स्नेह के आचार्य श्री प्रेरक मूर्त रूप थे।

ससार रूपी नदी का तैरना

सस्कृत के एक नीति ग्रन्थ मे कवि ने एक श्लोक द्वारा इस ससार को नदी तुल्य बताते और उससे सम्बद्ध अगो का वर्णन कर इसे पारकर सकने वाले को योगीश्वर बताया है। श्लोक का भावार्थ इस प्रकार है—

'यह ससार आशारूपी नदी है, जिसमे विविध प्रकार के मनोरथ जल सदृश, तृष्णा, (हवस) तरग सदृश, राग-द्वेष जल के भीतर छिपे ग्राह सदा डाँवाडोल रहने कुछ निश्चय न कर सकना मछली सदृश है, इन सबके परिणामस्वरूप नदी तट पर खडे धैर्यरूपी वृक्षका नाश, इस नदी मे मोहरूपी गहन घूमनघेरी है, और चिन्तारूपी नदी के ऊचे किनारे हैं। विशुद्ध और पुनीत चिन्तन के व्यक्ति इस नदी को पार कर योगीश्वरो के सदृश आनन्द को प्राप्त करते हैं।"

महाभारत के शान्ति पर्व मे रण-शय्या पर उत्तरायण मे इच्छापूर्वक शरीर त्यागने की प्रतीक्षा मे लेटे भीष्मपितामह ने पाडवो को जो उपदेश दिए हैं वे इन्द्र धनुष के सप्तरग सदृश मानव जीवन के अविकल और विच्छिन्न क्षेत्र मे अगो और आमरण जीवनयात्रा का वर्णन है। वहाँ पितामह ने इस जीवन नदी का आध्यात्मिक नदी के रूप मे इस प्रकार वर्णन किया है—

आत्मा नदी सयम पुण्य तीर्था,
सत्योदका शीलतटा दयोर्मिः।
तत्राभिषेक कुरु पांडु पुत्र, न
वारिणा शुध्यति चान्तरात्मा।

अर्थात्—यह आत्मा नदी तुल्य, इस पर स्नान करने का पवित्र घाट सयम है, इस नदी का जल सत्यरूप, किनारा उत्तम, शुद्ध आचरण, और दयारूपी लहरें हैं। हे पाडु पुत्र! इस नदी मे स्नान करो, इससे ही आत्मा शुद्ध होगी, बाहर के जल से आत्म शुद्धि नही हो सकती।

वेद में विश्व नदी का रूप

यजुर्वेद के ३५/१० के निम्न मत्र मे प्रभु ने मानव के लिए जो उपदेश दिया है, वह सर्वांगपूर्ण, अतुलनीय और अहर्निश स्मरणीय-मननीय है—

ओ३म्। अश्मन्वती रीयते सरभध्वं उत्तिष्टत प्रतरता सखयः। अत्रा जहीमो ये अशिवा असन् शिवान् वयं उत्तरेऽभिवाजन्॥

भावार्थ—यह पथरीली नदी अत्यन्त वेगपूर्वक बह रही है। हे मनुष्यो! सम्यक् प्रकार से सब मिलकर तैरना आरम्भ करने के लिए सावधानता से खडे हो जाओ और सब पारस्परिक मित्र भाव से पार करने के लिए इसे उत्कर्ष के साथ तैर जाओ। इसमे सफलता प्राप्त करने के लिए अभद्र विचार और व्यवहार यहीं छोड हम सब परस्पर बलपूर्वक श्रेष्ट-भद्र विचारो को अपने साथ आगे ले चले।

लेखक
आचार्य दीनानाथ सिद्धान्तालंकार

लगभग इसी प्रकार के भावो को कुछ अश तक प्रकट करने वाले सन्त कबीर ने भी अपनी वाणी मे कई दोहे कहे हैं जिनमे से पाँच दोहे हम यहाँ उद्धृत करते हैं—

क्षीर रूप हरि नाम है,
नीर आन व्योहार।
हंस रूप कोई साध है,
तत्त का जाणनहार॥ १॥

खुली खेलो ससार मे,
बाध सकै न कोय।
घाट जगाती क्या करे,
जो सिर बोझो न होय॥ २॥

कबीर नाव जरजरी कूडे खेवनहार।
हल्के-हल्के तिरी गये,
बूड़े तिनि सिरि भार॥ ३॥

कागद केरी नावरी,
पादभी केरी गग।
कहै कबीर कैसे तिरू,
पचकुसगी सग॥ ४॥

कबीर मधि अग जे कोऊ रहै,
तो तिरत न लागै बार।
दुइ दुइ अ सूग लागि करि,
डूबत है ससार॥ ५॥

कबीर इन दोहो मे कहते हैं जो अपने अगो को तैरते समय सतुलित रखते हैं, उन्हें तैरने मे दिक्कत नहीं आती पर जो दोनो ओर दाए-बाएं झकाने वाले व्यक्ति हैं, वे डूब जाते हैं।

रात को सोते समय यजुर्वेद के उपर्युक्त मत्र का पाठ करते हुए यह सोचना चाहिए, आज जो मैंने जीवन मे भूले व अनुचित काम किए हैं, कल नही करूगा और प्रात. उठते ही प्रभु चरणो मे पिछले दिन की भूलों को न दोहराने और श्रेष्ठ कर्म करने का दृढ़ निश्चय करे, तो अवश्य ही वह जीवन सोपान पर सतत ऊंचा चढता जाएगा। जीवन का यही सरल सीधा, सर्वोत्तम और सहज मार्ग है जिसका इस मत्र मे निर्देश किया गया है।

—के० सी० ३७/बी
अशोकविहार, दिल्ली—२५

वेद-मनन

पहले स्वयं योग्य बनो, पश्चात् दूसरों का कल्याण करो

—मनोहर विद्यालंकार

स्थिरो भव वीड्वङ्ग आशुर्भव वाज्यर्वन् । पृथुर्भव सुषदस्त्वमग्ने, पुरीषवाहन. ॥
यजु १२-४४

शिवोभव प्रजाभ्यो मानुषीभ्यस्त्वमङ्गिर. । मा द्यावापृथिवीऽअभिशोचीर्माऽन्तरिक्ष मा वनस्पतीन् ॥ यजु ११-४५

ऋषि:—त्रित. चित्र:। त्रितोवा । देवता-अग्नि. । छन्द: विराऽनुष्टुप, विराट् पथ्या बृहती । शब्दार्थ-- हे (अर्वन्) दोषो और रोगो को नष्ट करने वाले ! तू (वाजी) समृद्धिशाली अर्थात् (वीड्वङ्ग) शरीर से शक्तिशाली अगो वाला (स्थिर) मन से स्थिर और (आशु.) आत्मा से शुचि तथा सबमे आत्मभाव से व्यापने वाला (भव) बन। तथा (अग्ने) ज्ञान, यज्ञ और जाठर अग्नि के (पुरीषवाहन) ऐश्वर्य का वाहक होने से (त्वम्) तू (सुषद:) उत्तम गतिवाला है, इसलिए (पृथु) सब का भरण करने वाला और सबको सन्तुष्ट तथा तृप्त करने वाला (भव) बन। इसी बात का अगला मन्त्र दूसरे शब्दो मे वर्णन करता है—

हे (अगिर) अग-अग मे रस से पूर्ण, सशक्त, मनुष्य (मानुषीभ्य. प्रजाभ्य:) सम्पूर्ण मानुषी प्रजाओ के लिए (शिव भव) कल्याणकारी बन। न केवल मानवो को अपितु (द्यावापृथिवी अन्तरिक्षम्) इन तीनो लोको मे रहने वाले किसी भी प्राणी को (मा अग्निशोची) शोकसम्पन्न मत रहन द। केवल चल प्राणियो को ही नही, अपितु अचल (वनस्पतीन्) प्राणयुक्त वनस्पतियो को भी (मा) शोकयुक्त मत कर।

निष्कर्ष—मनुष्य को चाहिए कि वह शरीर से बलवान, मन से स्थिर तथा आत्मा से पवित्र बने। इसके लिए परमात्मा के ऐश्वर्य को वहन करे अर्थात् उसके गुणो को अपने आचरण मे लाने का प्रयत्न करे। परिणामस्वरूप उसकी स्थिति उत्तम, विचार और क्षेत्र होगा।

मनुष्य को केवल मनुष्यो ही नहीं पशु-पक्षियो, कीट-पतगो और वनस्पतियो तक का कल्याण करने की कामना करनी चाहिए। यह कल्याण-भावना अपने क्षेत्र समाज या देश तक ही सीमित न रहकर त्रिलोकी अथवा सम्पूर्ण विश्व के लिए रखनी चाहिए।

विशेष—इस मन्त्र का ऋषि शब्दार्थ सकेत करता है कि मनुष्य को शरीर, मन और आत्मा तीनो का विस्तार उत्कर्ष करके तीनो लोको मे रहने वाले प्राणी मात्र के कल्याण की कामना करनी चाहिए। तभी वह अग्नि के ऐश्वर्यमय गुणो को धारण करके स्वय भी अग्नि सखा बन सकता है। इन मत्रो के छन्द शब्दार्थो का सकेत है कि मनुष्य को अपना हृदय व मन उदार बनाना चाहिए और अपनी प्रवृत्तियो को बृहती रूप प्रदान करना चाहिए। तभी वह अग्नि के अनुकरण द्वारा उसके समान स्तुत्य बनेगा। अर्थपोषक प्रमाण—पुरीषम्—ऐश्वर्यम्। अथयत्पुरीष स इन्दु। माश १०-४-१-७ ऐन्द्र हि पुरीषम्। माश ८-६-३-६ प्रीञ् प्रीणने। वीडु बलनाम। नि० २-६ अर्वन—अर्व हिसायाम। आशु: —आत्मना शुचि., शुचिर् पूतीभावे। सुषद —सुक्सद् गतौ, चुरादि.। विराट्—विशेषेण राजते। पृथु —पृ पूरणे, पृ प्रीतौ। बृहती—बृह वृद्धौ। त्रित —त्रीन्+तनोति, तनु-विस्तारे, त्रीन—ताम्यति, तनु कांक्षायाम्। चित्र —चित् (चेतना-ज्ञान)+र (रादाने) अनुष्टुप—अनु+स्तुप् स्तुञ् स्तुतौ।

५२२, ईश्वर भवन, खारी बावड़ी,
दिल्ली-११०००६

गिदड़बाहा में आर्यवीर दल व कुमार सभा

आर्यसमाज गिदड़बाहा मे नवनियुक्त पुरोहित श्री राया जी शिवाजी राव भौसले के सुप्रयास से नगर मे आर्यवीर दल तथा आर्यकुमार सभा की शाखाए विधिवत् कार्य करने लगी हैं। इन शाखाओ के माध्यम से न केवल आसन प्राणायाम का ही प्रशिक्षण दिया जाता है अपितु युवको मे देशभक्ति व धर्मप्रेम की भावनाए पैदा करते हुए वेदादि शास्त्रो के प्रति उनकी रुचि भी पैदा की जाती है।

आर्य जगत् समाचार

आर्यवीर राष्ट्र की अग्रिम रक्षापंक्ति बनें

आर्यवीरों की जिम्मेदारी : प्रो० शेरसिंह का आह्वान

शिक्षण शिविर में उद्बोधक दीक्षान्त भाषण :

अगला आर्यवीर महासम्मेलन फरीदाबाद में होगा

फरीदाबाद। 'आज राष्ट्र राजनीतिक पतन की ओर अग्रसर हो रहा है देश की संस्कृति नष्ट करने का षड्यन्त्र रचा जा रहा है। इन सब दोषों को दूर करने के लिए आर्यवीर राष्ट्र की अग्रिम रक्षापंक्ति बन कर आगे आए। आर्यवीर ही राष्ट्र की भावी रक्षापंक्ति हैं। — इन शब्दों मे दयानन्द पब्लिक स्कूल सेक्टर १५ मे हरियाणा आर्यवीर दल के तत्वावधान मे आयोजित शिक्षण शिविर का दीक्षान्त भाषण देते हुए आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के प्रधान प्रो० शेरसिंह ने आर्यवीर का उद्बोधन किया।

यह भी निश्चय किया गया कि आगामी २-३ अक्तूबर को आर्य वीर दल हरियाणा का छठा प्रान्तीय महासम्मेलन किया जाए। सार्वदेशिक आर्य वीरदल के प्रधान सेनापति श्री बाल दिवाकर ने आर्य वीरदल महासम्मेलन के लिए केवल फरीदाबाद से ही एक हजार आर्यवीर कार्यकर्त्ता तैयार करने का बीड़ा उठाया। इस समारोह के अवसर पर एक स्मारिका भी निकाली जाएगी। उल्लेखनीय है कि ग्रीष्मावकाश के दिनो मे हरियाणा मे पानीपत, नरवाना (जींद), बहादुरगढ, कुंजपुर (करनाल) फरीदाबाद तथा रोहतक मे आर्यवीर शिक्षण शिविरो का आयोजन किया गया।

आर्यवीरों का दायित्व

२७ जून के दिन आर्यवीर दल शिक्षण शिविर रोहतक का उद्घाटन करते हुए स्वतन्त्रता सेनानी वयोवृद्ध आर्य नेता डा० धर्मपाल आर्य ने आर्य वीरो का आह्वान किया कि वृद्ध पीढ़ी के साथ आर्यसमाज का कार्य समाप्त न हो जाए इसलिए आर्यवीर दल के शिविरो के माध्यम से आर्यवीर आर्य समाज के सम्पर्क में आए तथा देश मे डूबती नैया को सम्भाल लें। हरियाणा आर्य वीरदल के उपसभापति श्री मनोहर लाल आनन्द ने आर्यवीरो से अपना दायित्व निबाहते हुए आर्य सभ्यता और संस्कृति की रक्षा करने के लिए कहा।

वेदों के अनुसार जीवन बनाइये

आर्यसमाज गन्नौर शहर का रजत जयन्ती महोत्सव

आर्यसमाज गन्नौर शहर (सोनीपत) हरियाणा का रजत जयन्ती महोत्सव १७ से २० जून, १९८२ तक सम्पन्न हुआ। महोत्सव के अवसर पर चारो वेदो के शतक के यज्ञ का आयोजन भी किया गया।

इस अवसर पर सुप्रसिद्ध सन्यासिनी सन्जीवनी आनन्द, स्वामी सच्चिदानन्द, महात्मा प्रेम भिक्षु वानप्रस्थी, महात्मा आर्य भिक्षु, प्रो० रामविचार, प्रो० उत्तमचन्द्र शरर, श्री प्रेमचन्द श्रीधर, श्री वेदप्रकाश तलवाड़ श्री ओमप्रकाश वर्मा, आजाद हिन्द फौज के कर्नल गुरबख्श सिंह ढिल्लो, राज कवि श्री उदयभानु 'हंस' श्री प्रकाशवीर व्याकुल, श्री राममेहर एडवोकेट, श्री चन्द्रसेन, श्री सत्यदेव, श्री ज्योति प्रसाद, श्री मामचन्द पथिक भजनोपदेशक, श्री ओमप्रकाश वर्मा, श्री कवरभान मल्होत्रा, श्री दीवान वेलाराम, जितेन्द्रकुमार, श्री ज्वालाप्रसाद आदि महानुभावो ने उपदेशो, भजनो, कविताओ एवम् संगीत के माध्यम से जनता को वेद के अनुसार अपना जीवन बनाने की प्रेरणा दी।

इस अवसर पर श्रीमती शान्ति राठी (भू० पू० मन्त्री, हरियाणा) श्री महाशय धर्मपाल, महाशिया दी हट्टी दिल्ली, श्री गोसाई चन्द्रभान जी, श्री धर्मपाल कुकरेजा (तनेजा सेल्स कार्पोरेशन दिल्ली) आदि महानुभावो ने सभा की अध्यक्षता की एव उदारता से दान दिए।

इसके अतिरिक्त आर्यसमाज के प्रधान प० जयदेव जनोई वाला का उनके ७५ वे जन्म दिवस (अमृत जयन्ती) पर आर्यसमाज की ओर से अभिवादन किया गया। इस अवसर पर लगभग २३ हजार रुपए दान मे प्राप्त हुए तथा पूज्यपाद स्वामी सत्यव्रती जी महाराज एवम् श्री के० एल० सूरी नई दिल्ली ने विद्यालय के एक कमरे के निर्माण का वचन दिया।

१८ जून'८२ को दो मुस्लिम परिवारों तथा १६३ ईसाइयों की शुद्धि

भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा के उपदेशक श्री बलवीरसिंह के प्रयत्नों से ग्राम इखतरा जिला आगरा के सलीमखाँ व अजीम खाँ के परिवारों का शुद्धि संस्कार श्री प० रामप्रसाद मिश्र बरेली व श्री रामनारायण शास्त्री पुरोहित जयपुर हाउस, आर्यसमाज आगरा ने श्री द्वारकानाथ सहगल प्रधान मन्त्री—शुद्धि सभा की अध्यक्षता मे किया। शुद्धि के बाद सलीम खाँ का नाम श्री शिवचरणसिंह, अजीमखाँ का नाम बनवारीलाल ठाकुर रखा गया। इनकी पत्नियों, पुत्र-पुत्री के भी नाम बदले गए। यज्ञ के पश्चात जाति सहभोज में लगभग २० ग्रामो के कई सौ ठाकुर ब्राह्मणों ने भाग लेकर उनके हाथ से परसा भोजन ग्रहण करके जाति मिलन पर हर्ष प्रकट किया।

१६३ ईसाइयों की शुद्धि

ग्राम खुर्द जिला-बरेली में एक हिंदू सम्मेलन श्री साहू जगदीशशरण आंवला की अध्यक्षता मे हुआ जिसमे १६३ ईसाई भाई लगभग सोलह ग्रामो से एकत्र हुए। यज्ञ पर सभी ने हिन्दू धर्म में दृढ रहने की प्रतिज्ञा की। शुद्धि संस्कार प० दीपचन्द शर्मा ने सम्पन्न कराया, श्री रामचन्द्र जी प्रवक्ता सुभाष इन्टर कालेज आंवला, श्री विश्वनाथ खन्ना हिन्दू रक्षा दल दिल्ली सम्मिलित थे।

दो ईसाई युवतियो ने २४ जून के के दिन नई दिल्ली के समारोह में हिन्दू धर्म स्वीकार कर लिया। कुमारी व्हायोलेट दानी और कु० मखी दानी का हिंदू नाम अब इन्दिरा और अनीता रखा गया है।

श्रीमती मंजुला प्रतापसिंह का स्वर्गवास आर्यसमाज को गहरी क्षति

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के भूतपूर्व प्रधान श्री प्रतापसिंह शूर जी वल्लभदास कच्छ केसिल, बम्बई की धर्मपत्नी श्रीमती मन्जुला देवी का देहावसान दिनांक १६-६-८२ को हो गया। श्रीमती मन्जुला देवी एक आदर्श पतिपरायणा एव धर्मनिष्ठ महिला थी। उन्होंने अपने पति श्री प्रतापसिंह जी के कन्धे-से कन्धा मिला कर आर्यसमाज की गतिविधियो मे सदैव बडी निष्ठा से भाग लिया। परम पिता परमात्मा से मंजुला बहिन की आत्मा को सद्गति एवं शान्ति प्रदान करने की प्रार्थना की गई और उनके परिवार के सदस्यो को इस महान दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करने की कामना करते हैं।

बोध-कथा

सहृदयता !

एक विधवा बंगालिन थी। वह अपनी पुत्री का विवाह करना चाहती थी, परन्तु उसके विधवा होने के कारण कोई भी भद्र समाज का पण्डित उसकी पुत्री का विवाह करने के लिए तैयार नही होता था, क्योंकि उन पण्डित को विधवा की पुत्री का विवाह कराने के कारण समाज से बहिष्कृत होने का डर था। वह विधवा बंगालिन बड़े बडे पण्डितो और समाज सुधारको के पास गई, परन्तु किसी भी पण्डित ने उस पर दया नही की। लोगो ने सलाह दी तुम कलकत्ता हाईकोर्ट के बाबू आशुतोष मुखर्जी के पास जाओ। शायद उनके पास जाने से तुम्हारा काम बन जाए। आकर बेचारी विधवा उनकी कोठी पर पहुची। कोठी का ठाट-बाट देखकर वह अचम्भे मे आगई। उसे लगा कि इतनी बडी कोठी का मालिक मेरी बात क्या सुनेगा उसे मालूम हुआ कि कोठी के मालिक अदालत गए हुए हैं। वह निराश होकर कोठी से बाहर जा ही रही थी कि एक शाही टमटम पर एक शाही सवारी आकर जाती दिखाई दी। आशुतोष बाबू ने अन्दर घुसते हुए बाहर जाती उस दुखी औरत को देख लिया। उन्होने अपने एक पहरेदार से उसे बैठक मे बुलाने के लिए कहा।

आशुतोष मुखर्जी द्वारा आने का कारण पूछने पर उस नारी ने अपनी विपदा की बात सुना दी और कहा 'मुझ विधवा की कन्या का विवाह कराने के लिए कोई भी पण्डित तैयार नही होता। क्या करू ?' आशुतोष मुखर्जी ने कहा-'सब प्रबन्ध हो जाएगा' और उन्होने उस महिला का ठिकाना और विवाह का समय पूछ लिया।

निर्धारित समय पर पीताम्बर वेशधारी एक पण्डित विधवा के घर पहुंच गए और पूरे विधि-विधान के अनुसार उन्होने विवाह की रीति पूर्ण करवा दी। संस्कार कराने के बाद वह पण्डित केवल कुछ अक्षत (चावल) ही दक्षिणा रूप स्वीकार करने के लिए तैयार हुए। (परम्परा के अनुसार बिना दक्षिणा के संस्कार पूर्ण नहीं होता।

उस विधवा तथा समस्त बंगाली भद्रसमाज को यह जानकर आश्चर्य और आनन्द हुआ कि वह पीताम्बर वेशधारी पण्डित हाईकोर्ट के जज श्री आशुतोष मुखर्जी थे।

— नरेन्द्र

आर्यसमाजों के सत्संग

११ जुलाई ८२

अन्धा मुगल-प्रताप नगर—पं० रामनिवास; अमर कालोनी—पास्टर, ओम्-प्रकाश आर्य; अशोक विहार के-सी-५२-ए—आचार्य दीनानाथ सिद्धान्तालकार; आनन्द विहार-हरिनगर एल ब्लाक—प० आशानन्द—भजनोपदेशक; कालकाजी—सुखदयाल भूटानी, करोलबाग—प्रो० रतन सिंह, कृष्णनगर—डा० रघुवीर वेदालंकार, गांधीनगर—आचार्य नरेन्द्र शास्त्री; गीताकालोनी—श्रीमती प्रकाशवती शास्त्री, ग्रेटर कैलास—I—प० ओमप्रकाश गायक; ग्रेटर कैलास—II—प० वेद-राल शास्त्री; गुड मण्डी—प० अशोक कुमार विद्यालंकार; गुप्ता कालोनी—प० प्रकाशचन्द्र वेदालकार, गोविन्दभवन-दयानन्द वाटिका—प० सीसराम भजनोपदेशक; चूनामण्डी पहाडगज—प० मुनिशकर वानप्रस्थ, जगपुरा-भोगल—श्री मोहनलाल गाधी, जनकपुरी सी-३—प्रो० सत्यपाल बेदार, तिलक नगर—प० वेदेश, तिमारपुर—प० सोमदेव शास्त्री, दरियागंज—प० हरिश्चन्द्र शास्त्री, नारायण विहार—प० जयभगवान भजनमण्डली; नया बास—प० ज्ञानचन्द्र बी-ए; न्यू मुलतान नगर—प० सत्यपाल मधुर भजनोपदेशक, न्यू मोतीनगर—श्रीमती सुशीला राजपाल, निर्माण विहार—डा० रघुनन्दनसिंह, पंजाबी बाग—प० प्रकाशचन्द शास्त्री, पंजाबी बाग एक्सटेंशन—प० मनोहरलाल ऋषि भजनोपदेशक, पालम-कालोनी राज नगर—प० चुन्नीलाल भजनोपदेशक, बाग कडेवाँ—प० बरकतराम भजनोपदेशक, मोडल बस्ती—आचार्य हरिदेव सि० भू०, महावीर नगर—प० भगवान सहाय विद्यावाचस्पति, महरौली—प० रामकिशोर वैद्य, मोडल टाउन—प० शिवप्रकाश शास्त्री, रमेशनगर—प० रघुराज शास्त्री, राणाप्रताप बाग—प० ईश्वरदत्त; राजौरी गार्डन—प० ओमवीर शास्त्री; राजा गार्डन—पं० वेद व्यास भजनोपदेशक; रोहतास नगर—प्रो० वीरपाल विद्यालंकार; लड्डू घाटी-पहाडगज—प० कामेश्वर शास्त्री; लक्ष्मीबाई नगर—प० तुलसीराम भजनोपदेशक, लेखराम नगर-त्रिनगर—ना० लखमीदास; लारेंस रोड—स्वामी विश्व देवानन्द, लोधी रोड जोर बाग प० दिनेशचन्द्र पराशर शास्त्री, विक्रम नगर—प० रामरूप शर्मा, विनय नगर—प० गणेशप्रसाद विद्यालंकार, सदर बाजार पहाडी धीरज—प० खुशीराम शर्मा, सुदर्शन पार्क—प्रो० भारत मित्र शास्त्री; सराय रोहेला—श्री चमनलाल आर्य, सोहनगंज—प० प्राणनाथ सिद्धान्तालंकार; शालीमार बाग—प० रविदत्त गौतम; शादीपुर—स्वामी स्वरूपानन्द भजनोपदेशक; हौज खास डी २०—श्रीमती लीलावती आर्या,

—ज्ञानचन्द डोगरा, वेद प्रचार प्रबन्धक

गुरुकुल महाविद्यालय ततारपुर में वेदारम्भ उत्सव

गुरुकुल महाविद्यालय ततारपुर गाजियाबाद (उ० प्र०) का १८ वां स्थापना दिवस (वेदारम्भ संस्कार) ५-६ जुलाई के दिन मनाया जाएगा। इस अवसर पर स्वामी इन्द्रवेश, स्वामी वरुणवेश, आचार्य राजवीर शास्त्री, आचार्य नरेन्द्रदेव, आचार्य रामकिशोर, आचार्य बुद्धि वल्लभ, आचार्य रवीन्द्र शिवराज शास्त्री, वेद कुमार वेदालंकार, रूपकिशोर शास्त्री, रामविलास पासवान, कैलाश नारायण अवस्थी, प० इन्द्रराज बलवीर सिंह बेधड़क, चौ० शिवध्यान सिंह, सुरेशचन्द्र शास्त्री, इकरामसिंह आर्य संन्यासिनी सजीवनी, वेदवती शिरोमणि, गजराज सिंह, आदि विद्वान एवं आर्य नेता पधार रहे हैं।

आर्यसमाजों के नए पदाधिकारी

आर्यकुमार सभा किंग्जवे। प्रधान—श्री परीक्षित सहगल; उपप्रधान - श्री कैलाश पाण्डेय, मन्त्री—श्री उमेश बजाज, उपमन्त्री—श्री मोहनलाल, कोषाध्यक्ष—श्री यशपाल शर्मा, पुस्तकाध्यक्ष—श्री राकेश मेहता।

श्री शोभाचन्द्र गौर का स्वर्गवास

आर्यसमाज एवं गुरुकुल आवासीय संस्कृतोच्च विद्यालय बैरगनियां के प्रधान एवं गुरुकुल महाविद्यालय के महामन्त्री श्री शोभाचन्द अग्रवाल जी गौर (नेपाल निवासी) का देहावसान बीरगंज में दिनांक १२-६-८२ को हो गया। इनका दाह संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ।

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार प्रवेश सूचना

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में निम्न कक्षाओं में प्रवेश के लिए प्रवेश पत्र दिनांक १५-७-८२ तक आमन्त्रित किए जा रहे हैं।

१—विद्या विनोद (इण्टर). प्रवेश योग्यता: संस्कृत सहित मैट्रिक या समकक्ष, अंग्रेजी सहित पूर्वमध्यमा, विद्याधिकारी, विशारद (पंजाब) अंग्रेजी सहित मैट्रिक।

२ अलंकार (बी० ए०) प्रवेश योग्यता. संस्कृत सहित इण्टर या समकक्ष, अंग्रेजी सहित उत्तर मध्यमा, विद्याविनोद, विशारद (पंजाब), अंग्रेजी सहित इण्टर, विद्यालंकार, वेदालंकार की उपाधि दी जाती है।

३—बी० एस० सी० प्रथम ग्रुप: केमिस्ट्री, बोटनी, जूलोजी, द्वितीय ग्रुप केमिस्ट्री, फिजिक्स, गणित। प्रवेशयोग्यता इण्टर मीडिएट विज्ञान सहित तथा उसके समकक्ष।

४—एम० ए०: वेद, संस्कृत, दर्शन, प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति तथा पुरातत्व, हिन्दी, अंग्रेजी, मनोविज्ञान, गणित। प्रवेश योग्यता—बी० ए०, बी० एस-सी०, बी० काम०, अलंकार, विद्याभास्कर, शास्त्री, आचार्य, साहित्य रत्न आदि।

महिलाएं तथा सैनिक व्यक्तिगत रूप से परीक्षा दे सकते हैं।

५—पी० एच० डी० - वेद, संस्कृत, हिन्दी, प्राचीन भारतीय इतिहास-संस्कृति एवं पुरातत्व में प्रार्थना पत्र दिनांक ३१-८-८२ तक स्वीकार्य। योग्य छात्रों के लिए छात्रवृत्ति उपलब्ध।

सुसज्जित प्रयोगशालाएं, छात्रावास, पुस्तकालय, क्रीडा, एन० सी० सी०, तैराकी आदि सुविधाएं उपलब्ध हैं उपाधि भारत सरकार तथा देश के प्रमुख विश्वविद्यालयों द्वारा मान्यता प्राप्त। विद्याविनोद (इण्टर) तथा अलंकार (बी० ए०) कोर्स में शिक्षा निशुल्क है वेद विषयों में सभी को छात्रवृत्तियां। पी० एच० डी० आवेदन पत्र तथा नियमावली ५/रु० अन्य प्रत्येक पाठ्यक्रम आवेदन पत्र सहित ७/रु० डाक व्यय १/रु० अलंकार तक छात्राओं के प्रवेश हेतु आचार्या कन्या गुरुकुल ६०, राजपुर रोड देहरादून में सम्पर्क करें।

—धर्मपाल हीरा (कुल सचिव)

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रकाशन

सत्यार्थप्रकाश सन्देश (हिन्दी)	१.००
,, ,, अंग्रेजी	समाप्त
आर्य सन्देश-महासम्मेलन विशेषांक	०.६०
पादरी भाग गया — ओम्प्रकाश त्यागी	० ३०
स्वामी श्रद्धानन्द-बलिदान अर्द्ध शताब्दी स्मारिका	६.००
सत्यार्थप्रकाश शताब्दी समारोह स्मारिका	६.००

सम्पर्क करें—
अधिष्ठाता प्रकाशन विभाग
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१

卐 आर्यसन्देश के
स्वयं ग्राहक बनें
दूसरों को बनाए

卐 आर्यसमाज के सदस्य
स्वयं बनें—
दूसरों को बनाइए

卐 हिन्दी-संस्कृत भाषा स्वयं पढ़ें
दूसरों को भी पढ़ाइये

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए श्री सरदारी लाल वर्मा द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा भाटिया प्रैस २५७४, रघुबरपुरा नं० २ गांधी नगर दिल्ली ३१ में मुद्रित कार्यालय १५ हनुमान रोड नई दिल्ली फोन ३१०१५०।

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक मुखपत्र

एक प्रति ३५ पैसे वार्षिक १५ रुपये वर्ष ६ अंक ३८ रविवार १८ जुलाई ३ श्रावण वि० २०३९ दयानन्दाब्द—१५८

विश्व भर के नेप्था तेल भण्डार जल्दी समाप्त होंगे

वैकल्पिक ऊर्जा को प्राथमिकता—भारत की समस्याओं का समाधान गोवंश की समृद्धि पर निर्भर श्री योगेश्वर विदेही जी का सत्परामर्श

बगलोर। पशुशक्ति विषयक राष्ट्रीय सेमिनार मे भाषण करते हुए अ मा. गो संरक्षण परिषद् के अध्यक्ष महामण्डलेश्वर श्री योगेश्वर विदेही हरि जी महाराज ने घोषणा की—'विशेषज्ञो के अनुसार नेप्था और कच्चा तेल विश्व के भूमिगत ज्ञात भण्डारो से शीघ्र ही समाप्त होने वाला है, जो पुन करोडो वर्षों के उपरान्त ही मिल सकेगा'। नेप्था की कमी से हमे ३ करोड ७४ लाख टन कच्चा तेल प्रति वर्ष नही मिल सकेगा, फलत. अरबो रुपयो की मशीनरी एवं करोडो व्यक्ति बेकार होगे। डीजल पेट्रोल के बिना ट्रेक्टर आदि यन्त्र न चलने से तथा रासायनिक खाद न मिलने से कृषि चौपट होगी। बसों एव ट्रको के बन्द होने से माल ढुलाई एव यात्रा का कार्य ठप्प होगा। डामर या कोलतार के अभाव मे सडके खराब होगी, फलतः ट्रक व बसे आदि चलने मे सभी कार्यों को क्षति पहुचेगी।

श्री विदेही हरि जी ने घोषित किया—नेप्था तेल के अभाव मे वैकल्पिक ऊर्जा प्राप्त करने को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जानी चाहिए। छठी पचवर्षीय योजना मे बैल वश सुरक्षा एव सवर्द्धन को भी सर्वोच्च प्राथमिकता मिलनी चाहिए। गोबर-मूत्र की कम्पोस्ट खाद तैयार की जा सकती है। अनेक प्रकार की वैकल्पिक ऊर्जा तैयार होने से रोग निवारण औषधिया और भवन निर्माण कम मूल्य पर किया जा सकता है। देश की अनेक समस्याओ का समाधान गोवश की समृद्धि पर निर्भर है। देश भर मे ३५०० से अधिक गोशालाओ के वैज्ञानिक विकास पर ध्यान दिया जाना चाहिए।

पंजाब में शान्ति स्थापित करो

देशद्रोहियों को नियन्त्रण किया जाए : अल्पसंख्यकों को हथियार दिए जाएं : अमृतसर की केन्द्रीय आर्यसमाज द्वारा पंजाब के राज्यपाल को ज्ञापन

अमृतसर। केन्द्रीय आर्य सभा अमृतसर के तत्त्वावधान मे अमृतसर की समस्त आर्य समाजो के एक शिष्टमण्डल ने २९ जून के दिन पजाब के राज्यपाल से मिल कर एक ज्ञापन के माध्यम से पजाब मे शांति-व्यवस्था सुरक्षित रखने के लिए इन उपायों को तुरन्त कार्यान्वित करने का सुझाव दिया है—१ दो कौमो या राष्ट्रो के सिद्धात पर भरोसा करने वालो को भारतीय नागरिकता के अधिकार से वचित किया जाए। २. अपराधियो को धार्मिक स्थानो पर पनाह लेने से रोका जाए, यदि कोई वहा आश्रय ले तो उसे तुरन्त पकडा जाए। ३ पुलिस मे ५० प्र० श० अल्पसख्यक हो। पजाब की सस्थाओ तथा प्रमुख व्यक्तियो को आत्मरक्षार्थ हथियार दिए जाए। ४. निहगो को निशस्त्र किया जाए और उन्हे बसो तथा रेलो में बिना टिकट सफर करने से रोका जाए। ५ हत्यारों तथा अपराधियो का सम्मान करने वालो या उन्हे आश्रय देने वालो को अपराधी घोषित किया जाए।

शिष्टमण्डल ने राज्यपाल को यह यह सूचना भी दी कि अकालियो की वर्तमान विघटनात्मक मनोवृत्ति की पृष्ठभूमि समझनी होगी, १९४७ के बाद सिखो ने बार-बार पृथक सिख होमलैण्ड की मांग की है। १९६६ में अकालियो के सन्तोष के लिए पृथक पंजाब का सूबा बनाया गया, इसके बावजूद १९७२ मे उग्रवादियो ने आनन्दपुर मे इकट्ठे होकर एक बडा पंजाब बनाने की मांग की, जिसमें कालका, अम्बाला, राजस्थान के गंगानगर जिले तथा समीपस्थ पंजाबी एव सिख क्षेत्र मिलाने की मांग की गई, इस नए पजाब मे सिक्खी और सिखो को विशेष सरक्षण देने की मांग की गई। केन्द्र की प्रभुसत्ता केवल कुछ ही विषयो पर केन्द्रित रखने की मांग की गई। देश-विदेश मे राष्ट्र विरोधी उग्रवादी बार-बार पृथक सिख देश या खालिस्तान की मांग करते रहे हैं।

अपने लक्ष्य की पूर्ति के लिए अकाली दल, दल खालसा तथा खालिस्तान की राष्ट्रीय परिषद के उग्रवादी तत्वो मे कोई बुनियादी अन्तर नही है। १३ अप्रैल १९७८ से ये उग्रवादी अपने कार्यों मे लगे है। उस दिन अमृतसर मे बैशाखी के मेले पर एकत्र निरकारियो पर हमला किया गया। १८ व्यक्ति मारे गये। ६ अगस्त, १९७८ को चडीगढ मे 'दल खालसा की स्थापना की गई। २४ अप्रैल, १९८० को निरकारी गुरु बाबा गुरुबचनसिह की दिल्ली मे हत्या की गई। जून, १९८० मे चण्डीगढ मे सिख एजुकेशन कान्फ्रेंस मे खालिस्तान राज्य की स्थापना की घोषणा की गई। ९ सित० १९८१ को पजाब के राष्ट्रीय नेता पत्रकार लाला जगतनारायण की हत्या की गई। २९ सितम्बर, १९८१ को दल खालसा द्वारा भारतीय एयर लाइन के जहाज का पाकिस्तान मे अपहरण किया गया। २६ अप्रैल, १९८२ को अमृतसर के शिव मदिरो के सामने गायो के कटे सिर फेंके गए, २६ अप्रैल, १९८२ को जलन्धर के दो पत्रकारो को गायो के कटे कान डाक मे मिले। २२ मई १९८२ के दिन पट्टी जिला अमृतसर मे गोलीकांड हुआ।

प्रतिनिधियों का ब्योरा और दशांश भेजिए

सम्बद्ध आर्यसमाजों से सभा प्रधान जी का अनुरोध

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की साधारण सभा का वार्षिक अधिवेशन आगामी २२ अगस्त, १९८२ के दिन होगा। सभा के सविधान के अनुसार इसमे समाजो के नए प्रतिनिधि ही भाग ले सकेंगे, ये तीन वर्ष तक अपनी-अपनी समाजो के प्रतिनिधि रहेगे। सभा प्रधान जी ने समस्त सम्बद्ध आर्यसमाजो से अनुरोध किया है कि वे अपनी-अपनी समाजो के प्रतिनिधियो का पूर्ण विवरण फार्म मे भर कर उनके चन्दे और सदस्यो के दशाश, वेद प्रचार और आर्यसन्देश के वार्षिक शुल्क के साथ तुरन्त सभा-कार्यालय मे भेजने की व्यवस्था करेंगे।

सभा प्रधान जी ने समाओ का ध्यान इस प्रवृत्ति की ओर भी खींचा है कि वे आर्यसमाज के सरक्षक और सरपरस्त चुनते हैं, यह परम्परा अवैदिक है, आर्यों और आर्यसमाजो के सरक्षक एकमात्र प्रभु है। इसी के साथ अधिकारियो की सख्या बहुत बढ़ती जा रही है, जो अनावश्यक है छोटी एव न्यून सदस्यो वाली आर्यसमाजों को अपने अनुपात के अनुसार ही अपने पदाधिकारी रखने चाहिए।

वेद-मनन

विशेष—परमेश्वर अग्नि के समान प्रत्येक पदार्थ मे विद्यमान (जातवेदाः) सर्वव्यापक है, किन्तु किसी न किसी प्रकार की रगड या उत्कट कामना के बिना प्रकट नही होता। इस मन्त्र का ऋषि शब्द इस ओर सकेत करता है। इस मन्त्र का छन्द शब्द सकेत करता है परमेश्वर दर्शन चाहने वाले को अपनी त्रिविध उन्नति करनी चाहिए और अपने से बड़े, छोटे और बराबर वाले व्यक्तियो तथा प्राणियो की स्तुति अर्थात् उनके दोषो की उपेक्षा करनी चाहिए, और उनके दोषो को इस तरह दूर करने का प्रयत्न करना चाहिए, कि उन्हे किसी तरह की चुभन या हीनता न अनुभव हो।

परमेश्वर को हृदय या मस्तिष्क में मक्खन की तरह मथा जाता है

—मनोहर विद्यालकार

पुरीष्योऽसि विश्वभराऽअथर्वा त्वा प्रथमो निरमन्थदग्ने।
त्वामग्ने पुष्करादध्यथर्वा निरमन्थत। मूर्ध्नो विश्वस्य वाघत.॥ यजु १२-३२

ऋषि—भरद्वाज। देवता-अग्नि। छन्द आर्षी त्रिष्टुप्। शब्दार्थ—हे (अग्ने) परमेश्वर तू (प्रथम) सबसे पूर्व तथा प्रमुख (अथर्वा) अपने नियमो से कभी विचलित न होने वाला (पुरीष्य) इस मानव शरीर मे प्राप्त करने योग्य तथा (विश्वभरा) विश्व का भरण-पोषण करने वाला है। इसलिए (अथर्वा) अपने विश्वास से कभी न डिगने वाला श्रद्धालु साधक (त्वाम्) तुझे (पुष्करात्) अपने हृदयान्तरिक्ष से (निरमन्थत्) अपने ज्ञान के विश्लेषण द्वारा प्रकट करता है।

निष्कर्ष—परमेश्वर का साक्षात्कार भक्त साधक, हृदय मे और ज्ञानी साधक मस्तिष्क मे करता है। परमेश्वर की अनुभूति हृदय या मस्तिष्क मे की जा सकती है।

जिस प्रकार अन्तरिक्ष मे सहसा विद्युत् कौंध जाती है, उसी प्रकार परमेश्वर भी अकस्मात् ही हृदय या मस्तिष्क मे पात्र की योग्यता के अनुसार कौंध जाता है।

परमेश्वर को इस मानवपुरी मे ही प्रकट किया जा सकता है। अन्य योनि मे उसका साक्षात् सम्भव नही है।

परमेश्वर को अनुभव करने के लिए अपने अन्दर किसी किसी न किसी विशिष्ट योग्यता (वाज) को धारण आवश्यक है।

अर्थपोषक प्रमाण—

त्रिष्टुप्—त्रि+स्तुप् (स्तुञ् स्तुतौ) सुवृक्तिभि स्तुवत। ऋक् १-६२-१ सुवृक्तिभि: सुष्टु दोषवर्जनानि यासु ताभि.। स्वामी दया०। भरद्वाज—भ.त्+वाज, वाज अन्ननाम। नि० २७, बलनाम। नि० २-९। वाजयति अर्चतिकर्मा। नि० ३-१४ वाज ज्ञानम् वजगतो, गत्यर्था बुद्ध्यर्था। पुष्करमन्तरिक्षनाम। नि० १-३ मनोऽन्तरिक्षलको-क। शत० १०-१-२-२ अन मन, हृदय, अन्तरिक्ष और पुष्कर समानार्थक हैं। पुरीष्य—पुरि शरीरे हृद्य. एष्ट व्य: असि। भगवदाचार्य। अथर्वा—थर्वति-श्चरतिकर्मा: निरु ११-१८ न+थर्वति—विचलित न होने वाला, वाघत. मेधाविनामसु। नि० ३-१५।

५२२, ईश्वर भवन, खारी बावड़ी
दिल्ली-११०००६।

आर्यसमाज दीवान हाल में सांस्कृतिक कार्यक्रम

रविवार १ अगस्त को दोपहर २ बजे से आर्य युवक परिषद दिल्ली के तत्वावधान मे आर्यसमाज दीवान हाल मे श्री सूर्यदेव जी की अध्यक्षता मे सास्कृतिक एव मनोरजन कार्यक्रम होगा। विजेता छात्र-छात्राओ को तथा १९८१ मे परिषद द्वारा सचालित सत्यार्थप्रकाश परीक्षाओ मे विजयी परीक्षार्थियो को पारितोषिक दिए जायेगे। भाग लेने के इच्छुक छात्र-छात्राए ३० जुलाई तक परिषद के कार्यालय १६५४ कूचा दखिनीराय, दरियागज, नई दिल्ली-२ पर सम्पर्क कर सकते हैं।

हरिद्वार मे पाखण्ड खण्डिनी स्तूप की प्रतिष्ठा

नई दिल्ली। आर्य प्रादेशिक सभा के प्रधान प्रो० वेदव्यास ने आगामी वर्ष की योजना पर प्रकाश डालते हुए कहा है कि हरिद्वार मे मोहन आश्रम के समीप उस स्थान पर जहाँ ऋषि दयानन्द ने पाखण्ड खण्डनी पताका गाडी थी, सगमरमर का एक बहुत बड़ा स्तूप-मीनार स्थापित किया जाएगा। इस स्तूप की ऊचाई ५९ फुट होगी।

□

राष्ट्रपति से प्रजा की आशाएं

—डा० रामनाथ वेदालकार

त्व राजेन्द्र ये च देवा. रक्षा नृन् पाह्यसुर त्वमस्मान्।
त्व सत्पतिर्मघवा न.स्तरुत्र: त्व सत्यो वसवान' सहोदा:॥

—ऋग् १. १७४. ४

अर्थ—(इन्द्र) हे राष्ट्रपति! (त्व ये च देवा) आप स्वय तथा आपके साथ जो अन्य देवतुल्य राज्याधिकारी हैं, वे ही (राजा) राजा हैं। (नृन् रक्षा) आप प्रजाओ की रक्षा कीजिए। (असुर) हे प्राणवान्! (त्वम् अस्मान् पाहि) आप हमारा पालन कीजिए। (त्व सत्पति.) आप सज्जनो के पक्षपोषक बनें, (मघवा) ऐश्वर्यशाली बनें, (न तरुत्र) हमे आपत्तियो से तराने वाले बने,। (त्व सत्य.) आप सच्चे बनें, (वसवान) नगो का शरीर ढकने वाले और गृहहीन को बसाने वाले बनें, (सहोदा) साहस देने वाले बनें।

हे महामहिम! आपको हमने राष्ट्रपति के इस उत्तरदायित्वपूर्ण पद पर अभिषिक्त किया है। किन बडी-बडी आशाओ और उमगों को लेकर हमने आपको अपना नायक बनाया है, यह भी, हम आपको बता देना चाहते हैं। सबसे पहले हम आपको यह स्मरण कराना चाहते हैं कि आप अकेले राजा नही हैं, किन्तु राष्ट्र सचालन मे योग देने वाले प्रधानमत्री, विभिन्न विभागो के मत्री, सभा-समितियो के सदस्य तथा अन्य राज्याधिकारी गण सब मिलकर राजा बनते है, वे सब प्रजा की रक्षा मे पारायण हो। राष्ट्र की प्रजा कही भी, देश के किसी भी कोने मे, अपने को असुरक्षित अनुभव न करे। यदि प्रजा को बाहरी किसी शत्रु का भय है, तो उससे आप उसे निश्चिन्त करे। यदि राष्ट्र के अन्दर जो कुछ शत्रु या उपद्रवी लोग उत्पन्न हो गए हैं, जिनसे राष्ट्रवासियो की सुरक्षा को भय उत्पन्न हो गया है, तो उनका भी आप यथोचित उपाय करें। यदि कही सीमा पर शत्रु के आक्रमण से जनता मे त्राहि-त्राहि मच रही है, तो वहा भी आपकी रक्षा का हाथ पहुचना चाहिए। यदि कही कुछ लोग गुट बना कर उपद्रव कर रहे हैं और प्रजा की सुख-शान्ति मे बाधा डाल रहे हैं, तो वहा भी आपकी रक्षा की बागडोर रहनी चाहिए। यदि कही चोर डाकुओं या हिंसक पशुओ का आतक छाया हुआ है, तो वहा भी रक्षक बनकर आप पहुचें।

हम आपसे यह भी आशा करते हैं कि आप हम प्रजाओ का पालन-पोषण करेगे। आप ऐसी व्यवस्था करे कि राष्ट्र मे एक भी मनुष्य बेकार या अपालित न रहने पाए। प्रत्येक व्यक्ति के पास अपनी आजीविका का साधन विद्यमान हो। आज हमारा देश अन्य देशो की अपेक्षा कही अधिक दुखी और दरिद्र है। अब भी हम मे से बहुतेरे आधा पेट खाकर रहने वाले है, और बहुतो को आधा पेट भी भोजन नही मिल पाता है। अब भी बहुत से ऐसे है जो शिक्षित होते हुए भी बेकारी के चक्कर मे पड़े घूम रहे हैं, और अब भी अनेक ऐसे है, जिन्हे सहायता की आवश्यकता है। इस अवस्था को दूर करके आप देशवासियो मे सुख का सचार करने वाले बने। यह आशा हम आपसे इसलिए करते हैं क्योकि आप 'असु' वाले हैं, आपके अन्दर प्राण हैं, जीवन है, स्फूर्ति है, कर्मण्यता है। इसके साथ ही हमारी यह भी कामना है कि आप 'सत्पति' बनें, सज्जनो के पक्षपोषक होवे। कभी ऐसा सुनने मे न आए कि आपने अन्याय का पक्ष लिया है। आपकी ओर से सज्जनों को सदा आगे बढ़ने के लिए उत्साहित किया जाए और दुर्जन आपकी गर्जना से थर-थर कांपे। आप 'मघवा' बनें, ऐश्वर्यशाली बने। आपके पास प्रजा के लिए धन धान्य के भण्डार भरे हो। आप सहस्रो हाथों से अपने भण्डार मे से अन्न-धन का दान करने वाले हो।

आप हमारे 'तरुत्र' बने तारक बनें, कठिनाइयो, दुःखो, विघ्नो, आपत्तियो से हमारा उद्धार करने वाले बनें। यदि हम पर कभी कोई दैवी या मानवी विपत्ति आ पड़े तो उस समय हम सहायक के रूप मे आपको अपने बीच खडा पाए। यदि कभी दुर्भाग्य से हमारे देश के किसी प्रात या प्रदेश मे भूकम्प आएगा, तो वहा की जनता आपको पुकारेगी। यदि कोई प्रदेश नदी की बाढ़ से जलमग्न हो आर्त्तनाद करेगा, तो वहा की सकटापन्न जनता आपकी ओर ताकेगी। यदि कोई प्रान्त या प्रदेश दुर्भिक्ष से सताया जाएगा, तो वहा की भूखी जनता आप पर आशा लगाएगी। यदि पडोसी देशो मे रहने वाले हमारे कुछ लोग वहा के अत्याचारो से पीडित होगे तो वे शरणार्थी बनकर आपके ही पास आए गे। इन सब अवस्थाओं मे आप 'वसवान' बनना, वस्त्रहीन मनुष्यो को वस्त्र देना, गृहविहीन लोगों को निवास देना, शरण रहित को शरण देना।

अन्त मे दो शब्द और। आप 'सत्य' और सहोदा: बनें। सब देशवासियों के सामने 'सत्य' के ज्योतिस्तम्भ के रूप में खड़े हों, आपकी आदर्श सत्यप्रियता रखकों

(शेष पृष्ठ ४ पर)

परिवार के कल्याण के लिए

ओ३म् अनुव्रतः पितु पुत्रो मात्रा भवतु संमनाः ।
जाया पत्ये मधुमती वाचं वदतु शान्तिवाम् ॥ अथर्व ३.३०.२

सुखी परिवार के लिए आवश्यक है कि पुत्र पिता की इच्छा के अनुसार चलने वाला हो, माता पुत्र पुत्र के अनुकूल मन वाली हो, पत्नी पति से मीठी-मधुर वाणी बोलने वाली हो ।

ओ३म्
आर्य सन्देश

राष्ट्राध्यक्ष का दायित्व

छान्दोग्य उपनिषद् का प्रसंग है । वहां राष्ट्राध्यक्ष अश्वपति कहते हैं—
'न मे स्तेनो जनपदे न कदर्यो न मद्यपो ।
नानाहिताग्निर्नाविद्वान्न स्वैरी स्वैरिणी कुतः ॥'

'मेरे देश में न चोर है, न कंजूस है और न शराबी है, ऐसा व्यक्ति भी नही है, जो होम और परोपकार न करता हो, या विद्वान् न हो । मेरे देश मे कोई दुराचारी भी नही है, जब दुराचारी नही है तो देश मे दुराचारिणी नारी कैसे हो सकती है ।' ऐसा था—उपनिषद् काल का हमारा भारत देश । आज के तथाकथित इतिहासज्ञ उपनिषद् काल या महाभारतकालीन भारत के अस्तित्व को स्वीकार नही करते, परन्तु वे जिस मौर्यकाल का ऐतिहासिक अस्तित्व स्वीकार करते हैं, उस समय के पाटलिपुत्र या पटना स्थित यूनानी राजदूत मेगास्थनीज ने स्वीकार किया है कि जब वह भारत आया था, तब यहाँ के प्रजाजनो का राष्ट्रीय चरित्र बहुत ही ऊंचा था । छल-कपट, चोरी-जुआ तथा दूसरी बुराइयाँ नही थी । लोग शान्ति-व्यवस्था से इतने अधिक निश्चिन्त थे कि जनता दरवाजो और घरो पर ताले तक नही लगाती थी ।

पिछले दिनो देश मे नए राष्ट्रपति का चुनाव किया गया है । सत्तारूढ़ दल ने अपने प्रतिनिधि का प्रस्ताव रखा और विरोधी पक्षो ने अपने उम्मीदवार का नाम रखा । दोनों ने ही राष्ट्रीय हितो की अपेक्षा दलीय स्वार्थों को अधिक महत्ता दी । ऐसे समय मे उम्मीदवार व्यक्तिगत या दलगत हितो की अपेक्षा राष्ट्रीय हितो को महत्ता देते तो देश का कल्याण हो सकता था देश के सच्चे राष्ट्राध्यक्ष और राष्ट्र प्रतिनिधि सभाओ के सदस्यो को सकल्प करना चाहिए—'माता भूमि पुत्रोऽहं पृथिव्याः' यह पृथिवी हमारी माता है, हम इसके पुत्र हैं । हम इसके वफादार पुत्र है, हमें मनसा-वाचा-कर्मणा-मन-वचन-कर्म से सकल्प करना चाहिए—जनं बिभ्रती बहुधा विवाचसं नानाधर्माणं पृथिवी यथौकसम् । सहस्रं धारा द्रविणस्य मे दुहां ध्रुवेव धेनुरनपस्फुरन्ती ॥ अनेक धर्मों और अनेक भाषाओ वाले मनुष्यो को धारण करने वाली पृथिवी अडिग धेनु के समान मेरे लिए धन की सहस्रो धाराओ को दोहा करे । यह माता पृथ्वी पृथ्वी पुत्रो पर उस क्षण कल्याण करती है जब वे राष्ट्राध्यक्ष एवं राष्ट्रजन प्रतिनिधि बन कर अपना दायित्व निबाहे ।

वेद मे कहा गया है—राष्ट्राध्यक्ष का दायित्व है कि वह प्रजाओ की रक्षा करेगा (नून् रक्ष), राष्ट्राध्यक्ष से दूसरी अपेक्षा है कि (त्व सत्पतिः) तुम सज्जनो अथवा सत्य पक्ष के पोषक होगे, राष्ट्राध्यक्ष का तीसरा दायित्व है कि 'त. तरुत्र' वह आपत्तियो से तराने वाला होगा, उसका चौथा दायित्व है कि वह दरिद्रो और अकिंचन प्रजाओ का वस्त्रदान—वस्त्रो एव दूसरे भौतिक पदार्थों से पालन करने वाला होगा । इस प्रकार का 'सहोदा' साहस एव न्याय देने वाला—सच्चा राष्ट्राध्यक्ष आज भारत राष्ट्र को अभीष्ट है । अत्यन्त प्राचीन प्रागैतिहासिक काल के राजा राम महाराजा चन्द्रगुप्त मौर्य, विक्रमादित्य, अशोक, के हर्ष, समुद्रगुप्त, भोज, अकबर, रानी दुर्गावती, लक्ष्मीबाई, शिवाजी आदि अनेक प्रजापालक भारतीय शासको ने जनकल्याण को सर्वोच्च प्राथमिकता देकर इतिहास मे अपने अमिट चरणचिन्ह छोड़ दिए हैं । आशा है कि भारत के नए राष्ट्राध्यक्ष वैदिक एव भारतीय परम्पराओ और रीति नीति का ख्याल कर राष्ट्राध्यक्ष का पुनीत दायित्व निबाहेंगे ।

चिट्ठी-पत्री

आर्यसमाज के इतिहास पर एक सम्मति

आर्यसमाज के इतिहास की प्रति मुझे मिल गई । यह मानना ही पड़ता है कि आपके सिवाय इस महान् कार्य को करने की क्षमता किसी और विद्वान् मे नही हो सकती थी । आर्य जगत् का अति सौभाग्य है जो आप सरीखे उच्चकोटि के इतिहासकार की विद्वता और अमूल्य सेवाएं उसे प्राप्य हैं । मैं आपके सम्मुख नतमस्तक हूं—आपने भारत मे जो यह महान कार्य किया है, वह विश्व साहित्य मे एक महत्वपूर्ण वृद्धि है । आने वाली पीढ़ियां इसके ऐतिहासिक महत्व को महसूस करेंगी ।

— प्रो० सुरेन्द्रनाथ भारद्वाज, प्रधान, आर्यसमाज लन्दन

काव्यमय गुलेरी स्मारिका का प्रकाशन

अमर कथा-शिल्पी, पंडित चन्द्रधर शर्मा गुलेरी का जन्म-शताब्दी वर्ष ७ जुलाई १९८२ से मनाया जा रहा है । सहकार भारती (पोस्ट बाक्स ७७४६, बम्बई-९२) के मंत्री, श्री निखिल शेखर के प्रस्ताव का करीब ४०० साहित्यकारो ने अपना समर्थन प्रदान किया है कि 'गुलेरी चेअर' (अध्ययनपीठ) की स्थापना हिमाचल विश्वविद्यालय (शिमला) और राजस्थान विश्वविद्यालय (जयपुर) मे की जाए और उनकी स्मृति मे, भारत सरकार द्वारा रंगीन डाक टिकट का प्रकाशन किया जाय ।

यह जानकर हर्ष होगा कि 'काव्यमय गुलेरी स्मारिका' का सपादन श्री त्रिभुवननाथ शर्मा 'मधु' (राकेश प्रकाशन बाराबंकी, उ० प्र०), श्री ब्रजनन्दन गुप्त, 'ब्रजेश', (कोट बाजार, राठ हमीरपुर-उ० प्र०) और श्री अखिल विनय (पोस्ट-बाक्स ७७४६, बम्बई ९२) द्वारा किया जा रहा है ।

—कमलारानी सारस्वत, केन्द्रीय संयोजिका, गुलेरी शताब्दी समिति,
पो बा ७७४६, बम्बई-९२

वेदसप्ताह वेदानन्द जयन्ती मनाई जाए

स्वामी वेदानन्द (दयानन्द) तीर्थ का पच्चीसवां पुण्य वर्ष १९८१-८२ है । सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली तथा प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभाओ से अनुरोध है कि इस वर्ष का वेद प्रचार सप्ताह ४ अगस्त १९८२ से १२ अगस्त १९८२ तक) आर्य जगत के प्रसिद्ध सन्यासी तथा वेदो के धुरन्धर विद्वान्, पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा जालन्धर के भू पू प्रधान मन्त्री एव आर्य सार्वदेशिक सभा गौ रक्षा उप समिति के प्रचार मंत्री तथा विरजानन्द वैदिक संस्थान गाजियाबाद (यू० पी०) एव श्रीमद्दयानन्द गुरुकुल खेड़ा खुर्द (देहली) के संस्थापक स्वर्गीय स्वामी वेदानन्द (दयानन्द) तीर्थ की पवित्र स्मृति मे उनके प्रति श्रद्धांजलि रूप मे मनाया जाए । पूज्य स्वामी जी के किसी ग्रन्थ के आधार पर वेद कथा कीजिए ।

—श्यामलाल मंत्री आर्य समाज सरस्वती विहार, दिल्ली ।

राष्ट्र का श्रेष्ठ पदाधिकारी कैसा हो ?

त्वमङ्ग प्रशंसिषो देवः शविष्ठ मर्त्यम् ।
न त्वदन्यो मघवन्नस्ति, मर्डितेन्द्र ब्रवीमि ते वचः ॥ ऋ १-१४ ८४-१९

इस मन्त्र का अर्थ है—(अङ्ग) हे मित्र ! (शविष्ठ) परमबल युक्त त्वम् (देव) तू विद्वान है । (मर्त्यम्) प्राणिमात्र को, (प्रशंसिष) प्रशंसित कर । (मघवन्) हे ! उत्तम धन के दाता ! (इन्द्र) दुखो के नाशक ! त्वम् तुझ से भिन्न कोई भी, (मर्डिता) सुखदायक, (नास्ति) नही है । तेरे लिए, (वच) धर्मयुक्त वचनो का, (ब्रवीमि) उपदेश करता हू ॥

—महर्षि दयानन्द

मन्त्र का भावार्थ यो प्रस्तुत किया जा सकता है—

राष्ट्र मे पदाधिकारियो मे निम्न योग्यताए अभीष्ट हैं—(१) मित्रभाव का अर्थात् आपत्ति मे जनता का सहायक हो, (२) बलवान हो, (शारीरिक, मानसिक और आत्मिक दृष्टि से) (३)विद्वान्—बुद्धिमान् और शिक्षित हो, (४) अपना धन अभावग्रस्त मनुष्यो मे बांटता हो, (५) प्राणिमात्र के दुखो को दूर करने वाला हो (६) प्राणिमात्र के सुख-सुविधाओ का ध्यान रखता हो, (७) उसके समान उपरि लिखित गुणो मे) अन्य कोई दूसरा नही है—(८) जो सबको प्रिय वचन बोलते हैं अथवा जिसकी प्रशंसा सभी करते है ।

जनता ऐसे ही व्यक्ति को अपना सच्चा मित्र समझे अर्थात् ऐसा व्यक्ति वोट (वाणी) पाने का अधिकारी है ।

—धर्मवीर विद्यालंकार, ५, अशोक नगर, पीलीभीत २६२००१

मैं अपनी बुद्धि को शुद्ध करूंगा

उप मा मतिरस्थित वाश्रापुत्रमिव प्रियम् ।
कुवित् सोमस्यापामिति ॥ ऋ १०/११९/४

(मति) मनन शक्ति (मा) मेरे (उप) पास (अस्थित) आ गई है। (इव) जैसे (वाश्रा) रंभाती हुए गौए (प्रियम्) अपने प्यारे (पुत्रम्) बछड़े के पास आ जाती है (कुवित् सोमस्यापामिति) क्योकि मैंने बहुत बार सोम का प्राप्त कर लिया।

अहं तष्टेव बन्धुर पर्यचामि हृदा मतिम् । कुवित् सोमस्यापामिति।
ऋ. १०/११९/५

(इव) जैसे (तष्टा) कुशल बढई छील-छील कर (बन्धुर) सुन्दर बनाता है वैसे ही (अहं) मैं (हृदा) दिल से (मति) अपनी बुद्धि को, उससे बुराइयो को छील-छील कर (पर्यचामि) सुन्दर बनाने के लिए प्रयत्न करता हू। (कुवित् सोमस्यापामिति) क्योकि मैंने बहुत बार सोम का पान किया है।

आध्यात्मिक आनन्द आत्मतोष प्राप्त करने वाले जीवात्मा को ही मिलता है। सामर्थ्यवान् आत्मा वह है जो साधना मे लगता है, साधना तपस्या से प्राप्त होती है, तपस्या के लिए इन्द्रियो को वश मे करना होता, अपने को इन्द्रियो को वश मे नही। समारी भोगो से अनासक्त रह कर जो केवल प्रभु प्रेरित कार्यो को करता है, वही आत्मा आनन्द का अधिकारी बनता है। इन्द्रियो को वश मे करने के लिए बुद्धि की आवश्यकता है। उस बुद्धि की जो मनन करने वाली है, चिन्तन करने वाली है। मनन करने वाली बुद्धि ही हमे सोम तक पहुचा सकती है। कठोपनिषद् मे इसका बडा ही सुन्दर रूपक बांधा गया है। वहा लिखा है—

आत्मानं रथिनं विद्धि
शरीरं रथमेव तु ।
बुद्धि तु सारथि विद्धि
मन प्रग्रहमेव च ।
इन्द्रियाणि हयानाहु विषयांस्ते गोचरान् ।
आत्मेन्द्रिय मनो युक्त भोक्तेत्याहु
मनीषिण ।

आत्मा रथी है, अर्थात् रथ का मालिक है, शरीर एक रथ बुद्धि सारथि है—साईस है, मन लगाम है। इन्द्रिय घोड़े हैं, इन्द्रियो के विषय वे मार्ग है जिन पर इन्द्रिय रूपी घोड़े दौडते हैं। मनीषी लोग कहते हैं कि जब आत्मा इन्द्रिया तथा मन, मिलकर कोई काम करते है, तब मनुष्य 'भोक्ता' कहलाता है।

यस्त्व विज्ञानवान भवत्य
युक्तेन मनसा सह।
तस्येन्द्रियाण्यवश्यानि
दुष्टाश्वा इव सारथेः ॥

जो विज्ञान रहित है, उसका मन सदा आत्मा से अयुक्त होता है। उसकी इन्द्रिया भी वश मे नही रहती, जैसे दुष्ट घोड़े सारथि के वश मे नही रहते, फिर किसकी इन्द्रियाँ वश मे रहती हैं।

उपनिषद् कहती है—

यस्तु विज्ञानवान भवति,
युक्तेन मनसा सदा।
तस्येन्द्रियाणि वश्यानि
सदश्वाः इव सारथे ॥

जो विज्ञान वाला है, जिसका मन आत्मा से जुडा रहता है, उसकी इन्द्रिया वश मे रहती हैं, जैसे अच्छे घोड़े सारथि के वश मे रहते हैं।

यस्त्व विज्ञानवान् भवत्य
मनस्क सदाशुचि ।
नसतत्पदमा प्नोति ससार चाधि
गच्छति ॥

जो बुद्धिहीन है, मन जिसके पास नही' अर्थात् मन जिसके वश मे नही है, वह सदा अपवित्र रहता है। वह उस ओंकार पद को प्राप्त नही होता वरन् बारम्बार ससार के चक्कर मे पडा रहता है।

यस्तु विज्ञानवान् भवति
समनस्क सदा शुचि ।
स तु तत्पद माप्नोति
यस्माद् भूयोन जायते ॥
विज्ञान सारथिर्यस्तु
मन प्रग्रह-वन्नर ।
सो ऽध्वन पारमाप्नोति
तद्विष्णो परम पदम् ॥

जो बुद्धिमान् है—विज्ञान वाला है, जिसका आत्मा मन के साथ नही, परन्तु मन आत्मा के साथ है, जो पवित्र विचारो को सोचता है, वह उस उच्च पथ को प्राप्त कर लेता है जिससे फिर उत्पन्न नही होता।

जिसका 'विज्ञान' सारथि है—कोचवान है, जो मन रूपी लगाम को अपने हाथ मे रखता है, वह इस ससार रूपी मार्ग को पार कर लेता है, वह विष्णु के परम पद को परमधाम को प्राप्त कर लेता है, वह परमात्मा तक पहुच जाता है।

इस प्रकार जब मन आत्मा के साथ लग जाता है तब मनुष्य मे 'मति' मनन करने वाली बुद्धि आती है। और उस समय हम विश्व के साथ एकात्मकता अनुभव करते हैं। विश्व के साथ एकात्मता ही 'प्रेमभक्ति' कहलाती है। 'सोम शब्द उसका एक वाचक शब्द है। जब हम उस सोम रस का पालन करते हैं तब हमारी 'मति' हमें सोम तक पहुचाती है। उस समय हममें एक मस्ती—एक तेज का उदय होता है। महर्षि दयानन्द मे वह तेज दिखाई देता है।

एक बार की बात है जब उनके विरोधी शान और तर्क से उन्हे न हरा सके तब उन्होंने एक वेश्या को धन दौलत, गहने और रुपए पैसे देकर उनके यहा भेजा और कहा कि 'वह उनके यहा जाकर शोर मचा दे कि दयानन्द ने मुझे छेड़ा है फिर दयानन्द पर हम टूट पडेगे। उसे बदनाम भी करेगे, यहा से निकाल भी देंगे। परन्तु जब वह वेश्या महर्षि की कुटिया के पास पहुंची तब उनके चेहरे पर प्रभु भक्ति की मादकता का जो नशा था, जो कान्ति थी, जो तेज था, जो आध्यात्मिक चमक थी उसे देख कर उस स्त्री की आत्मा का कालुष्य मिट गया—आत्मा जाग उठी। महर्षि के चरणो मे गिर कर उसने सभी बाते महाराज से कह दी तथा बोली 'मेरी रक्षा करो महाराज, मेरे अपने आप से, मेरे लोभ से, मेरे पाप से मेरी रक्षा करो।' यह है सोम रस की मस्ती जो अपने को तो मस्त करता ही है, दूसरो को भी नही छोडता।

लेखक·
सुरेशचन्द्र वेदालंकार
एम ए. एल टी

सन्त तुकाराम ने प्रभु भक्ति की मादकता पी ली थी। कहते है घर मे खाने को कुछ नही था। पत्नी क्रोधी थी। भूख से क्रोध बढ जाता है। वह अपने खेत से गन्ने काट कर लाई और उन गन्नो का गट्ठर उनके सिर पर लादकर कहा जाओ इन्हे बेच कर पैसे लाओ, जिससे घर का खाने का काम चले। वे गट्ठर लेकर चले। रास्ते मे वे गन्ने भूखे और निर्धन लोगो को तरसती आखो से देखते बच्चो को बाट दिए और अन्त मे एक गन्ना वापस लेकर घर आए। स्त्री बडी प्रसन्न हुई और उसने पैसे मांगे। वह मुस्कुराते हुए बोले रास्ते में अपने भी अधिक जरूरतमन्दो को मैंने वे गन्ने आदि दे दिए हैं। एक बचा है। स्त्री को क्रोध आया और उसने वह गन्ना उसकी पीठ पर दे मारा। उसके दो टुकड़े हुए। सन्त ने मुस्कराते हुए अपनी पत्नी से कहा 'अच्छा ही हुआ तुमने इसके दो टुकड़े कर दिए। एक यह बडा टुकडा तुम लो और यह मै चूस लेता हू। स्त्री का क्रोध दूर हो गया। उनके पैरो पर गिर पडी। सचमुच—

वह सौभाग्य प्राप्त कब होगा
जब सब मे देखूगा ब्रह्मरूप,
तब होगा सुख का पार नही
लहरेगा सुखसागर अनूप।

जिससे सारा समाज अपने समान ही प्रतीत होने लगता है, जो प्रभु प्रेम की भक्ति की मस्ती मे डूबकर अपने को भी भूल जाता है उसके भाग्य का वर्णन सम्भव नही।

जिधर देखा उधर
चैतन्य मूर्ति दिखाई देती है।

वह प्रभु की भक्ति के सोम रस से झूमने लगता है और उसके मुख से निकल पडता है—

सर्वत्र तुम्हारे चरण देखता,
सब पर तुम्हारा रूप भरा।

उपर्युक्त मन्त्रो मे पहले मन्त्र मे कहा गया है कि मनुष्य की मनन शक्ति सोम रस का पान करने पर उसके समीप वैसे ही आ जाती है जैसे बछडा गाय के पास प्रेम से आता है और ससार मे उसे सर्वथा उसी प्रभु के दर्शन हो जाते हैं।

मनन शक्ति के आने पर बुद्धि की सभी बुराइया उसी प्रकार दूर हो जाती हैं जैसे बढई लकडी को छीलकर उसे सुदृढ़ बना देता है। कवि कहता है—

मेधाशक्ति सुकार्यकारिणी,
उषाकाल मे हृदयहारिणी
हमे प्राप्त हो, बने यज्ञमय जीवन,
हिंसा हीन मिले जय।
वेगवान ज्यो अश्व शान से,
ले जाता है रथ मकान मे
वैसे ही यह प्रात.काल,
पहुचावे हमको तत्काल।
उस ईश्वर ऐश्वर्यवान् के,
सम्मुख प्रभु करुणानिधान के
वसुधापति हे भगवन् आओ,
आए द्वार हमे अपनाओ।

६ ए. ई टी-११० ओबरा,
मिर्जापुर (उ० प्र०)

राष्ट्रपति से····· (पृष्ठ २ का शेष)

'सत्य' का पाठ पढाने वाली हो। फिर आप 'सहोदा' बने, प्रजा मे साहस और बल का सचार करने वाले बनें। यदि यह विशेषता आपके अन्दर होगी तो आप सच्चे अर्थों मे राष्ट्रपति होगे। प्रजा मे साहस का संचार करना, किसी महान् कार्य के लिए उत्साह प्रेरित करना, सकटो से मुकाबला करने के लिए मनोबल पैदा करना सबसे बडी विशेषता है। जब किसी स्थान के लोग सगठित होकर किसी महाकार्य का आरम्भ करने लगे, तो उस सगठन को आपका आशीर्वाद प्राप्त होना चाहिए। कही कोई चिकित्सालय खोला जाए, कही कोई विधवाश्रम-अनाथाश्रम खोला जाए, तो आप सदा अपने भाषणो से, अपने संदेशो से और अपनी राजकीय सहायता से कार्यकर्ताओ को उत्साहित करेगे। यदि जनता मे उत्साह है, तो सब कुछ है। आपसे उत्साह पाकर देशवासी बडी-से-बडी कठिनाइयो को पार करने मे समर्थ हो सकेंगे, और एक दिन यह देश हमारे सुनहरे सपनों का देश बन सकेगा।

हे राष्ट्रपति! ये ही हमारी आपसे आशाएं हैं। इन्हे पूर्ण करना आपको सहस्रो नर-नारियो के कण्ठो से निकले हुए स्नेहमय आशीर्वाद प्राप्त होगे। प्रभु आपको चिरञ्जीवी करे।

१/११६ फूलबाग, पंतनगर (नैनीताल)

भारत में अलग राष्ट्र की कल्पना देशद्रोह

—ओमप्रकाश त्यागी, भू० पू० ससद सदस्य

जब से भारतवर्ष के राष्ट्रीय नेताओ ने मुस्लिम लीग द्वारा उठाई गई सर्वथा अनुचित एव अराष्ट्रीय द्विराष्ट्रीय की माँग के आगे सिर झुकाते हुए सन् १९४७ मे देश का विभाजन स्वीकार किया, तभी से इस देश मे धर्म, वेश-भूषा, भाषा आदि के नाम पर स्वार्थी अराष्ट्रीय तत्वो ने अपने को अलग राष्ट्र सिद्ध कर अपने लिए पाकिस्तान की भाति अलग होमलैण्ड की स्थापना की मांग करनी प्रारम्भ कर दी है। प्रारम्भ मे विदेशी ईसाई मिशनरियो के भडकने पर नागालैण्ड तथा मिजोरम के लोगो ने अपने को अलग स्वतत्र राष्ट्र घोषित कर उसकी प्राप्ति के लिए सशस्त्र विद्रोह प्रारम्भ किया जो गत् ३५ वर्षो से लगातार चल रहा है। बाद मे दक्षिण भारत मे द्रविड लोगो ने अपने को अलग राष्ट्र कह कर उत्तर भारत अर्थात् आर्य लोगो की प्रत्येक बात का विरोध करना प्रारम्भ कर दिया। आज भी वे आर्य जाति के इतिहास, धर्म, साहित्य, भाषा आदि को मानने के लिए तैयार नही है। यहा तक कि सविधान द्वारा स्वीकृत राष्ट्रभाषा हिन्दी को भी वे स्वीकार करने से इन्कार कर रहे हैं। अवस्था कहा तक चिन्तनीय बन गई है कि अभी कुछ दिन पूर्व भारत के सूचना-प्रसारण मत्री महोदय ने आल इण्डिया रेडियो का नाम आकाशवाणी घोषित कर दिया, परन्तु द्रविड जाति के नेताओ, ससद सदस्यो तथा तमिलनाडु की सरकार ने इस नाम का कडा विरोध किया, परिणामस्वरूप प्रधानमत्री को अपनी सरकार का निर्णय वापस लेना पडा। अब पजाब के अकालियो ने भी अपने को अलग राष्ट्र घोषित कर स्वतत्र खालिस्तान की स्थापना करने की घोषणा कर दी है और इसके लिए सघर्ष करना प्रारम्भ कर दिया है।

वास्तव मे एक राष्ट्र के अन्दर दूसरे राष्ट्र की कल्पना करना ही सीधा देश-द्रोह है और ऐसा नारा लगाने वाले लोगो का कडाई के साथ दमन किए जाने की आवश्यकता है।

राष्ट्र की परिभाषा के अनुसार एक देश मे रहने वाले उन लोगों का एक राष्ट्र होता है जिनकी सस्कृति, साहित्य, इतिहास राष्ट्रभाषा आदि एक हो। केवल धर्म और वेश-भूषा के बदल जाने पर किसी की राष्ट्रीयता नहीं बदलती।

राष्ट्र की ऊपर लिखित परिभाषा के आधार पर भारत के सभी व्यक्तियो की एक सस्कृति, साहित्य व इतिहास है जो लोग अपना धर्म परिवर्तन कर ईसाई मुसलमान आदि बन गए है, वे इस तथ्य से इन्कार नही कर सकते है कि भारत उनकी जन्म-भूमि व पुण्य-भूमि है, राम कृष्ण उनके पूर्वज थे भारतीय सस्कृति उनकी संस्कृति है और यहाँ का साहित्य व इतिहास उनका साहित्य व इतिहास है। धर्म बदल जाने पर उनके पूर्वजो का इतिहास बदल नही जाता।

भारत के लगभग सभी ईसाई, मुसलमान, सिक्ख आदि सभी हिन्दुओ की सन्तान हैं और हिन्दुओ की सस्कृति ही उनकी सस्कृति है। फिर भी ये लोग अपने को अलग राष्ट्र कहने का दुसाहस कर रहे हैं यह आश्चर्य की बात है। इसका मूल कारण सरकार की इनके प्रति उदारता ही कारण हो सकती है।

मुस्लिम लीग मरी नही, आज भी भारत मे जिन्दा है। मुसलमानो की सख्या भी ससार मे इडोनेशिया के बाद भारत मे दूसरे नम्बर पर है। मुस्लिम लीग ने दबी जबान मे अपने द्विराष्ट्र के सिद्धान्त पर पुन मुसलमानो के लिए विशेष अधिकारो व सुरक्षा की माँग उठानी प्रारम्भ कर दी है। इतना ही नही केरल मे उसने मल्लापुरम नामक एक मिनी पाकिस्तान बना भी लिया है और भारत मे इस प्रकार के कहा-कहाँ मिनी पाकिस्तान बनाए जा सकते हैं, इसकी योजना बना रही है। सरकार की नीति ऐसी दयनीय है कि वह लगातार इसकी माग के सन्मुख झुकती जा रही है। उदाहरणार्थ भारतीय सविधान के सर्वथा विरुद्ध बिहार और उत्तर प्रदेश की सरकारो ने अपने यहाँ उर्दू भाषा अपने प्रान्तो की दूसरी भाषा घोषित कर दी है।

सारांश यह है कि भारत एक राष्ट्र है। इसमे अलग राष्ट्र की कल्पना करना देशद्रोह है। इसके साथ किसी भी प्रकार का समझौता न कर कडाई के साथ इसका दमन होना चाहिए।

आर्य जगत् समाचार

आर्यवीर क्षात्रत्व की भावना रखें

आर्यवीरों का दायित्व : रोहतक में आर्यवीर प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

पलवल। हरियाणा का छठा तथा देश का सैंतीसवां ग्रीष्मकालीन आर्यवीर दल शिक्षण शिविर रोहतक मे सम्पन्न हुआ। समापन समारोह को पूर्व सन्ध्या को नगर मे आर्य वीरो का पद-सचलन हुआ। रात्रि मे मशाल जलूस बडा अनुशासित तथा प्रभावोत्पादक रहा। सार्वदेशिक आर्य वीर दल के प्रधान सेनापति श्री बाल दिवाकर हस ने परेड का निरीक्षण किया और नवयुवको का आह्वान किया कि वे चरित्र-निर्माण के कार्य मे लग जाए।

हरियाणा आर्य वीर दल के सचालक प्रो० उत्तमचन्द्र शरर ने दीक्षान्त भाषण मे आर्य वीरो से दल के प्रति प्रगाढ़ निष्ठा और क्षात्रत्व की भावना रखने का अनुरोध किया। प्रान्तीय आर्यवीर दल के उपसचालक प्रो० रामविचार व आर्यवीरों को परामर्श दिया—आप यज्ञोपवीत धारण करे, चोटी रखे, माता-पिता-आचार्य का सत्कार करे, ईश्वर उपासना करे, स्वास्थ्य सुरक्षित रखे, तथा सत्सग मे आए।

सच्चे आर्यसमाज एवं कार्यकर्ता :

श्री देशराज खन्ना दिवंगत

—ब्रह्मदत्त स्नातक

श्री देशराज खन्ना आर्य प्रतिनिधि पजाब के अधिकारी, रघुमल आर्य कन्या पाठशाला के व्यवस्थापक, सार्वदेशिक प्रकाशन लिमिटेड द्वारा १६५० मे प्रकाशित 'पुण्यभूमि' साप्ताहिक के डायरेक्टर रहे थे। वह ठोस आर्यसमाजी कार्यकर्ता थे। उपदेशको और विद्वानो की वह सदा सहायता करते थे। १६५५ में वह सूचना एव प्रसार मत्रालय मे अण्डर सेक्रेटरी थे। तब लखनऊ मे राज्यो के सूचना-निदेशको की बैठक मे भाग लेने वह गये थे। मुझे भी सरकारी आदेश पर वहा उसमे पर्यवेक्षक के रूप मे भेजा गया था। बैठक मे कालिदास पर फिल्म बनाने के सम्बन्ध मे जब विचार चल रहा था, सूचना सचिव सस्कृत के प्रकाड विद्वान श्री लाड आई. सी एस की अनुमति से मैने भी कुछ नये विचार रखे, जिन्हे स्वीकार किया गया। श्री खन्ना वहा पर कार्यवृत्त अधिकारी थे।

बैठक के बाद खन्ना जी ने मुझ से पूछा—पडित जी आपका नाम व परिचय क्या है? मैंने बताया कि मैं उनके मत्रालय मे नवनियुक्त एक अधिकारी हू। यह पूछने पर कि इससे पहले कहाँ कार्य करते थे, प्रसग मे मैंने पुण्यभूमि के सम्पादन का भी जिक्र किया। खन्ना जी बोले— कि मैं तो सार्वदेशिक प्रकाशन का अध्यक्ष डाइरेक्टर था, पर आप कभी मुझ से मिले नही और मैं उस पत्र के सम्पादकीयो को बडे ध्यान से पढता था (और उसकी फाइल मेरे पास है) मैंने विनम्रतापूर्वक उत्तर दिया कि मैं कार्य के बिना किसी डाइरेक्टर से नही मिलता था, तथा उक्त पत्र के अन्तिम पृष्ठ की अन्तिम पक्ति पर सम्पादक के स्थान पर मेरा नाम देख सकते हैं।

इसके बाद दफ्तर, घर, बस जहाँ भी मिलते, मेरे विरोध करने पर भी सदा उच्च स्थान-सम्मान देते रहे। डिप्टी सेक्रेटरी के पद से रिटायर होकर प्रेस कमीशन के सचिव का कार्य उन्होने योग्यतापूर्वक किया। वह अपने अन्तिम वर्षों मे लायंस क्लब के एक कैंसर अस्पताल प्रोजक्ट के काम की देखभाल और कार्यान्वयन करते थे। मृत्यु के समय वह ६६ वर्ष के थे।

ऐसे सज्जन विनम्र आर्य पुरुष को सहस्र बार प्रणाम।

—६/१४४ रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् की टीमें जीतीं

नई दिल्ली। चन्द्र आर्य विद्या मन्दिर सूरज पर्वत लाजपत नगर द्वारा आयोजित वार्षिक खेल-कूद प्रतियोगिता मे कबड्डी मैच फाइनल मे आर्य अनाथालय पटौदी हाउस को एक पारी एक अक से हराकर केन्द्रीय आर्य युवक परिषद नेताजी सुभाष, रानी बाग की टीम प्रथम रही। खो-खो मैच फाइनल मे केन्द्रीय आर्य युवक परिषद रानी बाग की टीम कप्तान श्री वेद रत्न के नेतृत्व मे गुरुकुल गौतम नगर की टीम को २-३० व एक पारी से हराकर विजयी रही।

समीक्षा

सम्भलो नीच योनियों से

लेखक—रूपकिशोर शास्त्री एम. ए; प्रकाशक—दीक्षित प्रकाशन केन्द्र, महर्षि दयानन्द स्मारक कर्णवास; उ० प्र० पृष्ठ सख्या—६४; मूल्य - ३-५०)

प्रकृति ने स्वाभावत मानव को शाकाहार के उपयुक्त बनाया है और यह भी बडी विचित्र बात है कि विकृत मांसाहार को अपनाने वाला मानव भी शाकाहारी प्राणियो का आहार ही अपनाता है, न कि मांसाहारी पशुओ का। यह भी अत्यन्त चिन्ता का विषय है कि जबकि पश्चिम मे लम्बे चिकित्सा सम्बन्धी एवं व्यावहारिक अनुभव के बाद मांसाहार छोडकर शाकाहार बढ रहा है, हमारे देश में शाकाहारी समुदाय भी अखाद्य एव अपेय पदार्थों का सेवन करने लगे हैं। विद्वान् नवयुवा लेखक श्री रूपकिशोर शास्त्री ने प्रस्तुत ग्रन्थ में भारतीय जनता को अखाद्य एव अपेय पदार्थों के सेवन से सावधान करते हुए विभिन्न ग्रन्थो के आधार पर यह प्रदर्शित किया है कि इस प्रकार के विकृत आहार से जहा इस शरीर मे विकृतिया बढेगी, वहा भावी जीवन मे भी निम्न तिर्यक् योनियो में जाने की आशका बनी रहेगी।

२१ अनुच्छेदो के माध्यम से लेखक ने यह भी प्रदर्शित किया है कि अण्डा-मांस मानव का प्राकृतिक भोजन नही है, इसे वानस्पतिक कहना अपने को धोखा देना है, वेद एव भारतीय धर्म शास्त्रो मे ही नही, ससार के प्रमुख जन, इस्लाम ईसाई, सिख आदि धर्मों के ग्रथों भी मासाहार को त्याज्य कहा गया है, इसी के साथ मांसाहार से वैज्ञानिक, दैविक एव आध्यात्मिक क्षति, सूक्ष्म शरीर की विकृति शाकाहार की सुलभता एव सस्तेपन तथा ससार के मनीषियो द्वारा शाकाहार के समर्थन अन्न शाकाहार के जीवन की परीक्षा से सिद्ध होता है कि न तो वह खून है और न मासाहार, प्रत्युत जीवन शक्ति देने वाला खाद्यान्न है. शाकाहार और मासाहार मे प्रोटीन, कैलिशयम, चिकनाई आदि की क्या मात्रा है, इसका समुचित विवेचन भी पुस्तक मे किया गया है। आशा है कि पुस्तक मे अध्ययन से पाठको मे प्राणि मात्र के प्रति करुणा जागेगी। और वे अभक्ष्य, अपेय पदार्थों का सेवन छोडकर सात्विक गुणकारी आहार का सेवन प्रारम्भ करेंगे। पुस्तक उपयोगी है।

—नरेन्द्र वि वा.

बोध-कथा

सम्मान वीरता का

पहले विश्व महायुद्ध के दिनो की बात है। निरन्तर लम्बी लडाई से इग्लैंड की जनता श्रान्त-क्लान्त हो चुकी थी। थकी हुई जनता और वर्षों से जूझते देश के सिपाहियो मे नए उत्साह की प्रेरणा देने के लिए इग्लैण्ड के तत्कालीन बादशाह पचम जार्ज ने प्रमुख मोर्चो पर अवस्थित सैनिक टुकडियो तथा फौजी छावनियो मे एकत्र देश के सिपाहियो के समक्ष जाने का कार्यक्रम बनाया। तीनो सेनाओं के सर्वोच्च सेनापति एव सम्राट् के स्थान स्थान पर पहुच कर सैनिको के दुख दर्द का हाल पूछने से उनमे एक नए उत्साह का सचार हो रहा था। ऐसे ही समय उन्होने देश के सर्वाधिक प्रसिद्ध मोर्चे के सेनापति से जानना चाहा—'सम्पूर्ण युद्ध मे सर्वाधिक वीरता का प्रदर्शन किस सैनिक ने किया है, जिसने कभी भी शत्रु के सम्मुख कायरता या सकोच नही किया है, डट कर शत्रु से लोहा लिया है और हमेशा विजयश्री का वरण किया है? मैं उस वीर योद्धा से मिलना चाहता हू।'

सेनापति क्षण भर के लिए ठिठका। उसे उत्तर देने मे सकोच हुआ। उसके सकोच को देखकर जार्ज पचम ने पूछा—'वह वीर योद्धा कहां है? – मैं उससे तुरन्त मिलना चाहता हू।'

सेनापति सम्राट को समीपस्थ चिकित्सालय मे ले गया। चिकित्सालय के एक कक्ष मे केवल वीर सैनिक और योद्धा ही थे। सम्राट् के पहुचते ही घायल सैनिक उन्हे सेल्यूट करने लगे। सेनापति एक शय्या के पास जाकर ठिठक गए। वहा शय्या पर सफेद चादर से ढकी एक क्षत-विक्षत काया बेसुध पड़ी थी। दर्जनो सर्वोच्च विजयोपहारों एव तमगों का विजेता वह योद्धा एक बडे मास-पिण्ड के तुल्य दीखता था। उसका मुह भी अनेक चोटों से विकृत था। यह कहना कठिन था कि वह मानव देह थी या सास लेता मास का पिण्ड मात्र।

तीनो सेनाओ के प्रधान सेनापति ब्रिटिश सम्राट ने उस वीर योद्धा की काया को पूर्ण सम्मान के साथ सेल्यूट किया। और अचानक उस योद्धा के माथे को आगे बढ़कर चूम लिया।

—नरेन्द्र

आर्यसमाजों के सत्संग

१८ जुलाई '८२

अन्धा मुगल-प्रताप नगर—प० रघुराज शास्त्री; अमर कालोनी—प्रो० वीरपाल विद्यालकार; अशोक विहार के सी.-५२ ए—श्री चमनलाल आर्य, अशोक नगर—प० अशोक कुमार विद्यालकार, आर्य पुरा—प० छविकृष्ण शास्त्री, आर. के. पुरम सेक्टर ५—श्री देवीचरण बन्सल; आर. के पुरम सेक्टर ६—प० मनोहर लाल ऋषि भजनोपदेशक; आनन्द विहार-हरिनगर एल ब्लाक—श्रीमती प्रकाशवती शास्त्री; इन्द्रपुरी—प० खुशीराम शर्मा; किशनगञ्ज मिल एरिया—प० हरिदत्त शास्त्री; विंजवे कैम्प—प० जयभगवान भजन मण्डली, कालका जी डी. डी ए. फ्लेट—आचार्य नरेन्द्र शास्त्री; करोल बाग—डा० रघुनन्दनसिंह; कृष्णनगर प० सत्यपाल मधुर भजनोपदेशक; गीता कालोनी—प० सीसराम भजनोपदेशक; ग्रेटर कैलाश I—प० गणेश प्रसाद विद्यालंकार; गुड मण्डी—प० रामनिवास, गुप्ता कालोनी—प० वेदपाल शास्त्री, गोविन्दपुरी—प० तुलसीराम भजनोपदेशक, जग-पुरा-भोगल—स्वामी स्वरूपानन्द भजनोपदेशक, जनकपुरी बी-३/२४—प० ओमप्रकाश गायक, टैगोर गार्डन—श्रीमती सुशीला राजपाल, तिलक नगर-प० मुनिशकर वानप्रस्थ, तिमारपुर—श्री मोहनलाल गांधी, दरियागज—प० प्रकाश चन्द वेदालकार' नारायण विहार—प० सत्यदेव भजनोपदेशक, नया बांस—प्रो० सत्यपाल बेदार; पंजाबी बाग—आचार्य हरिदेव सि० भू०, पजाबी बाग एक्स-टेंशन—ला० लखमीदास, बाग कडे खा—प० बरकतराम भजनोपदेशक; बिरला लाइन्स—प० ईश्वरदत्त, मोडल बस्ती—प० आशानन्द भजनोपदेशक, महावीर-नगर—प० सोमदेव शास्त्री; महरौली—प० हरिश्चन्द्र आर्य, रमेश नगर—प० भगवान सहाय विद्यावाचस्पति, राणा प्रताप बाग—प० देवराज वैदिक मिश्नरी, राजौरी गार्डन—श्रीमती लीलावती आर्या, लड्डू घाटी पहाडगज—प० प्राणनाथ सिद्धान्तालकार, लक्ष्मीबाई नगर—प० वेदव्यास भजनोपदेशक; लेखराम नगर-त्रिनगर—स्वामी विश्वदेवानन्द; लारेन्स रोड—आचार्य दीनानाथ सिद्धान्तालकार; विक्रम नगर—प० हरिश्चन्द्र शास्त्री, सुदर्शन पार्क—प्रो० भारतमित्र शास्त्री; सराय रोहेला—प० रामरूप शर्मा, सोहनगज—पं० कामेश्वर शास्त्री, श्रीनिवास पुरी—प० चुन्नीलाल भजनोपदेशक, हौज खास डी०-२०—प० चन्द्रभानु सि० भू०, आर्य नगर पहाडगज—प० गणेशदत्त वानप्रस्थी; मोडल टाउन—डा० रघुवीर वेदालकार, शकरपुर विस्तार—वैद्य रामकिशोर।

—ज्ञानचन्द डोगरा, वेद प्रचार प्रबन्धक

पिछड़े वर्ग के लोगों के साथ सामूहिक भोज

आर्यसमाज मोडल बस्ती का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज मोडल बस्ती दिल्ली का ३८ वा वार्षिक उत्सव ३ या ४ जुलाई ८२ को धूमधाम से हुआ। ३ जुलाई शनिवार की रात को प्रसिद्ध दानवीर श्री विद्याप्रकाश सेठी की अध्यक्षता मे आर्य सम्मेलन एव ४ जुलाई को सार्वदेशिक सभा के प्रधान ला० रामगोपाल शाल वाले वानप्रस्थ की अध्यक्षता मे धर्मरक्षाभियान सम्मेलन हुआ। दोनो सम्मेलनों मे आर्यसमाज के सुप्रसिद्ध नेताओ के भाषण हुए। रविवार को ऋषि नगर मे विशिष्ट व्यक्तियो ने पिछडे वर्ग के सैकडो बच्चो-बूढो के साथ सहभोज करके जात-पात के विरुद्ध एक एक नया आदर्श प्रस्तुत किया। इसी दिन दानवीर महाशय धर्मपाल जी की अध्यक्षता मे वेद-सम्मेलन भी आयोजित किया गया।

गुरुकुल में प्रवेश

महर्षि दयानन्द सस्कृत गुरुकुल, महाविद्यालय, पटेल मार्ग गाजियाबाद (जो आर्यसमाज, गाजियाबाद द्वारा सचालित है) मे प्रवेश आरम्भ हो गया है। अत आप शीघ्रातिशीघ्र अपने बच्चों को इस गुरुकुल में भारतीय सस्कृति की रक्षा हेतु प्रवेश दिलाने का कष्ट करें। इस गुरुकुल में प्रथमा से आचार्य तक के पठन-पाठन की मान्यता श्री सम्पूर्णानन्द सस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी से है। इस गुरुकुल मे शिक्षा, आवास तथा क्रीडा शुल्कादि भी नही लिए जाते हैं। केवल ५० रुपए भोजन शुल्क के रूप में प्रति माह लिए जाते हैं।

—आचार्य महर्षि दयानन्द सस्कृत गुरुकुल महाविद्यालय पटेल मार्ग, गाजियाबाद

आर्यसमाजों के नए पदाधिकारी

आर्यसमाज विनयनगर। प्रधान—श्री सत्यदेव गुप्त, उपप्रधान—डा० विजयकुमार सहगल, श्री देशराज बुधराजा, श्री प्रेमचन्द्र भण्डारी, श्री बलवीर वर्मा। मन्त्री—श्री रोशनलाल गुप्त, उपमन्त्री—श्री इन्द्रसेन कोहली, श्री बनवारी लाल कश्यप, श्री गगादेव शर्मा, श्री हरिश्चन्द्र गुप्त, कोषाध्यक्ष—श्री सुरेन्द्र कुमार गर्ग, पुस्तकाध्यक्ष—श्री प्रसन्नकुमार, लेखा निरीक्षक—श्री अमरसिंह चौहान।

आर्यसमाज जगपुरा-भोगल। प्रधान—डा० जयप्रकाश गुप्त, उपप्रधाना—श्रीमती डा० सुशीला साही, उपप्रधान—श्री लाजपतराय बतरा, मन्त्री—श्री सरदारीलाल चोपडा, उपमन्त्री—श्री रामचन्द्र जुनेजा, कोषाध्यक्ष—श्री राधाकृष्ण बिदानी, आय व्यय निरीक्षक—श्री ओमप्रकाश चौधरी, आर्यसमाज राणाप्रताप बाग, प्रधान—श्री राधा कृष्ण गांधी, उपप्रधान—श्री जगवन्तराय साही; मन्त्री—श्री जगदीशचन्द्र उपमन्त्री—श्री हंसराज मल्होत्रा, कोषाध्यक्ष—श्री देवराज, प्रचार मन्त्री—श्री रामसरन सखूजा, पुस्तकालयाध्यक्ष—श्रीमती प्रेमलता, आय व्यय निरीक्षक—श्री सतीशचन्द्र।

आर्यसमाज पजाबी बाग एक्सटेन्शन। प्रधान श्री चितरजन दास नंय्यर, उपप्रधान—श्री मदनमोहन सलूजा, श्री ओमप्रकाश चड्ढा, मन्त्री—श्री सुभाषचन्द्र मित्तल, उपमन्त्री—श्री मगलसेन खन्ना, श्री श्यामसुन्दर सरदाना, कोषाध्यक्ष—श्री शादीलाल।

आर्यसमाज गोविन्दनगर कानपुर ६। प्रधान—श्री दीवानचन्द्र खन्ना, उपप्रधान—श्री कृष्णलाल धमीजा, श्री शुभकुमार वोहरा, उपमन्त्री—श्री लाजपतराय।

आर्यसमाज नरेला का वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज नरेला का ५२ वा वार्षिकोत्सव १०-११ जुलाई को मनाया गया। इस अवसर पर १० जुलाई को दोपहर दो बजे से ५ बजे तक नगर कीर्तन और शाम को ५ से ७ बजे तक व्यायाम प्रदर्शन किया गया। ११ जुलाई को दोपहर के समय धर्म रक्षा सम्मेलन और व्यायाम प्रदर्शन किये गए।

मृत्यु के बाद जन्म कब ?

—डा० नन्दलाल बजाज

मृत्यु के बाद जन्म यह एक अत्यन्त गम्भीर तथा विवादास्पद विषय है, जिसका स्पष्ट व विश्वसनीय उत्तर उपलब्ध नही है। 'आर्य-सन्देश' के ६ मई १९८२ के अक मे श्री मनोहर विद्यालकार ने इस विषय पर, 'मृत्यु के १२ दिन पश्चात् पुनर्जन्म होता है' के शीर्षक से अपना लेख प्रकाशित कराया है। क्या ही अच्छा हो यदि इस विषय पर आर्य-समाज के कर्णधार यानी सार्वदेशिक सभा या प्रतिनिधि सभा या प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा दिल्ली इस पर एक गोष्ठी या सगोष्ठी का आयोजन करें, जिससे श्री मनोहर जी के लेख के विषय मे वैदिक दृष्टिकोण का स्पष्टीकरण हो सके।

३० मई १९८२ के आर्य सन्देश के अक मे पृष्ठ ३ पर चिट्ठी-पत्री के स्तम्भ मे श्री ओकार मिश्र फिरोजाबाद (यू पी) निवासी ने मेरे लेख के मन्तव्य को काफी सीमा तक ढाप लिया है अत. इस विषय के जिज्ञासु नर-नारी उस लेख को भी अध्ययन करे। श्री मनोहर जी ने जिस मन्त्र को अपने लेख का [illegible] बनाया है, उसमे स्वामी दयानन्द जी महाराज ने मन्त्र के भावार्थ मे ये शब्द अकित किए हैं—'हे मनुष्यो, जब यह जीव शरीर को छोडते हैं तब सूर्य प्रकाशादि पदार्थों को प्राप्त होकर कुछ काल भ्रमण कर अपने कर्मों के अनुसार गर्भाशय को प्राप्त होते हैं।'

यह १२ दिन का समय सब जीवों के लिए तो हो ही नही सकता। निकृष्ट योनियो वाले जीव तो तुरन्त शरीर धारण कर लेते हैं, दूसरी कोटि के जीव कुछ समय प्रकाश पाने के लिए परमात्मा के सम्पर्क मे ही मानो वास करते हैं और तब गर्भाशय को प्राप्त होते हैं। जीवात्मा तो अजर-अमर है उसमे न्यूनता किस प्रकार आ सकती है। जिन देवो का लेखक ने सकेत किया है वह कोई भौतिक देव नहीं बल्कि परमात्म देव के ही नाम हैं जैसे कि वेद का प्रसिद्ध मन्त्र—इन्द्र मित्र वरुणमग्नि ·· एक सद्विप्रा. बहुधा वदन्ति से स्पष्ट है—वेद मन्त्र तो अलकारो से भरे पड़े हैं। स्मरण रहे कि ये देव ईश्वर की दिव्य शक्तिया हैं। ३३ देव जो हम गिनते हैं वे भौतिक जरूर हैं। पर इन सब मे प्रकाश व दिव्यता, बल, शक्ति व तेजादि सब ईश्वर देव का ही होता है। जब आत्मा अभौतिक है तो भौतिक से क्या ग्रहण करेगा'।

लेखक ने जितने मन्त्र 'अर्थ पोषक' के रूप मे उद्धृत किए हैं जैसे यन्मे द्विन्द्र चक्षुषा · उन सबको मैने भली प्रकार वेदो मे पढा है पर उन किसी एक मन्त्र से भी लेखक के कथन की पुष्टि नही होती है—आर्य पण्डित मण्डली भी इस ओर दृष्टिपात करें।

जीव स्वय अपने सखा परमात्मा के पास पार्थिव शरीर की कैद से निकल कर अपनी न्यूनताओ को पूरा कर लेता है।

जीव का जो भिन्न-भिन्न सात या अधिक दिशाओ या दशाओ को प्राप्त होना लिखा है वह यह दर्शाता है कि किस प्रकार शनै.शनै अधिक-अधिक ज्ञान, विद्या या प्रकाश परमात्मा से पा उन्नत होता जाता है, यह मध्य श्रेणी के जीवों या रजोगुणी जीवो की दशा हम कह सकते हैं।

तीसरी गति निष्काम कर्म कर जो जीव जीव-मुक्त हो गए हैं उन्हे प्राप्त होती है, वे मोक्ष को पाते हैं और वे बहुत ही लम्बी अवधि के उपरान्त जन्म लेते हैं विद्या तपोमया भूतात्मा बुद्धि ज्ञानेन शुध्यति भी यही सिद्ध करता है कि भौतिक देव जीव की शुद्धि नहीं करते हैं।

मुक्त जीव मैथुनी सृष्टि द्वारा ससार मे प्रादुर्भूत होते हैं। जीव का एक शरीर से दूसरे शरीर मे जाने मे समय तो लगता है, पर वह मनुष्य ने समय की जो नापतोल (दिन, घडी, महूर्तादि) की है, उसमे नहीं आता है।

महात्मा नारायण स्वामी कृत 'मृत्यु और परलोक' पुस्तक पृष्ठ ११४ पर अधोलिखित टिप्पणी मे लिखा है—१२ दिन के बाद पैदा होने का विचार भ्रमात्मक है और एक वेद मन्त्र के ठीक न समझने के कारण कदाचित् उत्पन्न हुआ है। मन्त्र इस प्रकार हैं'—

सविता प्रथमे ऽहन्नग्नि द्वितीये, वायु स्तृतीये आदित्य। चतुर्थे चन्द्रमा पञ्चमे ऋतु षष्ठे मरुत सप्तमे।

बृहस्पतिरष्टमे मित्रो नवमे [illegible] दशमे इन्द्र एकादशे विश्वे देवा द्वादशे।

इसका अर्थ यह है कि जीव शनै शनैः अधिक से अधिक प्रकाश को पाता चला जाता है।

महात्मा आनन्द स्वामी एक जगह अपने उपदेश मे लिखते हैं—एक पापी मनुष्य को सम्बोधित करते हुए—ऐ निकृष्ट कर्म कर्ता जीव जाओ देखो वह बाजार में कुतिया तुम्हारी 'माँ' बनने की प्रतीक्षा कर रही है, स्वामी जी के ये वचन भी इस बात की पुष्टि करते हैं कि जीव का मृत्यु के पश्चात् जन्म ग्रहण करने की अवधि उसके कर्मानुसार होती है, जिससे निकृष्ट कर्म उतने शीघ्र जन्म, जितने कम पाप उतना ज्यादा समय जीव के ज्ञान या प्रकाश करने का और जो सर्वथा निष्काम कर्म कर्ता हो हैं वह तो मोक्ष प्राप्त कर करोडो वर्ष आनन्द मे बिना भौतिक शरीर धारण किये विचरते हैं।

१२ दिन का समय मृत्यु पश्चात् जीव के जन्म पाने का लिख लेखक ने सनातनी पौराणिक परम्परा को पुष्ट कर दिया है।

अपनी खोई हुई शक्तिया यदि जीव १२ दिनों में प्राप्त कर सके तो उसे तो जन्म लेने ही अलौकिक चमत्कारों को दर्शा सकना चाहिए, माता-पिता आचार्यों से इतने लम्बे वर्षों के लिए उन से भिन्न-भिन्न प्रकार की शिक्षा लेने की क्या जरूरत पड़ सकती है ?

एम/१२२ ग्रेटर कैलाश-II
नई दिल्ली—४८

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए श्री सरदारी लाल वर्मा द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा भाटिया प्रेस २५७४, रघुबरपुरा नं० २ गांधी नगर दिल्ली-३१ में मुद्रित कार्यालय १५ हनुमान रोड नई दिल्ली फोन ३१०१५०।

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक मुखपत्र

एक प्रति ३५ पैसे   वार्षिक १५ रुपये   वर्ष ६   अंक ३९   रविवार २५ जुलाई   १० श्रावण वि० २०३९   दयानन्दाब्द—१५८

पंजाबी सूबे की साम्प्रदायिकता छोड़ राष्ट्रधर्म अपनाओ

भारत के संगठन में ही पंजब का भला : स्वामी सत्यदेव परिव्राजक का अमर सन्देश

क्या नए राष्ट्रपति ज्ञानी जी पंजाब की समस्या सुलझाएंगे ?

नई दिल्ली । जानकार सूत्रों का ख्याल है कि प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने सत्तारूढ कांग्रेस (इ) की ओर भारत के राष्ट्रपति पद के लिए ज्ञानी जैलसिंह का नाम प्रस्तुत करके यह स्पष्ट कर दिया है प्रधान मन्त्री एव शासक दल की दृष्टि में पजाब की बढती अराजकता गम्भीर चिन्ता का विषय है । सम्भवत. उन्होने इस समस्या के समाधान के लिए देश के सर्वोच्च पद पर पजाब एव सिख-प्रतिनिधि को नियुक्त करना उपयुक्त समझा है, परन्तु जिस समस्या का समाधान वह गृहमन्त्री के रूप में नही कर सके हैं, उसे वह राष्ट्रपति बन कर प्रधान मन्त्री के साथ सहयोग से सुलझा सकेंगे तो अच्छा रहेगा, अन्यथा स्थिति की गम्भीरता से इन्कार नही किया जा सकता । पंजाबी सूबे का प्रश्न इस शताब्दी के प्रारम्भ से ही गम्भीर रूप धारण करता रहा हैं । हिन्दी के प्रमुख लेखक एव पंजाब के प्रमुख आर्यनेता श्री सत्यज्ञान निकेतन, ज्वालापुर के सचालक स्वामी सत्यदेव परिव्राजक ने 'पजाबी सूबे का स्वप्न और यथार्थ' शीर्षक से ४० वर्ष पूर्व जो विचार प्रकट किए थे, वे आज के पंजाब की स्थिति के समाधान के लिए उपयुक्त हो सकते हैं ।

पजाबी सूबा . स्वप्न और यथार्थ

स्वामी सत्यदेव परिव्राजक ने लिखा था—'१८ वीं सदी में महाराजा रणजीत सिंह ने सिख सरदारों की मिसलो को तहस-नहस कर हिन्दुओ की दूरदर्शिता, सहनशीलता और राजनीतिज्ञता का लाभ लेकर शक्तिशाली पजाबी राष्ट्र बनाने का निश्चय किया,उन दिनो मे हिन्दू और सिख दूध और चीनी की तरह आपस मे मिले हुए थे । महाराजा रणजीत सिंह जी व्यवहारकुशल राजनीतिज्ञ थे उनमें गुणग्राहकता कूट-कूट कर भरी हुई थी । अपनी भुजाओं के पराक्रम से उन्होंने खैबर की घाटी से लेकर सतलुज तक देश को भली प्रकार संगठित किया । आने वाली पीढ़ियो के पजाबियों को वे ऐसा बलशाली पजाबी सूबा दे जाना चाहते थे, जिसकी ओर शत्रु वक्रदृष्टि से न देख सके । अपना कर्त्तव्य पालन कर वह परलोक सिधारेगा । उनके परलोक सिधारते ही पजाबियों की पुरानी बीमारी ईर्ष्या, द्वेष और स्वार्थपरता भयकर रूप से जाग उठी । सिख सरदार देशद्रोह करके विदेशी अग्रेजो के दास बन गए । सिखों की आपसी फूट ने महाराजा रणजीत सिंह द्वारा निर्माण किया हुआ पजाबी सूबा थोड़े वर्षों मे ही मिट्टी मे मिला दिया ।

सत्यदेव जी परिव्राजक ने जिज्ञासा प्रकट की थी कि 'क्या कसर थी इन बहादुर सिख सरदारो मे जो वे उस शक्तिशाली पजाबी सूबे को खड़ा न कर सके इतिहास यह सिखलाता है कि खाली कृपाण घुमाने से कुछ नहीं होता । केवल लाशें गिरा देने से जातियाँ सगठित नहीं होतीं ? राजनीतिज्ञता ही राष्ट्र को संगठित करने का जबर्दस्त साधन है । यह साधन हिन्दुओं के पास था, जिसका उस समय के सिखो ने उपयोग नही किया, बस वे यही कहते रहे 'राज करेगा खालसा, बाकी रहे न कोय ।' ऐसे नारे लगा कर उन्होने हिन्दुओ को अपने से अलग कर दिया और फिर स्वार्थवश अग्रेजो के चकमों मे आ गए ।

परिव्राजक जी ने लिखा था—आज युग है, बमो, हवाई जहाजो और जहरीली गैस' का । यदि सिख लोगो ने समय के अनुसार अपना मस्तिष्क नही बनाया तो वे मिट जाएगे । यूरोप की जातिया अपना एक सघ बनाने की फिक्र मे हैं, क्योकि छोटे राष्ट्रो का दुनिया मे अब कोई स्थान नहीं रहा । पृथ्वी पर इस समय चार बड़े राष्ट्र हैं—रूस, चीन, भारत और सयुक्त राज्य अमेरिका ।···भारत सघ के प्रत्येक राज्य को यह स्मरण रखना चाहिए कि उसका अस्तित्व भारत को सगठित करने मे सुरक्षित है, अलग होने से उसकी कोई कीमत नहीं रह जाती । जो लोग पजाबी सूबे की रट लगा रहे हैं, उन्हें अपने प्यारे देश भारत सघ से कोई मतलब नही ।

स्वामी जी ने लिखा था—मैं सिख वश का बालक हू, मेरे पुरखाओ ने महाराजा रणजीत सिंह के समय मे पन्थ की बडी सेवा की, लेकिन हमने सिख पन्थ को कभी हिन्दू धर्म से अलग नही समझा ।' 'गुरुमुखी लिपि उस समय घडी गई थी जब क्रान्तिकारी पजाबी सिख जगलो और पहाडो मे राते बिता करते थे, गुरु लोग अपना सदेश इस लिपि से पहुचाते थे असली लिपि देवनागरी है और इसी लिपि मे सब प्रान्तीय भाषाए लिखी जानी चाहिए ।

स्वामी जी ने देशवासियो से अनुरोध किया था—'अरे मेरे देश के लोगो, चेतो, दानवी साम्प्रदायिकता का मोह छोड कर राष्ट्रधर्म का अमृत पान करो, जितनी जल्दी हो सके भारत को ऐसा सुदृढ बनाओ कि कोई शत्रु इसकी तरफ टेढी नजर न कर सके ।''हमे आज अलग-अलग सूबे नही चाहिए , नही हमें फूट के विचारो के पोधो को सीचना उचित है, आप ग्रन्थ साहब पढ़िए, कौन मना करता है, बड़े-बड़े दीवान कीजिए, आपको कौन हटाता है लेकिन यह बात सोने पर लिख लीजिए कि सारे देश की एक लिपि और एक भाषा हुए बिना आपका राष्ट्र बलशाली नही बन सकता । गुरुद्वारे प्रभु भक्ति के लिए हैं, राजनीतिक अखाडे नही । पजाबी सूबा बनाने वालों को आज ईश्वर के सामने खड़े होकर सारे पजाब की जनता को सत्य-न्याय के मन्त्र से दीक्षित करना चाहिए, वे देशरक्षा का व्रत लेकर वाहे गुरु के उपदेश हृदयगम करें ।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के वार्षिक अधिवेशन में भाग लेने वाले प्रतिनिधियों की सूची

नई दिल्ली । दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के २२ अगस्त, १९८२ के दिन होने वाले अधिवेशन में भाग लेने के लिए सम्बद्ध आर्य समाजो के अधिकृत प्रतिनिधियो की प्रथम सूची इस प्रकार है—

आर्यसमाज रामगली हरिनगर—श्री चरणदास शर्मा, श्री आनन्द प्रकाश वर्मा, आर्यसमाज देवनगर (मुल्तान)—श्री जयगोपाल वेदी, श्री महावीर स्नातक, श्री बृजनन्दन प्रकाश नवयुग, कृष्णलाल मदान, आर्यसमाज पटपडगज—श्री रमेशचन्द्र गुप्त; आर्यसमाज रघुवीर नगर—श्री अर्जुनदेव, आर्यसमाज जगपुरा । भोगल—श्री नवनीतलाल, श्री राधाकृष्ण बिदानी, श्री सरदारीलाल चोपड़ा, आर्यसमाज

(शेष पृष्ठ ६ पर पढ़े)

सम्पादक—नरेन्द्र विद्यावाचस्पति

व्यवस्थापक—प्रद्युम्नलाल तलवाड़

वेद-मनन

हमें पर्याप्त भोग देकर दीर्घायु बनाइए

—मनोहर विद्यालंकार

अन्नपतेऽन्नस्य नो देह्यनमीवस्य शुष्मिणः

प्र प्र दातारं तारिष ऊर्जं नो धेहि द्विपदे चतुष्पदे ॥ यजु ११ ८३

ऋषि — नाभानेदिष्ठ । देवता यजमान पुरोहितो का छन्द उपरिष्टात् बृहती ।

शब्दार्थ हे (अन्नपते) अन्न और भोग के नियन्त्रक प्रभो ! (अनमीवस्य) रोग रहित (शुष्मिणः) बलप्रद (अन्नस्य) अन्न तथा भोग का हमारा भाग (नः देहि) हमे प्रदान कर। (प्रदातारम्) अन्नदान करने वाले की (प्रतारिष) आयु को बढा और (नः) हमारे (द्विपदे) द्विपाद सदस्यो अर्थात पुत्र पौत्रादि तथा सहयोगियो को (चतुष्पदे) चौपाए गौ अश्वादि पशुओ तथा यानो को (ऊर्जम्) अन्न तथा बल (धेहि) प्रदान कर।

निष्कर्ष यद्यपि प्रभु के पास अन्न व भोगो का अनन्त भण्डार है, लेकिन सब हितैषी तथा न्यायकारी प्रभु कर्मानुसार ही हमे अन्न तथा भोग प्रदान करता है हिरण्यदा ददात्यन्नमस्मै । ऋक २ ३५ १०

अन्न दान करने वाले दीर्घायु होते है। प्रण आयूंषि तारिषत ऋक १० १८६ १ और प्रोवशी तिरते दीर्घमायु ऋक १० ९५ १० का निरुक्तकार ने १० ३५ मे प्रवर्धयतु तथा ११ ३६ मे प्रवधयत अर्थ किया है।

यदि हम नाभानेदिष्ठ परमेश्वर के समीपतम रहने वाले बनेगे। अर्थात उसके समान गुण सखा बनने का प्रयत्न करगे तो हमारे सरक्षण मे रहने वाले मनुष्यो तथा पशु पक्षियो को भी अन्न तथा बल की कमी नही रहेगी।

विशेष इस मन्त्र के ऋषि का शब्दार्थ सकेत करता है कि हमे ब्रह्माण्ड की नाभि (प्रभु) के निकटतम (गुणो की दृष्टि से) रहना चाहिए। यदि ऐसा सभव हुआ तो हमे कोई कष्ट या पीडा हताश नही कर पाएगी, जसे चक्की की नाभि के साथ रहने वाले दाने को चक्की नही पीस पाती है।

इस मन्त्र के छन्द का शब्दार्थ सकेत करता है कि मनुष्य को अपना मन वचन और कर्म बृहद बना कर सबके साथ उदार व्यवहार रखना चाहिए।

अथ पोषक प्रमाण अन्नम् अत्तेऽत्ति च भूतानि तस्मादन्नं तदुच्यते। तै० ३० २ १० अन्नस्य शेयर आफ फूड। ग्रिफिथ अन्नस्य स्वमशमिष्यथ। अजम अक अन्ननाम। नि० २ ६ ऊर्ज बलप्राणयो। अत उक बल और प्राण को बढाने वाला अन्न।

प्रतारिष प्रवर्धयतु। निरुक्त १० ३५ तथा निरुक्त ११ ३६

५२२ ईश्वर भवन खारी बावडी दिल्ली ११०००६

डी ए वी कालेज अवसानी (चम्पारण) की स्थापना

३० जून १९९? को चम्पारण जिला आर्यसभा के अधिशास्त्री बिहार प्रतिनिधि सभा के सदस्यो एव पखोली मलहोली और अवसानी ग्राम के प्रजाजनो की एक सभा श्री मुनिलाल साहु के मलहोली स्थित निवास मे हुई। अवसानी के पुराने गुरुकुल मे भूतनाथ कालेज के नाम से एक कालेज चलता था। उस कालेज का नाम बदल कर डी ए वी कालेज अवसानी रखा गया। एक प्रबन्ध समिति का गठन किया गया उसके अध्यक्ष श्री रघनाथ प्रसाद गुप्त अध्यक्ष श्री योगेन्द्रप्रसाद अधिवक्ता मोतिहारी और सचिव प० जनार्दन मिश्र चुने गए। २० सदस्यों की एक प्रबन्ध समिति चुनी गयी।

कन्या गुरुकुल हाथरस की सहायतार्थ दान

श्री आदित्य काश्यप कलकत्ता रु० ३०००) श्रीमती पारवती कल्याण जी बम्बई १००१) रु०, मन्त्री आर्यसमाज कछोली गुजरात १०००) रु० डॉ० जयनारायण सक्सेना शाहजहांपुर ५०१) रु० श्रीमती धनजीबालजी बलाणी बम्बई ५०१) रु० श्री गणशदास अग्निहोत्री दिल्ली ५००) रु० श्रीमती रुक्ममणि बहिन नारायण पारसिया बम्बई १११) रु०।

आषाढ पूर्णिमा के दिन कन्या गुरुकुल का स्थापना दिवस सोत्साह मनाया गया। विशेष यज्ञ एव ध्वजारोहण के बाद सभा की गई जिसमे ब्रह्मचारिणियो ने सगीत साकेतिक गान व्याख्यान आदि प्रस्तुत किये।

सत्यार्थ प्रकाश-परीक्षाए

सदैव की भाति इस वर्ष भी १६ सितम्बर को आर्य युवक परिषद (रजि०) दिल्ली द्वारा सचालित सत्यार्थप्रकाश की चारो परीक्षाएं सारे देश के २०० परीक्षा केन्द्रो मे सम्पन्न होगी। परीक्षा देने के इच्छुक अभ्यर्थी परीक्षा पाठविधि आवेदन पत्र तथा सभी प्रकार की अन्य जानकारी के लिए श्री चमनलाल एम० ए० परीक्षा मन्त्री एच ६४ अशोक विहार दिल्ली ५२ से पत्र व्यवहार कर निःशुल्क प्राप्त कर लेनी चाहिए।

—ओमप्रकाश एम० एस० सी० मन्त्री

लोक-चिन्तन

भौंरा धीरे से आना बगिया में

—डा० विजय द्विवेदी

यह जगत परमात्मा की प्रयोगशाला है। यहाँ नित्य नूतन प्रयोग चल रहे है। कुछ बन रहा है तो कुछ मिट रहा है। किसी पर से पर्दा उठ रहा है, तो कोई पर्दे के पीछे चला जा रहा है। तत्त्वज्ञानी इसे ही परमात्मा की लीला कहते है, विज्ञानी प्रयोग। विज्ञान भौतिक साधनों की सहायता से परमात्मा की रचना के रहस्य को अनावृत करने की जितनी चेष्टा कर रहा है उतना ही तत्त्वज्ञान के निकट आता जा रहा है और अपने प्रयास की निस्सारता का अनुभव भी करता जा रहा है। तथापि बुद्धि नामक जो तत्त्व भगवान की कृपा से उसे मिला है, वह मनुष्य को चुप नही बैठने दे रहा है। उसे कुछ न कुछ करते रहने के लिए बराबर उत्तेजित कर रहा है। इसी का परिणाम है हाल के कुछ वैज्ञानिको की यह खोज कि पेड पौधों मे भी सवेदनशीलता होती है उनमे भी मित्र शत्रु मनोभाव की पहचान करने की क्षमता होती है, सुख दुख की अनुभूति की सामर्थ्य है।

अभी हाल मे ही दो अमेरिकी वैज्ञानिको ने लाई डिक्टेटर (झूठ पकडने वाला) यत्र की सहायता से कुछ वनस्पतियो की सवेदनशीलता का पता लगाने के लिए प्रयोग किए। उन दोनो ने यत्र के विद्युत तारो को पौधे के पत्तो पर चिपका दिया। उन्हे यह देखकर खुशी हुई कि यत्र ठीक उसी तरह काम कर रहा था जैसे वह आदमी पर करता है। जब भी कोई ऐसी चीज पौधों के पास लाई जाती थी जिससे उन्हे हानि पहुच सकती है तो यत्र की सुइया हिलने लगती थीं। ऐसा लगता था जसे पौधा भय से सिहर रहा हो अहानिकर तत्त्वो की सगति मिलने पर सूचिकाए स्थिर रहती थी। इन वैज्ञानिको ने तरह तरह से प्रयोग करके यह निष्कर्ष निकाला कि वनस्पतियो मे सवेदनात्मक शक्ति होती है।

इस खोज की खबर सुनकर मुझे कालिदास के अभिज्ञान शाकुन्तलम् नाटक का वह दृश्य याद आ गया जिसमे शकुन्तला कण्व ऋषि का आश्रम छोडकर पति गृह जा रही है। उसके वियोग दुख से आश्रम वासी दुखी हैं आश्रम के जीव जन्तु उदास है। आश्रम के लता वृक्ष भी उसे विदाई उपहार दे रहे हैं। कोई वल्कल दे रहा है तो कोई लाक्षा रस। किसी लता के हाथों मे पराग कण हैं तो किसी के अग राग। कितना अपूर्व दृश्य है। मगर अभी कल तक बुद्धिवादी इसे कवि कल्पना कह कर उपेक्षा करते रहे हैं हसी उडाते रहे हैं। अब विज्ञान के प्रकाश मे यह नही कह सकगे कि महाकवि कालिदास की मति मारी गई थी जो बासों को भी बांसुरी बजाते दिखा गये—शब्दायन्ते मधुरमनिलै कीचका पूर्यमाणा । यही है आध्यात्मिक ज्ञान और विज्ञान का समन्वय बिन्दु। आध्यात्मिकता कहती है—परमात्मा की सत्ता प्रकृति के कण कण मे व्याप्त है तिल से लेकर ताड तक मे। इसे सहज और निरपेक्ष दृष्टि हो तो देखा जा सकता है, जाना जा सकता है। जिन साधु सन्तो साधको कवि कलाकारो के पास यह दृष्टि होती है वे ही जानते हैं कि जो ज्ञानी विज्ञानी बनकर भी परहित मे रत नहीं होगा, उसे परमात्मा दण्ड देगा। इसी भाव से प्रेरित होकर वे भौंरो को भी आगाह कर देते हैं कि वे बगिया मे धीरे से आए और स्नेह स्वप्न मग्न अमल कोमल तन तरुणी कलियों को न सताए।

—महाराजा पूर्णचन्द्र महाविद्यालय बारीपदा (उडीसा)।

आधुनिक भारत के दो महामानव

नई दिल्ली। आर्यसमाज दीवान हाल में आर्यनेता श्री रामगोपाल शालवाले की अध्यक्षता मे राजर्षि पुरुषोत्तम दास टण्डन को भावपूर्ण श्रद्धांजलि प्रस्तुत करते हुए सार्वदेशिक सभा के महामन्त्री भू पू ससद सदस्य श्री ओमप्रकाश त्यागी ने कहा कि हमारी पीढी के दो ऐसे व्यक्ति हैं जिनके प्रति राष्ट्र हमेशा कृतज्ञ रहेगा। पहले महामानव सरदार वल्लभभाई पटेल हैं जिन्होंने भारत को एकता के सूत्र में बांधा और दूसरे हैं महामानव राजर्षि पुरुषोत्तमदास टण्डन जिन्होने राष्ट्र की आत्मा राष्ट्रभाषा हिन्दी को सबल बनाने का प्रयास किया।

इस अवसर पर दिल्ली में आर्यकुमार सभा आन्दोलन के पुराने सचालक राष्ट्रीय नेता डा० युद्धवीर सिंह का अभिनन्दन किया गया।

शुद्ध जीवनवृत्ति का फल

ओ३म् आयुश्च रूपं च नाम च कीर्तिश्च।
प्राणश्चापानश्च चक्षुश्च श्रोत्रं च ॥ अथर्व १२ ५,५,२,६

ब्रह्मचर्य सेवन से जीवन की वृद्धि, शरीर की पुष्टि से स्वरूप, अच्छे सत्कर्मों से प्रसिद्धि और कीर्ति प्राणवायु, अपानवायु सब प्रकार का आरोग्य और श्रवण की प्राप्ति सम्भव है।

ओ३म्
आर्य सन्देश

हमारी राष्ट्रनीति का मूलमन्त्र

हमारे लम्बे इतिहास के सर्वाधिक सफल राजनीतिज्ञ आचार्य चाणक्य ने कहा था कि किसी भी देश का न तो उसका स्थायी मित्र होता है और न कोई स्थायी शत्रु, उसका अपना हित और राष्ट्र को महान् बनाना ही उसका परम लक्ष्य होना चाहिए। आचार्य चाणक्य की इस कसौटी पर कसने से पता चलता है कि हमारी विदेश नीति का मूलाधार यही है कि हम किसी भी बड़े राष्ट्र के न तो शत्रु हैं और न उसके मित्र। हमारी इस नीति का यह दुष्परिणाम हुआ है कि हम संकट की घड़ियों में इन बड़े राष्ट्रों सदिच्छा या सहायता पर विश्वास नहीं कर सकते। संसार के दो प्रमुख गुटों की टक्कर में उनसे पृथक् एक निरपेक्ष गुटविहीन तटस्थ राष्ट्रों का एक संगठन बनाया गया है। प्रचार एवं सिद्धान्तों की पुष्टि के लिए तटस्थ राष्ट्रों के पृथक् समूह की महत्ता हो सकती है। परन्तु जहां तक राष्ट्र के अपने हितों के संरक्षण और उसे महान् बनाने का प्रश्न है, तथाकथित तटस्थ निरपेक्ष राष्ट्रों के समूह से भारत के राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय हितों का संरक्षण एवं अभ्युदय सम्भव न हो सकेगा। इस बात को समझने के लिए अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति का एक वर्तमान उदाहरण उल्लेखनीय हो सकता है।

दूसरे महायुद्ध के अन्त तक मध्य पूर्व मे यहूदियो के राष्ट्र इजराइल का अस्तित्व भी नही था, परन्तु अब उस छोटे से २६-२८ लाख यहूदियो के देश इजराइल ने १० से १२ करोड अरब राष्ट्रो की सामूहिक शक्ति की उपेक्षा कर न केवल अपने भौगोलिक अस्तित्व को सुरक्षित कर लिया है, प्रत्युत उसने लेबनान मे पी० एल० ओ० अथवा फिलस्तीनी मुक्ति सेना के गढ पर आक्रमण कर उसे पूरी तरह नष्ट करने का प्रयत्न किया है। अरब लीडरों ने इजराइल के विरुद्ध लाल-पीले होकर जुबानी क्रोध तो बहुत दिखाया, परन्तु अमल मे कुछ भी नही किया। इस सबका परिणाम यह हुआ कि फिलस्तीनियों की संगठित शक्ति इजराइल के हाथो समाप्त हो गई। अरबो के शासक तेल की दौलत से मालामाल हो गए हैं, उन्हे अरब राष्ट्रों के सामूहिक राष्ट्रीय हितो की अपेक्षा अपनी दौलत और अपनी बादशाहत ही अधिक प्रिय है, उसे सुरक्षित रखने के लिए उन्हे अमेरिकी नैतिक और राष्ट्रीय सहायता चाहिए। इस सम्पूर्ण घटनाचक्र का परिणाम यह हो रहा है कि स्वार्थी-विभक्त अरब राष्ट्रों के सामूहिक विरोध की पर्वाह न करते हुए इजराइल प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष अमेरिकी मदद से अपने राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय हितो का संरक्षण एवं विस्तार करने में सफल हो गया।

मध्य पूर्व मे एक छोटा-सा इजराइल देश यदि अपना अस्तित्व सुरक्षित कर आगे बढ़ सकता है तो उसके उदाहरण से तथा दूसरे महायुद्ध मे पराजित एवं नष्ट भ्रष्ट जर्मनी और जापान के पुनर्निर्माण और अभ्युदय से सीख लेकर भारत भी बहुत कुछ कर सकता है। हमे बड़े राष्ट्रों की सदिच्छा अथवा तटस्थ निर्गुट राष्ट्रो के मूक अथवा जबानी समर्थन की अपेक्षा इजराइल की शक्ति के मूल स्रोत से प्रेरणा लेनी होगी। २६ से २८ लाख का एक छोटा-सा राष्ट्र यदि केवल अपने राष्ट्रवासियो की देशभक्ति: अनुशासन एवं बलिदान से आगे बढ़ सकता है तो ६८ करोड का भारत राष्ट्र अपने विशाल साधनो एवं मानव शक्ति के बल पर राष्ट्रों की अग्रिम पंक्ति में पहुंच सकता है। हां, इस लक्ष्य की पूर्ति के लिए दो बाते अत्यन्तावश्यक हैं। एक तो हमें विदेशी सहारे, साधनों और धन की मदद के स्थान पर अपने आन्तरिक साधनों एवं मानव शक्ति को संगठित और सन्नद्ध करना होगा, दूसरे हमें आचार्य चाणक्य की नीति का मूल मन्त्र अपनाते हुए किसी भी देश को अपना स्थायी मित्र या शत्रु न मान कर जो भी राष्ट्र या शक्ति हमारे लिए अनुकूल या सहायक हो उसकी तात्कालिक सहायता लेकर प्रत्येक दृष्टि से अपने को इतना शक्तिशाली, संगठित एवं महान बनाना होगा कि हम केवल भारतीय उप महाद्वीप में ही नहीं, प्रत्युत सम्पूर्ण एशिया एवं विश्व में अपनी स्थिति के अनुकूल गौरवपूर्ण स्थिति प्राप्त करने में समर्थ हो सकें।

चिट्ठी-पत्री

लेखक का उत्तर

५ मई, ८२ के आर्य सन्देश मे यजुर्वेद के ३९ वें अध्याय के छठे मन्त्र का अर्थ तथा उसका मनन छपा है। इस मनन के सम्बन्ध मे कुछ आर्य विद्वानो को आपत्ति है। उनकी मान्यता है कि जीव तृणजलायुकावत् तत्क्षण जन्म ग्रहण करता करता है। यह अर्थ महर्षि दयानन्द के विरुद्ध है। पौराणिक मान्यता तथा श्राद्ध का समर्थन करता है।

उत्तर मे संक्षेप से निवेदन है—(१) 'क' महर्षि दयानन्द ने ३९ वे अध्याय के प्रथम मन्त्र का विषय लिखा है—'अथान्त्येष्टि कर्म विषयमाह—अन्त्येष्टि कर्म का विषय कहते हैं' इसके बाद छठे मन्त्र तक लगातार 'तमेवविषयमाह' लिखते चले गए हैं। इससे स्पष्ट है कि यह मन्त्र अन्त्येष्टि कर्म से सम्बन्ध रखता है।

'ख' ३९ अध्याय के ५ वें मन्त्र के भावार्थ मे स्वामी जी लिखते हैं—यदा देहत्यक्ता सर्वेषु पृथिव्यादिषु पदार्थेषु भ्रमन् यत्रकुत्र प्रविशन् यतस्ततो गच्छन् कर्मानुसारेणेश्वरव्यवस्थया जन्म प्राप्नोति।

'ग' ३९ वे अध्याय के छठे मन्त्र के अन्वय मे स्वामी जी लिखते हैं—

'अन्न जीवेन प्रथमेऽन् सविता'' द्वादशेऽहनि विश्वेदेवाश्च प्राप्यन्ते' अर्थात् जीव प्रथमदिन सविता का''''''और १२ वें दिन विश्वे देवो को प्राप्त करता है।

'घ' इसके बाद इसी मन्त्र के भावार्थ मे लिखते हैं 'हे मनुष्य ! यदेमे जीवा शरीर त्यजन्ति तदा सूर्यप्रकाशादीन् पदार्थान् प्राप्य किञ्चित्काल भ्रमण कृत्वा स्वकर्मानुयोगेन गर्भगत्वा शरीर धृत्वा जायन्ते। अर्थात् जीव शरीर को छोडने के बाद सूर्यप्रकाशादि पदार्थो को प्राप्त होकर कुछ काल भ्रमण करके कर्मों के अनुकूल गर्भाशय को प्राप्त हो, शरीर धारण कर उत्पन्न होते हैं।

इस मन्त्र के अन्वय और भावार्थ को साथ-साथ पढने से स्पष्ट है कि जीव शरीर को छोडने के बाद १२ दिन तक १२ देवो को प्राप्त होता है। उनके गुणों को ग्रहण करके अपनी कमियो को दूर करने के बाद कुछ काल भ्रमण करके गर्भाशय को प्राप्त होता है।

महर्षि दयानन्द ने लिखा है कि शरीर छोडने के बाद १२ दिन जीव सूर्य आदि १२ देवताओ को प्राप्त होता है। उनके बाद किंचित काल भ्रमण करके गर्भाशय को प्राप्त होता है। मैंने लिखा है कि इन देवो को प्राप्त होकर पूर्वजीवन मे आई कमियो और अनर्हताओ को दूर करके जन्म ग्रहण के योग्य बनता है। मैंने श्राद्ध का कही प्रतिपादन नही किया है। जीव १२ दिन वायुमण्डल मे घूमता है, इससे श्राद्ध का पोषण नही होता।

भारतीय परम्परा मे जो १२ दिन अनुष्ठान की परम्परा है, उसका इस बात की पुष्टि के लिए संकेत किया था कि इस प्रथा से भी यही प्रतीत होता है कि जीव १२ दिन बाद जन्म लेता है। स्वामी जी का सिद्धान्त है कि 'शरीरदाहादूर्ध्वं मन्यत्क्रियानुष्ठान निषेध' यह सर्वसम्मत है। फिर भी आर्य समाजी लोग चौथा तथा वियुक्तजीव की सद्गति के लिए प्रार्थना करते है। इसे बढ़ाकर पौराणिक १२ दिन तक अनुष्ठान करते रहते हैं।

वास्तविकता यह है कि जीव के शरीर छोड़ने के बाद—शरीर धारण किए हुए व्यक्ति कुछ भला-बुरा नहीं कर सकते। उसे कुछ नही पहुंचा सकते जो कुछ करते हैं, अपने सन्तोष और सान्त्वना के लिए करते हैं।

१२ दिन के अवकाश काल के बाद भी मासो वर्षों तक जीव अपनी कमियों को पूरा करने के लिए प्रतीक्षा कर सकता है—यह मत श्री अरविन्द का है। श्री जयदेव जी के अर्थ के सम्बन्ध मे मैं यह कहना चाहता हूं कि वह अर्थ भी ठीक है; और भी अनेक अर्थ विद्वान् कर सकते हैं, जो ठीक भी हो सकते हैं। किन्तु—

स्वामी दयानन्द जी के भाष्य के अनुसार मेरे अर्थ मे कोई विसंगति या विरोध नहीं है।

मनुष्य को शरीर छोडने के बाद गर्भाशय मे प्रविष्ट होने मे कितना समय लगता है? इस प्रश्न का उत्तर प० रामचन्द्र देहलवी ने यजुर्वेद के इसी मन्त्र को उद्धृत करके यह दिया था कि—अपनी कमियो को पूरा करने के बाद जन्म लेता है। वह तत्क्षण भी उत्पन्न हो सकता है, दो दिन बाद भी, लेकिन १२ दिन से अधिक समय नहीं लगा सकता। मैं इस मन्त्र का अर्थ यह समझा हूं कि वह १२ दिन से पूर्व जन्म नहीं ले सकता। इससे अधिक चाहे जितना समय लग जाए।

५५३ ईश्वर भवन, खारी बावड़ी, दिल्ली-६

मुसलमान मुल्क के प्रति वफादार नहीं, वे इस्लाम से मुहब्बत करते हैं

ी जयप्रकाश आर्य (भूतपूर्व मौ० खुर्शीद आलम)

मैंने कोई धर्म-परिवर्तन नहीं किया। पिछले छटे खानदान (पीढ़ी) तक मेरा परिवार ब्राह्मण परिवार था, जो किसी खास मजबूरी के कारण इस्लाम कबूल किए हुए था। आज वह सत्य सामने है और मजबूरियां भी नहीं, इसलिये मैं अपने ही घर में वापस आ रहा हूं। आप इसे धर्म-परिवर्तन न कह कर पुर्न-गृह प्रवेश कहो तो अच्छा रहेगा। रही बात क्यों की, तो मेरा यह निश्चित मत एवं विश्वास है कि हिन्दुस्तान की ६० प्रतिशत आबादी हिन्दुस्तानी नस्ल से ही ताल्लुक रखती है जो मुगलों के दौर में या उसके बाद विभिन्न लालचों एवं दबावों की वजह से धर्म-परिवर्तन करती रही।

शिक्षा के कारण —

जब मैंने नजरें खोली तो तब एक ऐसे घर में स्वयं को पाया जहां का वातावरण सिर्फ इस्लामी वातावरण था और यही कारण है कि मेरी शिक्षा भी मजहबी शिक्षा ही रही। आपको यह बता देना चाहता हूं मेरी प्रारम्भिक शिक्षा मदरसा इस्लामिया, बेतिया (प० चम्पारण, बिहार) में और उच्च शिक्षा दारुल-उलूम (देवबंद) एवं मिफ्ताहुल उलूम (मऊ) में हुई। मैंने आलिम एवं फाजिल तक की शिक्षा ली। शिक्षा के क्रम से ही मेरे अन्दर एक जज्बा पैदा हुआ कि मैं अपने पिछले खानदान के बारे में कुछ मालूमात हासिल करूं। इसके लिए मैंने काफी छानबीन की और मुझे किसी हद तक कामयाबी भी मिली। और मैं ब्राह्मण खानदान का (हिन्दू) निकला।

दूसरी बात मेरे अन्दर पैदा हुई कि मैं जरा अपने पूर्वजों के धर्म का अध्ययन करूं। इस तालीमी जमाने में दूसरे मजहब की छानबीन के सिलसिले में मुझे मुस्लिम संस्थाओं में काफी दिक्कत और परेशानी उठानी पड़ी। मुझ पर तरह-तरह से दबाव दिया गया डराया धमकाया गया कि मैं हिन्दू धर्म का अध्ययन न करूं। दूसरे धर्म की किताबों को न देखूं। यह एक ऐसा मौका था, जब मेरे दिमाग में इस शंका ने जन्म लिया कि अगर इस्लाम सही और बेहतर मजहब है तो फिर इस तरह का प्रति-बन्ध क्यों? फिर मैं पूरी तरह से तैयार हुआ और यह सोच लिया कि चाहे जिस तरह भी हो, मैं खासतौर से हिन्दू धर्म, जिसे हम वैदिक धर्म भी कहते हैं, का अध्ययन जरूर करूंगा, ताकि मैं जान सकूं कि उसमें क्या कमी या खराबी है, जिसके कारण मुस्लिम उलेमा हिन्दू मजहब की किताबों के अध्ययन से रोकते हैं और मैं अपने अध्ययन के आधार पर यकीन के इस हद तक पहुंचा हूं कि हिन्दू धर्म (वैदिक धर्म) ही असल (धर्म) है।

उच्च शिक्षा प्राप्ति के बाद मैं मदरसतुल वायेजीन (लखनऊ) में चन्द महीनों तक शिक्षक रहा फिर वहां से आने के बाद मदरसा जहोरउल इस्लाम रक्सौल में मुदर्रिस रहा। फिर मैं बेतिया महार टोली के जामा मस्जिद में पेश इमाम और वाइज (धार्मिक वक्ता) रहा। फिर मसा टोला और मुहल्ला दरगाह का पेश इमाम रहा। इस क्रम में जमायते उल्माए हिन्द का जिला संयोजक एवं मुस्लिम लीग तथा इयारत सरैया का प्रचारक रहा। इस तरह अनेक इस्लामी संस्थाओं का कार्यकर्ता रहा, लेकिन इन कार्यों ने मेरे अध्ययन को नहीं रोका मैं सनातन वैदिक धर्म का अध्ययन एवं मनन करता रहा। फलतः मुझे यकीन हो गया कि मुझे जिस जगह पर रहना चाहिये वह बेहतर जगह सनातन वैदिक धर्म ही है। यही यकीन वह कारण था जिससे मैं अपने पुराने घर वापिस आ गया।

मुहम्मद . मूर्ति पूजक हिन्दू

खुद मैंने मुहम्मद साहब की जिन्दगी पर भी चिन्तन एवं मनन के साथ अनु-संधान किया तो पाया कि मुहम्मद साहब का खानदान यहां तक कि उनके बाप-दादा (मूर्तिपूजक) हिन्दू ही थे। खुद मुहम्मद साहब ने भी हिन्दुत्व की सारी चीजों को तब्दील नहीं किया। हजरे अस्वत (काला पत्थर) मुहम्मद साहब के पहले जितना पूजनीय एवं पवित्र माना जाता था, मुहम्मद साहब के बाद भी उसकी वही प्रधानता रही। खाना-ए-काबा जो दुनिया में सबसे बड़ा मूर्ति पूजा का स्थान था, मुहम्मद साहब ने उसे भी नहीं बदला। सिर्फ एक निराकार खुदा पर यकीन रखने को कहा। इस तरह खाना-ए-काबा की इज्जत व अस्मत जो पहले थी, मुहम्मद साहब के नबुअत के बाद भी रही। उस काल की पूजा-पद्धति आज के हिन्दू धर्म से मिलती-जुलती ही थी।

हिन्दू धर्म के अध्ययन से मैं इस नतीजे पर पहुंचा कि हिन्दू कानून में सबको बराबरी का दर्जा दिया गया है। हिन्दुस्तान में हर पराई औरत अपनी मां-बहन या बेटी के समान है। दूसरे की दौलत मिट्टी के ढेले के समान है। कहा है—"मातृवत् परदारेषु पर द्रव्येषु लोष्ठवत्।" यहां यह भी कहा है कि दुनिया के सिर्फ समस्त इन्सानों को ही नहीं बल्कि प्राणिमात्र को मित्र समझना चाहिए यही एक अकेला धर्म है जहां दुनिया के हर मजहब, पंथ या समुदाय के लोगों की सुख-शान्ति हेतु निस्वार्थ भाव से ईश्वर-प्रार्थना की जाती है सर्वे भवन्तु सुखिन. सर्वे सन्तु निरामया, सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद् दुख भाग्भवेत्" मैंने अमली तौर पर भी देखा यह बात एक हद तक सत्य है जबकि इस्लाम ने व्यक्तिगत आराधना पर एवं घृणा तथा हिंसा पर बल दिया। जेहाद एवं जुल्म के लिये प्रेरणा देकर इन्सान को क्रूर बनाया।

बुखारी की जहालत :—

सनातन वैदिक धर्म (हिन्दू धर्म किसी एक व्यक्ति या एक समुदाय की न तो बात करता है और न उसके लिए है। यह सारी कौम के लोगों के लिए है, जबकि इस्लाम सिर्फ मुसलमानों की भलाई की बात करता है। इसकी जिन्दा मिसाल दिल्ली जामा मस्जिद के शाही इमाम अब्दुल्ला बुखारी हैं, जिन्होंने हाल ही में अपनी जहालत का नमूना पेश करते हुए यह साबित करने कोशिश की है कि हिन्दुओं का कोई धर्म या कानून नहीं है। शायद वह अपनी जहालत की आखिरी हद से गुजर गये।

मेरी समझ एवं अनुभव के अनुसार आमतौर पर मुसलमान इस्लाम एवं कौम से मुहब्बत करता है, मुल्क से नहीं, जबकि हिन्दूइज्म के पुजारी राष्ट्रवाद में विश्वास रखते हैं। जहां तक मुस्लिम कानून का ताल्लुक है यह तो कौमे-मुस्लिम सिर्फ अपने स्वार्थ की हद तक ही मानता है। तजुर्बा गवाह है कि मुद्दत से हिन्दुस्तान में मुसलमान मुस्लिम कानून पर अमल करते हैं, लेकिन क्या वजह है कि सिर्फ नागरिक अधिकार में ही वह मुस्लिम कानून चाहता है, आज तक फौजदारी में मुस्लिम कानून को क्यों नहीं माना? किसी मुस्लिम ने अपने आपको इस्लामी कानून के अनुसार उसी के मुआफिक हाथ काटने, संगसार करने (पत्थर से मारने) या कोड़ा खाने के लिये प्रस्तुत नहीं किया। ये बातें साफ कर देती हैं कि मुस्लिम निजी कानून सिर्फ स्वार्थ की सिद्धि के लिये है न कि किसी और न्याय के लिये।

बोध-कथा

सच्चे ऋषि की खोज !

एक राजा थे। नाम था जानश्रुति। उनकी तीन पीढ़िया जीवित थी। वह प्रसिद्ध दानी थे, उन्होंने यात्रियों के ठहरने और भोजन करने के लिए स्थान-स्थान पर धर्मशालाएं बनवा दी थी। उसका यश सर्वत्र फैल रहा था। एक बार कई साधु-संत राजा की स्तुति और गौरव-गाथा गा रहे थे, इतने में एक महात्मा ने कहा – एक सामान्य से राजा की तुम स्तुति कर रहे हो, उससे तो गाड़ी वाला रैक्व ऋषि ही अधिक ज्ञानी है। देखने में वह बड़ा सीधा-सादा है, परन्तु बड़े-बड़े ऋषि मुनि भी उसका लोहा मान लेते हैं। राजा ने अपने दूतों को आदेश दिया कि वे गाड़ीवान रैक्व ऋषि का पता लगाए। बड़े-बड़े नगरों और अट्टालिकाओं में उस ऋषि का पता न लगा। खाली हाथ लौटने पर राजा ने कहा— 'सच्चे महात्मा महलों और नगरों में नहीं मिलते, वे वृक्षों की छाया में, नदियों के तट पर या गुफाओं में मिलते हैं।' इस बार खोज करने पर एक बैलगाड़ी की छाया में अपनी काया को खुजाते हुए गाड़ीवान रैक्व ऋषि मिल गए। भारी प्रलोभनों और राज-शक्ति भी उसे राजा के यहां जाने के लिए प्रेरित नहीं कर सकी।

अन्त में राजा भारी धनधान्य, दक्षिणा, हजार गौएं और अपनी कन्या लेकर रैक्व मुनि के चरणों में पहुंचा और बोला - 'यह सब धन सम्पत्ति मैं भेंट कर रहा हूं। यह कन्या आपकी सेवा करेगी।'

मुनि बोले—'हे शूद्र, इन गौओं को लाया है, यह धन-सम्पत्ति लाया है, खैर, तू अपनी पुत्री भी लाया है, उसका सम्मान रखने के लिए मुझे तुम्हारी जिज्ञासा दूर करनी होगी।' उस गाड़ीवान मुनि ने राजा की ब्रह्म सम्बन्धी सभी जिज्ञासाओं का समाधान किया। मुनि न तो किसी राजा के दान का भिखारी था और न श्रेष्ठियों, व्यापारियों और जनता की सहायता का। उसका अपना अव-लम्बन गाड़ी थी, उसी की सहायता से वह अपना भरण-पोषण करता था और स्वावलम्बन के सहारे सच्चे तत्त्वचिन्तन में लीन रहता था! सम्भवतः इसीलिए वह अपने युग का वह सबसे लोकप्रिय तत्त्वचिन्तक बन गया।

—नरेन्द्र

सत्यार्थप्रकाश और टण्डन जी

—श्री रामगोपाल शालवाले प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

सिंध सरकार द्वारा सत्यार्थ प्रकाश पर रोक लगभग इन्हीं द्वितीय महायुद्ध के दिनों मे सिन्ध की मुस्लिम लीगी सरकार ने महर्षि दयानन्द के अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के चौदहवें सम्मुल्लास पर रोक लगाई थी। सिन्ध सरकार के इस आदेश के विरोध मे दैनिक हिन्दुस्तान (नई दिल्ली) का एक विशेषांक ३ दिसम्बर, सन् १९४४ को निकला। इसके सम्पादक श्री सत्यदेव विद्यालंकार ने श्री टण्डन जी को एक विशेष पत्र लिख कर उनका संदेश मांगा। श्री टण्डन जी का जो सन्देश प्रकाशित किया गया वह इस प्रकार है, 'वास्तव मे सिन्ध सरकार ने एक धार्मिक ग्रन्थ को जब्त करके बड़ी भूल की है, इस काम के लिए भारत रक्षा विधान का प्रयोग करना तो बडा ही अनैतिक है। 'सत्यार्थ-प्रकाश' बहुत वर्षों पूर्व लिखा गया था और वह समय आजकल के समय से भिन्न था। यदि मुझे किसी धार्मिक पुस्तक की आलोचना करनी होती तो विशेषकर ऐसी धार्मिक पुस्तक की जिसके अनुयायी मेरे निकट सम्बन्धी नही हैं तो मैं 'सत्यार्थ-प्रकाश' की शैली का प्रयोग न करता, परन्तु मैं यही बात कुछ अन्य धार्मिक पुस्तको के विषय मे कह सकता हू। ब्रिटिश शासन मे सभी प्रान्तीय सरकारो की यह नीति रही है कि किसी भी धार्मिक ग्रन्थ के साथ हस्तक्षेप न किया जाए। सिन्ध सरकार ने यह बुरा रास्ता दिखाया है। सिन्ध सरकार की इस नीति का दूसरे प्रान्तो पर बुरा असर पड़ेगा इसलिए अन्य धर्मग्रन्थो मे भी इसी प्रकार का हस्तक्षेप होने की सम्भावना है। मैं आशा करता हू कि भारतीय सरकार सब प्रकार के अन्तर्प्रान्तीय धार्मिक झगडो को देश मे बढने से रोकेगी।'

अन्याय का विरोध न करना कायरता

इसी सम्बन्ध मे टण्डन जी का दूसरा वक्तव्य लाहौर से प्रकाशित होने वाले दैनिक 'ट्रिब्यून' के ८ फरवरी सन् १९४५ के अक मे छपा था। उसके कुछ हिन्दी रूपान्तरित अश इस प्रकार हैं— 'कांग्रेस विधान सभा कांग्रेस दल ने इस धारा सभा मे सत्यार्थ प्रकाश पर लगी रोक के विरोध मे प्रस्तुत स्थगन प्रस्ताव का समर्थन करके एक डरपोक पने की नीति का प्रदर्शन किया हैं। किसी भी अन्याय का विरोध न करना कायरता है। सिन्ध सरकार ने अपनी इस नीति से अपना मुह काला किया है। जिस कारण से उसने 'सत्यार्थ प्रकाश' पर रोक लगायी है उसी कारण के अनुसार उसे कुरान शरीफ पर रोक लगानी चाहिए, क्योंकि उसमे गैर-मुसलमानो के विरुद्ध आपत्तिजनक भाषा का प्रयोग किया गया है।'

चर्खा छोडो बंदूक सम्भालो

जब मुस्लिम लीग ने सन् १९४६ मे देश में डायेक्ट एक्शन या खूनी साम्प्रदायिक दगे शुरू किये तब श्री टण्डन जी ने इस चुनौती को स्वीकार किया और कहा, 'अब चर्खा छोडकर बन्दूक उठाने का समय आ गया है।' दैनिक 'आज' के सम्पादक श्री पराडकर जी बाबूजी के इस आह्वान से बहुत प्रभावित हुए और इसके समर्थन मे उन्होने कई लेख लिखे।

आर्य जगत् समाचार

आर्यजन अजमेर में महर्षि निर्वाण शताब्दी सफल बनाएं

महर्षि के अप्रकाशित ग्रन्थों का प्रकाशन होगा : दिल्ली में अन्तर्राष्ट्रीय निर्वाण शताब्दी का आयोजन

दिल्ली में आर्यजनों की सभा, श्री शालवाले व स्वामी ओमानन्द जी का आह्वान

नई दिल्ली। देश भर के समस्त आर्यजनो को ही नही, प्रत्युत सभी राष्ट्रवादियो को एकजूट होकर आगामी वर्ष १९८३ मे दीपावली पर अजमेर नगर मे होने वाली महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी समारोह को सफल बनाने मे पूरा सहयोग देना चाहिए। महर्षि का निर्वाण अजमेर मे हुआ था, फलत अजमेर के प्रति आर्यों के हृदयो मे भावनात्मक आकर्षण होना ही चाहिए।' इन शब्दों मे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले ने २० जून के दिन आर्यसमाज करोल बाग, नई दिल्ली मे परोपकारिणी सभा, अजमेर के प्रधान स्वामी ओमानन्द सरस्वती की अध्यक्षता मे आयोजित दिल्ली के आर्यजनो को एक सभा को सम्बोधित किया।

श्री शालवाले ने कहा—निर्वाण शताब्दी के अवसर पर व्यापक प्रचार करने की दृष्टि से अजमेर शताब्दी के बाद दिसम्बर मास मे दिल्ली मे भी अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर निर्वाण शताब्दी आयोजित की जाएगी।

स्वामी ओमानन्द जी ने कहा—निर्वाण शताब्दी के अवसर अनेक रचनात्मक कार्यक्रम प्रस्तुत किए जाए गे, तथा महर्षि दयानन्द लिखित कई अप्रकाशित पुस्तकें प्रकाशित की जाए गी। भू. पू संसद सदस्य श्री शिवकुमार शास्त्री ने शताब्दी कार्यक्रम को सफल बनाने की अपील की। आर्य प्रादेशिक सभा के मन्त्री श्री रामनाथ सहगल ने निर्वाण शताब्दी मे लाखो की सख्या मे आर्य नर-नारियो को अजमेर पहुचने की प्रेरणा दी। उन्होने यह सूचना भी दी कि समारोह के प्रबन्ध के लिए दिल्ली से एक हजार आर्य युवा स्वयसेवक के रूप मे अजमेर पहुचेगे।

समारोह की सफलता के लिए सर्व श्री देशराज बहल, श्री मलिक, जैमिनी शास्त्री, गाजियाबाद के प्रो० रत्नसिंह आदि ने अपने विचार प्रकट किए।

५ व्यक्तियों का मुस्लिम परिवार हिन्दू धर्म में

ग्राम टिमरुवा खुर्द जिला-एटा मे इलाकेदारखा के परिवार के ५ व्यक्तियो ने वैदिक हिन्दू धर्म की दीक्षा ली और उन्हे क्षत्रिय जाति मे सम्मिलित किया गया। चाँदबेगम का नाम चन्द्रमुखी, कल्लोबेगम का नाम कलावती और राकेश उल्ला का नाम राकेश सिंह, मुन्नक् खाँ का नाम मोहन सिंह, शेर खाँ का नाम नरेश सिंह घोषित हुए। यह शुद्धि सस्कार शुद्धि सभा शाखा जामनगर जिला-एटा के तत्वावधान मे श्री ठाकुर सर्वजीत सिंह, ठा० सज्जनपाल सिंह, बाबू विद्यास्वरूप वर्मा, ठा० फतेह सिंह, ठा० अमर सिंह, ला० बाबूराम, ठा० नवाब सिंह, ठा० शेर सिंह आदि लगभग ५० व्यक्तियों की साक्षी मे हुआ। इस शुद्धि के सहभोज मे समीपस्थ २० गांवों के लगभग दो हजार आदमी एकत्र थे।

गुजरात में वेद-प्रचार के लिए निमन्त्रण

समस्त आर्य महोपदेशकों, भजनोपदेशको, सन्यासियों, महात्माओं, ब्रह्मचारियो को सूचित करते हुए हर्ष होता है, कि आप लोगों को ऋषि भूमि टंकारा अहमदाबाद आदि के लिए भ्रमणार्थ सैजपुर बोधा (अहमदाबाद) आर्यसमाज आमन्त्रित करता है। आप अपना १५ दिन का अमूल्य समय आर्यसमाज-सैजपुर बोधा, अहमदाबाद को दीजिए और आने-जाने के टिकट एवं दक्षिणा के रूप मे २००) की राशि लीजिए। इसके लिए सभी आमन्त्रित हैं। निम्न पते से व्यवहार करें।

—आर्यसमाज सैजपुर बोधा,
अहमदाबाद, ३८२३४५

दयानन्द चिकित्सालय का उद्घाटन

आर्यसमाज दीवान हाल द्वारा संचालित 'दयानन्द चिकित्सालय' का उद्घाटन दिनांक ११-७-८१ को प्रातः १० बजे श्री प्रो० वेदव्यास जी प्रधान जी डी० ए० वी मैनेजिंग कमेटी द्वारा किया गया। चिकित्सालय के अन्तर्गत दो विभाग खोले गए हैं। एक नेत्र चिकित्सालय तथा दूसरा होम्योपैथिक, डा० विवेकपाल एम० बी० बी० एस० नेत्रों के रोगियों को, बुधवार, शुक्रवार, रविवार को प्रातः ७-३० से ८-३० बजे देखा करेंगे। डा० देवेन्द्रदत्त द्विवेदी, सोमवार, मगलवार, बृहस्पतिवार, शनिवार को प्रात ८-३० से १० बजे तक होम्योपैथिक इलाज करेंगे।

अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक विद्यालय

टंकारा। महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट टंकारा द्वारा सचालित अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय का नया सत्र १ जुलाई से प्रारम्भ हो गया है। महाशिवरात्रि के दिन स्नातक बने उपदेशक पुरोहित अपने क्षेत्रो मे पहुच कर कुशलता से कार्य कर रहे हैं। यहाँ विद्यार्थियों के लिए भोजन, वस्त्र, आवास, अन्य आवश्यक सुविधाएं प्राप्त हैं। यहा वेद, उपनिषद्, दर्शन शास्त्र के अतिरिक्त अंग्रेजी सामान्य ज्ञान का अध्ययन कराया जाता है। संस्था का उद्देश्य आर्यजगत् के लिए सुशिक्षित उपदेशक, पुरोहित व पत्रकार बनाना है।

आर्यसमाज नरेला का वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज नरेला का ५२ वां वार्षिकोत्सव १०-११ जुलाई को बड़ी धूम-धाम से सम्पन्न हुआ। उत्सव का प्रारम्भ नगर कीर्तन से हुआ। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले की अध्यक्षता मे धर्मरक्षा-महाभियान सम्मेलन हुआ। नशाबन्दी सम्मेलन स्वामी ओमप्रकाश सरस्वती की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ। प्रिंसिपल श्री मेहरलाल पवार की अध्यक्षता में आयोजित युवक समाज सुधार सम्मेलन के मुख्य अतिथि स्वामी रामेश्वरानन्द ने युवकों का मार्गदर्शन किया। चौ० बेगराज जी और प० चुन्नीलाल के भजनों ने समां बांध दिया।

दिल्ली सभा के प्रतिनिधियों की सूची ····· (पृष्ठ १ का शेष

बाकनेर श्री मांगेराम आर्य, श्री मेहरलाल पवार, आर्यसमाज ग्रीनपार्क—श्री बलवीरसिंह सूद, श्री विद्यामित्र ठुकराल, श्री हरीन्द्र थापर, श्री गुरुबख्शसिंह, डा० गिरधारीलाल, आर्यसमाज तिमारपुर—श्री भीमसिंह, श्री रामेश्वरदास, श्री सुभाषचन्द्र सूद, श्री विमलकान्त शर्मा, आर्यसमाज पाण्डव नगर—श्री विद्यासागर श्री हरिदत्त वेदालंकार, श्री दुर्गादास, श्रीमती तारावन्ती, आर्यसमाज गोविन्द भवन—श्री रामलुभाया चावला श्री मुन्शीराम; आर्यसमाज नया बास - प० सत्यदेव विद्यालंकार, प० क्षितीशकुमार, ला० प्रेमचन्द गोयल, श्री नन्दकिशोर, श्री रामचन्द्र वर्मा, श्री ओमप्रकाश कपडे वाले, श्री शिवकुमार, आर्यसमाज आनन्द विहार (एल ब्लाक)—श्री शान्तिप्रकाश नारग, श्री कस्तूरीलाल मल्होत्रा, श्री ईशकुमार नारग, आर्यसमाज होम खास - श्री नरेन्द्र विद्यावाचस्पति श्री बनवारीलाल गुप्ता, श्रीमती सीतादेवी; आर्यसमाज कृष्णनगर—डा० जगन्नाथ, मा० मनोहरलाल, श्री कृष्णलाल चोपडा, श्री दीवानचन्द्र गुप्त, मा० ओमप्रकाश आर्य, श्री चमनलाल कपूर; आर्यसमाज ग्रेटर कैलाश-२—श्री रघुनन्दन गुप्ता, श्री पृथ्वीराज अबरोल श्री आर एल. मल्होत्रा, आर्यसमाज साउथ एक्सटेंशन (२) श्री बलवन्तराय खन्ना, आर्यसमाज चूना मण्डी-पहाडगंज—श्री शामदास सचदेव, श्री प्रियतमदास रतन, श्री राजभरत मनोचा, श्री चन्द्रप्रकाश कपूर, श्री लक्ष्मणदास कालड़ा, आर्यसमाज नवीन कृष्णनगर - प्रि० वीरभान, श्री जगदीश नागपाल, श्री बलदेवराज, श्री विजय गुप्ता, आर्यसमाज सदर बाजार—वैद्य प्रहलाददत्त, श्री किशोरीलाल, प्रि० चन्द्रदेव, श्री भीमसिंह, आर्यसमाज हनुमान रोड—श्री सरदारीलाल वर्मा, श्री राममूर्ति कैला, श्री रतनलाल सहदेव, श्री खैरातीलाल, श्री [illegible], श्री हरवंशलाल बहल, श्री प्राणनाथ घई; श्री शान्तिनाथ भल्ला, श्री विजयकुमार बहल, श्री त्रिलोकीनारायण, आर्यसमाज राणा प्रताप बाग—श्री राधाकृष्ण गांधी, श्री जसवन्तराय, आर्यसमाज प्रताप नगर—श्री भजनप्रकाश, श्री लाजपतराय, श्री दयालमल, आर्यसमाज नारायण विहार— श्री दीनानाथ गुप्ता, श्री सत्यभानु गोयल, श्री बी आई. आनन्द, श्री अमरनाथ बघई, आर्यसमाज [illegible]—श्री [illegible] गुप्त, श्री प्रेमनाथ चड्ढा, (अपूर्ण)

आर्यसमाजों के सत्संग

२५ जुलाई ८२

अन्धा मुगल प्रताप नगर—स्वामी सच्चिदानन्द, अमर कालोनी—मास्टर ओमप्रकाश आर्य' अशोक विहार के सी ५२ ए—स्वामी विश्वदेवानन्द, आर के पुरम सेक्टर ५—प० ओमवीर शास्त्री, आर के पुरम सेक्टर ६—प० तुलसीराम भजनोपदेशक, आर के पुरम सेक्टर ९—प० परमेश शर्मा, आनन्द विहार हरि नगर एल ब्लाक—श्रीमती सुशीला राजपाल, किशनगज मिल एरिया—प० देवराज वैदिक मिशनरी, किंग्जवे कैम्प—प० हरिदत्त शास्त्री, कालकाजी—प० हरिश्चन्द्र आर्य, करौल बाग—प० वेदपाल शास्त्री, कृष्ण नगर—श्रीमती उषा शास्त्री, गांधी नगर—प० प्रकाशचन्द्र शास्त्री, ग्रेटर कैलाश I—प्रो० वीरपाल विद्यालकार, ग्रेटर कैलाश II—वैद्य रामकिशोर गुड मण्डी—प० चनीलाल भजनोपदेशक, गुप्ता कालोनी—प० रामनिवास, गोविन्द भवन—प० वेदपाल शास्त्री, हरि नगर, चूना मण्डी पहाडगज—प० प्रेमचन्द श्रीधर, जगपुरा भोगल—प० कामेश्वर शास्त्री, जनकपुरी बी ३/२४ श्रीमती प्रकाशवती शास्त्री, डिफेन्स कालोनी—डा० रघुनन्दनसिंह, तिलक नगर प० ओम्प्रकाश गायक, तिमारपुर—प० जयभगवान भजन मण्डली, दरियागज—प० प्राणनाथ सिद्धातालकार, नारायण विहार—प० खुशीराम शर्मा, नया बांस—आचार्य नरेन्द्र शास्त्री नगर शाहदरा—प० मुनिशकर वानप्रस्थ, पजाबी बाग प० देवेश, पजाबी बाग एक्सटेंशन—डा० रघुवीर वेदालकार, प्रीतमपुरा—प० दिनेशचन्द्र पराशर शास्त्री, बाग कडे खाँ—प० बख्तराम भजनोपदेशक, बिरला लाइंस—प० हरिश्चन्द्र शास्त्री मोडल बस्ती—प० विश्वप्रकाश शास्त्री, मोती बाग—प० वेदव्यास भजनोपदेशक, रघुवीर नगर—श्री मोहनलाल गांधी, रमेश नगर—प० सोमदेव शास्त्री, राणा प्रताप बाग—प० भगवान सहाय विद्यावाचस्पति, राजोरी गार्डन—प्रो० सत्यपाल बेदार, राजा गार्डन—प० सत्यपाल मधुर भजनोपदेशक, रोहतास नगर—प० छविकृष्ण शास्त्री लड्डू घाटी पहाडगज—प० रघुराज शास्त्री लाजपत नगर—आचार्य हरदेव सि० भू० लेखराम नगर—त्रिनगर—प० रामरूप शर्मा, लारेन्स रोड—प० सीताराम भजनोपदेशक, विक्रम नगर—प० प्रकाशचन्द वेदालकार, विनय नगर—प० मनोहरलाल ऋषि भजनोपदेशक, सदर बाजार-पहाडी धीरज—प० गणेश प्रसाद विद्यालकार, साकेत—श्रीमती लीलावती आर्या, सुदर्शन पार्क—प्रो० भारत मित्र शास्त्री, सराय रोहेला—प० आत्मानन्द भजनोपदेशक, सोहनगज—प० ईश्वरदत्त, शालीमार बाग—डा० सुखदयाल भूटानी, हनुमान रोड प० सच्चिदानन्द शास्त्री, हौज खास डी २०—प० अशोक कुमार विद्यालकार, मोडल टाउन प० रविदत्त गौतम।

—ज्ञानचन्द डोगरा वेद प्रचार प्रबन्धक

युवा तोड़-फोड छोड़ें . निर्माणात्मक कार्य करें

आर्य युवा पश्चिम की नकल न करें आर्य नेताओं का उद्बोधन

नई दिल्ली। 'युवक तोड फोड की अपेक्षा निर्माणात्मक कार्य करें। खेद है कि आज का युवक पाश्चात्य वातावरण का अन्धा अनुकरण करते हुए दहेज और अंग्रेजी के मोह मे पड गया है, आवश्यकता है आज के युवक सामाजिक कुरीतिया छोड़कर समाज मे क्रान्ति कर'—इन शब्दो मे सार्वदेशिक आर्यवीर दल के उप प्रधान सचालक डा० देवव्रत आचार्य ने आर्ययुवको का उद्बोधन किया।

१८ जुलाई के दिन आर्यसमाज मन्दिर मार्ग में आर्य प्रादेशिक सभा के महामन्त्री श्री रामनाथ सहगल की अध्यक्षता में केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् का वार्षिकोत्सव हुआ। श्री श्यामसुन्दर आर्य ने भारतीय सस्कृति पर होने वाले विदेशी आक्रमणों का तीव्र प्रतिरोध करने पर जोर दिया। इस अवसर पर स्वामी जगदीश्वरानन्द, ब्र० रामसिंह आर्य श्री गुलाबसिंह राघव, श्री क्षितीश वेदालकार आदि ने भी विचार प्रकट किए।

आर्यसमाजों के नए पदाधिकारी

आर्यसमाज महावीरनगर, नई दिल्ली १८। प्रधान—श्री यशपाल मल्होत्रा उपप्रधान—श्री ज० र० चन्दना, मन्त्री—श्री सत्यदेव, उपमन्त्री श्री जे० एस० हूण्डा, कोषाध्यक्ष—श्री बिशनदास।

आर्यसमाज लेखरामनगर त्रिनगर दिल्ली ३५। प्रधान—श्री सुमेरचन्द्र आर्य, उपप्रधान—श्री खुशीराम श्री दौलतराम साबुन वाले, मन्त्री—महाशय सोहनलाल शर्मा, उपमन्त्री—बाबू ओमप्रकाश कोषाध्यक्ष—श्री सम्पतप्रसाद।

आर्यसमाज सावली आदि पचपुरी गढ़वाल, यमुना विहार (पूर्व सूचना १३ जून म छप चुकी है) उसमे दो सशोधन हैं, उपमन्त्री श्री विश्वबन्धु भास्कर, कोषाध्यक्ष—श्री अमरदत्त आर्य।

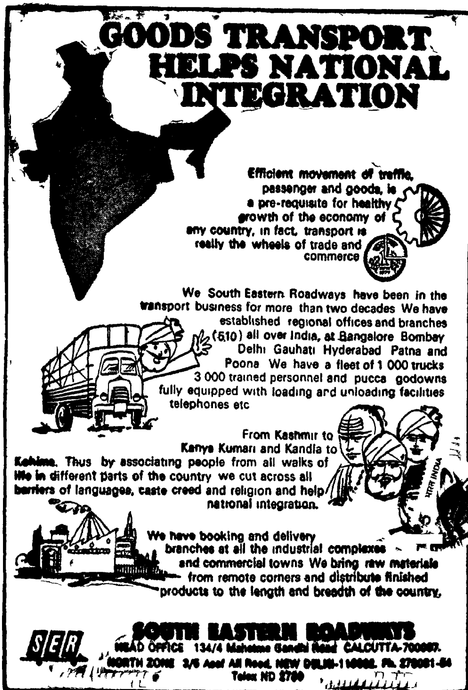
आर्यसमाज ग्रीन पार्क—प्रधान श्री विश्वामित्र ठुकराल उपप्रधान—ला० इन्द्रनारायण जी श्री बलराम आर्य मन्त्री—श्री बलवीरसिंह सूद, उपमन्त्री—श्री ब्रह्मदत्त सहगल प्रचार मन्त्री—श्री हरिश्चन्द्र थापर, कोषाध्यक्ष—श्री के एल कोहली पुस्तकाध्यक्ष—श्री राजपाल चोपडा।

आर्यसमाज झण्डे वालान एक्सटेंशन। प्रधान—श्री अशोक कुमार सलूजा, उपप्रधान—श्रीमती सुभद्रादेवी आर्य मन्त्रिणी—श्रीमती कृष्णादेवी रसबत्त उपमन्त्रिणी—श्रीमती राज आर्य कोषाध्यक्ष—श्री आर्यवीर आर्य, प्रधाना (महिला सभा) श्रीमती उषाकिरण सलूजा, अधिष्ठाता आर्य वीर दल—श्री आर्य मित्र आर्य निरीक्षक डा० तिलकराज सचदेव।

आर्यसमाज लाजपत नगर, नई दिल्ली। प्रधान श्री कृष्णलाल सूरी, उपप्रधान—श्री देवीदास सूरी श्री जयदेव आर्य मन्त्री—श्री पुरषोत्तमलाल शास्त्री उपमन्त्री—श्री सोमनाथ श्री सतपाल सूरी कोषाध्यक्ष—श्री बालकृष्ण पिपलानी पुस्तकाध्यक्ष—श्री अशोक बहल।

आर्यसमाज मन्दिर की भूमि सरकार लौटाए

भोपाल मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा ने एक विशेष अधिवेशन मे चोमा तहसील शाजापुर मे आर्यसमाज की यज्ञवेदी एव समाज मन्दिर का मध्यप्रदेश शासन द्वारा किए गए गैरकानूनी अधिग्रहण पर रोष प्रकट कर आर्यसमाज मन्दिर की भूमि समाज को लौटाने की माग की है।



दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रकाशन

सत्यार्थप्रकाश सन्देश (हिन्दी)	१ ००
अंग्रेजी समाप्त	
आर्य सन्देश महासम्मेलन विशेषांक	० ६०
पादरी भाग गया— ओम्प्रकाश त्यागी	० ३०
स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान अर्द्ध शताब्दी स्मारिका	६ ००
सत्यार्थप्रकाश शताब्दी समारोह स्मारिका	६ ००

सम्पर्क करें—
अधिष्ठाता प्रकाशन विभाग
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
हनुमान रोड, नई दिल्ली ११०००१

卐 आर्य मर्यादा देश के स्वयं ग्राहक बनें दूसरों को बनाएं
卐 आर्यसमाज के सदस्य स्वयं बनें— दूसरों को बनाइए
卐 हिन्दी संस्कृत भाषा स्वयं दूसरों को भी पढ़ाइए

उत्तम स्वास्थ्य के लिए गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी, हरिद्वार की औषधियाँ सेवन करें



शाखा कार्यालय ६३ गली राजा केदारनाथ,
फोन नं० २६६८३८ चावड़ी बाजार, दिल्ली-६

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए श्री सरदारी लाल वर्मा द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा भाटिया प्रेस २५७४ रघुबरपुरा नं० २ गांधी नगर दिल्ली ३१ में मुद्रित कार्यालय १५ हनुमान रोड नई दिल्ली फोन ३१०१५०।

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक मुखपत्र

वेद प्रचार सप्ताह के अवसर पर

एक प्रति ३५ पैसे   वार्षिक १५ रुपये   वर्ष ६   अंक ४०   रविवार १ अगस्त   १७ श्रावण वि० २०३९   दयानन्दाब्द—१५८

वेदों का सन्देश : जीवन का सन्देश

वैदिक भारतीय हिन्दू धर्म का आधार है—वेद। वेद का अर्थ है—ज्ञान। वेद को श्रुति भी कहते हैं। वेद चार हैं ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद। वेदों मे धर्म का सच्चा रास्ता दिखलाया गया है। वैदिक ऋषियो की मान्यता थी कि एक ही ब्रह्म सारे विश्व मे ही नही, सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड मे व्याप्त है, वह अजर-अमर है।

वेदों मे धर्म के पालन पर, सदाचार पर, पाप से बचने पर बल दिया ही गया है। वैदिक ऋषि चाहते थे कि मानव ठीक ढग से विकसित हो, वह जीवन का-प्रकृति का पूरा-पूरा आनन्द ले। हमारे चारों ओर आनन्द का साम्राज्य है, हमे उसका भरपूर आनन्द उठाना चाहिए। हम प्रसन्न रहे, हम सौ वर्ष तक जीए, हमारा शरीर स्वस्थ हो, हमारा मन स्वस्थ रहे, हमारी वाणी पवित्र रहे, हम सबके साथ मिल-जुलकर प्रेममय जीवन व्यतीत करे।

वैदिक ऋषि मानते थे—हम श्रम करे, खेती करे, पसीने की कमाई का उपयोग करें, जुए और व्यसनो से दूर रहे, बुराइयो से मुक्त रहे, न हम चोरी करें, न सग्रह, दूसरो को बांटकर खायें।

वेदो में मिल-जुलकर रहने पर जोर दिया गया है। हम दूसरो के साथ सहयोग करे, सबसे मैत्री रखे, एक दूसरे की सहायता करे, सब की सेवा करें, सुखी समाज बनाने की चेष्टा करें। वेदो मे जीवन का सारा शास्त्र भरा पडा है। उसमे आत्मा और परमात्मा का वर्णन ही नही है, धर्म यज्ञ की ही बात नही है, आनन्दमय जीवन बिताने की भी प्रेरणा है।

हम प्रेममय, आनन्दमय और पवित्र जीवन बिताते हुए भगवान को समझे, घट-घट मे उसके दर्शन करे, और सत् चित आनन्द की ओर बढे—यही है हमारे लिए वेदो का सन्देश।

बच्चों के चरित्र-निर्माण पर बल

नई दिल्ली। भारत के मुख्य न्यायाधीश श्री यशवन्त विष्णु चन्द्रचूड ने बृहस्पतिवार २२ जुलाई के दिन दिल्ली के प्राथमिक शिक्षको से अनुरोध किया कि वे बच्चों के चरित्र-निर्माण पर बल दें। 'मानव मूल्यो मे शिक्षा' विषयक शिक्षको की गोष्ठी मे समापन भाषण देते हुए वक्ता ने कहा—"राजनीति की तरह शिक्षा में भी चरित्र-निर्माण की जरूरत है, इसके लिए शिक्षको को स्वय उदाहरण पेश करना होगा हमें स्वीकार करना होगा कि विद्यालयो एव स्कूलों मे धार्मिक शिक्षा न देने का परिणाम अच्छा नही रहा है।"

श्री अमर स्वामी जी सख्त बीमार

गाजियाबाद। आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार के लिए अपना सम्पूर्ण जीवन समर्पित करने वाले एव शास्त्रार्थ महारथी श्री अमर स्वामी जी महाराज इन दिनो बहुत सख्त बीमार हैं। उनका चलना-फिरना-बोलना बहुत कम हो गया है। शारीरिक पीड़ा से पड़े-पडे कराहते रहते हैं। स्थिति बडी गम्भीर एव चिन्ताजनक है। औषधोपचार की कोई ठीक व्यवस्था नहीं है। स्वामी जी आर्यसमाज की दिव्य विभूति है। इस सकट काल उनकी तन-मन धन से सहायता करने के लिए अमर स्वामी प्रकाशन विभाग, दयानन्द नगर, गाजियाबाद (उ० प्र०) २०१००९ से सम्पर्क करें।

आर्यभाषा हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने के महर्षि दयानन्द के स्वप्न को साकार करने वाले

राजर्षि पुरुषोतम दास टण्डन की जन्म शताब्दी में भारी संख्या में सम्मिलित हों

सभा प्रधान श्री सरदारीलाल वर्मा का दिल्ली की आर्यसमाजों को आह्वान

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान मान्य ला० रामगोपाल शालवाले वानप्रस्थ ने डाक परिपत्र द्वारा दिल्ली की सभी आर्यसमाजो एव आर्य शिक्षण सस्थाओ से अनुरोध किया है कि शनिवार ३१ जुलाई १९८२ को राजर्षि पुरुषोत्तम दास टन्डन के जन्मशताब्दी आयोजन मे मे उत्साहपूर्वक सम्मिलित हो। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आर्य भाषा हिन्दी को भारत की भावी राष्ट्र भाषा के रूप मे अपनाये जाने का स्वपन लिया था। जिसे महात्मा टण्डन जी ने बडे सघर्ष एव प्रयत्न के पश्चात भारत के सविधान मे राष्ट्र भाषा के रूप मे स्थान दिलवाया था। ऐसे महान आत्मा के जन्म शताब्दी समारोह मे महर्षि के प्रत्येक अनुयाई को उत्साह पूर्वक सम्मिलित होकर अपना कर्तव्य पालन करना चाहिए।

अत दिल्ली की समस्त आर्यसमाजो एव आर्य शिक्षण सस्थाओ के अधिकारियों से अनुरोध है कि ३१ जुलाई १९८२ को साय ४-३० बजे लालकिला से इस उपलक्ष मे निकलने वाली भव्य शोभा यात्रा मे भाग लेने के लिये यज्ञशाला के साथ ओ३म्ध्वज हाथो मे लिये भारी सख्या मे सम्मिलित हो।

देश में सब नागरिकों पर समान कानून हो

भेदभाव से राष्ट्रीय एकता को खतरा : श्री परुलेकर

नई दिल्ली। १६ जुलाई के दिन लोक सभा मे अन्तर्राष्ट्रीय एव अन्तर धार्मिक विवाहों के प्रोत्साहन देने सम्बन्धी एक विधेयक पर भाषण करते हुए ससद सदस्य श्री बापू साहेब परुलेकर ने देश भर के समस्त नागरिको के लिए समान नागरिक सहिता और एक समान कानून लागू करने की माग की है।

वक्ता ने कहा—यदि हम देश की एकता और अखण्डता चाहते हैं तो यह आवश्यक है कि सभी देशवासियों पर एक समान नागर सहिता लागू की जाए। समाज सुधार की दृष्टि से सरकार ने नए विधेयक लाकर हिन्दुओ के व्यक्तिगत नियमो और परम्पराओ मे व्यापक सशोधन किए हैं, यह उचित ही है, परन्तु ये नियम और कानून सभी देशवासियों पर धर्म और सम्प्रदाय का भेदभाव किए बिना लागू किए जाने चाहिएं।

श्री परुलेकर ने कहा—भारत मे हिन्दुओ, मुसलमानों और ईसाइयो के व्यक्तिगत कानूनों मे बड़ी विभिन्नता, विचित्रता और बेहूदापन है। ईसाई कानून के अनुसार पुरुष अपनी पत्नी को पर पुरुष के साथ सम्बन्ध के आरोप मे तलाक दे सकता है, परन्तु स्त्री पति के परस्त्रीगामी होने पर तलाक नही दे सकती। इसी प्रकार मुसलमान किसी कारण के बिना तलाक की तीन बार घोषणा कर सम्बन्ध-विच्छेद कर सकता है, मुसलमान स्त्रियो को तलाक का ऐसा अधिकार नही है।

श्री परुलेकर ने माग की है कि देश की एकता और अखण्डता की सुरक्षा के लिए देश मे समान नागर सहिता और समान कानून लागू होना चाहिए, उसे हिन्दुओ की तरह मुसलमानो और ईसाइयो आदि पर लागू करना चाहिए।

सम्पादक—नरेन्द्र विद्यावाचस्पति

व्यवस्थापक—प्रद्युम्नलाल तलवाड़

वेद-मनन

दम्भियों को भस्म कर दे

—मनोहर विद्यालंकार

योऽस्मभ्यमरातीयाद्यश्च नो द्वेषते जन ।
निन्दाद्योऽस्मान् धिप्साच्च सर्वं त भस्मसा कुरु ॥ यजु ११-८०

ऋषि —नाभानेदिष्ठ । देवता—अध्यापक उपदेशको वा । छन्द.—अनुष्टुप ।

शब्दार्थ—(य) जो व्यक्ति (अस्मभ्यम् अरातीयात् अग्निश्च) हमारे अधिकार का हनन करता है, (य च) और जो (जन) मनुष्य (न द्वेषते) ईर्ष्या के कारण हमारे कार्यो मे व्याघात पहुचाता है (य निन्दात्) जो हमारी निन्दा या दुर्जनतापूर्ण व्यवहार करता है (च) और जो (अस्मान्) हमे या हमारे प्रशमको और सहायको को (धिप्सात्) कपटपूर्ण व्यवहार से ठगने का प्रयत्न करता है (सर्व तम्) उन सबको, हे मार्गदर्शक अग्ने अर्थात् अध्यापक या उपदेशक (भस्मसा कुरु) भस्म कर दे—दोषारोपित कर दे । अथवा (भस्मसा कुरु) स्थानान्तरित कर दे या नष्ट कर दे ।

निष्कर्ष—शत्रु चार प्रकार के होते है, उन सब को ही रूपान्तरित या स्थानान्तरित करने की प्रार्थना की गई है, जिससे वे कुछ बिगाड न कर सके ।

(क) दातव्यत्वेन प्राप्त धन यो न ददाति सोऽराति. प्राप्तव्य धन या अधिकार से वचित करने वाला 'अराति' कहाता है ।

(ख) कार्यविघातको द्वेपी । ईर्ष्या के कारण कार्यों मे व्याघात पहुचाने वाला द्वेपी कहलाता है ।

(ग) यो वागंत्रेण दौर्जन्य प्रकाशयति सो निन्दक । जो व्यर्थ निन्दा करता है । सच्ची निन्दा तो स्तुति कहाती है ।

(घ) लोकवचनाय विहितकर्मानुष्ठान दम्भ । जो मन से न करके, केवल दिखावे के लिए धर्मानुष्ठान द्वारा प्रतिष्ठा प्राप्त करके दूसरो को नीचा दिखाना चाहता है, वह दम्भी कहलाता है । दम्भी प्राय जिघासु होते हैं ।

विशेष""ऋषि नाम का शब्दार्थ सकेत करता है कि शरीर के केन्द्र नाभि के समान ब्रह्माण्ड का केन्द्र होने से परमात्मा नाभि है, उसके निकटतम अर्थात् गुणो मे तत्सदृश व्यक्ति ही मार्ग दर्शक अग्नि अच्छा उपदेशक और अध्यापक बन सकता है ।

जैसे चक्की की नाभि के निकट रहने वाला अन्न का दाना नही पिसता, वैसे ही परमेश्वर के निकट रहने वाला अर्थात् उसके गुणो का अनुकरण करने वाला भी सासारिक द्वन्द्वो मे नही पिसता ।

इस मन्त्र के छन्द का शब्दार्थ सकेत करता है कि 'नाभानेदिष्ठ' बनने का सरल उपाय है ''परमात्मा के गुणो का अनुकरण करते हुए अपने दोषो का विरोध तथा आने वाले नए दोषो का अवरोध (रोकना) करना ।

अर्थपोषकप्रमाण 'दम्भितुमिच्छेन् । दम्भु दम्भने । अरातीयात्—अरातिरिवाचरेत् । द्वेषते—द्विष्—अप्रीतौ । निन्दात् —निदि कुत्सायाम् दोष लगाना । नाभानेदिष्ठ: नाभा (नाभि) + नेदिष्ठ (अतिशयेन अन्तिक —इष्ठन् प्रत्यय) अनुष्टुप्'''अनु (अनुकरण करते हुए) + स्तुप् (स्तुभु स्तम्भे = अवरोध करना) भस्मसा कुरु'''भस भर्त्सने, भर्त्सनम् = दोष लगाना । स्भमसा कुरु 'भसी परिणामे = रूपान्तरित करना । मष् हिंसार्थ''''मार डालना । स्तुति + गुणदोषानुकीर्तनम् । स्वामी दयानन्द ।

५२२, ईश्वर भवन, खारी बावडी, दिल्ली-११०००६

एक निराकार परमात्मा की भक्ति

जो परमात्मा को छोडकर या उसके स्थान मे दूसरे की पूजा करता है, उसकी और उस देश भर की दुर्दशा अत्यन्त होती है, यह बात प्रसिद्ध है । इससे चेतो मनुष्यो ! जो तुम्हे सुख की इच्छा हो, तो एक निराकार परमात्मा की यथावत् भक्ति करो । अन्यथा तुम्हे कभी सुख न होगा ।

'''महर्षि दयानन्द सरस्वती ('आर्याभिविनय' मे)

प्रेषक—प० धर्मेन्द्र मौर्य। ओंकार कुंज खारीबाव मार्ग, बडोदरा-३९०००१

वेद की महत्ता

—ले० पं० वीरसेन वेदश्रमी, वेदविज्ञानाचार्य

वेदश्चक्षु सनातनम् ' – जब-जब सृष्टि होती है और मानवोत्पत्ति होती है तब-तब सदा वेद प्रकट होते हैं । उनके ही माध्यम से ज्ञान-विज्ञान का प्रसार मानव जाति मे होता है । अत वेदश्चक्षु सनातनम् यह वाक्य सार्थक है । वेद मानव जाति का सनातन चक्षु है । चक्षु दर्शन का साधन है अत. वेद के माध्यम से हमे सृष्टि के पदार्थों का बोध तथा उसके गुणो का बोध होता है । सूर्य, अग्नि, पृथ्वी, जल, वायु, आकाश आदि दृष्ट पदार्थ दृष्ट होते हुए भी अपने विशिष्ट गुणो या अदृष्ट गुणो के कारण अदृष्ट रूप मे भी हैं । वेद दृष्ट एव अदृष्ट दोनो का बोध कराता है । आत्मा और परमात्मा का भी बोध कराता है ।

अग्नि पदार्थ दृष्ट है, परन्तु अदृष्ट रूप से अग्नि तत्त्व सूक्ष्म है और व्यापक भी है । पृथ्वी पदार्थ यद्यपि दृष्ट है, परन्तु पृथ्वी के ऊपर के पर्यावरण मे पृथ्वी के सूक्ष्म मण्डल के रूप मे विद्यमान है । अग्नि की व्यापकता का बोध उसके जातवेदा नाम से वेद ने प्रकट किया । वेद मे कहा - अग्नि रस्मि जन्मना जातवेदा [ऋ० ३।२६।७१] अग्नि जन्म से ही, स्वभाव से ही सदा सब उत्पन्न पदार्थों मे विद्यमान । है इसी प्रकार अन्य पदार्थों की भी व्याप्ति है । निश्चयात्मक रूप से यह ज्ञान वेद देता है । **मन्त्र माध्यम से अदृष्ट का दर्शन** —स्थूल पदार्थ दृष्यमान है । उनका ही सूक्ष्म भाग और सूक्ष्मतर भाग अदृष्ट रूप मे व्यापक रहता है । अदृष्ट पदार्थ या तत्वो का दर्शक वेद ही है । मन्त्र माध्यम से उनका ज्ञान एव दर्शन होता है अत: वेद हमारे लिये दृष्टादृष्ट तत्वो के ज्ञान के लिये परम सहायक है । ज्ञान के बिना जीव का जीवन व्यर्थ है । अर्थात् जीव को ज्ञान की वेद-की-सदा ही आवश्यकता है । वेद ही वास्तविक रूप से ज्ञान देने वाला है ।

मनुष्य को जो ज्ञान प्राप्त होता है वह सत्य है या असत्य है इसका निश्चायक वेद ही है । अत वेद विरुद्ध ज्ञान, असत्य होने से त्याज्य ही है । इसीलिये वेद सब सत्य विद्याओ की पुस्तक है यह घोषणा आर्य समाज की है । सत्य विद्या की पुस्तक होने से इसको पढ़ना भी आवश्यक है—इतना आवश्यक कि —उसका पढना, पढ़ाना और सुनना—सुनाना भी परम धर्म रूप से आवश्यक है—यह घोषणा भी आर्य समाज को मान्य करनी पडी ।

वर्तमान मे भी वेद की महती उपयोगिता—

आज का समय उपयोगितावाद से प्रभावित है । शास्त्रीय उपयोगिता के साथ व्यावहारिक उपयोगिता की प्राथमिकता है । सृष्टि प्रारम्भ से ही ऋषि-मुनियो ने वेद की व्यावहारिक उपयोगिता को भी घोषणा की और कहा—

प्रत्यक्षे नातुनुमित्या वा यस्तूपायो न बुद्धयते ।
एन वदति वेदेन तस्माद्वेदस्य वेदता ॥

हमारे जीवन व्यवहार के सचालन मे प्रत्यक्ष या अनुमान से भी जब कोई उपाय सफलता का दृष्टिगोचर नही होता उस अवस्था मे वेद ही जो मार्ग या उपाय बताता है उसके द्वारा हमारी कामना ही पूर्ति होती है यही वेद की महान वेदता है, वैशिष्ट्य है, महत्ता है । अत जीवन तथा व्यवहार वेद के अनुसार करने मे ही सफलता है । इसी को ध्यान मे रखते हुए ऋषियो ने कहा—

यं य कामयते काम त वेदेन स्तधयेत् ।
असाध्यो नास्ति यत्किंचित् ब्रह्मणो हि फल महत् ॥

मनुष्य जिस-जिस कामना—कार्य की इच्छा करे, उस-उस को वेदो द्वारा ही सिद्ध करे । वेद के द्वारा कामना की सिद्धि अवश्य होती है । असाध्य कुछ नही है । वेद का फल महान् है । इस प्रकार वेदो की महत्ता व्यवहार कार्य के लिये भी अमोघ अस्त्र के रूप मे है ।

श्रावणी पर्व की महत्ता एव वेद का श्रवण एव स्वाध्याय

श्रावणी पर्व का सम्बन्ध वेद मे है । अर्थात् वेदो का श्रवण करो । सृष्टि के प्रारम्भ से वेदो का पठन-पाठन, श्रवण माध्यम से ही होता रहा है । बिना श्रवण माध्यम से उसके यथोचित उच्चारण का बोध एव अवधारण हो ही नही सकता । अत. श्रावण मास मे सर्वत्र वेदो के पाठ, यज्ञ-यागादि का अनुष्ठान, कथा, उपदेश आदि का प्रचलन है । इसको धर्म मान कर किया जाता है—जैसा कि कहा है -

वेदस्याध्ययनात् धर्म: सम्प्रदानात्तथा श्रुते: ।
वर्णशोक्षरशो ज्ञानात् विभक्ति पदशोपि च ॥

वेदो के पठन करने से धर्म होता है तथा वेदो को पढाने से भी धर्म होता है । वेदों के वर्ण और अक्षरो के ज्ञान से भी धर्म होता है और उसके पदपाठ को तथा

(शेष पृष्ठ ८ पर)

उस परमात्मा को नमस्कार है ।

ओ३म् यस्य सूर्यश्चक्षुश्चन्द्रमाश्च पुनर्णव ।

अग्नि यश्चक्र आरस्य तस्मै ज्येष्ठाय ब्रह्मणे नम ।। अथर्व १०, २३, ६३३

जिसने नेत्र स्थानी सूर्य और चन्द्रमा को रचा है और जो सृष्टि के प्रारम्भ मे सूर्य और चन्द्रमा आदि की बार-बार रचना करता है और जिसने मुख स्थानी अग्नि पैदा की है, उसी परमेश्वर को हम लोगो का नमस्कार है ।

ओ३म्
आर्य सन्देश

सच्चे संरक्षण का व्रत लें ।

आगामी ४ अगस्त के दिन श्रावणी का पवित्र पर्व है। इस दिन यज्ञ की पवित्र वेदी पर जाति-पाति के भेदभाव के बिना सामूहिक यज्ञोपवीत ग्रहण किए जाते हैं। यज्ञोपवीत के तीन धागे उन्हे धारण करने वालो को माता पिता और गुरु के ऋणो को –उनके प्रति अपने कर्त्तव्यो को पूर्ण करने का सन्देशा देते हैं। उस दिन का पर्व दो मुख्य बातो का सन्देश देता है—प्रथमत हमे समाज के समस्त दीन हीन शोषित वर्ग को न केवल अपने यज्ञ मे आहुति देने, यज्ञोपवीत ग्रहण कर प्रसाद पाने मे सहयोगी और सहभोजी बनाना है, जीवन के हर मोड पर सकट एव सहायता के क्षणो मे हमे उन्हे सहयोग देना होगा। राजनीतिक स्वाधीनता प्राप्ति के तीन दशक से अधिक वर्ष व्यतीत हो जाने के बावजूद यह कितनी अधिक विडम्बना की बात है कि अभी तक भी देश मे सहस्रो, लाखो देशवासी ऐसे हैं, जिन्हे समानता का व्यवहार तो दूर की बात है, उनसे सामान्य इन्सानियत का व्यवहार भी नही किया जाता। इसी दुरवस्था का लाभ उठाकर विदेशी शक्तियाँ उन्हे आर्थिक प्रलोभन देकर उनका सामूहिक धर्मान्तरण करने के लिए प्रयत्नशील हैं।

तो श्रावणी के दिन हमे अपने इन दीन दलित बन्धुओ को मनसा-वाचा-कर्मणा समाज मे गौरवपूर्ण स्थान और सम्मान देना होगा। दूसरे यह पर्व रक्षाबधन से भी सम्बन्धित है। उस दिन सभी बहने अपने भाइयों से इन स्नेहबन्धनो के माध्यम से नारी मात्र के सरक्षण का अनुरोध करती हैं। यद्यपि स्वतन्त्र भारत मे नारी की आर्थिक, सामाजिक, एव सवैधानिक स्थिति मे सुधार हुआ है, तथापि यह भी एक कटु तथ्य है कि आज सामान्य भारतीय नारी की स्थिति पूरी तरह ठीक नही है। महानगरो एव गांवो मे नारी की सुरक्षा और सम्मान को क्षति पहुची है। कानून बनने के बावजूद दहेज आदि की जघन्य मॉंग के कारण शिक्षित निर्धन माध्यम श्रेणी के परिवार की नारी का जीवन सकटापन्न हो गया है। कानून कहता है कि दहेज देना लेना दोनो गैरकानूनी हैं।, परन्तु व्यवहार मे लोभी व्यक्ति धन के लिए बहुओ को जला देते हैं, या जलने या मरने के लिए विवश कर देते हैं। रक्षाबन्धन के पवित्र पर्व पर सम्पूर्ण नरसमाज को यह सकल्प करना होगा कि वह दुखी, पददलित नारी का सरक्षण करेगा, वह किसी भी व्यक्तिगत या पारिवारिक स्वार्थ के लिए इसका शोषण नही करेगा।

रक्षाबन्धन या श्रावणी के पर्व से ही आर्यसमाज नगर-नगर प्रदेश-प्रदेश में वेद प्रचार सप्ताह का कार्यक्रम आयोजित करता रहा है। इस अवसर पर आर्य समाज के मच से वेदो की कथा, विशिष्ट व्याख्यान एव दूसरे कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं। उन सभी कार्यक्रमो का मुख्य लक्ष्य यही होता है कि हम घर-घर मे परिवार-परिवार मे--नगरो और प्रदेशो मे सर्वत्र वेदो का प्रचार-प्रसार करें। व्यक्ति और समष्टि वेदो के अध्ययन और स्वाध्याय के प्रति प्रेरित हो, इस कार्यक्रम का जहाँ यह लक्ष्य है, वहाँ इस अवसर पर समस्त कुरीतियो एव भ्रष्ट रीति नीति का त्याग कर वैदिक मर्यादाओ की प्रतिष्ठा और मानव बुद्धि को परिष्कृत करने वाले ज्ञान-विज्ञान का आश्रय भी नितान्त आवश्यक है। वेद प्रचार सप्ताह के अवसर पर वेदो की जय और उनके गुणानुवाद से हमारे कर्त्तव्य की इतिश्री नही हो सकेगी - सच्चे वेद प्रचार के लिए समाज मे व्याप्त अज्ञानान्धकार और कुरीतियों का उन्मूलन कर समाज की उपेक्षित नारी और दलित वर्ग का सच्चा सरक्षण होना चाहिए . इस पवित्र पर्व के दिन हमे उनके सच्चे सरक्षण का व्रत लेना चाहिए।

चिट्ठी-पत्री

शर... छोड़ने के बाद नवीन जन्म कब ?

दिनाक ६ मई ८२ के 'आर्य सन्देश' मे प० मनोहर विद्यालकार ने 'वेद मनन' स्तभ मे 'सविता प्रथमेऽहन्न ' मत्र का अर्थ प्रस्तुत किया है। यजु० के ३९।६ का जो मन्त्रार्थ प्रस्तुत किया गया है, वह उलझनपूर्ण एव समस्यामूलक है। निष्कर्ष मे वह लिखते हैं कि "मृत पुरुष की आत्मा बारह दिनो तक भ्रमण करती है, और अपनी न्यूनताओं को पूर्ण कर पुनर्जन्म ग्रहण करती है। इन बारह दिनो, जिसे 'अवकाश-काल' सम्बोधित किया गया है मे मृत पुरुष के लिए शुभ कामनाओ के निमित्त अनुष्ठान करने की प्रथा है। तेरहवें दिन मृत व्यक्ति जन्म ग्रहण करता है। पडित जी ने इस मन्त्र का विनियोग मृतक पुरुष के पुनर्जन्म मे किया है। मन्त्र मे 'मृतक' पद तथा पुनर्जन्म सम्बन्धी कोई सकेत भी नही है क्या इससे पौराणिक 'मृतक श्राद्ध का सपोषण नही होता ?

आगे के अर्थ और उलझन उत्पन्न करते हैं। यह अवकाश काल केवल बारह दिनो का नही हो सकता है—आवश्यकता पडने पर मासो, वर्षो या उससे भी अधिक समय तक भी न्यूनताओ को पूरा करने के लिए प्रतीक्षारत रह सकता है।

आर्ष ग्रन्थो मे मृत्यु के पश्चात जीव कब जन्म ग्रहण करता है, इस पर प्रकाश डाला गया है। उदाहरणस्वरूप बृहद० उ० ४।४।३ मे 'तृण जलायुका' शब्द आया है। इसके अर्थ मे यह लिखा गया है कि जैसे तिनके की जोक तिनके के अत मे जाकर अन्य तिनके को पाकर पिछले तिनके से अपने को हटा लेती है, ऐसे ही यह आत्मा इस शरीर को छोड कर अन्य शरीर प्राप्त कर लेता है।

मुडको० १।२।११ मे "सूर्य द्वारेण ते विरज प्रयान्ति" मृत्यु के अनन्तर सूर्य द्वार से वहाँ पहुचते हैं। वेदान्तदर्शन मे भी 'रश्म्यनुसारी ।' (४ २ १८) अर्थात् रश्मियो का अवलम्बन कर जीव शरीर से उत्क्रमण करता है। कहने का तात्पर्य यह है कि उपर्युक्त आर्ष ग्रन्थो मे किसी 'अवकाश-काल' का सकेत भी नही है।

ऋषि दयानन्द ने 'सत्यार्थप्रकाश' मे स्पष्ट लिखा है कि 'जब जीव शरीर छोडता है, यमालय (वायु मण्डल) को जाता है, वह वायु-अन्न, जल अथवा शरीर के छिद्रो द्वारा दूसरे के शरीर मे ईश्वरीय प्रेरणा से प्रविष्ट होता है। प्रविष्ट होकर क्रमश वीर्य मे जा गर्भ मे स्थिति हो शरीर धारण करता है।" (सत्यार्थप्रकाश नौवा समु०)।

स्वामी दयानन्द जी ने 'सविता प्रथमेऽहन्न ''।' मन्त्र अन्त्येष्टि प्रकरण मे नही लिखा है। इस मत्र के भाष्य के भावार्थ मे वह लिखते हैं—'जब ये जीव शरीर त्यागते हैं तब कुछ काल-अत्यल्पकाल भ्रमण करके स्वकर्मानुसार गर्भाशय मे जाकर सूर्यप्रकाश आदि पदार्थो को पाकर शरीर धारण करते हैं।' स्वामी जी महाराज ने जीव को शरीर छोडने और नए शरीर धारण करने मे अत्यल्प अवकाश काल माना है। पडित जी का बारह दिनो का अवकाश काल, अत्यल्प काल नही हो सकता है। महर्षि जी ने इस मत्र का प्रतिपाद्य विषय 'पदार्थ विद्या' माना है। यथा —"सविता प्रथमेऽहन्नित्यादि पदार्थ विद्या।" (सदर्भ ग्रन्थ –'चतुर्वेद विषय सूची'– पृष्ठ स० ८२)।

स्व० प० जयदेव जी 'वेदालकार' ने इस मत्र का भाष्य 'राज्य परक' किया है। इस मन्त्र के पूर्व पांचवे मत्र मे 'सम्राट'—'प्रजापति' पद आया है। यहा 'सम्राट' के क्रमश बारह स्वरूपो का वर्णन है (पाठक मत्रार्थ देख ले) पुन छठे मत्र 'सविता प्रथमेऽहन्न'—मे उन बारह स्वरूपो को क्रमश 'सविता,' 'अग्नि', 'वायु' आदि बारह पदो को प्राप्त करता है। पाचवे और छठे मत्र की सगति लग जाती है।

मूल मंत्र मे 'मृतक' शब्द नही है—न तो 'पुनर्जन्म' पद है। इसका विनियोग 'पुनर्जन्म' मे कैसे होगा ? हाँ, ऋषि दयानन्द ने इस मन्त्र के भाष्य मे जो भावार्थ लिखा है—उसमे 'किंचित् काल भ्रमण कृत्वा' तथा 'गर्भाशय गत्वा' पद से अवकाश काल का बोध होता है, परन्तु सत्यार्थप्रकाश मे जो इसका विश्लेषण किया गया है उससे बारह दिन अथवा उससे अधिक 'अवकाश काल' का विरोध प्रकट है। पुनः प० जयदेव जी के अर्थ और प० मनोहर जी के अर्थ मे घोर विषमता है—स्वामी दयानन्द का भी अर्थ इनका पोषक नही है।

अत आर्य वैदिक विद्वान इस समस्या का कोई तर्कपूर्ण एव बुद्धि गम्य हल प्रस्तुत करे। —जगदीश आर्य मन्त्री आर्यसमाज,सासाराम

श्रावणी के उपलक्ष्य में—

वेद का प्रचार आवश्यक क्यों ?

आर्यसमाज की स्थापना महर्षि दयानन्द ने मुख्य रूप से वेद के प्रचार-प्रसार के लिए की थी। बम्बई में प्रथम आर्यसमाज की स्थापना के समय रजिस्ट्रार को दिया गया घोषणा-पत्र इसमें साक्षी है। आर्यसमाज का तृतीय नियम इसी बात की पुष्टि करता है। परोपकारिणी सभा की स्थापना भी इसी उद्देश्य से की गई थी। महर्षि के जीवन, दर्शन, लक्ष्य और ध्येय को देखने से भी यही ज्ञात होता है कि उनका उद्देश्य संसार भर में वेद का प्रचार करना था। उस महामानव ने अपने ब्रह्मानन्द को लात मार के वेद के प्रचार के लिए अगणित कष्ट उठाए थे। वेद का भाष्य किया और वेद विषयक मिथ्या धारणाओं के उन्मूलन में प्राणपन से जुट गए। आर्यसमाज भी वेद-प्रचार को अपना लक्ष्य समझता है। और गत एक शताब्दी से भी अधिक समय से इस दिशा में कुछ न कुछ प्रयत्न करता आया है। प्रश्न उठता है कि वेद के प्रचार की क्या आवश्यकता है ?

महर्षि दयानन्द इसी निष्कर्ष पर पहुंचे थे कि वेद का प्रचार इसलिए आवश्यक है कि वेद और केवल वेद ही ईश्वरीय ज्ञान होने के कारण निर्भ्रान्त ज्ञान है कि जो सृष्टि के आदि में मानव मात्र के कल्याण के लिए सर्वज्ञ परमेश्वर ने अग्नि आदि चार ऋषियों के अन्तरात्मा में प्रकाशित किए थे। इसी भावना से प्रेरित होकर मानवमात्र के हितैषी महर्षि दयानन्द ने वेद के प्रचार-प्रसार का बीड़ा उठाया था। वेद ईश्वरीय ज्ञान है, वेद का प्रचार आवश्यक है, तो बाइबिल, कुरान, पुराण तथा ऐसे ही अन्य ग्रन्थ ईश्वरीय ज्ञान क्यों नहीं ? विद्वानों ने ईश्वरीय ज्ञान की जो कसौटियां निश्चित की हैं, उक्त पुस्तकें उन पर खरी नहीं उतरतीं। वे कसौटियां इस प्रकार हैं - (१) ईश्वरीय ज्ञान सृष्टि के आदि में दिया जाना चाहिए। 'ज्ञान का बीज सृष्टि के आदि में दिया जाता है।' (देखें— अरविन्द आश्रम पाण्डिचेरी के श्री धर्मवीर वेदालंकार का आर्य जगत् के वेद विशेषांक, १ मार्च सन् ८१ में पृष्ठ १६ पर प्रकाशित लेख) दर्शनाचार्य प० उदयवीर जी शास्त्री ठीक ही लिखते हैं कि—'धर्म का मूल स्रोत वही होना चाहिए, जिसका प्रादुर्भाव मानव के प्रादुर्भाव के साथ हुआ हो। आज तक किसी अन्य धर्म-पुस्तक ने सृष्टि के आरम्भ में होने का दावा नहीं किया।' (आर्योदय विशेषांक ३० अगस्त १९६६ पृष्ठ ६) इसमें महर्षि दयानन्द का तर्क है कि यदि 'सृष्टि के आदि में परमात्मा जो वेदों का उपदेश नहीं करता तो आज पर्यन्त किसी मनुष्य को धर्मादि पदार्थों की यथार्थ विद्या नहीं होती।' (ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका वेदोत्पत्ति विषय, पृष्ठ १३) यदि अन्य मानवीय पुस्तकों को जन्म के जो सृष्टि उत्पत्ति के बहुत-बहुत बाद आयीं, ईश्वरीय ज्ञान माना जावे तो फिर प्रश्न उठता है कि ईश्वर ने उन असख्य मानवों को उस ज्ञान से वंचित क्यों रखा ? इस प्रकार ईश्वर पर पक्षपात का दोष आता है। अतः ईश्वरीय ज्ञान की प्रथम कसौटी उसका सृष्टि के आरम्भ में दिया जाना है। दूसरे वह ज्ञान सृष्टि क्रम, व्यवस्था एवं नियम आदि के सर्वथा अनुकूल होना चाहिए। वेद की यह विशेषता है कि वह ईश्वरीय रचना सृष्टि के नियम आदि से पूर्ण मेल खाता है। 'वास्तव में यदि वेद और सृष्टि एक ही सत्ता के कार्य हैं तो दोनों में सामजस्य होना स्वाभाविक एवं अनिवार्य है।' (देखें—आर्य जगत् के वेद विशेषांक में स्वामी विद्यानन्द सरस्वती का लेख, पृष्ठ १५) इस कसौटी पर वेद पूर्ण रूप से खरा उतरता है। जैसा कि जेम्स हेस्टिंग अपने सदर्भ ग्रंथ में लिखता है (महर्षि दयानन्द ने ईश्वरीय पुस्तक (वेद) को प्रकृति की पुस्तक (सृष्टि) के अनुकूल सिद्ध कर दिखाया है। सृष्टि रचना एवं उसके विधान का परस्पर घनिष्ठ सम्बन्ध होता है। उनमें समन्वय एवं सामजस्य होना अनिवार्य है। इस समन्वय से ज्ञान होता है कि जगत् का कर्त्ता और ऋग्वेदादि शास्त्र के प्रादुर्भाव का कारण एकमात्र ब्रह्म है। ब्रह्म के बनाए जगत् और ब्रह्म ही के बनाए द्वारा प्रकाशित ज्ञान वेद में परस्पर समन्वय है। इनमें एक दूसरे के प्रति कोई विरोध कहीं भी नहीं दिखाई देता। अतः सिद्ध है कि वेद ही ईश्वरीय ज्ञान है। अन्य तथाकथित ईश्वरीय ज्ञान इस कसौटी पर खरे नहीं उतरते। ईश्वरीय ज्ञान होने की तीसरी कसौटी यह है कि वह ज्ञान निर्भ्रान्त त्रुटि रहित एवं सम्पूर्ण होना चाहिए। ईश्वर सर्वज्ञ है एवं निर्भ्रान्त है उसका ज्ञान भी निर्भ्रान्त ही होना चाहिये। अन्य तथा कथित ईश्वरीय ज्ञान इस कसौटी पर भी खरे नहीं उतरते। चौथी बात यह होनी चाहिए कि उसमें ईश्वर का वर्णन उसके गुण, कर्म और स्वभाव के अनुरूप ही होना चाहिए। पांचवें वह ज्ञान नित्य अर्थात् अपरिवर्तनशील होना चाहिए। छटे उसमें मानवीय इतिहास का लेश मात्र भी नहीं होना होना चाहिए। सातवें वह ज्ञान किसी देश विशेष अथवा जाति विशेष के लिये न होकर मानव मात्र के लिए होना चाहिये। आठवें उसमें इह लौकिक एवं पारलौकिक उन्नति हेतु समस्त विद्याओं का मूल विद्यमान होना चाहिये।

चूंकि इस वैज्ञानिक एवं युक्ति युक्त कसौटी पर वेद के अतिरिक्त अन्य कोई ज्ञान खरा नहीं उतरता अतः उन्हें ईश्वरीय ज्ञान नहीं माना जा सकता। महर्षि दयानन्द वेद के ईश्वर कृत होने में निम्न प्रमाण देते हैं - "जैसा ईश्वर पवित्र, सर्वविद्यावित्, शुद्ध गुण कर्म स्वभाव, न्यायकारी, दयालु आदि गुण वाला है वैसे जिस पुस्तक में ईश्वर के कर्म स्वभाव के अनुकूल कथन हो वह ईश्वर कृत अन्य नहीं। और जिसमें सृष्टि क्रम प्रत्यक्षादि प्रमाणों आप्तों के और अपवित्रात्मा के व्यवहार से विरुद्ध कथन न हो वह ईश्वरोक्त। जैसा ईश्वर का निर्भ्रान्त ज्ञान वैसे जिस पुस्तक में भ्रांति रहित ज्ञान का प्रतिपादन हो, वह ईश्वरोक्त। जैसा परमेश्वर है और जैसा सृष्टि क्रम रखा है वैसा ही ईश्वर, सृष्टि, कार्य कारण और जीव का प्रतिपादन जिसमें होवे वह परमेश्वरोक्त पुस्तक होता है और जो प्रत्यक्षादि प्रमाणादि विषयों से अविरुद्ध शुद्धात्मा के स्वभाव से विरुद्ध न हो, इस प्रकार के वेद हैं। अन्य बाइबिल, कुरान आदि पुस्तक नहीं।" (सत्यार्थ प्रकाश सप्तम समुल्लास) ईश्वरीय ज्ञान होने के कारण वेद का प्रचार अवश्यमेव होना चाहिये। वेद केवल ईश्वरीय ज्ञान ही नहीं समस्त ज्ञान + विज्ञान भाषा और धर्म का आदि मूल है। मनु जी का कथन है कि वेदोऽखिलो धर्म मूल। अतः वेद का प्रचार इसलिए भी होना चाहिए कि यह धर्म रूपी भवन की पहली ईंट है। "सृष्टि के आरम्भ काल में परमेश्वर द्वारा दिया गया धार्मिक ज्ञान का बीज एवं धर्म का आदि आरम्भ काल में परमेश्वर द्वारा दिया गया धार्मिक ज्ञान का बीज एवं धर्म का आदि स्रोत है।' (देखें × प० गंगा प्रसाद कृत धर्म का आदि स्रोत, पृष्ठ १) मनु का कथन है कि "धर्मं जिज्ञासमानानां प्रमाणं परमं श्रुतिः" अर्थात् जो धर्म का ज्ञान प्राप्त करना चाहते हैं, उनके लिए परम प्रमाण वेद ही है। इसलिए वेद का प्रचार होना ही चाहिए।

वेद का प्रचार इसलिए भी आवश्यक है कि इसमें मानव के अभ्युदय एवं निःश्रेयस की सिद्धि हेतु समस्त ज्ञान, विज्ञान एवं कर्त्तव्य कर्मों का विधान है। वेद की यह विशेषता है कि वह मानव के इह लौकिक एवं पारलौकिक दोनों पक्षों की सिद्धि की बात कहता है। पारलौकिक सुख के लिए है लौकिक सुखों की बलि दे देने की बात वेद को स्वीकार्य नहीं। साथ ही यह भी कि वेद जीवन का चरम लक्ष्य मोक्ष प्राप्ति की भावना को ओझल नहीं होने देता। वेद भोगों को त्याग पूर्वक भोगने की बात कहता है न कि भोगों के ही सर्वथा त्याग की बात वेद हमें जीने का ढंग बताता है, जीने की कला सिखाता है। जीने का ढंग ही नहीं बताता जीने का उद्देश्य भी बताता है।

लेखक
यशपाल आर्यबन्धु

वेद का प्रचार इसलिए भी आवश्यक है कि इससे मतमतान्तरों के रगड़े-झगड़े दूर होते हैं। पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय ठीक ही लिखते हैं कि—"जैसे सूर्योदय होने पर भिन्न-भिन्न प्रकार के दीपकों के झगड़े मिट जाते हैं, इसी प्रकार जब वेदों का प्रचार हो जाएगा तो आधुनिक धर्म—शास्त्रों के परस्पर झगड़े मिट जाएंगे।" (देखें—आर्य समाज बुला रहा है, पृष्ठ ११-१२) यदि हम चाहते हैं कि ससार में असत्य मतों का विनाश हो, और केवल सत्य मत का प्रचार हो तो हमें वेद का प्रचार करना ही होगा। यदि हम चाहते हैं कि ससार में सुख और शांति का साम्राज्य स्थापित हो और मनुष्य मात्र परस्पर प्रेम, भाई चारे और सहअस्तित्व की भावना से जीएं तो हमें वेद का प्रचार करना ही होगा।

आर्य निवास, चन्द्र नगर, मुरादाबाद-३२

पलाना बीकानेर में आर्यसमाज की स्थापना

पलाना। बीकानेर से २१ किलोमीटर दूर स्थित पलाना नामक ग्राम में दिसम्बर ६-७-८२ को पूर्णिमासी की शाम ग्राम के ठाकुरजी के मन्दिर के सामने यज्ञ का आयोजन किया गया। बीकानेर नगर आर्यसमाज के प्रधान श्री सच्चिदानन्द जी एडवोकेट सपरिवार पधारे और इस सायकालीन यज्ञ के यजमान बने। अन्य बीकानेर से बहुत से पदाधिकारी एवं सदस्य पधारे। दूसरे दिन भी सामूहिक यज्ञ हुआ। ग्राम वासियों ने बड़े उत्साह से भाग लिया। यज्ञ के पश्चात सत्संग में आर्य समाज की स्थापना हुई। ये पदाधिकारी चुने गये। प्रधान श्री कृपाराम आर्य उप-प्रधान श्री जेठाराम डाका, मन्त्री श्री नारायण राम भादू, उपमन्त्री श्री परमानन्द गोदारा, कोषाध्यक्ष श्री रामचन्द्र गोदारा, पुस्तकाध्यक्ष श्री आसूसिंह भाटी और प्रचारमंत्री श्री पूर्णराम सोलंकी।

अवसरवादी आर्यमर्यादा तोड़ने वाले अधिकारी न बनें

—जगतराम आर्य

स्वभावतः जिज्ञासा होती है कि आर्य समाजियो की सख्या दूसरो से कम क्यों है ? इस जिज्ञासा का स्वाभाविक उत्तर यही है कि हर कोई आर्यसमाजी नहीं बन सकता। सच्चा आर्यसमाजी बना तो तलवार की धार के ऊपर चलने के बराबर है। पौराणिक (सनातन धर्मी) तो हर कोई बन सकता है ? वहां तो अनेक बुराइयों और त्रुटियो के होते हुए भी कोई पूछने वाला नहीं। यहा तो आर्यसमाजी को फूक-फूककर कदम धरना पड़ता है। कोई आर्यसमाजी सिगरेट, बीड़ी, तम्बाकू का प्रयोग करता हो तो उंगली उठाई जाएगी, कोई सिनेमा देखना हो तो उंगली उठाई जाएगी, कोई शराब, मास, मछली खाता पीता हो तो समाज उसे क्षमा नही करता, कम तोलना, झूठ बोलना, रिश्वत लेना, सुन्दर नारी की तरफ कुदृष्टि से देखना, शादियो पार्टियो में शराब पीना पिलाना अश्लील गीत और रण्डियां नचाना क्षम्य नहीं है।

प्रत्येक आर्य समाजी के लिए आर्य मर्यादा के बन्धन हैं। उन मर्यादा के बन्धनों को तोडना अपना स्वार्थ पूरा करना और आर्यसमाज के साथ मजाक करना है।

चाहिये तो यह कि यदि किसी आर्य समाजी में इस प्रकार की बुराइया एवं त्रुटियां हो तो आर्यसमाज का साधारण सदस्य रह कर ऐसी बुराइयों को दूर करने का प्रयास करे। जब तक ऐसी बुराइया त्रुटिया दूर न हो जाएं, तब तक आर्यसमाज का जिम्मेदारी का पद स्वीकार न करे। अपनी बुराइयो त्रुटियो का प्रायश्चित करके आर्य मर्यादाओ के बन्धन मे बधा रहे, और मीठा बोले, सर्वप्रिय बने, एक आदर्श आर्यसमाजी बनकर आर्यसमाज का गौरव बढ़ाए, जब तक ये गुण न हो तब तक आर्य समाज का पदाधिकारी न बने।

आज हमारे आर्यसमाजी भाइयो मे प्रायः पद की तो लिप्सा बहुत बढ़ गई है। येन, केन, प्रकारेण पदाधिकारी बने रहना चाहते हैं भले ही आर्यसमाज की हानि होती रहे, परन्तु गुटबन्दी बनी रहे। ऐसे लोग जो आर्यसमाज के सिद्धान्तो को तो जानते नहीं, यदि जानते हैं तो वे आचरण नहीं करते, अमीरी और सीना जोरी के कारण पदाधिकारी बने हुए हैं। अपने पाप कुकर्मों बुराइयो और त्रुटियो को छुपाने के लिए पदाधिकारी बनते हैं, न स्वय आर्यसमाज का काम करते हैं न दूसरो को करने देते हैं, इस प्रकार आर्यसमाज का प्रचार प्रसार नही हो पा रहा।

आर्यसमाज का प्रचार और प्रसार तभी हो सकता है यदि आर्यसमाज के दीवाने ऋषि दयानन्द के परवाने बन कर काम करें, सिर पर हर समय आर्यसमाज का भूत सवार हो, सफर मे भी घर और बाहर भी, दिन हो या रात जहा भी जाए आर्यसमाज की चर्चा करना न भूलें, किसी न किसी रूप मे आर्यसमाज के सिद्धांतो को उजागर करने का चिन्तन और मनन बनाये रखे।

अवसरवादी आर्य मर्यादाओ को तोड़ने वाले व्यक्ति को आर्यसमाज का पदाधिकारी न बनने दे।

केवल वेद ही ईश्वरीय ज्ञान है और केवल आर्यसमाज ही एक ऐसी सस्था है जो ईश्वरीय ज्ञान वेदों का प्रसार और प्रसार करता है। हमारे पौराणिक पन्थी भाई जो अपने आपको सनातन धर्मी कहते हैं ये तो पुराणो का ही प्रचार-प्रसार करते हैं, पुराणो के प्रचार से ही भारत की अवनति हुई है।

तो आर्यसमाज का काम करना तो ईश्वरीय कार्य है। परमात्मा कृपा करे युवको को प्रेरित करे जैसा कि ऋषि दयानन्द के अनन्य भक्त आर्य समाज के शैदाई आर्यवीर मैदान मे आए और आर्यसमाजो का बिगडा हुआ वातावरण सुधारे और आर्य नौजवानो मे आर्यत्व का सचार करे जिससे सभी आर्यजन देव ऋण और ऋषि ऋण से उऋण हो।

गांधी नगर दिल्ली।

आर्य जगत् समाचार

धर्मनिरपेक्षता का अर्थ सर्वधर्म समभाव है

प्रधानमन्त्री का मन्दिरों में जाना उचित : साम्यवादी सदस्य का वक्तव्य अनुचित : श्री त्यागी

नई दिल्ली। लोकसभा मे धर्मनिरपेक्ष व्यवहार की रक्षार्थ क्या कदम उठाये जाने चाहिए। इस विषय पर एक व्यक्तिगत प्रस्ताव मे १६ जुलाई १९८२ को बोलते हुए एक कम्युनिस्ट पार्टी मार्किस्ट के सदस्य श्री सत्यसधन चक्रवर्ती के इस वक्तव्य पर कि देश मे धर्मनिरपेक्षता की रक्षार्थ देश की प्रधान मत्री तथा अन्य नेताओ को धर्म मन्दिरो मे नही जाना चाहिए: एक विवादास्पद विषय है।

जनता के सम्मुख सही आदर्श

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के महामत्री एव भूतपूर्व ससद सदस्य श्री ओम्प्रकाश त्यागी ने उक्त वक्तव्य का जोरदार विरोध करते हुए कहा कि श्री चक्रवर्ती का यह वक्तव्य दुर्भाग्यपूर्ण एव भारतीय सविधान तथा उसके द्वारा स्वीकृत धर्म निरपेक्षता के सर्वथा विरुद्ध है और भारत की प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाधी जी के मदिरो में जाने का समर्थन करते हुए श्री त्यागी ने कहा इसके लिए प्रधानमत्री बधाई एव धन्यवाद की पात्र हैं। श्रीमती गाधी का मदिरो मे जाना धर्मनिरपेक्षता का वास्तविक प्रदर्शन है और जनता के सम्मुख एक सही आदर्श उपस्थित करता है।

श्री त्यागी ने कहा धर्म निरपेक्षता का अर्थ धर्महीनता न होकर सर्वधर्म समभाव है। इसके अनुसार देश का प्रत्येक नागरिक व राजनीतिक अपनी इच्छा व सुविधानुसार अपने धार्मिक कृत्यो का सहर्ष पालन कर सकता है। यह उसके व्यक्तिगत धार्मिक अधिकार हैं।

श्री त्यागी ने कहा कि भारत ने धर्महीन राजनीति को न कभी स्वीकार किया है और न करेगा। महात्मा गाधी के शब्दो मे धर्महीन राजनीति देश मे रावण राज्य तो बना सकती है, परन्तु वह रामराज्य कदापि नही ला सकती है। यही भारतीय जनता की वास्तविक भावना है।

श्री त्यागी ने साम्यवादी सदस्य की छिपी भावना पर सीधी चोट करते हुए कहा कि भारत मे गरीबी और बेकारी के चरम सीमा पर रहते हुए भी साम्यवादी पार्टी को यहाँ अब तक इसीलिए विशेष सफलता प्राप्त नहीं हुई क्योंकि यहाँ के लोगो की धर्म के प्रति श्रद्धा व आस्था उनके मार्ग मे बाधक बनी हुई है। जिस राजनीतिक पार्टी का ईश्वर और धर्म मे विश्वास नही है, भारत की जनता सरलता से उसका कदापि समर्थन नही कर सकती। प्रतीत होता है कि अपनी पार्टी की इस बाधा को दूर करने के लिए ही साम्यवादी सदस्य ने लोक सभा में प्रयास किया क्योंकि प्रधानमन्त्री के मदिर जाने और धर्म के प्रति आस्था प्रकट करने से जनता की धार्मिक भावनाओं को बल ही मिलता है। इसीलिए उन्होने श्रीमती गांधी के मन्दिर जाने पर आपत्ति की।

श्री त्यागी ने आगे कहा कि साम्यवादी सदस्य को जानकारी होनी चाहिए कि उनकी प्रेरणा का स्रोत रूस देश ने भी अब अपनी मान्यताओ मे परिवर्तन कर व्यक्तियो को व्यक्तिगत रूप से किसी भी धर्म को अपनाने या पूजा पाठ करने की स्वतन्त्रता दे दी है। अभी कुछ दिन पूर्व मास्को मे एक विश्वधर्म सम्मेलन भी हुआ जो वहाँ की वैचारिक परिवर्तन का प्रतीक है।

श्री त्यागी ने खेद प्रकट करते हुए कहा कि भारत की साम्यवादी पार्टी अभी भी लकीर की फकीर बनी हुई है। उसे विदित होना चाहिये कि भारत मे धर्मविरोधी नास्तिक पार्टी का कोई भविष्य नहीं है। अपनी क्षणिक सफलताओं पर उसे भ्रमित नही होना चाहिए। अन्यथा बगाल की धर्मप्रेमी जनता किसी भी दिन उसका बिस्तर गोल कर सकती है।

प्रतिनिधियों का ब्यौरा और दशांश भेजें

दिल्ली। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की साधारण सभा का वार्षिक अधिवेशन आगामी २२ अगस्त, १९८२ के दिन होगा। सविधान के अनुसार इसमे आर्यसमाजो के नए प्रतिनिधि भाग लेंगे, ये तीन वर्ष तक अपनी-अपनी समाजो के प्रतिनिधि रहेंगे। समस्त सम्बद् आर्यसमाजो से अनुरोध है कि वे अपनी-अपनी समाजो के प्रतिनिधियो का पूर्ण विवरण फार्म मे भरकर सदस्यो के दशांश, वेदप्रचार और सन्देश के वार्षिक शुल्क के साथ तुरन्त सभा-कार्यालय मे भेजने की व्यवस्था करेंगे।

जिन सम्बद्ध आर्यसमाजों का निर्धारित अवधि तक नया चुनाव न हुआ हो और जिन्होने नए प्रतिनिधियों का चुनाव नहीं किया है, उन समाजों के पूर्व प्रतिनिधि ही आगामी अधिवेशन में भाग ले सकेंगे।

डा० माधुरी द्वारा वैदिक कार्यशाला का उद्घाटन

शिक्षा सम्बन्धी समस्याएं और वेद : गुरुकुल कांगड़ी में आयोजन

हरिद्वार। गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय ४ सितम्बर ८२ से १० सितम्बर ८२ तक वैदिक शिक्षा राष्ट्रिय कार्यशाला का आयोजन कर रहा है। इस महत्वपूर्ण वैदिक कार्यशाला का समारम्भ डा० श्रीमती माधुरी शाह, अध्यक्षा, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के उद्घाटन भाषण से होगा। समस्त भारतीय विश्वविद्यालयो के प्राध्यापकगण, डी० ए० वी० कालेज एव गुरुकुलो के प्राचार्य और प्राध्यापकगण को प्रतिनिधि रूप मे भाग लेने हेतु आमन्त्रित किया गया है।

गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के कुलपति श्री बलभद्रकुमार हूजा के सतत प्रयासो के फलस्वरूप इस प्रकार की अखिल भारतीय स्तर पर वैदिक कार्यशाला का आयोजन विश्वविद्यालय के इतिहास मे प्रथम बार हो रहा है।

निम्नलिखित विषयो पर इस कार्यशाला मे विचार किया जायेगा १. वैदिक शिक्षा पद्धति की मूल विशेषताए २. गुरुकुल शिक्षा एव ब्रह्मचर्य, ३, योग की प्राचीन पद्धतिया, ४.महर्षि दयानन्द का शिक्षा दर्शन, ५. स्वामी श्रद्धान[illegible] का महान शैक्षणिक प्रयोग, ६, आधुनि[illegible] परिप्रेक्ष्य मे गुरुकुल शिक्षा का महत्[illegible] ७. वेदो में विज्ञान, ८ टैगोर, अरवि[illegible] और गांधी का शिक्षा दर्शन और प्रयो[illegible] ९. ग्रामीण विकास में शिक्षा का योगदान, १०. व्यक्तित्व का समन्वि[illegible] विकास।

इस कार्यशाला मे भाग लेने [illegible] इच्छुक व्यक्ति कार्यशाला के निदेशक [illegible] पत्र व्यवहार द्वारा सम्बन्ध स्थापि[illegible] करके इसमें सम्मिलित हो सकते हैं।

वैदिक विद्वान उक्त विषयों प[illegible] अपना अमूल्य लेख भी शीघ्रातिशीघ्र भे[illegible] सकते हैं। कार्यशाला के पूर्व ह[illegible] स्मारिका के रूप मे इन लेखों को प्रका[illegible]शित किया जा रहा है। विस्तृत कार्यक्रम एव सम्मिलित होने के नियम शीघ्र ही छप रहे हैं जो भी व्यक्ति सम्मिलि[illegible] होना चाहें, वे कार्यक्रम मगवा सकते हैं।

डा० जयदेव वेदालकार निदेश[illegible]
वैदिक शिक्षा राष्ट्रिय कार्य[illegible]
गुरुकुल कांगडी

बोध-कथा

'द' अक्षर की दीक्षा।

उपनिषद् की कथा है। प्रजापति ब्रह्मा की तीन प्रकार की सन्तानें थी। पहले देवता थे जिन्हे सब प्रकार के सुख-वैभव प्राप्त थे, परन्तु वे सदा भोग-विलास मे लीन रहते थे। दूसरे के मानव जो धन-वैभव का अधिकतम सग्रह करने मे सलग्न रहते थे और तीसरे थे असुर-या दानव···जो दूसरो पर सदा क्रूरता एव अत्याचार किया करते थे। देवता, मानव और असुर तीनो विद्याध्ययन के लिए पिता प्रजापति के पास गए। तीनो ने ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए अपनी पढाई पूरी की। ब्रह्मचर्य पूर्वक विद्याध्ययन के बाद देवताओं ने प्रजापति से कहा··· भगवन्, हमारी पढाई पूरी हो गई है, हमे दीक्षा दीजिए।'

प्रजापति ने केवल एक अक्षर बोलकर दीक्षा दी-'द।' फिर पूछा··· इस 'द' अक्षर का कुछ मतलब समझे। देवता बोले ···'हम समझ गए हैं। हम इन्द्रियलोलुप हैं। आपने हमे शिक्षा दी है···द-'दाम्यत'-इन्द्रियो का दमन करो।' ब्रह्मा ने उत्तर दया·· 'हा, तुमने ठीक समझा है।'

पढाई पूरी कर कर मानव भी प्रजापति के पास गए। उन्होने भी पिता प्रजापति से दीक्षा देने की प्रार्थना की। प्रजापति ने उन्हे भी दीक्षा 'दी-'द' अक्षर की। पूछा·· 'इस 'द' का मतलब समझे? मानव बोले···हम पूरी तरह समझ गए हैं। हम मानव लोभी है, हमे आपने 'द' से 'दत्त' दान दो की शिक्षा दी है। प्रजापति ने स्वीकार किया कि मनुष्यो ने ठीक अर्थ समझा है। अन्त में असुर प्रजापति के पास पहुचे। उन्होने भी प्रजापति से दीक्षा देने का अनुरोध किया ब्रह्मा ने उन्हे भी दीक्षा दी द · 'द'। पूछा · 'इस 'अक्षर का मतलब समझे?' असुर बोले···'हम क्रूर लोग है···आपने हमे 'द' अक्षर मे कहा है "दयध्वम्'···दया करो।' प्रजापति बोले··· 'तुम ठीक मतलब समझे हो।'

वर्तमान समय मे भी इस विश्व में देव, मानव और असुर तीनों ही प्रकार के व्यक्ति हैं···उनके लिए प्रजापति की सीख है···दमन करो इन्द्रियों का नियन्त्रण करो; लोभ मत करो=दान दो और किसी पर भी कठोररता न करो···सब पर दया करो। आज कड़कती बिजली दैवी वाणी के रूप मे बार-बार कह रही है— 'द द द' 'दाम्यत' दमन करो, 'दत्त'-दान करो—'दयध्वम्—दया करो।

—नरेन्द्र

आर्यसमाजों के सत्संग

२५ जुलाई'८२

अन्धा मुगल-प्रताप नगर—प० सोमदेव शास्त्री, अमर कालोनी—प० ज्ञानचन्द; अशोक विहार के. सी-५२-ए—प० वेदव्यास भजनोपदेशक, अशोक-नगर—वैद्य रामकिशोर; आर्यपुरा—प० ईश्वरदत्त; आर. के. पुरम सेक्टर ५—स्वामी जगदीश्वरानन्द, आर. के. पुरम सेक्टर ६—प० हरिश्चन्द्र आर्य, आनन्द विहार—प० आशानन्द भजनोपदेशक, किंग्जवे कैम्प—प० रघुराज शास्त्री; कालका जी—पं० कामेश्वर शास्त्री, करोल बाग—आचार्य नरेन्द्र शास्त्री, कृष्ण नगर—डा० रघुनन्दनसिंह, गांधी नगर—स्वामी विश्वदेवानन्द, गीता कालोनी—प० रामनिवास; ग्रेटर कैलाश-II—प० देवेश; गुप्ता कालोनी—प० हरिदत्त शास्त्री; गोविन्दपुरी—प० मनोहरलाल ऋषि भजनोपदेशक, गोविन्द भवन—श्रीमती प्रकाशवती शास्त्री; जगपुरा-भोगल—प० प्रकाशवीर व्याकुल, जनकपुरी बी-३/२४—प० रामदेव शास्त्री, जनकपुरी सी-३—प्रो० सत्यपाल बेदार, टैगोर गार्डन—डा० सुखदयाल भूटानी, तिलक नगर—श्रीमती सुशीला राजपाल, तिमारपुर—श्रीमती लीलावती आर्या, नगर शाहदरा—प० सत्यदेव, भजनोपदेशक; देवनगर—श्री चमनलाल, नारायण विहार—प० प्रकाशचन्द्र वेदालकार पजाबी नगर—स्वामी स्वरूपानन्द भजन मण्डली, न्यू मोती नगर—ला० लखमीदास नया बांस—प० क्षितीश कुमार वेदालकार; पजाबी बाग एक्सटेंशन—आचार्य हरिदेव सि० भू०; प्रीतमपुरा—प० हरिश्चन्द्र शास्त्री, बाग कड़े खाँ—प० बरकतराम भजनोपदेशक, मॉडल बस्ती—प्रो० वीरपाल विद्यालकार, मॉडल टाउन—आचार्य कृष्णगोपाल, महावीर नगर—प० सीसराम भजनोपदेशक, महरौली—प० तुलसीराम भजनोपदेशक; मोती बाग—प० गणेश प्रसाद विद्यालकार; राणा प्रताप बाग—प० प्राणनाथ सिद्धान्तालकार, राजौरी गार्डन—प० ओमवीर शास्त्री; लड्डू घाटी पहाड़गज—प० ओमप्रकाश गायक, लाजपत नगर—डा० रघुवीर वेदालकार; लेखराम-नगर-त्रिनगर—प० सत्यपाल मधुर भजनोपदेशक; लारेन्स-रोड—प० खुशीराम शर्मा। विक्रम नगर—प० अशोक कुमार विद्यालकार, विनय नगर—प० विश्वप्रकाश शास्त्री; सुदर्शन पार्क—प्रो० भारत मित्र शास्त्री; सराय रोहेला—प० चूनीलाल भजनोपदेशक, सोहनगज—प० रामरूप शर्मा, श्री निवास पुरी—प० जयभगवान भजन मण्डली, शालीमार बाग—प० शिवकुमार शास्त्री, हनुमान रोड—प० हरिशरण सिद्धातालकार, हौज खास डी-२०, प० वेदपाल शास्त्री।

—ज्ञानचन्द डोगरा, वेद प्रचार-प्रबन्धक

श्री चैतन्य स्वरूप को मातृशोक !

आर्यसमाज के नि:स्वार्थी एव निष्ठावान् सेवक, आर्यसमाज करोल बाग के पूर्व मन्त्री श्री चैतन्य स्वरूप की माता श्रीमती भावा वाली जी का देहावसान ११ जुलाई को हो गया। माता जी का जीवन बड़ा सात्विक था। अत. ९३ वर्ष की आयु मे भी उनकी दृष्टि ठीक थी और वे चलते-फिरते ही इस असार ससार से प्रस्थान कर गई।

१५ जुलाई को विशाल शोक सभा मे उन्हे श्रद्धाजलि अर्पित करते हुए श्री प० गोपालसिंह, प० मोदप्रकाश आचार्य भगवत शरण आदि विद्वानो ने कहा कि वृक्ष अपने फल मे पहचाना जाता है, माता जी ने आर्यत्व की भावनाए अपने पुत्रो में भरी और वे उक्त पौत्रो मे ही नही, ५ वर्ष के अमित जैसे पडपोतो मे भी परिपक्व हो रही हैं और वह उत्साहपूर्वक वेद मन्त्रों का गान करता है।

दिवगत आत्मा की सद्गति के लिए 'आर्य सन्देश परिवार' परम पिता परमात्मा से प्रार्थना करता है।

सुरेशचन्द्र वेदालंकार को मातृशोक

ओबरा (मिर्जापुर) १७ जुलाई-१६ जुलाई। की रात को साढे आठ बजे ९१ वर्ष की आयु में श्री सुरेशचन्द्र वेदालंकार की पूज्या माता जी का स्वर्गवास हो गया। वह आर्य विचारो की महिला थीं। उन्होंने अपने एकमात्र पुत्र सुरेशचन्द्र वेदालंकार को गुरुकुल पढ़ने को भेजा। उनका संस्कार वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ। वह अपने पीछे प्रपौत्र तक का भरा-पूरा परिवार छोड़कर मरी हैं।—आर. डी. शर्मा उपमन्त्री आर्यसमाज ओबरा (मिर्जापुर)

आर्यसमाज के नए पदाधिकारी

आर्यसमाज जगपुरा-भोगल। प्रधान—डा० जयप्रकाश गुप्त उपप्रधाना—श्रीमती डा० सुशीला साही, उपप्रधान—श्री लाजपत राय बतरा, मन्त्री—श्री सरदारीलाल चोपड़ा; उपमन्त्री—श्री भारतेन्द्र आर्य, श्री रामचन्द्र जुनेजा, कोषाध्यक्ष—श्री राधाकृष्ण बिदानी आय व्यय निरीक्षक—श्री ओमप्रकाश चौधरी।

आर्यसमाज करोलबाग में वेदगोष्ठी

आर्यसमाज करोल बाग, नई दिल्ली मे रविवार ८ अगस्त को साय साढ़े चार बजे 'वेदो की प्रामाणिकता और ऋषि दयानन्द' विषय पर एक वेद गोष्ठी आयोजित की गई है। मुख्य अतिथि और उद्घाटनकर्त्ता हैं न्यायमूर्त्ति श्री हसराज खन्ना। इस अवसर पर सक्षिप्त भूमिका प्रस्तुत करेंगे—वेदमार्तण्ड श्री युधिष्ठिर मीमांसक। मुख्य व्याख्याता होंगे कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के सस्कृत विभाग के अध्यक्ष डा० श्रीनिवास शास्त्री। कार्यक्रम की अध्यक्षता आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के प्रधान प्रो० वेद व्यास करेंगे।

करनाल में प्रति सोमवार को राष्ट्रोत्थान यज्ञ

राष्ट्रोत्थान हेतु शहर करनाल के किसी भी मोहल्ले या गली मे प्रति सोमवार को साय ५ बजे से ७ बजे यज्ञ की व्यवस्था की जाएगी। इस अवसर पर भजन-उपदेश भी हुआ करेंगे। यज्ञ प्रेमी सज्जन स्वामी सच्चिदानन्द १८/१० न्यू चार चमन, करनाल हरियाणा से सम्पर्क करें।

आर्य प्रतिनिधि सभा नेपाल की स्थापना

'आर्य प्रतिनिधि सभा नेपाल' सस्था की स्थापना के सम्बन्ध मे भू० पू० प्रधानमंत्री श्री नगेन्द्रप्रसाद रिजाल ज्यू के सभापतित्व मे एक बैठक हुई, जिसमें एक कार्यकारिणी समिति बनाई, गई, जिसमे अध्यक्ष वरिष्ठ अधिवक्ता श्री दिनेशभान, प्रधान उपाध्यक्ष, श्री डा० काशीराज उपाध्याय, सचिव श्री के० ना० जोशी, कोषाध्यक्ष श्री सुखदेव राज भल्ला, सह कोषाध्यक्ष श्री बी० एल० शर्मा, और १३ सदस्यो सहित १५ व्यक्तियो की तदर्थ समिति बनाई गई है। श्री नरेन्द्रप्रसाद रिजालको सस्या का सरक्षक बनाने का निर्णय लिया गया है।

—दिनेशभान, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा नेपाल।

सन्तोषी माता का व्रत एक षड़यन्त्र

संतोषी एक मुसलमान देवी : जनता सावधान रहे

—जगदीश चन्द्र बसु

पानीपत। आर्य प्रतिनिधि सभा (हरियाणा) के महोपदेशक प० जगदीश चन्द्र 'बसु' ने एक वक्तव्य मे आर्य हिन्दू जनता को सावधान किया है कि यह सन्तोषी माता का व्रत हिन्दू जनता को मुसलमान बनाने का भयकर षड़यन्त्र है। उन्होने यह रहस्योद्घाटन किया है—यह सन्तोषी माता इस्लाम को मानने वाली एक मुस्लिम महिला है, जिसका जन्म सऊदी अरब जिला पुरखा मे मो० कपुलूद्दीन पठान के घर सन् १६५७ मे हुआ था।

उसके पिता जब बम्बई आए, तब अपने साथ अपनी इस लडकी सन्तोखा (सन्तोषी) को भी लाए। बम्बई मे उसने रमजान का त्योहार बड़ी धूमधाम के साथ मनाया, इस अवसर पर अनेक फिल्म डायरेक्टर भी आमन्त्रित किए गए, जिनमे एक फिल्म डायरेक्टर को विपुल धनराशि देकर इसी सन्तोखा लडकी के नाम से सन्तोषी माता नामक फिल्म तैयार कराई गई, इस प्रकार तभी से उस मुसलमान पठान की लडकी सन्तोषी माता के नाम से हिन्दुओ के घर-घर मे पूजी जाने लगी।

श्री बसु कहते हैं कि मुसलमान रोजा व्रत शुक्रवार को रखते हैं, सन्तोषी माता के निमित्त उपवास (व्रत) भी शुक्रवार को रखा जाता है, जिस प्रकार रोजे वाले दिन मुसलमान गुड और भुने हुए चने बाँटते हैं और सन्तोषी माता के व्रत के दिन भी ये ही गुड व चने बाँटे जाते हैं। अन्ध विश्वासियो ने सन्तोषी को शिव जी के पुत्र गणेश की लडकी बताना आरम्भ कर दिया है। आशा है सच्चाई समझ कर हिन्दू बहनें सन्तोषी माता के व्रत को त्याग कर सच्चे पति-व्रत-पत्नी व्रत का पालन करेंगी।

वेद की महत्ता ......(पृष्ठ २ का शेष)

विभक्तियों को जानने से भी धर्म होता है। सत्य ज्ञान के भण्डार, परम धर्म स्वरूप वेदो के एक-एक अक्षर, मात्रा, उदात्तादि स्वरो के साथ शुद्ध रखकर उसका अभ्यास करने, धारण करने और प्रयोग करने से ही धर्म होगा और उसको वर्ण अक्षर, मात्रा उदात्तादि स्वरों से दूषित करने से महान् अपराध, दोष या हानि होती है। यह बात प्राचीन ऋषि-मुनियों से लेकर महर्षि दयानन्दजी ने भी पूर्ण रूप से स्वीकार की है और अशुद्ध बोलने मे चाहे वह उदात्तादि स्वरो का भी दोष हो तो भी अमान्य एव दुःख दायक माना है।

महर्षि स्वामी दयानन्दजी ने भी शुद्धोच्चारण का आदेश दिया है—

'ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका' 'वर्णोच्चारण शिक्षा', सौवर आदि ग्रन्थों मे महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने उपर्युक्त बातो को बलपूर्वक शुद्ध एव सत्वर उच्चारण के लिये स्पष्ट कहा है। अत: हमे भी वेद मन्त्रों के शुद्ध एव सत्वर उच्चारण प्रयत्न करके वेदों का अध्ययनाध्यापन एव यज्ञादि कार्य मे प्रयोग करके वेद के महत्व का संरक्षण करना चाहिए। वेद को सत्य अर्थात् शुद्ध रूप मे ग्रहण करना चाहिए और असत्य अर्थात् अशुद्ध रूप से बोलने का अवश्य त्याग करना चाहिये। इसी से आर्यसमाज की उन्नति होगी। वेदो को छोडकर अन्य कार्यों मे समय, शक्ति एवं धन व्यय करना त्यागना चाहिये।

वेद सदन, महारानी पथ, इन्दौर-४५२००७

卐 आर्यसन्देश के
स्वय ग्राहक बने
दूसरो को बनाए

卐 आर्यसमाज के सदस्य
स्वयं बनें—
दूसरो को बनाइए

卐 हिन्दी-सस्कृत भाषा स्वय
दूसरों को भी पढ़ाइये

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए श्री सरदारी लाल वर्मा द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित तथा भाटिया प्रेस २५७४, रघुबरपुरा नं० २ गांधी नगर दिल्ली ३१ में मुद्रित कार्यालय १५ हनुमान रोड नई दिल्ली फोन ३१०१५०।

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक मुखपत्र

एक प्रति ३५ पैसे   वार्षिक १५ रुपये   वर्ष ६   अंक ४१   रविवार ८ अगस्त   १७ श्रावण वि० २०३९   दयानन्दाब्द—१५८

राष्ट्रीय जीवन में नैतिकता और चरित्रतत्व की प्रतिष्ठा करो

चतुरता की राजनीति का अन्त कर चरित्र की राजनीति को महत्व दो

दिल्ली में राजर्षि टण्डन शताब्दी पर विशेष समारोह एवं शोभायात्रा

नई दिल्ली। 'टण्डन जी को स्मरण करने का अर्थ यह है कि हम जीवन मे नैतिकता एव चरित्र तत्व की पुन प्रतिष्ठा करें। हमे जीवन से चतुरता की राजनीति का अन्त कर चरित्र की राजनीति का प्रारम्भ करना होगा'—इन शब्दों में १ अगस्त के दिन राजर्षि पुरुषोत्तमदास टण्डन जन्म शताब्दी के अवसर पर आयोजित समारोह में साहित्यकारो व राजनीतिज्ञो राजर्षि टण्डन के प्रति अपनी भावपूर्ण श्रद्धाजलि प्रस्तुत करते हुए कहा— टण्डन जी साधना, सेवा और सुदृढ चरित्र की प्रतिमूर्ति थे।

समारोह का आयोजन दिल्ली हिंदी साहित्य सम्मेलन ने किया था। इसका उद्घाटन करते हुए श्री गगाशरणसिह ने कहा—'टण्डन जी जहां भी रहे उन्होने सिद्धान्तों के प्रति अपनी निष्ठा और गरिमा नहीं छोडी, मतभेद होते हुए भी उन्होंने अपनी वाणी मे सदा सयम रखा।

भू० पू० विदेश मन्त्री श्री श्यामनन्दन मिश्र ने कहा—'राजनीति मे रह कर टण्डन जी चतुरता के हाथ नही बिके। उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि यही हो सकती है कि चतुरता की राजनीति समाप्त कर चरित्र की राजनीति शुरू की जाए। आज हम यहां चरित्र की अराधना के लिए ही यहां एकत्र हुए हैं।'

कार्यक्रम के अध्यक्ष श्री पं० कमलापति त्रिपाठी ने कहा—'टण्डन जी के प्रति श्रद्धाजलि जीवन मे उदात्त मूल्यो चरित्र तत्व के प्रति निष्ठा के द्वारा ही सम्भव है।' इस अवसर पर प्रो० सिद्धेश्वरप्रसाद, सासद कृष्णचन्द्र पन्त श्री गोपाल प्रसाद व्यास आदि ने उन्हें श्रद्धा सुमन प्रस्तुत करते हुए कहा कि आज के सन्दर्भ मे सच्चा मानवतावादी बनने के लिए टण्डन जी जैसा खरा निष्ठा भरा निष्कलक चरित्रवान् होना आवश्यक है।

भव्य विशाल शोभा यात्रा

शनिवार ३१ जुलाई के दिन राजर्षि टण्डन जन्म शताब्दी की पूर्व सध्या पर दिल्ली के चांदनी चौक मे एक भव्य हिंदी शोभा यात्रा निकाली गई। इस शोभा यात्रा मे सबसे आगे महाकवि तुलसीदास स्वामी दयानन्द सरस्वती, महामना मदनमोहन मालवीय, महात्मा गाधी और राजर्षि टण्डन की भव्य झाकिया थी। इस शोभा-यात्रा मे बडी गिनती में आर्य युवक दल और आर्य विद्यालयो के छात्र-छात्रायें और बैंड आदि सम्मिलित हुए थे।

भूमिमाता सबका कल्याण करें

वाशिगटन। अमेरिकी राष्ट्रपति रीगन द्वारा दिए गए भोज मे स्वागत का उत्तर देते हुए भारत की प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाधी ने कहा—यह भूमि माता एक है, परन्तु हम अपनी-अपनी दृष्टि से इसके अलग-अलग नाम देते हैं। पूर्व-पश्चिम, उत्तर और दक्षिण आदि परिभाषाए भी भौगोलिक दृष्टि से उपयुक्त नहीं हैं। हजारो वर्षों पूर्व जब हमारी पृथ्वी शस्य श्यामला थी, उस समय हमारे राष्ट्र के ऋषियो ने लिखा था—

मा न पश्चात्मा पुरस्तान्नुदिष्टा मोत्तरादधरादुत।
स्वस्ति भूमे नो भव मा विदन् परिपन्थिनो वरीयो यावया वधम्॥

हे भूमि माता, हमें न तो पीछे से, न आगे से, न ऊपर से और न नीचे से धकेल। यह पृथ्वी माता हमारे लिए स्वस्ति-कल्याणकारिणी हो, बटमार लोग हमे न पाए, हम सहारक हथियार को बहुत दूर हटा दे। इस प्रकार हमे न तो पश्चिम से, न पूर्व से, हमे उत्तर या दक्षिण से पृथ्वी माता न धकेले, परन्तु वह सबके प्रति कल्याण करने वाली हो, हमे मार्ग के बटमार भी तग न कर सके और सारे सहारक अस्त्र हमसे दूर हो जाए।

नैतिक मूल्यों की रक्षा सर्वाधिक आवश्यक

हिन्दी राष्ट्रवाद की संवाहिका बने : डा० कर्णसिह का सत्परामर्श

नई दिल्ली। 'हिन्दी को जनमानस की भाषा बनाने के लिए जरूरी है कि उसे नैतिक और आदर्शवादी मूल्यो की पुनर्स्थापना का माध्यम बनाया जाए, तभी देश मे हिन्दी को उसका वह स्थान प्राप्त हो सकेगा, जो स्वतन्त्रता सग्राम के दिनों मे उसे प्राप्त था।" इन शब्दो मे डा० कर्णसिह ने शुक्रवार ३० जुलाई के दिन दिल्ली हिन्दी साहित्य सम्मेलन द्वारा आयोजित राजभाषा सम्मेलन का उद्घाटन किया।

डा० कर्णसिह ने कहा— 'आज देश मे भ्रष्टाचार व्याप्त है, नैतिक मूल्यो का पतन हो रहा है और सस्कृति को लोग भूलते चले जा रहे हैं, अगर इन मूल्यो की रक्षा न की गई और भाषा को बचा भी लिया गया तो उस भाषा के द्वारा कुछ कहने को न रह जाएगा। अत हिन्दी भाषा को हम नैतिकता, सत्य, देशाभिमान और राष्ट्रीयता से जोड़ें।"

वक्ता ने कहा कि आजादी की लडाई के दिनो मे हिन्दी इसीलिए फली-फूली कि वह प्रखर राष्ट्रवाद की संवाहिका थी, आजादी के बाद भी यद्यपि उसका प्रचार बढ रहा है, लेकिन हिन्दी अपना मन्त्र और उद्देश्य खो बैठी है। हमारा उद्देश्य इसी भावना को पुन जाग्रत करना होना चाहिए।

आर्यसमाज करौलबाग में वेदसप्ताह

आर्यसमाज करौलबाग के तत्वावधान में वेद सप्ताह के अवसर पर ६ अगस्त से १३ अगस्त तक प्रतिदिन प्रात ६ बजे से ७ बजे तक यज्ञ तथा भजन तथा श्री स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती द्वारा प्रात: ७ से ८ तक वेदकथा प्रस्तुत की जाएगी। अजमलखा पार्क करौलबाग मे यह कार्यक्रम आयोजित किया गया है। बृहस्पतिवार १२ अगस्त को प्रात: ७ से ८ बजे योगीराज जी के जीवन पर प्रकाश डाला जाएगा।

सम्पादक—नरेन्द्र विद्यावाचस्पति   व्यवस्थापक—प्रद्युम्नलाल तलवाड़

वेद-मनन

हमें भक्तिमय जीवन, बुद्धिप्रद अन्न, पोषणयुक्त धन और धनयुक्त सन्तान दे !

—मनोहर विद्यालंकार

अग्नेऽभ्यावर्तिन्नभि मा निवर्तस्वायुषा वर्चसा प्रजया धनेन ।

सन्या मेधया रय्या पोषेण ॥ यजु १२-९

ऋषि—वत्सप्री । देवता अग्नि । छन्द भुरिगार्षी अनुष्टुप् ।

शब्दार्थ—(अग्ने अभ्यावर्तिन्) सब को आगे बढ़ाने की कामना से पुनः-पुनः प्रयत्न करने वाले अग्निदेव (सन्या आयुषा) प्रभु भक्तिमय आयु (मेधया वर्चसा) बुद्धि को ठीक रखने वाले अन्न (रय्या प्रजया) धन-सम्पत्ति से सुपोषित सन्तान और (पोषेण धनेन) पुष्टिकारक धन के साथ (मा निवर्तस्व) मेरे पास आ अर्थात मुझे दे। निष्कर्ष स्वयं आगे बढ़ने और दूसरों को आगे ले जाने वाले, गृह, समाज और देश के नायक को, पीछे लौटकर अपनी और अपने आश्रितों की अवस्था की समीक्षा करते रहना उचित है। अन्यथा 'आगे दौड़, पीछे चौड़' का भय बना रहता है। वही जीवन अनुकरणीय है, जिसमे भक्ति और यथोचित विभाजन विद्यमान रहते है। जो विवेक को कभी नहीं छोड़ता।

'जैसा खाये अन्न वैसा बने मन' के अनुसार बुद्धिपूर्वक अर्थात् शुद्ध साधनों से कमाया हुआ अन्न ही स्पृहणीय है और वही वर्चस् (दीप्ति) प्रदान करता है और बुद्धि को ठिकाने रखता है।

मनुष्य तभी सन्तोष अनुभव करता है जब उसकी सन्तान धन-सम्पत्ति द्वारा आत्मनिर्भर हो, और दान भी करती हो।

धन कमाना तभी सार्थक है, जब उससे परिवार, समाज और देश का पोषण होता हो। यदि धन बुरी आदतें और संगति मे डाल कर रोग और दोष उत्पन्न करता है, तो ऐसे धन कमाने से तो निर्धन रहना अधिक श्रेयस्कर है।

विशेष—इस मन्त्र के ऋषि वत्स (वदतीति) + प्री. (प्रीणातीति) का शब्दार्थ संकेत करता है कि परमेश्वर की स्तुति करते हुए स्वयं प्रसन्न रहकर दूसरों को तृप्त करने की कामना करने वाला ही सच्चे अर्थों मे मार्गदर्शक, उन्नायक या गृहपति अग्नि कहलाने का अधिकारी है।

इस मन्त्र का छन्दार्थ अग्नि बनने के साधनों का क्रम निर्देश करता है कि— सबसे पहले भरण-पोषण की व्यवस्था का ध्यान करे, तदनन्तर दीर्घ दृष्टि तथा कर्मठता पर ध्यान दे, और अन्त मे सब के साथ अनुकूल रहकर, उनकी स्थिति के अनुरूप उनकी स्तुति करे अर्थात् बड़ों का आदर, बराबर वालों का सहयोग और छोटों की सहायता, करने का अपना स्वभाव बना लो।

अर्थ पोषक प्रमाण—अभ्यावर्तिन - सब ओर से (अभि) आगे बढ़ने (आ + वृतु वर्तने) वाले। सन्या—षण सम्भक्तौ, षणु दाने, सर्वासां विधाना संविभाग-कर्त्री। स्वा० द०। अर्थात् भक्ति विवेक और संविभाग युक्त। वर्चसा—वर्च दीप्तौ, वर्च अन्नाम। नि० २ ९। धनेन - धन धान्ये। धिनोतीति सत., धिनोतिस्तर्पणार्थ। निरु० ३-९ प्रीणयति हितद् दृश्यमानमपि किंभग पुनर्भुज्यमानम्। स्कंद स्वामी।

५२२ ईश्वर भवन, खारी बावड़ी,
दिल्ली-११०००६

आर्यसमाज मन्दिर मार्ग का वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज (अनारकली) मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली का वार्षिकोत्सव दि०—१३-१४-१५ नवम्बर ८२ (शनिवार, रविवार, सोमवार) का होगा।

सोमवार ८ नवम्बर से एक सप्ताह रात्रि मे स्वामी सत्यप्रकाश जी सरस्वती की वेदकथा होगी और प्रात प० श्री जैमिनी जी शास्त्री द्वारा गायत्री महायज्ञ होगा।

आर्यसमाज गांधीनगर में यज्ञ तथा कथा सम्पन्न

आर्यसमाज गांधी नगर मे १९ जनवरी से २५ जनवरी तक विशेष यज्ञ का तथा प्रा० प्रकाशचन्द्रजी शास्त्री द्वारा कथा का भी आयोजन किया गया। बहुत रोचक कथा रही तथा यज्ञ की विशेषता थी कि उसके चार से लेकर दस तक प्रति दिन यजमानों ने भाग लिया। यह आयोजन बड़ा सफल रहा। —मन्त्री

साम्प्रदायिक झगड़ों का कारण

—महामन्त्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली

अंग्रेजी शासन काल मे जब हिन्दू मुस्लिम दंगे होते थे तब देश के नेताओं की यह सर्वसम्मत धारणा थी कि दंगों के पीछे अंग्रेजों की 'फूट डालो और राज्य करो' की नीति काम कर रही थी। इस धारणा मे कुछ अंश तक सत्यता भी थी। अंग्रेज सरकार यह नहीं चाहती थी कि उसके शासन के विरुद्ध हिन्दू मुस्लिम एक शक्ति के रूप मे खड़े हो जाएं, परन्तु यहाँ यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि अंग्रेजों के बहकावे मे मुस्लिम वर्ग ही क्यों आया ? भारत के अन्य वर्ग उसके बहकावे मे क्यों नहीं आए ? इसका स्पष्ट अर्थ यह है कि भारत के मुस्लिम वर्ग के अन्दर कोई बात ऐसी अवश्य थी कि जिसके कारण वह उसके बहकावे मे आया। मुस्लिम वर्ग के अन्दर क्या भाव था कि जिसका विदेशी सरकार ने लाभ उठाया, वह भाव उस समय प्रकट हुआ कि जब मुस्लिम लीग ने द्विराष्ट्र के सिद्धान्त को प्रस्तुत करते हुए मुसलमानों के लिए एक अलग राष्ट्र की मांग की।

यदि नेताओं की उक्त धारणा मे कुछ सत्यता होती तो फिर स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात देश मे साम्प्रदायिक संघर्षों की समाप्ति हो जानी चाहिए थी, परन्तु ऐसा न होकर उल्टे साम्प्रदायिक संघर्षों मे वृद्धि ही हुई है।

साम्प्रदायिक दंगों के कारणों की खोज मे कुछ राजनीतिक नेताओं की यह मान्यता है कि अल्पसंख्यकों पर बहुसंख्यकों का अन्याय-अत्याचार ही साम्प्रदायिक तनाव का कारण है। यही कारण है कि प्रत्येक साम्प्रदायिक झगड़े के होते ही दिल्ली मे बड़े नेता तथा सरकार के कर्णधार बिना झगड़े की जांच किए आंख-नाक-कान-बुद्धि पर ताला लगा कर घोषणा करते हैं कि अल्पसंख्यकों पर बहुसंख्यकों के अत्याचार ही दंगे का कारण हैं।

यदि बहुसंख्यक वर्ग का अल्पसंख्यक वर्ग पर अन्याय व अत्याचार ही कारण है तो फिर यहां यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि कि भारत मे पारसी, ईसाई, बौद्ध आदि अन्य ऐसे अल्पसंख्यक वर्ग है कि जिनकी संख्या बहुत कम है उनका साथ यहाँ के बहुसंख्यक वर्ग का झगड़ा क्यों नहीं होता। इसका स्पष्ट अर्थ है कि मुस्लिम वर्ग मे ही कुछ ऐसी बात है कि उसी के साथ संघर्ष होता है।

नेताओं की साम्प्रदायिक दंगों के सम्बन्ध मे ऊपर लिखित धारणा को सरकार द्वारा दंगों की जांच के लिए नियुक्त कमीशनों ने भी असत्य सिद्ध किया है। एक-दो मामलों को छोड़कर लगभग सभी दंगों के बारे मे सभी कमीशन इस निश्चय पर पहुंचे हैं कि दंगों मे पहल मुस्लिम वर्ग से हुई।

भारत के नेताओं तथा सरकार को इस प्रश्न पर भी विचार करना चाहिए कि फिलीपीन, बर्मा, थाईलैण्ड आदि देशों मे भारत की भांति साम्प्रदायिक संघर्ष क्यों हो रहे है। और उन सभी संघर्षों मे मुस्लिम वर्ग का हाथ है। भारत की भांति सर्वत्र ही मुस्लिम वर्ग अपने लिए अलग होमलैण्ड की मांग कर रहे हैं। इसका स्पष्ट अर्थ है कि मुस्लिम वर्ग मे अन्य वर्गों के साथ मिलकर चलने की प्रवृत्ति नहीं है। वही मनोवृत्ति भारत मे काम कर रही है।

जो लोग इस्लाम धर्म मे परिचित है और जिन्होंने इसके गत इतिहास का अध्ययन किया है वे व्यक्ति सरलता से समझ सकते है कि दंगों का कारण क्या है। वास्तविकता यह है कि काफिरों के साथ मित्र भाव मे रहना तथा उनके शासन मे रहना इस्लाम धर्म के विरुद्ध है। यदि रहना पड़ जाय तो दारुल हरब अर्थात वह राज्य अपना नहीं की भावना रखकर रहना चाहिए। इसी एक तथ्य के कारण ही नहीं अपितु समूचे संसार मे जहाँ भी मुस्लिम वर्ग अल्प संख्या मे है, वहां साम्प्रदायिक तनाव अवश्य पाया जाता है। हां, रूस और चीन मे वहां की सरकारों ने अपने डण्डे के बल पर अथवा अन्य उपायों द्वारा मुसलमानों की मनोवृत्ति को दबाया हुआ है अन्यथा वहाँ भी अवश्य झगड़े होते।

मुस्लिम मनोवृत्ति का एक प्रत्यक्ष प्रमाण यह भी है कि जिन देशों में वे बहुमत मे हैं, वहाँ भी यह अन्य धर्मावलम्बियों के प्रति उदार नहीं है। मध्य एशिया के अरब देश, ईरान, मलयेशिया आदि इनके प्रत्यक्ष प्रमाण हैं।

सरकार को विदित होना चाहिए कि भारत मे कुछ वर्ग जन्मजात साम्प्रदायिक हैं, और कुछ वर्ग जन्म से ही धर्म निरपेक्ष है। जहाँ तक बहुसंख्यक हिन्दू वर्ग का सम्बन्ध है वह जन्म से ही धर्म निरपेक्षवादी है, और इसका धर्म व दर्शन दोनों इसे विश्व बन्धुत्व, विश्वप्रेम अथवा प्राणी मात्र से प्रेम करने की प्रेरणा देते हैं। जो व्यक्ति हिन्दुओं को साम्प्रदायिक समझने या कहने की भूल करता है वह वास्तविकता से मुख मोड़ता है, परन्तु राजनीति अथवा कुर्सी का मोह व्यक्ति से सब कुछ करा देता है। यही कारण है कि देश मे संकीर्ण साम्प्रदायिकता को समाप्त नहीं किया जा सकता है। अतः यदि सरकार देश को संकीर्ण साम्प्रदायिकता तथा साम्प्रदायिक संघर्षों से मुक्त करना चाहती है तो उसे दृढ़ता के साथ साम्प्रदायिक तत्वों को साम्प्रदायिक कहना होगा और उनकी साम्प्रदायिक मनोवृत्ति को बदलना होगा या उसका कड़ाई के साथ दमन करना होगा।

आर्यसमाजों के सत्संग

८ अगस्त'८२

अन्धा मुगल-प्रताप नगर स्वामी शान्तानन्द; अमर कालोनी—आचार्य हरिदेव सि० भ०, अशोक विहार के-सी-५२ ए—आचार्य दीनानाथ सिद्धान्तालकार, आर्यपुरा—प० सोमदेव शास्त्री; आनन्द विहार- प० प्रकाशचन्द्र शास्त्री, कालका जी- प० खुशीराम शर्मा, करौल बाग—स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती, कृष्णनगर—ला० लखमीदास आर्य, गांधीनगर—प० रामलाल शास्त्री, गीता कालोनी—प० तुलसीराम, ग्रेटर कैलाश II—प० कामेश्वर शास्त्री, गुडमण्डी—प ईश्वरदत्त, गुप्ता कालोनी—प० मुनिशंकर वानप्रस्थ; गोविन्दभवन-दयानन्दवाटिका—प० रघुराज शास्त्री, चूनामण्डी-पहाड़गज—डा० रघुनन्दन सिंह, जगपुरा-भोगल- प० मनोहरलाल भजनोपदेशक, जनकपुरी सी-३—प० ओमवीर शास्त्री, तिलकनगर—प० हरिश्चन्द्र आर्य; तिमारपुर—प० रामनिवास, दरियागंज—प० जयभगवान भजनमण्डली, नारायणविहार—प० देवेश, नया बांस—डा० प्रशान्तकुमार वेदालकार, पजाबी बाग एकस्टेंनशन १४/३—सो० वीरपाल विद्यालकार, बाग कड़े खां—प० बख्तराम भजनोपदेशक, मोडल बस्ती—प० सीसराम भजनोपदेशक, महावीरनगर—प० विश्वप्रकाश शास्त्री, रमेशनगर- स्वामी विश्वदेवानन्द, राणाप्रतापबाग—श्रीमती प्रकाशवती शास्त्री, राजा गार्डन—प० प्रकाशवीर 'व्याकुल' रोहतासनगर—श्री महावीर बत्रा, लड्डू घाटी-पहाड़गंज—श्री मोहनलाल गाधी, लक्ष्मीबाई नगर ई १२०८—प० रामरूप शर्मा, लाजपतनगर—प० क्षितीशकुमार वेदालकार, लेखरामनगर-त्रिनगर—डा० सुखदयाल भूटानी, लारेंस रोड—डा० रघुवीर वेदालकार; लोधी रोड—प्रो० सत्यपाल बेदार, विक्रम नगर—प० ओमप्रकाश भजनोपदेशक; विनयनगर—प० वेदपाल शास्त्री, सदर बाजार पहाड़ी धीरज—प० हरिश्चन्द्र शास्त्री; सुदर्शन पार्क—प्रो० भारतमित्र शास्त्री, सराय रोहेला—श्रीमती लीलावती आर्य; सोहनगंज—श्रीमती सुशीला राज्यपाल, शालीमार बाग—प० रविदत्त गौतम, हौज खास डी-२० प० गणेशप्रसाद विद्यालकार, मोडल टाउन—आचार्य रामकिशोर।

—ज्ञानचन्द डोगरा, वेद प्रचार-प्रबन्धक

'जय हो, जय हो'

—राधेश्याम आर्य एडवोकेट,

जिसने जाग्रत ज्योत जगाया, सत्य धर्म का पाठ पढ़ाया,
गीता का अमृतमय पावन -धरती को सदेश सुनाया।
दानवता कर दी दलित—जिसने जगती को, निर्भय हो।
कृष्ण तुम्हारी ! जय हो, जय हो ॥
जन-जन को प्रतिबद्ध किया, 'त्याग' 'मनुजता' बद्ध किया,
मोहाक्रान्त पार्थ का तुमने—धर्म युद्ध कटिबद्ध किया,
भारत के भगवान तुम्ही ने—'प्राण' दिया, शुचि वायु मलय हो।
कृष्ण तुम्हारी ! जय हो, जय हो ॥
जन-जन को देकर नवजीवन, किया प्रफुल्लित भू का कन कन,
युद्ध महाभारत मे तुमने—दिखलाया स्वशौर्य अप्रमन,
द्वापर के युग पुरुष तुम्ही ने—विश्व विजय कर लिया. अजय हो।
कृष्ण ! तुम्हारी, जय हो, जय हो ॥

मुसाफिरखाना, सुल्तानपुर (उ० प्र०)

आर्यसमाजों के नए पदाधिकारी

आर्यसमाज तिलकनगर, नई दिल्ली-१८। प्रधान श्री वीरभान वीर, मन्त्री—श्री जगदीशचन्द्र नागपाल, कोषाध्यक्ष - श्री हरदेव ग्रोवर।

आर्यसमाज अनाज मण्डी शाहदरा, दिल्ली—३२। प्रधान श्री भगवानदास धवन, उपप्रधान—श्री मेधाकर आर्य, श्री उमेशचन्द्र, मन्त्री—श्री श्रद्धानन्द, उपमन्त्री—श्री रामकरण शर्मा और श्री रमेश मसीन; प्रचार मन्त्री श्री फकीरचन्द्र, कोषाध्यक्ष श्री खजांचीलाल गुप्ता- पुस्तकाध्यक्ष—श्री बनवारीलाल।

आर्यसमाज रघुवरपुरा न० २; दिल्ली—३१। प्रधान—श्री विश्वदेव शास्त्री; उपप्रधान—श्री राधाकृष्ण आर्य, श्री कुन्दनलाल जी, मन्त्री—श्री जितेन्द्रकुमार गुप्ता, उपमन्त्री—श्री सुन्दरदास आर्य, प्रचारमन्त्री—श्री बाबूराम आर्य, कोषाध्यक्ष—श्रीमती माधुरीदेवी आर्य, पुस्तकाध्यक्ष—श्री नरेन्द्रकुमार। महिला समाज—प्रधाना—श्रीमती शैलेश गुप्ता, मन्त्रिणी—श्रीमती उर्मिला देवी।

दयानन्द निर्वाण शताब्दी समारोह समिति—सर्व श्री दत्तात्रेय बाब्ले, श्री भूदेव शास्त्री शास्त्री, श्री चमनदास आर्यसेवक, श्री महावीर बहल, श्री मुरारीलाल गुप्त आदि २६ आर्य सज्जनों की समिति गठित की गई है।

आर्यसमाज गुरुकुल विभाग, लुधियाना रोड, फिरोजपुर छावनी। प्रधान—श्री लाला रामचन्द्र आर्य, उपप्रधान—श्री अमरनाथ, मन्त्री—श्री मनोज आर्य, उपमन्त्री—श्री किशोरचन्द्र।

आर्यवीर निधि का देशव्यापी संग्रह

नई दिल्ली। सार्वदेशिक आर्यवीर दल के संचालक श्री प० बाल दिवाकर हंस ने समस्त प्रान्तीय आर्यवीर दल अधिष्ठाताओं और सचालकों को एक परिपत्र भेज कर अनुरोध किया है, कि सारे भारत मे इस बार आर्यवीर दल सदस्यता महाभियान श्रीकृष्ण जन्माष्टमी से प्रारम्भ करके दशहरे के पावन पर्व पर वीर निधि संग्रह के साथ ससमारोह समापन करें। इस कार्यक्रम को सफल बनाने हेतु प्रान्तीय अधिकारी विज्ञप्ति निकाल कर समस्त आर्यसमाजों और आर्यवीर दल शाखाओं को भेजें।



दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रकाशन

सत्यार्थप्रकाश सन्देश (हिन्द)	१.००
,, ,, (अंग्रेजी)	समाप्त
आर्य सन्देश-महासम्मेलन विशेषांक	६.००
पादरी भाग गया— ओम्प्रकाश त्यागी	०.३०
स्वामी श्रद्धानन्द-बलिदान अर्द्ध शताब्दी स्मारिका	६.००
सत्यार्थप्रकाश शताब्दी समारोह रिका	६.००

सम्पर्क करें—
अधिष्ठाता प्रकाशन विभाग
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा,
१५, हनुमान रोड,
नई दिल्ली-११०००१

卐 'आर्यसन्देश' के स्वयं ग्राहक बनें— दूसरों को बनाए

卐 आर्यसमाज के सदस्य स्वयं बनें— दूसरों को बनाइए

卐 हिन्दी-संस्कृत भाषा स्वयं पढ़ें, दूसरों को पढ़ाइए—

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए श्री सरदारी लाल वर्मा द्वारा सम्पादित एवं ... २२७४, रघुवरपुरा नं० २ गांधी नगर दिल्ली ३१ में मुद्रित कार्यालय १५ हनुमान रोड नई दिल्ली फोन ३१०१५० ।

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक मुखपत्र

एक प्रति ३५ पैसे वार्षिक १५ रुपये वर्ष ६ अंक ४२ रविवार १५ अगस्त २४ श्रावण वि० २०३९ दयानन्दाब्द—१५८

जगत् का उपकार-वेदों से। वेद चार ही क्यों ?

—महर्षि दयानन्द सरस्वती

'जो ईश्वरोक्त सत्य विद्याओ से युक्त ऋक् संहितादि चार पुस्तकें हैं, जिनसे मनुष्यों को सत्यासत्य का ज्ञान होता है, उसे वेद कहते हैं।' (आर्योद्देश्य रत्नमाला)

'ऋग्वेद मे सब पदार्थों के गुणो का प्रकाश किया है, जिसमे उनमे प्रीति बढ़कर उपकार लेने का ज्ञान प्राप्त हो सके, क्योकि बिना प्रत्यक्ष ज्ञान के सस्कार और प्रवृत्ति का प्रारम्भ नही हो सकता और आरम्भ के बिना यह मनुष्य जन्म व्यर्थ चला जाता है'' यजुर्वेद मे क्रियाकाड का विधान लिखा है, सो ज्ञान के पश्चात् ही कर्त्ता की प्रवृत्ति यथावत् हो सकती है ' यह भी जानना आवश्यक है कि जगत् का उपकार मुख्य करके दो ही प्रकार का होता है—एक आत्मा का और दूसरा शरीर का अर्थात् विद्यादान से आत्मा और श्रेष्ठ नियमो से उत्तम पदार्थों की प्राप्ति करके शरीर का उपकार होता है, इसलिए ईश्वर ने ऋग्वेदादि का उपदेश किया है कि जिनसे मनुष्य लोग ज्ञान और क्रियाकाण्ड को पूर्ण रीति से जान ले। ···तथा सामवेद से ज्ञान और आनन्द की उन्नति और अथर्ववेद से सर्वसशयो की निवृत्ति होती है, इसलिए चार विभाग किए हैं।' (ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका)।

'जब तक गुण और गुणी का ज्ञान मनुष्यों को नही होता, तब पर्यन्त उनमे प्रीति से प्रवृत्ति नही हो सकती और इसके बिना शुद्ध क्रियादि के अभाव से मनुष्यो को सुख भी नही हो सकता था इसलिए वेदो के चार विभाग किए हैं कि जिससे प्रवृत्ति हो सके। क्योकि जैसे इस गुण ज्ञान विद्या को जनाने से पहले ऋग्वेद की गणना योग्य है, वैसे ही पदार्थों के गुणगान के अनन्तर क्रिया रूप उपकार करके सब जगत का अच्छी प्रकार मे हित सिद्ध हो सके। इस विद्या के जानने के लिए यजुर्वेद की गिनती दूसरी बार की है। ऐसे ही ज्ञान, कर्म और उपासना काड की वृद्धि और फल कितना और कहाँ तक होना चाहिए, इसका विधान सामवेद मे लिखा है, इसलिए उनको तीसरा लिखा है। ऐसे ही तीनो वेदो मे जो-जो विद्या है, उन सब के शेष भाग की पूर्ति, विधान, सब विद्याओ की रक्षा और सशय-निवृत्ति के लिए अथर्ववेद को चौथा गिना गया है। (ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका)

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का वार्षिक साधारण अधिवेशन

प्रतिनिधियों का ब्योरा एवं दशांश भेजें

नई दिल्ली। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का साधारण अधिवेशन आगामी २२ अगस्त, १९८२ को मध्याह्न ३ बजे से आर्य समाज मन्दिर हनुमान रोड में होगा। जिन आर्यसमाजों द्वारा अभी तक अपने प्रतिनिधियो के नाम नही भेजे, उनसे अनुरोध है कि वे तत्काल अपने प्रतिनिधियों के नाम, दशाश, वेद प्रचार एव आर्य सन्देश के शुल्क की राशि अपनी आर्यसमाज के कुल सभासदो की सूची सहित भेज देवें, ताकि प्रतिनिधियो को अधिवेशन का एजेण्डा भेजा जा सके।

आर्य नेता दक्षिण भारत का व्यापक दौरा करेंगे

दौरे का लक्ष्य अधिवेशन की तैयारी एवं समाजों के कार्य का लेखा-जोखा

नई दिल्ली। आन्ध्र आर्य प्रतिनिधि सभा का एक विशिष्ट प्रतिनिधि मडल निकट भविष्य मे जनजागरण को प्रेरणा देने एव दक्षिणी भारत की आर्यसमाजों द्वारा किए कार्यों का लेखा-जोखा प्राप्त करने के लिए सम्पूर्ण दक्षिण भारत की यात्रा करेगा। इस शिष्टमण्डल मे सार्वदेशिक सभा के वरिष्ठ उपप्रधान प० रामचन्द्रराव कल्याणी, डा० अमरेश आर्य और श्री नागमलप्पा आदि आर्य नेता सम्मिलित रहेंगे।

यह शिष्टमडल अक्तूबर मास मे मीनाक्षीपुरम मे आयोजित होने वाले सार्वदेशिक सभा के वार्षिक अधिवेशन तथा उस अवसर पर होने वाले धर्मरक्षा अभियान सम्मेलन की तैयारी मे योग देगा। इस दौरे का कार्यक्रम इस प्रकार बनाया गया है कि मद्रास और मदुरई मे प्रतिनिधि सभा द्वारा आयोजित सार्वजनिक सभाओं में भी प्रतिनिधि मडल के सदस्य भाग ले सकेंगे।

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार

श्री वीरेन्द्र कुलाधिपति तथा श्री हूजा कुलपति नियुक्त

गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय की सीनेट की बैठक रविवार १-८-८१ को आर्यसमाज मन्दिर हनुमान रोड मे हुई, जिसमे सीनेट के ३१ सदस्य उपस्थित थे।

विश्वविद्यालय के सशोधित विधानानुसार वि० वि० के कुलाधिपति के चयन के लिए नियुक्त समिति की सिफारिश के अनुसार श्री वीरेन्द्र जी को वि० वि० का पुन ३ वर्ष के लिए कुलाधिपति सर्व सम्मति से घोषित किया गया।

इसी अवसर पर श्री वीरेन्द्र जी ने उपस्थित सदस्यो को सूचित किया कि वि० वि० के विजीटर डा० सत्यव्रत जी सिद्धातालकार द्वारा आई० ए० एन० अवकाश प्राप्त वर्तमान कुलपति श्री बलभद्रकुमार हूजा को वि० वि० अनुदान आयोग की स्वीकृति से विधिवत आगामी तीन वर्षो के लिए तीसरी बार कुलपति नियुक्त किया गया है।

गुरुकुल कागडी वि० वि० पुन शनै, शनै अपना खोया हुआ गौरव प्राप्त कर रहा है। कांगडी ग्राम भी गुरुकुल के प्रयत्नो से भली प्रकार विकसित कया जा रहा है। हजारो वृक्षारोपण के साथ रेशम के कीडो के पालने की भी योजना अपनाई जा रही है।

श्री रामलाल चौधरी का स्वर्गवास

नई दिल्ली। अत्यन्त खेद का विषय है कि सुप्रसिद्ध आर्य कार्यकर्त्ता एव दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरग सभा के सदस्य आनन्द लोक, नई दिल्ली निवासी श्री रामलाल चौधरी का सोमवार ९ अगस्त, १९८२ की रात्रि को देहावसान हो गया। आर्यसन्देश परिवार की ओर से प्रभु से प्रार्थना है कि वह दिवगत आत्मा को सद्गति देंगे और शोक सन्तप्त परिजनो को हार्दिक सान्तवना देंगे।

सम्पादक—नरेन्द्र विद्यावाचस्पति व्यवस्थापक—प्रद्युम्नलाल तलवाड़

वेद-मनन

जननी और मातृभूमि को कभी शोकमग्न न होने दो

—मनोहर विद्यालंकार

सीद त्व मातुरस्या उपस्थे विश्वान्यग्ने वयुनानि विद्वान् ।
मैनां तपसा मार्चिषाऽभिशोचीरन्तरस्यां शुक्रज्योतिर्विभाहि ॥ यजु: १२-१५

ऋषि – त्रित: । देवता अग्नि: । छन्द-विराट् त्रिष्टुप् ।

शब्दार्थ—हे (अग्ने) मार्गदर्शक नेता (विश्वानि वयुनानि विद्वान्) सब ज्ञान-विज्ञानो को जानता हुआ (अस्या मातु उपस्थे) इस मातृभूमि के सुरक्षित केन्द्र स्थान (गोद) में (सीद) प्रतिष्ठित हो। (एनाम्) इस भूमि पर रहने वाले प्राणियो को (तपसा) अपने तपसे और (अर्चिष) अपने तेज या क्रोध से (मा अभिशोची) शोकयुक्त मत कर। अपितु (शुक्र ज्योति) सूर्य के सदृश शुभ्रदीप्ति होकर (अस्यामन्त) इस भूमि पर रहने वाले सब प्राणियो को (विभाहि) कार्य में प्रवृत्त और उनके अज्ञानान्धकार तथा रोगो को दूर करता हुआ, अपने यश द्वारा खूब चमक।

निष्कर्ष—बहुत बार तपस्वी, विद्वान् और विशेषज्ञ पुरुष अपने देश मे आदर से मिलने से विदेश चले जाते है। शासक का कर्त्तव्य है कि वह उनकी ऐसी व्यवस्था करे कि उन्हे असन्तोष न हो; और उनके विदेश चले जाने से देशवासियो को शोक न करना पडे।

माता का अर्थ जननी और जन्मभूमि दोनो होता है। इन दोनो की कभी उपेक्षा नही करनी चाहिए; किसी लोभ के कारण इन्हे छोडकर विदेश नही जाना चाहिए। यदि इनको दु.ख या सन्ताप पहुचा, तो अपरिमित धन और यश कमाने के बाद भी मनुष्य को सन्तोष और शान्ति नहीं मिल सकती।

जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी। और पितरि प्रीयमाणे तु प्रीयन्ते सर्वदेवता.। यहाँ पिता से माता और पिता दोनो का ग्रहण होता है।

विशेष—इस मन्त्र के ऋषि 'त्रित' और छन्द 'त्रिष्टुप्' दोनो के शब्दार्थ संकेत करते हैं कि मनुष्य को ज्ञान-विज्ञान की प्राप्ति के लिए विदेश तो जाना चाहिए; किन्तु वहाँ की किसी युवति के प्रेम मे फसकर वही नही बस जाना चाहिए। अथवा अपने शासन से आदर न मिलने पर क्रुद्ध होकर विदेश में नहीं जाना चाहिए। अथवा अधिक वेतन या आय के लोभ मे भी अपने देश को अपनी योग्यता से वंचित करके विदेश को लाभ पहुचाने का विचार नहीं करना चाहिए।

ऐसा करने से अपने देशवासियो की दृष्टि मे मनुष्य का स्थान गिर जाता है, और उसे मानसिक शान्ति नही मिलती।

त्रिविध नरकस्येदं द्वार नाशनमात्मन.।
काम, क्रोध स्तथा लोभस्तमा
देत त्त्रय त्यजेत ।: गीता-१६-२१

इन तीनो से बचकर मनुष्य मार्गदर्शक नेता (अग्नि) के समान देदीप्यमान होकर प्रभूत आदर प्राप्त करता है।

अर्थपोषक प्रमाण - त्रित —त्रीन् तरति। त्रिष्टुप्—त्रीन् स्तोमति (अवरोधयति) स्तुस्तम्भे। वयुनम्—प्रशस्यनाम। नि० ३-८, प्रज्ञानाम। नि० ३-९, कान्तिर्वा प्रज्ञा। निरु० ५-१५। शुक्र सूर्य:, तद्वा एष एव शुक्रो य एष आदित्य स्तपति तद्यदेष तपति तेनैष शुक्र। माश ४-२-१-१ तप.—स्वाध्याय: ज्ञान—तपो हि स्वाध्याय। ते. आ० २-१४-२। अर्चि:—हर:। माश ७-५-२-१७ हर क्रोधनाम। नि० २-१३ ज्वलतोनाम। नि० १-१७।

५२२,ईश्वर भवन,खारी बावडी दिल्ली-६

आर्यसमाज झिलमिल कालोनी को दान

श्री मधुसूदन धवन ५००) नकद तथा यज्ञशाला मे मार्बल का फर्श करवाने का वचन, श्री एस० पी० वशिष्ठ १०१), श्री गुलशनकुमार साहनी १०१), श्री राधेश्याम सियाराम सेठी १०१) इससे पूर्व ७५००) यज्ञशाला में व्यय कर चुके हैं शेष धन सहायता का वचन, श्री ओ० पी० सखूजा १०१) तथा बिल्डिंग मेटीरियल, श्री राजेन्द्रप्रसाद गौतम ५१), श्री सुरेन्द्र २१) श्री अशोककुमार नागपाल १०) दो दरियाँ तथा एक कट्टा सीमेंट। इस प्रकार १००१) नकद तथा २ हजार रुपए का बिल्डिंग मेटरयल प्राप्त हुआ।

लोक-चिन्तन

सत्ता और साहित्य

डा० विजय द्विवेदी

पिछले दिनों केन्द्रीय साहित्य अकादमी की गतिविधियो पर संसद के अन्दर और बाहर—दोनो जगहो पर व्यापक चर्चा हुई थी। बहस का आरम्भ भारतीय अंग्रेजी के लेखक/सम्पादक श्री खुशवन्तसिंह ने किया था। इस चर्चा मे साहित्य अकादमी पर आरोप लगाया गया था कि अकादमी भाई-भतीजावाद तथा भ्रष्टाचार का खुला अखाड़ा बन गई है तथा इसके माध्यम से जिन साहित्यकारो को पुरस्कृत/सम्मानित/स्थापित किया जा रहा है, उनकी निष्ठा साहित्य से अधिक सत्ता की राजनीति के प्रति है, इसीलिए अकादमी की स्थापना के पीछे जो उद्देश्य थे वे बाधित हो रहे हैं। अकादमी अपने मूल लक्ष्य से बहुत दूर जाकर साहित्य को राजनीतिक भ्रष्टाचार का भागीदार बनाने वाले माध्यम के रूप मे काम कर रही है। बात अकेले अकादमी की नही है। इसके साथ साहित्य भी जुड़ा हुआ है। अत: साहित्य अकादमी पर विचार करते समय साहित्य की भी चर्चा होनी चाहिए थी, लेकिन ऐसा नहीं हुआ। सम्भवत. यह मान लिया गया कि जो कुछ भी साहित्य के नाम पर सरकारी/गैर सरकारी महलो मे प्रचलित है, वह साहित्य ही है और उसके रचयिताओ को पुरस्कृत होने का अधिकार भी है। कितनी अजीब बात है कि आँखों के अन्धो को नयन-सुख की पदवी देने की वकालत की जा रही है और उन्हे अन्धा बनाने का आरोप राजनीति के सिर मढा जा रहा है।

मैं नहीं कहता कि राजनीति दूध की धुली है अथवा इसमे सब शुद्ध-पूत ही है। राजनीति जब छलिया बन जाती है, तब उससे जडित जीवन के हर क्षेत्र से भ्रम-भ्रष्टाचार का विषैला-कसैला धुआं उठने लगता है। साहित्य का काम इस धुए को छांटने का। यदि वह अपना काम नही कर रहा है, तो वह साहित्य नही है, अन्य चाहे जो कुछ भी हो। साहित्य भावजगत से आता है। भावो मे जबर्दस्त ताकत होती है। अभिव्यक्त होकर प्रभाव अपना प्रभाव-क्षेत्र स्वत बना लेते हैं। भावो से जुड़े अक्षर बोलने लगते हैं। साहित्य शब्द-साधना है। शब्दों के पीछे तप न हो तो उनमे शक्ति नही आती। शक्तिहीन शब्द चाहे जिस नाम से व्यक्त किए जाएं, मनुष्य मे अस्मिता, आत्मगौरव श्रेय एव प्रेय का निर्माण नहीं करती।

हिन्दी के सुप्रसिद्ध कवि और लेखक आचार्य जानकीवल्लभ शास्त्री ने बिहार सरकार द्वारा एक पुल के उद्घाटन के अवसर पर दिए जाने वाले पुरस्कार को ठुकराकर साहित्यकार के उसी आत्मगौरव का परिचय दिया है, जिसकी चर्चा मैंने ऊपर की है। बताते हैं, शास्त्री जी ने कहा…"पुल बनने के अवसर पर कवि को पुरस्कृत करने की कोई तुक नही है और फिर यह पुरस्कार साहित्य की उपलब्धियो के कारण भी नही है।" बधाई हो शास्त्री जी। भूखे भिखारियो की भीड मे कम से कम एक हीरा तो असली निकला। उनके साहस, शक्ति, स्वाभिमान और संघर्ष को मेरा प्रणाम।

—महाराजा पूरणचन्द विद्यालय बारीपदा, उड़ीसा

स्वराज्य हमारा

—राधेश्याम आर्य

वैदिक धर्म पुन जाग्रत हो, सत्य-शिवम सुन्दर जनमत हो,
मानवता के सम्मुख सारा—मानव का समुदाय विनत हो,
कर्मशील हो, धर्मशील हो—युवक वर्ग भारत का सारा।
बने सुराज्य, स्वराज्य हमारा ॥
औषधि युक्त समग्र वनस्पति, उत्तरदायी जनहित के प्रति,
दुराचरण व दुरा-अवस्था…दूर हटे, विस्तृत जो सम्प्रति,
ऋषियो के निर्देशित पथ पर…बढे पुन यह राष्ट्र हमारा।
बने सुराज्य, स्वराज्य हमारा ॥
शान्ति सफलता-समृद्धि छाए, यथासमय घन जल बरसाए,
दैहिक दैविक-भौतिक तापों…से सत्कर्म विमुक्ति दिलाए,
विश्वगुरु बन, पुन: प्रतिष्ठित—हो वसुधा पर भारत प्यारा।
बने स्वराज्य, स्वराज्य हमारा ॥

मुसाफिर खाना, सुल्तानपुर (उ० प्र०)

माता पृथिवी से आकांक्षा

ओ३म् यस्याश्चतस्र प्रदिश पृथिव्या यस्यामन्न कृष्टय सबभवु ।
या बिभर्ति बहुधा प्राणदेजत् सा नो भूमिर्गोष्वंप्यन्ने दधातु ।। अथर्व १२ १ ४

जिस पृथिवी माता को चार दिशाए हैं, जिसमे कृषि और अन्न होता है, जो प्राणवान् ससार का सहारा है, वह पृथिवी माता हमे गो और अन्न से भरपूर करे ।

ओ३म्
आर्य सन्देश

'बहुजन हिताय'-'बहुजन सुखाय'

देश के राजनीतिक दृष्टि से स्वाधीन हुए यद्यपि ३५ वर्ष व्यतीत हो चुके हैं, तथापि अभी तक जनता सुराज्य या रामराज्य का सुख भोगने मे समर्थ नही हो सकी है। इसी के साथ यह कटु तथ्य भी हमे भोगना पडा कि देश की राजनीतिक स्वाधीनता के साथ देश के दो बाजू भी उससे काट कर अलग कर दिए गए। आधुनिक इतिहासकारो ने हमारे देशवासियो में एक भ्रान्त धारणा पैदा करने की कोशिश की है कि भारत की राजनीतिक एकता अग्रेजो की देन थी। अग्रेज जब इस देश पर अपना प्रभुत्व स्थिर रखने मे समर्थ नही हुए तब देश से विदा होते हुए वे उसका विभाजन कर गए। यह बात अत्यन्त ही भ्रान्त एव असत्य थी। अत्यन्त प्राचीन काल से हिमालय से लेकर समुद्र तक तथा पश्चिम में गान्धार से लेकर बग समुद्र तक फैला हुआ विस्तीर्ण देश भारत नाम से जाना जाता था। यह ठीक है कि रामायण के समय भारत या किसी दूसरे नाम का उल्लेख नही मिलता। उस समय राष्ट्र के लिए लोक या भूमि शब्द का प्रयोग ही दृष्टिगोचर होता है, परन्तु महाभारत, मौर्य काल, गुप्त साम्राज्य मे अफगानिस्तान से लेकर बग समुद्र तक एक विस्तीर्ण देश का अस्तित्व विद्यमान था, जिसे विदेशी यात्री और दूत एक बडे देश के रूप मे अगीकार करते थे।

पुरातत्वविद् एव इतिहासकार द पू. एशिया, चीन, मध्य एशिया एव विश्व के अनेक भागो मे भारतीय सस्कृति, धर्म, कला एव विद्याओ के अमर चिन्ह पाकर अब इस तथ्य को अगीकार करने लगे हैं कि भारतीय सन्त, श्रमण, व्यापारी एव विद्वान् बिना किसी राज्याश्रय के अपने ही प्रयत्नों से 'आत्मदीपो भव' पथ प्रदर्शको एव गुरुओ के बिना अपनी व्यक्तिगत ज्योति के बल पर ही ससार मे व्याप्त कुरीतियो, अज्ञान का नाश करने के लिए प्रवृत्त हुए थे। इसी के साथ वे किसी राजकीय शक्ति, सम्पदा या प्रलोभन के सहारे भी देश-देशान्तर और द्वीप-द्वीपान्तर मे नहीं गए थे, प्रत्युत उनके मिशन का एकमात्र लक्ष्य था—बहुजनहिताय और बहुजन सुखाय। ससार के इतिहास का अनुशीलन करने से एक सच्चाई उभर कर सामने आती है कि पश्चिम के सेमेट्रिक यहूदी, ईसाई तथा मुसलमान धर्मों एवं विचारो ने संसार में शक्ति, जबर्दस्ती, प्रलोभन एव अत्याचार के माध्यम मे फैलने की कोशिश की है। यदि वे कही सेवा, चिकित्सा, शिक्षा के बहाने आए भी हैं तो कुछ अपवादो को छोड कर वहां भी प्रलोभन, दबाव और शठता के अवलम्बन मे सकोच नही किया गया। इस की तुलना मे भारत के धर्म प्रचारक व्यापारी एव विद्वान् एकाकी ही सत्य-धर्म का प्रचार करते रहे।

आज हमारा भारत राष्ट्र एक मोड पर खडा है। एक ओर पश्चिमी ज्ञान-विज्ञान के आविष्कार और चमत्कार हैं तो दूसरी ओर भारतीय सस्कृति, धर्म एव परम्पराओ की उदात्त थाती। देश की स्वाधीनता प्राप्ति से पूर्व हमे अपने धर्म, भाषा, सस्कृति और देश पर सच्चा अभिमान था, परन्तु पिछले पैंतीस वर्षों मे देश की आजादी, संस्कृति और परम्पराओ पर गर्व करने वाली पीढी लगभग खत्म हो गई है। अब जिस पीढी का अभ्युदय हो रहा है वह नाम से भारतीय है, परन्तु व्यवहार मे वह मैकाले की अन्ध भक्त। इसी के साथ हम सादगी, सच्चाई, त्याग के स्थान पर प्रदर्शन, चार सौ बीसी और भोग-विलास मे कण्ठ डूब रहे है। इतना ही नही, देश के दो बाजू तो अग्रेज ही काट गए थे, देशद्रोही तत्व देश के अन्य टुकडे करने के लिए भी तुले दीखते हैं। देश की आजादी की पैंतीसवी जयन्ती के अवसर पर हमे देश मे स्वराज्य के साथ सुराज्य लाने के लिए सकल्प करना होगा कि हम 'स्व' के लिए नही, प्रत्युत 'बहुजन हिताय' और बहुजन सुखाय प्रयत्नशील रहेगे, हम अपने जीवन मे पश्चिमी भाषा, सस्कृति और रीति नीति का अन्धानुकरण न कर पश्चिम का जो श्रेष्ठ है, उसे स्वीकार करते हुए अपनी उदात्त परम्पराओं, सस्कृति भाषा ज्ञान-विज्ञान को यत्नपूर्वक बढाने के लिए कृतसकल्प होगे।

चिट्ठी-पत्री

आइए, सच्चा स्वराज्य लाने के लिए कमर कस लें।

आज जब मातृ-भूमि भारत को पुन. और भी खण्ड-खण्ड करने के षडयन्त्र हो रहे हो, जब मातृ सस्कृति और मातृ सभ्यता का पदे-पदे अपमान हो रहा हो, बौद्धिक दासता ने जब राष्ट्र जीवन को जकड लिया हो और विदेशी डालरो के बल पर जब अन्तर्राष्ट्रीय तत्वों का बोलबाला हो, तब एक वीर माता का आदर्श पत्नी और बहन के रूप मे क्या नारी स्वकर्तव्य का पालन कर पुरुष के स्वार्थभीरुता और क्लीवता को दूर करने और उसमे वीरत्व का भाव भरने मे समर्थ सिद्ध होगी ?

यह स्वतन्त्रता दो कौडी की है, जिसमे हमारी मातृ भाषा सस्कृत के सुविकास का अवसर न हो, जिसमे हमारी राष्ट्र भाषा का पदे-पदे अपमान हो, जबकि रेडियो की भाषा नीति मे परिवर्तन करके हिन्दी को सरलीकरण के नाम पर उसके स्वरूप की ही हत्या की जा रही हो, जबकि रेडियो ने 'पश्चिम' की जगह 'पच्छिम' खाद्य तथा कृषि मन्त्री की जगह 'खोराक और खेतीबाडी मत्री' कहा है तो बहुत सभावना है कि मर्यादा पुरुषोत्तम राम को 'बादशाह राम' और माता सीता को 'बेगम सीता' कहने के पुराने हिन्दुस्तानी के प्यार को फिर से प्रकट किया जाए। आवश्यकता है कि कोटि-कोटि भारतीयता प्रेमी भारत मे 'सच्चा स्वराज्य' लाने के लिए कमर कसकर उठ खडे हो।

—प्रद्युम्नलाल तलवाड़ १-२०८ अशोक विहार फेज-१ दिल्ली-५२

शुद्ध एवं सस्वर मन्त्र पाठ का अभ्यास सुगम हो गया।

हमने शुद्ध एवं सस्वर वेदमन्त्रो के शिक्षणार्थ श्री प० वीरसेनजी वेदश्रमी वेदसदन, महारानी रोड, इन्दौर को आमन्त्रित किया था। तदनुसार १० दिन में ही सस्वर वेद पाठ का अभ्यास उन्होने सरलता से सिखाया था। इसी कार्य के विशेष प्रचारार्थ उन्होने शुद्ध एव सस्वर वेदमन्त्र के १० केसेटो की एक श्रेणी निर्मित की है जिसमे सध्याहवन, स्वस्ति वाचन, शान्तिप्रकरण, यजुर्वेद के कुछ प्रसिद्ध अध्याय और ऋग्वेद के भी कतिपय प्रसिद्ध सूक्त है। इनके अतिरिक्त गायत्री मन्त्र तथा मृत्युजय मन्त्र के प्रकृति विकृति पाठ एव कतिपय वेदमन्त्रो का वाद्य सहित गायन आदि भी है। प्राचीन शास्त्रीय परिपाटी से शुद्ध एव सस्वर मन्त्रपाठ के ये केसेट नित्य श्रवण के लिए बहुत उपयोगी हैं।

अब श्री प० वीरसेनजी वेदश्रमी ने एक विशेष कार्य यह किया है कि वेद मन्त्रो के शुद्ध एव सस्वर पाठ के श्रुति परम्परा से अभ्यास केसेट भी तैयार करने प्रारम्भ किये है। उनको सुन सुनकर एव उनके साथ बोलकर कोई भी सस्वर शुद्ध वेद पाठ का अभ्यास कर सकता है। इन केसेटो मे अभ्यास क्रम इस प्रकार है"मन्त्र के प्रत्येक चरण, पक्ति तथा सम्पूर्ण मन्त्र को पांच पांच बार स्वर सहित वेदानुसार उच्चारण रीति से ही टेप किया गया है—जो कि सस्वर मन्त्राभ्यास मे परमोपयोगी है।

हमने ऋग्वेद की रीति से सस्वर मन्त्र पाठ का केसेट तैयार करने का श्री वेदश्रमीजी से निवेदन किया था। उन्होने उसके अतिरिक्त उपर्युक्त रीति से कतिपय मन्त्रो का अभ्यास पाठ भी टेप करके भेजा। सस्वर शुद्ध पाठ के लिये श्रुति परम्परा के अभ्यास के ऐसे केसेट अत्यन्त उपयोगी है। आर्यजन, आर्यसमाजो, आर्य शिक्षण सस्थाओ मे ऐसे केसेटो का होना अत्यन्त आवश्यक है। इन अभ्यास श्रेणी के केसेटों मे प्रात सूक्त, प्रार्थना मन्त्र, शिव सकल्प सूक्त, स्वस्ति वाचन शातिप्रकरण, पुरुष सूक्त के मन्त्रो को विशेष रूप से सबने मगाना चाहिए जिससे सब को शुद्ध एवं सस्वर वेद पाठ का अभ्यास हो सके।

—कृष्ण कपूर, प्राचार्य, आर्य कन्या इन्टर कालेज झाँसी

कांगड़ी ग्राम में वृक्षारोपण अभियान

प्रोफेसर एल. आर शाह, प्रोजेक्ट एडवाइजर, श्री ओ. पी आर्य डी एम. सहारनपुर तथा गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के कुलपति श्री हूजा जी के नेतृत्व मे स्वामी श्रद्धानन्द जी की पुण्य भूमि कागडी ग्राम के हरिजनो की समस्याओ एव उनके निराकरण पर विचार करने के उपरान्त वृक्षारोपण का कार्य का शुभारम्भ किया गया। इस वृक्षारोपण कार्यक्रम के अन्तर्गत कर्नल आनन्द, ग्रुप कमाण्डर एन. सी. सी. तथा मेजर एस. एस. सिद्धू भी अपने कैडेट्स को लेकर इस भव्य कार्यक्रम मे सम्मिलित हुए। सैकड़ों वृक्ष लगाकर गरीब जनता को प्रोत्साहित किया गया और उनकी रक्षा का कार्य प्रत्येक ग्रामवासी के जिम्मे लगाया गया।

स्वाधीनता के दिवस पर

काकोरी के वे बलिदानी : गाते-गाते दी कुरबानी

"यदि देशहित मरना पडे
मुझको सहस्रो बार भी ।
तो भी न मैं इस कष्ट को
निज ध्यान लाऊ कभी ॥
हे ईश भारतवर्ष मे
शतबार मेरा जन्म हो ।
कारण सदा ही मृत्यु का
देशोपकारक कर्म हो ।"

उपर्युक्त प्रतिज्ञा शाहजहांपुर उत्तर-प्रदेश के महान बलिदानी प० रामप्रसाद 'बिस्मिल' की थी, जिन्होने उ० प्र० में 'हिन्दुस्तान-रिपब्लिक-एसोसिएशन' का संगठन करके अग्रेजी शासन के विरुद्ध स्वाधीनता की लडाई क्रान्तिकारी ढंग से तीव्र की थी। १९१९ मे जलियावाले बाग में हजारो निहत्थे देशवासियों को गोरखा सिपाहियो ने मशीनगनो की गोलियो से निर्दयतापूर्वक भून डाला था और उसके बाद ही पंडित 'बिस्मिल' तथा अशफाकउल्ला खां ने अग्रेजो के विरुद्ध क्रांतिकारी कदम उठाने की प्रतिज्ञा की थी।

वर्तमान शताब्दी के तीसरे दशक मे देश की आजादी के लिए सिरो से कफन बांधकर निकले नौजवानों की फाका-कशी जब प० 'बिस्मिल' से न देखी गई तो किसी की निजी सम्पत्ति के स्थान पर गोरी सरकार के रेलगाडी मे जाने वाले खजाने को लूटने की योजना बनाई और उस योजनानुसार ९ अगस्त, १९२५ की रात में आलमनगर तथा काकोरी स्टेशनो के बीच ८ डाउन पैंसिजर ट्रेन को रोक कर सरकारी खजाने के १० हजार रुपए उ० प्र० के क्रांतिकारियो ने लूट लिए थे। फिरगी सरकार को चुनौती सिद्ध होने वाली रेलगाडी के खजाने की इस लूट को स्वाधीनता-सग्राम के इतिहास मे 'काकोरी-ट्रेन-डकैती-काड' नाम से लिखा गया है, जिसमे प० रामप्रसाद 'बिस्मिल' के नेतृत्व मे अशफाकउल्ला खा, राजेन्द्र-नाथ लहरी, प० चन्द्रशेखर 'आजाद', शचीन्द्रनाथ बख्शी, मुकुन्दीलाल, केशव चक्रवर्ती, मुरारीलाल, बनवारीलाल तथा मन्मथनाथ गुप्त ने भाग लिया था।

क्रान्तिकारियो के पुराने रिकार्ड तथा कुछ नए क्रान्तिकारियो की भूलो से क्रान्तिकारी दल के कुछ सदस्य जल्दी ही गिरफ्तार कर लिए गए तो कुछ कमजोर साथियो ने अन्य क्रान्तिकारियों के नाम बता दिए और इस कारण एक साल के भीतर प० 'बिस्मिल' सहित अनेक सदस्य जेल पहुच गए। बराबर गिरफ्तारिया होती रही परन्तु 'आजाद' पुलिस के लम्बे हाथो की पहुंच से दूर रहे। अशफाकउल्ला खां को दिल्ली में भारत से बाहर जाने की पहल करते समय एक पठान दोस्त की गद्दारी से गिरफ्तार कर लिया गया।

उस समय जेल नारकीय यातनाओं के केन्द्र थे और इस विषय पर वीर सावरकर से लेकर बाद के सभी भुक्त-भोगियो ने विस्तार से लिखा है। जेलों मे हो रहे अत्याचारो के विरुद्ध प० 'बिस्मिल' ने अपने सभी साथियो सहित १६ दिन का अनशन किया, जो धूर्त जेलर की चालाकी से बिना शर्त हो गया, किन्तु परवर्ती स्वाधीनता-सेनानियों को उसका अवश्य लाभ हुआ और जेलो के नियम बदल गए। साधनहीन क्रान्तिकारियो ने जेल की तन्हाई से निपटने तथा अपना मनोबल ऊचा रखने के लिए गीत और कविता का आश्रय लिया। काकोरी केस के क्रान्तिकारी जेल की कोठरियो को सर फरोशी के गीत से आबाद रखते थे, कचहरी जाते समय सरफरोशी का मन्त्र जपते थे और एक दूसरे से मिलने या बिछडने पर सरफरोशी का गीत मिलकर गाते थे। महान सरफरोश प० 'बिस्मिल' की पसन्द का जो गीत डेढ वर्ष मे 'वन्देमातरम्' के समान पूरे देश मे लोकप्रिय हो गया उसे अक्षरश नीचे दिया जा रहा है—

''सरफरोशी की तमन्ना
अब हमारेदिल मे है,
देखना है जोर कितना
बाजु-ए-कातिल मे है।
रहरवे राहे मुहब्बत
रह न जाना राह में,
लज्जते सहरा-नवर्दी
दूरि-ए-मजिल मे है।
अब न अगले वलवले हैं
और न अरमानो की भीड़,
अब तो मिट जाने की हसरत
इक दिले 'बिस्मल' मे है।
आज मकतल मे यह कातिल
कह रहा है बार-बार,
क्या भला शौके शहादत भी
किसी के दिल मे है।
वक्त आने दे बता दूगा
तुझे ए आसमा,
हम अभी से क्या बताए
क्या हमारे दिल मे है।
ऐ शहीदे मुल्को-मिल्लत मे तेरे
ऊपर निसार,
अब तेरी हिम्मत का चर्चा गैर की
महफिल मे है।''

लखनऊ की एक विशेष अदालत में जनाब ऐनुद्दीन के अधीन क्रान्तिकारियों पर लगभग डेढ वर्ष तक केस चलता रहा। उस समय तक बदी न बनाए जा सके चन्द्रशेखर 'आजाद' ने अपने क्रांतिकारी साथियों को जेल से छुडाने की योजना बनाई थी, किन्तु अन्ततः वह कार्यरूप में परिणत न हो सकी। आशा और निराशा की ऊहापोह के उन्ही क्षणो में प० 'बिस्मिल' ने अपनी मनोव्यथा एक गीत के माध्यम से प्रकट की थी। पिंजड़े की कैद से मुक्त होने को छटपटा रहे पछी जैसी स्थिति को अत्यन्त प्रभावशाली ढग से 'प्रेम-कविता' शीर्षक गीत मे पं० 'बिस्मिल' ने प्रस्तुत किया था। वह गीत जनाब ऐनुद्दीन की इजाजत से 'अवध-अखबार' मे छपा था। उस गीत के शब्द-शब्द मे शहादत की जो तड़प है वह बेमिसाल है—

''मिट गया जब मिटने वाला
फिर सलाम आया को क्या ?
दिल की बरबादी के बाद
उनका पयाम आया तो क्या ?
काश अपनी जिन्दगी में हम ये
मजर देखते,
यूं सरे तुरबत कोई महशर
खराम आया तो क्या ?
मिट गई जुमला उम्मीदें,
जाता रहा सारा ख्याल,
उस घडी फिर तामाबर
लेकर पयाम आया तो क्या ?
ऐ दिले नाकाम मिट जा
अब तो कूचे यार में,
फिर मेरी नाकामियों के बाद
काम आया तो क्या ?
आखिरी शब दीद के
काबिल थी 'बिस्मिल' की तड़प,
सुब्ह दम गर कोई भी
बाला-ए-बाम आया तो क्या ''

क्रान्तिकारी देशभक्तो के विरुद्ध सरकारी वकील थे पं० जगतनारायण और आनदनारायण मुल्ला जिन्हें क्रमशः ५०० तथा १०० रु० प्रतिदिन मिलते थे। उन्हें बचाने वालों मे कलकत्ता के बैरिस्टर बी० एम० चौधरी, लखनऊ के प्रोफेसर कृपाशकर हजेला, हरकरणनाथ मिश्र, आर० एफ० बहादुर जी, गोविन्द वल्लभ पन्त, अजीतप्रसाद जैन, गोपीनाथ श्रीवास्तव, मोहनलाल सक्सेना तथा चन्द्रभानु गुप्त थे जो देशभक्तों की पैरवी मुफ्त कर रहे थे। शासकीय दमन नीति के विरुद्ध बचाव पक्ष हार गया और ६ अप्रैल, १९२७ को फिरंगी सरकार के हिमायती स्पेशल जज हेमिल्टन ने अपने फैसले मे प० रामप्रसाद 'बिस्मिल' का उत्तर भारत का सबसे खतरनाक क्रान्तिकारी बताकर फांसी की सजा सुना दी। पंडित जी के दायें हाथ के रूप में अशफाकुल्ला खां को भी फांसी का हुक्म हुआ और ठाकुर रोशनसिह तथा राजेन्द्रनाथ लहरी को भी फांसी का उपहार मिला। १४ क्रान्तिकारियों को देशभक्ति के लिए लम्बी-लम्बी सजाएं दी गयीं।

लेखक :
ब्रजभूषण दुबे

फांसी की सजा 'प्रिवी-कौन्सिल' से भी बहाल रही। इस सदर्भ में यह बताना अप्रासगिक न होगा—'कि लखनऊ के तत्कालीन जेलर श्री तिवारी प० 'बिस्मिल' पर पुत्रवत स्नेह रखते थे और उन्होने 'बिस्मिल' को लखनऊ जेल मे फांसी दिलाने से साफ मना कर दिया था। फासी से पूर्व प० 'बिस्मिल' को गोरखपुर जेल स्थानान्तरित कर दिया गया और वही से उन्होंने अपनी आत्मकथा लिखकर जेल से बाहर गोरखपुर के पत्रकार दशरथप्रसाद द्विवेदी के पास भिजवा दी। स्व० गणेशशंकर 'विद्यार्थी' ने उस आत्मकथा को सर्वप्रथम प्रकाशित किया, किन्तु अंग्रेज सरकार ने वह पुस्तक जब्त कर ली। देश की आजादी के बाद १९५७ में श्रद्धेय दादा बनारसीदास चतुर्वेदी के सुयोग्य सम्पादन में 'बिस्मिल की आत्मकथा' पुन. छपकर देशवासियों तक पहुची। स्वाधीनता-सेनानियों द्वारा कारागार मे लिखी — आत्मकथाओ मे 'बिस्मिल की आत्मकथा' प्रथम ही नहीं बल्कि हिन्दी की श्रेष्ठ रचना भी है।

कोकोरी-केस मे फासी की सजा पाने वाले चारो क्रान्तिकारियों को १९ दिसम्बर, १९२७ को अलग-अलग जेलो में फांसी दी जानी थी, किन्तु पूर्व घोषणा से २ दिन आगे १७ दिसम्बर को राजेन्द्र नाथ लहरी को गोंडा जेल मे फांसी लगी।

ठाकुर रोशनसिह वास्तव में एक जिन्दादिल आदमी थे और पवित्र भगवत् गीता को हाथो मे लेकर १९ दिसम्बर, १९२७ को वह इलाहाबाद मे यह कहते हुए फांसी के तख्ते की ओर बढ़े और शहीद हो गए—

"जिन्दगी जिन्दादिली को
जान ये 'रोशन'।
वरना कितने मरे और
पैदा होते जाते हैं ॥"

(शेष पृष्ठ ६ पर)

राष्ट्र को श्रीकृष्ण की देन

—चमनलाल

योगिराज आनन्दकन्द श्री कृष्णजी का जन्म महोत्सव गत हजारो वर्षों से प्रति वर्ष भाद्र मास के कृष्ण पक्ष की अष्टमी को देश के कोने-कोने मे मनाया जाता है। देश का कोई छोटा-बड़ा नगर और उसमें कोई भी छोटा बड़ा मन्दिर नहीं होता, जहाँ यह उत्सव न मनाया जाता है। कुछ लोगो का कहना है कि आर्यसमाजी मर्यादा पुरुषोत्तम राम और योगिराज कृष्ण जैसे महापुरुषो की कड़ी आलोचना करता है, परन्तु यह आरोप सर्वथा मिथ्या है। महर्षि के आने से पहले तो इन महापुरुषो को इनके ऊपर मनमाने झूठे लाछन लगाए थे। भला हो आर्यसमाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द जी का जिन्होंने इन महापुरुषों के सत्य स्वरूप को जनता के सामने रखा और अपनी प्राचीन सस्कृति तथा सभ्यता का गौरव बढाया। महर्षि ने सत्यार्थ-प्रकाश के ग्यारहवें समुल्लास मे श्री कृष्ण जी के सम्बन्ध मे कितना लिखा है—

'देखो! श्री कृष्ण जी का इतिहास महाभारत मे अत्युत्तम है। उनका गुण, कर्म, स्वभाव और चरित्र आप्त पुरुषों के सदृश है जिसमें कोई अधर्म का आचरण श्री कृष्ण जी ने जन्म से मरण पर्यन्त किया हो, ऐसा नहीं लिखा। और इस भागवत वाले ने अनुचित, मनमाने दोष लगाए हैं। दूध, दही, मक्खन, आदि की चोरी और कुब्जा दासी से समागम, परस्त्रियो से रासमण्डल क्रीड़ा आदि मिथ्या दोष श्री कृष्णजी मे लगाए हैं इसको पढ़-पढा सुन-सुना के अन्य मत वाले श्री कृष्ण जी की बहुत-सी निन्दा करते हैं। जो यह भागवत न होता, तो श्री कृष्ण जी के सदृश महात्माओ की निन्दा क्योकर होती। ऐसे महान आत्मा थे हमारे द्वापर युग के महान नेता श्री कृष्ण चन्द्रजी जरा विचारिए तो सही कि कोई अन्य व्यक्ति इससे बढ़कर श्रद्धाजलि कृष्ण जी को दे सकता है।

वह युगपुरुष आप्त पुरुष, वीर योद्धा, कुशल शासक, योग सिद्ध, अद्वितीय नैतिकपा के भण्डार युद्ध नीति मे निपुण और बेजोड़ सूझ बूझ के स्वामी थे। वह सच्चे आर्य, वेद शास्त्रो के परम विद्वान सच्चे सखा और पुरुषोत्तम थे। नित्य दैनिक हवन यज्ञ, सध्या आदि मे पूर्ण निष्ठावान थे। घर में हो या यात्रा में, या युद्ध में हो, वह यह दैनिक कर्म अचूक करते थे। गीता में कई स्थानो पर इसीलिए इनको महात्मा कहा है, परन्तु बड़े ही दुख की बात है कि सारी हिन्दू जाति इनको ऊपर कहे भागवत के रासमण्डल वाले कृष्ण, गोपियों के कृष्ण तथा दूध, दही मक्खन चोरे आदि के रूप मे ही मना कर ही प्रसन्नता अनुभव करते हैं।

श्री कृष्ण ने बचपन से ही अन्याय, असत्य, अत्याचार, भ्रष्टाचार, दुराचार, दुष्टो के विरुद्ध सघर्ष, अबलाओ की सहायता और देश मे शान्ति स्थापित करने का दृढ व्रत लिया था और छोटे-छोटे खण्डो मे बटे देश को एक राजनीतिक सूत्र मे बाधने और इसको महाभारत बनाने का जो सकल्प किया था, वह उन्होंने अपने जीवन की बाजी लगाकर अपने जीवन काल मे ही पूरा भी किया। जब श्री कृष्ण जी का प्रादुर्भाव हुआ, तब देश की राजनीतिक परिस्थिति महाभारत के निम्न श्लोक मे दर्शाई है—

> देशे देशे हि राजान:
> स्वस्थ स्वस्थ प्रियंकरा.।
> न च साम्राज्यमाप्तास्ते,
> सम्राट् शब्दोहि कृच्छभाक ॥

अर्थात् छोटे-छोटे प्रदेशो के अलग-अलग शासक थे और वे अपने क्षुद्र स्वार्थों में लगे रहते थे। राष्ट्र की चिन्ता किसी को नहीं थी। साम्राज्य किसी को प्राप्त नहीं था, और कोई सम्राट कहे जाने योग्य नहीं था। अपनी छोटी-सी रियासत में बैठा राजा अपने आपको एक महान योद्धा समझता था। ऐसी गम्भीर परिस्थिति मे श्रीकृष्ण जी ने आर्यावर्त के राजनीतिक रगमच पर अवतीर्ण होकर सारे अखण्डित भारत को भावना तथा राजनीतिक एकता के सूत्र मे बाधकर केन्द्र मे ऐसी सुदृढ राजसत्ता स्थापित की कि आगामी सहस्रो वर्षों तक किसी विदेशी आक्रमणकारी को इस देश पर हमला करने की हिम्मत न की, और यदि किसी ने की भी तो उसे मुंह की खानी पड़ी।

वास्तव मे श्रीकृष्ण अपने अनेक गुणों के कारण हमारे जीवन मे छाये हुए हैं और हमारे जीवन का एक अभिन्न अग बन गए है। इन्ही गुणो के कारण

(शेष पृष्ठ ८ पर)

आर्य जगत् समाचार

सब नागरिकों पर समान कानून लागू किया जाए

क्या भारत सरकार बंगला सरकार से सबक सीखेगी ?

नई दिल्ली । २० जुलाई के टाइम्स आफ इंडिया मे प्रकाशित इस समाचार पर कि बंगला सरकार ने अपने देश मे बढ़ती हुई जनसंख्या पर नियन्त्रण करने की दृष्टि से बहु विवाह पर प्रतिबंध लगाते हुए घोषणा की है कि जो व्यक्ति सरकार की अनुमति लिए बिना दूसरा विवाह करेगा उस पर १०,०००) दस हजार रुपए जुर्माना किया जाएगा, अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री तथा भू० पू० संसद सदस्य श्री ओमप्रकाश त्यागी ने कहा कि शुद्ध इस्लामिक बंगला देश सरकार का यह कदम साहसिक एवं सराहनीय तथा अनुकरणीय है। भारत सरकार को भी देश भर के नागरिकों पर समान कानून प्रचलित कर बहु विवाह, बाल विवाह पर रोक लगाकर परिवार नियोजन लागू करना चाहिए।

श्री त्यागी ने कहा कि कुछ समय पूर्व पाकिस्तान सरकार ने भी अपने यहा जनसंख्या पर नियन्त्रण करने की दृष्टि से ऐसा ही कानून बनाया था कि जिसके अनुसार वहां के किसी नागरिक को दूसरा विवाह करने से पूर्व अपनी पहली स्त्री की लिखित अनुमति लेना आवश्यक था । मलेशिया, इंडोनेशिया आदि मुस्लिक देशो ने भी अपनी जनसंख्या पर नियंत्रण करने के लिए विभिन्न रूपो मे कानून बनाए हैं।

महर्षि एवं हुतात्मा के नाम का दुरुपयोग न हो ।

दिल्ली । सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री ओमप्रकाश त्यागी ने सूचना दी है कि सभा के निश्चयानुसार (१) सार्वदेशिक सभा अथवा इस सभा से सम्बद्ध प्रांतीय सभा की अनुमति के बिना कोई आर्यसमाज महर्षि दयानन्द और हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी के नाम का दुरुपयोग न करें और उनके नाम पर संस्थाए न खोले ।

(२) आर्य समाज, महर्षि दयानन्द और हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द के नाम पर कोई व्यक्ति और उसका समूह अनाथालय, विधवाश्रम, महिलाश्रम आदि संस्थाए सार्वदेशिक सभा या प्रान्तीय प्रतिनिधि सभा की अनुमति के बिना न खोले ।

पंडिता राकेशरानी के विरुद्ध ७ अभियोग

नई दिल्ली । दिल्ली का प्रशासन जनज्ञान मासिक की सम्पादिका व अध्यक्षा पंडिता राकेशरानी के विरुद्ध २६-७-८२ तक सात अभियोग धारा १५३ और २९५ ए के अन्तर्गत चला चुका है। प्रमुख विचारकों की मान्यता है प्रशासन की इस कार्रवाई से प्रेस एवं विचारो की स्वाधीनता को गहरी क्षति पहुंची है।

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद दिल्ली प्रदेश के तत्वावधान में १२ अगस्त १९८२ साय ७ बजे आर्यसमाज कबीर बस्ती पुरानी सब्जी मंडी मे श्री कृष्ण जन्माष्टमी उत्सव मनाया जा रहा है। जिसमे श्री चिन्तामणि जी, श्री मुल्खराज भल्ला, श्री रामनाथ सहगल, श्री मामचन्द रिवारिया तथा प० चुन्नीलाल जी व श्री गुलाबसिंह राघव के उपदेश व सुन्दर भजन होगे। श्री कृष्ण जी के जीवन से परिचित होने का सुअवसर।

शिक्षण अभ्यास शिविर

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद दिल्ली प्रदेश के तत्वावधान मे 'आर्य युवक अभ्यास शिक्षण शिविर' १३ अगस्त १९८२ साय ७ बजे से आर्यसमाज मन्दिर मार्ग मे दो द्विसीय शिविर आयोजित होगा, जो १५ अगस्त रात्रि समाप्त होगा।

आर्यसमाज जोड़ा सांकू में मुसलमान युवक की शुद्धि

'आर्य समाज जोडा सांकू के तत्वावधान मे समाज कार्यालय ४२ शंकर-होल लेन कल०-६, मे २५-६-८२ रविवार प्रात ९ बजे मोहम्मद अली आजाद आयु २५ वर्ष ११ गोप लेन कलकत्ता १४ का शुद्धि संस्कार प० वेदप्रकाश के पौरोहित्य में सम्पन्न हुआ। जिसका नया नाम श्री शंकरसिंह रखा गया। शुद्धि संस्कार मे श्री प० रुद्रदत्त शास्त्री देहरादून, श्री शिवधरजी आर्य पटना तथा अनेक सज्जन मौजूद थे ।

बोध-कथा

गद्दारी

पलासी के युद्ध क्षेत्र मे एक ओर बंगाल-बिहार के सूबेदार नवाब सिराजुद्दौला की फौज खडी थी. उसके मुकाबले अंग्रेजो के सेनाध्यक्ष क्लाइव की सेना थी। नवाब की फौज २५ हजार से कम नही थी और दूसरी ओर विदेशी सेना में केवल दस हजार सैनिक थे जिसमे कुछ चुने हुए अंग्रेज अफसर और वेतनभोगी भारतीय फौजी थे। दोनों सेनाओ के बीच फासला बहुत कम था'''यानी दो फर्लांग से भी कम। दो तीन घन्टे की भीषण लडाई मे ही सब खेल खत्म हो गया। मीर मदन और सिराजुद्दौला बहादुरी से लडे दोनो मारे गये। बहुत थोडी सेना कटी, पर बाकी फौज या तो भाग गई या मीर जाफर के नेतृत्व मे युद्ध के मैदान मे खडी-खडी तमाशा देखती रही। एक ओर २५ हजार फौज थी और दूसरी बाजू केवल दस हजार। दोनों ओर के सिपाहियों की गिनती मिलाकर भी वे केवल ३५ हजार थे। क्लाइव जीत गया। कुल बंगाल-बिहार पर अंग्रेजो का कब्जा हो गया। ३ हजार में से कुछ हजार लोगो की गद्दारी से ३५ करोड के भाग्य का निर्णय हो गया। अगर क्लाइव हार जाता तो अंग्रेजों के हाथ मे हिन्दुस्तान न जाता।

इस तरह सारे देश के भाग्य का निर्णय चन्द घन्टो मे एक मैदान मे चन्द लोगो ने कर दिया और हमारे देश की जनता सोती रही। हमारे भारतीय फौजी सिपाही विदेशियो के भाड़े के टट्टू बन गए।

—नरेन्द्र

कर्मवीर जियालाल जी से प्रेरणा लें

श्रावणी पर्व पर कर्मवीर पं० जियालाल जन्म जयन्ती सम्पन्न

अजमेर। आर्यसमाज भवन केसरगंज मे दि० ४ अगस्त ८२ ई० बुधवार को श्रावणी पर्व एव कर्मवीर प० जियालाल जन्म जयन्ती श्री प० विश्वदेव शर्मा, प्रधान सपादक 'दैनिक न्याय' की अध्यक्षता मे बडी धूमधाम के साथ मनाई गई।

इस पुनीत अवसर पर श्री देवदत्त शास्त्री के सयोजकत्व मे बृहद यज्ञ हुआ तथा आचार्य गोविन्दसिंह प्रो० अभयदेव शर्मा, श्री पन्नालाल माहेश्वरी, श्री रतनलाल पालडिया एव श्री दत्तात्रेय वाब्ले के भाषण एव प्रवचन हुए। आर्य समाज अजमेर के प्रधान श्री वाब्ले ने सभा को सबोधित करते हुए कहा कि हमे उनके महान जीवन एव महान कार्यो को आदर्श बनाकर उनमे प्रेरणा ग्रहण करनी चाहिए तभी इस जयन्ती को बनाना सार्थक होगा।

तदनन्तर श्री अनन्त राव, श्री रामचन्द्र एव दयानन्द बाल सदन की भजन मण्डली के मधुर भजन हुए। पश्चात् धर्म परीक्षा मे सम्मिलित होने वाले ३०० विद्यार्थियों में से प्रथम द्वितीय व तृतीय आने वाले छात्र-छात्राओं को अध्यक्ष महोदय ने पुरस्कृत किया।

काकोरी के बलिदानी'''' पृष्ठ ४ का शेष

कुरान-शरीफ को लेकर उसी सुबह फैजाबाद जेल मे शहीद होने से पहले हिन्दू मुस्लिम-एकता के महान समर्थक अशफाकउल्ला खां वारसी 'हसरत' ने यह शेर पढा था—

"तंग आकर हम भी उनके
जुल्म के बेदाद से ।
चल दिए सू-ए-अदम
जिन्दाने फैजाबाद से ॥"

धनी घर के ठाकुर रोशनसिंह तथा पठान खानदान के बलशाली युवक अशफाक को अपने समर्पित जीवन तथा प्रभावशाली व्यक्तित्व की चुम्बकीय-शक्ति से क्रान्तिकारी बनाने वाले 'हिन्दुस्तान-रिपब्लिकन-एसोसिएशन' के वरिष्ठ सगठनकर्त्ता प० रामप्रसाद 'बिस्मिल' ने गोरखपुर जेल मे प्रातः कालीन सध्या से निवृत होकर १९ दिसम्बर १९२७ को फांसी के तख्ते की ओर बढ़ते हुए अपनी अन्तिम इच्छा इन शब्दो मे व्यक्त की थी —

"मालिक तेरी रजा रहे
और तू ही तू रहे।
बाकी न मैं रहूं
न मेरी आरजू रहे ॥
जब तक कि तन में जान
रगों मे लहू रहे।
तेरा ही जिक्र या तेरी ही
जुस्तजू रहे ॥"

३०, गोपीचन्द रोड, कलकत्ता-७०००१४

आर्यसमाजों के सत्संग

१५ अगस्त'८२

अन्धा मुगल-प्रताप नगर—प० ईश्वरदत्त; अमर कालोनी—प० खुशीराम शर्मा, अशोक नगर—प० सोमदेव शास्त्री, आर. के. पुरम सेक्टर-५—श्री देवीचरणबन्सल; आर. के. पुरम सेक्टर-६—श्रीमती लीलावती आर्या; आर. के पुरम सेक्टर-९—प० ओमप्रकाश वेदालकार; आनन्द विहार हरि नगर एल ब्लाक—प० विश्वप्रकाश शास्त्री; इन्द्रपुरी—प० मुनिशकर वानप्रस्थ, किशनगज मिल एरिया—प० वेदव्यास भजनोपदेशक; किंग्जवे कैंप—स्वामी शान्तानन्द; करोल बाग—प० विद्या भास्कर, कृष्ण नगर—प० आशानन्द भजनोपदेशक; ग्रेटर कैलाश-I प० छविकृष्ण शास्त्री; ग्रेटर कैलाश-II—प० रामनिवास; गुड मडी—प० रघुराज शास्त्री; गुप्ता कालोनी—प० प्राणनाथ सिद्धातालकार; गोविन्दपुरी—प० कामेश्वर शास्त्री; चूना मडी-पहाड़गज—आचार्य हरिदेव सि० भू०; जनकपुरी बी ३/२४—पं० हरिश्चन्द्र आर्य; टैगोर गार्डन—ला० लखमीदास आर्य; तिलक नगर—प० वेदपाल शास्त्री, तिमारपुर—प० मनोहरलल ऋषि भजनोपदेशक, दरियागज—प० प्रकाशचन्द वेदालकार; नारायण विहार—पं० प्रकाशवीर 'व्याकुल', नया बास—प्रो० रामसिह; न्यू मोतीनगर—प० जयभगवान भजन मण्डली, निर्माण विहार—डा० रघुनन्दनसिह, पजाबी बाग एक्स्टेंशन—आचार्य नरेन्द्र शास्त्री; प्रीतमपुरा—पं० देवराज वैदिक मिशनरी, बाग कड़े खा—प० बरकत राम भजनोपदेशक; मोडल बस्ती—पं० रामरूप शर्मा; महरौली—स्वामी विश्वदेवानन्द, रमेश नगर—प० तुलसीराम भजनोपदेशक; राणा प्रताप बाग—प० सीसराम भजनोपदेशक; राजौरी गार्डन—प० ओमप्रकाश भजनोपदेशक; लड्डू घाटी-पहाडगज—प० सत्यदेव भजनोपदेशक, लक्ष्मीबाई नगर—प० वेद व्यास भजनोपदेशक; लेखराम नगर-त्रिनगर—प० प्रकाशचन्द्र शास्त्री तथा श्री प० चुन्नीलाल जी भजन मडली; लारेन्स रोड—आचार्य दीनानाथ सिद्धातालकार. विक्रम नगर—श्रीमती प्रकाशवती शास्त्री, सुदर्शन पार्क—प्रो० भारत मित्र शास्त्री, सराय रोहेला—प्रो० सत्यपाल बेदार' सोहन गज—प० हरिश्चन्द्र शास्त्री; श्री निवासपुरी—श्री मोहनलाल गाधी, शालीमार बाग—प० गणेशप्रसाद विद्यालकार, हनुमान रोड—श्री ओमप्रकाश त्यागी, हौज खास डी-२०—डा० रघुवीर वेदालंकार, मोडल टाउन—प्रो० वीरपाल विद्यालकार, झण्डेवालान एक्स्टेंशन—प० सत्यपाल मधुर, ग्रीन पार्क—प० अशोक कुमार विद्यालकार।

—शामचन्द डोगरा, वेद प्रचार प्रबन्धक

दिल्ली की आर्यसमाजों में वेद-प्रचार

'आर्यसमाज हौजखास के तत्वावधान मे ४ अगस्त से १२ अगस्त तक प्रति दिन साय साढे छह से साढे आठ बजे तक हौजखास एव गुलमोहर पाक आदि मे आर्य सज्जनों के घरो पर बारी-बारी से वेद प्रचार सप्ताह के अवसर पर यज्ञ, भजन का कार्यक्रम आयोजित किया गया। आचार्य नरेन्द्र एम. ए. ने सच्चे आनन्द की प्राप्ति कैसे हो, विषय पर प्रवचन दिए।

आर्यसमाज मालवीय नगर में ४ अगस्त से १२ अगस्त तक प्रात ५ से ७ बजे तक यजुर्वेद पारायण यज्ञ का कार्यक्रम आयोजित किया गया। यज्ञ मे ब्रह्मा डा० तीर्थराज शास्त्री थे।

आर्यसमाज नया बांस मे ४ अगस्त से १२ अगस्त तक प्रात. ७ से साढे आठ बजे तक नव दिवसीय ब्रह्म परायण यज्ञ किया गया। यज्ञ के ब्रह्मा प० अशोककुमार वेदालकार थे। ४ अगस्त से १४ अगस्त तक रात्रि को ८-४५ से ९-४५ आचार्य पुरुषोत्तम एम ए ने पृथिवी सूक्त पर वेद कथा की। कथा से पूर्व प्रतिदिन स्वामी स्वरूपानन्द जी और पन्नालाल पीयूष के भजन हुए।

जन्माष्टमी महोत्सव

परिषद कार्यालय आर्य समाज कबीर बस्ती मे १२ अगस्त १९८२ रात्रि ७ बजे से ९॥ बजे तक 'श्री कृष्ण जन्माष्टमी महोत्सव' व्यवस्था से मनाया जा रहा है।

जिसमें श्री महाशय धर्मपाल, श्री रामनाथ सहगल, श्री मामचन्द रिवारिया, श्री दत्तात्रेय तिवारी सम्पादक सार्वदेशिक आदि की भी भाग लेने की सम्भावना है।

आर्यसमाजों के नए पदाधिकारी

आर्यसमाज झिलमिल कालोनी। प्रधान—डा० सत्येन्द्र वेदालकार। उपप्रधान श्री एस० पी० वसिष्ठ, वरिष्ठ मन्त्री--श्री मधुसूदन धवन; सहमन्त्री--श्री गुलशनकुमार साहनी, कोषाध्यक्ष--श्री पृथ्वीराज आर्य, लेखा निरीक्षक--बाबू मूलराज डोगरा; पुस्तकाध्यक्ष--श्री राकेशकुमार मेहरा; स्त्री आर्यसमाज झिलमिल कालोनी-श्रीमती विमलादेवी मेहरा; मन्त्रिणी--श्रीमती रुक्मिणीदेवी, कोषाध्यक्षा--श्रीमती सुमन सेट्ठी।

आर्यसमाज नरेला। प्रधान--श्री देशराज, उपप्रधान--श्री भरतरसिह आर्य मुसाफिर एव श्री प्रेमकृष्ण; मन्त्री--श्री आनन्द कुमार, उपमन्त्री--श्री प्रकाशवीर-कोषाध्यक्ष--श्री सूरजभान जी; लेखा निरीक्षक--श्री लायकराम; पुस्तकाध्यक्ष--स्वामी अमृतानन्द, प्रधान--आर्य कुमार सभा--श्री जगपाल।

आर्यसमाज कीर्तिनगर। प्रधान—श्री वेदप्रकाश शास्त्री, उपप्रधान—श्री बिशननारायण मुखी एव श्री शिवभगवान लाहौरी, मन्त्री—श्री बालकृष्ण प्रयोक, उपमन्त्री—श्री सूर्यप्रकाश, श्री श्यामसुन्दर सेठ, कोषाध्यक्ष--श्री गोपीनाथ ईस्पर, पुस्तकाध्यक्ष--श्री कृष्णमुरारी।

आर्यसमाज लल्लापुरा (वाराणसी)--प्रधान श्री मेवालाल आर्य, उपप्रधान--श्री प्रेमचन्द्र आर्य, श्री वेचनराम आर्य, मन्त्री--श्री रामगोपाल आर्य; कोषाध्यक्ष-श्री बुद्धदेव आर्य, पुस्तकाध्यक्ष-श्री नन्दलाल आर्य।

आर्य समाज अशोक विहार फेज-I के रविवार २५-७-८२ के साधारण अधिवेशन के निम्नलिखित पदाधिकारी सर्वसम्मति से निर्वाचित हुए प्रधान श्री चमनलाल, उपप्रधान--श्री प्रद्युम्नलाल तलवाड श्रीमती पुष्पा सचदेव श्री आनन्द प्रकाश आर्य, मन्त्री श्री ओमप्रकाश आर्य, प्रचार मन्त्री श्री हरप्रकाश आहलूवालिया उपमन्त्री श्री पुरुषोत्तम अरोडा, श्री राजेश गुप्ता श्रीमती सुषमा आर्य, कोषाध्यक्ष श्री सिधूराम नागिया, पुस्तकाध्यक्ष श्री सुरेन्द्रकुमार हिन्दी।

वेद प्रचार सप्ताह

आर्यसमाज दीवान हाल मे ५ अगस्त से ११ अगस्त तक प्रति रात्रि ७॥ से ९ बजे तक आर्य विद्वान प० शिवकुमार शास्त्री की वेद कथा हुई।

श्रीकृष्ण की देन······(पृष्ठ ५ का शेष)

वह आज भी सहस्रों वर्षों के बीतने पर भी हमारे हृदय सम्राट बने हुए हैं। हर्ष का समय हो या दुख-विषाद की घड़ी हो, हम एक दूसरे का 'कृष्ण' 'कृष्ण' अभिनन्दन करते हैं। और खुशी के समय जय कृष्ण कहकर मन को शांति देते हैं।

श्री कृष्ण अपने युग के एक महान नेता थे। उनकी महत्ता का एक विशेष कारण यह भी था कि इनके अन्दर क्रांति की एक भयकर ज्वाला निरन्तर दहकती रहती थी। वह युक्तिहीन बातों और रूढियो मे विश्वास नहीं करते थे और समय को अपने साथ ले जाने में विश्वास करते थे। इसी आशय को दृष्टि में रख कर गीता के ग्यारहवें अध्याय में कहा भी है कि मैं एक महाकाल हूं इत्यादि। कृष्ण जी का कहना था कि धन-धान्य हाथी-घोड़े रथों से भरी यह पृथ्वी इस समय मृत्यु के मुह मे जा रही है जो भी इस समय इसको बचाने का प्रयत्न करेगा वही उत्तम धर्म पालन करने वाला होगा

बन्धुओ! विचारो तो सही कि आज हमारे देश की उस समय के देश दुर्व्यवस्था से क्या कुछ कम है। जहां सब कुछ होते हुए भी जीवनोपयोगी सभी चीजों का अभाव प्रतीत हो रहा है। महंगाई आकाश को छू रही है। जनता भयभीत चिन्तित और दुखी है। स्त्रियो की दशा बडी चिन्तनीय है। स्वार्थी आचारहीन, और अवसरवादी लोग आज हमारे नेता बने हैं। जिस कारण देश मे अनाचार, दुराचार, भ्रष्टाचार, अनैतिकता, रिश्वतखोरी और स्वार्थपरता का बाजार गरम है। अनेक सामाजिक कुरीतियों ने देश को कमजोर बना दिया है और देश की जड़ों को दीपक की तरह अन्दर ही अन्दर खोखला कर रही है और हाल मे ही हुई कुछ राजनीतिक घटनाओं ने तो एक प्रकार से देश को रसातल को पहुंचा दिया है। इसलिए इस पवित्र दिवस पर यह व्रत लें कि देशभक्त श्री कृष्ण जी जैसे नेता की खोज करके उनके हाथो मे इस विशाल देश की बागडोर दें ताकि वह इसको इन सकट की घड़ियो से निकाल सके। यही समय की पुकार है।

प्रधान, आर्यसमाज अशोक विहार
दिल्ली।

महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन पर वृत्त चित्र

बम्बई। आर्यजगत् की अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त आर्यसमाज सान्ताक्रुज बम्बई-५४ की ही नहीं, वरन् समस्त आर्यजगत् की यह महती उपलब्धि है कि २६ जून, १९८२ के दिन साय ८॥ बजे से ९ बजे तक आर्यसमाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन पर एक वृत्तचित्र बम्बई दूरदर्शन केन्द्र से प्रसारित किया गया, उसी समय यह वृत्तचित्र भारतीय दूरदर्शन के बगलौर, पूना और मद्रास केन्द्रों से भी प्रसारित किया गया। लगभग ४ करोड़ व्यक्तियो ने यह कार्यक्रम देखा।

उल्लेखनीय है कि इससे पूर्व आर्यसमाज शताब्दी के अवसर पर भारत सरकार के सूचना-प्रकाशन मन्त्रालय ने एक वृत्तचित्र प्रकाशित किया था, परन्तु नया वृत्तचित्र आर्य सस्थाओं एव आर्य जनों के सहयोग से तैयार किया गया है। यह कार्यक्रम श्री प्रकाशचन्द मूना के सहयोग तैयार किया गया, जिसमे स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती, आचार्य सोमदेव शास्त्री, श्री ओकारनाथ आर्य एव कैप्टन देवरत्न आर्य ने भाग लिया। वृत्तचित्र के कुछ भाग आर्यसमाज सान्ताक्रुज मे ही तैयार किए गए थे। दूरदर्शन के समाचार निर्माता श्री गोविन्द मुण्डे एवं तरुण माथुर के भगीरथ प्रयत्नों से इस वृत्तचित्र का निर्माण सम्भव हुआ।

卐 'आर्यसन्देश' के
स्वय ग्राहक बनें—
दूसरो को बनाए

卐 आर्यसमाज के सदस्य
स्वयं बनें—
दूसरो को बनाइए

卐 हिन्दी-संस्कृत पाठ
दूसरों को ...

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए श्री सरदारी लाल वर्मा द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित तथा भाटिया प्रेस २५७४, रघुवरपुरा नं० २ गांधी नगर दिल्ली ३१ में मुद्रित कार्यालय १५ हनुमान रोड नई दिल्ली फोन ३१०१५०।

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक मुखपत्र

एक प्रति ३५ पैसे   वार्षिक १५ रुपये   वर्ष ६   अंक ४४   रविवार २९ अगस्त   १४ भाद्रपद वि० २०३९   दयानन्दाब्द—१५८

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का वार्षिक अधिवेशन सम्पन्न

सर्वसम्मति से सार्वदेशिक सभा के प्रधान की घोषणा को मान्यता : १९८२-८३ वर्ष के लिए नए पदाधिकारियों की घोषणा

दिल्ली। रविवार २२ अगस्त १९८२ को मध्याह्नोत्तर ४ बजे दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का वार्षिक साधारण अधिवेशन सभा-प्रधान श्री सरदारीलाल वर्मा की अध्यक्षता मे प्रारम्भ हुआ। ईश-प्रार्थना के बाद सभा-प्रधान के प्रस्ताव पर अधिवेशन मे समवेत आर्यजनो ने मोतीनगर के महाशय सदारग जी, चर्खा सोप मिल्स के श्री तनेजा जी, करोल बाग के श्री बालकराम जी, साउथ एक्सटेन्शन के श्री देसराज खन्ना, करोल बाग के श्री चरणदास मल्होत्रा, शालीमार बाग के डा० महेश वेदालकार की माता जी आदि के देहावसान पर हार्दिक शोक प्रकट करते हुए परमपिता से प्रार्थना की कि वह दिवगत आत्माओ को उनके शुभ कर्मों के अनुसार सद्गति देंगे और उनके पारिवारिक जनों, मित्रगण एव परिचितो को उनके वियोग का दु ख-सहन करने का सामर्थ्य प्रदान करेंगे।

शान्तिपूर्ण वातावरण में वार्षिक निर्वाचन

अधिवेशन के प्रारम्भ मे सभा मे उपस्थित सार्वदेशिक सभा के महाम त्री श्री ओम्प्रकाश त्यागी ने आर्यजनो से अनुरोध किया कि उन्हे देश मे विद्यमान भीषण परिस्थिति एव उसे सुलझाने मे आर्यसमाज के विशेष उत्तरदायित्व का ख्याल कर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरग सभा के प्रस्ताव को म न्य कर लेना चाहिए। सभा के १९८०-८१ तथा १९८१-८२ के दोनो वार्षिक विवरण तथा आय व्यय के ब्योरे सर्वसम्मति से स्वीकार कर लिए जाने के बाद ५ बजे के लगभग सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले की अध्यक्षता मे सभा का स्थगित वार्षिक निर्वाचन शान्तिपूर्ण वातावरण मे सम्पन्न हुआ। साधारण सभा ने भी सर्वसम्मति से सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री शालवाले के प्रस्ताव को मान्यता देना स्वीकार किया। श्री रामगोपाल शालवाले ने बताया कि मीनाक्षीपुरम और अन्य दूसरे समीपस्थ क्षेत्रों- पूर्वोत्तर भारत आदि के अचलो मे इस्लामीकरण और ईसाई बनाने का प्रयत्न किया जा रहा है। ऐसी स्थिति मे हम सबको--विशेषत: आर्यजनो एव आर्य सगठनो को सयुक्त और सगठित होकर सभी प्रकार के वैमनस्य को छोडकर ऋषि-कार्य को पूर्ण करना चाहिए।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के नए पदाधिकारी

शान्त वातावरण और वैदिक धर्म के नारो के बीच सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले ने १९८२-८३ के वर्ष के लिए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के ये पदाधिकारी घोषित किए—प्रधान--श्री प्रेमनाथ एडवोकेट, वरिष्ठ उपप्रधान--सर्वश्री महाशय धर्मपाल, सरदारीलाल वर्मा, विद्याप्रकाश सेठी, मन्त्री--प्रो० भारत मित्र शास्त्री, उपमन्त्री--सर्वश्री प्राणनाथ घई अजयकुमार, कोषाध्यक्ष--श्री बलवन्तराय खन्ना, पुस्तकाध्यक्ष--श्री वेदव्रत।

प्रतिष्ठित सदस्य सर्वश्री रतनचन्द्र सूद, सोमनाथ एडवोकेट, राममूर्ति केला, रामलाल मलिक, चौ० हीरासिंह, सूर्यदेव, लाजपतराय, देशराज चौधरी, प्रेमचन्द गोयल और सत्यदेव विद्यालकार।

समुदाय सदस्य--सर्वश्री किशोरीलाल जी, ओम्प्रकाश आर्य, मूलचन्द गुप्ता, श्यामसुन्दर, रामशरण आर्य, बी सी० ठुकराल, लाला दीनानाथ, डा० प्रशान्तकुमार, अटलकुमार गर्ग, ओम्प्रकाश सुनेजा, प्रद्युम्नलाल तलवाड, मागेराम आर्य।

प्रधान द्वारा मनोनीत--सर्वश्री महेश विद्यालकार, श्रद्धानन्द, तीर्थराज आहूजा, मदनगोपाल खोसला।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के नए पदाधिकारियों की घोषणा

जालन्धर। आर्य प्रतिनिधि सभा पज ब के विगत ८ अगस्त के जालन्धर के साधारण वार्षिक अधिवेशन मे दिए गए अधिकार के आधार पर सभा के नवनिर्वाचित प्रधान श्री वीरेन्द्र जी ने १९८२-८३ के लिए निम्न अधिकारी नियुक्त किए है—

उपप्रधान--सर्वश्री आचार्य पृथ्वीसिंह आजाद, डा० के के पसरीचा जालंधर, वैद्य बाबूराम शर्मा अमृतसर, श्रीमती कमला आर्य लुधियाना।

महामन्त्री--प्रिंसिपल रामचन्द्र जावेद, जालन्धर छावनी।

मन्त्री - सर्वश्री सरदारीलाल आर्यरत्न जालधर, प्रि० अश्विनीकुमार दीनानगर, आशानन्द आर्य लुधियाना, मुनि चेतनदेव राजपुरा।

कोषाध्यक्ष—श्री हरबसलाल शर्मा, जालन्धर।

अध्यक्ष—साहित्य प्रकाशन--श्री यशपाल भाटिया, बरनाला, अधिष्ठाता—आर्य वीर दल--श्री चौ० ऋषिपालसिंह एडवोकेट जालन्धर, रजिस्ट्रार आर्य विद्या-परिषद--श्री अश्विनी कुमार शर्मा एडवोकेट, जालन्धर, प्रधान--न्याय सभा--चौ० रूपचन्द एडवोकेट चण्डीगढ, सयोजक राजार्य सभा--श्री अमृतलाल बजाज एडवोकेट जालन्धर।

जनता वेदों की शिक्षाओं का अनुसरण करे

नई दिल्ली। रविवार २२ अगस्त के दिन राष्ट्रीय सास्कृतिक सगठन द्वारा रगारग वैदिक मन्त्रोच्चार तथा आकर्षक संगीत कार्यक्रमो के माध्यम से सामवेद समारोह का भव्य आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए राष्ट्रीय सास्कृतिक सगठन के सचिव श्री एन पी शेषाद्रि ने सभी वेदो मे सामवेद को 'अद्वितीय' घोषित किया उन्होने कहा कि भारतीय सगीत का मूल स्रोत सामवेद है। उन्होने जनता को परामर्श दिया कि चाहे वे सस्कृत मे निष्णात न हो तो भी उन्हे अपने कल्याण के लिए वेदो की शिक्षाओ का अध्ययन करना चाहिए।

वेद-मनन

कामना-पूर्त्ति के उपाय

—मनोहर विद्यालकार

त्वामग्ने यजमाना अनुद्यून् विश्वावसु दधिरे वार्याणि।
त्वया सह द्रविणमिच्छमाना व्रज गोमन्तमुशिजो विवव्रु:।। यजु १२-२८

ऋषि'—वत्सप्री'। देवता -अग्नि:। छन्द विराडर्षी त्रिष्टुप्।

शब्दार्थ—हे (अग्ने) आगे बढाने वाले प्रभो, आचार्य वा राजन् (यजमाना) यज्ञ या सगति द्वारा कुछ चाहने वाले साधक प्रजाजन या शिष्य (अनुद्यून्) प्रतिदिन (त्वाम्) तेरे समीप आकर (विश्वा वार्याणि वसु) सब प्रकार वरणीय वसुओ (कामनाओ) को (दधिरे) प्राप्त करते है।

(उशिज) कामना वाले मुधीजन (द्रविणम् इच्छमाना) अपने काम्य पदार्थ की इच्छा से (त्वया सह) तेरी कृपा से (गोमन्त व्रजम्) इन्द्रिययुक्त शरीर को, भूमि को अथवा विद्यालय को (विवव्रु:) विशेष रूप से साधन रूप में स्वीकार करते है।

निष्कर्ष—किसी भी पदार्थ की कामना हो तो उस पदार्थ के स्वामी या विशेषज्ञ की आदर भाव से सगति करनी चाहिए, वह प्रसन्न तथा सन्तुष्ट होकर अवश्य प्रदान करेगा, यजमान और यज्ञ शब्दो मे यह भावना निहित है।

जिस पदार्थ की कामना हो, वह जहा मिलता हो, उस स्थान पर जाकर उसके लिए प्रयत्न करना चाहिए। बुद्धिमान् कामना वाले ऐसा ही करते है।

यदि यजमान किसान है तो उसे आकाश, मेघ और भूमि का वरण करके अन्न रूपी धन धारण करना चाहिए। यदि यजमान शिष्य है तो वाणी विद्या वाले स्थान विद्यालय मे जाकर गुरुओ की सेवा और सगति करनी चाहिए। यदि यजमान सामान्य प्रजाजन है, तो उसे भूमि और ज्ञान को देने वाले राजा की सेवा और सगति करनी चाहिए,

विशेष—इस मन्त्र के ऋषि नाम का अर्थ संकेत करता है कि किसी भी पदार्थ की कामना वाले पुरुष को ऐसी वाणी या वचन बोलने चाहिए जो दूसरो को तृप्ति और सन्तोष प्रदान करते हो। दूसरो को खिजाने, चिढाने या नाराज करने से कामना कभी पूरी नही होती, केवल अपना 'अहम्' सन्तुष्ट होता है।

इस मन्त्र के छन्द का शब्दार्थ संकेत करता है कि अपनी कामनाओ को सफल बनाने वाले को काम-क्रोध-लोभ से बचना चाहिए। ये तीनो कामनापूर्ति मे बाधक होते है। अपने से बडे, बराबर वाले तथा छोटो के साथ यथायोग्य व्यवहार (स्तुति) करना चाहिए। यह स्तुति कामनापूर्ति मे सहायक होती है।

अर्थपोषक प्रमाण—गोमन्तम व्रजम्--गो वाङ्नाम। नि० १-११, गो आकाश नाम। नि० १४. गो पृथिवीनाम। नि० १-१ व्रज मेघनाम। नि० १-१० व्रजम्-स्थानम्। व्रजन्ति गच्छन्ति यत्र--स्वामी दयानन्द गोमन्त व्रजम्-विद्यावन्त स्थान विद्या--मन्दिरमित्यर्थ.। स्वामी भा०, विवव्रु--विशेषेण स्वीकुर्वन्ति वृञ् वरणे। द्रविणम्--अभिद्रवन्ति अनेन अस्मै वा धन स्थान ज्ञान वा। वत्सप्री.—वत्स (वदति उच्यते वा) + प्री. (प्रीञ् तर्पणे कान्तौ च। विराट् आर्षी-त्रिष्टुप्--विशेषेण राजते (राजृ दीप्तौ), आर्षी-ऋष गतौ, ऋषिर्दर्शनात्-दीर्घ दृष्टि तथा गतिशील, त्रि + स्तुप् स्तुञ् स्तुतौ, स्तु भु स्तम्भे अवरोधने)

५२२ ईश्वर भवन, खारी बावडी, दिल्ली-११०००६

हाथ की शोभा

गरीबी की हालत मे भी स्वर्गीय ईश्वरचन्द्र विद्यासागर की दयामयी माता के द्वार से कोई भूखा नही लौटता था। समय ने पलटा खाया, उनके पुत्र को ५०० रु० मासिक वेतन मिलने लगा। उस समय एक मित्र ने उन्हे साधारण वस्त्र पहने और उनके हाथ मे चाँदी के कडे देखकर कहा- इतने बडे विद्यासागर की माता के हाथ मे चाँदी के कडे शोभा नही देते।'

इस पर वृद्धा ने हसकर कहा—बेटा विद्यासागर की माता के हाथ की शोभा कुछ चादी-सोने के कडो से नही है, उनकी असली शोभा तो भूखो को खिलाने में है। देखो, जब अकाल पडा था तब इन्ही हाथों से खिचडी बना-बनाकर नित्य सहस्रों भिक्षुओं को मैं खिलाती थी।

—प्रद्युम्नलाल तलवाड, १-२०८ अशोक विहार फेज १-दिल्ली-५२

दीक्षा तथा हमारा ध्येय

लेखक—मानवीय स्व० पं० गगाप्रसाद जी उपाध्याय एम. ए.

किसी व्यक्ति या संस्था के कार्यो का औचित्य या अनौचित्य केवल एक कसौटी पर जाचा जा सकता है. अर्थात् वह कार्य अन्तिम ध्येय की पूर्ति मे कहा तक सहायक या बोधक है। आर्यसमाज के विषय मे भी यही बात लागू होती है। आर्य समाज का अन्तिम ध्येय है भूमडल पर वैदिक धर्म का प्रचार करना। अर्थात् गोरो मे, कालो मे, पीलो मे, लाल रग वालो मे, अमेरिका वालो मे. इग्लैड वालो मे, अफ्रीका वालो मे, चीनियो मे, जापानियो मे, रूसियो मे, 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' का यही अर्थ है, अत हम आर्यसमाज की प्रत्येक प्रगति, प्रत्येक आदोलन, प्रत्येक सस्था की जाच केवल इसी एक मूल तत्त्व से करेंगे। यदि हमारे कार्यों से ससार मे ऐसा वातावरण उत्पन्न होता है, जो वैदिक धर्म को विश्व-प्रिय बनाने मे साधक हो और जिन कार्यों से आर्य समाज के सदस्यो के भीतर ऐसी मनोवृत्ति उत्पन्न होती है जो कालान्तर इस ध्येय की पूर्ति करा सके तो समझना चाहिए कि हम ठीक मार्ग का अनुसरण कर रहे हैं।

वैदिक काल के आरम्भ मे तो आर्यों की यही प्रवृत्ति रही होगी कि बिना राग-द्वेष या भेद-भाव के सर्वत्र और सब मे वेदो का प्रचार हो। यदि ऐसी प्रवृत्ति न होती तो वैदिक सभ्यता के पुराने चिह्न दूसरे देशो मे दृष्टिगोचर न होते।

कालान्तर मे और विशेषत महाभारत के पश्चात हमारा यह ध्येय नही रहा। जहां तक हो सका हमने अपनी सभ्यता को अपने तक सीमित रखने का यत्न किया। अपने धर्म को दूसरो मे नही फैलाया जिन्होने हमारे धर्म के विषय मे जानना चाहा, उनको हमने नही बतलाया। जिन्होने हमारे धर्म को अपनाना चाहा उनको हमने इस धर्म को अपनाने नही दिया। यह बात नही कि हिन्दुओ न दूसरो के साथ द्वेष नही किया? बाहर से जो विदेशी या अन्य मतावलम्बी आए उनको हमने भरसक अपने से दूर रखा और हम दूर रहे।

स्वामी दयानन्द इन पाच हजार वर्षों मे पहले महात्मा थे जिन्होने आर्यों को उस चिर-विस्मृत प्रवृत्ति को फिर जाग्रत किया और 'यथेम वाच' आदि मत्र का विशेष अर्थ करके आर्यो मे यह प्रवृत्ति उत्पन्न की कि वेदो का प्रचार हर जाति हर देश और हर वर्ण के मनुष्य मे करें। इस महान कार्य के लिए विशेष प्रवृत्ति की आवश्यकता थी, अर्थात् प्रथम तो हमारे हृदय मे मनुष्य मात्र के लिए प्रेम हो। दूसरे हमारे हृदय मे यह भावना जाग्रत हो कि कोई जाति या देश इतना बुरा नही है कि वह हमारी सभ्यता और सस्कृति का अधिकारी न हो। यदि हमारी यह भावना रहेगी कि अमुक देश अमुक सम्प्रदाय या अमुक जाति के लोग इतने मलिन या इतने कुटिल हैं कि वे कभी ऋजु मार्ग पर लाए नही जा सकते तो समझिये कि आर्य समाज अपने मार्ग से गिर रहा है। जब हम इस कसौटी से अपने कार्यों या अपनी प्रगतियो और प्रवृत्तियों की परीक्षा करते है तब हमको अपने कार्यो मे एक त्रुटि का अनुभव होता है। कभी-कभी हम आपकी भावनाओ के क्षेत्रो को इतना सकुचित बना डालते हैं कि जिससे दूसरो के प्रति शत्रुता की भावना उत्तेजित हो जाती है। और हम अपने मन को यह कह कर समझा लेते हैं कि अमुक कार्य हमारी सस्कृति की रक्षा के लिए आवश्यक है। हमारे मे विजिगीषा अर्थात् विजयी होने की इच्छा उग्र हो जाती है। इसकी प्रेरणा के वशीभूत होकर हम बहुत से ऐसे कार्य करते हैं जिनको यद्यपि सस्कृति या देश की रक्षा के लिए आवश्यक समझा जाये तथापि वह हमारे अंतिम ध्येय की सिद्धि मे बाधक है! रक्षा के विषय मे हमको याद रखना चाहिए कि किसी 'सम्पत्ति की रक्षा' और किसी 'सस्कृति की रक्षा, मे रक्षा शब्द के अर्थों में बहुत भेद है। जब मै चाहता हू कि मेरे मकान को दूसरो से सुरक्षित रक्खा जाय तो इसका अर्थ यह है कि उनको अपने मकान के निकट न आने दू। अर्थात् जो मेरे मकान पर स्वत्व करना चाहता है वह मेरा शत्रु है। परन्तु यदि मै चाहता हू कि मेरा धर्म, मेरी सस्कृति, मेरा आत्मज्ञान, मेरे सिद्धात सुरक्षित रहे तो जो लोग मेरी इन चीजो को अपनाना चाहते हैं उनको मैं शत्रु नही अपितु मित्र समझूगा और उनका स्वागत करूगा। आर्यसमाज से पूर्व हिन्दुओं की प्रवृत्ति यह थी कि हिन्दू धर्म की रक्षा का यही उपाय है कि कोई उनकी पवित्र भाषा न पढे, कोई वेदो का पाठ न कर सके, कोई मदिरो मे न आ सके, कोई चोटी जनेऊ न रख सके। यह था उनकी रक्षा का अर्थ।

स्वामी दयानन्द ने इसके विपरीत बताया। आज कल प्राय: कई सस्थायें हिन्दू सस्कृति की रक्षा के नाम पर उन कार्यों को धर्मानुकूल समझती हैं जो विजातियों, विदेशियो और विधर्मियो के प्रति विरोध भाव उत्पन्न करे। आर्यसमाज के ध्येय को दृष्टि मे रखकर ये भावनायें उचित प्रतीत नही होती। इससे प्रतीत होता है कि हम फिर पीछे को लौट आ रहे हैं। क्या आर्य नेता इस बात पर विचार करेंगे? —प्रेषक प्रो० धर्मेन्द्र धीमा, ओंकार कुंज, खारीबाव मार्ग बड़ोदरा।

शिव-संकल्प

ओ३म् यत्प्रज्ञानमुत चेतो धृतिश्च यज्ज्योतिरन्तरमृत प्रजासु।
यस्मान्न ऋते किञ्चन कर्म क्रियते तन्मे मनः शिवसकल्पमस्तु ॥ यजु३४-३

ज्ञान देने वाला जो मन चेतनाशील, धैर्यरूप और अविनाशी है, वह सब प्राणियो के हृदय मे प्रकाश करने वाला है, जिस मन के बिना कोई कार्य किया जाना सम्भव नही, मेरा वह मन कल्याणपूर्ण विचारो से सयुक्त हो।

ओ३म्
आर्य सन्देश

श्रीराम अमर हैं

उस दिन एक स्थानीय गोष्ठी मे भाषण देते हुए ज्योतिषी एव भाषाशास्त्री श्री प० काशीनाथ शर्मा ने कहा कि उनकी व्यक्तिगत सम्मति मे न श्रीराम हुए और न श्रीकृष्ण। इसी प्रकार इतिहासज्ञो एवं पुरातत्त्वविदो की सम्मति के अनुसार विक्रमादित्य नाम का कोई राजा भी नही हुआ। उज्जयिनी उगते हुए सूर्य को स्मरण कराती हुई उदयिनी नगरी थी। उनके मतानुसार वाल्मीकि रामायण के अनुसार—'वृत्त कथय रामस्य यथा ते नारदाच्छ्रुतम्। यावत्स्थास्यन्ति गिरय सरितश्च महीतले, तावद्रामायणकथा लोकेषु प्रचरिष्यति।' ब्रह्मा जी ने ऋषि वाल्मीकि से कहा था—'तुम श्रीराम का चरित्र वर्णन करो, जैसा कि तुमने नारद से सुना है। जब तक इस धराधाम पर पर्वत और नदिया रहेगी, तब तक ससार मे रामकथा रहेगी।' उक्त ज्योतिषी जी के अनुसार यहाँ दो बार श्रीराम कथा का उल्लेख असगत है, वस्तुत: एक ओर नारद से सुनी श्रीराम कथा का वर्णन करना है, दूसरी ओर यह उद्घोष स्वीकार करना है कि जब तक इस पृथ्वी पर ये पर्वत और नदिया हैं, तब तक सूर्य का उत्तर और दक्षिण अयनो का चक्कर चलता रहेगा। उनकी सम्मति मे राम सूर्यदेव हैं, यह पृथ्वी सीता है और लक्ष्मण ही चन्द्रमा हैं। भूमध्यरेखा के विशिष्ट उग्र ऋतु वाले क्षेत्र मे ही रावण शब्द करता है, मेघनाथ - मेघ के समान गर्जन करता है। इसी प्रकार लका, कन्याकुमारी आदि पृथ्वी मे विशिष्ट ऋतु क्षेत्र है। वह रामायण और महाभारत को सुन्दर काव्य भी मानते हैं।

अंग्रेजो और पाश्चात्यो का यह सिद्धान्त रहा है कि यदि तुम किसी जाति को नष्ट करना चाहते हैं, तो उसके इतिहास को समाप्त कर दो, जाति स्वयमेव नष्ट हो जाएगी। रामायण की सारी कथा सत्य घटनाओ पर आश्रित है। सम्भव है उसका कुछ भाग साहित्यिक कल्पनाओ पर भी आश्रित हो, परन्तु यह निश्चय से कहा जा सकता है कि श्रीराम और श्रीकृष्ण भारतीय इतिहास और सस्कृति के ऐसे स्थायी प्रकाशस्तम्भ हैं जो ससार के बडे भाग की मानवता को उदात्त प्रेरणा दे रहे हैं। ससार के व्यापक क्षेत्र में, विशेषत भारत, द० पू० एशिया और एशिया के बौद्ध क्षेत्रो मे रामायण की कथा और श्रीराम के ऊचे चरित्र से सीख ली जाती है। वायु पुराण मे कहा गया है कि त्रेता युगे चतुर्विशे रावण तपस. क्षयात् राम दाशरथि प्राप्य सगण क्षयमीयवान।' आचार से पतित होने के कारण रावण चौबीसवे त्रेतायुग मे दशरथनन्दन श्रीराम के साथ युद्ध करके बन्धु-बान्धवो समेत मारा गया। वाल्मीकि रामायण मे ही लिखा है—'वारणैश्च चतुर्दन्तै श्वेताभ्रनिचयोपमै, भूषित रुचिरद्वार मतैश्च मृगपक्षिभि।' श्री लका मे हनुमान ने राक्षस राज रावण के राजभवन का द्वार श्वेत मेघ के समान सुभूषित बड़े डीलडौल वाले चार सफेद दातो वाले हाथियो, पशुओ और पक्षियो से सुशोभित देखा था।

आज से तीन शती पूर्व वैज्ञानिक और इतिहासज्ञ चार दातो वाले हाथी को कवि की कल्पना मानते थे, परन्तु अब वे स्वीकार करते हैं कि ये चार दांत वाले हाथी आज से ढाई करोड़ वर्ष पूर्व से लेकर पचपन लाख वर्ष पूर्व तक अफ्रीका आदि मे पाए जाते थे। वाल्मीकि रामायण श्रीराम का समकालीन इतिहास है, महर्षि वाल्मीकि तीन-चार दात वाले हाथियो से भली प्रकार परिचित थे। रामायण की एक अन्त साक्षी के अनुसार रामायण काल नौ लाख पूर्व हुआ था। वाल्मीकि रामायण मे रावण पर श्रीराम की -बुराई पर सचाई की विजय की कहानी दी गई है। इस रामायण मे तुलसी रामायण तथा अनेक रामायणो मे श्रीराम की सत्यपरायणता और विजय, भरत और लक्ष्मण की भ्रातृ भक्ति, सीता की पति भक्ति, हनुमान की शक्ति और वफादारी तथा सुग्रीव की मैत्री आदि के आदर्श चरित्र दिखाई देते हैं, उनसे युग युग मे जनता जनार्दन ने प्रेरणा ग्रहण की है। ऐसे ऐतिहासिक महामानव को एक महाकवि की कल्पना मात्र कहना भारतीय इतिहास और सस्कृति की उपेक्षा करना होगा। इतिहास के महामानव श्रीराम जब तक पृथ्वी और चांद रहेगे, वह अपने मर्यादा पुरुषोत्तम चरित्र के कारण अमर रहेगे।

चिट्ठी-पत्री

साइन बोर्ड भारतीय भाषाओं में लिखे जाएं

कितने आश्चर्य की बात है कि भारत के बडे तथा छोटे नगरो मे अधिकाश साइन बोर्ड अग्रेजी मे लगे होते है। ससार के किसी भी स्वाधीन देश मे अपने देश की भाषा की इतनी उपेक्षा नही होती, जितनी भारत मे है। भारतवासी यह सोचते ही नही कि विदेशी लोग भारत मे आने पर जब सर्वत्र अग्रेजी के बोर्ड लगे देखते है तथा उन्हे इससे कितना आश्चर्य होता है तथा इससे हमारे देश की प्रतिष्ठा को कितना धक्का लगता है।

तमिलनाडु तथा महाराष्ट्र राज्यो ने यह अनिवार्य कर दिया है कि वहा सभी प्रकार के निजी साइन बोर्ड तथा नामपट्ट राज्य की राजभाषा मे अवश्य लिखें जाए। भारत से बाहर अन्य देशो मे भी इन देशो की भाषाओं मे साइन बोर्ड लिखे जाने अनिवार्य हैं। भारत सरकार द्वारा भी ऐसे कानून बनाने के सम्बन्ध में विचार किया जाना चाहिए कि देश के किसी भी भाग मे कोई भी सरकारी अथवा गैर सरकारी साइन बोर्ड अथवा नामपट्ट आदि लगे तो उसका कम से कम आधा भाग सविधान की आठवी अनुसूची मे उल्लिखित भाषाओ मे से किसी भी एक भारतीय भाषा मे अवश्य लिखा जाए। शेष आधा भाग सबधित व्यक्ति अथवा प्रतिष्ठान अपनी मर्जी से किसी भी अन्य भाषा मे लिखवाए। यदि यह बोर्ड उत्तर प्रदेश या मध्य प्रदेश मे लिखवाया जा रहा है और बोर्ड लिखवाने वाला व्यक्ति उनके आधे भाग मे बगला, गुजराती, तेलगू आदि भाषाओ का प्रयोग करना चाहता हैं तो इसकी उसे छूट रहे और इसी प्रकार यदि आन्ध्र प्रदेश, कर्नाटक, असम या तमिलनाडु मे कोई व्यक्ति अपनी इच्छा से हिन्दी, गुजराती या उर्दू मे लिखवाना चाहता है तो इसकी भी उसे छूट रहे। आशा है ऐसी व्यवस्था करने के सबध में भारत सरकार गम्भीरतापूर्वक विचार करेगी।

—हरिबाबू कसल, ई ६/२३ वसन्त विहार, नई दिल्ली-११००५७

पंजाब की समृद्धि में हिन्दुओं का योगदान

आजकल पजाब के जनसम्पर्क विभाग के निर्देशक की ओर से प्रधानमन्त्री इन्दिरा गाधी के इस वक्तव्य को प्रचार प्रापेगेण्डा के रूप मे, खूब उछाला जा रहा रहा है उन्होने जिसमे पजाब की सारी प्रगति एव समृद्धि का कारण पजाबियो नहीं वरन् केवल सिखो कोक करार दिया है। जिज्ञासा होती है कि क्या सिख ही केवल पजाबी हैं ?क्या पजाब के करीब ५० प्रतिशत अल्पसख्यक हिन्दू एव हरिजन पजाबी नहीं ?यदि है तो कैसे उनका पजाब की समृद्धि मे कोई हाथ नही कितने आश्वर्य की बात है कि पजाब के ५०% हिन्दू एवं हरिजन जिनके ही दम कदम से कांग्रेस इस प्रान्त मे राजसत्ता मे आई, को ही इस प्रकार तिरस्कृत किया जा रहा है।

ऐसे वक्तव्य मे पजाब के हिन्दू एव हरिजनो की उपेक्षा की नीति साफ नजर आ रही है जो वह देश के विभाजन से पूर्व मुसलमानो के प्रति अपनाती रही है। सरकार को साफ सावधान कर देना चाहेगे कि अकाली सिख ऐसी दृष्टीकरण से अपनी उग्रवादी नीतियो को छोडने वाले नही वे तो केवल सख्ती की भाषा को ही समझने वाले है ? हम इस समय पजाब एव केन्द्र सरकार को चेतावनी देना चाहते हैं कि वे वस्तुस्थिति को समझे और व्यर्थ की ऐसी तुष्टीकरण की नीति, जिससे किसी प्रकार भी देशद्रोही, विघटनकारी तत्वो को प्रोत्साहन मिले तुरन्त त्याग दें।

---भोलानाथ दिलावरी प्रधान एव नन्दकिशोर
मन्त्री केन्द्रीय आर्यसभा अमृतसर (पजाब)

आर्य युवकों द्वारा राष्ट्ररक्षा का संकल्प

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद दिल्ली प्रदेश के तत्त्वावधान में आर्य समाज अनारकली मन्दिर मार्ग मे १४-१५ अगस्त १९८२ मे आर्य युवक शिक्षण शिविर आयोजित किया गया।

१४ अगस्त रात्रि १० बजे आर्य युवको की विशाल वाहिनी ने मन्दिर मार्ग से लाल किले तक मशाल जलूस निकाला। रात्रि १२ बजे से १ बजे तक लाल किले के सामने आर्य युवको ने राष्ट्ररक्षा का पुनीत सकल्प लिया। जिसमे राष्ट्र द्रोही शक्तियो को चुनौती दी गई।

दो दिवसीय शिविर का प्रबन्ध आर्य समाज मदिर मार्ग ने किया।

सिद्धान्त चर्चा

संन्यास तथा नारी का स्थान

बौद्ध तथा जैन सम्प्रदायो मे स्त्रिया यति धर्म अथवा भिक्षुणी धर्म स्वीकार करती है। नियमित दीक्षा प्राप्त करती हैं। ईसाई मत मे भी स्त्रिया ब्रह्मचर्य व्रत धारण कर भिक्षुणी अथवा नन बन सकती हैं, पर हिन्दू धर्म मे स्त्रियो को सन्यास देने का कोई शास्त्रीय विधि-विधान नही दीखता।

कभी-कभी स्त्रियो को यतिधर्म दीक्षा देने के कुपरिणाम भी निकलते हैं। कलकत्ता से प्रकाशित, श्री सुरेन्द्र प्रतापसिंह द्वारा सम्पादित रविवार' नामक समाचार पत्र के, २ मई, १९८२ के अक मे 'तेरा पथ बनाम नव तेरा पथ' लेख प्रकाशित हुआ है। इसमे जैन धर्म के तेरा पथ' नामक सम्प्रदाय—जिसके विश्वप्रसिद्ध आचार्य तुलसी अध्यक्ष हैं—के विषय मे एक लेख प्रकाशित हुआ है। उसमे बहुत-से पारस्परिक विवादो का उल्लेख है—पर एक चौंका देने वाली बात भी है। श्री कोठारी द्वारा प्रकाशित 'अणुव्रत की ओर से' पुस्तक से उद्धरण देकर लिखा गया है कि सात सौ साधु-साध्वियो के इस सगठन मे कम से कम २८ साधु तथा ४ साध्विया साधु मार्ग से च्युत है।

लेखक ने तो सस्थान के प्रमुख प्रसिद्ध आचार्यों पर भी चरित्र सम्बन्धी आक्षेप किए हैं। ऐसा प्रसिद्ध है कि जब बुद्ध के शिष्य आनन्द ने बुद्ध की पत्नी यशोधरा की परिव्राजिका की दीक्षा देने की बात कही तब बुद्ध ने कहा था कि इससे बौद्ध धर्म की आयु ५०० वर्ष तक ही रह जाएगी।

"स्वभावत जिज्ञासा होती है कि नारी सन्यास ग्रहण करे या न करे इस सम्बन्ध मे आर्यसमाज या ऋषि दयानद के अनुसार क्या स्थिति है।

पहले तीन घटनाए प्रस्तुत करना चाहता हू। पूजनीय म० आनन्द स्वामी जी ने जब एकाएक सन्यास धारण का विचार किया, तब उनकी धर्मपत्नी श्रीमती मेलादेवी जी को इसका कुछ पता न था। अपने निश्चय के साथ ला० खुशहालचन्द जी स्वा० ओमानन्द जी के आश्रम मे पहुचे। स्वामी जी ने उन्हे तैयारी के लिए तीन दिन का एकान्तवास तथा गायत्री जाप का आदेश दिया। ला० खुशहालचन्द जी का विचार तो अपने सन्यास ग्रहण कार्य को गुप्त रखने का ही था, पर क्रमश बात फैल गई—तो श्रीमती मेलादेवी जी स्वामी ओमानन्द जी के आश्रम मे पहुची और कहा कि लाला जी बिना उसकी अनुमति के आए हैं, अत उन्हे रोका जाए। स्वा० ओमानन्द जी ने अपनी विवशता दिखलाते हुए लाला जी के एकान्तवास की कोठडी दिखला दी। अपनी पत्नी के बहुत कहने पर भी ला. खुशहालचन्द जी ने दरवाजा ही न खोला, और न कोई बात की। धर्मपत्नी क्या करती—बेबस चुप रह गई।

जब प्रि० लक्ष्मीदत्त जी सन्यास धारण का निश्चय कर अचानक आर्य समाज मन्दिर में आ गए, तब उनकी धर्मपत्नी को भी कुछ पता न था। वह भी आँसू भरे हुए आर्यसमाज मन्दिर मे पहुची, पर प्रिंसिपल महोदय ने बात करने से ही इन्कार कर दिया। माया त्याग तो सन्यास का पहला लक्षण है।

लगभग दो वर्ष हुए टकारा-जन्म स्थान के उत्सव पर एक देवी ने वानप्रस्थ ग्रहण कर पीले वस्त्र धारण करने चाहे, तो मैंने महात्मा आर्यभिक्षु जी की सेवा मे निवेदन किया। म० आर्यभिक्षु जी ने देवी से पूछा कि क्या उसके पति ने अनुमति दी है। देवी के इन्कार करने पर शास्त्रीय मर्यादा के अनुसार उसका वानप्रस्थ सस्कार न किया गया।

शास्त्र की सम्भवत: दो मर्यादाए हैं—स्त्रियो के लिए अलग और पुरुषो के लिए अलग यदि माता मेलादेवी जी तथा प्रि० लक्ष्मीदत्त की धर्मपत्नी, ८-१० वर्ष पूर्व, बाल-बच्चो का बोझ पतियो पर डाल कर सन्यास ग्रहण करना चाहती, तो क्या कोई महात्मा आर्य सन्यासी उन्हे संन्यास की दीक्षा दे सकते थे। सम्भवत सब स्पष्ट इन्कार कर देते।

आज कल बहुत-सी देवियाँ सन्यास के गेरुए कपडे धारण किए दिखाई देती हैं, कुछ और वानप्रस्थ का पीला परदा भी डालती हैं। पता नहीं कौन से महात्मा ने किस शास्त्र की मर्यादा से उन्हे सन्यास अथवा वानप्रस्थ आश्रम की दीक्षा दी है।

जहाँ तक ऋषि दयानन्द के ग्रन्थ अथवा मनुस्मृति आदि का सम्बन्ध है, स्त्रियो को वानप्रस्थ अथवा संन्यास की दीक्षा देने का कही उल्लेख नहीं। नारी के सम्बन्ध मे तो तीन ही उल्लेख हैं—वानप्रस्थ आश्रम की दीक्षा लेता हुआ पुरुष चाहे तो पत्नी को साथ रखे और न चाहे तो पुत्रों को सौंप दे।

सन्यास ग्रहण करते समय स्पष्ट विधान है:—जब सन्यास ग्रहण की इच्छा हो, तो स्त्री को पुत्रों के पास भेज दे।'

ब्रह्मचर्य के बाद गृहस्थ आश्रम आवश्यक है या नहीं, इस विषय में स्पष्ट किया गया—'जिस पुरुष या स्त्री को विद्या, धर्मवृद्धि और सब ससार का उपकार करना ही प्रयोजन हो वह विवाह न करे। जैसे पचशिखादि पुरुष और गार्गी आदि स्त्रिया हुई थी।

यहाँ एक और बात भी स्पष्ट करनी चाहिए कि चारों वर्णों में केवल ब्राह्मण ही सन्यास का अधिकारी है, अन्य कोई वर्ण नही। यह तथ्य सत्यार्थ-प्रकाश मे स्पष्ट किया गया है।

अब शास्त्रीय मर्यादा के अनुसार दो बातें स्पष्ट हुई। पहली तो यह कि वैश्य तथा क्षत्रिय सन्यास ग्रहण नही कर सकते; केवल ब्राह्मण ही सन्यास के अधिकारी हैं। दूसरी बात यह कि स्त्री न तो वानप्रस्थ आश्रम मे दीक्षित हो सकती है और न ही सन्यास मे। ब्रह्मचारिणी रहकर यदि चाहे तो शिक्षा आदि परोपकार का कार्य कर सकती है।

लेखक :

श्री सत्यदेव विद्यालंकार

अब व्यावहारिक और मानवीय दृष्टि से भी कुछ विचार चाहिएं। क्या स्त्री का जीवन पुरुष के जीवन से अलग है जो उसे वानप्रस्थ और सन्यास का अधिकार नही।

इससे भी महत्वपूर्ण प्रश्न तो यह है कि स्त्री क्या एक पुराना कपडा है—जिसको प्रयोग करने के पश्चात उसकी सम्मति के बिना परे फेंक दिया और आप सिर मुडा कर सन्त बन गए। यह बीमारी इतनी प्रबल हो गई है कि न जाने कितने नौजवान हैं जो विवाह और सन्तान के बाद रोटी न पा सकने के कारण घर से भाग खड़े होते हैं। महात्मा जी को तो मेवे चाहिए। गेरुआ और कमण्डल देने मे क्या मोल लगता है। टकारा-उपदेशक विद्यालय मे भी कितने ही ऐसे ब्रह्म प्राप्ति के इच्छुक नौजवान आए जो शादी के बाद घर से भाग खड़े हुए थे। कमाई का साधन बनने पर कितने ही फिर पत्नी और बच्चों को बुला लेते हैं।

हिन्दू धर्म का तो बाबा-आदम ही निराला है--कोई नियम-सयम नही। आर्यसमाज तो एक व्यवस्थित समाज है। इसमे तो अवश्य नियम होना चाहिए कि बिना परिवार का और पत्नी का पूरा प्रबन्ध किए, और बिना पत्नी की अनुमति लिए कोई सन्यासी नही बन सकता।

यह कह देना सहज है कि पत्नी को पुत्रो के पास भेज दवें, पर यदि कोई माता अपनी पुत्र-वधू के पास न रहना चाहे, बर्तन मांजने का काम न करना चाहे, तो उसका क्या प्रबन्ध होगा। बिना सन्यास लिए भी तो अनन्त महात्माओं ने गृहस्थ रहकर ससार का उपकार किया है। कम से कम नारी का महत्व तो स्वीकार किया जाना चाहिए।

फिर इसके साथ ही पुत्र पुत्रियो का भी प्रश्न है। अर्द्ध शिक्षित पुत्र और अविवाहित पुत्री को छोडकर सन्यासी बना मनुष्य किसका उद्धार करेगा? अपने परिवार का तो पालन ही न कर सका। अत अवश्य राज्य का अथवा समाज का कोई नियम होना चाहिए। इसके साथ जुड़ा हुआ आर्थिक प्रश्न भी है। आज कल पत्नी सहित वानप्रस्थ लेने वाले को ५००)-६००) आय किसी भी साधन से होनी चाहिए। दूध नही लेगा, अन्न नही खायेगा क्या। कुछ फलादि भी न लेगा तो क्या दोनो भूसा खायेंगे। फिर वस्त्र-मकान भी चाहिए। वृक्ष की जड मे झोपड़ी बनाकर रहना और जगली फलो से गुजारा आज कल सम्भव नही।

सन्यास के लिए लिए भी पर्याप्त धन चाहिए। बड़े-बडे महात्माओ के के लिए तो सम्भवत भक्त-शिष्य सब सुविधा जुटा दे पर सामान्य सन्यासी को तो चार दिन रोटी खिलाना भी आर्यसमाज कि लिए कठिन हो जाता है।

प्रस्तुत विषय वानप्रस्थ और सन्यास का नही था अत ऊपर की दो-एक बात प्रासगिक समझनी चाहिए। प्रस्तुत विषय तो वानप्रस्थ और सन्यास मे नारी का स्थान था। आशा है कोई अन्य सज्जन भी इस विषय मे अपने विचार देने का कष्ट करेंगे।

शांति सदन, १४५/४ सेण्ट्रल टाउन, जालन्धर नगर (पजाब)

त्रिचूर में हिंदू अध्यापिका मुस्लिम संस्था से निकाली गई

त्रिचूर। पेरिन्थालमन्ना के निकट किजाक्केपेण्डिकाड के सरकारी सहायता प्राप्त केन्द्रीय मुस्लिम विद्यालय अरबी विषय की योग्यता प्राप्त की अध्यापिका श्रीमती गोपलिका को छात्रो मे उनकी लोकप्रियता के बावजूद केवल इसलिए निकाल दिया गया क्योंकि प्रबधकों के अनुसार छात्र- माता-पिता नही चाहते थे कि नम्बूद्रीपाद ब्राह्मण लडकी मुस्लिम छात्रो को अरबी पढ़ाए।

श्रीमती गोपालिका के पति तथा अन्य सम्बन्धियो ने बतलाया है कि यह सेवा-समाप्ति विशुद्ध रूप से साम्प्रदायिक निर्णय है।

वेदों के परम विद्वान् वेदानन्द जी

लेखक— प्राध्यापक राजेन्द्र 'जिज्ञासु'

यद्यपि मैं कभी कही नही जाता--अपने ढग से इतिहास के अनुसधान या लेखन मे लगा रहता हू परन्तु आर्यों को अपने इतिहास मे क्या रुचि है? आर्य-समाज के शहीदों पर कितने ग्रन्थ उपलब्ध हैं? पं० लेखराम जी, वीर चिरजीवलाल, हुतात्मा श्यामल ल, पर नये ग्रन्थ कितने निकले हैं? शुद्धि व दलितोद्धार की ओर सारे राष्ट्र का ध्यान आकृष्ट हो गया है। सब पोगापंथी धराशायी हो गए। महर्षि दयानन्द की इस दिग्विजय का ऐतिहासिक महत्व है। यह ऋषि की दिग्विजय है, ऐसे अवसर पर हमारे उन शहीदो वा सेवको के जीवन का चित्र छपने चाहिए थे, जो दलितोद्धार के लिए वीर गति पा गए या जीवन भर जूझते रहे परन्तु घिसे-पिटे भाषण देकर हम प्रसन्न हो गए।

स्वामी वेदानन्द जैसे दिग्गज विद्वान का जीवन-चरित्र नही छपवा सके। श्री स्वामी विज्ञानानन्द जी ने स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज का जीवन चरित्र छपने पर स्वामी वेदानन्द जी के जीवन सम्बन्धी कुछ बात छेड़ी परन्तु फिर भूल गए।

स्वामी जी का पाण्डित्य स्वामी जी जब पजाब सभा के महामन्त्री बने तब 'आर्य' साप्ताहिक के सम्पादकीय लेख भी लिखा करते थे। उनका ऐसा एक लेख भारत मे भाषा भेद पर मैंने पढा और स्वामी सर्वानन्द जी महाराज को दीनानगर मे दिखाया। उसमे लिखा था कि अग्रेजो ने भारत मे भाषा भेद पैदा करने, प्रान्तीयता का उन्माद पैदा करने हेतु भारत की क्षेत्रीय व प्रान्तीय भाषाओं को संस्कृत से दूर ले जाने का षडयन्त्र रचा। इसके लिए सेण्ट डेविड फोर्ट (मद्रास मे) एक योजना बनाकर कुछ विद्वान् बुलाए और बिठाए। यह अठारहवी शताब्दि की बात है। उन्नीसवी शताब्दि के आरम्भ मे अग्रेज इस दिशा मे बहुत कुछ कर चुका था।

मुझे स्वय इतिहास का अध्यापक होने पर इस तथ्य का ज्ञान न था। मैंने स्वामी सर्वानन्द जी से पूछा कि स्वामी जी को ऐसी-ऐसी बातो को कहा से ज्ञान हुआ? स्वामी जी ने कहा, 'आप यह पूछिए कि उनको किस विषय का ज्ञान नही था?' वह लेख तो मठ मे ही कही रखा गया। फिर मिला नही। मैं स्वामी के लेख मे लिखी बात के प्रमाण खोजने लगा। बड़े यत्न से मुझे इसकी पुष्टि मे स्पष्ट प्रमाण मिल गए।

भाषाओं मे दूरी पैदा की गई

भिन्न-भिन्न भाषाओ के विद्वानों से कहा गया कि वे अपनी-अपनी भाषा का शब्दकोश तैयार करें। तमिल के शब्दकोश मे शुद्ध तमिल हो, उड़िया के ग्रन्थ मे शुद्ध उड़िया, कन्नड मे शुद्ध कन्नड और बगला मे शुद्ध बगला? शुद्ध का जानते हो क्या अर्थ है? सस्कृत के शब्दो को भारत की भाषाओ मे से निकाल दो तो कन्नड शुद्ध कन्नड है, तमिल शुद्ध तमिल है, पजाबी शुद्ध पजाबी है। सस्कृत से ही ये भाषाए अशुद्ध हैं। यह था दृष्टिकोण जो अग्रेज ने दिया। इसका परिणाम यह निकला कि मराठी का कन्नड से नाता टूट गया। कन्नड से तमिल दूर हो गई और बगला गुजरात वालो के लिए दुर्बोध हो गई। सस्कृत ने ही सबको जोड रखा है। जितनी सस्कृत से ये दूर होगी उतनी ही अपने क्षेत्र के बाहर के लोगो के लिए कठिन होती जावेगी।

भूल के लिए क्षमा—स्वामी जी ने युवको को सन्यास दीक्षा दे दी। एक तो जड बुद्धि और दूसरा कुछ चचल और कुछ पोगा पंथी भी। एक विद्वान् ने उन्हे लिखा कि बिना परीक्षा के आपने इनको सन्यास दीक्षा देकर क्या अच्छा किया है? क्या आर्य सन्यासी अब चेलो की सख्या बढ़ाने मे अपना गौरव मानेंगे? झट से स्वामी वेदानन्द जी का उत्तर मिला कि महाभयकर भूल हो गई। इसका तो अब प्रायश्चित् भी नही हो सकता।

सब कुछ सहन कर सकता हू—१९५५ ई० के मई मास की बात है करोलबाग समाज की एक घटना सुना कर श्री स्वामी जी ने मुझे दयानन्द मठ दीनानगर मे कहा, 'मैं सब कुछ सहन कर सकता हू परन्तु वेद और दयानन्द आदि ऋषियो का अपमान मेरे लिए असह्य है।'

कौन क्या काम कर सकता है? स्वामी जी भलीभांति जानते थे कि आर्यसमाज का अमुक काम कौन कर सकता है और अमुक काम कौन कर सकता है। मै अभी सार्वजनिक सेवा के क्षेत्र मे उतना ही था कि स्वामी जी स्थूल अक्षरी सत्यार्थप्रकाश की टिप्पणियों के लिखने मे लग गए। मुझे उनका पत्र मिला कि पादरी जे० एल० ठाकुरदास की पुस्तक सत्यार्थप्रकाश दर्पण है तो भेजो अन्यथा खोज करके दो। ऐसे महा-

(शेष पृष्ठ ८ पर)

आर्य जगत् समाचार

हिन्दू-सिख वैमनस्य फैलाने में अन्तर्राष्ट्रीय साजिश

अकाली नेताओं ने फाजिल्का-अबोहर हरियाणा को देने स्वीकार किए थे—प्रो० शेरसिंह का रहस्योद्घाटन

चण्डीगढ़। आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के प्रधान प्रो० शेरसिंह ने सवाददाताओ से बातचीत करते हुए घोषित किया कि यह एक अन्तर्राष्ट्रीय साजिश है कि हिन्दू सिख एकता को समाप्त करने के लिए विदेशो से पजाब के उग्रवादियो को प्रोत्साहन मिल रहा है।

प्रो० शेरसिंह ने यह सूचना भी दी कि वह उन नेताओ मे से एक हैं जिन्होने पजाब और हरियाणा के निर्माण की बातचीत मे हिस्सा लिया था। यह अन्तिम बातचीत सन्त फतहसिंह के साथ अकाल तख्त पर हुई थी जिसमे भाषा के आधार पर राज्यो के गठन और नदियो के पानी का बटवारा भी शामिल था। उस फैसले पर श्री प्रकाश सिंह बादल के राजनीतिक गुरु ज्ञानी करतारसिंह ने भी हस्ताक्षर किए थे। फाजिल्का और अबोहर हरियाणा को देने की बात शामिल थी। अब अकाली उन फैसलो से न सिर्फ अकाल तख्त की पवित्रता भग कर रहे हैं, बल्कि अपनी प्रतिष्ठा को खत्म कर रहे हैं।

इतिहास से आर्यसमाज सम्बन्धी अध्याय निकालने पर भारी रोष

रोहतक। जानकार सूत्रो से ज्ञात हुआ है कि महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक के इतिहास विभाग ने विश्वविद्यालय रोहतक की बी. ए. दूसरे वर्ष मे पढाई जानेवाली इतिहास की पुस्तक से आर्यसमाज सम्बन्धी अध्याय इस वर्ष से निकाल दिया है। इतिहास विभाग की इस मनमानी के विरुद्ध हरियाणा की आर्यसमाज एव आर्य सस्थाओ मे भारी रोष फैल गया है।

वेदों की व्यवस्थित व्याख्या वैज्ञानिक आधार पर अपेक्षित

वैदिक विद्वानों के सम्मान की परम्परा पुनरुज्जीवित की जाए : सान्ताक्रुज बम्बई में वैदिक विचार-संगोष्ठी

बम्बई। आर्यसमाज सान्ताक्रुज मे आयोजित एक वैदिक विचार सगोष्ठी (सेमिनार) मे महाराष्ट्र सरकार से अनुरोध किया गया कि वह १९७५ मे परित्याक की गई अपनी युगो पुरानी परम्परा का पुनरुज्जीविन कर वैदिक विद्वानो को सम्मान करना पुन. शुरू करें। बम्बई की समस्त आर्यसमाजो एवं आर्यसस्थाओ की ओर से आयोजित इस सेमिनार मे ३०० प्रतिनिधि एकत्र हुए थे। इस सेमिनार का उद्घाटन हैदराबाद की वैदिक विदुषी श्रीमती सुशीला देवी विद्यालकृता ने किया।

इसे सेमिनार मे आचार्य के एम. तलरेजा ने 'वेदो का दर्शन' आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री ने 'वेदो मे विज्ञान के तत्व' डा० सुनीति ने 'वेद मे नारी का स्वरूप', डा० वशिष्ठ बलसे ने 'महर्षि दयानन्द का वेदभाष्य' प० मदनलाल व्यास का 'वेदो मे सगीत' प्रो. ज्येष्ठ वर्मन ने वैदिक व्याख्याओ के मौलिक सिद्धान्त' आदि विषयो पर अपने शोध-प्रबन्ध प्रस्तुत किए।

प्रमुख वक्ताओं ने वैदिक व्याख्याओ के लिए राष्ट्रीय और वैज्ञानिक आधार की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होने इस बात पर भी खेद प्रकट किया कि सातवी शताब्दी मे स्कन्द स्वामी ने तथा १४ वी शताब्दी मे सायण ने अपने सकुचित स्वार्थों के कारण वेदो का गर्हित एव असगत भाष्य किया, पश्चिमी विद्वानो ने १९ की शताब्दी मे इन्हीं भाष्यों को अपनी व्याख्या का आधार बनाया। इस स्थिति का तुरन्त सुधार अपेक्षित है। कप्तान देवरत्न आर्य ने विचार-सगोष्ठी की कार्यवाही का सचालन किया।

आर्यसमाज गांधी कालोनी मु० नगर मे वेद प्रचार सप्ताह

आर्य समाज मन्दिर गांधी कालोनी मुजफ्फर नगर मे ४-८-८२ से १२-८-८२ तक वेद प्रचार सप्ताह धूमधाम के साथ मनाया गया जिसमे प्रात: साय आर्य प्रतिनिधि उत्तर प्रदेश लखनऊ के उपदेशक श्री रामप्रकाश जी 'सरस' शास्त्री के प्रभावात्मक प्रवचन हुए और श्री पं० द्वारकानाथ शर्मा जी के मधुर भजन हुए।

श्रीकृष्ण महान् कर्मयोगी थे

मानव जाति शिक्षा ले : जन्माष्टमी पर जनोद्बोधन

दिल्ली। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद दिल्ली के तत्वावधान मे योगीराज श्री कृष्ण जन्मोत्सव आर्यसमाज कबीर बस्ती, पुरानी सब्जी मण्डी में कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए महाशय धर्मपाल प्रधान, आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य ने योगीराज श्रीकृष्ण जी महाराज को महान कर्मयोगी बताते हुए, उनके महान जीवन से मानव जाति को शिक्षा लेने का आह्वान किया।

श्री रामनाथ सहगल, महामत्री आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा ने कुशल नीतिनिपुण महापुरुष के जन्मोत्सव को स्मरणीय दिवस बताया। उन्होने सरकार द्वारा जन्माष्टमी, रामनवमी, दिवाली दशहरे की छुट्टी पर प्रतिबन्ध लगाने पर सरकार की पक्षपातपूर्ण नीति का विरोध किया।

श्री कृष्ण जी पर श्री चिन्तामणि आर्य, मुल्खराज भल्ला, श्री मामचन्द रिवारिया, आचार्य हरिदेव प० चुन्नी लाल, श्री गुलाब सिंह राघव, ब्र० राज सिंह आर्य आदि ने भी विचार रखे।

आर्यसमाज मेस्टन रोड में वेद प्रचार सप्ताह

आर्यसमाज मेस्टन रोड, कानपुर मे वेद प्रचार सप्ताह श्रावणी बुधवार ४, से श्री कृष्ण जन्माष्टमी बृहस्पतिवार, १२ अगस्त, १९८२ तक समारोहपूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर आर्य जगत के प्रसिद्ध भजनोपदेशक ओजस्वी वक्ता कुवर महीपालसिंह जी 'सगीतरत्न' बलिया द्वारा मनोहर मधुर भजन, तथा भिन्न-भिन्न तिथियो मे वेदप्रवचन, प्रो० लक्ष्मीधर जी शर्मा. डा० कान्तिकिशोर जी भरतिया, डा० भगवान सहाय मुदगल एम. ए डा० प्रकाश मित्र शास्त्री, श्री सहदेव शास्त्री, डा० जयदेव गुप्त, एम ए पत्रकार डा० विजयपाल शास्त्री तथा डा० मुन्शीराम जी शर्मा, सोम डा० बालमुकुन्द गुप्त, प्रो० शीतल चरणजी एम ए. आदि के द्वारा सारगर्भित भाषण एव वेद प्रवचन हुए।

किससे क्या सीखो ?

फूलो से तुम हसना सीखो, भवरो से नित गाना।
वृक्षो की डाली से सीखो, फूल आए झुक जाना॥
सूरज की किरणो से सीखो, जगना और जगाना।
मेंहदी के पत्तो से पिस कर, रग चढाना॥
परवानो से सीखो धर्म पर हस-हस शीश कटाना।
हवा के झोको से सीखो आगे बढ़ते जाना॥
दूध और पानी से सीखो मिलकर प्रेम बढाना।
सूई और धागे से सीखो बिछुडे भाई को मिलाना॥
अपने सयमी जीवन से सीखो नीरोगी रहना।

बोध-कथा

कोउ नृप होंउ हमहिं का हानी।

हमारे इतिहास के पन्नों से मालूम पडता है—प्लासी की लडाई के बाद, जहां असल मे लडाई हुई ही नही थी और मीर जाफर ने गद्दारी की थी, जब क्लाइव ने बगाल की तत्कालीन राजधानी मुर्शिदाबाद में प्रवेश किया, तब उसके साथ केवल २०० अग्रेज सैनिक और ३०० वेतनभोगी भारतीय सैनिक थे। क्लाइव के आगमन को देखने के लिए राजधानी में इतनी जनता उमडी थी कि रास्ते के दोनों ओर इतने लोग एकत्र थे कि यदि वे एक-एक पत्थर भी उन पर निशाना बना कर मारते तो क्लाइव और उसके २०० सैनिक जिन्दा दफन हो जाते।

भारत मे अग्रेजी हकूमत के दिनो मे भारतीय जनता अग्रेजो का शासन सहती रही। १९३० के लगभग भारत की जनता ३५ करोड ३० लाख थी, उन दिनो सारे देश मे केवल एक लाख ५० हजार यूरोपीय थे, उनमे से भी केवल एक लाख दस हजार पुरुष थे। सारे देश मे ५५ से ६० हजार ब्रिटिश सैनिक थे। पिछली लडाई के दिनो मे भारत मे ब्रिटिश फौज १५ हजार मे भी घट गई थी। पन्द्रह-पन्द्रह लाख की जनसख्या वाले एक-एक जिले मे एक अग्रेज कलक्टर और एक सुप्रिन्टेन्डेंट पुलिस था, भूले-भटके एक आध कोई यूरोपीय मिल जाता था, इतने पर भी अग्रेज पूरे १९० साल हकूमत कर गए।

शायद हमारी जनता का मूल मन्त्र ही यह लोकोक्ति बन गया था—कोउ नृप होउ हमहि का हानी। चेरि छाडि अब होब कि रानी ? कोई भी राजा हो, हमारी क्या हानि है। दासी छोडकर क्या अब रानी बनू गी ?' — नरेन्द्र

आर्यसमाजों के सत्संग

२९ अगस्त'८२

अन्धा मुगल-प्रताप नगर—प० आशानन्द भजनोपदेशक, अमर कालोनी—पं० प्रकाशचन्द्र शास्त्री; अशोक विहार के-सी ५२ ए—ड० सुखदयाल, आनन्द विहार—पं० सत्यपाल भजनोपदेशक, किंग्जवे कैम्प—प० तुलसीराम भजनोपदेशक; कालका जी प० रामनिवास, करोल बाग—डा० सत्यपाल, कृष्ण नगर—मास्टर ओम्प्रकाश, गांधी नगर—प० छविकृष्ण शास्त्री; गीता कालोनी—स्वामी विश्व० देवानन्द; ग्रेटर कैलाश-II—श्रीमती लीलावती; गुडमण्डी—प० सोमदेव शास्त्री, गुप्ता कालोनी—स्वामी शान्तानन्द, चूना मण्डी-पहाडगज—प० खुशीराम, जगपुरा भोगल—प० ओम्प्रकाश भजनोपदेशक; जनकपुरी बी-३/२४—प० विश्वप्रकाश शास्त्री, टैगोर गार्डन—पं० ओमवीर शास्त्री; डिफेंस कालोनी—प० चुन्नीलाल भजनोपदेशक, तिमारपुर—प० हरिश्चन्द्र शास्त्री' दरिया गज—श्रीमती प्रकाशवती शास्त्री, नया बास—प्रो० सत्यपाल बेदार; पजाबी बाग—प्रो० वीरपाल विद्यालकार, पजाबी बाग एक्सटेंशन—श्री रोशनलाल, बाग कड़े खा—प० बरकतराम भजनोपदेशक; मोडल बस्ती—प० गणेशप्रसाद विद्यालकार, महावीर नगर—प० रघुराज शास्त्री, महरौली—प० कामेश्वर शास्त्री; रमेश नगर—प० रामरूप, राणा प्रताप बाग—प० वेदपाल शास्त्री; राजौरी गार्डन—डा० रघुनन्दनसिंह, लड्डू घाटी-पहाडगज—प० जयभगवान भजन मण्डली; लक्ष्मीबाई नगर—प० सत्यदेव भजनोपदेशक, लेखराम नगर-त्रिनगर—प० वेदव्यास भजनोपदेशक, लारेंस रोड—स्वामी सच्चिदानन्द; विक्रम नगर—श्रीमती सुशीला, सुदर्शन पार्क—प्रो० भारतमित्र शास्त्री; सराय रोहेला—प० गजेन्द्रपाल शास्त्री, सोहनगज—प० ईश्वरदत्त, शालीमार बाग—आचार्य नरेन्द्र शास्त्री, शादीपुर—प० शीशराम भजनोपदेशक; हौज खास—प० देवेश, आर्यसमाज हनुमान रोड—पं० शिवकुमार शास्त्री;

(आर्यसमाजो से अनुरोध है कि वे दिल्ली प्रतिनिधि सभा के वेद प्रचार विभाग से अपने यहाँ व्याख्याता या भजनोपदेशक मगाने या न मगाने की सूचना एक मास पूर्व-पूर्व महीने के प्रथम सप्ताह तक अवश्य भेज दे)

—ज्ञानचन्द वेद प्रचार प्रबन्धक

भारतीय राजनीति को श्रीकृष्ण की देन

आर्यसमाज हनुमान रोड में श्रीकृष्ण जन्माष्टमी एव वेदप्रचार सप्ताह का भव्य कार्यक्रम

नई दिल्ली। बृहस्पतिवार १२ अगस्त के दिन आर्य समाज हनुमान रोड नई दिल्ली मे श्री कृष्ण जन्माष्टमी के पर्व पर भाषण करते हुए कार्यक्रम के अध्यक्ष दिल्ली आर्य केन्द्रीय सभा के प्रधान महाशय धर्मपाल जी ने श्री कृष्ण जी की महती कृतियो पर प्रकाश डाला। इसी अवसर पर उच्चतर माध्यमिक विद्यालयो के छात्र-छात्राओ की एक प्रतियोगिता 'योगेश्वर कृष्ण एव राजनीति' विषय पर हुई। रघुमल आर्य कन्या महाविद्यालय की छात्रा शिखा को १०१) का प्रथम पुरस्कार इसी विद्यालय की छात्रा कुमारी नीलम को ५१) का द्वितीय पुरस्कार तथा पूसा रोड, नई दिल्ली स्थित दयानन्द एग्लो वैदिक उ० मा० विद्यालय के छात्र कमल कपूर को ३१) का तृतीय पुरस्कार दिया गया। महाशय धर्मपाल जी ने श्री कृष्ण पर भाषण करने वाले श्रेष्ठ वक्ता को १०१) का पुरस्कार दिया। उनके अतिरिक्त उन्होने रघुमल आर्य कन्या विद्यालय तथा आर्यसमाज हनुमान रोड को ५००-५०० रुपये दान दिए। श्री रतनलाल जी सहदेव ने यज्ञशेष का सम्पूर्ण व्यय तथा पुरस्कारो की राशि दान मे देने की घोषणा की। प्रतियोगिता के निर्णायक नवभारत टाइम्स के श्री गणेशसिंह कोशिक ने श्री कृष्ण के जीवन पर प्रकाश डाला। ▭

रविवार ८ अगस्त को प्रात: आर्यसमाज हनुमान रोड मे सत्याग्रह बलिदान दिवस मनाया गया। आर्यसमाज के तत्वाधान मे ही ४ अगस्त से १२ अगस्त तक वेद प्रचार सप्ताह मनाया गया। प्रतिदिन प्रात: ७॥ बजे ऋग्वेद बृहद् यज्ञ किया गया, ब्रह्मा प० रूपकिशोर शास्त्री थे। प्रतिदिन यज्ञ के बाद उन्होने वेद मन्त्रो की व्याख्या एव प्रवचन दिए। इस सप्ताह में प्रति रात्रि को श्री चुन्नीलाल जी के भजन एव श्री प० वेदप्रकाश शास्त्री की मनोहर वेदकथा हुई।

आर्यसमाजों के नए पदाधिकारी

आर्यसमाज दयानन्द मार्ग (काकरिया रोड) अहमदाबाद प्रधान--श्री रतनप्रकाश गुप्ता, उपप्रधान--श्री ओम्प्रकाश आर्य, डा० भागीरथ आर्य, मन्त्री--श्री हरिश्चन्द्र श. पचाल, उपमन्त्री--श्री पूनमचन्द्र आर्य, श्री विक्रम डी मास्टर, श्रीमती राजप्रभा बहन, श्रीमती सुषमा बहन, संगठन मन्त्री--श्री जेठालाल आर्य, कोषाध्यक्ष-श्री ईश्वरभाई ज. पटेल, पुस्तकाध्यक्ष- श्री जयन्ती भाई दे राजदेव।

आर्य वीरागना सभा, आर्यसमाज मन्दिर लुधियाना रोड, फीरोजपुर छावनी प्रधाना--वीणा आर्य, मन्त्रिणी--मधु आर्य, कोषाध्यक्ष--मंजु आर्य।

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन-न्यास जोधपुर। प्रधान—श्री रामगोपाल शालवाले, उपप्रधान श्री छोटू एडवोकेट, मन्त्री श्री रतनलाल द्विवेदी एडवोकेट कोषाध्यक्ष श्री मगल राम जी, सयोजक धन सग्रह-श्री दाऊलाल सोनी—

सनातन धर्म मन्दिर कालका जी में सामवेद यज्ञ

तपोवन आश्रम देहरादून के महात्मा दयानन्द जी के प्रवचनो का सुयोग

यज्ञ, गायत्री, भारतभूमि एव गाय के सरक्षण-सवर्द्धन के लिए ७ सितम्बर १९८२ से १२ सितम्बर १९८२ तक प्रतिदिन प्रात ६ से ८ बजे तक वैदिक साधन आश्रम तपोवन देहरादून के महात्मा दयानन्द जी की अध्यक्षता मे श्री सनातन धर्म मन्दिर ई ब्लाक कालका जी नई दिल्ली-१९ मे सामवेद पारायण यज्ञ की व्यवस्था की गई है। प्रतिदिन रात्रि को ८॥ से १० बजे तक भजन एव वेदकथा होगी।

'छात्राएं सेवा-त्याग अपनाए'

श्री बहल द्वारा चन्द्र विद्या मन्दिर को १० हजार रुपए का दान

शनिवार १४ अगस्त के दिन चन्द्र आर्य विद्या मन्दिर, ईस्ट आफ कैलाश मे श्री देसराज बहल की अध्यक्षता मे स्वतन्त्रता दिवस मनाया गया। ध्वजारोहण के पश्चात छात्राओ ने खेल-प्रदर्शन कर देशभक्ति से ओतप्रोत अनेक रोचक एव शिक्षाप्रद सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए। कार्यक्रम के अन्त मे अध्यक्ष महोदय ने छात्राओ को आशीर्वाद देते हुए कहा, 'मै आज छात्राओ द्वारा प्रदर्शित कार्यक्रम से गद्गद् होकर कहता हू कि सेवा, तप, व त्याग को अपने जीवन मे लाओ तथा आर्य समाज के आदर्शो को अपनाकर भविष्य को उज्ज्वल बनाओ। उन्होने प्रसन्न होकर सस्था को दस हजार रुपये का दान भी दिया।'

वेदों के परम विद्वान्......

(पृष्ठ ५ का शेष)

विद्वा१ का आदेश था। पुस्तक मैंने दसवीं-नवी कक्षा मे पढने हुए स्यालकोट मे ईसाइयो के वाचनालय में देखी थी। मैंने पाकिस्तान से भी पुस्तक मगवाने के प्रयत्न किये परन्तु विफल रहा। एक दिन बाढ के कारण बटाला रुकना पड़ा। वहा स्वर्गीय श्रीमहाशय सत्यपाल के यहाँ ठहरा। भयकर वर्षा मे उनके घर अलभ्य पुस्तकें देखता रहा। जो भी जची क्रय कर लीं उन्हीं मे एक पुस्तक यह भी थी। श्री स्वामी जी को भेज दी गई। इसका उल्लेख स्वामी जी ने भी किया है।

फिर लिखा कि इस्लाम सम्बन्धी अमुक पुस्तक चाहिए। एक पुस्तक अरबी को भाषाओ की जननी सिद्ध करने पर लिखी गई। वह भी मगवाई। मैं ये पुस्तकें प्राप्त करने मे सफल हुआ।

एक विनोद की बात—गुरुकुल रामपुर मे श्रीमहाशय राजपाल (भजन मण्डली वाले)ने एक दिन भोजदत्तजी को टुण्डा कह दिया। भोजदत्त जी का एक हाथ ठीक न था। उन्होने स्वामी जी से शिकायत कर दी कि राजपाल ने मुझे टुण्डा कहा है। स्वामी जी ने राजपाल जी को बुला छिया। 'क्यों राजपाल, तुमने भोजदत्त जी को टुण्डा कहा?'

राजपाल चुप। 'फिर टुण्डा कहोगे? आगे से टुण्डा नही कहना। टुण्डा कहना अशोभनीय है? ध्यान रहे अब टुण्डा मत कहना। टुण्डा कहा तो दण्ड मिलेगा। अब की बार तो कोई विशेष दण्ड नही देता, अब यदि फिर तुमने भोजदत्त जो को टुण्डा कहा तो कठोर दण्ड मिलेगा।' ऐसे शब्द स्वामी जी ने सहज रीति से कहे।

यह सुनकर भोजदत्त मुलतानी मे बोले उसका आशय था—'छोड-छोड ओ स्त्र मिया राजपाल ने तो मुझे एक बार टुण्ठा कहा तूने दस बार मुझे टुण्डा टुण्डा कहकर सचमुच ही टुण्डा बना दिया।' यह सुनकर सब हस पड़े। भोजदत्त जी का हाथ तो विकृत था ही फिर स्वामी जी को टुण्डा बनाने का दोष दिया। स्वामी जी थोडा हस दिए। बात आई गई होगी। उनके जीवन की ऐसी कई रोचक घटनाएं हैं जो लिखी जानी चाहिएं।

—वे

शुद्धिकरण एवं शुभ बिवाह

दिनांक १७-८-८२ के सांय ६.३० बजे एक अंग्रेज युवक नील एडवर्ड फासट सुपुत्र श्री जार्जफासट इग्लैंड निवासी का वैदिक रीति के अनुसार श्री जे० पी० पाठक के पोरोहित मे भारी सख्या में जनता के सामने शुद्धिकरण किया गया। श्री नील कासट का नाम वैदिक रीति अनुसार श्री नील कुमार आर्य रखा गया है।

श्री नील कुमार आर्य का शुभ विवाह कुमारी भारती पटनी सुपुत्री श्री एव श्रीमती श्याम जी देव जी पटनी इंगलैंड निवासी के साथ श्री जे० पी० पाठक के पौरोहित्य मे सम्पन्न हुआ।

प० प्रेमचन्द शास्त्री पक्षाघात से पीड़ित

नयी दिल्ली आर्यजगत के विद्वान, गुरुकुल ज्वालापुर के स्नातक अनेक बाल ग्रन्थो के रचयिता प० प्रेमचन्द शास्त्री को १० अगस्त, १९८२ को रात्रि के समय बाए अग पर पक्षाघात हो गया। वह इन दिनो लोकनायक जयप्रकाश नारायण अस्पताल के वार्ड न० ८ बेड न० १ पर अपने जीवन से सघर्ष कर रहे हैं। उन्होने 'सार्वदेशिक' साप्ताहिक पत्र को सजाने-सवारने और लेखादि प्रदान करके अपना योगदान किया है।

卐 'आर्यसन्देश' के
स्वय ग्राहक बने –
दूसरो को बनाए

卐 आर्यसमाज के सदस्य
स्वय बनें –
दूसरो को बनाइए

卐 हिन्दी-सस्कृत भाषास्वय
दूसरो कोपढ़ाइए—

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए श्री सरदारी लाल वर्मा द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित तथा भाटिया प्रेस २५७४, रघुबरपुरा नं० २ गांधी नगर दिल्ली ३१ में मुद्रित कार्यालय १५ हनुमान रोड नई दिल्ली : फोन ३१०१५०।

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक मुखपत्र

एक प्रति ३५ पैसे   वार्षिक १५ रुपये   वर्ष ६   अंक ४५   रविवार ५ सितम्बर   २१ भाद्रपद वि० २०३९   दयानन्दाब्द—१५८

धर्म न दूसर सत्य समाना !

सा मा सत्योक्तिः परिपातु विश्वतो द्यावा च यत्र ततनन्नहानि च।
विश्वमन्यन्निविशते यदेजति विश्वाहापो विश्वाहोदेति सूर्य ॥ ऋग्वेद १०.३७ २

सत्य वाणी के सहारे आकाश टिका है, सारा ससार और सारे प्राणी उसी के सहारे हैं। उसी से दिन निकलता है, उसी से सूर्य का उदय होता है, उसी से जल निरन्तर बहता है, वही सत्य हमारी रक्षा करे।

अग्नो न क्षा दाधार पृथिवी तस्तम्भ द्या मन्त्रेभि सत्यैः ॥ऋग्वेद १ ६७ ३

सूर्य जैसे पृथ्वी को धारण करता है, वैसे ही अग्नि ने अन्तरिक्ष को धारण किया है तथा सत्य सकल्पो से आकाश को धारण किया है

ऋतं च सत्य चाभीद्धात्तपसो ऽध्यजायत। ऋग्वेद १० १९०.१

तेजोमय तप के द्वारा यज्ञ और सत्य की उत्पत्ति हुई।

सुविज्ञान चिकितुषे जनाय सच्चासच्च वचसी पस्पृधाते।
तयोर्यत्सत्य यतरदृजीयस्तदित्सोमोऽवति हन्त्यासत् ॥ ऋग्वेद ७ १०४ १२

बुद्धिमान लोग जानते हैं कि सत्य और असत्य वचन एक दूसरे से होड करते हैं। सोम सत्य का पालन करते हैं और असत्य का नाश करते हैं।

सत्यस्य नाव सुकृतमपीपरन् — सत्य की नाव धर्मात्मा को पार करती है।

क्षेत्रीय भाषाओं के जानकार प्रचारक भेजे जाएं

मीनाक्षीपुरम के खतरे की रोकथाम के लिए

हिन्दूरक्षा समिति के मन्त्री का वक्तव्य

नई दिल्ली। मीनाक्षीपुरम का दौरा करने के बाद अ० भारतीय हिन्दू रक्षा समिति के मन्त्री डा० रघुवीर वेदालकार ने कहा है कि दक्षिण भारत मे हिन्दू धर्म के प्रचार के लिए ऐसे मिशनरियो की जरूरत है जो वहा की क्षेत्रीय तमिल और मलयालम दोनो भाषाए जानता हो। जहां तक सम्भव हो उसी क्षेत्र के प्रचारक नियुक्त किए जाने चाहिए। इस्लामीकरण का खतरा तभी टाला जा सकता है, जब कुछ ध्येयनिष्ठ कार्यकर्त्ता स्थायी रूप मे वहां रहकर कार्य करें। यह अत्यन्त दुर्भाग्य का विषय है कि जिस मीनाक्षीपुरम के नाम पर संस्थाओं ने लाखो रुपए एकत्र किए, वे सस्थायें वहाँ इन राशियो के उपयुक्त कार्य को अजाम नही दे सकी हैं।

डा० रघुवीर ने इस तथ्य पर भी ध्यान खीचा कि मीनाक्षीपुरम मे किसी हिन्दू सगठन ने कोई स्थायी ठोस कार्य नही किया, न वहां कोई मन्दिर बना है, न ओ३म ध्वज और स्वस्तिक पताका दिखाई देती है। गाँव मे प्रवेश करते ही मस्जिद दिखाई देती है और वहा एक मौलवी स्थायी रूप से रहता है, मस्जिद तथा गाँव के कई घरों पर हरे झण्डे लहराते दिखाई देते है। मीनाक्षीपुरम के एक हिन्दू निवासी ने बडी वेदनापूर्वक कहा कि यहां हिन्दू नेता या कार्यकर्ता आते हैं, और चले जाते हैं परन्तु स्थिर रूप से यहां रहकर कार्य नहीं करते।

राष्ट्रविरोधी शक्तियों का मुकाबला आर्यसमाज द्वारा सम्भव

वैदिक धर्म की रक्षा के लिए प्राणों की बलि के लिए प्रस्तुत

दक्षिण भारत में आर्यसमाज का भविष्य उज्ज्वल :

आर्यनेताओं के प्रतिनिधिमण्डल का प्रेस सम्मेलन :

डा० अमरेश आर्य द्वारा सार्वदेशिक सभा के प्रधान को सूचना

नई दिल्ली। २४ जुलाई से २ अगस्त तक तमिलनाडु के अनेक स्थानो का दौरा करने के बाद सार्वदेशिक सभा के उपप्रधान श्री रामचन्द्रराव वन्देमातरम्, आन्ध्र प्रदेश को आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामचन्द्रराव कल्याणी, डा० अमरेश आर्य (भू० पू० शेख अमीर मुहम्मद) आदि आर्य नेताओं ने एक प्रेस सम्मेलन मे तमिल, मलयालम और कन्नड के २० समाचार पत्रों के प्रतिनिधियों का एक सम्मेलन आयोजित किया। इस प्रेस सम्मेलन मे आर्यसमाज क्या है, वर्त्तमान समय मे इसका क्या महत्त्व है और किस तरह वह हिन्दू समाज की रक्षा कर सकता है—इत्यादि प्रश्नो का समुचित उत्तर दिया गया। प्रेस सम्मेलन मे एकत्र पत्र-प्रतिनिधियो ने भली प्रकार अनुभव किया कि राष्ट्रविरोधी शक्तियो का मुकाबला करने की जैसी क्षमता आर्यसमाज और उसकी विचारधारा में है, वैसी किसी अन्य सस्था मे नही है।

सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले को डा० अमरेश आर्य ने अपने पत्र मे लिखा है —"जहा तक मैंने अध्ययन किया है, दक्षिण भारत के प्रदेशो मे आर्यसमाज का भविष्य बहुत उज्ज्वल है। सभी हिन्दू सस्थाओं के शीर्षस्थ नेता आर्यसमाज के कार्य मे पूरा सहयोग देने को तैयार हैं। मेरी हार्दिक इच्छा है कि दक्षिण भारत मे आर्यसमाज को एक सशक्त सगठन का रूप दे दू ताकि स्वेच्छा से अपने पूर्वजो के धर्म मे लौटने वाले मुस्लिम भाइयो और ईसाइयो के लिए एक मार्गदर्शक बन सकू। इस काम मे आने वाले खतरो को भी मैं समझता हू। डरने की कोई बात नही, एक न एक दिन तो मरना ही है। यदि वैदिक धर्म की रक्षा के लिए मुझे अपने प्राणो की बलि देनी पडे तो मैं अपने जीवन को धन्य समझूंगा।"

राजस्थान विश्वविद्यालय के विरुद्ध निषेधाज्ञा

आर्यसमाज शिक्षा सभा अजमेर द्वारा सचालित जियालाल टीचर्स ट्रेनिंग कालेज के अवैतनिक मंत्री प्राचार्य दत्तात्रेय बाब्ले द्वारा प्रस्तुत राजस्थान विश्वविद्यालय के विरुद्ध एक रिट याचिका राजस्थान हाईकोर्ट के मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति श्री कल्याणदत्त शर्मा ने २२ अगस्त को विचारार्थ स्वीकार कर ली है।

माननीय न्यायाधीश महोदय ने राजस्थान विश्वविद्यालय के विरुद्ध निषेधाज्ञा जारी करके उसे आदेश दिया है कि उपर्युक्त कालेज के विरुद्ध विश्वविद्यालय ने जो कार्यवाही की है, वह रोक दी जाये।

गत दो वर्षों से राजस्थान विश्वविद्यालय ने राज्य के जयपुर, उदयपुर और जोधपुर विश्वविद्यालयो से सम्बन्धित समस्त शिक्षक-प्रशिक्षण सस्थाओं मे विद्यार्थियो के प्रवेश का सम्पूर्ण अधिकार स्कूल शिक्षा निदेशक को सौंप दिया था। जियालाल शिक्षण-प्रशिक्षण सस्थान की ओर से इस अनधिकृत प्रणाली का यह कहकर विरोध किया कि यह सस्था के आतरिक मामले मे अनुचित हस्तक्षेप है, किन्तु विश्वविद्यालय ने इस आपत्ति को अस्वीकार करके जियालाल कालेज की मान्यता रद्द करने का प्रस्ताव पारित कर दिया था जिसके विरुद्ध उपर्युक्त निषेधाज्ञा प्राप्त की गई।

सम्पादक—नरेन्द्र विद्यावाचस्पति

व्यवस्थापक—प्रद्युम्नलाल तलवाड़

वेद-मनन

पवित्र और आह्लाद प्रदभाओं को भरो

—मनोहर विद्यालकार

अग्ने यत्ते शुक्र यच्चन्द्र यत्पूत यच्च यज्ञियम। तद्देवेभ्यो भरामसि ॥ यजु. १२-१०४

ऋषि—हिरण्यगर्भ । देवता—अग्नि: । छन्द. भुरिग् गायत्री ।

शब्दार्थ—हे (अग्ने। हितकर और रमणीय पदार्थों के स्वामिन् मार्गदर्शक अग्ने ! (ते) तेरे पास(यत्) जो(शुक्रम्) शुभ्र तथा शीघ्रकारी (चन्द्रम्) शीतल और आह्लादक (यत् पूतम्) जो स्वय पवित्र तथा दूसरो को पवित्र करने वाले (च) और (यत्) जो (यज्ञियम्) यज्ञिय अर्थात् पूजनीय जनो को आदर मान, समवयस्कों के साथ सहयोग और छोटो को सहायता देने की भावना को जगाने वाले पदार्थ या भाव है (तत्) उस पदार्थ और भाव को हम (देवेभ्य) प्राकृतिक दिव्य शक्तियो और दिव्य भावनायुक्त मनुष्यो से प्राप्त करते या करने का प्रयत्न करते हैं और तदन्तर (देवेभ्य) समाज और राष्ट्र के पापरहित, प्रसन्नचित्त मार्गदर्शक और परिश्रमी देवो के लिए (भरामसि, प्राप्त कराते है।

इस जगत् के स्वामी परमात्मा के पास हितकर और रमणीय पदार्थो का अनन्त भण्डार है। एक ही पदार्थ एक के लिए विष और दूसरे के लिए अमृत का काम करता है। इस ब्रह्माण्ड के अग्नि, वायु, जल आदि देवो से अपने लिए शुभ्र, पूत और यज्ञिय पदार्थो को प्राप्त करने का प्रयत्न करना चाहिए। उन्हें प्राप्त करके अपने लिए उपयोगी भाग रखकर शेष भाग दूसरे देवजनो को अर्पित कर देना चाहिए।

इसी प्रकार समाज और घर मे भी अनेक पदार्थ होते है, अपने लिए लाभकर और आवश्यक पदार्थ लेकर शेष पदार्थ घर, समाज और राष्ट्र के हित के लिए अर्पित कर देना चाहिए।

देव, वे कहाते है,जिनके पास जाकर या जिन्हे प्राप्त करके पाप नष्ट होते हैं, आनन्द प्राप्त होता है, मार्ग-प्रदर्शन मिलता है, दु.ख और कष्ट मे आसू न बहाने की प्रेरणा मिलती है और भूत तथा भविष्य के चिन्तन के बाद वर्तमान को करने की प्रवृत्ति होती है।

विशेष—इस मन्त्र के ऋषि शब्द का अर्थ सकेत करना है कि घर समाज और राष्ट्र मे 'अग्नि बनने के इच्छुक को अपने हृदय मे—दूसरो के लिए हितकर तथा सुन्दर भाव रखने, ऐसा ही व्यवहार करने तथा जहाँ तक सभव हो ऐसे पदार्थ प्राप्त करने का प्रयत्न करना चाहिए।

इस मन्त्र के छन्द का शब्दार्थ सकेत करता है कि मनुष्य को भूत, वर्तमान और भविष्य तीनो कालो का विचार करके, और अपने तथा दूसरो के भरण का ध्यान रखकर अपने कार्य करने चाहिए।

अर्थपोषक प्रमाण—देवेभ्य.—देवो मे—चतुर्थी-पञ्चमी बहुवचन। देवा:—अपहत पाप्मानो वै देवा। जै० ३-३५४ गातुविदो हि देवा। माश-४४.४.१३ आनन्दात्मानो है व सर्वे देवा। माश१०-३-५-१३ नहि देवा अश्रु कुर्वन्ति। मै० २-१-१०परोक्षप्रिया इव हिदेवा भवन्ति। गोपथ १-२-२१। गायत्री—त्रिगमना वा विपरीता। निरु ७-१२ भृरिक्-भृञ् भरणे। चन्द्रम्—चदि आह्लादे। यज्ञियम्—यज देवपूजा सगतिकरण दानेषु। देवा—दिवु-क्रीडा विजिगीषामोदमद स्वप्नकान्तिगतिषु। शुक्रम्—शोचते-ज्वलति कर्मण। शुच् पूतीभावे, शुच्य अभिषवे।

५२२, ईश्वर भवन,
खारी बावडी, दिल्ली-११०००६

वेदाध्ययन राष्ट्र-निर्माण

– डा० पुष्प वती प्रचार्या

मैं पुजारिन आर्यसमाज की कोई ला दो श्रद्धा के फूल।
बलिदानी वीर सोए जहा पर बता दी उस नदी का कूल ॥
गाए तराने देशप्रेम के तूफानी लहरो मे झूल।
पगो मे शूल थे और मुख पर हास्य के फूल ॥
आई आई बलिदानो की बेला आई।
बलिदानी रक्त लालिमा ले उषा मुस्काई।
बलिवेदी पर वीर रक्त की दिव्य छटा छिटकाई।
बांध कफन सिर आर्य बाला रणचण्डी बन आई ॥
कुछ ज्ञान है ?
अरि न डरना शूलो म ओ असि कर रहा सतेज।
और तुम अतीत के गीत सुनाओ बैठ फूलो की सेज ॥

—मातृमान्दर कन्या गुरुकुल, रामापुरा, वाराणसी।

वैदिक वर्षागीत

—डा० रामनाथ वेदालंकार

ग्रीष्म प्रचण्ड हो रहा था। भूमि तवा-सी तप रही थी। ताल-सरोवर सूख गए थे। वृक्ष-वनस्पति कुम्हला रहे थे। किसान भूमि को खाली छोड़े हाथ पर हाथ धरे बैठे थे। वैदिक स्तोताओ के कण्ठ मुखरित हो उठे—

समुत्पतन्तु प्रदिशो नभस्वतो समभ्राणि वातजूतानि यन्तु।
महऋषभस्य नदतो नभस्वतो, वाश्रा आप पृथिवी तर्पयन्तु ॥—अथर्व ४ १५.१

'दिशाए उमड पडे, वर्षा-पवन से लाई हुई मेघ-घटाए आकाश मे छा जाए। गडगडाते बादलो की रिमझिम करती हुई वर्षाए पृथ्वी को तृप्त करे।'

समीक्षयन्तु तविषा सुदानवो अपा रसा ओषधीभि सचन्ताम्।
वर्षस्य सर्गा महयन्तु भूमिम् पृथग् जातन्तामोषधयो विश्वरूपा ॥ २ ॥

'दानी बादल अपनी बहार दिखाए। ओषधिया रसो से भर जाए। वर्षा की धाराओसे भूमि लहलहा उठे। चारो ओर रग-बिरगी ओषधिया दृष्टिगोचर होने लगे'

आशामाशा विद्योतता वाता वान्तु दिशोदिश।
मरुद्भि प्रच्युता मेघा सयन्तु पृथिवीमनु ॥ ८ ॥

'दिशा-दिशा मे बिजलिया चमके,दिशा-दिशा मे शीतल हवाए चलें। वायुओ से प्रचलित मेघ आ-आ कर भूमि पर बरसे।'

प्रथम वर्षा की फुहार—कोटि-कोटि कण्ठो से निकली हुई पुकारे सफल हुई। जल भरा मानसून पवन प्रवाहित हो उठा। गगन मे घटाए उमडने लगी। मानवो की आशा-भरी दृष्टि ऊपर उठी। प्रथम वर्षा की फुहार ने भूमिका आलिंगन किया। किसानो ने हल उठाए। बैलो के कन्धो पर जुए सज गए। हल भूमि से खिलवाड करने लगे। खेतो मे जुताई आरम्भ हो गई। मकई, ज्वार, बाजरा आदि के बीजो ने भूमि मे शरण ली। शनैं-शनैं फसले अकुरित हो बढ चली। एक बार फिर वैदिक ऋषियो की पुकार सुनाई दी—

गणास्त्वा उपगायन्तु मारुता पर्जन्य घोषिण पृथक्।
सर्गा वर्षस्य वर्षतो वर्षन्तु पृथिवीमनु ॥ ४ ॥

'आओ, हे पर्जन्य, वीणा बजाते हुए मारुतो के गण तुम्हारा स्तुतिगान करे। उनकी लय और तानपर रीझ-रीझकर तुम बरसो,तुम्हारी बौछारो से भूमि धन्य हो।'

महान्त कोषमुदचा निषिंच स्यन्दन्ता कुल्या विषिता पुरस्तात्।
घृतेन द्यावापृथिवी व्युन्धि सुप्रपाण भवतु अघ्न्याभ्य ॥ ऋग्वेद ५.८३ ८

'हे पर्जन्य, अपने विशाल कोश को उठाए-उठाए फिरो। उससे भूमि को सिंचित कर दो। चारो ओर नहरे निर्बन्ध होकर प्रवाहित होने लगे। जल से द्यावा-पृथिवी को आर्द्र कर दो। धेनुओ को पीने के लिए चारो ओर पानी पानी हो जाए।'

देखते ही देखते वर्षा की झडी लग गई। प्यासी धरती की तृष्णा शान्त हुई। खेत पानी मे भर गए। वन-उपवन, तरु-गुल्म, गिरि-पर्वत सब वर्षा से स्नात हो गए। भूमि पर घास का मखमली गलीचा बिछ गया। सब ओर हरियाली ही हरियाली दिखाई देने लगी। पत्ती-पत्ती प्राण से पुलकित हो उठी। वेद का कवि गाउठा—

प्र वाता वान्ति पतयन्ति विद्युत उदोषधी जिहते पिन्वते स्व।
इरा विश्वस्मै भुवनाय जायते यत पर्जन्य पृथिवी रेतसावति ॥ ४ ॥

'अहा, समीर चल रहा है, चपला चमक रही है, ओषधिया ऊपर जा रही है आकाश बरस रहा है, सब जीवो के लिए जल ही जल हो गया है। आज पर्जन्य देव भूमि पर आए है।'

उल्लासदायक वातावरण—पुष्पित वनस्पतियो से भीनी-भीनी गन्ध उठने लगी। ओषधियो मे प्राण आ गया। 'वृष्टि से स्नात हुई ओषधिया प्राण से सवाद करने लगी—हे वृष्टिजन्य प्राण, तूने हमारी आयु को बढा दिया है, तूने हमे सुरभित कर दिया है,

अभिवृष्टा ओषधय प्राणेन समवादिरन्।
आयुर्वै न प्रातीतर सर्वा न सुरभीरक ॥ —अथर्व० ११.४.६

'जब वर्षा की एक-एक धार के साथ भूमि पर प्राण की वृष्टि होने लगी तब पशु जगत् भी प्रमुदित हो उठा—अहा अब तो आनन्द ही आनन्द है, अब तो हम उत्सव मनायेंगे।

यदा प्राणो अभ्यवर्षीद वर्षेण पृथिवी महीम् पशवस्तत् प्रमोदन्ते महो वै नो भविष्यति

मेढक भी प्रसन्नता को अपने अन्दर सीमित न रख सके। 'मौनव्रतधारी ब्राह्मणो के समान जो अब तक चुपचाप भूमि के बिलो में सोए पडे थे, वे बाहर निकल कर टर्र-टर्र के सगीत से अपना उल्लास व्यक्त करने लगे।

(शेष पृष्ठ ६ पर)

प्रभु निराकार है !

ओ३म् स पर्यगाच्छुक्रमकायमव्रणमस्नाविरं शुद्धमपापविद्धम् ।
कविर्मनीषी परिभूः स्वयम्भूर्याथातथ्यतोऽर्थान्व्यदधाच्छाश्वतीभ्यः समाभ्यः ॥
यजुर्वेद-४०-८

वह सर्वत्र व्यापक प्रभु, सूक्ष्म स्थूल शरीर रहित, सर्वज्ञ, अन्तर्यामी, शुद्ध, बुद्ध एव पापरहित है, उन दुष्टविनाशक प्रभु ने न कभी इस लोक मे आकर जन्म लिया है, किन्तु सब जीवो को कर्मफल ठीक रीति से दिया है ।

ओ३म्
आर्य सन्देश

ऐसे में नींद कैसे आए !

दो भारतीय महापुरुषों के जीवन में दो ऐसे प्रसग हैं, जिन्हे यदि हम स्मरण रखें तो शायद हमे भी नींद न आए । पहली घटना महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन की है । एक बार महर्षि रात मे ही जाग गए । समीपस्थ सहायक ने पूछा—'क्या बात है ?' महर्षि ने जवाब दिया—दर्द है । नीद नहीं आती ।' सहायक ने पूछा—'किस डाक्टर-वैद्य को बुला लाऊ ?' महर्षि ने जवाब दिया था - 'भोले इन्सान, मेरे दर्द की दवा किसी चिकित्सक के पास नहीं । हमारा सोने का देश लोहे का भी नही रह गया, जिस देश का ससार मे चक्रवर्ती राज्य रहा हो, आज वहा विदेशियों का शासन है, इसी विदेशी शासन के दर्द के कारण मुझे नीद नही आ रही ।' अपनी इसी वेदना के कारण महर्षि दयानन्द ने 'सत्यार्थप्रकाश' मे लिखा था—'कोई कितना ही करे, परन्तु जो स्वदेशीय राज्य होता है, वह सर्वोपरि उत्तम होता है अथवा मतमतान्तर के आग्रहरहित अपने-पराए का पक्षपात शून्य प्रजा पर पिता-स्वमाता के समान कृपा, न्याय और दया के साथ विदेशियों का राज्य भी पूर्ण सुखदायक नहीं है ।' इसी से मिलता-जुलता एक प्रसग स्वामी विवेकानन्द का भी है । उनकी विद्वत्ता और तेज से प्रभावित होकर एक अमेरिकी परिवार ने उन्हे अपने घर में ठहरा लिया था ।

एक दिन रात के लगभग दो बजे उस अमेरिकी परिवार की गृहिणी की नीद खुल गई । उसे स्वामी जी के कमरे से रोने की आवाज सुनाई दी । कमरे की खुली खिड़की मे जब झाका तब उसने देखा कि स्वामी जी नगे फर्श पर लेटे हुए रो रहे थे । महिला ने पूछा—'स्वामी जी, आपके रोने का क्या कारण है ? आपको क्या कष्ट है ? मखमली बिस्तर छोडकर आप नगे फर्श पर ठण्ड से क्यो ठिठुर रहे है ?' उस समय स्वामी जी ने उत्तर दिया था—'मुझे यहा पूरा आराम है, पर ये रेशमी गद्दे और ऊनी कपडे मेरा पूरा उपहास कर रहे हैं । मुझे अपने देश के करोडो निर्धन नगे देशवासी नही भूलते, वे देश के लिए अनाज पैदा करते हैं, पर उन्हे खुद धान को एक दाना मयस्सर नही, वे ठण्डी रातो मे ईट का सिरहाना लगाकर कठोर जमीन पर सो जाते हैं, उन्ही देशवासियो की याद मे मुझे इन रेशमी गद्दो पर नींद नही आई ।' जब इन दो घटनाओ के परिप्रेक्ष्य मे एक आधुनिक समाचार का विवरण पढा तो दिल हिल गया । लिखा था अपनी विदेश-यात्रा के दौरान सुन्दर प्राकृतिक वातावरण एव सुविधाओ से भरपूर स्थान पर भारत के एक नेता को ऐसी गहरी और अच्छी नीद आई जैसी कि उन्हे लम्बे समय से नही मिली थी ।'

यद्यपि देश को राजनीतिक दृष्टि से स्वतन्त्र हुए ३५ वर्ष हो चुके हैं, इन वर्षो मे अनेक दिशाओ मे हमारे देश ने अच्छी प्रगति की है, परन्तु हम यह भी नही भूल सकते कि स्वराज्य के साथ देश मे अभी सुराज्य की प्रतिष्ठा नही हुई है । देश मे जातिवाद, प्रान्तवाद और भाषावाद के रोग निरन्तर बढ रहे हैं । देश मे अनाचार-भ्रष्टाचार बढ रहा है, निर्धन एव सज्जन सताए जा रहे हैं, दुष्ट मौज-मजा लूट रहे हैं । झूठ-छल कपट का साम्राज्य निरन्तर पनप रहा है । ऐसे स्वराज्य मे हमारे राष्ट्र नेता चैन की नींद सो सकें, यह चिन्ता की बात है । जिस प्रकार विदेशी शासन के अस्तित्व से महर्षि दयानन्द को नीद नही आई, जिस तरह भारत के कोटि-कोटि भूखे-नगे प्रजाजनो की भूख और नगेपन ने स्वामी विवेकानन्द को अपनी नीद से झकझोर दिया था, वैसे हमारे राष्ट्र नेताओ और प्रबुद्ध चिन्तको की नीद मे विघ्न क्यो नही आता ? जब तक देश मे करोडो प्रजाजन भूखे-नगे हैं, आवास और दवाई से वचित हैं, करोडों लोग जब गरीबी की सीमा रेखा से नीचे बिलख रहे हो तो हमारे राष्ट्र नेताओ एव प्रबुद्ध चिन्तको को सच्ची शाति नहीं मिल सकती । जनता के अभाव और कष्टों का अन्त कर सच्चे-सुराज्य की प्रतिष्ठा से ही राष्ट्र का सच्चा अभ्युदय हो सकता है ।

सुरक्षा भारत माता की : भारतीय संस्कृति की

— महादेवी वर्मा

हमारा देश बहुत प्राचीन है । संस्कृत बडी प्राचीन है । औरों के यहाँ तो पितृभूमि (फादरलैंड) है, हमारे यहाँ भारत माता है । हम माता को ही अधिक चाहते है और सोचिए एक ओर हिमालय जहाँ तुषार के कितने शिखर हैं । तुषार किरीटिनी है हमारी माता । जब सूरज की किरण पड़ती हैं मानो केशर के फूल खिलते हैं, गगा जमुना उसकी शाश्वत मुक्तावली माला है, निरन्तर-निरन्तर इसके तट पर देखिए पूरा भारतवर्ष—छोटा भारतवर्ष बसा है । इस समय और सारा काम इसकी अपनी भाषा मे हो रहा है । इसी हिन्दी के माध्यम से हो रहा है । जिसको ये कहते है कि समर्थ नही अभी यह भाषा, इस योग्य नहीं ।

तो इसको देखिए, इस मातृभूमि भारत भूमि के चरण तीन-तीन समुद्र धो रहे है । कन्याकुमारी के उस बिन्दु पर खडे हो तो आपको आश्चर्य हो जाएगा कि कितना सुन्दर दृश्य है और हमने कैसी कल्पना की है कि शिव तो हिमालय मे हैं और कन्याकुमारी मे पार्वती हैं—माला लिए हुए अर्थात् यहाँ से वहाँ तक बाँधा है हमने । पूर्व को कैसे हमने पश्चिम से बाँधा है, और कैसे उत्तर को दक्षिण से बाँधा है पूरे देश को । कितनी सुन्दर है मातृप्रतिमा हमारी । हम इसको अखण्ड रख सकें इसके लिए आवश्यक है कि संस्कृति को रखें । बिना इस संस्कृति के कैसे चलेगा और देखिए हमारे रहते-रहते हम लोगो के संस्कृत के स्थान पर उर्दू पढ़ी । उर्दू को पढ़िए इसमे हमको कोई आपत्ति नही, लेकिन संस्कृत विकल्प कैसे हो क्योकि संस्कृत मे तो हमारा पूरा जीवन बसा हुआ है । आज भी आप देखिए कितना भी कर्मकाण्ड है जन्म से लेकर मृत्यु तक सब संस्कृत से बधा है । आप आज भी देखिए चाहे जितने नए युग आ रहे है, विवाह के समय वे ही मन्त्र होंगे, जन्म के समय वे ही होंगे, चूडा कर्म के समय वे ही होंगे, उपनयन के समय वे ही होंगे । तो आप उस भाषा का समाप्त करके एक प्रकार से हमारी संस्कृति को ही खण्डित कर देते हैं, क्योकि इसमे हमारा पूरा जीवन बधा हुआ है ।

नारी का जागरण आवश्यक !

स्त्री को जागने की बडी आवश्यकता है, केवल अपने लिए नहीं, समाज के लिए, राष्ट्र के लिए, संस्कृति के लिए, धर्म के लिए उसके जागने की आवश्यकता है । उसने तो अपने जीवन मे दिया ही दिया है । देना ही चाहिए । जो आपको जीवन देती है, चिन्तन की शक्ति देती है, आत्मा देती है, विचार देती है वह सभी कुछ देती है, तो इसलिए आज वो जाग जाए तो बडा काम हो जाए । जो पढ़ी-लिखी शिक्षित महिलाए है, वे पश्चिम की ओर न देखें । अपने देश को देखें तो शायद हम नई पीढ़ी बना सकें । कभी कभी बडा भय लगता है मुझको कि हमारे यहाँ जो पढ़ी-लिखी महिलाए हैं, वे पुरुष की ही नकल करती हैं । किसी तरह उसकी शक्ति को हम जगा दे तो बहुत बडी बात होगी ।

बोध-कथा

बाधाओं से हार न मानो

यदि आपका मन स्वस्थ है, शक्तिशाली है तो आप अपनी शारीरिक अक्षमता के बावजूद कमाल कर सकते हैं । भारतीय क्रिकेट खिलाडी चन्द्रशेखर का हाथ पोलियो से ग्रस्त हो गया था, अपने हाथ की अक्षमता के बावजूद उसने हार न मानी, उसने उसी हाथ से गेंद फेंकने का ऐसा अभ्यास किया कि वह ससार मे कुछ श्रेष्ठ फिरकीबाज गेंद फेंकने वालो मे श्रेष्ठतम गिना गया । दुनिया का सबसे तेज दौडने वाला ग्लेन कनिंघम के पांव बचपन की एक दुर्घटना मे बेकार हो गए थे डाक्टर लोग जहा असफल हो गए वहाँ इस पगु लडके के मन ने फैसला किया कि वह दौडेगा और इस लगडे लडके ने सबसे तेज दौडने के सब रेकार्ड तोड डाले ।

मिल्टन-सूरदास अंधे थे बीथोवन बहरा था, गागोल अर्द्धविक्षिप्त थे आचार्य नरेन्द्रदेव और राष्ट्रपति डा० राजेन्द्रप्रसाद को दमा था—शारीरिक अक्षमता एव प्रतिकूल परिस्थितियो के सामने हार न मान कर उनसे जूझकर ही ये सामान्य मानव से महामानव बन गए । जन्म से ही अधी हैलन केलर से एक बार पूछा गया—"सब तरह के अवरोधो और असफलताओं के बावजूद आप जीवन में कैसे बढी ?" हैलन केलर ने उत्तर दिया था—"मै ईश्वर को धन्यवाद देती हू कि उसने मुझे अन्धा और बहरा बनाया । उन्ही से मैं भगवान और उनकी कृतियो को ठीक मूल्याकन कर सकी ।"

सवाल यह है कि हम आँख और कान वाले सब सुविधाओ के रहते ईश्वर और जगत् का ठीक मूल्यांकन कब कर पाएगे ?

—नरेन्द्र

इस्लामिक कुर्बानी और वेद

पिछले दिनो किन्ही 'दिलावर अली' और 'मौलाना शमसुद्दीन नौमानी' नामक दो व्यक्तियो ने मिलकर एक लेख 'मज-हब और समाज की नजर मे ईदुज्जुहा' शीर्षक से कुछ पत्रो मे प्रकाशित कराया था। उन्होने इस लेख मे इस्लाम की कुर्बानी सम्बन्धी मान्यता को वेदादि शास्त्रो से प्रतिपादित करने का असफल प्रयास किया है। यदि ये लोग केवल अपने मजहब की वास्तविकता का ही रहस्योद्घाटन करते तो हमे यह लेख लिखने की आवश्यकता नही होती, परन्तु वेदादि शास्त्रो के ज्ञान से सर्वथा अन-भिज्ञ होते हुए भी उन्होने जहा वेदादि शास्त्रो को अशुद्ध रूप मे प्रस्तुत किया, वहा मिथ्या दोष इस सीमा तक वेद के सिर मढने का प्रयत्न किया है कि ऋग्वेद के दशम मण्डल सूक्त ८१ मे यद्यपि केवल सात मन्त्र है, परन्तु इन लोगो ने उक्त सूक्त के १६ वे मन्त्र का उल्लेख किया है और उसमे एक बूचड-खाने का वर्णन बतलाया है, जिसमे गाय गो वध (जिबह) की जाती थी, ऐसा लिखा है।

कोई इन लोगो से पूछे कि जब ८१वे सूक्त मे मन्त्र केवल हैं ही सात तो सोल-हवा मन्त्र और उसमे बूचडखाना तथा गोवध का वर्णन कहां से आया ? लगता है कि उक्त लेखकद्वय को 'वही' उतरी होगी और उसमे इस्लामिक खुदा के द्वारा उक्त स्थल बनाया गया होगा। वैसे इस्लामिक खुदा की इतनी योग्यता और सामर्थ्य नही है कि वह वैदिक ऋचाओ का प्रकाशन कर सके। यह तो सर्वव्यापकेश्वर तथा सर्व शक्तिमान् वैदिक परमात्मा का ही कार्य है, जो उसने अपनी शाश्वत प्रजा आत्माओ के कल्याण के लिए आदि सृष्टि मे ही कर दिया।

यजुर्वेद अध्याय २४ मन्त्र २७ मे उक्त लेखको के अनुसार गाय, बहिश्त (एक देवता का नाम) के नाम पर कुर्बानी का निर्देश भी उक्त लेखको को मिल गया है। यह बहिश्त नाम का देवता भी कोई इस्लाम मे ही होता होगा। यजुर्वेद मे उक्त पते पर जो मन्त्र है, उसका वस्वादयो' 'देवता है और उस मे हरिण आदि पशुओ के गुणो और मानव जीवन मे उनकी उपयोगिता को जानकर उससे लाभ उठाने की बात कही गई है। निम्न उदाहरण से यह बात समझ मे आ जाएगी। मृग की एक जाति से कस्तूरी जैसा मूल्यवान् पदार्थ प्राप्त होता है और सामान्य मृगो के सीगो को आयुर्वेदिक पद्धति से फूकने पर जो भस्म तैयार होती है, वह (शृग भस्म) खांसी और निमोनिया जैसे रोगो को दूर करती है। मृग चर्म की उपयोगिता और लाभ अलग है। इन वस्तुओ की प्राप्ति के लिए मृगो की हत्या करने की आवश्यकता नही होती। स्वाभाविक मृत्यु से ये मरते ही हैं। इस मन्त्र मे मृगो के अतिरिक्त अन्य पशुओ तथा जन्तुओ से लाभ लेने की ओर भी इगित है। मत्र मे 'आ-लभते' क्रिया पद है, जिसका अर्थ प्राप्त करना होता है न कि हत्या करना।

उस लेख मे मनुस्मृति की भी चर्चा की है। मनुस्मृति के आदि प्रवक्ता महर्षि मनु का मत है—

'अनुमन्ता विशसिता निहन्ता क्रयविक्रयी।
सस्कर्ता चोपहर्त्ता च खादकश्चेति घातका (मनु० ५-५१)

अर्थ वधिक के हाथ पशु बेचने की जो सम्मति दे, जो पशु के अ गो को काट कर अलग-अलग करे, मास खरीदने वाला मांस को बेचने वाला, मास को पकाने वाला, मास को परोसने वाला, मास खाने वाला तथा वधिक के हाथ पशु बेचने वाला, ये (आठ) सबके सब घातक अर्थात् वधिक हैं।

यह मनु की इतनी स्पष्ट घोषणा है कि जिसके रहते हुए मनु पर मासाहार के विधान करने का दोष लागू नही होता, क्योकि वधिक के हाथ पशु बेचने वाले को जो सम्मति देता है, जिस महा-पुरुष की दृष्टि मे वह भी वधिक है, वह महापुरुष मांसाहार का विधान कदापि नही कर सकता और दुनिया का कोई भी साधारण बुद्धि रखने वाला व्यक्ति भी ऐसा नही मान सकता कि मासाहार का इतना विरोधी व्यक्ति भी मासाहार का विधान कर सकता है। फिर भी यदि मनुस्मृति मे कुछ इस ढग की बाते हैं तो वह समय-समय पर इसी प्रकार के लोगो के द्वारा किए गए प्रक्षेप हैं, जिस प्रकार उक्त दोनो लेखक है कि जिन्होने ऋग्वेद के दशम मण्डल के ८१ वें सूक्त के १६ मन्त्र का बूचडखाने और गोवध के लिए प्रमाण दिया है, जबकि उक्त सूक्त मे मन्त्र केवल सात ही हैं। अब यदि उक्त लेखकद्वय चाहे तो ऋग्वेद के उक्त स्थल की सात सख्या से आगे कुछ वाक्य जोड-तोड कर कुछ नए मन्त्र बना ले और सोलह सख्या पूरी करके एक नया सस्करण ऋग्वेद को प्रकाशित कराये और सोलह मन्त्र सिद्ध करें। इस प्रकार से कुछ नासमझ लोग तो बहक सकते हैं, किन्तु वेद के अध्येताओ को इस प्रकार नही बहकाया जा सकता। ऐसी ही बात मनुस्मृति की है। जो महर्षि मनु की मान्यता के विरुद्ध श्लोक पाए जाते हैं, वे इसी प्रकार के मिश्रण है तथा अमान्य हैं।

तैत्तिरीय ब्राह्मण इस समय हमारे पास नही हैं, किन्तु हम जानते है कि उसके विषय मे जो विष्णु के लिए बैल और सांड की भेट का वर्णन उक्त लेख मे किया गया है, वह नितान्त मिथ्या है और प्रसग और शब्दार्थों को न समझ कर उसे इस रूप मे प्रस्तुत किया है। जहाँ तक तौरेत इजील आदि की बात है, उसके बारे मे हमारा यह मत है कि ईसाइयत और इस्लाम इस प्रकार की मान्यताओ मे लगभग एक जैसे ही है, इसलिए उक्त विषय जो उक्त लेखको ने अपने लेख मे लिखा है, उसे वे जाने अथवा ईसाई लोग जाने।

लेखक—
—स्वामी वेदमुनि परिव्राजक
अध्यक्ष, वैदिक सस्थान नजीबाबाद(उ प्र)

प्रसग मे इतना कहना आवश्यक हो जाता है कि हजरत इस्माईल रहे हो या उनके पिता हजरत इब्राहीम—उनकी कुर्बानिया उन्हे और उनके इस्लाम को मुबारक रहे। हम तो कुर्बानी का सीधा अर्थ समझते है बलिदान करना और बलिदान का अर्थ होता है त्याग करना —किसी की हत्या नही। त्याग तथा बलिदान का अर्थ है देना और छोड देना, न कि दूसरो के प्राण लेना। जैसा कि उक्त लेखको ने भी अपने लेख मे लिखा है कि 'दुनिया की हर चीज दूसरी चीज पर कुर्बानी हो रही है।' वैसे उनके ये शब्द उनके अपने दृष्टिकोण के विरुद्ध हैं और उनके इन शब्दो से हमारा समर्थन होता है किसी का दूसरे पर कुर्बान होने का अर्थ होता है, दूसरों के प्रति अपना जीवन लगा देना अथवा दूसरो की भलाई के लिए स्व-जीवन को होम देना; न कि दूसरो की जान लेना। चाहे वह देवी-देवताओ, परि-पैगम्बरो या खुदा के नाम पर हो रही हो; है हत्या ही और यदि हत्यारे हत्या करके स्वर्ग के अधिकारी हैं तो नर्क मे कौन जाएगा ?

वृक्षान् छित्वा पशून् हत्वा कृत्वा रुधिर कर्दमम्।
यदि तु स्वर्गं यान्ति नरक केन गम्यते ॥

अर्थ—वृक्षो को काट कर और पशुओ की हत्या करके रुधिर की कीचड करने वाले यदि स्वर्ग को जाते हैं तो नरक जाने का कार्य किसका है ?

फिर, जो खुदा प्राणियो को पैदा करके मनुष्यो से उन्हे मरवा कर उनकी कुर्बानी लेता हो, वह खुदा तो क्या कोई अच्छा व्यक्ति भी नही हो सकता। इतने पर भी दुनिया के कुछ मजहब और मज-हब और मजहबी लोग यदि इन बातो से ही सन्तुष्ट रहना चाहते हो तो उन्हे कोई रोक नही सकता, परन्तु ऐसी ऊल-जलूल मजहबी बातो को लिखकर वेदादि सत्-शास्त्रो से प्रभावित करने का प्रयास कोई न करें, जैसा उक्त लेखको ने किया है, ऐसा हमारा अभिप्राय है।

सिद्धियों का साध्य

—प्रद्युम्नलाल तलवाड़

स्वामी रामतीर्थ का जीवन लाहौर छोडने के बाद अधिकाश समय, जब तक वह जीवित रहे, हिमालय की कन्दराओ मे ही बीता। स्वामी जी प्रबल साधक थे इसी प्रकार जब वह एक बार ऋषिकेश मे गगा तट पर घूम रहे थे तब एक सिद्ध योगी दिखाई दिए।

स्वामी जी ने जिज्ञासावश यो ही पूछ लिया 'बाबा, कितने वर्ष से तपस्या कर रहे हो ?' बाबा के सामने तेज पु ज युवक खडा था। स्वामी रामतीर्थ जी का वेश भी साधु का ही था। बाबा बोले, 'लगभग चालीस वर्ष से।'

'स्वामी रामतीर्थ जी की जिज्ञासा बढी। उन्होने जानना चाहा कि इतनी लम्बी अवधि मे योगीने न जाने कितनी सिद्धि प्राप्त कर ली होगी। इसलिए पूछा, 'बाबा ! क्या-क्या सिद्धियाँ प्राप्त कर ली इस लम्बी अवधि मे ?'

बाबा कहने लगे,'यह गंगा का चौडा पाट देख रहे हो ?' 'देख रहा हू बाबा!' 'मैं चाहू तो इस पाट पर उस प्रकार चल कर पार जा सकता हू जिस प्रकार तुम शुष्क भूमि पर आराम से चल सकते हो।'

रामतीर्थ तुरन्त समझ गए जिज्ञासा को भूल कर उन्होंने व्यग्य किया, 'बाबा सिर्फ पार हो जा सकते हो, वापस नही आ सकते।' बाबा ने सगर्व कहा, 'नही वापस भी आ सकता हू।

'अच्छा बाबा, यह बताइए इसके अतिरिक्त कुछ और सिद्ध हुआ है आप को ? समझते हो ?' स्वामी रामतीर्थ जी को हँसी आ गई। बोले, 'बाबा, यह बहुत ही छोटी-सी बात है! आप ने अपने अमूल्य जीवन के ४० वर्ष यो ही ही खो दिए हैं! जो कार्य आप चालीस वर्ष मे सिद्ध कर पाए हैं उसका मूल्य केवल दो आना है! नाव वाला एक आना जाने का लेता और एकआना आने का।'

रामतीर्थ आगे बोले, 'बाबा ! आपने अमृत सागर मे गोते तो लगा लिए, किन्तु वहाँ से ही मोती लाने की बजाय उठा लाए ककड-पत्थर, जो कि आपको साधा-रण धरती पर भी प्राप्त हो सकते थे।

° ° °

(शेष पृष्ठ ७ पर)

प्रत्येक भारतवासी आर्यसमाज का ऋणी है

—जगतराम आर्य

गैर आर्यसमाजी उपर्युक्त शीर्षक पढकर चौंक पडेगे, कहेगे आर्यसमाज ने कौन-सा अमृत पिला दिया या धन बाट दिया भारतवासियो को जो सभी भारतवासी आर्यसमाज के ऋणी है।

सबसे बडा धन भारत की स्वतन्त्रता है, यह अमूल्य निधि आर्यसमाज के कारण ही भारतवासियो को मिली है। प्राय पाठकगण कह उठेगे भारत को स्वतन्त्र कराने वाले तो महात्मा गाधी, प० नेहरू, मरदार पटेल, प० मदनमोहन मालवीय, लोकमान्य तिलक आदि हैं। आर्यसमाज ने भारत को कब और कैसे स्वतन्त्र कराया ?

काग्रेस की स्थापना १८८५ मे हुई थी और उपर्युक्त काग्रेस के नेताओ ने अभी जन्म भी नही लिया था तभी से आज १२५ वर्ष पहले आर्यसमाज के प्रवर्त्तक, महान् देश-भक्त, युगप्रवर्त्तक, क्रान्तिकारी सुधारक महर्षि दयानन्द मरस्वती ने आजादी का बीज बोया था और नारा लगाया था कि अपना राज्य कैमा भी हो परन्तु विदेशी राज्य से फिर भी अच्छा है। भारत मे भारतीयो का राज्य होना ही चाहिए।

भारत को स्वतन्त्र कराने के लिए महर्षि स्वामी दयानन्द जी ने गुप्त रूप से कई क्रान्तिकारी आन्दोलन चलाए। सन् १८५७ मे धर्म-प्रचार, वेद भाष्य और अन्य सामाजिक कार्य छोडकर राजस्थान के राज्यो मे राजाओ-महाराजाओ को प्रेरित किया और आजादी की लडाई के लिए तैयार किया। श्याम जी कृष्ण वर्मा को प्रेरित करके स्वातन्त्र्य वीर सावरकर के पास लन्दन भेजा। लन्दन मे श्याम जी कृष्ण वर्मा, वीर सावरकर आदि भारतीयो ने इण्डिया हाउस को केन्द्र बनाकर क्रान्तिकारी आन्दोलन चलाए। महर्षि दयानन्द से प्रेरणा पाकर और सत्यार्थप्रकाश पढकर ला० लाजपत राय, भाईप रमानन्द, रामप्रसाद बिस्मिल शहीद भगत सिंह, स्वामी श्रद्धानन्द जी, वीर सावरकर जी ने देश की आजादी मे अपना बलिदान दिया।

महात्मा गाधीजी ने जब आजादी की लडाई शुरू की 'अग्रेज भारत छोडो' का नारा लगाया, और कई प्रकार के आदोलन चलाए।

एक बार भारत के वायसराय लार्ड नार्थबुक ने महर्षि दयानन्द से कहा था कि स्वामी जी आप के भाषण मे हजारो लोग आते है, कोई गडबड न हो जाए हम सरकार की ओर से कुछ प्रबन्ध करा दे ? और यह भी कहा कि आप अपने भाषण के पश्चात् केवल इतना कह दिया करे कि अग्रेजो का राज बहुत अच्छा है सब लोग सुखी हैं, अग्रेजो का राज बना रहे। स्वामी जी ने उत्तर दिया 'मुझे किसी प्रकार की सहायता की आवश्यकता नही है और मैं कहता हू कि अग्रेजो का राज भारत मे आज ही समाप्त हो जाए।'

यह है निर्भीकता और देश-भक्ति !

आर्यसमाज की शिक्षण सस्थाए गुरुकुल कागडी, आर्य कालेज, डी० ए० वी० कालेजो के प्रोफैसर और छात्रो ने पढना-पढाना छोडकर देशभक्ति का ज्वलन्त उदाहरण देकर देशव्यापी आजादी की लडाई की आग मे अपने आपको झोक दिया।

परिणामस्वरूप कई आर्यवीर बलिदान हुए। कइयो ने जेल की यातनाए झेली, कई आर्य परिवार दुखी और परेशान हुए। क्योकि आर्यसमाज के प्रवर्त्तक स्वामी दयानन्द ने भारत को स्वतन्त्र कराने का सर्व प्रथम बीज बोया था और आर्यसमाज की शिक्षा-दीक्षा ही देशभक्ति से ओत-प्रोत है। जो सच्चा देशभक्त है वे ही आर्यसमाजी है।

कितने खेद की बात है कि जिसके सस्थापक ने स्वतन्त्रता का बीज बोया और उनके अनुयायियो ने बलिदान देकर भारत को स्वतन्त्र कराया उस आर्यसमाज का देश के नेता और नाम भी नही लेते। उनकी दृष्टि मे आर्यसमाज कुछ भी नही।

भारत की स्वतन्त्रता मे सबसे बडा योग दान आर्यसमाज का है। आर्यसमाज इसका कुछ पुरस्कार नही चाहता परन्तु भारत के नेताओ और शासको को स्वय कुछ विचार करना चाहिए। राजा राममोहन राय जैसे जिन्होंने देश के लिए महर्षि दयानन्द के मुकाबले मे कुछ भी काम नही किया। महर्षि दयानन्द सूर्य है तो राजा राममोहन राय सितारे है। भारत का शिक्षा मन्त्रालय राजा राममोहन राय के नाम पर वर्ष मे करोडो रुपए खर्च करता है, और स्वतन्त्रता के जन्मदाता, महान् सुधारक महर्षि दयानन्द के नाम पर कुछ भी नही, यह पक्षपात क्यो ?

एक हरियाणा सरकार बधाई की पात्र है जिन्होने हरियाणा मे महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय बना दिया है। भारत के नेता और शासक आर्यसमाज को साथ लेकर चलते तो एक तो ऋषि ऋण से उऋण हो जाते, दूसरे भारत का नक्शा ही दूसरा होता।

गाँधीनगर दिल्ली-११००३१

आर्य जगत् समाचार

श्रीकृष्ण सन्त, शूरवीर योद्धा और कुशल राजनीतिज्ञ थे

लन्दन आर्यसमाज मे श्रीकृष्ण जन्माष्टमी धूमधाम से सम्पन्न

लन्दन १५ अगस्त १९८२, के दिन आर्यसमाज लन्दन के तत्वावधान मे यहाँ श्री कृष्ण जन्माष्टमी तथा भारतीय स्वतन्त्रता दिवस के समारोह बडे उल्लासपूर्वक मनाए गए। वन्दे मातरम भवन मे आयोजित इस रंगारग कार्यक्रम मे प्रवासी भारतीय बडे उत्साहपूर्वक भारी सख्या मे उपस्थित थे। यज्ञोपरान्त वेदसुधा श्री गिरीशचन्द्र खोसला द्वारा सम्पन्न की गई। तत्पश्चात श्रीमती स्वर्ण शर्मा का भजन हुआ। श्री व श्रीमती कपिलदेव पिजा तथा महयोगी कलाकारों द्वारा प्रस्तुत गीत 'धन्य है भारत भू की धूल' से सभी भावविभोर हो गए। मार्मिक शब्दो तथा मधुर सगीतसे परिपूर्ण इस गीत ने सब उपस्थित श्रोताओ को मातृभूमि की याद दिला दी।

इस अवसर पर मुख्य वक्ता आर्यसमाज लन्दन के प्रधान प्रो० सुरेन्द्रनाथ भारद्वाज ने भारतीय सस्कृति तथा महापुरुषों के जीवन का सजीव चित्रण किया। प्रो० भारद्वाज ने योगीराज श्रीकृष्ण के जीवन की अनुपम घटनाओं पर प्रकाश डालते हुए उन्हे आप्त पुरुष की सज्ञा दी, उन्होने कहा कि भगवान श्री कृष्ण जैसे उच्चचरित्र, निरभिमानी, सन्त, शूरवीर योद्धा, कुशल राजनीतिज्ञ को यदि माखन चोर, गोपियो के साथ रास रग आदि करने वाला कहकर उनके चरित्र हरण का दुष्प्रयास किया जाए तो इससे बडा देश का दुर्भाग्य क्या होगा। प्रो० भारद्वाज ने पुराणो में दी गई कपोल कल्पित घटनाओ की ओर ध्यान आकर्षित किया। पराधीनता के समय यूरोपीय तथा अन्य विद्वानो ने भारतीय साहित्य में हेरफेर करके हमारे इतिहास को भ्रममूलक बनाने की कुचेष्टा मे भारतीय सस्कृति को बहुत आघात पहुचा।

इस अवसर पर श्री धर्मवीर पुरी की कविता, श्रीमती सुमन भार्गव तथा श्रीमती सन्तोष आसानन्द के भक्तिपूर्ण भजनो ने समा बाध दिया। राष्ट्रगान तथा शांतिपाठ के साथ सभा विसर्जित हुई।

हरियाणा आर्यवीर दल का प्रान्तीय महासम्मेलन २-३ अक्तूबर को फरीदाबाद में आयोजित

पलवल। आर्यवीर दल हरियाणा के सचालक श्री उत्तमचन्द शरर ने एक पत्रक प्रसारित कर सूचना दी है कि आर्यवीर दल हरियाणा का प्रांतीय महासम्मेलन २-३ अक्तूबर, १९८२ को प्रदेश के औद्योगिक नगर फरीदाबाद मे आयोजित किया गया है। सम्मेलन की अध्यक्षता आर्य जाति के निर्भीक नेता सार्वदेशिक सभा के प्रधान रामगोपाल वानप्रस्थ (शालवाले) करेंगे।

श्री शरर ने आशा प्रकट की है कि विगत १६-१७ मई को रोहतक मे सम्पन्न हुए प्रातीय आर्य वीर सम्मेलन की तुलना मे फरीदाबाद अधिवेशन मे दुगनी सख्या मे आर्य वीर भाग लेगे।

फरीदाबाद अधिवेशन की सफलता के लिए सार्वदेशिक आर्यवीर दल के सेनापति बाल दिवाकर हस, हरियाणा प्रतिनिधि सभा के प्रधान प्रो० शेरसिंह, प्रादेशिक सभा के प्रधान चौ० प्रतापसिह तथा अन्य अनेक आर्य नेताओ और आर्यजनो ने एक अपील प्रसारित कर दल को आर्थिक सहायता आर्यवीर दल हरियाणा, पलवल के नाम से भेजने का अनुरोध किया है।

इन्ग्रेड परेरर—मनीषा आनन्द बनी

देहरादून २० अगस्त। वैदिक साधन आश्रम तपोवन के यज्ञ मे डा. आनन्द सुमन के विचारो से प्रभावित होकर ईसाई युवती कुमारी इन्ग्रेड परेरर ने वैदिक धर्म की दीक्षा लेकर अपना आर्य नाम कुमारी मनीषा आनन्द रक्खा। डा. आनन्द सुमन ने कुमारी मनीषा आनन्द को सत्यार्थप्रकाश व गीता भेट की। सभी ने मिलकर नवयुवती को आशीर्वाद दिया।

श्री महर्षि दयानंद जन्म-स्थली टंकारा

आर्य जनता को यह सूचित करते हुए हर्ष होता है कि श्री महर्षि दयानन्द जन्म-स्थली टंकारा मे अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय बहुत ही सुचारु रूप से चल रहा है जिसमे इस समय लगभग ३० विद्यार्थी अध्ययनरत हैं। यह हर्ष का विषय है कि इस वर्ष जिन छात्रो ने यहाँ प्रवेश लिया है, उनमें से कुछ उच्चतर माध्यमिक परीक्षा तथा कुछ ग्रेजुएट हैं। महाविद्यालय का यह सारा कार्य आचार्य सत्यदेव जी की देख-रेख मे चल रहा है। महाविद्यालय के अध्यापक वर्ग द्वारा भी वर्ष भर गुजरात की आर्य समाजो मे वेद प्रचार का कार्य किया जाता है। महर्षि की पवित्र भूमि टकारा मे गोशाला का कार्य भी बहुत अच्छा चल रहा है जिसमें इस समय लगभग १५ गायें हैं। इसके अतिरिक्त यहाँ का एक विशाल पुस्तकालय तथा महर्षि दयानन्द चित्रशाला भी दर्शनीय है। इस पवित्र भूमि मे वर्ष भर मे हजारों आर्यजन पधारते हैं और उनकी समुचित व्यवस्था, (निवास भोजन आदि की) टंकारा ट्रस्ट द्वारा की जाती है।

आर्यसमाज अनाजमण्डी शाहदरा मे वेद प्रचार सप्ताह

आर्यसमाज अनाज मण्डी शाहदरा मे ३०-८-८२ से ५-९-८२ तक वेद-प्रचार सप्ताह मनाया जा रहा है, जिसके अन्तर्गत प्रतिदिन रात्रि को ७॥ से ९॥ बजे तक आर्य विद्वान श्री शिवकुमार शास्त्री एव आर्य वीर दल नेता श्री बाल दिवाकर हंस के व्याख्यान हो रहे हैं। व्याख्यानो से पूर्व श्री ज्ञानप्रकाश शर्मा मनोहर भजनोपदेश देते हैं।

आर्यसमाज फतेहचन्द्र धरेजा भवन करोल बाग के अधिकारी

प्रधान—श्री राजन कछवाहा, उपप्रधान--श्री वरकतराम, श्री कन्हैयालाल आर्य, श्री यज्ञदत्त शर्मा, मन्त्री--श्री कृष्णलाल वानप्रस्थी, उपमन्त्री--श्री ओमप्रकाश आर्य, कोषाध्यक्ष--श्री मनोहरलाल वोहरा, आय व्यय निरीक्षक--श्री बनारसीलाल।

आर्यसमाज मोडल बस्ती शीदीपुरा के नए पदाधिकारी

प्रधान—कविराज बनवारीलाल शादां, उपप्रधान—श्री रूपलाल जी श्री चुन्नीलाल जी, मन्त्री—श्री विनोदप्रकाश जी, उपमन्त्री—श्री नरेन्द्र जी, श्री अमर नाथ जी, कोषाध्यक्ष—श्री जोगराज, पुस्तकाध्यक्ष—श्री धर्मदेव शर्मा, प्रचारमन्त्री—श्री महीपाल आर्य, पाठशाला प्रबन्धिका - श्रीमती सतीशरानी, सम्पत्ति-सरक्षक श्री इन्द्रराज सिंह।

वैदिक वर्षागीत पृष्ठ २ का शेष

सवत्सर शशयाना ब्राह्मणा व्रतचारिण।
वाच पर्जन्यजिन्विता प्र मण्डूका अवादिषु ॥ ऋग्. ७ १० ३ १, अथर्व ४ १५ १३

'तृषार्त हो चिरकाल से वर्षा के लिए तरसते हुए मेढक अब वर्षा से तृप्ति पाकर उछल-कूद मचा रहे हैं और अपने स्वर मे दिशाओ को मुखरित करने लगते हैं। यह देखो उच्च स्वर मे टर्राते हुए बडे मेढक के पास शब्द करता हुआ एक दूसरा शिशु मेढक जा बैठा, मानो आवाज देकर पास बुलाते हुए पिता के समीप किलकारी करता हुआ पुत्र जा बैठा हो। एक मेढक दूसरे मेढक के पीछे बोल रहा है, मानो कई वेदाभ्यासी शिष्य अपने शिक्षक की वाणी का अनुकरण कर रहा हो। कही वर्षा से स्नात हुआ चितकबरा मेढक हरे मेढक के साथ स्वर मे स्वर मिला रहा है, कही आनन्द विभोर हो एक मेढक दूसरे को पकड रहा है। परिपूर्ण सरोवर के चारो ओर एकत्र हो ये ऐसे बोल रहे हैं मानो अतिरात्र यज्ञ मे ब्राह्मण एकत्र हो कर सामगायन कर रहे हो। (ऋग्वेद ७.१०.७)।'

वर्षा का उत्पात—पर, शनै शनै यह उल्लास अवसाद की रेखा मे परिवर्तित होने लगा। आनन्ददायिनी वर्षा उद्वेगकारिणी बन गई। सर्वत्र अतिवृष्टि का उत्पात होने लगा। खेतों की फसल नष्ट हो चली, नदियो की बाढो से गाव के गाव प्रवाहित होने लगे। प्रलयकारी दृश्य उपस्थित हो गया। पर्जन्य देव को प्रकुपित देख पुन वेद के गायक का कण्ठ खुला—

अवर्षी वर्षम् उदुषु गृभाय अकर्धन्वानि अत्येतवा उ।
अजीजन ओषधीर्भोजनाय कम् उत प्रजाभ्यो अविदो मनीषाम् ॥ ऋग् ५ ८३ १०

'हे पर्जन्य बहुत बरस चुके, अब वर्षा को रोको। इतनी वर्षा हो चुकी कि मरुस्थल भी जलमग्न हो गए हैं। तुमने भोजन के लिए सर्वत्र ओषधिया उत्पन्न कर दी हैं। सब प्रजाओ ने मिलकर तुम्हारा स्तुतिगान किया है।' तो अब यह प्रकोप किस लिए? हे देव, इस रौद्र रूप को त्यागो, पुन. अपना शान्त रूप प्रकट करो।

पता—१/११६ फूलबाग पतनगर (नैनीताल)

आर्यसमाजों के सत्संग

५ सितम्बर'८२

अमर मुगल प्रताप नगर—प० बलवीरसिंह शास्त्री, अमर कालोनी—प० ज्ञानचन्द, अशोक विहार के सी. ५२ ए प० वेदव्यास भजनोपदेशक; अशोक नगर प० देवराज वैदिक मिश्नरी; आर्यपुरा—प० रघुवीर वेदालंकार; आर के पुरम सेक्टर ५ स्वामी जगदीश्वरानन्द, आर के पुरम सेक्टर ६—प० रमनिवास, आनन्द विहार-हरिनगर—श्रीमती सुशीला राजपाल, किंग्जवे कैम्प—प० अमरनाथ कान्त; कालका जी डी. डी ए. फ्लैट्स—आचार्य नरेन्द्र शास्त्री, कालका जी—प० गणेश प्रसाद विद्यालंकार; करोल बाग—आचार्य हरिदेव सिद्धांतभूषण, कृष्ण नगर—श्री चमनलाल, गाँधी नगर—डा० रघुनन्दनसिंह, गीता कालोनी—प० रामरूप, ग्रेटर कैलाश II—प० ओम्प्रकाश वेदालंकार, गुप्ता कालोनी प० छविकृष्ण शास्त्री, गोविन्दपुरी—स्वामी शान्तानन्द, गोविन्द भवन-दयानन्द वाटिका—प० हरिदत्त शास्त्री, जगपुरा-भोगल—स्वामी प्रेमानन्द, जनकपुरी बी-३/२४—प० शोभाराम भजनोपदेशक; जनकपुरी सी-३—श्री बलेश्वर आर्य, टैगोर गार्डन—प्रो० वीरपाल विद्यालंकार, तिलक नगर प० तुलसीराम भजनोपदेशक, तिमारपुर प० वेदपाल शास्त्री, देवनगर—प्रो० सत्यपाल बेदार, नारायण विहार प० प्रकाशचन्द्र शास्त्री, नया बांस - प० देवेश, न्यू मोतीनगर—लाला लखमीदास, नगर शाहदरा—प० हरिश्चन्द्र शास्त्री, पंजाबी बाग—प० विश्वप्रकाश शास्त्री; पंजाबी बाग एक्सटेंशन—प० ओमवीर शास्त्री, प्रीतमपुरा—वैद्य रामकिशोर, बाग कड़े खां—प० बरकतराम भजनोपदेशक, मोडल बस्ती—प० सत्यपाल 'मधुर' भजनोपदेशक, महावीर नगर—प० सोमदेव शास्त्री; महरौली स्वामी स्वरूपानन्द भजनोपदेशक, मोती बाग—प० मुनिशंकर वानप्रस्थ रमेश नगर—प० सत्यदेव भजनोपदेशक; राणा प्रताप बाग—श्रीमती प्रकाशवती शास्त्री, राजौरी गार्डन प० रामदेव शास्त्री, राजा गार्डन बाली नगर—डा० सुखदयाल, लड्डू घाटी पहाड़गंज—श्रीमती लीलावती, लेखराम नगर-त्रिनगर—प० कामेश्वर शास्त्री, लारेन्स रोड—प० प्रकाशवीर 'व्याकुल', विक्रम नगर—प० आशानन्द भजनोपदेशक, विनय नगर—प० मनोहरलाल भजनोपदेशक, सराय रोहेला प० प्रकाशचन्द्र वेदालंकार, सुदर्शन पार्क—प्रो० भारत मित्र शास्त्री, सोहनगंज—प० ओम्प्रकाश भजनोपदेशक; श्री निवासपुरी डा० नन्दलाल; शालीमार बाग—प० शिवकुमार शास्त्री, हनुमान रोड—प० हरिशरण सिद्धांतालंकार, हौज खास डी-२०—प० अशोक कुमार विद्यालंकार खिचड़ीपुर—प० चुन्नीलाल तथा प० ज्योतिप्रसाद भजन मंडली, अशोक विहार एफ ५—प० खुशीराम शर्मा

—ज्ञानचन्द, वेद प्रचार प्रबन्धक

शुद्धि कार्य को व्यापक करने के धन की अपील

भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा, बिरला लाइन्स, दिल्ली के प्रधान श्री रामभज बत्रा, कार्यकर्त्ता प्रधान श्री रामलाल सहगल, मन्त्री सभा श्री द्वारकानाथ सहगल एवं शुद्धि सभा ट्रस्ट के प्रधान श्री देशराज बहल और ट्रस्ट मन्त्री श्री रामशरणदास आहूजा ने एक वक्तव्य मे घोषित किया है कि स्वामी श्रद्धानन्द जी एवं महात्मा हंसराज आदि द्वारा स्थापित शुद्धि सभा विगत ६०-७० वर्षों से शुद्धि कार्य कर रही है। सम्पूर्ण भारत मे मिश्नरी सेवा भाव के प्रचारकों का उपयोग कर शुद्धि कार्य को अधिक व्यापक करने के लिए आर्थिक सहायता अपेक्षित है। यह धनराशि हिन्दू शुद्धि सभा बिरला लाइन्स, दिल्ली-७ या उपकार्यालय आर्यसमाज मन्दिर मार्ग नई दिल्ली के पते पर भेजी जा सकती है।

सिद्धियों का साध्य ······(पृष्ठ ४ का शेष)

योग दर्शन का चतुर्थ पाद 'विभूति पाद है'। साधक निश्चय ही साधना मे निष्णात होने पर अनेक प्रकार की आत्मिक शक्तियों (विभूतियों या सिद्धियों) को प्राप्त करता है। किन्तु उसका उपयोग लोक-कल्याण के किसी महान् कार्य मे ही करना चाहिए। जो साधक इन सिद्धियों का उपयोग मात्र कुछ चमत्कार या जादूगरी दिखाने मे ही करते हैं, वे उनका दुरुपयोग ही करते है।

आई-२०४ अशोक विहार, फेज-१ दिल्ली-५२

आर्यसमाज तिमारपुर में यजुर्वेदीय यज्ञ

रविवार ५ सितम्बर से १० सितम्बर तक प्रातः ६॥ से ८॥ बजे तक आर्यसमाज तिमारपुर में ब्रह्मचारी अर्जुनदेव जी की अध्यक्षता मे यजुर्वेदीय यज्ञ होगा। रात्रि को ८ से ९ बजे तक प० वेद व्यास भजन मंडली भजन प्रस्तुत करेगी और स्वामी सत्यपति महाराज कथा करेंगे। ११-१२ सितम्बर को वार्षिकोत्सव मनाया जाएगा, उसमे सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शाल वाले, श्री क्षितीश वेदालंकार, प० रामकिशोर जी वैद्य, प० ओमदत्त शास्त्री आदि विद्वानों के भाषण होंगे।

रविवार १२ सितम्बर को प्रातः १० बजे यज्ञ की पूर्णाहुति होगी। यज्ञ के बाद १२ बजे से २॥ बजे तक ऋषि लंगर होगा।

आर्यसमाज पश्चिम विहार मे स्वतन्त्रता दिवस समारोह

रविवार १५ अगस्त के दिन आर्यसमाज पश्चिम विहार नई दिल्ली-६३ मे आर्य केन्द्रीय सभा के प्रधान महाशय धर्मपाल जी की अध्यक्षता मे स्वतन्त्रता दिवस समारोह मनाया गया। हरिजन नेता प० चिन्तामणि ने ध्वज फहराया। इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के मन्त्री भी पधारे। उन्होंने उचित मार्गदर्शन किया।

मानव जागृति के लिए यज्ञ एवं प्रवचन

आर्यसमाज आर्यपुरा, सब्जी मण्डी, दिल्ली ७ तत्वावधान मे ३० अगस्त से ५ सितम्बर १९८२ तक आर्यपुरा समाज मन्दिर मे प्रातः ६॥ से ८॥ तक सामवेदीय यज्ञ (गुरुकुल कालवा के ब्रह्मचारियों द्वारा) तथा प्रति रात्रि को ८ बजे प० चुन्नीलाल भजनोपदेशक के क्रान्तिकारी भजन तथा रात्रि को ९ से १० बजे तक शास्त्रार्थ महारथी प० ओम्प्रकाश शास्त्री खतौली वालो द्वारा प्रवचन प्रस्तुत किए जा रहे हैं। यज्ञ की पूर्णाहुति रविवार ५ सितम्बर को ७ बजे से १०॥ बजे तक होगी।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रकाशन

सत्यार्थप्रकाश सन्देश (हिन्दी)	१०.००
(अंग्रेजी)	समाप्त
आर्य सन्देश महासम्मेलन विशेषांक	६ ००
पादरी भाग गए — ओमप्रकाश त्यागी	० ३०
स्वामी श्रद्धानन्द-बलिदान अर्द्ध शताब्दी स्मारिका	६.००
सत्यार्थप्रकाश शताब्दी समारोह स्मारिका	१ ००

सम्पर्क करें—
अधिष्ठाता प्रकाशन विभाग
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा,
१५ हनुमान रोड, नई दिल्ली ११०००१

卐 'आर्यसन्देश' के —
स्वयं ग्राहक बनें—
दूसरों को बनाए
卐 आर्यसमाज के सदस्य
स्वयं बनें
दूसरों को बनाइए
卐 हिन्दी-सस्कृत-ग्रन्थ स्वयं पढ़ें
दूसरों को पढ़ाइए—

रजि० डी (सी०) ७

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए श्री सरदारी लाल वर्मा द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा भाटिया प्रेस २२०४, रघुबरपुरा नं० २ गांधी नगर दिल्ली ३१ में मुद्रित कार्यालय १५ हनुमान रोड नई दिल्ली ११०००१।

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक मुखपत्र

एक प्रति ३५ पैसे   वार्षिक १५ रुपये   वर्ष : ६   अंक ४६   रविवार १२ सितम्बर   २८ भाद्रपद वि० २०३६   दयानन्दाब्द—१५८

आर्यसमाज के प्रचार के लिए दस सूत्री कार्यक्रम

यह कार्यक्रम अपनाइए : अपने क्षेत्र में समाज को मजबूत कीजिए

आर्यसमाज के व्यापक प्रचार-प्रसार के लिए आर्य प्रनिनिधि सभा पजाब ने प्रदेश की आर्यसमाजो के लिए एक दस सूत्री कार्यक्रम प्रचारित एव प्रसारित किया है। वह दस सूत्री कार्यक्रम केवल पजाब की आर्यसमाजो के लिए ही उपयोगी नही है, प्रत्युत वह दिल्ली, उत्तर प्रदेश, बिहार, राजस्थान, मध्य प्रदेश आदि सभी प्रदेशो की आर्यसमाजो के प्रचार एव प्रसार के लिए उपयोगी है। आशा ही नही, पूर्ण विश्वास है कि देश की सभी आर्यसमाजे आर्यसमाज और महर्षि दयानन्द के मिशन का व्यापक प्रचार-प्रसार करने के लिए इस दस सूत्री कार्यक्रम का अवलम्बन करेगी।

प्रस्तुत है देश में आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार के लिए दस सूत्री कार्यक्रम

१. प्रत्येक जिले मे वर्ष मे एक बार आर्य सम्मेलन होना चाहिए। जिस जिले मे सम्मेलन करना हो, वह तीन महीने पहले उसका निर्णय करे और फिर उसकी पूरी तैयारी करे।

२ आर्यसमाज मे प्रति रविवार को साप्ताहिक यज्ञ होता है, उसके अतिरिक्त प्रत्येक आर्यसमाज महीने मे किसी एक व्यक्ति के घर पर या किसी सार्वजनिक स्थान पर एक सार्वजनिक यज्ञ का आयोजन करे।

३. प्रत्येक आर्यसमाज अपने क्षेत्र मे पारिवारिक सत्सग अवश्य ही कराए, एक मास मे कम से कम एक पारिवारिक सत्सग अवश्य हो।

४. अपने प्रदेश मे (दिल्ली वासियो को दिल्ली मे) आर्यसमाज हिन्दी के प्रचार का प्रयत्न करे। प्रत्येक क्षेत्र मे व्यापारी एव नागरिक अपनी दुकानो और घरो के नामपट्ट हिन्दी मे लिखाए। जो किसी दूसरी भाषा मे नामपट्ट लिखवाए, वे हिन्दी मे भी अवश्य लिखवाए।

५. प्रत्येक आर्यसमाज आर्यसमाज के प्रमुख पर्व अवश्य मनाए।

६ दहेज की कुप्रथा के विरुद्ध आर्यसमाज विशेष अभियान चलाए। अपने क्षेत्र मे किसी महिला के साथ अन्याय-अत्याचार हुआ हो तो उस महिला के परिवार के साथ सहानुभूति प्रकट की जाए, जिन्होने अत्याचार किया है, उनके विरुद्ध आन्दोलन किया जाए।

७. समाज के निर्धन असहाय व्यक्तियो विशेषत बच्चो आदि की सहायता के लिए सहायता कोष एकत्र किया जाए।

८. युवको एव कुमारो मे आर्यसमाज के विचार एव साहित्य का प्रचार-प्रसार करने के लिए क्षेत्र मे 'आर्यवीर दल एव आर्ययुवक सभाए' सगठित की जाए। धन संग्रह के लिए उपयुक्त खेलो एव बाल-प्रदर्शनो की व्यवस्था की जाए।

९ अपने क्षेत्र की जन समस्याओ के समाधान के आर्यजनो एव आर्यसमाज को विशेष उत्तरदायित्व निबाहना चाहिए। जन-कल्याण के सार्वजनिक कार्यों मे विशेष योग देना चाहिए।

१०. विरोधियो के प्रचार का मुहतोड उत्तर देने के लिए बुद्धिजीवियो की गोष्ठियो एव सभाओ के माध्यम से आर्यसमाज को वैदिक धर्म का दृष्टिकोण प्रस्तुत करना चाहिए।

गोवंश पालन एवं संरक्षण से ऊर्जा स्रोतों की रक्षा

सम्पूर्ण गोवंश हत्या निरोध पर केन्द्रीय कानून बने

नई दिल्ली। अ० भा० गोसरक्षण परिषद के अध्यक्ष महामण्डलेश्वर स्वामी योगेश्वर विदेही हरि ने एक सम्मेलन मे सूचना दी है कि ११-१२ सितम्बर को दिल्ली में हो रहे अ० भा० गोवशरक्षा सम्मेलन मे एक हजार के लगभग प्रतिनिधि आमन्त्रित किए गए हैं। उन्होने यह घोषणा भी की कि इस समय विश्व व्यापी ऊर्जासकट से ससार के सभी राष्ट्र चिन्तित है। हमारे देश मे भी ऊर्जासकट बढ रहा है। भारत मे गोवश ऊर्जा का अद्वितीय स्रोत है। गोबर-मूत्र दोनो से ही बहुत लाभ है।

श्री विदेही जी ने सूचना दी कि भारत मे ७०करोड रुपयों के ४००करोड टन गोबर मे ४०० करोड पौण्ड नाइट्रोजन, २०० करोड फोस्फोरस और ४०० करोड पौंड पोटेशियम है। ४०गोबर गैस चूल्हो मे १५० आदमियो के लिए भोजन और बिजली तैयार हो सकती है। एक बैल से ३०० टन खाद मिलती है, गोवंश का लाभ लिया जाए तो उसकी सहायता से ४० प्र० श० कृषि-उत्पादन बढ़ सकता है।

नारी का कार्य एवं शिल्प में समानाधिकार

नई दिल्ली। बृहस्पतिवार २ सितम्बर, १९८२ के दिन शृंगेरी के शकराचार्य ने इस बात पर गहरी आपत्ति की है कि स्त्रिया काम-काज के लिए घर छोड़ कर बाहर जाए। उन्होने एक प्रेस सम्मेलन मे घोषित किया कि इससे नई युवा पीढी का अधः पतन हो जाएगा।

तुम समान मनवाले हो : समान कामवाले हो !

जगद्गुरु शकराचार्य नारी को घर की ड्योडीमे सीमित रखना चाहते हैं, परन्तु आर्यों एव हिन्दू मात्र के सर्वश्रेष्ठ ग्रन्थ वेद मे कहा गया है—तुम समान मनवाले हो, समान कामवाले हो—हे मनुष्यो, मैं तुम्हे समान कार्यों मे प्रवृत्त करता हूं

ज्यायस्वन्तश्चित्तिनो मा वि यौष्ठ सराधयन्त सधुराश्चरन्त ।
अन्यो अन्यस्मै वल्गु वदन्त एत सध्रीचीनान् व समनसस्कृणोमि ।।अथर्व ३-३०-५

तुम समान मनवाले हो, समान कामवाले हो, छोटे-बडे का ध्यान रखते हुए परस्पर सुन्दर वचन कहते हुए आओ। हे मनुष्यो, मै तुम्हे समान कार्यो में प्रवृत्त करता हू।

पुरुषो के समान स्त्रियो को समान शिक्षा का अधिकार

आर्यसमाज के सस्थापक एव राष्ट्र के महान समाज सुधारक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने यजुर्वेद के आधार पर प्रतिपादित किया था—'वेदो का प्रकाश ईश्वर ने सबके लिए किया है, अत यह अनिवार्य हो जाता है कि लडको और लडकियों को

(शेष पृष्ठ ६ पर)

सम्पादक—नरेन्द्र विद्यावाचस्पति   व्यवस्थापक—प्रद्युम्नलाल तलवाड़

वेद-मनन

रोग में ओषधि-सेवन वर्जित नहीं, आवश्यक है

—मनोहर विद्यालकार

अवपतन्तीरवदन्दिव ओषधयस्परि ।
य जीवमश्नवामहै न स रिश्याति पूरुष ॥ यजु १२-९१

ऋषि —वरुण । देवता—वैद्य । छन्द —अनुष्टुप् ।

शब्दार्थ (दिव) धुलोक से (अवपतन्ती.) नीचे आती हुई (ओषधय) ओषधिया अर्थात् अन्न और भेषज (परि अवदन्) आपस मे बात कर रही थी कि —हम (य जीवम् अश्नवाम हैं) जिसके जीवन मे व्याप्त रहेगी, (स: पुरुष) वह पुरुष (न रिष्याति) न दुखी रहेगा और न अकाल मृत्यु को प्राप्त होगा ।

निष्कर्ष —वेद के अनुसार पूर्ण आयु प्राप्त करने के लिए ओषधियो का प्रयोग आवश्यक है । 'ओषधय फलपाकान्ता' के अनुसार अन्न और भेषज दोनो ही ओषधिया हैं । अन्न के अभाव मे मनुष्य निर्बल और रोगी हो जाता है । भेषज के अभाव मे कष्ट झेलता है और अकाल मृत्यु तक हो जाती है ।

सयम और त्याग के नाम पर भेषज बहिष्कार करने वाले बुद्धिमान नही कहला सकते, क्योंकि वेद स्पष्ट शब्दों मे कहता है—

त्वादत्तेभी रुद्र शतमेभि शत
हिमा अशीय भेषजेभि ।'

ऋक् २.३३ २

'द्युलोक से आती हुई' का अर्थ है कि धुलोक स्थित सूर्य की कृपा से मेघ द्वारा बरसने वाले जल से इन अन्न और ओषधियो की उत्पत्ति होती है । अथर्ववेद के मन्त्र 'पिपल्य समवदन्तायती-र्जननादधि ।' ६-१०९-२ मे औषधियोमे पिपली का नाम निर्देश भेषज सेवन की ओर भी सकेत करता है ।

विशेष—इस मन्त्र का ऋषि है वरुण । सामान्यतया वरुण सयम और विवेक का देवता, तथा सदसत् मे विवेचन करके यथोचित कर्मफल प्रदाता माना गया है । यहा यह सकेत करता है कि पूर्ण आयु प्राप्त करने के लिए सयम से रहना, तथा ऋतु के अनुकूल पथ्यापथ्य का विचार आवश्यक है । किंतु यदि सयम और विवेक के उपरान्त भी अज्ञानवश अपथ्य सेवन से कोई रोग या हिसा गले पड जाए तो वैद्य की शरण मे जाने मे हिचकिचाना नही चाहिए ।

इस मन्त्र का छन्द शब्दार्थ सकेत करता है कि मनुष्य की अपनी प्रकृति और शक्ति के अनुसार तथा ऋतु के अनुकूल पथ्यसेवन और अपथ्य के अवरोध का सदा ध्यान रखना चाहिए ।

अर्थपोषक प्रमाण—रिष्याति--रिष हिसायाम । दुःख देना या मार डालना ।

५२२, ईश्वर भवन, खारी बावडी,
दिल्ली-११०००६

वेद-मार्ग का अनुयायी हो

—राधेश्याम आर्य

क्षात्रशक्ति हो शक्ति सुपूरित, रक्षा सतत समाज करे ।
निर्बल वर्गो का निर्भय हो, क्लेश कुटिल-सा आज हरे ।
ब्रह्मशक्ति हो विद्या मडित, ज्ञान-सुशिक्षा करे प्रचार ।
शुद्ध-प्रबुद्ध करे जन-जन का—अन्तर तथा समस्त विचार ।
कृषिकार्य मे, व्यापारो मे, वैश्य हमारे रहे सुव्यस्त ।
कोई भी भुखमरी-गरीबी, से न रहे कभी सत्रस्त ।
आज्ञापालक सेवकदल हो, सेव्य भाव से आपूरित ।
राष्ट्र तथा जन-जन की सेवा—करे सुनिष्ठापूर्ण त्वरित ।
वेदमार्ग का अनुयायी हो, सारा विश्व समाज हमारा ।
शाति-सफलता-समरसता की—बरसे भू पर अमृत-धारा ।

—मुसाफिरखाना, सुल्तानपुर (उ० प्र०)

लोक-चिन्तन

प्रेस की स्वाधीनता का प्रश्न

—डा० विजय द्विवेदी

बिहार की जगन्नाथी सरकार सत्ता मे आने के बाद से ही जनहित विरोधी नीतियो को अमल मे लाने और उन्हें जनजीवनोपयोगी सिद्ध करने मे पहले दरजे का स्वेच्छाचार का परिचय देती आ रही है । उर्दू को दूसरी राजभाषा बनाना, हडताली शिक्षको पर पुलिस द्वारा अत्याचार कराना, सभी स्तरो पर जातिवाद की जड़ों को पानी देना, भ्रष्टाचार का संवर्द्धन, कानून और व्यवस्था को मखौल बना कर रख देना लगता है, मुख्य मन्त्री के बीस सूत्री कार्यक्रम का अग बन गया है । अब इसी कार्यक्रम के अन्तर्गत समाचार पत्रो की स्वतन्त्रता के हरण को भी शामिल कर लिया गया है और विधेयक पारित कर पत्रकारिता को भी काले कानून के अधीन कर दिया गया है । अब पत्रकार इस काले कानून के डर से बिहार सरकार के अधिकारियो एवं सत्तारूढ नेताओं की उज्ज्वल छवि को (?) मलिन करने वाले समाचारो को प्रकाशित नही कर सकेंगे । बिहार की जनता अब यह नही जान पाएगी कि सरकार और नौकरशाही भीतर ही भीतर क्या गुल खिला रही है अथवा जनता का दु.ख दूर करने के लिए कौन-सा अमृतरसायन तैयार कर रही है । सरकारी अधिकारी एव सत्तारूढ जन-प्रतिनिधि भी अब जनता की भावनाओ और प्रतिक्रियाओ को जानने के झझट से मुक्ति पा जा जायेंगे । बिहार मे बेकारी महगाई, भ्रष्टाचार, असुरक्षा, जाति एव सम्प्रदाय, हिसा और शोषण का जो दौर सरकारी सरक्षण मे चल रहा हैं, उस पर भी पर्दा पड जाएगा ।

जहाँ तक समाचार पत्रो की आजादी का प्रश्न है इसमे दो राय नही हो सकतीं कि पत्रो को आजादी मिलनी चाहिए । पत्रकारो को अपनी बात निष्पक्ष होकर कहने का अधिकार मिलना चाहिए । इससे सरकार और जनता के बीच सुसम्पर्क बना रहता है तथा जनता को भी सरकार की नीयत एव गतिविधियो की जानकारी मिलती रहती है । मगर यह काम यदि निहित स्वार्थों को सामने रखकर किया जाता है । तो इससे दोनों पक्षों को हानि पहुचती है । कहने की जरूरत नही है कि स्वाधीन भारत मे पत्र और पत्रकारिता--दोनो ने ही अपने दायित्वो का निर्वाह नही किया है पत्रकारिता कभी अपना स्वार्थ सिद्ध करती रही है तो कभी अपनी निर्लज्जता का कायरतापूर्ण परिचय देकर जनता और सरकार दोनों को गुमराह । जनता की मूल समस्याओ को छूने का सार्थक प्रयास आजाद भारत की पत्रकारिता ने कभी किया हो--ऐसा देखने मे कम ही आया है । इस सम्बन्ध मे समाचार स्रोतो का उल्लेख बराबर किया जाता है । कहा जाता है, सम्वाद एजेंसिया घटनाओ का सरकारी वर्णन देकर ही अपने कर्त्तव्य की इतिश्री कर देती हैं । अधिकारियो की अदला-बदली, महत्त्वपूर्ण व्यक्तियो की प्रशस्ति, नेताओ और मत्रियो की आश्वासन-पूर्ण बकवास तथा हिसा-नग्नता-अनैतिकता की खबरें ही इनकी पूंजी होती हैं । इसी के बल पर पत्रकार सुख-सुविधा का जीवन जीते हुए जनता की आंखो मे धूल झोंकते हैं । यह अन्तंकथा सबको मालूम है, तब भी बिहार के मुख्यमत्री ने पत्रकारिता पर पाबन्दी लगा कर अपने और अपनी सरकार के लिए कुआं खोद लिया है ।

—महाराजा पूर्णचन्द्र महाविद्यालय, बारीपदा (उडीसा)

अनादि कौन ?

द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया समान वृक्ष परिषस्वजाते ।
तयोरन्य: पिप्ल स्वाद्वत्यनश्नन्नन्यो अभिचाकशीति ॥ १ ॥

ऋ० म० १ । स० १६४ । म० २० ।

शाश्वतीभ्य: समाभ्य. ।.२॥ यजु० अ० ४० । म० ८ ॥

(द्वा) जो ब्रह्म और जीव दोनो (सुपर्णा) चेतनता और पालनादि गुणो से सदृश्य (सयुजा) व्याप्य-व्यापक भाव से सयुक्त (सखाया) परस्पर मित्रतायुक्त सनातन अनादि हैं और (समानम) वैसा ही (वृक्षम्) अनादि मूलरूप कारण और शाखा रूप कार्ययुक्त वृक्ष अर्थात् जो स्थूल होकर प्रलय मे छिन्न-भिन्न हो जाता है वह तीसरा अनादि पदार्थ इन तीनों के गुण कर्म और स्वभाव भी अनादि हैं । (तयोरन्य) इन जीव और ब्रह्म मे से एक जो जीव है इस वृक्ष रूप संसार मे पाप-पुण्य रूप फलो को (स्वाद्वति) अच्छे प्रकार भोगता है और दूसरा परमात्मा कर्मों के फलो को न भोगता हुआ चारों ओर अर्थात् भीतर बाहर सर्वत्र प्रकाशमान हो रहा है । जीव से ईश्वर—ईश्वर से जीव और दोनो मे प्रकृति भिन्न स्वरूप तीनो अनादि हैं ॥ १ ॥ (शाश्वती) अर्थात् अनादि सनातन जीव रूप प्रजा के लिए वेद द्वारा परमात्मा ने सब विद्याओ का बोध किया है ॥२॥

ब्रह्मचर्य का सुफल

ओ३म् ब्रह्मचर्येण तपसा राजा राष्ट्रं विरक्षति ।
आचार्यो ब्रह्मचर्येण ब्रह्मचारिणमिच्छते ॥ अथर्व ११.५.१७

वेद ब्रह्म है, वेद के अध्ययन के लिए किया आचरण ही ब्रह्मचर्य है। उसी ब्रह्मचर्य के तप से राजा अपना राज्य पुष्ट करता है। आचार्य भी ब्रह्मचर्य से ही ब्रह्मचारी को अपना शिष्य बनाने की इच्छा करते हैं।

ओ३म्
आर्य सन्देश

समान अधिकारों के साथ समान दायित्व भी

उस दिन जोधपुर में एक धार्मिक-सांस्कृतिक कार्यक्रम मे भाषण देते हुए भारत के राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह ने जनता से आध्यात्मिक एकता बनाए रखने की अपील की है। इस बात से किसी को क्या इन्कार हो सकता है कि जब देश में भावात्मक एकता एवं पर्याप्त आध्यात्मिक एकता होगी, तब वह किसी भी स्थिति का सामना कर सकता है। सिद्धान्तत ये दोनो ही बातें सत्य हैं, आज देश मे धार्मिक एव साम्प्रदायिक अधिकारो के नाम पर तथाकथित अल्पसंख्यक सम्प्रदाय अधिकतम अधिकारो की माग कर रहे हैं, परन्तु राष्ट्र के प्रति जो उनके पुनीत दायित्व हैं, उनकी वे अनदेखी कर देते हैं। कई छोटी-मोटी बातो पर इसी कारण मतभेदों की सृष्टि होती है। भारत सरकार ने अगले वर्ष के लिए जिन राष्ट्रीय छुट्टियों की घोषणा की है, उनमे अल्पसंख्यको के दस त्योहार सम्मिलित हैं परन्तु हिन्दुओ का--देश के बहुसंख्यक हिन्दुओ का एक भी त्योहार राष्ट्रीय अवकाश के रूप मे घोषित नहीं किया गया है, इसके लिए उन्हें सामूहिक प्रयत्न करना होगा। इसी तरह बहुसंख्यक हिन्दू एक से अधिक विवाह नहीं कर सकते, परन्तु मुसलमानो को छूट है, वे चार विवाह भी कर सकते हैं।

लोक सभा के एक सदस्य बाबू साहब ने लोक सभा के सदस्यो से अनुरोध किया है कि वे पूरे देश मे एक जैसा सिविल कोड लागू करने के लिए कानून बनाए जाने पर गम्भीरता से विचार करें। उन्होंने यह ठीक ही कहा है कि समान सिविल कोड न होने से राष्ट्रीय एकता मे रुकावट पैदा हो रही है। जब हिन्दू कोड बिल द्वारा हिन्दुओ के पर्सनल ला में परिवर्तन हो गया है, तब दूसरे धर्मों से सम्बन्ध रखने वाले लोगो के पर्सनल ला मे परिवर्तन करने से कोई सकोच नही होना चाहिए। स्वभावत लोगो का ख्याल है और उसमे सचाई है कि इस देश का मुसलमान अपनी आबादी बढ़ाने के लिए एक से अधिक शादी करता है। इतना ही नही, हमारे बहुत से हिन्दू भाई भी जो हिन्दू कोड बिल के अन्तर्गत अपनी पहली पत्नी के रहते दूसरा विवाह नहीं कर सकते, वे धर्म परिवर्तन कर मुस्लिम कानून के अनुसार दूसरा विवाह कर लेते हैं। पिछले महीनो मे इस तरह की दर्जनो घटनाए हुई हैं। इसी पृष्ठ पर श्रीमती रजनी की व्यथा की कहानी छपी है।

श्रीमती रजनी के पति ने धर्म-परिवर्तन कर दूसरी शादी कर ली है, अब वह न तो पूर्व पत्नी से सम्बन्ध-विच्छेद करता है और न उनके भरण-पोषण का दायित्व उठाने के लिए तैयार है। इस प्रकार की घटनाए समाज और राष्ट्र पर विघातक प्रभाव न डाले, इसके लिए आवश्यक है कि सारे देश मे सभी धर्मों के अनुयायियो पर एक समान कोड बिल लागू होना चाहिए। एक पत्नी के रहते धर्म-परिवर्तन कर दूसरे विवाह पर तुरन्त रोक लगनी चाहिए। सारे राष्ट्र के प्रजाजनों को एक विवाह से अधिक सम्बन्ध करने पर कानूनी रुकावट होनी चाहिए। आज अल्पसंख्यको के अधिकारों के नाम पर जो उन्हे सरक्षण या नौकरियां दी जाती हैं, वह स्थिति समाप्त होनी चाहिए। समस्त जनता को शिक्षण एव रोजगार की सुविधा मिलनी चाहिए। शिक्षा जहा तक सम्भव हो मुफ्त होनी चाहिए, यदि ऐसा सम्भव न हो तो जातपाति के भेद के बिना सभी गरीबो और साधनहीनो को शिक्षा एव रोजगार के पूरे अवसर एव सुविधाए मिलनी चाहिए। इसी तरह त्योहार, चाहे वे अल्पसंख्यको के हो अथवा बहुसंख्यक जनता के- सबको अनुपात के अनुसार अवकाश का अवसर देना चाहिए। प्रत्येक भारतीय प्रजाजन को शिक्षा, रोजगार, उन्नति एव अभिव्यक्ति के पूर्ण समान अधिकार मिलें तो उन्हे अल्पसंख्यको के नाम पर विशिष्ट स्थिति का त्याग राष्ट्र और समाज के प्रति अपने दायित्व का निर्वाह करना होगा, इस प्रकार के अधिकारो के साथ कर्त्तव्यबोध से ही राष्ट्र की सच्ची एकता स्थापित हो सकती है।

चिट्ठी-पत्री

आर्यसमाज की मांगें स्वीकार करें

सार्वदेशिक सभा दिल्ली के महामन्त्री माननीय श्री ओम्प्रकाश त्यागी के पहली अगस्त १९८२ के वक्तव्य के आधार पर दिनाक ३० अगस्त १९८२ जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा गोरखपुर के तत्वावधान मे नगर के सभी समाज एव सभी हिन्दू सगठनो की ओर से लाल डिग्गी उद्यान स्थान हनुमान मन्दिर से एक शोभा यात्रा निकाली गई जिसमे हिन्दुत्व प्रेमी नरनारियों ने भाग लिया। सभा मे सर्वसम्मति से निम्नलिखित मागें स्वीकार की गईं—

(१) बांग्ला देश से हिन्दुओ का निष्कासन तथा उनकी मूल सम्पत्ति को अधिकृत कर लेने का आदेश निरस्त हो।

(२) भारत सरकार की अवकाश सूची से हिन्दुओं के धार्मिक ऐतिहासिक त्योहारो की छुट्टिया कम न करके उन्हें पूर्ववत रखा जाए।

(३) हालैंड मे हिन्दुओ के शव जलाने, हवन, पूजन, तथा सत्सग करने पर लगाई हुई रोक वापस की जाए।

(४) उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा उर्दू को द्वितीय राजभाषा बनाने का राष्ट्रद्रोही विचार एव नीति का चल रहा कार्यक्रम समाप्त करके राष्ट्रभाषा हिन्दी को सम्मान दिया जाए।

—रमेश प्रसाद गुप्त, महामन्त्री, नगर आर्यसमाज साहबगज, गोरखपुर।

हिन्दू समाज मेरी क्या मदद करेगा?

साप्ताहिक 'आर्य सन्देश' के २२ अगस्त के अंक मे राष्ट्रकल्याण के लिए जन-समर्थन लेख पढ़ा, लगा जैसे यही मात्र हिन्दू समाज का प्रतीक है, पर शायद इस हिन्दू समाज मे रहते हुए हिन्दुओं पर क्या-क्या कहर टूट रहा है, उसका आप को पता नही। क्या आप मेरी इस मामले मे कुछ सहायता कर सकते हैं?

मेरा विवाह हिन्दू रीति-रिवाज से २५ जून, १९६५ को हुआ। मेरे पास सात साल का एक बेटा भी है। मेरे पति ने जो न्यू बैंक आफ इण्डिया उन्नाव (उ० प्र०) मे मैनेजर हैं, अब इस्लामी मजहब से दूसरी शादी कर ली। बैंक वाले कहते हैं—हम कुछ नही कर सकते, अदालत मे कानून स्पष्ट नही है, धर्म-परिवर्तन करना सबका अधिकार है और उस धर्म के अनुसार वह विवाह कर सकता है। अब जब कि विवाह-कानून मे कुछ सशोधन हो रहे हैं, कृपया आप कुछ ऐसी आवाज उठाइए ताकि धर्म-परिवर्तन करने से पहले व्यक्ति अपने हिन्दू धर्म के मामले निपटाए, तभी परिवर्तन कर सके। हमारा तलाक भी नही हुआ और नही मेरे साथ वह कुछ फैसला कर रहा है बस सिर्फ एक ही रास्ता है कि मैं भी मुस्लिम धर्म अपनाकर मुस्लिम समाज से अपना अधिकार मांगू, हिन्दू समाज ने या धर्म ने कुछ मुझे देना था, सो दे दिया, यदि इस बारे मे आप मेरी कुछ सहायता कर सके तो बताए।

—श्रीमती रजनी, मकान न० एन २३, नवीन शाहदरा, दिल्ली-३२

पत्र-व्यवहार बदले पते पर करें

शारीरिक अस्वस्थता के कारण मैं गांधी नगर आर्यसमाज से आश्रम मे स्थानान्तरित कर गया हूं। कृपया समाजसेवी संस्थाए एव आर्यसमाज मे बदले हुए पते पर पत्र व्यवहार करें।

—स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती, आर्य कुटीर, ४४६ सनलाइट कालोनी,२,
हरिनगर आश्रम, नई दिल्ली-११००१४

आर्यसंदेश के पाठकों से

आर्यसमाज एक राष्ट्रव्यापी सांस्कृतिक एव धार्मिक आन्दोलन है और 'आर्य सन्देश' आर्यसमाज की गतिविधियो एव आर्य विचारो का एक प्रतिनिधि साप्ताहिक पत्र है। आर्यसमाज के सन्देश एव सिद्धांतो से परिचित होने के लिए १५) वार्षिक या १५०) आजीवन देकर आर्य सन्देश के ग्राहक बनिए।

यदि आप 'आर्य सन्देश' के पहले से ही ग्राहक हैं और इसका वार्षिक मूल्य नहीं भेजा है तो तुरन्त लौटती डाक से भिजवाने की व्यवस्था करेंगे। आपके सक्रिय सहयोग से 'आर्य सन्देश' अधिक सुदृढ़ और शक्तिशाली बन सकेगा।

१४ सितम्बर . भारतीय भाषा-दिवस पर—

राष्ट्रीय भाषा-नीति : कुछ विचार

आजादी के २५ वर्ष बीत जाने पर अब यह बात एकदम स्पष्ट हो गई है कि भाषा के सम्बन्ध मे हमारी नीति राष्ट्रीय हित के अनुरूप नही रही है। अखिल भारतीय महत्त्व का विषय होते हुए भी इसे राज्य सरकारो की इच्छा सुविधापर छोड दिया गया है। सन् १९४८ के राधाकृष्णन कमीशन से लेकर सन् १९६६ के कोठारी कमीशन तक सभी ने माध्यमिक स्तर तक विद्यार्थियो के लिए त्रिभाषा सूत्र की सिफारिश की। इसे हमारी शिक्षा की राष्ट्रीय नीति १९६८ तथा १९७९, मे भी स्वीकार किया गया। उस सूत्र की भावना का समादर तो किसी भी राज्य ने नही किया पर कुछ राज्यो ने तो इसे पूर्णतया अस्वीकार कर दिया और अपनी इच्छा का सूत्र चला रहे है। तमिलनाडु मे केवल तमिल और अग्रेजी पढाई जा रही है। हाल ही मे स्वाधीनता दिवस से दूरदर्शन के रात के कार्यक्रम मे राष्ट्रीय प्रसारण शुरू किया गया है। इसमे हिन्दी और अग्रेजी दोनो भाषाओ के कार्यक्रम होते हैं। कार्यक्रम प्रारम्भ हुए अभी चार दिन भी नही हुए थे कि तमिलनाडु मे हलचल होने लगी—टी वी के माध्यम से हम पर हिन्दी थोपी जा रही है, हम इसे बर्दाश्त नही करेगे। (देखे हिन्दुस्तान टाइम्स, १९ अगस्त, १९८२, पृ. १ और ८)।

यह बात शायद बहुतो को पता न हो कि हमारे सविधान मे 'राष्ट्रभाषा' का कोई जिक्र नही है। राष्ट्रध्वज का उल्लेख है, राष्ट्रगीत का उल्लेख है, राष्ट्रीय पशु-पक्षियो की भी चर्चा है, पर राष्ट्रभाषा नही है। सविधान मे देश की चौदह प्रमुख भाषाओ की गणना की गई थी। बाद मे सिंधी भाषा को भी उसमे शामिल किया गया। इस प्रकार अब इस सूची में पन्द्रह भाषाए है। (कश्मीरी, पंजाबी, हिन्दी, गुजराती, मराठी, तेलेगु, कन्नड़, मलयालम, तमिल, उडिया, असमिया, बंगला, उर्दू, सस्कृत और सिंधी) जबसे सविधान बना तभी से इस सूची मे अन्य भाषाओ को भी शामिल करने का अभियान चलता रहा है। अनेक 'बोलियो' को स्वतन्त्र भाषाओ के रूप मे स्वीकार किए जाने की मांग भी की जाती रही है। यद्यपि सविधान की सूची मे तो अभी तक और नाम नहा जोडे जा सके हैं तथापि अखिल भारतीय महत्त्व के कुछ अभिकरणो ने इनमे से अनेक मागे स्वीकार कर ली हैं। साहित्य अकादमी जिन 'भाषाओ' के साहित्य को प्रतिवर्ष पुरस्कृत करती है उनमे कुछ 'बोलियो' को भी सम्मिलित कर लिया गया है। विश्वविद्यालयो मे जिन 'भाषाओ' के अध्ययन-अध्यापन की व्यवस्था है उनमे कई 'बोलियो' को भी स्वतन्त्र भाषा का परिधान पहना दिया गया है।

भाषाओ को प्रोत्साहित किया जाए

प्रश्न उठता है कि 'बोलिया' भी तो भाषा का अग हैं, भारत की बहुरगी सस्कृति की परिचायक हैं, फिर उनसे परहेज क्यो? पर जरा गम्भीरता से विचार कीजिए। भाषा के प्रयोग का क्षेत्र बड़ा होता है, बोली का छोटा। अत किसी बोली का अध्ययन हमे एक सीमित क्षेत्र मे बाधता है, जबकि भाषा का अध्ययन व्यापक क्षेत्र से जोडता है। राजस्थान, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, बिहार और दिल्ली—ये सभी हिन्दीभाषी क्षेत्र है। इन सब की भाषा एक है। पर यदि बोली की दृष्टि से विचार करे तो केवल राजस्थान मे ही कमसे कम चार बोलियाँ—और उनकी अनेक उपबोलिया बोली जाती है। भाषावैज्ञानिको का कहना है कि हिन्दीभाषी क्षेत्र मे लगभग चालीस बोलिया बोली जाती हैं। स्पष्ट है कि यदि बोलियो को महत्त्व दिया जाए और उनका अध्ययन किया-कराया जाए तो हिन्दीभाषी क्षेत्र ही चालीस भागो मे बँट जाएगा, जबकि हिन्दी भाषा को महत्त्व देकर और उसका अध्ययन कर-कराकर आज के सात राज्य एक भाषाई इकाई बनते हैं। इसके अतिरिक्त जिन्हे हम अहिन्दीभाषी राज्य कहते है, वहाँ यदि हिन्दी की बोलियो का अध्ययन शुरू किया जाए तो क्या स्थिति उत्पन्न होगी उसकी पाठक स्वय कल्पना करे। इन बोलियो का अध्ययन न लाभकारी होगा न उपयोगी। वह समय, धन और श्रम के अपव्यय का कारण बनेगा। एक प्रकार की अराजकता की स्थिति उत्पन्न करेगा। यह स्तरीय भाषा पर अधिकार प्राप्त करने मे बाधक और बनेगा। परन्तु हिन्दी भाषा का अध्ययन सारे देश को एकता के सूत्र मे पिरो सकता है। यही कारण है कि आचार्य केशवचन्द्र सेन, महर्षि दयानन्द, वीर सावरकर, बाल गगाधर तिलक, बंकिमचन्द्र चटर्जी, महात्मा गाधी, नेताजी सुभाषचन्द्र बोस आदि सभी ने हिंदी भाषा के अध्ययन की सिफारिश की थी न कि बोलियो के अध्ययन की। आज आवश्यकता है कि भाषा के अध्ययन को प्रोत्साहित किया जाए और बोलियो के प्रति अपने अनावश्यक मोह को कम किया जाए। सस्कृति का बहुरगापन उस सीमा तक ही सरक्षणीय है जिस सीमा तक वह सस्कृति की सुन्दरता को बढाने मे सहायक हो, जब बदरग करने लगे तब उसे त्यागना ही पडेगा।

ऊपर चर्चा की ही जा चुकी है कि हमारे सविधान मे 'राष्ट्रभाषा' की चर्चा ही नहीं की गई है। औसत भारतीय के मन मे भले ही हिन्दी इस देश की राष्ट्रभाषा हो, सविधान हिन्दी को सघ सरकार की राजभाषा (आफीशियल लैंग्वेज आफ द यूनियन) ही बताया गया है। निश्चय यह किया गया था कि सविधान लागू होने के १५ वर्ष बाद सघ सरकार का सारा कामकाज हिन्दी मे होने लगेगा, पर बाद मे १५ वर्ष की अवधि पूरी होती देख इस नीति मे परिवर्त्तन किया गया। कहा यह गया कि सरकारी कर्मचारी अभी हिन्दी मे काम कर सकने योग्य नही हैं। देश के विभिन्न राज्य भी इसके लिए तैयार नही थे कि सघ सरकार से, तथा परस्पर दूसरे राज्यो से पत्र-व्यवहार हिन्दी मे कर सके। अत सविधान मे सशोधन करके हिन्दीमे कामकाज करने के निश्चय को अनिश्चित काल के लिए स्थगित कर दिया और अग्रेजी को सह-सघीय राजभाषा (असोशिएट आफिशियल लैंग्वेज आफ द यूनियन) का दर्जा दे दिया।

सविधान ने जो १५ वर्ष का समय दिया था उसका प्रयोजन यही था कि इस अवधि मे अपेक्षित परिवर्त्तन के लिए आवश्यक तैयारी कर ली जाए। १५ वर्ष में एक पीढी बदल जाती है। जो बच्चे आज कक्षा एक मे है वे ही १५ वर्ष बाद सरकारी नौकरियो मे, व्यापार मे, उद्योग मे, राजनीति मे पहुचेगे। अत जो परिवर्त्तन हम १५ वर्ष बाद चाहते हैं वह आज विद्यालय मे लागू किया जाना चाहिए, पर न तब ऐसा किया गया, न अब किया जा रहा है।

अधिकाश राज्यो मे त्रिभाषा सूत्र लागू है यानी माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थी तीन भाषाए पढ रहे है—१. क्षेत्रीय भाषा, २. सघीय भाषा या सह सघीय भाषा अर्थात् हिन्दी या अग्रेजी, ३. आधुनिक भारतीय भाषा अथवा आधुनिक विदेशी भाषा। अहिन्दी क्षेत्र के बच्चे की कल्पना कीजिए। वह नं० १ पर अपनी क्षेत्रीय भाषा (बगला, उडिया, असमिया आदि) पढ रहा है। नं० २ पर उसे छूट है—चाहे हिन्दी पढे चाहे अंग्रेजी। वह अग्रेजी पढ रहा है क्योकि अंग्रेजी की माग है, समाज मे उसे प्रतिष्ठा प्राप्त है और वह प्रतिष्ठा दिन-ब-दिन बढती ही जा रही है। अत. उसका भविष्य भी सुरक्षित हो रहा है। नं० ३ वाली भाषा को बडे बेमन से दो-तीन साल जैसे-तैसे पढ लेता है क्योकि उसे उसकी कोई उपयोगिता-सार्थकता दिखाई नही देती। इस सूत्र मे यह नितान्त सम्भव है कि हिन्दी का अध्ययन किसी भी स्तर पर न किया जाए। तब तो जिस परिवर्त्तन की कल्पना संविधान के निर्माताओ ने की थी वह कभी सम्भव ही नही होगा। इस प्रकार यह त्रिभाषा सूत्र अंग्रेजी को प्रतिष्ठित स्थान पर बनाए रखने का सहयोग दे रहा है। स्वाधीन राष्ट्र की जो कल्पना लिए हम जी रहे है उसे साकार करने मे साधक नही, बाधक बन रहा है।

लेखक

डा० रवीन्द्र अग्निहोत्री

अत आवश्यक है कि वर्तमान त्रिभाषा सूत्र या तमिलनाडु के द्विभाषा सूत्र के स्थान पर निम्नलिखित सशोधित द्विभाषा सूत्र लागू किया जाए—

१ मातृभाषा या क्षेत्रीय भाषा

२. (क) अहिन्दीभाषियो के लिए सघीय भाषा—हिन्दी

(ख) हिन्दीभाषियो के लिए कोई एक आधुनिक भारतीय भाषा अनिवार्य रूप से प्रत्येक विद्यार्थी केवल ये दो भाषाए ही पढे। शेष सभी भाषाए ही ऐच्छिक होनी चाहिए। विद्यार्थी अपनी रुचि आवश्यकता, और योग्यतानुसार अन्य किसी भी भाषा का अध्ययन ऐच्छिक रूप से कर सकेगा। हमारी शैक्षिक, सामाजिक, तथा राष्ट्रीय आवश्यकताओ की पूर्ति इस सशोधित द्विभाषा सूत्र से हो जाती है। इस सूत्र का परिपालन करने से निश्चित रूप से वह भविष्य साकार हो सकेगा जिसके सपने हम सजोए बैठे हैं, जिसका सपना स्वतन्त्र भारत के सविधान का निर्माण करने वालो ने देखा था, अन्यथा वह सपना बस सपना ही रह जाएगा।

२८ रवीन्द्र निवास,
वनस्थली विद्यापीठ, जयपुर।

—०—

प्रभु से सुख की कामना

—ले० आचार्य पं० विनेश चन्द्र शास्त्री

ससार मे प्रत्येक मनुष्य सुख चाहता है। दु.खो को कोई भी पसन्द नही करता तथा दु खो से बचने के लिये नाना प्रकार के मनुष्य साधन जुटाता है, लेकिन वास्तविक सुख सासारिक पदार्थों मे नही हैं तथा न ही उत्तम शान्ति है। वह उत्तम सुख एव शान्ति परम प्रिय महान् प्रभ के चिन्तन-मनन ध्यान से एव उसी की आज्ञा पालन से ही प्राप्त कर सकते है। देखिए—सध्या के मन्त्रो मे से एक मन्त्र यहा उपस्थित करता हू, जिसको पञ्च महायज्ञ विधि मे ऋषि वर ने 'आचमन मन्त्र' कहा है। यजुर्वेद के ३६वे अध्याय का यह मन्त्र है जो इस प्रकार हैं—शन्नो देवी रभिष्टय आपो भवन्तु पीतये । शयोरभि स्रवन्तु न ॥ यजु अ० ३६

इस मन्त्र का ऋषि है—दध्यङ्-आथर्वण इसका अर्थ है स्थिर मन वाला स्थिर मन का स्वामी ध्यानी उपासक। तथा इस मन्त्र का देवता—आप है इसका अर्थ है व्यापक प्रजापति परमेश्वर। अब मन्त्रार्थ देखिए यहा आध्यात्मिक अर्थ रखते है—शम्=सुखदायक, नः=हमारे लिए, देवी=दिव्य गुण युक्त, अभिष्टये=इष्ट=उत्तम आनन्द के लिए, आप=सर्व व्यापक परमात्मा भवन्तु=होवे, पीतये=आत्म शान्ति के लिए, पूर्णानन्द के भोग के लिये, शम्=कल्याणकारक, और योः=दु ख का नाशक (अपने आनन्द) की, अभि=सब ओर से, स्रवन्तु=वृष्टि करे, न=हमारे ऊपर।

भावार्थ दिव्य गुण युक्त परमात्मा जो सर्वव्यापक है। वह प्रभु उत्तम, सुखानन्द की प्राप्ति के लिए तथा पूर्णानन्द के भोग के लिए, हमारे लिए सुखदायक होए। और कल्याणकारक सब दु खो का नाश करने वाला अपने परमानन्द व उत्तम सुख की हमारे ऊपर सब ओर से वृष्टि करता रहे, जिससे हम उपासक उत्तम सुखशान्ति को प्राप्त करते रहे।

व्याख्या—मानव स्वभावत सुख तथा शान्ति का इच्छुक रहता है इसी के लिए जीवन भर प्रयास करता रहता है। परन्तु प्राय लक्ष्यभ्रष्ट होने से यह सफल नही हो पाता। सुख तो ससार मे इन्द्रियो द्वारा प्राप्त होता है तथा शान्ति अन्दर-आत्मा मे ही प्राप्त होती है, परन्तु यह दोनो को बाहर से ही लेना चाहता है। वस्तुत जो बाहरी सुख है वह सच्चा सुख नही है वह भी दु.ख मिश्रित है फिर शान्ति की तो क्या कथा ? हा यदि बाहिर-भीतर दोनो क्षेत्रो मे एक लक्ष्य को पकड ले तो बाहिर सुख और अन्दर शान्ति का लाभ अवश्य हो सकता है। वह लक्ष्य है परमात्मा, बाहरी जगत् उसका ही तो बनाया हुआ है इस जगद्रूप चित्र मे उस चित्रकार परमात्मा की अनुभूति भी तो करनी चाहिए, ऐन्द्रियिक विषयो मे परमात्मा की ओर प्रवृत्ति उसकी अनुभूति का सस्पर्श भी रहे तो ऐन्द्रियिक सुख-दु ख से रहित सचमुच सुख रूप मे अनुभूत हो। गन्ध सुख के साथ परमात्मा की विभूति भी लक्षित हो, रस सुख मे उसकी महिमा भासित हो, रूप सुख मे उस ज्योति स्वरूप की झलक भासे, स्पर्श सुख मे उसके कौशल का भान हो, ध्वनि सुख मे उसकी वीणा कला का अनुभव हो। पुन अन्दर आत्मा मे उसका साक्षात् समागम प्रतीत हो क्योकि मैं बिना मेरे के नही रह सकता। अत, मेरे आत्मा मे व्यापक परमात्मा के अनुपम अनिवार्य सग से शान्ति प्राप्त होती है। ऐन्द्रियिक सुख तो परमात्मा को लक्ष्य मे रखते हुए सयम सदाचार द्वारा सेवन करने से अविकल या निर्दोष ऐन्द्रियिक सुख का प्रवाह मन मे अन्दर प्रवाहित होगा और आत्मा मे साक्षात् परमात्मा का शान्तिप्रवाह मन मे बाहर लक्षित होगा।

अतः हे मनुष्य ! इन सासारिक पदार्थों मे ही वह उत्तम सुख एव शान्ति मत देख। यदि तू उत्तम सुख शान्ति चाहता है तो महान्-अकायम्=शरीरो से रहित निराकार प्रभु जो उत्तम सुख और शान्ति के देने वाला है उसी की आज्ञा मे सदा तत्पर रह तथा सुपथगामी बन। यह मानव जीवन भोग-विलास कुसेवन मे व्यर्थ मत खो। उस महान् प्रभु की सद्प्रेरणा को सुनता हुआ इस सर्वश्रेष्ठ मानव जीवन को मोक्ष पथ की ओर ले चल जिस प्रकार स्वय सुख शान्ति चाहते हो वैसे ही दूसरो को भी सुख शान्ति देने का यत्न करो।

आर्यसमाज डिफेंस कालोनी

रक्सौल मे वेद प्रचार सप्ताह

चम्पारण जिला आर्य सभा के तत्वावधान मे रविवार ५ सितम्बर से गुरुवार ९ सितम्बर तक आर्यसमाज रक्सौल मे वेद प्रचार सप्ताह मनाया जा रहा है। इसमे शास्त्रार्थ महारथी आचार्य प० रामानन्द शास्त्री, प० भगवान शर्मा एव शिवधर आर्य भजनोपदेशक प्रवचन एव भजनोपदेश दे रहे हैं।

आर्य जगत् समाचार

हरिजनों को आदि हिन्दू कहा जाए

श्री शालवाले द्वारा श्री रामचन्द्रन के सुझाव का स्वागत

नई दिल्ली। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शाल वाले ने एक वक्तव्य मे समस्त हिन्दू समाज व हिन्दू धार्मिक सगठनो से अनुरोध किया है कि वे अब भविष्य मे अपने पीडित और दलित अनुसूचित भाइयों को हरिजन शब्द से सम्बोधित न कर आदि हिन्दू शब्द से सम्बोधित करें।

श्री शालवाले ने यह वक्तव्य तमिलनाडु के मुख्य मन्त्री श्री रामचन्द्रन के उस सुझाव का स्वागत करते हुए दिया जिसमे उन्होंने हरिजनों और सवर्णों मे बढती हुई खाई को दूर करने के लिए हरिजनो को आदि हिन्दू कहने की बात कही थी।

श्री शालवाले ने कहा—कि सभी धार्मिक सस्थाओं को इस सुझाव का स्वागत कर इस पर अविलम्ब अमल शुरू कर देना चाहिए। उल्लेखनीय है कि भारत सरकार ने भी सरकारी प्रयोग में हरिजन शब्द का परित्याग कर दिया है। उन्होने कहा—कि हरिजनबन्धु हिन्दू समाज के अभिन्न अग हैं। गांधी जी ने उन्हे सम्मान देने के लिए ही उन्हें हरिजन शब्द से सबोधित किया था। परन्तु दुर्भाग्य से हरिजन अलग समुदाय के रूप मे समाज से कटने लगे। आर्य समाज गुण, कर्म, स्वभाव से वर्ण व्यवस्था को मानता है अत: उसके लिए हरिजन या अस्पृश्यता जैसी कोई बात नहीं है और वह सभी के समान अधिकार का समर्थक है।

प्रान्तीय आर्यवीर दल सदस्यताभियान में योग दें

श्री बाल दिवाकर हस प्रधान सचालक आर्यवीर दल का अनुरोध :

नई दिल्ली। सार्वदेशिक आर्यवीर दल के प्रधान सचालक श्री बाल दिवाकर हस ने समस्त प्रांतो के आर्यवीर दल अधिष्ठाताओ, सचालको, मडलपतियो और नगरनायको और शाखा नायको से अनुरोध किया है कि वे अपनी पूरी शक्ति से आर्यवीर दल सदस्यताभियान चलाए। जिन दल अधिकारियो ने इस ओर अभी ध्यान न दिया हो तो वे पूरी शक्ति से इस दल सदस्यताभियान को सफल बनाने मे अपनी पूरी शक्ति लगा दें।

वेदार्थ पद्धतियों पर वैदिक विद्वानों की संगोष्ठी

दयानन्द अनुसधान पीठ पजाब विश्वविद्यालय द्वारा

चडीगढ। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के आर्थिक सहयोग से वेदार्थ की विविध पद्धतियो पर वैदिक विद्वानो की एक सगोष्ठी दयानन्द पीठ पंजाब विश्वविद्यालय चडीगढ मे दिनाक २४ से २६ सितम्बर तक आयोजित की जा रही है। पीठ के अध्यक्ष प्रो० भवानीलाल भारतीय ने इस सम्बन्ध मे जानकारी देते हुए बताया कि पजाब विश्वविद्यालय के उपकुलपति प्रो० रामचन्द पाल गोष्ठी का उद्घाटन करेगे और प्रथम दिन को कार्रवाई प्रसिद्ध दार्शनिक वैदिक विद्वान डा० स्वामी सत्यप्रकाश की अध्यक्षता मे सम्पन्न होगी। दिल्ली, रोहतक, कुरुक्षेत्र, राजस्थान तथा गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के वैदिक विद्वानो को वेदार्थ विषयक विभिन्न सम्प्रदायो की विवेचना हेतु आमत्रित किया गया है।

१२३ ईसाइयों ने वैदिक धर्म स्वीकार किया

भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा के उपदेशक श्री इतवारीलाल आर्य के प्रचार के फलस्वरूप ग्राम कासीपुर ओगा, जि० रामपुर मे २२-८-८२ को १२२ ईसाइयो ने वैदिक धर्म स्वीकार किया। श्री दीपचन्द शर्मा ने २१ की रात्रि को धर्मप्रचार किया।

श्री मसीहचरण का नाम शिवचरण, लाजर मसी का नाम लज्जाराम, श्री विलियम का नाम शिवदयाल घोषित हुए।

२४-८-८२ को एक ईसाई युवती कुमारी मगदलीनी सुपुत्री श्री बरी मसीह दिल्ली निवासी का शुद्धि सस्कार को गजेन्द्र शास्त्री, श्री धर्मेन्द्र शास्त्री जी ने आर्य समाज आर्य पुरा, सब्जी मण्डी दिल्ली मे वैदिक धर्म की दीक्षा देकर उसका नाम ममता देवी घोषित करके उसका विवाह श्री रामदयाल, लक्ष्मी नगर, दिल्ली के साथ सम्पन्न कराया। श्री विश्वम्भर दयाल, आर्य नगर निवासी ने पिता बनकर कन्यादान किया। प० दीपचन्द शर्मा ने शुभ आशीर्वाद दिया।

मुस्लिम परिवार हिन्दू बना

मुजफ्फरपुर २६ अगस्त। मुजफ्फरपुर से १३ कि० मी० पूर्व सकरा थाना के अन्तर्गत नरसिंहपुर बंगाही ग्राम के श्री राजेन्द्र महतो पूर्व नाम मुस्लिम मिया एव श्रीमती जमुना देवी पूर्व नाम जमीला पिता रहमान मिया हिन्दू धर्म में दीक्षित किए गए। मत्रोच्चार एव शुद्धि कार्य आर्यसमाज के पुरोहित प० अशोक कुमार विद्यावाचस्पति ने किया।

इस अवसर पर मुजफ्फरपुर जिला विश्व हिन्दू परिषद् के मन्त्री श्री नागेन्द्र नाथ ओझा ने इस कार्य की विशेषता पर प्रकाश डाला। शुद्धि कार्यक्रम में मे करीब ४०० हिन्दू-मुसलमान सम्मिलित हुए एव प्रसार ग्रहण कर इस कार्य की पुष्टि की। सारे क्षेत्र मे इस शुद्धि कार्यक्रम की चर्चा है।

मुस्लिम युवती हिन्दू बनी

कानपुर। आर्यसमाज गोविन्दनगर मन्दिर मे शास्त्रीनगर की एक शिक्षित मुस्लिम युवती को उनकी इच्छानुसार एक समारोह मे केन्द्रीय आर्य सभा कानपुर के प्रधान श्री देवीलाल आर्यद्वारा हिन्दू धर्म में प्रवेश कराया गया। इनका नाम शहनाज अख्तर से सरोज रखा गया। शुद्धि सस्कार के बाद युवती का विवाह एक राज्य सीमा कर्मचारी शिक्षित युवक श्री श्यामकुमार रावत से किया गया।

शुद्धि समारोह मे सर्वश्री देवीदास आर्य, रघुराज शास्त्री, जयरामसिंह त्यागी, दीवानचन्द्र व शुभकुमार वोहरा आदि के भाषण हुए।

दिल्ली विश्वविद्यायय में वेद संगोष्ठी

शनिवार १० सितम्बर १९८२ को दोपहर ३ बजे दिल्ली विश्वविद्यालय के कला सकाय के २२ नम्बर कमरे मे डा० प्रहलादकुमार स्मारक समिति के तत्वावधान में आयोजित वेद-सगोष्ठी में श्री सत्यभूषण योगी वैदिक देव और देवता विषय पर भाषण देंगे। इस अवसर पर मुख्य अतिथि आचार्य धर्मेन्द्रनाथ होगे। आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के प्रधान महाशय धर्मपाल छात्रवृत्ति वितरण करेगे।

यज्ञशाला निर्माण में अपना योग दें

वेदों मे यज्ञ को श्रेष्ठतम कर्म कहा गया है। यज्ञ आध्यात्मिक शक्ति मुक्ति और सासारिक आनन्द प्राप्ति मे अद्वितीय साधन है।

आइए, आर्यसमाज १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली की भव्य यज्ञशाला के निर्माण मे दिल खोल कर सहायता देकर आत्मिक उन्नति, ऐश्वर्य और सुख-शान्ति प्राप्त करें।

स्मरण रहे कि दिए गए दान पर आय कर से छूट मिल सकती है।

रामभूर्ति कैला — प्रधान
के० एल० भाटिया — मंत्री

आर्यवीर दल गुरुकुल कर्त्तारपुर के नए पदाधिकारी—सरक्षक--श्री नरेश कुमार शास्त्री, प्रधान--ब्र० सोमपाल, मन्त्री ब्र० प्रियव्रत, कोषाध्यक्ष--ब्र० देवदत्त, उपकोषाध्यक्ष--ब्र० परमवीर, शिक्षक--ब्र० चन्द्रकान्त।

सत्यार्थप्रकाश परीक्षाएं

सदैव की भांति इस वर्ष भी १९ सितम्बर को आर्ययुवक परिषद (रजि०) दिल्ली द्वारा सचालित सत्यार्थप्रकाश की चारो परीक्षाए सारे देश के २०० परीक्षा केन्द्रो मे सम्पन्न होगी। परीक्षा देने के इच्छुक अभ्यर्थी परीक्षा पाठविधि, आवेदन पत्र तथा सभी प्रकार की अन्य जानकारी के लिए श्री चमनलाल एम. ए. परीक्षा मन्त्री, एच. ६४, अशोक विहार, दिल्ली-५२ से पत्र-व्यवहार कर निशुल्क प्राप्त कर लेनी चाहिए।

देवव्रत धर्मेन्दु, प्रधान — ओमप्रकाश एम. एस. सी., मन्त्री

(पृष्ठ १ का शेष)

विद्वान् और विदुषी बनाने के लिए तन-मन-धन से प्रयत्न किया जाए, जिससे स्त्रिया भी वेदाभ्यास करके गार्गी, मैत्रेयी आदि विदुषियो की भाति विदुषी बन सकें और तेजस्वी व्यक्तित्व विकसित कर सकें।

स्वामी जी के अनुसार विद्वान पति और अनपढ एव असस्कृत पत्नी गृहस्थी की गाडी को सुचारु रूप से कदापि नहीं खींच सकते। शिक्षित नारी ही अपने अधिकारो के प्रति मूल रूप से जागरूक रह सकती है, इसीलिए उन्होंने पुरुषो के समान स्त्रियो को भी व्याकरण, धर्मशास्त्र, आयुर्वेद, गणित, शिल्प आदि सभी शिक्षाओ के लिए योग्य ठहराया।

आर्यसमाजों के सत्संग

१२ सितम्बर'८२

अन्धा मुगल-प्रताप नगर—प० रामरूप; अमर कालोनी—पं० हरिदत्त शास्त्री; अशोक विहार के. सी-५२-ए —आचार्य दीनानाथ सिद्धांतालकार; आनन्द विहार-हरिनगर एल ब्लाक –प० गणेशप्रसाद विद्यालकार, किग्जवे कैम्प—प० चुन्नीलाल भजनोपदेशक; कालका जी—प० तुलसीराम भजनोपदेशक; करोल बाग प० वेदपाल शास्त्री; कृष्ण नगर आचार्य नरेन्द्र शास्त्री; गांधी नगर—वैद्य रामकिशोर, गीता कालोनी—स्वामी शान्तानन्द; ग्रेटर कैलाश-II—स्वामी प्रेमानद गुड मण्डी—प० देवराज वैदिक मिश्नरी; गुप्ता कालोनी—डा० रघुनन्दनसिंह; गोविन्दनगर-दयानन्द वाटिका—प० सोमदत्त शास्त्री; चूना मण्डी-पहाडगज—प० छविकृष्ण शास्त्री; जगपुरा भोगल—प० रामनिवास, जनकपुरी सी-३—प० ओमवीर शास्त्री; तिलक नगर—पं० विश्वप्रकाश शास्त्री; तिमारपुर—प० वेद-व्यास भजनोपदेशक, दरियागज—प० ओमप्रकाश वेदालकार; नारायण विहार—प० बलवीरसिंह शास्त्री, न्यू मोती नगर—प० आशानन्द भजनोपदेशक, निर्माण विहार—प्रो० वीरपाल विद्यालकार; पंजाबी बाग—प० खुशीराम, पजाबी बाग एक्सटेंशन—आचार्य हरिदेव सि० भू०; बाग कड़े खा—प० बरकतराम भजनोपदेशक; मोडल बस्ती—प० गणेशदत्त वानप्रस्थी; मोडल टाउन—श्री अखिलेश भारती; महावीर नगर—प० रामदेव शास्त्री, रमेश नगर—श्रीमती सुशीला राजपाल, राणा प्रताप बाग—प० प्रकाशचन्द वेदालकार; राजा गार्डन—स्वामी स्वरूपानन्द भजनोपदेशक, रोहतास नगर—प० हरिश्चन्द्र शास्त्री, लड्डू घाटी पहाडगज—श्रीमती प्रकाशवती शास्त्री, लक्ष्मीबाई नगर—प० मनोहरलाल भजनोपदेशक; लेखराम नगर-त्रिनगर—प्रो० सत्यपाल बेदार, लारेन्स रोड—प० देवपाल शास्त्री हरिनगर वाले; लोधी रोड-जोर बाग—प० देवेश, विक्रम नगर—प० शीशराम भजनोपदेशक; विनय नगर—डा० नन्दलाल, सराय रोहेला—प० मुनिशंकर वानप्रस्थ; सुदर्शन पार्क—प्रो० भारत मित्र शास्त्री, सोहनगज—प० अमरनाथ, शालीमार बाग—प० रविदत्त गौतम, शादीपुर—प० कामेश्वर शास्त्री, हौज खास ई-४६—प० दिनेशचन्द्र शास्त्री, खिचडीपुर—प० सत्यदेव स्नातक भजनोपदेशक;

—ज्ञानचन्द डोगरा, वेद प्रचार प्रबन्धक

आर्यसमाज दीवान हाल का निर्वाचन

श्री सूर्यदेव नए प्रधान उन्हें अन्तरंग के मनोनयन का अधिकार

आर्यसमाज दीवान हाल की साधारण सभा के वार्षिक अधिवेशन ने सर्वसम्मति से श्री सूर्यदेव को प्रधान निर्वाचित किया और उन्हें ही अन्तरग सभा के मनोनयन का अधिकार दिया। प्रधान श्री सूर्यदेव ने अन्तरग सभा का गठन इस प्रकार किया—उपप्रधान--श्री ऊधोदास आर्य, लाला गोविन्दराम आवल, लाला रामअवतार आर्य, श्री बटेश्वरदयाल, मन्त्री श्री मूलचन्द गुप्त, उपमन्त्री--श्री बैजनाथ वर्मा, श्री कृष्ण गोपाल दीवान, श्री रामनाथ पहूचूनिया, श्री विश्वबन्धु आर्य, कोषाध्यक्ष--लाला धर्मचन्द्र गुप्त, पुस्तकाध्यक्ष--श्री सुरेन्द्रकुमार शास्त्री। अन्तरग के सदस्य--लाला रामगोपाल वानप्रस्थ, श्री ओम्प्रकाश पुरुषार्थी, श्री सोमनाथ एडवोकेट, लाला ज्योतिप्रसाद गुप्त, श्री देशराज चोधरी, श्री विद्यासागर सेठी श्री तेजभान काठपालिया, लाला ज्ञानस्वरूप, श्रीमती उर्मिल देवी खन्ना, श्री राजसिंह।

आर्यसमाज सतभ्रावां मार्ग के पदाधिकारी—१ सितम्बर को हुए वार्षिक अधिवेशन मे श्री जगदीश प्रसाद शर्मा प्रधान चुने गए और उन्हे शेष चुनाव करने का अधिकार दिया गया। उन्होने निम्न अधिकारी नियुक्त किए।

उपप्रधान—श्रीमती पुष्पा बोहरा, श्रीमती राज सूरी, महामन्त्रिणी—श्रीमती लज्जावती, मन्त्रिणी –श्रीमती सन्तोष पुरी, कोषाध्यक्ष—श्री बालकृष्ण मनोचा। प्रतिष्ठित सदस्या प्रधानाचार्या एस. टी. श्रीमती सुदर्शना नाहल, श्री अनन्तराम 'डाबर', श्रीमती शीला सेनी, श्री ओम्प्रकाश आहूजा, श्री सत्येन्द्र कुमार मसीन।

आनन्दस्रोत बह रहा है, तू क्यों उदास है

—श्री चमन लाल

प्राय सुनने मे आता है 'नानक दुखिया सब ससार'। यदि विचारपूर्वक देखा जावे, तो नानक जी का यह कथन सत्य ही है कि सारा ससार दुख और शोक से ग्रस्त है। किसी को नौकरी न मिलने का, तो किसी को नौकरी छूटने का, किसी को फैक्टरी में आग लगने का या हड़ताल का, तो किसी को दुकान पर आय कर कर्मचारियो द्वारा छापा पडने का, किसी को पेट दर्द और किसी को सन्तान न होने का तो किसी को सन्तानो के दुराचारी होने का दु:ख सता रहा है। श्री कृष्ण ने गीता मे कहा भी है—

'जातस्य हि ध्रुवो
मृत्युध्रुव जन्म मृतस्य च'।

एक बार गौतमी नाम की एक महिला के एक मात्र पुत्र की मृत्यु हो हो गई वह शोकातुर स्त्री अपन बच्चे का शव लकर रोती हुई महात्मा गौतम बुद्ध के पास पहुची। महात्मा बुद्ध ने उस दुखियारी का ढाढस देते हुए कहा कि मैं तुम्हारे बच्चे को फिर से जीवित कर दूगा यदि तुम आस पास के किसी गांव मे से किसी ऐसे घर से एक कटोरी सरसों के दानो को ले आओ जिस घर में किसी की मृत्यु न हुई हो। वह दुखिया स्त्री घर-घर मारी-मारी फिरी, परन्तु कोई घर ऐसा न मिला जहां कभी किसी की मृत्यु न हुई हो। बुद्ध के पास वापस आकर उसने अपनी व्यथा सुनाई।

परन्तु अचम्भे की बात तो यह है कि यहां घर-घर दुख व्यापने पर भी कोई भी इस दुख व्यापी ससार को छोडने को तैयार नहीं। महाभारत मे युधिष्ठिर-यक्ष सवाद रूपी कथानक मे धर्मराज युधिष्ठिर से यक्ष के पूछने पर कि 'ससार मे बडा आश्चर्य क्या है', युधिष्ठिर ने यही तो कहा था—विश्व का सबमे बडा आश्चर्य यही तो है कि यहाँ प्रतिक्षण प्रतिदिन लोगो को काल ग्रास होते देखते हैं, तो मूर्ख प्राणी यह समझता है कि वह तो यहां स्थायी है। महात्मा विदुर ने धृतराष्ट्र से एक प्रसग

(शेष पृष्ठ ८ पर)

आनन्द स्रोत बह रहा''' ''

(पृष्ठ ७ का शेष)

में यही तो कहा था कि जीवो मे जीने की लालसा बडी बलवती है—

'अहो महीयसी जन्तो जीविताशा बलीयिसी' आचार्य कौटिल्य ने तो यहाँ तक कह दिया कि मनुष्य इन्द्रपद के बदले भी अपना शरीर त्यागना नहीं चाहता। 'देही देह त्यक्तत्वा ऐन्द्र पदमपि न वाञ्चति।'

अत कोई भी अपने आपको सुखी नहीं कहता। तो क्या सारा ससार दुख रूप है, क्या यहाँ लेशमात्र भी सुख नहीं है। परन्तु स्थिति सर्वदा इसके विपरीत है। अर्थात यहाँ सुख अधिक है और दुख बहुत कम। इस अवस्था को देखकर एक कवि ने बडे सुन्दर शब्दों मे कहा है—

आनन्द स्रोत बह रहा, पर तू उदास है।
अचरज है जल मे रहकर भी
मछली को प्यास है।'

सभी जानते हैं कि मछली की जान पानी से है, इसके बिना वह जीवित नहीं रह सकती, परन्तु यदि मछली समुद्र के अथाह जल मे रहकर भी प्यासी होने की शिकायत करे तो इससे अधिक मूर्खता की बात और क्या होगी। प्रभु ने इस प्राणी की तृप्ति के लिए क्या कुछ नहीं दे रखा है, परन्तु फिर भी दुखी-दुखी, अशातचित्त और परेशान दिखाई देता है। उस महान करतार ने हमारे कर्मों के अनुसार यह सर्वश्रेष्ठ मानव देह दी और इसके साथ ही साथ अपनी महती कृपा से दस इन्द्रियो (पाँच ज्ञान इन्द्रियाँ और पाँच कर्म इन्द्रियों) का समूह, मन और बुद्धि प्रदान की ताकि मनुष्य इन इन्द्रियों तथा मन बुद्धि द्वारा जीवन का रस ले सके।

कठोपनिषद मे बताया है कि यह शरीर एक रथ के समान है। जिसमें इन्द्रियो रूपी दश घोडे जुते हैं मन लगाम है और बुद्धि सारथी और आत्मा रथी है।

आत्मान रथिन विद्धि शरीर रथमेव च,
बुद्धि तु सारथि विद्धि मन प्रग्रहमेव च
इन्द्रियाणि हयानाहु विषयास्तेषु गोचारा
आत्मेन्द्रिय मनोयुक्त भोक्तेत्माहुमनीषिण ॥

और शरीर को ऐतरेयोपनिषद् मे सर्वश्रेष्ठ वस्तु कहा गया है जिसको देवो ने भी चाह की थी। महाभारत कार ने भी इस शरीर को बहुमूल्य वस्तु कहा है। प्रभु ने इसकी तृप्ति के लिए नाना प्रकार की अद्भुत सृष्टि की रचना की है।

'पश्य देवस्य काव्य न ममार न जीर्यति'

कैसी अद्भुत रचना कि जिसको देखकर बडे-बडे मनीषी दग रह जाते हैं। प्रत्येक इन्द्रिय की तृप्ति के लिए यहाँ सभी साधन प्राप्त हैं। वह ऋतुओं का अपने-अपने समय पर आना अचम्भे में डाल रहा है। ऐसे दृश्य और शात वातावरण में भला क्यो मन हर्षोल्लास से भरा गद्गद् न होगा। आँखो की तृप्ति के लिए मानो परमात्मा ने प्रकृति के भण्डार खोल दिये हैं। बगीचो मे खिले नाना प्रकार के सुन्दर रग बिरगे फूल, भाँति-भाँति के जीव जन्तु, तरह-तरह के रग बिरगे सुन्दर पक्षी, समुद्र में विविध प्रकार के छोटे-बडे जल-जन्तु किसकी आँखो का सुदर न लगेंगे। नाना प्रकार की खाद्य सामग्री, मीठी, खट्टी, चिरचरी चीजें जिह्म को कैसा आनन्द देती हैं। प्रकृति के रहस्यो के खोलने के लिए कैसी बहुमूल्य वस्तु—बुद्धि भगवान ने प्रदावचन की हुई हैं।

अत हे मानव! यदि इस असार ससार में वास्तविक शाति और सुख चाहता है तो विषयभोगो की ''''
दुनिया की उपेक्षा करके उ।
नियन्ता के बहाये हुए आनन्द
मे गोते लगा ''यही जीवन की
है।

''''समाज अशोक विहार

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रकाशन

सत्यार्थप्रकाश सन्देश (हिन्दी)	१०.००
(अंग्रेजी)	समाप्त
आर्य सन्देश महासम्मेलन विशेषांक	६.००
पादरी भाग गया— ओम्प्रकाश त्यागी	०.३०
स्वामी श्रद्धानन्द-बलिदान अर्द्ध शताब्दी स्मारिका	६.००
सत्यार्थप्रकाश शताब्दी समारोह स्मारिका	६.००

सम्पर्क करें—
अधिष्ठाता प्रकाशन विभाग
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा,
१५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए श्री सरदारी लाल वर्मा द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा भाटिया प्रेस २५७४, रघुवरपुरा नं० २ गांधी नगर दिल्ली ३१ में मुद्रित कार्यालय १५ हनुमान रोड नई दिल्ली। फोन ३१०५०।

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक मुखपत्र

एक प्रति ३५ पैसे | वार्षिक १५ रुपये | वर्ष : ६ | अंक ४७ | रविवार १९ सितम्बर | ५ आश्विन वि० २०३९ | दयानन्दाब्द—१५८

शिमला में भव्य शोभा यात्रा : शताब्दी उत्सव

आर्यसमाज लोअर बाजार शिमला की स्थापना शताब्दी सम्पन्न :

दिल्ली की आर्यसमाजें एवं दिल्ली के आर्यजनों का सराहनीय योगदान

शिमला २९ अगस्त से १३ सितम्बर १९८२ तक आर्यसमाज शिमला (लोअर बाजार) की स्थापना शताब्दी विशेष उत्साहपूर्वक मनाई गई। इस अवसर पर २९ सितम्बर से ऋग्वेद पारायण महायज्ञ श्री हरिवंश लाल जी मेहता (लखनऊ) की अध्यक्षता मे रात्रि को वेदकथा का कार्यक्रम चलता रहा। यज्ञ की पूर्णाहुति रविवार १२ सितम्बर ८२ को प्रात १० बजे विशेष समारोह पूर्वक सम्पन्न हुई। वृहस्पतिवार ९ सितम्बर को मध्यापनोत्तर ३ बजे तक भव्य शोभायात्रा आर्यसमाज मन्दिर से प्रारम्भ होकर नगर के विभिन्न मार्गों से होती हुई सायकाल ७ बजे आर्यसमाज मन्दिर पर समाप्त हुई।

१० से १२ सितम्बर तीन दिन यज्ञ पश्चात प्रात मध्यान्ह रात्रि को आर्य जगत के उच्च सन्यासी, महात्मा, विद्वान एव भजनोपदेश को द्वारा वैदिक धर्म की विशेषता, वेद ही केवल ईश्वरीयज्ञान है, वैदिक धर्म ही सार्वभौम मानव धर्म है अन्य सभी धर्म-धर्मान्तर किसी व्यक्ति विशेष पर आधारित समुदाय एव मत-मतान्तर हैं, आर्य समाज का आधुनिक भारत के निर्माण मे योगदान महर्षि दयानन्द का स्वप्न 'एक राष्ट्र, एक धर्म एव एक भाषा के आधार पर राष्ट्र की एकता को सुदृढ बनाने का स्वप्न, इत्यादि विषयो पर युक्ति-युक्त एव सारगर्भित प्रवचनों का जनता पर बहुत प्रभाव पड़ा उत्सव पर बीतराग सन्यासी स्वामी सुरेन्द्रानन्द, स्वामी सुमेधानन्द, स्वामी मुनीश्वरानन्द, स्वामी सोमा नन्द, ब्रह्मचारी आर्य नरेश, प० भवानीलाल भारतीय आचार्य सत्यप्रिय दयानन्द ब्रह्ममहाविद्यालय हिसार हरवंशलाल मेहता लखनऊ इत्यादि एव प० सत्यपाल मधुर भजनोपदेशक दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा पधारे हुए थे। ब्रह्मचारी आर्य नरेश के प्रवचनो को अधिक उत्साह से जनता सुनती थी। प्रत्येक कार्यक्रम मे उत्सव हाल श्रोताओ से भरा रहता था।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का योगदान

इस सम्बन्ध मे यह भी उल्लेखनीय है कि शिमला आर्य समाज के निमन्त्रण पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के भूतपूर्व प्रधान श्री बरदारी लाल वर्मा द्वारा दिल्ली की आर्य सभाओ को सभा के मुखपत्र आर्य सन्देश' द्वारा प्रेरणा देने के फलस्वरूप दिल्ली से आये बहिन-भाई उत्साहपूर्वक पाच विशेष बसो द्वारा शिमला इस अवसर पर पधारे और शताब्दी के सभी कार्यक्रमो मे भाग लेते रहे। शिमला आर्य समाज के अनथक कार्यकर्ताओ ने बाहर से पधारने वाले यात्रियो के निवास एव भोजन की सुन्दर व्यवस्था 'राम मन्दिर' धर्मशाला मे कर रखी थी। भोजन का प्रबन्ध अति सराहनीय था। आर्य समाज शिमला द्वारा इस उपलक्ष्यमे एक सुन्दर स्मारिका का भी प्रकाशन किया गया।

दिल्ली से विशेष बसो द्वारा पधारे आर्य बहिन-भाइयो ने इस अवसर पर शिमला आर्यसमाज को ३७०० रुपये दान रूप मे एकत्र करके दिए जिसमे राजोरी गार्डन क्षेत्र की दो बसो द्वारा ११००, आर्य समाज कृष्ण नगर की बस द्वारा ५०१ एवं सभा कार्यालय की दो बसो द्वारा २१०० रुपये योगदान दिया गया जो प्रशंसनीय है। शताब्दी समारोह प्रत्येक प्रकार से सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। हम आर्य समाज लोवर बाजार के मान्य प्रधान श्री चमनलाल शर्मा, उनके सहयोगी नवयुवक मन्त्री एव अन्य निष्ठावान कार्यकर्ताओ को इस समारोह की सफलता पर हार्दिक बधाई देते हैं।

पश्चिम की नकल से बचो

भारतीय संस्कृति का संरक्षण सन्तुलन में : जापान में नवीन-प्राचीन का समन्वय

भारतीय संस्कृति की गुणवत्ता पर श्री लल्लनप्रसाद व्यास

नई दिल्ली। आज पश्चिम मे जीवन का वास्तविक चिन्तन नही है, खेद का विषय है कि अमेरिका ने जिस हड्डी को चूसकर फेंक दिया है, भारत के लोग उसके आकर्षण मे प्रवृत्त हो रहे हैं। आज पश्चिम मे भौतिकता और समृद्धि की भयानकता बढ रही है, इसका मुख्य कारण यही है कि यहा केवल अहम् रह गया है, इसका एक भयकर दुष्परिणाम यह हुआ है कि पश्चिम मे आधे लोग या तो विक्षिप्त हो गए हैं, या वे अर्द्धविक्षिप्त हैं या उन्माद की ओर बढ रहे हैं, खेद का विषय यही है कि जब ससार के दूसरे देश अपनी समस्याओ के उद्धार के लिए भारत के अध्यात्म की ओर निहार रहे हैं, हम पश्चिम के भोगवाद एव ऐश्वर्य की अन्धी नकल करने की कोशिश कर रहे हैं।' इन शब्दो मे बृहस्पतिवार ९ सितम्बर के दिन गुलमोहर पार्क की एक गोष्ठी मे हिन्दी के वरिष्ठ पत्रकार एव विश्व हिन्दी परिषद के महासचिव श्री लल्लनप्रसाद व्यास ने 'भारतीय भाषा व संस्कृति —विश्व परिप्रेक्ष्य मे' विषय पर अपने विचार प्रकट किए।

श्री व्यास ने कहा कि पश्चिम के अनेक देशो मे अनेक बार पर्यटन करने के बाद उन्हे अनुभूति हुई है—पश्चिम की दुरवस्था का मुख्य कारण यह है कि वहां स्वतन्त्रता पर नैतिक बन्धन या मर्यादा नही है। मनुष्य की पूर्णता भोग एव त्याग के समन्वय एव सतुलन मे है, केवल इसी मार्ग से भौतिकता और समृद्धि के भयावह आत्मविनाश से बचा जा सकता है। पश्चिम के देशो और जापान मे इस तथ्य को अनुभव किया जा रहा है। पश्चिम मे 'हरे राम'-'हरे कृष्ण' के माध्यम से अध्यात्म को अपनाने की कोशिश हो रही है तो जापान मे नवीन और प्राचीन का सुन्दर समन्वय किया जा रहा है। अन्धकार मे प्रकाश की किरण यही है कि अभी हमारे देश के गांव और कस्बे पश्चिम की समृद्धि की अन्धी नकल नही कर रहे हैं। इस बारे मे निरन्तर जागरूक होकर ही हम अपने देश की संस्कृति की धरोहर को सुरक्षित रख सकेंगे।

वेदों की शिक्षा : कजाकिस्तान की शिलाओं पर

ताशकन्द। रूसी समाचार समिति 'तास' ने समाचार दिया है कि मध्य एशिया मे कजाकिस्तान राज्य के दक्षिण पूर्वी पर्वतीय अचल मे तीन हजार वर्ष पूर्व चित्रित ऐसी पर्वतशिलाए मिली हैं जिन पर ऋग्वेद की मुख्य शिक्षाए चित्रो मे अंकित हैं। कुछ रथ आदि दर्शनीय वस्तुए भी एकत्र की गई है। इन्हे अल्मानगर के अभिलेखागार मे प्रदर्शित किया गया है इस अभिलेखागार मे १४-१५ हजार वर्ष पूर्व की अनेक वस्तुए सग्रहीत है।

सम्पादक—नरेन्द्र विद्यावाचस्पति
व्यवस्थापक—प्रद्युम्नलाल तल्वाड़

वेद-मनन

युद्ध के समान गृहस्थ से भी डर कर भागना कायरता है

—मनोहर विद्यालकार

निवेशन सगमनो वसूना विश्वा रूपाऽभिचष्टे शचीभि ।
देव इव सविता सत्यधर्मेन्द्रो न तस्थौ समरे पथीनाम् ।।यजु १२.६६

ऋषि —विश्वा वसु । देवता--अग्नि । छन्द --विराडार्षी त्रिष्टुप् ।

शब्दार्थ—(निवेशनः) पत्नी कामी पुरुष (वसूना सगमन) बसने के काम आने वाले सब पदार्थों को प्राप्त करने के लिए (शचीभि·) अपनी प्रज्ञा और क्रियाओ द्वारा (विश्वा रूपा) सब वस्तुओ को (सत्यधर्मा) सत्य कर्ममय (सविता देव इव) उत्पादक तथा प्रेरक सूर्यदेव की तरह (विचष्टे) विशेष रूप से देखता है और (पथीना समरे) गृहस्थ को चलाते हुए मार्ग मे आने वाले विघ्नो के साथ होने वाले सघर्ष मे (इन्द्रः न) सेनापति की तरह (तस्थौ) जमकर लडता है।

निष्कर्ष—विवाह की कामना वाले व्यक्ति को निवास का तथा गृहस्थ मे काम आने वाली वस्तुओ का जुगाड कर लेना चाहिए।

गृहस्थ का सचालन करते हुए, जो विघ्न, कष्ट और परेशानिया आती हैं, उनसे जमकर संघर्ष करना चाहिए। उनसे निराश होकर विवाह की कामना को अथवा गृहस्थ को छोड़कर वानप्रस्थी या सन्यासी नही हो जाना चाहिए।

गृहस्थ मे रहते हुए सत्यधर्म सविता की तरह नियम परायण, सबके लिए प्रेरक और मार्गदर्शक बनना चाहिए।

विशेष- मन्त्र का ऋषि शब्दार्थ संकेत करना है कि इस जगत मे रहने वाले व्यक्ति को सब प्रकार के वसुओ (बसाने के लिए आवश्यक सामग्रियो) का सग्रह करना चाहिए, लेकिन अपन जीवन को सब दृष्टियो से यज्ञमय बनाना चाहिए। तभी वह अग्नि के गुणो को धारण करके अग्नि सम अग्नि बनेगा। विवाह प्रकरण मे स्पष्ट कहा है कि गन्धर्व सोम, और अग्नि के गुणो को धारण किए बिना मनुष्य को पति बनने का अधिकार नही है।

सोमस्य जाया प्रथम गधर्व स्तेऽपर पति ।
तृतीयो अग्निटे पतिस्तुरीयस्ते मनुष्यजा ।
अथर्व १४-२-३

इस मन्त्र का छन्द शब्दार्थ सकेत करता है कि विवाह की इच्छा करने वाले तथा पति बने हुए व्यक्ति को काम क्रोध, लोभ का अपवारण करने का प्रयत्न करते रहना चाहिए। अपनी दृष्टि दीर्घ रखकर अपने गृहस्थ जीवन को सफल बनाने का प्रयत्न करना चाहिए। जो ऐसा करेगा वह समाज मे विराज (विराट्) बन जाएगा।

अर्थपोषक प्रमाण—निवेशन --य स्त्रिया निविशते--पति.। स्वामी दयानन्द । निवेशनम्--गृहस्याश्रम । स्वा० दया० विवाह । आपटे, इसलिए निवेशन - विवाह का इच्छुक । रूपाणि--रूपवद्वस्तूनि । स्वा० द० अन्न वैरूपम । शत. ६-२-१-१२. रूप हिरण्यम् । मं० ४-८-२ रूपाणि प्रज्ञानानि । निरु० १२-१३ । विश्वावसु --विश्वानि वसूनि धारयतीति । विश्वे वसवो यज्ञा यस्य स । यज्ञो वै वसु । शत०

५५२, ईश्वर भवन, खारी बावडी,
दिल्ली-११०००६।

ऋषि बन अमृत घन बरसे

—प्रकाश वीर 'व्याकुल'

सर सन्धान अखण्ड ज्ञान के ध्यान धराधर से।
हर-हर पीर सुधीर भक्त जन मिला दिए हर से।
बजा क्राति का बिगुल सुनाई पडा हरेक घर से।
जय भारत जय वेद धर्म की बोले एक स्वर से।
मुर्झाए कोमल किसलय कण-कण जल को तरसे।
हरे भरे सब करे झरे झर-झर-झर निर्झर से।
पोप पाखण्ड, नए मतान्तर दुबक गए डर से।
वेद ज्ञान सुरसरि सरिता के सरस स्रोत सरसे।
विश्वम्भर अम्बर से ऊचे देव दिगम्बर से।
विमल रवि सम 'व्याकुल' कवि दृग देख-देख हर्षे।

हजारीलाल चोपड़ा नहीं रहें।

आर्यसमाज कृष्णनगर के भूतपूर्व प्रधान शाहदरा उपसभा के भूतपूर्व उपप्रधान रविवार १२-६-८२ को स्वर्गवास हो गया। आर्यसमाज कृष्णानगर में १९-६-८२ को साय ४ से ५ बजे तक शोक सभा होगी।

धर्म क्या है, अधर्म क्या है :

धर्म कर्म है, कर्म धर्म है !

--सुर विश्वम्भर आर्य

उत्तर छोटा-सा है जो आप अपने लिए चाहते हैं वही व्यवहार दूसरों के साथ भी करें। यही धर्म है, इसके विपरीत अधर्म है।

१. आप चाहते हैं मेरे साथ कोई झूठ न बोले, बेईमानी न करे, अपशब्द न बोले, अभद्र व्यवहार न करे, इससे आपको बहुत दुख होता है। इसी तरह आप भी दूसरे के साथ ऐसा न करें, क्योकि उसे भी दुःख होगा यही धर्म है। अपने ऊपर हमेशा विचार करना चाहिए। अपने लिए जो चाहते हैं और दूसरो के साथ वैसा व्यवहार नही करते तो अधर्म है।

२. क्या आप चाहते हैं कि हमारे घर की महिलाओ को कोई बुरी नजर से देखें ? नही ! तो आप भी किसी को बुरी नजर से न देखें और बुरी नजर से देखते हैं तो अधर्म है।

३. कोई भी सरकारी अधिकारी अपने कामो के लिए घूस देना नहीं चाहते हैं और जब घूस देनी पडती है तब उन्हे भी दुख होता है। अधिकारियों को विचारना चाहिए कि मुझे भी घूस नही लेनी चाहिए। यही धर्म है अगर ऐसा करो तो अधर्म है।

४. कोई भी व्यवसायी नही चाहता है कि मुझे सामान महगा नकली, कम वजन तथा मिलावट किया हुआ मिले। व्यवसायी को विचारना चाहिए कि मैं ऐसा चाहता हू तो ग्राहको को क्यों दू । ऐसा जब करते हैं तब वह अधर्म है।

५. क्या आप अपने विरुद्ध हिंसा होना, डाका, चोरी, पाकिटमार होना चाहेगे ? यदि नही ! तो आप भी ऐसा न करें। यही धर्म है। ऐसा करते हैं तो अधर्म है।

६. सभी नर-नारी चाहते हैं हमारा सम्मान हो, हमे लोग इज्जत कर, हमसे लोग मीठी बात, सत्य प्रेम से बोले तथा झूठ न बोलें। इसी तरह का व्यवहार सभी नर-नारी को भी करना चाहिए यही धर्म है। आप सभी ऐसा अपने लिए चाहते हैं पर दूसरे के साथ ऐसा व्यवहार नही करते हैं तो अधर्म है।

टिप्पणी —परमात्मा ने समस्त मानव के लिए एक मानव प्राकृतिक साधन एव वेद के नियम बनाए हैं। किसी को कोई कुछ देता है तो उसे धन्यवाद देते हैं। प्रभु ने सब कुछ दिया है। प्रात उठकर गायत्री मन्त्र जपो और प्रभु को धन्यवाद दो और धर्मानुसार कार्य करो। यही धर्म है, लेकिन धर्म के ठेकेदारो ने अपने स्वार्थ के लिए ऊच-नीच तथा अनेक धर्म बना दिए हैं पर ये धर्म के विरुद्ध है तथा उनके ये सभी मत हैं। धर्म के नाम पर कोई भगवान का दर्शन करता है, कोई मोक्ष मुक्ति तथा जन्नत स्वर्ग दिलाता है। इन सब चक्करो मे न पड़े। स्वय आचरणवान-विचारवान् बने तथा दूसरे लोगो को बनाए। इसी मे समाज, देश तथा आपका कल्याण होगा। स्वार्थी नेता धर्म को राजनीति से अलग समझते हैं, लेकिन गलत कार्य करने वाले को सरकार भी दण्ड देती है। धर्म भी तो यही बताता है फिर दोनो अलग कैसे ! नेता और मन्त्रीगण एव अधिकारी वर्ग धर्मानुसार चलेगे तब ही देश और जनता का तथा अपना कल्याण कर सकते हैं।

समस्तीपुर (बिहार)

आर्यसमाज अशोकनगर का वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज अशोक नगर, नई दिल्ली-१८ मे वार्षिकोत्सव के उपलक्ष्य में १० अक्तूबर, १७ अक्तूबर तक सामवेद यज्ञ होगा। यज्ञ का सचालन एव रामायण कथा वैद्य रामकिशोर जी द्वारा प्रस्तुत की जाएगी। मधुर जी भजनोपदेशक के भजन होगे। ८-६ अक्तूबर को प्रातः ५ बजे क्षेत्र मे प्रभातफेरी होगी। समाज का वार्षिकोत्सव १६-१७ अक्तूबर को होगा। १६ अक्तूबर की शाम को कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया है।

आर्यसमाज अशोकनगर के नए पदाधिकारी

प्रधान--श्री राजाराम, उपप्रधान--श्री भगतराम आर्य एवं श्री सुखदेव जी महामन्त्री--श्री देवेश्वर महेन्द्र, मन्त्री--श्री जसवन्तराय, श्री हरीशकुमार, कोषाध्यक्ष--श्री चन्द्रभान आहूजा, आयव्यय निरीक्षक--श्री जी० एल० वैद्य।

परमेश्वर सुख-समृद्धि का दान करें

ओ३म् यस्य व्रते पृथिवी न नमीति । यस्य व्रते शफवज्जर्भुरीति ।

यस्य व्रत ओषधीर्विश्वरूपा स नः पर्जन्य महिशर्मयच्छ ।। ऋ५ ८३ ५

जिस प्रभु के प्रति पृथ्वी नमन करे और जिससे पशुगण भी आशाएं रखें, जिसके लिए वनस्पतियाँ भी नाना औषध रूप धरें, वह प्रिय मेघ रूपी परमेश्वर शांति सुख और समृद्धि का दान करें ।

ओ३म्
आर्य सन्देश

प्राचीन और नवीन का समन्वय

भारत की प्राचीन परम्परा थी कि जब शिष्यो का शिक्षा-सत्र पूर्ण हो जाता था, जब उनकी पढाई सम्पूर्ण हो जाती थी, उस समय वे गुरुओ के चरणो मे जाकर दीक्षा ग्रहण करते थे । तैतिरीय उपनिषद मे प्रसग है कि शिष्यो को दीक्षान्त सस्कार के समय आचार्य सीख देता था—सत्य बोलो, धर्म का आचरण करो, अपने स्वाध्याय मे कभी प्रमाद न करो, माता का सम्मान करो, पिता का आदर करो, अतिथि की सेवा किया करो । दिव्य गुणो वाले आचार्यों और समाज के श्रेष्ठ व्यक्तियों का सम्मान करो । इसी के साथ शिष्य को सत्यपरामर्श दिया जाता था कि जो हमारे सुचरित हैं केवल उन्ही का आचरण करो । 'यान्यस्माक सुचरितानि तानि त्वयोपास्यानि' जो हमारे धर्मयुक्त सुचरित हो, उनका अनुकरण करो और जो पापाचरण हो, उनको कभी मत कर । कितनी अच्छी सीख थी जो आचार्य शिष्य को दीक्षा रूप मे दिया करता था कि केवल हमारे सद्गुणो का अनुकरण करना, किसी बुराई का नही । पर आजकल देश मे उल्टी गगा बहने लगी है । हमारे शिक्षित वर्ग को पश्चिमी शिक्षा और रीति-नीति इतनी रास आ रही है कि वे अपने सद्गुणो को भुलाकर पश्चिम के फैशन, यौनाचार, उन्मुक्त व्यवहार को, जीवन मे अपना रहे हैं । उस दिन एक गोष्ठी मे अनेक विदेश-यात्राओ से लौटे विश्व हिन्दी परिषद के महामन्त्री श्री लल्लनप्रसाद व्यास ने एक विदेशी दण्डी स्वामी की इस उक्ति को दोहराया था—अमेरिका ने जिस हड्डी को चूमकर फेक दिया है, भारत के लोग उसके आकर्षण मे प्रवृत्त हो रहे हैं । हम पश्चिम के भोगवाद एव ऐश्वर्य की अन्धी नकल कर रहे हैं ।

श्री व्यास ने अपने अनुभवो के आधार पर बतलाया है कि आज पश्चिम मे भौतिकता और समृद्धि की भयानकता बढती चली जा रही है । मनुष्य की पूर्णता भोग और त्याग के समन्वय एवं सन्तुलन में है, केवल इसी मार्ग के अवलम्बन से भौतिकता और समृद्धि के भयावह आत्मविनाश से बचा जा सकता है । पश्चिम के देशो और जापान मे इस तथ्य को अनुभव किया जा रहा है । पश्चिम मे 'हरे राम' और 'हरे कृष्ण' के माध्यम से अध्यात्म को अपनाने की कोशिश हो रही है तो जापान में नवीन और प्राचीन का सुन्दर समन्वय किया जा रहा है । आज भारत भी एक दोराहे पर खड़ा है । एक ओर पश्चिम की वैज्ञानिक उपलब्धियां हैं, वहाँ अनेक आविष्कार और नई विधायें हैं जिन्हे अपनाकर पश्चिम का मानव आकण्ठ भौतिकता और ऐश्वर्य में डूब चला है, पर इस सारी उपलब्धि का फल है कि पश्चिम का मानव विक्षिप्त या अर्द्धविक्षिप्त होता जा रहा है ।

हमे पश्चिम की अन्धी नकल की मनोवृत्ति का परित्याग करना होगा । अग्रेजो या मुस्लिम शासको की बुराइया तो हमने अपनाई, परन्तु उनके विशिष्ट गुणों का समादर हमने नहीं सीखा । अग्रेज समय के पाबन्द थे, अनुशासन पर विश्वास करते थे, मुस्लिम धर्म मे एकता और भाईचारे पर बल दिया जाता था, जिस क्षेत्र में भी यदि कोई अनुकरणीय सुचरित हो तो हमे उसे अपनाने मे संकोच नहीं करना चाहिए । हमारे अपने भी यदि कोई दुर्गुण हैं तो हमे यत्नपूर्वक उन्हें छोड़ देना चाहिए । इस सम्बन्ध मे जापान से बहुत कुछ सीख सकते हैं, विज्ञान, टैक्नोलोजी, उद्योग, शिल्प आदि मे उसने पश्चिम से बहुत कुछ सीखा, परन्तु अपनी विशेषताओ का परित्याग नहीं किया । यदि हमे उन्नति करनी है और अपनी भारतीय संस्कृति को अक्षुण्ण और गतिशील रखना है तो हमे भारतीय धर्म, आचार शास्त्र, चिन्तन की अच्छाइयों को न छोडते हुए पश्चिमी विज्ञान, शिल्प, टैक्नोलाजी की विशेषताओ को आत्मसात करना होगा । प्राचीन एव नवीन के समन्वय से अथवा भारतीय तत्वज्ञान, चिन्तन एव अध्यात्म के श्रेष्ठतम तत्वो को सुरक्षित रखते हुए हमें पश्चिमी आविष्कारों, विज्ञान और तकनीक की उपलब्धियो को भी अपनाना चाहिए । दोनों के सन्तुलन एव समन्वय से ही मानव की व्यवस्थित प्रगति सम्भव है ।

चिट्ठी-पत्री

वानप्रस्थ और संन्यास की प्रासंगिकता : आर्यसमाज में नया प्रवाह

२९ अगस्त ८२ के 'आर्य सन्देश' मे श्री सत्यदेव विद्यालकार द्वारा 'नारी के सन्यास आश्रम' मे प्रविष्ट होने के विषय मे प्रकाशित विचारो से मैं पूर्णत सहमत होता हुआ उससे भी आगे जाना चाहता हू । मेरा दृढ विचार है कि आज के युग मे वानप्रस्थ और सन्यास की कोई प्रासगिकता नही है । करीब डेढ दो वर्ष पूर्व 'आर्य सन्देश' तथा अन्य आर्य पत्रो मे मैंने इन दोनो आश्रमो की निरर्थकता—स्त्री और पुरुष, दोनो के लिए स्पष्ट की थी । आज वन ही नही है, जितने आश्रम व अध्यात्म केन्द्र हैं, अधिकाश नगरो व उनके पास ही हैं और उनके पास प्राय आधुनिक भोग सामग्री और सुख के वे सब साधन उपस्थित हैं जो नगरो मे एक मध्यवित्त परिवार मे होते हैं । अधिकाश आश्रमो मे चुनाव, कुर्सी के लिए सघर्ष, मारपीट पर्चेबाजी अदालती कार्यवाहिया इत्यादि सब कुछ होता है जैसे अन्य सस्थाओ मे देखा जाता है । राजनीतिक नेताओ व दल विशिष्ट के नेताओ को निमत्रित कर प्रशसा पत्र लिए जाते हैं । समाचार-पत्रो मे नाम के लिए प्रबल लालसा रहती है । इसके अपवाद हमारे साधु-सन्यासी भी नहीं हैं, उनमे भी पर्याप्त लोकेषणा विद्यमान है ।

आज आर्यसमाज मे जो 'वीतराग' महात्माओ (वानप्रस्थी-सन्यासी पर अभी तक महिलाए कम और पुरुष अधिक) पुराने एक तन्त्रग्रथ के इस कथन के अनुसार 'अन्त. शाक्ताः बहि शैव सभामध्येच वैष्णवा अर्थात्, घर मे शाक्त, बाहर शैव और सभा मे वैष्णव' के समान विचारते हैं । घर मे श्वेत, समाज मन्दिर व सभा मे गेरवी पोशाक, अखड यज्ञ, शतकुण्डी यज्ञ, गायत्री महायज्ञ, विवाह अन्त्येष्टि सहित सब सस्कार चार अको वाली दक्षिणा—इस प्रकार के वानप्रस्थी-सन्यासी के शहरो मे 'विशिष्ट पाकेट' है जहाँ बडी आव भगत मे उन्हे रखा जाता, आशीर्वाद मांगा जाता है पर गरीब भक्त प्रेमी के पास ठहरने आदि से परहेज करते हैं । समृद्ध शिष्य-शिष्याओ को मूडने मे तत्पर हैं । एक शिरोमणि पडित और महाराज ने समाज के महायज्ञ मे दिए एक भाषण मे कहा था, 'मैं वहाँ श्रोताओ मे उपस्थित था—सिगरेट पीना शराब से भी बुरा है । दोनो ही अत्यन्त घातक हैं, फिर दोनों मे तुलना क्यो ? 'विद्वद्वर प वैद्यनाथ जी शास्त्री चाहे कितना ही विरोध करें—पर इन नए पाखडो का—एक यज्ञ महायज्ञ, अखड यज्ञ, शतकुण्डी यज्ञ इत्यादि की आड मे पुराने कर्मकाण्ड का यहाँ खूब प्रचार हो रहा है । सनातन धर्म मन्दिर मे मूर्ति के सामने हाथ जोड अपनी आकांक्षाए पूरा करना चाहता है और आज का आर्य समाजी यज्ञ मे पूर्णाहुति दे, पैसे देकर यजमान बन और स्वामी जी व महात्माओ को नकदी और वस्त्र-फल सहित प्रभूत दक्षिणा दे आत्मतृप्त हो रहा है । इसके साथ यह भी कटु सत्य है कि आम तौर पर, आर्य समाजो के आलीशान भवन और यज्ञशालाए होते हुए भी किसी सन्यासी महाराज के कुछ दिन तक ठहरने की कोई व्यवस्था नही है आतिथ्य का तो प्रश्न ही नही पैदा होता जबकि बरातो को किराए पर जगह देने—भले ही बराती शराब, मास, सिगरेट का प्रयोग करें—के लिए दरवाजे सदा खुले रहते हैं । मैं आर्यसमाज के ऐसे दर्जनो प्रमुख विद्वान्, सन्यासी-महात्माओ और उपदेशको को जानता हू जिनका स्वर्गवास अस्पतालो व किसी आत्मीय के घर पर हुआ ।

आर्यसमाज ने प्रारम्भिक युग मे महर्षि दयानन्द की मोक्ष यात्रा के बाद महर्षि के वैदिक सिद्धातो के प्रचार का सोत्साह बीडा उठाने वाले स्वनाम धन्य कुछ सन्यासी महात्मा और विशिष्ट महानुभाव ही थे । कुछ यशस्वी नाम—ब्रह्मचारी आत्मानन्द जी, जो महर्षि की सेवा मे तत्पर प्रिय शिष्य भी था—स्वामी नित्यानन्द जी और स्वामी विश्वेश्वरानन्द जी की जोडी, स्वामी अच्युतानन्द जी स्वामी अनुभवानन्द जी शास्त्री, स्वामी केवलानन्द जी, स्वामी सत्यानन्द जी, स्वामी मुक्तानद जी, स्वामी स्वतन्त्रतानन्द जी, स्वामी वेदानन्द जी, स्वामी भास्करानन्द जी, स्वामी समर्पणानन्द जी, (प० ब्रह्मदेव विद्यालकार) तथा अन्य कई प्रशसनीय विरक्त महानुभाव थे ।

सत्यदेव जी की जानकारी के लिए निवेदन कर दू, इधर दो-तीन वर्षों से भगवे कपडे पहने नारी वर्ग की सख्या भी बढ रही है, उनमे कई पारिवारिक चारदीवारी मे भी—साथ-साथ रहते हुए भी । नई दिल्ली के पास केन्द्रीय दिल्ली एक पहाडी पर कुछ आर्य महिलाओ के उद्योग से 'आर्य महिला आश्रम' भी वानप्रस्थ आश्रम ढग का खुला हुआ है । कुछ वर्ष पूर्व, दिल्ली की आर्य समाजो मे एक पतित्यक्ता महिला का—भगवे वेषकी—बडा मान था । अब उन्होने हरिद्वार सप्त-तीर्थ पर शानदार आश्रम—सर्वथा स्वतन्त्र रूप मे—खोला हुआ है । यह रोग तो बढता ही जा रहा है । —आचार्य दीनानाथ सिद्धातालकार, के. सी.

३७ाबी, अशोक विहार, दिल्ली-५२

ऋषि दयानन्द की वेद विषयक अवधारणाएं

ऋषि दयानन्द ने एक कट्टर पौराणिक शैव परिवार मे जन्म ग्रहण किया था। उन्हे बहुत छोटी आयु मे ही यजुर्वेद कण्ठस्थ करा दिया गया था। व्याकरण का भी साधारण ज्ञान करा दिया गया था। युवाकाल मे ही सच्चे शिव की प्राप्ति एव मृत्यु पर विजय प्राप्ति हेतु घर का परित्याग कर दिया। शाकर वेदान्त तन्त्र-ग्रन्थो का अध्ययन तथा योगाभ्यास उनसे प्राप्त किया। स्वामी विरजानन्द जी मे उन्होने केवल व्याकरण महाभाष्य का ही मुख्य रूप मे अध्ययन किया। प्रसगात् निरुक्त आदि शास्त्रो का भी ज्ञान प्राप्त किया होगा। स्वामी विरजानन्द जी व्याकरण के पण्डित थे। लगभग सैंतीस वर्ष की वय मे स्वामी दयानन्द गुरु विरजानन्द की पाठशाला प्रविष्ट हुए थे और अनुमानत २।। वर्षो तक शिक्षा प्राप्त कर, गुरु की इच्छानुसार धर्म-प्रचार कार्य के लिए कार्य-क्षेत्र मे उतरे।

वेदो के सम्बन्ध मे जिन विचारधाराओ से उनका किंचित सम्बन्ध हुआ होगा, उन्हे तीन वर्गों मे बाटा जा सकता है। १. परम्परागत वेदो का अध्ययन-अध्यापन आचार्य सायण-महीधर एव उव्वट के भाष्यो पर अवलम्बित था।

२. विश्वविद्यालयो मे जो वेद भाष्य पढाए जाते थे—वे पश्चिम के विद्वानो के भाष्य थे, जिनके कारण पढ़े-लिखे भारतीयो की वेद पर से श्रद्धा समाप्त हो गई थी।

३ जैन-बौद्ध धर्म एव नास्तिको के अनुसार वेद निरर्थक एव निष्प्राण थे।

स्वामी दयानन्द के पूर्वतक ब्राह्मण भी वेद माने जाते रहे हैं। वेद के दो विभाग प्रचलित हैं। सहिता भाग एव ब्राह्मण भाग। ब्राह्मण भाग भी वेद है, इसमे निम्न प्रमाण उपस्थित किए जाते हैं। 'मन्त्र—ब्राह्मणयो वेदनामधेयम्' (आपस्तम्व यज्ञ परिभाषा सूत्रे) ऋषि कात्यायन का यह मत है। अपनी 'ऋग्वेदादि भाष्य-भूमिका' मे स्वामी दयानन्द ने इस प्रश्न को उठाया है।

उन्होने प्रश्नोत्तर शैली मे इसकी विशद विवेचना प्रस्तुत की है। ऋषि दयानन्द के मत मे केवल सहिता भाग ही वेद है और वे ऋक्, यजु, साम और अथर्व नाम से जाने जाते हैं। ब्राह्मण ग्रन्थ वेदो के व्याख्यान मात्र हैं। स्वामी जी ने अपने इस विचार की पुष्टि मे आर्ष ग्रन्थोके अनेक प्रमाण उपस्थित किए हैं। ब्राह्मण ग्रन्थो की वेद सज्ञा नही है। इसके निम्न कारण स्वामी जी ने लिखा है—

१ ब्राह्मण ग्रन्थ इतिहास और 'पुराण' के नाम से प्रसिद्ध है। (२) ब्राह्मण ग्रन्थो के रचयिता ऋषि है।(३) ब्राह्मण ग्रन्थ अपौरुषेय नही है।

(४) कात्यायन ऋषि के अतिरिक्त और किसी ऋषि ने ब्राह्मण ग्रन्थो को वेद नही माना है।

वेदों के प्रतिपाद्य विषय

ऋषि दयानन्द ने वेद का प्रतिपाद्य विषय मुख्यत चार माने हैं।। 'विज्ञान', 'कर्म', 'ज्ञान, एव 'उपासना। अत्र चत्वारो वेद विषया सन्ति विज्ञान कर्मोपासना ज्ञान काण्ड भेदात्। तत्रादिमो विज्ञानविषयो हि सर्वेभ्यो मुख्योस्ति। तस्य परमेश्वरादारभ्य तृणपर्यन्त पदार्थेषु साक्षाद्बोधान्वयत्वात्। तत्रापीश्वरानुभवो मुख्योस्ति।' (सन्दर्भ ग्रन्थ ऋ वेदभाष्य भूमिका-वेद विषय)

वेद मे विज्ञान है—इसे स्वामी दयानन्द की ही दृष्टि थी जो इसे अनुसधान कर सकी। वेद तो, आ० सायण महीधर और उव्वट के भी सामने थे—परन्तु किसी ने भी 'वेद मे विज्ञान है'—ऐसा विचार नही किया। आर्ष ग्रन्थो से यह प्रमाणित है कि वेदो मे विज्ञान तत्त्व है। ऋषि दयानन्द ने 'विज्ञान', कर्म, ज्ञान एव उपासना को इस प्रकार परिभाषित किया है।

(१) विज्ञान—अर्थात् सब पदार्थों को यथार्थ जानना तथा जो कर्म, उपासना और ज्ञान इन तीनो से यथावत उपयोग लेना और परमेश्वर से लेके पर्यन्त पदार्थों के साक्षात् बोध का होना, उनसे यथावत उपयोग का करना, इससे यह विषय इन चारो मे भी प्रधान है।

(२) कर्म—जिससे परमार्थ, और लोक व्यवहार की सिद्धि होती है। स्वामी दयानन्द के समय वेद के मन्त्र केवल यज्ञीय कर्मकाण्डो मे ही विनियुक्त होते थे। दयानन्द ने इस दृष्टिमे क्रान्तिकारी परिवर्तन किया।

(३) ज्ञान—पृथिवी से लेकर तृण पर्यन्त पदार्थों के गुणो के ज्ञान से ठीक-ठीक कार्य की सिद्धि करना ज्ञान है।

(४) उपासना —परमेश्वर का सान्निध्य प्राप्त करना।

वेद और देवतावाद

पौराणिक मतानुसार वेदो मे आए हुए 'देव' शब्द शरीरधारी देवताओ के लिए आया है। उन्ही की प्रसन्नताके लिए वेदमन्त्रो से यज्ञ-याग करने चाहिए। वेद मन्त्रो की यह सार्थकता है। इस कल्पना मे देवता, मनुष्यो के समान ही कामी, क्रोधी, लोभी खुशामद पसन्द हैं। ऋषि दयानन्द ने इस विचारधारा के विरुद्ध 'देव' शब्द' का वैज्ञानिक अर्थ उपस्थित किया है। वेद मन्त्रो के साथ जिस देवता का सम्बन्ध है, उसका अर्थ मन्त्र प्रतिपाद्य विषय से है। 'देवता' उस मन्त्र का विषय है। निरुक्त का प्रमाण देकर 'देव' शब्द का यह अर्थ किया है।

'देवो दानाद्वा, दीपनाद्वा, द्योतनाद्वा द्युस्थानो भवतीति वा।' (नि० अ० ७ ख० १२)

अर्थात् दान देने से देव नाम पडता हैं। जो प्रकाश करे और जो सत्योपदेश करे वे सभी देव है। परमात्मा सबसे बडा दानी है परमात्मा के बाद मनुष्य भी देव है क्योकि वे विद्यादि दान करते है। सूर्यादि ग्रह प्रकाश करते है। घर का दीपक भी देव है क्योकि वह भी प्रकाश करता है। आचार्य, सन्यासी, एव माता-पिता भी सत्योपदेश करते है, अत वे भी देव है। सब दानियो मे सब प्रकाशको मे एव सत्योपदेष्टाओ मे परमात्मा सबसे महान दानी, सबसे महान् प्रकाशक एव महान् सत्योपदेष्टा है। अत वह सब देवो से महान् है महादेव है। अत वही एकमात्र उपासनीय है। ऐसा दयानन्द का मत है। ऋषि दयानन्द की विचारधारा मे देवताओ की दो कोटिया है—एक जड, दूसरा चैतन्य जड देवता मे सूर्यादि पदार्थ और चैतन्य देवता मे माता-पिता आचार्य, सन्त महात्मा आते है। जड देवता की उपासना का अर्थ मात्र इतना ही है कि उन से यथार्थ व्यवहार करना। माता-पिता आचार्य आदि का सम्मान करना चाहिए

वेद और एकेश्वरवाद

महर्षि दयानन्द की परिकल्पना मे वेद मे केवल एक ही ईश्वर का प्रतिपादन किया गया है। उसे ही भिन्न-भिन्न नामो से पुकारा गया है। पाश्चात्य विचारक एव उनके अनुगामी अर्वाचीन भारतीय चिन्तको ने भी वेद मे अनेक ईश्वरो का प्रतिपादन माना है। स्वामी जी ने इस विचारधारा का प्रबल विरोध किया है। वेदो से यह प्रमाणित किया है कि ईश्वर दो नही, तीन नही, चार नही —केवल एक है। 'न द्वितीयो न तृतीयश्चतुर्थोनाप्युच्यते।' 'भूतस्य जात पतिरेक आसीत्।' (इस उत्पन्न हुए ससार का स्वामी एक है।)

वेद में दर्शन : वेद केवल कर्मकाण्डो की पोथी है। दर्शन विषय तो उपनिषदो मे है—इस विचारधारा का स्वामी दयानन्द ने प्रबल वेग से निराकरण किया है।

त्रैतवाद'''दर्शन के इतिहास मे स्वामी दयानन्द का वैदिक त्रैत द'' का सिद्धान्त एक अनुपम देन है। ऋ० १ १६४.२० मे आया है 'द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया समान वृक्ष परिषस्व जाते। तयोरन्य पिप्पल स्वाद्वत्यनश्नन्नयो अभिचाकशीति।' इस मन्त्र मे भोक्ता जीव और अभोक्ता परमात्मा को दो पक्षियो के रूप मे दिखलाया गया है एव प्रकृति को एक रूपायित किया गया है। इस फलदार वृक्ष को भोग्या प्रकृति के रूप मे वर्णन है। जीव उस फलदार वृक्ष का भोक्ता है तथा परमात्मा मात्र अभोक्ता साक्षी स्वरूप है।

लेखक
जगदीश आर्य 'सिद्धान्तरत्न'

सृष्टि विद्या का प्रतिपादन वेदो मे दिखलाया है सृष्टि प्रवाह से अनादि है। सृष्टि के तीन कारण है - निमित्त — उपादान एव साधारण कारण। परमात्मा निमित्त कारण है—प्रकृति उपादान कारण है तथा दिशा-काल सामान्य कारण है। यह समस्त सृष्टि जीवो के कर्म करनेके लिए है क्योकि कर्म करना जीवो का स्वभाव है। वह अपने कर्म करने मे स्वतन्त्र है।

मोक्ष से पुनरावर्तन का सिद्धान्त

स्वामी जी ने वेदो के प्रमाण से यह सिद्ध किया है कि मोक्ष मे आनन्द प्राप्ति के बाद जीव पुन जन्म लेता है। उसका तर्क यह है कि जीव अल्प शक्तिवान है। उसके सारे कार्यों की इयत्ता है'''एक सीमा है। अत उसके फलो की भी सीमा इयत्ता होनी चाहिये। सीमित कार्यों के फल असीमित कैसे हो सकते है ? दूसरा तर्क उन्होने यह दिया कि अगर जीव मुक्ति के बाद नही लौटता है तो मुक्त जीवो का परमात्मा मे लय हो जायेगा—तब उसका अनादिपना कहा रहा ? अत जीव मोक्ष सुख भोग कर पुन इस विश्व मे आता ही है। अपनी इस मान्यता को ऋग्वेद के मन्त्र १-२४-१-२ से प्रमाणित किया है।

स्वामी जी का वैदिक त्रैतवाद शुद्ध एव क्रान्तिकारी दर्शन है। दयानन्द अवैदिक दर्शनवादो के विरुद्ध आजीवन संघर्ष करते रहे। अद्वैतवाद, विशिष्टाद्वैतवाद, शुद्धा द्वैतवाद द्वैताद्वैतवाद बौद्धो का शून्यवाद जैनियो का स्याद्वाद-चार्वाकवाद दार्शनिक आकाश पर छाए हुए थे जिसके कारण शुद्ध वैदिक दर्शन रूपी सूर्य तिरोहित हो गया था। ऋषि दयानन्द ने उस वैदिक दर्शन रूपी सूर्य को चमका दिया।

राष्ट्रीय उत्थान में नारी जाति का सहयोग

--श्रीमती सुशीला राजपाल

भारत की आजादी कोई साधारण घटना नही थी। यह वह सुनहरी कुंजी थी, जो मानव जाति के सुनहरे भविष्य के द्वार खोलने के लिए उसे मिली थी। भारत की स्वतन्त्रता का उद्देश्य केवल मात्र कला-कौशल की विपुलता, भौतिक ऐश्वर्यों की समृद्धि या विज्ञान और तकनीकी विकास की पराकाष्ठा तक की प्राप्ति नही है।

इसकी भवितव्यता मे असीम और अगाध आध्यात्मिक शक्तियां निहित हैं। केवल तपस्या और सदाचार के बल से उसे जाग्रत करना है। यह दायित्व नारी जाति सहज भाव से वहन कर सकती है।

मैं इस आधुनिक युग मे विकसित या अर्द्ध विकसित नारी जाति का आह्वान करती हू कि नारी तू अपना आन्तरिक स्वरूप पहचान। प्रकृति ने जिस उद्देश्य से तेरे शरीर मन और प्राण का निर्माण किया है और जो-जो क्षमताए हमारे भीतर निहित हैं, उन्हे अभिव्यक्त कर। तू ही अपने चारित्रिक बल से सम्पूर्ण विश्व को बचा सकती है। तू अपने को दीन हीन और दुर्बल मन समझ। तेरे भीतर छिपी हुई मानसिक क्षमताए कई गुना अधिक पाई जाती हैं। श्रद्धा, भक्ति, प्रेम, पवित्रता, सहनशीलता तपस्यादि गुण जो तुझे सहज भाव से प्राप्त है, पुरुष को प्रयास करने पर भी नहीं मिल पाते।

नारी का कर्तव्य है कि ब्रह्मचर्य का ओज जाग्रत करे। यह अत्यन्त खेद का विषय है कि जब सम्पूर्ण विश्व की नारी, कुंवारी या विवाहिता पुरुप जाति की काम वासना की तृप्ति का यन्त्र बनी हुई है। केवल पुरुप जाति की आर्थिक शक्ति के प्रति इतनी आकर्षित हो जाती हैं कि अपने ओजस्वी स्वत्व को भूल जाती हैं। दैनिक पत्रो मे छपा होता है कि बस मे बैठी हुई लडकियों को लडको ने छेडा। और फिर वह पुलिस के सरक्षण मे अपने को सुरक्षित पाती हैं तब मेरे हृदय को गम्भीर आघात पहुचता है कि नारी जाति अपनी आध्यात्मिक शक्ति और मानसिक बल को पहचान नही पा रही। नारी का ओजतम स्पदन चरित्रहीन नवयुवक को भी चरित्रवान बना सकता है।

वर्तमान राष्ट्र के उत्थान और पतन काल मे अर्थात जिस सक्रमण काल की स्थिति से भारत गुजर रहा है उसमे नारी जाति के सहयोग की अत्यन्त आवश्यकता है। स्त्री जाति का प्रथम कर्त्तव्य है कि वह अपनी राष्ट्रीय चेतना को जाग्रत करे। केवल घर की मोहग्रस्त सकुचित सीमा की दीवारो मे अपने को बन्द न रखें।

नारी जाति अपने बाह्य सौन्दर्य के लिए जिन कृत्रिम प्रसाधनो का आधार लेती हैं और अपने धन का अपव्य करती है। वे भी शराब पीने वाले व्यक्तियो की श्रेणियो मे गिनी जाती हैं। शराब और फैशन परस्ती का नशा व्यक्तिगत जीवन और सामाजिक जीवन को समूल नष्ट कर देता है।

नारी जाति को अंधी परम्पराए, झूठे रीति-रिवाज, फैशन परस्ती गहनो और सुन्दर कपडों के प्रति आकर्षण, दहेज की कुप्रयादि दोषो का निवारण अपने दृढ सकल्प से कर देना चाहिए। शिक्षा का अर्थ शारीरिक मानसिक और आत्मिक निर्माण है न कि केवल धन कमाने का यन्त्र बन के रह जाना है।

जब कभी मैं शिक्षित और अशिक्षित बहनो के सम्पर्क मे आती हैं तो केवल उक्त विषयो की चर्चा करते हुए सुना है, जब कभी इस प्रकार की दुर्घटना को पढते हैं कि अमुक लडकी दहेज की कुप्रथा के कारण जल गई या जलाई गई। लडकी पहले से क्यो नही उस घर को छोड़कर सुधारक सस्था की शरण मे चली जाती? क्यो नही सरकार को अपनी घटित होने की दुर्घटना की सूचना से सूचित करती? यदि मर भी रही है या मारी जा रही है, यह तो कायरता भरी मृत्यु है। क्यो नही उन पापियो को मार कर मरती।

मेरे लिखने का तात्पर्य यह है कि नारी जाति को स्वय ही अपनी कठिनाइयो का समाधान ढूंढना होगा।

नारी राष्ट्र को अधोगति के मार्ग से बचा सकती है। प्रत्येक नारी का कर्त्तव्य है कि अपने पति और अपने पुत्रो को भ्रष्टाचार से अर्जित धन को सचित करने की पाशविक वृत्ति से हटाये और उनके हृदय मे राष्ट्रीय चेतना जाग्रत करे।

—एन-१३ पश्चिमी पटेल नगर,
नई दिल्ली-११०००८

आर्य जगत् समाचार

महर्षि दयानन्द : महिला जागरण के अग्रदूत

मानव जागृति अभियान : पं० ओम्प्रकाश शास्त्री का उद्बोधन

दिल्ली। आर्यसमाज आर्यपुरा द्वारा मचालित 'मानव जागृति अभियान' के ममापन समारोह मे अध्यक्षीय भाषण देते हुए खतौली वासी विद्वान प० ओमप्रकाश शास्त्री ने कहा कि वर्तमान समय मे महिलाए सार्वजनिक जीवन मे जो जो उन्नति कर रही हैं, उसके लिए वे महर्षि दयानन्द सरस्वती जैसे महापुरुषो की ऋणी रहेगी। महर्षि दयानन्द ने प्रर्दा प्रथा, अशिक्षा, बाल विवाह, सती प्रथा जैसी सामाजिक कुरीतियो के विरुद्ध आन्दोलन किया। विधवाओ को पुनर्विवाह, महिलाओ को शिक्षा व सम्मान का अधिकार दिलाया।

तत्कालीन हिन्दू समाज के ठेकेदारो ने प्रतिरोध किया, उन पर पत्थर बरसाए, अपमान किया, जहर के प्याले दिए, लेकिन उस महापुरुष ने किसी की परवाह न करते हुए सर्वप्रथम महिला जागरण का मन्त्र फूका।

श्री शास्त्री जी ने वेद मानवता के पथ प्रदर्शक, दहेज, शिक्षा की अनिवार्यता, सार्वजनिक जीवन मे अशाति आदि विषयो पर प्रभावशाली व्याख्यान दिए जिनमे प्रेरणा लेकर सैकडो युवकों, महिलाओं व नागरिको ने देश मे फैले भ्रष्टाचार व अन्धविश्वासो को दूर करने का सकल्प लिया।

विद्वानो के विदाई समारोह मे श्री प्रेमनाथ चड्ढा, प्रधान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की अध्यक्षता मे पं० ओम प्रकाश खतौली वाले, स्वामी शातानन्द ब्र० अजुनदेव, प० चुन्नीलाल, गुरुकुल कालवा के ब्रह्मचारियों का सार्वजनिक अभिनन्दन व सम्मान आर्यसमाज आर्यपुरा मे किया गया।

अजमेर में महर्षि निर्वाण शताब्दी पर स्मारिका का प्रकाशन होगा

स्वामी सत्यप्रकाश जी गन्थ के सम्पादक नियुक्त

नई दिल्ली। परोपकारिणी सभा, अजमेर के तत्त्वावधान मे १९८३ कि दीवाली पर्व पर अजमेर मे महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी का विशाल कार्यक्रम सम्पन्न किया जाएगा। परोप्रकारिणी सभा ने निश्चय किया है कि इस अवसर पर महर्षि दयानन्द सरस्वती की स्मृति मे एक अभिनन्दन ग्रन्थ या स्मारिका प्रकाशित की जाए। इसके सम्पादन का भार आर्यसमाज के विज्ञानवेत्ता सन्यासी स्वामी सत्यप्रकाश जी को सौपा गया है।

अजमेर मे शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर हो—श्री अमर स्वामी

गाजियाबाद से आर्यसमाज के सन्यासी श्री अमर स्वामी सरस्वती ने एक सन्देश मे कहा है—चूकि महर्षि दयानन्द ने वैदिक साहित्य का प्रचार करने के लिए अजमेर मे परोपकारिणी सभा की स्थापना की तथा वही उनका स्वर्गवास हुआ, इसलिए आर्य भाइयो की भावनाओ का उस स्थान से जुड़ा होना स्वाभाविक है। मैं चाहता हू कि अजमेर मे शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर मनाई जाए।

वेदिक यतिमण्डल के आजीवन सर्वाधिकारी—स्वामी सर्वानन्दजी

२८-२९ अगस्त को दयानन्द मठ, दीनानगर मे वैदिक यति मण्डल का एक विशिष्ट अधिवेशन हुआ। स्वामी सत्यप्रकाश जी, स्वामी ओमानन्द जी, स्वामी दीक्षानन्द जी और महात्मा दयानन्द जी की अध्यक्षता मे चार सत्रो की कार्यवाही हुई। सर्वसम्मति से निश्चय किया गया कि स्वामी सर्वानन्द जी वैदिक यतिमण्डल के आजीवन सर्वाधिकारी हों। यतिमण्डल ने यह निश्चय भी किया कि महर्षि निर्वाण शताब्दी का समारोह दीपावली के अवसर पर अजमेर मे मनाया जाए।

करनाल मे वेदप्रचार एव यज्ञ का सुनहरा अवसर

आर्य केन्द्रीय सभा करनाल के तत्वावधान एव स्वामी सच्चिदानन्द जी के संयोजकत्व मे शहर करनाल मे प्रति रविवारको वेद प्रचार एव राष्ट्रोत्थान हेतु यज्ञ किसी मो गली अथवा मोहल्ले मे किया जाता है। यज्ञ एव वेद प्रचार के लिए सम्पर्क सूत्र स्वामी सच्चिदानन्द जी, १८/१९० न्यू चार चमन,करनाल, हरियाणा अथवा मन्त्री आर्य समाज दयालपुरा, करनाल से स्थापित करें।

दिल्ली सभा के उपदेशकों एवं भजनोपदेशकों द्वारा आर्यसमाजों एवं आर्यसंस्थाओं में वेदप्रचार की धूम

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा दिल्ली से बाहर विभिन्न आर्यसमाज तथा आर्यसस्थाओ मे वेद प्रचार की निरन्तर धूम मच रही है। दिल्ली आर्यप्रतिनिधि सभा के तत्वावधान मे कई दर्जन अवैतनिक आर्य विद्वान एव आर्य विदुषियां मिशनरी भाव से वेद प्रचार मे सलग्न रहते हैं। उनके अतिरिक्त प्रतिनिधि सभा के निम्न विद्वान्, उपदेशक एव भजनोपदेशक वेद प्रचार का कार्य सम्पन्न करते रहे हैं—सर्व श्री प० रामकिशोर वैद्य, प० हरिदेव सिद्धातभूषण, प० अशोक कुमार विद्यालकार, स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती, प० सत्यपाल जी मधुर, प० सत्यदेव जी स्नातक रेडियो मिगर, प० प्रकाशवीर व्याकुल, प० चुन्नीलाल जी, श्री प० वेद व्यास जी। उक्त आर्य विद्वानो एव भजनोपदेशो ने अप्रैल से अगस्त तक निम्न सस्थाओ मे वेद प्रचार किया—

अप्रैल १९८२ : आर्यसमाज अम्बहटा जिला सहारनपुर, स्वतन्त्र भारत मिल स्कूल, आर्यसमाज कृष्ण नगर, आर्यसमाज आर्यपुरा, आर्यसमाज भीमनगर, गुडगांव, गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय, हरिद्वार, आर्यसमाज श्रद्धापुरम गुड़गांव, आर्यसमाज ओचन्दी, आर्यसमाज किदवई नगर, दरियागज, आर्यसमाज मगोलपुरी, आर्यसमाज बोट क्लब, आर्यसमाज कीर्तिनगर, आर्यसमाज नारायण विहार, आर्यसमाज खिचडीपुर।

मई १९८२ . पजाबी बाग हनुमान रोड, नया बास, सरस्वती विहार, पालम कालोनी, राजनगर, प्रताप नगर, अशोक विहार, नारायण विहार, लाजपतनगर, पंजाबी बाग विस्तार, आर्यपुरा की आर्य समाजो तथा हरयाणा बाडी बिल्डर्स, रोहतक मे।

जून १९८२ मे हनुमान रोड, पजाबी बाग (स्त्री समाज) महरौली, मोडल बस्ती, गन्नौर, गोविन्दपुरी, टैगोर गार्डन की आर्यसमाजो में।

जुलाई १९८२ मे मोडल बस्ती, अन्धा मुगल-प्रताप नगर, शकरपुर विस्तार, कृष्ण नगर, सरोजिनी नगर, पजाबी बाग (स्त्री समाज) गाँधी नगर पटेल नगर, नरेला, सुभाष गेट करनाल की आर्यसमाजो मे।

अगस्त १९८२ में ग्रेटर कैलाश I, पटेल नगर, जनकपुरी बी ३/२८, अमर कालोनी, शालीमार बाग, नया बास, झण्डेवालान विस्तार, त्रिनगर, सदर बाजार पहाडी धीरज, राणा प्रतापबाग पंजाबी-बाग, आर्यपुरा, कबीर बस्ती, सुदर्शन पार्क की आर्यसमाजो तथा मोती नगर की वेद प्रचार सभा मे वेद प्रचार कार्य सम्पन्न किया।

श्रीमती रतन देवी पाराशर का निधन

आर्यसमाज बिरला लाईन में शोक सभा

स्त्री आर्य समाज बिरला लाइन्स की प्रधाना एवम् सुप्रसिद्ध समाज सेविका आर्य समाज बिरला लाइन्स के वरिष्ठ प्रधान श्री देशराज श्री पाराशर की धर्म पत्नी श्रीमती रतन देवी जी पाराशर के दिनाक २८ अगस्त १९८२ को हुए आकस्मिक देहावसान पर आर्य समाज बिरला लाइन्स मे दिनाक ६ सितम्बर को साय ४ बजे यज्ञोपरान्त शोक सभा आयोजित की गई।

सभा की अध्यक्षता स्वामी स्वरूपानन्द जी महाराज ने की। इस अवसर पर श्री रामचन्द्र जी शास्त्री श्री अशोक जी विद्यालकार, श्री लाला रामस्वरूप जी गुप्ता श्री श्याम सुन्दर जी गुप्ता, श्री देवी शरण जी आर्य, श्री लाजपतराय जी श्री शिवप्रसाद जी गुप्ता तथा महिला मण्डल सब्जी मण्डी क्षेत्र की प्रधाना जी वक्ताओ ने स्वर्गीय श्रीमती रतन देवी जी पाराशर की आर्य समाज के कार्यों के प्रति लगन व उनके वैदिक जीवन मे प्रेरणा लेने का आवाहन किया। दिवगत आत्मा की शान्ति सद्गति की ईश्वर से प्रार्थना करते हुए उनके शोक सतप्त परिवार के प्रति हार्दिक सवेदना प्रकट की।

आर्य समाज राणाप्रताप बाग, आर्य समाज सोहनगंज आर्य समाज अन्धा मुगल प्रताप नगर, स्त्री आर्य समाज शक्ति नगर, स्त्री आर्य समाज मॉडल टाउन के अधिकारियों एव बिरला आर्य कन्या विद्यालय की ओर से प्रधानाचार्य श्रीमती सुशीला जी सेठी ने दिवगत आत्मा को श्रद्धांजलि दी तथा अपनी-अपनी सस्थाओं के शोक प्रस्ताव पढे।

सभाध्यक्ष श्री स्वामी जी महाराज ने श्रद्धाजलि देते हुए कहा कि प्रत्येक आर्य को वेद का स्वाध्याय करना चाहिए। तभी वैदिक धर्म का प्रचार वा प्रसार होगा।

आर्यसमाजों के सत्संग

१९ सितम्बर'८२

अमर कालोनी—डा० रघुनन्दनसिंह; अशोक विहार के डी-२६ बी—प० गणेशप्रसाद विद्यालकार; अशोक नगर—प० खुशीराम शर्मा; आर्यपुरा—आचार्य हरिदेव सि० भू०, आर. के पुरम सेक्टर ५—श्री देवीचरण बन्सल, आर. के. पुरम सेक्टर ६—प० कामेश्वर शास्त्री; आर. के. पुरम सेक्टर ९—डा० नन्दलाल; इन्द्रपुरी—प० देवराज वैदिक मिशनरी; किशनगज मिल एरिया—प० रामरूप शर्मा; किग्जवे कैम्प—श्रीमती प्रकाशवती शास्त्री; करौल बाग—आचार्य नरेन्द्र शास्त्री; कृष्णनगर—प० ओम्प्रकाश वेदालकार, गीता कालोनी—प० अमरनाथ कान्त; ग्रेटर कैलाश-I—श्री चमनलाल; गुडमण्डी—प० प्रकाशवीर व्याकुल; गुप्ता कालोनी—प० बलवीरसिंह शास्त्री, गोविन्दपुरी—पं० अशोक कुमार विद्यालकार, चूना मण्डी-पहाड़गज—डा० रघुवीर वेदालकार, जनकपुरी बी ३/२४—प० छविकृष्ण शास्त्री, टैगोर गार्डन—प० विश्वप्रकाश शास्त्री, तिलक नगर—स्वामी शातानन्द, तिमारपुर—प० हरिदत्त शास्त्री, दरियागज—ला० लखमीदास; नारायण विहार—स्वामी स्वरूपानन्द भजनोपदशक, नया बास—प्रो० सत्यपाल बेदार, न्यू मोतीनगर—श्रीमती लीलावती आर्या, पंजाबी बाग—स्वामी प्रेमानन्द; पंजाबी बाग एक्सटेंशन १४/३—प० मुनिशकर वानप्रस्थ; प्रीतम-पुरा—श्री महावीर बत्रा; बाग कड़े खां—प० बरकतराम भजनोपदेशक, बिरला लाइन्स—प० प्रकाशचन्द वेदालकार, मोडल बस्ती—श्रीमती सुशीला राजपाल, महावीर नगर—प० रामनिवास, महरौली—प्रो० वीरपाल विद्यालंकार, रमेशनगर—प० रामदेव शास्त्री; राणा प्रताप बाग—प० आशानन्द भजनोपदेशक, राजौरी गार्डन—महात्मा दयानन्द तथा पं० जैमुनि शास्त्री, लड्डू घाटी पहाड़गज—प० सोमदेव शास्त्री, लक्ष्मीबाई नगर—प० तुलसीराम भजनोपदेशक, लेखराम नगर-त्रिनगर—प० सीसराम भजनोपदेशक, लारेन्स रोड—आचार्य दीनानाथ सिद्धातालकार, विक्रम नगर—प० वेदपाल शास्त्री, सराय रोहेला—प० हरिश्चन्द्र शास्त्री, सुदर्शन पार्क—प्रो० भारतमित्र शास्त्री, सोहनगज—प० ईश्वरदत्त, श्री निवासपुरी—प मनोहरलाल ऋषि भजनोपदेशक, शादीपुर—प० ओम्प्रकाश भजनोपदेशक, हौज खास—प० चन्द्रभानु सि० भू०।

—ज्ञानचन्द डोगरा वेद प्रचार प्रबन्धक

बोध-कथा

दानशीलता !

श्री कृष्ण और अर्जुन बाल-सखा थे। एक बार दानियो की चर्चा हो रही थी। वार्तालाप के प्रसग में श्री कृष्ण जी ने कहा—इस युग मे कर्ण सरीखा दूसरा दानी नहीं। अर्जुन अपने बडे भाई सम्राट युधिष्ठिर से बडा परोपकारी एव धर्म-निष्ठ दूसरे किसी को भी नही मानते थे। श्री कृष्ण और अर्जुन दोनो भिक्षुको के भेष में राज दरबार पहुचे। महाराजा द्वारा यह पूछे जाने पर क्या चाहिए, दोनो भिक्षुओ ने कहा—'कुछ मन सूखी चन्दन की समिधा चाहिए।' महाराजा युधिष्ठिर ने राजकोठारी को बुलाया। उससे पूछने पर मालूम हुआ कि बरसात का मौसम होने से कही भी चन्दन की सूखी लकड़िया उपलब्ध नहीं हैं। निराश दोनो भिक्षुक खाली हाथ लौट आए।

दोनो भिक्षुक चन्दन की सूखी समिधा के लिए हस्तिनापुर के राजा दुर्योधन के यहां पहुंचे। वहां भी वर्षा के कारण भण्डार मे सूखी चन्दन की समिधा न मिली। अन्त मे दोनों राजा कर्ण के राजमहल पहुंचे। वहा भी राजकीय भण्डार मे चन्दन की सूखी लकड़ियां न थी। कर्मचारी द्वारा इन्कार करने पर राजा कर्ण उठे, उन्होंने कुल्हाडी लेकर राजमहल के कीमती चन्दन के किवाड तोड डाले। भिक्षुकों को सूखी मनचाही चन्दन की लकडी मिलने पर श्री कृष्ण ने मुस्कराकर सखा अर्जुन की ओर देखा। अर्जुन के नेत्र लज्जावश स्वत ही झुक गए थे।

—नरेन्द्र

प्रो० वेदव्यास द्वारा युवकों के लिए सात्विक दान

नई दिल्ली। प्रसिद्ध शिक्षाविद् एव डी० ए० वी० प्रबन्धकर्त्री सभा के के प्रधान प्रो० वेदव्यास ने केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली प्रदेश के नौजवानो के शारीरिक विकास हेतु १०००) रुपये का चैक परिषद् को भेट किया। इस राशि से परिषद की विभिन्न शाखाओं को खेलने के फुटबाल १३ सितम्बर १९८२ परिषद की दिल्ली राज्य की शाखाध्यक्षों, अन्तरग व सक्रिय सदस्यो की आर्यसमाज कबीर बस्ती की बैठक मे वितरित किए गए।

आर्यसमाज हडसन लाइन मे वेदकथा

आर्यसमाज किग्जवे (गुरु तेग बहादुर नगर) की ओर से सोमवार ६ सित० से रविवार १२ सितम्बर तक रात्रि को ७॥ से ९॥ बजे तक आर्यसमाज मन्दिर हडसन लाइन मे प्रसिद्ध विद्वान शास्त्रार्थ महारथी प० शातिप्रकाश जी ने वेदकथा प्रस्तुत की। कथा से पूर्व प० चुन्नीलाल जी भजनोपदेशक ने मनोहर भजन सुनाए। १०, ११, १२ सितम्बर को प० अशोककुमार जी वेदालकार ने अपने विद्वत्तापूर्ण प्रवचनो से जनता को कृतार्थ किया।

आर्यसमाज अशोक विहार मे उत्तरी दिल्ली के आर्य युवकों का शिविर

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद दिल्ली प्रदेश के तत्वावधान मे उत्तरी दिल्ली मडल के आर्य युवको का शिविर १९ सितम्बर १९८२ (रविवार) आर्यसमाज मन्दिर अशोक विहार (फेज II) निकट वजीरपुर मे लगेगा। जिसके लिए उत्तरी दिल्ली क्षेत्र के आर्य युवको को १८ सित० शनिवार रात्रि ७ बजे तक मात्र २) के शुल्क के साथ पहुचना होगा, रविवार सारे दिन प्रशिक्षण दिया जाएगा, उसी रात्रि १० बजे मशाल जलूस के शिविर समाप्त हो जाएगा।

आर्यसमाज रघुवीर नगर टैगोर गार्डन के नए पदाधिकारी

प्रधान—श्री अर्जुनदेव, उपप्रधान—श्री धर्मचन्द जी, मन्त्री—श्री रामलाल बजाज, उपमन्त्री—श्री किशनचन्द्र तनेजा, कोषाध्यक्ष—श्री सुखदेव जी तनेजा, पुस्तकाध्यक्ष—श्री वेदमित्र जी।



दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रकाशन

सत्यार्थप्रकाश सन्देश (हिन्दी)	१०.)
(अंग्रेजी)	समाप्त
आर्य सन्देश महासम्मेलन विशेषांक	६.००
पादरी भाग गया— ओम्प्रकाश त्यागी	०.३०
स्वामी श्रद्धानन्द-बलिदान अर्द्ध शताब्दी स्मारिका	६.००
सत्यार्थप्रकाश शताब्दी समारोह स्मारिका	६.००

सम्पर्क करें—
अधिष्ठाता प्रकाशन विभाग
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा,
१५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१

卐 'आर्यसन्देश' के स्वयं ग्राहक बनें— दूसरों को बनाएं

卐 आर्यसमाज के सदस्य स्वयं बनें— दूसरों को बनाइए

卐 हिन्दी संस्कृत भाषा स्वयं पढ़े दूसरों को पढ़ाइए—

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए श्री सरदारी लाल वर्मा द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा भाटिया प्रेस २५७४, रघुवरपुरा नं० २ गांधी नगर दिल्ली ३१ में मुद्रित कार्यालय १५ हनुमान रोड नई दिल्ली। फोन३१०५०।

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक मुखपत्र

एक प्रति ३५ पैसे | वार्षिक १५ रुपये | वर्ष ६ | अंक ४८ | रविवार २६ सितम्बर | ११ आश्विन वि० २०३९ | दयानन्दाब्द—१५८

भारत के नवजागरण में महर्षि दयानन्द का स्थान अद्वितीय

गुरुकुल कांगड़ी वैदिक ज्योति का व्यवस्थित प्रकाश करे :

गुरुकुल शिक्षा प्रणाली की महत्ता : विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की अध्यक्षा श्रीमती माधुरी शाह :

गुरुकुल कांगड़ी में वैदिक शिक्षा राष्ट्रीय कार्यशाला का उद्‌घाटन-समारोह

हरिद्वार। "भारत के नवजागरण आन्दोलन मे महर्षि दयानन्द का स्थान अद्वितीय है। उनमे प्रेरणा लेकर स्वामी श्रद्धानन्दजी ने लगभग ८० वर्ष पूर्व गगा नदी के तट पर गुरुकुल कागडी की स्थापना की थी। अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश मे ऋषि दयानन्द ने समग्र शिक्षा का जो मन्त्र प्रस्तुत किया था, उसको मूर्त्तरूप देने के लिए महात्मा हसराज तथा उनके साथियोंने १८८६ मे डी ए वी कालेज लाहौर की स्थापना की थी, किन्तु स्वामी श्रद्धानन्द और प० गुरुदत्त डी ए वी. कालेज की उपलब्धियो से सन्तुष्ट नही थे, अत उन्होने गुरुकुल की स्थापना का बीडा उठाया, जिसमे कि भारतीय और विदेशी दोनो शिक्षापद्धतियो का समन्वय हो। गुरुकुल की प्रारम्भिक योजना मे वेद-वेदाग और सस्कृत साहित्य की शिक्षा के साथ आधुनिक ज्ञान-विज्ञान की शिक्षा को यथोचित स्थान दिया गया और शिक्षा का माध्यम राष्ट्रीय भाषा हिन्दी को रखा गया। गुरुकुल मे गुरु-शिष्य परम्परा के साथ ब्रह्मचर्य तपस्या, स्वाध्याय, स्वावलम्बन और स्वदेशी का विशेष महत्व था" इन शब्दो मे विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की अध्यक्षा श्रीमती डा० माधुरी शाह ने गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय की कार्यशाला का उद्‌घाटन करते हुए महर्षि और गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के प्रति अपने विचार प्रकट किए।

अपनी रुग्णावस्थाके कारण श्रीमती माधुरी शाह स्वय नही आ सकी थी, परन्तु उन्हो अपना भाषण लिखकर भेज दिया था जो वहां पढा गया। श्रीमती शाह ने घोषित किया- "गुरुकुल कागडी को विश्वविद्यालय स्तर की मान्यता प्राप्त है। इसका अर्थ यह है कि आपने विशेष क्षेत्र मे अपना एक परिपक्व स्थान प्राप्त कर लिया है और उस क्षेत्र मे आपका स्तर अन्य सस्थाओ से ऊचा है। भले ही इस विश्वविद्यालय मे सामान्य विश्वविद्यालयोकी तरह विभिन्न विषयो के अध्ययन-अध्यापन का प्रबन्ध न हो, परन्तु अपने चुने हुए क्षेत्र मे इस विश्वविद्यालय की उपलब्धिया और प्रतिष्ठा अद्वितीय होनी चाहिए। वेद का पढना-पढाना, सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है, अत वेद मे गहन अनुसन्धान करना, वेद का अध्ययन-अध्यापन और विश्व की समस्त भाषाओ मे इसका प्रचार करना आपका मुख्य कर्त्तव्य है। यह प्रश्न आपको स्वय से पूछना होगा कि आप इस दिशा मे कितने अग्रसर है। आपके पास एक कीमती निधि है, वैदिक ज्योति के आप प्रकाश पुञ्ज है। आशा है कि गुरुकुल विश्वविद्यालय से ऐसी ज्योति प्रस्फुरित होगी जो न केवल देश का अपितु विश्व का मार्ग प्रशस्त करेगी।"

वैदिक शिक्षा-कार्यशाला

उल्लेखनीय है कि सितम्बर के दूसरे सप्ताह मे गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय मे वैदिक शिक्षा-कार्यशाला का आयोजन किया गया। देश के भिन्न-भिन्न विश्वविद्यालयो के अनेक प्रतिनिधि विद्वान् इस विषय पर विचार करने के लिए आमन्त्रित किए गए थे कि वर्तमान परिस्थितियो मे कौन-सी शिक्षा प्रणाली हमारे लिए उपयोगी होगी। यह सेमिनार-सगोष्ठी या कार्यशाला चार दिन तक प्रचलित रही। कार्यशाला की अध्यक्षता पहले दिन आर्यसमाज के प्रसिद्ध विद्वान् गुरुकुल कागडी के यशस्वी स्नातक प्रो० सत्यव्रत सिद्धान्तालकार ने की। इस अवसर पर आचार्य प्रियव्रतजी, डॉ० सत्यकेतु विद्यालकार, डॉ० भवानी लाल भारतीय, महात्मा आर्य भिक्षु और कुछ दूसरे महानुभावो ने भिन्न-भिन्न अधिवेशनो की अध्यक्षता की। 'वेदो मे विज्ञान है या नही" —विषय पर विचार विमर्श की अध्यक्षता श्री नारायण स्वामी ने की। कार्यशाला मे भाग लेने वाले गुरु शिक्षा प्रणाली के समर्थक गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को अधिक व्यवस्थित कर प्रचलित करना चाहते थे तो दूसरे विश्वविद्यालयो के प्रतिनिधियो ने अपने अनुभव के आधार पर अनेक परिवर्तनो का सुझाव दिया।

मेरठ और दिल्ली के दंगों के लिए दिल्ली के इमाम जिम्मेदार

प्रधानमन्त्री श्रीमती गांधी को सार्वदेशिक के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले का पत्र

नई दिल्ली। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल वानप्रस्थ (शालवाले) ने प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाधी को लिखे अपने एक पत्र मे घोषित किया है कि इस समय राष्ट्र मे साम्प्रदायिक तत्त्वो ने पुन राष्ट्र एव समाज विरोधी कार्यवाही शुरू कर दी हैं। यदि समय रहते इन साम्प्रदायिक तत्त्वो को जिन्हे विदेशी धन और सहयोग मिल रहा है, सख्ती से न कुचला गया तो स्थिति बडी भयकर और विस्फोटक हो सकती है।

पत्र मे यह सूचना भी दी गई है कि इन साम्प्रदायिक तत्त्वो को देश के शासन और कानून का भी भय नही है। पत्र मे दिल्ली और मेरठ के दगो के लिए जामा मस्जिद दिल्ली के इमाम अब्दुल्ला बुखारी की कार्यवाहियो और उनके उत्तेजक भाषणो को जिम्मेदार ठहराया गया है। पत्र मे प्रधानमन्त्री से अनुरोध किया गया है कि वह स्वत इन तथ्यो की जाच कराये और उचित कार्यवाही करे।

यह भी ज्ञात हुआ है कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले के नेतृत्व मे एक शिष्टमदल ११ सितम्बर के दिन मेरठ गया था। जिलाधीश, जन-कार्यकर्ताओ एव पत्रकारो से उन्होने कहा 'यदि इमाम अब्दुल्ला के बढते हुए अराष्ट्रीय कदमो को समय पर रोक दिया जाता तो मेरठ मे साम्प्रदायिकता की आग न भडकती। ५ सितम्बर रविवार को बुखारी मेरठ की जामा मस्जिद मे भाषण देने के बाद हजारो साम्प्रदायिक तत्त्वो को लेकर शहर मे घूमे और आवाज लगाई, कब्र खून मागती है। अगले दिन मन्दिर के पुजारी की हत्या की गई। मुरादाबाद से गिरफ्तार लोगो से मिलने कुछ अवाञ्छनीय तत्व मेरठ जेल आए थे, उनके आने पर दगा क्षेत्र मे आग मे घी का काम हुआ।

सम्पादक—नरेन्द्र विद्यावाचस्पति

व्यवस्थापक—प्रद्युम्नलाल तलवाड़

वेद-मनन

खेती के लिए जानने योग्य आवश्यक बातें

—मनोहर विद्यालकार

शुन सुफला विकृषन्तु भूमि शुन कीनाशा अभियन्तु वाहैः।
शुनासीरा हविषा तोशमाना सुपिप्पला ओषधी कर्तनास्मै ॥ यजु १२-६९

ऋषि-कुमारहारित। देवता- कृषीवला। छन्द —त्रिष्टुप्। शब्दार्थ—(सुफाला) उत्तम फलको वाले हल (भूमिम्) पृथ्वी को (शुनम्) सुखपूर्वक (विकृषन्तु) जोते। (कीनाशा) किसान (वाहै) बैलो, घोडो, या ट्रैक्टरो से (शुनम्) सुखपूर्वक (अभियन्तु) अपना अभियान चलाते रहे। (शुनासीरो) वायु और सूर्य (हविषा) जल और उष्णता द्वारा (तोशमानो) सतुष्टि प्रदान करते हुए (ओषधी) यवादि अन्नो को (सुपिप्पला) उत्तम दानो (फलो) से युक्त (कर्तन) करे—करो।

निष्कर्ष —अन्न की आत्मनिर्भरता के लिए भूमि हल, वाह और किसान आवश्यक है। अन्न के बालो को पकाने और दानो मे भरने के लिए समय पर जल और उष्णता अनिवार्य है। उन मे से किसी भी वस्तु की कमी खेती को बिगाड देती है, वाछित फल नही मिलता, राष्ट्र को भुखमरी का सामना करने के लिए दूसरे देशों पर आश्रित रहना पडता है।

भूमि ऊची है या नीची, वर्षा का पानी यहा आकर इकट्ठा हो जाएगा या बह जाएगा, हल गहरा खोदता है या उथला, सूर्य का पूरा ताप मिला या नही आवश्यक पानी खेती को मिला या नही ? आदि ज्ञान अच्छे किसान के लिए आवश्यक है।

विशेष—इस मन्त्र के ऋषि का शब्दार्थ सकेत करता है कि—कृषि मे आने वाली खराबियो और अभावो को समाप्त करने वाला तथा हरित अर्थात् नदियो के जल, सूर्यकिरणो के ताप और अपनी अगुलियो के श्रम तथा दिशाओ मे आने वाली वायुओ का ज्ञान रखने वाला ही इस मन्त्र के देवताओ (ऋग्वेद के) वायु और सूर्य (अथर्ववेद को सीता हल से जुती भूमि और (यजुर्वेद के) अग्नि-ताप और पाक से पूरा लाभ ले सकता है।

इस मन्त्र के छन्द त्रिष्टुप का शब्दार्थ सकेत करता है अच्छे किसान तीनों लोको के अधिपति देवों अग्नि-पर्जन्य और सूर्य की गतियों से परिचित होकर उनसे आने वाले विघ्नो को दूर करना चाहिए।

अर्थपोषक प्रमाण—यह मन्त्र तीनो वेदो मे आया है। प्रत्येक वेद मे देवता पृथक है, जिसकी ऊपर चर्चा की गयी है। कुमार —कु(खराबी या अभाव) +मारयति। हारित —हरित-दिड्नाम नि १-६ नदीनाम। नि० १-१३ अगुलिनाम। नि० २-५। हरित--आदित्यस्योपयोजनानि। नि० १-१५ अर्थात् किरणे। शुनासीरो—शुन-वायु सरत्यन्तरिक्षे, सीर आदित्य, सरणात्। नि० ९-४० कीनाशा —क्लियन्ति श्रमेणये। शुनम्-सुखनाम। नि० ३-६ - तोशमानौ तुष तुष्टौ। हविषा—हवि-जलनामसु। नि० १-१२। ओषधी —ओषधय फलपाकान्ता-अर्थात् गेहू, जौ, चना आदि अन्न। सुपिप्पफला —पिप्पलम्फलम्। महीधर वाहै —वाहोद्रश्वमानयो। वृषे हेमचन्द्र।

५२२, ईश्वरभवन, खारी बावडी,
दिल्ली—११०००६

आर्यसमाज सिलोगुड़ी का वेदसप्ताह सम्पन्न

२५ जुलाई से १ अगस्त तक वेद सप्ताह बडी धूमधाम से मनाया गया, आमन्त्रित मनीषी विद्वान मदनमोहन विद्यासागर की अध्यक्षता मे अथर्ववेद का यज्ञ हुआ और प्रभावशाली प्रवचन हुए तथा भजनोपदेशक वीरेन्द्र आर्य के मधुर भजनो से सिलीगुडी की जनता को मनोरजन के साथ-साथ आर्य समाज की ओर प्रभावित किया। सायकाल परिवारो मे कथा एव भजन होते रहे। समाज के पुरोहित पडित श्री इन्द्रदेव शास्त्री के प्रयास एव प्रभाव से वेद प्रचार एव प्रसार का कार्यक्रम बहुत ही सुचारु रूप से सम्पादित हुआ। मान्य विद्वानो के साथ समाज के प्रधान एव मन्त्री गगटोक (सिक्कम) मिगताग, दार्जिलिग एव बिजनवाडी मे भव्यता एव दिव्यता के साथ वेद का प्रचार प्रसार का कार्यक्रम सम्पन्न कराया।

आर्यसमाज ब्रह्मपुरी (घोण्डा) मे वेदकथा

आर्यसमाज ब्रह्मपुरी (घोडा) के तत्वावधान मे ११-१८ सितम्बर को वेद कथा का आयोजन किया गया। दोनो समय सुबह शाम वेद-प्रवचनो और भजनोपदेशों का सुन्दर कार्यक्रम हुआ। ब्रह्मचारी अर्जुनदेव एव ब्रह्मचारी सत्यप्रिय ने वेद-कथा प्रस्तुत की।

लोक-चिन्तन

देशी समस्या—विदेशी समाधान

—डा० विजय द्विवेदी

उस दिन भारत अपनी स्वाधीनता की पैंतीसवी वर्षगाँठ मना रहा था। चारो ओर धूम-धाम, चहल-पहल दिखाई पड रही थी। सरकारी यान-वाहन भाग रहे थे, यान वाहनो मे तात्कालिकता को सबसे गुरुत्वपूर्ण युगधर्म मानने वाला वर्ग भागता रहता है। अतीत को पूरी तरह भुलाए हुए, भविष्यत के प्रति भ्रम पाले हुए भागते हुए इस देश के जीवन को देखकर लगता है—भ्रम-भोग, तुच्छता और आत्महीनता का दूसरा नाम भारतवर्ष है। समस्याओ की गुदड़ी मे लिपटा, समाधान के नाम पर पैबन्द लगाए, उपलब्धियो की जीर्ण-शीर्ण लाठी के सहारे टिके, हाथ का भिक्षापात्र कुछ पा जाने की आशा मे आगे बढ़ाते, घिसट कर चलते इस देश को देखकर ज्ञानी जी कहते हैं—देश प्रगति के पथ पर आगे बढ रहा है।' तत्त्वज्ञानी कहते हैं—'यह परगति नही दूरगति है' और इस दूरगति के पीछे मूल कारण है—देश की समस्याओ का विदेशी समाधान। आज देश के सामने आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक, शैक्षिक, राजनीतिक-सभी तरह की समस्याए समाधान पाने की आशा मे मुह खोले खड़ी हैं मगर देश का शासन समाधान हेतु विदेशों की ओर आँखें लगाए हैं। यह जानते हुए भी कि विदेशी मलहम देशी खाज पर काम नहीं कर रहा है, विदेशी मानसिकता से आक्रान्त वर्ग उसे ही मलता जा रहा है। ज्यो-ज्यो दवा हो रही है मर्ज बढता जा रहा है।

इस देश की गरीबी विदेशी शासको की देन है। इसे दूर करने के लिए सरकारी तन्त्र आप्राण चेष्टा कर रहा है, योजनाओ पर योजनाए बना रहा है, उद्योग-धन्धे कल-कारखाने खोल रहा है, विदेशी अर्थ-विदो की सहायता ले रहा है। रोजगार देने के नाम पर विलासिता की वस्तुओ का उत्पादन कर सभ्यता की दौड मे आगे निकलने मे लगा हुआ है। मगर गरीबी कम होने की जगह बढ रही है। कारण ? जिस देश मे भूमि कम और आबादी अधिक होती है वहा पूजीवादी देशो की नकल पर बडे-बडे उद्योग लगाने से पूजी का सतुलन बिगड जाता है। कुछ सीमित लोग धनवान हो जाते हैं, बाकी लोग निर्धन। अत गरीब देशो मे उत्पादन बढ़ाने के साथ ही कठोर व्यवस्था द्वारा धन के सन्तुलन को बनाए रखना भी जरूरी होता है, ताकि किसी के पास जरूरत से ज्यादा धन न जमा हो सके। इस समस्या का हल वैदिक साम्यवाद है, जो धन के साथ मन पर नियन्त्रण रखने की बात कहता है, केवल स्वार्थ की नही परमार्थ की साधना पर बल देता है। शिक्षा, भाषा, समाज-व्यवस्था आदि की समस्याओ आदि को भी इसी तरह अनुभूत-परम्परित ज्ञान के आलोक मे हल किया जा सकता है। विदेशी चमक-दमक हमे अपनी ओर चाहे जितनी आकर्षित कर ले परन्तु यह निर्विवाद है कि हमारी किसी समस्या का हल उनके पास नही है। अस्तु, जब तक हम विदेशी मानसिकता से मानसिक दासता से मुक्त नही होगे हमारी कोई भी समस्या हल नही होगी।

—महाराजा पूर्णचन्द्र महाविद्यालय, बोरिपदा (उडीसा)

उड़ीसा में बाढ़ का प्रकोप : लाखों नर-नारी अनाथ

भुवनेश्वर। इस साल प्रबल तूफान से उडीसा का एक बडा भाग क्षतिग्रस्त हुआ था। अभी-अभी प्रबल बाढ के कारण १३ जिलो मे से ८ जिलो के सत्तर लाख व्यक्ति असहाय हो गये है। हजारो घर नष्ट हो गए हैं। लोग अभी भी नदी बाध के ऊपर निराश्रय बैठे हैं। पुनरुद्धार का कार्य विशाल है तथापि यथाशक्ति उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा सेवा कार्य आरम्भ किया गया है। सस्था तथा धर्नामानी सज्जनो से निवेदन है कि अपनी दया की आहुति भेजे। दान चेक या बैंक ड्राफ्ट बना कर "उत्कल आर्य प्रतिनिधि" सभा के नाम पर मन्त्री, उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा, NO 26, 4(R) Flat, भुवनेश्वर—उडीसा के पते पर भेजने की कृपा करे।

—प्रियव्रत दास मन्त्री, उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा

आवश्यकता है, एक सन्यासी, विरक्त अथवा रिटायर्ड व्यक्ति की जो मिन्टो रोड आर्य समाज मन्दिर मे अधिक से अधिक समय दे सके। रहने के लिए कमरे की व्यवस्था है। सुन्दर वाटिका, खुला वातावरण, हवन वेदी इत्यादि उपलब्ध है। मन्दिर का निर्माण-कार्य धीरे-धीरे चल रहा है। कृपया निम्न पते पर सूचित करें।

नरेश गुप्त, ८ महावतखा मार्ग, नई दिल्ली—२

यज्ञ करने वालों से प्रेम

ओ३म् इच्छन्ति देवा: सुन्वन्त न स्वप्नाय स्पृहयन्ति।
यन्ति प्रमादमतन्द्रा.॥ ऋग्वेद ८-२-१८

भगवान् यज्ञ-कर्म करने वालो को सदा चाहते हैं, आलसी और प्रमादी को वे सीधे-रास्ते पर प्रवृत्त करते है।

ओ३म्
आर्य सन्देश

आर्यसमाज का दस सूत्री कार्यक्रम

एक छोटा-सा बालक शिक्षा और धन-अर्जन के लिए विदेश जा रहा था, उसकी मा ने सीख दी कि जीवन मे चाहे कितना ही सकट क्यों न आये, तुम सदा सत्य का सहारा लेना, कभी भी झूठ न बोलना। वह एक बडे सार्थवाह के साथ यात्रा पर चल पडा। रास्ते में भयकर डाकू आए, उन्होने व्यापारियो से पूछा—'तुम्हारे पास कुछ जमा-पूंजी है?' उनके इन्कार करने पर डाकुओं ने उनकी तलाशी ली, सबके पास अशर्फिया और नकदी पैसा मिला। डाकुओ ने सारी सम्पत्ति छीन ली। अन्त मे डाकू सरदार ने लडके से पूछा—'तेरे पास क्या है?' लडके ने उत्तर दिया—'अशर्फिया हैं।' डाकू ने कहा, 'हमने सब का धन छीन लिया फिर भी तुमने सच क्यो बोला?' लडके ने उत्तर दिया—'चलते समय मा ने कहा था कि बेटा चाहे कितना सकट आ जाए, सदा सत्य बोलना। मै तो मा के कहे के अनुसार चल रहा हू।' डाकू सरदार लडके की सचाई देखकर प्रसन्न हो गया, उसने न केवल उन सभी व्यापारियो को छोड दिया प्रत्युत अपने जीवन मे भी सदा सत्य के आचरण का व्रत लिया। आर्यसमाज के प्रारम्भिक जीवन मे आर्यजनो ने सत्य को अपने जीवन का व्रत बनाया था। ब्रिटिश शासन के उन दिनो मे किसी आर्यजन का इतना कहना पर्याप्त होता था कि मै आर्यसमाजी हूं, उसके यह कहते ही शासक और सामान्य जनता यह विश्वास कर लेती थी कि यह आर्यजन जो कुछ भी बोलेगा सत्य ही बोलेगा, सत्य छोडकर दूसरा कुछ वह नही बोलेगा।

दूसरे शब्दो मे कहा जा सकता है कि आर्यसमाज के प्रारम्भिक दिनो मे सत्य बोलना, सत्य व्यवहार करना आर्यसमाज का सबसे महत्वपूर्ण सूत्र था। इस एक सूत्र के अवलम्बन से आर्यसमाज और आर्यजनो का व्यक्तित्व चमक उठा था। प्राचीन काल मे आचार्यगण शिष्यो को तीन सूत्रो की दीक्षा देते थे—सत्य बोलो धर्म का आचरण करो, स्वाध्याय मे किसी प्रकार का आलस्य या प्रमाद न करो। ऋषि दयानन्द ने आर्यसमाज के माध्यम से सामाजिक उन्नति के लिए दस नियमो के सूत्र दिए थे। आपातकालीन स्थिति मे प्रधानमन्त्री इन्दिरा गाधी ने राष्ट्र मे रचनात्मक कार्यों को पूर्ण करने के लिए २० सूत्री कार्यक्रम दिया था। उन दिनो सजय गाधी ने भी पच सूत्री कार्यक्रम दिया था, इस वर्ष इन्दिरा जी ने नया बीस सूत्री कार्यक्रम दिया है। प्रसन्नता का विषय है कि आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब ने प्रदेश मे आर्यसमाज के कार्यों को बढा कर समाज को मजबूत करने के लिए एक दस सूत्री कार्यक्रम दिया है। यह दस सूत्री कार्यक्रम केवल पजाब की आर्यसमाज के लिए ही उपयुक्त नही है, प्रत्युत यह सभी आर्यसमाजों के लिए उपयोगी एव व्यावहारिक हो सकता है। इन दस सूत्रो मे नए सूत्र जोडे जा सकते हैं, कुछ मे परिवर्तन-परिवर्द्धन किया जा सकता है।

सक्षेप मे ये दस सूत्र इस प्रकार हैं—१ प्रत्येक जिले मे एक आर्य सम्मेलन अवश्य हो। २ साप्ताहिक यज्ञ के अतिरिक्त क्षेत्र मे एक सामूहिक यज्ञ अवश्य किया जाए। ३. अपने क्षेत्र मे पारिवारिक सत्सग अवश्य किए जाए। ४. अपने क्षेत्र मे हिन्दी एव भारतीय भाषाओ का प्रचार हो, ५ सभी प्रमुख आर्यपर्व अवश्य मनाए जाए, ६. दहेज आदि की कुप्रथा के विरुद्ध अभियान चलाया जाए,७ समाज के पिछडे वर्गों के लिए सहायता कोष एकत्र किया जाए, ८. नई पीढी को आकृष्ट करने के लिए आर्य कुमार सभा, आर्य वीर दल बनाए जाए, ९ जन-समस्याओ के समाधान के लिए आर्यसमाज अपना दायित्व निबाहे, १०. बुद्धिजीवियो की गोष्ठियो एव सभाओ के माध्यम से शिक्षित वर्ग मे आर्य विचारो का प्रसार किया जाए, इन दस सूत्रो के साथ कई दूसरे सूत्र भी अपनाए जा सकते हैं। पहला तो पुराना एक सूत्र सत्य का ही है। प्रत्येक आर्यजन एव आर्यसमाजे सकल्प कर ले कि वे अपने जीवन मे सदा सत्य का व्यवहार एव आचरण ही करेगे। सत्य के इस अकेले सूत्र से ही आज भी आर्यसमाजो एव आर्यजनो का कायाकल्प हो सकता है। उस एक सूत्र को अपनाने के बाद नये और पुराने दोनो सूत्रो का अवलम्बन समाज में नव-जीवन का संचार कर सकेगा।

धर्मरक्षा अभियान के सन्दर्भ में कुछ उपयोगी पुस्तिकाएं

इस समय देश विदेशी षडयन्त्र के भीषण खतरे से आक्रान्त है। स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद के प्रारम्भिक वर्षों मे तो विदेशी मिशनरी अपने धर्मों के प्रचार के विषय मे उत्साही न थे, परन्तु पूर्वोत्तर अचल मे जब ईसाइयो को अपने पैर फैलाने का मौका मिला, तब उनकी सफलता से मुस्लिम प्रचारक भी देश मे अपनी स्थिति मजबूत करने मे तत्पर हो गए। १९८१ के प्रारम्भ मे अरब राष्ट्रो के पेट्रो-डालर धन से दक्षिण भारत मे मुसलमानो ने सामूहिक धर्मान्तरण का प्रयत्न किया, उनकी सफलता का पहला पडाव मीनाक्षीपुरम था, सार्वदेशिक सभा के तत्वावधान मे आर्यसमाज ने इस सामूहिक धर्मान्तरण के विरुद्ध जनमत को सचेत एव सन्नद्ध करने के लिए भगीरथ प्रयत्न किया है, और सफलता पाई है। इस सम्बन्ध मे प्रबुद्ध भारतीय जनता को जाग्रत करने के लिए प्रचार-साहित्य की भी विशेष महत्ता है। प्रसन्नता का विषय है कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने विदेशी धर्म प्रचारकों के षडयत्र का उत्तर देने के लिए जिस धर्मरक्षा-महाभियान का सिंहनाद किया था, उस सबध मे सभा ने कुछ पुस्तिकाए भी प्रकाशित की हैं। ये सभी पुस्तकें बहुत ही उपयोगी एवं ज्ञानवर्द्धक हैं। उनमें तथ्यों और आकडो के के आधार पर स्थिति का स्पष्टीकरण करते हुए जनता का आह्वान किया गया है। पूर्ण विश्वास है कि सभी प्रबुद्ध आर्यजन एव आर्यसमाजे इन पुस्तिकाओ को बडी सख्या मे खरीद कर उन्हे अपने क्षेत्र की जनता मे प्रचारित और प्रसारित करेंगी। इन पुस्तिकाओ के लेखक भू० पू० ससदसदस्य एव सार्वदेशिक सभा के महामन्त्री श्री ओम्प्रकाश त्यागी हैं। पुस्तिकाओ के प्रकाशक हैं—सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, ३/५ महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली-२। पुस्तिकाओ का विवरण इस प्रकार है—

१. हिन्दू धर्म विदेशी षडयन्त्र के घेरे मे—पृष्ठ सख्या ५७, मूल्य दो रुपये। इस पुस्तिका मे ईसाई षडयन्त्र की सफलता, मुस्लिम षडयन्त्र का लक्ष्य, भारत मे विदेशी मिशन, विदेशी षडयन्त्र के शिकार, हिन्दुओ की जनसख्या मे भारी कमी, अपनी रक्षा के लिए क्या करे, सन्यासी के वेष मे ईसाई आदि विषयों का व्यौरा आंकडो के आधार पर दिया गया है।

२, आर्यसमाज और अस्पृश्यता—निवारण (कार्यप्रणाली और सफलताए) पृष्ठ सख्या ३०, मूल्य ५० पैसे। इस पुस्तिका मे आर्यसमाज के अस्पृश्यता निवारण तथा दलितोद्धार विषयक दृष्टिकोण, कार्य प्रणाली और सफलताओ पर विस्तृत प्रकाश डाला गया है। इस कार्य मे आर्यसमाज और आर्यजनो को जिस कठिन परीक्षा मे गुजरना पडा और जिन आर्यजनो ने इस कार्य मे आहुति दी, उनका भी व्यौरा दिया गया है।

महाशय धर्मपाल जी आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के प्रधान निर्वाचित

आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली का वार्षिक अधिवेशन सम्पन्न

नई दिल्ली। आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य की वार्षिक साधारण का अधिवेशन रविवार, १९ सितम्बर को दोपहर ३ बजे आर्यसमाज मन्दिर हनुमान रोड के सभागार मे श्री महाशय धर्मपाल जी की अध्यक्षता मे हुआ। ईश-प्रार्थना के बाद समवेत आर्यजनो ने मोतीनगर के महाशय सदाराम जी, चर्खा सोप मिल्स के श्री तनेजा जी, करौल बाग के श्री बालकराम जी, साउथ एक्सटेंशन की श्री देसराज खन्ना, करौल बाग के श्री चरणदास मल्होत्रा, शालीमार बाग के डा० महेश वेदालकार की माता जी आदि के देहावसान पर हार्दिक शोक प्रकट करते हुए परमपिता से प्रार्थना की कि वह दिवगत आत्माओ को उनके शुभ कर्मो के अनुसार सद्गति देगे और उनके पारिवारिक जनो, मित्रगण एव परिचितो को उनके वियोग का दुःख सहन करने का सामर्थ्य प्रदान करेंगे।

गत वार्षिक अधिवेशन की कार्यवाही की सम्पुष्टि के बाद १९८१-८२ वर्ष का कार्य-विवरण एव इसी अवधि के आय व्यय का व्यौरा रखा गया, जिन्हे स्वीकृत कर लिया गया। सर्वसम्मति से भविष्य मे सम्बद्ध समाजो का ३०) वार्षिक शुल्क तथा प्रत्येक सम्बद्ध समाज के प्रतिनिधि सदस्य का सदस्यता का शुल्क ५) वार्षिक स्वीकृत किया गया।

आगामी वर्ष के लिए निर्वाचन सभा का कार्यक्रम सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ। सभा प्रधान के लिए बहुमत से श्री महाशय धर्मपाल जी निर्वाचित घोषित किए गए। उपप्रधान पद के लिए श्री चौधरी देसराज जी का नाम घोषित किया गया। शेष पदाधिकारियो और अंतरग सभा के सदस्यो का निर्वाचन नवनिर्वाचित प्रधान सार्वदेशिक सभा के प्रधान आदि के साथ चर्चा कर यथाशीघ्र करेंगे।

आज की ज्वलन्त समस्या :

छात्र-युवा पीढ़ी के प्रति

लेखक : आचार्य दीनानाथ सिद्धान्तालंकार

छात्र-उपद्रव और स्कूल, कालेज, विश्वविद्यालय इत्यादि शिक्षण संस्थाओं में निरन्तर बढ़ रही हिंसा से मानव-निर्माण के ये पुनीत स्थान कुरुक्षेत्र की युद्धभूमि का कुत्सित रूप ले रहे है। चालू राजनीति मे सम्मिश्रित दोनों के फलस्वरूप यह समस्या अधिक विकट हो गई है। कुछ वर्ष हुए एक प्रमुख राजनयिक के इस सुझाव का कि 'शिक्षण संस्थाओं में छात्र संघ और उनके चुनावों पर कड़ा प्रतिबन्ध लगा देना चाहिए' तत्कालीन सत्तारूढ़ राजनीतिक दलों ने कड़ा विरोध किया था। इसके साथ ही यह तथ्य भी विवादास्पद नहीं है कि जहां और जब भी कोई क्रान्तिकारी परिवर्तन हुए हैं, उनमे उग्रता, प्रबलता, उत्साह और अग्रता छात्र और युवाशक्ति द्वारा कंधा देने से ही आई है। इस शक्ति को कानूनी हथियार से दबा देने की अपेक्षा ठोस और रचनात्मक दिशा देने की आवश्यकता होती है। इस दिशा का आधार क्या हो—इसी मुद्दे पर आज का युवक भ्रमित हो रहा है। भारतके प्राचीन नीतिकारों ने इस संबंध में दीर्घ काल तपस्या और चिन्तन पर आधारित जो निर्देश दिए हैं, उन्हें यद्यपि आज का युवक 'ओल्ड फासिल्स' (पुराने मूर्ख) कहकर मानने को तैयार नहीं, पर आज की सतत परिवर्तनशील पारिवारिक सामाजिक पारिपार्श्विक स्थिति को दृष्टि में रखते हुए, इससे अधिक सशक्त और सार्थक उपाय भी कोई नहीं है। उदाहरण के लिए विदुरनीति अध्याय ४०/५-६ श्लोक के अनुसार छात्र-युवकों को निम्न सात दोषों से बचना चाहिए

सात दोषों से बचें

(१) शरीर और बुद्धि में जड़ता (२) नशा (३) किसी वस्तु व व्यक्ति में फंसावट (४) चपलता-चंचलता (५) इधर-उधर की व्यर्थ की बातें करना व सुनना (६) पढ़ते-पढ़ाते बीच में ही रुक जाना (७) अभिमान भोग-विलास का प्रतित्याग न करना। इसी नीतिकार ने इसी अध्याय के अगले श्लोकों में विशेषत छात्रजनों के लिए सदा स्मरणीय तथ्य कहा है—

"जो सुख भोगना चाहते हैं उनके लिए विद्या और ज्ञान कहां ? और जो छात्र युवा है उनके लिए सुख कहां ? अगर सुख की कामना है तो विद्या-ज्ञान प्राप्ति की कामना छोड़ दो और सचमुच ज्ञान उपलब्धि की कामना है तो सुख की आकांक्षा छोड़ दो।"

हम विश्व इतिहास की बात नहीं करते। अपने ही देश की और अतीत काल की भी नहीं, क्योंकि आज की युवा पीढ़ी उसे मात्र गप्प-गपोड़े ही समझती है। इसी युग की और उन विषम परिस्थितियों की जब यह भारत विदेशी शासन के प्रबल पंजे में कैद था। शिक्षा, ज्ञान-विज्ञान इत्यादि के क्षेत्रों में जिन्होंने केवल उपर्युक्त नीतिकार के वचनों का अक्षरशः पालन करने और अत्यन्त विपरीत परिस्थितियों की चुनौती स्वीकार करते हुए—स्पृहणीय कीर्तिमान स्थापित किए।

इस सदी के तीन प्रेरक उदाहरण

(१) गुरुदत्त विद्यार्थी

मुलतान के एक निर्धन परिवार में उत्पन्न गुरुदत्त—जिन्होंने अपने नाम के आगे स्वतः आजन्म विद्यार्थी शब्द जिज्ञासु भावना से लगाया हुआ था, पंजाब विश्वविद्यालय से उस युग में विज्ञान में एम. ए.—छोटी आयु में ही प्रथम रहते हुए इतने ऊंचे अंक प्राप्त किए थे जितने उस समय तक और उसके बाद भी कई वर्ष तक कोई प्राप्त नहीं कर सका। संस्कृत का तनिक भी ज्ञान न रखते हुए उन्होंने संस्कृत और वैदिक साहित्य में कठोर तपोमय जीवन व्यतीत करते हुए लाहौर के एफ. सी. कालेज में विज्ञान के प्राध्यापक कार्य के साथ—इतनी योग्यता प्राप्त कर ली कि वेद और उपनिषदों के गूढ़ विषयों पर उनके 'मैगजीन' में प्रकाशित लेखों को पढ़ इंग्लैंड के आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के एक विद्वान प्रोफेसर और प्रमुख नास्तिक विचारक ब्रेडला गुरुदत्त विद्यार्थी से विशेष रूप से प्रभावित हो मिलने के लिए भारत आए। बम्बई पहुंचने पर जब उसने इस अलौकिक विद्वान की असामयिक मृत्यु का समाचार सुना, वह एकदम हतप्रभ और घोर निराश हो गया।

(२) क्षेमकरणदास त्रिवेदी

मैट्रिक पास रेलवे में एक सामान्य क्लर्क की नौकरी से रिटायर होने के बाद लगभग ५८ वर्षीय कायस्थ वंशीय अलीगढ़ निवासी कई सन्तानों के पिता, क्षेमकरणदास, हिन्दी संस्कृत ज्ञान से शून्य, उर्दू, अंग्रेजी का मामूली ज्ञान, नगर से बाहर दो देहातियों को आपस में झगड़ते हुए देख एक के मुख से दूसरे को उलाहना देते ये शब्द 'याको वेद न्यारो है' सुने, वहीं अचम्भे में रुक उसने पूछा यह वेद क्या और किसका नाम है ?' देहाती बेचारा क्या उत्तर देता ? पर मन में पक्का निश्चय कर वेद के बारे में नगर के प्रमुख व्यक्तियों से पूछताछ करने पर भी जब कोई सन्तोषजनक उत्तर न मिला, तब अलीगढ़ के आर्यसमाज में जा 'वेद' के बारे में आवश्यक जानकारी प्राप्त कर वेद पढ़ने का दृढ़ निश्चय किया। संस्कृत से सर्वथा अनभिज्ञ रिटायर्ड क्षेमकरण दास प्राणपन से इस उद्देश्य पूर्ति में लग गया। गुरुकुल विश्व विद्यालय कांगड़ी हरिद्वार लाहौर काशी इत्यादि स्थानों और संस्थाओं में अनथक परिश्रम और लगन तपस्या से पढ़ता और कई वेद सम्बन्धी काशी की परीक्षायें उत्तीर्ण कर अन्त में बड़ौदा में सरकार स्वीकृत 'त्रिवेदी' परीक्षा सम्मान के साथ उत्तीर्ण कर ५० क्षेमकरण दास त्रिवेदी' के नाम से प्रमुख वैदिक विद्वान् के रूप में प्रख्यात हुए।' इतना ही नहीं, उन्होंने 'अथर्ववेद' का भाष्य किया जो अभी तक प्रामाणिक रूप से माना और पढ़ा जाता है।

(३) स्वामी रामतीर्थ

भारत के यशस्वी सन्यासी स्वामी रामतीर्थ जि० गुजरांवाला (अब पाकिस्तान में) के एक अत्यन्त निर्धन गोसाई ब्राह्मण परिवार में उत्पन्न परिश्रमी और मेधावी छात्र, मैट्रिक उत्तीर्ण कर लाहौर में पिता की इच्छा के विरुद्ध उच्च शिक्षा प्राप्त करने जब आन लगा तबपिता ने उनका जबर्दस्ती विवाह कर, ताकि वह आगे न पढ़ सके—दृढ़ निश्चय के साथ किसी प्रकार कालेज में प्रविष्ट निवास किसी मंदिर में भोजन केवल एक समय-वह भी मात्र ३ पैसे में—उन दिनों ६ पैसे में दो रोटी, १ पैसे में दाल दाल-रोटी के साथ मिलने वाली मुफ्त बहुत कम इसलिए १ पैसे की अतिरिक्त दाल पैर में देसी जूता, जब एक पैर का जूता फट व गुम हो गया, तब एक पैर के जूते से ही काम चलाया—तपस्वी विनम्र आज्ञापालक अध्यवसायी छात्र, एफ. सी. कालेज के प्रिंसिपल के कृपापात्र फर्स्टक्लास डिवीजन में ऊंचे नम्बरों में उत्तीर्ण छात्रवृत्ति और ट्यूशन के सहारे गणित विषय में—एम. ए और फिर उसी कालेज में प्राध्यापक—अनगिनत बाधाओं-रुकावटों के बावजूद विवाहित होते हुए भी तप.पूत, आध्यात्मिक जीवन स्वामी विवेकानन्द के लाहौर पधारने और उनके सान्निध्य से विशेष प्रभावित तीर्थराम से रामतीर्थ नाम ग्रहण सन्यास आश्रम में प्रवेश करने का निश्चय पत्नी बच्चों को छोड़ लाहौर से जब ऋषिकेश जाने के लिए स्टेशन पर पहुंचे, तब नगर के सैकड़ों नर-नारी साश्रु नयनों से उन्हें विदा करने आये, कुछ वर्ष साधना के पश्चात् प्रगल्भ वक्ता और प्राणीमात्र के प्रति अपनत्व; भक्ति में तल्लीन भारतीय सभ्यता-संस्कृति के प्रचार के लिए एशिया और अमेरिका की सफल यात्राओं के बाद ऋषिकेश में आश्रम स्थापित किया। दीपावली के पर्व पर गंगा-स्नान करते हुए स्वामी जी अनन्तकाल के लिए समाधिस्थ हो गए।

छात्र युवाकाल ही ऐसा है जब शारीरिक और मानसिक दोनों में द्रुतगति से विकास, उत्साह, वर्तमान से विरोध व प्रतिकूलता, संघर्ष, नवीनता, समवयस्कों के प्रति आकर्षणों सामीप्य इत्यादि परस्पर विरोधी भावनाओं और संवेदनाओं का अनायास ही उद्भव प्रारम्भ हो जाता है। परिवार व शिक्षालयों में यदि इन मनोवेगों के स्वस्थ और सृजनात्मक साधनों द्वारा प्रकटीकरण व दिशानिर्देशन के विविध मार्ग खुले हों, तब तो छात्र-युवक परिवार और सामाजिक दोनों के लिए श्रेयस्कर और यदि अनावश्यक और कठोर अनुशासन की आड़ में बहुविध बाधाओं व रुकावटों की दीवारें खड़ी कर दी जायें, तब स्वभावत., छात्र-युवकों में जोश-खरोश के साथ विद्रोह, उलंघन, चुनौती देने की भावनायें, परिवार में व्यक्तिगत और समाज व शिक्षालय में संगठित रूप से अभिभूत होने लगती हैं। मनोविज्ञान के अनुसार मानव जीवन में सन्धिकाल बड़े नाजुक होते हैं जिसके परिणाम रचनात्मक व विध्वंसात्मक—दोनों हो सकते है। आज भारत में और विश्व में भी—युवा पीढ़ी में सतत वृद्धिशील और संगठित व व्यक्तिगत हिंसा, विरोध, अनुशासनहीनता, लूटमार, डकैती, सैक्स इत्यादि के अनेक विधाजन्य लगातार बढ़ी और अपरिमित मात्रा में दावानल की तरह चतुर्दिक अनियोगितरूप से फैल रहे दृश्य अहर्निश दिखाई दे रहे हैं, वह केवल भेद (एज-गैप) के फलस्वरूप नहीं है, किन्तु मूलत: उपर्युक्त मनोवैज्ञानिक सिद्धान्त आधारित हैं।

वेद का सामञ्जस्य मार्ग

मनोवैज्ञानिक दृष्टि से स्वस्थ परिवार और समाज की परिस्थिति और वातावरण वैसा हो जिससे छात्र युवा पीढ़ी को सदा प्रेरणा मिलती रहे—इसका निर्देशन सृष्टि के आदि ज्ञान वेद के निम्न मन्त्रों में अनुपम ढंग से किया गया है—

ओ३म् सहृदयं सामनस्यमविद्वेषं कृणोमि व.। अन्यो अन्यमभिहर्यत वत्सं जात मिवाघ्न्या। (२) अनुव्रत: पितु: पुत्रो। माता भवन्तु समना। जाया पत्ये मधुमती वाचं वदतु शन्तिवान्।

(शेष पृष्ठ ७ पर)

छात्रसंघ : समस्या और समाधान

—स्वामी वेदमुनि परिव्राजक

अध्यक्ष, वैदिक सस्थान, नजीबाबाद (उ० प्र०)

इस देश का एक तो यही दुर्भाग्य है कि शिक्षा के नाम पर जो कुछ बच्चों को पढ़ाया जाता है, उसमे शिक्षा नाम का कोई तत्त्व है ही नही—केवल मात्र साक्षरता होती है और वह भी भ्रष्ट साक्षरता। अक्षरों का शुद्ध उच्चारण तक भी नहीं आ पाता।

प्रथम श्रेणी मे एम० ए० कर लेने वाले और एक बिना पढ़े मे केवल इतना अन्तर होता है कि यह लिख-पढ़ लेता है और वह लिख-पढ़ नही सकता, किंतु यह तथाकथित शिक्षित जो कुछ लिखता और बोलता है, उसमे कितना शुद्ध होता है और कितना अशुद्ध ? यह उसे पता नही होता। यह ज्ञान तो एम० ए० के छात्रों को पढाने वाले प्राध्यापको मे भी बिरले ही को होता है कि अक्षरों के अशुद्ध प्रयोग से—बोलने और लिखने दोनो मे ही—शब्द का अर्थ बदल जाता है और वास्तविक अर्थो मे वह उस अभिप्राय को प्रकट नही कर पाता, जिसके लिए प्रयोग किया गया होता है। इतने पर भी साथ मे छात्र सघ का रोग लगा दिया गया है, जिससे समूचे भारत की नसल ही बिगड जाए।

जिस समय यह छूत का रोग चालू किया गया, उस समय के उत्तरदायी शिक्षा-शास्त्रियो और राष्ट्र नेताओ को हमारा खुला चैलेंज है कि वे इसकी उपयोगिता और लाभ सिद्ध करें। यदि न कर सकें तो उन्हे देश की सन्तति को भ्रान्त और पथ-भ्रष्ट करने के अक्षम्य अपराध को स्वीकार कर स्वय सरकार से यह माग करनी चाहिए कि हम अपराधी हैं, हमे दण्डित किया जाए। इन शब्दो मे हम उनकी नैतिकता को झकझोर रहे हैं।

एक तो इस तथाकथित शिक्षा मे है ही कुछ नही, फिर, साथ मे छात्र संघ का अभिशाप। लोग अपने बच्चो को पढने के लिए विद्यालयो में भेजते है, बिगडने के लिए नही। शिक्षा का उद्देश्य मनुष्य का बौद्धिक, मानसिक, चारित्रिक तथा शारीरिक विकास है, उसे बेहूदा, नालायक, असभ्य, आचारहीन बनाना नही और ये छात्रसघ यही करते है, इसके अतिरिक्त और कुछ नही। छात्रसघ से किसी शिक्षा-शास्त्री, मानव-जीवन-विकास मर्मज्ञ आदि के निर्माण में कोई सहायता प्राप्त होती हो तो कोई हमें बताए। ऐसा कोई उत्तम व्यक्तित्व छात्रसघ की पद्धति और उसकी सहायता से तैयार हुआ हो तो हमे दिखाया जाए।

अपवाद को छोड़कर इन छात्रसघो मे आवारा, तीन-तीन वर्ष एक ही श्रेणी मे पड़े रहने वाले, उत्तीर्ण हो तो कम से कम अंक प्राप्त कर उत्तीर्ण होने वाले, चाकू व छुरे के बल पर नकल करके पास होने वाले छात्र ही अधिकारी होते हैं। पढ़ने के स्थान पर पूरे सत्र ट्रेने रोकना, मार्ग चलती लडकियो को छेडना, प्रिंसिपल को गोली मारना, कुलपति-डीन-रजिस्ट्रार आदि की टागें पकड कर खीचना, कालिज की खिडकियां-फर्नीचर आदि तोड़ना, सिनेमाघर मे आग लगाना आदि इन तत्त्वों के वे कार्य हैं, जिन्हे सर्वसाधारण नागरिक जानते हैं। इनके अतिरिक्त भी कुछ कार्य हैं, जिनका सर्वसाधारण को पता नही। वे है कालिज, यूनिवर्सिटियो मे नए आने वाले छात्रो के साथ अभद्रता की पराकाष्ठा तक पहुच जाना, जिसे इससे अधिक हम अपनी लेखनी से व्यक्त नहीं कर सकते। यही तक नही अपितु छात्रावासो (कुछ, सभी नहीं) की अलमारियों मे भरी हुई और छात्रो की शैयाओ के नीचे रिक्त पडी हुई मद्य की बोतलें तथा रिवाल्वर व छुरे जो घर से प्राप्त धन से आवश्यकताए पूरी न होने पर ट्रेनें तक लूटने के काम आते हैं तथा छात्रावासो (कुछ सभी नही) मे छिपाई हुई लड़किया—कहा तक और क्या-क्या गिनाया जाए ?

पाठ्यक्रम मे पुस्तकें इतनी हैं कि उन्हे लेकर चलने को एक गधा चाहिए। हैं भी वे गधे द्वारा ढोकर कूड़े के गढ्ढे मे डाल देने योग्य ही। मनुष्य के तो छूने योग्य भी नहीं हैं। यही कारण है कि मनुष्य की सन्तति और राम-कृष्ण तथा ऋषि-मुनियो के पवित्र देश के बच्चे इनके अध्ययन और छात्रसघो के माध्यम से दिनोदिन मानवता से दूर और दानवता के निकट होते जा रहे हैं।

यह बोगस और बेहूदा पाठ्यक्रम भी इतना अधिक कि छात्र पूरे सत्र मे सामान्य दृष्टि से भी नही पढ पाता—गम्भीरता से अध्ययन करना और समझ कर पढ़ना तो अलग रहा। इतने

(शेष पृष्ठ ८ पर)

आर्य जगत् समाचार

हरियाणा में रक्षावाहिनी का गठन किया गया

आतंकवादी अकालियों के आन्दोलन का सामना किया जाएगा : रोहतक में धार्मिक एव सामाजिक संस्थाओं का निर्णय

रोहतक। रविवार १२ सितम्बर के दिन प्रातः ११ बजे दयानन्द मठ रोहतक मे आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा की अन्तरग तथा विद्या सभा की सम्मिलित सभा भू० पू० केन्द्रीय रक्षा मन्त्री एव प्रतिनिधि सभा हरियाणा के प्रधान प्रो० शेरसिंह की अध्यक्षता मे हुई। सर्वसम्मति से उग्रवादी राष्ट्र विरोधी अकालियो का मुकाबला करने के लिए हरियाणा की अन्य धार्मिक एवं सामाजिक सस्थाओं के सहयोग से हरियाणा रक्षावाहिनी के गठन का निर्णय किया गया।

इसी दिन दोपहर बाद हरियाणा की अनेक धार्मिक एव सामाजिक कार्यकर्त्ताओ की एक सम्मिलित सभा प्रो० शेरसिंह की अध्यक्षता मे हुई। इस सभा मे सनातन धर्म सभा, प्रादेशिक सभा एव शिक्षण सस्थाओ के प्रतिनिधि एकत्र हुए। हरियाणा के कोने-कोने से पधारे हुए विभिन्न सामाजिक, धार्मिक तथा राजनीतिक कार्यकर्त्ताओ ने सर्वसम्मति से हरियाणा रक्षावाहिनी सस्था के गठन का निश्चय किया।

बैठक के अन्त मे स्वामी ओमानन्द जी की अपील पर इस अभियान को आरम्भ करने के लिए हजारो रुपये एकत्र हो गए। हरियाणा रक्षावाहिनी के सचालन के लिए प्रो० शेरसिंह को प्रधान, महाशय भरतसिंह को सयोजक, स्वामी ओमानन्द, स्वामी रामेश्वरानन्द दीवान भीमसेन जी गुडगाँव को सदस्य मनोनीत किया गया।

आर्यवीर दल हरियाणा का प्रान्तीय महासम्मेलन

२-३ अक्तूबर को फरीदाबाद में होगा भव्य शोभा यात्रा

पलवल। आगामी २-३ अक्टूबर को हरियाणा के औद्योगिक नगर फरीदाबाद (नेहरू मैदान निकट बस अड्डा) मे आर्य वीरदल हरियाणा का प्रान्तीय महासम्मेलन होगा। सम्मेलन की अध्यक्षता सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल वानप्रस्थ (शालवाले) करेंगे। आर्य वीर दल हरियाणा के सचालक श्री उत्तमचन्द्र शरर ने आर्य जनता से अनुरोध किया है कि वह इस राष्ट्रयज्ञ मे तन मन-धन से सहयोग करें।

यह भी ज्ञात हुआ है कि इस अवसर पर सहस्त्रवीरो की भव्य शोभायात्रा दर्शनीय होगी। बडोदा आर्यकन्या महाविद्यालय की वीरागनाओ द्वारा धनुष-बाण कला एव व्यायामादि के प्रदर्शन विशेष आकर्षण के केन्द्र होगे। इसके अतिरिक्त शुद्धियज्ञ, वेद सम्मेलन, धर्म एव राष्ट्ररक्षा सम्मेलन तथा सामयिक समस्याओ पर विचार एव समाधान प्रस्तुत होगे। सम्मेलन में आमन्त्रित वक्ताओ में देहरादून के स्वामी दयानन्दजी, आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के श्री वीरेन्द्रजी, डॉ० रामप्रकाश, डॉ० भवानी लाल भारतीय आदि आर्यनेता सम्मलित हैं। ज्ञात हुआ है कि इस अवसर पर हरियाणा, दिल्ली एव पजाब की आर्यसमाजों एव आर्यजनों की सम्मेलन के लिए कई बसें आयेंगी।

पूर्वी उत्तरप्रदेश में वेद प्रचार की योजना

आर्यसमाज मऊनाथ भजन में पूर्वाञ्चलीय आर्य सम्मेलन

पूर्वान्चलीय आर्य सम्मेलन के सयोजक श्री जयप्रकाश भारती ने एक प्रेस विज्ञप्ति मे बतलाया कि आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० की वेद प्रचार योजना के अन्तर्गत वाराणसी, आजमगढ, गाजीपुर, बलिया, देवरिया, गोरखपुर, मिर्जापुर, गोंडा, बस्ती, बहराइच तथा सुल्तानपुर आदि पूर्वाञ्चलीय जनपदो मे ग्रामोन्मुखी वेद प्रचार कार्यक्रमो की रूपरेखा को निश्चित करने के लिए आर्यसमाजो एव जिला उपसभाओ के प्रतिनिधियो का एक सम्मेलन दिनाक १९ सितम्बर के दिन रविवार को प्रात १० बजे दिन से आर्यसमाज मन्दिर मऊनाथ भजन में सम्पन्न हुआ। सम्मेलन मे प्रो० कैलाशनाथसिंह प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, प० इन्द्रराज जी मंत्री प्रदेशीय सभा, वेदप्रकाश नारायण शास्त्री उपमन्त्री सभा, माननीय अक्षय मुनि जी वानप्रस्थी, डा० पुष्पावती आचार्या (एम० ए० पी० एच० डी०) स्वामी कर्मानन्द वानप्रस्थी प्रभृति आर्य नेताओ विद्वान एव पूर्वान्चल आर्यसमाजों के प्रतिनिधियों एव कार्यकर्त्ताओ ने सम्मेलन मे भाग लिया।

गुरु विरजानन्द स्मारक तथा गुरुकुल करतारपुर का वार्षिक समारोह

श्री गुरु विरजानन्द स्मारक तथा गुरुकुल करतारपुर मे ३ अक्तूबर से १० अक्तूबर १९८२ तक वार्षिक समारोह बड़ी धूमधाम से मनाया जायेगा। इस उपलक्ष्य में यजुर्वेद पारायण यज्ञ ३ अक्तूबर से आरम्भ होकर पूर्णाहुति १० अक्टूबर को प्रात १० बजे होगी। इन दिनो समय प्रात -साय उच्चकोटि के संन्यासियों तथा विद्वानो के उपदेश तथा गायनाचार्यों के मधुर सगीत होंगे। ९ अक्तूबर को एक विशाल शोभा यात्रा दोपहर बाद होगी।

कन्या गुरुकुल हाथरस में वेद प्रचार सप्ताह

कन्या गुरुकुल हाथरस में वेद प्रचार सप्ताह सोत्साह मनाया गया। प्रारम्भ मे श्रावणी उपाकर्म और सप्ताह पर्यन्त यजुर्वेद पारायण यज्ञ हुआ। ४ अगस्त को संस्कृत दिवस मनाया गया, जिसमे ब्रह्मचारिणियों द्वारा सस्कृत भाषा मे गायन, भाषण, लोकगीत, संवाद, नाटक, सांकेतिक गायन, अन्त्याक्षरी आदि विभिन्न कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये। श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के अवसर पर ब्रह्मचारिणियो एव अधिकारियों द्वारा महापुरुष श्रीकृष्ण के आदर्श जीवन चरित पर प्रकाश डाला गया।

हाथरस आर्यसमाज मे गुरुकुल के कुलपति श्री महेन्द्रप्रताप शास्त्री ने वेद प्रचार सप्ताह के अवसर पर प्रवचन दिये। गुरुकुल की ब्रह्मचारिणियो ने भी अपने सुमधुर गायन एव प्रवचनो से जनता को लाभान्वित किया।

मुस्लिम युवती की शुद्धि एवं विवाह

गोविन्दनगर, कानपुर आर्यसमाज मन्दिर में दिनाक २९-८-८२ को मुस्लिम युवती सहरीज अख्तर की शुद्धि की गयी और उसका नाम सरोज रखा गया।

तत्पश्चात एक आर्य युवक श्री श्याम सुन्दर जी के साथ उसका विवाह सम्पन्न हुआ। यह पुनीत कार्य श्री दीवानचन्द जी खन्ना—प्रधान जी की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ और आर्य पुरोहित श्री रघुराज शास्त्री द्वारा कराया गया।

बोध-कथा

सच्चा परामर्शदाता !

वाराणसी या काशी में राजा ब्रह्मदत्त शासक थे। उनके अमात्य बोधिसत्व थे। एक बार राजमहल की रानिया कपडे और गहने उतार कर उन्हे दासी को सौंप कर सरोवर मे स्नान करने लगीं। दासी को ऊंघता देखकर एक बदरिया मुक्ताहार ले भागी। जागने पर मुक्ताहार न देखकर दासी चिल्लाई—'एक आदमी मुक्ताहार लेकर भाग गया।' पहरेदारों ने राह चलते एक ग्रामीण यात्री को पकड़ लिया। पकडे जाने पर पिटाई के डर से देहाती ने अपराध स्वीकार कर लिया और कहा कि उसने हार सेठ को दे दिया। सेठ ने भी अपना अपराध स्वीकार कर लिया। और कहा कि उसने हार पुरोहित को दे दिया है। पकडे जाने पर पुरोहित ने भी अपना अपराध मान लिया और कहा उसने मुक्ताहार राजगायक को दे दिया। पकडे जाने पर राजगायक ने भी अपना अपराध मान लिया और कहा कि उसने हार वेश्या को दे दिया है।

इस पूछताछ मे सारा दिन बीत गया। राजा ने पांचों अभियुक्त अमात्य बोधिसत्व को सौंप दिए और स्वय राजमहल मे चला गया। अमात्य ने सोचा कि मुक्ताहार महल के अन्दर खोया है। देहाती गरीब है, उसने जान बचाने के लिए अपना अपराध मान लिया है। रात में पहरेदारों को नियुक्त किया। रात को पांचो की बातचीत से मालूम हुआ कि वे पांचों ही निरपराध थे। मन्त्री ने पहरेदारों और सिपाहियो को बाग से बन्दरियो को पकड कर उन्हें कण्ठे पहनाने के लिए कहा। जल्दी ही उद्यान की सभी बन्दरिया पकडी गई। लाल सुन्दर कण्ठे पहने देखकर चोर बन्दरिया ने भी मुक्ताहार निकाल कर पहन लिया। वह भी पकडी गई। चोर बन्दरिया को पकड कर मुक्ताहार छीन लिया गया। अमात्य ने पांचो निर्दोष व्यक्तियो को छुडवा दिया।

राजा प्रसन्न हुआ और बोला— युद्ध मे बहादुर योद्धा चाहिए, खाने-पीने के समय प्रिय व्यक्ति और कठिन समस्या उपस्थित होने पर सच्चे पंडित की जरूरत होती है। हमारा अमात्य सच्चा पण्डित एव परामर्शदाता है।

—नरेन्द्र

आर्यसमाजों के सत्संग

२६ सितम्बर'८२

अन्धा मुगल-प्रताप नगर—प० कामेश्वर शास्त्री; अमर कालोनी— डा० सुखदयाल भूटानी; अशोक विहार के-डी-१५-सी—स्वामी प्रेमानन्द; आर के पुरम सेक्टर ५ - प० ओमवीर शास्त्री; आर के पुरम सेक्टर ६—प० ओमप्रकाश वेदालंकार; आर के पुरम सेक्टर ६ - प० देवपाल शास्त्री, आनन्द विहार-हरिनगर एल ब्लाक—स्वामी स्वरूपानन्द भजनोपदेशक; किशनगंज मिल एरिया—प० खुशीराम शर्मा; किंग्जवे कैम्प—प० गणेशप्रसाद विद्यालंकार; कालका जी डी. डी. ए. फ्लेट्स—प० प्रेमचन्द श्रीधर; कालका जी—डा० नन्दलाल; करोल बाग—प० भगवतशरण शास्त्री; कृष्णनगर—श्रीमती ऊषा शास्त्री; गांधी नगर—प० अमरनाथ कान्त; गीता कालोनी—प० बलवीरसिंह शास्त्री; ग्रेटर कैलाश-I—डा० रघुनन्दनसिंह; ग्रेटर कैलाश-II—प० हरिदत्त शास्त्री; गुड़मण्डी—प० रामरूप शर्मा; गोविन्द भवन-दयानन्द वाटिका—प० देवराज वैदिक मिशनरी, चूना मण्डी पहाड़गंज—प० देवेश; जनकपुरी बी-३/२४—पं० रामनिवास, डिफेंस कालोनी—प० अशोककुमार विद्यालंकार, तिमारपुर—श्रीमती प्रकाशवती शास्त्री, दरियागंज—प० तुलसीराम भजनोपदेशक; देवनगर—आचार्य हरिदेव सि० भू०; नारायण विहार—प० प्रकाशवीर व्याकुल, नया बांस—प० प्रकाशचन्द्र शास्त्री, नगर शाहदरा—प० वेदव्यास भजनोपदेशक; पंजाबी बाग—आचार्य नरेन्द्र शास्त्री, पंजाबी बाग एक्स्टेंशन १४/३—प० विश्वप्रकाश शास्त्री, बाग कड़े खां—प० बरकतराम भजनोपदेशक, बिरला लाइन्स—प० ईश्वरदत्त, मोडल बस्ती—प० छविकृष्ण शास्त्री, मोडल टाउन—प० रविदत्त गौतम, मोती बाग—प० सत्यदेव भजनोपदेशक, रघुवीर नगर—श्रीमती लीलावती, रमेश नगर—प० मनोहरलाल ऋषि भजनोपदेशक, राणा प्रताप बाग—श्रीमती सुशीला राजपाल, राजा गार्डन बाली नगर—प० रामदेव शास्त्री, रोहतास नगर—प्रो० वीरपाल विद्यालंकार, लेखराम नगर-त्रिनगर—ला० लखमीदास, लारेन्स रोड—प० हरिश्चन्द्र शास्त्री, विक्रमनगर—प० सोमदेव शास्त्री, विनय नगर—श्री चमनलाल, साकेत—प० परमेश शर्मा, सराय रोहेला—प० ओम्प्रकाश भजनोपदेशक, सुदर्शन पार्क—प्रो० भारत मित्र शास्त्री, सोहनगंज—प० सीसराम भजनोपदेशक, सदर बाजार पहाड़ी धीरज—प्रो० सत्यपाल बेदार, शालीमार बाग—प० दिनेशचन्द्र शास्त्री व्याकरणाचार्य, हनुमान रोड—प० चन्द्रभानु सि० भू०।

—ज्ञानचन्द डोगरा, वेद प्रचार प्रबन्धक

आर्यसमाज सदर बाजार में वेदप्रचार का व्यापक कार्यक्रम

आर्यसमाज सदर बाजार दिल्ली के तत्वावधान में सारे अगस्त मास मे वेद प्रचार का व्यापक कार्यक्रम सम्पन्न किया गया। ४ से ८ अगस्त तक श्री प. पृथ्वीनाथ शास्त्री ने वेदकथा प्रस्तुत की। ८ से १५ अगस्त तक श्री रवीन्द्र रवि व्याकरणाचार्य ने वेदो पर प्रवचन दिए। १२ अगस्त को श्रीकृष्ण जन्म अष्टमी का पर्व मनाया गया। मुख्य वक्ता थे—प्रो० बलराज मधोक, हरिजन आर्यनेता श्री चिन्तामणि और गुरुकुल एटा के आचार्य वागीशजी। १६ से २३ अगस्त तक पं० सत्यदेव जी स्नातक ने वेदकथा प्रस्तुत की। २३ से २९ अगस्त तक प० रामनारायण आयुर्वेदाचार्य के ब्रह्मात्व मे यजुर्वेद पारायण यज्ञ सम्पन्न हुआ। वेदपाठी थे श्री रवीन्द्र रवि व्याकरणाचार्य, श्री दीनबन्धु शास्त्री और कु० मधुबाला शास्त्री। २३ से २९ अगस्त तक रात्रि ८ से १० बजे तक श्री प० प्रकाशवीर व्याकुल के भजनो के बाद भू० पू० संसद सदस्य श्री प० शिव कुमार शास्त्री के ओजस्वी प्रवचन हुए श्री ला० किशोरीलाल जी के अथक प्रयास से एकत्र की गई दस हजार की राशि पं० शिवकुमार शास्त्री के माध्यम से महर्षि दयानन्द सेवा संघ को दी गई।

आत्म शुद्धि आश्रम रोहतक में सामवेद पारायण यज्ञ

आत्म शुद्धि आश्रम बहादुरगढ (रोहतक) का १६ वां स्थापना दिवस शनिवार २ अक्तूबर को स्वामी प्रेमानन्द सरस्वती की अध्यक्षता मे मनाया जाएगा। इस शुभ अवसर पर २६ सितम्बर से २ अक्तूबर तक सामवेद पारायण महायज्ञ का आयोजन भी किया गया है। २ अक्तूबर को प्रातः ९ बजे महायज्ञ की पूर्णाहुति के बाद रोटरी क्लब बहादुरगढ द्वारा निःशुल्क नेत्र चिकित्सा शिविर लगाया जाएगा।

२३ सितम्बर को अशोक विहार में युवक प्रशिक्षण शिविर

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद दिल्ली प्रदेश के तत्वावधान मे शनिवार २५ सितम्बर तथा रविवार २६ सितम्बर को अशोक विहार आर्य समाज, फेज—१ ब्लाक एफ दिल्ली-११००५२ में युवक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया है। २५ सितम्बर को ७ बजे शिविर का उद्घाटन होगा। रविवार २६ सितम्बर को एक दिवसीय युवक प्रशिक्षण शिविर होगा, उसमे योग्य व्यायामशिक्षको द्वारा शारीरिक उन्नति के लिए योगासन, दण्ड,बैठक, लाठी, व्यायाम, आत्मरक्षा, सैनिक एवं वैदिक शिक्षण दिया जाएगा। उत्तरी दिल्ली क्षेत्र के युवक २ रु० प्रवेश शुल्क के साथ अपने नाम लिखाए। प्रात साय भोजन की समस्त व्यवस्था आर्य समाज अशोक विहार की ओर से नि.शुल्क होगी।

छात्र युवा पीढ़ी······(पृष्ठ ४ का शेष)

(३) मा भ्राता भ्रातर द्विक्षन् मा स्वसारमुत स्वसा। सम्यञ्चः सव्रता भूत्वा वाच वदत भद्रया॥ अथर्व ३।१०।१-३

भावार्थ—प्रभु आदेश देते हैं (१) हे गृहस्थियो! तुम एक सदृश हृदय मन युक्त परस्पर द्वेष रहित होओ। एक दूसरे को ऐसे प्रेम करो जैसे गाय अपने उत्पन्न बछड़े को करती है। (२) पुत्र पिता के व्रत के अनुकूल जीवन बनाये, और समान उद्देश्य वाले हो, माता के साथ एक सदृश मनन-चिन्तन वाला हो, पत्नी और पति एक दूसरे के प्रति मीठे और शान्तिप्रद वचन बोले (३) भाई-अपने भाई से द्वेष करने वाला न हो, इसी प्रकार बहन-बहन से द्वेष न करे। एक सदृश व्यवहार-आचार और एक सदृश जीवन उद्देश्य और व्रत वाले, कल्याणकारी वाणी मे बोलने वाले हो।

छात्र-युवा पीढ़ी सहित नवसमाज के निर्माण का आधार इससे अधिक उत्तम, सशक्त और सोद्देश्य नहीं हो सकता। आओ! हम सब इस दिशा मे एक जुट हो आज की पीढ़ी को अपने से अधिक श्रेष्ठ बनाने का प्रयास करें।

पता—के. सी. ३७/डी अशोक विहार, दिल्ली—५२,

छात्र संघ: समस्या……

(पृष्ठ ५ का शेष)

पर भी छात्रसघ की लानत—खुदा की फटकार।

कोई छात्रसघ की आवश्यकता और उपयोगिता तो बताए ? कहते हैं विद्यार्थियो की समस्याओ के हल के लिए इसकी आवश्यकता है। विद्यार्थियो की समस्याए क्या हैं ? आए दिन छुट्टियाँ माँगना, छुट्टी न देने पर प्रधानाचार्य के कमरे पर पथराव करना, जिसने किसी लड़की को छेड़ा हो तथा उसके परिणामस्वरूप पिट कर आया हो, ऐसे भ्रष्ट विद्यार्थी का पक्ष लेकर नगर मे तूफान खड़ा कर देना, यातायात रोकना, बसो-ट्रेनो पर पथराव करना व आग लगाना। ये सब तो लज्जा और डूब मरने की बातें हैं। विद्यार्थियों की समस्या तो विद्यार्थी शब्द मे ही निहित है। उसे विद्या चाहिए, विषय-सुख नहीं, छुट्टियां नहीं। यह तो विषयार्थी और सुखार्थी की बात है-- विद्यार्थी की नही।

सुखार्थिन. कुतो विद्या विद्यार्थिन: कुत: सुखम्। सुखार्थी वा त्यजेत् विद्या विद्यार्थी वा त्यजेत् सुखम्॥

विद्यार्थी को चाहिए कि विषय-सुख को छोड़ दे, उसकी कामना न करे और सुखार्थी विद्या को छोड़ दे, क्योंकि विषय-सुखार्थी को विद्या और विद्यार्थी को विषय-सुख प्राप्त नहीं हुआ करते।

विद्यार्थी को विद्या के मार्ग से हटा कर विषय-सुखों के मार्ग पर डालने का ही कार्य किया है इन छात्रसघो ने, इसके अतिरिक्त और कुछ नहीं और तो और आज तक कोई छात्रसघ किसी निर्धन विद्यार्थी की सहायता तक नहीं कर सका। कोई छात्रसघ यदि किसी निर्धन विद्यार्थी को पुस्तकें ही क्रय करके दे सका हो, किसी निर्धन छात्र का शुल्क विद्यालय मे जमाकर सका हो अथवा किसी निर्धन विद्यार्थी को भयंकर शीत के दिनो मे जर्सी, कोट आदि गर्म वस्त्रो की सहायता कर चुका हो, उसके ठिठुरते टूटी चप्पल वाले पैरों के लिए मोजे-जूते लेकर दे सका हो तो बतायें ? निर्धन विद्यार्थियों की सहायता के लिए किसी छात्रसंघ ने निधि स्थापित करने के लिए कोई प्रस्ताव ही स्वीकृत किया हो तो कोई हमें दिखाए ?

अतीव सन्तप्त हृदय से हम देश के उत्तरदायी लोगों से कह देना चाहते हैं कि वे हम देश की दशा पर दया करें। विनाश के कगार पर तो लाकर खड़ा कर ही दिया है किन्तु विनाश के गर्त मे तो न धकेलें। पञ्चवर्षीय और प्रत्येक वर्ष नवीकरण को प्राप्त हो जाने वाली योजनाओ ने यदि देश की रोटी-रोजी की समस्या हल कर दी और देश की सन्तति भ्रष्ट हो गई, नसल ही पथ-भ्रष्ट हो गई तो ऐसी रोजी-रोटी, वस्त्र और आवास ही नही अपितु मोहन-भोगों, अतीव मूल्यवान वस्त्रा-भूषणों और बहुमूल्य भवनो को लेकर हम क्या करेंगे ?

जब हम ही न रहे, हमारी सांस्कृतिक धरोहर, हमारा स्वाभिमान आदि सब कुछ विनष्ट हो गया तो शेष तो पशुत्व का ढांचा ही रह जाएगा। हम राष्ट्र-नेताओ से पूछना चाहते हैं कि अपने भारत को 'पशु-राष्ट्र' समझा है क्या ? याद रखिए; यदि समय रहते इधर ध्यान न दिया गया तो राष्ट्र तो डूबेगा ही...बचेंगे आप लोग भी नहीं।

रोग असाध्य होता जा रहा है। आवश्यकता इस बात की है कि इसका तुरन्त हल किया जाए। यदि तुरन्त हल नहीं किया गया तो विलम्ब होने पर रोग वश में नहीं आएगा। विष सम्पूर्ण शरीर में फैल चुका है और अब रगो में घुसने लगा है। बच्चों को उनके माता-पिता विद्यार्थियो के रूप में विद्यालय में प्रविष्ट कराते हैं सघार्थी के रूप मे नही। देश को भी विद्यार्थी ही चाहिए, संघार्थी नहीं। विद्यार्थी विद्या को चाहने वाले को कहते हैं, घर से रुपए चुराकर अथवा अन्य अनैतिक कार्यों द्वारा प्राप्त करके छात्र-सघ का चुनाव लड़ने वाले को नहीं।

समाधान—समाधान इस समस्या का यह है कि यदि शासन छात्र संघों को सर्वथा समाप्त करने को तैयार नहीं तो कम से कम माध्यमिक स्कूलों से तो इसे समाप्त कर ही दे। स्नातक-स्नातकोत्तर विद्यालयों और विश्वविद्यालयों में भी यह अनुबन्ध लगा दें कि जो पिछली परीक्षा में प्रथमोत्तीर्ण रहे हैं, वे ही छात्र सघ चुनावों में भाग ले सकेंगे और कोई विद्यार्थी किसी राजनीतिक दल का सदस्य नहीं बन सकेगा, यदि बनेगा तो वार्षिक परीक्षा में भाग नहीं ले सकेगा।

इससे एक ओर तो अवाञ्छनीय और उद्दण्ड तत्त्व आगे नहीं आ सकेंगे अपितु होनहार प्रतिभावान् तथा विद्याव्यसनी ही आगे आयेंगे। जब ऐसे युवक अधिकारी बनेंगे तो छात्र सघों की गति छात्रो में प्रतिभा जगाने और विद्या की रुचि उत्पन्न करने में होगी और इसके परिणामस्वरूप राष्ट्र को प्रतिभा-सम्पन्न योग्यता नागरिक उपलब्ध होंगे।

दूसरे राजनीतिक दलो से बचे रहने के परिणामस्वरूप राजनीतिक स्वार्थों के लिए विद्यार्थियो का बहुमूल्य समय विनष्ट होने से बचकर उनके अपने जीवन के निर्माण तदुपरान्त राष्ट्रोत्थान के कार्यों के लिए उपयोगी सिद्ध होगा।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए श्री सरदारी लाल वर्मा द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा वाटिया प्रेस २५७४, रघुबरपुरा नं० २ गांधी नगर दिल्ली ३१ में मुद्रित कार्यालय १५ हनुमान रोड नई दिल्ली : फोन ३१०१५०।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ओ३म्

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक मुखपत्र

एक प्रति ३५ पैसे | वार्षिक १५ रुपये | वर्ष : ६ | अंक ४९ | रविवार ३ अक्तूबर | १८ आश्विन वि० २०३९ | दयानन्दाब्द—१५८

आन्तरिक अव्यवस्था और अशान्ति से देश को संकट सम्भव

विदेशी सहायता से पनप रहे साम्प्रदायिक तत्वों को समय रहते कुचल दिया जाए :

प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी से सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले का अनुरोध

नई दिल्ली ! सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल वानप्रस्थ (शाल वाले) ने भारत की प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी को एक पत्र भेजकर बडी चिन्ता प्रकट की है कि देश में १९४७ से पूर्व की स्थिति पुन निर्मित होती जा रही है। श्री शालवाले ने प्रधानमन्त्री से अनुरोध किया है कि देश मे विदेशी धन और सहयोग से पनपने वाले साम्प्रदायिक तत्वों को सख्ती से कुचल दिया जाए, अन्यथा देश की आन्तरिक अव्यवस्था और अशांति बाह्य आक्रमण से अधिक सकटपूर्ण हो सकती।

विभाजन से पूर्व की स्थिति बनी

श्री शालवाले ने अपने पत्र में लिखा है—इस समय देश मे साम्प्रदायिक तत्वों ने पुन समाज और राष्ट्र-विरोधी कारंवाइयां बडी उग्रता से शुरू कर दी हैं। १९४७ मे विभाजन से पूर्व देश मे जैसी तनावपूर्ण साम्प्रदायिक स्थिति थी वैसी ही अब पुन· बन गई है। अचम्भे की बात यह है कि विभाजन से पूर्व जो स्थान साम्प्रदायिक सघर्षों के लिए बदनाम थे, उन्ही स्थानो पर पुन साम्प्रदायिक आग भडक रही है। अलीगढ, मेरठ, मालेगांव, मुरादाबाद इसके उदाहरण हैं। यदि समय रहते विदेशी धन और सहयोग से पनपने वाले इन साम्प्रदायिक तत्वो को नही कुचला गया तो स्थिति बडी भयकर और विस्फोटक हो सकती है। आन्तरिक अव्यवस्था और अशाति बाह्य आक्रमण से अधिक खतरनाक हो सकती है।

हरिजनो पर सगठित हमले

श्री शालवाले ने तमिलनाड के पुलियान गुडी, दिल्ली और मेरठ के दगो के सदर्भ मे यह सूचना भी दी है कि इन दंगो से एक विशेष स्थिति का निर्माण हुआ है। इन तीनो स्थानो पर हरिजनों द्वारा इस्लाम कबूल न करने पर उन पर योजनाबद्ध तरीके से सगठित हमले किए गए। दिल्ली मे तो प्रशासन पर दबाव डाल कर हरिजनों को नौकरियो से निकाल दिया गया। डरा-धमकाकर जबर्दस्ती हरिजनो का धर्म-परिवर्तन करने की कोशिश से लगता है कि साम्प्रदायिक तत्वो को शासन और देश के कानून का कोई भय नही है। भूतकाल मे तलवार के बल पर इस्लाम जैसे फैलाया गया था, वही प्रवृत्ति अब पुन. सिर उठा रही है। □

दिल्ली में महर्षि ने आर्यसमाज की स्थापना की थी

आर्यसमाज की स्थापना को १०४ वर्ष बीत गए :

ऋषि प्रतिष्ठित आर्यसमाज के पुनरुद्धार की आवश्यकता

दिल्ली। सम्भवत. यह बात कुछ नवीन-सी प्रतीत होगी परन्तु है सौ टके सच्ची कि लगभग १०४ वर्ष पूर्व कार्तिक शुक्ला एकादशी, १९३५ के लगभग महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सब्जीमण्डी दिल्ली अवस्थित लाला बालमुकुन्द केसरीचन्द्र के उद्यान मे अथवा शाह जी छत्ते मे आर्यसमाज दिल्ली की शुभ स्थापना की थी। इस ऐतिहासिक घटना को १०४ वर्ष बीत गए है। आज आवश्यकता है उस ऐतिहासिक स्थल की खोज कर वहां दिल्ली आर्यसमाज का शताब्दी कार्यक्रम मनाया जाए और कम से कम उस क्षेत्र मे आर्यसमाज का पुनरुद्धार अवश्य किया जाए। क्या इस सम्बन्ध में दिल्ली की प्रमुख आर्यसमाजे, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा और आर्यजन अपना दायित्व अनुभव कर उचित कार्यवाही करेंगे।

यहां प्रस्तुत है—दिल्ली में आर्यसमाज की स्थापना के विषय मे एक महत्त्वपूर्ण दस्तावेजी प्रमाण :

कार्तिक शुक्ला १९३५ में दिल्ली आर्यसमाज की स्थापना हुई थी

श्रीमद्दयानन्द प्रकाश के सगठन काण्ड के आठवें सर्ग मे (पृष्ठ ३७३) पर स्वामी सत्यानन्दजी ने लिखा है : मेरठ से चलकर कोई आश्विन सुदी १२ स०१९३५ को महाराज (महर्षि दयानन्द सरस्वती) देहली आए। सब्जी मण्डी मे लाला बालमुकुन्द केसरीचन्द्र के उद्यान मे विराजमान हुए। विज्ञापनों द्वारा सारे नगर मे श्री उपदेशों की सूचना दे दी गई। शाह जी के छत्ते मे उनके प्रभावजनक व्याख्यान हुए'''महाराज देहली में आर्यसमाज की शुभ स्थापना करके कार्तिक शुक्ला एकादशी अथवा द्वादशी संवत् १९३५ को जयपुर प्रस्थान कर गए।

महाराज माघवदी १ स० १९३५ को रेवाड़ी से चलकर देहली आए और सब्जी मण्डी के बालमुकुन्द केसरीचन्द्र के मोती-उद्यान में विराजमान हुए। इस बार उन्होंने वहां दो-तीन ही व्याख्यान दिए और फिर वह हरिद्वार के कुम्भ मेले पर जाने के लिए प्रस्थान कर गए।

गोवंश राष्ट्र की बहुमूल्य सम्पत्ति

गौओं की रक्षा के लिए शिवसेना के प्रमुख बाल ठाकरे का आह्वान

बम्बई। शिवसेना के प्रमुख बाल ठाकरे ने २२ सितम्बर के दिन घोषित किया कि वह बम्बई तथा महाराष्ट्र के दूसरे भागो मे गौओ, बछडो और बैलो की हत्या रोकने के लिए अपनी पूरी शक्ति लगा देंगे। उन्होंने यह घोषणा भी की कि उनके निश्चय के मूल मे किसी प्रकार की साम्प्रदायिकता नही है। उनकी विनम्र सम्मति मे गाय और गोवश एक बहुमूल्य राष्ट्रीय सम्पत्ति है, और वह सहन नही कर सकेंगे कि उसका सहार किया जाए।

शिवसेना के प्रमुख ने यह घोषणा भी की कि वह बैलो को बूचडखाने जाने से रोकेंगे। वह शिवसेना के माध्यम से बकरीद के दिन ४००० बैलो की कुर्बानी को रोकने की पूरी कोशिश करेंगे। श्री ठाकरे ने कहा कि गौओ और बैलो की कुर्बानी मुस्लिम मजहब का हिस्सा नही है। उन्होंने इस बारे मे मुस्लिम धर्मशास्त्रो का हवाला दिया। साथ ही कहा कि कलकत्ता हाईकोर्ट ने स्पष्ट शब्दो मे निर्णय दिया है कि बकरीद के दिन गायो की कुर्बानी धार्मिक दृष्टि से नही होती। शिवसेना के प्रमुख ने मुसलमान भाइयो से अनुरोध किया है कि वे गायो और बैलो की कुर्बानी पर जोर न दें, वे अपनी इस धार्मिक कुर्बानी के लिए भेडो और बकरो का कोटा बढवा सकते हैं। उन्होने सरकार से भी अनुरोध किया है कि उस गोवश की रक्षा कर अपना राष्ट्रीय कर्त्तव्य पूरा करना चाहिए।

सम्पादक—नरेन्द्र विद्यावाचस्पति

व्यवस्थापक—प्रद्युम्नलाल तलवाड़

वेद-मनन

दुर्गति से कैसे बचें ?

—मनोहर विद्यालकार

अशुन्वन्तमयजमानमिच्छ स्तेनस्येत्यामन्विहि तस्करस्य
अन्यमस्मदिच्छ सा तऽइत्या नमो देहि निऋते तुभ्यमस्तु ॥ यजु १२-६२

ऋषि —मधुच्छन्दा । देवता—निऋंते । छन्द —निचृत् त्रिष्टुप् ।

शब्दार्थ—हे (देवि निऋते) कष्ट और दुर्गति देने वाली निऋंति देवि ! (तुभ्य नम अस्तु । तेरे आगे हाथ जोडता हू (अस्मद् अन्यम् इच्छ) तू किसी दूसरे के पास जा, हमारा पीछा छोड। (असुन्वन्तम) किसी अनुत्पादक आलसी अकर्मण्य अथवा (अयजमानम्) यज्ञ भावना विहीन स्वार्थी या पापी की (इच्छ) कामना कर, क्योकि हम तो उत्पादन मे रत तथा यज्ञ भावना से ओत-प्रोत है। हे देवि, तू किसी (स्तेनस्य) चोरी करने वाले अथवा (तस्करस्य) काला धन कमाने वाले की (इत्याम) गतिविधि का (अनुइति) पीछा कर।

निष्कर्ष—राष्ट्र के प्रत्येक व्यक्ति का कर्त्तव्य है कि किसी उत्पादन के कार्य मे लगा रहे, और पर्याप्त धन कमाने के बाद यज्ञ भावना का त्याग करके केवल स्वार्थी न बन जाए, अपितु समाज और देश के लिए भी कुछ न कुछ करता रहे।

राष्ट्र का कर्त्तव्य है कि करो की चोरी करने वाले तथा काला धन का बढाने वाले व्यक्तियो की गतिविधि का पीछा करते हुए उनको पकड कर निऋंति देवता को सौंप दे अर्थात् उन्हे तरह-तरह के कष्ट और दण्ड देता रहे, जिससे दूसरे देशवासी ऐसी गतिविधियो से बचे रहे।

निऋंति को पाप देवता कहते हैं। जिसके पास कष्ट, दुख, दुर्गति दरिद्रता हों, जिसके सन्तानन हो; जिसकी उन्नति विरुद्ध हो जाए—समझना चाहिए वह निऋंति की जकड मे आ गया है।

विशेष—इस मन्त्र के ऋषि शब्द का अर्थ सकेत करता है कि यदि तुम निऋंति (पाप देवता) की जकड से बचे रहना चाहते हो तो प्राणी मात्र के लिए मधुर भावनाए रक्खो। सब का कल्याण चाहो और करो। अपने स्वार्थ के लिए दूसरो को कष्ट मत दो।

इस मन्त्र का छन्द शब्दार्थ सकेत करता है कि यदि मधुच्छन्दा बनना चाहते हो तो कुछ काल बाद आत्म-निरीक्षण करते रहो। काम, क्रोध, और लोभ, पाप देवता के प्रतिनिधि (दूत) हैं, इनसे बचने का प्रयत्न करो। और समाज मे अपने से बडो बराबर वालो और छोटों की स्तुति=यथायोग्य व्यवहार करो।

अर्थपोषक प्रमाण —त्रिष्टुप्-त्रिविध नरकस्येद द्वार नाशनमात्मनः। काम क्रोधस्तथा लोभस्तस्मादेतत्त्रय त्यजेत ॥ गीता १६-२१। त्रिवस्तुप स्तुभुस्तम्भे अवरोधे। स्तुञ् स्तुतौ, स्तुति -गुणदोष-वर्णनम्। निऋति.—कृच्छ्रापति। निरू-२-८, निऋंति -कष्टम्। निर्गता ऋति। गमन यया सा-आलस्यम् तत्परिणाम महत्कष्टम्। दुर्गति दरिद्रता। निऋति गृहीतो वा एष यो निरुद्ध। मैं० २-२-१। यावाऽअपुत्रा पत्नी सानिऋंतिगृहीता। माश ५-३-१-१३। पाप्मा वै निऋंति। माश ६-२-१-१ इत्यागति, इण्गतौ। मधुच्छन्दा -मधु (मधुर)—च्छन्दा (छन्दति अर्चतिकर्मा। नि० ३-१४। आहलादने दीप्तौ च। छन्दोभिर्यज्ञस्तायते। जै० २-४३१।

५५२, ईश्वर भवन, खारी बावडी, दिल्ली-११०००६।

मस्जिद अल्लामन्दिर बनी !

तजौर (तजावुर) तजावुर जिले मे कोलक-अल वैनन्तानपत्तु नामक गाव मे इन दिनो एक भी मुसलमान नही है। यहा की पुरानी मस्जिद मे सभी जातियो के हिन्दू मिलकर सामूहिक प्रार्थना करते हैं। यह रहस्योद्घाटन तमिल विश्वविद्यालय के एक सर्वेक्षण के फलस्वरूप प्राप्त हुआ है।

इस गाव मे इन दिनो २४०० हिन्दू रहते हैं, वे अल्ला-कोयल या अल्ला-मन्दिर (मस्जिद का नया नाम) मे अपनी प्रार्थना एव आराधना करते हैं। गाव का मुखिया नत्ता मइक्करर गावो की वित्तीय सहायता से इस अल्ला मन्दिर के प्रवन्ध की देखरेख करता है। सर्वेक्षण से ज्ञात हुआ है कि एक पेड के नीचे गणेश की प्रतिमा की ओर गाव वालो का बिल्कुल ध्यान नही है। विश्वविद्यालय के परिपत्र मे यह सूचना भी दी गई है कि गाव मे एक भी मुसलमान के न रहने के बावजूद मस्जिद की मौजूदगी से मालूम पडता है कि या तो गाव के मुसलमान गाव छोड गए हैं या उन्हे फिर हिन्दू बना लिया है।

वेदों का संदेश

—श्रीमती सुशीलादेवी विद्यालंकृता

वेद ज्ञान है। ज्ञान! जीवन किस तरह से जिया जाए इसका रास्ता वेद बताते हैं। चारो वेद कण्ठस्थ कर लिये, परन्तु जीवन मे कुछ प्रभाव नहीं पड़ा। जीवन उसी पुरानी घिसी-पिटी लाइनो पर चल रहा है तो यह वैसी ही बात होगी—यथा खर: चन्दनभारवाही, भारस्य वेत्ता न तु चन्दनस्य। गधे के ऊपर चन्दन के थैले रखे हुए हैं। उसे तो इतना ही ज्ञान है कि कुछ बोझ मेरी पीठ पर रखा हुआ है। वह बोझ का अनुभव कर रहा है किन्तु चन्दन का कुछ मूल्यांकन नही कर सकता सो वेद तो जीवन को कुछ मूल्य देना चाहता है जिससे व्यक्ति ऊचा बन सके। वेद का पहला सन्देश है कि—ओ कुर्वन्नेवे कर्माणि जिजीविषेद शत समा। एव त्वयिनान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे। कर्म करता हुआ ही सौ वर्ष तक जीने की इच्छा कर। आलसी होकर जीना भी क्या जीना है? फिर नरे कर्म ऐसे करे कि उसमे लिप्त न हो उसे 'जन' नही 'नर' बनना है। जन—उत्पन्न तो सभी होते हैं। परन्तु नर-वह है जो कर्मयोगी हो। कर्मयोगी कौन है? गीता मे इसकी बड़ी सुन्दर व्याख्या की है—

योग कर्मसु कौशलम् कुशलतापूर्वक कर्म करना ही कर्मयोग है। जो भी काम करो मनोयोग से करो। स्त्री खाना बनाए। सफाई से बनाए। नमक मिर्च, ममाला ठीक-ठीक डाले। घर के काम बेगार समझ कर न करे। कर्त्तव्य समझ कर करे। कुशलता प्रत्येक कार्य को सुन्दर बना देती है। पुरुष कार्यालयो मे काम करते है। अपना-अपना काम ढग से करें। कर्त्तव्य समझ कर करे। कुशलता से किया गया छोटे से छोटा कार्य भी कर्मयोग बन जाता है। बिना प्रयत्न के कुछ नही मिलता। साथ-साथ योग्यता भी हासिल करो। हमे इच्छा है १) की लौटरी खरीद कर लखपति बन जाऊ। बैंक में नोकरी मिल जाएगी। गिनते जाइए, लाखो रुपए, पर बे रुपए हमारे नहीं हैं बैंक के हैं। हमे तो ५००) रु० वेतन मिलता है वही है हमारा। इच्छा हुई 'कार' की। ड्राइवर बना दिया। सारा दिन घूमा कार से। परन्तु वह कार हमारी नही हैं। मालिक की है। हम नोकर मात्र हैं 'कार' के। बगले की इच्छा थी। बगले का चोकीदार बना दिया। बिना प्रयत्न और बिना योग्यता के कुछ नहीं मिलता। योग्यता है। प्रयत्न करते हैं निष्काम भाव से। कुशलतापूर्वक कार्य करते हैं। भगवान छप्पर फाड़ कर देता है।

कर्मयोग की दूसरी परिभाषा। गीता मे दी है—समत्व योग उच्यते। समभावना। हम छोटी-छोटी चीजो से पक्षपात कर जाते हैं। घर ही को लीजिए। पाच प्राणी हैं। सब के साथ एक-सा व्यवहार करो। किसी को दाल मे एक चम्मच घी डाल दिया किसी को न डाला। किसी के दूध मे आंख बचाकर मलाई ज्यादा डाल दी। किसी को पानी वाला दूध सरका दिया। घर मे बहू की चलती है तो 'सास' की उपेक्षा। 'सास' की चलती है तो 'बहू' की उपेक्षा क्यो? सब अपने ही हैं न बच्चो-बच्चो मे फर्क। नन्द-भाभी मे अनबन। सास-बहू के झगड़े ये सब कर्म कुशलता का अभाव और पक्षपात की भावना के ही कारण होते हैं। यह जाति-पाति के भेद, छूत-छात। क्या है? सूर्य की किरणें नहीं देखती कि मैं अमीर को प्रकाश दू, गरीब को नही। ब्राह्मण को जीवन दू. शूद्र को नही। नदी का पानी भेद नहीं करता, कि मैं राजा की तो प्यास बुझा दू रक की नहीं। वायु पृथ्वी सब ओर समदर्शिता है। फिर मनुष्य ही क्यो यह भेद की दीवारें खडी करता है। वेद कहता है मनुष्य कर्म करे। कुशलता से कर्त्तव्यो का अनुष्ठान कर समदर्शी बनकर कर्म कर।

एक मित्र का निमत्रण पत्र आया विवाह का। हम कार्यवश नहीं जा सके। मित्र नाराज हो गया। प्रभु का तो प्रति दिन निमन्त्रण है। सूर्य की किरणें प्रात काल आख खुलते ही आमत्रण देती है। कल-कल करती नदिए शीतल मन्द समीर, पक्षियो की चहचहाहट रात-दिन प्रभु के निमन्त्रण हम तक पहुचा रहे हैं। हम हैं कि फुरसत ही नही है उसे पढने को। पश्य दवस्य काव्य न ममार न जीयेति। यह वेद उस देव का अमर काव्य है उसे पढो और जीने की कला सीखो।

अहंकार का त्याग करो

वेदो का दूसरा सन्देश है। अहकार का त्याग करो। जब प्रयत्न करते-करते सफलता, यश, कीर्ति; धन-दौलत मिलने लगती है तो फिर अहकार आ जाता है। किसी ने बडा सुन्दर कहा है कि—दौलत की दो लातें हैं। एक लात तो वह जब आती है तो कस कर छाती पर मारती है आदमी अहंकार से अकड़ कर खड़ा हो जाता है। दूसरी लात जब

(शेष पृष्ठ ५ पर)

हमारी वाणी में मिठास हो !

ओ३म् जिह्वाया अग्रे मधु मे जिह्वामूले मधूलकम् ।
ममेदह क्रतावसो मम चित्तमुपायसि: ।। अथर्व १-३४.२

परम दयालु प्रभु से प्रार्थना है कि वह हमें ऐसी क्षमता दें कि हमारे जिह्वाग्र मे मिठास हो, हमारा कण्ठस्वर सुरीला हो। हमारे ज्ञान-कर्म मे आकर्षण हो, हमारा जीवन माधुर्य से परिपूर्ण हो ।

ओ३म्
आर्य सन्देश

हम दिल्ली आर्यसमाज की शताब्दी भुला बैठे !

एक सस्था के रूप मे आर्यसमाज की प्रतिष्ठा हुए लगभग १०७ वर्ष बीत चुके हैं। आर्यसमाज की स्थापना का शताब्दी-महोत्सव प्रारम्भ में बम्बई मे मनाना निश्चित किया गया था, फिर परिस्थितियोवश वह उत्तरदायित्व दिल्ली पर आया। सार्वदेशिक सभा एवं दिल्ली आर्यप्रतिनिधि सभा आदि सस्थाओ ने आर्यसमाजो एव आर्यजनो के सक्रिय सहयोग से वह महोत्सव पूरे उत्साह से सफलतापूर्वक मनाया। आर्यसमाज के इतिहास में उस शताब्दी महोत्सव को सदा स्मरण किया जाएगा, परन्तु इसी के साथ यह भी एक ऐतिहासिक तथ्य है कि महर्षि दयानन्द द्वारा १०४ वर्ष पूर्व दिल्ली राजधानी मे आर्यसमाज की स्थापना की गई थी। उस आर्यसमाज की स्थापना से पूर्व दिल्ली के शाहजी के छत्ते मे महर्षि दयानन्द के उपदेशो की धूम मच गई थी। कार्तिक शुक्ला दशमी विक्रमी स० १९३५ को दिल्ली मे आर्यसमाज की स्थापना की गई। इस स्थापना से पूर्व महर्षि सब्जी मण्डी मे लाला बालमुकुन्द केसरीचन्द्र के उद्यान मे ठहरे थे। इस प्रवास के बाद महर्षि जयपुर गए, लौट कर दिल्ली आने पर पुन: इसी उद्यान मे ठहरे और यहां अनेक उपदेश दिए।

स्वामी सत्यानन्द जी ने अपने ग्रन्थ श्रीमद्दयानन्द प्रकाश के पृष्ठ ३७३ पर दिल्ली में महर्षि द्वारा आर्यसमाज की स्थापना का विवरण दिया है। उस विवरण से यह भी ज्ञात होता है कि महर्षि ने आर्यसमाज की स्थापना से पूर्व और बाद मे यहा पर प्रवचनो की धूम मचा दी थी। इस विवरण को पढ़ सुन कर स्वभावत: जिज्ञासा होती है कि सब्जी मण्डी मे लाला बालमुकुन्द केसरीचन्द्र के उद्यान की वर्त्तमान स्थिति कैसी है ? वह उद्यान आज भी विद्यमान है या नही ? उनके उत्तराधिकारियों या उस सम्पत्ति के वर्तमान स्वत्वाधिकारियो की आर्यसमाज तथा उसके सिद्धान्तो के प्रति कैसी आस्था है ? यदि दिल्ली आर्यसमाज के उस स्थान का अन्वेषण किया जा सके तो दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, सार्वदेशिक सभा एव स्थानीय समाजों एव आर्यजनो का एक पुनीत दायित्व है कि उस स्थल पर दिल्ली आर्यसमाज का शताब्दी महोत्सव मना कर वहा राजधानी, महर्षि और आर्यसमाज की मर्यादा के अनुरूप अमर स्मारक स्थापित किया जाए।

महर्षि दयानन्द और आर्यसमाज ने रूढ़ियो और अन्धविश्वास के स्थान पर तर्क-विवेक का मूल मन्त्र दिया था। उन्होंने मूर्तिपूजा, अवतारवाद के स्थान पर निर्गुण निराकार भगवान् की आर्ष पूजा का संदेश दिया था। इतना ही नही, जब भारतीय बहुजन समाज पश्चिमी ज्ञान-विज्ञान से अभिभूत हो चला था तब महर्षि ने ही भारत और उसके धर्म-संस्कृति और विचारधारा के प्रति अपूर्व निष्ठा प्रकट की थी। आज देश में भ्रष्टाचार, विषमता और अन्याय प्रचलित है, जब तक इस देश में पैसे या दूसरे प्रलोभनों द्वारा स्वार्थी तत्त्व इस राष्ट्र की भूखी, नगी, अशिक्षित जनता को विधर्मी बनाने के लिए तुले हैं, तब तक आर्यसमाज आर्यजन अपने गुरु के प्रति अपनी दक्षिणा से उऋण न हो सकेंगे। हम अपने को महर्षि का शिष्य कहते हैं, हम वचन देते हैं कि हम ऋषि और आर्यसमाज के उपदेशों को कार्यान्वित करेंगे। हर क्षेत्र में अभी हमे बहुत कुछ करना है, दिल्ली मे तो हमारा एक नया दायित्व उभर आया है। जिस स्थल विशेष पर महर्षि ने आर्यसमाज की स्थापना की थी, क्या उसका पुनरुद्धार कर हम ऋषि-ऋण के प्रति अपने दायित्व को निबाहने का प्रयत्न करेंगे ?

चिट्ठी-पत्री — नारी को भी संन्यास लेने का अधिकार है ।

आर्य-सन्देश '२९ अगस्त' ८२ के अक में वैदिक विद्वान पं० सत्यदेव जी विद्यालकार का एक लेख 'सन्यास तथा नारी स्थान' शीर्षक से प्रकाशित हुआ है। विद्यालकार जी ने इस लेख मे दो प्रश्न उठाए हैं—१. नारी का सन्यास लेने का अधिकार नहीं है तथा २. चारो वर्णो मे से केवल ब्राह्मण ही सन्यास ले सकता है। इन प्रश्नो के उत्तर मे मेरा निम्न वक्तव्य है।

१—नारी को भी सन्यास लेने का अधिकार है।

अपने वक्तव्य की पुष्टि में वेद का यह प्रमाण है। यजु० ११/६० के भाष्य का भावार्थ ऋषि दयानन्द ने इस प्रकार किया है—'स्त्री और पुरुषो को चाहिए कि सब श्रेष्ठ क्रियाओ से कन्या-पुत्रों को विद्या और शिक्षा से युक्त करें, जिससे वे पूर्ण ब्रह्मचर्य करके गृहाश्रम आदि यथोक्त काल मे आचरण करे। ऋषि दयानन्द जी के इस भावार्थ में 'जिससे वे पूर्ण ब्रह्मचर्य करके गृहाश्रम आदि का यथोक्त काल में आचरण करें', वाक्य नारियों को भी संन्यास लेने का अधिकार प्रदान करता है। 'गृहाश्रम आदि' का तात्पर्य है वानप्रस्थ एव सन्यास आश्रम। वह भी यथोक्तकाल में आचरण करें—अर्थात् जब इन आश्रमो मे जाने के लिए आयु हो, ऐसा अर्थ बनता है।

पुन: स्वामी जी इसी वेद के १४/९ मन्त्र के भावार्थ मे स्त्री-पुरुष दोनो को सम्बोधित करते हुए कहते हैं—'ब्राह्मण आदि वर्णों को स्वतन्त्र वेदादि शास्त्रो का प्रचार बढ़ाया करें।' इस भावार्थ से भी स्पष्ट है कि वेदादि शास्त्रो का प्रचार जन-जन मे करना है, जो भ्रमण के द्वारा ही सम्भव हो सकता है—और भ्रमण करते हुए वेदोपदेश करना सन्यासियो का मुख्य कर्म है। इस भावार्थ मे एक 'स्वतन्त्र' शब्द है जो महत्वपूर्ण है। स्वतन्त्रतापूर्वक निर्भय होकर-पक्षपात रहित वेदोपदेश केवल संन्यासी ही कर सकता है अन्यो से सम्भव नही।

वेद का दूसरा प्रमाण —ऋ० १०।६२।६ में 'यतयो' तथा ऋ. १।१५८।६ एव ६।१३।१ मे क्रमश 'यतीना', तथा 'यतये' पद आया है। इन पदो का अर्थ 'सन्यास' होता है, इसमे किंचित भी सन्देह नहीं।

इस सम्बन्ध में विशेष यह कहना है कि 'यतयो', 'यतीना', तथा 'यतये' शब्दों से सन्यासी एव 'सन्यासिनें' दोनो का बोध होता है। सन्यासी शब्द लोक मे भी स्त्री-पुरुष दोनों के लिए प्रयुक्त होता है। जैसे पुत्र शब्द के अन्तर्गत 'लड़के और लड़कियां' दोनो आते हैं। 'पुरुष' शब्द से भी स्त्री-पुरुष दोनो का बोध होता है। उसी प्रकार यहां भी 'यतयो'। 'यतीना', 'यतये' शब्द से स्त्री-पुरुषो के सन्यासी होने का बोध है।

वेदोत्तर साहित्य में स्त्री सन्यासी का वर्णन आया है—जैसे महाभाष्य मे ऋषि पतजलि का कथन है—'शकरा नाम प्रव्राजिका आसीत्'—महाभाष्य—३।२।१४) अर्थात् शकरा नाम की सन्यासिनी थी। उपनिषदो मे भी गार्गी एव मैत्रेयी जैसी सन्यासिनो का वर्णन आया है।

ऋषि दयानन्द ने स्त्रियो को भी पुरुषों के समान ही समानाधिकार दिया है। स्वामी जी इस विषय मे कितने क्रांतिकारी विचार रखते थे इसका एक प्रमाण 'सत्यार्थ प्रकाश' से प्रस्तुत करता हू। 'सत्यार्थ प्रकाश' के चतुर्थ समुल्लास मे नियोग के प्रसग मे मनु का हवाला देते हुए कहते हैं—'जो अप्रिय बोलने वाली हो तो सद्य: उस स्त्री को छोड़कर दूसरी स्त्री से नियोग कर लेवे' (मनु० ९।८१) मनु ने यह अधिकार केवल पुरुषो को ही दिया है। स्त्रियो को इस अधिकार से वंचित रखा है।

ऋषि दयानन्द ने मनु से आगे बढ़कर स्त्रियो को यह अधिकार देते हैं, उनका कथन है—'वैसे ही जो पुरुष अत्यन्त दु:खदायक हो तो स्त्री को उचित है कि उसको छोड़ के दूसरे पुरुष से नियोग करे।' (स. प्र. चौथा समु०) अत इस उद्धरण से यह विस्पष्ट है कि ऋषि दयानन्द पुरुषो के समान ही स्त्रियो को भी सन्यास मे अधिकार मानते होंगे।

दूसरा प्रश्न—'केवल ब्राह्मण ही सन्यास ले सकता है—इस सम्बन्ध मे शास्त्रो एव ऋषि दयानन्द का मत विस्पष्ट है— जो ब्रह्मवित्' है तथा जो सब वर्णों मे पूर्ण विद्वान धार्मिक परोपकार प्रिय मनुष्य है—उसी का नाम ब्राह्मण है, अत उन्हे ही सन्यास लेना चाहिए।' (द्रष्टव्य-स. प्र. पाचवा समु०)।

स्वामी जी के इस कथ्य का अभिप्राय मेरे मत मे यह है कि क्षत्रिय, वैश्य वर्णों में भी जो उपर्युक्त गुणो को धारण करते हो वे सन्यासी हो सकते हैं। दयानन्द की क्रांतिकारी विचारधारा मे—सभी मनुष्यो (शूद्र भी) को सन्यासी बनने का अधिकार है—बशर्ते कि वे परोपकारी भावना एव धार्मिकता से ओत-प्रोत हो

(शेष पृष्ठ ७ पर)

पंजाब की समस्या

बात १७ नवम्बर, सन् १९६५ की है। उस दिन करनाल की आर्य केन्द्रीय सभा वहा के रामलीला भवन मे पंजाब केसरी लाला लाजपतराय दिवस मना रही थी। सभा की अध्यक्षता कर रहे थे श्री आचार्य रलाराम जी विधायक और वक्ताओ मे थे सर्वश्री प्राध्यापक उत्तमचन्द 'शरर', योगीराज सूर्यदेव, ओ३म् प्रभा जैन, स्वास्थ्य मन्त्री पजाब और मैं।

शरर जी के पश्चात योगीराज बोले और उनके पश्चात् मेरा नाम अध्यक्ष महोदय ने घोषित किया तो केन्द्रीय आर्य सभा करनाल के अध्यक्ष श्री डा० गणेशदास अतरेजा ने मच पर आकर मेरा परिचय दिया। जब मैं बोलने खडा हुआ तब श्री ओ३म् प्रभा जी ने अपने पीछे रखे मोटे तकिये को घुमाया और मेरी ओर मुह करके बैठ गई।

मैने अपने भाषण मे पजाब केसरी को श्रद्धाजलि अर्पित करते हुए उस समय की पजाब की स्थिति की चर्चा की और कहा, 'पजाब निवासियो! इस समय लाला जी के प्रति सच्ची श्रद्धाजलि होगी उनके इस खण्डित पजाब को और खडित होने से रक्षा करना, क्योकि कुछ साम्प्रदायिक तत्वो ने सिर उठाया हुआ है इस खण्डित प्रदेश को और भी खण्ड-खण्ड करने को और भारत सरकार अपनी नासमझी से इन देशद्रोही तत्वो को भ्रान्त नीतियो द्वारा प्रोत्साहन दे रही है। जहा तक कि इस महाअनिष्टकारी देशद्रोहात्मक पजाबी सूबे की माग पर विचार करने के लिए ससदीय और मन्त्रिमण्डलीय दो समितिया बना कर एक प्रकार से पजाबी सूबे को मान्यता ही प्रदान कर दी है।'

उस समय मैने यह भी कहा था कि 'जवाहरलाल नेहरू जिस साम्प्रदायिक माग को ठुकरा चुके थे, उनकी प्रियदर्शिनी पुत्री ने इन समितियो को बना कर उसी माग को स्वीकार कर लिया है। इसका मनोवैज्ञानिक प्रभाव यह पड़ेगा कि अन्य अलगाववादी भी सिर उठाने लगेगे।

मेरे पश्चात् जब ओ३म् प्रभा जी भाषण करने खड़ी हुई तब भड़क उठी और कहने लगी, योगीराज जी और स्वामी जी—दोनों ही हमारे पूज्य है, गुरु है। दोनो ने भारत सरकार की आलोचना की है, स्वामी जी तो बहुत आगे बढ़ गए हैं।' इतना कहते-कहते वह कुछ अधिक आवेश मे आ गई और फिर कुछ अधिक न कहकर दो-तीन मिनट मे ही यह कहती हुई पीछे हट गई कि 'ये दोनो समितिया बहुत सोच-समझ कर बनाई गई हैं।' उसके पश्चात सभा मे एक मिनट भी ठहरे बिना वह मच से उठकर चली गई। क्रोधावेश मे वह उक्त बात कह तो गई किन्तु उन्हें लगा कि यहां मेरी इस भडक का उत्तर अवश्य दिया जाएगा और इसीलिए वह तुरन्त मच छोड़ गई।

उसके कुछ ही दिन बाद लोकसभा-सदस्य श्री जयपालसिह ने—जो बिहार की झारखण्ड पार्टी के नेता थे और कुछ ही दिन पहले अपनी पार्टी का कांग्रेस मे विलय कर चुके थे—झारखण्ड पार्टी को कांग्रेस से पृथक कर लिया और चुनाव आयोग से उसका चुनाव चिन्ह स्वीकृत करा कर अपनी पार्टी के टिकट पर चुनाव लड़ने की घोषणा कर दी और साथ ही यह भी घोषणा की कि हमारी पार्टी का लक्ष्य पूर्ण स्वायत्तता प्राप्त झारखड प्राप्त करना है।

बात वही हुई, जिसकी मैंने उस भाषण मे उम्मीद की थी कि इससे अलगाववादी शक्तियो को बल मिलेगा। यह श्री जयपालसिह जी प्रारम्भ से ही अलगाववादी रहे हैं और उडीसा के कुछ क्षेत्रो को मिलाकर बिहार के छोटा नागपुर आदि जिलो का पृथक झारखण्ड प्रदेश मागते रहे हैं। यह ईसाई मत स्वीकार कर चुके थे और नागालैंड की ही भांति झारखण्ड के नाम पर एक पृथक ईसाई क्षेत्र चाहते थे।

समस्याए-सोच-समझ के बावजूद

तब 'पुण्य-लोक' मासिक के जनवरी १९६६ के अक मे 'पजाब की समस्या' शीर्षक से मैंने सम्पादकीय टिप्पणी लिखी थी और उस टिप्पणी मे लिखा था कि 'श्री ओ३मप्रभा जैन ने मेरे विचारो को बहुत आगे बढ़ जाना कहा था और साथ ही कहा था कि ये दोनो (ससदीय और मन्त्रिमडलीय) समितिया बहुत सोच-समझ कर बनाई गई हैं। अब सभी भारतवासी एक बार ठण्डे मस्तिष्क से सोचें कि हमारे योग्य और महान राजनीतिज्ञ नेताओ तथा शासकों ने कौन-सा काम सोच-समझकर नहीं किया। पाकिस्तान सोच-समझकर बनवाया था या नही? भाषायी आधार पर राष्ट्रीय पुनर्गठन आयोग की स्थापना सोच-समझ कर की थी या नही? बेरुवाड़ी क्षेत्र पाकिस्तान को सोच-समझकर दिया था या नही? वह बेरुवाडी जिसके लिए समूचे भारत ने विरोध किया था। बगाल के मुख्य मन्त्री और यहा तक कि बगाल विधान सभा ने भी एक मत होकर इसका कड़ा विरोध किया था। न्यायालय ने भी इस विषय मे सरकार के विरुद्ध निर्णय दिया था, तो भी ससद मे भी हुए कडे विरोध की उपेक्षा कर अपने स्पष्ट बहुमत के बल पर सविधान मे सशोधन कर डाला गया था और बगाल प्रदेश का वह भाग पाकिस्तान को सौंप दिया गया था। पाकिस्तान को अठासी करोड़ रुपए (सम्भवतः ६५ करोड रुपए) और दस वर्ष तक पानी देते रहने का वचन सोच-समझकर दिया था या नही? १९५७ ई० मे पजाब के हिन्दी सत्याग्रह को स्थगित कराने के लिए दिए गए वचन को भग कर सत्याग्रह के पश्चात आर्यसमाज के साथ विश्वासघात सोच-समझकर किया था या नही? जिसके परिणामस्वरूप अकालियो को प्रोत्साहन मिला और पजाबी भाषा की आड में मास्टर तारासिह तथा सन्त फतहसिह जैसे व्यक्तियो को पृथक पूर्ण स्वायत्तता प्राप्त पजाबी सूबा मागने का साहस हुआ। पादरी माइकेल स्काट को, जो भारत का नागरिक भी नहीं है और जिसने फिजो (नागा प्रदेश के देशद्रोही भारतीय) को आकाश पर चढ़ा रक्खा है। जिसने फिजो को इंगलैंड ले जाकर भारत के विरुद्ध भयकर विषवमन कराया—भारत की घरेलू समस्या नागा प्रदेश के प्रश्न पर बनाए गए शान्ति-मिशन का सदस्य सोच-समझकर बनाया था या नही और तिब्बत को चीन के हवाले सोच-समझकर किया था या नही? अन्ततोगत्वा वह कौन-सा ऐसा कार्य है, जिसे सोच-समझ कर करने मे भी विकट समस्याए नहीं खडी हुईं और उसके बुरे परिणाम इस देश को नही भोगने पड़े। श्री ओ३म् प्रभा जी बताएं कि आप लोगों ने सोचने और समझने का ठेका ही लिया हुआ है क्या?'

'पुण्य-लोक' के उस अक की एक प्रति रजिस्टर्ड डाक से ओ३म् प्रभा जी को भेजी भी थी। उत्तर न आना था और न आया।

लेखक
स्वामी वेदमुनि परिव्राजक
अध्यक्ष – वैदिक संस्थान,
नजीबाबाद (उ० प्र)

सन् १९६५ मे पजाबी सूबे के लिए ससदीय और मन्त्रिमडलीय समिति बना कर तथा सन् ६६ मे पजाबी सूबे का निर्माण कर अब सोलह वर्ष बाद श्रीमती इन्दिरा देवी को यह अनुभव हुआ, जो उन्होने 'माई ट्रूथ' पुस्तक लिखकर उसमे स्वीकार किया है कि पजाबी सूबा बना कर मैंने भूल की।'

१० सितम्बर के 'पजाब केसरी' मे प्रधानमन्त्री की इस स्वीकारोक्ति को ध्यान मे रखते हुए यह विश्वास भी किया जा सकता है कि वह अब पंजाब की समस्या से कठोरतापूर्वक निपटेगी और ऐसा कोई पग अकालियो के दबाव मे आकर नही उठाएंगी, जिससे देशद्रोही तत्वो को बढ़ावा मिले। यदि उन्होने इतना स्वीकार करके भी राष्ट्रद्रोहियों को प्रोत्साहित करने वाला कोई कार्य किया तो यही समझा जाएगा कि भारत के शासक नेताओ का सोचना-समझना उनके अपने राजनीतिक स्वार्थों के लिए होता है, देशहित मे नही और उनकी सत्य की स्वीकारोक्ति भी देश की जनता को धोखे मे रखने के लिए होती है।

बोध-कथा

ऐसे में भूख और भोजन का ध्यान नहीं!

बिहार के भागलपुर नगर की बात है। एक दिन किसी पर्व के कारण गगा के दूसरे किनारे एक भारी मेला था। उसमे लोग अपनी लडकिया भी पुरोहितो को दान कर रहे थे। एक दिन स्वामी दयानन्द जी सरस्वती शाम के समय घूमने गए तो बड़ी रात हो जाने पर भी वह वापस लौटकर नही आए। वहा नन्दन ओझा नामक सज्जन स्वामी जी के ठिकाने श्री युधिष्ठिरनाथ महोदय के मन्दिर मे उनका खाना लेकर गए। वह बहुत समय तक प्रतीक्षा करते रहे, फिर वह खाना ढक कर अपने ठिकाने पर लौट गए। जब सवेरे स्वामी जी के दर्शनो को गए तब देखा कि वह भोजन वैसा का वैसा ही रखा हुआ था। उसने स्वामी जी से विनय की—'भगवन्, आपने रात को भोजन क्यो नही पाया।

स्वामी जी ने कहा—'महाशय, इस देश मे इतना अधर्म और अज्ञान फैल रहा है कि पिछले दिन मेले पर लोग अपनी लड़किया तक पण्डितो को दान कर रहे थे। देश की यह अधोगति देखकर हृदय अतीव द्रवित हो गया। इसी शोक और चिन्ता मे निमग्न मै बहुत रात बैठा रहा। गगा पार से बडी रात बीते जब यहा आया तब सारी रात अपने देश की जनता की अज्ञानता, कुरीतियो और अनाचार की मानस-वेदना मुझे व्याकुल करती रही, फलतः मुझे ऐसे मे भूख और भोजन का ध्यान तक नहीं आया।'

—नरेन्द्र

वेदों का संदेश......

(पृष्ठ २ का शेष)

आती है तब मारती है कमर पर। तो आदमी की कमर झुकने लगती है। जहा अहंकार आया आदमी का पतन शुरू हो जाता है। प्यारदे से फरजी भयो टेढि-टेढि जात !

जगन्नाथ जी का रथ जा रहा था साथ-साथ कुत्ता भी जा रहा था। लोग झुक-झुककर प्रणाम कर रहे थे। कुत्ते ने समझा सब उसे ही प्रणाम कर रहे हैं। वह अहकार में आ गया। वह नही समझा कि प्रणाम तो सब श्री जगन्नाथ जी को कर रहे हैं उसे नही। मन्दिर मे मूर्ति की स्थापना करनी थी। मूर्ति को कन्धे पर रखकर मदिर ले जा रहे थे। सारे रास्ते लोग मूर्ति को प्रणाम करते रहे। गधे ने समझा आदमी को आज मेरी लियाकत का पता चला है। देखो कैसा प्रणाम कर रहे हैं। लो जी मूर्ति मदिर पहुच गई। अब गधे को लकडी मार कर भगा दिया गया।

हमारे पास पैसा है लोग हमे प्रणाम करते है, आदर देते हैं। वह हमारा आदर नही पैसे का आदर है।

पैसे तेरे तीन नाम, परसु परसा परशराम।

असली कीमत गुणों मे—आज हम आफिसर हैं। लोग आदर करते हैं। हम मन्त्री हैं। हमारी पूछ। पर जिस दिन कुर्सी खिसक गई दिन में तारे नजर आने लगेंगे। आदमी की कीमत उसके गुणों से होती है। 'यश. शरीरे भव मे दयालु' गुण ही मनुष्य को सच्चा मनुष्य बनाते हैं। अत. इस माया का अहकार छोड़ विनम्र बन। ससार को भोग, परन्तु त्यागपूर्वक भोग। अभिमान नही आएगा।

भक्ति को वृत्ति बना लो

वेदों का तीसरा सदेश है कि भक्ति को वृत्ति बना ले। काम करते-करते भी हृदय मे प्रभु का नाम गूजता रहे। पूजा दिखावे की वस्तु नही। वह तुम्हारी आदत हो जाए। वृत्ति होगी तो कृति स्वय ही हो जाती है। वदो का चौथा सदेश है कि समन्वय कर। ज्ञान, कर्म, भक्ति का समन्वय। साबुन की टिकिया है। उसमें तेल है। सोडा है, मैदा है। तेल को कपडे मलिए कपडा खराब हो आएगा। सोडा कपडे पर मलिए कपडा खराब। मैदा मलिए कपडा खराब। लो जी ठीक-ठीक अनुपात मे तेल सोडा और मैदा ठीक रीति से मिला दिया। बन गया साबुन। अब इसे कपडे पर मलिए। कपड़े का मैल छट कर कपडा साफ हो गया। इसी प्रकार अकेला ज्ञान केवल कर्म, केवल भक्ति ठीक नहीं। तीनों का समन्वय करिए। ज्ञान प्राप्त कीजिए। ज्ञानपूर्वक कर्म कीजिए। फिर डोरी प्रभु के चरणो मे समर्पित करिए तभी जीवन की सफलता है।

प्रभु से सम्बन्ध बनाओ

वेदों का पाचवा सन्देश है। सबध बदलने से भाव बदल जाते हैं। एक पण्डित जी कथा कर रहे थे। लोग चढावा चढा रहे थे। जोर-जोर से कहते। आ चरण मे लाओ। लोग चढ़ावा उनके चरण मे रख देत। नीचे पास मे एक लड़की बैठी थी। चोरी-चोरी से चढावे की चीजे अपनी थैली मे रखती जाती। कथा कहते-कहते पण्डित जी चिल्लाए मूर्ख ! लोग हैरान। यह मूर्ख कहा से आ टपका कथा मे। लडकी डर कर भाग गई। लो जी ! दिन बीतते गए। हुआ यह कि उसी लडकी से पडित जी की शादी हो गई। अगले वर्ष फिर पण्डित जी कथा कर रहे थे। वह लड़की नीचे बैठी थी। पण्डित जी कह रहे थे आ चरणों मे लाओ। लोग चरणो में चढ़ावा रख रहे थे। लडकी चोरी से कुछ माल थैली मे रखना चाहती थी परन्तु डर रही थी। पण्डित ने इशारा किया रख ले। रख ले डरने की क्या बात है। अब तो तू मेरी पत्नी है। मैं कुछ नही कहूगा। रख ले। खा भी ले। यह है। सम्बन्ध बदले। भाव भी बदल गया। प्रभु से भी सम्बन्ध बनाओ। उसे अपना बना लो। प्यार पैदा होने लगेगा। जीवन सफल हो जाएगा।

एस ७४/६ मारेडपल्ली, सिकदराबाद
(आन्ध्र प्रदेश)

आर्यसमाज रघुवीर नगर में यज्ञ एव योग प्रशिक्षण

आर्यसमाज रघुवीर नगर मे ३ सितम्बर से १६ सितम्बर तक वेद प्रचार प्रात चतुर्वेद शतक यज्ञ एव योग प्रशिक्षण श्री स्वामी सत्यपति महाराज द्वारा करवाया गया। उससे व रात्रि के समय भजनो व उपनिषदो की कथा का जनता उत्साहपूर्वक आनन्द लेती रही।

आर्य जगत् समाचार

केन्द्रीय कानून द्वारा गोवंश की हत्या बन्द हो

एक राज्य से दूसरे राज्य में गोवंश को रोका जाए :
गोवश रक्षा सम्मेलन के प्रस्ताव

नई दिल्ली। अ० भा० गोवंश रक्षा सम्मेलन पूर्ण सफल रहा। इस सम्मेलन मे केन्द्रीय कृपि-मन्त्री राव वीरेन्द्र सिह, विराट् हिन्दू समाज के महामन्त्री श्री प्रेमचन्द्र गुप्त, सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री गोस्वामी गिरिधारीलाल आदि अनेक नेता एव कार्यकर्ता सम्मिलित हुए। सम्मेलन मे एक प्रस्ताव स्वीकार कर माग की गई कि ऊर्जा सकट को देखते हुए देश की पशुशक्ति की रक्षा आवश्यक है। इसलिए परिषद की माग है कि केन्द्रीय कानून द्वारा गोवश की हत्या बन्द की जाए एक राज्य से दूसरे राज्य मे जाने वाले गोवश को रोकने के लिए कार्रवाई की जाए।

दिल्ली की आर्यसभाओं के नए पदाधिकारियों का अशोक विहार में सार्वजनिक स्वागत

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद दिल्ली के तत्वावधान मे दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्य प्रादेशिक सभा, आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य के नवनिर्वाचित पदाधिकारियो का सार्वजनिक अभिनन्दन रविवार २६ सितम्बर को प्रात काल ९ बजे आर्यसमाज अशोक विहार,५ ब्लाक एफ, दिल्ली-५२ मे विशेष कार्यक्रम द्वारा किया गया। कार्यक्रम को अध्यक्षता सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री रामगोपाल वानप्रस्थी ने की। मुख्य अतिथि थे आर्यसमाज बिरला लाइन्स के प्रधान श्यामसुन्दर आर्य।

उर्दू का द्वितीय भाषा बनाना अनुचित

१४ सितम्बर १९८२ को श्री रणवीर रणंजय स्नातकोत्तर महाविद्यालय अमेठी, सुलतानपुर ने राजर्षि श्री रणंजयसिह जी अध्यक्षता मे'हिन्दी दिवस' मनाया गया। राजर्षि महोदय ने इस सभा मे यह प्रस्ताव प्रस्तुत किया कि भारत के सविधान मे देवनागरी लिपि में लिखित हिन्दी भाषा को राजभाषा का सम्मानपूर्ण पद दिया गया है। पुनरपि, उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा द्वितीय राजभाषा के रूप में उर्दू प्रतिष्ठित करने के लिए विधेयक प्रस्तुत करना हमारे राष्ट्रीय सविधान की मूल भावना के विरुद्ध है। उत्तर प्रदेश मे किसी अन्य भाषा को द्वितीय राजभाषा बनाने का औचित्य नहीं है। द्वितीय राजभाषा का विधेयक पारित हो जाने पर इस महार्घता के समय मे प्रदेश की जनता को द्विगुण व्ययभार वहन करना होगा, साथ ही पारिवारिक वैमनस्य एव साम्प्रदायिकता बढेगी। अत. सरकार इस विधेयक को शीघ्र वापस ले। अन्यथा हिन्दी हितैषी जन इस काले विधेयक का घोर विरोध करेंगे तथा प्रबल आन्दोलन करने के लिए बाध्य हो जाएगे।

कटने के लिए जा रही २१ गायें मुक्त

कानपुर। केन्द्रीय आर्य सभा कानपुर के प्रधान श्री देवीदास आर्य ने यहा अफीम कोठी के चौराहे पर २१ जवान गाए कसाइयो से मुक्त कराई जिन्हे काटने के लिए कलकत्ता भेजा जा रहा था। श्री आर्य ने अपने साथियो व जनता की सहायता से इन गायो को ले जाने वाले कसाइयो मे चार को पकड कर रायपुरवा पुलिस के सुपुर्द कर दिया। पुलिस ने इनको विभिन्न धाराओ मे जेल भेज दिया।

बताया जाता है कि उक्त गायो को जी. टी. रोड से बहुत बुरी तरह मारते-पीटते ले जाते देखकर श्री देवीदास आर्य को सन्देह हुआ, उन्होने गायो व कसाइयो को रोक दिया। वातावरण काफी उग्र हो गया। पुलिस भी घटनास्थल पर पहुच गई, स्थिति पर नियन्त्रण हो गया।

बाद मे श्री देवीदास आर्य की ओर से थाना रायपुरवा मे मुकदमा कायम किया गया। सभी गायो को गोशाला भेजा गया। पता चला है कि कानपुर रेलवे कर्मचारियो व अधिकारियो से मिली भगत कर कसाई कुछ दिनों से गैर कानूनी तौर से गाये कलकत्ता भेज रहे थे।

आर्यसमाज बाग कड़े खां द्वारा वेद प्रचार सप्ताह

आर्यसमाज बाग कड़ेखा के तत्वावधान मे सोमवार ११ अक्तूबर से रविवार १७ अक्तूबर तक आर्यसमाज कडेखां के सामने भगतसिह पार्क पाठशाला मार्ग मे वेद प्रचार सप्ताह का कार्यक्रम रखा गया है। इस अवसर पर प्रात' ६॥ से ८ बजे तक ब्रह्मचारी राजसिह के ब्रह्मत्व मे गायत्री महायज्ञ होगा। रात्रि को ८ बजे से ९ बजे तक श्री सत्यदेव स्नातक रेडियो सिगर द्वारा मधुर सगीत पेश किया जाएगा और रात्रि को ९ बजे से १० बजे तक खतौली वाले श्री प० ओम्प्रकाश जी शास्त्री सिद्धान्तशिरोमणि के प्रवचन होगे।

४ अक्तूबर : जन्म दिवस के अवसर पर—

विदेशों में भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन के सूत्रधार श्याम जी कृष्ण वर्मा

महर्षि दयानन्द सरस्वती की प्रेरणा से श्री श्याम जी कृष्ण वर्मा विदेश गए थे। उन्होने विदेशो मे भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन के लिए अनुकूल वातावरण तैयार किया था। उनके जन्मदिवस पर आर्यसमाजों और आर्यजनों को उनके उदात्त जीवन से प्रेरणा लेनी होगी।

श्री श्याम जी कृष्ण वर्मा उच्चकोटि के विद्वान् थे। भारतीय वाङ्मय पर असाधारण अधिकार के साथ उन्हे यूरोपीय सस्कृति और साहित्य की भी अच्छी जानकारी थी। उन्होने अग्रेज लेखको की साक्षियो के आधार पर भारतीयो पर अग्रेजो के अत्याचार, आर्थिक शोषण, राजनीतिक दुरवस्था और नैतिक ह्रास की ओर ध्यान खीचा श्री श्याम जी कृष्ण वर्मा का मूल सिद्धान्त था—भारत भारतीयो के लिए है, आक्रान्ताओं का प्रतिरोध होना ही चाहिए। उस समय के दूसरे राजनेता औपनिवेशिक स्वराज्य की भूल-भुलैया मे उलझे हुए थे। वह ब्रिटिश राज्य के वफादार नागरिक बन कर कोई रियायत नही लेना चाहते थे। विचारों की दृढता और कर्त्तव्यनिष्ठा उन्हें गुरु दयानन्द के सान्निध्य से मिली थी। श्री श्याम जी कृष्ण वर्मा ने 'इण्डियन सोशियोलोजिस्ट' पत्र मे 'ज्वलन्त समस्या—कांग्रेसी नेता कसौटी पर' शीर्षक लेख मे ब्रिटिश उपनिवेशों और साम्राज्यवादी शिकजे मे फसे भारत की स्थिति के मौलिक अन्तर को स्पष्ट किया था। उन्होने बतलाया था कि जब इगलैण्ड और उसके उपनिवेशो मे मा-बेटा जैसा सम्बन्ध है तो भारत और इग्लैण्ड का सम्बन्ध भेड और भेडिए के तुल्य है।

एक मात्र समाधान—पूर्ण स्वाधीनता

श्री श्याम जी कृष्ण वर्मा की मान्यता थी कि भारतीय समस्या का एकमात्र समाधान है—भारत मे पूर्णरूप से स्वाधीन राष्ट्रीय सरकार की स्थापना की जाए। भारतीयो के नैतिक पतन और आर्थिक दैन्य के लिए वह ब्रिटिश हकूमत को ही जिम्मेदार कहते थे। वह पूर्ण स्वतन्त्रता के लिए रक्तरंजित क्रान्ति को भी अनिवार्य नहीं मानते थे। जनवरी, १९०९ मे फ्रासीसी पत्र 'एक्लेयर' के एक सवाददाता को श्याम जी ने स्पष्ट किया—'मैं नहीं समझता कि स्वतन्त्रता के लिए हमें शस्त्र उठाने की आवश्यकता है। हमारा मुख्य तरीका है, बहिष्कार—सामान्य या बचकाना और तिजारती बहिष्कार नही, परन्तु राष्ट्र के सभी वर्गों द्वारा बहिष्कार...जब अग्रेज अफसरों को नौकर नहीं मिलेंगे, पुलिस और फौज के लिए सरकार को रगरूट नहीं मिलेंगे, जब भारतवासी अपनी गुलामी की जजीरो को तोडना शुरू कर देंगे, तब अग्रेजी राज बीते जमाने की बात होगी।

असहयोग . मूलमन्त्र

निष्क्रिय प्रतिरोध पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए श्याम जी ने कहा था—'यह स्पष्ट है कि खूनी क्रान्तियों की हानियों से बचकर विदेशी सरकार के साथ सहयोग से इन्कार के आन्दोलन द्वारा भारत मुक्त किया जा सकता है। १९०४ में ट्रेवलिंग फैलोशिप का मूल मन्त्र था—अग्रेजी सरकार से असहयोग। १९०८ मे पेरिस मे श्याम जी ने असहयोग आन्दोलन की विशेषता स्पष्ट करते हुए लिखा था।

१. भारतीयों द्वारा सैनिक भर्ती का बहिष्कार और नागरिक सेवाओं का बहिष्कार और त्यागपत्र।

२. राष्ट्रीय शिक्षा पद्धति की स्थापना। अग्रेजों की स्वामीभक्ति का प्रचार करने वाले स्कूलो और कालेजों का बहिष्कार।

३. भारतीय वकीलों द्वारा अदालतों का बहिष्कार और राष्ट्रीय पचायतों की स्थापना।

४. भारतीयो को अग्रेजी सिक्यूरिटियो मे पैसा नही लगाना चाहिए।

५ एग्लो इण्डियन समाचार पत्रों का बहिष्कार।

६. ब्रिटेन शासित प्रदेशो की शोषित जनता से सम्पर्क।

भारतीय स्वातन्त्र्य क्रान्ति का औचित्य

अग्रेजी हकूमत के अत्याचारो खास तौर मे लोकमान्य तिलक के माण्डले जेल मे निष्कासन से क्षुब्ध होकर श्याम जी ने लिखा था—'भारत की भूमि पर भारत के लोगो का ही नैतिक और दूसरे हक हैं। भारत निवासी ही यहा के वास्तविक स्वामी एव विधि निर्माता हैं। जो कानून भारतीयो ने नहीं बनाए वे अनर्गल हैं, उनके द्वारा किया जमीन का बटवारा गैरकानूनी है। भारतीयो को अपना स्वामित्व सब तरह से जताना होगा, और परमात्मा ने अपने अधिकारो की रक्षा के लिए जो साधन दिए हैं, उनका समुचित उपयोग करना होगा। इसी प्रकार केवल असहयोग और बहिष्कार से हम स्वाधीनता प्राप्त कर सकते हैं।

आर्यसमाजों के सत्संग

३ अक्तूबर'८२

अन्धा मुगल-प्रताप नगर—प० प्राणनाथ सिद्धातालकार; अमर कालोनी—प० ज्ञानचन्द; अशोक विहार के. सी-५२-ए—पं० ओमवीर शास्त्री; अशोक नगर—प्रो० वीरपाल विद्यालकार; आर्यपुरा—प० गणशप्रसाद विद्यालकार, आर. के. पुरम सेक्टर ५—स्वामी जगदीश्वरानन्द; आर. के. पुरम सेक्टर ६—प० वेदपाल शास्त्री; आनन्द-विहार हरिनगर एल ब्लाक—प० मुनिशकर वानप्रस्थ; किग्जवे कैम्प—श्रीमती सुशीला राजपाल; कालका जी डी. डी. ए. फ्लैट्स—प० अशोक कुमार विद्यालकार; कालका जी—श्रीमती प्रकाशवती शास्त्री; करोल बाग—डा० महेश विद्यालंकार, कृष्णनगर—वैद्य रामकिशोर; गांधी नगर—आचार्य नरेन्द्र शास्त्री; गीता कालोनी—पं० हरिश्चन्द्र शास्त्री; ग्रेटर कैलाश-II—डा० नन्दलाल; गुप्ता कालोनी—पं० देवराज वैदिक मिश्नरी; गोविन्दपुरी—प० हरिदत्त शास्त्री; गोबिन्द भवन—पं० प्रकाशचन्द्र वेदालकार, चूना मण्डी-पहाड़गज—स्वामी प्रेमानद जगपुरा-भोगल—प० कामेश्वर शास्त्री; जनकपुरी सी-३—प० रामदेव शास्त्री, जनकपुरी बी-३/२४—प० सोमदेव शास्त्री, टैगोर गार्डन—प्रो० सत्यपाल बेदार; तिमारपुर—प० सीसराम भजनोपदेशक; देवनगर—डा० रघुनन्दनसिह, नारायण विहार—प० रामनिवास; नया बांस—स्वामी इन्द्रवेश, नगर शाहदरा—प० देवेश, पंजाबी बाग—प० सुरेन्द्रकुमार शास्त्री, पजाबी बाग एक्सटेंशन—स्वामी स्वरूपानन्द भजनोपदेशक, प्रीतमपुरा—डा० सुखदयाल भूटानी, बाग कडे खां—प० बरकतराम भजनोपदेशक, मोडल बस्ती—डा० लेखमीदास; महरौली—प० ओमप्रकाश देदालकार, मोती बाग—श्रीमती लीलावती आर्या, रमेश नगर—पं० रामरूप शर्मा, राणा प्रताप बाग—पं० ईश्वरदत्त, राजोरी गार्डन—प० प्रकाशचद शास्त्री, लड्डू घाटी-पहाडगंज—प० तुलसीराम भजनोपदेशक, लाजपत नगर—पं० वेदव्यास भजनोपदेशक, लेखराम नगर-त्रिनगर—प० मनोहरलाल ऋषि भजनोपदेशक, लारेन्स रोड—प० बलवीरसिह शास्त्री, विक्रमनगर—प० हरिश्चन्द्र आर्य, विनय नगर—प० सत्यदेव भजनोपदेशक, सराय रोहेला—स्वामी शान्तानन्द सुदर्शन पार्क—प्रो० भारत मित्र शास्त्री, सोहनगज—कविराज बनवारीलाल शादा भजनोपदेशक, श्रीनिवासपुरी—प० प्रकाशवीर 'व्याकुल', हनुमान रोड—प० हरिशरण सिद्धांतालकार, हौज खास जेड-१३

—ज्ञानचन्द डोगरा, वेद प्रचार प्रबन्धक

चम्पारण जिले में डेढ़ माह तक वेद-प्रचार की धूम

चम्पारन जिला आर्य सभा के तत्वावधान मे इस वर्ष वेद प्रचार का कार्यक्रम पाच-पाच दिवस पूर्वी एव पश्चिमी दोनो चम्पारण जिलों मे क्रमश: लगातार १४ अगस्त से २४ सितम्बर तक करीब डेढ़ माह तक सम्पन्न हुआ। शास्त्रार्थ महारथी आचार्य प० रामानन्द शास्त्री महोपदेशक, एव श्री शिवधर भजनोपदेशक बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा पटना द्वारा प० भगवान शर्मा जिला प्रचारक बगहा द्वारा चनपटिया, मलाही, रक्सौल, आदापुर, मधुबनी दूबा, पाडेटोला, बेतिया आदि आर्यसमाजो मे तथा प० सत्यदेव शास्त्री महोपदेशक एव ठा० विन्देश्वरीसिह भजनोपदेशक बनारस द्वारा बेतिया, वासोपट्टी, नरकटिया गज, लौरिया, सिकटा, घेघवा भगवानपुर आदि आर्य समाजो मे बडे ही धूमधाम के साथ वेद प्रचार का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। आर्य समाज आदापुर मे मकसूद नाम मुसलमान की शुद्धि हुई। शुद्धि के बाद उनका नाम दीनानाथ रखा गया।

चिट्ठी-पत्री······(पृष्ठ ३ का शेष)

तथा ब्रह्मवित् हो। उपनिषद् मे 'गाड़ीवान रैक्व' की कथा है—वह शूद्र-सन्यासी था। 'सत्यकाम-जाबाल' तो किस वर्ण का था यह पता ही नही है—उसके गुरु ने उसकी सत्यवादिता पर उसे 'ब्राह्मण' सज्ञा दी थी—वह भी सन्यासी ही था—

आर्यसमाज के कई सन्यासी अन्य वर्णों (जन्मना) से से आए है—जैसे स्वा० श्रद्धानन्द, नारायण स्वामी, स्वा० भवानी दयाल, स्वामी सत्यप्रकाश आदि।

विद्यालकार जी के इस विचार से शतप्रतिशत मेरी सहमति है कि आज कल आर्यसमाज मे भी सन्यासी बनने का रोग लग गया है। न तो ब्रह्मवित् है न परोपकारी है न धार्मिक दक्षिणा कमाने, नाम कमाने के लिए सन्यासी-वानप्रस्थी बन जाते हैं। इस प्रवाह को रोकना चाहिये।

—जगदीश आर्य 'सिद्धात रत्न' मत्री आर्यसमाज सासाराम।
सम्पर्क सूत्र—व्यापार मडल स० स० तकिया सासाराम ८२१११५

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रकाशन

सत्यार्थप्रकाश सन्देश (हिन्दी)	१०.००
(अंग्रेजी)	समाप्त
आर्य सन्देश महासम्मेलन विशेषांक	६.००
पादरी भाग गया— ओम्प्रकाश त्यागी	०.३०
स्वामी श्रद्धानन्द-बलिदान अर्द्ध शताब्दी स्मारिका	६.००
सत्यार्थप्रकाश शताब्दी समारोह स्मारिका	६.००

सम्पर्क करें—

अधिष्ठाता प्रकाशन विभाग

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा,

१५,हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१

卐 'आर्यसन्देश' के

स्वय ग्राहक बनें—

दूसरो को बनाए

卐 आर्यसमाज के सदस्य

स्वय बनें —

दूसरों को बनाइए

हिन्दी-संस्कृत भाषास्वय पढ़ें

दूसरों को पढ़ाइए—

रजि० डी (सी०) ७

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए श्री सरदारी लाल वर्मा द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा भाटिया प्रेस २५७४, रघुबरपुरा नं० २ गांधी नगर दिल्ली ३१ मे मुद्रित कार्यालय १५ हनुमान रोड नई दिल्ली फोन३१०५० ।

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक मुखपत्र

एक प्रति ३५ पैसे वार्षिक १५ रुपये वर्ष ६ अंक ५० रविवार १० अक्तूबर २५ आश्विन वि० २०३९ दयानन्दाब्द—१५८

भारत के लिए परमाणु बम बनाना जरूरी

रक्षा अध्ययन संस्थान के निदेशक श्री सुब्रह्मण्यम की चेतावनी :

देश के लिए पाकिस्तानी अणुबम की समय रहते रोकथाम आवश्यक

नई दिल्ली। भारत के चोटी के रक्षा विशेषज्ञ और नई दिल्ली रक्षा-अध्ययन एव विश्लेषण-संस्थान के निदेशक श्री के सुब्रह्मण्यम ने भारत सरकार एव देश की जनता को चेतावनी देते हुए कहा है—विभिन्न देशो द्वारा परमाणु हथियारो के निर्माण हेतु किये जा रहे अनवरत प्रयासो के सदर्भ मे अब भारत के लिए अपनी परमाणु नीति मे परिवर्तन न कर आणविक हथियार तैयार न करना सर्वथा गैर जिम्मेदाराना कदम होगा।

उन्होंने कहा कि अगर भारत ने इतिहास के इस नाजुक मोड मे परमाणु बम बनाने से परहेज जारी रखा तो वह प्रमुख परमाणु शक्तियों अमेरिका, सोवियत सघ, फ्रास, ब्रिटेन और चीन पर निरस्त्रीकरण की दिशा मे आगे बढने के लिए आवश्यक दबाव डालने की स्थिति मे नहीं रह जाएगा। उन्होंने अपनी नई पुस्तक 'इण्डियन सिक्यूरिटी पर्सपेक्टिवस' में भारत उपमहाद्वीप की सुरक्षा के तकाजो की चर्चा करते हुए स्पष्ट किया है कि अमेरिका और सोवियत सघ की तरह पाकिस्तान का परमाणु शस्त्रागार निर्माण करने का अधिकार है, परन्तु उसने यदि एसे परमाणु हथियार बनाये या प्राप्त कर लिए तो उसकी प्रतिक्रिया देश के अन्दर या बाहर क्या होगी—इसका उसे ध्यान रखना होगा।

उल्लेखनीय है कि पिछले दिनो पाकिस्तानी तानाशाह जन० जिया तथा अन्य पाकिस्तानी नेताओ से भेंट करने के बाद अमेरिकी सीनेट की विदेश समिति के एक प्रमुख सीनेटर ने यह रहस्योद्घाटन किया था कि पाकिस्तान चाहता है कि वह एक झपट्टे मे ही कश्मीर पर अधिकार कर ले, इसके लिये उसके सेनाध्यक्षों तथा देश के शासको ने पाकिस्तानी अणु बम बनाने का निश्चय कर लिया है। देश के सजग पत्रकारो एव रक्षा विशेषज्ञो का ख्याल है कि पाकिस्तान द्वारा अणु बम बनाने के निर्णय को देखते हुए भारत द्वारा तुरन्त आणविक अस्त्रो और अणु बम का निर्माण अत्यन्त आवश्यक है।

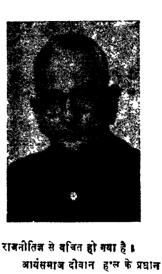
कश्मीर का पुनर्वास विधेयक भारत के राष्ट्रीय हितों के प्रतिकूल

व्यक्तिगत मामलों मे विचार सम्भव : प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी की साहसिक घोषणा

नई दिल्ली। ज्ञात हुआ है कि रविवार ३ अक्तूबर के दिन कांग्रेस ससदीय दल की बैठक में कश्मीर के विवादास्पद पुनर्वास विधेयक पर अपने विचार प्रकट करते हुए भारत की प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गाधी ने यह घोषणा की है कि यह पुनर्वास विधेयक भारत राष्ट्र के हितों के अनुकूल नहीं है। उन्होने कहा कि यदि जम्मू-कश्मीर का कोई भूतपूर्व प्रजाजन राज्य मे पुनर्वास के लिए प्रार्थनापत्र देता है तो उस पर निजी तौर से सहानुभूतिपूर्वक विचार किया जा सकता है, परन्तु देश को वर्षों पूर्व छोडकर गए और विदेशों मे बसे वहा के प्रजाजनो को सामूहिक रूप से राज्य में फिर से बसने की अनुमति नहीं दी जा सकती। ताजा समाचार के अनुसार भारत के राष्ट्रपति ने विवादास्पद पुनर्वास विधेयक अन्तिम निर्णय के लिए सर्वोच्च न्यायालय को सौंप दिया है। प्रसन्नता की बात है कि जम्मू-कश्मीर सरकार ने न्यायालय के निर्णय को मान्य करने का निश्चय किया है।

श्रीमती गांधी ने यह सूचना भी दी कि देश के प्रमुख कानूनवेत्ताओ जिनमें प्रमुख विधिशास्त्री नानी पालकीवाला सम्मिलित हैं, यही निश्चित सम्मति है कि देश छोडकर गए लोगों को सामूहिक रूप से पुनर्वास की अनुमति देना व्यावहारिक दृष्टि से अनुचित एव सर्वथा गैरकानूनी है। इससे पूर्व जम्मू-कश्मीर राज्य के राज्यपाल द्वारा विवादास्पद पुनर्वास विधेयक को स्वीकृति न देने पर तथा उस पर पुनर्विचार का सुझाव दिए जाने के बावजूद जम्मू-कश्मीर के नये मुख्य मन्त्री फारूख अब्दुल्ला की सरकार द्वारा बिना किसी सशोधन के उसी रूप मे स्वीकार करने के निश्चय से राज्य मे एक गम्भीर राजनीतिक गतिरोध पैदा हो गया था। एक प्रकार से राज्य सरकार ने प्रत्यक्ष रूप से केन्द्रीय सरकार को चुनौती दे दी थी। आशा है कि प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी के दृढ कदम से स्थिति में सुधार आ जाएगा।

आर्यनेता श्री रघुवीरसिंह शास्त्री का निधन



नई दिल्ली। गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के भू० पू० उपकुलपति एव भू० पू० संसद सदस्य श्री रघुवीरसिंह शास्त्री का २९ सितम्बर को रात्रि को निधन हो गया। वह कुछ समय से कैंसर से पीडित थे। श्री शास्त्री संस्कृत के विद्वान और आर्यसमाज के नेता थे। वह सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री भी रहे। उन्होने अनेक वर्ष तक अनेक आर्य पत्रो का सम्पादन भी किया।

शास्त्री जी १९६७ मे बागपत क्षत्र से लोक सभा के सदस्य भी रहे। संस्कृत और हिन्दी के प्रचार में उनका उल्लेखनीय योगदान रहा। उन्होंने संसद मे गोहत्या पर प्रतिबन्ध के लिए एक विधेयक भी प्रस्तुत किया था।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले एव मन्त्री श्री ओम्प्रकाश त्यागी ने एक शोक सभा मे उन्हें श्रद्धांजलि प्रस्तुत करते हुए कहा कि आर्यसमाज उनकी मातृसस्था थी। उनके निधन से आर्यसमाज अपने एक विद्वान नेता और देश एक महान् राजनीतिज्ञ से वंचित हो गया है।

आर्यसमाज दीवान हाल के प्रधान एव आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य के महामन्त्री श्री सूर्यदेव ने उनके निधन को एक अपूरणीय क्षति घोषित किया है।

आर्य सन्देश परिवार की परमदयालु परमात्मा से प्रार्थना है कि वह दिवगत आत्मा को सदगति देंगे और शोक सतप्त परिजनो को हार्दिक सांत्वना देंगे।

सम्पादक—नरेन्द्र विद्यावाचस्पति

व्यवस्थापक—प्रद्युम्न तलवाड़

वेद-मनन

सर्पों के लिए नमः (अन्न, उपचार, दण्ड)

—मनोहर विद्यालंकार

नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु ।
येऽन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ॥ यजु १३-६

ऋषि—हिरण्यगर्भ । देवता—हिरण्यगर्भ । छन्दः—भुरि गुष्णिक ।

शब्दार्थ—(ये के च) जो कोई प्राणधारी (पृथिवीमनु) पृथिवी के ऊपर रहते या चलते हैं उन (सर्पेभ्यः) प्रगतिशील प्राणियों के लिए (नमः) अन्न की व्यवस्था, रोग होने पर उपचार तथा मर्यादाओं का अतिक्रमण करने पर दण्ड (अस्तु) हो। इसी प्रकार (ये) जो (अन्तरिक्षे) अन्तरिक्ष लोक मे और (ये) जो (दिवि) द्युलोक मे प्राणी रहते या गति करते हैं (तेभ्यः सर्पेभ्यः) उन प्रगतिशील प्राणियों के लिए भी (नमः) ऊपर निर्दिष्ट व्यवस्था हो।

निष्कर्ष—तीनों लोकों मे रहने वाले गतिशील प्राणी मात्र के लिए अन्न उपचार और दण्ड की व्यवस्था है। गृह, समाज और राष्ट्र के मुखिया का कर्त्तव्य है कि वह इन व्यवस्थाओं को कायम रक्खे। पृथ्वी, अन्तरिक्ष और द्यौ का प्रतिनिधित्व प्राणी मे शरीर, हृदय और मस्तिष्क करते हैं, इसलिए प्राणी को अपने इन तीनो अवयवों के लिए आवश्यक अन्न की व्यवस्था, रोगी दशा मे उपचार तथा मर्यादा का अतिक्रमण होने पर दण्डस्वरूप प्रायश्चित्त करना चाहिए।

विशेष—इस मन्त्र का ऋषि और देवता एक ही हैं। ऐसा बहुत विरल मन्त्रो मे हुआ है।

प्रत्येक प्राणी मे हितकर और रमणीय अंश सुरक्षित व तिरोहित रहता है। उसे प्रकट करने का प्रयत्न होना चाहिए। साधक दूसरे प्राणियों के इन अंशों को जितना बढ़ावा देगा, स्वयं भी उसी अनुपात मे हिरण्यगर्भ बनता जाएगा।

इस मन्त्र के छन्द शब्द के अर्थ हिरण्यगर्भ बनने के उपायों की ओर संकेत करते हैं। जो व्यक्ति हिरण्यगर्भ बनना चाहता है—उसे (१) प्राणी मात्र के साथ स्नेह भाव रखना चाहिए—आत्मतत्व सबमे समान है। और (२) स्वयं अधिक से अधिक शुचि बन कर दूसरों को शुचि बनाते और मानते हुए, उनके लिए भरणपोषण की व्यवस्था में व्यस्त रहना चाहिए।

अर्थ पोषक प्रमाण—

सर्पेभ्य—सर्पेतिर्गतिकर्मा। नि० २-१४ इमे वै लोका सर्पा। शत. ७-४-१-२५ प्रगतिशील तत्वों, प्राणियों, लोकों के लिए—प्राणिभ्यः स्वामी दयानन्द नम—अन्ननामसु। नि० २-७ नम-वज्रनामसु। नि० २-२०

नमस्यति परिचरणकर्मा। नि० ३-५ परिचरति-उपचरति। हिरण्यगर्भ—हिरण्यम्—हितं रमणीयं च। निरु. २-१० हृदयरमणं वा भवति। हिरण्मयो गर्भोऽस्य। गर्भ -गिरति अनर्थान् इति। निरु. १०-२३ उष्णिक्—उत्स्नाता भवति-ष्णा शौचे। स्निह्यतेर्वा स्यात्कान्तिकर्मणः-स्निह प्रीतौ। भुरिक्-भृञ् भरणे।

५२२, ईश्वर भवन, खारी बावडी, दिल्ली-११०००६

जीत हिन्दी की हुई

कांग्रेस के भूतपूर्व अध्यक्ष तथा प्रसिद्ध गांधीवादी नेता डा० पट्टाभि सीता रामैया अपने सभी पत्रों पर हिन्दी मे ही पता लिखते थे। दक्षिण के डाकखाने वालों को इससे बड़ी असुविधा होती थी। उन्होंने डा० पट्टाभि के पास इसका उलाहना भेजा कि आपको पता केवल अंग्रेजी मे ही लिखना चाहिए। इस पर डा० जी ने उत्तर दिया, 'मैं भारत की राष्ट्रभाषा को छोड़कर अंग्रेजी मे, जो भारत की भाषा नहीं है, क्यों पता लिखूं।'

डा० साहिब और डाकखाने के बीच काफी वाद-विवाद चला। उन्होंने धमकी तक दी कि यदि उन्होंने अपने पत्रों में हिन्दी में पता लिखा, तो डाकखाना उन पत्रों को डेड लेटर आफिस मे भेज देगा। डा० साहब ने इसकी भी कोई परवाह नहीं की। अन्त में डाकखाने वालों को हार माननी पड़ी और मछलीपट्टम के डाक घर मे एक हिन्दी जानकार रखना पड़ा।

खेद की बात है कि अभी तक भारत सरकार को और दक्षिण के राज्यों को विशेष कर समझ नहीं आ सकी। हिन्दी हमारी सही राष्ट्रभाषा है और उसे अपनाना ही हमारा परम कर्त्तव्य है।

—प्रद्युम्नलाल तलवाड, आई २०८, अशोक विहार फेज १ दिल्ली-५२

वैदिक वर्णव्यवस्था का संक्षिप्त प्रारूप

लेखक—विजय नारायण उपाध्याय 'नीरव'

इसके पूर्व 'वैदिक अर्थ व्यवस्था की संक्षिप्त रूपरेखा' शीर्षक के अपने लेख में जो 'आर्य सन्देश' के २३ मई ८२ के अंक में प्रकाशित हो चुका है, वैदिक वर्ण व्यवस्था वैदिक अर्थ व्यवस्था को कितना प्रभावित करती है पर मैंने कुछ प्रकाश डालने का प्रयत्न किया था। प्रस्तुत लेख में वैदिक वर्णव्यवस्था पर ही विशुद्ध विचार प्रस्तुत किए जा रहे हैं।

वेद गुण कर्म स्वभाव पर आधारित वर्ण व्यवस्था का ही पोषक है और आर्यसमाज का संगठन अपने जन्म काल से ही इसका प्रचार करता चला आ रहा है जबकि पौराणिक मत जन्म पर आधारित वर्ण व्यवस्था को ही अंगीकार करता है। इस सम्बन्ध मे पौराणिक मतावलम्बियो से मेरा सीधा सा प्रश्न है—सृष्टि के प्रारम्भ में जिन मानवो ने वसुन्धरा के वक्ष पर सर्व प्रथम अपने चरण रखे, उन मानवो का आविर्भाव जब अमैथुनी प्रक्रिया से हुआ था तो उनके मध्य कौन-सी वर्ण व्यवस्था कार्य कर रही थी? गुण कर्म स्वभाव पर आधारित अथवा जन्म पर आधारित? उत्तर स्पष्ट है—गुण कर्म स्वभाव पर आधारित। इस प्रकार जब गुण कर्म स्वभाव पर आधारित वर्ण व्यवस्था सनातन है तो जन्म पर आधारित वर्ण व्यवस्था की मान्यता अपने आप ही समाप्त हो जाती है। गुण कर्म स्वभाव पर आधारित वर्ण व्यवस्था मानव समाज की एक स्वाभाविक प्रक्रिया है। कोई राष्ट्र, कोई समाज या धर्म ऐसा नहीं है जिसमे गुण कर्म स्वभाव पर आधारित वर्ण व्यवस्था किसी न किसी रूप में न हो चाहे वह राष्ट्र, समाज या धर्म इसे सिद्धान्ततः भले ही न स्वीकार करता हो।

प्रत्येक मानव चाहे वह किसी धर्म, राष्ट्र, सम्प्रदाय का हो, किसी रंग रूप का हो, नाटा हो या लम्बे कद का हो, पढ़ा हो अनपढ़ हो, कोई भी भाषा बोलता हो, किसी भी संस्कृति का पोषक हो, जन्म लेते ही तीन शत्रुओं से घिर जाता है और वे शत्रु हैं—(१) अज्ञान, (२) अन्याय, (३) अभाव। बहराई के साथ देखा जाए तो ये ही तीन शत्रु किसी कुटुम्ब के हैं, किसी गांव के हैं, नगर के हैं, प्रान्त के हैं, किसी राष्ट्र, किसी धर्म या सम्प्रदाय के भी ये ही तीन शत्रु हैं। कहने का तात्पर्य यह कि ये ही तीन शत्रु समस्त मानव समाज के हैं। इन तीनों शत्रुओं को संघर्ष में पराजित करना ही मानव समाज की सबसे बड़ी उपलब्धि है। जिस देश या जाति के लोग इन तीनो शत्रुओ से निपटने में असफल रहे हैं उन्हीं के यहां कष्ट क्लेश एवं अशांति रही है और उनका समुचित विकास नहीं हो सका है। जहां के लोगो ने या जिस किसी समाज या राष्ट्र के निवासियों ने इन्हें पराजित करने में सफलता प्राप्त की है, वहीं सुख शांति व समृद्धि दिखलाई पड़ती है।

"मानव समाज मे ऐसे तीन विभागों (वर्णो) का निर्माण करना एक स्वाभाविक प्रवृत्ति है जो क्रमशः अज्ञान, अन्याय और अभाव इन तीनो शत्रुओं से अलग अलग निपटने में भली प्रकार समर्थ हो। वैदिक वाङमय मे समाज के इन तीनों विभागो के व्यक्तियों को क्रमशः ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य की संज्ञा दी गई अर्थात अज्ञान से निपटने के लिए ब्राह्मण समुदाय; अन्याय पर विजय पाने के लिए क्षत्रियगण एवं अभाव को दूर करने के लिए वैश्य गण। आज के परिप्रेक्ष्य मे हम इन्हे क्रमशः शिक्षक, रक्षक व पोषक का नाम दे सकते हैं। साथ ही यह भी एक नितांत सत्य है कि समाज मे कुछ ऐसे भी लोग होंगे जो इच्छा रखते हुए भी पूर्ण क्षमता न रखने के कारण मानव समाज के इन तीनों शत्रुओं अज्ञान, अन्याय व अभाव मे से किसी एक से भी निपटने में समर्थ न हों पर उसकी आकांक्षा रखते हों तथा प्रथम तीन विभागो के लोगो में से किसी न किसी एक को एतदर्थ सहयोग भी देते हों ऐसे ही लोगो को 'शूद्र' की संज्ञा दी गई। जिन्हें आज के परिप्रेक्ष्य में हम 'सहायक' कह सकते हैं।

थोड़ा और स्पष्टीकरण करने से समाज मे 'अज्ञान' से निपटने वाले लोग जैसे अध्यापक, प्राध्यापक, आचार्य, प्राचार्य, प्रोफेसर, लेखक, साहित्यकार, पत्रकार, डाक्टर, वैद्य, हकीम, वैज्ञानिक, कानूनवेत्ता, नियामक, न्यायाधीश आदि सभी ब्राह्मण वर्ण या शिक्षक वर्ग मे आते हैं। इसी प्रकार अन्याय का प्रतिकार करने वाले, आरक्षी एवं सुरक्षा विभाग के कर्मचारी, सैनिक अर्द्ध सैनिक एवं सिविल एडमिनिस्ट्रेटर्स आदि क्षत्रिय वर्ण या रक्षक वर्ग मे आते हैं। ठीक इसी तरह अभाव से टकराने वाले—समाज के समस्त अभाव रोटी कपड़ा मकान, औषधि या अन्य आवश्यक वस्तुओ का उत्पादन या निर्माण करने वाले लोग जैसे मिलों-कारखानों, फार्मेसियों, गृह-उद्योगो मे निर्माण कार्य मे लगे श्रमिक खेतों व खलिहानों मे काम करने वाले किसान व श्रमिक ये सभी वैश्य वर्ग या पोषक वर्ग मे आते हैं क्योंकि निर्माण एवं उत्पादन का समस्त कार्य इन्हीं द्वारा सम्पादित होता है।

(शेष पृष्ठ ३ पर)

संग्रह और दान दोनों ही उचित

ओ३म् शतहस्त समाहर सहस्र हस्त संकिर ।
कृतस्य कार्यस्य चह स्फाति समावह ॥ अथर्व ३.२४.५

तुम सौ हाथों से धन एकत्र करो और हजार हाथों से उनका समुचित वितरण-दान करो । इस प्रकार तुम अपनी नेक कमाई निरन्तर बढाए चलो।

ओ३म्
आर्य सन्देश

इन्सान बनो ! आर्य बनो !

पिछले दिनों मध्यपूर्व में एक छोटे-से राष्ट्र लेबनान की राजधानी बेरूत मे जिस प्रकार का भीषण कत्ले आम हुआ, उससे संसार भर की मानवता कराह उठी है । एक ईसाई अर्द्ध सैनिक सगठन क्रिश्चियन मिलीशिया के फौजी अनेक ट्रको मे लद कर बेरूत नगर के फिलस्तीनी शरणार्थी शिविरों मे पहुंचे । सड़क पर और दरवाजे पर तैनात इजरायली सैनिको और फौजी रक्षको ने उन्हे बिना किसी बाधा के अन्दर जाने दिया । उन्होने अन्दर पहुचकर जो सामने आया, उसे गोलियो से भून दिया । प्रत्यक्षदर्शी ब्रिटिश और अमेरिकी पत्रकारो की साक्षियो के अनुसार वहां हजारों फिलस्तीनी स्त्री-पुरुष, बूढे, बच्चे और जवान गोलियो के शिकार हो गए । ये प्रेस प्रतिनिधि जहां भी पहुचे वहा लाशो का अम्बार लगा हुआ था' सैकडों की गिनती करने के बाद उन्होने आगे गणना करनी बन्द कर दी । इन प्रत्यक्षदर्शियों की सूचना के अनुसार वहा हजारो फिलस्तीनी शरणार्थी नष्ट कर दिए गए, यह कार्य किया—ईसाइयों के अर्द्ध सैनिक सगठन ने और उसे शह दी इजराइली सेना ने । इस कुकृत्य से सारे ससार का लोकमत क्रुद्ध हो उठा है । इस हत्याकांड की न्यायिक जांच हो अथवा उसकी विश्वव्यापक निन्दा हो, उससे वहां मारे गए हजारों लोगों का उद्धार अब सम्भव नहीं है ।

बेरूत के हत्याकांड से स्पष्ट है कि जब इन्सान हैवानियत का शिकार हो जाता है, वह मानवता, भाईचारे आदि हर चीज भूल जाता है । यह कितनी विडम्बना की बात है कि ससार को दया, प्रेम और सेवा की शिक्षा देने वाले एक ईसाई सगठन ने यह कुकृत्य किया और उन्हें मदद की हजरत मूसा के चेलो ने । पश्चिम का इतिहास साक्षी है कि वहां के सेमेटिक धर्मों को मानने वाले यहूदी, ईसाई और मुसलमान जब भी उनके हाथ मे शक्ति रही है और हाथों में तलवारें और बन्दूक तब उन्होंने विरोधियो या विधर्मियों के समूलनाश मे ही विश्वास किया है । तैमूर, सिकन्दर और औरंगजेब की सेनाए विरोधियो के पूर्ण नाश मे ही विश्वास करती रही हैं । बेरूत का हत्याकांड पश्चिमी सम्प्रदायवादियों के उसी रक्तरंजित इतिहास का एक कभी विस्मृत न किया जाने वाला एक दुःखद काला अध्याय है ।

इनकी तुलना मे वेदों की सीख है—'मनुर्भव' इन्सान बनो, 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्'—तुम स्वय आर्य श्रेष्ठ विचारो के व्यक्ति बनो और दूसरो को भी श्रेष्ठ आर्य बनाने का प्रयत्न करो । भारत मे पैदा हुए वैदिक, बौद्ध, जैन आदि धर्म ससार मे इन्सानियत के प्रचार के लिए ही प्रयत्नशील रहे हैं । यहा के देशवासियों ने विदेशों में भारतीय धर्मों का प्रचार-प्रसार किया है, परन्तु तलवार-तोपो और बारूद के बल पर नहीं, प्रत्युत सर्वजनहित के लिए एव मानव मात्र के कल्याण के लिए । केवल इन्सान की रक्षा और उसकी अभिवृद्धि के लिए ही नहीं, प्रत्युत प्राणी मात्र का कल्याण हमारा अभीष्ट रहा है । इसी के साथ हमे यह भी भली भांति समझ लेना होगा कि केवल इन्सानियत की रक्षा और भाई चारे के नारे से हम संसार में जीवित नहीं रह सकते । संसार मे जीवित रहना होगा तो हमें 'वीर भोग्या वसुन्धरा' के कटु तथ्य को हृदयगम करना होगा । केवल वीर जातियां और पराक्रमी राष्ट्र ही इस जीवन संग्राम मे चिर विजयी हो सकते हैं कायर जातियां और राष्ट्र नहीं ।

चिट्ठी-पत्री

यह कैसा धर्म समभाव ?

लगभग एक वर्ष पूर्व हमने आर्यसमाज मिन्टो रोड नई दिल्ली के लिए अस्थायी बिजली कनेक्शन के लिए आवेदन दिया था । साथ ही दो मस्जिदें जो कि सड़क पर तथा बस्ती चौसठखम्बा पर बलात ही खडी कर ली गई थी, उनकी ओर से भी बिजली के लिए आवेदन पत्र दिया गया । कुछ समय पश्चात उन दोनो मस्जिदो को तो बिजली मिल गई किन्तु मदिर को बिजली नही मिली। इस सदर्भ में जब हम चांदनी चौक विद्युत कार्यालय मे अधिकारियोंको जाकर मिले, तब उन्होने बताया कि उपराज्यपाल महोदय की आज्ञा है कि जिन बिल्डिगो के प्लान स्वीकृत नहीं हैं उन्हे बिजली न दी जाए । हमने आश्चर्य प्रकट करते हुए कह कि वे दोनो मस्जिदें तो बिलकुल गलत स्थान पर और बिना किसी बिल्डिग प्लान के बनी हुई हैं उनको विद्युत कैसे मिल गई । इसके उत्तर मे अधिकारी महोदय ने बताया कि यदि किसी मस्जिद के लिए वक्फ बोर्ड सिफारिश करता है तो यह जानते हुए भी कि इसका निर्माण पूर्णतया अवैध है हमे बिजली देनी पड़ती है । यदि रात-रात मे कोई चांदनी चौक की मुख्य सडक पर मस्जिद निर्माण कर ले और वक्फ बोर्ड लिख दे कि यह मस्जिद उसके नियंत्रण में है तो हमे बिजली देनी पडेगी । उसके लिए उपराज्यपाल के बिल्डिग प्लान की अपेक्षा नही है । एक ओर हम सर्वधर्म समभाव की बातें करते हैं और दूसरी ओर जरा-जरा-सी बातों मे इतना भेदभाव बरता जाता है । यह मन्दिर सरकारी कर्मचारियो के क्वार्टरो के बीच बना हुआ है और हम चाहते थे कि प्रत्येक रविवार तथा छुट्टियों मे इस प्रकार के सास्कृतिक कार्यक्रम आयोजित करें कि बच्चों का ध्यान बुरी बातों की ओर न जाये और उनमे देशभक्ति और परोपकार की भावना जाग्रत हो । विद्युतअधिकारी ने स्वय मन्दिर पधारकर इच्छा प्रकट की कि काश ! वे मन्दिर को बिजली दे पाते ।

—नरेश गुप्त "नीरस" मंत्री आर्य समाज मिन्टो रोड नई

वैदिक वर्णव्यवस्था ····· (पृष्ठ २ का शेष)

शेष रहे इन तीनो को सहयोग देने वाले लोग जैसे ब्राह्मण वर्ग, अध्यापक प्राध्यापक, आचार्य या प्राचार्यों के सहयोग मे लगे चपरासी, चौकीदार, लाइब्रेरियों के कर्मचारी आदि, डाक्टर वैद्य हकीमो के सहयोगी कम्पाउन्डर, दवा विक्रेता आदि वैज्ञानिको, कानून वेत्ताओं नियामको व न्यायाधीशों के साथ लगे सभी सहयोगी । इसी तरह क्षत्रिय वर्ण आरक्षा व सुरक्षा विभाग के कर्मचारी, सैनिक अर्द्ध सैनिक व सिविल एडमिनिस्ट्रेटर्स के साथ सहयोग मे लगे चपरासी ड्राइवर, रसोइये धोबी नापित, स्वीपर आदि और इसी तरह वैश्य वर्ण के प्रमुख श्रमिक व किसानो के साथ सहयोग मे लगे वे लोग जो इनके द्वारा निर्मित व उत्पादित वस्तुओ को जनसाधारण तक पहुंचाते हैं जैसे गल्ला विक्रेता, वस्त्र विक्रेता, सीमेंट विक्रेता, औषधि विक्रेता या एक शब्द मे कहे तो समस्त विक्रेता वर्ग (क्योंकि ये स्वय न तो निर्माण करते हैं और न उत्पादन केवल निर्मित व उत्पादित वस्तुओ को जनता तक पहुचाने मे सहयोग देते हैं) ये सभी सहायक लोग चौथे वर्ण शूद्र वर्ण मे या सहायक वर्ग में आते हैं ।

इस प्रकार गुण कर्म स्वभाव पर आधारित ये चारो वर्ण शिक्षक, रक्षक, पोषक, सहायक (दूसरे शब्दों में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र) सभी धर्मावलम्बियों सभी सस्कृतियों के मानने वालो एव सभी राष्ट्रो मे पाए जाते है चाहे वे सिद्धांत रूप से इसे स्वीकारें या न स्वीकारें । इस प्रकार मानव समाज मे गुण कर्म स्वभाव पर आधारित वर्ण व्यवस्था का विधान एक सनातन सत्य है ।

उपर्युक्त तथ्य के आधार पर हम इस निर्णय पर पहुचते हैं कि समाज को सुचारु रूप से चलाने के लिए ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य (शिक्षक, रक्षक, पोषक) ये तीन मौलिक वर्ण है । शूद्र (सहायक) यह गौण वर्ण है इसका अपना कोई स्वतन्त्र अस्तित्व नही अतः शूद्र (सहायक) वर्ण को शेष तीन मौलिक वर्णों मे जिसके वे सहायक हैं उसी मे विलीन कर दिया जाए तो भी सुचारु रूप से समाज सचालन मे कोई बाधा नही उपस्थित होगी । इस प्रकार वर्ण केवल तीन है ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य । स्वामी दयानन्द ने भी अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'सस्कार विधि' मे स्पष्ट रूप से लिखा है कि यज्ञ के लिए अग्नि ब्राह्मण क्षत्रिय या वैश्य के घर से लाई जाए ।

जन्मना जायते शूद्र सस्कारात् भवेद्द्विज
वेदपाठी विप्राणा ब्रह्म जानाति स ब्राह्मणः

—के अनुसार भी जन्म मे सभी शूद्र हैं पर सस्कार से (यज्ञोपवीत सस्कार होते ही) सभी द्विज (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य) हो जाते है । कोई भी व्यक्ति शूद्र रह कहां जाता है ।

निष्कर्ष—(१) गुण कर्म स्वभाव पर आधारित वर्ण व्यवस्था एक सनातन एव ध्रुव सत्य है जो प्रत्येक राष्ट्र या समाज मे स्वभावतः पाई जाती है ।

(२) मौलिक वर्ण तीन हैं ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य (शिक्षक, रक्षक, पोषक) ।

(३) चौथा वर्ण शूद्र (सहायक) स्वतन्त्र वर्ण न होकर गौण वर्ण है और शेष तीनो वर्णों मे समाहित है ।

अग्निहोत्र द्वारा पर्यावरण प्रदूषण रोकिए

आज के शहरी वातावरण मे औद्योगिक प्रतिष्ठानो द्वारा व्यापक रूप से पर्यावरण दूषित हो रहा है। कारखानो की चिमनियो से फैलता सल्फर, कार्बन डाइ आक्साइड एव विषाक्त धुआ वायु को दूषित करते रहते हैं। परिवहन वाहनो से उठता हुआ प्रदूषण, जल-कल यान के विभिन्न सयत्रो से बना यांत्रिक जीवन प्रदूषण के साथ मे पल रहा है। फलस्वरूप मानवीय जीवन मे अनेक बीमारिया व्याप्त हो रही हैं। दूषित वातावरण, सतप्त कोलाहल, एव मानसिक अशान्ति से पीडित आज का मानव अनेक प्रकार की समस्याओ से आक्रान्त हो अपने को बेचैन महसूस कर रहा है।

तकनीकी ज्ञान के आधुनिक विस्तार से, बेतहाशा मशीनीकरण के इस युग में प्राकृतिक सम्पदा के दोहन की होड मची हुई है। समस्त यांत्रिक जीवन प्रकृति मे दुःखद असतुलन पैदा कर रहा है। फलस्वरूप सम्पूर्ण विश्व के समक्ष वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण, आणविक विस्फोट और सर्वाधिक दुःखद पहलू जो इन प्रदूषणों के परिणाम से ही फलीभूत हो रहा है अर्थात् मानसिक प्रदूषण मुंह बाए खड़े हैं।

वायु के उच्चतम स्तर ओजान का कार्य सूर्य की किरणो मे से दाहक किरणो को वशीभूत करके उन्हे सौम्य रूप मे पृथ्वी पर भेजना है। प्रदूषण के कारण ओजान करा यह स्तर नष्ट होने लगता है। अत: दाहक सूर्य किरण सीधी ही पृथ्वी पर आने लगती है, जिसके कारण अनेक व्याधियो का प्रकोप बढ़ने लगा है। अनाज का उत्पादन बढ़ाने की गरज से आजकल रासायनिक खादो और दवाओ का बेतहाशा एव असन्तुलित तरीके से उपयोग किया जा रहा है। इन कृत्रिम दवाओ और खादो के कारण जमीन मे विषैलापन बढ़ने की सभावनायें उत्पन्न हो रही हैं। अनेक प्रकार के शारीरिक रोग भी धरती पुत्र किसानो मे बढते जा रहे हैं। जोधपुर विश्वविद्यालय के प्राणी-शास्त्र विभाग द्वारा सितम्बर ८० मे आयोजित सेमिनार मे पर्यावरण का मूल्याकन विषय पर बोलते हुए प्रो० एम० एल० माथुर ने वनो की कटाई तथा पेडों की बढ़ती कमी पर गभीर चिंता व्यक्त की। उन्होंने कहा कि पेडो की कटाई का प्रमुख कारण गांवो मे इनका ईधन के रूप मे प्रयुक्त होना है। इस सेमिनार मे सम्मिलित वैज्ञानिको ने चेतावनी दी कि गावो में ऊर्जा के स्रोत के रूप मे अन्य कोई विकल्प नहीं मिला तो दस साल बाद ईंधन की लकड़ी का जो संकट आयेगा वह वर्तमान तेल सकट से भी ज्यादा भयकर होगा।

'चिपको आन्दोलन' के जनक सुन्दरलाल बहुगुणा का कथन एक कटु सत्य है कि पेडो की कटाई से पिछले दस वर्षों में भूस्खलन की घटनाओ मे जहा अत्यधिक वृद्धि हुई है वहा पर्यावरण के कारण पर्वतीय इलाको मे बाढ़ो की विनाशलीला भयंकर रूप धारण करती जा रही है आज मानवीय जीवन की समस्याओ के समाधान मे प्राकृतिक वन सरक्षण को अनदेखा नही किया जा सकता। अत: धर्म, विज्ञान और प्रकृति मे सतुलन होना आवश्यक है। वातावरण को विशुद्ध करने हेतु वृक्षारोपण का कार्यक्रम व्यापक स्तर पर किया जाना मानवीय जीवन की आराधना करना है। अथर्ववेद मे एक स्थान पर मनुष्य को उपदेश दिया गया है जिसमे उसे प्रदूषणो की रोकथाम के लिए सूर्य की आराधना करने को कहा है।' सूर्य की किरणो से अपने धन को तथा अपने को शुद्ध करो।'

अग्निहोत्र द्वारा प्रदूषण-निवारण

ऋषि दयानन्द ने २०वी शताब्दी मे उत्पन्न हुई इन समस्याओ का मानो आज से सौ वर्ष पहले ही दर्शन कर लिया था। उन्होंने आर्यजन के सम्मुख प्रदूषण निवारण हेतु एक ऐसा अद्भुत साधन प्रस्तुत किया, जिस पर यदि आज के वैज्ञानिक गम्भीरता से गौर करें तो शायद प्रदूषण की समस्या के निदान से मानवजाति के हाथ एक महत्त्वपूर्ण नुस्खा उपलब्ध हो जाए। वह साधन है दैनिक अग्निहोत्र का। अपने ग्रन्थ ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका मे स्वामी दयानन्द लिखते हैं—

'अग्नि-होत्र से लेकर अश्वमेघ पर्यन्त जो भी कर्मकाण्ड हैं, उसमे चार प्रकार के द्रव्यो का होम करना होता है—एक सुगन्धगुणयुक्त, जो कस्तूरी केशरादि हैं, मिष्टगुणयुक्त, जो कि गुड और आदि कहाते हैं, तीसरा पुष्टिकारकगुणयुक्त, जो घृत, दुग्ध और अन्न आदि हैं, और चौथा रोगनाशकगुणयुक्त जो कि सोमलतादि औषधि आदि है। इन चारो का परस्पर शोधन सस्कार और यथायोग्य मिला के अग्नि में युक्तिपूर्वक जो होम किया जाता है, वह वायु और वृष्टिजल की शुद्धि करने वाला होता है। इससे सब जगत को सुख होता है।

ऋषि दयानन्द ने वातावरण की विषाक्त स्थिति को अत्यधिक गभीरता से लिया तथा उन्होंने मनुष्यो को उपदेश दिया "हे मनुष्यो तुम लोग वायु, औषधि और वर्षाजल की शुद्धि से, सबके उपकार के अर्थ घृतादि शुद्ध वस्तुओं और समिधा अर्थात् आम्र वा ढाक आदि काठों से अतिथि रूप अग्नि को नित्य प्रकाशन करो।" (ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका) ऋषि दयानन्द का कहना था कि मनुष्य ससार में मल विसर्जन, श्वास प्रश्वास आदि के द्वारा जो प्रदूषण फैलाता है उसकी निवृति हेतु अग्निहोत्र आदि कर्मों मे उसे अवश्य सलग्न होना चाहिए जिससे वातावरण को शुद्धता मे वह अपना योगदान दे सके।

सायंकालीन यज्ञ आहुतियो की व्याख्या करते हुए ऋषि दयानन्द मानव समाज का आह्वान करते हैं "अग्नि जो ज्योतिस्वरूप परमेश्वर है, उसकी आज्ञा से हम लोग परोपकार के लिए होम करते हैं और उसका रचा हुआ यह भौतिक अग्नि इसलिए है कि वह उन द्रव्यों को परमाणुरूप करके वायु और वर्षाजल के साथ मिला के शुद्ध कर दे। जिससे सब ससार को सुख और आरोग्यता की वृद्धि हो।" (ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका) जल-वायु की शुद्धिकरण प्रक्रिया अग्निहोत्र की व्यवस्था से सभव है। यजुर्वेद मे एक स्थल पर आता है "जो अग्नि परमेश्वर सूर्यादि लोको में व्याप्त वायु और रात्रि के साथ ससार का परमहितकारक है, वह हमको विदित होकर हमारे किए गए पर्यावरण दोष को दूर करें।" सजूर्देवेन सवित्रा सजूरात्रेन्द्रवत्या, जुषाणो अग्निर्वेतु स्वाहा। यजु०३/९-१०।

प्राकृतिक सतुलन —इसी प्रकार अथर्ववेद मे एक स्थल पर आता है "विश्व के रचयिता ने यज्ञ के द्वारा प्रकृति का सतुलन किया।" (इम यज्ञ वितत विश्वकर्मणा) अग्नि मे यह सामर्थ्य है कि वह अनेक प्रकार की विषाक्तताओ को समेट करके उसे शुद्ध-विशुद्ध कर देती है। अत· हवन से शारीरिक रोगो की निवृत्ति तथा प्रदूषण की रोकथाम की जा सकती है। इस सम्बन्ध मे अथर्ववेद मे ही कथन है "अज्ञात रोग और ज्ञात रोग, राजयक्ष्मा रोग, वातावरण की विषाक्तता, आदि दोषों को इन्द्र और अग्नि की आहुतियों से दूर किया जाता है।" (मुंचामि त्व हविषा जीवनाय) इसी प्रसग मे अनेक मत्रो मे यह सिद्ध किया गया है कि प्रकृति की शक्तियो में परस्पर सतुलन एव तालमेल करने मे अग्निहोत्र की आश्चर्यजनक भूमिका है हवन मे प्रदूषण को रोकने की हजारो शक्तियां हैं। इससे मनुष्य का जीवन सौ वर्ष से भी अधिक हो सकेगा।" "यज्ञ मे प्रयुक्त किए घृत, दुग्ध, मधु अन्नादि के सूक्ष्म अश वृष्टि जल के साथ परिस्रुत होकर इस पृथ्वी पर वायु जल एव अन्न के माध्यम से प्राप्त होते हैं तो वे बल पराक्रम के वहन करने वाले हो जाते हैं।"

वर्षा विज्ञान:—स्पष्ट है कि यज्ञ प्रारम्भ होने पर सर्वप्रथम प्रभाव वायु के तापमान पर पड़ता है। वायु गरम होकर ऊपर जाती है तथा चारों ओर से वायु का प्रवाह इस प्रकार खाली हुए स्थान की ओर जाने लगता है। आहुतियों के कारण कभी तो गर्मी अधिक होती है, कभी कुछ कम। यज्ञ से प्रयुक्त आहुतियों की वाष्पमय धूम्र एवं सूक्ष्म अंश युक्त परमाणुओं को ऊपर फेंकती रहती है। गैस युक्त कण जब मेघों में प्रसारित होता है तो उन पर मेघों की वाष्प जम कर वर्षा देती है। शतपथ ब्राह्मण के प्रमाण के आधार पर स्वामी दयानन्द ने ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका में सिद्ध किया है। "जो होम करने के द्रव्य अग्नि में डाले जाते हैं, उनमे धुआ और भाफ उत्पन्न होते हैं, क्योंकि अग्नि का यही स्वभाव है कि (वह वृक्ष, औषधि, वनस्पति तथा जलादि) पदार्थों में प्रवेश कर के उनको भिन्न-भिन्न कर देता है। फिर वे हलके होके वायु के साथ ऊपर आकाश में चढ़ जाते हैं। उनमें जितना जल का अश है वह भाफ कहाता है, और जो शुष्क है वह पृथ्वी का भाग है। इन दोनो के योग का नाम धूम है। वे परमाणु मेघमण्डल मे वायु के आधार से रहते हैं, फिर वे परस्पर मिलके बादल होके उनसे वृष्टि से (यव आदि) औषधि औषधियों से अन्न, अन्न से वीर्य, वीर्य से शरीर और शरीर से कर्म बनता है।"

लेखक :
बलभद्र कुमार हूजा
कुलपति, गुरुकुल कांगड़ी
विश्वविद्यालय, हरिद्वार

ऋषि दयानन्द ने पूर्वमीमासा शास्त्र का सदर्भ देते हुए लिखा है "सुगन्धादियुक्त चार प्रकार के द्रव्यों का अच्छी सस्कार करके अग्नि मे होम करने से जगत का अत्यन्त उपकार होता है। जैसे दाल और शाक आदि मे सुगन्धद्रव्य और घी इन दोनो को चमचे मे अग्नि पर तपा के उनमे छोंक देने से वे सुगन्धित हो जाते है, क्योंकि उस सुगन्ध द्रव्य और घी के अणु उनको सुगन्धित करके दाल आदि पदार्थो को पुष्टि और रुचि बढ़ाने वाले कर देते हैं, वैसे ही यज्ञ से जो भाफ उठता है, वह भी वायु और वृष्टि के जल को निर्दोष और सुगन्धित करके सब जगत को सुखी करता है, इससे वह यज्ञ परोपकार के लिए ही होता है।"

इसी प्रकार ऐतरेय ब्राह्मण का हवाला देते हुए स्वामी जी लिखते है "मनुष्यो का समूह है, उसी के सुख के लिए यज्ञ होता है, और सस्कार किए द्रव्यों का होम करने वाला जो विद्वान् मनुष्य है, वह भी आनन्द को प्राप्त होता है, क्योंकि जो मनुष्य जगत का

(शेष पृष्ठ ५ पर)

अग्निहोत्र द्वारा प्रदूषण……

(पृष्ठ ४ से आगे)

जितना उपकार करेगा, उसको उतना ही ईश्वर की व्यवस्था से सुख प्राप्त होगा। इसलिए यज्ञ का अर्थवाद यह है कि अनर्थ दोषों को हटा के जगत में आनन्द को बढ़ाता है। परन्तु होम के द्रव्यो का उत्तम सस्कार और होम के करने वाले मनुष्यों को होम करने की श्रेष्ठ विद्या अवश्य ज्ञात होनी चाहिए। सो इसी प्रकार के यज्ञ करने से सबको उत्तम फल प्राप्त होता है, विशेष करके यज्ञकर्ता को, अन्यथा नही।

तैतिरीय उपनिषद् मे भी प्रदूषणों की रोकथाम में अग्निहोत्र का महत्त्व दिग्दर्शित किया गया है जिसे ऋषि दयानन्द ने लिखा है परमात्मा के अनन्त सामर्थ्य से आकाश, वायु अग्नि, जल और पृथ्वी आदि तत्त्व उत्पन्न हुए हैं, और उनमे ही पूर्वोक्त क्रम के अनुसार शरीर आदि उत्पत्ति, जीवन और प्रलय को प्राप्त होते हैं, यहां अन्न का नाम ब्रह्म है, क्योंकि जिसका जो कर्म है वह उसी मे मिलता है। वैसे ही ईश्वर के सामर्थ्य से जगत की तीनों अवस्थाएं होती हैं, और सब जीवों के जीवन का मुख्य साधन है, इससे अन्न को ब्रह्म कहते हैं। जब होम से वायु, जल और औषधि आदि शुद्ध होते हैं, तब सब जगत को सुख, और अशुद्ध होने से सबको दु:ख होता है। इससे इनकी शुद्धि अवश्य करनी चाहिए।"

सृष्टि में फैले व्यापक प्रदूषण को को ऋषि दयानन्द ने अत्यन्त वैज्ञानिक तरीके से दूर करने के उपाय पर चिंतन किया। उन्होने इसी ग्रन्थ मे इस दृष्टि-कोण को जनमानस को समझाते हुए लिखा वायुमण्डल की शुद्धि करने मे दो प्रकार का प्रयत्न है—एक तो ईश्वर का किया हुआ, और दूसरा जीव का। उनमें से ईश्वर का किया यह है कि उसने अग्नि रूप सूर्य और सुगन्धरूप पुष्पादि पदार्थों को उत्पन्न किया है। वह सूर्य निरन्तर सब जगत के रसो को पूर्वोक्त प्रकार से ऊपर खेंचता है और जो पुष्प आदि का सुगन्ध है वह भी दुर्गन्ध को निवारण करता रहता है। परन्तु वे पर-माणु सुगन्ध और दुर्गन्ध युक्त होने से जल और वायु को भी मध्यमगुणवाले कर देते हैं। उस जल की वृष्टि वाले औषधि, अन्न, वीर्य और शरीरादि भी मध्यम गुण वाले हो जाते हैं और उनके योग से बुद्धि, बल, पराक्रम, धैर्य और शूरवीरतादि गुण भी मध्य ही होते हैं, क्योंकि जिसका जैसा कारण होता है, उसका वैसा ही कार्य होता है? यह दुर्गन्ध से वायु और वृष्टि जल का दोष-युक्त होना सर्वत्र देखने में आता है। सो यह दोष ईश्वर की सृष्टि मे नहीं, किन्तु मनुष्यों ही की सृष्टि से होता है। इस कारण से उसका निवारण करना भी मनुष्यो ही को उचित है।"

क्योंकि सबके उपकार करने वाले यज्ञ को नही करने से मनुष्यों को दोष लगता है। जहा जितने मनुष्य आदि के समुदाय अधिक होते हैं, वहां उतना ही दुर्गन्ध भी अधिक होता है। वह ईश्वर की सृष्टि से नही, किन्तु मनुष्यादि प्राणियो के निमित से ही उत्पन्न होता है। क्योंकि हस्ती, घोड़ा-गाय आदि के समुदायो को मनुष्य अपने ही सुख के लिए इकट्ठा करते हैं, इससे उन पशुओ से भी जो अधिक दुर्गन्ध उत्पन्न होता है मनुष्यो के ही सुख की इच्छा से होता है। इससे क्या आया कि जब वायु और वृष्टिजल को बिगाडने वाला सब दुर्गन्ध मनुष्यो के ही निमित्त से उत्पन्न होता है तो उसका निवारण करना भी उनको ही योग्य है।"

स्वामी दयानन्द ने एक स्थल पर कहा है—"जितने प्राणी देहधारी जगत मे हैं, उनमे से ही उत्तम है। इससे वे ही उपकार और अनुपकार को जानने को योग्य है। मनन नाम विचार का है, जिसके होने से ही मनुष्य नाम होता है, अन्यथा नही। क्योंकि ईश्वर ने मनुष्य के शरीर में परमाणु आदि के सयोग विशेष (से विज्ञानोत्पत्ति के अनुकूल अवयव) इस प्रकार रचे हैं कि जिसे उनको ज्ञान की उत्पत्ति होती हैं। इसी कारण से धर्म का अनुष्ठान और अधर्म का त्याग करने को भी वे ही योग्य होते हैं, अन्य नही। इससे सबके उपकार के लिए यज्ञ का अनुष्ठान भी उन्हीं को करना उचित है।"

स्वामी दयानन्द के इन व्याख्यानों के संदर्भ मे आर्यसमाजो और आर्य व्यक्तियों ने यज्ञ की महिमा को पहचाना और यथासभव अपने त्योहारो, सम्मेलनो और गृहो मे विधिवत होम यज्ञ करने की परिपाटी डाली। प्रदूषण की समस्या की गम्भीरता से वैज्ञानिक अधिक पिछले १० वर्षों से चिन्तित हो गए हैं। और अब जब कि आधुनिक वैज्ञनिक पूरे वेग से इस समस्या के निदान की खोज मे तत्पर है दयानन्द का फार्मूला उनके समक्ष विश्लेषण और अनुसन्धान हेतु उपस्थित है।

आर्य जगत् समाचार

देश की रक्षा के लिए युवक कृतसंकल्प हों

नवनिर्वाचित अधिकारियों का सार्वजनिक अभिनन्दन

दिल्ली। युवकों की शारीरिक व चारित्रिक उन्नति के उद्देश्य से केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के तत्त्वावधान मे उत्तरी दिल्ली क्षेत्र के आर्य युवको का दो द्विवसीय 'युवक प्रशिक्षण शिविर' श्री ब्र० राजसिंह आर्य के नेतृत्व में आर्यसमाज अशोक विहार मे सम्पन्न हुआ। युवको को प्रेरणा दी गई।

शिविर मे दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के नवनिर्वाचित प्रधान श्री प्रेमनाथ चड्ढा, आर्य प्रादेशिक सभा के महामन्त्री श्री रामनाथ सहगल, श्री ओम्प्रकाश आर्य का 'सार्वजनिक अभिनन्दन' आर्य नेता श्री श्यामसुन्दर आर्य की अध्यक्षता मे किया गया। आर्यसमाज की सेवा व अपनी कर्मठता के कारण ६८ वर्षीय आर्य युवक श्री प्रेमसिंह आर्य व नन्दकिशोर आर्य जो का भी कृपाण पहनाकर सम्मान किया गया। खेद है कि पिछले अंक मे इस सभा की अध्यक्षता का समाचार गलत छप गया था। श्री शालवाले इस सभा की अध्यक्षता करने वाले थे, किन्ही कारणों से वह नही पधार सके थे।

शिविर-समापन पर रात्रि को १०० युवको ने एक वेषभूषा में मशाल जलूस निकाला। परिषद के प्रचार-प्रसारार्थ दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री प्रेमनाथ चड्ढा ने ३०१) रुपये, श्री रामनाथ सहगल महामन्त्री, प्रादेशिक सभा ने ५०१ श्री ओमप्रकाश आर्य मन्त्री, आर्य केन्द्रीय सभा ने ५०१) रुपये, श्री श्यामसुन्दर ने ५०१) रुपये, ने तथा श्री कपूर जो ने १०१) रुपये मासिक सहयोग की घोषणा की।

बाबूगढ़ में आर्यसमाज की ऐतिहासिक विजय

बाबूगढ़। भारतवर्ष की प्रसिद्ध छावनी बाबूगढ जहाँ बौद्ध धर्म का प्रचार लोग अम्बेडकर के नाम पर कर रहे हैं, हापुड मे थाईलैंड से प्राप्त सहायता के द्वारा बौद्ध विश्वविद्यालय की स्थापना हो रही है, उसी के कार्य-कर्त्ताओ ने बाबूगढ मे अपना प्रभाव प्रचार द्वारा प्रारम्भ कर दिया जब इस बात की जानकारी गुरुकुल महाविद्यालय ततारपुर मे हुई, तब गुरुकुल के ब्रह्मचारी और आचार्य धर्मपाल जी शास्त्री तथा महाशय कडक क्षेत्र भजनोपदेशक ने वहा जाकर प्रचार किया! उसका इतना प्रभाव हुआ कि १६ सदस्य आर्यसमाज के सदस्य बन गए तथा आर्यसमाज की स्थापना हो गई। अब वहाँ बौद्ध पुन: सिनेमा गाड़ी लेकर प्रचारार्थ आए तब आर्य वीरों के द्वारा किए गए प्रश्नों का उत्तर न दे सके तथा निरुत्साहित होकर वापस अपना मुह लेकर चले गए। स्वामी दयानन्द के जय के नारों से वातावरण गूंज उठा, सत्यार्थ प्रकाश एव नित्यकर्म विधि अन्य आर्य साहित्य वित-किया गया आर्यसमाज हापुड़ से कुछ साहित्य और वितरित किया जाएगा, सब आर्यों का उत्साह बढ़ा है। इस समाज के मंत्री श्री धर्मवीरसिंह आर्य जी ने अपने पुत्र का नामकरण संस्कार वैदिक रीति से प्राचार्य धर्मपाल जी द्वारा कराया और रात्रि मे प्रचार किया तो तातारपुर के सैकड़ो लोग ट्रैक्टर मे बैठकर वहाँ पहुचे।

युवतियों की प्रेरणास्रोत : शहीद प्रीतिलता की अर्द्धशताब्दी

दिल्ली। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद दिल्ली प्रदेश के तत्वावधान में बंगाल की प्रथम क्रांतिकारिणी प्रीतिलता की शहीद अर्द्धशताब्दी कमला नेहरू पार्क, पुरानी सब्जी मण्डी मे धूमधाम से सादे समारोह के साथ सम्पन्न हुई।

श्री अनिलकुमार आर्य ने एक वक्तव्य मे महिलाओ पर बढ़ते हुए अत्याचारो के लिए स्त्रियो को स्वयं संघर्ष करने की प्रेरणा दी। युवतियां शहीद प्रीति लता से प्रेरणा लें, जिसने महिलाओं को संगठित कर जन-जागृति उत्पन्न की व अंग्रेजो के विरुद्ध सशस्त्र आन्दोलन किया।

आवश्यकता है

शहरी व ग्रामीण क्षेत्र मे, प्रचारार्थ आर्यसमाजी भजनोपदेशक संगीतज्ञ की आवश्यकता है। आर्यसमाजी को प्राथमिकता दी जाएगी। वेतन व अन्य सुविधायें योग्यतानुसार दी जावेगी। शीघ्र सम्पर्क करें।

—सूर्यदेव प्रधान, आर्यसमाज, दीवान हाल, दिल्ली।

राजस्थान सरकार द्वारा दयानन्द शोधपीठ को स्वीकृति

आर्यसमाज अजमेर की स्थापना शताब्दी के अवसर पर राजस्थान सरकार ने दयानन्द (स्नातकोत्तर) कालेज अजमेर में दयानन्द शोधपीठ (दयानन्द चेयर) की स्थापना की सहर्ष स्वीकृति प्रदान की है। तदनुसार एक प्रोफेसर ग्रेड तथा चार अन्य सहायक तथा कार्यालय सम्बन्धी पद स्वीकार कर अनुदान देना स्वीकार किया।

इस शोधपीठ का सचालन एव निदेशन आर्यसमाज, अजमेर के द्वारा किया जाएगा। आर्यसमाज अजमेर की अन्तरंग सभा ने फिलहाल दत्तात्रेय जी वाब्ले को इस शोधपीठ का अवैतनिक निदेशक नियुक्त किया है।

इस शोधपीठ के अन्तर्गत महर्षि दयानन्द के जीवन, कार्य तथा सिद्धान्तों पर अनुसंधान तथा आर्यसमाज के वर्तमान स्वरूप और भविष्य के सम्बन्ध मे शोध तथा प्रकाशन कार्य किए जायेंगे।

लन्दन में भारतीय विद्वानों का आगमन

'पिछले दिनों भारत से पधारे, कई विशिष्ट व्यक्ति आर्यसमाज में पधारे तथा 'वन्देमातरम् भवन' की गतिविधियो को देखकर बहुत ही पुलकित तथा प्रभावित हुए। जम्मू तथा कश्मीर विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग के रीडर डा० रामप्रताप तथा पंजाब विश्वविद्यालय मे ऐन्थ्रोपालाजी के रीडर डा० एस. प्रकाश के नाम उल्लेखनीय हैं। आर्यसमाज लन्दन के तत्त्वावधान में वेद प्रचार का कार्य तीव्रता से चल रहा है।

५ सितम्बर को हुए सत्सग मे श्री व श्रीमती धर्मपाल भसीन यजमान थे। यज्ञ के ब्रह्मा प्रो० सुरेन्द्रनाथ भारद्वाज थे। वेद मन्त्र व्याख्या श्री गिरीशचन्द्र खोसला द्वारा की गई। इस अवसर पर श्रीमती स्वर्ण शर्मा तथा श्रीमती विमला वेदी एवं यज्ञ वेदी तथा अन्य कलाकारों के भक्तिमय भजनों ने समां बांध दिया।

इस वर्ष दीपावली बड़े धूम धाम से मनाई जाएगी। १३ नवम्बर रात्रि को संगीत का एक राष्ट्रीय स्तर पर कार्यक्रम रखा गया है। जिसके संयोजक श्री कपिलदेव प्रिंजा हैं, इसके अतिरिक्त बृहद् यज्ञ, विशिष्ट उपदेश, प्रतियोगिताए आदि कई आकर्षक कार्यक्रम रखे गए हैं।

दीवानचन्द्र जी मानवता के पुजारी थे

आर्य समाज मन्दिर दीवानचन्द्र जी का अमर स्मारक

दिल्ली। प्रख्यात दानवीर सेठ स्व० लाला दीवानचन्द के ९८ वें जन्मदिवस पर आर्यसमाज दीवान हाल मे एक विशाल जन सभा का आयोजन किया गया जिसकी अध्यक्षता धर्मनिष्ठ वयोवृद्ध नेता मुलखराज भल्ला ने की। इस अवसर पर अनेक आर्य नेताओ ने अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि भेंट की। जिनमें प्रमुख श्री लाला रामगोपाल शालवाले, श्री देवराज चौधरी, श्री सोमनाथ मरवाहा; श्री सूर्यदेव प्रधान समाज व श्री मूलचन्द मंत्री थे।

शिरोमणि नेता श्री शालवाले ने कहा, श्री दीवानचन्द जी का दान इतिहास में मूर्त्त रूप ले ही चुका है, इससे बढ़कर वे नेक, उदार दयावान, मानवता के पुजारी थे। उनकी धार्मिकता एव कर्मठता हम सब के लिए प्रेरणा स्रोत है। दीवान हाल का यह भवन अनेक ऐतिहासिक एवं धार्मिक आन्दोलनों का केन्द्र रहा है। जो उनके दान की एक शोभनीय स्मृति है।

आर्यसमाज हरदोई का ८८वां वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज हरदोई का ८८वां वार्षिकोत्सव २५, २६ तथा २७ अक्तूबर के दिन आर्य कन्या पाठशाला भवन में समारोहपूर्वक मनाया जाएगा। उत्सव में आर्य-समाज के प्रमुख विद्वान्, संन्यासी तथा प्रसिद्ध भजनोपदेशक पधार रहे है। इस अवसर पर राष्ट्रभाषा सम्मेलन, मद्यनिषेध सम्मेलन, युवक सम्मेलन, जिला आर्य सम्मेलन, तथा सांस्कृतिक प्रदर्शनी का भी आयोजन किया जा रहा है।

आर्यसन्देश के ग्राहकों से निवेदन

आर्य सन्देश के ग्राहको से प्रार्थना है कि आप लोगो के पास आर्य सन्देश लगातार भेजा जा रहा है। बहुत से आर्य समाजों और व्यक्तिगत आर्य बन्धुओं के पास दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र भेजा जाता है खेद है कि इस महंगाई में तीन चार साल से चन्दा ग्राहकों से नहीं आया। आर्य सन्देश पत्र पर आर्य प्रतिनिधि सभा पर अधिक खर्चा करना पड़ता है आप सभी बन्धुओं से प्रार्थना है कि चन्दा भेज कर सभा को सहायता प्रदान करें। और धन भेजते समय अपनी ग्राहक संख्या अवश्य लिखें।

—व्यवस्थापक : आर्य सन्देश नई दिल्ली।

आर्यसमाजों के सत्संग

१० अक्तूबर'८२

अन्धा मुगल-प्रतापनगर—पं० अशोक कुमार विद्यालंकार; अमर कालोनी—पं० देवेश; अशोक विहार के. सी. ५२-ए—पं० रामनिवास; अशोक नगर—वैद्य रामकिशोर; आर्यपुरा—प० दिनेशचन्द्र शास्त्री; आनन्द विहार—प० ओमवीर शास्त्री; कालका जी—प० हरिदत्त शास्त्री; करोल बाग—पं० प्रकाशचन्द्र शास्त्री; कृष्णनगर—स्वामी प्रेमानन्द; गांधी नगर—प० छविकृष्ण शास्त्री; गीता कालोनी-प० रामलाल शास्त्री; ग्रेटर कैलाश-II—प० मनोहरलाल ऋषि भजनोपदेशक; गुड़ मण्डी—प० ईश्वरदत्त; गुप्ता कालोनी—प्रो० वीरपाल विद्यालकार; गोविंद भवन-दयानन्द वाटिका—प० हरिश्चन्द्र शास्त्री; चूनामन्डी पहाडगज—आचार्य नरेन्द्र शास्त्री; जंगपुरा भोगल—प० देवराज वैदिक मिश्नरी; जनकपुरी सी-३—डा० सुखदयाल भूटानी; तिलक नगर—प० रामदेव शास्त्री; तिमारपुर—प० सोमदेव शास्त्री; दरियागंज—पं० वेदपाल शास्त्री; नारायण विहार—डा० रघुवीर वेदालंकार, नया बांस—डा० महेश वेदालकार; न्यू मुलतान नगर—प० सीसराम भजनोपदेशक; निर्माण विहार—आचार्य हरिदेव सि० भू०; बाग कड़े खां—प० बख्तराम; मोडल बस्ती—स्वामी शांतानन्द; महावीर नगर—प० विश्वप्रकाश शास्त्री; रमेशनगर—प० प्रकाशवीर व्याकुल; राणा प्रताप बाग—कविराज बनवारीलाल शादा भजनोपदेशक; रोहतास नगर—ला० लखमीदास; लड्डू घाटी पहाडगंज—पं० रामरूप शर्मा; लक्ष्मीबाई नगर—प० बलवीरसिंह शास्त्री; लाजपत नगर II—श्रीमती सुशीला राजपाल; लेखराम नगर-त्रिनगर—प० गणेश प्रसाद विद्यालकार; लोधी रोड-जोर बाग—प्रो० सत्यपाल बेदार; विक्रम नगर—पं० तुलसीराम भजनोपदेशक; विनय नगर—प० सत्यदेव भजनोपदेशक; सदर बाजार-पहाड़ी धीरज—प० खुशीराम शर्मा, सराय रोहेला—श्री महावीर बत्रा; सुदर्शन पार्क—प्रो० भारत मित्र शास्त्री; सोहनगज—प० कामेश्वर शास्त्री, शालीमार बाग—प० रविदत्त गौतम; शादीपुर—श्रीमती प्रकाशवती शास्त्री, हौज खास-डी-४८—प० मुनिशंकर वानप्रस्थ, मालवीय नगर—डा० रघुनन्दनसिंह।

—ज्ञानचन्द डोगरा वेद प्रचार प्रबन्धक

बोध-कथा

जनता-जनार्दन की सेवा

भारत में अंग्रेजी राज्य के यशस्वी लेखक एव राष्ट्रीय नेता श्री सुन्दरलाल जी एक बार पूना गए। वह श्रीमद्भगवद्गीता की कर्मयोग की व्याख्या करने वाले भारतीय चिन्तक एव राष्ट्र नेता लोकमान्य बाल गगाधर तिलक के व्यक्तिगत जीवन की एक झांकी लेना चाहते थे। लोकमान्य ने श्री सुन्दरलाल जी को अपने घर पर ठहराया। प्रात. ४ बजे के लगभग तिलक जी उठे। प्रातकालीन नित्य क्रियाओं से निपट कर वह केसरी और मराठा के लिए अग्रलेख लिखने लगे। ग्रन्थ लेखन स्वाध्याय आदि कार्य पूर्ण करते दिन चढ़ गया। मिलने वाले सज्जन आने लगे। थोड़ी देर में लोकमान्य केसरी कार्यालय भी गए। वहा भी उन्होंने काम निपटाए। आवश्यक निर्देश दिए फिर शहर से बुलाने वाले लोगो के साथ नगर गए। शहर के एक-दो विद्यालयों, नगर-आयोजनो मे भाग लेकर जब लोकमान्य घर लौटे, तब मध्याह्न का सूर्य चढ़ गया था। तिलक जी ने पुन: स्नान किया। आवश्यक नियम-विधि पूर्ण कर वह पाकशाला गए! साथ ही सुन्दरलाल जी भी थे। दोनो अपने-अपने आसनो पर बैठ गए। सामने पटरों पर भोजन की थालिया आ गईं। तिलक जी ने रीति के अनुसार आचमन कर जलसिचन कर सुन्दरलाल जी से पूछा—"अब भोजन करें! रुक क्यों गए?"

"मैं सोच रहा था कुछ भगवान की पूजा-आराधना, स्तोत्र एव सन्ध्यावन्दन के मन्त्र तो हुए ही नहीं। भोजन से पहले भगवान की पूजा ही हो जाती।"

ब्रह्ममुहूर्त से प्रारम्भ कर अभी तक मैं क्या कर रहा था। श्री कृष्ण जी के मार्ग का अनुसरण कर निरन्तर जनता-जनार्दन की सेवा ही तो सच्ची पूजा और आराधना है। भोर से उठकर यही तो मैं कर रहा था। घर भर मे छोटे-बडो के भोजन की व्यवस्था कर यज्ञशेष के रूप में यह भोजन भी उनके ही भजनो का एक भाग है।"

—नरेन्द्र

आर्यसमाज गुप्ता कालोनी में वेद प्रचार

आर्यसमाज गुप्ता कालोनी—विजय नगर, दिल्ली ९ के तत्वावधान मे २ अक्तूबर से रविवार १० अक्तूबर तक वेद प्रचार का कार्यक्रम किया जा रहा है। इन दिनों प्रात: ६ बजे ८ बजे तक सामवेदीय यज्ञ एव वेदोपदेश किया जाता है। यज्ञ के ब्रह्मा प० सत्यकाम वेदालंकार और प० गणेशप्रसाद विद्यालकार हैं। ४ अक्तूबर से ९ अक्तूबर को रात्रि ८ बजे से ९-४५ बजे तक प्रात: रात्रि को प्रो० वीरपाल वेदालंकार मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम एव योगीराज श्री कृष्ण पर आर्य समाज का दृष्टिकोण प्रस्तुत कर रहे हैं। व्याख्यान से पूर्व श्री प्रकाशवीर जी व्याकुल मनोहर भजन एव कविता प्रस्तुत करते हैं।

श्री शिवकुमार शास्त्री द्वारा वेदकथा

आर्यसमाज के प्रसिद्ध विद्वान, भूतपूर्व संसद सदस्य श्री शिवकुमार जी शास्त्री द्वारा वेद कथा आर्यसमाज सरोजिनी नगर नई दिल्ली की ओर से ४ अक्तूबर से ९ अक्तूबर ८२ तक रात्रि ९ से १० बजे तक सरोजिनी मार्केट पार्क पंजाब नेशनल बैंक के सामने की जा रही है। कथा से पूर्व प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री सत्यदेव जी रेडियो सिंगर के मनोहर भजन होते हैं।

शिक्षा ट्रस्ट खेड़ाखुर्द के अधिकारी

महर्षि दयानन्द शिक्षा ट्रस्ट (पंजीकृत) खेड़ा खुर्द दिल्ली के नए पदाधिकारी प्रधान-श्री रामलाल मलिक, उपप्रधान—श्री रामभज बत्रा और श्री एच० एस० खेर, प्रबन्धक—श्री सत्यशील, मन्त्री—श्री नरेन्द्र गुप्त।

गुरुकुल खेड़ाखुर्द का वार्षिकोत्सव

गुरुकुल खेडा खुर्द दिल्ली का वार्षिकोत्सव ५-६-७ नवम्बर को मनाया जाएगा। इसमे दिल्ली की आर्यसमाजो एव शिक्षा सस्थाओं से अधिक से अधिक गिनती मे सम्मिलित होने का अनुरोध किया गया।

हिन्दू समाज के धार्मिक मेले

लेखक—अनन्तप्रिय पंडित बड़ौदा

अपने देश मे सैकडों वर्षों से भारत के विभिन्न प्रदेशो मे धार्मिक मेलों का आयोजन ठाठ-बाठ से होता हैं, जिसमे अपना कर्तव्य समझ कर बिना आमंत्रण के लाखों की सख्या मे हिन्दू समाज के आबाल वृद्ध तथा नारी समाज बडे चाव से भाग लेता है। मेले के आयोजन मे धन सग्रह किए बिना जनता भक्ति भाव से सारा प्रबन्ध करती है। आमोद-प्रमोद के साधनों के उपरात खान-पान के लिए समुचित प्रबन्ध होता है और भिन्न-भिन्न माल बेचने वाले व्यापारियो की दुकानें भी लग जाती हैं।

पुजारी, पडे, कथावाचक, साधु, संन्यासी भी अपना आसन जमाकर अपने भक्त मडल को उनकी रुचि की धर्म भावना के अनुसार परोसते हैं। अभी-अभी रामलीला के प्रदर्शन के लिए बड़े शहरो मे भिन्न-भिन्न सगठन खडे करके कार्यकर्ता बडी धूम से रामजीवन का प्रदर्शन करते हैं और समाज मे राम भक्ति की गणना जाग्रत करते हैं। इन मेलो मे जनसमूह को आकर्षित करने के लिए आर्यसमाज के भजनीक और उपदेशक भी [illegible] डेरा जमाते हैं।

क्या हमने कभी विचार किया है कि परम्परा से होने वाले मेले सैकडो वर्षों से प्रवाह के रूप में होते रहते हैं। आर्यसमाज प्रति वर्ष अपने वार्षिक उत्सव करता है। उत्सवों का खर्च और आयोजन करना पडता है और खर्च मिलने पर ही विद्वान, उपदेशक और भजनोपदेशक पधारते हैं। उत्सवो के साथ शोभा-यात्रा का आयोजन भी होता है। व्याख्यान और भजन भी बडी उच्चकोटि के होते हैं, परन्तु जो आकर्षण परम्परागत मेलों का है—वह हम अभी तक नहीं कर पाए। उत्सवों में दान मिल जाए तो हम उत्सव को सफल मानते हैं। हमने अपने प्रचार के आयोजन को को उसी ढग पर रखा है जिसका प्रादुर्भाव महर्षि जी ने स्वय किया था। महर्षि जी ने तो धार्मिक, सामाजिक और राजनीतिक क्राति करनी थी—उनकी क्राति का फलस्वरूप आर्यसमाज है पर आर्यसमाज ने लोकमानस के अनुरूप सम्मिलित रूप में कोई आयोजन नहीं बनाया। इसी प्रकार आर्यसमाज के सत्सगो में भी आर्यसमाजी परिवारो की महिलाएं और बच्चे रस नहीं लेते--युवक भी उपराम हो रहे हैं।

हमारे जितने भी विशिष्ट कार्यक्रम थे—वे समाज ने अपना लिए हैं—हमारे सामूहिक रूप आंदोलनों का तो प्रभाव पड़ता है—पर आर्यसमाज का आकर्षण पहले जैसा नहीं रहा, इसकी छानबीन करने का हमें समय नहीं है।

इस युग में ईसाई संस्थाओं ने युगानुसार अपने प्रचार कार्य में परिवर्तन किए हैं। 'मेरी कोरेली' एक अंग्रेज महिला ने जितने भी उपन्यास लिखे हैं--उसमे ईसाई धर्म की श्रेष्ठता को कथा मे ओत-प्रोत कर दिया है 'टेन कमान्डमेन्टस' नाम की और इसी प्रकार की अनेक फिल्मों में ईसाई धर्म की श्रेष्ठता बताने का फिल्म निर्देशकों ने सफल प्रयत्न किया है।

आर्यसमाज तो प्रचार में कला का उपयोग करना सिद्धांतो के विरुद्ध मानता है। जब आर्यसमाज की शताब्दी के समय पोरबन्दर गुरुकुल आर्य कन्या की आचार्या सुश्री सविता बहन ने 'महर्षि दयानन्द दर्शन' नाम का एक सास्कृतिक कार्यक्रम रखा था और उसमे महर्षि जी के आगमन से पूर्व मन्दिरो मे किस प्रकार काम होता था और किस प्रकार रासलीला होती थी, उस दृश्य को देखते ही आर्यसमाज के सिद्धांतवादी योद्धा मैदान मे उतर पड़े और आगे का प्रदर्शन बन्द हो गया। उसी प्रदर्शन को आर्य कन्या महाविद्यालय बड़ौदा के स्वर्ण जयन्ती महोत्सव पर आर्यसमाज के प्रमुख नेताओं ने देखा और सराहना की। आर्यसमाज के सिद्धांत सर्वश्रेष्ठ होने पर भी आकर्षण नहीं रखते, कारण हम उन्हें लोकभोग्य नहीं बना सके। क्या हिन्दू मेलों से हम कुछ शिक्षण लेकर आर्यसमाज के लिए भी कुछ ऐसे मेले बना सकेंगे—जिसमें जनता जनार्दन अपने आप ही भाग लेने के लिए आकर्षित हो?

卐 'आर्यसन्देश' के
स्वय ग्राहक बनें—
दूसरों को बनाएं

卐 आर्यसमाज के सदस्य
स्वयं बनें —
दूसरों को बनाइए

卐 हिन्दी-संस्कृत भाषास्वयं पढ़ें
दूसरों को पढ़ाइए—

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए श्री सरदारी लाल वर्मा द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा भाटिया प्रेस २५७४, रघुबरपुरा नं० २ गांधी नगर दिल्ली ३१ में मुद्रित कार्यालय १५ हनुमान रोड नई दिल्ली : फोन३१०१५० ।

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक मुखपत्र

एक प्रति ३५ पैसे वार्षिक १५ रुपये वर्ष : ६ अंक ५१ रविवार १७ अक्तूबर १ कार्तिक वि० २०३९ दयानन्दाब्द—१५८

5-11-82

आर्यसमाज की पुरानी पीढ़ी समाप्त होती जा रही है

श्री रघुवीर सिंह शास्त्री के निधन से हरियाणा को ही नहीं, देश की क्षति

दिल्ली की आर्यसमाजों एवं आर्यसंस्थाओं की ओर से दिवंगत आत्मा को श्रद्धांजलि : दीवानहाल में शोक सभा

नई दिल्ली। खेद है कि पुरानी पीढ़ी समाप्त होती जा रही है और नयी उसका स्थान ग्रहण नहीं कर रही है। श्री रघुवीर सिंह शास्त्री मजे हुए लेखक और वक्ता थे, उनका दृष्टिकोण सतुलित और समन्वित था, उनके असामयिक निधन से केवल हरियाणा की ही नही, सम्पूर्ण भारत की क्षति हुई है, सम्भवत जिसे पूर्ण करना आसान नहीं होगा।'—इन शब्दों में भू० पू० केन्द्रीय राज्य शिक्षा-मन्त्री प्रो० शेरसिह ने रविवार १० अक्तूबर को प्रात: आर्यसमाज दीवान हाल मे आयोजित दिल्ली की आर्यसमाजो एव आर्यसंस्थाओं की सयुक्त शोक सभा में अपनी श्रद्धांजलि प्रस्तुत की। भू० पू० ससद सदस्य एवं गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय के भू० पू० कुलपति आर्य विद्वान श्री रघुवीरसिह शास्त्री के प्रति श्रद्धांजलि प्रस्तुत करने के लिए आयोजित शोक सभा की अध्यक्षता करते हुए स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती ने कहा—'शास्त्री जी के निधन से वैसे तो सभी सम्बद्ध व्यक्तियो और सस्थाओ को क्षति पहुची है, परन्तु हरियाणा को सर्वाधिक क्षति पहुची है। वह उसके प्राण थे, सिद्धांती जी के बाद शास्त्री जी के निधन से हरियाणा को जो क्षति पहुची है, उसकी पूर्ति सरलता से सम्भव नही है। वह धारा प्रवाह बोलने वाले वक्ता थे तो सफल लेखक और सम्पादक भी थे।' उनकी स्मृति मे हरियाणा मे स्मारक की स्थापना के लिए अथवा उनकी जीवनी प्रकाशित करने के लिए स्वामी ओमानन्द जी ५१००) के दान की घोषणा की। स्वर्गीय रघुवीरसिह शास्त्री के ज्येष्ठ सुपुत्र श्री सोमपाल जी ने इस कोष में ५१००) देने की घोषणा की।

दीवान हाल में आयोजित इस शोक सभा में दिवंगत आर्य नेता के प्रति दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामनाथ चढ्ढा, आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य के प्रधान महाशय धर्मपाल जी, प्रादेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के महामंत्री श्री रामनाथ सहगल, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के मन्त्री श्री सच्चिदानन्द शास्त्री आदि ने अपनी सस्थाओ की ओर से श्रद्धासुमन अर्पित किए। फीजी में भारत के भू० पू० राजदूत एव राजनयज्ञ कैप्टन भगवानसिह ने घोषित किया यदि आज कर्णवास मे महर्षि का स्मारक विद्यमान है तो उसके प्रेरणास्रोत श्री रघुवीरसिह शास्त्री थे, विदेशों के आर्यजन एव आर्य सस्थाए उनसे प्रेरणा ग्रहण करते थे। श्री मनुदेव शास्त्री ने कहा शास्त्री जी सस्कृत एव भारतीय संस्कृति के कट्टर समर्थक थे। श्री महेन्द्रकुमार शास्त्री ने कहा—सामाजिक कुरीतियाँ दूर करने में उन्होने इससे पूर्व परिवार मे ही आचरण किया था। भू० पू० पार्षद श्री राधेलाल एव हरिजन नेता श्री चितामणि ने शास्त्री जी की स्मृति पिछडे लोगो में स्मारक बनाने का अनुरोध किया।

पत्रकार श्री क्षितीश वेदालकार ने कहा —शास्त्री के निधन से हरियाणा की आर्यसमाज का एक पाया टूट गया है, श्री सिद्धाती जी के निधन से उसका एक पाया पहले ही ध्वस्त हो गया था, अब हरियाणा की आर्यसमाज के दो मुख्य आधार स्वामी ओमानन्द जी एव प्रो० शेरसिह ही बचे हैं। श्री रामनाथ सहगल ने दिवगत नेता के परिजनो का ख्याल करने का अनुरोध किया। भाई महावीर ने कहा—शास्त्री जी सच्चे मार्गदर्शक थे। इस अवसर पर अनेक नगरो की प्रतिनिधि सस्थाओ ने श्री रघुवीरसिह शास्त्री के प्रति अपनी भावपूर्ण श्रद्धाजलि प्रस्तुत की। सयुक्त शोक सभा का सयोजन आर्यसमाज दीवान हाल के प्रधान श्री सूर्यदेव ने किया। उन्होंने स्वर्गीय आत्मा के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए एक शोक प्रस्ताव रखा जिसे सब ने गायत्री मत्र के पाठ के साथ स्वीकार किया। आगामी २७ अक्तूबर को हरियाणा की आर्य संस्थाओं की ओर से शास्त्री जी के प्रति श्रद्धाजलि प्रस्तुत कर उनके स्मारक के निर्माण के लिए विशेष श्रद्धाजलि सभा रोहतक मे आयोजित की गई है। □

सरकारी भूमि पर बनी मस्जिदें हटाना इस्लाम के अनुकूल

जन. जिया की मांग पर शरियत अदालत का फैसला : पाक में बनी सैकड़ों अवैध मस्जिदें टूटेंगी

नई दिल्ली। पाकिस्तान के राष्ट्रपति जन० जिया-उल-हक की ओर से पाकिस्तान की शरियत अदालत से पूछा गया था कि वह इस्लाम के अनुसार यह बताएं कि बिना स्वीकृति के सरकारी भूमि पर बनी मस्जिदों को हटा देने मे इस्लाम का अपमान तो नहीं हो जाता ? जन० जिया की प्रार्थना के उत्तर मे शरियत अदालत ने फैसला किया है कि सरकारी जमीन पर बिना मजूरी बनाई जाने वाली मस्जिदों में जहा नमाज अदा करना उचित नहीं है, वहां ऐसी मस्जिदो को हटाया जाना इस्लाम के प्रतिकूल भी नहीं है।

ज्ञात हुआ है कि इस फैसले के सन्दर्भ में अकेले फैसलाबाद नगर से दस दर्जन मस्जिदें हटा दी जाएंगी। जानकार सूत्रों के अनुसार शरियत अदालत के फतवे को निगाह में रखकर बिना इजाजत के सरकारी भूमि पर बनी १२० से अधिक मस्जिदें हटा दी जायेंगी।

प्रधानमन्त्री द्वारा 'वेदों में मानवता : ग्रन्थ का विमोचन

आर्य विद्वान् डा० दिलीप वेदालंकार का नवीन ग्रन्थ

नई दिल्ली। ७ अक्तूबर के दिन प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाधी ने आर्य विद्वान् डा० दिलीप कुमार वेदालकार द्वारा लिखित 'वेदो मे मानववाद' पुस्तक का विमोचन किया। इस ग्रन्थ मे वेदो के मानवतावाद का वर्णन है कि सारी मनुष्य जाति एक इकाई है, उसमे न कोई भौगोलिक या प्राकृतिक सीमा है, इसमे वेद का यह सन्देश भी दिया गया है कि मनुष्य वेदो द्वारा व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक कर्तव्यों का ज्ञान प्राप्त कर सकता है।

विमोचन समारोह के अवसर पर अनेक प्रमुख पत्रकार एव विद्वान् उपस्थित थे। विगत १६ वर्षों से डा. दिलीप ४० से अधिक देशो का भ्रमण करके वैदिक सस्कृति का सन्देश सुनाते रहे हैं। वह इससे पूर्व 'गायत्री रहस्य,' विदेशी विद्वानो की दृष्टि मे वेद', 'विश्व के विद्वानो की दृष्टि मे हमारी सस्कृति की विरासत' तथा 'हिन्दू ससार' आदि आदि अनेक पुस्तके लिख चुके हैं।

सम्पादक—नरेन्द्र विद्यावाचस्पति

व्यवस्थापक—प्रद्युम्नलाल तलवाड़

वेद-मनन

देवो ! हमें दीप्त करो

यास्ते अग्ने सूर्ये रुचो दिवमातन्वन्ति रश्मिभिः।
ताभिर्नो अद्य सर्वाभी रुचे जनाय नस्कृधि ॥ यजु. १३-२२
या वो देवा सूर्ये रुचो गोष्वश्वेषु या रुचः।
इन्द्राग्नी ताभि: सर्वाभी रुच नो धत्त बृहस्पते ॥ यजु १३-२३

ऋषि —इन्द्राग्नी। देवता--अग्नि, इन्द्राग्नी बृहस्पति। छन्द--भुरिगनुष्टुप्, अनुष्टुप्।

शब्दार्थ—हे (अग्ने(भर्ग रूप ब्रह्म (ते) तेरी (या) जो (रुच) दीप्तिया (सूर्ये) सूर्य मे स्थित होकर (रश्मिभि) अपनी किरणो द्वारा (दिवम्) सारे द्युलोक और दिव्य पदार्थों को (आतन्वन्ति) व्याप्त कर लेती हैं, (ताभि. सर्वाभि) उन सब दीप्तियो से (अद्य) अब (न) हमे (रुचे) शोभा उत्साह, आनन्द और (जनाय) प्रजनन के लिए (कृधि) समर्थ कर। हे (देवा) इन्द्र-अग्नि और बृहस्पति देवो (व.) तुम्हारी (या) जो (रुच.) दीप्तिया (सूर्ये) सूर्य-मण्डल मे (गोषु) ज्ञानेन्द्रियों तथा सोम्य किरणो और गायो मे तथा (अश्वेषु) कर्मेन्द्रियो शक्तिप्रद किरणो तथा अश्वो मे विद्यमान हैं (ताभि सर्वाभि) उन किरणो द्वारा (न) हम सब मे (रुचम्) दीप्ति, शोभा और आनन्द (धत्त) धारण करो।

निष्कर्ष—अग्नि रूप परमेश्वर को मार्गदर्शन कराने वाली (अग्नि) ऐश्वर्य और शोभा प्रदान करने वाली (इन्द्र) तथा ज्ञान प्रदान करने वाली (बृहस्पति) दीप्तिया हैं। इनका एक-एक रूप सूर्य, गौ और अश्व मे प्रकट होता है। और इनके द्वारा मार्गदर्शन, प्रजनन और ज्ञान व ऐश्वर्य प्राप्त होता है।

सूर्य सब प्रकार के प्रजनन, प्रेरण और उत्पादन का प्रतीक है। (गाय और भूमि) सौम्यता, अल्प के बदले भूरि प्रदान, दीप्ति, वाणी तथा ज्ञान ग्रहणता की प्रतीक है। अश्व वेग प्रचण्डता, सामर्थ्य और विविध सिद्धियों तथा मन का प्रतीक है। इसलिए अग्नि और उसके इन त्रिविध रूपों से इन सब गुणों को प्रदान करने की प्रार्थना की गई है।

विशेष—इन मन्त्रों के ऋषि इन्द्र और अग्नि हैं। तथा देवता इन्द्र-अग्नि और बृहस्पति हैं। ऋषि और देवता का एक होना बहुत कम देखा जाता है। यह इस बात का संकेत भी है कि ऋषि और देवता का सम्बन्ध शिष्य-गुरु, पुत्र-पिता साधक-साध्य जैसा है। अग्नि, मार्गदर्शन की चाह तथा प्रवृत्ति; इन्द्र ऐश्वर्य की कामना तथा प्रदान; बृहस्पति ज्ञान प्राप्ति द्वारा बृहत बनने की कामना तथा ज्ञान दान द्वारा बृहत् बनाने की कामना, और सूर्य उत्पादन प्रजनन और प्रेरण प्राप्त करने तथा कराने का सकेत करते हैं। इस मन्त्र के छन्द शब्द का सकेत करता है कि हमे जो करना या बनना हो उसके अनुकूल तत्त्वो तथा स्थितियों की स्तुति तथा प्रतिकूल तत्त्वो तथा स्थितियो का अवरोध करना चाहिए।

अर्थपोषक प्रमाण—देवाः--देवा वै धर्मणाध्रुवा। काठ ३५-६ देवा वै यशस्कामा:। ता० ७-५-६ न वै देवा: स्वपन्ति। माश ३-२-२-२२। अग्निरेव ब्रह्म (भर्ग:) गो० १-५-१५ रुचम्--रुच् दीप्तौ, अभिप्रीतो च। दीप्ति, उत्साह, आनन्द। आतन्वन्ति--तनु विस्तारे।

५२२, ईश्वर भवन, खारी बावड़ी, दिल्ली-११०००६

लोक-चिन्तन

साहित्य और नैतिकता

—डा० विजय द्विवेदी

साहित्य एक शाब्दिक कला है और प्रत्येक उच्च कोटि की कला किसी न किसी रूप मे 'आत्म' की ही अभिव्यक्ति होती है। आत्म, परमात्मा का अंश और अनात्म का सहोदर है, इसलिए सभी कलात्मक अभिव्यक्तियां इस द्वन्द्वात्मक जगत में आत्म-अनात्म, जीव-जगत, व्यक्ति-समाज, आगत-अनागत के बीच सेतु का काम करती है। साहित्य समाज के मूलाधारो को लेकर चलता है और मानव की चिरन्तनता को काल के प्रभाव एवं प्रवाह से मुक्त करके उसके स्वरूप का निर्णय करता है। तात्पर्य यह कि साहित्य-शब्दार्थयोयथावत्सहभावने वह-विद्या है, जिसमें मानव मात्र के हित की भावना निहित हो। इस साहित्य का एक सांस्कृतिक स्रोत होता है। साहित्यकार इस स्रोत की पहचान करके इसका गहन मन्थन करके, भीतर से सामाजिक मानव की कल्याण कामना सेतु 'व्यवहारविदे शिवेत रक्षतये' जैसे तत्त्वों की स्थापना करता है। जहां ऐसा नहीं होता वहां साहित्य मानसिक विलास बन कर रह जाता है। तब उसकी सवेदना अनुभव और अभिव्यक्तिया इतनी खोखली और निर्जीव बन जाती हैं कि उनमे किसी के मर्म को छूने की सामर्थ्य नहीं रहती।

साहित्य का सम्बन्ध सामाजिक मानव के हित की भावना से होता है, तो नैतिकता का समाज की सामान्य व्यवस्था की रक्षा से, उसके निर्वाह से। मनुष्य ने अपने दीर्घकालीन अनुभवो, प्रयत्नो और प्रयासो से सामूहिक जीवन के सफल निर्वाह हेतु सामान्य रूप से स्वीकृत कुछ आदर्शों का प्रणयन किया है, जिनसे समाज के सदस्य बिना एक दूसरे से टकराए आगे बढ सकते हैं। इन आदर्शों को नियम, नीति, मर्यादा, विधान किसी भी सज्ञा से जाना जा सकता है। यह एक एक ऐसा मौन समझौता है जिस पर आचरण करने से सामाजिक जीवन मे उद्देश्यों की एकता और शाश्वत मूल्यो मे आस्था-विश्वास की रक्षा होती है, परन्तु जब कभी सामाजिक जीवन मे ऐसी स्थिति आ जाती है कि व्यक्ति के आचार-विचार, आचरण व्यवहार उसकी घोषित नीतियो के विरुद्ध सिद्ध होने लगते हैं, तब नैतिक और मर्यादित नहीं रह जाते, तब सामाजिक समस्याएं पैदा होती हैं, सांस्कृतिक अवरुद्धता उत्पन्न हो जाती है और व्यक्ति जीवन-जगत के चरम सत्य को आत्मसात करने मे समर्थ नहीं हो पाता।

साहित्यकार जीवन-सग्राम मे जूझते मनुष्य को विच्युति एव विकृतियो से बचने मे मदद करता है। उसके जीवन से असत्य, अन्धकार, तामस और निराशा को दूर कर साहस, सत्य, आत्मविश्वास और मूल्यबोध को बढ़ाता है। साहित्य मानव को मानव से जोड़ता है, मानव को सत्यय से, सत्य से, सहृदयता-सहानुभूति से मण्डित करता है। यह सब तभी हो सकता है जब साहित्य 'सत्' हो, साहित्यकार मे 'सत्' हो। पैसा कमाने अथवा नाम कमाने के लिए लिखे गए साहित्य (? से यह सभव नहीं है। ऐसा साहित्य जिसमें आचरण को सत्यता न हो आत्मवचना, जगवचना है। उसे आत्माभिव्यक्ति का नाम देना अनैतिक है और अनुचित है। दुख की बात है, आज का अधिकांश लेखन धोखे की टट्टी है, तब भी पूजित और पुरस्कृत हो रहा है। जिन लेखको को जगह जेल मे होनी चाहिए थी, वे राजद्वार के द्वारपाल बने बैठे हैं। यह कम विडम्बना की बात नहीं है।

महाराजा पूर्णचन्द महाविद्यालय, बारिपदा (उड़ीसा)

आधुनिक परिस्थितियों में युवा पीढ़ी का कर्तव्य

शनिवार ३० अक्तूबर, १९८२ को दोपहर २ बजे आर्यसमाज पटेल नगर नई दिल्ली मे विद्यालयो के छात्र-छात्राओ की भाषण प्रतियोगिता 'आधुनिक परिस्थितियो मे युवा पीढी का कर्त्तव्य' विषय पर होगी। तीन पुरस्कार तथा सात पारितोषिक दिए जाएगे। २८ अक्तूबर तक प्रतियोगिता मे भाग लेने के इच्छुक अपने नाम श्री धर्मेन्दु जी १६५४ कूचा दखिनीराय, दरियागज नई दिल्ली-२ के पते पर भेज दे।

आर्यसमाज अबोहर (फीरोजपुर) का उत्सव आर्यसमाज अबोहर (फीरोजपुर) का वार्षिकोत्सव १५-१६-१७ अक्तूबर को बड़े समारोहपूर्वक मनाया जाएगा, उसमे बड़े-बड़े उपदेशक सन्यासी और भजन मडलियां पधार रही हैं।

आर्यसमाज द्वारा बाढ़ पीड़ितों की मदद

नगर आर्यसमाज साहबगज गोरखपुर द्वारा बाढ़ पीडित क्षेत्र करमैनी घाट से नाव द्वारा जाकर कोनी, गायघाट, बेलहवां आदि मे निरन्तर दो दिन तक तक समाज की महिला एवं पुरुष सदस्यो द्वारा भोजन वितरण का कार्य सम्पन्न किया गया। इस सहायक दल मे श्री प० द्विजराज शर्मा अध्यक्ष जिला आर्य प्रतिनिधि सभा गोरखपुर, रमेशप्रसाद गुप्त मन्त्री नगर आर्य समाज, देवीलाल आर्य कोषाध्यक्ष, नगरनाथ प्रसाद पान विक्रेता साहबगज एवं दर्जनो महिला सदस्याओं ने भाग लिया। निर्धन एव अपंगों मे वस्त्र एव बच्चों में मिष्ठान्न, दियासलाई आदि बाँटी गई।

कभी जुआ न खेलो, कृषि करो

ओ३म् अक्षैर्मा दीव्यः कृषिमित् कृषस्व वित्तेरमस्व बहुमन्यमानः।

तत्र गाव. कितव तत्र जाया तन्मे विचष्टे सवितायमर्यः ॥ऋ.१०-३४-१३

कभी जुआ न खेलो, दत्तचित्त होकर कृषि करो, उसमे सन्तुष्ट होने पर श्रम मे वित्त की प्राप्ति होती है, वही सच्चा धन है। गार्हस्थ्य-सुख एव पशुधन से परिवार की उन्नति-समृद्धि होगी, इसलिए सत्याचरण करो, कभी भी जुआ न खेलो।

ओ३म्
आर्य सन्देश

समस्याएं और समाधान

कहावत है कि जब घर में आग लग जाए तब उस आग को बुझाने के लिए कुआ खोदने की बात मूर्खता ही कही जाएगी। सम्भावित आग की रोकथाम के के लिए उसे बुझाने के लिए अग्निशमन की व्यवस्था पहले ही करना बुद्धिमत्ता है। अधिक अच्छा तो यही है कि आग लगे ही नहीं, आग भूले-भटके लग जाए तो समय रहते उसे नियन्त्रित करने की पूर्व व्यवस्था ही उचित कही जाएगी। खेद है कि ब्रिटिश शासन की कई दूसरी बुराइयों की तरह हमारे शासक वर्ग को उस समय तक कोई समस्या, समस्या ही नहीं जान पड़ती जब तक वह समस्या उग्र होकर भीषण संघर्ष एव विस्फोट के रूप में प्रकट न हो जाए। केन्द्र की चौ० चरणसिंह की काम चलाऊ सरकार के समय असम की जो छोटी-सी समस्या उभरी थी अब एक विकराल संकट के रूप मे परिवर्तित होती जा रही है। देश के पूर्वोत्तर अंचल में असम, मिजोरम आदि की समस्याएं अपनी विकरालता ग्रहण कर ही रही हैं, केन्द्रीय सरकार कभी-कभी उसे सुलझाने के लिए त्रिपक्षीय वार्ता कर लेती है, फिर मामला टल जाता है। यह समस्या भारत के लिए एक लाइलाज नासूर का रूप धारण न कर ले उससे पूर्व केन्द्र सरकार को सचेत होकर समस्या का समाधान ढूढ लेना चाहिए।

अभी देश के पूर्वोत्तर अचल की समस्या सुलझी नहीं है तो देश पश्चिमोत्तर क्षेत्र से अशांति के बादल उमड पड़े हैं। पिछले कुछ समय से अकाली दल वहां मोर्चा जमाए हुए है। अकाली नेताओ से बातचीत के तीन दौर चले परन्तु कोई समझौता नही हो सका। पिछले दिनों ससद मे गृह मत्री श्री प्रकाशचन्द्र सेठी ने अकाली नेताओ को बातचीत का निमत्रण दिया था, अब उनके नेता लोंगेवाल ने कहा है कि जब तक हमारी आनंदपुर साहब की मांगें नही मान ली जातीं, तब तक हम अपना मोर्चा बन्द नही करेंगे। आनन्दपुर की मांग का मतलब सामान्य नही है, इसका वास्तविक अर्थ है कि सिख अब पृथक खालिस्तान मांगने के लिए तुल गए हैं। आनन्दपुर की मांग मे पजाबी सूबे को कुछ आर्थिक अधिकार देने की ही बात नही है प्रत्युत इसके आधार पर वह समीपस्थ हरियाणा, हिमाचल, राजस्थान के हिंदू तथाकथित पजाबी भाषी क्षेत्रों को बृहद् पजाब का भाग बनाना चाहते हैं। वे पजाब के नमूने की एक अखिल भारतीय शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी की स्थापना भी करवाना चाहते हैं। इस मोर्चे का सीधा लक्ष्य यह है कि जल्दी या देर से पृथक खालिस्तान बने, और वह सारे देश की राजनीति को प्रभावित करता रहे।

जहाँ तक सिखो की किसी वैध धार्मिक मांग का प्रश्न है, उस पर सहानुभूतिपूर्वक विचार करना चाहिए और उन पर अमल भी होना चाहिए, परन्तु कुछ साम्प्रदायिक तत्त्वो की मांग के आधार पर देश के पश्चिमोत्तर प्रदेश मे नए साम्प्रदायिक पृथक राष्ट्र के अस्तित्व को स्वीकार करना भारत की सप्रभुसत्ता को ही चुनौती देना होगा। इस सम्बन्ध में केन्द्र सरकार को समय रहते समस्या का समाधान करना चाहिए। इसी के साथ पंजाब तथा समीपस्थ प्रदेशों की आर्य हिंदू जनता को भी सजग, सन्नद्ध और संगठित हो जाना चाहिए, जिससे साम्प्रदायिक अकाली तत्त्वो की अनुचित राष्ट्र विरोधी माग के सामने सरकार घुटने न टेक दे। स्थिति निरन्तर गम्भीर हो रही है। कहते हैं कि मोर्चे के २५ हजार व्यक्ति जेलो में बन्द हैं, यह स्थिति अधिक न बिगडे, इसके लिए सरकार को सभी राजनीतिक धार्मिक तत्त्वों के सम्मुख यह स्पष्ट कर देना चाहिए कि कि सिखो की वैध शिकायतो पर विचार एवं कार्यवाही हो सकती है, परन्तु उनकी किसी अनुचित मांग के सामने झुककर देश की स्वतन्त्रता और सुरक्षा को सकट पैदा नही किया जा सकता। इस बारे मे केन्द्रीय सरकार के प्रत्येक सुदृढ कदम का पंजाब, दिल्ली और समीपस्थ क्षेत्रों की आर्य हिंदू जनता समर्थन करेगी।

चिट्ठी-पत्री

मांस का निर्यात रोका जाए : वित्तमंत्री का संकेत दुर्भाग्यपूर्ण

यह अत्यन्त आश्चर्य व दु.ख की बात है भारत सरकार के वित्त मन्त्री जी द्वारा देश के मांस निर्यातको की बैठक बुलाकर मास के निर्यात-व्यापार को सात करोड से बढाकर सौ करोड़ तक करने का प्रोत्साहनपूर्ण सकेत दिया गया। एक ओर हमारे देश की प्रधानमत्री माननीया श्रीमती इन्दिरा गाधी जी अनेक प्रान्तो के मुख्यमन्त्रियों को पत्र लिखकर गोवध प्रतिबन्ध की कार्यवाही का कडाई से पालन करने का निर्देश देती हैं तो दूसरी ओर वित्त मत्री जी द्वारा विदेशी मुद्रा अर्जन के लोभ मे गोमांस निर्यात को बढावा देकर गोवध प्रतिबन्ध के विपरीत प्रोत्साहन दिया जा रहा है। यह दोहरी कार्यप्रणाली हमारे देश के लिए अत्यन्त दुर्भाग्यपूर्ण है।

गोधन किसी देश की आर्थिक समृद्धि का मूलाधार है, जिसका उदाहरण यूरोप के अनेक देशो से लिया जा सकता है। हालैंड, डेनमार्क आदि कुछ अन्य छोटे-छोटे देश हैं जहाँ घी-दूध पुष्कल मात्रा मे उत्पन्न होता है।

यद्यपि गोवध प्रतिबन्ध की दिशा मे 'देवनार सत्याग्रह' चल रहा है तथापि वह पर्याप्त नहीं है। रेलवे प्रशासनिक अधिकारियो द्वारा गोधन की लदान बन्द करने के स्पष्ट आदेशो के पश्चात भी गाडियों द्वारा गोधन जा रहा है। अत. आज आवश्यकता है सम्पूर्ण देश में आंदोलन को जन-जन मे गोधन की रक्षा व सम्वर्द्धन हेतु जागृति की। अतएव भारत सरकार से मेरा अनुरोध है कि गोधन जैसी आर्थिक व सास्कृतिक समृद्धि को बचाने हेतु अपने निर्यात नियमो पर पुनर्विचार कर देश मे गोवध प्रतिबध को अविलम्ब लागू करे।

—सुरेशचन्द्र शास्त्री महामत्री, आर्य युवक सभा, ६२६ मुट्ठीगज इलाहाबाद।

अश्लील गीतों पर प्रतिबन्ध लगे

इस समय जो लोग प्रात काल सोकर उठते हैं, तो निश्चय ही विभिन्न लाउडस्पीकरो द्वारा गाए जा रहे गीतो को अवश्य सुनते होगे। क्या शहर? क्या गांव? सब जगह लाउडस्पीकरो की बाढ सी है ही। लाउडस्पीकरो की बाढ से किसी को एतराज नहीं हो सकता लेकिन जो गीत उन पर सुनने को मिलते हैं, यदि वे अश्लील एव लज्जाजनक हो तो उन पर सख्त एतराज होना आवश्यक है। ये गीत इतने भद्दे तथा अश्लील होते हैं कि इन्हे सुनकर सिर शर्म से झुक जाता है। इन गीतों मे नारियो के अग-प्रत्यगो का नग्न चित्रण होता है जिसे सुनकर नवतियां व नवयुवको पर क्या प्रभाव पडता होगा? यह विडम्बना ही तो है कि जिस देश मे नित्य प्रात व साय वेदो की ऋचाए गूजा करती थी, उसी देश मे वेद ऋचाओ के स्थान पर नारियो के गुप्त अगो से सम्बन्धित नग्न गीत गूज रहे हैं। हमे नही मालूम कि ये गीत सिनेमा के हैं या कहां के हैं? लेकिन ये भद्दे व अश्लील गीत हमारी तरुण व युवा पीढी को सर्वनाश की ओर ले जा रहे हैं, यह सत्य है क्या हमारी सरकार समाज को गर्त मे धकेलने वाले इन गीतो पर प्रतिबन्ध नही लगा सकती?

—राधेश्याम आर्य एडवोकेट, मुसाफिरखाना, सुलतानपुर (उ० प्र)

पं० जयप्रकाश जी की सेवाओं का लाभ उठाएं

समस्त आर्यसमाजो की सेवा मे निवेदन है कि श्री प० जयप्रकाश जी पूर्व इमाम बैतिया बडे योग्य विद्वान हैं। वह अपने सारे सुखो को लात मार कर आर्य समाज मे पधारे हैं—उनकी विद्वत्ता, नम्रतादि शुभ गुणो से आर्यसमाज की शान बढ़ी है। वह उच्चकोटि के लेकचरार है—आर्यसमाजे बुलाकर अपने उत्सवो को सफल बनाए। उनके व्याख्यानो मे जनसमूह उमड पडता है और आर्य विचारधारा का प्रसार होता है। उनका पता है—प० जयप्रकाश आर्योपदेशक, डी० ए० वी० कालेज, हिसार, १२५००१ शान्तिप्रकाश आर्योपदेशक, गुडगांव।

तपोवन देहरादून में यज्ञ और सत्संग

वैदिक साधन आश्रम तपोवन देहरादून का अर्द्धवार्षिक सत्सग, साधना शिविर तथा आंशिक ऋग्वेद यज्ञ सोमवार १ नवम्बर से रविवार ७ नवम्बर तक आयोजित किया जा रहा है। इस अवसर पर महात्मा दयानन्द जी, आचार्य रामप्रसाद, महात्मा बल्देव जी तथा भजनोपदेशक पधार रहे हैं। बृहद् यज्ञ महात्मा दयानन्द वानप्रस्थी की देखरेख मे होगा।

महर्षि दयानन्द के वेदभाष्य की विशेषताएं

८ अगस्त १९८२ के दिन केन्द्रीय आर्य सभा, बम्बई द्वारा आयोजित वेदार्थ परिगोष्ठी मे प्रस्तुत शोध-पत्र)

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने वेदभाष्य आरम्भ करने के पूर्व स्पष्ट कर दिया है कि 'येन आधुनिक भाष्यै ये टीकाभि' वेददूषका. दोषा' सर्वे विनश्येयु अन्यार्थ विवर्णना', अर्थात् भाष्य ऐसा होगा कि जिससे सत्यार्थ के विरुद्ध अब तक के बने भाष्य और टीकाओं से वेदो के सम्बन्ध मे जो मिथ्या दोष आरोपित हुए हैं, उनका निवारण हो जाएगा।

इस प्रकार सत्यार्थ भाष्य करते समय महर्षि ने तीन मूलभूत बातों पर ध्यान दिया है। प्रथम—ईश्वर सर्वशक्तिमान है। द्वितीय—जीवात्मा या आत्मा अल्पज्ञ और चेतन युक्त—नित्य हैं और तृतीय—प्रकृति जड वह स्वयमेव कुछ भी करने मे अक्षम है। प्रकृति की अक्षमता सृष्टि के कर्त्ता, धर्त्ता और हर्त्ता मे है। प्रकृति सृष्टि का आरम्भ, अंत और धारण भी नहीं कर सकती, वह केवल जड पदार्थ है। परमात्मा प्रकृति को धारण करता है, वही सृष्टि का रचयिता है, जीव अल्पज्ञ है वह केवल भोक्ता है अपने कर्मों का। ईश्वर नियोक्ता है और प्रकृति भोग्या है। प्रकृति में रासायनिक, भौतिक और आणविक परिवर्तन प्रकृति के, 'सत्व रजस तमसा साम्यावस्था' गुणो के कारण है। प्रकृति नित्य है और उसका निर्माण ईश्वर द्वारा नहीं, किंतु सृष्टि का निर्माण वह ईश्वर करता है। प्रकृति असंख्य रूपो मे त्रिगुणात्मक है और जीव असख्य सदाचेतन और अल्पज्ञ है, यहां जीव से अर्थ आत्मा है। प्रकृति विशुद्ध रूप मे अचेतन होने पर आत्मा की सहचारिणी हैं और नित्यत्व होने पर भी परिवर्तनधर्मिणी है।

महर्षि दयानन्द के सामने भाष्य करते समय षडदर्शनकारों की रचनाएं, ईश, केन, कठ, प्रश्न, मुडक, माडूक्य, एतरेय, तैत्तिरीय, छांदोग्य और बृहदारण्यक ये दशोपनिषदें, चार ब्राह्मण ग्रन्थ—ऐतरेय, शतपथ, साम और गोपथ; चार उपवेद आदि वैदिक ग्रंथ; इनके अतिरिक्त यास्काचार्य का निरुक्त, वररुचि आचार्य का निरुक्त समुच्चय और पतञ्जलि का महाभाष्य उपलब्ध थे और इन चीजो को आधार मान कर महर्षि ने भाष्य किए हैं। ये सभी आर्षग्रंथ वेदों के सत्यार्थ पर प्रकाश डालते हैं। इनकी अवहेलना करके वेदो का भाष्य करना व्यर्थ है।

महर्षि दयानन्द के वैदिक भाष्य की एक विशेषता यह भी है कि उन्होने वेदो को ज्ञान, कर्म और उपासना इन तीन चीजो का उन्नायक माना है। सम्पूर्ण ज्ञान, वास्तविक उपासना और कर्म मे ही वेदो के विषय बताये हैं। प्रत्येक मंत्र को इनमे से ही किसी एक अंग मे रखा है। निरुक्ताचार्य यास्क और वररुचि के अनुसार वेदों का भाष्य आध्यात्मिक, आधिदैविक और आधियाज्ञिक रूपों मे किया जा सकता है।

निरुक्ताचार्य ने कहा है कि 'सर्वं दर्शनेषु च सर्वेमत्रा योजनीया', अर्थात् भाष्य करते समय इस बात का ध्यान रखा जाए कि आध्यात्मिक, आधिदैविक और आधियाज्ञिक तीनो प्रक्रियाओ मे वह हो। दुर्गाचार्य ने इस पर टीका करते हुए लिखा है कि 'तस्मात् एतेषु यावन्तोऽअर्था उपपद्येरन, आधिदैवाध्यात्माधियज्ञाश्रया: सर्वं एव ते योज्या नात्र अपराधोऽस्ति'। अर्थात् मत्रों का अर्थ तीनो प्रक्रियाओं मे किया जाए ऐसा करना कोई अपराध नहीं है।

वेदो का ज्ञान सर्वप्रथम अग्नि, वायु, आदित्य और अगिरा इन चार ऋषियों को हुआ। उसी परम्परा मे ब्रह्मा तक उसी प्रकार श्रुति परम्परा चली। ब्रह्मा के बाद इन्द्र को वेद प्रकाश हुआ। प्रथम भाष्य इन्द्र ने किया ऐसा समझा जाता है। इन्द्र से लेकर रामायण काल तक रावणकृत भाष्य समझा जाता है। रावण कृत वेदभाष्य केवल आधिदैविक है। उसके बाद महाभारत काल मे वेदभाष्यकार के रूप मे वेदव्यास का नाम आता है। उन्होने 'वेदान्त' दर्शन लिखकर वेद की आध्यात्मिक व्याख्या की है। उस समय तक षड्दर्शनकारो की स्थिति थी। इनमे सर्वप्रथम कपिल थे जिन्होने सृष्टि की उत्पत्ति, आत्मा और ईश्वर की स्थिति के बारे मे 'सांख्य' दर्शन लिखा। इस दिशा मे षष्ठीतंत्र और पंचशिखाचार्य की व्याख्या हमे बहुत दूर तक ले जाती है। इसी को आधार मान कर योगदर्शन की रचना पतंजलि ने की। कपिल के सांख्य के आधार पर कणाद ने वैशेषिक और महर्षि गौतम ने न्याय दर्शन रचे। पुनश्च आधियाज्ञिक भाष्य के रूप मे जैमिनी आचार्य ने मीमासा लिखी। महर्षि जैमिनी वेदव्यास के शिष्य थे।

इन षडदर्शनकारो के साथ-साथ उपनिषदकारो ने भी वेदभाष्य का विस्तार किया। इनके बाद आचार्यों की परम्परा चली जिन्होंने वेदार्थ को स्पष्ट करने के लिए चार उपवेदो (आयुर्वेद, धनुर्वेद, गान्धर्ववेद और अर्थवेद); चार ब्राह्मण (ऐतरेय, शतपथ, साम और गोपथ); छ. वेदांगों (शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निघण्टु, निरुक्त, छंद और ज्योतिष) की रचना की। इन आचार्यों ने वेदों के भाष्य के लिए आवश्यक सिद्धांत और आधार निरूपित किए।

इनके बाद जिन आचार्यों का नाम वेदभाष्यकारो मे आता है, उनमें आत्मानन्द, आनन्दतीर्थ, जयतीर्थ, नरसिंहयति राघवेंद्रयति, शत्रुघ्नाचार्य आदि अनेक भाष्यकार हैं जो सायणाचार्य से एक हजार पूर्व हुए थे। इनमें स्कंदस्वामी भी हैं किंतु इन सब का वेदभाष्य आध्यात्मिक परम्परा को लेकर है। प्रस्थानत्रयी के भाष्यकारो ने जिनमें आदि शंकराचार्य, माधवाचार्य, मध्वाचार्य, और रामानुजाचार्य हैं, वेदभाष्य का साहस नही किया। तत्पश्चात के भाष्यकार राजा के आश्रित सायणाचार्य के ही अनुगामी हुए। इनमे वाराणसी की तांत्रिक महीधर शर्मा सबसे निम्नकोटि का था। तान्त्रिकों ने जो वेदविरुद्ध अपनी-अपनी पुस्तकें लिखीं; योनसंबंधी भ्रष्टाचार का बड़ा जाल बिछा रखा था! इन तांत्रिको में एक शाखा अघोरियों की थी जो विष्ठा तक खाते थे। इन लोगो का प्रचार और प्रसार आठवीं शताब्दी से लेकर अठारहवीं शताब्दी तक खूब चला। यहाँ तक कि सभी सप्रदाय जिनमे बौद्ध, जैन और मुस्लिम भी थे, इनसे प्रभावित रहे और सबने तत्रों की कल्पना अपने-अपने सप्रदायो के अनूकूल की।

महर्षि दयानन्द ने वेदो का सस्वर पाठ संहिता देवता आदि के साथ प्रकाशन कराया और मत्रो में अलकारादि को स्पष्ट किया। सायणाचार्य के यज्ञपरक अर्थ का जो बहुश. त्रुटिपूर्ण है, महर्षि दयानन्द ने लवमात्र भी महत्त्व नही दिया। महर्षि के अर्थ तीनों प्रक्रियाओं में स्पष्ट हैं और वेद का का सत्यविद्या का आधार प्रामाणिक कर दिया है। महाभाष्य करते हुए महर्षि ने कहीं भी विवेक को पीछे नहीं रखा है।

इस भाष्य की एक विशेषता यह है कि इसमे कहीं भी ईश्वर के अतिरिक्त किसी भी देवता का अस्तित्व नहीं माना है। देवतापरक शब्दों का अर्थ ईश्वर के अर्थ में किया गया है। सभी शब्दो के अर्थ करते समय शब्दो का निर्वचन किया गया है। ऐसा करते समय निरुक्ताचार्य की शैली अपनाई गई है। वेदार्थ की स्थापना ऐसे आधार पर है कि कहीं भी किसी भी मंत्र में किसी भी पौराणिक देवता की प्रश्रय नहीं है। वेदभाष्य करते समय महर्षि ने वद को ईश्वर की वाणी बताते हुए सब सत्यविद्याओं की पुस्तक माना है और उसके नित्यत्व पर विवेकशील विचार किया है। प्रत्येक मंत्र के ऋषि, देवता, स्वर को स्पष्ट करते हुए उसके देवता को भी जहां स्पष्ट किया गया है वहां देवता शब्द से मंत्र का विषय भी प्रतिपादित किया है। वेद के नित्यत्व की सिद्धि उन्होंने मीमांसा से की है। वेद को नित्य बताते हुए कहा है—'ईश्वरस्य सकाशाद् वेदनामुत्पत्तो सत्यां स्वतो नित्यत्वमेव भवति, तस्य सर्वसामर्थ्यस्य नित्यत्वात्।' अर्थात् ईश्वर से उत्पन्न हुए वेद स्वयमेव नित्य हैं, क्योंकि ईश्वर की शक्ति अपरिमित है वेदों के शब्द, वाक्य, छन्द, पद आदि सभी नित्य हैं उनको देखकर संस्कृत में वाक्य, छन्द, पदादि की रचना की गयी है जो अनित्य है। कपिलाचार्य ने 'निजशक्त्यभिव्यक्ते: स्वत: प्रामाण्यम्' ऐसा कहा है अर्थात परमेश्वर की स्वाभाविक शक्ति से उत्पन्न होने के कारण वेद नित्य है।

लेखक :

—डा वशिष्ठ शिव बलसे

महर्षि ने वेदभाष्य में स्पष्ट कर दिया है कि जब-जब प्रलय होता है तब-तब वेद परमेश्वर के ज्ञान मे विद्यमान रहते हैं और जब-जब सृष्टि रचता है तब-तब सर्वप्रथम प्रजा के हित के लिए वेदों का उपदेश करता है। ऐसा करते समय उसका एक ही उद्देश्य है कि वेदों में सब पदार्थों का यथावत ज्ञान है। उसका बोध कराना, परमेश्वर से लेकर तृणपर्यन्त पदार्थों का बोध कराना और परमेश्वर के रचे पदार्थों को जानकर उनका कार्य सिद्ध करना। वेदभाष्य करते समय महर्षि ने पदार्थ विद्या का भी बोध कराया है और पराविद्या का भी जिससे परमेश्वर के यथावत गुणो का बोध है। महर्षि के वेदभाष्य में यह स्पष्ट किया गया है यज्ञ प्रक्रियार्थ करते समय यज्ञ में वेदों के मत्र और ईश्वर को देवता कहते हैं अन्यत्र दिव्य गुणों से युक्त ही देवता कहाते हैं। ब्राह्मण ग्रंथों में ३३ देवता बताए गए हैं—आठ वसु (अग्नि, वायु, पृथिवी, अन्तरिक्ष, आदित्य, द्यौ, चन्द्रमा, और नक्षत्र) ११ रुद्र अर्थात् प्राण, अपान, व्यान, समान, उदान, नाग, कूर्म, कृकल, देवदत्त, धनजय और जीवात्मा, और १२ आदित्य चैत्रादि (१२ मास), इन्द्र (विद्युत) और यज्ञ (प्रजापति)। दो देव से अर्थ अन्न और प्राण हैं तथा तीन देव से अर्थ हैं स्थान, नाम और जन्म। यह भी स्पष्ट कर दिया है कि परमेश्वर की ही उपासना करनी चाहिए अन्य किसी जड़ पदार्थ की नहीं। पूजा अर्थ से प्रियाचरण, सत्कार और तदनुकूल कार्य मान लेना ही उचित है।

(शेष आगामी अंक में)

रित वैदिक शिक्षा प्रणाली मे ही निहित है। इस सत्र मे श्री जगदीश विद्यालकार तथा डा० निगम शर्मा ने वैदिक शिक्षा दर्शन पर अपने निबन्ध प्रस्तुत किए। इस अवसर पर विद्वतजनो को सम्बोधित करते हुए डा० भवानीलाल भारतीय, अध्यक्ष दयानन्द शोधपीठ, पंजाब विश्वविद्यालय ने वैदिक शिक्षा पर आर्यसमाज के प्रयोग का ऐतिहासिक दिग्दर्शन प्रस्तुत किया।

गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय के भूतपूर्व कुलपति आचार्य प्रियव्रत जी ने अपने अध्यक्षीय भाषण मे बडे भावपूर्ण तरीके से आचार्य-शिष्य सम्बन्धो पर प्रकाश डालते हुए कहा कि गुरुकुल में आचार्य शिष्य का सम्बन्ध इतना निकटतापूर्ण होता है जैसा मा अपने पुत्र को गर्भ मे रखती है। आचार्य शिष्य का वह सबध ब्रह्मचर्य सूक्त मे मिलता है।

आधुनिक परिप्रेक्ष्य मे गुरुकुल शिक्षा के महत्व पर प्रमुख वक्ता के रूप में बोलते हुए जबलपुर विश्वविद्यालय के प्रतिनिधि डा० एम० एल० पुरोहित ने गुरुकुल शिक्षा की प्रमुख विशेषताओं का दिग्दर्शन करते हुए कहा कि आज की शिक्षा प्रणाली को बदलने हेतु भारत को एक नए श्रद्धानन्द की आवश्यकता है। इस सत्र में डा० आर० एल० वार्ष्णेय एवं डा० क्रांतिकृष्ण ने भी भाग लिया।

अध्यक्ष पद से बोलते हुए डा० सुरेशचद्र शास्त्री ने कहा कि आज की शिक्षा प्रणाली का एक मात्र विकल्प गुरुकुल शिक्षा से ही है।

वैदिक शिक्षा राष्ट्रीय कार्यशाला के तीसरे दिन का विषय टैगोर, अरविन्द और गांधी के शिक्षा दर्शन और प्रयोग से सबधित था। इस विषय पर डा० हरगोपालसिह, डा० भारतभूषण आदि ने अपने निबन्ध प्रस्तुत किए। अध्यक्षीय भाषण करते हुए महात्मा आर्य भिक्षु जी ने कहा कि आज की पाठशाला मे बच्चे को पढाने नहीं भेजा जाता बल्कि बनाने भेजा जाता है। शिक्षा का उद्देश्य आज मात्र जीविका उपार्जन रह गया उसमे भी यह शिक्षा सफल नहीं हुई है।

स्वामी श्रद्धानन्द का शैक्षणिक प्रयोग

सायकाल सत्र का विषय स्वामी श्रद्धानन्द का महान शैक्षणिक प्रयोग था डा० विनोदचन्द्र सिन्हा ने गुरुकुल शिक्षा के इतिहास पर प्रकाश डाला : ओमप्रकाश मिश्र ने गुरुकुल शिक्षा की परिकल्पनाए प्रस्तुत की। इस अवसर पर उपस्थित प्रमुख वक्ता डा० प्रशांतकुमार वेदालकार दिल्ली विश्वविद्यालय ने गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के सैद्धान्तिक एव व्यावहारिक पक्षों का विवेचन करते हुए

(शेष पृष्ठ ७ पर)

आर्य जगत् समाचार

महर्षि दयानन्द वेदार्थ में क्रान्ति के उद्घोषक

चण्डीगढ़ में वैदिक संगोष्ठी का सफल आयोजन : महर्षि निर्दिष्ट वेदार्थ पद्धति की महत्ता

चण्डीगढ । दयानन्द अनुसधान पीठ, पजाब विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित वैदिक सगोष्ठी मे 'वेदार्थ के विविध सम्प्रदाय विषय पर विभिन्न विश्वविद्यालयो के वैदिक विद्वानो ने अपने विचार अभिव्यक्त करते हुए महर्षि दयानन्द निर्दिष्ट वेदार्थ पद्धति की महत्ता एव उपयोगिता स्वीकार की । वैदिक सगोष्ठी का आयोजन विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के आर्थिक अनुदान से आयोजित किया गया था । संगोष्ठी का उद्घाटन डी० ए० वी० कालेज चडीगढ के विद्वान प्राचार्य श्री कृष्ण-सिह आर्य ने किया । प्रथम दिन की अध्यक्षता आर्यसमाज के दार्शनिक विद्वान डा० स्वामी सत्यप्रकाश ने की ।

वैदिक सगोष्ठी के अन्य सत्रो की अध्यक्षता महर्षि दयानन्द महाविद्यालय के सस्कृत विभाग के अध्यक्ष डा० जयदेव विद्यालकार तथा पजाब विश्वविद्यालय की कालिदास पीठ के अध्यक्ष रामगोपाल आदि ने की । अपने समापन भाषण मे दयानन्द पीठ के अध्यक्ष डा० भवानीलाल भारतीय ने महर्षि दयानन्द को वेदार्थ क्षेत्र मे क्राति का विधाता घोषित किया । उन्होने स्पष्ट किया कि ऋषि दयानन्द के वेदार्थ से प्रेरणा लेकर ही योगी अरविन्द, श्री मधुसूदन ओझा आदि ने अपनी शैलियो का प्रारम्भ किया ।

इस सगोष्ठी ने १३ विद्वानो ने ये शोधपत्र प्रस्तुत किए । १ श्री वेदपाल वर्णी ने शतपथ ब्राह्मण के आलोक मे दयानन्द का यजुर्वेद भाष्य २. दिल्ली विश्वविद्यालय के डा० कृष्णलाल ने वेदार्थ और निर्वचनपद्धति ३. डा० सुदर्शनदेव शास्त्री द्वारा ऋषि दयानन्द की वेदार्थ शैली ४. शासकीय महा विद्यालय अजमेर के सस्कृत विभाग के अध्यक्ष डा० अभयदेव शर्मा द्वारा वेदार्थ की प्रतीक शैली ५. दयानन्द पीठ की शोध छात्रा श्रीमती वसुन्धरा रेहानी द्वारा वैदिक देवता का स्वरूप ६. पाणिनि कन्या महाविद्यालय, वाराणसी की आचार्या डा० प्रज्ञादेवी द्वारा वेदार्थ की त्रिविध प्रक्रियाए ७. कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के प्राध्यापक डा० कपिलदेव शास्त्री द्वारा ऋग्वेद के एक मन्त्राश मे विशेष पद का अन्वेषण ८. दिल्ली विश्वविद्यालय के शोध छात्र प्रो० जयदेव आर्य द्वारा शतपथ ब्राह्मण और वेदार्थ ९. स्वामी विद्यानन्द सरस्वती द्वारा महर्षि दयानन्द, और वेदार्थ १०. विश्वेश्वरानन्द सस्थान के डा० ब्रजबिहारी चौबे द्वारा वेद और वेदार्थ ११ गुरुकुल कांगड़ी के सस्कृत विभाग के अध्यक्ष डा० निगम शर्मा और रायबरेली के डा० प्रशस्य मित्र शास्त्री द्वारा शोध प्रबन्ध प्रस्तुत किए गए ।

देश के सभी नागरिकों के लिए समान कानून लागू हो

महात्मा वेदभिक्षु का आह्वान : २ हजार मुसलमान हिन्दू बनेंगे

तिलहर (शाहजहांपुर) नगर के प्रमुख नागरिकों की एक सभा को सम्बोधित करते हुए आर्य नेता महात्मा वेदभिक्षु ने माग की कि देश के सभी नागरिको के लिए एक समान नियम-कानून प्रचलित होने चाहिए और अल्पसंख्यक प्रश्न उठाने की राजनीति समाप्त की जाए ।

हिन्दू रक्षा समिति के सयोजक श्री ज्ञानप्रकाश भारती ने सूचना दी कि समिति शीघ्र ही कई हजार परिवारो को हिंदू धर्म मे दीक्षित करेगी । उनका अनुमान है कि दीवाली पर दो हजार से अधिक मुसलमान हिन्दू धर्म ग्रहण करेंगे ।

दिल्ली । महात्मा वेदभिक्षु जी ने कहा है कि मुसलमानो को भारत की मूलधारा में घुल-मिल जाना चाहिए । मुसलमान अपनी पूजा पद्धति पृथक रख सकते हैं परन्तु वेशभूषा और सास्कृतिक परम्पराओ मे उन्हे भारतीय बनना चाहिए ।

मुरादाबाद । हिंदू रक्षा समिति के मत्री श्री जगदीशशरण माहेश्वरी ने सूचना दी है कि साम्प्रदायिकता के उभरते प्रवाह को रोकने एव पिछड़े वर्ग के हिंदुओं की सामाजिक आर्थिक स्थिति सुधारने के लिए नवम्बर मास मे मुरादाबाद मे विशाल हिंदू सम्मेलन किया जायगा ।

उपमत्रिणी—श्रीमती राधिकादेवी, कोषाध्यक्षा—श्रीमती सुशीलादेवी, पुस्तकाध्यक्षा-श्रीमती शोभा ।

आर्यसमाज पाण्डेय टोला (बेतिया) बिहार । प्रधान—श्री रामधनीप्रसाद (मुखिया) उपप्रधान—श्री गंगाप्रसाद आर्य, श्री ध्रुवराम, मन्त्री—श्रीराम अयोध्या प्रसाद, उपमत्री—श्री नत्थूप्रसाद, कोषाध्यक्ष—श्री सदल पडित ।

आर्यसमाज साबुन बाजार, लुधियाना (पजाब) प्रधान—श्री राजाराम, उपप्रधान—डा० रामस्वरूप, वैद्य कुन्दनलाल, मन्त्री—डा० एस० बी० बागिया, उपमन्त्री—श्री राजकुमार मेहता, श्री हरिदेव अग्रवाल, कोषाध्यक्ष—श्री जगदीश-चन्द्र आर्य, पुस्तकाध्यक्ष—श्री रामधन आर्य ।

बोध-कथा

एकाग्रता !

महाराज एकनाथ महाराष्ट्र के एक महान् सन्त थे । वह गोस्वामी तुलसीदास के समकालीन एक गृहस्थ सन्त थे, मराठी साहित्य का उन्हे प्राण कहा जाता है । उन्होने 'भागवत एकादश स्कन्ध', भावार्थ रामायण', 'आनन्द लहरी' आदि अनेक ग्रन्थ लिखे थे । एक बार वह रात भर जागते रहे । रात्रि का तीसरा पहर हो गया, एकनाथ अपने हिसाब मे एक पाई की भूल खोज रहे थे । अन्त मे वह परेशान हो उठे । अचानक खोजते-खोजते वह चिल्ला उठे—'मिल गया, मिल गया ।'

एकनाथ के चिल्लाने से उनके गुरु जनार्दन स्वामी की नीद खुल गई । उन्होने पूछा—'एकनाथ, अरे क्या मिल गया तुम्हे ?' एकनाथ ने उत्तर दिया—'आखिर मेरा हिसाब मिल गया ।' 'तो तुम हिसाब मिलाने के लिए सारी रात जागते रहे हो ?' जनार्दन स्वामी ने पूछा—'हा, गुरुदेव'—एकनाथ का उत्तर था ।

'एकनाथ, तुम एक पाई की भूल मिल जाने से इतने प्रसन्न हो, यदि तुम ससार की भूल समझ पाते तो कितने खुश होते और इतनी एकाग्रता और लगन से तो तुम भगवान का भी ध्यान करते तो तुम सम्पूर्ण आनन्द के भण्डार भगवान को पा जाते ।'

गुरु से दीक्षा लेकर एकनाथ सच्चे भगवान की खोज के लिए घर छोड़कर निकल गए और कालान्तर मे महाराष्ट्र के प्रमुख सन्त बने ।

—नरेन्द्र

आर्यसमाजों के सत्संग

१७ अक्तूबर'८२

अन्धा मुगल-प्रताप नगर—ला० लखमीदास; अमर कालोनी—आचार्य हरिदेव सि० भू०; अशोक विहार के. सी. ५२-ए—प० वेदपाल शास्त्री; अशोक नगर—वैद्य रामकिशोर तथा प० सत्यपाल मधुर भजनोपदेशक; आर्यपुरा—प० ईश्वरदत्त; आर. के. पुरम सेक्टर ५—श्री देवीचरण बन्सल; आर. के. पुरम सेक्टर ६ श्रीमती लीलावती; इन्द्रपुरी—प० विश्वप्रकाश शास्त्री; किशनगज मिल एरिया—पं० छविकृष्ण शास्त्री; किग्जवे कैम्प—प० रामनिवास; करोल बाग—प० रमेशचन्द्र शास्त्री; कृष्णनगर—प्रो० वीरपाल विद्यालकार; गांधीनगर—प० प्राणनाथ सिद्धातालंकार; ग्रेटर कैलाश-I—आचार्य नरेन्द्र शास्त्री, ग्रेटर कैलाश-II—प० ओमप्रकाश वेदालंकार; गुड मण्डी—पं० सीसराम भजनोपदेशक, गोविंदपुरी—प० अशोककुमार विद्यालकार, जनकपुरी बी ३/२४—प० हरिश्चन्द्र शास्त्री; टैगोर गार्डन—प० रामदेव शास्त्री, तिलक नगर—डा० रघुवीर वेदालकार, तिमारपुर—श्रीमती सुशीला राजपाल; दरियागज—प० रामरूप शर्मा; नारायण विहार जी-२५—डा० रघुनन्दनसिह, नया बांस—प्रो० सत्यपाल बेदार, पंजाबी बाग एक्सटेंशन—पं० खुशीराम शर्मा, प्रीतमपुरा—पं० मनोहलाल ऋषि भजनोपदेशक, बाग कड़े खा—प० बरकतराम भजनोपदेशक, बिरला लाइन्स—प० प्रकाशवीर 'व्याकुल'; मोडल बस्ती—श्रीमती प्रकाशवती शास्त्री, महरौली—स्वामी प्रेमानद सरस्वती; रमेशनगर—प० सोमदेव शास्त्री; राणा प्रताप नगर—पं० सुरेन्द्रकुमार शास्त्री; राजौरी गार्डन—पं० मुनिशकर वानप्रस्थ; लड्डू घाटी-पहाड गज—प० कामेश्वर शास्त्री; लक्ष्मीबाई नगर ई १२०८—पं० हरिश्चन्द्र आर्य; लेखरामनगर-त्रिनगर—कविराज बनवारीलाल शादा भजनोपदेशक; लारेंस रोड—आचार्य दीनानाथ सिद्धातालकार; विक्रम नगर—प० बलवीरसिह शास्त्री, सराय रोहेला सुभद्रा कालोनी—स्वामी स्वरूपानन्द भजनोपदेशक तथा प० ज्योतिप्रसाद ढोलक कलाकार; सुदर्शन पार्क—प्रो० भारत मित्र शास्त्री; सोहनगज—प० देवराज वैदिक मिश्नरी; श्रीनिवास पुरी—प० तुलसीराम भजनोपदेशक; शालीमार बाग—प० गणेशप्रसाद विद्यालंकार, हौज खास ई-४६—प० चन्द्रभानु सि० भू० ।

—ज्ञानचन्द डोगरा वेद प्रचार प्रबन्धक

शिक्षा जगत् की समस्याओं .... (पृष्ठ ५ का शेष)

गुरुकुल कागडी की उपलब्धियो के सबध मे सर्वेक्षण प्रस्तुत किया। डा० गगाराम ने अपने अध्यक्षीय भाषण में अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि मैकाले की शिक्षा का एक मात्र जवाब स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा स्थापित गुरुकुल कागड़ी था।

वैदिक शिक्षा राष्ट्रीय कार्यशाला के अन्तिम दिन के सत्र मे विभिन्न शिक्षा-चितको ने गुरुकुल शिक्षा एव ब्रह्मचर्य के सम्बन्ध मे अपने विचार व्यक्त किए। इसी सत्र में एक अन्य विषय योग की प्राचीन पद्धतियो पर भी विचार किया गया। जिसमे डा० विजयपाल शास्त्री, डा० त्रिलोक चन्द तथा डा० विनोद चद ने भाग लिया।

इस सत्र के प्रमुख वक्ता प्रो० रत्नसिह अध्यक्ष दर्शन विभाग, मेरठ विश्वविद्यालय ने ऋषि दयानन्द के विचारो के आधार पर यह सिद्ध किया कि गुरुकुल शिक्षा के आधार पर ही श्रेष्ठ मानव का निर्माण संभव हो सकता है। अथर्ववेद के ब्रह्मचर्य सूक्त के आधार पर कुछ वक्ताओं ने आचार्य शिष्य संबंधों का सजीव चित्रण प्रस्तुत किया। अध्यक्ष पद से बोलते हुए कविराज योगेन्द्रपाल शास्त्री ने कहा कि चाहे जिस तरीके से शिक्षा की समस्याओ पर विचार करें समाधान हमे शिक्षा के वैदिक आदर्शो मे ही परिलक्षित होता है।

वैदिक शिक्षा राष्ट्रीय कार्यशाला के सायकालीन सत्र का विषय 'वेदो में विज्ञान' मे अनेक शिक्षा प्रतिनिधियों ने भाग लिया, जिनमे थे डा० वेदप्रकाश शास्त्री, डा० रामेश्वरदयाल गुप्त इत्यादि ने निबन्ध वाचन किया। प्रमुख वक्ता डा० श्रीमती पूनम सागर, मानविकी विभाग रुडकी विश्वविद्यालय ने अथर्ववेद मे कृषि विज्ञान पर अपना शोध निबन्ध प्रस्तुत किया। अध्यक्ष पद से बोलते हुए प्रसिद्ध वैदिक विद्वान नारायण मुनि जी वेद के मन्त्रो के आधार पर यह सिद्ध किया कि वेद का विज्ञान सार्वभौमिक है। उपर्युक्त वैदिक शिक्षा राष्ट्रीय कार्यशाला के ८ सत्रो मे लगभग ३२ निबन्धों का वाचन किया गया। वैदिक शिक्षा कार्यशाला के निदेशक डा. जयदेव विद्यालकार ने सूचना दी कि कार्यशाला के निबन्ध एवं परिणाम स्मारिका के रूप में प्रकाशित किए जाएंगे।

चम्पारण जिले में वेदप्रचार का कार्यक्रम

चम्पारण जिला आर्यसभा के तत्वावधान मे सुगोली और अहमदाबाद मे ५-५ दिन का वेद प्रचार कार्यक्रम आयोजित किया गया। सुगोली मे आर्य समाज का पुनर्गठन भी हुआ।

पाण्डेय टोला बेतिया मे २१ सित० से २५ सितम्बर तक वेद प्रचार शास्त्रार्थ महारथी आचार्य प० रामानन्द शास्त्री एव शिवधर आर्य भजनोपदेशक द्वारा किया गया। ६२ व्यक्तियों ने यज्ञोपवीत धारण किए। आर्यसमाज की स्थापना भी हुई।

आर्यसमाज गोविन्दपुर का नवम वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज गोविन्दपुरी का नवम वार्षिकोत्सव ११ अक्टूबर से १७ अक्टूबर तक मनाया जा रहा है। प्रतिदिन प्रातः ५॥ से ७॥ बजे तक प० यज्ञपालजी शास्त्री के ब्रह्मत्व मे सामवेद पारायण यज्ञ होगा। वेदकथा प्रति रात्रि को ६ बजे से १० बजे तक प. अशोक कुमार विद्यालकार वेदकथा प्रस्तुत कर रहे हैं। कथा से पूर्व प. चुन्नीलाल जी के भजन होते है। रविवार को प्रात पूर्णाहुति होगी। आशीर्वाद स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती देंगे।

गुरुकुल खेड़ाखुर्द का वार्षिक महोत्सव

श्रीमद्दयानन्द गुरुकुल सस्कृत महाविद्यालय खेडाखुर्द, दिल्ली ८२ का वार्षिक महोत्सव ६-७ नवम्बर का होगा। इसम चार दिन पूर्व सामवेद पारायण महायज्ञ का आयोजन किया गया है। यज्ञ की पूर्णाहुति ७ नवम्बर प्रात ६॥ बजे होगी।

आर्ययुवक महासम्मेलन

आर्यसमाज (अनारकली) मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली के वार्षिकोत्सव पर १४ नवम्बर, १९८२ को दोपहर १ बजे आर्ययुवक महासम्मलन आयोजित किया गया है। सम्मेलन के अध्यक्ष ब्रह्मचारी राजसिंह आर्य होंगे।

पुरानी सब्जी मण्डी में प्रवचन यज्ञ

केन्द्रीय आर्य युवक दिल्ल परिषद् प्रदेश द्वारा सचालित दैनिक साध्य वैदिक सत्सग, कमला नेहरू पार्क, पुरानी सब्जी मण्डी मे आगामी १४ अक्टूबर से २१ अक्टूबर तक साय ६ बजे से ७ ३० बजे तक प. ओमप्रकाश शास्त्री खतौली वालो के प्रवचनो का आयोजन किया गया है। प्रवचनो से पूर्व यज्ञ व भजनो का विशेष कार्य-क्रम होगा।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रकाशन

सत्यार्थप्रकाश सन्देश (हिन्दी) १० ००
(अंग्रेजी) समाप्त
आर्य सन्देश महासम्मेलन
विशेषांक ६ ००
पादरी भाग गया—
ओम्प्रकाश त्यागी ० ३०
स्वामी श्रद्धानन्द-बलिदान
अर्द्ध शताब्दी स्मारिका ६ ००
सत्यार्थप्रकाश शताब्दी समारोह
स्मारिका ६ ००

सम्पर्क करें—
अधिष्ठाता प्रकाशन विभाग
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा,
१५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१



卐 'आर्यसन्देश' के
स्वयं ग्राहक बनें—
दूसरों को बनाएं
आर्यसमाज के सदस्य
स्वयं बनें—
दूसरों को बनाइए
हिन्दी-संस्कृत भाषा स्वयं पढ़ें
दूसरों को पढ़ाइए—

रजि० डी (सी०) ७

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए श्री सरदारी लाल शर्मा द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा भाटिया प्रेस २६७४, रघुबरपुरा नं० २ गांधी नगर दिल्ली ३१ में मुद्रित कार्यालय १५ हनुमान रोड नई दिल्ली । फोन ३१०१५० ।

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक मुखपत्र

एक प्रति ३५ पैसे | वार्षिक १५ रुपये | वर्ष ६ | अंक ५२ | रविवार २४ अक्तूबर | ७ कार्तिक वि० २०३९ | दयानन्दाब्द—१५८

वैदिक धर्म ही मानव धर्म

वैदिक धर्म संसार का प्राचीनतम धर्म है। यह कहना अधिक अच्छा होगा कि वैदिक धर्म को परमेश्वर ने मनुष्य जाति के जन्म के साथ ही दे दिया था। मनुष्य के लिए आवश्यक सूर्य, चन्द्रमा पृथ्वी,आकाश, जल, वायु इत्यादि जो कुछ आवश्यक था, भगवान ने दिया। इसी प्रकार मानवसृष्टि के साथ ही मानव धर्म वैदिक धर्म की भी शिक्षा दे दी।

वैदिक धर्म सार्वजनिक विश्वव्यापी मनुष्यमात्र का धर्म है। वैदिक धर्म मे किसी देश, जाति, भूगोल या अन्य किसी प्रकार की सीमा के लिए अवकाश नहीं है। वेदो की शिक्षा है कि परमेश्वर एक है मानवता भी एक है अत धर्म भी एक ही है। वैदिक धर्म विश्वबन्धुत्व का धर्म है। वेदो में शिक्षा दी गई है—

माता भूमि पुत्रोऽहम् पृथिव्या

भूमि हमारी माता है और हम स्ब पृथ्वी के पुत्र हैं। मनुष्यमात्र ही भाई-बहन हैं। त्व हिन पिता वसो त्व माता शतक्रतो बभूविथ—वह परमेश्वर हमारे माता-पिता हैं और हम सब मानवमात्र उनके पुत्र-पुत्रिया हैं।



डॉ दिलीप वेदालकार कृत 'वेदों मे मानववाद' पुस्तक का श्रीमती इन्दिराजी गांधी द्वारा विमोचन किया गया।

[वेदों में सच्चा मानवधर्म—लेख पृष्ठ ४ पर पढ़ें]

मेरठ की रक्षा पी०ए०सी० के जवानो ने की

नई दिल्ली। आर्यनेता महात्मा वेद भिक्षु ने प्रधानमन्त्री को भेजे एक पत्र में प्रान्तीय सशस्त्र सेवा के जवानो की प्रशसा की है। उन्होने कहा कि पुलिस का कार्य आततायी को रोकना है और मेरठ मे पुलिस ने ईमानदारी से यही कार्य किया है। सचमुच पी ए सी के जवानो ने ही मेरठ बचाया है। महात्मा जी ने माग की कि मेरठ में जिनके घरो में हथियार मिले हैं, उन्हे राष्ट्ररक्षा कानून के अन्तर्गत गिरफ्तार किया जाए।

अकालियों से बातचीत मे हिन्दू भी आमन्त्रित हों

करतारपुर (जालन्धर) पजाब प्रदेशीय हिन्दू सम्मेलन मे एक प्रस्ताव स्वीकार कर माग की है कि भारत को एक हिन्दू राष्ट्र घोषित किया जाए। सम्मेलन मे आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के प्रधान श्री वीरेन्द्र जी, महन्त रामप्रकाश जी प्रधान श्री उत्तमचन्दजी शरर आदि ने भाग लिया। सम्मेलन ने भारत सरकार से माग की कि अकालियों से बात करते हुए सरकार वार्ता मे हिन्दुओं के प्रतिनिधियो को भी आमन्त्रित करें।

आर्यसमाज अजमेर स्थापना शताब्दी समारोह

आर्यसमाज अजमेर का स्थापना शताब्दी समारोह २६ अक्तूबर ८२ से २ नवम्बर, १९८२ तक मनाया जाएगा। ३० अक्तूबर को ३ बजे से जात-पात तोडो एवं छुआछूत उन्मूलन सम्मेलन तथा रात्रि मे राजस्थान प्रान्तीय आर्य सम्मेलन आयोजित किया गया है। ३१ अक्तूबर को प्रात काल विशाल नगर कीर्तन (शोभा-यात्रा) होगा। इस अवसर पर देश के कुछ प्रमुख नेता श्री रामगोपाल शालवाले, स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती, लोकसभा अध्यक्ष श्री बलराम जाखड, श्री रामनिवास मिर्धा केन्द्रीय शिक्षा मन्त्री श्रीमती शीला कौल, राजस्थान के मुख्य मन्त्री श्री शिवचरण माथुर, श्री ओमप्रकाश आर्य आदि पधार रहे हैं।

दिल्ली की आर्यसभा प्रतिनिधि सभा से सहयोग करें

उत्सवो एवं कार्यक्रमो के लिए योजना बनाइए !

सभा मन्त्री का अनुरोध

दिल्ली। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री प्रो० भारत मित्र शास्त्री ने सभा से सम्बद्ध समस्त आर्यसमाजों के पदाधिकारियो से अनुरोध किया है—सभी आर्यसमाज के अधिकारियो तथा वरिष्ठ सभासदो की सेवा मे निवेदन है कि दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५, हनुमान रोड मे उच्चकोटि के विद्वान उपदेशक तथा भजनीक अनेक समाजो मे जाकर ऋषि-कार्य को पूर्ण करने के लिए पधारते रहते हैं। समाजें भी अपने उत्सवो, साप्ताहिक सत्सगो तथा पारिवारिक सत्सगो को रोचक और प्रभावपूर्ण बनाने के लिए हमारे यहा से विद्वानो का सहयोग प्राप्त करती रहती हैं।

इसके अतिरिक्त हम और भी प्रचार कार्य के प्रसार के लिए सभी अधिकारियो से प्रार्थना करते हैं कि वे सब अपना कार्यक्रम रखते हुए सभा का सहयोग प्राप्त करें। तथा अपने कार्यक्रमो को अपने पत्र 'आर्य सन्देश' मे प्रकाशित कराने के लिए भेजें इससे अन्य आर्यसमाजो को भी प्रचार की प्रेरणा मिलेगी और कार्य कुशलता भी बढेगी। कार्यक्रमो की सभा को सूचना देने से अधिक लाभ यह होगा कि पास वाली आर्यसमाजो के कार्यक्रमो का भी पता चलता रहेगा। और अधिक योग्य विद्वानो से अधिक आर्यों को लाभ होगा।

उत्सवो की तिथि निश्चित करने से पूर्व खुद आप सभा कार्यालय से सम्पर्क करेंगे तो आसपास वाली समाजें भी उन तिथियो से लाभ उठा सकेंगी। सभा भी उत्सवो को सफलीभूत बनाने के लिए योग्य से योग्य उपदेशको को भेजने का प्रबन्ध अनायास कर सकेगी, जिससे सभा तथा अन्य आर्य समाजो को कोई कठिनाई नही होगी। आशा करते हैं कि आप इस पर विशेष ध्यान देते हुए सभा से पूर्ण सहयोग प्राप्तकर उसे भी अपने सहयोग से लाभान्वित करेंगे।

सम्पादक—नरेन्द्र विद्यावाचस्पति

व्यवस्थापक—प्रद्युम्नलाल तलवाड़

वेद-मनन

मैंने सोम पी लिया है!

— सुरेशचन्द्र वेदालकार

इति वा इति मे मनो गामश्व सनुयामिति ।

कुवित् सोमस्य पामिति ।। ऋक् १०।११६।१

(मे) मेरे (मन) मन मे तो (इति वा इति) यह आता है कि (ग्राम्) अपना गौओ और (अश्वम्) घोडो को (सनुगाम्) जरूरतमदो को दे डालू । (इति) क्योकि मैंने (कुवित्) बहुत बार-बहुत अधिक (सोमस्य) सोम का (अपाम्) पान किया है ।

इस मत्र मे 'सोम' शब्द का क्या अर्थ है ? 'सोम' शब्द 'पुज्' धातु से बना है । इसका अर्थ है निचोडना या रस निकालना । वैसे तो सस्कृत मे 'सोम' का अर्थ है सोम्यता । सोम्यता का अर्थ है नम्रता, शीलता, मधुरता, मीठा बोलना, पवित्र व्यवहार, मीठा स्वभाव, भगवान के लिए प्रेम भक्ति । ये सब 'सोम' हैं । इनसे जो आनन्द मनुष्य को मिलता है, उसी को सोम रस कहते हैं । अथर्ववेद १४/१३ मत्र हैं—

सोम मन्यते पपिवान्
यत्सम्पिषन्त्योषधिम् ।
सोम य ब्रह्माणो विदुर्न
तस्याश्नाति पार्थिव. ।।

अर्थात्—नासमझ बूटी को पीसकर निचोडता है और समझता है मैंने सोम रस पी लिया । वह इस पृथ्वी का भोला व्यक्ति, उस सोमरस का आस्वादन कर नहीं पाता जिसका तत्त्व ब्रह्मवेत्ता लोग जानते हैं । अब प्रश्न उत्पन्न होता है कि यह सोम क्या है ? कहाँ से आता है और आने पर क्या स्थिति हो जाती है ? सोम नाम परमात्मा का है । परमात्मा शाति का सरोवर है । भक्तों के हृदयो में वह शाति का रस निचोड़ रहा है, इसलिए उसका नाम 'सोम' है ।

परन्तु यह प्रेमा भक्ति, यह सोम्यता यह शक्ति आती कहाँ से है ? शाति की खोज मे भटक रहे मनुष्य ! मालूम है यह शाति कहा मिलेगी ? तू समझ रहा होगा कि सोम की तलाश मे दूर जाना होगा, पहाडो की छानबीन करनी होगी, कन्दराओ का कोना-कोना ढ्ढना होगा ? किसी तीर्थ, जगल पहाड पर जाना होगा ? नहीं—बिल्कुल नहीं । सोम तो 'स्वज.' है । 'उदीचोदिक् सोमोऽधिपति. स्वजो रक्षिता' अर्थात वह सोम सब की रक्षा करने वाला भगवान् है जोक 'स्वज' भक्त के अपने हृदय में प्रकट होता है । सोम का जन्म अन्दर से अथवा आत्मा से है । इसे खोजने कहीं जाना नही पडता । अपने भीतर झाकना पडता है । इसे यदि बाहर खोजना शुरू करोगे तो युग युग के लिए इसे पाना कठिन हो जाएगा । नासमझ समझता है क सोम कहीं बाहर है । वह जिस ऐश्वर्य और वैभव के ढेर को शाति का साधन समझ अपने चारो ओर जुटाता है, वही एक दिन उसे बंदी बनाने के लिए कैदखाने की ऊंची दीवार बन जाता है । जिसे वह सुवर्ण का हार समझ छाती से चिपटाता है एक दिन वही उसके पैरो को जकडने के लिए लोहे की कठोर बेडी बन जाता है । इसलिए सोम को बाहर खोजने से काम बनेगा नहीं । सोम की भक्ति के लिए आवश्यक है निरन्तर प्रभु का स्मरण करना, अपने प्रेमी को याद करना । इसे केवल वाणी से याद करने मे काम न होगा । इसके लिए अतर्मुख होना होगा । अपने मन से कलुष भावनाओ और कलुष कामनाओ के पहाड को खोदना होगा । जब इस पहाड को खोदते-खोदते रोम-रोम से भक्ति की धारा प्रवाहित होने लगेगी, जब आत्मा के अन्दर परमात्मा के लिए प्रेम, अनुराग, श्रद्धा और विश्वास जाग उठेगा, जब भक्ति की ऐसी भावना जाग उठे कि उसके सामने प्रेम भी पीछे रह जाए । तब उसमें से मोती मिलेंगे । इस समुद्र का अत कही है नहीं, थाह कही है नहीं । ज्यों-ज्यो भक्ति के इस समुद्र में, सोम की रसवती धारा मे त्यों-त्यो एक मस्ती आएगी ।

यही इस मंत्र का भाव है । जो ईश्वर की भक्ति करते हैं । जो उस सोम का पान करते हैं । आनदमय प्रभु के साथ नाता जोड़कर आनदमय बन जाते हैं, उनके लिए अनन्त आनद का द्वार खुल जाता है ।

—६ ए. ई. टी. ११० ओबरा
[मिर्जापुर] उ० प्र०

शोकसभा

आर्यसमाज रक्सौल के भू० पू० प्रधान श्री वीरप्रकाश तापड़िया के पिता श्री कल्याणमल तापडिया के निधन पर आर्यसमाज रक्सौल ने दिवगत आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना की । श्री कल्याणमल तापड़िया आर्यसमाज रक्सौल के सस्थापक सदस्य थे ।

बोध-कथा

मार्ग में कोई भी बाधा हमें रोक नहीं सकती !

वे व्यक्ति, समाज और राष्ट्र ही आगे बढ़ सकते हैं जो समय रहते अपनी भूल या अपूर्णता स्वीकार कर लेते हैं, उन्हें दूर कर अपने आत्मविश्वास के लिए सुदृढ कदम बढ़ा सकते हैं, यदि व्यक्ति अपने बौने होने, गरीब होने, कुरूप या बेडौल होने का भाव मन में न रखे तो उसकी प्रगति के मार्ग की काल्पनिक बाधा स्वतः दूर हो सकती है । हम यदि अपनी अपूर्णताओं का ख्याल न करें तो ससार की कोई भी ताकत हमारे मार्ग मे बाधा नही बन सकती । अंग-अंग से टेढ़ा और कुरूप ऋषि अष्टावक्र अपने युग का सर्वश्रेष्ठ चिन्तक एव दार्शनिक बन गया था ! बात विचित्र-सी लगती है, परन्तु है सौ टका खरी कि अपने युग का सर्वश्रेष्ठ विजेता नेपोलियन बचपन मे अपनी कक्षा का सर्वाधिक पिछड़ा और बौना लड़का था, बुद्धि, बल, शरीर-काठी हर दृष्टि से वह सर्वाधिक उपेक्षित और पिछड़ा विद्यार्थी था । उसकी ऊचाई केवल ५ फुट २ इंच थी, उसने अपनी इन कमियों और अपूर्णताओ के बावजूद घोषित किया कि मानव के शब्दकोश में 'असम्भव' नाम का कोई शब्द नहीं होता । उसने सकल्प कर लिया कि वह न केवल अपने देश में प्रत्युत अपने युग का सबसे बडा विजेता बना । उसके सेनापतियों ने कहा हिमालय जैसा आल्प्स पर्वत मनुष्य लांघ नही सकता, उसने सेना की कमान खुद सम्भाल कर न केवल वह अलघ्य पर्वत लाघ लिया, प्रत्युत सारी सेना को भी पार ले जाकर बेखबर सोते शत्रु को तुरन्त पराजित कर दिया ।

—नरेन्द्र

सचाई पर झूठाई कभी गालिब आती नहीं

--पुरुषोत्तमा देवी

सचाई पर झूठाई कभी गालिब आती नही ।
और बल्लियो की जुबानी से बुराई सुनी जाती नही ।।
किसी चीज की कीमत उसका समय आने पर होती है ।
और मुल्के हिंद में बल्लियो की कदर जमाना गुजर जाने पे होती है ।।
दयानन्द ने इस मुल्क को गहरी नीद से जगाया ।
मुझे अफसोस है यह, एवज मे उसको जहर पिलाया ।।
हिन्दू हो या मुसलमान हो इस मुल्क हिन्द का ।
इन्साफ से कह दो कि दयानन्द था इस जमाने में रहनुमा सब का ।
वतन को बचाया मजहब को बचाया ।
था इन पै अंग्रेजो का गलबा छाया ।।
मेरी हाथ जोड कर उनके कदमों मे सलाम ।
मेरे जमीर का है यही सच्चा ईमान व पैगाम ।।

—आई. ए. ब्लाक, ४४ बी अशोक विहार, फेज-I

प्रकृति के सन्तुलन से मानव-कल्याण

श्री जगमोहन द्वारा 'कार्बेट नेशनल पार्क' ग्रन्थ का विमोचन

दिल्ली १८ अक्तूबर के दिन श्री रामेश बेदी की पुस्तक कार्बेट नेशनल पार्क का प्रकाशनोद्घाटन करते हुए दिल्ली के उपराज्यपाल श्री जगमोहन ने वन्य प्राणियों के तेजी से लुप्त हो जाने पर गहरी चिन्ता व्यक्त की । उन्होने कहा कि प्रकृति का सन्तुलन बिगड़ने पर मानव को ज्यादह क्षति है । प्राचीनकाल में हमारे ऋषि-मुनि प्राणियों को अपना मित्र समझते थे । उन्होने देशवासियो को इस संकट से सावधान किया।

ग्रन्थ के लेखक श्री रामेश बेदी ने कहा —कार्बेट पार्क हमारा सबसे पुराना राष्ट्रीय उद्यान है, सबसे अधिक किस्म के पक्षी इसी पार्क में है । देशी-विदेशी पर्यटकों के भव्य आकर्षण कार्बेट नेशनल पार्क पर लिखी श्री बेदी की किताब का प्रकाशन सरस्वती विहार, दरियागंज नई दिल्ली—२ में किया है ।

अन्धकार से ज्योतिपथ की ओर बढ़ें

ओ३म् उद्वयं तमसस्परि ज्योतिष्पश्यन्त उत्तरम्।
देवं देवत्रा सूर्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम् ॥ ऋ. १.५०.१०

हे भगवन्, हमें अन्धकार से ऊपर उठाकर ज्योतिपथ की ओर बढ़ने की प्रेरणा दीजिए। हम अंतरिक्ष से बढ़कर सर्वोत्तम सूर्यज्योति का दर्शन करें।

ओ३म्
आर्य सन्देश

पुरानी पीढ़ी समाप्त हो रही है!

उस दिन दीवान हाल में भू० पू० शिक्षा राज्य मन्त्री एव प्रसिद्ध आर्य नेता प्रो० शेरसिंह ने श्री रघुवीर सिंह शास्त्री की श्रद्धांजलि सभा में बड़ी वेदना के साथ कहा—"यह बड़े दुःख की बात है कि आर्यसमाज की पुरानी पीढी समाप्त होती जा रही है और उसका स्थान लेने के लिए नए लोग नहीं आ रहे हैं।" उनका यह वक्तव्य शतप्रतिशत सच्चा है। आर्यसमाज के प्रारम्भिक काल से लेकर यदि आज तक के संस्था के इतिहास का सिंहावलोकन करें तो यह मालूम होगा कि महर्षि के निर्वाण के बाद श्री गुरुदत्तजी, श्री लेखराम जी, स्वामी श्रद्धानन्दजी, स्वामी सत्यानन्दजी, स्वामी वेदानन्द जी, श्री नारायण स्वामी जी, आनन्द स्वामीजी आदि दर्जनों आर्य विद्वानों एव आर्य सन्यासियो ने महर्षि एवं आर्य समाज के सन्देश को प्रदेश-प्रदेश एवं द्वीप-द्वीपान्तर मे फैलाने का प्रयत्न किया। उक्त कर्मठ आर्य पुरुषो एव उनके सहायकों के प्रयत्नों के फलस्वरूप आज ससार भर मे ५००० से अधिक आर्य समाजें हैं। शिक्षा प्रसार कुरीतियों के निवारण एव वैदिक आर्य धर्म के प्रचार एवं प्रसार में अनेक छोटे-बड़े, ज्ञात एवं अज्ञात आर्य पुरुषो ने जो कार्य किया है, वह सराहनीय एवं अनुकरणीय है।

इसी के साथ यह भी एक कटु तथ्य है कि यद्यपि आर्यसमाजो एव आर्य सस्थाओ का कलेवर पुष्ट हुआ है, उनके भव्य भवन बन गए हैं, आर्थिक दृष्टि से उनकी स्थिति बहुत सुदृढ़ हो गई है, परन्तु इस बाह्य पुष्ट विराट शरीर एव आयतन के बावजूद हमारे अन्दर तीन-चार बुनियादी निर्बलताए घर कर गई, जिन्हे यदि समय रहते नही सुधारा गया तो आशका है कि अगले कुछ वर्षो में आर्यसमाज की वह स्थिति नही रह जायेगी, जो आज विद्यमान है। पहली निर्बलता तो यह है कि आर्यसमाजो के बहुसंख्यक सदस्य प्रौढ़ एवं बूढे स्त्री-पुरुष हैं। रविवार के दिन किसी भी आर्यसमाज के सत्सग मे जाइए तो आपको इस कटु तथ्य की अनुभूति हो जाएगी। बहुसंख्यक समाजो एव आर्यसस्थाओं मे सफेद बाल वालों का बोलबाला है। एक पीढ़ी पहले तक जिस प्रकार उसमें युवावर्ग उत्साह से भाग लेता था, आज की नई पीढ़ी को उसमें पहले जैसा आकर्षण नहीं रह गया है। दूसरे आर्यसमाज के प्रारम्भिक जीवन में महर्षि एव आर्यसमाज के सन्देश को मानने वाले सत्य आग्रही और चरित्र के धनी होते थे। आर्यसमाज की स्थिति में तुरन्त बुनियादी परिवर्तन आ सकता है यदि इसके सदस्य सत्यभाषण एवं चरित्र की सच्चाई पर बल दें।

तीसरे प्रत्येक आर्यसमाज एवं आर्य संस्था को धन एवं पद की पूजा की जगह विद्या एवं गुण वाले का सम्मान करना चाहिए। चौथे केवल प्रचार-प्रसार पर बल देने की जगह आर्यसिद्धातों की गरिमा, महत्ता एवं उनके परिपालन पर अधिक बल देना होगा। जिस क्षण आर्यसस्थाओ में सत्य, चरित्र, शील को पहले युग की तरह महत्त्व दिया जाने लगेगा, तब स्वत. नई पीढ़ी और नई पौध उसके प्रति आकर्षित हो उठेगी। हम पड़ोस, समाज, प्रदेश, और राष्ट्र की विपत्तियों और सकटो को देखें और उनमे अपनी भूमिका प्रस्तुत करने के लिए प्रवृत्त हों। पहले कहीं बाढ आती थी, कोई भूकम्प होता था, या कोई दैवी या मौसम का प्रकोप होता था तो आर्यसमाज एव आर्यजन वहां अपनी सेवाए देने के लिए सदा प्रस्तुत होते थे। भ्रष्टाचार स्वार्थ से परिपूर्ण समाज और देश में विद्यमान नानाविध समस्याओ से जिस दिन आर्यजन पहले की तरह स्वार्थहीन होकर जूझने लगेंगे उसी दिन नई पीढ़ी के कोटि-कोटि बाल युवा समाज के नेतृत्व के पीछे चल पड़ेगे। यह सब करने के लिए प्रत्येक समाज और आर्यजन को किसी दूसरे से अपेक्षा किए बिना स्वतः त्याग-बलिदान और समर्पण की भूमिका प्रस्तुत करनी होगी। उस स्थिति में पुरानी पीढी के अवसान पर नई पीढ़ी नई शक्ति और उत्साह से उनका स्थान ग्रहण करती जायेंगी।

चिट्ठी-पत्री

आर्यसमाजें नोट कर लें

अभी भी कुछ आर्य समाजें अपने उत्सवो पर प्रचारार्थ निमन्त्रण मेरे पास कालेज के पते पर भेज देती हैं, जब कि मैं २॥ वर्ष पूर्व कालेज सेवा से निवृत्त हो चुका हू। इस स्थिति मे पत्र या तो मुझ तक पहुच ही नहीं पाता या पहुचता है। प्रतिविलम्ब से। अतः आर्यसमाजों से निवेदन है कि निम्नलिखित मेरे निवास पर ही पत्र व्यवहार करने की कृपा करें।

—प्रो० रत्नसिह, बी-२१, गांधीनगर, गाजियाबाद (उ० प्र०)

रिपोर्ट की कोई प्रासगिकता नहीं है

सभा के पत्र में (आर्य सन्देश ५ सितम्बर, १९८२ के अक में) मीनाक्षी पुरम के विषय में मेरी यात्रा का वर्णन छपा है। कुछ महीने पहले इस प्रकार की एक रिपोर्ट अवश्य भेजी गई थी, तब मैं मीनाक्षीपुरम गया था, किन्तु उस समय वह रिपोर्ट प्रकाशित नहीं हुई थी। अब ६ मास बाद वह कैसे छप गई? अब तो उसकी कोई प्रासंगिकता ही नहीं है, मुझे लगता है, मेरे नाम से विवाद उत्पन्न करने की चेष्टा की गई है, जो चीज पहले नहीं छपी थी, अब भी नहीं छपनी चाहिए थी। अब छपने से ऐसा लगता है कि अभी वहां होकर आया हू, जब कि ऐसा नहीं है।

—रघुवीर वेदालंकार, शालीमार बाग, दिल्ली।

आर्य कौन है?

जो श्रेष्ठ स्वभाव, धर्मात्मा, परोपकारी, सत्यविद्यादि गुणयुक्त और आर्यावर्त्त (भारत) देश मे सब दिन से रहने वाले हैं, उनको 'आर्य' कहते हैं।

—स्वामी दयानन्द सरस्वती

भारतीय सस्कृति के तीन प्रतीक हैं—ओ३म्! आर्य!! नमस्ते!!!

—शुभचिंतक : आर्यसमाज,खारीवाव बड़ोदरा-१

स्वाध्याय

आचार्य अत्रे उन दिनों बीमार पड़े थे। फिर भी चारपाई पर बगल मे उन्होंने ढेरों पुस्तकें जमा कर रखी थीं। उन्हे पढकर मन.स्थिति को हल्का कर लेते थे। उनके एक मित्र ने उनको पूर्ण विश्राम का परामर्श दिया। अत्रे जी ने मुस्कराते हुए कहा—"मैं बीमारी की खुराक बना हुआ हू। पर मैं भूखा कैसे रहू? अपनी खुराक पुस्तकों से हासिल करता हूं।"

—प्रद्युम्न तलवड १-२०८ अशोक विहार फेज-I दिल्ली।

—बातचीत का पहला अश है सत्य, द्वितीय सुन्दर सूझबूझ, तृतीय सुन्दर विनोद और चतुर्थ वाक्चातुर्य।

—सर डब्ल्यू टेंपिल

गायों की कानपुर से निकासी पर प्रतिबन्ध

कानपुर। आर्यसमाज के एक प्रतिनिधि मण्डल ने केन्द्रीय आर्यसभा के प्रधान श्री देवीदास आर्य ने नेतृत्व मे जिलाधिकारी श्री रवि माथुर से भेंट कर माग की कि रेल व ट्रको द्वारा कानपुर से कलकत्ता कटने के लिए भेजी जाने वाली गायो की निकासी पर प्रतिबन्ध लगाया जाए। इससे हिन्दुओ की धार्मिक भावनाओ को ठेस पहुंचती है। जिलाधिकारी ने प्रतिनिधि मण्डल को आश्वासन देने के पश्चात रेल पुलिस अधिकारियो को आदेश भेजकर गायो के निकासी पर प्रतिबन्ध लगा दिया।

योग प्रशिक्षण केन्द्र : गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार

योग में रुचि रखने वाले महानुभावो के लिए गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के द्वारा एक निःशुल्क योग-प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है। इस योग प्रशिक्षण में किसी भी आयु वर्ग के सज्जन भाग ले सकते हैं। कार्यक्रम में रुचि लेने वाले महानुभावों कार्यक्रम में पजीकरण तथा जानकारी के लिए सम्पर्क करें—

—डा० त्रिलोकचन्द, निदेशक योग-प्रशिक्षण केन्द्र, शिक्षा कार्यालय
गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय, हरिद्वार।

वेद का सच्चा मानवधर्म

७ अक्तूबर १९८२ के दिन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने वैदिक विद्वान् डा० वेदालंकार की 'वेदों में मानववाद' शीर्षक पुस्तक का विमोचन किया था। प्रस्तुत लेख में प्रस्तुत है उस ग्रन्थ की भूमिका एवं सार-संक्षेप—

वैदिक साहित्य मे मानव के व्यष्टि और समष्टि-गत सर्वविध विकास का सही मार्ग प्रतिपादित है। वह मार्ग सार्वदेशिक एवं सार्वकालिक है और मानव-मात्र के लिए समान रूप से सेवनीय है। उसमे लिंग-भेद, वर्ग-संघर्ष और हिंसा का कोई स्थान नही। वैदिक धर्म कोरा आदर्शवाद नहीं है प्रत्युत मानव-हित एवं विश्व-शान्ति के लिए एक सुनिश्चित दर्शन, आचारशास्त्र, समाज-व्यवस्था तथा शासन-व्यवस्था प्रस्तुत करता है। उसमे मानवोपयोगी विज्ञान, कला-कौशल और उद्योग आदि का भी सन्निवेश है।

वैदिक दर्शन सर्वान्तर्यामी परमात्मा को सब प्राणियो का पिता-माता मानता है एवं इस प्रकार भ्रातृभाव एवं विश्व-बन्धुत्व को सबल आधार प्रदान करता है। प्राणिमात्र मे एक ही आत्मतत्व के दर्शन करके समदृष्टि उत्पन्न करता है। ब्रह्म की तरह जीव और प्रकृति की भी वास्तविक सत्ता मान कर मानव को सासारिक अभ्युदय से विमुख नही करता। कर्म सिद्धान्त मे आस्था उत्पन्न कर मनुष्य को नैतिक कार्यों में प्रवृत्त करता है तथा हिंसा आदि से दूर रखता है।

यज्ञ की मूल भावना त्याग एवं परोपकार है एवं षोडश संस्कार व्यक्ति का शारीरिक, मानसिक एवं आत्मा सम्बन्धी परिष्कार करते हैं। यम-नियम वैदिक धर्म के सम्बल हैं, इनमे जहा 'यम' समष्टि की स्थिति के लिए अनिवार्य हैं, वहा 'नियम' व्यष्टि के जीवन को पवित्र कर बहुत उन्नत कर देते हैं।

वेद सब नैतिक तत्व एवं उदात्त प्रार्थनायें हैं। मानव-मात्र आचार एवं नीति सम्बन्धी उन निर्देशो और प्रार्थनाओ का पालन कर सुखी हो सकता है।

वैदिक अध्यात्मवाद—यद्यपि व्यक्ति-स्वातन्त्र्यवाद, साम्यवाद, समाजवाद आदि सामाजिक-राजनीतिक व्यवस्थाओ का प्रादुर्भाव भी मानववादी चिन्तन धाराओं से ही हुआ है तथापि ये सब समानता, स्वतन्त्रता और मानव हित के उद्देश्य को लेकर ही चलते हैं। किन्तु निश्चित दर्शन के अभाव एवं एकांगी होने के कारण ये संगठन मानवतावाद के उद्देश्य को पूरा करने मे सर्वथा असफल रहे हैं। वस्तुत: वैदिक अध्यात्मवाद के सबल आधार के बिना वास्तविक मानवतावाद मृग-मरीचिका ही है। वैदिक वर्णाश्रम-व्यवस्था सब प्रकार के वर्ग-भेदों को समाप्त कर लोक-संग्रह और व्यष्टि की सर्वविध उन्नति के मार्ग खोलती है।

'वेद की मानववादी शासन-व्यवस्था' भी प्रजातन्त्र की पद्धति पर आध्यात्मिक एवं नैतिक आधार को लिए हुए है तथा सब प्रकार के अन्याय, अत्याचार, शोषण एवं विषमताओं को समाप्त करती है।

'वेद मे मानवोपयोगी ज्ञान-विज्ञान कला-कौशल एवं वाणिज्य' का निरूपण है। वेद कोरा दर्शन और थोथा धर्म ही नही, अपितु उसमें मानव के कल्याण के लिए अनेक प्रकार के ज्ञान-विज्ञान, कला कौशल, उद्योग-व्यापार का वर्णन हुआ है।

इस प्रकार वैदिक साहित्य मानव की ऐहिक और पारलौकिक उभयविध उन्नति का मार्ग प्रशस्त करता है। उसमें किसी वर्ग, जाति व सम्प्रदाय को लक्ष्य करने का विचार नहीं किया गया, अपितु समस्त मानव जाति को लक्ष्य मानकर व्यष्टिके अभ्युदय और नि:श्रेयस् का मार्ग बतलाया गया है। इसमें मानव गौरव की सजग स्थापना होते हुए भी न तो कान्ट की भांति ईश्वर के स्थान पर मनुष्य की पूजा का विधान किया गया और न ही जॉन स्टुअर्ट मिल की तरह मानववाद को उपयोगितावाद से पोषित करने की आवश्यकता प्रतिपादित की गई। इसमे भी अज्ञान को अभिशाप मान कर अन्धकार से प्रकाश की ओर जाने को बार-बार प्रार्थना की गई है। आडम्बरों और तर्कहीन विश्वासों का विरोध किया गया है। नैतिक आचार-विचार की प्रमुखता मानी गयी है।

वेद और मानव

वेद अर्थात् ज्ञान। वेद सृष्टि के ज्ञान-विज्ञान के आगार हैं। वेद संसार की प्राचीनतम ज्ञानराशि है। वेद से पुरातन साहित्य आज तक विद्वानों को उपलब्ध नहीं हुआ है। सुप्रसिद्ध विद्वान् प्रो० मैक्समूलर के शब्दों मे—मानव पुस्तकालय की प्राचीनतम पुस्तक ऋग्वेद है।

वस्तुत: 'वेद' संतप्त और दु:खी मानव जाति के कल्याण का मार्ग बताने वाला दिव्य ग्रन्थ है। मानव मात्र को वैयक्तिक, पारिवारिक, सामाजिक और राष्ट्रीय कर्तव्यों का ज्ञान कराकर उसे सुख, शान्ति और आनन्द का सच्चा मार्ग बताना—यही वेदों का पवित्र उद्देश्य है। वस्तुत: वेद मानव सभ्यता का मूलस्रोत है, और भारतीय संस्कृति तथा सभ्यता का प्राण है।

वेदों में मानव जाति के उन्नयन के लिए जिन सिद्धान्तों का प्रतिपादन है, उन्हें धर्म का नाम दिया गया है। जो ज्ञान या कर्म पतन से बचाये, उसका उपदेश दे—वही 'धर्मग्रन्थ' है। वेद के आदेश और उपदेश हमे नीचे गिरने से ही नहीं बचाते, अपितु निरन्तर ऊपर उठने की प्रेरणा भी देते हैं।

आज सारा संसार विभिन्न धर्मों, विभिन्न देशो, विभिन्न गुटों, विभिन्न जातियों और विभिन्न विचारधाराओं मे बंटा हुआ है। परन्तु आश्चर्य है कि वेद की दृष्टि से न कोई ऐतिहासिक सीमा है, न ही भौगोलिक, न राजनीतिक सीमा है और न ही साम्प्रदायिक सीमा। साथ मे विशेषण है 'अमृतस्य पुत्रा:' अर्थात् सारी मानव जाति अमृत पुत्र है, यह अमरता की सन्तान है—जो अक्षय आनन्द के स्रोत, सच्चिदानन्द स्वरूप, अमृतधाम मोक्ष पद के अधीश्वर परमपिता परमात्मा की सन्तान है। कोई एक ही अकेला खुदा का बेटा नहीं है—परन्तु वेद की दृष्टि में सभी खुदा के बेटे हैं, उसी परमपिता के पुत्र हैं।

समस्त भारतीय साहित्य में मानव जीवन का 'लक्ष्य' मोक्ष जो कहा गया है सो अकारण नहीं है। वेद, उपवेद, वेदांग और उपांग सब में—अरे! लौकिक और ललित साहित्य मे भी—मानव जीवन का परम लक्ष्य मोक्ष को ही बताने की प्रवृत्ति वेद की उसी भावना की द्योतक है। और कोई लक्ष्य मानव-जीवन का हो ही नहीं सकता। मंजिल निर्दिष्ट हो गई, वह है मोक्ष। किन्तु मंजिल तक पहुंचने का मार्ग बड़ा बीहड़ है। मानव-जीवन भी क्या कम जटिल है? जन्म से मृत्यु तक रोना ही रोना लगा है।

कुछ शरीर की आवश्यकतायें हैं और कुछ मन व बुद्धि की आवश्यकताएं हैं जिनकी पूर्ति के लिए मनुष्य सदा प्रयत्न करता रहता है। शरीर की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए अर्थ चाहिए। रोटी, कपड़ा और मकान तथा जीवन के समस्त सांसारिक पदार्थ इस अर्थ में समा जाते हैं।

मन की आवश्यकताएं पूरी करने के लिए 'काम' चाहिए—स्त्री-पुरुष-पौत्रादि गृहस्थी के समस्त बन्धन इसी काम के विस्तार हैं। बुद्धि के लिए ज्ञान चाहिए—'बुद्धिर्ज्ञानेन शुध्यति'—बिना ज्ञान-विज्ञान के बुद्धि की तृप्ति नहीं होती। आत्मा के लिए 'मोक्ष' चाहिए।

चार पुरुषार्थ

इसीलिए वेद की दृष्टि में मानव जीवन के चार 'पुरुषार्थ' हैं। पुरुषार्थ अर्थात् पुरुष का प्रयोजन—ऐसा प्रयोजन जिसके बिना मानव जीवन चल नहीं सकता। धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष - ये ही चार पुरुषार्थ हैं। पुत्रैषणा वित्तैषणा, लोकैषणा—सब इन चार पुरुषार्थों में आ जाती हैं। ज्ञान, मान, रति आदि मानव-जीवन की समस्त मूल प्रवृत्तियां, जिन्हें आज का पाश्चात्य-मनोविज्ञान भी अस्वीकार नहीं कर सकता—वे पुरुषार्थ-चतुष्टय में परिगणित अर्थ और काम में आ जाती हैं। फ्रायड का मनोविज्ञान जिस 'सेक्स' पर इतना जोर देता है क्या वह 'काम' से भिन्न है? और जिसे मनोवैज्ञानिक विद्वान् 'जीवनेच्छा' कहते हैं, वह भी 'अर्थ' से भिन्न नहीं है।

लेखक :

डा० दिलीप वेदालंकार

यदि सच कहा जाए तो संसार की इस समस्या का समाधान एकमात्र 'वेद' के पास है। 'वेद' के सिवाय अन्य किसी मे यह शक्ति नहीं है जो इस डूबते मानव समाज के जहाज को बचा सके क्योंकि विश्व के सब मत-मतान्तर, धर्म ग्रंथ, विविध संगठन और विभिन्न विचारधाराएं व्यक्तिगत ईमान पर जोर देते हैं—धर्म अर्थात् कर्तव्य पर नहीं, और 'मोक्ष' की कल्पना तो उनके सामने है ही नहीं।

आत्मजनो! वैदिक धर्म की दृष्टि से 'अर्थ' और 'काम' हेय नहीं हैं—जीवन मे उनका भी स्थान है। अरे! वे अत्यन्त आवश्यक हैं। उनके बिना शरीर और मन की आवश्यकताएं पूरी नहीं होतीं। परन्तु वे अर्थ और काम निरकुंश और निरुद्देश्य नहीं हैं। उन पर धर्म का अंकुश है और 'मोक्ष' उनका उद्देश्य है।

संक्षेप में अर्थ और काम की जोड़ी है परन्तु यह जोड़ी धर्म के अंकुश में रहनी चाहिए अर्थात् धर्म (अर्थ+काम—मोक्ष। अर्थात् धर्मपूर्वक अर्थ और धर्मपूर्वक काम ही मोक्ष की मंजिल तक पहुंचाने में सहायक हो सकते हैं, धर्म से रहित होकर नहीं।

वेद की दृष्टि से यह है मानव-जीवन का प्रयोजन, मानव जीवन का लक्ष्य और पुरुष का प्रयोजन—पुरुषार्थ। यही है मानव जीवन की परीक्षा। इससे अधिक परिपूर्ण, सर्वग्राह्य और श्रेयस्कर

(शेष पृष्ठ ६ पर)

महर्षि दयानन्द के वेदभाष्य की विशेषताएं

—डा० [illegible]

भाष्य में एक बात और स्पष्ट कर दी गई है कि वेद से केवल मंत्र संहिताओं का ही ग्रहण है ग्रंथों का नहीं क्योंकि वे ईश्वरकृत नहीं हैं जैसे ब्राह्मण ग्रन्थादि। महर्षि ने मंत्रसंहिताओं में किसी भी इतिहास को नहीं माना है। उन्होंने स्पष्ट कर दिया है कि ब्राह्मणग्रंथ लौकिक इतिहास है किंतु मंत्रसंहिता में इतिहास नहीं है वेदों में देवासुर संग्राम भी नहीं है महर्षि ने स्पष्ट किया है कि ब्राह्मण ग्रंथों में कथाएं इतिहास हैं। जगत की पूर्व अवस्था का वर्णन करता है वह भाग (ब्राह्मण का) पुराण है। वेदमंत्रों के अर्थ द्रव्यों का सामर्थ्य कहा है वह 'कल्प' है। शतपथ ब्राह्मण में याज्ञवल्क्य, जनक, गार्गी, कैकेयी आदि की कथाओं को 'गाथा' कहा गया है। जिसमें नर की लोगों से परमेश्वर, धर्म और मनुष्य, की प्रशंसा है, उसे नराशंसी कहा गया है। ये ब्राह्मण ग्रंथों में उपलब्ध हैं।

एक और महत्व की बात महर्षि दयानन्द सरस्वती के वेदभाष्य में है—वह है वेदों में सब विद्याएं हैं और उनमे ब्रह्मविद्या सर्वप्रथम है। परमेश्वर जड़-चेतन का राजा, सर्वत्र व्यापक, अणु-अणु में व्याप्त, सामर्थ्यशाली, कल्पादि में सृष्टि करने वाला और आनन्द स्वरूप तथा ओजदाता है। वह अद्वितीय है उसका द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ, पंचम, षष्ठ, सप्तम्, अष्टम, नवम्, दशम् आदि कोई नहीं है। वह 'तमिद निगतं सह. स एष एक एकवृदेक एव, सर्वेअस्मिन, देवा एकहतो भवन्ति' अथर्ववेद काण्ड १३ अनु ४. मंत्र—२१। अर्थात् वह प्रभु एकमेव अद्वितीय है, उसका कोई दूसरा तीसरा, चौथा, पाँचवा, छठा, सातवाँ, आठवां, नवमा या दशम रूप नहीं है। वही सर्वत्र व्यापक एकमेव जगत का कर्त्ता, हर्त्ता और धर्त्ता है और उसमे वह किसी का भी सहाय नही लेता है। वह सर्वव्यापक और सर्वसामर्थ्यशाली है। इससे स्पष्ट है कि वेदों मे कहीं भी अवतारवाद नहीं है।

वेदभाष्य में महर्षि ने सदैव सत्य को ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने के लिए उद्यत किया है। 'सत्यनावृता मिथ्या प्राहृता यशसा परीहृता' सबको उत्तम गुणों का ग्रहण कर सत्याचरण द्वारा यश अर्थात् उत्तम कीर्ति अर्जित करनी चाहिए। 'यज्ञ प्रतिष्ठिता लोको नियानम्' अर्थात् मरण पर्यन्त सबको परमेश्वर की उपासना, यज्ञादि कर्म व शिल्पविद्या से सुखप्राप्ति और परोपकार करते रहना चाहिए। चारों वर्णों को आचरण से मान्यता प्रदान करते हुए ब्राह्मणो के लिए उत्तम विद्या का प्रचार क्षत्रिय के लिए देशरक्षा, वैश्य के लिए व्यापार और इन सबके लिए सेवाकार्य शूद्र को प्रदान किया गया है। सत्यविद्या के प्रचार पुरुषार्थ, रक्षाकार्य, धनादि का उत्तम रीति से व्यय और सुख प्राप्ति के साधनो की वृद्धि करना सब बातो के लिए जरूरी बताया गया है। महर्षि ने बताया है कि 'सत्यभाषणात् सत्याचरणाच्च पर धर्म लक्षण किंचिन्नास्मेव, एकमेव सत्येन ब्राह्मण वायुरागच्छति सत्येनादित्यः प्रकाशितो भवति, सत्येमै मनुष्याणां प्रतिष्ठा जायते नानाभेति' अर्थात् सत्य ही ब्रह्म है उससे ही वायु प्रकाश आदि की रक्षा होती है। इससे ही मोक्ष और प्रतिष्ठा बढ़ती है।

महर्षि ने वेदभाष्य करते हुए गुरुत्वाकर्षण, विद्युत, उर्जा, अणुविस्फोट, तारविद्या, गणित विद्या, मुक्तिविद्या, नौ—विमानादि विद्या, पुनर्जन्म विद्यादि विषयो पर सप्रमाण व्याख्या की है।

महर्षि ने सबसे उपकारपूर्वक जो कार्य किया है वह है समाज मे प्रचलित अंधविश्वास रुढ़िजाड्यता, मूर्खता आदि का अंत करना। महर्षि के वेदभाष्य से समाज मे नई जागृति आई। ज्ञान-विज्ञान की उन्नति मे भारतीय समाज लगा। वेदो की प्रतिष्ठा स्थापित हुई और पाश्चात्य देशो के विद्वानों और उनके मानस पुत्रो द्वारा वेदो की गई अप्रतिष्ठा समाप्त हुई। महीधर और सायण जैसे कितने ही वेद-भाष्यकारो की अज्ञानता प्रकाश मे आई। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने वेदभाष्य द्वारा संसार का उपकार किया।

ईसाई युवती की शुद्धि

आर्य समाज जमशेदपुर के १९।९।८२ के साप्ताहिक सत्संग मे ईसाई नन मिस वैनडिटा नायडू की शुद्धिकर उन्हें वैदिक धर्म मे ग्रहण किया गया। उनका नया नाम कुमारी उमा देवी नायडू रखा गया। इस अवसर पर लोग बड़ी संख्या में उपस्थित थे।

आर्य जगत् समाचार

ओ३म् की ध्वजा मानवमात्र की है

इस ध्वजा की छाया में अन्याय, अभाव अविद्या का नाश करें।

फरीदाबाद में आर्यवीर दल महासम्मेलन

फरीदाबाद। लेखरामनगर (नेहरू ग्राउण्ड) मे आर्यवीर दल के सम्मेलन के अवसर पर ओ३म् की ध्वजा फहराते हुए हरियाणा के तपस्वी नेता स्वामी ओमानन्दजी ने कहा—ओ३म् ध्वज का मनुष्य मात्र का है। यह किसी एक देश या मजहब का नहीं है। आर्ययुवक सदा की भांति इसकी छत्रछाया मे अन्याय, अभाव और अविद्या को मिटाते चलें।

शोभायात्रा तीन मील लम्बी थी। उसमे गुडगांव, करनाल, हिसार, भिवानी नरवाना, कैथल, रोहतक पलवल, पानीपत, फरीदाबाद, बल्लभगढ़, नीलोखेडी के आर्यवीर दल और केन्द्रीय आर्ययुवक परिषद के युवक मस्ती से कवायद् और व्यायाम प्रदर्शन कर रहे थे। आर्य सस्थाओ के बैण्ड और विद्यालयो के बच्चे भी जलूस मे सम्मिलित थे। अत में एक सजी हुई ट्राली पर सार्वदेशिक के प्रधान श्री शालवाले थे।

रात्रि को आर्यवीर सम्मेलन की अध्यक्षता करते हुए श्री शालवाले ने कहा—आचार्य द्रोण ने कहा था कि यदि मेरे मुख से वेद की बात मानोगे तो ठीक वर्ना तलवार से मनवाना जानता हू। आज प्रत्येक आर्य परिवार को एक आर्य युवक आर्यवीर दल मे भेज देना चाहिए, जिससे दल देश में व्याप्त आंतरिक अशान्ति दबा सके श्री चन्द्रप्रकाश सत्यार्थी ने नवयुवको को प्रेरणा दी कि वे आर्यसमाज में आयें। इस अवसर पर आचार्य देवव्रत, डा० ज्वलन्तकुमार, सार्वदेशिक आर्यवीर दल के प्रधान सचालक बालदिवाकर हंस ने भाषण दिए।

रविवार ३ अक्तू. के दिन डेढ़ हजार आर्यवीरो ने गणवेश मे एक भव्य रैली मे भाग लिया। वेद सम्मेलन में आचार्य सत्यप्रिय ने वैचारिक क्रान्ति के लिए आर्यवीर दल की महत्ता पर बल दिया। धर्म राष्ट्र रक्षा सम्मेलन मे श्री चन्द्र प्रकाश सत्यार्थी, डा० वेद प्रताप वैदिक प्रो० शेरसिह, श्री जयप्रकाश आर्य, श्री क्षितीश वेदालकार ने सामयिक भाषण किए।

कश्मीर विधानसभा तुरन्त भंग की जाए

वहां के मुख्य मन्त्री पर मुकदमा किया जाए :

दिल्ली की आर्यसमाजों की सम्मिलित मांग

नई दिल्ली। आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य के प्रधान महाशय धर्मपाल के आह्वाहन पर दिल्ली की अनेक आर्यसमाजो ने सभाएं करके पाकिस्तानी समर्थक बिल विरोधी दिवस बनाते हुए अपने प्रस्तावो मे मांग की है कि कश्मीर की विधान सभा ने भारत की प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाधी की कड़ी चेतावनी के बावजूद पाकिस्तानी समर्थक पुनर्वास विधेयक पुन. स्वीकृत करने की कार्यवाही को बड़ी गम्भीर दृष्टि से देखा है। अत ये सभाये भारत की प्रधान मन्त्री से माग करती हैं कि कश्मीर विधान सभा को तुरन्त भगकर दिया जाए और ३७० दफा तुरन्त समाप्त की जायें। केन्द्रीय आर्ययुवक परिषद की ओर से पुनर्वास विधेयक के विरोध मे अनेक स्थानों पर विरोध दिवस मनाया गया।

इसी सम्बन्ध मे एक विशाल सभा पश्चिमी दिल्ली की समस्त समाजो की आर्यसमाज सुदर्शन पार्क मे महाशय धर्मपाल जी की अध्यक्षता मे हुई। इस सभा मे श्री ओमप्रकाश आर्य, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री प्रो० भारत मित्र, लाला गुरमुख दास ग्रोवर ने कश्मीर के मुख्य मन्त्री पर देशद्रोह का इलजाम लगाते हुए उन पर मुकद्दमा चलाने की मांग की।

इसी प्रकार की एक सभा आर्यसमाज दीवान हाल मे हुई। जिसमे आर्य समाज दीवान हाल के प्रधान श्री सूर्यदेव, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री सच्चिदानन्द शास्त्री, स्वामी ओमानन्द, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री प्रेमनाथ चड्ढा इत्यादि ने भाषण दिए और सरकार से विधान सभा तुरन्त भग करने तथा ३७० दफा समाप्त कर राष्ट्रपति शासन लागू करने की मांग की।

मथुरा से गोवंश निकास बन्द होगा।

जिलाधीश द्वारा प्रतिनिधि मण्डल को आश्वासन

नई दिल्ली। मथुरा से मिले समाचार के अनुसार अतिरिक्त जिलाधीश। वाजपेयी मथुरा ने नगर के प्रतिनिधि मंडल को आश्वासन दिया कि वह गोवंश निकास के सभी परमिट केसल कर देंगे। आगे के लिए कोई परमिट नहीं दिया जाएगा। सिटी मजिस्ट्रेट के आदेश से बांदरा बम्बई जा रहे रोके हुए ९० बैल अब नही जा सकेंगे।

उक्त प्रतिनिधि मडल ने स्मरण पत्र ए. डी. एम. को देकर अनुरोध किया था कि अवैध गोवंश के निकास से जनता मे रोष का वातावरण उद्वेलित हो रहा है। अतएव उपर्युक्त तुरन्त बन्द किया जाए तथा जिले से हुए गोवंश निकास की उच्च स्तरीय जांच कराई जाए, जिससे व्याप्त भ्रष्टाचार सामने आ सके।

वाल्मीकि मंदिर रघुवीर नगर में यज्ञ एवं कथा

आर्यसमाजों सनातन धर्म सभा एवं वाल्मीकि सभा का महत्वपूर्ण संयुक्त कार्यक्रम

नई दिल्ली। आर्य सार्वदेशिक सभा की प्रेरणा से १९८१ में शुरू हुआ हरिजन स्नेह सम्मेलन का कार्यक्रम अब हिन्दू जगत के सभी वर्गों मे फैलता जा रहा है। इसी सन्दर्भ मे टैगोर गार्डन रघुवीर नगर क्षेत्र की आर्य समाजो, सनातन धर्म सभाओं तथा वाल्मीक मदिर की ओर से एक सम्मिलित कार्यक्रम का आयोजन १२ से १७ अक्टूबर १९८२ तक श्री वाल्मीकि मंदिर सी० ब्लाक रघुवीर नगर नई दिल्ली में किया गया।

इसके अन्तर्गत १२ से १६ अक्तूबर १९८२ तक प्रातः महात्मा दयानन्द जी (देहरादून वालों) द्वारा सामवेद यज्ञ सम्पन्न कराया गया तथा रात्रि को मानस मर्मज्ञ मधुकर द्वारा रामायण कथा प्रस्तुत की गई। यज्ञ मे सफाई कार्यों मे लगे भाई बहनों ने भी सबके साथ बैठकर वेद मन्त्रों के उच्चारण के साथ यज्ञ में आहुतियां दीं।

वेद का सच्चा मानवधर्म (पृष्ठ ४ का शेष)

मानव जीवन की और कोई परिभाषा हो नहीं सकती।

आप पूछेंगे 'वेद' मे क्या है? हम कहते हैं कि वेद मे इन्ही चार पुरुषार्थ (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष) का प्रतिपादन है। धर्म और मोक्ष के साथ अर्थ और काम भी वेद की दृष्टि मे हेय या नगण्य नही हैं, उनका भी प्रचुर वर्णन है, परन्तु 'तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा' कहकर उन पर अंकुश लगा दिया है।

अर्थ और काम की प्राप्ति के लिए संसार के पदार्थों का ज्ञान आवश्यक है, क्योंकि पदार्थों के गुण-दोष की जानकारी के बिना उनका उपयोग सम्भव नही। पदार्थों के गुण-दोषो का ज्ञान ही आयुर्वेद है—आयु को बढ़ाने वाला ज्ञान है। रसायन, भौतिकी, शरीरशास्त्र, जीव-विज्ञान, वनस्पति-विज्ञान, अस्थि-विज्ञान, आकृति-विज्ञान आदि विज्ञान की समस्त शाखाएं इसी 'आयुर्वेद' के अन्तर्गत आ जाती हैं और आयुर्वेद वेद का उपवेद है।

वेद कहता है कि संसार के पदार्थों के ज्ञान के लिए सृष्टि-उत्पत्ति के नियमो एव सृष्टि के निर्माता परमात्मा को जानना भी परमावश्यक है। जगत् के उस महान् सचालक—ईश्वर के गुणों को जान कर कर्म तथा भोग के बन्धन में बधा अल्पज्ञ जीव उससे साक्षात्कार करने और मिलने को आतुर हो उठता है। अष्टांग योग को साधने पर ही आत्मा और परमात्मा का मेल होता है—आवागमन का चक्र छूट जाता है।

इस प्रकार पुरुषार्थ-चतुष्टय की सम्यक् साधना के लिए वेद से बढ़कर अन्य कोई मार्गदर्शक नहीं हो सकता। यही 'वेद' का वेदत्व है। यही मानव जाति को उसका उपदेश है—सन्देश है और उसकी उपयोगिता है। यही कारण है कि 'वेद' किसी भी देश और काल की सीमा मे नही आता, वह सम्प्रदाय से अतीत है—इतिहास और भूगोल की सीमाएं उसे नहीं बाधतीं। वेद का उपदेश और सन्देश किसी जाति विशेष या देश विशेष के लिए नहीं है—मानव मात्र के लिए है। 'वेद' उसी न्यायकारी राजा (परमपिता) का सृष्टि के आदि मे अपनी प्रजा के लिए दिया संविधान है।

अत: जैसे उस ईश्वर के बनाए सूर्य और चन्द्र, वायु और जल, पृथ्वी और आकाश, बादल और वर्षा तथा वृक्ष और वनस्पति सबके लिए हैं—उनमे हिन्दू-मुसलमान या यहूदी-ईसाई का भेदभाव नहीं है—वैसे ही 'वेद' सबके लिए हैं। सूर्य, चन्द्र, जल, पवन, गगन जैसे 'सेक्यूलर' हैं, वैसे ही वेद भी सेक्यूलर हैं।

इसी लिए वेद ने देश-जाति, नदी-पर्वत, अर्वाचीन-प्राचीन की सब सीमाओं और बाधाओ को लांघकर मानव जाति को एक इकाई के रूप मे सम्बोधन किया है—"श्रृण्वन्तु सर्वे अमृतस्य पुत्राः"—सुनो रे अमृत के पुत्रो, समस्त विश्व के नागरिको, सुनो! सब के सब सुनो!

यहीं वेद का 'मानववाद' है—यही वेद का मानव धर्म है।

यूरोप के वैदिक विद्वानों का भयंकर षड़यंत्र

'आर्य' और 'द्रविड़' शब्द

—स्व० स्वामी समर्पणानन्द जी (पं० बुद्धदेव विद्यालंकार)

भारत में राष्ट्रीय एकता के मार्ग में सबसे बड़े बाधक हैं। 'आर्य' और 'द्रविड़' शब्द इसलिए यदि भारत मे राष्ट्रीय एकता उत्पन्न करनी आवश्यक है तो यह जातिवाद दूर होना चाहिए।

यूरोपीय लोग कहते हैं कि दक्षिण मे काले रंग के लोग बहुत हैं तथा उत्तर में गोरे रंग के इससे पता लगता है कि गोरे उत्तर से आए, काले दक्षिण से। यह हो सकता है कि यह बात ठीक हो। किन्तु इससे अन्तर कुछ नहीं नहीं पड़ता। मान लीजिए कालो का मूल स्थान अफ्रीका अथवा शाकद्वीप था तथा गोरो का मूल स्थान तिब्बत था। काले अफ्रीका से चलकर भारत के जगलो मे प्रविष्ट हुए. गोरे ब्रह्मपुत्र की ओर से भारत मे प्रविष्ट हुए अथवा जैसे यूरोपीय लोगो का कहना है मध्य एशिया से सिन्धु पार करके भारत मे प्रविष्ट हुए। तो इससे यह कैसे सिद्ध हुआ कि काले आदिवासी थे तथा गोरे प्रवासी, यदि दोनों को ही प्रवासी मान लें तो अधिक युक्तिसगत होगा क्योंकि अफ्रीका से आने वालो का दक्षिणी भारत की ओर से प्रविष्ट होना अधिक युक्तिसगत है। दक्षिण में मोटे ओष्ठ चिपटी नाक तथा काले रग के लोगों की सख्या है भी अधिक परन्तु गोरों की सख्या भी कम नहीं। वास्तव मे यहाँ प्रश्न गोरे-काले का नहीं। आर्य तथा द्रविड़ शब्दो का है। आर्य शब्द का गोरो से तथा द्रविड का कालों से क्या सम्बन्ध है यह कोई नही बता सकता। यह आर्य तथा द्रविड़ नाम की दो जातियो की कल्पना कोरे असत्य पर अवलम्बित है। जिसे यूरोपियन लोग आर्य सभ्यता कहते हैं। उसका सबसे बड़ा चिन्ह चातुर्वर्ण्य है। शैव हो या शाक्त हो, वैष्णव हो, गाणपत्य हों चातुर्वर्ण्य समान हैं चाहे उसका विकृतरूप जन्मानुसारिणी वर्ण-व्यवस्था क्यों न बन गया हो।

अब यदि द्रविड़ लोग आर्येतर हैं तो उनका चातुर्वर्ण्य से कोई सम्बन्ध नही होना चाहिए किन्तु सत्य इसके बिल्कुल विपरीत है। चातुर्वर्ण्य विभाग मे सर्वोच्च स्थान ब्राह्मणो का है। भारत में ब्राह्मणों के दस कुल हैं। पाँच गोड तथा पाँच द्रविड़। शंकराचार्य द्रविड ब्राह्मण थे। अब सोचिए कि यदि आर्यों ने द्रविड़ को मार भगाया और उनका राज्य छीन लिया तो आर्य सभ्यता में सर्वोच्च पदवी, 'ब्राह्मण' द्रविड़ो को किस प्रकार मिल गई। फिर क्या कोई माई का लाल, द्रविड़ शब्द का काले रग तथा चपटी नाक के साथ दूर का भी सम्बन्ध प्रमाणित कर सकता है?

मैं इस लेख द्वारा समस्त यूरोपीय कूटनीति के क्रीत दासो को ललकार कर कहता हू कि सारे सस्कृत साहित्य मे ही नही बौद्ध साहित्य में से कोई ऐसा प्रमाण उपस्थित करे जिससे उनकी यह मिथ्या धारणा सिद्ध होती हो कि १. आर्य नाम गोरे रंग तथा लम्बी नाक वालो का है। २. द्रविड़ नाम काले रग तथा चपटी नाक वालो का है। उलटा जिस मनु को सदा गालियां दी जाती हैं। उसने द्रविड़ों को क्षत्रिय जाति में गिना है: (मनु ।७।)

आर्य लोगो की व्यवस्था में ब्राह्मण तथा क्षत्रिय ये ही दो सर्वोच्च पदवी हैं और ये दोनो द्रविडो को प्राप्त हैं तो फिर द्रविड लोग आर्येतर किस प्रकार हुए। काले रग से घृणा नही, एक बात और भी विचारने योग्य है। यदि आर्य और द्रविड शब्दो का रग से कुछ भी सम्बन्ध होता तो भारत के इतिहास मे काले रग के प्रति कही न कही घृणा तो पाई जानी चाहिए थी। भारत कृषि प्रधान देश है। किसान को सबसे प्यारी वस्तु काला मेघ है। भारतवासियो ने काले रंग वाले को सदा घनश्याम कहा है काकश्याम कभी नही कहा। इसके विपरीत अमेरिका में, नीग्रो लोगो को (क्रोज) अर्थात् कौवे कहकर सदा घृणा की दृष्टि से देखा गया। यद्यपि अब्राहम लिंकन जैसे महापुरुषो के उद्योग से काले लोग दासता के पजे से छूटे परन्तु रोग फिर भी नहीं गया और कैनेडी जैसे महापुरुष का भी बलिदान लिंकन के समान इस काले-गोरे की समस्या के कारण हुआ। क्या सारे भारत के इतिहास मे समस्या काले-गोरे की कहीं देखी गई?

इसका उलट तो अवश्य देखा गया है सारे भारत के इतिहास में दो महापुरुषों की सबसे अधिक पूजा हुई है। एक महाराज रामचन्द्र की, दूसरे महाराज कृष्णचन्द्र जी की, यह दोनो काले थे। और जिस विष्णु के ये अवतार कहे जाते हैं वे देवता भी काले हैं। जिस काली माई को सारा बंगाल पूजता है उसका नाम ही है काली। उधर, लक्ष्मी, सीता, रुक्मिणी तीनो गोरी हैं, लक्ष्मण और बलराम गोरे हैं।

कही वेद मे यह झगड़ा है, सो भी झूठ है। वेद दिन के दो भाग करता

(शेष पृष्ठ ८ पर)

आर्यसमाजों के नए पदाधिकारी

आर्यसमाज पजाबी बाग नई दिल्ली-२६—प्रधान—श्री ईश्वरचद्र आर्य, उपप्रधान—श्री ए. पी. मेहता, श्री गनपतराय खेड़ा, मंत्री—श्री गिरधारीलाल गुलाटी, उपमत्री—मास्टर गिरधारीलाल, कोषाध्यक्ष—श्री गोविंदलाल सरदाना, पुस्तकालयाध्यक्ष—श्री गिरधारीलाल बनाती।

आर्यसमाज—मयूर बिहार (पटपडगज) दिल्ली-९१। प्रधाना—श्रीमती कौशल्या महेन्द्रा, उपप्रधान—श्री गुलाबशाह भोला, मत्री—श्री जयपालसिंह अम्बावत, उपमत्री - श्री सत्यनारायण तलवाड, कोषाध्यक्ष—श्री बलवीर दुआ।

आर्यसमाज नांगलराय। प्रधान—श्री पृथ्वीराज, उपप्रधान—श्री लेखराज, मत्री—श्री भगवानदास, उपमत्री—श्री राजेंद्रकुमार त्यागी, कोषाध्यक्ष—श्री अजीतकुमार, पुस्तकाध्यक्ष—श्री रतनलाल, लेखा निरीक्षक - श्री दलीपसिंह।

आर्य युवक सभा फीरोजपुर छावनी। प्रधान श्री मनोज आर्य, उपप्रधान श्री दत्ता, श्री सुधीर आर्य, मन्त्री श्री सुरेन्द्र गुप्ता एडवोकेट, उपमन्त्री श्री जितेन्द्र आर्य, श्री प्रमोद आर्य, कोषाध्यक्ष श्री बलराज, पुस्तकाध्यक्ष श्री राकेश गुप्ता, आय-व्यय निरीक्षक श्री राजेन्द्र कुमार। प्रचार मन्त्री श्री विजय आनन्द।

आर्य समाज सरायरोहिल्ला प्रधान श्री उत्तम चन्द, उपप्रधान श्री नरेन्द्रसिंह सैनी, श्रीमती रामेश्वरी शर्मा, मन्त्री श्री दुर्गा प्रसाद जी, उपमंत्री श्री देवसेन जी श्री विजय कुमार, कोषाध्यक्ष श्री ज्ञानचन्द, प्रचार मंत्री श्री दसोधी रामजी।

आर्यसमाज खादडा ग्राम (बेतिया, प० चम्पारण) प्रधान श्री रामचन्द्रप्रसाद मुखिया, उपप्रधान श्री छोटेलाल शाह, मन्त्री श्री रामाशंकर प्रसाद, उपमन्त्री श्री शिवनाथ शाह, कोषाध्यक्ष श्री रामसुन्दर ठाकुर।

आर्यसमाज महमादा (जिला मुजफ्फरपुर) प्रधान श्री भागवत प्रसाद आर्य उपप्रधान श्री रामलाल आर्य, प्रधानमन्त्री श्री राजेश्वर प्रसाद उपमन्त्री श्री अवधेश प्रसाद, कोषाध्यक्ष श्री नन्दलाल आर्य, पुस्तकाध्यक्ष श्री शिवशकर प्रसाद आर्य।

आर्यसमाज जवाहरलाल रोड, घिरनी पोखर बिहार) प्रधान श्री ओम्प्रकाश ब्रह्मचारी, उपप्रधान—श्री पन्नालाल आर्य, उपप्रधान—श्रीमती प्रो० विद्यावती साहु, मन्त्री—श्री रामकृष्ण विजयराजका, उपमन्त्री—श्री वैद्यनाथ प्र० आर्य श्री श्यामनारायण चौधरी, कोषाध्यक्ष—श्री कुलभूषण बोहरा, लेखा निरीक्षक—श्री रामाप्रसाद गुप्त, पुस्तकालयाध्यक्ष—श्री विद्यानन्द प्रसाद।

चम्पारण जिले में वेदप्रचार एवं अन्य कार्यक्रम

चम्पारण जिला आर्यसमाज के तत्वावधान में खादड़ा ग्राम (बेतिया पं चम्पारण में प० सत्यदेव शास्त्री महोपदेशक वाराणसी एवं अमरदेव जी भजनोपदेशक द्वारा वेदप्रचार सम्पन्न हुआ। यज्ञ में १७ नवयुवकों ने यज्ञोपवीत धारण किए आर्यसमाज को ४ कट्टा भूमि प्राप्त हुई। मुखिया रामचन्द्र प्रसाद के करकमलों से भूमि पर झण्डोत्तोलन किया गया। इस भूमि पर जल्दी ही आर्यसमाज मन्दिर एवं यज्ञशाला का निर्माण किया जाएगा।

शान्ति यज्ञ—पूर्वी चम्पारण में ग्रामशीतलपट्टी में श्री तपनसिंह की माँ का अन्तिम संस्कार करने के बाद उनके घर पर शान्ति यज्ञ हुआ। ग्राम मे दो दिन तक आर्यसमाज का प्रचार किया गया।

मातृवियोग—चम्पारण जिला आर्यसमाज के उपमन्त्री श्री हीराराम आर्य की माता के देहावसान पर शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा आयोजित की गई।

आर्यसमाज अमरोहा का वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज अमरोहा का वार्षिकोत्सव ७, ८, ९, नवम्बर को मनाया जा रहा है। इस अवसर पर अनेक सम्मेलनों में भाग लेने एवं व्याख्यान देने के लिए स्वामी काव्यानन्दजी, संन्यासिनी मीरा यति वेदाचार्या, श्रीमती सावित्री देवीजी ब्रह्मचारिणी आर्य नरेश जी, श्री रामानन्द शास्त्री, सार्वदेशिक सभा के प्रधान लाला रामगोपाल जी एवं आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के प्रधान श्री कैलाश नाथसिंह एव श्री जयप्रकाश आर्य भजनोपदेशक पधार रहे हैं। इस अवसर पर छात्र-छात्राओं को एक भाषण प्रतियोगिता भी की जाएगी।

श्री रघुवीरसिंह शास्त्री के निधन पर शोक प्रस्ताव

१० अक्तूबर के दिन दिल्ली की अनेक समाजों ने, जिनमें आर्यसमाज कीर्तिनगर, विनयनगर, कृष्णानगर आदि सम्मिलित हैं आर्यजगत के प्रसिद्ध नेता, विद्वान् गुरुकुल कांगड़ी के पूर्व उपकुलपति, सार्वदेशिक सभा के भू० पू० महामन्त्री श्री रघुवीरसिंह शास्त्री के असामयिक देहावसान पर शोक प्रकट किया।

यूरोप के वैदिक विद्वानों का…

(पृष्ठ ५ का शेष)

कहता है अहश्च कृष्णमहरर्जुनञ्च (ऋ० ६-९-१) और देखिए, नक्तोषासा वर्णमामेम्याने धापयेते शिशुमेक समीची (ऋ० १-९६-५) यह छाया (दिन) और श्यामा (रात) दो युवतियां अपना अपना कार्य क्षेत्र अलग चुन लेती हैं, परन्तु परस्पर अनुरक्त भाव से एक ही दिन रूप शिशु को दूध पिलाती हैं। इसी प्रकार संसार में सब बरतें।

यदि इस मंत्र में वर्ण का अर्थ रंग भी मान लिया जाए तो दोनों का रंग भिन्न है पर उसकी परवाह न करके दोनों एक मन होकर एक शिशु को दूध पिलाती हैं। सो रंग का झगड़ा हमारे वाङ्मय में कहीं नहीं। परन्तु यूरोपियन कूटनीतिज्ञों ने यह जाल घड़ कर हमारे बीच फेंक दिया। दुःख तो यह है कि हम इस जाल की लपेट में आ गए। भारत के विद्वानो चेतो, इस जाल को तोड [illegible] है दयानन्द जो [illegible] नहीं।

[illegible] ओंकार कुंज, खारीबावड़ी मार्ग बड़ोदरा ३९०००१

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रकाशन

सत्यार्थप्रकाश सन्देश (हिन्दी)	१०,
(अंग्रेजी)	समाप्त
आर्य सन्देश महासम्मेलन विशेषांक	६,
यादरी भाग गया—ओम्प्रकाश त्यागी	०,
स्वामी श्रद्धानन्द-बलिदान अर्द्ध शताब्दी स्मारिका	६,
सत्यार्थप्रकाश शताब्दी समारोह स्मारिका	६,

सम्पर्क करें—
अधिष्ठाता प्रकाशन विभाग
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा,
१५ हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१

राज० डा (सं०) ७

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए श्री सरदारी लाल वर्मा द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा भारतिया प्रेस २५७४, रघुबरपुरा नं० २ गांधी नगर दिल्ली ३१ में मुद्रित कार्यालय १५ हनुमान रोड नई दिल्ली। फोन ३१०१५०।

the three successive Whig Parliaments [1679–81.] against their Tory rivals no less than against the Court; the systematic intimidation of moderate men by the London mob and by Shaftesbury's 'brisk boys'; the refusal to consider for the sake of peace any compromise short of complete Exclusion; and finally the coquetting of the party with the bastard Monmouth as the candidate for the throne, in disregard of the rights of William and Mary who did not promise to be Whig puppets,—all these phenomena, and a belief that '1641 was come again,' drove a large body of moderate opinion, led by the subtle and eloquent Halifax, to rally to the Tory and Royalist side. Moreover the Tories and the Court, rivals since 1661, were consolidated into a single party by the dread of a Roundhead revival.

Whig violence was soon countered by Tory violence no less pernicious. The party that Danby had founded might perhaps have been led by him along wiser courses, but Whig malevolence kept him in prison awaiting impeachment. And although sage 'trimmers' like Halifax were the most formidable advocates of the Tory cause in Parliament, the party owed them no allegiance and hated their moderation. The rank and file of squires and High Church clergy became ultra-royalists, prostrating themselves at the feet of Charles, who had become in effect the able leader of their party, and prostrating themselves yet more abjectly before James, who enjoyed for awhile a ludicrous popularity with the Church that he was longing for the opportunity to overthrow.

After the dissolution of the Third Whig Parliament at Oxford in 1681, Tory reaction had full licence. The persecution of Protestant Dissenters, in abeyance during the Whig fury, was renewed with a redoubled zeal. Some of the Whig leaders finding themselves beaten constitutionally, plotted an insurrection, while old Roundhead soldiers planned to waylay and murder the Royal brothers at the Rye House, as they came back from the Newmarket races. [1683.] When these villainies were discovered, the rage and power of the Tories reached their full height. The Whigs were scattered like chaff. Shaftesbury died in exile in Holland Russell, Sidney and others perished on the

scaffold. The cynicism of the age was shown in the employment against Whig prisoners of false witnesses who were known by the Court and the Tories to have sworn away the lives of Catholics.

During the last four years of the reign, Parliament did not meet. [1681–85.] It temporarily dropped out of the constitution where for some years it had held the leading position. And whenever the House of Commons met again it would not be representative of the old constituencies, or of any free electoral body. The town corporations, including London itself, had been 'remodelled' to the exclusion of the Whigs. No Tudor had ever interfered in this manner with the local franchises of the English boroughs, and nothing but the assistance of the Tory party could have enabled the monarchy to strike so deadly a blow at the local liberties of England as the 'surrender of the Charters' implied.

No more was heard of the scheme of 'limitations.' The Tories in their zeal for the Anglican Church against the Dissenters had abandoned all her defences against Rome. They were prepared to hail with enthusiasm the accession of a Roman Catholic zealot to powers greater in many respects than those of Queen Elizabeth. In their zeal against Whig disloyalty, they proclaimed the most slavish doctrines of non-resistance to the King, even if he should behave like Nero, doctrines new in the history of England and not really believed by the foolish men who proclaimed them with a violence that coming events would render absurd in the retrospect. The University of Oxford made itself conspicuous in these protestations of unconditional submission to the royal will, and James knew so little of human nature that he afterwards took the dons at their word.

The Court, completely victorious and no longer troubled by a House of Commons, was swayed in its policy by Palace intrigues alone, as in days before the Long Parliament. There were two parties at Court in Charles II's last years. Halifax and the moderates were opposed to 'French counsels' and wished England to maintain the Balance of Power in Europe. But the heir to the throne, and the courtiers who had attached themselves to his rising star, were all for France. And Charles, being without Parlia-

mentary supply, depended on French gold. The influence of Halifax declined. It was in these years that Louis, ever advancing into new territories on the Rhine and in the Spanish Netherlands, acquired that ascendancy on the continent which England had afterwards to wrench from him by twenty years of war.

The violence of rival factions in England had prepared slavery for Great Britain and for Europe. But these misdirected energies of the nation in the latter years of Charles II had given birth to the two great parties whose internal cohesion and mutual rivalry made Parliamentary government a success in the coming centuries, as a method of ruling the British State and Empire. From the Exclusion Bill struggle date not only the names of Whig and Tory,[7] but a new perfection of party organization and propaganda, and the peculiarly English art of 'electioneering.' A country that had once excited itself so profoundly in electoral and Parliamentary strife was not likely to be long quiet under a despotism. Shaftesbury and his enemies had introduced the astonishing customs of the Eatanswill election, with all its noise, expense, anger and fun—a peculiar and valuable national heritage, because it fostered that interest in the conduct and result of elections for want of which the Parliamentary system has withered and wilted in more than one continental country in our own day.

In this same period of the Exclusion Bill struggle, the idea of 'party loyalty' grew up among leaders and underlings; it was indeed the only loyalty that was practised by some very important statesmen in the reigns of James, William and Anne. Party loyalty has great attendant evils, but it renders strong Parliamentary government possible. In the end Louis XIV was defeated and the Union with Scotland carried by the mutual confidence of the Whig Junta and its supporters, and the Peace of Utrecht was obtained under no less difficult circumstances by Tory cohesion.

The bond that held together the Whig and the Tory

[7] In their application to English parties they were both originally hostile nicknames, 'Tory' meaning an Irish Catholic bandit, and 'Whig' a Scottish Covenanting zealot.

organizations respectively, so that each had a continuous life of nearly two centuries, was not altogether theory or principle,—for theories and even principles change with changing circumstances,—but permanent religious and social cleavages to which the two parties gave political expression. The Whig party founded by Shaftesbury remained, till long after the Reform Bill of 1832, the party of the unprivileged Dissenters, and of the mercantile and middle classes arrayed under a section of the higher aristocracy. The Tory party, alike in the days of Danby, Pitt and Peel, was in its heart of hearts the party of the landowners and of the Anglican clergy and their adherents, though often with strong allies in other classes. Only in the latter part of the Nineteenth Century the removal of the disabilities of Dissenters and the complete transmutation of social grades by the Industrial Revolution, led towards a gradual shifting of the party system onto new social bases, and the disappearance of religious difference as a leading motive in English politics.

Few political philosophers would have prophesied well of the party system or of Parliamentary government in the year 1685. The two parties, in their first wild boyhood, had set fire to their own house. But the severity of the immediate chastisement that fell first on the Whigs and in the new reign upon the Tories, taught them lessons of wisdom that enabled them in a few years to save Britain and to save Europe.

CHAPTER SEVEN

James II and the English Revolution, 1685–88. The Revolution Settlement, 1689

Government in the last years of Charles II had been based upon a close understanding between the Court on the one hand and the High Church and Tory Party on the other. [1681–85.] What the Privy Council decided at Whitehall was promptly and joyfully executed by the rustic magistrate in the shire, and was praised from the pulpit in the parish church. To crush and silence their common ad-

versaries the Whigs and Dissenters, to set the whole machinery of the law and its officers, the Justices of the Peace, the partisan Judges and packed juries to invigilate against every smallest movement of opposition or free speech, appealed alike to the Court and to the High Tories. The latter found in the Church doctrine of non-resistance to the Crown a religious sanction for these violent proceedings against all critics of the royal policy. Forgetting much and foreseeing little, they held it to be in the eternal nature of things that royal policy should be identified with their own wishes and interests. But this eternity was limited to the life of Charles. So long as he lived there was no revival of the Roman Catholic designs he had abandoned in 1674. He still, indeed, drew his pay from Louis, but it was to enable him to dispense with Parliament and to keep the peace with France, not to attempt anything active for the Roman Catholic cause at home or abroad. Only on his deathbed was he formally reconciled to the Church to which he at heart belonged. [Feb. 1685.]

James II inaugurated the new reign by summoning Parliament. It was a packed assembly, in which many members owed their seats to the remodelled corporations from which every Whig had been excluded. So long as the Tories and the Court held together, they would never again have cause to dread a general election. Never again could there be a Whig Parliament. And it was only a question of years before the 'Dissenting interest' would be crushed out by the Clarendon Code, steadily applied without any more of those unsettling intervals of 'indulgence,' which the misunderstandings between King and Commons had so often caused in the past.

The Parliament of 1685 was more royalist in sentiment than the Cavalier Parliament, but there was one thing which it would never help James to do,—to subject Church and country to Roman Catholicism. The quarrel on this issue between James and the Tory House of Commons was hastened by an event which for the moment made them faster friends than ever before,—the rebellion of Monmouth in the West. [June–July 1685.]

Monmouth's insurrection made no appeal to the Whig

gentry or to the moderate elements that were the strength of the Revolution three years later. It was a rising of Puritans against the persecution they suffered, not in the spirit of the modern Whig but of the old Roundhead party. But whereas in Cromwell's day the Roundheads had had very effective upper-class leadership, Puritanism was now a plebeian religion, confined even in Somerset to the shopkeepers of Taunton and the yeomen and labourers of the countryside. In the campaign that ended at Sedgemoor, they gave their lives with admirable devotion, not from feudal loyalty to their chiefs such as bound so many Highland tribes to the Jacobite cause, but from the mistaken belief that the worthless Monmouth was the champion of their religion.

The revenge taken upon the rebels, first by Kirke and his barbarized soldiers from Tangier, and then by Judge Jeffreys in his insane lust for cruelty, was stimulated by orders from the King. It was the first thing in the new reign that alarmed and disgusted the Tories. In the general horror felt at the long rows of tarred and gibbeted Dissenters along the roadsides of Wessex, came the first recoil from the mutual rage of parties that had so long devastated English political and religious life, the first instinctive movement towards a new era of national unity and toleration.

But the effect of Monmouth's rising on James was to goad him on to fresh tyranny. Under French and Jesuit advice, he adopted much more rapid methods of Romanizing the country than he seems to have contemplated in the first months of his reign. He had now an excuse to keep on foot an army of 30,000 men, and to make on Hounslow Heath a great camp to overawe the capital. A mistaken reliance on the Army encouraged him to defy the Tory Parliament, the rural magistracy and the Anglican Church. Contrary to the laws of the land, which he claimed the right to suspend at will by his royal prerogative, he officered his regiments with all the Roman Catholic gentlemen whom he could induce to enter upon so dangerous a service. Their numbers were insufficient, and he was even less able to find co-religionists to fill the ranks, till he sent over to Ireland for shiploads of Celtic-speaking peasantry. Eng-

lish soldiers and civilians were agreed in regarding these latest recruits as foreigners and savages, whom it was the task of the Anglo-Saxon to keep docile and unarmed even in their own island. Now they were to be made masters of England herself.

By the time the Revolution broke out, James had already ruined the discipline and loyalty of his fine army, but he had not yet converted it into a force that could be used to uproot the Protestant religion. The Revolution was, indeed, timed by its promoters to forestall the completion of that difficult military evolution. But James had done enough to confirm for another long period the antipathy of the Tory squires against standing armies, which they had twice seen employed, once by Cromwell and once by James II, to subjugate the gentry and subvert the Church.

The failure and execution of Monmouth, while it tempted James along the road to ruin, removed an obstacle from the path of William of Orange. It brought nearer by one stage the union of all English parties under his leadership. He had been on good terms with the Tories ever since Danby's Ministry, but half the Whigs had been misled by the *ignis fatuus* of Monmouth. The removal of that pretender caused all English Whigs and Dissenters to concentrate their hopes upon William and Mary. In 1687 the great majority of Englishmen were united in the hope that James would presently die, and his daughter Mary succeed him before it was too late.

The solid part of the Roman Catholic body in England consisted of country squires, excluded from the magistracy but not from society, and living on very tolerable terms with their Tory neighbours. They had no goodwill for the policy which James was adopting at the suggestion of the French and Jesuit party, and with the applause of unprincipled English sycophants like Jeffreys and Sunderland. The Catholic squires knew their countrymen well enough to be sure that supremacy could never be won for their religion, except by foreign arms and civil war; and a second civil war might end, as likely as not, in completing the ruin of the English Catholics which the first had half

accomplished. In these views they were supported by Pope Innocent XI, a man of sense and moderation, very different from the Pontiffs who had excommunicated Elizabeth. Innocent had quarrels of his own with Louis XIV and the French Jesuits; he dreaded the French power in Italy and in Europe, and therefore watched with sympathy the sailing and the success of William's Protestant crusade, because it would release England from French vassalage.

What the Pope and the moderate English Catholics hoped to obtain in England was not political supremacy but religious toleration. This, William publicly promised to secure for them to the utmost of his power. By temper, policy and circumstance he stood for religious toleration. Holland had been successfully united on that basis under his great ancestors. He was, himself, the head of a league against Louis that sought to unite Austria, Spain and the Roman Pontiff with Holland and Protestant Germany. James himself, with a little patience, could have obtained from his Parliament legal sanction for Catholic rites, which were in practice being openly celebrated. But neither the Tories nor William were prepared to consent to the thrusting in of Roman Catholics to officer the Army, to fill the magistrates' bench, the Privy Council and finally the benefices of the Church of England herself. Yet that was the policy pursued by James for three years, with ever-increasing violence and illegality, with no assignable object but to prepare the way for the forcible reconversion of England.

During these very years his ally, Louis XIV, was revoking the tolerant Edict of Nantes [1685.], persecuting the Huguenots of France with the utmost cruelty, forbidding them even to escape into exile, driving them by torture to the Mass, separating families as if they had been negro slaves, sending the men to the galleys and the women and children to be brought up with stripes and ill-usage in a faith they abhorred. The sum of human misery thus wantonly brought about is horrible to contemplate. In the course of years, some hundreds of thousands succeeded in escaping, mostly into England, Holland or Prussia. A large proportion were artisans and merchants

of high character, who brought to the lands of their adoption trade secrets and new industrial methods. Religious sympathy prevented their welcome from being marred by trade jealousy. The transference of so many of these men from France to England was not the least of the causes why Britain so far outstripped her great neighbour in commercial and industrial enterprise. Many French industries were ruined and many English industries founded by the greater cruelty of religious persecution in France.

The effect produced on the subjects of James II by these proceedings across the Channel, and by the arrival in their midst of a host of innocent victims of Roman Catholic fanaticism, was comparable to the effect on Elizabethan England of the cruelties of Alva and the Massacre of St. Bartholomew, and to the effect on the contemporaries of Fox and Pitt of the September massacres and the cruelties of Robespierre. The Revocation of the Edict of Nantes prepared the mental and emotional background for the Revolution of 1688 and for the long wars with France that followed. They raised to a height in England the hatred of 'Popery,' though in the great division for and against Louis in which all Europe was now being arrayed, the Pope was on the side of the nation whose delight it was to burn him in effigy.

The English drew their ideas of 'Popery' from their nearer neighbours, the French Jesuits and clergy who were eagerly preaching the extermination of the unhappy Huguenots. The terror lest their system should be extended to England as a result of James's proceedings, gave a fresh actuality to Foxe's *Book of Martyrs* and the tales of the Marian persecution. Protestants of every shade, from Archbishop Sancroft to Baxter and Bunyan, saw the necessity of forgetting old quarrels and standing together against the fanatical policy of the King, and the unlimited power he claimed to dispense with the laws of England. This union of spirit among all Protestants brought into the ascendant the Anglican Low Churchmen and the Whigs with their policy of Toleration, while the Tory doctrine of non-resistance to the Crown left the men who had rashly adopted it with the miserable choice of abandoning

their political principles or watching with folded arms the destruction of their religion by the 'Nero' of their abstract arguments suddenly incarnate.

The Tory party, indeed, was rudely thrust out not only from its moral and intellectual position but from its material and political strongholds. In 1685 the Privy Council, the rural and the municipal magistrates, the Lords Lieutenant and the Sheriffs, were almost without exception Tories and High Churchmen. Three years later, on the eve of the Revolution, Tories and High Churchmen had been excluded from positions of central and local authority as thoroughly as if Oliver himself had been at work. James attempted to replace them by Roman Catholics, all laws to the contrary notwithstanding. But there were not enough of his co-religionists ready to serve his rash designs. He therefore appealed also to the Protestant Dissenters, but found very few who were prepared to revenge themselves on the High Churchmen at the expense of the Protestant interest and the laws of the land.

Crown and Church were bidding against each other for Non-conformist support. The Crown offered religious toleration and civic equality by illegal Declarations of Indulgence suspending the obnoxious statutes. The Church promised religious toleration secured by statute, as soon as a free Parliament should meet. The Non-conformists, partly from their traditional preference of Parliamentary to Royal power, and partly from the terror of Roman Catholic despotism on the French model, accepted the less dazzling but far less dangerous offers made by the Church.

The King now openly attacked the possessions and freeholds of the Anglican clergy. The Court of High Commission was revived contrary to law, as the King's instrument for dragooning the Church. Compton, Bishop of London, was suspended for refusing to silence Protestant controversialists. A number of Church benefices were filled with Roman Catholics. The Fellows of Magdalen, Oxford, were illegally disseised of their property, and their great College was turned into a Roman Catholic seminary. [1687.] The effect of this act of tyranny was very great

upon Oxford and on all who looked to Oxford for their opinions. It transformed the citadel of non-resistance and divine right into a rebel town, that flew the Orange colours in the High Street during the most eventful winter in English history. [1688–89.]

Finally all the clergy were bidden to read from their parish pulpits the King's Declaration of Indulgence, suspending the laws against Roman Catholics and Dissenters and admitting them to civil and military posts. Since everyone knew that the clergy held the Declaration to be illegal, the order to read it was designed to humiliate them; but unless they all stood together, the High Commission would deprive those who refused to obey. Seven Bishops, headed by Sancroft, Archbishop of Canterbury, petitioned the King against the order. His answer was to put them on trial for publishing a seditious libel. The trial of the seven Bishops [JUNE 30, 1688.] and their acquittal by a jury brought the excitement in the nation to a head, and that night an invitation signed by seven Whig and Tory chiefs was sent over to William of Orange, whose agents had been for some time past in close touch with various leaders of opinion in England.

The birth of a Prince of Wales [JUNE 10, 1688.], although the identity of the child was for many years unjustly contested by his enemies, had served as a warning to all that James's system would not end with his death. Neither Protestant Mary nor Anne, but their new Catholic brother would succeed to the throne. It was this consideration that finally brought round the majority of the Tories to reconsider their theories of non-resistance. The man who led the party in this change of ground was its founder, Danby, ever a man of action and reality. It was he who had signed the invitation to the Prince, together with the suspended Bishop Compton, another Tory Peer, and four Whig Leaders.

The dangers and difficulties of William's enterprise were enormous; half of them were European and half were English, and only he understood what they all were and how they might all be overcome by a rare combination of policy and luck. Unless they could be overcome, he

knew that he would not much longer make head against Louis in Europe, so he determined to take the risk. He needed England as much as England needed him. Until the day of his death this mutual dependence did duty for mutual affection.

The danger most likely to prevent William's expedition would be a demonstration made by the French armies against Holland. This danger was removed by James himself, who alienated Louis by publicly repudiating his protection at the only moment in his reign when he really stood in need of it. William was therefore able to use the sea and land forces of Holland to bring over to Torbay [NOV. 5, 1688.] an army drawn from all the Protestant races of Europe, large enough to protect him against a fiasco like that of Monmouth. Like Monk, he declared for a free Parliament, to which he referred all matters in dispute. The army of James, divided into factions of Protestant against Catholic, and English against Irish, was deserted at the critical moment by John Churchill, the future Marlborough, and others of its chiefs; it fell into such confusion that James dared not risk a battle. William was for many reasons anxious to avoid fighting. Every day added to his strength. The civil population rallied to his banner and to his programme of a free Parliament. Danby himself led the Northern insurrection; the second greatest Tory chief, Seymour, summoned the men of Wessex to William's camp, while the Whig Devonshire organized the Midlands, and the London mob rose without a leader.

Even then it was probable that James could not have been deposed, so strong was the Tory feeling for the hereditary right of Kings, had he not himself persisted in flying from the country and taking refuge with his wife and baby boy at the court of France. [DEC. 1688.]

For many generations to come the Revolution of 1688–89 was spoken of by our ancestors as 'the glorious revolution.' Its glory did not consist in any deed of arms, in any signal acts of heroism on the part of Englishmen, nor in the fact that a whole nation proved itself stronger than one very foolish King. There was indeed a certain ignominy in the

fact that a foreign fleet and army, however friendly and however welcome, had been required to enable Englishmen to recover the liberties they had muddled away in their frantic faction feuds. The true 'glory' of the British Revolution lay in the fact that it was bloodless, that there was no civil war, no massacre, no proscription, and above all that a settlement by consent was reached of the religious and political differences that had so long and so fiercely divided men and parties. The settlement of 1689 stood the test of time. It led not only to a new and wider liberty than had ever before been known in Britain, but to a renewed vigour and efficiency in the body politic and in the government of the Empire. The long and enervating rivalry of Crown and Parliament gave place to co-operation between the two powers, with Parliament as the leading partner. From the external weakness that had characterized England in the Seventeenth Century the country rose through the successive eras of Marlborough, Walpole and Chatham to the acknowledged leadership of the world, in arms, colonies, and commerce, in political and religious freedom and intellectual vigour.

The men of 1689 were not heroes. Few of them were even honest men. But they were very clever men, and, taught by bitter experience, they behaved at this supreme crisis as very clever men do not always behave, with sense and moderation. It was the gravity of the national danger in the first months of 1689, with France in arms against us, Scotland divided and Ireland lost, that induced Whigs and Tories in the Convention Parliament to make that famous compromise between their conflicting principles and factions, which we call the Revolution Settlement. It remained the solid foundation of English institutions in Church and State, almost without change until the era of the Reform Bill.

The Tories, who had already in the previous autumn abandoned non-resistance, found themselves in February compelled to abandon divine hereditary right; they agreed that a slight alteration should be made by Act of Parliament in the order of succession to the throne. Henceforth, unless Parliament were 'divine,' the right of English Kings

to reign was of human origin. To avoid this logical defeat, many of the Tories would have preferred a Regency in James's name; and even Danby wished that James's daughter Mary should reign alone, with her husband as Prince Consort only. But when these arrangements were found to be impossible, the sense of the national danger caused the Tories to agree to the change of succession in favour of William and Mary jointly, the executive power being vested in the husband. [FEB. 1689.]

Indeed most Tories, in spite of theory, felt so strongly in practice the necessity of excluding a Roman Catholic from the throne, that they took the initiative in 1701, under Harley's leadership, in passing the Act of Settlement that vested the succession, after William and Anne, in the Protestant House of Hanover. Only the Right Wing of the party remained Jacobite, and a number of High Church Bishops, including Sancroft himself, refused to take the oath to William, becoming 'non-jurors,' and giving up their power and preferment for conscience' sake. The reproaches of these faithful few rendered their more adaptable brethren ill at ease. The Tory party, though upon the whole loyal to the Revolution Settlement, remained so at the expense of its consistency and internal harmony; a subtle transmutation towards modern ideas was going on inside it, more painfully than in the Whig party, leading to the Tory disruption and catastrophe on the death of Queen Anne.

But otherwise the Tory forces in Church and State lost little by the Revolution, except the power of persecuting their rivals. The Church remained Anglican, and the last attempt to extend its boundaries to 'comprehend' moderate Dissenters broke down in 1689. But the Toleration Act of that year granted the right of religious worship to Protestant non-conformists, accompanied by many limitations which read strangely to-day, but which were necessary to secure agreement in an age when Toleration was regarded by many not as a grand principle but as a necessary compromise with error.

The Roman Catholic body, being the backbone of the Jacobite party, obtained no legal relief for its adherents,

and from time to time fresh laws were passed against them. But in practice the policy of William and the spirit of the times secured for them a considerable degree of free religious worship in England; the infamous penal laws were usually inoperative, and were only brought into partial vigour in times of Jacobite insurrection. Worship in private houses was hardly ever interfered with, and public chapels were erected and priests often went about openly in spite of the laws. So too the laws against the growing body of Unitarians were silently disused. In the favourable atmosphere of the new age, the spirit of the Toleration Act was practised much more widely than the letter warranted.

Substantially freedom of religious worship had, with certain exceptions, won the day. But religious Tests were fully maintained until the Nineteenth Century. Persons, whether Protestant or Catholic, who would not take the Communion according to the rites of the Church of England, were still debarred from holding office either under the Crown or in the municipalities; the doors of Parliament were still closed to Roman Catholics, and the doors of the Universities to Dissenters of every kind. The Church of England ceased to be a persecuting body, but remained throughout the coming era a body with exclusive political and educational privileges that the Whigs, in the long heyday of their power under the first two Georges, never dared to alter.

Thus the principal institutions of Church and State remained on the foundations of 1660–61, and suffered no Whiggish change. The victory of the Whigs at the Revolution consisted only in the victory of their principles—religious toleration and resistance to the power of the Crown—and in the trend towards modernity, latitudinarianism and Parliamentarism that the whole world was about to take, owing to the fact of the English Revolution and the check which it gave to the power and principles of Louis XIV.

Neither did the Whigs in 1689 gain any such monopoly of office as they gained at the accession of the House of Hanover in 1715. William was by no means their leader,

though they were more bound to support him than the Tories, because they would lose more by a Jacobite Restoration. But William only looked to find men who would help him to defeat Louis; he was purely indifferent whether they were Whig or Tory. And when in 1690 the Whigs attempted to go back on the spirit of the Revolution Compromise, and to revenge their ancient party wrongs on the Tories, he dissolved Parliament and successfully appealed to the country against them.

His successor, Anne, greatly preferred Tories to Whigs. Indeed, the only advantage that the Whigs had over their rivals prior to the coming of George I, was the fact that they were more unanimously zealous to conduct the war on land against Louis XIV than were the Tory squires with their traditional dislike of a standing army and a high land-tax.

But the Revolution had done more than arbitrate successfully between the two great parties whose feuds bade fair to destroy the State. It decided the balance between Parliamentary and regal power in favour of Parliament, and thereby gave England an executive in harmony with a sovereign legislative. It was only in the course of years that the details of that new harmony were worked out, through the development of the Cabinet system and the office of Prime Minister. But from 1689 onwards no King, not even George III in his youth, ever attempted to govern without Parliament, or contrary to the votes of the House of Commons. To bribe Parliament was one thing, to defy it quite another.

Nor did any King ever again attempt to override the local liberties of England; indeed the central government in the Eighteenth Century became only too subservient to the Justices of Peace, and only too tolerant of abuse in any chartered corporation or vested interest. The victory of law over arbitrary power was upon the whole an immense gain for humanity; but for the next hundred years and more the victory of law and of vested interests produced an undue admiration of things as they were, in the days of Blackstone, Burke and Eldon, all of whom appealed

to the great conservative Revolution as the final standard in human affairs. Because James II had attempted to destroy the institutions of the country, it long remained impossible for anyone else to attempt their reform.

Justice and humanity, divorced from all party considerations, gained greatly from the signal overthrow of James and Jeffreys. The Judges ceased to be removable at the will of the Crown. Trials were conducted with decency and on the whole with fairness. Cruel floggings and exorbitant fines ceased to be a usual weapon of party politics. In 1695 the Censorship of the Press was allowed to lapse, so that Milton's dream of 'liberty of unlicensed printing' was realized in England. The even balance of the powerful Whig and Tory parties protected critics of government who spoke from either camp. The cessation of persecution under the Clarendon Code put an end to a mass of continual suffering, hatred and wrong. After a thousand years, religion was at length released from the obligation to practise cruelty on principle, by the admission that it is the incorrigible nature of man to hold different opinions on speculative subjects. On that stubborn fact the modern State, like the mediæval Church, had broken its teeth in vain. The indirect consequences of this victory of the individual conscience were far-reaching and manifold, not to be revealed in the lifetime of the Whigs and Tories who worked out that curious patchwork of compromise, illogicality and political good sense, the Toleration Act of 1689.[1]

BOOKS FOR FURTHER READING (FOR CHAPS. SIX AND SEVEN): Besides Ranke and Macaulay, see Feiling, *History of the Tory Party*, 1640–1714; Sir G. Sitwell, *The First Whig*; Osmund Airy, *Charles II*; H. D. Traill, *Shaftesbury*; Mahan, *Influence of Sea Power upon History* (for the Dutch wars); A. Bryant, *Charles II*; D. Ogg, *England in the Reign of Charles II*; G. N. Clark, *The Later Stuarts*.

[1] Further remarks on the Revolution Settlement as it worked itself out in the Eighteenth Century will be found in subsequent chapters, *e.g.* Book Five, Chap. One.

CHAPTER EIGHT

Scotland and Ireland from the Restoration to Queen Anne. The Two Settlements

Cromwell's campaigns had established English rule in both Scotland and Ireland, nor did the return of Charles II put an end to the unity of political control over the British Isles. From 1660 to 1690 Irish and Scottish affairs continued to follow the vicissitudes of revolutionary change in England.

Throughout the reign of Charles II, Scotland was governed from Edinburgh by her own Privy Council, but as that body took its cue from Whitehall, and was under no control either from the Scottish Parliament or the Church Assembly, there was no real restoration of national independence, except in the undesirable form of the loss of free trade with England and her colonies. Parliament was entirely subservient to the Privy Council, and made no attempt to voice the manifold grievances of the nation. [1660–85.]

The Privy Council that governed Scotland in the days of Middleton, Rothes and Lauderdale, relied on the support or acquiescence of the Cavalier interest. The Scottish Cavaliers, with their traditions of Montrose, represented the fusion of aristocratic and royalist sentiment after centuries of mutual opposition; and they represented also the determination of the less fanatical among the laity to prevent the old tyranny of the Kirk, which Cromwell had overthrown, from rising again on the ruins of his power. Many preferred the tyranny of the King's Council to that of clergy and elders. Other choice there seemed none, so long as Parliament had no power or policy of its own. The strength of the Cavalier party lay among the nobles. The alliance of the general body of the nobility with the Presbyterians had always been intermittent and half-hearted, and was already played out as a factor in history, except for the steadfast adherence of the great House of Argyle to the cause that

it had chosen. Otherwise it was the smaller lairds who remained a mainstay of the Kirk.

The Privy Council had in fact a strong body of opinion behind it in maintaining the supremacy of the State over the Church. Laud's Prayer Book was not reimposed, but the Covenant was repudiated, Episcopacy was restored, and the clergy were to be appointed by patrons instead of by the democratic choice of the religious community of the parish. This programme, accepted by the greater part of Eastern Scotland, might have received the sullen acquiescence even of the South-West, had the Council proceeded with common caution and humanity. But the drunkards who ruled Scotland in the first years after the Restoration went out of their way to impose tests on the Presbyterian clergy which many of them were bound to refuse. A third of the parish ministers, mainly in the South-West, were deprived of their kirks and manses, and replaced by 'curates,' who maintained themselves, in default of popular influence, by alliance with the dragoons and the strong hand of power. [1662.]

From this state of things arose the practice of 'conventicles,' where the 'outed ministers' preached to the faithful. But whereas the 'conventicles' of the English Non-conformists were held in barns or upper chambers, those of the Scottish Covenanters were held on solitary hillsides, in the scoop of the burn, or the heart of the birch wood, with sentinels set all round to watch for the approach of the red dragoons across the moor. And while in England the Clarendon Code was administered legally, however harshly, by civilian Justices of the Peace, in Scotland the recalcitrant districts were handed over by the Privy Council to the licence of the soldiery or the savage marauding of Highland tribes. Such ill-usage stirred to action the warrior and moss-trooper still alive in the Lowland peasant. The Pentland Rising of 1666 was followed a dozen years later by the more formidable and famous rebellion that began with the murder of Archbishop Sharp, continued with the repulse of Claverhouse by the armed conventicle at Drumclog Moss, and ended at Bothwell Brig. [1679.]

The cruelty with which government provoked and sup-

pressed these fanatical outbursts left a deep impression on the memory and imagination of the Scottish people. In happier days to come the stories of the 'killing times,' and the graves and legends of the martyrs shot down in many a solitary place or 'justified in the Grassmarket,' gave to Presbyterianism all over Scotland a hagiology and a cycle of romance, and secured its moral position as the asserter of national and religious freedom. Yet it was not freedom that the Covenanting martyrs had intended to assert, nor was it to posterity that they had meant to appeal, but to the living God whose sole servants they believed themselves to be in a world gone to perdition.

At the time when the disturbed and bloody reign of Charles II drew to a close, the Scottish people were by no means united in admiration for the zealots of the Covenant. The Privy Council and its torture chamber were indeed abhorrent to all decent folk, but the East mainly supported the government for want of any moderate leadership to follow in opposition, while the West was in a state of suppressed revolt. It was easy for Claverhouse and his dragoons to keep down a country thus divided against itself, so long as there was no revolution in England. It was James Seventh and Second [1685–88.], with his Romanizing policy, who drove his subjects of both Kingdoms into the path of union and self-deliverance.

The Revolution, simultaneous in the two countries, restored Scotland to a state of practical independence of England which she had not enjoyed since Dunbar. English statesmen, Tory as well as Whig, were fain to allow her to settle her ecclesiastical and other affairs to her own liking, provided only she would follow suit by choosing William and Mary as her sovereigns. The dynastic dispute in Britain became a lever in Scotland's hand by which she won her own terms in things both spiritual and material first at the Revolution and later at the Act of Union.

It was the Convention Parliament at Edinburgh that deposed James VII, chose William and Mary as sovereigns of Scotland, and dictated the terms on which they might assume the crown. [1689.] And it was the Parliament that in the following year formally restored Presbyterianism,

but without renewing the Covenant. [1690.] The autocratic rule of the Privy Council came to an end, as a necessary consequence of the Revolution. Henceforth the Parliament at Edinburgh was an independent force with which the government had to reckon. It was no longer a mere echo of the Church Assembly as in 1639, or a mere echo of the Privy Council as in 1661. It stood for policies of its own. The feudal method of its election rendered it very indifferently representative of the country, but it represented at least the idea of lay forces, independent alike of Kirk and King, though friendly to both. With that a better age slowly dawned for Scotland.

Yet William's was a troubled reign to the north of the Tweed, where the Jacobite party was much stronger than in England. It contained the majority of the nobles, and the respectable and influential body, specially strong in the East, who clung to the ministrations of the newly ejected Episcopalian clergy. The Episcopalian Church, thrust out of the Establishment and barely tolerated in the new Scotland, could hardly fail to be more Jacobite in sympathy than the English Tories, whose Church was left intact and highly privileged under the Revolution Settlement. Moreover, to the north of the Highland line, the great majority of the kilted tribes were Jacobites, out of jealousy of the dominant tribe of the Campbells and their chief, Argyle, the true head of the Whig and Presbyterian party in all Scotland. The Highland attack upon the South, organized by Claverhouse after the example of Montrose, was checked by his death in the hour of victory at Killiecrankie, and was terminated a few weeks later when the tribesmen were defeated by the Covenanted Cameronians at Dunkeld. [JULY 1689.] But the Highland glens were never systematically conquered and occupied before 1746. The horrible Glencoe massacre [1692.] did much to foster Jacobite feeling and to discredit the government. Amid all these dangers Parliament itself, though of necessity loyal to William as against James in the last resort, was factious with all the inconsequent levity and selfishness of amateur politicians, nurtured under despotism, unaccustomed to the discipline necessary for the management of affairs in a free

community, and untrained in any school of public virtue or wisdom.

Yet William's government somehow survived in Scotland, because it was at any rate more tolerant than its predecessors, and because its settlement of Church and State was in accordance with the new spirit of the times. Though Presbyterianism was restored as the national religion, the aim of government was the gradual substitution of the secular for the theological in politics. The Church Assembly again met freely, to discuss and decide its own concerns, but no longer to dictate policies to government. The old-fashioned Cameronians, clearly perceiving that the Church had not been restored to her ancient power and glory, refused to acknowledge a King who might be a Calvinist in Holland but was a Prelatist in England, and was everywhere a Laodicean and a flat tolerationist. But the mass of the nation, sick of persecution and bloodshed, acquiesced in the new regime.[1]

An adequate solution of Scottish ecclesiastical problems had been found at last. For this reason the Scots, while continuing for two hundred years to be a profoundly religious people, were able to turn their thoughts to material problems. In 1689 their poverty was in strong contrast to their energy of mind and character. Agricultural methods were mediæval, even in the rich soil of the Lothians. For want of draining, much of the best land lay water-logged and unused, while the plough went up the barren hillside. The primæval forests had disappeared; and as yet no modern plantations, hedges or walls broke the monotony of the windswept landscape, where the miserable sheep and cattle shivered in the blast. Improvements were impossible because the land was let on very short leases with no security of tenure. Neither lairds nor tenants had money to put into the land, and the nobles were interested in their estates chiefly as hunting grounds. The farms were cabins of turf or unmortared stone, often without windows

[1] An important concession was made to Presbyterian feeling by the abolition of private patronage as a means of appointing ministers; in the following century patronage was revived with various far-reaching consequences.

or chimney, the door serving for light and ventilation. Beer and oatmeal were a monotonous but a wholesome and sufficient diet, save when bad harvests brought starvation, as in the 'dear years,' dreadfully recurrent in King William's reign. Nearly half the acreage of what was nominally the Kingdom of Scotland, remained under the tribal rule of mountain chiefs, dwelling outside the law and civilization of the English-speaking lands.

Trade and industry were still on a very small scale. Glasgow had as yet no shipping of its own. Edinburgh was by far the largest and most wealthy town, but even in the towering High Street glass windows were rare. All told, there were about a million Scots in their native land and only a few thousands oversea, chiefly soldiers of fortune. This poverty-stricken population, with few political rights, and living under social arrangements still largely feudal, was more versed in Biblical knowledge and theological argument, and certainly not less independent in spirit, than the well-to-do farmers and shopkeepers of Parliamentary England. If the Scots should ever apply their well-trained minds and vigorous character to improving their lot in this life, the results might be astonishing.

The great change in the landscape and prosperity of Scotland which the next hundred years were to bring about,—the change from the Scotland of Fletcher of Saltoun to the Scotland of Robert Burns and Walter Scott,—was due to the new direction taken by the energies of every class from landowner to cotter. Two antecedent conditions of this improvement may be noticed. First the introduction of long leases gave reasonable security of tenure, which rendered possible plantation, hedging, walling, housing and new methods of agriculture, grazing and breeding. And secondly the Union of North and South Britain in 1707 opened England's home and colonial markets to Scottish industry and agriculture, and made the Scots participators in England's trade privileges all the world over. In William's reign Scotland had learnt, from the tragic failure of her national settlement at Darien, the bitter lesson that she had not the power and resources needed to open markets and found colonies for herself alone. [1695–1702.]

The Union involved the absorption of Scotland's Parliament and Privy Council in those of England. [1707.] Edinburgh remained the legal and cultural capital, but was no longer the seat of political power. It was a bitter sacrifice of Scotland's pride, but it was the necessary price for her material and economic expansion. The sacrifice was the more tolerable because neither Privy Council nor Parliament was in itself very dear to the people, except as a symbol of national independence. The Church Assembly was more rooted in the affection and the daily life of multitudes, and Scottish religion, like Scottish law, was left intact and separate by the Act of Union.

The inducement that prevailed on Englishmen to invite the Scots into partnership, was not economic but political. Scotland was more Presbyterian but she was none the less more Jacobite than England, and she threatened to bring the exiled Stuarts to reign at Holyrood on Anne's death, while the House of Hanover was being established at St. James's.[2] How far the threat was serious, how far a mere expression of her annoyance with England over Darien and other grievances, it is hard to say. But undoubtedly the British Empire was threatened with the possibility of disruption, in the middle of the Marlborough wars with Louis XIV. To hold together the Empire, the Whig statesmen of Anne's reign, supported by moderate Tories like Harley, offered Scotland the great material advantage of union and free trade, on condition that the Crowns and Parliaments became one. The bargain was reluctantly accepted by Scotland, but she was greatly the gainer by an arrangement which robbed her of nominal but not of real independence, and opened out the paths of her future prosperity. England gained not only the political security which was her immediate and pressing need, but the support of Scottish brains and character in the commercial and political development of the Empire.

[2] Whitehall was burnt to the ground during the reign of King William, who himself inhabited Kensington and Hampton Court. From Anne's reign onwards the British monarchs resided at St. James's Palace, until the move to Buckingham Palace in the Nineteenth Century.

By this great act of modern legislation, England placed upon the world's highway of commerce, colonization and culture, a small nation hitherto poor and isolated, but the best educated and the most active-minded in Europe. The mutual advantage to England and Scotland was immense, and was not confined to the accumulation of wealth. In British literature, science, warfare, politics, administration and colonization, the Scots have played a part out of all proportion to their numbers. The mutual advantage was indeed long unrecognized by the vulgar; it was Sir Walter Scott who first taught the English to admire Scotland, and reconciled the two nations to a joyful pride in their partnership. The statesmen of the Revolution and the reign of Anne had served Britain well. If Scottish talents and energies had for the last two hundred years been turned against England instead of being employed towards common ends, the world would be a very different place to-day. And a little more negligence or folly on either side might easily have brought it about.

On the fall of Cromwell's regime in England, the Celto-Iberian race in Ireland looked to see his work undone over there, and the chieftains of their own blood and tradition restored to the lands they had once owned, among a people who still felt for them much of the ancient tribal loyalty. But with certain exceptions this hope was disappointed. The Protestant landlords remained, as a new race of Anglo-Irish conquerors, nor did they, like the descendants of Strongbow and the Fitzgeralds, become identified with the native peasantry around them.[3] The new barrier of religion perpetuated and emphasized the difference of civilization, and idealized the politics of self-interest and racial pride. Moreover communications with England were much easier, and the arm of England was longer and more powerful than in the Middle Ages. The solid block of English and Scottish Protestants of all classes in Ulster gave a strength to the 'English interest' in Ireland such as it had never had before. The events of 1689 were to demonstrate how much

[3] The Cromwellian yeomen, however, often did so. See p. 207, above.

more effective the Ulster colony was as a 'garrison,' than the Cromwellian landowners thinly scattered over the island among a hostile peasantry.

James II, who tried to make his co-religionists masters of Britain where they were in a tiny minority, attempted the same thing with more likelihood of success in Ireland where they formed the bulk of the population. His Catholic Deputy Tyrconnell and his Catholic Parliament at Dublin decided to undo the Cromwellian settlement and to restore the native landlords. But before the new regime was consolidated, the Revolution in England gave the Protestants of Ireland a rallying-point and a legal position from which to defend their property and power. They were not the men to miss the chance. William was proclaimed King at Enniskillen and Londonderry with more heartfelt loyalty than in Whitehall and Edinburgh. [SEE MAP 7.] The farming gentry and yeomen of the North were frontiersmen accustomed to the life of the saddle and the field, the sword and the plough, and were filled with the businesslike enthusiasm of the Puritan religion. They made Enniskillen the headquarters of a vigorous warfare in the open country. Meanwhile the burghers of Londonderry endured the famous siege [1689.], facing starvation in the spirit that the citizens of Haarlem and Leyden had shown in like case against the Spaniard. These men held England's bridgehead in North Ireland till reinforcements could be shipped over in sufficient strength to enable them, under the leadership of William himself, to advance southward upon Dublin.

In the year 1690 Ireland was the pivot of the European crisis. The fate of Britain depended on William's campaign, and on the fate of Britain depended the success or failure of Europe's resistance to French hegemony. William's throne was tottering in the after-throes of the earthquake of the late Revolution, which had not yet subsided. The English Church and Army were disaffected; the civil, military and naval services were in grave disorder; the Whigs and Tories of Parliament were renewing their old feuds; half the public men of both parties were in secret communication with the Jacobites, not because they desired but because they expected a Restoration. With good hope

then, Louis had sent over James as his vassal, with French money, troops and generals, to complete first the conquest of Ireland, where three-fourths of the land already obeyed him. Until Ireland was secured for William, Britain could take no part in the continental war, and might soon herself be in the throes of a counter-revolution.

The battle of the Boyne was fought upon two quarrels. [JULY 1, 1690.] It was the struggle of the Anglo-Scots against the Celto-Iberians for the leadership of Ireland. But it was no less the struggle of Britain and her European allies to prevent a Jacobite restoration in England, and the consequent domination of the world by the French monarchy. The presence, on both sides of the river, of regiments from the continent represented the international issues at stake. The outcome of that day subjected the native Irish to persecution and tyranny for several generations to come, but it saved Protestantism in Europe and enabled the British Empire to launch forth strongly on its career of prosperity, freedom and expansion overseas.

But while Enniskillen, Londonderry and the Boyne were but a stage in the forward march of British and world history, they became the central point of time in the imagination of the ruling race in Ireland. With equal intensity of recollection the oppressed Celt continued to think of the gallant defence of Limerick, and the subsequent breach by the conquerors of the treaty they signed there with the vanquished race. [1690, 1691.] Sarsfield, the hero of the Limerick campaigns, stood to the conquered as the representative man of the new Ireland, the faithful son of the *mater dolorosa.* The place occupied by Sarsfield in Irish history is significant. For he was no scion of an old tribal family, with immemorial claims on the local allegiance of a clan. The English had effectually destroyed the clan society and banished or slain the clan leaders. Sarsfield represented the new nation that was taking the place of the suppressed tribes, as Wallace had represented the new nation that in Scotland gradually took the place of old clan and feudal loyalties.

The restored English rule in Ireland reflected very little of the wise and tolerant spirit of William. In this Catholic

island he was powerless to do anything to protect the Catholics, whose lot he mitigated in England. The new regime in Ireland reflected the rash ignorance and prejudice of the Whigs and Tories of the Westminster Parliament, who were the real overlords of the reconquered dependency. While the penal code placed the Catholics in Ireland under every political and social disadvantage that malice could invent, and pursued and persecuted their priests, the only leaders left to them under the Cromwellian land system,—by a masterstroke of folly the sectarian quarrels of English Protestants were transferred to Ulster; Anglican intolerance refused political equality and for some time even religious freedom to Presbyterians who had manned the walls of Londonderry and forded the Boyne water. From the Restoration onwards, English trade jealousy had been permitted to depress the Protestant interest in Ireland by laws against the export of Irish cattle and of Irish cloth. The ruin of the Irish cloth trade, completed at the end of William's reign by the decrees of the English Parliament, effectively stopped the growth of the Anglo-Saxon colony. Many thousands of Ulster Scots who sought refuge beyond the Atlantic in the Appalachian mountains, had more real wrongs to revenge on England in the War of American Independence than had most of those who followed the standard of Washington.

Oliver had at least promoted the Protestant interest everywhere in the British Isles. He saw that if Ireland was to be an English colony it must be colonized by English. But the Protestant interest and the Anglo-Saxon colony were after his death depressed by the commercial and ecclesiastical jealousy of Cavalier, Whig and Tory Parliaments, of narrower vision in these respects than Protector or King. Yet the Catholics were still persecuted with Cromwellian vigour. All that was bad in Oliver's Irish system was preserved, all that was good in it was reversed.[4]

Such were the Scottish and the Irish settlements that resulted from the English Revolution. Very different as they were in their character and ultimate consequences,

[4] See pp. 208–9, above.

they seemed to be equally permanent and equally unchallengeable throughout the greater part of the stable and pacific Eighteenth Century. Indeed in 1715, and again in 1745, the Hanoverian government had much more trouble in Scotland than in Ireland. Yet the Scottish settlement, resting on consent, in the end outlasted the Irish settlement that reposed on force.

It is remarkable that the great events which convulsed England, Scotland and Ireland under the later Stuarts, had no repercussions of a regional character in Celtic Wales. From the Tudor settlement till the Nineteenth Century, Wales had no history except that of slow social and religious growth. The upper class were gradually becoming English in culture and connection, while the small farmers of the hills, the typical Welshmen before the modern industrial era, remained Celtic in character and largely Celtic in speech, but felt no active political hostility to England or to English institutions of which Wales was now an integral part. The level of intellectual activity was low as compared to later times, but native music and poetry persisted among the people; and all through the Seventeenth and Eighteenth Centuries the Welsh common folk were gradually moving from an indifferent acquiescence in Anglican religion towards an enthusiastic evangelicalism of their own, by means of which the national mind and spirit eventually revived.

BOOKS FOR FURTHER READING: Hume Brown, *History of Scotland*; Andrew Lang, *ditto*; W. L. Mathieson, *Politics and Religion in Scotland* and *Scotland and the Union*; Lecky, *History of Ireland in the 18th Century*, Vol. I.; Stephen Gywnn, *History of Ireland*; Bagwell, *Ireland under the Stuarts*, Vol. III.; Dicey and Rait, *Thoughts on the Scottish Union*; G. M. Trevelyan, *Ramillies and the Union with Scotland*, Chapters X.–XIV.

CHAPTER NINE

The Wars of William and Marlborough. The Downfall of Louis XIV and the Rise of Great Britain to Maritime and Commercial Supremacy. The Death of Anne and the Dynastic Crisis

SOVEREIGNS: William and Mary, 1689–94; William III (alone), 1694–1702; Anne, 1702–14

In the winter of 1688–89, foreign and domestic events combined to force England into the leadership of the alliance against France, in accordance with Danby's war plans of a dozen years before which had been thwarted by King Charles and by the Whigs.[1] After the Revolution, resistance to France became the first charge on the energies of the new King and of the reconstituted Whig party, and in a scarcely less degree of the nation as a whole. The continued attempt of Louis to reimpose upon England the rule of James and his son after him, rendered the wars of William and Marlborough unavoidable.

William's war, known as the War of the League of Augsburg, lasted from 1689 to 1697, and was ended by the indecisive Treaty of Ryswick. [SEE MAP 9.] After an uneasy interval of four years, war broke out again on an even larger scale,–the War of the Spanish Succession,– conducted by Marlborough as Europe's general and diplomat in chief, and was ended by the Treaty of Utrecht in 1713. That Treaty, which ushered in the stable and characteristic period of Eighteenth Century civilization, marked the end of danger to Europe from the old French monarchy, and it marked a change of no less significance to the world at large,–the maritime, commercial and financial supremacy of Great Britain.

The prime condition of successful warfare against Louis, whether on sea or land, was the alliance of England and Holland. The understanding was not very cordial in 1689

1 See p. 255, above.

between the two nations, so long accustomed to regard each other as rivals in trade and admiralty; but a united front was demanded by the time, and was ensured by the greatest statesman in Europe who had been placed at the head of the executive in both countries. Under William's tutelage, the English and Dutch Ministers contracted habits of close co-operation for purposes of war, which survived the death of the Stadtholder-King and were continued by Marlborough and Heinsius. Co-operation was the less difficult, because England's commercial jealousy of Holland diminished as the proportion of Dutch ships in the allied fleet dwindled year by year, and as Dutch commerce and finance fell behind the newly mobilized resources of her ally. England throve on the war,[2] while the strain of war taxation and effort slowly undermined the artificial greatness of the little Republic. In the latter part of Queen Anne's reign, the mercantile community in London had so little cause left for jealousy of Dutch commerce, that the Whigs and the 'moneyed interest' proposed concessions to be made to Holland in the terms of peace, which the Tories and the 'landed interest' justly criticized as extravagant.

Throughout this long period of war [1689–1713.], which involved all Western and Central Europe and its American Colonies, the naval operations stood in a close causal connection with the diplomatic triumphs of William, and the diplomatic and martial triumphs of Marlborough. But it is only in quite recent times, under the influence of Admiral Mahan and his school of history, that the maritime aspect of the struggle against Louis has been rated at its true value. For although Sir George Rooke and Sir Clowdisley Shovell were fine seamen, no name like Drake, Blake or Nelson appeared as the rival of Marlborough's fame, and the single naval victory of La Hogue seemed a poor match for Blenheim and Ramillies and the long list of conquered

[2] The cost was not out of proportion to Britain's wealth, and the loss of life was trifling as compared to the losses of present-day warfare. At Blenheim the allied army in the field consisted of only 9000 British and 36,000 foreigners. And the British armies only fought one of these great battles on an average every two years.

provinces and towns. Yet all the grand schemes of war and diplomacy depended on the battleships of England, tossing far out at sea; Louis of France, like Philip of Spain before him, and Napoleon and Kaiser William since, was hunted down by the pack he never saw.

La Hogue, the crowning victory at sea, occurred as early as the fourth year in the long contest. [1692.] This is the more remarkable, because the French, as Admiral Mahan tells us, were 'superior to the English and Dutch on the seas in 1689 and 1690.' In the first months of the war Louis had the chance to perpetuate French naval supremacy and to prevent the success of the English Revolution, by the proper use of his then dominant fleet. But the irrecoverable moment went by unseized. He made no naval effort to stop William from shipping his forces to England in 1688, and to Ireland in the two following years. In 1690 the victory of the French over the inferior numbers of the combined English and Dutch fleets off Beachy Head, showed what might have been done to cut the communications between England and Ireland in the year of the Boyne. But the courtiers at inland Versailles lacked the sense of naval opportunity, which was seldom entirely wanting to the statesmen who watched the world's ebb and flow from the tidal shore of the Thames.

In 1692 the tables were turned by the victory in the Channel of the allied over the French fleet, followed by the destruction of fifteen French men-of-war in the harbours of Cherbourg and La Hogue. These losses were not indeed very much greater than the allied losses at Beachy Head two years before.[3] And yet La Hogue proved as decisive as Trafalgar, because Louis, having by his clumsy and arrogant diplomacy defied all Europe to a land war, could not afford to keep the French fleet up to its strength, in addition to the armies and fortresses needed for the defence of all his land frontiers at once. The French fighting

[3] Neither Torrington nor Tourville, the English and French admirals at Beachy Head and La Hogue respectively, was to blame. Both were forced to fight by orders from their governments, against their better judgments, and both made the best of a bad business.

navy in 1690 had owed its temporary superiority to the war-policy of the Court, and was not, to the same degree as the navies of England and Holland, founded on proportionately great resources of merchant shipping and commercial wealth. The trade and industry of France were oozing away through the self-inflicted wound of the Revocation of the Edict of Nantes. When, therefore, the war-policy of Louis induced him to neglect the navy in favour of the land forces, French naval decline was rapid and permanent, and French commerce and colonies suffered accordingly.

The battle fleets of King Louis retired from serious operations, leaving the passage to the continent open year after year to the armies of William and Marlborough with all their supplies and reinforcements, and allowing the pressure of the British fleet to be brought to bear on hesitating States at moments of diplomatic crisis. In William's reign the allied fleet saved Barcelona and prolonged the resistance of Spain against Louis. During the Marlborough wars, our alliance with Portugal and rebellious Catalonia [1703, 1705.], and our whole war-policy in the Mediterranean and in Spain, depended on our naval supremacy in those seas, of which Gibraltar and Minorca were pledges taken and kept. [1704, 1708.]

The seamen of France, when their grand fleet went out of commission, turned their energies to privateering. Admiral Tourville was eclipsed by Jean Bart. English commerce suffered from him and his like, but throve in their despite, while French commerce disappeared from the seas. When the frontiers of France were closed by hostile armies, she was thrown back to feed upon her own ever diminishing resources, while England had the world for market from China to Massachusetts.

In the earlier years of the reign of the Grand Monarch, his good genius, Colbert, had nourished French industry and commerce with remarkable success, though often by State regulations more paternal than would have suited the individualist spirit of wealth-making in England. But from the Dutch war of 1672 onwards the malign influence of Louvois gradually replaced the hold of Colbert on the

mind of the King. Warlike ambitions in Europe and religious persecution at home destroyed the fabric of national prosperity erected in the earlier part of the reign. Louis could indeed tax his miserable peasants at will, but even he could not take from them more than they had, and he had bled them white long before he was rid of Marlborough. Bankruptcy brought his system to the ground, and with it fell the moral prestige of despotism and religious persecution.

Meanwhile the English State, that had been so feeble and distracted in the first two years of William's reign, was gaining internal harmony, financial soundness and warlike vigour all through the long contest, so that the new English principles in Church and State were constantly rising in the world's esteem. England was paymaster to the Grand Alliance, with her subsidies to needy German Princes, and her own well-equipped armies and fleets, that increased in numbers, discipline and efficiency as the years went by.

Parliament, supreme at length in the constitution, was ready to vote supplies to William and Anne such as it had never voted to either Charles. Scarcely less important, from the point of view of the finance of the war, was the alliance between the King's Ministers and the City, leading to a new system of government borrowing on long loans. In the past, royal loans had been made in anticipation of revenue, the capital to be paid back as soon as certain taxes had been levied. Under the new system the patriotic investor, doing well both for himself and for his country, had no wish to have his capital paid back at any near day, preferring to draw a good interest on it for the rest of his life, upon the security of the State. The principal lenders to government were organized in the Bank of England, to which Ministers gave the support of public credit in its banking operations with individual traders. [1694.]

The Bank of England and the permanent National Debt were the outcome of the fertile brains of the Scot, William Paterson, and of the Whig Chancellor of the Exchequer, Charles Montagu; the whole movement was regarded with suspicion by the Tory country gentlemen, jealous of the ris-

ing influence of the 'moneyed interest' over the royal counsels. The City, prevalently Whig in political and religious sympathy, was bound still more strongly to the Whig party by this system of long loans to the governments born of the Revolution. For the Pretender would repudiate his enemy's debts if he should ever return, and to prevent that return the Whigs were pledged one degree more deeply than the Tories.

The movement towards the development of the world's resources through accumulated and applied capital, was in this era finding its principal seat of operations in mercantile England. The capitalization of industry was still in the day of small things, though the domestic cloth-workers dealt through capitalist middlemen. But the capitalization of the world's trade was already conducted on a large scale, and was moving its centre from Amsterdam to London. The London of William and Marlborough was a huge emporium, less of industry than of commerce and finance. Its work was done by a turbulent population of cockney roughs—porters, dockers, day-labourers, watermen and a fair sprinkling of professional criminals—living uncared-for and almost unpoliced in labyrinths of tottering, insanitary houses many of them in the 'liberties' outside the City walls, especially in the over-populated area of which Fleet Street was the centre; next, there was a large middle stratum of respectable shopkeepers and artisans, largely engaged in high-class finishing trades; and on the top of all, a body of wealthy merchants and moneyed men to which no other district in Europe could show the equal, inhabited 'the City' proper.

London and its leaders were once more hand-in-glove with government, as in the days of Burleigh and Gresham; but the methods of State finance and the quantity and availability of London's wealth had made great strides since the days of Elizabeth's parsimonious warfare against Philip. If Drake had had Charles Montagu behind him, he would have done more than singe the beard of the King of Spain. The Grand Monarch of this later era was to learn by bitter experience that the English Parliament and the City of London between them commanded the deeper purse,

though France had nearly twenty million inhabitants, and England and Scotland about seven.

The East India Company of London had become the rival on equal terms of the once dominant Dutch Company, that had so rudely excluded the English traders from the Spice Islands in early Stuart days. Steady trade with the Mogul Empire on the mainland was carried on from the stations at Madras, Bombay, and latterly from Fort William in the Delta of the Ganges, the nucleus of the future Calcutta. The shareholders in the joint-stock company continued to make fortunes hand over hand during the war with Louis, for although ships were lost to French privateers, the demand for tea, spices, shawls and cotton goods did not diminish, and the demand for saltpetre to make gunpowder greatly increased. The Company, though it was gradually building up a great market for English goods in China and India, was accused of exporting bullion and bringing back mere 'luxuries'; but men and women still clamoured for the 'luxuries,' and for shares in the much-abused Company. In the reigns of William and Anne, the strife in the City between the chartered traders and the interlopers, between the Old Company and the New, convulsed the House of Commons, which had stepped into the place of the Court as the State arbiter of commercial privileges. In the first half-dozen years after the Revolution, Sir Josiah Child, in defence of the monopoly of the Old Company, disbursed some £100,000 to Cabinet Ministers and members of Parliament. In these quarrels, all the furies of party passion and private greed were stimulated by the knowledge that the wealth of the East was no longer an Arabian tale, but a solid fact on which City fortunes were being built and new County families founded every year. The most remarkable and formidable of these self-made magnates was Thomas Pitt, grandfather of the great Chatham, and owner of the Pitt diamond. Having made his fortune in India first as poacher and then as gamekeeper, that is to say first as 'interloping' trader and then as Governor of Madras for the Company, he purchased a landed estate at home, together with the Parliamentary borough of Old Sarum.

The coffee drunk in the famous coffee-houses of the period was imported less by the East India Company than by the English merchants trading in the Mediterranean.[4] They had become the chief European influence at Constantinople, and were pushing the sale of English cloth in the ports of Italy, Venice and the Levant. In spite of the Barbary pirates and the privateers who dashed out from Toulon and Brest, our Turkey and Venetian merchants throve during the war. And it greatly added to their security and prestige that after the capture of Gibraltar and Minorca the Western Mediterranean was permanently occupied by the Royal Navy. [1704, 1708.]

On the other side of the Atlantic, the English had the full advantage of naval supremacy. [SEE MAP 8] There was a rehearsal of the issues brought to a final head by Wolfe and Chatham two generations later. The men of Massachusetts, much the most active of the American Colonies, twice during the wars with Louis XIV captured Acadia from the French; though given back once at the Treaty of Ryswick, it was annexed to Britain by the Treaty of Utrecht and re-christened Nova Scotia. By the same treaty Britain annexed Newfoundland [1713.], subject to certain French fishing rights which remained a constant subject of dispute until their final settlement in the reign of Edward VII. The Hudson Bay territory was also annexed, with its snow-bound forests whence English hunters supplied the fur trade at home. And so—although an attack on Quebec, badly concerted between the Royal and Colonial forces, had failed [1711.]—the end of the war saw the British solidly planted near the mouth of the St. Lawrence and in the arctic rear of the French settlements on the great river.

The war and the peace stimulated another British interest oversea, the endeavour to force our commerce on the great South American market, in spite of the Spanish government's decree excluding all foreign traders. The quarrel with the Spaniards in South and Central America

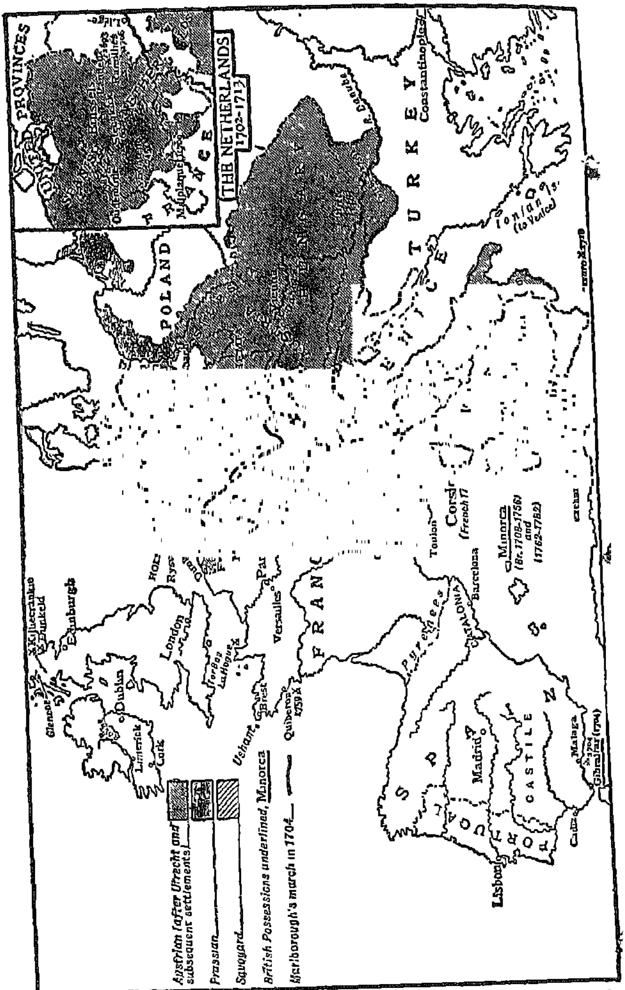
[4] The importation of coffee was criticized in 1680, as being 'most useless since it serves neither for nourishment nor debauchery.'

had been carried on by the English buccaneers ever since James I's peace with the Spanish Monarchy.[5] In the reign of Charles II, the buccaneers of the West Indian islands were in the heyday of their romantic glory, as the unofficial maintainers of England's quarrels along the Spanish Main. In the reigns of William and Anne they were declining into the position and character of black-flag pirates of the type of Teach, their hand against the men of all nations, and every man's hand against them. But the process was gradual, many, like Kidd and Quelch, moved in a doubtful borderland between piracy and privateering, and the attitude of the Colonials and of the British officials differed according to the circumstances and the men.

[1713.] An attempt was made to regularize our relations with Spain in the Treaty of Utrecht, when the Tory government won applause even from their harshest critics by securing the famous *Asiento,* permitting England alone of foreign powers the annual privilege of sending a ship to trade with Spanish America, and of taking thither, besides, 4800 negro slaves. But this limited monopoly was used in the Eighteenth Century as the starting-point for a larger illicit trade, and the quarrel for the open door in South America only came to an end with the termination of Spanish rule in the days of Bolivar and Canning.

With regard to the war in Europe, there is a marked distinction of character between the two parts of the struggle that brought Louis to his knees. In the War of the League of Augsburg [1689–97.], of which William III was the political and military chief, France was engaged on all her land frontiers in operations against Spain, Holland and the German Princes, and even so she held her own; neither side won any sensational victories, though Steinkirk and Landen were successes for the French; neither side anywhere made any measurable progress. [1692, 1693.] The boundary between the Spanish Netherlands and France, where most of the fighting took place, remained practically unaltered. Under William, who was not the man either to

[5] See p. 160, above.



EMERY WALKER LTD. SC.

Map 9 Europe after the Treaty of Utrecht, 1713

win or lose campaigns on the grand scale, the British troops learnt the art of war, and were bequeathed by him a fit instrument for a greater captain.

On the other hand, in the ensuing War of the Spanish Succession [1701–13.], France began the contest with every apparent advantage except sea-power. Her armies were in occupation of the whole Spanish inheritance in Europe, in the name of Louis' grandson, Philip V, the new King of Spain. The great Kingdom beyond the Pyrenees, Italian Milan and Naples, and the long-contested Spanish Netherlands with their famous fortresses, were all, for fighting purposes, French territory when the war began. Moreover, Louis had as an active ally the great State of Bavaria, lying in the heart of Germany, on the boundaries of hard-pressed Austria, herself attacked on the other side by the Hungarian insurrection. The situation appeared desperate for the cause of the allies, and for the future safety of Holland and England by land and sea: unless they could turn Louis out of these territories, particularly out of the Netherlands, he would remain what he had indeed become, the master of Europe. But contrary to all expectation, the allies, who in the previous war had seemed no painful inch to gain, chased the French out of every one of these lands with the exception of Spain, where the genius of the Spanish people for guerrilla warfare secured them the King of their choice, the Bourbon Philip.

Austria was saved and Bavaria conquered by Marlborough's march on the Danube and victory at Blenheim in 1704; the Spanish Netherlands were conquered by him at Ramillies in 1706, and that same year Eugene's campaign of Turin secured for Austria Milan, Naples and the hegemony in the Italian Peninsula. Though Spain herself remained to the Bourbon candidate, the Spanish Empire in Europe was conquered and dismembered, chiefly to increase Austria's territories, but also for the permanent security of Holland and Great Britain.

These tremendous victories, as compared to the stalemate of the previous war, can be accounted for in no small degree by the military genius of Marlborough, backed by the fine abilities and faithful co-operation of his friend, Prince Eugene of Savoy, the Austrian General. But the successes must also be ascribed to the ever-increasing maritime, commercial and financial power of Britain and its

vigorous application by Marlborough, Godolphin and the Whig Ministers of Anne. Marlborough understood the strategy of world war and the way to combine land and sea power in successful operations, better than any man who has succeeded him in control of England's destiny, with the possible exception of Chatham. Corresponding to England's growth, was the maritime and financial decadence of France, whose efforts at world conquest for fifty years past exhausted and betrayed her just when the prize was in her grasp. The national exhaustion reflected itself in the failing ability of the new generation of Louis' Generals, and the want of self-confidence in his troops after their first defeats at the hand of 'Malbroucke.'

The size and armament of battleships and the tactical methods of warfare at sea underwent no great change between the days of Blake and the days of Nelson. But the methods of warfare on land, when Marlborough took command at the beginning of Anne's reign [1702.], had just undergone a great change from the methods of Gustavus Adolphus and Cromwell.[6] Ever since the Restoration the bayonet had been gradually coming in, and, after the lesson of Killiecrankie, William's reign saw the general adoption of the ring-bayonet that could be left on while the gun was being discharged. Consequently the pikemen, who had composed half the regiment in Cromwell's day, were altogether abolished; henceforth there was but one type of infantry private, with his firelock ending in the dagger-bayonet. In connection with this change of weapon, the six-deep formation of the infantry column, suitable to pikes, was changed to a thin line of three deep, as the method of concentrating the greatest volume of fire upon the enemy. Already we are in the realm of the infantry tactics employed by Frederic the Great and by Wellington, though the drill of the infantry was not yet so perfect or their manœuvring so flexible as in those later times. Cavalry, as at Blenheim and Ramillies, could still decide battles, but their place in war was already smaller than in

[6] See p. 189, above.

Cromwell's day, owing to the increased efficiency of the 'poor foot.'

The warfare of the age of Louis XIV was largely an affair of fortresses. Readers of 'Tristram Shandy' will remember how the two old soldiers of William show even more professional interest in the news of Marlborough's sieges than in his marches and battles. King Louis' military architect, 'the celebrated Monsieur Vauban,' carried the defensive art to a high and complicated perfection, and France and her neighbours watched each other across a network of fortified towns, especially thick in the Netherlands.

The result was a tendency to stagnation in military enterprise and mobility, very marked in the War of the League of Augsburg. [1689–97.] But in the War of the Spanish Succession [1701–13.] the rapid conquest of provinces recalls Gustavus and foreshadows Napoleon. The way for this change had been prepared by the unopposed advance of Louis' armies beyond the frontiers of France into the territories of the Spanish Empire and Bavaria. Marlborough, when he took over the command, found the French far in advance of their usual line of fortresses. He seized the opportunity to restore the war of movement, much to the horror of the more timid and conventional spirits on his own side. When he resolved to carry the Dutch and English armies across Europe to the Danube, to save Austria and win Blenheim, he had to deceive the vigilance of the Dutch authorities and the Tories of the English Parliament, who objected to any such dangerous use of their costly regiments.

Marlborough as a military strategist and a tactician, as a war statesman and war diplomatist, stands second to no Englishman in history. His powers resemble those of Chatham and Clive rolled into one, except that he could not, like Chatham, arouse the spirit of his countrymen at large by magnificent speech and visible ardour of soul. For the purpose of striking down a great military monarchy, he was Wellington and Castlereagh combined, and if the Whigs had left him a free hand he might have made for

Europe in 1709 as good a peace as Castlereagh made in 1815,—or Bolingbroke in 1713.

Cromwell alone seems his match. But Oliver attracts or repels by the peculiarities of his character, and by his political and religious affinities; whereas Marlborough arouses no such prejudices either for or against his claims upon the gratitude of his country and of the world. 'The detested names of Whig and Tory,' as he called them, were less than nothing to him, though fate made him a Tory by birth and upbringing, and a Whig by later connection. Both sides revenged themselves upon him for not being one of themselves, the Tories assiduously blackening his character and the Whigs being lukewarm in its defence. As the contemporary of Louis' English pensioners and of the Whig and Tory correspondents of the exiled James, he was no better, indeed, than the average product of the Restoration Court and the Revolution Parliaments. But if he loved money, he gave England better value for every guinea he received from her than any other of her servants; if he looked to the main chance, his country was the gainer for his shrewdness nine times out of ten; and if he failed to arouse the personal devotion of any class except the soldiers whom he led to certain victory, his featureless calm of Olympian power is perhaps as much above as it is below Cromwell's humorous, passionate humanity, and craving, troubled spirit, never quite at rest either in this world or the other. By the light of his unclouded genius, Marlborough protected the advent of the much needed age of reason, toleration and common sense.

In the successful conduct of a world war there are two distinct operations, both very difficult,—the winning of the victory in arms, and afterwards the making of a stable peace. Unfortunately the temper and qualities required and engendered by war are not always conducive to the proper handling of peace negotiations, and for this reason it was no bad thing that our two-party system enabled the Whigs to win the war and the Tories to make the peace.

Since the Revolution, the Whigs had become the more

inveterate enemies of Louis, as the representative of despotism and the patron of the Pretender. William III, who had less than no predilection in favour of the Whigs, had found in practice that only a Whig Ministry could carry on the War of the League of Augsburg with the necessary vigour and financial ingenuity; but he himself, without help from his English Ministers, concluded peace at Ryswick. In the interval that followed before the renewal of war [1697–1701.], the Tories rose again automatically to the surface, and on the accession of their supporter, Queen Anne, secured almost a monopoly of power. But during these four somewhat confused years of peace, it had been the moderate Tory Harley, a man of Roundhead family and connections, who exerted most influence in the House of Commons. He 'educated his party,' inducing the Tories to pass the Act of Settlement [JUNE 1701.] which fixed the succession on the House of Hanover, in case of Anne's death without children[7]; and to renew the war with France, when Louis, in spite of his acknowledgment of William in the Treaty of Ryswick, insolently declared the Pretender to be James III, King of England. [SEPT. 1701.] The control of the vast resources of the Spanish Empire had been too much for the prudence of the Grand Monarch, who already regarded himself as master of the world.

The War of the Spanish Succession was therefore begun by a combination of moderate Tories and Whigs with Marlborough and Godolphin. [1701–5.] But events led once more to a war-Ministry predominantly Whig, because so many of the Tory party were more interested in passing laws against the Dissenters than in beating Louis. But Harley's heart was in the war, and he remained in the Whig Ministry until Louis had been driven out of the Spanish Netherlands, and the Union with Scotland had been carried. Finally in 1708 Anne was compelled to accept a wholly Whig Ministry without Harley. Marlborough and

[7] The Tory party's support of the Act of Settlement in 1701 was probably facilitated by the discredit accruing to Jacobitism from the Assassination plot against William in 1696, curiously similar in its details to the Whig Rye House Plot against Charles II.

Godolphin, altogether detached from the Tory party, remained to act under the orders of the Whig 'Junto.' Mixed Ministries, though they had often done useful work, were found increasingly difficult under the Parliamentary system. Ever since the Revolution England had been moving unconsciously towards the modern system of a responsible Cabinet all of one political complexion.

The Whigs, who had twice risen and thriven by war, were slow to make peace. And unfortunately the completeness of their political victory at home coincided exactly with the period when peace negotiations ought to have been seriously undertaken and pushed through. [1708.] Marlborough, having won the Spanish Netherlands for Austria at Ramillies and Oudenarde, was engaged, during four more years of unnecessary war, in reducing the fortresses that defended the frontier of France herself. Louis, in terrible straits, offered in 1709 everything that the allies could reasonably demand, including the withdrawal of all assistance from his grandson in Spain. But the Whigs showed themselves incapable of making peace. They demanded the one thing Louis could not grant—that he should himself send his armies to expel Philip from the Spanish throne on which he had placed him eight years before. The cause of this outrageous demand was the difficulty the allies found in expelling Philip themselves, as he was the favourite of the Spanish people. The Whig formula of 'no peace without Spain' meant in practice no peace at all. Louis appealed to his subjects, as he had never deigned to do before; they knew that he had made great sacrifices of his pride to buy them a peace, but in vain, so they rallied to him with the well-known valour of the French people in defence of the soil, and gave Marlborough his first rebuff in his Pyrrhic victory of Malplaquet. [SEPT. 1709.]

John Bull, also, was hungering for the victorious peace which the Whig doctors had ordered away from his table. The cry to stop the war swelled the Tory reaction which domestic causes were producing. A wave of High Church feeling passed over the Queen and her subjects, and mobs who a few years before were chasing Jacobites and sacking

Mass-houses, once more engaged in the alternative employment of burning Dissenters' chapels. Popular emotion was swelled by the folly of the Whig Ministers in impeaching before the House of Lords a certain Dr. Sacheverell, who had preached a sermon against the principles of the Revolution, on the day consecrated to its memory.

The Queen's political and religious sympathies and the influence exercised over her by Mrs. Masham, at length enabled her to throw off the personal domination of Sarah, Duchess of Marlborough. The Whigs fell at once, ere long dragging Marlborough himself after them. [1710.] Anne's initiative in changing her Ministers was confirmed at the General Election. Since the winter of William's coming over, no change in men and measures had been so complete and so instantaneous. Yet this was not a revolution, but a normal process of the new constitution, which was tending more and more towards party Cabinet government by Whigs and Tories in alternation. No change less complete would have secured peace for Europe at that juncture.

The new Tory Ministry took office under the double leadership of the brilliant St. John, prepared to go any lengths to crush the Whigs and extirpate Dissenters in pursuit of his political game, and the slow, moderate Harley, whose chief virtue was a desire, unfortunately rare among contemporary statesmen, to promote unity of spirit in the whole nation. But the government was at least agreed on its first necessary task—the making of peace. Except the betrayal of our Catalan allies to the vengeance of Philip of Spain, it is difficult to find serious fault with the terms of the Treaty of Utrecht. [1713.] The methods by which this excellent peace was obtained are perhaps more open to criticism. The Whigs denounced, and the nation little liked the secret negotiations with France behind the back of the allies—though William had done the same to obtain the Treaty of Ryswick,—the disgrace of Marlborough, and the withdrawal of the British armies from the field in face of the enemy. Yet it was largely the fault of Whig, Dutch and Austrian obstinacy that these methods seemed the only way to settle any terms at all with France and compel the allies to accept them.

British colonial and commercial interests were, as we have seen, amply provided for,[8] and they would have benefited still more if the Tory Ministers' Commercial Treaty with France had not been thrown out by English trade jealousy, organized by the Whig opposition. As regards territorial arrangements in Europe, the terms of Utrecht were based on the formal assignment of the Spanish dominions in Europe to Austria, and the formal assignment of Spain and her American dominions to the Bourbon Philip. [SEE MAP 9.] It was merely a recognition of the state of things established by the events of the war, which the operations of the last five years had failed to shake. England's maritime security was ensured by the transference of the Netherlands to Austria, an inland power of central Europe from whom we had nothing to fear. The French threat to the Rhine Delta had been parried until 1793.

These arrangements proved a stable basis for Eighteenth Century civilization. Europe was never again troubled by danger from the preponderance of France, until the French Revolution had given her a new form of life. If Louis had been treated with the vindictive severity contemplated by the Whigs and Austria, when Marlborough should at length have burst through the network of fortresses and reached Paris, the spirit of revenge might have made a permanent lodging in the soul of the French people, rallied them to the monarchy of the *ancien régime,* and kept Eighteenth Century Europe constantly disturbed with wars more than dynastic.

The Treaty of Utrecht remains the one great act of statesmanship of St. John, Lord Bolingbroke, wherein he showed all his natural brilliancy, together with a moderation in respect to France, that was conspicuously absent from his dealings with those of his own countrymen who were not of his political following.

The Tories, having won the peace, hoped to enjoy the fruits thereof in their domestic programme. They had

[8] See p. 294, above.

passed an Act to prevent anyone from sitting in Parliament, even for a borough, unless he drew at least £300 a year from land. [1711.] But the chief political passion of the fox-hunting Tory squires of the October Club was the desire for a hot run after Dissenters, and Bolingbroke, the free-thinker, was Master of the pack. The first burst had been the passing of the long-disputed Occasional Conformity Bill, which punished with ruinous fines any man who, having qualified for State or municipal office by taking the Sacrament in an Anglican church, afterwards attended a place of Non-conformist worship. [1711.] But the Schism Act three years later was a much more serious affair. [1714.] It took away from Dissenters the education of their own children, which was to be handed over to persons licensed by Bishops of the Established Church. The many excellent schools that the Non-conformists had established at their own cost were to be suppressed, and their teachers turned adrift. Even teachers licensed by Bishops might teach no catechism save that of the Church. Without directly repealing the Toleration Act, it was intended to circumvent it by extirpating Dissent in the next generation through this peculiarly odious and unnatural form of religious persecution. The Schism Act was the worst blot on the record of the Tory party after the Revolution, and rendered its downfall a pre-condition of religious freedom in England. For if the Schism Act had had time to come into force, it must have led to the abolition of varieties of religious belief, or else to a civil war. But the dynastic crisis precipitated by the death of Anne [AUG. 1714.] divided and ruined the Tory party, saved the Dissenters without resort to arms, and established the full Eighteenth Century era of domestic peace, latitudinarianism and toleration,

When George in pudding times came o'er
And moderate men looked big, Sir.[9]

[9] Both the Schism Act and the Occasional Conformity Act were repealed by the Whigs early in George I's reign, but the Sacramental Test for civil office was retained till Lord John Russell's Bill in 1828. The insistence of the High Church party on using the Sacrament as the key to po-

The reason why the victory of the Whigs on the accession of the House of Hanover meant the victory of 'moderate men' was because the Whigs were the minority party and were in no position to persecute. On the other hand, the Tories in the last years of Queen Anne's reign showed, under Bolingbroke's leadership, a spirit of intolerance natural, perhaps, to a party conscious that it represents the strongest forces in the nation. Prior to the Industrial Revolution the landowners were the most powerful class, and prior to the growth of Wesleyanism the Established Church was by many times stronger than all other religious denominations put together. Against the landed interest and the Church interest the Whigs could put into array only half the peerage, a few of the squires, some of the yeomen, the bulk of the merchants and moneyed men, the Protestant refugees from the continent,[10] and the English Dissenters. This combination, relatively weak in numbers, was powerful in organization and intelligent unity of purpose, because its strength lay in the towns, particularly in London, and because its leaders could pursue the political advantage of their party without its counsels being distracted, as those of the Tory squires often were, by religious and class feeling. For while the ordinary Whig partisan was a middle-class dissenter, the Whig leaders were upper-class churchmen, usually of a latitudinarian or a sceptical turn of mind. Between William Penn and John Bright no Non-conformist was prominent as a leader of political life

litical office was perhaps not very good for religion. 'I was early with the Secretary' (Bolingbroke), writes Swift, 'but he was gone to his devotions . . . to receive the Sacrament. Several rakes did the same. It was not for piety but employment, according to Act of Parliament.' But as long as they were only 'rakes' and not Dissenters, Swift's party saw no profanation.

[10] There were over thirty French Huguenot churches in London when it had about one-tenth of the inhabitants it has to-day. Most of the worshippers in them were skilled men, many of them rising to wealth in the country of their adoption; and almost all were Whigs, on account of the Tory hostility to their forms of religious worship.

in England, though for half that period the Non-conformists were able to keep the Whig party in power.

In time of peace the Tories were normally the stronger by weight of numbers and possession of the land, and would have governed Eighteenth Century England but for the accident of the dynastic question, which proved their division and their undoing. At the end of William's reign Harley had persuaded the party to take the initiative in passing the Act of Settlement, assigning the Crown to the House of Hanover in case of Anne's death without children.[11] This great decision represented the determination of the squires and the Anglican Church never again to trust themselves to a Roman Catholic King. The House of Stuart had only to turn Protestant and the Act of Settlement would have little binding effect on the High Tories, but neither the Old nor the Young Pretender would consent to dissemble his religious beliefs to gain a crown. The fact is greatly to their credit, and their honesty saved Britain a world of trouble and civil war.

Even as it was, the Act of Settlement represented only one-half the feelings of the Tory party on the dynastic question; the other or Jacobite half of their sentiment had a habit of surging up in moments of emotion, and then sinking back checked and uncertain when the practical crisis came. Brought up as boys in the doctrines of Divine Right,

In good King Charles's golden days
 When loyalty no harm meant,

the Tories of the succeeding generation were never quite at ease in opposing the House of Stuart. Old theory and old affection were moreover supported by modern considerations of party advantage and expediency: the House of Hanover was hand-in-glove with the Whigs. The future George I declined to adopt the attitude of indifference between Whig and Tory which William of Orange had shown both before and after he attained the crown. Moreover, the Tory Ministers of the dying Queen could not

[11] For the Hanoverian descent from James I, see tree, p. 163, above; for the descendants of James II, see tree, p. 252, above.

pay court at Hanover without quarrelling with their mistress at home. [1712–14.] For Anne had all Queen Elizabeth's jealousy of a successor; and, like many other Tories, she was a Jacobite in sentiment though not in practice, and detested the German Princes who were to keep her brother out of his inheritance after she herself had ceased to do so.

The Tories therefore clung to the present favour of Anne, at the sacrifice of all chance of future favour with George. The Whigs in opposition adopted precisely the opposite policy. The growing perception that the accession of George I would mean the exclusion of the Tories from power, drove Bolingbroke on his last violent courses, to prepare the way either for a Jacobite restoration on Anne's death, or at least for the complete control of the country by a Jacobitish Cabinet who could dictate terms to either one or other of the claimants. This plan necessitated the extrusion of all Whigs and all moderate Tories from the magistracy, the Army, the Navy, and the government. It necessitated the dismissal of Harley, now Lord Oxford, as a preliminary to consigning the whole machinery of government, central and local, to men of Jacobite sympathy. Oxford was dismissed on July 27, and his rival's hands were free. Five months, five weeks even, might have seen the stage prepared, but the Queen died in five days, and all Bolingbroke's plans fell in ruin around him. [AUG 1, 1714.] 'Fortune turned rotten at the very moment it grew ripe,' wrote Swift, whom the disaster consigned for life to a Dublin deanery.

The outcome of Bolingbroke's intrigue was that George I came unopposed to the throne, with a rooted distrust of the whole Tory party, which was shared by large numbers of his subjects who were neither Whigs nor Dissenters but who desired undisturbed peace under a Protestant King and Parliament. For forty-seven years to come [1714–61.] the Tory party was out of office, suspected of Jacobitism and painfully divided in its own feelings and allegiance.

Bolingbroke was prevented by the Whigs from taking an active part again in public life. After a period of service abroad as Secretary of State to the Pretender, he left that Court in disillusionment and disgust, and devoted his bril-

liant powers as a writer to preaching to his countrymen the moderate views of his old rival Harley, the necessity of the Revolution settlement, the evils of party spirit, and the hope of the future in a 'patriot King' who was not to be a Stuart.[12]

The enjoyment by the Whigs of nearly fifty years of uninterrupted power at this stage in our history, though far from an unmixed blessing, secured the political and religious liberties of Englishmen, because the Whigs were the minority party and could not therefore afford to persecute, as the authors of the Schism Act had persecuted. Walpole, who held power from 1721 to 1742, had the sense to see that the Whigs would retain office for themselves and keep the House of Hanover on the throne, only if they left the privileges of the Church untouched, and allowed the government of the countryside to rest very largely in the hands of Tory Justices of the Peace. Under Whig political rule at St. James's and Westminster, the Church and the squirearchy preserved what was nearest and dearest to them in the county, the parish, and the University.

That compromise secured the *Pax Walpoliana,* and saved the House of Hanover from overthrow by the Jacobites. It was a policy very different in spirit from the violence of the original Whig party under Shaftesbury. When Walpole came to power the Whigs had learnt the lesson of 'moderation' very completely, but they had only learnt it step by step. Several times in the reigns of William and Anne they had shown a desire to persecute their political enemies, as for instance in their attempt, thwarted by William, to hold up the Act of Indemnity after the Revolution; in the trials of Fenwick and Sacheverell; finally the impeachment of Oxford in the reign of George I for his share in the Treaty of Utrecht. But a milder and more cautious spirit, which men like Somers, Cowper and Addison usually

[12] Mr. Feiling, in his *History of the Tory Party,* says: 'The man who educated these generations (between Anne and George III) was undoubtedly Bolingbroke, who in the "Letters" and "Dissertations" of his later life Harleyized, that is to say modernized, the whole basis of Tory thought.'

displayed, had been working in the party against the more violent elements represented by Wharton. These pacific and liberal tendencies triumphed in Walpole and his motto —'Let sleeping dogs lie.'

The contests of the two evenly balanced parties in the reigns of William and Anne, the constant appeal made by Whigs and Tories to the intelligence of the public in Parliamentary eloquence, pamphlets, electioneering and the talk of men, had instilled habits of debate and free expression of opinion which continued to mark English political life in the coming era. Though partisan bitterness was guilty of frequent acts of persecution, the shelter generally afforded by the two great parties to their respective advocates enabled freedom of speech and press to grow to its characteristic development in England.

BOOKS FOR FURTHER READING: Lecky, *History of England*, Vol. I.; Feiling, *History of the Tory Party*; C. T. Atkinson, *Marlborough*; Frank Taylor, *Wars of Marlborough*, 2 vols.; Corbett, *England in the Mediterranean*, Vol. II.; Mahan, *Influence of Sea Power*, Chaps. IV. and V.; Coxe, *Memoirs of Marlborough*, 3 vols ; Winston Churchill, *Marlborough*; G. M. Trevelyan, *England under Queen Anne*, 3 vols., *Blenheim*, *Ramillies*, *The Peace and the Protestant Succession*.

INDEX